Raj Dharam Nov-Dec 1974-78 G.K.U.

पाक्षिक

राजधर्म

भूख की चेतावनी

वहशी सरकार को दफनाओ

बुझते हुए चिराग रोशनी मांग रहे हैं

विज्ञान, धर्म व साहित्य

शिक्षा सम्बन्धी क्रान्तिकारी विचार

देश पुलिस राज की ओर

प्रधान सम्पादक
स्वामी अग्निवेश

सह सम्पादक
गिरजेश्वर

नवम्बर द्वितीय
वर्ष ६ : अङ्क २२
वार्षिक शुल्क १५ रु०
एक प्रति ७० पैसे

देश समाजवादी समाज की रचना की ओर नहीं, बलिक
पुलिस राज की ओर जा रहा है।

भारत के स्वाधीन होने के बाद इस देश में पुलिस का खर्च जितना बढ़ा है उतना शायद कोई और खर्च नहीं बढ़ा है। १९५०-५१ से १९७४-७५ तक के २४ वर्षों में पुलिस पर अकेले केन्द्र सरकार का ही खर्च ५२ गुना बढ़ गया है। १९५०-५१ में ३ करोड़ रुपये का खर्च उचित था, १९७४-७५ के बजट में बढ़कर १५६.४० करोड़ रु० हो गया। जनवरी, १९६६ में प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी ने जब से कार्य संभाला उसके बाद ही इस व्यय में विशेष वृद्धि होनी शुरु हुई। १९६६-६७ में पुलिस का व्यय ४८.२७ करोड़ रु. था, पर अगले ही वर्ष १९६८—६९ में यह बढ़कर ७२.६० करोड़ हो गया—यानी ५० प्रतिशत की वृद्धि।

यह गैर महत्त्वपूर्ण नहीं है कि १९६७-६८ और १९६८-६९ ऐसे वर्ष थे जिनमें कांग्रेस पर अन्धकार का साया मंडराता रहा। केन्द्रीय सरकार कांग्रेस के ही हाथ में रही और ७ राज्यों में दूसरे दलों की सरकारें आयीं। यह भी सत्य है कि ये गैरकांग्रेसी सरकारें कानून और व्यवस्था कायम रखने के लिए केन्द्र पर सब से कम निर्भर थीं। किन्तु केन्द्रीय पुलिस पर व्यय तेजी से बढ़ता ही गया। यह बढ़ोतरी केन्द्र सरकार की इस इच्छा को जता रही थी कि केन्दीय पुलिस की अतिरिक्त शक्ति का प्रयोग आवश्यकता हुई तो राज्य सरकारों की इच्छा के विरुद्ध भी किया जाएगा। १९७१-७२ में केन्द्रीय पुलिस पर होने वाला व्यय ११८.७२ करोड़ 'जो पांच वर्ष पूर्व के व्यय से ढाई गुना होता है'–तक पहुंच गया और १९७४-७५ के बजट में यह व्यय १५६.४० करोड़ दिखाया गया है जो वित्त वर्ष पूरा होने तक और भी बढ़ जाएगा।

इसी के साथ साथ पुलिस पर राज्य सरकारों का खर्च भी लगभग इसी गति से बढ़ रहा है — वह हर दस वर्ष में दो गुना हो जाता है। राज्यों का पुलिस पर व्यय सामान्य प्रशासन पर व्यय से अधिक है। १९७१-७२ में राज्य सरकारों ने २४४.३३ करोड़ पुलिस पर व्यय किया — इसके मुकाबले सामान्य प्रशासन पर २१०.६७ करोड़, न्याय और जेलों पर, ५७.५७ करोड़, चिकित्सा और सामान्य स्वास्थ्य पर, १८३.८१ करोड़, और सामान्य शिक्षा पर, ३५१.६४ करोड़ रुपये व्यय हुए। १९७९ मार्च तक अगले पांच वर्षों में अनुमान है कि राज्य सरकारें पुलिस पर १८७६.०८ करोड़ रुपये खर्च करेंगी, बढ़ते हुए मंहगाई भत्ते के कारण, जो प्रायः सभी राज्य सरकारें अदा करेंगी, वास्तविक खर्च और भी अधिक होगा।

१९७८-७९ में पुलिस पर राज्य सरकारों का खर्च; जिसमें केन्द्र का खर्च शामिल नहीं है, प्रति व्यक्ति ७.६३ रु० होगा, जिस की तुलना हम चिकित्सा और सार्वजनिक स्वास्थ्य पर खर्च से कर सकते हैं, जो ६.७३ रु. प्रति व्यक्ति होगा। अलग-अलग राज्यों का विवरण लें तो पांचवीं योजना में महाराष्ट्र का पुलिस व्यय सबसे आगे है, यानी २५८.४५ करोड़ है। इसके बाद आता है उत्तरप्रदेश, जिसका व्यय २२२.३० करोड़ रुपये हैं। उसके बाद पश्चिम बंगाल का २१४.९१ करोड़ रुपये, मध्यप्रदेश का १३७.१८ करोड़ रुपये, बिहार का १३५.७३ करोड़ रुपये, गुजरात का ११६.९२ करोड़ और आन्ध्रप्रदेश का ११८.६३ करोड़ रुपये आता है। अन्य राज्यों में पांचवीं पंचवर्षीय योजना में पुलिस व्यय १०० करोड़ से अधिक नहीं बैठता।

पुलिस व्यय की जांच के लिए आयोगः

यद्यपि राज्य सरकारें पुलिस पर अधिकाधिक खर्च करती आ रही हैं किंतु केन्द्रीय शासन भी केन्द्रीय पुलिस की शक्ति बढ़ा रहा है और इस के पक्ष में अनेक 'तर्क' भी देता है। केन्द्रीय गृहमंत्रालय के सचिव ने कहा है कि पुलिस पर बढ़ता हुआ खर्च औचित्यपूर्ण है। उन्होंने कहा "मेरी मान्यता है कि खर्च बढ़ने के कारण पर्याप्त हैं और हमारा अनुभव इस की पुष्टि करता है। कोई भी महीना ऐसा नहीं जाता जिसमें हमें राज्यसरकारों का निवेदन न मिले कि अमुक गड़बड़ी की वजह, से केन्द्रीय सहायता चाहिए। संचालन और नियंत्रण के काम में काफी पेचीदगियाँ होती हैं—उपलब्ध शक्ति का सर्वोत्तम उपयोग आवश्यक होता है।

यदि व्यय की वृद्धि का यह स्पष्टीकरण स्वीकार किया जाये तो हम को इस तार्किक निष्कर्ष पर पहुँचना पड़ेगा कि राज्यों को अपने यहां का अतिरिक्त पुलिस व्यय, जो पूर्णतया गैरजिम्मेदाराना और निरर्थक है, बंद कर देना होगा। संसद की सार्वजनिक लेखा समिति यदि इन प्रकरणों पर गभीर चिंता व्यक्त करे तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए। समिति ने अपनी रपट में कहा है कि विभिन्न प्रकार के पुलिस संगठनों पर खर्च इतनी तेजी से बढ़ता जा रहा है कि एक उच्चाधिकार प्राप्त स्वतंत्र आयोग द्वारा उस की जांच की

(शेषांश पृष्ठ १८ पर)

सम्पादकीय

भूख की चेतावनी

(गतांक से आगे)

आज विकसित देश दुनियां के कुल खाद उत्पादन का साढ़े ९२ प्रतिशत उत्पादन अपने यहां करते हैं और विकासशील देश मात्र ७.५० प्रतिशत अर्थात् ६० लाख टन ही खाद पैदा करते हैं। १५ लाख टन खाद उन्हें विकसित देशों से मंगाना पड़ता है। इस तरह एक खाद विशेषज्ञ के अनुसार विश्व की ३० प्रतिशत आबादी ८५ प्रतिशत खाद को इस्तेमाल कर रही है। यही कारण है कि कृषि एवं खाद्य संगठन ने अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर एक खाद सम्बन्धी नीति निर्धारित किया परन्तु उसे विकसित राष्ट्रों ने अनसुनी कर दिया। आज जबकि खाद गरीब देशों के लिए जीवन और मरण की समस्या बन चुकी है, वह विकसित देशों में अनाज उत्पादन में नहीं खर्च हो रही है। ब्रिटेन ५० लाख टन खाद इस्तेमाल करता है परन्तु उसमें से एक लाख टन गैर कृषि कार्यों में खर्च करता है। अमरीका में लगभग २० लाख टन खाद घरों के बागीचों को हरा भरा बनाने में इस्तेमाल हो रही है।

अतः अन्नोत्पादक विकसित राष्ट्र गरीब देशों की चिन्ता किए बिना खाद और अनाज का अत्यधिक दुरुपयोग कर रहे हैं। आज जब अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका में करोड़ों लोग भूख, अल्पाहार और इनके कारण उत्पन्न रोगों से मर रहे हैं वहीं सम्पन्न देशों में लोग अति-आहार और अतिपोषण के कारण रोग ग्रस्त हो रहे हैं। वास्तव में हर अकाल की यह विडम्बना रही है कि कहीं लोग भूख से मर रहे थे तो कहीं ठूंस-ठूंस कर खा रहे थे। सबसे बड़ी विडम्बना यह है कि मानवीयता और सभ्यता की दावेदार इस बीसवीं सदी में भी अकालग्रस्त की अवहेलना का, वही रवैया बरकरार है। आज संसार में ७०-८० करोड़ लोग भयंकर अकाल की लपेट में हैं और इनमें अनुमानतः ५ वर्ष से कम आयु वाले एक करोड़ बच्चे हैं जो निश्चय ही भूखों मर जायेंगे। इसके उपरान्त भी खुशहाल और सम्पन्न देशों में लोग ठूस ठूंस कर खा रहे हैं। अविकसित देशों में प्रति आदमी को औसतन प्रतिवर्ष २०० किलो अनाज के बराबर। आहार मिलता है और अमेरिकावासी को 'प्रतिवर्ष औसतन १००० किलो के बराबर अविकसित देश वाले व्यक्ति आहार को अनाज की शक्ल मेंही प्रयोगमें लाते हैं जबकि अमेरिका आदि देशवासी इस अनाज का एक बड़ा भाग मवेशियों और मुर्गियों को खिला कर मांस और अण्डे की शक्ल में खाता है। अविकसित देशों में मवेशियों को अनाज खिलाने की बात सोची ही नहीं जा सकती। लेकिन विकसित देशों में एक टन मांस प्राप्त करने के लिए ६ टन अनाज मवेशी को खिलाना पड़ता है। यदि विकसित देश अपनी आज तक की व्यवहारिकता में डूबा रहा तो निश्चय ही आने वाले वर्षों में अकाल विकासशील देशों के लिए सबसे बड़ा जीवन सत्य बन जायेगा और अकाल ही सारी राजनीति और कूटनीति का संचालक बन जायेगा। आज वास्तव में अन्न-उत्पादक देश अनाज की कीमतें बढ़ाकर अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार पर अपना शिकंजा कसा रखना चाहते हैं।

रोम में १३० राष्ट्रों का ११ दिवसीय खाद्य सम्मेलन कई सुझावों और प्रस्तावों के साथ समाप्त हुआ। भिन्न-भिन्न देशों के १२५० प्रतिनिधियों ने विश्व की खाद्य स्थिति और विश्व के अनेकों भागों में भूखमरी, कुपोषण और अन्न-उत्पादन की गम्भीर समस्याओं पर विचार व्यक्त किया परन्तु १३० देशों का यह सम्मेलन लक्ष्य प्राप्ति में सफल नहीं हुआ। सम्मेलन भूख से मरते लोगों की तुरन्त जरुरत के लिए अमेरिका सहित बड़े राष्ट्रों को अनाज के भण्डार में ज्यादा भागीदारी के लिए राजी नहीं कर सका। एक करोड़ २० लाख टन अनाज की तुरन्त आवश्यकता के उत्तर में आधे से ज्यादा अनाज की सहायता के आश्वासन भी नहीं मिल सके। अतः विकासशील राष्ट्र रोम की सस्ती बैसाखियों से अगले दस वर्षों में खाद्य परिषद् के प्रयत्नों से भूख की समस्या हल कर लेगा मान लेना बड़ा कठिन है।

रोम में सम्पन्न हुए विश्व खाद्य सम्मेलन ने एक विश्व खाद्य परिषद की स्थापना का भारत का प्रस्ताव पारित कर लिया है। यह सम्मेलन की एक घोषित उपलब्धि है। परन्तु रोम सम्मेलन में समृद्ध राष्ट्रों ने जिस तरह के पैंतरें पेश किए हैं, उन्हें देखते हुए राष्ट्र संघ के तत्वावधान में स्थापित होने वाली इस संस्था की उपलब्धि संदिग्ध है। वास्तव में समृद्ध राष्ट्र यह नहीं चाहते कि उनके अन्नोत्पादन और उसके वितरण पर किसी बाहरी ताकत का कोई असर हो। उनके लिए अन्न मात्र उदर पूर्ति का साधन नहीं है, वह कूटनीति और व्यापार का एक अचूक अस्त्र भी है। अन्य राष्ट्रों के मनोबल की कुन्जी अपने हाथ में रखने और मनोवांछित पैसा बटोरने के लिए ही ये समृद्ध राष्ट्र अपने अन्न-उत्पादन को घटाते-बढ़ाते रहते हैं।

यही कारण है कि वे अपने भण्डारों से भरे हुए अनाज की मात्रा को भी गोपनीय बना कर रखना चाहते हैं। अमेरिकी कृषि मन्त्री अर्ल बुट्ज के कथन से यह बात एक दम साफ हो जाती है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रों के बीच अनाज का लेन-देन यदि द्विपक्षीय आधार पर ही चले तथा विकासशील राष्ट्र अनाज के बटवारे के बजाय उसके प्रचुरोत्पादन पर ज्यादा ध्यान दे तो कहीं अधिक अच्छा है। अतः यह बात भलीभाँति स्पष्ट है कि विकासशील राष्ट्रों को समृद्ध राष्ट्रों की मिट्ठी-मिट्ठी बातों से दिल नहीं बहलाना चाहिए। विश्व खाद्य परिषद् लगड़ों को बैसाखियां दे सकती है, टांगे नहीं। अतः विकासशील और अविकसित राष्ट्रों को अपने पाँवों पर खड़े होने का दृढ़ संकल्प करना चाहिए। परन्तु दुर्भाग्य तो यह है कि गरीब एवं जरुरतमन्द राष्ट्र परस्पर सहयोग प्रदान कर अपने यहां कृषि एवं औद्योगिक क्रान्ति लाने का दृढ़ संकल्प करने के बजाय रोम की अच्छी और सस्ती बैसाखियों की उधेड़-बुन में ही लगे रहे।

विश्व खाद्य सम्मेलन में भारतीय कृषि एवं सिचाई मन्त्री श्री जगजीवनराम ने किसिंजर महोदय के सुझावों का स्वागत करते हुए "अन्तर्राष्ट्रीय खाद्य नीति" की आवश्यकता पर बल दिया। वह यह कहने से भी नहीं चूके कि विकासशील देशों की वर्तमान मुसीबतें विकसित देशों द्वारा ढाए गए उपनिवेशकालीन शोषण के कारण हैं। वास्तव में अफ्रीकी देशों की वाहवाही लूटने के लिए ही श्री जगजीवनराम ने ऐसा स्पष्टीकरण किया क्योंकि वे खुद भारत में शोषण पर आधारित पूंजीवादी समाज व्यवस्था के ही पोषक एवं सरक्षक प्रतिनिधि हैं। उन्होंने आगे कहा कि इसलिए विकसित देशों का कर्त्तव्य है कि वे अपने पिछले कारनामों की एवज में गरीब देशों की सहायता करें कृपा के तौर पर नहीं। भारत की ओर से अन्य विकासशील देशों की सहायता से इस सम्मेलन में कुछ ठोस सुझाव रखे गए। सुझावों परविचार करने के लिए दो कमेटियां बनाई गई है। एक कमेटी विकसित देशों में अन्न-उत्पादन बढ़ाने के उपायों पर विचारकरेगी और दूसरी विश्व में संकट कालीन अन्न सुरक्षा की प्रणाली की रूपरेखा निर्धारित करेगी।

आज वास्तव में गरीब मुल्कों को अन्न-अभाव की अत्यन्त विकट समस्या का सामना करना पड़ रहा है। विदेशियों के अनुसार भारत की खाद्य स्थिति सम्मेलन में, भाग लेने वाले भारतीय प्रतिनिधि मण्डल की अनुमानित बयानी से कहीं ज्यादा नाजुक है। भारतीय प्रतिनिधि मण्डल ने विदेशियों के इन बयानों को कान फेर कर सुना कि अगले एक महीने में ही दस लाख से ज्यादा लोग भारत में भूख से तबाह हो सकते हैं। ऐसी ही गम्भीर स्थिति बांगला देश, श्री लंका, अफ्रीका के कुछ देश और अमरीकी महाद्वीप के कुछ देशों में भी बतायी गयी।

ऐसी स्थिति में प्रश्न यह है कि इस विश्व-व्यापी संकट से निपटने के लिए विशेषकर एशिया, अफ्रीका और दक्षिणी अमेरिका महाद्वीप के देश क्या कर सकते हैं? विश्व खाद सम्मेलन में यह बात एक दम स्पष्ट हो गई कि अन्न-उत्पादक विकसित राष्ट्र अनाज को एक कूटनीतिक हथियार के रूप में अवश्य प्रयोग करेंगे। अतः विपुल प्राकृतिक सम्पदा और विशाल श्रम स्रोत वाले विकासशील और अविकसित राष्ट्रों के सामने इसके सिवाय अन्य कोई विकल्प नहीं है कि वे अपने यहां ऐसी व्यवस्था का सृजन करें जो आधुनिक वैज्ञानिक ढंग अपना कर कृषि पैदावार बढ़ा कर व्यापक औद्योगिकरण का दरवाजा खोल दें जिससे कृषि कार्य से बचे लोगों को उचित रोजगार प्रदान किया जा सके। वास्तव में यह व्यवस्था समता और सामाजिक न्याय पर आधारित समाजवादी व्यवस्था ही हो सकती है जिसमें मानव द्वारा मानव के शोषण अथवा एक राष्ट्र द्वारा दूसरे राष्ट्र के शोषण के लिए कुछ भी स्थान न हो। गरीब दुनियां जब तक समाजवादी समाज व्यवस्था की रचना कर तथा आपस में ताल-मेल स्थापित कर पूरक आर्थिक विकास योजनाओं का अवलम्बन लेकर विकसित राष्ट्रों पर अपनी निर्भरता नहीं खत्म करती तब तक विकसित राष्ट्र अपने औद्योगिक तथा कृषि उत्पादन को शोषण के हथियार के रूप में प्रयुक्त करते रहेंगे।

दुर्भाग्य से गरीब मुल्क जो जिन्दगी और मौत के बीच से गुजर रहे हैं, अपने यहां शोषण पर आधारित व्यवस्था को भारी चट्टान की भांति अपने सीने पर लादे हुए हैं। एक तरफ उनके विशाल सम्पदा का अपहरण कर उनका शोषण विकसित साम्राज्यवादी राष्ट्र कर रहे हैं, दूसरी तरफ उनके देश में स्थिति पूंजीवादी व्यवस्था एवं सत्ता कर रही है। इस तरह गरीब दुनियाँ साम्राज्यवादी एवं पूंजीवादी शोषण की चक्की के दो पाटों के बीच पिस रही है। जब तक गरीब मुल्क अपने यहां से आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक शोषण को खत्म कर तथा अपने आपको एकता के सूत्रों में आवद्ध कर अपना विकास नहीं करेंगे तब तक उनके विपुल प्राकृतिक सम्पदा का अपहरण एवं उनके श्रम का शोषण विकसित राष्ट्र करते रहेंगे और गरीब राष्ट्र खाद्य समस्या की विकरालता, भयंकर बेरोजगारी एवं व्यापक भ्रष्टाचार से मुक्त होकर भौतिक एवं आध्यात्मिक उन्नति की ओर तेजी से अग्रसर नहीं हो सकते हैं।

—गिरजेश्वर

लाठी, गोली और जेल की बैसाखी पर टिकी बिहार की

वहशी सरकार को दफनाओ

कदम-कदम पर जनतंत्र का गला घोंटने वाली कांग्रेस सरकार ने पटना में ४ नवम्बर को जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में होनेवाले प्रदर्शन और घेराव के खिलाफ 'जनतंत्र बचाओ' का नारा देकर सेना तक को सतर्क रहने का आदेश दे दिया। जिस सरकार का 'जनतन्त्र' जनता का विश्वास खो चुका हो उसका जनतन्त्र पुलिस सेना की दमनकारी बैसाखियों का ही सहारा लेगा। क्योंकि वास्तव में इस सरकार को जनतन्त्र वनतन्त्र से कोई सरोकार नहीं है, इसे तो सिर्फ सत्ता से चिपके रहना है। जिस गफूर सरकार को जनता का समर्थन प्राप्त नहीं है उसे प्रशासनिक ताकत पर बचाए रखने की जिद के कारण ही पूरा बिहार राज्य पुलिस छावनी में बदल दिया गया है।

सरकार ने स्पष्ट घोषणा कर दी थी कि चार नवम्बर को पटना शहर में किसी भी तरह के आन्दोलन को बरदाश्त नहीं किया जाएगा। इसलिए पटना शहर को राज्य भर से काट देने की कोशिश की गई थी। ३ नवम्बर की रात से ही पटना हो कर जाने आने वाली ५८ रेलगाड़ियां रद्द कर दी गईं। हर जंक्शन पर आँदोलनकारियों की तलाशी की पुरजोर व्यवस्था की गई। सभी गड़ियों की तलाशी लेकर पूर्ण आश्वस्त होने के बाद ही उन्हें आगे बढ़ने दिया जाता था। गंगा के दोनों किनारों पर सुरक्षा के उपाय के नाम पर पुलिस बिछा दी गई थी। जलमार्ग से पटना पहुंचनेवालों की रोकथाम के लिए पुलिस की विशेष गश्ती-नावें चलाई जा रही थीं। न सिर्फ पटना शहर के बाहर बल्कि पटना शहर में भी इस तरह की रोकथाम के लिए घनी आबादी वाले इलाकों तक में लकड़ी के दरवाजे तैयार किए गए हैं, जिनको जब चाहें बन्द करके शहर के एक हिस्से को दूसरे हिस्से से काटा जा सकता है। पटना शहर को पुलिस से इस तरह सजाया गया था कि उसकी गिरफ्त से आन्दोलन-कारी तो क्या एक चींटी भी निकल नहीं सकती थी। पूरे शहर को ७ हिस्सों में बांटा गया, प्रत्येक हिस्से के उच्चाधि-कारी को वायरलेस की एक वैन सहित सशस्त्र पुलिस की एक टुकड़ी दी गई। पुलिस की गश्त के लिए शहर को १० हिस्सों में बांटा गया, हर हिस्से में एक मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया। हाथों हाथ अध्यादेश जारी करके मजिस्ट्रेटों को विशेष अधिकार भी दिये गये।

आन्दोलन के खिलाफ सभी जिलों में हवाई जहाज से पर्चे बरसाये गए। इन पर्चों में जनता को चेतावनी दी गई कि वह पटना से दूर रहे। पटना आनेवाली सड़कों पर ३५ चेक पोस्ट बनाये गये जो आने जाने वाली गाड़ियों के यात्रियों की पूरी तलाशी लेती थी।

राज्य और केन्द्र सरकार के दफ्तरों में कर्मचारियों को पहले दिन से ही परिचय पत्र दे दिए गए जिससे कि कोई 'खतरनाक' व्यक्ति दफ्तर में घुस नहीं सके। सचिवालय; मन्त्रियों और विधायकों के घरों की पूरी सुरक्षा की व्यवस्था की गई। विश्वविद्यालय का इलाका- हवाई अड्डा, टेलीफोन केन्द्र, बस स्टैण्डों और अखबारों के दफ्तरों तक पुलिस का कड़ा पहरा बैठाया गया। पटना से आठ दस मील दूर तक पुलिस की घेराबन्दी करके पटना को आन्दोलनकारियों से बचाने की हर सम्भव कोशिश की गई। कानून- व्यवस्था की आड़ में पूरा शहर १४४ धारा की गिरफ्त में था - उत्तरी बिहार को पहले ही पूरे राज्य से काट दिया गया। गंगा में नावों और स्टीमरों का चलना तक रद्द कर दिया गया।

पटना आनेवाले लोगों को जगह जगह रोका गया। कहीं-कहीं तो उनके दस्तों को रास्ते में गिरफ्तार करके अज्ञात स्थानों पर छोड़ दिया गया। घेराव वाले दिन के पहले ११ हजार लोगों को गिरफ्तार किया गया। उनको रखने के लिए सरकार के पास जेल की चारदिवारियां भी खत्म हो गयीं तो उन्हें खुले मैदान में पुलिस के पहरे में छोड़ दिया गया। शरद की शीत लहरियां कँपाती रहीं पर उन्हें देने को कंबल नहीं था, उनके खाने-पीने की व्यवस्था भी नहीं थी।

इतने बड़े पैमाने पर सरकारी बन्दोबस्त के बावजूद पटना शहर में ४ नवम्बर को एक विराट जुलूस निकला। सरकारी नाके बन्दी के बावजूद लाखों लोग पटना की सड़कों पर मार्च करते हुए देखे गए। पटना शहर पूरा रणस्थल में बदल गया। सभी प्रकार की पुलिस व्यवस्था को तोड़ कर जब लाखों का जन-समुदाय आगे बढ़ा तो पुलिस ने उनपर अश्रुगैस के गोले छोड़े तथा लाठीचार्ज किया। मुख्यमन्त्री गफूर की दम्भी घोषणा के बावजूद, कि जो लोग जनतांत्रिक व्यवस्था के लिए 'खतरा' पैदा करेंगे उन्हें कुचलने के लिए सरकार हर वक्त तैयार रहेगी, मैं राजधानी में किसी भी प्रकार के जमघट को बरदास्त नहीं करूंगा", उन्हीं की

नाक के नीचे लाखों लोगों का जुलूस निकला, प्रदर्शन हुआ, अर्थमन्त्री दरोगाप्रसाद राय के घर का पांच घंटे तक का घेराव किया गया, जिसका, नेतृत्व जयप्रकाश नारायण ने किया। इसके जवाब में सरकारी मशीन ने खुलकर दमन किया। फिर भी आन्दोलनकारियों ने प्रशासन की हर घेराबन्दी को तोड़कर पूरे शहर का चक्कर लगाया। प्रदर्शनकारियों से भरी एक बस दारोगाराय के घर के सामने पहुंची तो जयप्रकाश नारायण भी लपक कर उसमें चढ़ गये तथा घोषणा की कि जहां इन्हें ले जाया जा रहा है वहीं मुझे भी ले चलो। लेकिन अधिकारियों की हिम्मत नहीं हुई क्योंकि जयप्रकाश की गिरफ्तारी के अन्जामों से वे परिचित थे और उन्हें ऊपर से आदेश भी नहीं था कि वे श्री नारायण को पकड़ें। जयप्रकाश नारायण को भी हल्की हल्की कई चोटें आईं, उनके कपड़ों पर जगह-जगह खून के धब्बे थे। पटना में सबेरे ३ घण्टे तक प्रशासन तथा जनता का युद्ध चलता रहा। बड़े आक्रोश के साथ जयप्रकाश ने कहा—ये लोग जनता का नमक खाते हैं और उन्ही से जानवरों सा व्यवहार कर रहे हैं।

गांधी मैदान में सभा न करने देने के लिए पुलिस ने कड़ी घेराबन्दी की थी। लेकिन निश्चत समय पर आन्दोलनकारियों की भीड़ चारो तरफ से उमड़ पड़ी। पुलिस ने खूब लाठी चार्ज किया फिर भी गाँधी मैदान में ५००० लोग जमा हो गए तथा जलूस बनाकर सचिवालय की ओर चल पड़े। पुलिस का दमन एक ओर चलता रहा, जुलूस भी दूसरी ओर चलता रहा।

लेकिन पुलिस ने आन्दोलनकारियों को पीटने में कोई कसर नहीं उठा रखी। पुलिस की ऐसी बर्बरतापूर्ण दमनकारी कार्यों के खिलाफ ५ नवम्बर को 'पटना बन्द' तथा ६ नवम्बर को बिहार बन्द का आह्वान किया गया। दोनों दिन की हड़ताड़ को जनता का पूरा समर्थन मिला। सब्जी बाजार के अलावा सभी बाजार बन्द रहे। सारे व्यापारिक कार्यक्रम ठप्प रहे। इस दिन पटना हाईकोर्ट के वकीलों ने पुलिस अत्याचार के प्रतिवाद में कोर्ट का बायकाट किया। वकीलों के अभाव में जज सिर्फ कुर्सी पर बैठने जितना ही सरकारी आदेश निभा सके। पूरा कोर्ट इलाका निस्तब्ध रहा।

इस तरह बिहार की जनता ने सरकार विरोधी जन आन्दोलन को सक्रिय सहयोग देकर गफूर सरकार के प्रति अपनी सम्पूर्ण अनास्था जाहिर की। वह दिन दूर नहीं जब जनता का यही आक्रोश इस वर्तमान वहशी सरकार को दफन करने के लिए पूरी तरह से तैयार हो जाएगा।

पूरे आन्दोलन की वर्गीय दृष्टिकोण से व्याख्या की जाए तो यह स्पष्ट हो जाएगा कि जनता में वर्तमान भ्रष्ट जनविरोधी नौकरशाही पर आश्रित सरकार के प्रति उभरे संग्रामी तेवर को यह आन्दोलन स्वर अवश्य दे रहा है लेकिन जयप्रकाश नारायण के पास अभावग्रस्त शोषित जनता को उन मौलिक समस्याओं से छुटकारा दिलाने के लिए कोई स्पष्ट विकल्प कार्यक्रम नहीं है जिनको २७ वर्षीय कांग्रेस सरकार ने पैदा किया है। इसलिए आन्दोलन के नेता जयप्रकाश नारायण को चाहिए कि वे वक्त की आवाज को पहचानें, जनता के आक्रोश का उपयोग करते हुए विधान सभा भंग, मंत्रीमण्डल भंग आदि माँगों के साथ मेहनतकश जमात की आर्थिक सामाजिक मांगों को भी जोड़ें जिससे कि सरकार द्वारा लागू जनविरोधी वसूली कार्यक्रम, वर्तमान वितरण व्यवस्था से उत्पन्न भुखमरी तथा मजदूर वर्ग विरोधी वेतन जाम कानून को विफल किया जा सके। परन्तु ऐसा अवसरवादी और प्रतिक्रियावादी तत्वों को अलग कर ही किया जा सकता है। क्योंकि ये दल किसी भी कीमत पर इन जनवादी कदमों का समर्थन नहीं करेंगे। आज ये दल आन्दोलन में हिस्सेदार है क्योंकि वे भी जनता के आक्रोश में बहती गंगा में हाथ धोना चाहते हैं। लेकिन एक सच्चा प्रगतिशील जनतांन्त्रिक मोर्चा तैयार करने के लिए इन दलों से अलगाव आवश्यक है। दक्षिणपंथी कम्युनिष्टों ने कांग्रेस के साथ मिलकर जनतन्त्र बचाओ का नारा देकर सरकार का हाथ मजबूत करना चाहा है। उसके इस कृत्य के लिए देश की जनवादी एवं प्रगतिशील शक्तियाँ इस दल की देशहित विरोधी नीतियों की प्रबल भर्त्सना करती हैं।

—साभार स्वाधीनता

(पृष्ठ १३ का शेषांश)

भी कहा था —"सच्चा वैज्ञानिक निष्ठावान प्राणी होता है। वह प्रकृति की लीलाओं का उद्घाटन करता है और उसके वैचित्र्य से मुग्ध हो कर परमसत्ता अर्थात् ईश्वर की अनुभूति करता है।"

साहित्य, विज्ञान व धर्म के समन्वय में ही मानव का कल्याण निहित है। यदि धर्म हमें 'वसुधैव कुटुम्बकम्' का पाठ पढ़ायेगा तो साहित्य उसे ग्राह्य और रुचिकर बनाकर उद्भ्रान्त मानवता के विमल अन्तस्थल में सत्य की ज्योति जलायेगा, आत्महतों को संजीवन प्रदान करेगा और विज्ञान उसे क्रियात्मक रूप देकर ऐसा वातावरण उपस्थित करेगा जिसमें मनुष्यमात्र सुख तथा शान्तिमय जीवन व्यतीत कर आनन्दपूर्वक रह सके। साहित्य व धर्म के बिना कोरा विज्ञान दानव बन सकता है, विज्ञान व धर्म के अभाव में कोरा साहित्य प्रलाप होगा, विज्ञान व साहित्य के बिना कोरा धर्म पाखण्ड बन जायेगा। तीनों का उचित सामञ्जस्य ही मानवता का संजीवन है।

महर्षि दयानंद के शिक्षा सम्बन्धी क्रान्तिकारी विचार

योगेन्द्र पुरुषार्थी

दीपावली के अवसर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती का निर्वाण दिवस मनाते हुए सबसे उपयुक्त सामयिकी श्रद्धाञ्जली यही होगी कि हम उनके निर्णित सार्वभौम वैदिक सिद्धान्तों को स्पष्टतया समझ कर विश्व में विकसित करने का सतत प्रयास एवं क्रांतिकारी कार्यक्रम तैयार करें। जहाँ तक सुधार के विषयों का पक्ष है। यह निर्विवाद सत्य है कि सहस्रों वर्षों से जिन विषयों को भारतीय सुधारकों ने उपेक्षित किया हुआ था या कहें कि स्वल्प प्रतिभा से उनकी सूक्ष्मता को समझ न सके थे, उन समाजोपयोगी सिद्धान्तों को ऋषिवर ने प्राचीन आर्ष साहित्य द्वारा तथा सामाजिक दुर्दशा को को देखकर प्रखर प्रतिभा से समझकर उनके यथासम्भव हल निकालने का पूर्ण प्रयास किया। इसके लिए आवश्यक है कि हम उनके जीवन के अनुभूत विषयों को मनन कर समाज में कार्यान्वित करें।

वैसे तो देवदयानन्द ने मूर्तिपूजा उन्मूलन, एकेश्वरवाद, वर्णव्यवस्था, जीवितपितृश्राद्ध, पञ्चमहायज्ञ, विधवा विवाह, स्वदेशी राज्य आदि अनेकों महत्त्वपूर्ण विषयों की ओर आजीवन दिग्भ्रान्त जनता जनार्दन को सत्यवैदिक पथ से आलोकित किया है जिनकी आवश्यकता वर्तमान समाज अनुभव करता हुआ भावी समय में अवश्य अपनायेगा। परन्तु तात्कालिक जो विचारधारा गणमान्य नेताओं को तथा समूचे समाज को व्यथित कर रही है वह है-शिक्षा व्यवस्था।

श्रीमती इन्दिरा गान्धी अनेकों स्थानों पर विचार व्यक्त करते हुए तथा तत्सम्बन्धी पत्रों का उत्तर देते हुए कई बार स्पष्ट कह चुकी है कि "शिक्षा प्रणाली में सुधार अवश्यम्भावी है इसके उपयुक्त विचार करने के लिए विरोधी पक्ष से भी मैं बात करने को तैयार हूँ" साथ ही यह भी चाहती हैं कि ऐसी शिक्षा प्रणाली हो जो वर्तमान व्यवस्था से श्रेयष्कर हो। इन नेताओं के विचार का क्या स्तर होगा, यह नहीं कहा जा सकता, परन्तु हम देशवासियों का भी कर्त्तव्य है कि वर्तमान् युग के मूर्धन्य प्रवर्त्तक युगनिर्माता, महान्‌योगी तार्किक, आत्मनिष्ठ, सत्यासत्यविवेकी, भविष्य द्रष्टा महर्षि दयानन्द के उपदेशों का भी हम दिग्दर्शन करें कि इस सम्बन्ध में वे क्या विचार सारणी प्रस्तुत कर गये हैं? उनका अनुगमन करना हमारा सामाजिक कर्त्तव्य है। क्योंकि दीपावली के पर्व पर उन्होंने इस नश्वर पञ्च भौतिक शरीर को त्यागते हुए आदेश दिया था कि "आर्यो! खिड़की खोल दो और मेरे पीछे हो जाओ।" इस निर्देश पर गम्भीरता से यदि हम विचार करें तो यही निष्कर्ष होगा कि हम आपसी मतभेद को त्यागकर विशाल अन्तःकरण से दिव्य दयानन्द के सद्-विचारों का आजीवन परिपालन करना अपना मुख्य कर्त्तव्य समझें।

ऋषिवर अमरग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश के तृतीय सम्मुलास में एक उत्कृष्ट शिक्षा पद्धति का उल्लेख करते हुए लिखते हैं—कि "सबको तुल्य वस्त्र, खानपान, आसन, दिये जायें, चाहे वह राजकुमार वा राजकुमारी हो चाहे दरिद्र के सन्तान हों; सबको तपस्वी होना चाहिए।"

इस कथन से स्पष्ट हो जाता है कि देवदयानन्द सामाजिक व्यवस्था में विशेष परिवर्तन चाहते थे। अमीर गरीब को एक कोटि पर लाकर अर्थात् समान स्तर से बौद्धिक उन्नति के विकासशील साधनों को उपलब्ध कराकर योग्यता एवं पुरुषार्थ के बल पर प्रत्येक को जीवन में अग्रसर होने का अवसर प्रदान करना चाहते थे। वे जानते थे कि जब तक समाज में उन्नति के साधनों का समान अवसर नहीं मिलेगा तब तक प्रत्येक नागरिक की प्रतिभा का पूर्ण विकास नहीं हो सकेगा, न बन्धुत्व की भावना जागेगी, न राष्ट्रभक्ति का अभ्युदय सम्भव है।

परन्तु आज राष्ट्र में इस समता की सामाजिक व्यवस्था का अभाव है। हम साक्षात् देख रहे हैं कि देश में असह्य विषमता का ऐसा खुला ताण्डव नृत्य हो रहा है, कि कौन सहृदय इसकी अनुभूति कर व्यथित न होगा। देश के जिन धनीमानी माता पिता के पास मनमाना व्यय करने को पैसा है वे अपने बच्चों को प्रारम्भिक शिक्षा के लिए हजारों रुपये प्रतिमास शुल्क देकर 'कान्वेन्ट स्कूल्स' में पढ़ने के लिए भेजते हैं जहां उन्हें आधुनिकतम सुख सुविधाओं में पाला जाता है। कालेज में पढ़ने वालों के लिए कार से आने जाने का प्रबन्ध रहता है जो जीवन में अभाव नाम की वस्तु नहीं जानते। इनके एक-एक क्रियाकलाप के लिए न जाने कितने गरीब बच्चों को पीछे फेंक दिया जाता है या उपेक्षित रखा जाता है जिनके पास पेट भरने के लिए मांगने से बचा हुआ समय पढ़ने के

लिए नहीं है। तन से नंगे, भरपेट भोजन न पाने से आंखे धसी हुई और उभरी हुई पंसली, बेहाल घूमते फिरते हैं। भला जिसकी जीवनदायक आवश्यकीय आवश्यकताओं की पूर्ति न हों, वह आरामदायक तथा विलासतादायक आवश्यकताओं की पूर्ति को सोच भी नहीं सकता। एक ओर तो प्राण घातक तपस्या बलात् हो रही है, दूसरी ओर सुख सुविधाओं के बीच लालन-पालन जिन्हें पता भी नहीं कि तपस्या कैसे की जाती है।

इतनी विषमता के वातावरण में समाजवाद का झूठा उद्घोष करने वाले नेता यदि सोचें, कि देश में सुख बढ़ रहा है; लोगों में सम्पन्नता आ रही है, देश विकास कर रहा है तो यह केवल विडम्बना मात्र होगी। क्योंकि वास्तविकता कैसे ओझल की जा सकेगी। यह स्पष्ट प्रतीत हो रही है कि यदि यही विषमावस्था नवयुवकों की रही तो कभी भी सामाजिक एकता, पारस्परिक प्रेम तथा राष्ट्रप्रेम पनप नहीं सकते। साथ ही शिक्षा की आवश्यकता के लिए देवदयानन्द प्रबल शब्दों में लिख रहे हैं कि—"राजनियम और जातिनियम होना चाहिए कि पांचवें अथवा आठवें वर्ष से आगे कोई अपने लड़के और लड़कियों को घर में न रख सके, पाठशाला में अवश्य भेज देवे, जो न भेजे वह दण्डनीय हो।" क्या वर्तमान व्यवस्था से कभी शिक्षा आवश्यक की जा सकती है, प्रचलित करने पर लाभ भी क्या होगा।

अतः यदि हम चाहते हैं कि देश के नवयुवक योग्य हों, अपने पूर्वजों के समान त्यागी तपस्वी बनें, विद्या-प्राप्त कर अपनी प्रतिभाओं का खुलकर विकास कर सकें, नवीन-नवीन अन्वेषणों को करके हमारा देश संसार की दृष्टि में पुनः गुरु पद पर आसीन हो तो स्वयं निश्चय करके कटिबद्ध होना पड़ेगा, साथ ही प्रशासकों को बाधित करना होगा कि इस समुन्नत करने वाली शिक्षा पद्धति को देश में समानता से संचालित करके राष्ट्र को विविध अनिष्टों एवं तात्कालिक समस्याओं से मुक्त करें।

यह तथ्य है कि जिस समय यह व्यवस्था सर्वतोभावेन समाज में प्रचलित होगी तो इससे सम्बन्धित अनेकों समस्याओं का समाधान स्वतः हो जाएगा। जैसे—आचार्य उदारमना अपने छात्रों के शारीरिक, बौद्धिक एवं आत्मिक विकास के सर्वेसर्वा होंगे तो छात्र भी समर्पण भाव से गुरुओं का आदर करेंगे, क्योंकि गुरुओं का चयन भी गुण कर्म स्वभाव के आधार पर योग्यतानुसार होगा, भाई भतीजावाद या रिश्वत से नहीं। साथ ही हड़तालें भी बन्द होंगी।

२. रुचि अनुकूल पाठ्यक्रम अपनाने से रुचि अनुसार ही व्यवसाय होगा जिससे अयोग्यतावाद का नाश होकर, कार्यदक्ष बन सकेंगे।

३. कन्याओं तथा कुमारों की पाठशालाएं पृथक् २ होने से चारित्रिक दोष न आवेंगे।

४. निःशुल्क शिक्षा होने पर, शिक्षित व्यक्ति समाज का होगा, माता पिता का नहीं अतः उसको योग्यतानुसार कार्य देना भी सामाजिक व्यवस्थापकों पर ही निर्भर होगा।

५. वैवाहिक सम्बन्ध भी गुरुओं की देखरेख में होने से दहेज प्रथा का विनाश होगा।

६. जीवन निर्माण काल में समानस्तर से रहने के कारण शेष जीवन में भी घृणा की भावना कम होकर धीरे-धीरे ऊंच नीच के भाव भी समाप्त हो जायेंगे।

७. समता में पले हुए देशवासी आगे जीवन में भी अन्यों का शोषण करने में प्रवृत्त न होंगे।

८. इस पद्धति से शिक्षा आवश्यक हो सकती है और माता पिता को दण्डित करना भी उचित होगा।

९. विद्यार्थी का पत्रव्यवहार के द्वारा भी माता-पिता से सम्पर्क न रहने से संसारी चिन्ताओं से मुक्त होकर विद्योन्नति भली भांति हो सकेगी।

१०. भावी प्रशासक देश की समस्याओं को समभाव से विचार सकेंगे।

पाठक वृन्द! क्या हम प्रत्यक्ष रूप से विचार नहीं सकते कि यदि इस समता की शैक्षणिक व्यवस्था को बाल्यावस्था से ही प्रश्रय मिलेगा तो सारा समाज योग्यतानुसार समता पर खड़ा होगा। इसी को हम वैदिक समाजवाद कहेंगे। यह पद्धति समाजवाद की मूल होगी। भला समाज में इतनी समानता व्यवहृत होने पर, शेष भी विषमतायें समता में लानी सरल होंगी।

महर्षि दयानन्द का उद्देश्य था— कि देश में भाषा, वेष, धार्मिकता में एकता हो जो सुख शान्ति की मूल हैं, यह भी इसी पद्धति से सम्भव है। इसी विधि से वेद के सार्वभौम उत्कृष्ट सिद्धान्त का पालन भी सुलभ होगा।

"समानो मन्त्र समितिः समानि समानं व्रतं सह चित्तमेषाम्।
समानेन वो हविषा जुहोमि समानं चेनो अभिसंविशध्वम्॥
अथर्व० ६ ६७।२

यह शिक्षा विषयक भावना थी देवदयानन्द की। यह योजना थी सामाजिक व्यवस्था की। इसको दृष्टि में रखकर यदि शिक्षाधिकारी कोई निर्णय करते हैं तो वह स्थायी होगा, नहीं तो नवीन २ समस्यायें सभी को व्यथित करती रहेंगी तथा शिक्षा विषयक दुष्परिणाम सभी को भोगने पड़ेंगे।

लहू की लालिमा से–

बुझते हुए चिराग रोशनी मांग रहे हैं !

o जयदेव अनल

जन-जीवन में हर्षोल्लास का आलोक भरने वाला पर्व आ गया है। झिलमिलाते पंक्तिबद्ध दीपक देखकर कभी कभी ऐसा लगता है, मानो देश से दुःख, दारिद्र्य सदा सर्वदा के लिए समाप्त हो गया हो। रंग-बिरंगी रोशनियों की जगमगाहट देखकर एक क्षण के लिए यह विश्वास नहीं हो पाता कि देश एक भयंकर संक्रमण काल से गुजर रहा है।

लाखों, करोड़ों रुपया बेईमानी, मक्कारी और धोखाधड़ी से बटोरने वाले लोगों के लिए तो यह त्योहार विशेष महत्व का होता है। निर्धनों को लूट कर अर्जित की गई दौलत को वे 'लक्ष्मी की देन' कहकर अपने को सौभाग्यशाली समझते हैं। अपनी शानोशौकत का प्रदर्शन करने के लिए ऐसे लोग एक दिन में सैंकड़ों रुपये व्यय करके अपने घरों को सजाते हैं। उन्हें डर होता है कि यदि दीपावली के दिन घर की सजावट में तनिक भी कमी हुई तो लक्ष्मी रुष्ट होकर चली जाएगी। इस काल्पनिक लक्ष्मी को प्रसन्न करने के लिए वे इस दिन 'दान-धर्म' भी करते हैं। अपनी अथाह धन-सम्पत्ति में से अञ्जली भरकर कुछ सिक्के वे गरीबों की झोली में भी डाल देते हैं। यह बात और है कि उनकी नजरों में गरीब वे ही लोग होते हैं जो हमेशा उनके आगे-पीछे लगकर उनकी जी हुजूरी करते हैं। सुबह-शाम मन्दिर में घण्टे-घड़ियाल हिलाकर सारे दिन दुर्व्यसनों में फँसे रहनेवाले 'गरीब पण्डे-पुजारी' दो 'आशीर्वादात्मक वचन' कह कर इन धन-पतियों के कृपा-भाजन हो जाते हैं।

एक ओर तो इन सम्पन्न लोगों और इनके दलालों की दिवाली है तो दूसरी ओर देश के शेष ४० करोड़ इन्सानों की दीवाली है। खुले आसमान के साए में पथरीली धरती का बिछौना बिछाये मानव दूर तक फैले हुए अन्धेरे को अपने बाहुपाश में जकड़ कर पड़ा रहता है। उसके दिल में किसी भी लक्ष्मी की कल्पना नहीं है। उसकी अपनी गृह-लक्ष्मी विपन्नता को अपने आंचल में समेट कर गृह-विहीन होकर फुटपाथ पर पड़ी सिसक रही है।

लोग कहते हैं कि आज से हजारों वर्ष पूर्व मर्यादा-पुरुषोत्तम श्री राम अपने शत्रु रावण पर विजय प्राप्त कर अपने घर को लौटे थे। अपने हृदय-सम्राट के लौटने की खुशी में अयोध्या की जनता ने घी के दिए जलाये थे। स्वयं बाल्मीकि ने राम-राज्य को एक आदर्श राज्य माना है। उन्होंने स्वीकार किया है कि राम के राज्य में निर्धन से निर्धन नागरिक के पास भी सोने के आभूषण होते थे। अतः उस युग में दिवाली मनाना कोई विशेष महत्व नहीं रखता था। पर आज के समय में जबकि देश का आवाम भूख से छटपटा रहा है, क्या यह उचित है कि देश के मुट्ठी भर लोग अपनी बेइन्तहा दौलत और झूठी शान का प्रदर्शन करने के लिए खुशियां मनायें ?

किसका दिल नहीं पसीजेगा वह दृश्य देखकर जबकि एक घर का आङ्गन तो रंग-बिरंगी रोशनियों से जगमगा रहा हो और उसी के ठीक सामने एक टूटे-फूटे झोंपड़े में एक दीपक भी न जल सका हो ? एक ओर तो कल्पना की देवी लक्ष्मी की पूजा के नाम पर थालों के थाल भरकर मिष्ठान्न लाया जा रहा हो और दूसरी ओर एक दरिद्र के घर की जीवित लक्ष्मी एक मुट्ठी अनाज के लिए अपने सम्मान का सौदा कर रही हो ? सचमुच दीपावली के दिन धनवानों के बालकों को पटाखे चलाते देखकर ऐसा लगता है, जैसे वे इन पटाखों के शोर से निर्धन बालकों के मुंह से निकलती आहों को दबाने का प्रयास कर रहे हों।

स्वतन्त्रता के २७ वर्षों के पश्चात् निर्धन और पूंजीपति के बीच का यह जमीन-आसमान का अन्तर विचारणीय है। बावजूद इसके कि नेहरू से लेकर इन्दिरा तक सभी ने समाजवाद की बात कही है। आज जब छह लाख की विदेशी कार में घूमने वाला देश का राष्ट्रपति और वातनुकूलित भवनों में निवास करने वाले अन्य नेता लोग सभामंचों पर समाजवाद की बात करते हैं, तो लगता है जैसे कोई बगुला भोली मछलियों का शिकार करने के लिए अपनी एक टांग उठाकर 'राम-राम' का जाप कर रहा हो।

लोग चिल्लाते हैं–दिवाली आयी !...दिवाली आयी !! पर मैं पूछता हूं – किसकी दीवाली आयी ? क्या रोटियों की याद में आंसू बहाने वाला गरीब इस दिवाली को मनाने में सक्षम होगा ? क्या सुबह से शाम तक मेहनत करने के फलस्वरूप भी अपने मासूम बच्चों का पेट न पाल सकने वाला

मजदूर मंहगाई के इस युग में दीवाली मना सकेगा ? वास्तव में तो उसके लिए न कोई दिवाली है और न ईद ! भला भूख खाकर और आंसू पीकर जीवन बसर करने वाले लोग भी कभी अपने जीवन में बहारें देख सकते हैं ? आज की दिवाली वस्तुतः उन खटमलों की दिवाली है जो जिन्दा आदमी का खून पी-पीकर उसे मौत की नींद सुलाने के पश्चात् उसकी कब्र पर फातिहा पढ़ने का स्वांग रचते हैं । आज आवश्यकता है ऐसे लोगों को पहचानने की, जो "राम राज्य" के नारे लगाकर रावण की भूमिका निभा रहे हैं । जिस विजयादशमी पर देश के करोड़ों राम इन गिने-चुने रावणों को भस्मीभूत करके अपनी स्वयं की सत्ता कायम करने के लिए कमर कस लेंगे, उस दिन फुटपाथों पर बेघरबार और वस्त्रहीन होकर बुझने की प्रतीक्षा कर रहे कोटि-कोटि दीपक स्वयंमेव ही प्रज्वलित हो उठेंगे । उस दिन हर घर में रोशनी होगी, हर देशवासी की आत्मा में ज्ञान का प्रकाश होगा और कोई भी आदमी भूख से नहीं मरेगा । पर इस सब के लिये आज टिमटिमाते हुए लाखों-करोड़ों दीपकों को एक मशाल का रूप लेना होगा । दहकाना होगा एक ऐसा ज्वालामुखी जिसपर झूठे नारों की आँधियों और कभी पूरे न होने वाले वायदों का तनिकभी प्रभाव न पड़ सके । तब और और केवल तब ही, हम अपने स्वप्नों के समाज का निर्माण कर सकते हैं ।

दहेज एवं जाति-प्रथा-उन्मूलन के लिए अनुकरणीय कदम

दहेज का रोग हमारे समाज में बहुत भीतर तक फैल चुका है । इसने एक सीमा तक समाज और राष्ट्र की जड़ों को भी खोखला बना दिया है । देश की अनेक युवतियों तथा युवकों को इस कुप्रथा का शिकार होना पड़ रहा है । आये दिन समाचार पत्रों में दहेज प्रथा के कारण विवाह सम्बन्धों के टूटने और युवक युवतियों द्वारा आत्महत्या करने के समाचार छपे रहते हैं । जिस तरह मेलों में जानवरों के सौदे होते हैं, उसी तरह विवाह के अवसरों पर लड़के और लड़कियों की बोलियां लगायी जाती हैं । दुःख तो इस बात का है कि प्रत्यक्षतः अनेक कानून बनाकर भी व्यवहार में हमारी सरकार ने इस बीमारी के इलाज के लिए कोई कार्यक्रम नहीं बनाया है । आज स्वयं बड़े-बड़े नेता लोग तथा सरकारी अधिकारी इन कानूनों की धज्जियां उड़ा रहे हैं । होना यह चाहिए था कि आजादी के पश्चात् इस रोग का सख्ती के साथ खात्मा किया जाता, पर सरकार ने इस दिशा में शर्मनाक भूमिका निभायी है !

आर्य-समाज ने अपने जन्म-काल से ही इस कुप्रथा के विरुद्ध आवाज उठायी है । यद्यपि आज भी वह अपनी परम्परा को अक्षुण्ण बनाये रखने का प्रयास कर रहा है, पर वांछित परिणाम अभी निकलने शेष हैं । इस सबके लिये आर्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को पैसे के प्रति 'अनावश्यक-प्रेम' और सरकारी प्रभाव से बचने की प्रवृत्ति को यथासम्भव त्यागना होगा । अपना स्वतन्त्र अस्तित्व स्थापित करने के लिए आर्य समाज को इस, और इसजैसी अनेक सामाजिक कुरीतियों के निवारण के लिए आन्दोलनात्मक मार्ग अपनाना होगा ।

पिछले दिनों हमारे सामने कुछ ऐसे उदाहरण आये हैं और इस तरह के कुछ पत्र भी कार्यालय में आते रहते हैं, जिन्हें पढ़कर आर्यसमाज के सिद्धान्तों के प्रति कुछ भाई-बहनों के दिलों की तड़प स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है । इस सन्दर्भ में एक पत्र ग्राम-जुलान जिला हिसार (हरयाणा) की श्रीमती मायारानी कादयान ने लिखा है । बहिन मायारानी जी ने अपने डाक्टर (एम० बी० बी० एस०) पुत्र का बिना किसी तरह का दहेज लिए विवाह करने का निश्चय किया है । अपनी पुत्र वधू के लिए जाति, मजहब आदि का भी बन्धन नहीं लगाया है । उन्हीं के शब्दों में—"लड़की स्वस्थ, सुन्दर, सुशील तथा एम. बी. बी. एस. अथवा एम. ए. तक शिक्षा प्राप्त हो । किसी भी मजहब (हिन्दू, सिख, ईसाई, मुसलमान) अथवा जाति की हो, पर चरित्रवान एवं "आर्य" बनने के लिए तैयार होनी चाहिए ।" स्मरण रहे कि बहिन मायारानी जी के सुपुत्र मैडिकल कॉलिज रोहतक में जूनियर डॉक्टर (Junior Doctor) के पद पर सेवारत हैं ।

इसी तरह का एक अनुकरणीय उदाहरण हिन्डौन (राजस्थान) निवासी युवक श्री हरिचरण सिंहल ने प्रस्तुत किया है । आप एम. कोम. (M. Com.) तक शिक्षा प्राप्त कर चुके हैं । आर्य युवक परिषद् जयपुर के भूतपूर्व अध्यक्ष होने के साथ-साथ आप एक सजग पत्रकार के रूप में भी अपना नाम कमा चुके हैं । आजकल श्री सिंहल गंगापुर सिटी के इन्दिरा महाविद्यालय में व्याख्याता के पद पर आसीन हैं । आपने भी परिवार की जन्म-गत रूढ़ियों से संघर्ष करते हुए बिना किसी भी तरह का दहेज लिए विवाह करने का निश्चय किया है । समाज में रहकर, समाज में व्याप्त रूढ़ियों और अन्धपरम्पराओं के प्रतिरोध में संघर्ष की भावना को जाग्रत करने वाले इन कदमों का हम स्वागत करते हैं । साथ ही आशा करते हैं कि अन्य युवक तथा आर्य-जन भी इनका अनुकरण करके समाज को एक नई दिशा प्रदान करेंगे ।

—अग्निवेश

थाईदेश में भगवान वेद का शुभागमन

० श्री साक्षी

टिप्पणी :—श्री साक्षी जी द्वारा लिखित इस लेख से थाईदेश निवासियों की वेदों में अटूट श्रद्धा की स्पष्ट झलक मिलती है। अतः आर्य विद्वानों का पुनीत कर्त्तव्य है कि वे इन्हें वेदों के सही अर्थों का दिग्दर्शन करायें जिससे वेद मन्त्र थाईदेश में धार्मिक कृत्य तथा कर्मकाण्ड तक ही सीमित न रह जाये। महर्षि दयानन्द के आगमन से पूर्व वेद मंत्रों की अपौरुषेयता एवं उसकी उपयोगिता संदिग्ध थी। परन्तु उन्होंने वेद मन्त्रों का सही अर्थ कर, लोगों के भ्रम मिटा दिए। अतः महर्षि द्वारा निर्धारित वेदभाष्य विधि का अवलम्बन करही मनुष्य वेदों द्वारा लाभ प्राप्तकर सकता है। वेद की पुस्तक एवं उसके मंत्रों के उच्चारण मात्र से किसी भी देश का भला नहीं हो सकता है।

इस अत्यन्त प्राचीन देश, शामदेश में, जो सप्त वैदिक ऋषियों में से एक का देश था, भगवान वेद का शुभागमन हुआ है। महान वैदिक वामदेव ब्राह्मण-कुल के वंशज होने के नाते, मैं प्राचीन ज्ञान और श्रुति के इस दीर्घकाल-से लुप्त भण्डार का स्वागत करते हुए अत्यन्त प्रसन्न हूँ।

इन भाव विह्वल शब्दों में, तथा सजल नेत्रों से थाई-देश के नरेश अतुल्यतेज भूमिपाल रामनवम् के राजगुरू वामदेव ने १२ की दुपहर को भारतीय राजदूत महामहिम श्री रमेश भण्डारी के करकमलों से गुरु गंगेश्वर चतुर्वेद संस्थान तथा भारत के महामंडलेश्वर स्वामी गंगेश्वरानन्द द्वारा स्थापित अन्तर्राष्ट्रीय वेद मिशन की ओर से पवित्र वेदों की प्रतियों की भेंट स्वीकार करते हुए अपने हृदयोद्गार व्यक्त किये।

६४ वर्षीय प्रज्ञाचक्षु (पांचवें वर्ष से अन्धावस्था को प्राप्त) परमपूज्य स्वामी श्री गंगेश्वरानन्द, जो प्रख्यात उदासीन सम्प्रदाय के १८२ वें धर्मगुरु हैं, आजकल दक्षिण-पूर्वी एशिया की यात्रा कर रहे हैं-हिन्दुओं के सर्वाधिक पवित्र ग्रन्थ वेदों का प्रचार करने तथा उनकी प्रतियां भेंट करने के उद्देश्य से। स्वामीजी के साथ उनके दो शिष्य स्वामी गोविन्दानन्द और श्रीमती रतन फौजदार तथा विश्व हिन्दू परिषद् के सचिव श्री दादा आपटे हैं। अपनी इस यात्रा के दौरान, जो विश्व हिन्दू परिषद् द्वारा आयोजित की गयी थी, यह दल १६ की शाम को बंगकोक आया।

स्वामीजी के प्रयत्नों के परिणामस्वरूप, पहली बार चारों वेदों का संकलन और प्रकाशन १००० पृष्ठों के एक विशाल ग्रन्थ में हुआ है। १५"×२०" आकार के, विशेष रूप से निर्मित आर्ट-पेपर पर इस ग्रन्थ का मुद्रण हुआ है। इस अद्वितीय, पवित्र ग्रन्थ में संस्कृत के २०,००० से अधिक मन्त्र हैं। कलात्मक किनारों पर, वैदिक यज्ञों में प्रयुक्त होने वाले विविध उपकरणों और पोतों को चित्रांकित किया गया है। एक ग्रन्थ के रूप में सुबद्ध इस पवित्र ग्रंथ का भार २२ किलो हैं। जहां तक मेरी जानकारी है, यह ग्रन्थ सर्वाधिक विशाल, भारवाला ग्रन्थ तो है ही असंदिग्ध रूप से मानवता का प्राचीनतम ऐतिहासिक और धार्मिक ग्रन्थ भी है।

नेपाल समेत भारत में ६०८ स्थानों पर इस ग्रन्थ को प्रतिष्ठापित करने के बाद, स्वामी गंगेश्वरानन्द आज पूर्व की यात्रा कर रहे हैं। इस यात्रा के बाद, वे पश्चिम की यात्रा करेंगे, विश्व भर में वेदों की प्रतिष्ठापना करने की अपनी सद्योजना को क्रियान्वित करने के क्रम में।

यहां के राजगुरु वामदेव मन्दिर में ब्रह्मांड के सृजक ब्रह्म-देव को सब देवताओं में अग्रणी दिखाया है। इस अर्थगर्भित स्थिति का उल्लेख करते हुए, स्वामीजी ने वेदोपहार-समारोह के अवसर पर दिये गये भाषण में कहा, "यहां के अधिष्ठाता देवता ब्रह्मदेव हैं। उनके मन में यह विचार अवश्य होगा; "वेद मेरे ज्ञान भण्डार हैं, और मुझे उनकी पुनर्प्राप्ति अवश्य होनी चाहिये।" मुझे लगता है कि यहां आकर उन्हें वेदों को अर्पण करने की प्रेरणा मुझे स्वयं उन्होंने ही दी है। मुझे इस बात की अत्यन्त प्रसन्नता है कि विश्वभर में वेदों के प्रचार की अपनी योजना का शुभारम्भ मैं ब्रह्मदेव के आशीर्वाद के साथ कर रहा हूँ।"

वेद विहीन ब्राह्मण

स्वामी जी के भाषण का कृतज्ञतापूर्ण उत्तर देते हुए राजगुरू ने कहा, "यहाँ रहने वाले हम ब्राह्मणों को यह कष्टदायक अनुभूति थी कि हमारे पास हमारी मूल्यवान

सम्पत्ति पवित्र वेद-नहीं हैं। पवित्र ज्ञान की इस पारिवारिक निधि को प्राप्त करते समय मुझे जिस अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है, उसे मैं शब्दोंमें व्यक्त नहीं कर सकता। यहां मैं यह कहना आवश्यक समझता हूं कि हम अपने सब धार्मिक कृत्य तथा कर्मकाण्ड वैदिक परम्पराओं के अनुसार ही करते हैं। पर हमारे पास केवल यजुर्वेद और सामवेद के थोड़े से मंत्र हैं। इनके सहारे ही हम अपनी सब धर्म विधियां सम्पन्न करते आ रहे हैं। अब अपनी जनश्रुति और परमविद्या की इस अमूल्य निधि को प्राप्त करके मुझे लग रहा है जैसे स्वयं परमात्मा ने अपनी दिव्य ज्योति और अक्षय सच्चिदानन्द के साथ मेरे को पवित्र किया है।"

इन रोमहर्षक और भावभीने शब्दों के साथ राजगुरु ने पवित्र वेद को परम्परागत हिन्दू पूजन विधि, शंखध्वनि, मृदंग-वादन तथा घंटियों के गुंजायमान स्वर, के साथ ब्रह्मदेव की मूर्ति के सामने प्रतिष्ठापित किया।

प्रातःकाल में, किसी बौद्ध-विद्वत्परिषद में सम्भवतः प्रथमबार, वेदों का प्रतिष्ठापन किया गया। इस शुभावसर पर पूर्वी बौद्ध विश्व के धर्माधिकार-वर्ग में द्वितीय स्थान-प्राप्त उप संघराज ने भी अपनी उपस्थिति से समारोह को गरिमा प्रदान की। उन्होंने स्वामी गंगेश्वरानन्द की ओर से भारतीय राजदूत से वेदोपहार ग्रहण किया। किसी भी बौद्ध विश्वविद्यालय द्वारा हिन्दू-धर्म के, जिससे पृथक् होकर बौद्ध-धर्म ने अपना एक स्वतंत्र व्यक्तित्व निर्मित किया था, पवित्र ग्रन्थ की अनुष्ठानिक स्वीकृति का यह पहला अवसर था।

स्वामीजी ने विश्वविद्यालय के भिक्षु छात्रों तथा विद्वानों के शोध-कार्य तथा गहन अध्ययन के लिए वेदों का स्वागत करने के उपसंघराज के सद्भावना-प्रदर्शन के लिए उन्हें धन्यवाद दिया। अपने उद्घाटन-भाषण में उन्होंने कहा, भगवान बुद्ध का जन्म भारत में हुआ था। उन्होंने जिस विचार-पद्धति तथा दर्शन का विकास किया, उसे कालान्तर में बौद्ध-धर्म के नाम से जाना जाने लगा। दो हजार वर्ष से भी अधिक समय पूर्व वहां की जनता ने इसका स्वागत कर इसे अंगीकार किया। उसे अक्षुण्ण रखने में उन्होंने आनन्द और परमानन्द दोनों को अनुभव किया। मेरे मत से, भगवान बुद्ध वेदों के विरोधी नहीं थे। सच तो यह है कि वेदों ने कहीं भी 'हिंसा' का समर्थन नहीं किया है। वैसे यह सच है कि भगवान बुद्ध के आगमन से पूर्व; वेदों के कुछ व्याख्याकारों ने अपनी विचित्र व्याख्याओं के कारण यह धर्म संकट पैदा कर दिया था। भगवान बुद्ध अहिंसा के अनुयायी और उपदेशक थे। अन्य मामलों में वेदों और भगवान बुद्ध के उपदेशों और साधना में बहुत समानता है। सच तो यह है कि वेद वे योजनाएं हैं, जिनके अनुसार ब्रह्मदेव ने इस ब्रह्मांड का सृजन कर उसे आदर्श जीवन तथा विधि और नियमादि प्रदान किए।

बौद्ध-धर्म में श्रद्धा रखने वाले देशों में त्रिपिटिक को वेदों के समान पूजा जाता है। मैं कह नहीं सकता कि बौद्ध धर्म में श्रद्धा रखने वाले आपके देश में भगवान वेद का इतना शानदार स्वागत देखकर मुझे कितनी प्रसन्नता हुई है।

मानवता के प्राचीनतम अभिलेख

उपसंघराज ने अपने सच्चे तथा आह्लादक स्वागत-भाषण में आभार-प्रदर्शन करते हुए कहा, "अभी तक हमारी महा मुंगकुट अकादमी में वेद, जो मानवता के असंदिग्ध प्राचीनतम अभिलेख हैं, नहीं थे। स्वामी जी ने इस महान आवश्यकता की, जिसकी कमी हमें अर्से से अनुभव हो रही थी, पूर्ति कर दिखाई है। अब हमारे भिक्षु छात्र और विद्वान वेदों और त्रिपिटिक का तुलनात्मक अध्ययन करके लाभान्वित हो सकेंगे।

समारोह बौद्धों के इस परम्परागत मांगलिक मंत्र के सस्वर पाठ के साथ समाप्त हुआ:—

"सर्व बुद्धानुभावेन भवतु सर्व मंगलम्
सर्व धर्मानुभावेन भवतु सर्व मंगलम्"
तथा: "सर्व संघानुभावेन भवतु सर्व मंगलम्"

अकादमी के सभी भिक्षु छात्रों और अध्यापकों ने इस समारोह में भाग लिया था। उनके अतिरिक्त, समारोह में बंगकोक के अनेक गण्यमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

२२ को स्वामी जी ने हिन्दू समाज तथा हिन्दू धर्म सभा के दो प्रसिद्ध मन्दिरों को वेदोपहार दिया। इन सब समारोहों तथा बगकोक में स्वामी जी के रहने की अवधि में थाईदेश तथा भारतीयों की विशाल उपस्थिति स्वामी जी के कार्यक्रम के प्रति उनके उत्साह की द्योतक थी। महान महामंडलेश्वर के दर्शन तथा आशीर्वाद के लिए सैकड़ों परिवारों के लोग प्रतिदिन प्रातः सांय पंक्तिबद्ध उपस्थित रहते थे।

पवित्र वेदों की तीन प्रतियों को पीछे छोड़कर जो थाइदेश के महामहिम नरेश, महा चलालोंगकरण विश्वविद्यालय तथा एक अन्य महत्त्वपूर्ण, केन्द्र को (भारतीय राजदूत द्वारा) भेंट दी जाएगी। २३ की दोपहर को स्वामी जी हांगकांग के लिए रवाना हो गये। हांगकांग उनके वेदोपहार-अभियान का अगला पड़ाव था।

विज्ञान, धर्म व साहित्य

कुमारी मञ्जु गुप्ता

वाद-विवाद प्रतियोगिता हो रही थी, विषय था विज्ञान और धर्म परस्पर विरोधी हैं। विद्यार्थी तीखे तर्कों से, वाक्-चातुर्य से, शब्द-माधुर्य से अपने अपने पक्ष की सिद्धि में लगे हुए थे, मैं सोच रही थी-वैदिक धर्म में, जो कि पूर्ण रूप से विज्ञान सम्मत है-इन दोनों के टकराव का प्रश्न ही पैदा नहीं होता। सत्यता से देखा जाय तो इन दोनों में से किसी एक के अभाव में दूसरे का अस्तित्व मानव के लिए निरर्थक ही नहीं अपितु घातक भी है। साहित्य, विज्ञान व धर्म को परस्पर विरोधी मानना किसी भी अंश में सही नहीं है।

सृष्टि की श्रेष्ठ कृति मानव जिसे बुद्धि का अनमोल उपहार मिला है, सृष्टि के रहस्य जानने के लिए, सत्य का पता लगाने के लिए भरसक प्रयत्न करता है। विज्ञान, साहित्य व धर्म इसी प्रयत्न का परिणाम है। तीनों ही सत्य के उपासक हैं। हां अन्तर थोड़ा कार्यभेद का हो जाता है। विज्ञान केवल सत्य चाहता है, वह तथ्य का उपासक है। साहित्य सत्य के साथ सुन्दरम् का भी उपासक है। धर्म सत्य व शिव का पुजारी है। वेदों में शिव संकल्प का पाठ पढ़ाया जाता है। साहित्यकार सत्य और शिव की युगल प्रतिमा को सौन्दर्यावरण पहनाकर उसकी आराधना करता है। विज्ञान, साहित्य व धर्म तीनों ही मनुष्य के अनुभव, आशा और आकांक्षाओं की व्याख्या करते हैं।

वेद में ईश्वर, जीव व प्रकृति को विश्व का प्रबल आधार माना गया है। वेद हमें ईश्वर विषयक ज्ञान, प्रकृति के नियमों का दर्शन और जीवात्मा का प्रकृति और पुरुष के साथ सम्बन्धों का ज्ञान कराते हैं। विज्ञान ने प्रकृति तथा नियमों को स्वीकार किया है। आज का विज्ञान विश्व के तीनों तत्वों-ईश्वर, जीव व प्रकृति में से प्रकृति के अनुपम रहस्यों के उद्घाटन में लगा हुआ है। वैज्ञानिक विश्व-वैचित्र्य में अपनी विलक्षण बुद्धि द्वारा नियम और श्रृङ्खला का अन्वेषण कर उनके मानसिक बोध बनाता है। धर्म सृष्टि के कल्याणकारी नियमों व श्रृङ्खलाओं के निर्माता, विश्व रचयिता के प्रति कृतज्ञ होता हुआ, मानव को सत्य के साथ शिव का उपासक बनाता है। कवि विश्व की विविध वस्तुओं को अपने भावों तथा मनोवेगों के सुनहरे रंग में रंजित कर उसे और भी सुन्दर बना देता हैं। विज्ञान का सम्बन्ध बुद्धि के बोधों से है तो साहित्य का हृदय के भावों से। मस्तिष्क व हृदय, भाव तथा विचार का उचित सामञ्जस्य शिव है, जो धर्म को अभिप्रेत है। विज्ञान ने विश्व को भौतिक वैभव से सम्पन्न कर दिया है। मानव का लक्ष्य भी आनन्द प्राप्त करना है। इतने वैभव के बाद भी संसार में इतना दुःख व अशान्ति क्यों हैं? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए विज्ञानाचार्य आइनस्टाइन ने कहा था—'अच्छे मनुष्य उत्पन्न किये जायं।' क्योंकि संसार की कोई वस्तु, वैभव, ऐश्वर्य इत्यादि न आसुरी है; न दैवी। इनका प्रयोग जिस भावना, जिस वृत्ति, जिस लक्ष्य और जिस उद्देश्य से किया जाता है, वही उसे कल्याणकारी या अकल्याणकारी बना देता है। इसी मनुष्यत्व के लिए धर्म की आवश्यकता है। विज्ञान भौतिक वैभव का दाता है तो धर्म आध्यात्मिक वैभव का। मानव के लिए दोनों का समन्वय आवश्यक है।

जिस सौन्दर्य को कवि कुसुम में देखता है, उसी को वैज्ञानिक पुष्पों की जड़ों में देखता है तथा परमात्मा की विलक्षण बुद्धिमता की मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करता है। यहीं पर विज्ञान तथा धर्म का समन्वय हो जाता है। जो लोग विज्ञान व धर्म में विरोध मानते हैं, यह उनका अज्ञान ही होगा। विज्ञान ने सृष्टि के अनुपम रहस्यों का उद्घाटन कर परमात्मा के प्रति, पूर्ण के प्रति अपूर्ण मनुष्य की अपनी शक्ति का अनुपात दर्शाया है। ब्रह्मांड के व्यापक प्रसार को देखकर कल्पना के पांव भी डगमगाने लगते हैं। विज्ञान हमें सृष्टि के नियमों की ऊहापोह करके परमात्मा की विराट् सत्ता का साक्षात्कार कराने में सहायक सिद्ध है। विज्ञान के अन्वेषण द्वारा ही प्रकट होता है कि भव्य भवन विश्व के नियम और श्रृङ्खलाबद्ध होने की आधारशिला पर खड़े हुए हैं। धर्म के द्वारा ही विश्व की नियमबद्धता पर विश्वास होता है। धर्म क्या है—जो धारण किया जावे, विश्व में अपने प्रति, दूसरों के प्रति, प्रकृति, व ईश के प्रति अपने समुचित कर्त्तव्यपालन का नाम ही धर्म है। विश्व की नियमबद्धता देखकर धर्म प्रेरणा देता है—मानव-मानवीय नियमों से बद्ध क्रियाशील रहे – सृष्टि के हर अणु परमाणु की तरह से। जहां विज्ञान ने हमें भौतिक बल दिया है, वहां धर्म ने आध्यात्मिक बल दे कर हमारे जीवन में आशा तथा उत्साह का नव संचार किया है। सच्चा धर्म वैज्ञानिक होगा और सच्चा विज्ञान धार्मिक होगा। श्री सी० वी० रामन ने

(शेषांश पृष्ठ ९ पर)

स्वामी रामतीर्थ की जन्मशती वर्ष की पूर्ति के अवसर पर जिसने

आस्था और कर्म के अनोखे दीप जलाए

श्री हरिदत्त शर्मा

स्वामी रामतीर्थ की तीन दशक छोटी सी जिन्दगी जैसे अलमस्ती, फक्कड़पन और भावना की प्रतीक रही। वे गुसाईं परिवार की गरीबी से उठते-उठते कुल दुनियां की बादशाहत तक पहुंच गये, बल्कि यह भी कहना गलत ही होगा, सही बात तो यह है कि समूचे संसार के बादशाह उनके मनोरंजन के मोहरे बन गये। तभी तो उन्होंने अपने एक शेर में कहा है—

बादशाह दुनियां के हैं, मोहरे मेरी शतरंज के।
दिल्लगी की चाल है, सब शर्त सुलहो जंग के।।

इसका मतलब है कि तमाम दुनियां के बादशाह मेरी शतरंज के मोहरे हैं और उनकी लड़ाइयां और सन्धियाँ मेरी दिल्लगी की चाल हैं। कुल दुनियां का मालिक बन जाना या पूरे ब्रह्मांड का नियन्ता बनकर रहकर एक गरीब गुसाईं की कितनी बड़ी उपलब्धि है।

हिंस्र पशु भी नतमस्तक

टिहरी के वनप्रान्तर में जहां उनका आश्रम था, वहां पर बनराज सिंह उनकी कुटिया के सामने इस तरह पड़े रहा करते थे जैसे कि वे उनके पालतू कुत्ते हों। कई बार उनके दर्शनार्थी वनके राजाओं को देखकर डर भी जाया करते थे। इस पर बादशाह राम कह दिया करते थे 'अरे चले जाओ, समझ लो कि यह तो पालतू कुत्ते हैं, आप लोगों को कुछ नहीं कहेंगे। हिंस्र भी उनके लिए घातक होता है जिनके मन में हिंस्रता की भावना होती है। प्यार के सामने हिंस्रता दुम दबाकर बैठ जाती है।

हरिद्वार में गंगापर चण्डी की पहाड़ी पर, जहां से बिजनौर जिला की सीमा प्रारम्भ होती है, देवी का एक मन्दिर है। इस मन्दिर के पृष्ठभाग में एक बड़ा भारी वन है। यह जंगल जंगली हाथियों और शेरों के लिए बड़ा प्रसिद्ध हैं। यद्यपि अब शेरों की संख्या में कमी हुई है फिर भी यहां पर शेर हैं। एक और स्वामी राम चण्डी की पहाड़ी पर देवी के मन्दिर के पास हो रह रहे थे कि वहां पर उन्हें एक शेर दिखाई दिया। वह उससे चिपट कर बोले– 'वाह महाराज ! आज इस रूप में दर्शन दिये।'

बादलों को भी आदेश मानना पड़ा

एक और घटना है। पहाड़ों में घूमते समय कई दिन तक वर्षा पड़ती रही। वर्षा क्या थी तूफान था जो रुकने का नाम नहीं लेता था। उससे सब लोग तंग आगये थे। स्वामी राम एक दिन कुटिया से बाहर निकले और प्रकाश की ओर देखकर बादलों से बोले 'रुक जाओ' प्रत्यक्षदर्शियों का कहना है कि तत्काल वर्षा बन्द हो गई और फिर रुक गई।

अमेरिकी राष्ट्रपति स्वयं अगुवानी करेगा

उनके जीवन की एक और विख्यात घटना है। वे अपने देश भारत से एक जलयान द्वारा अमेरिका जा रहे थे। वही संन्यासी वेष, वही मस्ती, वही ब्रह्मलीन अवस्था। उस जलयान के द्वारा एक अमेरिकी पत्रकार भी स्वदेश जा रहा था। वह कई दिन से इस अलमस्त, फक्कड़ और मलंग युवा साधु को देख रहा था। देख-देख कर उसका कौतूहल बढ़ता जाता था। एक दिन उसने स्वामी जी से प्रश्न कर लिया–'आप कहां जा रहे हैं ?' उन्होंने उत्तर दिया, "अमेरिका" पत्रकार ने कहा "अमरीका ऐसा देश नहीं है कि वहां हर कोई जाकर अपने रहने-सहने, खाने-पीने का प्रबन्ध कर ले। बड़ा धनाढ्य देश है, आप जैसा फकीर वहां कैसे व्यवस्था करेगा ?" स्वामी जी अपनी मस्ती में बोले– "अरे हमको क्या कमी है ? स्वयं अमेरिका का राष्ट्रपति बन्दरगाह पर हमारी अगुवानी करने आयेगा और हमें आतिथ्य प्रदान करेगा।"

पत्रकार ने सोचा कि यह तो बहुत अच्छी खबर बनती है। उसने जलयान से ही समुद्री तार द्वारा अपने पत्र को एक समाचार भेज दिया जिसमे युवा सन्यासी के साथ हुए सारे कथोपकथन भी जोड़ दिये। इस समाचार को तत्कालीन अमरीकी राष्ट्रपति ने भी पढ़ा और सचमुच वह बादशाह राम की अगुवानी के लिए बन्दरगाह पर आ गये।

भगवान कृष्ण पर आक्षेप असह्य

एक घटना स्वयं अमेरिका की है। वहां पर उनसे कई बार भारतीय प्रतीकों राम और कृष्ण के विषय में अंग्रेज साम्राज्यवादियों द्वारा फैलाई गई भ्रान्तियों के सम्बन्ध में प्रश्न किए जाते थे। विशेषकर कृष्ण के बारे में। उनके सम्बन्ध में कहा जाता था कि कृष्ण तो बड़े रमण और व्यभिचारी थे। अपने चारों ओर स्त्रियों का समूह रखते थे। स्वामी जी इस आलोचना को सुनते रहे लेकिन एक दिन

उनके मन में इसका उत्तर देने की बात आ ही गई।

उन्होंने एक दिन अपनी सभा में यह घोषणा की कल हमारी सभा में केवल महिलाएं ही आयेंगी, कोई पुरुष नहीं आयेगा। अगले दिन ऐसा ही हुआ। उनकी सभा में स्त्रियां थी। स्वामी राम भाषण करने लगे। उनकी रसना से रस का सागर जो बहा तो समूचा स्त्री समुदाय मन्त्रमुग्ध हो उठा। इन्हीं क्षणों में राम उठकर समुद्र तट की ओर भागने लगे। उन्हें भागता देखकर महिलाएं भी भागने लगीं। स्वामी जी जब भागते-भागते काफी दूर एकान्त स्थान पर पहुंच गये तो वे रुक कर खड़े हो गये और महिलाओं से उन्होंने प्रश्न किया "आप मेरे पीछे क्यों आ रही हैं? मैं आपके लिए पर पुरुष हूं। पर पुरुष के साथ एकान्त में आते हुए शर्म नहीं आती? अमेरिकी महिलाएं बोली 'स्वामीजी, हमको पता नहीं कि हम कैसे भागीं और क्यों भागी? हम एक दम विमूढ़ हैं। हमारी बुद्धि काम नहीं कर रही। स्वामी जी ने मुस्काराकर कहा—'पगलिओ, यही स्थिति मेरे कृष्ण के साथ गोपियों व व्रजबालाओं की हो जाया करती थी। महिलाएं स्तब्ध हो गई और उसके बाद स्वामी जी के समक्ष भारतीय प्रतीकों की आलोचना करने का किसी को साहस नहीं हुआ।

इन तमाम घटनाओं के पीछे स्वामी जी की औपनिषद दर्शन की सफल साधना थी। उनका यह निचोड़ था कि समूचा ब्रह्मांण्ड ब्रह्म का अंश है और उसी की शक्ति से वह चल रहा है। यही ऋत है और इस ऋत को पाकर श्रद्धा विश्वास के साथ तप करना अपनी आत्मस्थ ईश्वरता पा लेना है। यह ईश्वरता सर्वव्यापक है। इसलिए अपनी ईश्वरता सर्वव्यापक है। इसलिए अपनी ईश्वरता में रमना सबकी ईश्वरता में रमना है। इसीलिए जब स्वामी जी प्रारम्भ करते थे तो वह उपस्थित जनसमुदाय को अपनी आत्मा के अवतार बताया करते थे। उनका सम्बोधन होता था—मेरी ही आत्मा के अवतारों। सब के साथ, समूची जड़ और चेतन प्रकृति के साथ ऐसा बड़ा तादात्म्य उन्होंने स्थापित किया था कि वे अपने आपको ब्रह्म अथवा शिव के रूप में देखते थे। इस दृष्टि में जहां समूचा भारत उनका अपना शरीर था वहां समूची मानवता भी उनका अभिन्न अंग थी। इसी अन्त: प्रेरित शिव भाव से वह अंग्रेजों द्वारा हमारे देश पर बांधी गई बेड़ियों को और उनके तत्वहीन प्रचार को निरस्त कर सके।

अपने देश की श्रेष्ठ परम्पराओं से उगे, पले, फले और फूले इस दर्शन में उनके अपने युग का दर्शन भी अन्तर्निहित हो गया था। वैज्ञानिक प्रगति से धर्म के स्थूल रूप तो कटते हैं। लेकिन मानवात्मा की अन्त: सलिला सरस्वती बनी रहती है। उनके अपने काल में और कालान्तर में हमारा राष्ट्रीय स्वतन्त्रता संग्राम और उस संग्राम के संस्कृति और साहित्य से लेकर राजनीति तक के तमाम तत्व इस भावधारा से प्रेरित रहे और उनसे हमारे देश में एक नया रोमांसवाद उत्फुल्ल हुआ जिसने समूचे संसार को अपनी ओर आकृष्ट किया।

स्वामी रामकृष्ण परमहंस तथा उनके पट्ट शिष्य स्वामी विवेकानन्द और बादशाह राम ने वन के वेदान्त को संसार के बड़े से बड़े नगरों तक लाकर एक नई ज्योति जगाई। बादशाह राम के लिए शायद यह आकस्मिक बात नहीं हैं कि वे ज्योति के पर्व दीपावली को ही जन्मे और दीपावली को ही उन्होंने अपना पार्थिव शरीर हमारे देश की संस्कृति की प्रतीक भगवती भागीरथी को समर्पित किया। हम सब भारतवासियों का यह पुनीत कर्त्तव्य है कि ज्योति की इस ज्वाला में उन सब ढोंगियों, पाखण्डियों और आडम्बरी धर्माचार्यों को प्रविष्ट करा दें जो हमें ज्योति की ओर से विमुख करके अन्धकार की ओर ले जाने के चक्रव्यूह का अंग है।

बादशाह राम ने अपनी एक अंग्रेजी कविता में यह गाया था कि नदियों, तूफानों, जंगलों और पहाड़ों, मेरा रास्ता छोड़ दो। उनका यह काव्यगत गान हमारे कर्म का आह्वान था।

टिप्पणी—यद्यपि स्वामी विवेकानन्द जी एवं स्वामी रामतीर्थ जी आर्य समाज के सिद्धान्तों से भिन्न मत रखते थे फिर भी उन्होंने परतन्त्र भारत की बेड़ियों को काटने के लिए भारत की सोई हुई आत्मा में स्वतंत्रता एवं स्वाभिमान की भावना भरने में प्रबल योगदान दिया था। उन्होंने देश के बाहर एवं भीतर विदेशियों के तत्वहीन प्रचार को निरस्त कर उन्हें भारत के गौरवशाली अतीत का भान कराया था। इसीलिए वैज्ञानिकता पर आधारित वैदिक सिद्धान्तों में दृढ़ आस्था रखते हुए भी राजधर्म परिवार इन महान विभूतियों को अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता है। (युगवार्ता)

राजस्थान आर्य सभा का प्रथम वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

स्वामी शक्तिवेश जी आर्य सभा राजस्थान के अध्यक्ष निर्वाचित

सर्व सम्मति से स्वामी शक्तिवेश जी को राजस्थान आर्य सभा का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया।

कार्यसमिति निर्वाचन का अधिकार

सभी उपस्थित प्रतिनिधियों ने स्वामी शक्तिवेश जी को कार्य समिति निर्माण का पूर्ण अधिकार दिया।

स्वामी अग्निवेश द्वारा अधिवेशन का उद्घाटन

राजस्थान आर्यसभा का दो दिवसीय अधिवेशन दिनाँक २७-१०-७४ को ऐतिहासिक नगरी जोधपुर में सम्पन्न हुआ। अधिवेशन में राजस्थान के विभिन्न जिलों से सैंकड़ों प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अधिवेशन का उद्घाटन स्वामी अग्निवेश जी अध्यक्ष अ० भा० आर्य सभा ने किया। इस दो द्विवसीय अधिवेशन में प्रान्तीय आर्य सम्मेलन, युवा सम्मेलन, एवं महिला सम्मेलनों का आयोजन किया गया। अधिवेशन बहुत सफल रहा।

स्वामी शक्तिवेश जी ने अपने क्रान्तिकारी, जोशीले अध्यक्षीय भाषण में जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि कांग्रेस सरकार तस्करों को पकड़कर जनता को यह जताना चाहती है कि वह काले धन को निकाल रही है। स्वामी जी ने कहा कि राजस्थान के भू० पू० मुख्यमन्त्री श्री मोहनलाल सुखाड़िया को क्यों नहीं पकड़ा जिनका कई मुख्य तस्करों से सीधा सम्बन्ध है। होना यह चाहिए था कि सबसे पहले इस डेढ़ हाथ की जोशी सरकार को हथकड़ी लगानी चाहिए जिनकी सह से कथित तस्करों को गिरफ्त में नहीं लिया है।

राजस्थान में आर्यसभा का प्रचण्ड रणघोष

जननायक श्री जयप्रकाश नारायण के बिहार आन्दोलन को पूर्ण समर्थन की घोषणाः—

स्वामी शक्तिवेश ने अपने वक्तव्य में कहा कि जिस हरयाणा में आर्यसभा जबरदस्त कांग्रेस के विकल्प के रूप में उभरकर जनता के सामने आ रही है उसी प्रकार राजस्थान में भी आर्यसभा प्रचण्ड रणघोष करती है कि राजस्थान की इस वीर प्रसवा भूमि, बलिदानी भूमि से भ्रष्ट कांग्रेस सरकार का सफाया करके रहेगी। यह घोषणा स्वामी जी ने ऋषि दयानन्द बलिदान भवन से की। स्वामी जी ने श्री जयप्रकाश नारायण द्वारा संचालित बिहार जन आन्दोलन के पूर्ण समर्थन की घोषणा की।

अधिवेशन के प्रथम दिन सायं ८-३० बजे ऐतिहासिक नगरी जोधपुर के मध्य स्थित गिरदी कोट घंटाघर के विशाल प्रांगण में स्वामी अग्निवेश जी एवं स्वामी शक्तिवेश जी के गम्भीर प्रेरणात्मक, क्रान्तिकारी भाषण हुए। स्वामी अग्निवेश जी, लगातार तीन घंटे तक हजारों की तादाद में उपस्थित जनसमूह को सम्बोधित करते रहे और जनता 'पिन ड्राप साइलैंस' हो स्वामी जी के भाषणों को मन्त्रमुग्ध, भावविभोर सुनती रही।

स्वामी अग्निवेश जी ने जयप्रकाश नारायण के जन-आन्दोलन को पूर्ण समर्थन का एकत्रित जन समूह को आह्वान किया और कहा कि इस सुनहरे अवसर से जनता को नहीं चूकना चाहिए। स्वामी जी के जयप्रकाश नारायण के जन आन्दोलन की घोषणा का उपस्थित जनसमूह ने करतल ध्वनि से स्वागत किया और जनता ने आन्दोलन को समर्थन करने का पूर्ण आश्वासन दिया।

द्वारा—जयसिंह परमार्थी

राजस्थान आर्यसभा की कार्यसमिति

स्वामी शक्तिवेश - अध्यक्ष, डा० जयसिंह परमार्थी तिजारा, उपाध्यक्ष, श्री रामकृष्ण आर्य पीलीबाग गंगानगर उपाध्यक्ष, श्री जयदेव अनल जयपुर श्री भवानीसिंह बहरोड़ - उपमन्त्री, श्री मदनमोहन गगापुर सिटी - उपमन्त्री, श्री रामसुख तवर जयपुर - प्रचार मन्त्री, श्री केशवसिंह खोपला जोधपुर -कोषाध्यक्ष।

अन्तरङ्ग सदस्य

श्री चिरंजीलाल आर्य नसोपुर (अलवर), श्री मदनसिंह जोधपुर, श्री विजय चौहान सम्पादक जोधपुर, सुरेन्द्रनाथ आर्य अजमेर, श्री धर्मपाल एडवोकेट झुन्झुनु, मोहनसिंह आर्य भरतपुर, श्री सत्यनारायण पाली, श्री धर्मवीर आर्य अजमेर, श्री बंशीलाल आर्य पीपाड़ शहर जोधपुर, श्री शम्भुलाल आर्य जयपुर, श्री चंचलदास आर्य अजमेर।

शेष अन्तरङ्ग सदस्यों की घोषणा बाद में की जायेगी।

समाचार दर्शन

वैदिक आश्रम दिल्ली रोड़ रेवाड़ी का—

द्वितीय आर्य युवक प्रशिक्षण शिविर

२३ दिसम्बर से २६ दिसम्बर १९७४ तक

प्रिय युवक मित्रों !

आर्य युवकों के इस एक मात्र प्रशिक्षण केन्द्र में पुनः युवा शक्ति के मार्ग दर्शन हेतु इस प्रशिक्षण शिविर का आयोजन' किया जा रहा है। दण्ड-बैठक प्राणायाम, लाठी, छुरी का प्रशिक्षण यहां योग्य कलाकार शिक्षकों के द्वारा होगा। इसके साथ-साथ प्रसिद्ध विद्वानों से आप सन्ध्या-यज्ञ आदि अध्यात्मिक प्रसंगों एवं आर्थिक, सामाजिक महंगाई बेरोजगारी आदिकी समस्याओं पर बौद्धिक चिन्तन प्राप्त करेंगे जैसे श्रावण मास में खेती बढा करती हैं उसी तरह शरद ऋतु में स्वास्थ्य बढने का विशेष अवसर होता है। इन दिनों में आपके स्कूल कालेज बन्द रहेंगे। अतः कोई भी चौदह वर्ष से ऊपर के प्रतिभाशाली युवक उसमें भाग ले सकेंगे। भोजन आवास का उत्तम प्रबन्ध होगा। विशेष योग्यता वाले युवकों को पारितोषिक दिया जायेगा। तथा सभी शिविरार्थियों को प्रमाण-पत्र भी दिये जायेंगे।

प्रत्येक शिविरार्थी को सफेद पी. टी. सूज, एक लाठी, एक बनियान, एक लोटा एक लंगोट, भोजन के बर्तन, खाकी निकर, सफेद जुराब तथा ऋतु अनुकूल बिस्तर साथ लाना होगा। शिविर में १५ रु० प्रवेश शुल्क होगा। हरिजन तथा निर्धन युवकों को केवल ५ रु० देने पड़ेंगे। पहले भाग ले चुके युवकों के लिए द्वितीय वर्ष के प्रशिक्षण का अलग से प्रबन्ध होगा। यदि आप अपना प्रवेश शुल्क पहले भेज सकें तो संख्या का ठीक अनुमान हो सके और व्यवस्था करने में सुविधा रहे।

श्रद्धालु धनी मानी सज्जन ब्रह्मचारियों के लिए प्रातःरास तथा भोजन के लिए दान, आटा, दाल से सहयोग दे सकते हैं तथा यज्ञ के लिए घृत-सामग्री भी भिजवा सकते हैं।

उद्घाटनः—२३ दिसम्बर सायं २ बजे ब्र० बलदेव जी नैष्ठिक शुक्रताल द्वारा।

दीक्षान्त;—२६ दिसम्बर सायं ४ बजे स्वामी आदित्यवेश जी द्वारा।

निवेदकः—

शक्तिवेश — प्रधान

जयदेव अनल — मन्त्री

२६ नवम्बर को—हरयाणा में सभी जिला मुख्यालयों पर छात्र रैलियों के आयोजन का निर्णय

रोहतक—१६ नवम्बर। हरयाणा छात्र संघर्ष समिति का आज यहां विधिवत रूप से गठन हो जाने के बाद, समिति ने सारे हरयाणा के छात्रों से यह अनुरोध किया है कि, सभी छात्र २६ नवम्बर को छात्र दमन विरोधी दिवस के रूप में मनायें, तथासभी जिला मुख्यालयों पर छात्र रैलियां आयोजित करें। जिला रोहतक के छात्रों ने पूरी गर्मजोशी के साथ संघर्ष समिति के इस कदम का स्वागत किया है तथा अधिकारियों से माँग की है कि कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय से सम्बन्धित सभी कालेजों में मान्यता प्राप्त छात्र संगठनो के आयोजन का अविलम्ब आयोजन किया जाए और अगले वर्ष होने वाले कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय छात्र संघ के प्रधान के चुनाव में सभी सम्बन्धित कालेजों के छात्रों को वोट देने का अधिकार प्राप्त हो।

इसके अलावा छात्रों ने निजी शिक्षण संस्थाओं के राष्ट्रीकरण की माँग की, ताकि चन्दे आदि के रूप में जारी लूट से छात्रों का बचाव हो सके। छात्रों ने सरकार से यह भी अनुरोध किया कि रोजगार का मौलिक अधिकार प्रदान किया जाए और जब तक सरकार किसी नौजवान के रोजगार की व्यवस्था नहीं कर पाती तब तक वह उसे महंगाई सूचांक के अनुसार बेरोजगारी भत्ता प्रदान करे। छात्रों ने विश्वविद्यालय से निष्कासित सभी छात्र नेताओं के निष्कासन का विरोध किया तथा हिसार में छात्रों पर किये गये लाठीचार्ज की न्यायिक जाँच की माँग की और दोषित अधिकारियों को तुरन्त दण्ड देने का अनुरोध किया। छात्रों ने कहा है कि माँग को मानने में देरी करने के कारण हरयाणा में जो तनावपूर्ण स्थिति होगी उसकी जिम्मेवारी सरकार व सम्बन्धित अधिकारियों पर होगी।

दयानन्द आर्य
रीजनल सेन्टर रोहतक

हिसार में छात्रों पर भीषण लाठी चार्ज

आर्यसभा के महामन्त्री श्री रामधारी शास्त्री ने हिसार में छात्रों पर भीषण लाठीचार्ज की प्रबल भर्त्सना की है और उसकी न्याययिक जांच की अविलम्ब माँग की है। गैरकानूनी ढंग से गिरफ्तार विद्यार्थियों की तुरन्त रिहाई तथा उनके ऊपर लगाये गये आरोपों को खत्म करने की माँग की है। वास्तव में शान्तिमय ढंग से अपने न्यायोचित माँगों के लिए प्रदर्शन करना संवैधानिक मौलिक अधिकार है। इसीलिए सर्वोच्च न्यायालय ने जनता के इस मूल अधिकारों की रक्षा करते हुए यह निर्णय दिया है कि शान्तिमय प्रदर्शन करना कोई अपराध नहीं है और सरकार को किसी को यह कह कर गिरफ्तार करने का कोई अधिकार नहीं कि उसे यह आशंका थी कि प्रदर्शन हिंसात्मक हो जायेगा। उन्होंने विद्यार्थियों को अन्याय, जुल्म और शोषण पर आधारित वर्तमान सत्ता ध्वस्त करने का आह्वान किया है।

आवश्यकता है। केंद्र और राज्यों में पुलिस व्यय बढ़ कर इस सीमा तक पहुंच गया है कि वे विकास कार्यों के लिए उपलब्ध राशि में खयानत करने लगे हैं। समिति को विश्वास है कि सरकार इस बारे में फैसला कर के दो तीन माह के भीतर आयोग का गठन कर देगी। यह रपट लोकसभा में ३० अप्रैल, १९७४ को पेश की गयी थी। किंतु आज तक इस पर निर्णय नहीं लिया गया। अतः पुलिस व्यय की और पुलिस पर विपुल व्यय के औचित्य की जांच के लिए आयोग की नियुक्ति नहीं हुई है।

केन्द्रीय सुरक्षित पुलिस का असंतुलित गठन :

हाल के सालों में केन्द्रीय सुरक्षित पुलिस और सीमा सुरक्षा दल की शक्ति में महती वृद्धि के कारण ही केन्द्र सरकार का पुलिस खर्च अधिक बढ़ा है। इस का तीसरा घटक है केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल का प्रादुर्भाव। यह दल पिछले चार वर्षों में दस गुना बढ़ गया है। केन्द्रीय सुरक्षित पुलिस की १९६४-६५ में १५ बटालियनें थीं, जो अब ६० हो गयी हैं। केन्द्रीय गृहमन्त्रालय के सचिव ने कहा है कि यह वृद्धि असामान्य नहीं है कि उस पर टिप्पणी की जाये। उन्होंने कहा, "वास्तव में गृहमन्त्रालय में हमारी धारणा यह है कि इस में कुछ और भी वृद्धि की जा सकती थी, किन्तु हमने कम से कम शक्ति से काम चलाने की कोशिश की। केन्द्रीय सुरक्षित पुलिस का खर्च १९६८-६९ में १३.५७ करोड़ से बढ़ कर १९७३-७४ में ३८.७८ करोड़ रु० हो गया।

१९७३ में केन्द्रीय सुरक्षित पुलिस के इस्तेमाल के अध्ययन से हमें मालूम होता है कि उस वर्ष कुल ८२ तैनातियों में से ५९ तैनातियां अहिंदी क्षेत्रों में हुई और २४ तैनातियां हिंदीभाषी क्षेत्रों में। केन्द्रीय सुरक्षित पुलिस के ५६ प्रतिशत लोग उत्तरप्रदेश, हरयाणा, राजस्थान, बिहार और मध्यप्रदेश, इन पांच हिन्दी प्रदेशों के थे। यह भाषाई असन्तुलन ही शायद के० सु० पु० के बर्बरतापूर्ण व्यवहार की शिकायत के मूल मे है—एक तो अशान्त समाज में पुलिस का काम यों भी कठिन होता है, फिर तैनाती के मुकामों में स्थानीय भाषा की बाधा संवादहीनता को जन्म देती है। यह देश की एकता के लिए विभिन्न प्रकार का खतरा पैदा करता है।

पुलिस और जनता के बीच जो संघर्ष होता है वह रोजमर्रा की बात है और इस से पुलिस के विरुद्ध असंतोष ही उत्पन्न होता है किन्तु यदि पुलिस के जवान और बेसहाय जनता भिन्न-भिन्न भाषाएं बोलते हैं, जो मौजूदा परिस्थितियों में अवश्यंभावी है (१९७०-७१; १९७१-७२, और १९७२-७३, इन तीन वर्षों में पश्चिम बंगाल ने कें. सु. पु. के जवानों का सब से अधिक इस्तेमाल किया लेकिन केंद्रीय सुरक्षा पुलिस में केवल १.९७ प्रतिशत जवान पश्चिम बंगाल के हैं) तो ऐसी सूरत में भाषाई दंगों का खतरा काल्पनिक नहीं रह जाता और इस से एक सीमा तक राष्ट्रीय एकता को धक्का लगेगा।

दुर्भाग्यवश कें. सु. पु. राजनैतिक वाद-विवाद का केंद्र बन गई हैं। १९६८-६९ में इस के जवान तीनबार केरल और पश्चिम बंगाल को भेजे गये, हालांकि उन प्रान्तों से उन्हें बुलाने का कोई निवेदन नहीं प्राप्त हुआ था। यही नहीं, पश्चिम बंगाल की सरकार ने इन की वापसी की प्रार्थना भी एक बार की थी, फिर भी जवानों को वापस नहीं बुलाया गया। हो सकता है कि इससे कें. सु. पु. के जवानों को अपने ऐसे गैर-जिम्मेदाराना आचरण के लिए बढ़ावा मिला हो, जिस के लिए सारे देश में उन्हें दोषी माना जा रहा है। इस का सब से ताजा उदाहरण २७ अगस्त का है, जब पश्चिम बंगाल के उत्तरी भाग में, इसी पुलिस दल ने कूचबिहार में गोली चलाई, जिसके परिणामस्वरूप एक स्कूल अध्यापक मर गया और अन्य सात घायल हो गए। हिन्दुस्तान स्टैंडर्ड' (कलकत्ता) ने अपने सम्पादकीय में लिखा है, "कूच बिहार में पुलिस द्वारा गोली चलाने का, जो उसने स्कूली छात्रों पर चलायी, कोई औचित्य नहीं था। ये छात्र सी. आर. पी. के खिलाफ इसलिए प्रदर्शन कर रहे थे कि उन्होंने बस चालक और उसके सहायक के साथ दुर्व्यवहार किया था। यह बस इसके पहले एक पुलिस गाड़ी से टकरा गई थी।"

सीमा सुरक्षा दल

सीमा सुरक्षा दल का व्यय जो १९६८-६९ में २५.५४ करोड़ था वह १९७४-७५ के बजट में ५७.४१ करोड़ तक पहुंच गया—यानी दूने से भी अधिक। सार्वजनिक लेखा समिति बढ़ते हुए खर्च के औचित्य के बारे में सशंक थी, क्योंकि देश की सीमा की हिफाजत के लिए बहुत बड़ी सेना हमेशा तैयार रहती है।

केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा दल

सेंट्रल इण्डस्ट्रियल सीक्युरिटी फोर्स १९६९-७० में अस्तित्व में आयी। किन्तु उस के पश्चात् १९७१-७२ में उसमें काफी वृद्धि हुई और १०२२० जवानों तक पहुँच गई। अगले वर्ष इसकी शक्ति में ५० प्रतिशत से भी अधिक वृद्धि हुई और उस की जनसंख्या १५,५४५ हो गई। इसकी स्वीकृत शक्ति १७,३३० जवान है, यह दल सार्वजनिक क्षेत्र के ७१ संस्थानों में तैनात है। इस सम्बन्ध में सार्वजनिक लेखा समिति ने केंद्रीय सरकार को हिदायत भी दी है कि वह समूची स्थिति पर पुनर्विचार करे कि इतनी अधिक संख्या में सुरक्षा दलों का, जिनमें से प्रत्येक का बहुत सीमित दायित्व है, गठन करना क्यों आवश्यक है; जबकि सामान्य कानून और व्यवस्था कायम रखने के लिए एक संगठन पहले से ही मौजूद है।

केंद्रीय पुलिस का संवैधानिक पक्ष

यह बात हमारा ध्यान आकर्षित करती है कि केंद्रीय सुरक्षा पुलिस, सीमा सुरक्षा दल और केंद्रीय औद्योगिक

सुरक्षा दल; इन तीनों का विस्तार या गठन राज्यों के पुलिस दलों के कार्यक्षेत्रों का अतिक्रमण करता है और मतिभ्रम की गुंजाइश पैदा कर देता है। देश के भीतर और राज्यों के सम्बन्धों में उलझाव आ चुका हैं, जिसका कारण छठवें वित्त आयोग की शब्दावली में केंद्र सरकार का यह रवैया है कि वह "रोजमर्रा के प्रशासनिक और निरीक्षात्मक कामों को ओढ़ती जाती है।" दोहरी पुलिस व्यवस्था निश्चित रूप से इस रवैये को बढ़ावा देती है। इसके पहले मद्रास उच्च न्यायालय के भूतपूर्व मुख्य न्यायाधीश श्री पी. वी. राजमन्नार की अध्यक्षता में गठित "केन्द्र राज्य सम्बन्ध जांच समिति" कह चुकी है कि "राज्य के भीतर शान्ति कायम रखने के लिए राज्य की पुलिस पर भरोसा किया जाना चाहिए। कानून और व्यवस्था बनाये रखने में केन्द्र का हस्तक्षेप संविधान की व्यवस्थाओं के विरुध प्रतीत होता है। अनुच्छेद ३५५ का अर्थ हमारी राय में केन्द्र सरकार को इस तरह के हस्तक्षेप का अधिकार नहीं देता, क्योंकि कानून और व्यवस्था कायम रखने की पूरी जिम्मेदारी राज्यों को सौंपी गई है। हम इस मत के हैं कि केन्द्रीय सुरक्षा पुलिस को सम्बन्धित राज्यों के अनुरोध या उनकी सहमति के बिना किसी राज्य में तैनात नहीं करना चाहिए।"

पुलिस दल का आधुनिकीकरण

१९६९-७० से केन्द्रीय सरकार १९.८० करोड़ रुपया राज्यों को पुलिस के आधुनिकीकरण के लिए कर्ज और अनुदान के रूप में मंजूर कर चुकी है। आधुनिकीकरण का स्वरूप यह है : (अ) तेज गति की सवारी उपलब्ध करना, (ब) अच्छी संचार प्रणाली, जैसे बेतार से बात कर सकने के यन्त्र (स) अपराध की जांच के लिए वैज्ञानिक प्रयोगशालाओं का प्रबन्ध। वास्तव में केन्द्रीय गृहमन्त्रालय के संयुक्त सचिव ने सार्वजनिक लेखा समिति को बताया था कि "हम इमारतें आदि के लिए ५ लाख रुपये की सहायता देते हैं और दूसरे कामों के लिए कोई सीमा तय नहीं है।" आधुनिकीकरण के लिए मिले कर्जों की अदायगी की बकाया रकम ३१ मार्च, १९७४ को १२.८२ करोड़ रुपया थी। राज्यवार स्थिति इस प्रकार है :

पश्चिमी बंगाल : १.८० करोड़ रु. राजस्थान : १.३८ करोड़ रुपये, उड़ीसा : १.२८ करोड़ रुपये, तमिलनाडु : १.२१ करोड़ रुपये, मध्यप्रदेश १.०० करोड़ रुपये, महाराष्ट्र ९१ लाख रुपये, केरल : ८१ लाख रुपये, दूसरे राज्यों पर बकाया रकम ८० लाख रुपये से कम है। इसी तारीख को राज्यों पर ऋणों की बकाया रकम ४८.०८ करोड़ रुपये थी। ये ऋण आवास के लिए दिए गए थे। इसका राज्यवार ब्योरा यह है।

पश्चिमी बंगाल : ६.०२, महाराष्ट्र ४.००, मध्यप्रदेश ३.८८, आन्ध्रप्रदेश, ३.६९, तमिलनाडु : ३.५९, कर्नाटक : ३.०५, राजस्थान : ३.०४, केरल : २.८८, उड़ीसा : २.४१ बिहार : २.३८, जम्मू और काश्मीर : २.१८, गुजरात : २.१० असम : १.९९, पंजाब : १.२१ और हरयाणा : १.१२ करोड़ रुपये। अन्य राज्यों पर निवास ऋण का बकाया १ करोड़ रुपये से कम है। ये रकमें खर्च की जा चुकी हैं और पुलिस की शक्ति की वृद्धि के बावजूद वह समाज विरोधी अपराधियों को दबाने में असफल नजर आ रही है।

पुलिस अधिकारी की जिज्ञासा

पुलिस दल के अधिक व्यय के औचित्य पर आपत्ति करने वाले अकेले संसदसदस्य ही नहीं रहे हैं, यहां तक कि केन्द्रीय सुरक्षित पुलिस के, जिसने अपने कदाचार के लिए देश भर में बदनामी कमाई है, भूतपूर्व महानिदेशक ने भी यह सवाल उठाया है। श्री बी.जी. कानेटकर केन्द्रीय सुरक्षा पुलिस के पहले इन्सपेक्टर जनरल थे। उनकी नियुक्ति २८ जून, १९६३ को हुई थी। उस वक्त केवल १२ बटालियनें ही थीं। बाद में वह दल के महानिदेशक बनाये गये और १५ सितम्बर १९६९ को, २५ वर्ष साढ़े सात मास की सरकारी सेवा के बाद, सेवा-निवृत्त हो गए - उस समय तक के. सु. पु. का तन्त्र इस सीमा तक फैल गया था : ५२ बटालियनें, एक ग्रुप सेंटर, चार प्रशिक्षण संस्थान, तीन संकेत (सिग्नल) बटालियनें, जो वरिष्ठ वायरलेस परामर्शदाता के अधीन रखी गई थीं। इस संगठन में दो इन्स्पेक्टर जनरल, तीन सहनिदेशक और सात इंस्पेक्टर जनरल थे। इस विभाग की वृद्धि के लिए काफी परिश्रम और प्रभावशीलता से काम करने वाले अधिकारी कानेटकर ने यह प्रश्न उठाया है कि क्या यह देश के लिए गौरव की बात है कि इतनी बड़ी पुलिस सुरक्षित रखनी पड़े!

श्री कानेटकर का कहना है, "दस वर्षों के भीतर पुलिस दल की शक्ति १ बटालियन से बढ़कर ५२ बटालियन हो गई और कई सहायक संस्थान भी खुल गये। इस ठोस वृद्धि के सिलसिले में हजारों नये स्थान बने और सर्वोच्च पद के सिवाय अनेक पदों की श्रेणी ऊंची उठा दी गई, लेकिन जब भी मैंने इस कायाकल्प पर विचार किया तब मुझे लगा कि यह बहुत वैसा ही है जैसा कि परिवार नियोजन आंदोलन के दौरान जचा बचा केन्द्र का धूमधाम से उद्घाटन किया जाना। दल की शक्ति बढ़ाने की आवश्यकता इस लिए महसूस की गई कि देश की हालत चिन्ता का कारण बन गई है। तर्क यह रहा है कि यदि देश के विभिन्न भागों में उपद्रवों पर काबू पाना हो तो के. सु. पु. की ताकत इतनी होनी चाहिए कि उसे स्थानीय पुलिस की सहायता के लिए कहीं भी भेजा जा सके। क्या यह गौरव की बात है। इतना बड़ा दल सिर्फ इसलिए गठित किया जाये कि देश की आन्तरिक दशा कमजोर हो रही है" (बी. जी. कानेटकर, टेल्स आफ क्राइम, बम्बई; १९७१ पृष्ठ १५९)।

यही प्रश्न सामान्य रूप से सभी पुलिस दलों की शक्ति में वृद्धि के बारे में उठता है क्योंकि पुलिस पर खर्च शुद्ध रूप से अनुत्पादक है और विकास कार्यों के लिए उपलब्ध दुर्लभ साधनों को घटा कर ही निकाला जाता है।

—सुभाषचन्द्र सरकार (साभार दिनमान)

पंजीयन क्रमांक RTK 28
Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

राजधर्म
रोहतक
२७ नवम्बर १९७४

राजधर्म प्रकाशन के लिए राजधर्म प्रेस ... मुद्रित। फोन : ...

पाक्षिक

राजधर्म

जनता लहर शुरू: इन्दिरा लहर समाप्त

उलटा पिरामिड या ऊपर से स्वराज्य

स्वतंत्र भारत की प्रथम जन–क्रान्ति

भारतीय राष्ट्रीयता का जनक कौन ?

मुक्ति संग्राम के नायक कौन ?

स्वतंत्र भारत का संविधान

बंसीलाल की पोल खुली

७ अङ्क ३
वरी प्रथम

प्रधान सम्पादक : स्वामी अग्निवेश
सह-सम्पादक : [illegible]

वार्षिक १२ रु०
एक प्रति ७० पैसे

सम्पादकीय

जनता लहर शुरू : इन्दिरा लहर समाप्त

४-५ जनवरी ७५ को चण्डीगढ़ में सम्पन्न भारतीय आर्यसभा की महासमिति ने हरयाणा के विपक्षी दलों को आह्वान किया था कि वे राज्य में होने वाले तीन उपचुनावों में अपने दलीय प्रत्याशियों के स्थान पर जनता उम्मीदवारों को निर्दलीय चुनाव चिन्हों पर चुनाव मैदानों में उतारने का परीक्षण करें। यदि जनता के उम्मीदवारों की सभी विरोधी पार्टियां सहायता करेंगी तो कांग्रेस प्रत्याशी को पराजित करना कठिन नहीं होगा। इस तरह सत्ताधारी दल की भ्रष्ट सरकार को हटाया जा सकता है।

हरयाणा के विपक्षी दलों ने लोकनायक जयप्रकाश नारायण के आह्वान के अनुकूल लिए गये भारतीय आर्यसभा के महासमिति के निर्णय को स्वीकार करके कांग्रेस के हौसले को पस्त कर दिया क्योंकि इस परीक्षण के परिणाम स्वरूप वोट बांट कर आधे से बहुत ही कम वोट प्राप्त कर विजय हासिल करने वाली कांग्रेस पार्टी की जीत नामुमकिन हो गयी। यद्यपि विरोधी उम्मीदवार सही मायने में जनता उम्मीदवार नहीं थे फिर भी हरयाणा के उपचुनावों में इसका अधकचरा प्रयोग अवश्य हुआ है। चूंकि स्वतन्त्रता के २७ वर्षों के कांग्रेसी कुशासन ने लोकतान्त्रिक मूल्यों एवं आर्थिक न्याय की अत्यधिक अवमानना की है अतः श्री जयप्रकाश नारायण के "प्रत्यक्ष साझेदारी वाले लोकतन्त्र" के अनुरूप 'जनता उम्मीदवार' का चयन करना वर्तमान परिस्थितियों में इतना आसान नहीं है।

जातीयता, क्षेत्रवाद और पैसे पर आधारित चुनाव नीति के बावजूद जनता ने कांग्रेस को भारी मतों से पराजित कर वर्तमान सरकार के जनहित एवं लोकतन्त्र विरोधी रवैये के विरुद्ध अपना प्रबल आक्रोश व्यक्त किया है। कांग्रेस ने रोड़ी (हिसार), महम (रोहतक) और नूह (गुड़गावां) में खुलकर सरकारी मशीनरी का भारी पैमाने पर दुरुपयोग किया।

चुनाव क्षेत्रों में सरकारी दमनकारी मशीनरी का प्रयोग कर आतंक फैलाया गया, वोट प्राप्त करने के लिए पैसों को पानी की तरह बहाया गया, और जातिवाद तथा क्षेत्रीयता को अधिक प्रश्रय दिया गया। चुनाव क्षेत्रों में चुनाव की वजह से चीनी, सीमेन्ट तथा अनाज के राशन की मात्रा बढ़ा दी गयी जबकि जिला मुख्यालयों में आटे की छीना-झपटी जारी थी। इसी तरह चुनाव क्षेत्रों में नहर से अपने-अपने खेतों में नालियां तोड़ ली गई जिससे उनमें तेजी से पानी पहुंचाया जा सके। यद्यपि यह गैरकानूनी है। आमतौर पर इस जुर्म की सजा सिंचाई कर के दस गुने तक होती है। लेकिन चुनाव के दौरान सरकार ने छूट दे रखी थी। फिर भी जनता ने इन तमाम दबावों और प्रलोभनों से ऊपर उठकर कांग्रेसी प्रत्याशियों को भारी मतों से पराजित किया।

हिसार जिले के रोड़ी के उपचुनाव में जो प्रतिष्ठा का सवाल बन गया था, जनता उम्मीदवार श्री देवीलाल ने जो हरयाणा के प्रसिद्ध नेता और भालोद के उपाध्यक्ष हैं, अपने निकटतम प्रतिद्वन्द्वी इन्द्रराज सिंह (कांग्रेस) को १६४७२ मतों से परास्त किया। इसी तरह रोहतक जिले के महम निर्वाचन क्षेत्र के चौबीसी पंचायत के प्रत्याशी श्री हरस्वरूप ने अपने निकटम कांग्रेसी प्रतिद्वन्द्वी श्री राजसिंह को ४४५५ मतों से पराजित किया। श्री हरस्वरूप रोहतक जिले के एक युवा वकील हैं। तीन उप-निर्वाचन क्षेत्रों में से मात्र नूह की ही एक सीट से कांग्रेस को सन्तोष करना पड़ा। हरयाणा विधान सभा की इन तीन उपनिर्वाचन क्षेत्रों की तरफ सारे देश का ध्यान आकर्षित था। इन तीनों स्थानों पर जनता उम्मीदवारों से कांग्रेस का कड़ा संघर्ष था।

जबलपुर (म. प्र.), गोविन्दपुरा (भोपाल) तथा कस्तूरबानगर (नई दिल्ली) का इतिहास दोहरा कर हरयाणा की जनता ने भारतीय राजनीति को एक ऐतिहासिक मोड़ दिया है। अपनी असहनीय स्थिति के विपरीत जनता के प्रबल आक्रोश को ज्वालामुखी की तरफ बढ़ते हुए देखकर श्रीमती इन्दिरा गांधी और हरयाणा के मुख्यमंत्री श्री बंसीलाल की आंखें खुल जानी चाहिए। सत्तारूढ़ दल को यह भली-भांति स्पष्ट हो जाना चाहिए कि "गरीबी हटाओ" का झूठा नारा देकर जनता की आंखों में धूल

झोंक कर अब अधिक देर तक सत्तासीन रहना असम्भव है । अब तक देश में सम्पन्न होने वाले लोक-सभा एवं विधान सभाओं के चुनाव परिणामों से स्पष्ट है कि जनता वर्तमान कांग्रेसी प्रशासन में तनिक भी आस्था नहीं रखती । अतः नैतिकता का आग्रह है कि प्रधानमंत्री तुरन्त त्याग पत्र देकर मध्यावधि चुनाव कराएँ जिससे जनता अपने हित के अनुकूल प्रतिनिधियों को चयन कर अपना विश्वास व्यक्त कर सके । परन्तु ऐसा न करके प्रधानमंत्री लोकतन्त्र की अवमानना ही नहीं बल्कि अपने निहित स्वार्थ की पूर्ति के लिए घोर तानाशाही प्रवृत्ति का परिचय दे रही हैं ।

गिरजेश्वर

पैगाम—लोकनायक का

● आज सत्ताइस-अट्ठाइस वर्षों के बाद का जो स्वराज्य है, उसमें जनता कराह रही है । भूख है, मंहगाई है, भ्रष्टाचार है । आजादी की लड़ाई के हम सिपाहियों ने जो सपना देखा था, २८ वर्ष के बाद भी वह भारत नजर नहीं आ रहा है ।

● महात्मा गांधी ने जो क्रांतिकारी काम शुरू किया था, उस अधूरी क्रांति को पूरा करने के लिए आज यह दूसरी क्राँति हो रही है । दूर जाना है, बहुत दूर । लोकतन्त्र को वास्तविक बनाना है । अन्याय और शोषण को मिटाना है । नया भारत बनाना है ।

● अगर कभी जनता का राज बन सकता है, तो तभी जब शान्ति रहेगी, लोकतन्त्र रहेगा । जहाँ हिंसा से क्राँति हुई है, वहां असल में बन्दूक वालों का राज हो जाता है । जनता का उद्धार करने कोई मसीहा नहीं आयेगा । जनता को अपना उद्धार स्वयं करना है ।

● नया समाज बनाने के हमारे सामाजिक, आर्थिक उद्देश्यों की पूर्ति क्रान्ति से ही संभव है । इसके लिए हमें संघर्ष और रचना की विविध प्रक्रियाओं से गुजरना होगा । संपूर्ण क्रान्ति के इस आंदोलन के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक स्वरूप की रूपरेखा मोटे तौर पर महात्मा गांधी की विचार धारा के अनुरूप होगी । हर क्रान्ति अपना कार्यक्रम खुद बनाती है, हमें किसी की नकल नहीं करनी है ।

● सामान्य परिस्थितियों में जो कार्य 50-100 वर्षों में होता है वह क्रान्तिकारी परिस्थितियों में 5-10 वर्षों में हो जाता है ।

● इस क्रांति के बिना भारत और भारतीयता का बचना दुष्कर प्रतीत हो रहा हैं । अगर यह आंदोलन विफल हो गया तो अंधकारमय है देश का भविष्य ।

जयप्रकाश नारायण

६ मार्च को—सुबह १० बजे, लालकिला मैदान से—जयप्रकाश के साथ—बीस लाख कदम—संसद की ओर—क्रांति के लिए—आप भी चलिए

हरयाणा सरकार की प्रबल भर्त्सना

स्वामी इन्द्रवेश जी प्रधान 'आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब' ने हरयाणा के चार सौ से अधिक अध्यापकों को गैर-कानूनी ढंग से दादरी पुलिस द्वारा हिरासत में रखने के लिए हरयाणा सरकार की कड़ी निन्दा की । सरकार ने तमाम नैतिक एवं प्रजातांत्रिक मूल्यों को तिलाञ्जलि दे दी है । उन्होंने ३० से अधिक अध्यापक नेताओं के विरुद्ध जिनमें संघ के महामंत्री श्री रामदत्त शर्मा और उप प्रधान श्री चन्द्रप्रकाश शर्मा भी शामिल हैं, झूठे मुकदमे बनाये हैं और उनको रोहतक जेल में भेज दिया है । हिरासत में रखे चार सौ से अधिक अध्यापकों की घड़ी, कम्बल तथा पैसे आदि छीन कर जंगलों में छोड़ दिया गया और खाने के लिए कुछ भी नहीं दिया । विश्वस्त सूत्रों से मुझे मालूम हुआ है कि पुलिस ने अध्यापकों का घोर अपमान किया और कुछ अध्यापक कार्यकर्त्ताओं को बड़ी बेहरमी से पीटा । अतः प्रधानमंत्री को शीघ्र ही एक न्यायायिक जांच आयोग की नियुक्ति करके हरियाणा में लगातार हो रहे नागरिक स्वतंत्रता के हनन की जांच करवाना चाहिए । पांच हजार से अधिक अध्यापक अपने संघ के प्रधान श्री सोहनलाल की स्वागत सभा में भाग लेने के लिए आये थे । पर एक हजार से अधिक तैनात हथियारबन्द पुलिस ने उनको एकत्रित नहीं होने दिया और न ही स्टेज लगाने दिया । स्टेज इत्यादि का सामान भी पुलिस उठा ले गई । यदि हरयाणा सरकार की इन अमानुषिक हरकतों को नहीं रोका गया तो कुछ अप्रिय घटनाएं भी घट सकती हैं और इसकी तमाम जिम्मेदारी राज्य सरकार पर होगी । पिछले ६ वर्षों से हरयाणा के अन्दर अध्यापकों के साथ दुर्व्यवहार हो रहा है परन्तु अब हरयाणा की जागरूक जनता हरयाणा सरकार के द्वारा अध्यापक विरोधी नीति अपनाने के कारण लगातार अपने बच्चों की शिक्षा के ऊपर सरकार के कुठाराघातों को अधिक लम्बे समय तक बर्दाश्त नहीं करेगी ।

बन्सीलाल की पोल खुली

हरयाणा बिजली बोर्ड में भारी हेराफेरी के बारे में विपक्ष ने जो आरोप पत्र राष्ट्रपति को दिया था - वह सही प्रमाणित हुआ। उसमें लगाये गये आरोपों की पुष्टि किसी गैर सरकारी संस्था ने नहीं बल्कि भारत सरकार के महालेखाकार ने अपनी लेखा रिपोर्ट में की है।

इस रिपोर्ट के प्रकाशन के बाद अब हरयाणा के मुख्य मन्त्री श्री बन्सीलाल तथा हरयाणा बिजली बोर्ड के अध्यक्ष श्री पी. एन. साहनी को अपने अपने पदों पर बने रहने का तनिक भी अधिकार नहीं है। श्री साहनी श्री बंसीलाल के लिए उसी प्रकार हैं जिस प्रकार प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के लिए श्री ललित नारायण मिश्र थे।

राष्ट्रपति को दिये आरोप पत्र में विपक्षी दलों ने कहा था कि राज्य के सभी ग्रामों के तथाकथित शतप्रतिशत बिजलीकरण के काम में भारी अनियमिततायें बरती गई हैं और बोर्ड को लाखों रुपये अधिक खर्च करने पड़े है। महालेखाकार की रिपोर्ट में इस आरोप को सही पाया गया है।

हरियाणा के मुख्यमन्त्री ने स्वयं को दूध का धुला हुआ बताने के लिए अपनी सरकार से महालेखाकार को निवेदन भिजवाया था कि बोर्ड के लेखों की जांच की जाये। इस निवेदन को स्वीकार करते हुए महालेखाकार ने लेखाओं की जांच की थी।

रिपोर्ट में कहा गया है कि यद्यपि ग्रामीण बिजलीकरण के लिए १९६८-६९ और १९७१-७२ के लिए ४४ करोड़ रुपये रखे गए परन्तु इसके लिए किसी प्रकार की स्कीम नहीं बनाई गई और ना ही इस बारे में राज्य सरकार अथवा केन्द्र के बिजली संस्थान से परामर्श लिया गया।

हरयाणा के कुल ६६९९ गावों में से ३३६७ में मार्च १९७० तक बिजली की व्यवस्था हो गई थी। अप्रैल १९७० में बोर्ड ने निर्णय लिया कि बाकी के गावों का भी बिजलीकरण कर दिया जाये जबकि १९७०-७१ में केवल पाँच सौ गावों के बिजलीकरण की वित्तीय व्यवस्था थी। अगस्त १९७० में हरयाणा सरकार ने बोर्ड से कहा कि २६ जनवरी १९७१ तक राज्य के सभी गावों का बिजलीकरण कर दिया जाये परन्तु सरकार के दावे के अनुसार २९ नवम्बर १९७० को हरयाणा के सभी गावों का बिजलीकरण कर दिया गया। इस दिन प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी ने करनाल के निकट तथाकथित अन्तिम गांव उचानी में बिजली की रोशनी का उद्घाटन कर हरियाणा के गांवों के शतप्रतिशत बिजलीकरण की रस्म अदा की। कांग्रेस सरकार इस थोथे दावे की नकाब भारत सरकार के महालेखाकार ने खोल दी है। प्रधानमन्त्री से गलत काम करवाने वाले हरयाणा के मुख्य मन्त्री श्री बन्सी लाल ने हरयाणा का लाखों रुपये इस प्रचार पर खर्च किये कि हरयाणा देश का एकमात्र ऐसा राज्य है जहाँ सभी गावों में बिजली पहुंचा दी गई है।

हरयाणा बिजली बोर्ड

महालेखाकार की रिपोर्ट में कहा गया है कि मार्च १९७१ तक १२२६ गावों में तथा मार्च १९७२ तक ५७८ गावों में तथा मार्च १९७३ तक ३१० गावों में बिजली पहुंचाना बाकी था जबकि बन्सीलाल ने २९ नवम्बर १९७० को ही यह घोषणा कर दी कि हरयाणा के सारे गावों में बिजली पहुंच गई है। इतना झूठ और जनता की आंखों में धूल झोंकने के बाद भी प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी बंसीलाल को अपना संरक्षण दिये हुए हैं।

रिपोर्ट में बताया गया है कि गांवों में बिजली पहुंचाने के काम में बरती गई अनियमितताओं के परिणामस्वरूप बोर्ड के खर्चों में भारी वृद्धि हुई। ग्रामीण उपभोक्ताओं से राजस्व की वृद्धि १९६९–७० से ४ करोड़ ९० लाख रुपये से १९७१-७२ में ८ करोड़ ४० लाख रुपये हुई जबकि बोर्ड के खर्च में ६ करोड़ ३० लाख रुपये (१९६९-७० से १३ करोड़ पचास लाख रुपये की वृद्धि १९७१-७२) हुई।

रिपोर्ट में बोर्ड द्वारा खरीदे गये कंडक्टर, पोल, मीटर, ट्रांसफार्मर, तारों आदि में अनियमितताओं का उल्लेख किया गया है। बोर्ड ने माल खरीदते समय अपनी आवश्यकताओं का ठीक तरह से मूल्यांकन नहीं किया और ज्यादा माल खरीद लिया। कहीं अधिक मूल्य दिया गया तो कहीं शर्त के मुताबिक माल की सप्लाइ नहीं करने वाली फर्म के खिलाफ कारवाई नहीं की गई और फिर उसी से ही माल खरीदा गया। एक मामले में एक फर्म से ९१ लाख ४६ हज़ार रुपये का माल खरीदा गया जबकि उस फर्म की जमा पूंजी मात्र पाँच हजार रुपये ही थी। कंडक्टरों की खरीद में एक करोड़ ६ लाख रुपये अधिक दिये गये।

महालेखाकार की रिपोर्ट केन्द्र में बन्सीलाल के संरक्षकों की आखें खोलने वाली सिद्ध होनी चाहिये। विपक्ष के आरोप सही सिद्ध हुए हैं। बोर्ड के अधिकारियों ने माल खरीदने में भारी हेराफेरी की है और उन्हें बन्सीलाल का पूरा साथ था।

लहू की लालिमा से

स्वतन्त्र भारत का संविधान: देश की जनता के साथ खूबसूरत धोखा

○ जयदेव अनल

गत २६ जनवरी को भारतीय गणतन्त्र ने अपने जीवन के २५ वर्ष पूरे किये। हमारे शास्त्रों ने २५ वर्ष की उमर को बाल्यावस्था की समाप्ति तथा यौवनारम्भ का प्रतीक माना है। परन्तु २५ वर्ष का हमारा संविधान अपने यौवन-काल में ही जर्जरित सा, वृद्ध सा– प्रतीत हो रहा है। जिन लोगों के द्वारा इस का निर्माण हुआ था, कालान्तर में उन्हीं ने (या उनके अनुयायियों ने) इसकी धज्जियां उड़ानी आरम्भ कर दीं और आज नतीजा यह हो रहा है कि यह अपने ही निर्माताओं द्वारा खोदी गई क़ब्र में पड़ा सड़ रहा है।

देश के शहीदों ने अपने खून से जिस आजादी की फुलवारी को सींचा था; उसे हमारे संविधान निर्माताओं ने धूल-धूसरित कर दिया। मुट्ठी भर लोगों के निर्णय को "जनता का निर्णय" बता कर बड़ी चालाकी के साथ जनता को उल्लू बनाया गया। संविधान निर्मात्री सभा के इने-गिने लोगों ने अपने स्वार्थों की रक्षा के लिए कुछ कानून बनाकर उन्हें जनता के नाम से प्रसारित करते हुए कहा—

"We the people of India in our Constituent Assembly this twenty-sixth day of November, 1949 do hereby adopt, enact and give to ourselves this Constitution."

हमारे संविधान के लिए यह कहा गया है कि यह "जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए (Of the people, by the people and for the people) होगा। पर आजादी के पिछले २७ वर्षों ने यह सिद्ध कर दिया है, ये तीनों ही बातें 'फ्राड' हैं। वस्तुतः यह संविधान "पूँजीपतियों का, पूँजीपतियों के द्वारा और पूँजीपतियों के लिए" है। 'गवर्नमेण्ट ऑफ इण्डिया एक्ट' १९३५ के अनुसार अंग्रेज सरकार ने १९४६ में होने वाले प्रान्तीय विधान सभाओं के चुनावों में 'अपने लिए सुविधाजनक' लोगों को ही चुनने अथवा खड़े होने का अधिकार दिया था। परिणामत; समूचे भारतवर्ष की २८.५ प्रतिशत वयस्क जनता ही इन चुनावों में भाग ले सकी थी। इस २८.५ प्रतिशत में न कोई किसानों का ही प्रतिनिधि था और न ही मजदूरों अथवा छोटे तबके के व्यापारियों का।

संविधान को बनाने में केवल एक दल का हाथ था– और वह दल था "भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस"। संविधान निर्मात्री सभा ने उन्हीं निर्णयों को महत्त्व दिया जो कि कांग्रेस द्वारा लिये जा चुके थे। दूसरे शब्दों में हम यूँ भी कह सकते हैं कि यह संविधान भारत की जनता का अपना संविधान नहीं था, बल्कि कांग्रेसी तानाशाहों द्वारा थोपा गया था।

लोग कहा करते हैं कि अंग्रेजों ने हमारी शस्य-श्यामला धरती को लूट-लूट कर वीरान बना दिया। पर क्या आजादी के बाद यह लूट कम हुई? क्या लगा इस पर तनिक भी अंकुश? यहां तो आसमान से गिरा और खजूर में अटका वाली बात हो गई! एक सांपनाथ से पीछा छुड़ाया तो नागनाथ ने घर में बिल बना लिया। सफेद गया तो काला आ गया। हमें क्या लाभ हुआ? जनता के दुःख-दर्दों में क्या कटौती हुई? क्या आज भी वह ग़म का घूंट पी-पीकर नहीं जी रही है?

जिस संविधान को "जनता के लिए" करार दिया गया; वही संविधान आज जनता के रक्त को पूँजीपतियों की तिजोरी में भरने का उपकरण बना हुआ है। जिस देश के करोड़ों इन्सान कङ्करीली धरती का बिछौना बिछाकर और आकाश की चादर ओढ़कर जीवन बिताते हैं; उसी देश का राष्ट्रपति लगभग सवा तीन सौ एकड़ जमीन घेरे हुए ३४० कमरों के भवन में निवास करता है। जिस देश की दो तिहाई जनता (योजना राज्य मंत्री श्री मोहन धारिया के अनुसार) गरीबी की सीमा रेखा से भी नीचे जीवन बिता रही है, उसी देश के खाद्यमंत्री पर बिलासपुर में, अकाल राहत क्षेत्रों के दौरे पर जाने के समय, एक समय के 'सादा भोजन' का व्यय हजारों रुपयों में आंका जाता है। देश के एक आदमी (राष्ट्रपति) का दैनिक व्यय लगभग ६ हजार रुपया है और दूसरे आदमी की दैनिक आय लगभग ५० पैसे है—क्या सुन्दर समाजवादी आदर्श है?

रोज नये कानून बनते हैं और रोज उनके जनाजे निकलते हैं। मजे की बात यह है कि जो इन्हें बनाते हैं वे ही

सबसे पहले इनमें पलीता लगाते हैं। बाल-विवाह पर अंकुश लगाने के लिए कानून बनाया, सामूहिक भोज की सीमा निर्धारित की तथा मृतक भोज पर प्रतिबन्ध लगाया गया। कुछ एक लोग गिरफ्तार भी किये गये। जिनके पास न्याय को खरीदने के लिए पैसा नहीं था, उनमें से कुछ एक को सजायें भी दी गईं। पर राजस्थान की जनता ने पिछले दिनों देखा कि ८ दिसम्बर को अपनी लड़की की शादी में लगभग ३००० लोगों को दावत देने वाला जोधपुर का विधायक पुखराज कालानी तथा अपनी ७ वर्षीया नाबालिग लड़की की शादी में लगभग ७००० लोगों को दावत देने वाला इसी संभाग का मंत्री बिश्नोई दोनों खुले घूम रहे हैं, तो उसे संविधान और इसके रक्षकों की 'ईमानदारी' का ज्ञान हो गया।

सबसे बड़ा झूठ जो आज कांग्रेसी नेताओं द्वारा बोला जा रहा है वह यह है कि पूर्णतः संवैधानिक रीति से जनता ने उन्हें चुना है। वे कहते हैं—'जब जनता हमें पूरे पांच साल के लिए चुनती है, तो हम अपनी कुर्सी क्यों छोड़ें?' हमें समझ में नहीं आता कि कौनसी जनता ने इन्हें चुना है? पिछले लोकसभा के चुनावों में लगभग २० करोड़ रुपया पानी की तरह बहाने के बाद भी कांग्रेस कितने वोट ले पायी? जहाँ विरोधी दलों के उम्मीदवारों के पास अपनी जमानत भरने को भी पैसा नहीं था, वहीं इन्दिरा जी ८ रुपये प्रतिदिन के हिसाब से वायुसेना का हेलिकोप्टर 'किराये पर' लेकर अपना "तूफानी दौरा" करती थी। क्या-क्या हथकन्डे नहीं अपनाये गये लोगों के वोट पर डाका डालने के लिए? आज भी सुना जा रहा है कि कांग्रेस ने संभावित चुनावों के लिए अपने चुनाव कोष में लगभग ३० करोड़ रुपये जमा करने का लक्ष्य निर्धारित किया है। बताया जाता है कि श्री ललित नारायण मिश्रा के स्वर्ग सिधार जाने से कांग्रेस को बड़ा धक्का लगा है. क्योंकि वही इस दल के लिए सबसे अधिक 'चन्दा' इकट्ठा किया करते थे। जिस 'आयात लाइसैंस स्कैण्डल' ने अन्तिम दम तक मिश्रा जी का पीछा नहीं छोड़ा वह भी चन्दा एकत्र करने के लिए अपनाये गये तरीकों में से ही एक था।

आज देश का भाग्य केवल एक व्यक्ति की उंगली पर नाच रहा है। लोकतन्त्र के पर्दे के पीछे अधिनायकवाद अपना दानवी मुँह खोले खड़ा हुआ है। नारा तो सत्ता के विकेन्द्रीकरण का लगाया जाता है, पर वास्तविकता यह है कि सारी सत्ता इन्दिरा जी के हाथों में केन्द्रित है। राज्यों के मुख्यमंत्रियों से लेकर छोटे से छोटे कांग्रेस कार्यकर्त्ता तक सभी इन्दिरा जी की आज्ञा को शिरोधार्य मानते हैं। किसी को यदि छींक भी हो जाये तो दिल्ली फोन मिलाता है। क्या यही गाँधी के स्वप्नों का ग्राम-राज है।

संक्षेप में हम इतना कह सकते हैं कि हमारा संविधान हमारा अपना नहीं, प्रत्युत उधार लिया हुआ है। चीन के नये संविधान में स्पष्ट रूप से लिखा हुआ है कि प्रत्येक नागरिक को उसकी योग्यता के अनुसार काम दिया जायेगा। साथ ही यह भी कहा गया है कि जो काम नहीं करेगा वह भूखा मरेगा। हमारे यहां बिल्कुल उल्टा है। जो काम करता है वह भूखा मरता है और जो एक तिनका भी नहीं तोड़ता वह ऐश करता है। न हमारी अपनी कोई भाषा है और न ही इतिहास। सभी कुछ तो अंग्रेजों द्वारा दिया हुआ है। उचित अनुचित साधनों के द्वारा प्रत्येक को अन्धा-धुन्ध दौलत बटोरने का अधिकार है ताकि एक तो आने वाली दस पीढ़ियों के लिए जमा कर सके और दूसरा उसी के घर के सामने फुटपाथ पर भूख से बिलबिलाता रहे।

इन सब बातों के देखते हुए आज आन्दोलन के पथ पर अग्रसर युवकों से इतना ही कहना है कि यदि कोई उन्हें संविधान में एक-दो संशोधनों का लालच देना चाहे तो वे इसे हर्गिज स्वीकार न करें। हमने संघर्ष करके आजादी प्राप्त की है तो उस आजादी को बरकरार रखने तथा एक नई व्यवस्था के निर्माण के लिए भी हमें संघर्ष करने को तैयार रहना चाहिए। हमें उस दिन तक संघर्ष करना है जिस दिन कि हम वर्तमान पूँजीवादी व्यवस्था और उसका संरक्षण करने वाले इस संविधान दोनों को दफना कर एक नई व्यवस्था और तदनुसार एक नया, सर्वहितकारी तथा जन-प्रतिनिधि संविधान न बना लें। जिस दिन हम यह सब कर सके उसी दिन सही अर्थों में हम आजाद होंगे।

राजधर्म

१. प्रकाशन स्थान	झज्जर रोड, रोहतक
२. प्रकाशन अवधि	पाक्षिक
३. मुद्रक-नाम, राष्ट्रीयता और पता	स्वामी अग्निवेश, भारतीय, आर्य सभा झज्जर रोड, रोहतक
४. प्रकाशक-नाम, राष्ट्रीयता, पता	स्वामी अग्निवेश, भारतीय, आर्य सभा झज्जर रोड, रोहतक
५. सम्पादक-नाम, राष्ट्रीयता, पता	स्वामी अग्निवेश, भारतीय, आर्य सभा झज्जर रोड, रोहतक
६. उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूँजी के एक प्रतिशत से अधिक के साँझेदार या हिस्सेदार हों।	राजधर्म प्रकाशन, झज्जर रोड, रोहतक

मैं स्वामी अग्निवेश एतद् द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गए विवरण सत्य हैं।

दिनांक १५ फरवरी १९७५

स्वामी अग्निवेश
प्रकाशक

मुक्ति संग्राम के नायक कौन ?

० रामशरण जोशी

पिछले अंक २०, १९७४ में आप पढ़ चुके हैं कि भारत की शोषित जनता ने जहां अंग्रेज साम्राज्यशाहों के विरुद्ध हथियार उठाये वहीं देशी सामंतों के खिलाफ भी संघर्ष किये। ये संघर्ष १८वीं एवं १९वीं शताब्दी के मध्य तक जारी रहे। मोटे तौर पर इन संघर्षों में किसानों, कारीगरों आदि ने भाग लिया था। अब आगे पढ़िये—

मनुष्य का अस्तित्व, संघर्ष, उसकी चेतना और उसके द्वारा बनाए गए मूल्यों व संस्थाओं के आधार पर बाह्य जगत की शक्तियों की सक्रियता है। अतः इतिहास भी अपवाद नहीं है। अपने परिवेश के प्रति व घटना के प्रति मनुष्य कभी भी निरपेक्ष या तटस्थ नहीं रह सकता। जाने-अनजाने में बाह्य शक्तियां मनुष्य पर आघात करती हैं। फिर एक चेतना जन्म लेती है और अनुकूल या प्रतिकूल प्रतिक्रियाएं अस्तित्व में आती हैं। मनुष्य इन प्रतिक्रियाओं को विभिन्न माध्यमों एवं अवस्थाओं में व्यक्त करता है। बाह्य शक्तियों पर इनका स्थायी या अस्थायी प्रभाव अवश्य पड़ता है जिससे नई शक्तियों को जन्म मिलता है। इन्हीं आघातों व प्रतिघातों, शक्तियों व प्रतिशक्तियों, क्रियाओं व प्रतिक्रियाओं के बीच व्याप्त द्वंद्व (डायलिटिक्स) से मनुष्य के इतिहास का समानान्तर धरातल पर निर्माण होता रहता है। परन्तु भाववादी विचारक या तटस्थ (दावानुसार) इतिहास पर द्वंद्व को अस्वीकारते हुए भौतिक शक्तियों, उनसे जनित घटनाओं के प्रति मनोगत दृष्टिकोण अपनाते हैं। वे वस्तुओं और घटनाओं को यथावत् (या यथास्थितिवादी) अवस्थामें देखते हैं, फलस्वरूप वे जड़वादी व्यवस्था के पोषक या पक्षधर बन जाते हैं। भारत की जनता का इतिहास भी इसी 'दलदल' में फंस कर रह गया है।

एक लम्बे अर्से से इस पर विवाद है कि १९ वीं शताब्दी का मुक्ति संग्राम (१८५७) का वास्तविक चरित्र क्या था ? क्या सैनिक एवं चन्द देशी सामन्तों का एक संयुक्त षड्यन्त्र मात्र था ? क्या वास्तव में राष्ट्रीय मुक्ति संग्राम या जन क्रान्ति थी ? क्या आम जनता ने इसमें भाग लिया ? क्या कतिपय सामन्तों ने विवश होकर विद्रोही सैनिकों का साथ दिया था ? आदि ऐसे अनेक प्रश्न हैं जिन्हें लेकर इतिहासकारों में व्यापक मतभेद हैं। मुक्ति संग्राम का वास्तविक चरित्र और उसके नायक को स्थापित करने के लिए इतिहास की सिलसिलेवार ढंग से यात्रा करनी होगी।

प्रायः पश्चिमी मूल्यों व व्यवस्था से प्रभावित बुद्धिजीवी वर्ग भारतीय जनता को कोसता हुआ उसे जाहिल, गंवार और गुलाम रहने योग्य कह कर दिमाग के दिवालियेपन का सबूत देता रहता है। इसी प्रकार पिसे या सर्वहारा वर्ग की राजनीति के पक्षधर अधिकांश भारतीय तथाकथित मार्क्सवादी बुद्धिजीवी भी अपने देश से कट कर अन्यो पर बहस करने में जितनी शक्ति व श्रम खर्च करते हैं, उसका चौथाई हिस्सा भी भारत की जनता और उसके इतिहास को समझने व जानने पर खर्च नहीं करते। यह स्थिति कमोबेश अभी तक बनी हुई है। कम-से-कम तथाकथित मार्क्सवादी बुद्धिजीवियों, जिन्हें अपनी जनता एवं उनके संघर्षों के सम्बन्ध में पुख्ता ज्ञान होना चाहिए, के लिए आत्म-आलोचना की स्थिति है।

चर्चा चल रही थी जनता के 'मुक्ति संग्राम' की। पिछले अंक में हम कह चुके हैं कि शोषित-पीड़ित किसान, कारीगर और अन्य श्रमिकों ने जहां साम्राज्यवादी शोषकों (अंग्रेजों) के खिलाफ बगावत की, वहीं देशी शोषकों (सामन्त वर्ग) के खिलाफ भी जंग की। 'वास्तव में जहाँ दमन है, वहाँ विद्रोह है।' भारत की जनता इस सार्वभौमिक सिद्धान्त का पालन करती आ रही है, करती रहेगी। यद्यपि शासक वर्ग का हमेशा से प्रयास जनता की चेतना पर पहरा बैठाना रहा है। उसे यह कभी न सोचने दिया गया कि उसका भी कोई अस्तित्व है। वह उत्पादन की प्रमुख शक्ति है। अंग्रेजों ने जहां जनता का आर्थिक व राजनैतिक शोषण किया, वहीं सांस्कृतिक भी किया। यहां तक कि अंग्रेजों ने इस सम्भावना से भी इन्कार किया कि भारतीयों में भी 'विवेक' के तत्त्व हो सकते हैं। उन्हें अपनी ही दृष्टि में हीन बनाने की कोशिश की गई। स्वयं अंग्रेज विद्वान थोमस एडवर्ड का कहना है कि अंग्रेज शासकों ने भारतीयों को कभी भी विश्वास योग्य नहीं समझा। उन्हें अधम व जाहिल बनाए रखा गया[1]। १८३७ में इंगलैण्ड की व्यापार नीति पर लिखते हुए मोन्टगोमरी मार्टिन ने मत व्यक्त किया— अंग्रेजी व्यापार के क्रूर स्वार्थों की पूर्ति के लिए हमने इन दयनीय मनुष्यों (भारतीयों) को और भी अधम बनाने की हर सम्भव कोशिश की है।'[2] बावजूद इसके भारतीय जनता उत्पीड़न, शोषण, अन्याय के खिलाफ संगठित हुई और विदेशी सत्ता को हमेशा के लिए ध्वस्त करने की ओर अग्रसर हुई है। उसका यह संघर्ष आज भी जारी है।

१८वीं शताब्दी में प्लासी युद्ध (१७५७) और बक्सर के युद्ध (१७६४) ने यह फैसला दे दिया था कि अब अंग्रेज भारत में जमने जा रहे हैं। दोनों युद्धों में विजय के पश्चात् अंग्रेजों ने अपनी राजनीतिक सत्ता मजबूत करने के लिए प्रत्येक क्षेत्र में तेजी से कदम उठाने शुरू कर दिये थे। इस दिशा में जो पहला कदम उठाया गया, वह था आर्थिक व सामाजिक क्षेत्रों में परिवर्तन। हम पहले कह चुके हैं कि एक समय जो भारत निर्यात करने वाला देश था उसे किस प्रकार १९वीं शताब्दी में बने माल की आयात मंडी तथा कच्चे माल की निर्यात मंडी में बदल दिया गया था।

दीर्घकालीन योजनायें और अन्तर्विरोध का विष

बंगाल, असम, उड़ीसा, बिहार में पांव जमाने के पश्चात् अंग्रेज शासक भारत में शासन चलाने के लिए दीर्घकालीन योजनाओं को लागू करने में सक्रिय हो गये थे। उन्हें यह मालूम हो गया था कि सम्पूर्ण भारत पर शासन करने के लिए जहाँ उनकी सीधी टक्कर स्थानीय जनता से है वहां देशी सामन्तों से भी है। मुगलों के युग से चले आ रहे पुश्तैनी राजा-महाराजा, नवाब आदि आसानी से अंग्रेजों की हुकूमत स्वीकार करने वाले नहीं। अंग्रेज यह अच्छी तरह से जानते थे कि देशी शासक भी अपनी जनता के शोषण में उनसे पीछे नहीं हैं। भारत की जनता को देशी सामन्तों से भी असन्तोष है। यह असन्तोष समय-समय पर विद्रोह की शक्ल ले चुका है। निःसंदेह, **अंग्रेजों की सत्ता जमने से पूर्व सामन्तों एवं जनता के बीच सीधा व प्रमुख अन्तर्विरोध था। दूसरा अन्तर्विरोध सामन्तों के बीच था।** मुगल शासकों के शासन में भी सामन्त कई खेमों में विभाजित थे। मसलन हिन्दू राजाओं में दो खेमे थे—दिल्ली के समर्थक एवं विरोधी। नवाबों व सुल्तानों की भी यही स्थिति थी। इनमें आपसी अन्तर्विरोध थे। १८वीं शताब्दी में अंग्रेज इन अन्तर्विरोधों का इस्तेमाल अपनी सत्ता जमाने के लिए करना चाहते थे। इसके लिए अंग्रेजों ने परमानेन्ट लैण्ड सैटिलमेन्ट, सब्सीडियरी एलायन्स, एनक्शन की नीति, लैप्स की नीति आदि को लागू कर धीरे-धीरे अपना पंजा जमाना शुरू कर दिया था।

१८वीं शताब्दी के अन्तिम दशकों और १९वीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि अंग्रेजी शासक भारत के भूमि-बन्दोबस्त परिवर्तन करने के लिए आमादा थे। इसके साथ-साथ वे ऐसा वर्ग भी पैदा करना चाहते थे जो उनके दीर्घकालीन आर्थिक एवं राजनीतिक हितों का 'स्तम्भ' बना रहे।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी, राजनैतिक शक्ति के रूप में

१७७२ में वारेन हैस्टिंग की नियुक्ति के साथ-साथ देशी सामन्तों की स्वायत्तता एक सीमा तक प्रभावित होना आरम्भ होती हैं। बंगाल के नवाब के अधिकार समाप्त कर दिए जाते हैं। भूमि राजस्व की उगाही का काम कम्पनी के अधीन आ जाता है। मुर्शिदाबाद से खजाना तथा रेवेन्यू बोर्ड कलकत्ता स्थानान्तरित कर दिए जाते हैं। हैस्टिंग पांच वर्षीय भू-व्यवस्था बंगाल में लागू कर वार्षिक लगान में इजाफा करता है। १७७२-७३ में २२ लाख ९८ हजार ४११ पौंड लगान था जबकि १९७६-७७ में २७ लाख ७५ हजार ४३ पौंड हो गया था। हैस्टिंग की नियुक्ति ने कम्पनी के राजनीतिक अधिकारों में काफी वृद्धि कर दी थी। अब वह सिर्फ व्यापारी संस्था नहीं थी, बल्कि राजनीतिक शक्ति भी बन चुकी थी। इंगलैण्ड में कम्पनी के डायरेक्टरों का यह स्पष्ट निर्देष था कि राजस्व के प्रशासन व व्यवस्था के प्रति गम्भीरता बरती जाये। अंग्रेजी इतिहासकार जेम्स मिल को भी मानना पड़ा कि कम्पनी के इस नये निर्णय से भारत की समस्त जनता पर व्यक्तिगत एवं सामूहिक रूप से गहरा असर पड़ेगा जिसका अन्दाजा यूरोप के पाठक मुश्किल से लगा सकेंगे। वास्तव में 'यह एक आविष्कार (राजस्व उगाही) था, जिसके द्वारा देश की पूर्ण सम्पत्ति तथा न्याय के प्रशासन को नये आधार दिये गये। १८ वीं शताब्दी के अन्त में कार्नवालिस के आने से एक नया अध्याय शुरू होता है। कार्न वालिस शासन के दौरान स्थाई भूमि व्यवस्था योजना लागू की गई। इस योजना के फलस्वरूप जमींदार एवं कम्पनी सरकार तथा खेत जोतने वाले मुख्य किसान के बीच विचौलियों की कई श्रेणियाँ अस्तित्व में आयीं जो कमोबेश अंग्रेजों के प्रति वफादार रहीं। इसी दौरान 'बनिया-वर्ग' भी सामने आया, जिसने कम्पनी, जमीदारों और किसानों से काफी मुनाफा पाया। यह वर्ग दो ढंग से मुनाफा कमाता— कर्ज देकर और लगान जमा न कराने पर नीलामी की जमीन सस्ती दरों पर खरीद कर इस वर्ग के अधिकार में बेनामी जमीन भी आयी। कालान्तर में नया वर्ग, जिसमें बनिया, कम्पनी के नौकर एवं अन्य बिचौलिये शामिल थे, अंग्रेजों का पक्का वफादार निकला। फलस्वरूप १८५७ के संग्राम में बंगाल के इस वर्ग ने अंग्रेजों का साथ दिया। विद्रोही सैनिकों के प्रति घृणा प्रदर्शित की और अंग्रेजी शासन को उत्तम घोषित किया। इसी वर्ग की सन्तानें शिक्षा प्राप्ति के लिए इंगलैंड गयी। भारत लौटने पर सरकार में ऊँचे पद प्राप्त किये। कम्पनी सरकार ने सुनियोजित योजना के अन्तर्गत इस दलाल वर्ग को जन्म दिया।

(क्रमशः)

उलटा पिरामिड या ऊपर से स्वराज्य

० जयप्रकाश नारायण

भारत की संविधान-सभा ने जनता के नाम पर संकल्प किया:

१. भारत को एक सम्पूर्ण-प्रभुत्व-सम्पन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाना:

२. भारत के सभी नागरिकों के लिए सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार-अभिव्यक्ति, विश्वास-निष्ठा और पूजा की स्वतन्त्रता; सामाजिक स्तर और अवसर की समानता सुलभ करना; और

३. व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता की आश्वस्तता के साथ भारत के सभी नागरिकों में भ्रातृत्व की भावनाओं का प्रसार करना।

ये लक्ष्य और उद्देश्य निश्चय ही लोकतन्त्र को प्रेरणात्मक और चुनौती मूलक स्वरूप प्रदान करते हैं। इस स्वरूप को ठोस वास्तविकता में परिणत करने में मदद देने के लिए संविधान सभा ने भारत का वर्तमान संविधान स्वीकृत किया, जो समय-समय पर संशोधित किये जाने के बावजूद स्वतंत्रता और लोकतन्त्र के दुर्ग के रूप में स्थिति है।

भारत की जनता को ठीक ही इस बात पर गर्व हो सकता है कि पड़ोस के देशों में एक-न-एक प्रकार की तानाशाही को अङ्गीकार किये जाने के उदाहरण के बाद भी उसने समझ-बूझकर लोकतन्त्रीय जीवन-पद्धति को पसंद किया। यह उसकी सांस्कृतिक और आध्यात्मिक प्रौढ़ता का द्योतक है।

इतना सब मानते हुए भी यह उचित है कि पिछले वर्षों के अपने लोकतन्त्रीय अनुभव का लेखा-जोखा किया जाए। यह लेखा-जोखा हमे एशिया और अफ्रीका के अन्य देशों और पश्चिम के पुष्ट लोकतन्त्रों के अनुभवों की पृष्ठभूमि में करना होगा।

स्वराज्य जनता तक नहीं पहुँचा

संविधान के कार्यान्वय के गत वर्षों में सबसे महत्त्वपूर्ण बात यह प्रकट हुई है कि देश की जनता अर्थात् करोड़ों मतदाताओं ने ऐसा अनुभव किया कि इस लोकतान्त्रिक शासन–प्रक्रिया से हम बिल्कुल अलग-से हैं। निस्सन्देह उन्हें दो आम चुनावों में भाग लेने का अवसर मिला, लेकिन लोकतन्त्र के कार्यान्वय से इस क्षणिक सम्पर्क के अलावा उनका उसमें आगे कोई सरोकार नहीं रहा। देहाती क्षेत्र तक के आम लोगों को यह कहते, सुना जाता है कि स्वराज्य आया जरूर, लेकिन अभी वह उनके पास नहीं पहुँच पाया। उनकी शिकायत है कि उन पर उसी ढंग से और उसी किस्म के लोगों द्वारा शासन किया जाता है, जैसा ब्रिटिश शासन के समय होता था। वे देखते हैं कि स्थानीय स्वायत्त शासन में भी उनका कोई हाथ नहीं है और छोटे-से-छोटा राजकर्मचारी तक किसी रूप में भी उनके प्रति उत्तरदायी नहीं है। इसके विपरीत वे पाते हैं कि यह छोटे-से-छोटा राजकर्मचारी भी उन पर हुकूमत जतलाता है और पुराने शासन के समय की तरह ही घूस वसूल करता है। इस सचाई का सामना करना ही होगा कि जनता को 'स्वराज्य' के स्फुरण का अहसास नहीं हुआ। शिक्षित मध्यवर्ग के थोड़े से ही लोगों का—और उनमें से भी उनका ही, जिनका सम्बन्ध प्रत्यक्ष राजनीतिक क्रिया-कलापों से है—हमारी लोकतन्त्रीय शासन-प्रक्रिया में किसी तरह का योगदान है।

बिखरे मतदाताओं को कंकरीट जैसे सांचे में ढालना होगा

इस स्थिति का फल यह है कि हमारा लोकतन्त्र बहुत संकुचित आधार पर टिका हुआ है। यह एक ऐसे उलटे पिरामिड की तरह है, जो सिर के बल खड़ा है। प्रत्यक्षतः हमारा कार्य है चित्र को ठीक करना और पिरामिड को फिर सही आधार पर खड़ा करना। केवल यह तथ्य कि हर बालिग भारतीय को वोट देने का हक है, शासन-पद्धति के पिरामिड को व्यापक आधार नहीं दे देता। करोड़ों की संख्या में बिखरे हुए व्यक्तिगत मतदाता बालुका-कणों के ऐसे ढेर की तरह हैं, जो किसी भी संरचना की बुनियाद नहीं बन सकते। इन कणों को ईंटों का रूप देने के लिए मिलाना होगा या कंकरीट जैसे सांचे में ढालना होगा, तभी ये नींव के पत्थर का रूप ग्रहण कर सकेंगे। इसलिए यदि हमें अपने लोकतंत्र को टिकाऊ बनाना है, तो यह साफ है कि हमें उसके आधार को व्यापक बनाना होगा और उसकी ऊपरी पर्तों का, आधार के साथ ठीक ढंग से समन्वय करना होगा। यदि आधार मजबूत होगा, तो किसी 'साहसिक' के ठ्ठेनभर से पूरे ढांचे के भहराकर गिरने का खतरा नहीं रहेगा। हमारा देश ऐतिहासिक खँडहरों का देश है। जब कोई इमारत ढह जाती है, तो उसका क्या स्वरूप होता है, इसे समझने के लिए किसी भी ऐतिहासिक खँडहर को जाकर देखा जा सकता है। इमारत जब गिरने लगती है, तब पहले छत ही ढहती है, तब

दीवारें— पहले ऊपरी मंजिल की, फिर निचली मंजिल की। नींव के पत्थर तब भी— ध्वंस के हजारों वर्ष बाद भी— अपने स्थान पर ज्यों-के-त्यों रहते हैं। किसी भी इमारत की पायदारी, उसका रूप कितना ही विशाल क्यों न हो, उसकी बुनियाद और नीचे के स्तरों की मजबूती पर निर्भर होती है।

एशिया और अफ्रीका के कुछ देशों में पश्चिमी लोकतंत्र के बाहरी स्वरूप की नकल की गयी है। सामान्य रूप से ये चीजें हैं— बालिग मताधिकार, कई प्रतियोगी दल, एक चुनी हुई संसद और संसद के प्रति उत्तरदायी सरकार। इसका मतलब भारत जैसे देशों के लिए यह हुआ कि तल में बिखरे हुए व्यक्तिगत वोटरों की बहुत बड़ी संख्या— बालू का ढेर है। बालू की इस नींव पर सरकार की सबसे ऊंची मंजिल खड़ी की गयी। ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक ही है कि जनता यह जानते हुए भी कि उसे वोट देने का अधिकार है, यह अनुभव करे कि इस प्रकार के लोकतन्त्र से उसका कुछ बनता-बिगड़ता नहीं है, और जरा से धक्के से सर के बल खड़ा यह पिरामिड धराशायी हो जायेगा और नींव में पड़े असंख्य बालुका कणों की तरह असंघटित वोटर असहाय दर्शकों की तरह ताकते रहेंगे। यह भी सोचा जा सकता है कि यदि धराशायी होनेवाला लोकतन्त्र भ्रष्ट और निकम्मा रहा है और बेकारी तथा जनता की खाद्यान्न की आवश्यकता की पूर्ति जैसी समस्याओं का समाधान करने में विफल रहा है, तो मतदाता ऐसी घटना का स्वागत भी कर सकते हैं। हमें— लोकतन्त्र में आस्था रखने वाले बुद्धिजीवियों को— लोकतन्त्र में जो चीज प्रेरणाप्रद मालूम देती है, वह उसके अमूर्त गुण नहीं, बल्कि लोक-कल्याण के रूप में उसके प्रकट परिणाम और लोकतन्त्र की प्रक्रियाओं और संस्थाओं के प्रति जनता का रुख इस बात पर निर्भर होता है कि लोकतन्त्र के कार्यान्वय में उसका अपना क्या हिस्सा है और उसके बनने-बिगड़ने पर, उसके भविष्य पर क्या प्रभाव पड़ेगा।

दुनिया के दूसरे देशों के अनुभवों से— और ये देश एशिया और अफ्रीका तक ही सीमित नहीं हैं— लाभ न उठाना मूर्खता ही होगी। यह सही है कि हमारे लोकतन्त्र के अंत:ध्वंस का कोई तात्कालिक खतरा नहीं है, लेकिन फिर भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि हमारे यहां के लोकतन्त्र में भी वही दोष हैं, जिनके कारण दूसरे देशों में लोकतन्त्र की समाप्ति हुई है। आज के थोड़े से राष्ट्रीय नेता राजनीतिक क्षेत्र से कहीं तिरोहित हुए, तो यह खतरा तात्कालिक भी हो सकता है।

लोकतन्त्र का आधार- शासन में जनता का प्रत्यक्ष योगदान

नि:संदेह पश्चिम के विकसित और प्रौढ़ लोकतन्त्र ऊपरी स्तर पर इतने भारी नहीं हैं और न ही वे विभिन्न प्रकार की व्यापक अन्त:संरचनाओं के सहारे से भी वंचित हैं। तथापि उसमें भी सरकार का सूत्र और निर्णय करने का अधिकार चन्द लोगों के ही हाथों में है। स्विट्जरलैण्ड और सम्भवत: स्कैण्डीनेवियाई देशों को छोड़कर पश्चिमी लोकतंत्र रजामन्दी की हुकूमत से ज्यादा कुछ नहीं है। विज्ञान और शिल्पशास्त्र के विकास और जटिल आर्थिक व्यवस्था के कारण सरकार चलाने का काम धीरे-धीरे कम-से-कम लोगों का ही धन्धा होता जा रहा है।

इस तरह की प्रक्रिया के फलस्वरूप कुछ थोड़े से हाथों में आर्थिक और राजनीतिक शक्ति केन्द्रित होती जाती है। इन थोड़े से लोगों के, चाहे वे नागरिक हों या सरकारी अधिकारी, कारण लोकतन्त्र का नाम ही रह जायेगा और उसका असली तत्त्व गायब हो जायेगा।

पश्चिमी लोकतन्त्र सम्भवत: अपनी आन्तरिक समस्याओं का हल खुद ढूंढ लेगा, लेकिन इस बात पर जोर दिया जाना जरूरी है कि लोकतन्त्र के सम्बन्ध में पश्चिम की जन-स्वीकृत से शासन या दूसरे शब्दों में जनता को . शान्तिपूर्ण उपायों से सरकार बदलने का अधिकार देनेवाली राजनीतिक व्यवस्था की जो धारणा हैं, वह यथेष्ट नहीं है। हमें पश्चिम के अनुभव से लाभ उठाकर अधिक उपयुक्त ढंग के लोकतन्त्र की ओर अग्रसर होना चाहिए। जन-स्वीकृत से शासन के बाद का अगला कदम सरकार चलाने में जनता का प्रत्यक्ष योगदान या योगदानमूलक लोकतन्त्र— पार्टीसिपेटिंग डेमोक्रेसी है।

यहां यह स्पष्ट है कि यदि शासन दिल्ली से या राज्यों की थोड़ी-सी राजधानियों से चलाया गया, तो करोड़ों वोटरों का शासन में प्रत्यक्ष योगदान असम्भव होगा। जनता को शासन में प्रत्यक्ष योगदान का अवसर प्रदान करने के लिए शासन को जनता के जितना निकट सम्भव हो, उतना ही निकट लाना होगा। इसके लिए राजनीतिक और आर्थिक विकेन्द्रीकरण की सुचारू व्यवस्था आवश्यक होगी।

स्वराज्य-निचले स्तर से ऊपर के स्तर की ओर जाता है

पश्चिम में बहुत स्वस्थ और पुष्ट स्थानीय स्वायत्त शासन-व्यवस्था है। यह चीज स्वागत करने की है, लेकिन योगदानात्मक लोकतन्त्र के जिस स्वरूप की मैंने कल्पना की है, उसकी पूर्ति स्थानीय स्वायत्त शासन अकेले नहीं कर सकता। पश्चिम में यद्यपि स्थानीय स्वायत्त शासन काफी हद तक है तथापि केन्द्रीय सत्ता ही सर्वशक्तिमान् है। कहने

का मतलब यह है कि सभी प्रमुख विषयों पर महत्त्वपूर्ण निर्णय केन्द्र द्वारा किये जाते हैं। योगदानात्मक लोकतन्त्र की मेरी कल्पना से यह बहुत भिन्न है। मेरे मन में वैसी चीज है, जिस पर गाँधी जी अक्सर जोर दिया करते थे। अर्थात् जैसे जैसे सरकार के निचले स्तर से ऊपर स्तर की ओर चला जाय, प्रत्येक उच्चतर स्तर के क्षेत्र के हाथ में कम से कम कार्य और सत्ता होनी चाहिए। उलटे पिरामिड के रूपक को लेते हुए पिरामिड के ऊपर के स्तर के बड़े हिस्सों को सख्ती के साथ काट डालना होगा और उसकी ऊपरी मंजिलों के बड़े-बड़े टुकड़ों को धरती पर लाना होगा, ताकि लोकतन्त्र का पिरामिड, सही माने में पिरामिड दिखाई दे— ऊपर की ओर सँकरा और आधार पर चौड़ा। इस व्यवस्था में हर स्तर के लोग अपने स्तर के कार्यों की जिम्मेदारी निभाने का पूरा मौका पा सकेंगे। लोकतन्त्र की ऐसी पद्धति की सफलता-विफलता पर ही जनता को लोकतन्त्र में कोई दिलचस्पी हो सकती है और साथ ही साथ 'स्वराज्य' की हरारत का भी अनुभव होगा।

यह मार्के की बात है कि पश्चिमी ढंग के किसी लोकतन्त्र को धराशायी करने वाला हर तानाशाह, यह आवाज भी साथ में उठाता है कि उसकी 'जनता के वास्तविक लोकतन्त्र' में आस्था है और जो गाँव की नींव से मंजिल-दो-मंजिल ऊपर उठेगा। इस तरह की घटना का सबसे ताजा उदाहरण नेपाल-नरेश महेन्द्र की घोषणा है। कभी-कभी इस तरह की घोषणाओं के पीछे ईमानदारी होती है और कभी-कभी जनता को भुलावा देने के लिए बहाना मात्र होता है। जो हो, यहां सवाल यह पैदा होता है कि इस तरह की घोषणायें की ही क्यों जाती हैं। कारण प्रत्यक्ष है। ऐसी बात नहीं है कि इस तरह का लोकतन्त्र एक धोखा मात्र है और इसलिए तानाशाह के हाथ में मनमानी करने का अनुकूल साधन है। सर के बल खड़े होने वाले लोकतन्त्र जैसे कि आमतौर पर पश्चिमी ढंग के लोकतन्त्र होते हैं और जहां अन्तःसंरचनाओं का अभाव होता है, आसानी से भहरा पड़ते हैं। तानाशाह अक्सर जो किसी-न-किसी किस्म के बुनियादी लोकतन्त्र की बात करते हैं, उसका कारण यह है कि वह जानते हैं कि जनता ऐसी पद्धति को जिसमें उसे अपनी सत्ता का भान हो, आसानी से समझ जायेगी, बजाए पश्चिमी ढंग की ऐसी पद्धति के, जो उसे राजनीतिज्ञों के हाथ का खिलौना बना देती है। फलतः जनता तानाशाही के समर्थन के लिए जुट सकेगी। यह तो मानना ही चाहिए कि जो तानाशाह ईमानदार हैं, वे जिस लोकतन्त्र की बात करते हैं, उसे बनाने का गम्भीर प्रयत्न करेंगे। यह देखने की बात है कि संयुक्त अरब गणराज्य से नेपाल तक के तानाशाह अपने वायदों को किस प्रकार अमली शकल देते हैं और अन्ततः सत्ता जनता और उसकी लोकतांत्रिक संस्थाओं के हाथ में सौंपते हैं। संयुक्त अरब गणराज्य में राष्ट्रीय संघ और पाकिस्तान में बुनियादी लोकतन्त्रात्मक संस्थाओं की स्थापना संकल्पित दिशा में अग्रसर होनेवाला कदम है, फिर भी ये देश किसी भी तरह के लोकतन्त्र से अभी बहुत दूर हैं। फिर भी, 'लोकतंत्र मर गया' और 'लोकतन्त्र चिरजीवी हो' इन दोनों नारों का एक साथ उठाया जाना निश्चय ही अनोखी बात है और उस पर ध्यान दिया जाना चाहिए।

आर्थिक और राजनैतिक विकेन्द्रीकरण से ही राष्ट्र एक्यबद्ध और शक्तिशाली होगा

राजनीतिक और आर्थिक विकेन्द्रीकरण और शासन की निम्नतर इकाइयों को मजबूत किये जाने से ऐसा लग सकता है कि इस प्रक्रिया से राष्ट्र के संघटक तत्त्व निर्बल होंगे और केन्द्र की शक्ति और एकता पर चोट पहुँचेगी। देश में विघटनात्मक भावनाओं के होने और स्थानीय तथा भाषात्मक निष्ठाओं और तनावों से इस तर्क को बल मिलता है। लेकिन इस बात पर और बारीकी से गौर करने पर ज्ञात होगा कि यदि लोगों को अपनी शासन-व्यवस्था अपने-आप करने और अपनी विशिष्टता बनाये रखने की अधिक-से-अधिक स्वतन्त्रता और अवसर प्रदान किये जायेंगे, तो हम राष्ट्र के रूप में कहीं अधिक ऐक्यबद्ध और शक्तिशाली होंगे और भारत में रहनेवाले विभिन्न समुदाय अधिक प्रेम से एक साथ रह सकेंगे। शासन के अधिकाधिक कार्य अपने हाथ में केन्द्रित करने वाला बड़ा बलवान् केन्द्र केवल बाहरी रूप में ही मजबूत होगा। अन्दर से इसे अनेक तरह के दबावों और तनावों के बीच काम करना होगा और इसके विघटित हो बिखर जाने का खतरा हमेशा बना रहेगा। साथ ही यह भी प्रत्यक्ष है इस तरह का 'बलवान' केन्द्र लोकतन्त्र से धीरे-धीरे दूर होता जायेगा और अधिकाधिक सर्वसत्तावादी होता जायेगा। भारत में जो एकात्मक शासन की सिफारिश करते हैं, उसमें निश्चित फासिस्टी प्रवृत्तियों का दिखाई देना अकारण नहीं है।

सत्ता के इस प्रकार के हस्तान्तरण का—जिसमें केन्द्र के पास उतने ही अधिकार रहें, जितने कि उसके केन्द्रीय कार्यों को पूरा करने के लिए जरूरी हैं और शेष अधिकार नीचे की इकाइयों को सौंप दिये जायें—यह अर्थ नहीं है कि केन्द्र निर्बल हो जायेगा। यह तो क्षमता का प्रश्न है। हर स्तर पर निर्वाचित सत्ता वह सब कार्य करती है, जिसके लिए वह सक्षम है। हर स्तर पर सम्बद्ध सत्ता यह महसूस करती है कि कुछ कार्य ऐसे हैं, जो उसकी क्षमता के बाहर हैं,

(शेषांश पृष्ठ १४ पर)
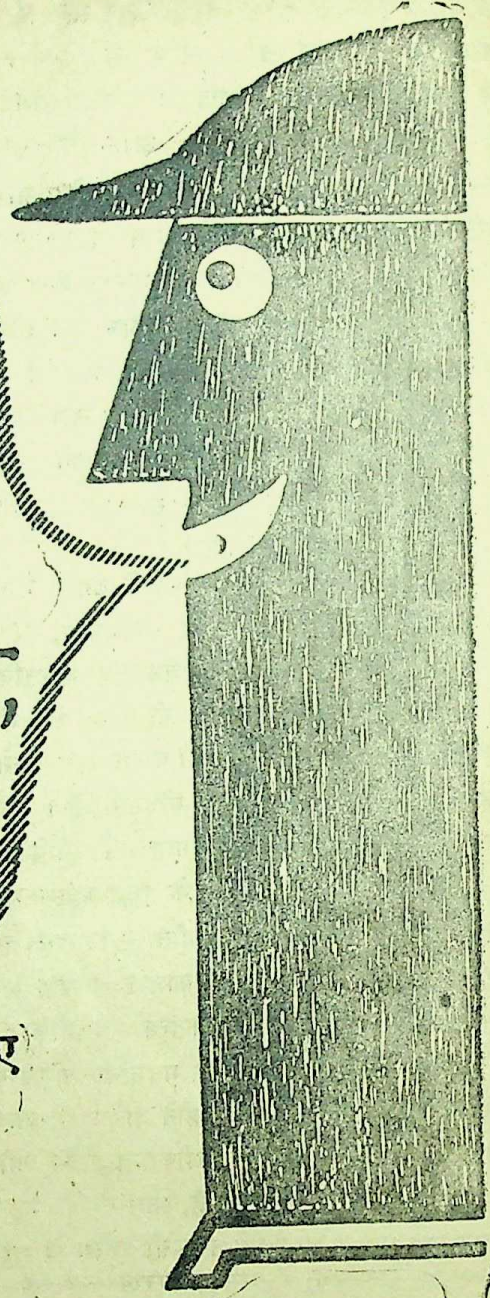
भारतीय राष्ट्रीयता का जनक कौन दयानन्द या राममोहनराय ?

○ डा० जी. सी. त्यागी

रीनकोर्ट नामक प्रसिद्ध अंग्रेज लेखक ने 'द सौल आफ इण्डिया' नामक अपने ग्रन्थ में एक जगह लिखा है — 'आज इसमें रंचमात्र भी सन्देह नहीं है कि सन् १६०५ का बंगाल का विद्रोह परोक्ष रूप से आर्य समाज की राष्ट्रीयता का ही परिणाम था और महर्षि दयानन्द का संगठन राजनैतिक राष्ट्रीयता का प्रथम केन्द्र बिन्दु था।

हमारे देश की शिक्षा संस्थाओं में बच्चों को इतिहास व राजनीति विज्ञान में आज पढ़ाया जा रहा है कि राजा राममोहनराय भारतीय राजनैतिक राष्ट्रीयता के जनक थे। किन्तु आज का छात्र-जगत शनैः शनैः इतना जिज्ञासाशील होता जा रहा है कि उसका मन बिना तर्क और प्रमाण के बातों को मानने को तैयार नहीं है।

इसमें सन्देह नहीं राजा राममोहनराय महर्षि दयानन्द से पहले हुए थे और उन्होंने भी सती-प्रथा, मूर्ति-पूजा आदि कुरीतियों का खंडन करके भारतीय समाज को प्रबुद्ध करने का सराहनीय प्रयत्न किया था। किन्तु राष्ट्रीयता के संदर्भों में कोई आन्दोलन तब चमकता है जब वह जनता का हृदय जीत ले। राजा साहब का सम्पर्क क्षेत्र अंग्रेजी पढ़े लिखे बुद्धि-जीवियों तक सीमित था। जनता हृदय से इन रचनात्मक बातों के पीछे तब लगी जब उसने देखा कि संस्कृत, गुजराती आदि अपनी भाषायें पढ़कर भी एक विभूति ने जनभाषा हिन्दी के माध्यम से एक क्रियाशील संगठन खड़ा किया है जो झोपड़ी तक में जाकर तूर्यनाद कर रहा है— उठो देश लुट रहा है। यहां की सम्पत्ति बाहर जा रही है। अफीमी निद्रा छोड़ो। अपने को संभालो।

भारत को अभी वर्षों तक ब्रिटिश शासन की जरूरत है

स्वामी दयानन्द के अवतरण से पूर्व यहां के नेताओं का यह हाल था कि कहने को तो उन्होंने राष्ट्रीय जागरण का नारा दिया किन्तु जब स्वयं १८२३ में भारत के गवर्नर जनरल लार्ड एम्हर्स्ट ने संस्कृत विद्या की गहराई से प्रभावित होकर राजधानी में एक विशाल संस्कृत विश्वविद्यालय स्थापित करने की बात चलाई तो स्वयं राजा राममोहनराय ने एक विरोध-पत्र लिखकर भेजा जिसमें उन्होंने यह कहा कि भारत को उसकी जरूरत नहीं है, जो होना चाहिए इंगलिश के माध्यम से होना चाहिए। राजा साहब के शब्द थे— भारत को अभी वर्षों तक ब्रिटिश शासन की जरूरत है। अभी राष्ट्रीय स्वातन्त्र्य की तीव्र उत्कंठा केवल खरगोश के सींग की तरह है।

राममोहनराय उदारवादी राष्ट्रीयता के जनक

इस प्रकार बाद में चलकर जिन्हें हम भारतीय राजनीति में उदारवादी राष्ट्रवादी कहते हैं, उनका जनक राजा राममोहनराय को कहा जा सकता है जिनकी धारा तिलक, अरविन्द और गाँधी के उदय होने पर बरसाती नदी की भांति शनैः शनैः स्वतः सूख गई। ये लोग अंग्रेजी के कट्टर समर्थक रहकर हिन्दू धर्म व तत्कालीन समाज में सुधार लाना चाहते थे। महर्षि दयानन्द ने देखा ब्रह्मसमाज प्रार्थना-समाज तथा थियासोफिकल आन्दोलन (जो १८७५ में पश्चिम में स्थापित हुआ था और भारत में भी श्रीमती एनीबीसेन्ट आदि के प्रयासों के नवजागरण का प्रेरक बना) भारतीय समाज में सुधार करने का तो उत्सुक है किन्तु ईसाई धर्म के तत्त्वों तथा इंगलिश भाषा के प्रयोग पर इन सबका इतना भारी आग्रह है कि कहीं ऐसा न हो कि हमारी जनता शनैः शनैः आधुनिक तो हो जाए किन्तु उसकी जड़ ही सदा के लिए कट जाये। वह अनुकरण प्रिय द्वितीय श्रेणी की नागरिक ही विश्व की दृष्टि में रह जायें।

महर्षि दयानन्द ने भारत की आत्मा को बचाने के लिए वेदों का डंका बजाया

बस इतना सोचना था कि महर्षि दयानन्द, वेदों का डंका तथा आर्य-भाषा हिन्दी का शंख लेकर सिर पर बिना टोप पहने, शरीर पर बिना कोई कवच-कंचुक धारण किये, इस भारत देश की आत्मा को बचाने नंगे बदन मैदान में उतरे और एक मनमौजी शेर के बच्चे की भांति जो चारो ओर शिकारियों का हल्ला सुनकर भी उनके सामने आडटता है, इस बात से बिलकुल नहीं डरे कि उन्हें न केवल ईसाई मत की चरम उपासक ब्रिटिश सरकार की गोलियाँ ही लग सकती हैं किन्तु स्वयं एक दिन उनको अपने आदमियों के

द्वारा भी जहर खिलाया जा सकता है। हुआ भी कुछ ऐसा ही।

अंग्रेजी का नाम लेकर राममोहनराय ने कृष्ण की मूर्ति-पूजा का खंडन किया तो लोग उन्हें कुछ गिने-चुने आधुनिकों में समझकर शान्ति से सुनते गये। किन्तु वेद का नाम लेकर महर्षि दयानन्द ने ऐसा किया तो कंकड़ पत्थर लेकर दयानन्द का सिर फोड़ने के लिए मैदान में उतर आये। महर्षि को शुरू-शुरू में कितनी परेशानियां आई होंगी, यह कल्पना की जा सकती है। सन् ५७ के विप्लव में हिन्दू-मुस्लिम कन्धे से कन्धा मिलाकर जो लड़े उसमें महर्षि दयानन्द के चिन्तन का ही चमत्कार था। उसके कारण भी निम्न हैः-

अंग्रेजी के समर्थक राजा साहब जब मंच पर बोलते थे तो उनकी बात अधिकतर हिन्दुओं के समाज को ही आधुनिक बनाने पर होती थी। फारसी उर्दू के ज्ञानी होकर भी वे मुस्लिमों को अपने भाषणों में छूते तक न थे। अतः मुस्लिम जनता उन्हें सुनने ही न आती थी। हिन्दू लोग भी कोई विशेष संख्या में उनकी सभाओं में नहीं आते थे क्योंकि वेद, उपनिषद् आदि के कुछ अंशों की जो व्याख्यायें राजा साहब ने निकाली उनमें हिन्दुओं को संशोधनवाद की गंध आई। अंग्रेजी भक्त हिन्दू ही प्रायः उनके इर्द-गिर्द रहते थे। लार्ड मैकोले भी राजा साहब का परम प्रशसक था।

महर्षि की सभा में हिन्दू-मुस्लिम दोनो भारी संख्या में

महर्षि दयानन्द की सभायें खचाखच भरी रहती थी क्योंकि वे वेद, उपनिषद् आदि में संशोधन करने नहीं उतरे थे किन्तु अपने भाषणों में यह बताया करते थे कि सनातनी लोगों के द्वारा इन ग्रन्थों के अर्थ का अनर्थ किया जाता रहा हैं, स्वयं ये ग्रन्थ संशोधन से ऊपर (संशोधनातीत) हैं। प्रबुद्ध हिन्दुओं को ही नहीं, अशिक्षित हिन्दुओं को भी यह बात बड़ी भली लगी। किन्तु तत्कालीन हिन्दू लोग क्योंकि वेदों के साथ भागवत आदि पौराणिक ग्रन्थों के भी प्रेमी थे अतः कभी-कभी भागवत आदि के भयंकर आलोचक दयानन्द की मजाक करने व उनपर जूते पत्थर फिकवाने के लिये भी भारी सख्या में उनको सुनने उपस्थित हो जाते थे। दोनों ही दृष्टियों से महर्षि को श्रोताओं की कमी न रहती थी। साथ ही मुस्लिम लोग भी भारी संख्या में उनकी सभाओं में उपस्थित रहते थे। उन्हें यह आदमी बड़ा अनोखा लगता था जो आधुनिकता व अंग्रेजी के नाम पर नहीं, वेद, उपनिषद् तथा संस्कृत-हिन्दी के नाम पर मूर्ति-पूजा का खंडन करता था। और क्योंकि मुस्लिम लोग गत कई शताब्दियों से हिन्दुओं को मार-मार, पीट-पीट कर भी मूर्ति पूजा नहीं छुड़ा सके थे, यह आदमी उनको बड़ा प्यारा लगता था। यह प्यार शनैः शनैः भावना के क्षेत्र में इतना बढ़ा कि वे लोग हिन्दुओं के समीप आने लगे जिसका चमत्कार भारतीय इतिहास ने सन् ५७ की (इस समय महर्षि की आयु ३३ वर्ष के लगभग थी और यही उमर कुछ कर गुजरने की होती है) हिन्दू मुस्लिम एकता में देखा। बाद में तो मुस्लिम लोग महर्षि की सभाओं में बढ़ते चले गये और ५७ के विप्लव के बाद यद्यपि सनातन हिन्दू-धर्म (पौराणिक) की भांति

(शेषांश पृष्ठ १६ पर)

(शेषांश पृष्ठ ११ का)

हैं, तो उसे उसी स्तर के अन्य सत्ताधारियों के साथ संघबद्ध होकर ऊंचे स्तर की सत्ता का संघटन करना पड़ता है। यहाँ प्रासंगिक रूप से यह कहा जा सकता है कि आज के राष्ट्रवादी राज्य भी, वह चाहे कितने ही बलवान क्यों न हो यह महसूस करते हैं कि कुछ कार्य ऐसे हैं, जिन्हें उनमें से कोई राष्ट्र भी पूरा नहीं कर सकता और इसलिए विश्व के राष्ट्रों की संघबद्धता के पक्ष में लोकमत बढ़ता जा रहा है। क्षमता सम्बन्धी यह तत्त्व इस पद्धति में केन्द्र की शक्ति बनाए रखने की गारन्टी से काम करेगा। क्योंकि, जो कार्य निम्न स्तर की इकाइयां नहीं कर सकती, उन्हें दक्षता और तत्परतापूर्वक पूरा करने के लिए केन्द्र को पूरे अधिकार और अवसर देना स्वय निम्न स्तर की इकाईयो के हित में होगा। सुरक्षा, परराष्ट्र-सम्बन्ध, अन्तःराज्य-सम्बन्ध, मुद्रा, आयात और निर्यात का नियमन और राष्ट्र एकता बनाए रखने आदि कार्य ऐसे हैं, जिन्हें पूरा करने के लिए केवल केन्द्र ही सक्षम है। इन अधिकारों से युक्त केन्द्रीय सरकार किसी भी दृष्टि से केवल इसीलिए कमजोर नहीं कही जा सकती कि उसके अधिकार-क्षेत्र के विषयों का दायरा बहुत व्यापक नहीं है। निश्चय ही इस तरह की सरकार मजबूत, शक्तिशाली, प्रभावशाली और सुदक्ष होगी ही। दूसरी तरफ ऊपरी स्तर पर भारी और फैला हुआ केन्द्र, जो हर काम में अपनी टाँग अड़ाता हो, देखने में मजबूत और सत्तावान् भले मालूम पड़े, लेकिन वास्तव में वह होगा कमजोर, खोखला, मन्दगति और निकम्मा।

राष्ट्रीय एकता और शक्ति इस बात पर निर्भर नहीं है कि केन्द्रीय सरकार के अधिकार-क्षेत्र के विषयों की सूचि कितनी बड़ी है, बल्कि भावनात्मक ऐक्य, जनता के समान अनुभव और आकांक्षाएँ, सहिष्णुता और सबसे अधिक राष्ट्रीय नेताओं की विशाल हृदयता आदि स्थायी तत्त्वों में निहित है ●

पंजाब की तरुणाई करवट ले रही है

पंजाब प्रदेश आ० यु० प० की एक बैठक रविवार दिनाँक ८. १२. ७४ को आर्य समाज मन्दिर, नवाँशहर, में पंजाब राज्य के प्रधान स्वामी वेदानन्द जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में लुधियाना, अमृतसर, खन्ना, नकोदर, नवाँशहर, राहो, नंगल, बंगा, होशियारपुर, फिल्लौर, मोगा, चंडीगढ़, मुकन्दरपुर आदि स्थानों से आर्य युवक परिषद् के कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। आर. के. आर्य कालेज, नवांशहर, के माननीय प्रिंसीपल श्री बलजीत सिंह जी आर्य ने आर्य युवकों का स्वागत किया और पंजाब राज्य में परिषद् के गठन को और मजबूत एवं प्रभावशाली बनाने के लिए उपस्थित सदस्यों को प्रेरणा दी कि वे परिषद् का कार्य करने के लिए समय-दान दें। उनकी अपील पर निम्नलिखित युवकों ने स्वेच्छा से समय-दान की सेवा अर्पित की :—

१. प्रो० एस० के० स्याल (समय : तीन मास) २, प्रो. विनोद पाल (समय : २ मास) ३. मास्टर राम प्रसाद (२ मास) ४. श्री ओमप्रकाश (एक मास) ५. प्रो० साहबसिंह (एक मास) ६. श्री सतीश कुमार (एक मास) ७. श्री राजन गौतम (एक मास) ८. श्री अनील कुमार (एक मास) ९. श्री शमन सरीन (एक मास) १०. श्री सुधीर कुमार (एक मास) ११. श्री सुरेन्द्र जोशी (एक मास) १२. श्री नरेन्द्र (एक मास) १३. श्री रोशन लाल (एक मास) १४. श्री सुरजीत (एक मास) १५. श्री वृज मोहन (एक मास) १६. श्री धर्मपाल (एक मास) १७. श्री हंसराज (एक मास) १८. श्री संतकुमार (एक मास) १९. श्री सुशील (एक मास) २०. श्री जसवन्त (एक मास) २१. श्री पृथ्वीसिंह चौहान (१५ दिन) २२. श्री कमलेश भारतीय (१५ दिन) २३. श्री अशोक कुमार (१५ दिन) २४. श्री राजेन्द्र सिंह (एक सप्ताह) २५. श्री रिछपाल सिंह (एक सप्ताह) २६. श्री बलजीतसिंह (एक सप्ताह) २७. श्री सुलतानसिंह (एक सप्ताह) २८. श्री वेद रत्न आर्य (एक सप्ताह) २९. श्री हरदयाल सिंह (पूरे समय) ३०. श्री नौबत राम (पूरा समय)

प्रधान स्वामी वेदानन्द जी महाराज तथा संरक्षक प्रिंसीपल बलजीत सिंह जी आर्य ने समय-दान देने वाले नवयुवकों का अभिनंदन किया और निश्चय प्रकट किया कि नौजवानों को इससे नयी दिशा मिलेगी और आज की यह बैठक पंजाब प्रदेश आ० यु० प० के लिए एक ऐतिहासिक बैठक सिद्ध होगी।

बैठक में जो अन्य विषय विचार के लिए आये और जो महत्त्वपूर्ण निर्णय लिए गए उनका **ब्यौरा इस प्रकार है :**

१. प्रिंसीपल आर्य जी के प्रस्ताव **पर, कि पंजाब के** युवकों को नेतृत्व प्रदान किया जाए, यह निश्चय किया गया कि फरवरी सन् १९७५ में लुधियाना में आ० यु० प० के तत्त्वाधान में एक विराट युवक-सम्मेलन बुलाया जाये जिस में उत्तर भारत के नवयुवकों को सम्मिलित होने का निमन्त्रण दिया जाये। यह तय हुआ कि प्रोफैसर एस० के० स्याल इस सम्मेलन के संयोजक होंगे और प्रिंसीपल आर्य जी इसके संरक्षक। प्रोफैसर स्याल सम्मेलन की तैयारी के सिलसिले में श्री आशानन्द, श्री संत कुमार, श्री वेदरत्न आर्य तथा श्री अनिल कुमार जी से सहयोग प्राप्त करेंगे।

२. आ० यु० प० की नयी शाखायें स्थापित करने के विषय पर विचार हुआ। प्रोफेसर स्याल ने बताया कि राहो और गढ़शंकर में परिषद् की दो नयी शाखाएं स्थापित कर दी गई हैं। उन्होंने यह भी बताया कि लुधियाना और नवांशहर में परिषद् के सदस्यों की संख्या हाल ही में काफी बढ़ गई है। यह निश्चय हुआ कि अगले तीन महीनों में परिषद् की ५० और शाखाएं खोली जायें।

३. प्रिंसीपल आर्य जी ने बताया कि प्रचार के साधनों में नारों का बहुत महत्त्व है। इनका जन-सामान्य पर विशेष प्रभाव पड़ता है। यह निश्चय हुआ कि आर्य समाज का संदेश आम आदमी तक पहुंचाने के लिए पंजाब के प्रत्येक नगर और कस्बे में आर्य समाज और आ० यु० प० के नारे दीवारों पर लिखवाने का काम फरवरी महीने के अंत तक पूरा कर लिया जाये। इस सम्बन्ध में आ. यु. प. नकोदर के प्रधान, जो कि स्वयं एक पेंटर हैं श्री हंसराज जी ने अपनी सेवाएं अर्पित की।

४. प्रधान, स्वामी वेदानन्द जी महाराज ने इस बात पर खेद व्यक्त किया कि आर्य समाज के काम को आगे बढ़ाने और उसमें नयी चेतना लाने के लिए नौजवान अधिक संख्या में आगे नही आ रहे हैं। उनके सुझाव पर यह तय पाया कि आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह के मनाये जाने के अवसर तक ५०० नवयुवकों को स्थानीय आर्य समाजों का का सदस्य बनाया जाये। आर्य युवक परिषद् की शाखाएं स्थानीय तौर पर नवयुवकों को आर्य समाजों का सदस्य बनायेंगे और इस सम्बन्ध में पूरा ब्यौरा केंद्रीय कार्यालय को भेजेंगी। आर्यसमाजों का सदस्य बनाने या बनने में अगर कोई कठिनाई पेश आए तो इसकी सूचना भी तुरन्त केंद्रीय कार्यालय को भेजेंगी।

५. श्री आसानन्द जी, मैनेजर, आ० हा० सै० स्कूल, लुधियाना, के सुझाव पर यह निश्चय हुआ कि

लुधियाना में होने वाले युवा-सम्मेलन के अवसर पर एक हजार युवकों को यज्ञोपवीत धारण करने का संस्कार पूर्ण किया जाये।

६. प्रधान, स्वामी वेदानन्द जी महाराज ने गंदे साहित्य और अश्लील चित्रों के युवकों पर पड़ने वाले कुत्सित प्रभावों का वर्णन किया और कहा कि युवक इस तरह का प्रचार करने वाले साधनों का स्वेच्छा से बहिष्कार करें।

७. प्रिंसिपल आर्य जी ने बतलाया कि युवा-वाणी का प्रतिनिधित्व करने वाली 'राजधर्म' पाक्षिक पत्रिका' सब पत्रिकाओं में अग्रणी है। उन्होंने अपील की कि इस पत्रिका के अधिक से अधिक संख्या में सदस्य बनायें जायें। तय पाया कि अगले दो महिनों में इस पत्रिका के ५०० सदस्य बनाये जाएगें। आ० यु० प० की सभी शाखायें इस दिशा में सक्रिय पग उठायेंगी और अधिक से अधिक सदस्य बना कर केंद्रीय कार्यालय को इसकी सूचना देंगी।

८. श्री संतकुमार और श्री वेद रत्न आर्य ने यह सूचित किया कि जून सन् १९७५ में वे लुधियाना में १५०० नवयुवकों का एक ऐतिहासिक ब्रह्मचर्य प्रशिक्षण शिविर लगाने का आयोजन कर रहे है। इसमें भारत भर के आर्य युवक के भाग लेने की आशा है। प्रधान जी ने सभी सदस्यों से प्रार्थना की कि वे इस शिविर को सफल बनाने के लिए आ० यु० प०, लुधियाना, को पूर्ण सहयोग दें।

९. प्रो० विनोद पाल तथा श्री ओम प्रकाश जी ने सुझाव दिया कि आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में आर्य समाज का प्रचार करने हेतु महर्षि दयानन्द के अमर ग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश को आम जनता तक पहुंचाया जाए। इसके लिए सन् १९७५ में आ० यु० प० की सभी शाखाएं सत्यार्थ प्रकाश बेचने का अभियान चलायेंगी और इसकी ५ हजार प्रतियां बेचेंगी।

१०. प्रोफैसर स्याल जी के प्रस्ताव पर आर्य युवकों के लिए, भोजनादि का सुप्रबंध करने के सम्बंध में सभी सदस्यों ने आर्य समाज नवांशहर के प्रधान, श्री वेदप्रकाश जी सरीन तथा मंत्री प्रिंसिपल श्री नंदलाल जी का हार्दिक धन्यवाद किया।

अंत में आर्य समाज के प्रचार को बढ़ाने तथा आर्य युवक परिषद् को गतिशील एवं प्राणवान बनाने के संकल्प के साथ शांति पाठ के उपरान्त बैठक समाप्त हुई।

संयोजक
एस. के. स्याल
९७२, सिविल लाईंज, राजपुरा रोड
लुधियाना

(शेषांश पृष्ठ १४ का)

महर्षि मुस्लिमों के कुरान आदि धर्म-ग्रन्थों का खंडन भी अपने मंचों से करने लगे थे। किन्तु एक भी मिसाल भारतीय इतिहास को ज्ञात नहीं है जब हिन्दुओं की भांति मुसलमानों ने भी महर्षि पर कीचड़ व जूतों के वार किये हों। सशस्त्र क्रान्तिकारी नेता अशफ़ाकउल्ला, बिस्मिल व भगतसिंह की भांति महर्षि दयानन्द के बलिदानों की ही संतान थे जो बाद में चलकर भारत-माता की कोख से उत्पन्न हुए (मरते बिस्मिल, रोशन, लहरी, अशफ़ाक अत्याचार से, पैदा होंगे सैंकड़ों इन के रुधिर की धार से; बिस्मिल की पंक्तियां है)।

महर्षि दयानन्द के मार्ग से ही साम्प्रदायिक एकता

इस हिन्दू मुस्लिम एकता का लाभ भारत के इतिहास को आगे भी मिलता रह सकता था किन्तु बाद में चलकर स्वामी विवेकानन्द आये तो उन्होंने मुस्लिमों के लिए कुछ नहीं कहा— हिन्दू सम्पर्क-भाषा के लिए कुछ नहीं कहा। आगे चलकर अरविन्द ने भी यह मूल गलती की - जो कहा— इंगलिश में कहा। मुस्लिमों के आचरण धर्म आदि के विषय में वह भी मौन रहे। ये लोग न तो उनका मंडन ही करते थे न खंडन ही, मानों वे यहाँ रहते ही नहीं। खंडन बुरा नहीं होता किसी की उपेक्षा बुरी होती है। साथ ही क्योंकि मुस्लिम लोग, हिन्दुओं की भांति कभी भी आज तक अंग्रेजी की ओर आकर्षित नहीं हुए अतः विवेकानन्द, अरविन्द आदि के लेखों की ओर उनकी कोई रुचि नहीं हुई।

दयानन्द के परवर्त्ती नेताओं की गतिविधियों में मुस्लिमों को अपनी उपेक्षा की गंध आई। वे अलग पड़ते गये और बाद को कुछ नेताओं ने महाराष्ट्र में गणेश-पूजा, बंगाल में काली-पूजा आदि का आयोजन सार्वजनिक रूप में करना शुरू कर दिया तो मुसलमानों ने उनकी प्रतिक्रिया में अपने तत्कालीन मुस्लिम-नेताओं तथा उर्दू भाषा की छाया में अपने पृथक अस्तित्त्व की घोषणा कर दी।

महर्षि दयानन्द के मार्ग को बीच में छोड़ देने के कारण भारत को जो जो भुगतना पड़ा हमारे सामने है। स्वामी श्रद्धानन्द व महात्मा गांधी को उनके लिये अलग-अलग मोर्चों पर बलिदान देने पड़े। स्वतन्त्र भारत के प्रथम दो प्रधानमन्त्री इसी मूल समस्या को सुलझाते-सुलझाते अकाल काल कवलित हुए। आज भी समूचे देश का वातावरण उसी प्रकार अशान्त चल रहा है। थोड़े दिन आराम चलता है, उसके बाद फिर सांप्रदायिकता, भड़क उठती है। कोई स्थायी उपचार सूझ नहीं पा रहा है। भविष्य प्रश्न-चिन्हों से बोझिल है। अभी पिछले दिनों भुट्टो साहब ने घोषणा की है :—

मुजीब हमारा भाई है। हम उसकी मान लेंगे, सह लेंगे, किन्तु काश्मीर को कभी नहीं छोड़ेगें।

स्वतन्त्र भारत की प्रथम जन-क्रांति

गतांक से आगे

विधान मंडल भंग आंदोलन का विस्तार

किसी विशिष्ट भ्रष्टाचार को साबित करना कठिन होता है विशेषकर जब कोई व्यक्ति अधिकारी सम्पन्न पद पर आसीन हो। विधायक बनने न बनने के लिए उस व्यक्ति के सम्बन्ध में साधारण धारणा ही पर्याप्त कारण होना चाहिए। अस्तु, वर्तमान विधान सभा भंग आंदोलन के साथ साथ चुनाव प्रक्रिया में आवश्यक संशोधन के लिए भी जन आन्दोलन जारी रहे। यदि शासन इसमें कोई पहल नहीं करता है तो जन-आंदोलन का वर्तमान निर्दलीय नेतृत्व वह विकल्प प्रस्तुत करे। विधान मंडल के भंग करने के बाद यदि चुनाव प्रक्रिया में कोई परिवर्तन नहीं होते तो चुनावों के पूर्व उम्मीदवारों के सम्बन्ध में सरसरी जांच की प्रक्रिया गैर सरकारी रूप से उसी प्रकार बताई जाय जैसी की गया के गोलीकांड की जाँच समिति नियुक्त की गई थी। और जिन उम्मीदवारों के खिलाफ चरित्र, घूसखोरी, मुनाफाखोरी इत्यादि के प्रमाण हो उनको बाध्य किया जाय कि वे चुनाव में न खड़े हो। इस प्रकार जन-आंदोलन विधान सभा भंग होने के साथ समाप्त नहीं हो जाता वरन् वह तब तक जारी रहे जब तक कि एक संन्तोषप्रद चुनाव प्रणाली का प्रावधान नहीं हो जाता है। गुजरात जहां पर विधान सभा भंग हो चुकी है इस प्रकार की प्रारंभिक कार्यवाही शुरु करने के लिए सर्वदलीय समितियों के गठन का कार्य प्रारंभ करना आवश्यक होगा। अन्य राज्यों में चाहे विधान सभा भंग का अभी आन्दोलन न चलाया जाय परन्तु युवा वर्ग भ्रष्ट मुनाफाखोर विधायकों तथा मंत्रियों के विरुद्ध जनमत तैयार कर उन्हें अपने पदों से इस्तीफा देने के लिए मजबूर करें। यदि अन्य विधायक कानून और संविधान की आड़ लेकर प्रजातन्त्र के मुखौटे को पहन कर इन प्रजातन्त्र के घातक तत्वों के बचाव का प्रयास करे तो उस राज्य में पूरे विधान मंडल की समाप्ति के लिये युवा शक्ति सीधा प्रहार करे।

उपभोगवाद

परन्तु कार्य यहीं समाप्त नहीं हो जाता है। भ्रष्टाचार तथा पद की ललक एक गहरी बीमारी के लक्षण हैं जिसने हमारे पूरे राष्ट्रीय जीवन में धुन लगा दिया है। यह बिमारी है उपभोगवाद की। दुर्भाग्य से स्वतंत्रता के पश्चात् सोचा गया कि संतोष समाप्त कर दो, प्रतिस्पर्धा का बीज बो दो, उपभोग को उकसा दो, आर्थिक विकास के लिए आवश्यक शक्ति का अपने आप सृजन हो जाएगा। उपभोगवाद तो आ गया पर मेहनत कहीं नहीं है। उपभोग के लिए साधन जुटाने के लिए ऊँचे वर्गों ने ठीक डकैतों का रुख अपनाया और राष्ट्रीय उत्पादन में से मनमाना भाग अपने लिए निकाल लिया और अधिक से अधिक निकालते जा रहे हैं। अर्थशास्त्रियों ने आँकड़ों के जमघट में मूल बिन्दुओं को भुला दिया। वे स्वयं भी उसी उच्च वर्ग के भाग हैं अतएव अपना स्वार्थी रूप उन्हे दिखाई नहीं देता है। उपभोग को ही देश की उन्नति के लिए सार्थक सिद्ध कर ये वर्ग अपनी आत्मा को शांत करते रहे हैं। गरीब को रोटी नहीं मिल रही है पर सैकड़ों करोड़ रुपये टेलिवीजन पर खर्च किए जा रहे हैं, कृषि में उत्पादन बढ़ाने के लिए समृद्ध वर्ग का मनोरंजन तो उसका एक गौण पक्ष है। सामान्य स्कूलों में चाक व ब्लैक बोर्ड नहीं पर स्कूलों के लिए टेलिवीजन प्रशिक्षण पर प्रयोग किए जा रहे हैं। खेतों में सिंचाई के लिए बिजली नहीं पर दिल्ली की बिजली की जगमगाहट में कोई कमी नहीं, सरकारी दफ्तरों में एयर कंडीशन चलने ही चाहिए, कारखाना न चले तो कोई बात नहीं। गरीब के रहने के लिए मकान नहीं पर मोटर के लिए गैराज जरूरी है। बालकों के लिए पढ़ने को कागज नहीं पर टायलट पेपर की कमी नहीं। अखबारी कागज का अकाल है पर पंखों एयरकंडीशनरों तथा टेलिवीजन के विज्ञापनों पर आधे कागज खर्च हो जाए तो कोई हर्ज नहीं क्योंकि अखबारों का धंधा चलना है, विज्ञापन भी आवश्यक है और प्रबुद्ध वर्ग को सस्ता अखबार भी चाहिए। हमारी पूरी अर्थ व्यवस्था ही मानो समृद्ध वर्ग की चिरदासी है। पूरा राष्ट्रीय आयोजन ही शहरी और समृद्ध वर्गोन्मुखता का साक्षी है अन्यथा क्या कारण है कि शहरी व्यवस्था तथाकथित करों के भार से दबे होने पर भी फलफूल रही है। ग्रामीण व्यवस्था करों से अछूती है पर वहीं भूख बढ़ती जा रही है। जो अमीर हैं और समृद्ध है वही सब बाधाओं के बावजूद आगे पहुँच रहा है। यह शब्द जाल भ्रमजाल है समृद्ध वर्गों का। जब तक इसे नहीं काटा जाता है और तथ्यों को उनको सही रूप में नहीं देखा जाता है हमारी अर्थ व्यवस्था जनोन्मुख नहीं हो सकेगी। आज की अर्थव्यवस्था की मूल व्याधि है बिचौलियों की मनमानी। बिचौलिये कई प्रकार के हैं परम्परागत व्यापारियों के अलावा अनगिनत संस्थान, आ गये हैं, अपना हिस्सा बटाने के लिये। सबके हिस्से का अपना मानदण्ड है गरीबी की वास्तविकता से

किसी को मतलब नहीं। और यह सब बढ़ते मूल्यों के द्वारा अंतिम व्यक्ति के ऊपर ही पूरा भार साबित होता है।

इस भ्रमजाल को काटने के लिये भी योजना आयोग अथवा स्थापना से अपेक्षा करना व्यर्थ है। महात्मागांधी ने जो जन-आन्दोलन स्वदेशी के लिये सन् १९२१ में चलाया था उसी महान यज्ञ का फिर से आयोजन करना होगा। पूरे देश के युवा वर्ग को अर्थशास्त्रियों के इस बोद्धिक कुहासे को काटकर एक स्पष्ट अर्थ-व्यवस्था के लिये नेतृत्व देना होगा

उत्पादन का अन्तिम उपयोग

यहाँ यह स्पष्ट करना होगा कि उत्पादन मुख्य नहीं है क्या उत्पादन किया जा रहा है, इसका निर्णय आवश्यक है और साथ ही जो उत्पादन किया जा रहा है उसके उपयोग का निर्धारण भी उतना ही आवश्यक है। भ्रष्टाचार पर अभी तक के प्रहार गलत हुए हैं। धन स्वयं में कुछ नहीं हैं इसमें महत्वपूर्ण है उसके द्वारा संभावित उपभोग। यदि उपभोग पर अंकुश लग जाये तो धन की निरर्थकता अपने आप सिद्ध हो जावेगी। अतएव जहां अर्थ संचय पर प्रहार आवश्यक है उससे भी अधिक आवश्यक है उस संचित अर्थ के उपभोग पर। सामान्य शरीर धारण अथवा थोड़ी सुविधा के उपभोग की एक सीमा है। चाहे कितना पैसे वाला भी क्यों न हो एक निश्चित सीमा से अधिक सामान्य उपभोग नहीं कर सकता है। असीम है विलासिता उपभोग।

कुछ स्पष्ट उपभोग विलास पर तो शासन नियंत्रण करने का प्रयास करती है। उदहारण के लिए ५० से अधिक मेहमानों का भोज नहीं दिया जा सकता। संभवतः कोई करोड़पति यदि लाखों रुपये का अनाज खरीद कर उसे केवल मनोविनोद के लिए जलाये तो कानूनी तथा सामाजिक अपराध बन जाएगा। हम भाव को ऊंचा रखने के लिये गेहूं को समुन्द्र में डुबाने के लिए अमरीका की भर्तस्ना करने में नहीं चूकते हैं। पर हमारे देश में ही न जाने कितने अनाज का एक प्रकार से प्रतिदिन जलाया जाना सम्मानित है। एक बार पैट्रोल के द्वारा खाद बनाकर संभावित उत्पादन का समीकरण अखबारों में साया हुआ था पर उसके बाद कुछ नहीं सुना गया। क्या एक व्यक्ति जो लम्बी कार में अकेले सैर सपाटे पर जाने के लिए पैट्रोल का उपयोग करता है वह अपने पैसे की ताकत से अनाज जलाने का दोषी नहीं। क्या वे सभी सम्भ्रांत व्यक्ति जिनको थोड़ी ठंडक देने के लिए एयरकंडीशनर चलाते हैं और नलकूप बन्द रहते हैं अनाज जलाने वाले नहीं है। क्या वे सभी जो पैसे के बल पर आलीशान मकान बनाते हैं और सीमेंट गांव में कुओं के लिए नहीं मिलता हैं, क्या वे बैंक जो मोटरों के लिए ऋण देते हैं पर भूखे किसान को अपना कुँआ खोदने के लिए ऋण देने में नियम की आड़ लेते हैं, क्या वह योजना आयोग जो इन सब नीतियों को बनाने के लिए जिम्मेदार हैं और क्या वह शासन तंत्र जो इन नीतियों को क्रियान्वित करता है, अनाज की होली जलाने का पापी नहीं है। जब देश में खाने के पदार्थों की कमी है तब मछलियों, तथा खली का निर्यात किसलिए? क्या इसलिए कि तस्करी से विलायती सामान आये या हमारे आसूदा लोग बाहर जा कर बड़े होटलों में रहें और साथ में विलायती विलास वस्तुएँ लाए? पर ये देशद्रोह के जघन्य अपराध नहीं माने जाते हैं। इन्हें हमारी व्यवस्था देश की तथाकथित सेवा तथा समृद्धि के लिए आवश्यक करार देती है। ये बातें गरीब की समझ से बाहर हैं। युगों से वह पंडे पुरोहितों के चक्कर में रहा। आज के ये पंडे भी उसे पीस कर ही छोड़ेंगे।

विज्ञापन को ही लीजिये। विज्ञापन क्यों होना चाहिए? अमरीका में विज्ञा[पन] का मुख्य उद्देश्य है उत्पादन के लाभ का अधिकाधिक लोगों में वितरण यदि विज्ञापन न हो तो इतने लोगों [को] क्या काम दिया जाय क्योंकि अमरी[का की] अर्थ व्यवस्था में पहले ही इतना उत्पा[दन] हो रहा है कि उसके उपभोग के [लिए] ही मनुष्य की सभी इन्द्रियों को [...] तरह उकसाना पड़ता है। पर भारत [में] विज्ञापन की क्या आवश्यकता? [य]दि किसी वस्तु की कमी है तो अपने आप [...] बिक जायेगी। यदि किसी वस्तु की खप[त] के लिए विज्ञापन आवश्यक है तो स्प[ष्ट] है कि उसके उत्पादन की आवश्यकता नहीं है और उसके लिए उपयुक्त कच्चा माल का अन्यत्र उपयोग होना चाहि[ए] उसमें लगी जनशक्ति का भी अन्यत्र उ[प]योग होना चाहिए। पर विज्ञापन आ[ज] मुनाफा को बांटने तथा भ्रष्टाचार [का] एक सामान्य साधन बन गया है।

उपभोगवाद का एक अन्य छद्म रूप भी स्पष्ट करना आवश्यक होगा [।] आज संस्थायें तथा प्रतिष्ठान उपभोग [के] सहज साधन बन गये हैं। जहाँ एक बा[र] एक प्रारूप स्वीकृत हो गया तो उस[के] अनुसार सभी उपभोग, सभी अपव्यय स्वी[]कार हो जाते हैं। ये सभी व्यय या तो प्रशासनिक व्यय की अनिवार्यता ग्रह[ण] कर लेते हैं अथवा व्यापारिक, उत्पाद[न] व्यय का अभिन्न भाग। मुनाफे [का] प्रतिशत भी निर्धारित है, उनमें कटौति[यां] भी उचित हैं। फल यह है कि सभी व्य[य] वस्तुओं की कीमत में अनिवार्य रूप [से] जुड़ जाते हैं और मंहगाई का मूल कारण बन जाते हैं परन्तु उनकी तथाकथि[त] अनिवार्यता के कारण कोई उनके सम्बन्ध में प्रश्न ही नहीं कर सकता। आज सभी जनता की सेवा में लगे हुए हैं—हवाई जहाजों में यात्रा, बड़े आलीशान होटलों में रहने की अनिवार्यता, बड़े-बड़े बंगले अटूट विलास सामग्री सभी कुछ जनसेवा के लिये आवश्यक माना जाकर व्यवस्था के व्यय का अभिन्न अंग हैं। भवनों [के] मानकों में प्रति कमरे में अनेक बिजलियाँ

(शेषांश पृष्ठ १९ पर)

प्रान्तीय युवक सम्मेलन

आर्य युवक परिषद् (पंजाब)

पंजाब भारत की गौरवमयी धरती है। वह ऋषियों, महात्माओं, साधुओं, देश-भक्त वीरों और शहीदों की जननी है। वेद की ऋचाओं के गान से इसकी जीवनदायिनी नदियों के किनारे हमेशा ध्वनित होते थे, लव और कुश ने यहीं पर क्रीड़ा की। यहीं पर विराट की नगरी थी जहाँ पाँडवों ने आश्रय लिया और अज्ञातवास का एक वर्ष व्यतीत किया। गुरु नानक देव ने इसी धरती पर अपनी प्रभु-महीमा के मधुर स्वर उच्चरित किये। गुरु गोविन्द सिंह ने यहीं पर धर्म की रक्षा के लिए अपने प्यारे साहबजादों का बलिदान दिया। वीर हकीकत ने भी इसी हेतु अपने जीवन की आहुति दी। विदेशी शासन के साथ जूझते हुए शेरे पंजाब लाला लाजपत राय ने देश की स्वतंत्रता के लिए यहां अपना अमर बलिदान दिया। शहीद-ए-आजम सरदार भगतसिंह ने हंसते-हंसते फांसी का फंदा इसी भूमि पर चूमा। महात्मा हंसराज, पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द प्रभृति आर्य समाज के महान नेताओं ने यहीं अपने बलिदानों से राष्ट्र तथा समाज को एक नई चेतना प्रदान की और उन्हें त्याग तथा बलिदान का रास्ता दिखाया।

देश के अन्य भागों की भांति आज पंजाब भी अपने विगत गौरवमयी इतिहास को विस्मृति के गर्त में खो चुका है। लेकिन पंजाब ने फिर भी हर भीड़ के समय देश का नेतृत्व किया है। सन् १९२९ में रावी के किनारे पूर्ण स्वराज्य का उद्घोष सर्वप्रथम यहीं गूंजा था। आज फिर पंजाब की धरती ने एक नई अंगड़ाई ली है। पंजाब प्रान्तीय आर्य युवक परिषद् ने देश भर के युवकों को नैतिकता, सामाजिकता, धार्मिकता एवं सदाचार के क्षेत्रों में नेतृत्व देने तथा युवा-शक्ति को रचनात्मक कार्यों में लगाकर उसका सदुपयोग करने के हेतु रविवार, दिनांक २३ फरवरी १९७५ को लुधियाना की विशाल उद्योग-नगरी में प्रान्त भर के युवकों का एक विराट सम्मेलन बुलाने का निश्चय किया है। युवक आग, पानी, वायु, अणु आदि से भी अधिक शक्ति रखते हैं और उक्त सम्मेलन उनकी इस शक्ति को सही दिशा देकर राष्ट्र और समाज के उत्थान हेतु रचनात्मक कार्यों में लगाने की ओर अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभायेगा।

युवक सम्मेलन की अध्यक्षता वयोवृद्ध सन्यासी पूज्य स्वामी ओमानन्द जी महाराज करेंगे। सम्मेलन में देश के युवा नेताओं के पधारने की संभावना है। पंजाब, हरयाणा, हिमाचल प्रदेश तथा जम्मू व कश्मीर के विश्वविद्यालयों से विद्यार्थी नेता भी इस सम्मेलन में भाग लेंगे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के युवा प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी, आर्य विद्या परिषद् के रजिस्ट्रार तथा युवा हृदय-सम्राट स्वामी अग्निवेश जी, पंजाब विश्वविद्यालय के कैमिस्ट्री विभाग के मेधावी प्राध्यापक डा. रामप्रकाश जी, नवभारत टाइम्ज दिल्ली के सह-सम्पादक और अंग्रेजी हटाओ आन्दोलन के प्रबल समर्थक युवा नेता डा. वेदप्रताप जी वैदिक, कुरुक्षेत्र विश्व-विद्यालय के प्रसिद्ध छात्र नेता श्री रोशन लाल जी आर्य आदि ने सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिए स्वीकृति दे दी है। पंजाब में स्वतन्त्रता-संग्राम के अग्रणी नेता, हिन्द-समाचार व पंजाब केसरी के मालिक लाला जगत नारायण जी, इस सम्मेलन का उद्घाटन करेंगे।

अधिक न कहते हुए हम आप से विनम्र निवेदन करेंगे कि युवा-शक्ति में भारतीय संस्कृति के उच्चादर्शों का संचार करने, युवकों में बढ़ते हुए हिप्पीवाद और फैशनपरस्ती के रुझान को रोकने और उसे राष्ट्रोत्थान तथा रचनात्मक कार्यों में लगाने के पुण्य प्रयास में तन, मन और धन से हमारी सहायता करें और इस सम्मेलन को सफल बनाने में हमें अपना आशीर्वाद एवं पूर्ण सहयोग दें।

भवदीय
सुखदेव कुमार
संयोजक

मुख्य कार्यालय–वैदिक साधु आश्रम कुराली रोड, रोपड़
उप-कार्यालय–९७२, सिविल लाइन्ज राजपुरा रोड,
(लुधियाना)

(शेषांश पृष्ठ १८ का)

पंखे, हर कमरे के साथ बड़े स्नानागार जिनमें शायद पूरा गरीब परिवार रह सके, मौजेक, उसके ऊपर कालीन संपन्न वर्ग को सहज प्रतीत होते हैं। स्थापना में पहुँच कर ऐसा लगता ही नहीं कि हम किसी गरीब देश के निवासी हैं। इनकी पकड़ इतनी कठोर हो चुकी है कि मनमाना व्यय आवश्यक स्वीकार कर लिया जाता है। सभी तो स्वार्थ गुटों के चट्टे-बट्टे हैं। आक्षेप करने वालों की खिल्ली उड़ा दी जाती है तथा कह दिया जाता है कि छोटी बातों में पड़े हो बड़ी बातों को देखो। गाँधी जी की छोटी बातें भुला दी गई है स्थापनाओं और संस्थाओं के शाही व्यय अनवरत चल रहे है। मंहगाई समाप्त करने के लिये सभी अनावश्यक कटौतियों को समाप्त करना है। गरीब मुल्क में सभी गरीब की तरह रहेंगे। इस व्यवस्था के खिलाफ थोथे तर्क का पर्दाफास कर उसके खिलाफ आंदोलन आवश्यक है। (क्रमशः)

राजधर्म
पंजीयन क्रमांक RTK 28
Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13
रोहतक
१५ फरवरी १९७५

राजधर्म प्रकाशन के लिये राजधर्म प्रेस, रोहतक से स्वामी अग्निवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित । फोन : ८८२।

राजधर्म

20-2-62

महर्षि दयानन्द और युगान्तर

परदेशी भाषा की गुलामी

आर्थिक पिरामिड और आर्थिक पंचायती राज

महर्षि दयानन्द का महान सन्देश

प्रतिशोध की अभूतपूर्व मिसाल ऊधम सिंह

रेल बजट: मुनाफे का भ्रामक आश्वासन

इस्लाम और मुसलमान

वर्ष ७ अङ्क ५
मार्च प्रथम

प्रधान सम्पादक : स्वामी अग्निवेश
सह-सम्पादक : [illegible]

वार्षिक १५ रु०
एक प्रति ७० पैसे

रेल बजटः मुनाफे का भ्रामक आश्वासन

नये रेलमंत्री श्री कमलापति त्रिपाठी ने संसद के बजटकालीन अधिवेशन में २० फरवरी को १९७५-७६ के लिए रेल बजट प्रस्तुत किया। इस वर्ष रेलवे बजट में लगभग २३ करोड़ ३ लाख रुपये के अतिरिक्त बचत का झूठा आश्वासन दिया गया है। आम चुनाव को दृष्टि में रख कर सत्तारूढ़ दल ने बड़ी चतुराई से यह बजट तैयार करने का प्रयास किया है। कांग्रेसी सरकार जानती है कि अगले वर्ष फरवरी-मार्च में चुनाव टालने का परिणाम भयंकर होगा। यही कारण है कि इस बजट में श्री त्रिपाठी जी ने किराया-भाड़ा बढ़ाये बिना मुनाफे का बजट पेशकर अपनी अच्छी तस्वीर बनाने की कोशिश की है। परन्तु पिछले वर्ष के कटु अनुभवों के आधार पर यह बात निर्विवाद रूप से कही जा सकती है कि १९७५-७६ का वर्ष बीतते ही उनका बजट अवश्य घाटे में परिवर्तित हो जाएगा। १९७३-७४ में २४ करोड़ रुपये की अतिरिक्त बचत का अनुमान किया गया था, परन्तु अन्ततः वर्ष १५ करोड़ रुपये का घाटा देकर ही समाप्त हुआ। इसी प्रकार पिछले बजट के समय भी मामूली घाटे की आशा व्यक्त की गई थी जिसे रेलवे की कार्य कुशलता में मामूली वृद्धि करके आसानी से पूरा किया जाने का आश्वासन दिया गया था। परन्तु परिणाम इसके ठीक विपरीत निकला। उस वर्ष रेलवे को १२८ करोड़ रु० का घाटा हुआ। जबकि उसी वर्ष में दो-दो बजट (पहला फरवरी और दूसरा अगस्त महीने में) पेश करना पड़ा था। इन दोनों बजटों द्वारा यात्रियों के किराये और माल-भाड़े में वृद्धि द्वारा १३६ करोड़ रुपये के अतिरिक्त १४० करोड़ रुपये और भी उगाहे गए थे। श्री त्रिपाठी जी का बजट भाषण में दावा है कि यदि फिजूल-खर्ची रोककर ५० करोड़ रुपये का खर्च कम नहीं किया गया होता तो १९७४-७५ के घाटे की राशि १७९ करोड़ रुपये होती। इसीलिए इस वर्ष के बजट में २३ करोड़ रुपये से कुछ अधिक के मुनाफे को, बजट के प्रारूप की एक कल्पित शोभा और आंकड़ों के खेल के अलावा और कुछ नहीं कहा जा सकता है। रेलवे प्रशासन में अव्यवस्था तथा भ्रष्टाचार आज जितने व्यापक रूप में विद्यमान है, उसे देखते हुए रेलवे के कार्य क्षमता में वृद्धि की कल्पना भी नहीं की जा सकती है।

इस वर्ष के भी बजट की एक प्रमुख विशेषता रेलवे के स्वयं के विकास में कटौती का है। बजट के घाटे का सामना करने के लिए रेल मन्त्रालय हमेशा अपनी योजनाओं में कटौती का रास्ता अपनाता रहा है। १९७४-७५ की रेलवे विकास योजना में ७५ करोड़ रुपये की कटौती की गई थी और अब की वार १५ करोड़ रुपये की कमी कर दी गई है। १९७४-७५ में योजनागत खर्च ३४३ करोड़ रुपये था और इस वर्ष ३२८ करोड़ रु० है। रेलवे की विकास दर यदि बरकरार रखनी थी तो योजनागत खर्च में पिछले वर्ष हुई मूल्य-वृद्धि को ध्यान में रख कर करीब २५ प्रतिशत की वृद्धि होनी चाहिए थी। उल्टे, कुल राशि में कटौती से विकास कार्य प्रभावित होंगे। अगले वर्ष इंजिन, वैगन और यात्री डिब्बे खरीदने पर लगभग ३६ करोड़ रु० कम खर्च होगा, पटरियों के नवीनीकरण के खर्च में ढ़ाई करोड़ रुपये कम खर्च होंगे, बिजलीकरण में पौने तीन करोड़ रु० कम खर्च होंगे। इसके अतिरिक्त पिछले वर्षों की जनहितकारी बहुत सी रेलवे योजनायें वर्षों से अधर में लटकी हुई हैं।

पिछले रेलमन्त्री श्री ललित नारायण मिश्र के शासन में रेल कर्मचारियों की ऐतिहासिक हड़ताल कितनी सफल रही थी, इसके प्रभाव की भी झलक वर्तमान रेलवे बजट में दिखाई पड़ती है। यही कारण है कि हड़ताल में उत्पन्न कटुता को समाप्त करने के लिए और कर्मचारियों का विश्वास अर्जित करने के लिए श्री त्रिपाठी ने अपने बजट भाषण में उन सभी कर्मचारियों के सेवा भग के दण्ड को समाप्त कर दिया है जिन पर हिंसा और तोड़-फोड़ के आरोप नहीं है। वास्तव में मजदूरों की अटूट एकता के सामने बाध्य होकर सरकार को ऐसा कदम उठाने के लिए बाध्य होना पड़ा है। रेल मजदूर अपनी न्यायोचित मांगों के लिए हड़ताल करने के जनतांत्रिक अधिकारों का प्रयोग कर रहे थे। उन्होंने कोई अपराध नहीं किया था। इसलिए उन्हें 'क्षमा' करने का कोई सवाल नहीं उठता। परन्तु जब तक सभी बर्खास्त कर्मचारियों को वापस लेने की सरकार घोषणा नहीं करती और रेल कर्मचारियों को रेलों के संचालन के काम में भागीदार नहीं बनाती तब तक आपसी कटुता को पूरी तरह समाप्त नहीं किया जा सकता है।

वर्तमान रेल बजट द्वारा सरकार ने यह दर्शाने का प्रयास किया है कि वह महंगाई की वर्तमान स्थिति में यात्रियों के किराये में वृद्धि कर उन पर किसी भी प्रकार का अतिरिक्त बोझ नहीं डालना चाहती। परन्तु सच्चाई इस के ठीक विपरीत है। गत वर्ष सरकार यात्रियों के किराये में दो-दो बार भारी अनुपात में वृद्धि करके

जन सामान्य के लिए यात्रा को अत्यधिक महंगा कर दिया था। परिणामस्वरूप २-० करोड़ लोगों ने कम यात्रा की। अतः यह सोचना कि सरकार ने यात्रियों की कठिनाईयों को ध्यान में रखकर ही यात्रा के किराये में वृद्धि नहीं की है, अत्यन्त भ्रामक कल्पना है।

यदि यात्रा किराये में वृद्धि के प्रश्न को अलग रख दिया जाय, तब भी यह नहीं कहा जा सकता है कि जनता को इस बजट में बख्शा गया है। माल-भाड़े में जो मामूली सुधार किया गया है, उसका सीधा प्रभाव गरीब जनता पर ही पड़ेगा। आज तक रेलवे खाद्यानों तथा कोयले, मैंगनीज और खनिज लोहे की धुलाई रियायती दरों पर करती आयी है। लेकिन अब इस रियायत को भी खतम कर दिया गया है। इससे रेलवे को ३५ करोड़ ५० लाख रुपये की अतिरिक्त कमाई होगी। इस प्रकार दाल सहित खाद्यानों की धुलाई अब महँगी हो जायेगी जिसके परिणामस्वरूप स्वयं रेलमन्त्री के शब्दों में प्रतिकिलो अनाज पर ढाई पैसे की बढ़ोतरी हो जायेगी। जिस देश के अनाज के थोक और फुटकर व्यापार पर निहित स्वार्थ वाले व्यापारियों का हाथ हो तथा देश की अधिकांश जनता को अनाज मुहैया करने की सम्पूर्ण जिम्मेदारी उन्हीं पर हो, वहाँ इस मामूली सुधार का अन्तिम परिणाम क्या होगा, आसानी से जाना जा सकता है। यह मामूली सुधार अनाज की दरों में अत्यधिक मूल्य वृद्धि का कारगर बहाना बनेगा और अनाज व्यापारी इसका लाभ उठा कर मुनाफा बटोरने का हर सम्भव प्रयास करेंगे। सरकार इस मामूली सुधार के गैरमामूली भावी नतीजे को भली-भांति जानती है। लेकिन रबी की अच्छी फसल होने की सम्भावना है अतः इस मामूली वृद्धि का आम आदमी पर अत्यधिक प्रभाव नहीं पड़ेगा, सरकार ऐसा आश्वासन भी देती है। भविष्य के सुनहरे स्वप्नों का धोखा देकर गरीब जनता को बहकाने की कांग्रेसी शासकों की पुरानी आदत है। आर्थिक दुरावस्था और महंगाई से उबरने की बड़ी-बड़ी बातें करना हमारे कांग्रेसी शासकों का पवित्र धर्म है।

इस प्रकार यह बात आसानी से कही जा सकती है कि रेलमन्त्री महोदय ने देश की जनता को रेल बजट में मुनाफे का भ्रामक आश्वासन दिया है। वास्तव में जब तक फिजूलखर्ची नहीं बन्द होती और आमदनी बढ़ाने के लिए क्रान्तिकारी निर्णय नहीं लिये जाते तब तक भारतीय रेलवे २३ करोड़ रुपये के मामूली लाभ के बजट के उद्देश्य को भी नहीं हासिल कर सकती। किराया-भाड़ा बढ़ा कर जनता पर बोझ डाल कर मुनाफे का बजट प्रस्तुत करना हमेशा घाटे के बजट में परिवर्तित होता रहेगा।

—*गिरजेश्वर*

दिल्ली में ६ मार्च का शांतिपूर्ण संसद–मार्च

वर्तमान सामाजिक अर्थव्यवस्था के गर्भ में विद्यमान असंगतियां ऐसी अवस्था में पहुंच गयी हैं, जब परिवर्तन अवश्यम्भावी हो गया है। लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में उभरी नयी शक्ति द्वारा वर्तमान पुरानी समाज व्यवस्था के गर्भ में एक नई सामाजिक व्यवस्था के सृजन का राष्ट्र व्यापी आन्दोलन जन्म ले चुका है। सबसे पहले इस प्रकार के आन्दोलन का श्रेय गुजरात के उन छात्रों को है जिन्होंने राष्ट्र व्यापी छात्र-आक्रोश को युवा आन्दोलन के रूप में जागृत कर उसे सही दिशा दी, बाद में इस आन्दोलन को बिहार के छात्रों ने 'जन-आन्दोलन' बना दिया। १८ मार्च १९७४ से शुरू यह बिहार का जनान्दोलन १८ मार्च १९७५ को अपनी क्रान्तिकारी परिवर्तन की महायात्रा का एक वर्ष पूरा करेगा। अपनी एक वर्ष की अन्तिम अवधि में यह जनान्दोलन ६ मार्च को प्रान्तीय सीमा को पार कर देश की राजधानी दिल्ली में "समग्र क्रान्ति" बनकर महा ज्वार के रूप में क्रान्ति गर्भित प्रचण्ड जन-प्रदर्शन के रूप में प्रकट हुआ। अब जनता राज्य स्थापित करने का अथक प्रयास प्रारम्भ हो चुका है। दिल्ली में अटक गई आजादी को जनता के दरवाजे तक पहुंचाने का महा अभियान शुरू हो चुका है।

आज २७ वर्षों के जनविरोधी कांग्रेसी कुशासन एवं उनके द्वारा संरक्षित पूंजीपतियों, चोर बाजारियों और जमाखोरों के निरन्तर शोषण एवं लूट से तबाह देश की अधिकांश जनता अपने जीवन की असहनीय स्थिति से मुक्ति प्राप्त करने के लिए आज राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं नैतिक संकटों के दौर से गुजर

रहा है। नैतिक मूल्य और मान्यताओं में गिरावट आ गयी है और उनका स्थान झूठ, अवसरवादिता और गुण्डागर्दी तक ने ले लिया है। इस तरह से देश का सार्वजनिक जीवन दूषित हो चुका है।

हमने विदेशी प्रभुत्व से मुक्त हो कर राष्ट्रीय स्वाधीनता प्राप्त कर ली परन्तु हम जनतांत्रिक अधिकारों से दिन प्रति दिन वंचित होते जा रहे हैं। नागरिकों के मूलभूत संवैधानिक अधिकार धीरे-धीरे खत्म होते जा रहे हैं। विपक्ष की सही आवाज को संख्यासुर के बल पर अनसुनी कर दी जा रही है। विवादास्पद कानूनों को अनावश्यक ढंग से जल्दीबाजी में पारित करवाया जा रहा है। इस प्रकार देश में संवैधानिक तानाशाही चल रही है। न्यायपालिका को सत्ताधारी वर्ग के स्वार्थ से प्रतिवद्ध करने का प्रयास जारी है।

देश को इस विषम स्थिति से निकालने के लिए सर्वोदय नेता श्री जयप्रकाश नारायण ने दिल्ली में सम्पूर्ण देश से भारी संख्या में आये लोगो के विराट ऐतिहासिक प्रदर्शन का नेतृत्व किया और फिर देश की जनता की तरफ से संसद के दोनों सदनों के अध्यक्षों को मांग पत्र दिया। ६ मार्च का यह शान्तिपूर्ण विराट जन-प्रदर्शन देश की वर्तमान व्यवस्था के प्रति जनता के घोर अविश्वास का प्रबल प्रमाण है। किसी भी सभ्य व्यवस्था में स्वाधीनता के २७ वर्ष बाद भी जनता की प्राथमिक शर्तों का पूरा न होना अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है।

अतः कांग्रेस के लिए यह मांग पत्र और यह ऐतिहासिक प्रदर्शन जिसमें देश के सभी प्रदेशों से लोगों ने, सत्तारूढ़ दल के द्वारा उपस्थित अनेकों व्यवधानों के बावजूद बिहार आन्दोलन के समर्थन में और अपने जीवन को वर्तमान दुरावस्था से निकालने के लिए भारी संख्या में भाग लिया था, आत्म आलोचना का एक अवसर प्रस्तुत करता है। कांग्रेस ने जनता से जो वायदे किये थे, उसे पूरा न करके उसने जनता और सत्ता के बीच अविश्वास की खाई को अधिक वढ़ाया है। कांग्रेस ने चुनाव के दौरान जो आवाज बुलन्द की थी, वह आज जन-जन की आवाज बन गयी है। जनता की इस आवाज को अधिक समय तक नहीं दवाया जा सकता है। लोकतन्त्र, समाजवाद, भ्रष्टाचार उन्मूलन, आर्थिक और राजनैतिक सत्ता का विकेन्द्रीकरण, आर्थिक एवं सामाजिक विषमता को मिटाने तथा चुनाव एवं शिक्षा प्रणाली में सुधार करने आदि न्यायोचित मांगों को पूरा करके ही सत्तारूढ़ दल वर्तमान व्यापक जनाक्रोश को ज्वालामुखी की तरफ जाने से रोक सकता है। समाज व्यवस्था के बुनियादी परिवर्तन के मार्ग में बाधक बनकर कांग्रेस अपने पावों पर कुल्हाड़ी मार रही है। इसीलिए दोनों सदनों के अध्यक्षों को मांग पत्र देने के उपरान्त लोकनायक जयप्रकाश नारायण को बोट क्लब के मैदान में एकत्रित विशाल जनसमूह को सम्वोधित करते हुए कहना पड़ा कि जब तक लोक का तंत्र पर अधिकार नहीं हो जाता तब तक जनता को यहाँ आना पड़ेगा। उन्होंने ६ मार्च के इस मार्च को गांधी जी के डाँडी मार्च से जोड़ा और कहा कि जिस तरह डाँडी मार्च ने देश का इतिहास बदला, यह भी बदलेगा। उन्होंने कहा कि वास्तव में ६ मार्च का यह शान्तिपूर्ण संसद-मार्च भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में अंकित किया जायेगा।

अन्त में लोकनायक ने देश के सम्पूर्ण भागों से आये लोगों को आह्वान किया कि वे अपने-अपने राज्यों में लौट कर ६ अप्रैल को आपातकालीन स्थिति हटाने की मांग को लेकर प्रदर्शन करें क्योंकि आज आपातकालीन स्थिति में नागरिक स्वतंत्रताओं का हनन आम वात हो गयी है। आपातकालीन स्थिति की विद्यमानता में सरकार अपना कार्यकाल, संविधान में बिना संशोधन किये अनिश्चित काल तक बढ़ाते रह सकती है, हड़ताल को अवैध घोषित कर सकती है और कर भी रही है। अतः ऐसीं स्थिति में लोकतन्त्र की रक्षा के लिए आपातकालीन स्थिति को खत्म करवाना अति आवश्यक है।

आज वास्तव में क्रान्तिकारी सम्भावनाओं से परिपूर्ण इस जनान्दोलन को एक दीर्घ स्थायी प्रतिरोध संग्राम का रूप देने की जिम्मेदारी देश के प्रगतिशील तबकों के ऊपर आ गयी है। यदि उन्होंने इस महान ऐतिहासिक दायित्व का भार वहन नहीं किया तो इतिहास उन्हें कभी माफ नहीं करेगा। आज यदि वर्तमान आन्दोलन विफल हो जाता है तो बुनियादी परिवर्तन के लिए अनुकूल वातावरण का भविष्य धूमिल पड़ जाएगा। जो लोग इसे जनान्दोलन मानने से इन्कार कर रहे हैं और आन्दोलन में प्रतिक्रियावादी शक्तियों के सम्मिलित होने से इसमें भाग नहीं ले रहे हैं, वे वास्तव में क्रान्तिकारी परिवर्तन के महान दायित्व से अपने को अलग कर रहे हैं। आज जब उन्हें जनता के निजी संगठनों का निर्माण कर उनमें राजनैतिक शक्ति विकसित करके सही मूल राजनैतिक लाइन द्वारा क्रान्तिकारी नेतृत्व प्रदान करना चाहिए और आन्दोलन पर पड़ने वाले प्रतिक्रियावादी शक्तियों के प्रभाव को खत्म करना चाहिए तब वे आन्दोलन में भाग न लेकर आन्दोलन के बागडोर को प्रतिक्रियाबादी तत्वों के हाथ में छोड़कर उनकी शक्ति में वृद्धि कर रहे हैं। अतः आज समय की पुकार है कि वे एकजुट होकर क्रांतिकारी परिवर्तन की धार को मजबूत करें।

प्रतिशोध की अभूतपूर्व मिसाल ऊधम सिंह

○ एफ० चक्रवर्ती

१३ अप्रैल १९१९ बैसाखी का दिन था—सिखों का एक शुभ पर्व। स्वर्ण मन्दिर में भारी भीड़ थी। जलियां वाला बाग एक निजी सम्पत्ति था जो चारो ओर स्थित मकानों की दीवारों से घिरे आंगन सरीखा था। इन्हीं मकानों के आगे शहर की घनी गलिया थीं। इस बाग पर कुछ व्यक्तियों का बराबर स्वामित्व था। इसे मेलों और जलसों के लिए इस्तेमाल किया जाता था। एक संकरे निकास द्वार के अलावा भीतर आने और बाहर जाने का कोई सुव्यवस्थित रास्ता नहीं था। इस गंदगी भरे आंगन में तीन पेड़ थे, एक टूटी-फूटी कब्र थी और एक कुआं था जो बाद में 'मौत के कुए' के रूप में बदल गया था। उस जानलेवा दिवस पर लगभग २० हजार नागरिक चारो ओर की दीवारों से घिरे इस बाग में एकत्रित हुए। अनेकों लोगों को तो यह भी मालूम नहीं था कि इस जलसे का आयोजन कौन कर रहा है और वक्ता कौन है। वे सिर्फ यह जानते थे कि वे दमन के विरोध में आन्दोलन कर रहे हैं।

ब्रिगेडियर-जनरल डायर ने इस ओर कूच किया। उसने बाद में कहा था— 'मेरे लिए फ्रांस का युद्ध-क्षेत्र और अमृतसर बराबर थे। और जालन्धर से रवाना होने से पहले उसने अपने बेटे को बताया था कि एक बड़ा 'शो' होने वाला है। शाम के लगभग चार बजे थे। जनरल अपनी-फौजी टुकड़ी के साथ नगर की ओर रवाना हुआ। इसमें ९० फौजी थे जो राइफलों और खुखरियों से लैस थे। लगभग पांच बजे वह उस स्थल पर आ गया और फौजियों को दो हिस्सों में बांटकर उसने 'पोजीशन' ली। ये सब चहारदिवारी से घिरे बाग के ऊँचे उत्तरी सिरे पर थे।

'जब आप बाग के अन्दर गये तो आपने क्या किया ? लार्ड हंटर ने उससे पूछा।

'मैंने गोलियां बरसानी शुरू कर दी ? उत्तर था।

'क्या एकदम ?' जनरल से पूछा गया।

'तुरन्त ही, मैं सारे मामले को सोच-समझ चुका था और मैं समझता हूं कि मुझे उस समय अपने कर्त्तव्य के बारे में सोचने में तीस सैकिण्ड से अधिक समय नहीं लगा होगा।' गोलियों की यह धुआंधार वर्षा लगभग दस मिनट तक चली और इस दौरान एक हजार ६५० चक्र गोलियां छोड़ी गईं।

जनरल डायर ने आगे बताया कि गोलियां चलाना सिर्फ इसलिए रोक दिया गया था क्योंकि बारूद खत्म होने पर आ गया था। यदि सम्भव होता तो मैं फौजी सामान से भरी दो गाड़ियां मंगवा लेता। बीच में 'फायरिंग' की जांच भी की गई और मैंने यह भी आदेश दिया था कि जहां घनी भीड़ हो वहां पर जमकर फायरिंग की जाए क्योंकि मैं लोगों को वहां पर एकत्रित होने के लिए सजा देने का निश्चय कर चुका था।

इस कत्ले-आम से पूर्व डिप्टी कमीश्नर माइल्स इर्विंग ने स्थानीय निवासियों को कहा था तुम और तुम्हारे बच्चों पर बदला लिया जायेगा। और यह लिया गया। असंख्य लोग मारे गए थे। चाहने पर भी घायल व्यक्ति अस्पतालों को न जा सके। जनरल ने कहा कि मदद करना मेरा काम नहीं है। यह गिद्धों और गीदड़ों का दिन था।

प्रतिशोध की शपथ

इस महान नर-संहार और जनरोष की चिन्गारी के भड़कने के परिणामस्वरूप एक अभूतपूर्व व्यक्ति के रूप में ऊधमसिंह का उदय हुआ। उसके प्रारम्भिक जीवन के बारे में कोई जानकारी नहीं मिलती है। कुछ लोगों के अनुसार, वह अनाथ था।

वह यथासामर्थ्य अपने नेतृत्व में एक बाल-दल को इस महाविनाश के दिन जलियांवाला बाग में लेकर आया था। उसने वह दृश्य देखा और प्रतिशोध लेने की शपथ ली।

यह जलियांवाला बाग की गूंज थी जो २१ साल बाद कैक्स्टन हाल में सुनी गई। यह बैठक ईस्ट इण्डिया एसोसियेशन और रायल सेंट्रल एशियन द्वारा बुलाई गई थी। सोसायटी के अवैतनिक सचिव फ्रांक हर्बर्ट ब्राउन के कथनानुसार यह बैठक अपराह्न तीन बजे शुरू हुई थी और लार्ड जैटलैंड अध्यक्ष थे। 'अफगानिस्तान' पर भाषण देने वाले सर पर्सी साइक्स के अलावा सर माइकेल ओ डायर, सर लुइस डेन और भारत के लिए राज्य मन्त्री लार्ड लेमिंग्टन ने

इस बैठक में भाषण किये। ये तीनों व्यक्ति श्रोताओं की अगली पंक्ति में बैठे हुए थे।

मंच-स्थल पर अध्यक्ष, वक्ता पर्सी साइक्स और सर फ्रांक हर्बर्ट ब्राउन थे। केनिंग्टन स्थित अपने घर से रवाना होने से पूर्व सर माइकेल ने चाय के लिए पाँच बजे लौटने का वादा किया था। ३० मई १६१६ को वह भारत छोड़ चुका था।

ओ' डायर का खात्मा

१३ मार्च १६४० को लगभग साढ़े चार बजे जब सहसा ये गोलियां चलीं उस समय बैठक समाप्त हो चुकी थी। सर ब्राउन ने बौ स्ट्रीट पुलिस को बताया कि लार्ड जैटलैंड को कहनें के बाद मुड़ते ही मैंने धमाके सुने। 'यह सब कुछ बहुत संदिग्ध था। मैंने गोली चलाने वाले को साफ-साफ देखा है, वह कैदी है।' उसके बाद ऊधम सिंह संवाददाताओं की मेज की ओर जाकर अगली पंक्ति के निकट जा पहुंचा। मैंने उसके हाथ में एक रिवाल्वर देखा। जब गोलियाँ चल रही थीं तो मैंने देखा कि सर माइकेल ओ' डायर गिर पड़े। वह लार्ड जैटलैंड की ओर बढ़ रहा था जो बड़ी कठिनाई से मंच स्थल छोड़कर मेज और प्रेस मेज के कौने पर जा खड़े हुए थे।

यह कैदी सर माइकेल के एकदम नजदीक था, एक गज का भी फासला नहीं होगा। मैंने देखा कि लार्ड लैमिग्टन जख्मी हो गए और लार्ड जैटलैंड फर्श पर गिर पड़े थे। सर लूइस डेन भी गम्भीर रूप से घायल हो गए थे। मुझे ध्यान है कि मैंने उसे चिल्लाते हुए सुना— 'रास्ता दो, रास्ता दो,। उसे एकदम रोक लिया गया।'

मिस वर्था हेरिंग नामक महिला, जो दाहिने भाग में एक सीट पर बैठी थी, ने देख लिया था कि बैठक के दौरान ऊधम सिंह दीवार के सहारे धीरे-धीरे अगलीं पंक्ति की ओर बढ़ रहा था। जब वह बाहर निकलने की कोशिश कर रहा था तो इस महिला ने उसे पकड़ने का प्रयास किया। एकबारगी तो उसे दूर पटक दिया गया और जब उसने ऊधमसिंह को पकड़ने की पुनः कोशिश की तो दोनों ही गिर पड़े। तब तक वह छह गोलियाँ दाग चुका था और उसके विरुद्ध आरोप लगाने वाले ब्रिगेडियर पर्सी साइक्स ने देखा था कि कैप्टन बिस्टैंड और रिचिज उसे फर्श पर दबोचे हुए हैं। रिचिज ने रिवाल्वर छीनकर पुलिस को सौंप दिया। होम आफिस में अवैतनिक चिकित्सक सर बर्नार्ड हेनरी स्पिलसबरी के अनुसार ऊधम सिंह की दो गोलियों ने माइकेल ओ डायर का शरीर छलनी कर दिया था। एक तो दाहिने फेफड़े के निचले हिस्से को पार कर गई थी और दूसरी गोली हृदय को चीर कर निकल गई थी।

कैनन रो पुलिस थाने में ऊधम सिंह ने भी अपना बयान दिया जिसमें उन्होंने कहा, कल (१२ मार्च) साढ़े ग्यारह और बारह के दरम्यान मैं सर हसन सुहरावर्दी से मिलने गया। दरवाजे पर किसी ने बताया कि वे बाहर हैं। उसने मुझे कहा कि यदि मैं चाहूँ तो उनका इन्तजार कर सकता हूं। मैं प्रतीक्षा-कक्ष में गया परन्तु वहाँ तीन-चार लोग मौजूद थे, मैं बाहर आ गया। जब बाहर आया तो मेरी नजर कैक्स्टन हाल में बैठक के आयोजन की सूचना पर गई। मैं बाहर चला आया। दरवाजे पर उपस्थित उस व्यक्ति ने बताया कि मैं सर हसन से मिल सकता हूँ। मैंने सोचा, उनसे साढ़े तीन बजे मिल लूंगा। वहां से चले आने के बाद मैं वहां दुबारा नहीं गया। मैंने सोचा तो यह था कि उनसे आज सुबह ही मिल लूंगा जिससे पारपत्र प्राप्त करने में वे मेरी मदद कर देंगे। आज सुबह सर हसन से मिलने के लिए तैयार तो हुआ लेकिन मैंने अपना इरादा बदल दिया। मैंने सोचा कि वे मेरी मदद नहीं कर सकेंगे। सुबह जैसे ही मैं घर से निकला, मेरे मन में यह बात कौंधी कि लैसिस्टंर स्क्वेयर में पाल रोबर्सन पिक्चर देखी जाए। मैं वहां गया भी, मगर तब तक न खुलने के कारण उसे देखना सम्भव न हुआ।

मैं पुनः घर लौटा। मन में आया कि विरोध प्रकट करने का मौका इस दोपहर बाद होने वाली बैठक से अच्छा नहीं हो सकता है। मैंने घर से ही अपना रिवाल्वर संभाल लिया। जब बैठक खत्म हुई तो अपनी जेब से रिवाल्वर निकाला और मैंने स्वेच्छा से गोलियाँ चलाईं। मैंने भारत में लोगों को ब्रिटिश पूंजीवाद के कारण नष्ट होते देखा है। अतः इसका विरोध करने का मुझे कतई खेद नहीं है। ऐसा करना मेरा कर्त्तव्य था। मुझे जो भी सजा मिलेगी उसके लिए मैं चिन्तित नहीं हूं। दस, बीस या पचास साल या मुझे फांसी दी जा सकती है। मैंने अपना फर्ज अदा किया है।

उसी दिन गुप्तचर विभाग के दो इन्सपेक्टर उन्हें खोज रहे थे और उनके पास से बरामद चीजों की जांच-पड़ताल कर रहे थे। ऊधमसिंह ने ऊँची आवाज में कहा— 'मैं अपने साथ वह चाकू रखता था क्योंकि मैं केमडन टाउन में रहा था। यह उन्होंने अपने पास से मिले चाकू के बारे में बयाया था। इसके बाद वह बोले— मैंने यह इसलिए किया क्योंकि मेरे मन में उसके प्रति पुराना बैर था'। वह इसका पात्र

(शेषाँश पृष्ठ २० पर)

मुक्ति संग्राम के नायक कौन ?

० रामशरण जोशी

(गतांक से आगे)

[अन्तरविरोधों को हल करने के लिए किए जाने वाले संघर्ष का सर्वोच्च रूप युद्ध होता है, और यह तभी होता है जब वर्गों, राष्ट्रों, राज्यों अथवा राजनीतिक ग्रुपों के बीच के ये अन्तरविरोध विकसित हो कर एक निश्चित मंजिल में पहुच जाते हैं, तथा युद्ध तब से चला आ रहा है जब से निजी सम्पत्ति और वर्गों का उदय हुआ है —एक मुक्ति योद्धा]

जहां तक दूसरे मत का प्रश्न है, इसके अन्तर्गत अधिकांश देशी-विदेशी इतिहासकार आते हैं । इन इतिहासकारों का मत है कि देशी सामन्तों ने विद्रोह या संग्राम में उस समय भाग लिया, जब उनकी रियासतें छिन रही थी । लार्ड वैलजली द्वारा लागू किए गए सबसिडरी-सिस्टम के तहत देश सामन्त मात्र अंग्रेजों के हाथों खिलौने बन कर रह गये थे । मोटे तौर पर इस सिस्टम से अर्थ होता था कि जो राजा-नवाब अंग्रेजों (कम्पनी) के साथ संधि या समभौता कर लेता था, उसे आन्तरिक प्रशासन में स्वायत्ता दी जाती थी। साथ ही वह ब्रिटिश सेना रखने के लिए भी बाध्य था । सेना का व्यय भी उसे ही वहन करना होता था । परन्तु, १९ वीं शताब्दी के मध्य में लार्ड डलहौजी ने मक्कारी से इसे भी समाप्त कर दिया । ब्रिटिश राज में रियासतों के विलय की नीति लागू कर दी गई । इससे देशी नरेश भड़क उठे और विद्रोहियों के साथ हो गए । अंग्रेज़ परस्त सामन्तों के साथ भी आंशिक रूप से यही व्यवहार किया गया । शायद इसीलिए कुछ सामन्तों को कहना पड़ा– "यदि अंग्रेज उस व्यक्ति के साथ ऐसा व्यवहार (रियासतों की जब्ती) करते हैं, जो कि उनका एक वफादार संधि-मित्र रहा है, तो (ऐसी स्थिति में) कौन सुरक्षित रह सकता है ?" लार्ड हैस्टिंग एलिन वर्ग और डलहौजी ने विभिन्न बहानों: प्रान्तों में अव्यवस्था, गोद लेने की प्रथा को अस्वीकृति, भ्रष्टाचार, जनता के साथ अत्याचार आदि के माध्यम से देशी रियासतों को हड़पना शुरू कर दिया था । ऐसा कोई सा अवसर हाथ से नहीं जाने दिया गया, जिसके माध्यम से रियासतों को हड़पा न गया हो । अंग्रेज इतिहासकारों ने भी रियासतों को हड़पने की नीति की आलोचना की है । १८४८-५४ के बीच एक दर्जन से अधिक स्वतन्त्र राजाओं के राज्य ब्रिटिश राज्य में मिला लिए गए थे । यह स्पष्ट हो जाता है कि नरेशों के विद्रोह के मूल में रियासतों का छिनने का असन्तोष अवश्य रहा है । रियासतें छिनने एवं पेंशन बन्द होने की सम्भावना स्पष्ट होने पर ही नाना साहब, झांसी की रानी, अवध की बेगम आदि ऐसे अनेक नरेश व नवाब बागियों की कतारों में शामिल हुए थे । इसके अतिरिक्त एक और महत्वपूर्ण व निर्णायिक कारण रहा और वह था सैनिकों तथा किसानों का बढ़ता विद्रोही प्रभाव, यही कारण है कि बहादुर शाह जफर, नाना साहब, झांसी की रानी आदि को संग्राम में शामिल होना पड़ा था । क्योंकि ऐसे भी अनेक सामन्त थे जिन्होंने अंग्रेजों को पूरी तरह से आत्म समर्पण कर दिया था । इस श्रेणी में राजपूताना के सामन्त (जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, आदि), पंजाब के सामन्त (पटियाला, जिन्द, नाभा) कश्मीर का सामन्त, महाराजा सिंधिया, हैदराबाद का निजाम आदि आते हैं । हालांकि अंग्रेजों ने इनके साथ भी न्यायपूर्ण व्यवहार नहीं किया था। राज्य में ब्रिटिश सेनाएं ला दी थीं । फिर भी इन्होंने विद्रोह नहीं किया । स्थिति बिल्कुल साफ है । इन प्रान्तों में सैनिक कृषक एवं श्रमिक या आम जनता का विद्रोह उस व्यापक पैमाने पर नहीं था, जो कि दिल्ली, उ० प्र० (अवध), झांसी, बिहार, बंगाल आदि प्रान्तों में रहा । यही कारण है कि संबंधित स्थानीय सामन्तों ने जन संघर्षों के परिमाणात्मक एवं गुणात्मक शक्ति के अनुसार अपना कदम उठाया : यानि १८५७ के मुक्ति संग्राम के पक्ष या विपक्ष या फिर ढुलमिल स्थिति में ।

जन सामान्य के प्रचण्ड आक्रोश ने सामंतों को संग्राम में भाग लेने को विवश किया

जफर के बयान, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई और नाना साहब के अंग्रेजों के साथ पत्र-व्यवहार से स्पष्ट हो जाता है कि विद्रोही सैनिकों की प्रचण्ड शक्ति के समक्ष वे टिक न सके और उन्हें विद्रोहियों का साथ देना पड़ा या कई सामन्तों (ग्वालियर नरेश, सिंधिया) को जान बचाकर भागना पड़ा । मुकदमा चलने पर जफर ने अपने सफाई बयान में स्पष्ट रूप से स्वीकार किया है– "उन लोगों (विद्रोही सैनिक) ने मुझे एक मूक दर्शक बने रहने को बाध्य किया और कहा कि उन्होंने (सैनिकों) अपनी जिन्दगी की बाजी लगा दी है तथा जितनी भी उनमें क्षमता है, वे सब

कदम उठाएंगे (मुक्ति के लिए) । मैं बखत खान ... कि कहीं कोई मुझे मार न दे, मैं खामोश रहा और अपने दीवाने खास में चला गया।" जफर ने आगे फरमाया है– "मैं एक तरह से उनका कैदी बन चुका था। मेरे पास वे तैयार कागजात लाते और मुझे उन पर मुहर लगाने के लिए मजबूर करते......... मैं यह भी नहीं जानता था कि वे कागजात किस के लिए होते थे।" इसी प्रकार परास्त अवस्था में नाना साहब भी स्वयं को निरपराध घोषित करते हुए ब्रिटेन की साम्राज्ञी को खत लिखते हैं– "आपने हिन्दुस्तान के अपराधियों को क्षमा कर दिया है। हत्यारों को भी क्षमा कर दिया है। .... परन्तु यह आश्चर्य की बात है कि मुझे क्षमा (अभी तक भी) प्रदान नहीं की गयी है जो कि निःसहाय अवस्था में बागियों के साथ मिला था। मैंने कोई हत्या नहीं की है।" नाना साहब ने आगे लिखा है– "जब आपके सैनिक (विद्रोही) बगावत और खजाने पर अधिकार करने के लिए आगे बढ़े तभी मेरे सैनिक भी उनसे जा मिले यह देखकर मुझे लगा कि यदि मैं किसी खाई में छिप गया तो मेरे सैनिक मेरे परिवार की हत्या कर देंगे और अंग्रेज (आप) मुझे इसलिए दण्ड देंगे क्योंकि मेरे सैनिकों ने विद्रोह किया था। इसलिए मैंने मरना (यानि विद्रोही सैनिकों के साथ मिलना) ही उचित समझा। मेरे रैयत उत्तेजित थे और मुझे सैनिकों के साथ मिलना पड़ा। मैंने दो-तीन बार सरकार के पास प्रार्थना-पत्र भेजे, परन्तु कोई जवाब नहीं मिला। (विदेश विभाग-राजनैतिक-कार्यवाहियाँ- ६३-७०, २७ मई १८५९) रानी की स्थिति कुछ भिन्न थी। विद्रोह में शामिल होने से पूर्व रानी ने सरकार के साथ पत्र व्यवहार कर अपनी विवशता जाहिर की थी। रानी ने इरस्किन को पत्र लिख कर यह बात स्वीकार की है कि सैनिकों के दबाव के कारण उनका साथ देना पड़ा था। कई इतिहासकारों ने भी इस तथ्य की पुष्टि की है कि झांसी के विद्रोह एवं अंग्रेजों के कत्ले आम में झांसी की रानी का कोई हाथ नहीं था। विद्रोह के समय झांसी नगर में उपस्थित कर्नल टी० ए० मार्टिन ने कई वर्ष बाद दामोदर राव (रानी का पुत्र) को भी इस पुष्टि का एक पत्र (२८-८-८९) को लिखा था – 'तुम्हारी मां के साथ बहुत अन्याय और क्रूरता बरती गई है। जितना मैं जानता हूँ उतना उन्हें कोई भी नहीं जानता। जून १८५७ में झाँसी में अंग्रेजी का जो नर संहार हुआ था, उसमें तुम्हारी मां का कोई हाथ नहीं था।"

इससे एक बात स्पष्ट हो जाती है कि भारतीय सामन्तों—चाहे हिन्दू हों या मुसलमान, ने स्वेच्छा से मुक्ति संग्राम में भाग नहीं लिया था। इसके अतिरिक्त जहां विद्रोही सैनिकों व जनता का भारी प्रभाव था वहां वे अन-इच्छा से सँग्राम में आए। जहां प्रभाव कम था, वहां सामन्तों ने विद्रोह को कुचलवा दिया। इस सम्बन्ध में निजाम व दक्षिण भारत के कुछ नरेशों की मिसालें जिन्दा हैं। युवा निजाम और उसका प्रधानमंत्री सालार जंग अंग्रेजों के प्रति वफादार रहे। नर्मदा के दक्षिण में स्थिति आमतौर पर शान्त थी, हालांकि जुलाई १८५७ में हैदराबाद में मौलवी अलाउद्दीन तथा रोहिल्ला नेता तोरबाज खान के नेतृत्व में विद्रोह हुआ था, परन्तु उसे तत्परता के साथ दबा दिया गया था। यही स्थिति राजस्थान व पंजाब की भी रही। यद्यपि इन प्रान्तों के सामन्तों का भी शोषण अंग्रेजों ने किया था। परन्तु ये पूरी तरह से आत्म-समर्पित रहे। अगर, इन प्रान्तों में भी मजबूत सैनिक विद्रोह का प्रभाव होता या जनता जागृत होती तो निश्चित ही इन सामन्तों को भी विद्रोहियों का साथ देना पड़ता। अतः यह मानना कि रियासत छिन जाने के कारण सामन्त विद्रोही बने, हकीकत को झुठलाना है। वास्तव में सामान्य जन के बढ़ते संघर्ष के प्रचण्ड प्रभाव ने सामन्तों को मुक्ति संग्राम में भाग लेने के लिए विवश किया था।

मुख्य अन्तर्विरोध अंग्रेजों और जनता के बीच

तीसरा मत सामन्तों का शुद्ध दलाल मानने वालों का है। मार्क्सवादी-लेनिनवादी विचारक जे. पी. दीक्षित का मत है कि सम्पूर्ण सामन्त वर्ग के रूप में साम्राज्यशाहों के साथ थे। देशी सामन्तों और अंग्रेजों के मध्य कोई अन्तरविरोध नहीं था और भारतीय जनता के विरुद्ध उनका एक संयुक्त मोर्चा (ज्वाइन्ट ब्लाक) था। उनका तर्क है कि सबसीडिरी एलायन्स के तहत हुई संधियों के माध्यम से अंग्रेज साम्राज्यशाहों और भारतीय सामन्तों ने मिल कर जनता का शोषण किया था। इसी प्रकार परमानेन्ट लैण्ड सैटिलमेन्ट कानून भी संयुक्त शोषण का एक हथियार बनी। इसी व्यवस्था से जन्मे वर्ग को वे दलाल वर्ग के रूप में सामने रखते हैं। हालांकि दलाल वर्ग के उदय के लिए वह और भी कारण गिनाते हैं। रैयतवाड़ी प्रथा, शिक्षा योजना आदि। यहां हम शुद्ध सामन्तों की भूमिका तक ही सीमित रहेंगे।

एक निश्चित समय में विकसित शक्तियों और उनके प्रति उत्तरदायी परिस्थितियों के परिवेश से अलग कर किसी भी विषय का विश्लेषण नहीं किया जा सकता। यही बात इतिहास के सम्बन्ध में भी लागू होती है। मुक्ति संग्राम के इतिहास को १८ वीं और १९ वीं शताब्दियों की विकसित विभिन्न अवस्थाओं

(शेषांश पृष्ठ २० पर)

परदेशी भाषा की गुलामी

o महात्मा गांधी

मैंने सर राधाकृष्णन् से पहले ही कह दिया था कि मुझे क्यों बुलाते हैं ? मैं यहां पहुंच कर क्या कहूँगा ? जब बड़े-बड़े विद्वान मेरे सामने आ जाते हैं तो मैं हार जाता हूं। जब से हिन्दुस्तान आया हूँ, मेरा सारा समय कांग्रेस में और गरीबों, किसानों और मजदूरों वगैरा में बीता है। मैंने उन्हीं का काम किया है। उनके बीच मेरी जबान अपने आप खुल जाती है। मगर विद्वानों के सामने कुछ कहते हुए मुझे बड़ी झिझक मालूम होती है। सर राधाकृष्णन् ने मुझे लिखा कि मैं अपना लिखा हुआ भाषण उन्हें भेज दूं। पर मेरे पास उतना समय कहाँ था ? मैंने उन्हें जवाब दिया कि वक्त पर मुझे जैसी प्रेरणा मिल जायेगी उसी के अनुसार मैं कुछ कह दूंगा। मुझे प्रेरणा मिल गई है। मैं जो कुछ कहूँगा मुमकिन है आपको अच्छा न लगे। उसके लिए आप मुझे माफ कीजिएगा। यहां आकर जो कुछ मैंने देखा, और देखकर मेरे मन में जो चीज पैदा हुई, वह शायद आपको चुभेगी। मेरा ख्याल था कि कम-से-कम यहां तो सारी कार्यवाही अंग्रेजी में नहीं, बल्कि राष्ट्रभाषा में ही होगी। मैं यहां बैठा यही इन्तजार कर रहा था कि कोई न कोई तो आखिर हिन्दी या उर्दू में कुछ कहेगा। हिन्दी-उर्दू न सही, कम से कम मराठी या संस्कृत में ही कुछ कहता। लेकिन मेरी सब आशायें निष्फल हुई।

अंग्रेजों को हम गालियाँ देते हैं कि उन्होंने हिन्दुस्तान को गुलाम बना रखा है, लेकिन अंग्रेजी के तो हम खुद ही गुलाम बन गए हैं। अंग्रेजों ने हिन्दुस्तान को काफी पामाल किया है। इसके लिए मैंने उनकी कड़ी से कड़ी टीका भी की है। परन्तु अंग्रेजी की अपनी इस गुलामी के लिए मैं उन्हें जिम्मेदारी नहीं समझता। खुद अंग्रेजी सीखने और अपने बच्चों को अंग्रेजी सिखाने के लिए हम कितनी कितनी मेहनत करते हैं ? आज कोई हमें यह कहता है कि हम अंग्रेजों की अंग्रेजी बोल लेते हैं, तो हम मारे खुशी के फूले नहीं समाते। इससे बढ़कर दयनीय गुलामी और क्या हो सकती है ? इसकी वजह से हमारे बच्चों पर कितना जुल्म होता है ? अंग्रेजी के प्रति हमारे इस मोह के कारण देश की कितनी शक्ति और कितना श्रम बरबाद होता है इसका पूरा हिसाब तो हमें तभी मिल सकता है' जब गणित का कोई विद्वान इसमें दिलचस्पी ले। कोई दूसरी जगह होती तो शायद यह सब बर्दास्त कर लिया जाता, मगर यह तो हिन्दु विश्वविद्यालय है। जो बातें इसकी तारिफ में की गई हैं कि यहां के अध्यापक और विद्यार्थी इस देश की प्राचीन संस्कृति और सभ्यता के जीते जागते नमूने होंगे। मालवीय जी ने तो मुँहमांगी तनखाहें देकर अच्छे से अच्छे अध्यापक यहां आप लोगों के लिए जुटा रखे हैं। अब उनका दोष तो कोई कैसे निकाल सकता है ? दोष जमाने का है। आज हवा ही कुछ ऐसी बन गई है कि हमारे लिए उसके असर से बच निकलना मुश्किल हो गया है। लेकिन अब वह जमाना भी नहीं रहा, जब विद्यार्थी जो कुछ मिलता था, उसी में संतुष्ट रह लिया करते थे, अब तो वे बड़े-बड़े तूफान भी खड़े कर लिया करते हैं। छोटी-छोटी बातों के लिए भूख हड़ताल तक कर लिया करते हैं। अगर उन्हें ईश्वर बुद्धि दे, तो वे कह सकते हैं—'हमें अपनी मातृभाषा में पढ़ाओ।' मुझे यह जानकर खुशी हुई कि यहां आंध्र के २५० विद्यार्थी हैं। क्यों न वे सर राधाकृष्णन् के पास जायें और उनसे कहें कि यहां हमारे लिए एक आन्ध्र विभाग खोल दीजिए, और तेलुगु में हमारी सारी पढ़ाई का प्रबन्ध कर दीजिए ? और अगर वे मेरी अक्ल से काम लें तब तो उन्हें कहना चाहिए कि हम हिन्दुस्तानी है, चुनांचे हमें ऐसी जबान में पढ़ाइये जो सारे हिन्दुस्तान में समझी जा सके। और ऐसी जबान तो हिन्दुस्तानी ही हो सकती है।

जापान आज अमेरिका और इंग्लैंड से लोहा ले रहा है। लोग इसके लिए उसकी तारीफ करते हैं। मैं नहीं करता। फिर भी जापान की कुछ बातें सचमुच हमारे लिए अनुकरणीय हैं। जापान के लड़कों और लड़कियों ने योरूप वालों से जो भी कुछ पाया है, सो अपनी मातृभाषा जापानी के जरिए ही पाया है, अंग्रेजी के जरिये नहीं। जापानी लिपि बहुत कठिन है, फिर भी जापानियों ने रोमन लिपि को कभी नहीं अपनाया उनकी सारी तालिम जापानी लिपी और जापानी जबान के जरिए ही होती है। जो चुने हुए जापानी पश्चिमी देशों में खास किस्म की तालीम के लिए भेजे जाते हैं, वे भी जब आवश्यक ज्ञान पा कर लौटते हैं, तो अपना सारा ज्ञान अपने देशवासियों को जापानी भाषा के जरिए ही देते हैं। अगर वे ऐसा न करते और देश में आकर दूसरे देशों जैसे स्कूल और कालेज अपने यहां भी बना लेते और अपनी भाषा को तिलांजली देकर अंग्रेजी में सब कुछ पढ़ाने लगते तो उससे बढ़ कर बेवकूफी और क्या होती ? इस तरीके से जापान

वाले नई भाषा तो सीखते, लेकिन नया ज्ञान न सीख पाते। हिन्दुस्तान में आज हमारी महत्वाकांक्षा ही यह रहती है कि हमें किसी तरह कोई सरकारी नौकरी मिल जाए, या हम वकील, बैरिस्टर, जज वगैरा बन जायें। अंग्रेजी सीखने में हम बरसों बिता देते हैं तो भी सर राधाकृष्णन् या मालवीय जी महाराज के सामने अंग्रेजी जानने वाले हमने कितने पैदा किये हैं? आखिर वह पराई भाषा ही है न? इतनी कोशिश करने पर भी हम उसे अच्छी तरह सीख नहीं पाते। मेरे पास सैकड़ों खत आते रहते हैं, जिन में कई एम० ए० पास लोगों के भी होते हैं। परन्तु चूंकि वे अपनी जबान में नहीं लिखते, इसलिए अंग्रेजी में अपने ख्याल अच्छी तरह जाहिर नहीं कर पाते।

चुनांचे यहां बैठे-बैठे मैंने जो कुछ भी देखा, उसे देखकर मैं तो हैरान रह गया। जो कार्रवाई यहां हुई जो कुछ कहा या पढ़ा गया, उसे आम जनता तो कुछ समझ ही नहीं सकी। फिर भी हमारी जनता में इतनी उदारता और धीरज है कि वह चुपचाप सभा में बैठी रहती है। और खाक समझ में न आने पर भी यह सोच कर संतोष कर लेती है कि आखिर ये हमारे नेता ही हैं न? कुछ अच्छी बात कहते होंगे। लेकिन उस से इसे लाभ क्या? वह तो जैसी आई थी वैसी ही खाली लौट जाती है। अगर आप को शक हो, तो मैं अभी हाथ उठवा कर लोगों से पूछूं कि यहाँ की कार्रवाई वे कितना कुछ समझे हैं? आप देखियेगा कि वे सब 'कुछ नहीं कुछ नहीं' कह उठेंगे। यह तो हुई आम जनता की बात। अब अगर आप यह सोचते हों कि विद्यार्थियों में से हर एक ने हर बात को समझा है, तो वह दूसरी बड़ी गलती है।

आज से पच्चीस साल पहले मैं यहां आया था, तब भी मैंने यही सब बातें कही थीं। आज यहाँ आने पर जो हालत मैंने देखी, उसने उन्हीं चीजों को दोहराने के लिए मजबूर कर दिया।

दूसरी बात जो मेरे देखने में आई उसकी तो मुझे जरा भी उम्मीद न थी, आज सुबह में मालवीय जी महाराज के दर्शन को गया था। बसन्त पंचमी का अवसर था इसलिए सब विद्यार्थी भी वहाँ आये थे। मैंने उस वक्त भी देखा कि विद्यार्थियों को जो तालीम मिलनी चाहिए वह उन्हें नहीं मिलती। जिस सभ्यता, खामोशी और तरतीव के साथ उन्हें चलते आना चाहिए, उस तरह चलना उन्होंने सीखा ही नहीं था। यह कोई मुश्किल काम नहीं, कुछ समय में सीखा जा सकता है। सिपाही जब चलते हैं, तो सिर उठाये, सीना ताने, तीर की तरह सीधे चलते हैं, लेकिन विद्यार्थी तो उस वक्त आड़े-टेढ़े, आगे-पीछे, जैसा जिस का दिल चाहता था, चलते थे। उनके उसके 'चलने' को चलना कहना भी शायद मुनासिब न हो। मेरी समझ में तो इसका कारण भी यही है कि हमारे विद्यार्थियों पर अंग्रेजी जबान का बोझ इतना पड़ जाता है कि उन्हें दूसरी तरफ सिर उठा कर देखने की फुरसत ही नहीं मिलती। यही वजह है कि उन्हें दरसल जो सीखना चाहिए उसे वे सीख नहीं पाते।

एक और बात मैंने देखी। आज सब हम श्री शिवप्रसाद गुप्त के घर से लौट रहे थे। रास्ते में विश्वविद्यालय का विशाल प्रवेश द्वार पड़ा। उस पर नजर गई तो देखा, नागरी लिपि में 'हिन्दू विश्वविद्यालय' इतने छोटे हरफों में लिखा है कि ऐनक लगाने पर भी वे नहीं पढ़े जाते। पर अंग्रेजी में बनारस हिन्दू यूनिवर्सिटी ने तीन चौथाई से भी अधिक जगह घेर रखी थी। मैं हैरान हुआ कि यह क्या मामला है? इसमें मालवीय जी महाराज का कोई कसूर नहीं, यह तो किसी इन्जीनियर का काम होगा। लेकिन सवाल यह है कि अंग्रेजी की वहां जरूरत ही क्या थी? अंग्रेजी उसका वहाँ लिखा जाना भी हम पर जमे हुए अंग्रेजी जबान के साम्राज्य का एक सबूत है।

(काशी विश्वविद्यालय, दीक्षांत भाषण १·२·४२)

यह अंक आपको कैसा लगा?

राजधर्म के सुविज्ञ पाठकों से प्रार्थना है कि इस अंक के लेखों एवं सम्पादकीय पर अपनी समालोचना अवश्य भेजने की कृपा करें जिससे आपकी रुचि जान कर तथा आपके सुझाव मान कर हम उत्तरोत्तर राजधर्म को एक व्यापक शक्तिशाली पत्रिका बना सकें। आपके इस सहयोग के लिए आपके विशेष आभारी होंगे।

आर्थिक पिरामिड और आर्थिक पंचायती राज

○ जयप्रकाश नारायण

समाज का राजनीतिक ढाँचा ही उलटे पिरामिड जैसा नहीं है, आर्थिक ढाँचे की तस्वीर भी वैसी ही बेतुकी है। यह बात सरकारी और निजी आर्थिक क्षेत्र दोनों के लिए ही लागू है और इसलिए इसका महत्त्व और भी ज्यादा है। राजनीतिक और आर्थिक दोनों ढाँचे एक-दूसरे से अलग नहीं हैं, वे समाज के एक ही भवन के अभिन्न भाग हैं। इसलिए ऐसा हर व्यक्ति, जो इस सवाल पर जरा भी गंभीरता से सोचने को तैयार है, स्वीकार करेगा कि सिर के बल पर खड़े राजनीतिक पिरामिड को उलटकर तब तक सीधा नहीं किया जा सकता, जब तक आर्थिक पिरामिड को भी इसी प्रकार सही हालत में न लाया जाय। दूसरे शब्दों में, बिना आर्थिक विकेन्द्रीकरण के राजनीतिक विकेन्द्रीकरण कारगर नहीं हो सकता।

आर्थिक विकेन्द्रीकरण के बिना राजनैतिक विकेन्द्रीकरण निरर्थक

विकास-कार्यक्रमों को पूरा करने के लिए जन-सहयोग प्राप्त करने की आवश्यकता होने पर पंचायती राज के विचार का एक परिणाम यह हुआ कि राज-नीतिक क्षेत्रों में तो सत्ता-हस्तान्तरण और विकेन्द्री-करण की ओर पर्याप्त ध्यान दिया गया, लेकिन उसका आर्थिक पहलू एकदम उपेक्षित कर दिया गया। पंचा-यती राज का विचार आगे बढ़ाने वाले व्यक्तियों को भी अभी हाल में ही इस तथ्य का भान हुआ है कि जब तक साथ-साथ आर्थिक विकेन्द्रीकरण नहीं होगा, राजनीतिक विकेन्द्रीकरण नाम का ही रहेगा। गांधी-वादी विचारधारा अथवा सर्वोदय-आन्दोलन के लोग शुरू से ही इस बात पर जोर देते रहे हैं। लेकिन कुछ अरसा पहले तक इस ओर उचित ध्यान नहीं दिया गया था। कठिनाई यह है कि भारत की आज की परिस्थिति में और विज्ञान तथा प्राविधिक प्रगति के इस युग में विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था किस प्रकार विक-सित की जाय, इसकी स्पष्ट कल्पना किसी के पास नहीं है। खादी और ग्रामोद्योग की ही बात बार-बार दुहराने से कोई काम नहीं होने का।

यह सन्तोष की बात है कि भारत ने लोकतन्त्री-य समाजवादी ढंग के समाज की स्थापना का निश्चय किया है, भले ही अभी किसी के मस्तिष्क में इसका इसका स्पष्ट चित्र न हो कि इस तरह की समाज-रचना का स्वरूप क्या होना चाहिए। फिर भी, लोकतन्त्र और जीवन के समाजवादी मूल्यों के लिए देश का कृतसंकल्प होना बड़े आनन्द की बात है। एक समय था, जब समाजवादियों का विश्वास था कि यदि उत्पा-दन, वितरण और विनिमय के साधनों का राष्ट्रीय-करण हो जाय, तो 'आर्थिक लोकतन्त्र' आपसे-आप आ जायगा। लेकिन सर्वसत्तावादी देशों के अनुभव ने यह प्रमाणित कर दिया कि इन साधनों का पूर्ण राष्ट्रीय-करण लाजिमी तौर पर आर्थिक लोकतन्त्र पैदा करने वाला नहीं होता, उलटे उसकी परिणति अत्यन्त कठोर आर्थिक तानाशाही में होती है और आर्थिक शोषण और असमानता के नये-नये प्रकार पैदा हो जाते हैं। इसलिए लोकतन्त्रीय समाजवादी, कम-से-कम उनमें से वे विचारशील और जागरूक हैं, महसूस करने लगे हैं कि यदि वे आर्थिक लोकतन्त्र के लक्ष्य को त्यागना नहीं चाहते हैं, तो उन्हें राष्ट्रीयकरण के परम्परागत नारे से ही सन्तुष्ट नहीं हो जाना चाहिए, बल्कि समाज की आर्थिक व्यवस्था और प्रक्रिया के विकेन्द्रीकरण के उपाय ढूंढ़ने चाहिए। फिर भी, यह कहना पड़ता है कि इस तरह के विचार की आवश्यकता को मान्य करने के अलावा इस पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया गया।

आर्थिक विकेन्द्रीकृत व्यवस्था की स्थापना की कुछ शर्त और कुछ विशिष्ट तत्त्व

यद्यपि इस प्रश्न पर विस्तार से विचार करने का यहाँ अवसर नहीं है, फिर भी देश की वर्तमान परिस्थिति के अनुकूल विकेन्द्रीकृत आर्थिक व्यवस्था की स्थापना की कुछ शर्तों और उसके कुछ विशिष्ट तत्त्वों की ओर ध्यान आकृष्ट करना उपयोगी होगा।

(१) यह स्पष्ट है कि इस तरह की आर्थिक व्यवस्था छोटी मशीनों और सघन श्रमवाली अर्थ-व्यव-स्था होगी। साथ ही, यह भी स्पष्ट ही है कि इस तरह की छोटी मशीनों को सुधारने का सतत और नियोजित प्रयत्न करना होगा, ताकि उनके निर्माण और

संचालन में अधिक व्यय के बिना भी उनकी उत्पादन-क्षमता और कार्य-क्षमता बढ़ती जाय। इसके लिए आवश्यक शोध की योजना करनी होगी और उसे प्रोत्साहन देना होगा। जहां आवश्यक हो और उपलब्ध हो; मशीनों के चलाने के लिए बिजली का उपयोग किया जा सकता है। लेकिन साथ ही, आर्थिक व्यवस्था का समग्र और ऐक्यबद्ध चित्र ध्यान में रखना होगा, जिससे जहां तक सम्भव हो, मूल्य, उत्पादन, खपत और श्रम-नियोजन में असंतुलन पैदा न हो।

(२) विकेन्द्रित आर्थिक व्यवस्था का लक्ष्य स्थानीय और क्षेत्रीय साधनों— मनुष्य-शक्ति और भौतिक साधनो का पूरा उपयोग इस ढग से हो कि स्थानीय और ेत्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति हो सके। इसके लिए क्षेत्रीय सर्वेक्षण और नियोजन आवश्यक होगा। इस तरह की व्यवस्था में यह मान कर चलना होगा कि विभिन्न वस्तुओ के उत्पादन और खपत के लिए विभिन्न क्षेत्र आर्थिक इकाई बनेंगे। इस तरह कुछ उद्योग ग्रामोद्योग होंगे, कुछ ब्लाक क्षेत्रीय उद्योग होंगे और कुछ जिला, राज्य और संघ- क्षेत्र के उद्योग होंगे। (निश्चय ही राज्य - स्तर के कुछ उद्योग और संघ-क्षेत्र के सभी उद्योग बड़े पैमाने के उद्योग होंगे)। इस व्यवस्था का यह मतलब नहीं है कि एक क्षेत्र की बचतों का विनियम दूसरे क्षेत्रों की बचतों से नहीं हो सकता। लेकिन इसका यह मतलब जरूर है कि हर किस्म के उद्योग के लिए सम्बद्ध क्षेत्र उसका भौगोलिक प्रभाग होगा, जिसके अन्तर्गत वह उद्योग चलेगा। यह प्रत्यक्ष है कि इस ढंग के छोटे पैमाने के औद्योगीकरण को सफल बनाने के लिए उपयुक्त आर्थिक उपाय करने होंगे और इससे भी ज्यादा महत्त्वपूर्ण यह है कि इस आर्थिक व्यवस्था को बड़े पैमाने की केन्द्रित उद्योग-व्यवस्था के धावे से 'बचाना होगा', ताकि यह स्वस्थ और सबल हो सके।

(३) यदि देहात की जनता को सिर्फ कृषि पर ही निर्भर रहना पड़ा, तो व्यक्ति और भूमि के अनुपात और देश में जनसंख्या-वृद्धि की दृष्टि से कृषि के विकास के बावजूद, उसे लगातार बढ़ती हुई विपन्नता का सामना करना पड़ेगा। ऐसी हालत में ऊपर जिस तरह के औद्योगीकरण का जिक्र किया गया है, उसे कृषि के साथ इस प्रकार समन्वित करना होगा, जिससे हर गांव या कम-से-कम छोटे-छोटे गावों के समूह का संयुक्त औद्योगिक-कृषिक-समुदाय के रूप में विकास हो सके। यहां 'कृषि- औद्योगिक' से मतलब कृषि - सम्बन्धी उत्पादनों को तैयार करने वाले उद्योगों से ही नहीं है। इसका अर्थ है, कृषि और उद्योग का अन्तरंग रूप से एक-दूसरे से मिलाया जाना। उदाहरण के लिए एक कृषिक-औद्योगिक इकाई में केवल धान और गेहूं, फल और सब्जी तथा गन्ना और कपास का परिष्कार नहीं होगा। वहाँ रेडियो, साइकिल के पुर्जों, छोटी मशीनों, बिजली के सामान और उस क्षेत्र की आवश्यकता के अन्य सामानों का भी उत्पादन होगा। इस तरह के विकास से शहर और गांव के बीच बढ़ते हुए भेद और शहरी बुराईयों को कम किया जा सकता है।

(४) यह स्पष्ट है कि विकेन्द्रित उद्योग और व्यापार का संगठनात्मक स्वरूप केन्द्रित उद्योग व्यापार से भिन्न होगा। चाहे वह सरकारी क्षेत्र में हो या निजी क्षेत्र में, विकेन्द्रित संघटन का स्वरूप अधिकाधिक स्वयं कार्य करनेवाले श्रमिक के स्वामित्व या सहकारिता के ढंग का होगा इस तरह यह कृषि-औद्योगिक क्षेत्र न तो नौकरशाही के बोझ से दबा होगा और न शोषण ही करेगा। यह केन्द्रित क्षेत्र चाहे वह सरकारी हो या निजी, ज्यादा समानतामूलक होगा।

(५) इस तरह के आर्थिक विकास में पंचायती राज की राजनीतिक संस्थाएँ महत्त्वपूर्ण काम करेंगी। समस्या यह है कि यह कैसे किया जाय?

इस विषय पर कुछ सामान्य विचारों को रखने के बाद अपनी बात खत्म करूँगा।

(क) यहाँ यह स्पष्ट कर देना चाहूँगा कि मैं उत्पादन के परम्परागत ढंगों को बनाए रखने के लिए उत्सुक नहीं हूँ। जहां तक मेरा सम्बन्ध है, आधुनिक और परम्परागत बहस अप्रासंगिक है। मैं जो बात कह रहा हूँ, वह ऐसी अत्याधुनिक ढंग की अर्थ-व्यवस्था है, जैसी कि पहले न तो कहीं थी और न है और जिसकी रचना के लिए विज्ञान और समाज-विज्ञान की पूरी मदद लेनी होगी। दूसरे शब्दों में, एक नये तरह की मशीन तकनीकी और एक नये ढंग का सामाजिक-आर्थिक ढाँचा ढूँढ़ना होगा। मेरे ध्यान में उस तरह का विकेन्द्रीकरण नहीं है, जैसा कि पश्चिम और जापान की अत्यधिक केन्द्रित आर्थिक व्यवस्था में देखने को मिलता है। इन देशों में विकेन्द्रीकरण केन्द्रीकरण का अनुसेवी और उसकी अस्तित्व-रक्षा का साधन है। मेरे ध्यान में आर्थिक व्यवस्था का मुख्य नक्शा विकेन्द्रीकरण का है, जिसमें केन्द्रीकरण उतना ही हो, जिसके बिना काम न चल सके। दोनों में एक तरह का सन्तुलन तो रखना ही होगा, लेकिन देखना यह होगा कि विकेद्रित क्षेत्र केन्द्रित क्षेत्र का पूरक न बन जाये।

(ख) यह याद रखने की बात है कि मैं विकेन्द्रित अर्थ व्यवस्था की बात कह रहा हूँ,

केवल इसीलिए वांछनीय नहीं है कि यह लोकतन्त्रीय होगी, बल्कि इसलिए भी कि इससे आम जनता को तत्काल लाभ होगा। यह बड़े महत्त्व की बात है, यह इसलिए सम्भव है कि इससे लोगों को बड़े पैमाने पर काम पाने का अवसर मिलेगा और सम्पत्ति का उत्पादन इस प्रकार होगा, जिससे इसका व्यापक वितरण निश्चित रहेगा और सामान्य उपभोक्ताओं को श्रम के एवज में उत्पादित सामान तत्काल उपलब्ध हो सकेगा। यहां यह याद रखना चाहिए कि केन्द्रित क्षेत्र में औद्योगीकरण का लाभ ऊपर से नीचे के स्तर में बहुत धीरे-२ पहुंचता है। पश्चिम में इन लाभों के सामान्य जन तक पहुँचने में एक सदी से कम नहीं लगा। यह प्रत्यक्ष है कि भारत जैसे गरीब देश में जहां नितांत आवश्यक वस्तुएँ भी दुर्लभ हैं और जहाँ बेकारी और अर्ध-बेकारी असाध्य और विकराल रूप धारण किये हुए है, यदि आर्थिक विकास का लक्ष्य जन-कल्याण हो, तो आवश्यकता केन्द्रित अर्थ-व्यवस्था की नहीं, विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था की है।

(ग) इस तरह की अर्थ-व्यवस्था की रचना के लिए गांव की तालीम में तेजी में आमूल सुधार आवश्यक होगा। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ग्राम-शिक्षा को मुख्य रूप से गैर-किताबी: व्यावहारिक और तकनीकी रूप देना होगा। उसमें कृषि-सम्बन्धी जानकारियों पर विशेष जोर होना चाहिए। इस तरह का शिक्षा-सुधार उस शोध और नियोजन का भाग होना चाहिए, जिसका उल्लेख पहले हो चुका है। साथ ही गांव की तालीम में 'व्यावहारिक' रूप से और बड़े पैमान पर प्रौढ़-शिक्षा की भी व्यवस्था होनी चाहिए। इस तरह की शिक्षा से इस कठिन प्रश्न का कि विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था के विकास के लिए पुरुषार्थ करने वाले लोग कहाँ से प्राप्त हो सकेंगे, आपसे-आप समाधान भी हो जायेगा।

अन्त में, देश की आज की असाधारण स्थिति में, जबकि बड़े पैमाने पर विदेशी सहायता पर निर्भर विशाल योजनाओं का जमाना है, तो यह स्वाभाविक है कि अकेले केन्द्र का ही विशद साधनों पर नियंत्रण हो और वही उन्हें राज्यों में वितरित करे। यह प्रत्यक्ष ही है कि इस स्थिति में केन्द्र बेहिसाब तरीके से ताकतवर हो जायेगा और निचले शासन-संस्थाओं का रूप केन्द्र से याचकों जैसा ही रह जायगा। लोकतन्त्र के विकास पर स्वभावतः ही इसका विनाशकारी प्रभाव पड़ता है। लेकिन हमें यहां विदेशी सहायता के जटिल प्रश्न और अकेले आर्थिक विकास ही नहीं, राष्ट्रीय जीवन के हर पहलू पर उसके प्रभाव की विवेचना नही करनी है। यहाँ यह कहना ही काफी होगा कि केन्द्रीकृत अर्थ-व्यवस्था की तुलना में विकेन्द्रीकृत अर्थ-व्यवस्था विदेशी सहायता और केन्द्र पर कम निर्भर होगी। इसके मुख्यत; तीन कारण हैं: (अ) इच्छा-पूर्वक श्रम के तत्त्व की प्रधानता, (आ) छोटी बचतों का कहीं अधिक मात्रा में उपयोग हो सकेगा और, (इ) यातायात, व्यय और दूसरे ऊपरी खर्च कम होंगे। इस तरह इस माने में भी विकेन्द्रित अर्थ-व्यवस्था अधिक लोकतांत्रिक होगी।

इस्लाम और मुस्लमान

जोरावर कादयान

गतांक से आगे

सुरा २:२१३ में हजरत फरमाते हैं—

खुदा ने एक परिवार बनाया था। अधिक होकर यह कुटम्ब एक दूसरे से दूर होकर भिन्न हो गया। इसीलिए खुदा ने उन्हीं की भाषा में इन्हें दीन इलाही याद दिलाने हेतु बार-बार अनेक स्थानों पर अनेक नबियों को भेजा।

सुरा ६:५७: में हजरत ने बताया।

किसी को किसी पर फतवा देने का हक नहीं हैं। अल्लाह ही जानता है सत्य क्या है और वही न्यायाधीश है।

सुरा ४१-४३ में जुबरैल साहब हजरत को बताते हैं कि वह उन्हें वही कुछ बता रहे हैं जो पहले बताया जा चुका है, नया कुछ नहीं बताया जा रहा है।

सुरा २२:६६ में फरमाते हैं कि हमने प्रत्येक कौमों को पूजा के ढंग बता रखे हैं। वह उन्हीं तरीकों से दीन इलाही को मानकर ईश्वर की पूजा करते हैं। इस सम्बन्ध में एतराज की गुन्जायस नहीं है।

सुरा २:१०५ में फरमाते हैं कि यह असत्य है कि एक ही प्रकार की पूजा द्वारा मनुष्य बहिश्त को जाएगा। वहां पहुंचने के अनेक रास्ते हैं। प्रार्थना के अनेक तरीके हैं।

सुरा ४६:११ में हिदायत करते हैं कि दूसरों का बहिष्कार और परहेज मत करो। हो सकता है कि अन्य

प्राणी तुम से श्रेष्ठ हो, दूसरों का अपमान मत करो।

सुरा ५:४८: में स्पष्ट कहते हैं कि हमने सबके लिए भिन्न मत उनके स्वधर्म के अनुसार निश्चित किये हैं। यदि अल्लाह चाहता तो समस्त मानव मात्र का एक ही मजहब बना देता। उसने ऐसा जान बूझ कर नहीं किया। क्योंकि यह उसकी निगाह में उचित नहीं है। तुम्हारे लिए इस्लाम भेजा गया है। सुरा १०:१०० में इस तथ्य को और स्पष्ट कर दिया गया है।

कुरान शरीफ साक्षी है कि इस्लाम अरब राष्ट्र के प्राणियों के हितार्थ आया और इतिहास गवाह है कि वहां के नागरिकों को उस काल में फैले अज्ञान, अन्याय एवं अभाव के साम्राज्य से मुक्ति मिली।

कुरान शरीफ इस सत्य का भी साक्षी है कि भारतवर्ष में इस्लाम के अनुयायी बादशाहों, मुल्लाओं और काजियों ने गैर इस्लामिक कुकर्म कर के हजरत मुहम्मद और कुरान शरीफ दोनों का मजाक बनाया। ऐसे मुस्लमान वह सब रहे जिन्होंने जोर, जुल्म, कत्ल गारत, लूटमार जबरन धर्म परिवर्तन, बन्दगी के स्थानों की तोड़ फोड़, नफरत, प्रतिशोध, भोगविलास, शराबखोरी जैसे अनाचार किये। बंगला देश में जो कुछ हुआ उसे गैर इस्लामिक ही कहा जा सकता है। भारत में इस्लाम का काखीं गंगा में डूबने की कहावत (श्री अलाफ हुसेन) का कारण एक ही है कि यह धार्मिक जबरजना था। लोगों की आत्मिक इच्छा के विरुद्ध इन्हें मुसलमान बनाया गया। इस पाप कर्म में हिन्दू पुरोहित वर्ग और इस्लाम के काजी मुल्ला बराबर के शरीक रहे। एक ने दूषित किया तो दूसरे ने बहिष्कार किया। परिणाम यह हुआ कि धर्म परिवर्तित लोग न हिन्दू रहे और न ही मुस्लमान बन पाये। आज भी इनकी यही हालत है। इसी कारण भारत खण्डित हुआ और अब भी भारत व पाकिस्तान में भीतर और बाहर अशान्ति और नफरत की ज्वाला धधक रही है। भारत को खण्डित करने वाले मुस्लमान और हिन्दू गैर इस्लामिक और अनार्य ही थे।

असली मुस्लमान

यदि कुरान शरीफ को इस्लाम की कसौटी मान लिया जाय तो आज पाकिस्तान में कितने शुद्ध मुस्लमान है? जो वहाँ के सविधान के अनुसार वहां के राष्ट्रपति बन सकते हैं। इस्लाम के प्रथम शत्रु वह मुस्लमान है जो इस्लाम का पाखण्ड करते हैं। इस्लाम धर्म को अपनी खुदगर्जी का यन्त्र बनाकर दुनियाँ की आंखों में धूल झोंकते हैं। क्या दुनिया में कोई ऐसा सच्चा और बहादुर मुस्लमान है जो पाकिस्तान और हिन्दुस्तान के पाखण्डी इस्लाम धर्म के ठेकेदारों को कह सके कि "तुम नकली मुस्लमान हो"। पाकिस्तान की राज्य गद्दी पर या तो कुरान शरीफ के अनुसार जिन्दगी बसर करने वाला इन्सान ही बैठ सकता है। अन्यथा गद्दी खाली रहेगी।

हजरत मुहम्मद का जीवन

हजरत मुहम्मद ४० साल की आयु तक जनसाधारण के रूप में शरीफ इन्सान का जीवन बिताते रहे। अरब में इस्लाम से पूर्व अब्राहमी धर्म था। मक्का शरीफ में काबा सब से बड़ा धाम था। कुरवेश (कुरैश) लोग इस मन्दिर के पुरोहित थे। आरम्भ काल में हजरत इब्राहिम ने इस मन्दिर की स्थापना की थी। इस में जबरैल द्वारा दिया गया "संग अस्वद" स्थापित था। हिन्दी लोग 'संग अस्वद' को शिवलिंग मानते हैं। पुरोहित रमर के काल में प्रथम बार काबा मे मूर्तियां स्थापित की गयीं। इसी काल से काबा में मूर्तिपूजा आरम्भ हुई। बढ़ते-बढ़ते ३६० मूर्तियां हो गई। "हुब्बल" आदम कद आदमी रूप में सबसे बड़ा देवता माना जाता था। इसके हाथ में तलवार और कन्धे पर धनुष बाण था। "मनात" नाम का एक देवी स्थान था जिस पर बलि चढ़ती थी और मुण्डन संस्कार भी होता था। पन्डा लोगों का समाज पर पूरा आधिपत्य था। चढ़ावा खाना और भोग विलास, मद्य, माँस का पान इनका और आम आदमी का जीवन था। व्यभिचार की यह हालत थी कि एक आदमी सौ और दो सौ तक बीबियां रखता था। पिता की मृत्यु पर अपनी मौसियों को या तो बीबी बना लेता या बेचकर पैसे बना लेता।

हजरत मुहम्मद के पिता का स्वर्गवास इनके जन्म से पूर्व ही हो गया था। माता भी ६ साल का छोड़कर अल्लाह को प्यारी हो गई।

चालीस साल की आयु पर हजरत ने एकान्तवास लिया और गारे हरा में साधना करने लगे। एक दिन समाधि में हजरत को फरिश्ता जबरैला के दर्शन हुए और इन्होंने हजरत की आत्मा को चैतन्य कर दिया। जबरैल के हुकम से हजरत ने धर्म प्रचार आरम्भ कर दिया। पांच वर्ष तक मक्का शरीफ में हजरत ने प्रचार किया। इस काल में हजरत ने दीने इलाही सनातन धर्म और पुरातन काल में भेजे गये रसूलों के विचारों की व्याख्या की।

हिजरत

मूर्ति पूजा का खण्डन और एक ईश्वर ६२२ ए.डी. की पूजा और धर्मांध के विरुद्ध प्रचार करने के कारण इनके अपने ही कुरेश कबीले वाले जन जा

के बैरी हो गये । इनको और इनके साथियों को मक्का त्याग कर मदीना (यशरब) में आश्रय लेना पड़ा । तेरह वर्ष तक हजरत को धर्म के पुराने ठेकेदारों के जोर जुल्म को सहना पड़ा । परन्तु आखिर यह अपने उद्देश्य में सफल हुए और धर्म पाखण्डियों काफिरों की हार हुई । मदीना को ही नव राष्ट्र का रूप दिया जिसमें ईसाई, यहूदी, जुरथस्ट सभी को मिलाकर राष्ट्र बनाया । सबको स्वधर्म की आजादी देकर सीकुलर स्टेट बनाई । हजरत ने चार खलीफाओं को नायक बनाया । यह लोग आम राय से चुने गये थे और साधु-जन थे । अपना खाना स्वयं बनाते थे । यहाँ तक कि पकाने का ईन्धन भी जंगल से स्वयं बटोरकर लाते थे । पुरुषार्थी और त्यागी जन थे । हजरत ने २३ साल में ११४ सुराओं की व्याख्या की हजरत जबरैल ने रसूले इस्लाम को दया, न्याय, दान, बराबरी और ज्ञान जैसे गुणों का रहस्य बताकर इन्हें रसूल बनाया । ६३५ ए० डी० में रसूल इस्लाम का स्वर्गवास हो जाने पर हजरत अबूबकर ने इस्लाम की कमान संभाली । हजरत अबूबकर, हजरत उमर, हजरत उस्मान और हजरत अली के कार्यकाल तक इस्लाम कुरान शरीफ के अनुसार चलता रहा । खलाफत के आखरी दिन हजरत मविय धनाढ्य पुरुष अपनी सत्ता बनाने में सफल हुए । हजरत अली ने कहा कि जनाब मविया साहब में आज तक जिम्मेदार हूं कल कौन नायक होगा, मैं नहीं कह सकता । माविया साहब ने मौके को गनीमत समझ रात में ही दो पंचो को पटाया और अगले दिन इनकी मदद से बादशाह बन बैठा । इसी काल में इस्लाम के साथ वही प्रक्रिया हुई जो अन्य धर्मों के साथ पूर्व काल में होती आई थी । यह इतिहासिक सत्य है कि अज्ञान अन्याय व अभाव का पूर्ण साम्राज्य हो जाने पर हर काल में नबियों का अवतार हुआ और जनता ने इनके नायकत्व द्वारा अज्ञानी धर्म के ठेकेदारों अन्यायी राजाओं और अभाव कर्त्ता व्यापारियों का अधिपत्य समाप्त कर नया जीवन पाया । परन्तु प्रत्येक मजहब समय बीतने पर पुनः ऐसे ही अन्याइयों और अभाव कर्ताओं का कारगर हथियार बनता था । यह धर्म इतिहास की सत्यता और विडम्बना है । इसी कारण आधुनिक काल में ऋषि मार्क्स ने धर्म को अफीम बताना पड़ा ।

भारत भूमि पर श्री कृष्ण जी ने अब से ५ हजार साल पूर्व सनातन धर्म का पुनःस्थापन करके अज्ञान, अन्याय व अभाव का विनाश किया था । ठीक ५ हजार वर्ष पश्चात् स्वामी दयानन्द जी ने १८७५ में आर्य जाति को याद दिलाया कि वह धर्म च्यूत होकर विनाश के कगार पर पुनः पहुंच गये हैं । संसार के लोगों ने धर्म ज्ञाता से विदुर जी जैसा व्यवहार दिया । परन्तु अन्यायी राजाओं को ज्ञान नहीं था कि विदुर की आड़ में श्री कृष्ण जी सक्रिय हैं और यह इन्हें अपने अन्त तक भी ज्ञान नहीं हुआ । मार्क्स के कार्य को लेनिन ने पूरा किया और ऋषि दयानन्द के कार्य को पूरा करने वाला कौन ? धर्म युद्ध ही सांस्कृतिक क्रान्ति लाते रहे हैं और धर्म युद्ध ही अब आगे लाएगा । काश ब्रह्म ज्ञाता ब्राह्मण ऋषि दयानन्द के साथ ही धर्म युद्ध का संचालक भी पैदा हो गया होता तो अभी तक सांस्कृतिक क्रांति सफल हो जाती । श्री कृष्ण जी वचनबद्ध है यदा यदा ही धर्मस्व ग्लानी··· ······ और पांच हजार साल में काल का कल्प पूरा भी हो जाता है ।

जनता भी अब रास्ता भटक कर अन्धेरे में हाथ मारती हुई रोशनी की बाट में जी रही है । आज का राजा राज्य खो जाने की फिक्र में व्याकुल है । करोड़-पति कंगाल होने से डर रहा है । जनसाधारण रोटी, कपड़ा की भी आशा को निराशा में बदलते देख रहा है ।

यह सब अज्ञान, अन्याय व अभाव की परिकाष्टा के लक्षण उभर कर सामने आ गये हैं और समुन्द्र मन्थन का समय आ गया है ।
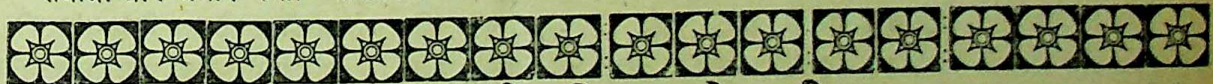
राजधर्म परिवार से अपील

राजधर्म से हमारे सुहृद् पाठक विशेष स्नेह रखते हैं । यह जानकारी पाकर हमें विशेष बल मिलता है । हम चाहते हैं राजधर्म अधिक से अधिक लोगों के पास पहुँचे । इसके लिए सभी राजधर्म के सदस्यों को एक अभियान प्रारम्भ करना चाहिए । मेरी प्रत्येक राजधर्म के सदस्य से प्रार्थना है कि प्रत्येक सदस्य ५, ५ ग्राहक अपने से अतिरिक्त अवश्य बनायें ।

राजधर्म के आजीवन सदस्य

शीघ्र ही १५० रु० भेजकर राजधर्म के आजीवन सदस्य बनें, ताकि इस परिवार का गौरव बढे और राजधर्म प्रकाशन आपके संरक्षण में उन्नति के पथ पर अग्रसर हो ।

महर्षि दयानन्द और युगान्तर

(हिन्दी के महान कवि स्व० सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला का एक ऐतिहासिक लेख

उन्नसवीं सदी का परार्द्ध भारत के इतिहासकार अपर स्वर्ण प्रभात है। कई पावन-चरित्र महापुरुष अलग-अलग उत्तरदायित्व लेकर, इस समय, इस पुण्य भूमि में अवतीर्ण होते हैं। महर्षि दयानन्द सरस्वती भी इन्हीं में एक महाप्रतिभामंडित महापुरुष हैं।

हम देखते हैं, हमें इतिहास भी बतलाता है, समय की एक आवश्यकता होती है। उसी के अनुसार धर्म अपना स्वरूप ग्रहण करता है। हम अच्छी तरह जानते हैं, ज्ञान सदा एकरस है, वह काल के बन्धन से बाहर है, और चूंकि वेदों में मनुष्य-जाति की प्रथम तथा चिरंतन ज्ञान-ज्योति है, इसलिए उसके परिवर्तन की आवश्यकता सिद्ध नहीं होती, बल्कि परिवर्तन भ्रमजन्य भी कहा जा सकता है। पर साथ-साथ, इसी प्रकार यह भी कहा जा सकता है कि उच्चतम ज्ञान किसी भी भाषा में हो, वह अपौरुषेय वेद ही है। परिवर्तन उसके व्यवहार-कौशल, कर्मकाण्ड आदि में होता है, हुआ भी है। इसे ही हम समय की आवश्यकता कहते हैं। भाषा जिस प्रकार अर्थ-साम्य रखने पर भी स्वरूपतः बदलती गई है। अथवा भिन्न देशों में भिन्न परिस्थितियों के कारण अपर देशों की भाषा से बिल्कुल भिन्न प्रतीत होती है, इसी प्रकार धर्म भी समयानुसार जुदा-जुदा रूप ग्रहण करता गया है। भारत के लिए यह विशेष रूप से कहा जा सकता है। बुद्ध, शंकर, रामानुज आदि के धर्ममत प्रवर्त्तन सामयिक प्रभाव को ही पुष्ट करते हैं। पुराण इसी विशेषता के सूचक हैं। पौराणिक विशेषता और मूर्त्ति-पूजन आदि से मालूम होता है, देश के लोगों की रुचि अरूप से रूप की ओर ज्यादा झुकी थी। इसीलिए वैदिक अखंड ज्ञान-राशि को छोड़कर ऐश्वर्य-गुणपूर्ण एक-एक प्रतीक लोगों ने ग्रहण किया। इस तरह देश की तरक्की नहीं हुई, यह बात नहीं हुई, यह बात नहीं। पर इस तरह देश ज्ञानभूमि से गिर गया, यह बात भी है। जो भोजन शरीर को पुष्ट करता है, वही रोग का भी कारण होता है। मूर्त्ति-पूजन में इसी प्रकार दोषों का प्रवेश हुआ। ज्ञान जाता रहा। मस्तिष्क ने दुर्बल हुई जाति औद्धत्य के कारण छोटी-छोटी स्वतंत्र सत्ताओं में बंटकर एक दिन शताब्दियों के लिए पराधीन हो गई। उसका वह मूर्त्तिपूजन संस्कार बढ़ता गया धीरे-धीरे वह ज्ञान से बिल्कुल ही रहित हो गई। शासन बदला, अंग्रेज आए, संसार की सभ्यता एक नये प्रवाह से बही, बड़े-बड़े पंडित विश्व-साहित्य, विश्वज्ञान, विश्व मैत्री की आवाज उठाने लगे, पर भारत उसी प्रकार पौरा[illegible] रूप के माया-जाल में भूला रहा। इस समय [illegible] स्पर्धा के लिए समय को फिर आवश्यकता हुई [illegible] और महर्षि दयानन्द का यही अपराजित प्रकाश [illegible] वह अपार वैदिक ज्ञान-राशि के आधार-स्तम्भ स[illegible] अकेले बड़े-बड़े पंडितों का सामन करते हैं। ए[illegible] आधार से इतनी बड़ी शक्ति का स्फुरण होता है [illegible] आज भारत के युगान्तर—साहित्य में इसी की [illegible] प्रथम है, यही जनसंख्या में बढ़ी हुई है।

चरित्र, स्वास्थ्य, त्याग, ज्ञान और शि[illegible] आदि में जो आदर्श महर्षि दयानन्द जी महारा[illegible] प्राप्त होते हैं, उसका लेशमात्र भी अभारतीय प[illegible] शिक्षा-संभूत नहीं, पुनः ऐसे आर्य में ज्ञान तथा [illegible] का कितना प्रसार रह सकता है, वह स्वयं इसके [illegible] हरण हैं, मतलब यह है कि जो लोग कहते हैं [illegible] वैदिक अथवा प्राचीन शिक्षा द्वारा मनुष्य उतना उ[illegible] मना नहीं हो सकता, जितना अंग्रेजी शिक्षा द्वारा [illegible] है, महर्षि दयानन्द सरस्वती इसके प्रत्यक्ष खंडन [illegible] महर्षि दयानन्द जी से बढ़कर भी मनुष्य होता है [illegible] का प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता, यही वैदिक ज्ञा[illegible] मनुष्य के उत्कर्ष में प्रत्यक्ष उपलब्धि होती है [illegible] आदर्श आर्य हमें देखने को मिलता है।

यहां से भारत के धार्मिक इतिहास का एक [illegible] अध्याय शुरू होता है यद्यपि वह बहुत ही प्राचीन [illegible] हमें अपने सुधार के लिए क्या-क्या करना चा[illegible] हमारे सामाजिक उन्नयन में कहा-कहां और क्या [illegible] रूकावटे हैं, हमें मुक्ति के लिए कौन-सा मार्ग [illegible] करना चाहिए, महर्षि दयानन्द सरस्वती ने [illegible] अच्छी तरह समझाया है। "आर्य समाज की प्र[illegible] उसकी प्रगति एक दिव्य शक्ति की स्फूर्ति है। [illegible] महिलाओं, पतितों तथा जाति-पाति, भेदभाव मि[illegible] लिए महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज से बढ़क[illegible] नवीन विचारों के युग में किसी भी समाज ने [illegible] नहीं किया। आज जो जागरण भारत में देख[illegible] है, इसका प्रायः सम्पूर्ण श्रेय आर्य समाज को [illegible] स्वधर्म में दीक्षित करने का यही इसी समाज [illegible] गणेश हुआ है। भिन्न जाति वाले बन्धुओं को [illegible] तथा ब्राह्मण-क्षत्रियों के प्रहारों से बचाने का [illegible] आर्यसमाज ही करता रहा है। शहर-शहर जि[illegible] कस्बे-कस्बे में इसी उदारता के कारण, आर्य[illegible] की स्थापना हो गई। राष्ट्रभाषा हिन्दी के भी [illegible]

जो एक प्रवर्तक हैं, और आर्य समाज के प्रचार की तो यह भाषा ही रही है।

अनेक गीत खिचड़ी शैली के तैयार किए और गाए गए। शिक्षण के लिए गुरुकुल जैसी संस्थाएँ निर्मित हो गईं। एक नया ही जीवन देश में लहराने लगा। स्वामी जी के प्रचार के कुछ पहले ब्राह्मसमाज की कलकत्ते में स्थापना हुई थी। राजा राममोहनराय द्वारा प्रवर्तित ब्राह्मधर्म की प्रतिष्ठा, वेदान्तिक बुनियाद पर, महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर कर चुके थे। वहां इसकी आवश्यकता इसलिए हुई थी कि अंग्रेजी सभ्यता की दीप-ज्योति की ओर शिक्षित नवयुवकों का समूह पतंगों की तरह बढ़ रहा था, पुनः शिक्षा तथा उत्कर्ष के लिए विदेश की यात्रा अनिवार्य थी, पर लौटने पर वे शिक्षित युवक यहां ब्राह्मणों द्वारा धर्म-भ्रष्ट कह कर समाज से निकाल दिये जाते थे, इसलिए वे ईसाई हो जाते थे, उन्हें देश के ही धर्म में रखने की जरूरत थी। इसी भावना पर ब्राह्मधर्म की प्रतिष्ठा तथा प्रसार हुआ। विलायत में प्रसिद्धि प्राप्त कर लौटने वाले प्रथम भारतीय वक्ता श्रीयुत केशवचन्द्र सेन भी ब्राह्मधर्म के प्रवर्त्तकों में एक हैं। इन्हीं से मिलने के लिए स्वामी जी कलकत्ता गए थे। यह जितने अच्छे विद्वान अंग्रेजी के थे, उतने अच्छे संस्कृत के न थे। इनसे बातचीत में स्वामी जी सहमत

उल्लेख करते हुए उन्होंने [illegible] मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा, मैथुन आदि वेद-विरुद्ध महा अधर्म कार्यों को वाममार्गियों ने श्रेष्ठ माना है। जो वाममार्गी कलाकार के घर बोतल-पर-बोतल शराब चढ़ावे और रात्रि को वारांगना से दुष्कर्म करके उसी के घर सोवे, वह वाममार्गियों में सर्वश्रेष्ठ चक्रवर्ती राजा के समान है। स्त्रियों के प्रति विशद कोई भी विचार उनमें नहीं। स्वामी जी देशवासियों को विशुद्ध वैदिक धर्म में दीक्षित हो आत्मज्ञान ही-सा उज्ज्वल और पवित्र कर देना चाहते थे। स्वामी विवेकानन्द ने भी वामाचार-भक्त देश के लिए विशुद्ध भाव वाले वैदांतिक धर्म का उपदेश दिया है।

आपने गुरु-परम्परा को भी आड़े हाथों लिया है। योगसूत्र के— "स पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्" के अनुसार, आप केवल ब्रह्म को ही गुरु स्वीकार करते हैं। रामानुज-जैसे धर्माचार्य का भी मत आपको मान्य नहीं, और बहुत कुछ युक्ति पूर्ण भी जान पड़ता है। आपका कहना है कि लक्ष्मी-युक्त नारायण की शरण जाने का मन्त्र धनाढ्य और माननीयों के लिए बनाया गया— यह भी एक दुकान ठहरी।

मूर्ति-पूजन के लिए आपका कथन है कि जैनियों की मूर्खता से इसका प्रचलन हुआ। तांत्रिक तथा वैष्णवों ने भिन्न मूर्तियों तथा पूजनोपचारों से अपनी

ऋषि दयानन्द क्या थे? इसका उत्तर अनेकों ने अपने-अपने प्रकार से दिया है। हिन्दी के महाकवि निराला का यह लेख भी आर्यसमाज के संस्थापक के प्रति श्रद्धा का एक तरल बिन्दु है......

नहीं हो सके। कलकत्ते में आज ब्राह्मसमाज-मन्दिर के सामने, कार्नवालिस स्ट्रीट पर, विशाल आर्यसमाज मन्दिर भी स्थित है।

किसी दूसरे प्रतिभाशाली पुरुष से और जो कुछ उपकार देश तथा जाति का हुआ हो, सबसे पहले वेदों को स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ने ही हमारे सामने रक्खा। हम आर्य हों, ब्राह्मसमाज वाले हों यदि हमें ऋषियों की सन्तान होने का सौभाग्य प्राप्त है और इसके लिए हम गर्व करते हैं, तो कहना होगा कि ऋषि दयानन्द से बढ़कर हमारा उपकार इधर किसी भी दूसरे महापुरुष ने नहीं किया, जिन्होंने स्वयं कुछ भी न लेकर हमें अपार ज्ञान-राशि वेदों से परिचित कर दिया।

देश में विभिन्न मतों का प्रचलन उसके पतन का कारण है, स्वामी दयानन्द जी की यह निर्भ्रांत धारणा थी। उन्होंने इन मत-मतान्तरों पर सप्रमाण प्रबल आक्षेप भी किये हैं। उनकी इच्छा थी कि इस मतवाद के अज्ञान-पंक से देश को निकाल कर वैदिक शुद्ध शिक्षा द्वारा निष्कलंक करा दें।

वाममार्ग वाले तांत्रिकों की मन्द वृत्तियों का

एक विशेषता प्रतिष्ठित की है। जैनी वाद्य नहीं बजाते थे, ये लोग शंख, घंटा, घड़ियाल आदि बजाने लगे। अवतार आदि पर भी स्वामी जी विश्वास नहीं करते। "न तस्य प्रतिमा अस्ति" आदि-आदि प्रमाणों से ब्रह्म का विग्रह नहीं सिद्ध होता, उनका कहना है।

ब्राह्मणों की ठग विद्या के सम्बन्ध में भी स्वामी जी ने लिखा है। आज ब्राह्मणों की हठ पूर्ण मूर्खता से अपरापर जातियों को क्षति पहुंच रही है। पहले पढ़े-लिखे होने के कारण ब्राह्मणों ने श्लोकों की रचना कर-करके अपने लिए बहुत काफी गुंजाइश कर ली थी। उसी के परिणामस्वरूप वे आज तक पुजाते चले आ रहे हैं। स्वामी जी एक मन्त्र का उल्लेख करते हैं— "दैवाधीनं जगत्सर्वं मन्त्राधीनाश्च देवताः, ते मन्त्रा ब्राह्मणाधीनास्तस्माद्ब्राह्मणदैवतम्" अर्थात् सारा संसार देवताओं के आधीन है, देवता मन्त्रों के अधीन हैं, वे मन्त्र ब्राह्मणों के अधीन हैं, इसलिए ब्राह्मण ही देवता हैं। लोगों से पुजाने का यह पाखण्ड बड़ी ही नीच मनोवृत्ति का परिचय है।

स्वामी जी ने शैव, शाक्त और वैष्णव आदि मतों की तो खबर ली ही है, हिन्दी-साहित्य के महा-

फटकारा है । आपका कहना है [illegible] पलंग, गद्दी,तकिए, खडाऊ ज्योति अर्थात् दीप आदि का पूंजना पाषाण-मूर्ति से न्यून नहीं । क्या कबीर साहब भुनगा था, वा कलियां था, जो फूल हो गया ? जुलाहे का काम करता था, किसी पंडित के पास संस्कृत पढ़ने के लिए गया, उसने उसका अपमान किया । कहा, हम जुलाहे को नहीं पढ़ाते । इसी प्रकार कई पंडितों के पास फिरा, परन्तु किसी ने न पढ़ाया, तब उट-पटांग भाषा बनाकर जुलाहे आदि लोगों को समझाने लगा । तंबूरे लेकर गाता था, भजन बनाता था, विशेष पंडित, शास्त्र, वेदों की निन्दा किया करता था । कुछ मूर्ख लोग उसके जाल में फस गए, जब मर गए, तब सिद्ध बना लिया । जो-जो उसने जीतेजी बनाया था, उसको उसके चेले पढ़ते रहे । कान को मूंद कर जो शब्द सुना जाता है, उसको अनहत शब्द-सिद्धान्त ठहराया । मन की वृत्ति को सुरति कहते हैं, उसको उस शब्द सुनने में लगाया, उसी को सत और परमेश्वर का ध्यान बतलाते हैं, वहां काल नहीं पहुँचता । बर्छी के समान तिलक और चंदनादि लकड़ी की कंठी बांधते हैं ।

अल्पशिक्षित साधुओं ने जिस प्रकार वेदों की निन्दा कर-कर मूढ़ जनों में वेदों के प्रतिकूल विश्वास पैदा कर दिया था, उसी प्रकार नव्य युग के तपस्वी महर्षि ने भी उन सबको धता बताया, और विज्ञों को ज्ञानमय कोष वेदों की शिक्षा के लिए आमन्त्रित किया । स्वामी नारायण के मत के विषय पर आप कहते हैं — "यादृशी शीतलादेवी तादृशी वाहनः खरः" जैसी गुसाई जी की धन-हरणादि में विचित्र लीला है वैसी ही स्वामी नारायण की भी है । "माध्व मत के सम्बन्ध में आपका कथन है– "जैसे अन्यमतावलम्बी हैं, वैसा ही माध्व भी है, क्योंकि ये भी चक्रांकित होते हैं, इनमें चक्रांकितों से इतना विशेष है कि रामानुज एक बार चक्रांकित होते हैं, और वे वर्ष-वर्ष फिर-फिर चक्राँकित होते जाते हैं, वे चक्रांकित कपाल में पीली रेखा और माध्व काली रेखा लगाते हैं । एक माध्व पंडित से किसी एक महात्मा का शास्त्रार्थ हुआ था । (महात्मा) तुमने यह काली रेखा और चांदला (तिलक) क्यों लगाया (शास्त्री) इसके लगाने से हम वैकुण्ठ को जायेंगे, और श्रीकृष्ण का भी शरीर श्याम रंग था, इसलिए हम

पतितोद्धारक दयानन्द

"आर्यसमाज की प्रतिष्ठा, उसकी प्रगति एक दिव्य शक्ति की स्फूर्ति है । देश में महिलाओं, पतितों तथा जाति-पाति, भेद-भाव मिटाने के लिए महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज से बढ़कर इस नवीन विचारों के युग में किसी भी समाज ने कार्य नहीं किया । आज जो जागरण भारत में देख पड़ता है, इसका प्रायः सम्पूर्ण श्रेय आर्यसमाज को है ।"

भला विचार के देखो, इसमें आत्मा की उन्नति और ज्ञान क्या बढ़ सकता है ? इसी प्रकार नानक जी के सम्बन्ध में भी आपने कहा है कि उन्हें संस्कृत का ज्ञान न था, और उन्होंने वेद पढ़ने वालों को तो मौत के मूँह में डाल दिया है, और अपना नाम लेकर कहा है कि नानक अमर हो गए - वह आप परमेश्वर हैं, जो वेदों की कहानी कहता है, उसकी कुल बातें कहानियां हैं । मूर्ख साधू वेदों की महिमा नहीं जान सकते, यदि नानक जी वेदों का मान करते, तो उनका अपना सम्प्रदाय न चलता, न वह गुरु बन सकते थे, क्योंकि संस्कृत नहीं पढ़ी थी, फिर दूसरों को पढ़ा कर शिष्य कैसे बनाते, आदि-आदि । दादू पंथ को भी आप इसी प्रकार फटकारते हैं । शिक्षा, मार्जन तथा अपौरुषेय ज्ञान-राशि वेदों का आपका पक्ष है । मत-मतान्तरों के स्वरूप जल में वह आत्मतर्पण नहीं करते । वहाँ उन्हें महत्ता नहीं दीख पड़ती ।

पुनः भाषा में अधूरी कविता कर ज्ञान का परिचय देने वाले अल्पाधार साधुओं से पंडित-श्रेष्ठ स्वामी

काला तिलक करते हैं । (महात्मा) जो काली रेखा और चांदला लगाने से वैकुण्ठ में जाते हो तो सब मुख काला कर लेओ तो कहां जाओगे ।

स्वामी जी के व्यंग उपदेश पूर्ण हैं । आर्य-संस्कृति के लिए आपने निःसहाय होकर भी दिग्विजय किया और उसकी समुचित प्रतिष्ठा की । स्वामी जी का सबसे बड़ा महत्त्व यह है कि उन्होंने अपनी प्रतिष्ठा की ओर नहीं देखा, वेदों की प्रतिष्ठा की है । ब्राह्मसमाज और प्रार्थना समाज के सम्बन्ध में आपका कहना है– ब्राह्मसमाज और प्रार्थना समाज के नियम सर्वांश अच्छे नहीं, क्योंकि वेदविद्या-हीन लोगों की कल्पना सर्वथा सत्य क्योंकर हो सकती है ? जो कुछ ब्राह्मसमाज और प्रार्थना-समाजियों ने ईसाईमत में मिलने से थोड़े मनुष्यों को बचाए और कुछ-कुछ पाषाण आदि मूर्ति पूजा हटाया अन्य जाल-ग्रन्थों के फन्दे से भी कुछ बचाया इत्यादि अच्छी बातें हैं ।

परन्तु इन लोगों में स्वदेश-भक्ति बहुत न्यून ईसाइयों के आचरण बहुत से लिए हैं । खान-

विवाहादि के नियम भी [illegible] प्रशंसा व पूर्वजों की बड़ाई करनी तो दूर रही, उसके स्थान में पेट-भर निन्दा करते हैं, व्याख्यानों में ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा भर-पेट करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियों का नाम भी नहीं लेते प्रत्युत ऐसा कहते हैं कि बिना अंग्रेजों के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई भी विद्वान नहीं हुआ, आर्यावर्ती लोग सदा से मूर्ख चले आए हैं इनकी उन्नति कभी नहीं हुई। वेदादिकों की प्रतिष्ठा तो दूर रही, परन्तु निन्दा करने से भी पृथक नहीं रहते, ब्राह्मसमाज के उद्देश के पुस्तक में साधुओं की संख्या में 'ईसा' 'मूसा' 'मुहम्मद' 'नानक' और 'चैतन्य' लिखे हैं, किसी ऋषि-महर्षि का नाम भी नहीं लिखा।

भारत के अधःपतन का कारण

आज शिक्षित सभी मनुष्य जानते हैं, भारत के अधःपतन का मुख्य कारण नारि–जाति का पीछे रह जाना है, वह जीवन-संग्राम में पुरुष का साथ नहीं दे सकती, पहले से ऐसी निरवलंबकरदी जाती है कि उसमें कोई क्रियाशीलता नहीं रह जाती, पुरुष के न रहने पर सहारे के बिना तरह-तरह की तकलीफें झेलती हुई वह कभी-कभी दूसरे धर्म को स्वीकार कर लेती है, आदि-आदि। पं० लक्ष्मण शास्त्री द्रविड जैसे पुराने और नए पंडित अनुकूल तर्क-योजना करते हुए, प्रमाण देते हुए. यह नहीं मानते कि भारत की स्त्रियां उसके पराधीन-काल में भी किसी तरह दूसरे देशों की स्त्रियों से उचित शिक्षा, आत्मोन्नति, गार्हस्थ्य सुख-विज्ञान संस्कृति आदि में घटकर हैं। इसी तरह धर्म और जाति के सम्बन्ध में उनकी वाक्यावली, आज के अंग्रेजी शिक्षित युवकों की अधूरी जंचने पर भी, निरपेक्ष समीक्षकों के विचार में मान्य ठहरती है।

फिर भीं, हमें यहां देखना है कि आजकल के नवयुवक समुदाय से महर्षि दयानन्द, अपनी वैदिक प्राचीनता लिए भी, नवीन सहयोग कर सकते है या नहीं। इससे हमें मालूम होगा हमारे देश के ऋषि जो हजारों शताब्दियों पहले सत्य-साक्षात्कार कर चुके हैं, आज की नवीनता से भी नवीन है। क्योंकि सत्य है जो जितना ही पीछे है, उतना ही आगे भी। जो सबसे पहले दृष्टि के सामने है वही सबसे ज्यादा नवीन है।

वेद का अर्थ ज्ञान

वेद का अर्थज्ञान। ज्ञान की ही हद में सृष्टि की सारी बातें हैं। सृष्टि की अव्यक्त अवस्था भी ज्ञान है।

स्वामी जी वेदाध्ययन में अधिकारी-भेद नहीं रखते। वह सभी जातियों की बालिका-विद्यार्थिनियों को वेदाध्ययन का अधिकार देते हैं। यहां यह स्पष्ट है कि ज्ञानमय कोष वह जड़-विज्ञान से सम्बन्ध रखता हो, धर्म-विज्ञान से – नारियों के लिए युक्त हैं, वे सब प्रकार से आत्मोन्नति करने की अधिकारिणी है। इस विषय पर आप सत्यार्थ प्रकाश में एक मन्त्र उद्धृत करते हैं:—

> "यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः।
> ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय।"
>
> यजु० अ० २६।२

"परमेश्वर कहता है कि (यथा) जैसे मैं (जनेभ्यः) सब मनुष्यों के लिए (इमाम्) इस (कल्याणीम् कल्याण अर्थात् संसार और मुक्ति के सुख देने [illegible] (वाचम्) ऋग्वेदादि चारों वेदों की वाणी (आवदानि) उपदेश करता हूँ, वैसे तुम भी किया क[illegible] यहाँ कोई ऐसा प्रश्न करे कि जन-शब्द से द्विज[illegible] ग्रहण करना चाहिए, क्योंकि स्मृत्यादि ग्रन्थों में [illegible] क्षत्रिय, वैश्य ही के वेदों के पढ़ने का अधिकार [illegible] है, स्त्री और शूद्रादि वर्णों का नहीं (उत्तर) [illegible] राजन्याभ्याम) इत्यादि देखो, परमेश्वर स्वयं आगे है, कि हमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, (आर्याय) वैश्य, [illegible] लोगों शूद्र और (स्वाय) अपने भृत्य वा स्त्रियादि [illegible] देता है, और अति शूद्रादि के लिए भी वेदों का प्रक[illegible] है, अर्थात् सब मनुष्य वेदों को पढ़-पढ़ा और सु[illegible] कर विज्ञान को बढ़ा के अच्छी बातों को ग्रहण [illegible] बुरी बातों को त्याग करके दुःखों से छूटकर आनन्द को प्राप्त हों। कहिए, अब तुम्हारी बात माने वा परमेश्वर की? परमेश्वर की बात अवश्य माननीय है। इतने पर भी जो कोई इसको न मानेगा, वह नास्तिक कहावेगा, क्योंकि 'नास्तिको वेद निन्दकः' वेदों का निन्दक और न मानने वाला नास्तिक कहाता है।

स्वामी जी ने वेदों के उद्धरणों द्वारा सिद्ध किया है कि स्त्रियों की शिक्षा अध्ययन आदि वेद-विहित हैं। उनके लिए ब्रह्मचर्य के पालन का भी विधान है। स्वामी जी की इस महत्ता को देखकर मालूम हो जाता है कि स्त्री समाज को उठाने वाले पश्चिमी शिक्षा प्राप्त पुरुषों से वह बहुत आगे बढे हुए हैं। वह संसार और मुक्ति दोनों प्रसंगों में पुरुषों के ही बराबर नारियों को अधिकार देते हैं। इस एक ही वाक्य से साबित होता है कि किसी भी दृष्टि से वह नारी-जाति को पुरुष-जाति से घटकर नहीं मानते।

प्रे० कु० शबरी बेगम पेठ

(शेषांश पृष्ठ ६ का)

था।' थोड़ी खामोशी के उपरान्त उन्होंने कहा :— किसी सोसाइटी या किसी अन्य से मेरा कोई सम्बन्ध नहीं है।'

तब कुछ क्षणों के बाद— 'मैं परवाह नहीं करता। मरने की मुझे कतई चिन्ता नहीं। बुढ़ापे तक मौत का इन्तजार करने का क्या फायदा? वह सब अच्छा नहीं है।' बाद में उन्होंने पूछा— क्या ज़ेटलैंड मर गया? उसे मर जाना चाहिए। मैंने उसके दाहिने भाग पर दो गोलियां मारी थीं। कुछ रुककर उन्होंने बताया— मैंने रिवाल्वर बोर्नमाउथ स्थित एक सार्वजनिक भवन में एक सैनिक से खरीदा था। मैंने उसके लिए कुछ पेय पदार्थ खरीद दिये थे। समझे!'

थोड़ी देर तक सोचने के बाद वे बोले— 'जब मैं चार या पांच साल का था तभी मेरे माता-पिता नहीं रहे। मेरे पास जो सम्पत्ति थी, वह मैंने बेच डाली। मैं जब इंग्लैंड आया उस समय मेरे पास दो सौ पौंड थे।' वह कुछ क्षणों के लिए रुके और फिर कहने लगे— 'सिर्फ एक मरा। ताज्जुब है! मैं सोचता हूं कि मुझे अधिक सफलता मिल सकती थी। मुझे यह काम बहुत सहज में करना चाहिए था।

बन्दूक निर्माता और मारक शस्त्र विशेषज्ञ राबर्ट चर्चिल, जिसने हथियार की परीक्षा की थी, के अनुसार यह ०.४५५ स्मिथ एण्ड वैसन अमेरिकी रिवाल्वर था जिसे २५ साल पहले ब्रिटिश सरकार के लिए बनाया गया था। इसमें ३० साल पहले बने ०.५५ व्यास के स्मिथ एण्ड वैनस कारतूस इस्तेमाल किये गये थे। 'यह भले ही छोटा है, इनको ०.४५५ से दागा सकता है लेकिन विविध परिणामों सहित। चेम्बर कारतूस यद्यपि ढीले बैठते हैं तो भी उनकी ... और बेधन परस्पर बहुत कुछ विरोधी हैं।'

फाँसी की सजा

ऊधमसिंह पर सैन्ट्रल कोर्ट में अभियोग चला गया और ४ जून १९४० के दिन न्यायाधीश एटकि... के समक्ष उन पर आरोपों की बौछार की गई। उन्होंने स्वयं को निर्दोष कहा। श्री वी० के० कृष्ण मेनन, सैंट जान हचिसन और आर० ई० सीटन ने उनका बचाव पक्ष रखा। श्री मेनन ने कहा, 'इसमें ... सन्देह नहीं कि वह एक देश भक्त थे। वह ... कार्यों के प्रति सजग थे। वह यह जानते थे कि ... का कोई प्रश्न ही नहीं रहा था।' पहले-पहल, ... उच्चतम न्यायालय में अपील करना भी चाहते। ... मेनन ने उनको इसके लिए तैयार करना था। दोनों दिन में ही मुकदमे की कार्रवाई पूरी हो गई। ... जून को उन्हें फांसी दे दी गई।

उसके बाद, सभी कुछ एक बर्फीले समुद्र ... भाँति जमकर शांत हो गया। वह तो उनमें से था 'सूर्य से पैदा हुए, छोटे-से छिद्र से गुजर कर आ... की ओर कूच कर गए और अपनी कीर्ति-ध्वजा वा... मण्डल में लहरा गये।' एक पूरे जीवन-काल के उप... अब केवल यह है कि ऊधमसिंह की कहानी उन... मातृभूमि में लुप्त हो चुकी है जिसके वास्ते उन्होंने मर-मिटने के लिए समुद्रों को पार किया था। ●

(शेषाँश पृष्ठ ८ का)

के सन्दर्भों में अध्ययन करना पड़ेगा। सन्दर्भों से कट कर गलत नतीजों पर पहुंचेंगे।

१८ वीं शताब्दी से लेकर बीसवीं शताब्दी के पांचवें दशक तक भारत में मुख्य अन्तर्विरोध अंग्रेजों और सम्पूर्ण भारतीय जनता के बीच रहा है। यद्यपि सामन्तों ने अंग्रेजों का शासन स्वीकार कर लिया था, संधियां और समझौते भी कर लिए थे। बावजूद इसके कई सामन्तों ने इन संधियों व समझौते का उल्लघंन भी किया। इस सम्बन्ध में अवध के नवाब, बंगाल के मीर कासिम, ग्वालियर के सिंधिया (१८ वीं शताब्दी) मराठा नरेश, असम के छोटे-मोटे सामन्त, जगदीशपुर के कुँवर सिंह आदि का नाम लिया जा सकता है। ये सामन्त भली-भांति जानते थे कि अंग्रेजों से टक्कर नहीं ली जा सकती, फिर भी वे संधियां तोड़ते। सिंधियां व हाल्कर ने कई बार संधियां तोड़ी। निजाम की भी यहीं स्थिति रही। १८१... सिंधिया. पेशवा, होल्कर और भौंसले आदि सामन्तों ने मिल कर ब्रिटिश साम्राज्य को समाप्त करने के लिए पिंडारियों से संधि की योजना भी रची। इससे ... सिद्ध हो जाता है कि अंग्रेजों और सामन्तों के ... अन्तर्विरोध था। यह दीगबर बात है कि मुक्ति सं... की असफलता के पश्चात् इस अन्तर्विरोध में परिव... आना शुरु हो गया था। शताब्दी के अन्त तक पहुँ... पहुँचते अन्तर्विरोध का स्थान बदल गया था। ... १७५७–१८५७ के बीच अन्तर्विरोध नहीं होता ... कोई संयुक्त मोर्चा या संधि होती तो सामंत संधि... क्यों तोड़ते और विद्रोहियों का साथ देते? हमेशा ... लिए उन्हें अपनी किस्मत का फैसला साम्राज्यशाही ... साथ जोड़ देना चाहिए था। थोड़ी देर के लिए ... भी लिया जाए कि दोनों में संयुक्त मोर्चा था और ... विरोध नहीं था। तब लैण्ड सैटिलमेन्ट के पश...

सबसिडिरी एलायन्स, रैय्यत बाड़ी प्रथा, रियासत के विलय और अवधि समाप्ति नीति (थ्योरी आफ लैप्स) को लागू करने की आवश्यकता क्यों हुई ? १६वीं शताब्दी के चौथे दशक में डलहौजी को रियासतों के हड़पने की आवश्यकता क्यों हुई ? मजूमदार का मत है कि सबसिडिरी एलायन्स में डलहौजी का विश्वास नहीं था। डलहौजी ने छोटी-बड़ी सभी रियासतों को ब्रिटिश शासन के अधीन लाने की दृष्टि से कोई भी अवसर हाथ से नहीं जाने दिया। जिन तरीकों का इस्तेमाल डलहौजी ने किया वे उसके पूर्वाधिकारियों द्वारा अपनाये गये तरीकों से भी निम्नकोटि के थे। क्योंकि डलहौजी के नए शिकार मुख्यतः ब्रिटिश शासन पर निर्भर निःसहाय व आश्रित सामंत थे। इससे यह प्रतीत होता है कि १८५७ के दौरान अंग्रेजों और सामंतों के बीच अन्तर्विरोध थे। यदि अन्तर्विरोध नहीं होते तो निःसहाय आश्रित सामंतों की बची खुची रियासत छीनने से भी क्या फायदा होता। अतः उनमें अन्तर्विरोध अवश्य रहे हैं। अन्तर्विरोध के आधार पर और उनमें परिवर्तित उत्पादक शक्तियां व उत्पादन के सम्बन्ध होते हैं। (क्रमशः)

महर्षि दयानन्द का—

महान सन्देश

० *ब्रह्मदत्त भारती*

ऋषि दयानन्द अपने जीवन-काल में भ्रमण करते रहे और इसी बीच उन्हें कई विदेशी विद्वानों से भी मिलने का मौका मिला। ऐसे ही विदेशी लोगों में मोनियर विलियम (Monier Williams) से उनकी प्रथम भेंट १८७६ में बम्बई में हुई। इसी विलियम महोदय ने एक बार स्वामी जी से प्रश्न किया कि Religion (धर्म) क्या है ? इसका उत्तर स्वामी जी ने विलियम महोदय को अपने शब्दों के अनुसार (Brahmanism and Hinduism by Monier Williams 1891)

इस प्रकार दिया :— "Religion (धर्म) is a true and just view (न्यायः) and the abandonment of all prejudice and partiality (पक्षपात रहित) — that is to say, it is an impartial enquiry into the truth by means of the senses and the two other instruments of knowledge (प्रमाण), reason and revealation."

स्वामी जी ने जो सुन्दर व्याख्या धर्म की की, उसका उदाहरण मिलना आज भी कठिन है। स्वामी जी की इसी धर्म की व्याख्या के अनुसार वही व्यक्ति धार्मिक कहला सकता है जो ऐसे धर्म का पालन करता हो जिसमें पक्षपात को कोई स्थान न हो और जो सत्य की खोज प्रमाण, विवेक, बुद्धि और ईश्वर प्रेरित ज्ञान के सहारे करने को तत्पर हो। यदि ऐसा हो सके तो संसार में आपस के झगड़े और विवाद समाप्त हो सकते हैं। यदि किसी धर्म के अनुयायी यह कहें और दूसरों को भी यही मानने पर बाध्य करें कि जो वे कहते हैं केवल वही सत्य है तो वह धर्म न तो धर्म ही है और न सत्य ही। ऐसे हठ का सबसे बड़ा उदाहरण ईसाई धर्म में मिलता है जो आज इस बीसवीं शताब्दी में भी इस बात का ढिंढोरा पीटते हुए नहीं लजाता कि केवल ईसाई धर्म ही इस संसार में सच्चा धर्म है और शेष सब मिथ्या है। यह ईसाई धर्म इतने पर ही सन्तोष नहीं करता अपितु यह एक कदम और भी आगे जाता है। अपने झूठ को छिपाने के हेतु यह लोगों को पक्षपात रहित पर कठिन प्रतिबंध भी लगा देता है, उनकी बुद्धि और विवेक को नष्ट करने हेतु उन्हें पक्षपात रहित सत्य की जांच करने से भी रोक देता है। इसी कारण ईसाईयों के कैथोलिक सम्प्रदाय के सबसे बड़े मठाधीश मि० पोप ने उन सब व्यक्तियों की पुस्तकें पढ़ने पर प्रतिबन्ध लगा रखा है जिन्होंने "पक्षपात-रहित होकर, विवेक प्रमाण और बुद्धि" का सहारा लेकर सत्य के समझने का प्रयत्न किया है। जार्ज बर्नार्डशा की सभी पुस्तकें इसी कारण सभी ईसाईयों (कैथोलिक) को पढ़नी वर्जित हैं। इसी श्रेणी में बाकी सब धर्मों के धर्म ग्रन्थ भी है। ऐसी स्थिति में कोई भी न किसी धर्म का पालन कर सकता और न ही धर्म का पालन करने की इच्छा रखते हुए सच्चे धर्म की खोज में सफल हो सकता है। यदि हम स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा की हुई धर्म की इस व्याख्या के साथ उनका वह अमूल्य कथन भी जोड़ दें जो सत्यार्थप्रकाश के तीसरे समुल्लास में हमें पढ़ने को मिलता है तो संसार को एक ऐसा पथ-प्रदर्शन मिलता है जिसकी बराबरी संसार का कोई धर्म-ग्रन्थ नहीं कर सकता। उन्होंने कहा है कि "हम सत्य को मानते हैं, मिथ्या को नहीं।" स्वामी दयानन्द के इस कथन में एक चुनौती है उन सबके लिए जो अपने हितार्थ धर्म के नाम पर झूठ, पक्षपात, अज्ञान और अधर्म का प्रचार

करने में संलग्न हैं। धर्म की यह सत्य व्याख्या स्वामी जी की वह पहली देन है जिसके लिये केवल भारतवासी ही उनके आभारी नहीं बल्कि संसार के वे सब लोग जो 'सत्य' को प्यार करते हैं और असत्य को त्यागने के लिए तैयार हैं चाहे वह ईसाई असत्य हो या अहिन्दू असत्य।

सत्य की खोज और 'सत्यधर्म' का पालन

जिस धर्म की व्याख्या स्वामी जी ने की है उसी धर्म का पालन करते हुये उन्होंने चार वेदों का अध्ययन किया और पक्षपात रहित होकर विवेक, बुद्धि और ज्ञान का सहारा लेकर सत्य को जानने का पूरा प्रयत्न किया और उसके फलस्वरूप सत्य को ग्रहण किया और सब असत्य को त्यागा। स्वामी जी ने सत्य और सत्य-धर्म के प्रति अपने प्रेम के कारण ही अपने ग्रंथ को "सत्यार्थप्रकाश" का नाम दिया। "सत्य" की खोज और "सत्य-धर्म" का पालन करते हुये ही उन्होंने सत्य वेद—भाष्य लिखकर वेदों के असत्य भाष्यों की जो कुछ विदेशी लोगों ने अपने हितार्थ किये थे, सफाई की। विदेशी विद्वानों (?) ने कुछ अपनी नासमझी के कारण और विशेषत: भारतीय धर्म और संस्कृति को हानि पहुंचा कर अपनी झूठी निष्ठा बढ़ाने के लालच में वेदों के झूठे और असत्य भाष्य लिखे, छापे और और वितरण किये। स्वामी दयानन्द ने पक्षपात रहित होकर वेदों में छिपे सत्य को एक बार फिर इस तरह सत्यता से संसार के सामने रखा कि भारतीय संस्कृति और आर्य-धर्म के दुश्मन मुँह ताकते ही रह गए। आज यदि भारत और इसके रहने वाले संसार के आगे अपना सिर ऊंचा रख सकते हैं तो इसका केवल यही एक कारण है कि उन्हें वेदों के उस सत्यार्थ का सहारा प्राप्त है जो स्वामी दयानन्द ने पक्षपात रहित होकर सत्यता से किया। यह स्वामी जी की वह बड़ी दूसरी देन है जिसका ऋण हम आजन्म नहीं चुका सकते

आज चारो ओर हम देख रहे हैं कि धार्मिक और सांसारिक नेतागण बातें बहुत करते हैं, जनता को सीख भी खूब देते हैं परन्तु वे स्वयं अपने ही कथन का पालन कम करते हैं। यह अधर्म है। स्वामी दयानन्द जी ने जिस जिस सत्य का प्रचार किया उसका स्वयं भी पालन किया। उन्हें कोई भी सत्य कहीं भी दिखाई दिया तो उसको भी बिना किसी संकोच उन्होंने अपनाया। सत्य को धर्म मानते हुए पक्षपात रहित होकर उन्होंने जिस भांति सत्य को अपनाया और मिथ्या को त्यागा, इसका एक और बहुत ही बड़ा उदाहरण हमें उनके जीवन से मिलता है।

सत्यधर्म की रक्षा के लिए हिन्दी अपनाया

स्वामी दयानन्द गुजरात में पैदा हुए और पर उन्होंने अपना बाल्यकाल बिताया। उनकी स्वर्गीय विरजानन्द जी के हाथों संस्कृत भाषा में संस्कृत भाषा के ही स्वामी जी विद्वान भी थे। उन्होंने सत्य और धर्म का पालन करते हुए अपने सत्यार्थ प्रकाश को हिन्दी भाषा में ही लिपिबद्ध कि ऐसा उन्होंने क्यों किया ? उनकी पक्षपात रहित और प्रमाण और विवेक ने यही सच्चा मार्ग दिखाया और उसी को उन्होंने पक्षपात रहित बिना किसी संकोच के अपनाते हुए सत्यार्थप्रकाश को हिन्दी भाषा में लिखा। स्वामी दयानन्द साधारण कार्य में उसी धर्म और सच्चे धर्म का छिपा हुआ है, जिसकी व्याख्या करते हुए मोनियर विलियम से कहा था कि "Religion is a true and just view(न्याय) and the a donment of all prejudice and parti (पक्षपातरहित)।

आज से लगभग एक सौ वर्ष पहले दयानन्द ने यह बिना किसी पक्षपात के जान लि कि यदि सत्य धर्म की रक्षा हो सकती है तो वह भाषा को अपनाने से ही हो सकती है। उन्होंने अनुभव कर लिया था कि यह काम अब संस्कृत उनकी अपनी मातृभाषा गुजराती भी नहीं कर सके जनकल्याण के हित में उन्होंने अपनी मातृभाषा गुरुभाषा दोनों को छोड़ हिन्दी में सत्यार्थप्रका लिखा। वह यह भी भली-भांति पहचानते थे कि देश की स्वतंत्रता भी हिन्दी के हाथों ही सुरक्षि सकेगी और यदि विदेशी भाषा को भारत से नि जा सकेगा तो वह भी हिन्दी के सहारे और बल ही हो सकेगा। जिस देश की अपनी भाषा न है देश की संस्कृति और उसका धर्म बचना असंभ हो जाता है। राजनैतिक दासता तो जल्दी या सब की ही समाप्त हो जाती है परन्तु मानसिक चिर स्थायी भी बन सकती है।

मानसिक दासता से बचने का केवल ए उपाय है कि जनसाधारण को उनकी जनभाषा ताकि वह अपनी भाषा में बिना किसी मानसि नाई या दुर्बलता के अपने धर्म और संस्कृति को भांति समझ पायें। स्वामी दयानन्द भली-भां झते थे कि ऐसी भाषा केवल हिन्दी ही हो अस्तु, उन्होंने हिन्दी को ग्रहण किया था। यह स्वामी दयानन्द की तीसरी अनुपम देन है

भारतीय धर्म, संस्कृति और [illegible] स्वतन्त्रता का गूढ़ भेद छिपा है यदि इसे भारतीय जनसमूह पक्षपातरहित होकर समझाने का यत्न न करे तो वह उसका घोर दुर्भाग्य है ।

आज देश भर में जो बावेला हिन्दी-अहिन्दी भाषाओं के बीच मचाया जा रहा है, उसके पीछे कुछ ऐसे चतुर लोगों का हाथ है जिनकी चालों को समझना बावेला मचाने वालों की सामर्थ्य के बाहर है । साधारण लोगों को यह कहा गया है कि यदि अंग्रेजी भाषा न रही तो उन्हें सरकारी नौकरियां मिलना कठिन हो जायेगा । नौकरियों का विचार ही मानसिक दासता का चिन्ह स्वरूप है. परन्तु यह भी स्वयं में बिल्कुल असत्य है । यदि यह बावेला मचाने वाले लोग जरा सा भी सत्य धर्म का पालन करें और प्रमाण, विवेक और बुद्धि का सहारा लेकर पक्षपात रहित होकर सत्य को समझने भर की कोशिश करें तो उन्हें आसानी से इस बावेला और वाद-विवाद के पीछे छिपे (विदेशी) शैतान के हाथ काम करते दिखाई पड़ सकते हैं । हम कुछ स्पष्टीकरण किये देते हैं ।

यदि अंग्रेजी भाषा इस देश से निकाल दी जाए तो सबसे अधिक किस की हानि होगी ? इसी प्रश्न के ठीक उत्तर पर सत्य की जांच हो सकती हैं । इसी अंग्रेजी भाषा के कारण इंग्लैंड के जो अधपढ़े लोग भारत आकर अपने को विशेषज्ञ कहने लगते हैं उनका हलवा माण्डा खतरे में पड़ जायेगा । आज तो अंग्रेज बेंकों, बीमा कम्पनियों, तेल कम्पनियों, एडवरटाइजिंग एजेंसियों इत्यादि के मैनेजर और एकाउन्टटैन्ट बने बैठे है और बड़े-बड़े वेतन (१००००) मासिक और दो-दो मोटरें, रहने के बंगले इत्यादि-इत्यादि) ले रहे हैं वे सब क्या करेंगे, यह कभी किसी ने सोचा है ? यह सब बेकार हो जायेंगे । जो अंग्रेज भारत में विशेषज्ञ कहलाने लगता है, उसे वापिस इंगलैंड जाकर रोटी के भी लाले पड़ जाते है । यदि यह सब लोग चले जायें तो इतनी ही नौकरियां और काम भारतीयों के लिए निकल आयें । यही लोग हैं जो भारत में अंग्रेजी की जड़ें मजबूत बनाते हुए भारत की मानसिक और आर्थिक दासता को लम्बा कर रहे हैं । इन सब से अधिक काला कारनामा उन विदेशी पत्रों और उनके सम्पादकों का है जिन्होंने अपनी रोटी (Bread and Butter) के लिए और अपनी सरकारों के हाथ मजबूत बनाने के लिए इस हिन्दी-अहिन्दी भाषा आन्दोलन के समाचार आठ-आठ कालम की सुरखियां देकर छापें और साधारण जनता को उकसाया । देश के पत्र और पत्रकार तभी देश की रक्षा के हेतु अपने कार्य का संचालन करते है यदि उन्हें देश से कुछ प्रेम हो । [illegible] विदेशी भाषा के पत्रों के विदेशी सम्पादक देश के हित में विदेशी भाषा का प्रयोग क्यों करने लगे ? वे तो विदेशी भाषा की सहायता से दूसरे देशों की जड़ों को खोखला ही करेंगे और इसी में उनका और उनकी विदेशी जाति और देश का हित भी छिपा है ।

अंग्रेज अपने पुराने घाव चाट रहा है ।

अब जरा एक तरफ और ध्यान दीजिये । अंग्रेजी भाषा ने भारत में अंग्रेजी भाषी जातियों और देशों (England, America, Australia) को बाकी सब देशों और अपने मुकाबले में भी ऊँचा पद देकर और सब के मुकाबले में उनका काम सहज बना रखा है । क्या कोई भी व्यक्ति यह दावा कर सकता है कि आने वाले महायुद्ध में भारत अवश्य ही अंग्रेजी भाषी देशों के साथ होगा ? कदाचित भी नहीं । फिर भारत में अंग्रेजी चालू रहने से सबसे बड़ा हित केवल अंग्रेजी भाषी जातियों और देशों का ही होगा । हिन्दी भाषा होने से इतना तो अवश्य ही होगा कि सब विदेशी लोग एक स्तर पर आ जायेंगे और विदेशी भाषा के कारण कोई विशेष डिफेंस रिस्क (सैनिक आपत्ति) भारत को उठाना नहीं पड़ेगा । यदि अंग्रेजी भाषा भारत से उठ जाये तो अंग्रेजी भाषी इंगलैंड के हाथ तुरन्त कमजोर पड़ जायेंगे जो वह नहीं जानता कि इंगलैंड अपना भारतीय राज खोकर अभी भी अपने पुराने घाव चाट रहा है ।

यह पूरी कहानी नहीं है । अंग्रेजी भाषा की जहरीली पिटारी में कुछ और सांप और बिच्छू भी छिपे है । वर्तमान हिन्दी-अहिन्दी भाषा वाद-विवाद के पीछे सबसे स्फूर्ति के साथ काम करते हुए उन ईसाई पादरियों के हाथ छिपे हैं जो भारत को ईसालैंड बनाने के स्वप्न देखते हैं । जिसकी अक्ल का पूर्णतया दिवाला ही निकल गया हो केवल वही इस कथन से इन्कार करेगा कि यदि भारत से अंग्रेजी भाषा विदा हो जाय तो फौरन ईसाई पादरियों के किलों की आधी दीवारें गिर जायेंगी । विदेशी ईसाइयत भारत में अराष्ट्रीयता फैलाने की सर तोड़ कोशिश में लगी हुई है । इसी में इसका बचाव है और यह अराष्ट्रीयता फैलाने का सब से बड़ा और सकुशल माध्यम अंग्रेजी भाषा ही है । तब भला यह विदेशी पादरी हिन्दी के रास्ते में पत्थर क्यों नहीं बिछायेंगे ?

अपनी बाल्यावस्था में ही स्वामी दयानन्द के दिल में सत्य की खोज करने की लालसा पैदा हुई थी । एक शिवरात्री को इसी कारण उन्होंने घर छोड़ा था । इसी सत्य को उन्होंने पक्षपात रहित होकर सर्वदा ढूंढा और अपनाया । उनका दिया हुआ संदेश आज भी संसार को सच्चा मार्ग-दर्शन करवाता है । इसी में संसार का कल्याण और इसी पर आर्यसमाज का भविष्य भी टिका हुआ है—पक्षपात रहित रह कर धर्म का पालन और सत्य का ग्रहण ।

राजधर्म

पंजीयन क्रमांक RTK 28
Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

रोहतक
१५ मार्च १

राजधर्म

सांस्कृतिक क्रान्ति की आवश्यकता

शोषण से मुक्ति की छटपटाहट

मुक्ति संग्राम के नायक कौन ?

स्वतंत्र भारत की प्रथम जन-क्रान्ति

सपनों के महल ढह रहे हैं

इस्लाम और मुस्लमान

उपदेशक और भजनीक

वर्ष ७ अङ्क ४
फरवरी द्वितीय

प्रधान सम्पादक : स्वामी अग्निवेश
सह-सम्पादक । गिरजेश्वर

वार्षिक १५ रु०
एक प्रति ७० पैसे

प्रत्येक क्रान्ति से पूर्व जरूरी–

सांस्कृतिक क्रान्ति की आवश्यकता

स्वतन्त्रता के २७ वर्षों के बाद भी देश के अधिकांश लोग जिन्दगी की अत्यन्त भयावह घड़ियों से गुजर रहे हैं। वास्तव में आज देश का जन-जीवन बर्बादी के कगार पर पहुंच चुका है। सन् १९७२ में जब भारत की प्रधानमन्त्री ने "गरीबी हटाओ" का नारा लगाकर दो तिहाई से अधिक लोक सभा की सीटें प्राप्त कर सत्तारूढ़ हुई तो देश की ४० प्रतिशत आबादी अर्थात् २२ करोड़ लोग दरिद्रता की सीमा रेखा के नीचे घोर विपन्नता में जीवन यापन कर रहे थे। सन् १९७२ में स्वाधीनता की रजत जयन्ती के अवसर पर केन्द्रीय योजना राज्यमंत्री श्री मोहन धरिया ने अपने एक बयान में इसकी पुष्टि भी की थी। आज वही राज्यमंत्री श्री धारिया जी यह मानने को बाध्य हुए हैं कि आजहिन्दुस्तान की आबादी का दो तिहाई हिस्सा दरिद्रता की सीमा रेखा के नीचे रह रहा है -(Two thirds of Indian population were now living below powerty-level.- The statesman 2-8-74)अर्थात् आबादी का ६६.३३ प्रतिशत हिस्सा। दूसरे शब्दों में आज ३५ करोड़ लोग गरीबी की सीमा रेखा के नीचे जिन्दगी व्यतीत कर रहे हैं। अतः मात्र दो वर्षों में ही प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गाँधी जी ने "गरीबी हटाओ" नारे को "गरीबी बढ़ाओ" नारे में परिणत कर भारत की जनता को अपने वास्तविक चरित्र का स्पष्ट परिचय दे दिया। केवल दो वर्षों में और १३ करोड़ लोगों का दरिद्रता की सीमा रेखा के नीचे आना स्पष्ट करता है कि पांचवी पंचवर्षीय योजना के अन्त तक आत्म-निर्भरता प्राप्त करने का नारा अवश्य खोखला सिद्ध होगा। अगर वर्तमान आर्थिक विकास दर बरकरार रहा तो यह बात निश्चयतापूर्वक कही जा सकती है कि अगले पांच वर्षों में यह जन संख्या आबादी की ८० प्रतिशत तक पहुंच जायेगी अर्थात् ४४ करोड़ लोग दरिद्रता की सीमा रेखा के नीचे तक आ पहुंचेगे। अतः वर्तमान व्यवस्था में आर्थिक विषमता मिटने की कल्पना भ्रामक है।

देश में भयंकर आर्थिक शोषण एवं गिरावट के साथ सांस्कृतिक और नैतिक अधःपतन भी अपने चरम सीमा पर पहुँच चुका है। सरकार सामाजिक जीवन में इस घोर अधः पतन को और भी अधिक बढ़ावा दे रही है जिससे वह अधिक दिन तक सत्तारूढ़ रह सके। आर्थिक दृष्टि से पिछड़ा रहने वाला समाज भी यदि नैतिकता और उच्च आदर्श से प्रेरित एवं प्रतिबद्ध है तो वह जल्दी उठ खड़ा होता है। ऐसा समाज कभी भी शोषण, उत्पीड़न और जुल्म को नहीं बर्दाश्त कर सकता। जो समाज नैतिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण से भ्रष्ट होता है वह आदमियों का समाज होते हुए भी पशु जैसा व्यवहार करने लगता है। अतः किसी भी समाज में क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने के लिए सबसे पहले साँस्कृतिक क्रान्ति द्वारा जनता के नैतिक जीवन स्तर को ऊँचा उठाना अत्यन्त अनिवार्य होता है। किसी भी युग में किसी भी क्रान्तिकारी विचार और सिद्धान्त का असल मर्म और प्राण उसके साँस्कृतिक और नैतिक धारणा में निहित होता हैं। वही सिद्धाँत क्रान्तिकारी होता है जो उन्नत (सांस्कृतिक और नैतिक)स्तर को जन्म देता है। जब तक इस उन्नत, सांस्कृतिक और नैतिक स्तर को किसी देश की जनता नहीं हासिल कर लेती है तब तक उस देश की जनता क्रान्ति नहीं कर सकती।

आज पूंजीवादी सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्य बोध अपनी उपयोगिता खो चुके हैं। जनता के सामने जब तक समाजवादी आदर्श और मूल्य बोध नहीं आयेंगे, तब तक समाज में नयी उमंग और नया उभार लाकर शोषण और विषमता रहित समाज का नव निर्माण करना असम्भव है। उन्नत सांस्कृतिक स्तर हासिल किए बिना कोई भी व्यक्ति उन्नत सैद्धान्तिक विचार की न तो दक्षता ही हासिल कर सकता और न सही क्रान्तिकारी सिद्धान्त की जानकारी ही प्राप्त कर सकता है। सांस्कृतिक स्तर निम्न कोटि का होने के कारण क्रान्तिकारी सिद्धान्त का विचार भी सही नहीं हो सकता। इसलिए क्रान्तिकारी राजनीत के अनुकूल आचरण करने का अर्थ होता है कि क्रान्ति में लाखों व्यक्तियों को सम्मिलित करते हुए पहले उनके जीवन को पलट डालना। प्रत्येक क्रान्ति के पहले उसके लिए जरूरी सांस्कृतिक क्रान्ति सम्पन्न करना अत्यन्त आवश्यक होता है। आज निरन्तर बढ़ती हुई महंगाई, भयंकर बेरोजगारी, व्यापक भ्रष्टाचार और शिक्षा में आमूल-चूल परिवर्तन की माँग को लेकर चलने वाला क्रान्तिकारी सम्भावनाओं से परिपूर्ण बिहार का छात्र-आन्दोलन देश के जन–मानस को झकझोर दिया है। इसे दीर्घ स्थायी जन प्रतिरोधी संग्राम में परिणत करना अत्यन्त आवश्यक है क्योंकि तभी जन-जीवन की बुनियादी समस्याओं के समाधान से सम्बन्धित वांछित लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है और गर्म-गर्म नारों

से आन्दोलन को गुमराह करने वाले तथा जनता की कुर्बानियों का फायदा उठा कर अपना उल्लू सीधा करने वाले तत्त्वों को इससे अलग किया जा सकता है। परन्तु इसी दौरान क्रान्तिकारी परिवर्तन द्वारा शोषण मुक्त समाज व्यवस्था की स्थापना के लिए जरूरी सांस्कृतिक क्रान्ति भी सम्पन्न करना अति आवश्यक है।

अतः आज जहां नवीन समाज की रचना के लिए देश में विद्यमान क्षेत्रीयता, प्रान्तीयता, जातिवाद, अस्पृश्यता, एवं दहेज प्रथा आदि सामाजिक बुराईयों एवं कुरीतियोंको खत्म करना है, वहीं व्यक्तिगत सम्पत्ति की मनोभावना से मुक्त सांस्कृतिक एवं नैतिक मूल्यबोध के विकास की अत्यन्त आवश्यकता है। और इसके साथ ही सांस्कृतिक क्रांति द्वारा सामन्तवादी एवं पूंजीवादी समाज व्यवस्था से विरासत में प्राप्त कुत्सित व्यक्तिवादी मनोवृति को खत्म करने का का संग्राम तेज करना होगा क्योंकि इसके कारण समाज में विद्यमान हठधर्मिता, व्यक्तिगत स्वार्थ पूर्ति की प्रधानता, व लापरवाही और ढुलमुलपने जैसे सामाजिक कुसंस्कारों का जो प्रभाव कायम है, उसे समाप्त नहीं किया जा सकता। इसी तरह समाज के मजदूर तबके को उनकी मानसिक हीनता की मनोवृत्ति और अन्य सामन्ती कुसंस्कारों से मुक्ति दिलानी होगी। तभी समाज में भाई-चारे की सही स्थिति उत्पन्न होगी और समाज से आर्थिक विषमता के साथ सामाजिक विषमता का खात्मा होगा।

शोषण मुक्त समाज में समता, स्वतंत्रता और बन्धुत्व की भावना को विकसित करने के लिए तथा राजनैतिक और आर्थिक सत्ता के विकेन्द्रीकरण के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि व्यक्ति-स्वार्थ और सामाजिक-स्वार्थ के बीच जो विरोधात्मक द्वन्द्व है, उसे मिलनात्मक द्वन्द्व में परिणत किया जाय। तभी व्यक्ति के वास्तविक मुक्ति के मार्ग को प्रशस्त किया जा सकता है और व्यक्ति के स्वाधीनता को सही अर्थों में हासिल किया जा सकता है। परन्तु समाजवादी व्यवस्था में सामाजिक स्वार्थ के साथ व्यक्ति-स्वार्थ के विलयन के मार्ग में व्यक्ति स्वातन्त्र्य सम्बन्धी पुराना संस्कार और मानसिक बनावट सबसे बड़ा रोड़ा है। यदि यह रोड़ा हटाया नहीं जा सका तो आर्थिक क्षेत्र में वर्ग के मिटाये जाने के बावजूद इस व्यक्तिवाद के ही चलते राजसत्ता (Wither away) नहीं मिट सकेगी। फलतः व्यक्ति को मुक्ति नहीं मिल सकेगी क्योंकि राजसत्ता के रहने से ही उसका दमनात्मक चरित्र भी बना रहेगा।

—गिरजेश्वर

६ मार्च को दिल्ली में प्रचण्ड प्रदर्शन

६ मार्च सन् १९७५ को लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी के नेतृत्व में बीस लाख कदम संसद भवन की ओर बढ़ेंगे। यह प्रदर्शन जन संघर्ष समिति और सभी समर्थक दलों के प्रयत्नों के आधार पर देश की ६० करोड़ जनता की ओर से १० लाख लोगों द्वारा किया जायेगा। संसद के समक्ष यह अभूतपूर्व प्रदर्शन राजनैतिक, आर्थिक और सामाजिक क्षेत्रों में मौलिक परिवर्तन के लिए ऐतिहासिक दृष्टिकोण से भारत के स्वतंत्र इतिहास में अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान रखेगा। १८ मार्च १९७४ को शुरु होने वाला विहार का जनान्दोलन सरकार की घोर दमनकारी प्रवृत्ति के बावजूद भी दिन प्रतिदिन उग्रतर होता गया दिल्ली का यह प्रदर्शन इसका एक जीता जागता प्रमाण है। अब यह संघर्ष लम्बे संघर्ष में परिणत हो चुका है।

इस प्रदर्शन का उद्देश्य देश को अधिनायकवाद की ओर बढ़ने से रोकना है और लोकतांत्रिक ताकतों को मजबूत आधार प्रदान करना है। युद्धकालीन स्थिति की समाप्ति के बावजूद आज देश में संकटकालीन स्थिति पूर्ववत् कायम है। इसके द्वारा सरकार को नागरिकों के मूलभूत अधिकारों और राज्यों के अधिकारों पर पाबन्दी लगाने का अधिकार प्राप्त है। इस संकटकालीन स्थिति की विद्यमानता में सरकार चाहे तो संसद में कानून पास करवा कर लोकसभा की अवधि को अनिश्चितकाल तक बढ़ा सकती है। जब तक संकटकालीन स्थिति है, लोकसभा की अवधि बढ़ाने के लिए संविधान में संशोधन की आवश्यकता नहीं है। यदि प्रधानमंत्री के मंसूबे ठीक होते तो वह अकारण आपात्कालीन स्थिति कायम नहीं रखती, सर्वोच्च न्यायालय के फैसलों को कानून अथवा संविधान में सुधार करके नहीं बदलतीं, विधायकों को अपना नेता चुनने का अधिकार देती और सत्ता के विकेन्द्रीकरण के लिए पंचायती राज की स्थापना में योगदान प्रदान करतीं। अतः ऐसी स्थिति में देश में पनप रहे अधिनायकवाद और दिन प्रतिदिन होने वाले नागरिक अधिकारों के हनन के खिलाफ जनता की शक्ति का प्रदर्शन करना अत्यन्त आवश्यक है। इस प्रदर्शन की सफलता से ही देश के अन्य राज्यों में विहार जैसा आंदोलन विकसित होगा। जब तक क्रांतिकारी सम्भावनाओं से परिपूर्ण बिहार का जनान्दोलन देश के सभी राज्यो में नहीं फैल जाता और

(शेषांश पृष्ठ १८ पर)

मुक्ति संग्राम के नायक कौन ?

० रामशरण जोशी

गतांक से आगे

भू-स्वामी बनाम सत्ता के एजेन्ट

कार्नवालिस की भूमि योजना के अन्तर्गत मुगलों के समय के सामन्ती अधिकार सीमित कर दिये गये थे। अंग्रेजपरस्त जमींदारों को जन्म दिया गया। लगान की दर बढ़ा दी गई। इन सब का नतीजा विपरीत दिशा में भी निकला। पुश्तैनी सामन्तों में तनाव फैला। लगान समय पर अदा न करने की स्थिति में उनकी जमीनें नीलाम की गयी संक्षेप में, अंग्रेजपरस्त जमींदारों, भू-स्वामियों और बनियों को ही स्थायी भूमि-व्यवस्था योजना से लाभ पहुंचा क्योंकि इसके अन्तर्गत कम्पनी सरकार ने जमींदारों को जोतदारों से लगान वसूल करने के अधिकार दे दिये थे। लगान वसूली के लिए सैनिक सहायता भी उपलब्ध थी परन्तु इस व्यवस्था का महत्त्वपूर्ण कानूनी पक्ष यह भी था कि जमींदारों को निश्चित समय के अन्दर लगान कम्पनी सरकार में जमा कराना होता था। लगान जमा न कराने पर जमींदार की भी सम्पूर्ण भूमि या कुछ हिस्सा जब्त कर लिया जाता और सार्वजनिक स्तर पर नीलामी की जाती। १७९६-९७ में इस प्रकार की नीलामी से कम्पनी को २२.७ लाख रुपये की आमदनी हुई। शहर के व्यापारी नीलामी की जमीन खरीदते और किराये पर उठा देते। धीरे-धीरे ये ही व्यापारी एक प्रकार के भू-स्वामी बन गये जिन्हें अपने किराये के अतिरिक्त किसी की चिन्ता नहीं थी। ये ही भू-स्वामी अंग्रेजों के 'एजेन्ट' भी साबित हुए। बंगाल, मद्रास, बम्बई आदि स्थानों में ये एजेन्ट काफी प्रभावशाली रहे।

कम्पनी सरकार ने देखा कि कार्नवालिस की इस व्यवस्था से उनके खिलाफ जोतदारों एवं आंशिक जमींदारों में असन्तोष फैलता जा रहा है तब उसे रैय्यतबाड़ी प्रथा लागू करने की आवश्यकता महसूस हुई। इस प्रथा से भी किसानों को राहत नहीं मिली क्योंकि इस प्रथा के अन्तर्गत जोतदार की भूमि का मूल्य-निर्धारण काफी ऊंचा किया जाता था। फलस्वरूप उसे भारी राजस्व देने के लिए बाध्य किया जाता था, यहाँ तक कि फसल अच्छी न होने पर भी उसे पूरा लगान देना पड़ता था। इससे भी बिचौलियों एवं सरकारी सेवकों को ही लाभ पहुँचा।

भारत की जमींदारी एवं रैय्यतबाड़ी प्रथाओं पर रोशनी डालते हुए मार्क्स १९ जुलाई १८५३ को लिखते हैं— 'दोनों पद्धति ब्रिटिश आज्ञप्तियों द्वारा क्रियान्वित दो भू-क्रान्तियां और दोनों परस्पर विरोधी थीं। एक कुलीनवर्गी क्रांति थी, दूसरी जनतांत्रिक। पहली क्रान्ति अंग्रेजी जमींदारशाही का स्वांग थी, दूसरी फ्रांसिसी कृषक स्वामित्व सरीखी। परन्तु दोनों ही विनाशकारी हैं। दोनों में बड़े से बड़े अन्तर्विरोध हैं, दोनों ही भूमि को काश्त करने वाली जनता के लाभ के लिए नहीं है और न जमीन को अपने हाथ में रखने वाले मालिकों के लाभ के लिए ही हैं।' मार्क्स आगे लिखते हैं— इन विभिन्न पद्धतियों के दोषों का सारा बोझ तो भारतीय किसान को ढोना पड़ता है किन्तु उनसे मिलने वाली सभी सुविधाओं से वह वंचित रहता है।'

सैनिक-खर्चा राजाओं और नवाबों पर

कुल मिला करके इन तथाकथित भूमि सुधारों का एक मात्र लक्ष्य था— भारत में साम्राज्यवादी शासन की जड़ें व्यापक स्तर पर फैलाना व मजबूत करना तथा यहाँ की प्रत्येक किस्म की आत्मनिर्भरता को समाप्त करना। इसी नीति का पालन देशी रियासतों के मामले में भी किया गया। रियासतों के साथ अलग-अलग ढंग की संधिया व समझौते किये गये ताकि उनमें पारस्परिक तनाव व्यापक स्तर पर फैल सके। उदाहरण के लिए, दक्षिण के निजाम, ग्वालियर के सिंधिया, भोपाल के नवाब गायकवाड़ (बडौदा) आदि रियासती शासक स्वयं के खर्चे पर अंग्रेजी सेना रखने को बाध्य थे। दूसरी तरफ मैसूर, कोल्हापुर कम्पनी सरकार के सीधे प्रशासन के अन्तर्गत और बुन्देलखण्ड, भावलपुर, भानपुर, जैसलमेर, अलवर व अन्य राजपूती रियासतें तथा त्रावणकोर आदि साम्राज्यवादी संरक्षित प्रान्तों एवं सबसिडियरी एलायन्स (सहायक सन्धि) की श्रेणी के अन्तर्गत थे। कश्मीर व कुछ अन्य रियासतों को नजराना व सालाना एक निश्चित राशि या खिराज देनी पड़ती थी।

वास्तव में इन विभिन्न संधियों और समझौतों के पीछे साम्राज्यवादियों का एक ही षड्यन्त्र था— भारत को गुलाम बनाना। परन्तु उल्लेखनीय पक्ष यह है कि साम्राज्यशाह देशी नरेशों व नवाबों के केवल राजनैतिक व आर्थिक अधिकारों को ही छीनना चाहते थे तथा दूसरी तरफ अस्तित्व को अक्षुण्ण रखना चाहते थे। धूर्त्त साम्राज्यशाह यह बात बखूबी जानते थे कि भारत

(शेषांश पृष्ठ १७ पर)

सरकारी सपनों के महल ढह रहे हैं !

○ जयदेव अनल

जिस दिन से बिहार की धरती पर जे० पी० के नेतृत्व में एक जन-आन्दोलन आरम्भ हुआ, उसी दिन से इन्दिरा जी हर-सम्भव प्रयास कर रही हैं कि किसी तरह ऐसा रास्ता निकाला जाये कि इसका खात्मा किया जा सके। कभी कहतीं कि जयप्रकाश सत्ता हथियाना चाहता है, कभी कहतीं कि जयप्रकाश के साथ बेईमान पूंजीपति हैं अथवा वह 'फासिस्ट' हैं या 'दक्षिणपन्थी प्रतिक्रियावादी' ताकतों के हाथों में खेल रहा है। कभी-कभी यह भी कहते सुना गया कि यह सब उन्हें (इन्दिरा जी को) गद्दी से हटाने का षड्यन्त्र है।

शायद इन्दिरा जी यह मानती हैं कि इस जन्म में तो कोई उन्हें गद्दी से हटा सकता नहीं। प्रधान-मन्त्री के पद को उन्होंने एक उत्तरदायित्व नहीं, बल्कि बपौती या जागीर समझ रखा है। अपने पिता की तरह वे भी अन्तिम सांस तक कुर्सी से चिपके रहना चाहती हैं।

अपने शासन-काल के दौरान उन्होंने आज अपने हाथों में सारी सत्ता का जो केन्द्रीकरण किया है कि देखते ही बनता है। राज्यों में चुनाव होते हैं। कांग्रेस का बहुमत आता है। पर उन सारे के सारे चुने गये प्रतिनिधियों को यह अधिकार नहीं कि वे अपना नेता खुद चुन सकें। राज्यों के मुख्यमन्त्री चुने नहीं जाते– थोपे जाते हैं। उनकी 'इन्दिरा भक्ति' उनके चयन का सबसे बड़ा मापदण्ड हैं। जनता कहती है, विधायक कहते हैं कि मुख्यमन्त्री चोर है, बेईमान है उसे हटना चाहिए; पर वह नहीं हट सकता क्योंकि उसे 'माँ इन्दिरा' का वरदान मिला हुआ है।

'फासिस्ट' कौन ?

जो दूसरे के दुःख-सुख की परवाह किये बिना अपने स्वार्थों की पूर्ति के लिए जाल बुनता है तथा सारी सत्ता का केन्द्रीकरण करके उसका अपने क्षुद्र उद्देश्यों की पूर्ति के लिए दुरुपयोग करता है, उसे 'फासिस्ट' कहा जाता है। आजकल इस शब्द का जितना दुरुपयोग किया जा रहा है, उतना शायद ही पहले कभी हुआ हो। आजाद जैसे निःस्वार्थ क्रान्तिकारी को भी नेहरू जैसे लोगों ने 'फासिस्ट' कहा है। जो आदमी जरा भी सरकारी तन्त्र के लिये 'असुविधा-जनक' नजर आता है, उसे ही 'फासिस्ट' का फ़तवा दे दिया जाता है। जब तक जयप्रकाश देश की वर्तमान समस्याओं के लिए सरकार के विरुद्ध कोई बात न कहें– तब तक तो वह समाजवादी भी हैं और देश-भक्त भी; पर जिस दिन वह अपनी जबान से व्यवस्था के गुण-दोष बताते हैं, उसी दिन वे 'फासिस्ट' हो जाते हैं।

फिर आज 'फासिस्ट' कौन है ? जिस सरकार के राज्य में ५७ करोड़ में से दो तिहाई लोग कीड़े-मकोड़ों की तरह भूख से बिलबिला रहे हों और उसके बावजूद भी संसद में "स्त्रियाँ अधिक बचत करती है या पुरुष" विषय पर विवाद चले क्या वह सरकार 'फासिस्ट' नहीं है ? दिल्ली के स्टेट बैंक से ६० लाख रुपये निकालने के आरोप में बन्दी नागरवाला सरकारी जेल में बिना किसी बिमारी के मर जाता हैं और साथ में जांच करने वाला पुलिस अधिकारी कश्यप भी सड़क-दुर्घटना (!) में मारा जाता है। "पान्डिचेरी लाइसेंस स्कैण्डल" की जाँच करने वाले सी० बी० आई० के उपनिदेशक आर० डी० पाण्डेय तथा 'इन्सपैक्टर' डी० रामनाथन् और तस्करों का पर्दाफास करने वाले दमन के युवा 'कलक्टर' अनिल चोपड़ा इसलिए मारे जाते हैं कि वे सब ईमानदार थे। इन सब की मृत्यु की जांच के लिए भी आज सरकार इन्कार कर रही है– क्यों ? एल० एन० मिश्रा की मृत्यु के लिए जांच आयोग भी नहीं बैठता उससे पहले ही इन्दिरा जी का 'मिट्टी का माधो' शंकर दयाल शर्मा कह उठता है – "इस झूठ का भण्डाफोड़ हो चुका है कि जे० पी० का आन्दोलन अहिंसात्मक है।" इन सारे तथ्यों के रोशनी में एक प्रबुद्ध नागरिक आसानी से निर्णय कर सकता है कि कौन 'फासिस्ट' हैं।

जनता-सरकार

ऐसे समय में जबकि देश समाजवाद और लोक-तन्त्र की आड़ में अधिनायकवाद और तानाशाही की ओर अग्रसर हो रहा है, जयप्रकाश जी ने एक नारा दिया है– जनता अपनी सरकार खुद बनाये ! – इसके लिए वह वर्तमान सरकार को कम से कम सहयोग दे ! पुलिस तथा सेना वही काम करे जो "जनता के हित" में हो।

जयप्रकाश जी की "जनता–सरकार" के निर्माण

की प्रक्रिया आरम्भ भी हो चुकी है। जबलपुर में "जनता-उम्मीदवार" शरद यादव हाल ही में कांग्रेसी उम्मीदवार रवि मोहन को ८७ हजार से भी अधिक मतों से हरा कर लोकसभा के लिए चुने गये। बेचारे रवि मोहन तो हारे जो हारे मुख्यमन्त्री सेठी जी की भी कुर्सी हिला गये।

इधर हरयाणा के तीन उपचुनावों में से दो (रोड़ी व महम) पर भी जनता-उम्मीदवारों की विजय ने कांग्रेसी मंसूबों को मटियामेट कर दिया है। एक ओर चौ० देवीलाल के विधान सभा में पहुंचने से बन्सीलाल जी विचलित हो गये हैं तो दूसरी ओर इन उपचुनाओं में कांग्रेस का अन्तर्विरोध भी पूर्ण रूपेण उभर कर जनता के सामने आ गया है। ले-देकर एक ही आदमी बचता है जिस पर सारा गुस्सा उतरता है और वह है चौ० भजनलाल ! कहा जाता है कि उनसे महत्वपूर्ण विभाग इसलिए छीन लिए गए कि उन्होंने अन्दर ही अन्दर कांग्रेसी प्रत्याशी के विरुद्ध प्रचार किया था।

कांग्रेस सरकार जांच आयोग भी वहीं पर बिठाती है, जहाँ के परिणाम स्पष्ट हों। नेताओं तथा पुलिस अफसरों की मृत्यु जांच से तो सरकार साफ इन्कार कर देती है, पर जब कभी भी हार का सामना करना पड़ता है तो उसे अपनी 'मौत के लक्षण' दिखाई देने लग जाते हैं और तुरन्त ही "हार के कारणों की जाँच" करवाती है। शायद उसे इस बात पर आश्चर्य होता है कि 'हर तरह के हथकण्डे' अपनाने के बाद भी जनता को बेवकूफ नहीं बनाया जा सका क्यों ?

जे० पी० आंदोलन का समर्थन क्यों ?

कुछ लोग आज प्रश्न करते है आप जे० पी० के साथ क्यों हैं ? क्या उनकी विचारधारा पूर्णतः आपके अनुकूल है ? क्या उनके साथ जो लोग हैं सब ईमानदार हैं ? जब उनके साथ जो दल हैं वे दक्षिणपन्थी हैं, प्रतिक्रियावादी हैं तो क्या आप भी.........? इन प्रश्नों के उत्तर में मैं इतना ही कहना चाहता हूँ कि न तो हम पूरी तरह उनकी विचारधारा से जुड़े हैं और न ही इस बात की गारन्टी देते कि उनका हर समर्थक उज्ज्वल चरित्र वाला है। वस्तुतः आज हमारे सामने दो विकल्प हैं; एक तो ये कि व्यवस्था से समझौता करके अपनी स्वार्थ सिद्धि करना– और दूसरा व्यवस्था से संघर्ष करना और नयी व्यवस्था के निर्माण के लिये उद्योग करना। विशुद्ध रूप से आज की लड़ाई दो सेनाओं के बीच है। एक सेना व्यवस्था के पहरेदारों की है तो दूसरी विरोधियों की। एक सेना रावण की है तो दूसरी राम की। एक कंस की है तो दूसरी कृष्ण की। बिगुल बज चुका है। आखिर किसी न किसी का तो दामन पकड़ना ही है। फिर क्यों न सरकारी सपनों के ढहते महलों पर ही हम अपने कल्पना के भवनों का निर्माण करें ! दशाब्दियों की कुण्ठा को दफनाते हुए क्रान्ति के स्वर में स्वर मिलायें।

सत्ता कांग्रेस द्वारा विज्ञापन विभाग (डी० ए० वी० पी०) में भारी धाँधलेबाजी

अपने चहेते पत्रों को बहुत अधिक और गैर चहेतों को अति अल्प विज्ञापन

सन् १९७२ की आडिट रिपोर्ट में केन्द्रीय सरकार के विज्ञापन प्रसारित करने वाली एजेन्सी डी० ए० वी० पी० पर अंकेक्षक ने यह खुला आरोप लगाया है कि अधिकारी अपनी मर्जी के अनुसार नियमों की अवहेलना कर समाचार पत्रों के साथ पक्षपात करते हैं।

रिपोर्ट में कहा गया है कि एक ही स्थान से एक ही भाषा में प्रकाशित लगभग समान प्रसार वाले अखबारों को विज्ञापन की समानता नहीं बरती गई है। कुछ मामलों में तो विज्ञापन दरों का अन्तर तिगुने तक है। इस प्रकार के लगभग २१ मामले सामने आये हैं। इस प्रकार कुछ ऐसे भी उदाहरण मिले जिसमें प्रसार संख्या तीन गुनी अधिक होने के बावजूद उस पत्र को उसी दर पर विज्ञापन दिये गये हैं जो दर एक तिहाई प्रसार संख्या वाले समाचार पत्र को मिली हैं। इस प्रकार के ४१ मामले सामने आये हैं।

नियमों की खुली अवहेलना करते हुए ५६ दैनिक पत्रों को जिनकी प्रसार संख्या एक हजार से भी कम है लगभग ७० हजार रुपये के विज्ञापन दिये गये हैं। ४ साप्ताहिकों को, प्रकाशन अवधि ६ मास पूर्ण होने के पूर्व ही, नियम तोड़ कर विज्ञापन देना चालू किया गया।

सत्ता कांग्रेस के एक चहेते दैनिक पत्र को अकेले को एक वर्ष में ९ लाख ९४ हजार रुपये के विज्ञापन दिये गये हैं। जो अन्य उसी श्रेणी के पत्रों को दिये गये विज्ञापनों की तुलना में बहुत अधिक है।

शोषण से मुक्ति की छटपटाहट

० सव्यसाची

पहले जब कीमतें बढ़ती थी तो भूतपूर्व वित्त-मंत्री मुरारजी देसाई कहा करते थे, कीमतें बढ़ना देश की प्रगति का सूचक है। गरीबी-भुखमरी के मौजूदा वातावरण में ऐसा कहना संभव न होने के कारण ग्राज हमारी प्रधानमंत्री कहती हैं --कीमतें भारत में ही नहीं सारी दुनियां में बढ़ रहीं हैं ग्रौर इस तरह वे ग्रपनी जिम्मेदारी को टाल देना चाहती हैं, लेकिन 'सारी दुनियाँ में कीमतें बढ़ने' का फतवा एकदम बेबुनियाद हैं क्योंकि समाजवादी देशों में बढ़ने के स्थान पर कीमतें कम हुई हैं। उत्तरी कोरिया में पिछले दिनों कीमतें 30 प्रतिशत कम कर दी गई हैं। चीन में दवाग्रों की कीमतें सन् 1950 की तुलना में 80% कम हुई हैं ग्रौर चीन की यात्रा से लौटे कोटनिस समिति के सदस्य डेनियल लतीफी ने बताया कि सन् 1959 (वे उस वर्ष भी चीन गये थे) की तुलना में वहां कीमतें कम हुई हैं। चीन में चावल एक रुपया 20 पैसा किलो, गेहूँ 80 पैसे किलो, तेल 5 रुपया 20 पैसे किलो, तेल से बनी ग्राटे की चपाती 1 रुपया 20 पैसे किलो तथा 70 लाख ग्राबादी के पीकिंग शहर में तीन कमरों का फ्लेट 15 से 20 रुपये महावार पर मिल जाता है जिसमें पानी-बिजली का खर्च भी शामिल है जहाँ तक पूंजीवादी देशों में कीमतें बढ़ने का प्रश्न है, लोकसभा के सचिवालय की रिपोर्ट बताती है कि वहाँ कीमतों से ज्यादा श्रमिकों के वेतन में वृद्धि हुई है। पिछले पांच साल में इटली की कीमतें 47.5% ग्रौर वेतन 62.5%, ब्रिटेन में कीमतें 40% ग्रौर वेतन 67.5%, जापान में कीमतें 40 प्रतिशत ग्रौर वेतन 87.5 प्रतिशत, पश्चिमी जर्मनी में कीमतें 37.5 प्रतिशत ग्रौर वेतन 40 प्रतिशत, कनाडा में कीमतें 35 प्रतिशत ग्रौर वेतन 45 प्रतिशत, फ्रांस में कीमतें 32.5 ग्रौर वेतन 65 प्रतिशत, ग्रास्ट्रेलिया में कीमतें 30 प्रतिशत ग्रौर वेतन 52%, ग्रमरीका में कीमतें 15 प्रतिशत ग्रौर वेतन 27.5% ग्रौर बेल्जियम में कीमतें 10 प्रतिशत ग्रौर वेतन 75% बढ़े हैं ज़बकि हमारे देश में कीमतें 125 से 150% ग्रौ वेतन महज 20 से 30 प्रतिशत तक बढ़े हैं।

भारत में कीमतों के बढ़ने के ये सरकारी ग्राँकड़े हैं जबकि हमारे देश का प्रत्येक श्रमजीवी यह ग्रच्छी तरह जानता है कि पिछले एक वर्ष में ही कीमत बढ़ने का कारण ग्रन्धाधुन्ध ग्रप्रत्यक्ष टैक्स, प्रशासन के बेतहासा ग्रनुत्पादक खर्च, घाटे की ग्रर्थव्यवस्था के ग्रन्तर्गत सैकड़ों करोड़ की हर साल छापी जाने वाली करेंसी तथा जमाखोरी-मुनाफाखोरी के साथ-साथ सरकार की पूँजीपति परस्त नीतियां भी हैं जिनके तहत वह पूँजीपतियों ग्रौर जमींदारों के सम्मुख समर्पण करके ग्रनाज, डालडा, कपड़ा, सीमेन्ट, खाद, चीनी, साबुन ग्रादि की कीमतें लगातार बढ़ाती जा रही हैं।

कीमतें घटाने का करिश्मा

सरकार का कहना है कि ग्रधिक नोटों के प्रचलन की वजह से कीमतें बढ़ रही हैं ग्रतः करेंसी को कम करने के लिए सरकार ने श्रमजीवी-वर्ग की भविष्य में होने वाली वेतन-वृद्धि ग्रौर महंगाई भत्ते की बढ़ोतरी के भुगतान को एक से लेकर दो साल तक के लिये स्थगित कर दिया है। यहां एक सवाल पैदा होता है कि इन बढ़े हुए नोटों को छापने के लिए जिम्मेदार कौन है ? ग्रौर 150 ग्ररब के काले धन, 800 करोड़ से भी ग्रधिक के भी इनकमटेक्स के बकाया तथा 3500 करोड़ के ग्रनुत्पादक सरकारी खर्च के रहते हुए सिर्फ श्रमिक-वर्ग से 500 करोड़ रुपया सालाना छीन लेने से क्या बाजार में करेंसी कम हो जाएगी ? नियमित बजट के ग्रलावा हर साल पूरक रेलवे तथा सामान्य बजट पास करने ग्रौर हर बजट में करोड़ों के नये टेक्स लगाने के बाद भी नुकसान दिखाकर घाटे की ग्रर्थ-व्यवस्था चलाने से नये नोटों का छपना रुक सकेगा ? दरग्रसल सरकार नये-नये टैक्सों, कीमतों की बढ़ोत्तरी, घाटे की ग्रर्थव्यवस्था, वेतनजाम ग्रधिनियम ग्रादि के द्वारा श्रमजीवी जनता पर कमरतोड़ ग्रार्थिक संकट का बोझ लाद रही है ग्रौर सरमायेदारों-जमीदारों को शोषण एवं मुनाफाखोरी की लगातार छूट दिये चली जा रही है।

ग्राग की लपटों के बीच घिरा हुग्रा

मामूली ग्रादमी

मामूली ग्रादमी से हमारा मतलब मेहनत करके पेट भरने की कोशिश करने वाले उन करोड़ों लोगों से है जिन्हें जमीन ग्रौर कारखानों के मालिक, जमींदार-इजारेदार तथा उनके हितों के संरक्षक चन्द नौकरशाह ग्रपने शोषण का शिकार बनाये हुए हैं। सरकार की जमींदार-इजारेदार परस्त नीतियों के कारण इन मामूली ग्रादमियों की जिन्दगी मौत से भी ज्यादा बदतर होती चली जा रही है। देश के करोड़ों लोगों को भरपेट भोजन नहीं मिलता, छोटे-छोटे बच्चे मरे हुए

का मांस खाते हुए देखे गए हैं, लोग गुठलियां बड़े महुआ और पीपल की छाल खा रहे हैं, मां-बाप अपने बालकों को बेच रहे हैं, आदिवासी औरतें पचास-पचास पैसे में अपने जिस्म का सौदा कर रही है, शरीर पर कपड़ा न होने की वजह से लाखों औरतें घर से बाहर नहीं निकलती, परिवार के परिवार भूख से परेशान होकर आत्मघात कर रहे हैं, चलते-फिरते आदमी भूख से मरकर गिर रहे हैं, भूख के कारण मिदनापुर की एक माँ अपने बच्चे को भूनकर खा गई, अकाल की काली छाया ने आदमी के चेहरे की झुरियों को गहरा कर दिया हैं, फिक्र और फाके ने नारी के चेहरे के नूर को छीनकर उस पर आशंका एवं आतंक की स्याही फेर दी है। बेरोजगारी के शैतान ने मार-मार कर नौजवानों को बूढ़ा बना दिया है। भिखारियों और वेश्याओं की संख्या में बेतहासा वृद्धि हो रही है और चोरी-चकौरी, लूटपाट एवं कत्ल की घटनायें बढ़ती जा रही है। मेहनतकश जनता 'पेट के सवाल' की दलदल में फंसकर बेरोजगारी, मंहगाई, गरीबी और भूखमरी की खौफनाक वादियों में कैद हो गयी है।

अन्धकार से मुक्ति की छटपटाहट

जिन्दगी से मुहब्बत करना इन्सान का स्वभाव है, अतः शोषक-उत्पीड़क वर्ग और उसकी सरकार द्वारा छोड़े गये मौत के शिकारी कुत्तों से आदमी जूझ रहा है। सरकारी गैरसरकारी लाखों कर्मचारियों-मजदूरों के अनेक संघर्षों के बाद में हुई रेल-कर्मचारियों की ऐतिहासिक हड़ताल आदमी की इस छटपटाहट का जीवन्त प्रमाण है। वेतन में समानता, आठ घंटा काम, बोनस, जनतांत्रिक अधिकारों की सुरक्षा आदि मांगों को लेकर देश के एक कोने से दूसरे कोने तक 17 लाख रेल-कर्मचारियों ने 8मई74 से हड़ताल करके अपनी जिस एकता और जुझारु चेतना का परिचय दिया, उसने श्रमिक-वर्ग के संघर्ष के इतिहास में एक अभूतपूर्व कीतिमान स्थापित किया है। और 'हमारी सरकार' ने श्रमिक-वर्ग के इस न्यायोचित संघर्ष को कुचलने के लिए जिन घिनौने बहाशियाना हथकण्डो को अपनाया है, वह इस हकीकत की ओर संकेत करता है कि आर्थिक-संकट से घिरा हुआ देश शोषक शासक-वर्ग अब प्रजातन्त्र के मुखौटे को उतार फेंक देने की जरुरत महसूस करने लगा है। वैधानिक रूप में नोटिस देकर की गयी हड़ताल को गैरकानूनी घोषित कर देना, हड़ताल शुरु होने से पहले ही हजारों मजदूर-नेताओं को आन्तरिक सुरक्षा अधिनियम के अन्तर्गत गिरफ्तार कर लेना, कर्मचारियों को पिछले महीने का वेतन न देना, हड़ताली कर्मचारियों के परिवारों को क्वार्टरों से बाहर खदेड़कर उनका सामान जब्त कर लेना, उनका बिजली-पानी काट देना, बाथरुम में नहाती जवान लड़कियों को बाहर खींचकर बेइज्जत करना औरतों के साथ बलात्कार और बूढ़ों-बच्चों के साथ मार-पीट करना। हथकड़ियां डालकर कर्मचारियों को तेज धूप में सारे दिन प्लेटफार्म पर घुमाते रहना, जंजीर से बांधकर संगीन की नोक के बल पर ड्राइवरों से ईंजन चलवाना, औरतों के सिर के बाल उखाड़ लेना और उनकी जांघों में संगीन घुसेड़ देना, हजारों हड़तालियों को नौकरी से निकाल देना और लाखों की सर्विस ब्रेक करके उनके तबादले कर देना हमारी 'जनतांत्रिक सरकार' के कुछ ऐसे काले कारनामे हैं जो दुनिया के इतिहास में इन्द्रा-प्रशासन को 'प्रजातन्त्र की हत्या' के रूप में हमेशा कठघरे के भीतर बनाये रखेंगे।

स्वतःस्फूर्त आंदोलनों का सिलसिला

गहरे होते हुए आर्थिक-संकट के दौर में जब समाज परिवर्तन की वैज्ञानिक विचार धारा को लेकर क्रांतिकारी पार्टी मेहनतकश जनता के बीच में पहुंच कर उसका नेतृत्व करने में समर्थ नहीं होती तो परेशान जनता सही दिशा के बगैर स्वयं ही संघर्ष में जुट जाती है जिसका नतीजा यह होता है कि बलिदान तो जनता करती है लेकिन जन-असंतोष का फायदा अवसर शोषक शासक-वर्ग के दल ही उठाते हैं। गुजरात में युवा-वर्ग का संघर्ष एक ऐसा ही आंदोलन था जो मंहगाई और भ्रष्टाचार के विरुद्ध विधान-सभा भंग करने की मांग को लेकर शुरु हुआ। इस दृष्टि से आजादी के बाद यह एक अभूतपूर्व संघर्ष था कि असंतुष्ट विद्यार्थियों ने अपने जुझारु संघर्ष और बलिदान के बल पर भूस्वामी-सरमायेदार परस्त सरकार को विधान-सभा भंग करने के लिए विवश कर दिया, आम जनता ने यदि एक ओर हड़ताल करके, नवजात शिशुओं का नाम 'चमन' न रखकर, कांग्रेस सरकार के खात्मे के लिए एक साथ सारे सूबे में थाली पीटकर, जलूस और प्रदर्शन करके यदि अपने व्यापक असंतोष का इजहार किया तो शोषक शासक-वर्ग ने बड़े पैमाने पर गिरफ्तारियों, लाठी-चार्ज और फायरिंग द्वारा जनसंहार करके अपने जनविरोधी चेहरे को बेनकाब कर दिया।

स्वतंत्र भारत की प्रथम जन-क्रान्ति

उपभोग के विरुद्ध जन-आंदोलन

उपभोग के विरुद्ध जन-आंदोलन का प्रारम्भ सर्वोच्च सत्ता के स्थानों तथा सर्वाधिक अपव्यय के स्थानों से होना चाहिए। यह आन्दोलन देशव्यापी हो और युवा वर्ग इसका नेतृत्व करे। समूचे कार्यक्रम का यह अभिन्न अंग हो। इसके कुछ मुद्दे निम्नलिखित होंगे :-

१. देश भर में विदेशी उपभोग की वस्तुओं का सार्वजनिक रूप से त्याग। विदेशी उपभोग वस्तुओं के उपयोग करने वालों के घरों के आगे शांतिपूर्ण पिकेटिंग। विदेशी उपभोग वस्तुओं का अग्निदाह।

२. आवास की स्वेच्छा से अधिकतम सीमा निर्धारण। अतिरिक्त आवास स्थल का आवास विहीनों में वितरण। मोटर गैराजों तथा अन्य उपलब्ध स्थलों पर आवास विहीनों के लिए स्थान दिलाना। इसके लिए मुहल्ला समितियों का निर्माण। सर्वप्रथम राष्ट्रपति, राज्यपाल तथा मंत्रियों से स्वेच्छा या आवास सीमा निर्धारण के लिये आग्रह। किसी पद के अधिकारी के लिये क्षेत्रफल जन सामान्य के लिये मान्य न्यूनतम क्षेत्रफल के दूने से अधिक नहीं होना चाहिये। आलीशान होटलों का विद्यालयों, आवासों में परिवर्तन। आलीशान होटलों में भारतीय यात्रियों का पिकेटिंग किया जाये। आलीशान भवनों, होटलों के निर्माण पर बंदिश। शासन व बैंकों की नीति में परिवर्तन। खेती के लिये आवश्यक सभी साधनों को प्राथमिकता से जुटाने की नीति के लिये दवाब।

३. व्यक्तिगत मोटरों का उपयोग बंद किया जाकर केवल पब्लिक सर्विसों के लिये बसों का उत्पादन चालू रखा जाय।

यह स्वीकार किया जाय कि आज भारत में सर्वसाधारण का वाहन साइकिल है।

४. कार्यालयों, घरों से एयर कंडीशनर देश के अस्पतालों के लिये भेज दिये जाय। शहरों में बिजली के उपयोग की कटौती की जाय और घरों में बिजली के सामान्य व्यय की अधिकतम सीमा निश्चित की जाय।

५. उपभोग की वस्तुओं के सभी प्रकार के विज्ञापनों पर पाबंदी। इसके लिये इश्तहारों को खत्म करना, सिनेमा पर धरना, आल इण्डिया रेडियो पर धरना व अखबारों के कार्यालयों पर धरना।

६. टेलीविजन के आगे विस्तार के खिलाफ आन्दोलन। टेलीविजन निर्माण का स्थगन और वर्तमान टेलीविजन का बहिष्कार।

७. कपड़ा तथा ऊंची मिलें केवल दो प्रकार का कपड़ा बनाए। बढ़िया कपड़ा बनाना बंद हो तथा यदि बने तो उसे केवल निर्यात किया जाय।

८. सभी प्रकार की विलास सामग्री के उत्पादन पर बंदिश तथा उसकी उत्पादन क्षमता सर्वसाधारण के लिए आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन के लिये उपयोग।

यह आवश्यक नहीं कि सभी बातों पर एक साथ आन्दोलन चलाया जाय। सबसे पहले विदेशी उपभोग वस्तुओं, विज्ञापनों, कारों, एयरकंडीशनों, आवास व्यवस्था पर प्रहार किया जाय। सभी नगरों में समितियों का निर्माण हो और वे अपना कार्यक्रम निर्धारित करें। २ अक्टूबर, १९७५ को राष्ट्र-व्यापी विदेशी उपभोग वस्तुओं के बहिष्कार का आयोजन किया जाय। उपभोगवादिता की जड़ें अत्यन्त गहरी हो चुकी है और इसके विरुद्ध दीर्घकालीन संघर्ष आवश्यक होगा। उपभोग वस्तुओं की उत्पादन क्षमता का उपयोग आवश्यक वस्तुओं के उत्पादन में उपयोग किया जाय।

युवा शक्ति का अपना स्वार्थ हित

राजनीतिक क्षेत्रों में इस आमूल-चूल परिवर्तन के लिये संघर्ष करने वाले वर्ग के लिये कुछ नितांत आवश्यक गुण होना चाहिये। यह संघर्ष सभी प्रकार के निहित स्वार्थों के विरुद्ध है अतएव यह आवश्यक है कि संघर्षकारी स्वयं अपना आत्मपरीक्षण कर लें। आज की भारतीय व्यवस्था में समूचा संगठित समाज निहित स्वार्थ का रूप लेता जाता है और सत्ता का सहारा लेकर अपने भाग को बढ़ाता है। ऊपरी तौर पर यही मालूम होता है कि उसने सत्ता से अपना अधिकार लिया पर उसकी पूरी कीमत सबसे गरीब तबके को ही चुकानी पड़ती है। जो व्यक्ति भी राष्ट्रीय सामान्य आय से अधिक उपभोग करता है वह उससे नीचे वर्ग के ऊपर खड़ा हुआ है। उसकी ऊंची आय के तथाकथित अर्थशास्त्रीय तर्क स्वार्थ वर्गों का युक्ति - युक्तिकरण मात्र है। हमने युवा वर्ग का आह्वान किया हैं तथा उसी को इस ऐतिहासिक पृष्ठभूमि निभाने का हकदार भी माना है। गुजरात में छात्रों ने संघर्ष किया। खुशी है कि बिहार में छात्रेतर युवावर्ग भी सम्मिलित है। छात्रों को यदि यह नेतृत्व करना है और अपनी ऐतिहासिक भूमिका निभानी है तो वे अपने निहित स्वार्थ को भी भली-भांति समझ लें। गुजरात के आन्दोलन के

विरुद्ध यह आक्षेप है कि अन्ततोगत्वा वह आन्दोलन छात्रों के मुखौटे के पीछे निहित स्वार्थों का ही साबित हुआ।

छात्रों का निहित स्वार्थ क्या है इसे स्पष्ट करना होगा। आज विश्वविद्यालयी शिक्षा का अनावश्यक विस्तार हो गया है। विश्वविद्यालय की डिग्री एक ऊँचे जीवन का पास पोर्ट बन गई है। जो भी बी० ए० या एम० ए० हो गया वह यह अपेक्षा करता है कि उसे उसकी योग्यता के अनुसार न्यूनतम वेतन का स्थान मिल जाना चाहिए। इसके लिए छात्र आंदोलन होते हैं। जन- सामान्य भी शासन से यही अपेक्षा करते हैं। संसद तथा विधान सभाओं में शिक्षित बेरोजगारी पर बहस होती है और योजनाएं बनती हैं। अन्त में होता क्या है, जहां कोई अशिक्षित अथवा अर्धशिक्षित व्यक्ति काम कर सकता था उस काम को शिक्षित के लिए सुरक्षित कर दिया जाता था। वही बंदरबाट। कभी जब दबाव अधिक पड़ता है तो काम नहीं होने पर भी प्रशासन बिना काम के काम बनाने की चेष्टा करता है। इसका राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में अर्थ क्या है? इस प्रकार के रोजगार से उत्पादन तो नहीं बढ़ा, प्रतिष्ठान का व्यय बढ़ता है और राष्ट्रीय उत्पादन का पुनर्वितरण होता है। कुछ लोगों को केवल शिक्षित होने के नाते उसमें एक विशिष्ट हिस्सा मिल जाता है। यही कारण है कि दफ्तरों तथा अनेकानेक प्रतिष्ठानों में काम न होते हुए भी कर्मचारियों की भरमार है। राष्ट्र की कमर टूट रही है इस बोझ से। पर स्थापनाओं का इतना बड़ा निहित स्वार्थ है और इतना संगठित है कि उसके विरुद्ध एक आवाज भी नहीं उठायी जा सकी है।

स्पष्ट विकल्प

आज विकल्प स्पष्ट होते जा रहें हैं, निहित स्वार्थों का संरक्षण किया जाता रहे अथवा राष्ट्र को बचाया जावे। रोजगार अर्थव्यवस्था की स्थिति के अनुरूप ही हो सकता है। अर्थव्यवस्था एक दिन में नही बदली जा सकती है। भारत में जन-शक्ति का प्राचुर्य है, दो हाथों को काम देना राष्ट्र का कर्त्तव्य है— कलम का काम नहीं, बैठने का काम नहीं दो हाथों से आठ घण्टे मेहनत कर दो जून पेट भरने का काम। यही अधिकार सब को बराबर है चाहे वह शिक्षित हो या अशिक्षित हो। इससे ऊँचे कामों का बटवारा योग्यता के आधार पर हो, उसके लिये किसी का अधिकार नहीं, उसके लिये कोई मांग नहीं हो सकती। न्यूनतम और अधिकतम में तीन गुने से अधिक अंतर नहीं होगा। साम्यवादियों का तर्क है कि ऊपर वाले को नीचे लाने से क्या लाभ, सबको ऊपर उठाने का प्रयास करो, गरीबी बांटने से क्या लाभ। यह तर्क थोथा सिद्ध हो चुका है। निहित स्वार्थों पर प्रहार ऊपर से होना चाहिए। किसी भी काम के लिये न्यूनतम के तिगुने की पात्रता नहीं होनी चाहिये, ऊपर की आमदनी को कम किया जाय। शिक्षित वर्ग केवल मेहनत कर न्यूनतम की मांग करे अपने लिये और उन अभागों के लिए भी जिन्हें साक्षरता का सौभाग्य ही नहीं मिला। शिक्षितों को यह स्पष्ट होना चाहिए कि उन्हें विश्वविद्यालय शिक्षा इसलिये उपलब्ध हो सकी अभी तक करोड़ों बालकों को प्राथमिक शिक्षा भी नसीब नहीं है। एक लाभ का अर्थ यह नहीं कि कि सभी लाभ उन्हें मिलें और जो अभागे हैं उन्हीं की कमर टूटती जाय।

उच्च शिक्षा

विश्वविद्यालयी शिक्षा आज बहुत हद तक निरर्थक हो चुकी है। इसकी निरर्थकता विद्यार्थी वर्ग भलीभाँति जानता है। तभी विश्वविद्यालय जलाए जाते हैं, उपाधियां नष्ट की जाती है, परीक्षायें केवल औपचारिक मात्र रह गई हैं निरर्थकता के ये बाह्य लक्षण अभी तक प्रशासन, शिक्षा-शास्त्रियों को हिला नहीं सके हैं। स्थानीय दबाव के कारण सुविधायें बढ़ती जाती है। सभी का तर्क यही है कि जो सब के लिए होगा वह उनके लिये भी होगा। यदि और लोग डिग्री लेकर बेकार घूमते हैं तो हमारे लड़के भी घूमेंगे। जहाँ सुविधायें हैं वहाँ कम नहीं की जा सकती हैं अतएव अन्यत्र सुविधाओं को देने का दबाव समाप्त नहीं किया जा सकता है। निरर्थकता स्वीकार करते हुए भी जो एक छोटी सी आशा की किरण है उसी के लोभ में खिचे जा रहे हैं करोड़ों युवा। इस दुष्ट-चक्र से निकलने का कोई रास्ता नहीं जो स्वार्थ वर्ग का सदस्य है, वह अपना स्थान नहीं छोड़ना चाहता, दूसरे उसी ओर भाग रहे हैं। जब तक गरीब की कमर नहीं टूट गई तब तक यह सह्य रहा पर अब वह सीमा पार हो चुकी है। इस क्षेत्र में भी राज्य और स्थापना नेतृत्व देने में असफल रहा और युवा शक्ति को ही इसका उत्तर देना होगा। युवा शक्ति इसमें हो सकता है खेमों में बट जाय। दिल्ली के समृद्ध युवा वर्ग का स्वार्थ है कि दिल्ली पर उसका एकाधिकार रहे उसकी सुविधायें बढ़ती जाय, वह क्यों कर इसमें साथ देगा राष्ट्र के ग्रामीण क्षेत्रों के युवा वर्ग का। परन्तु यदि युवा वर्ग में 'युवावर्गोचित गुण' है और ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि अदा करने की अभिलाषा है तो अपने तात्कालिक स्वार्थों को एक ओर हटाना होगा।

शिक्षा में आमूल परिवर्तन के लिये संघर्ष

जयप्रकाश जी ने एक वर्ष के लिए विश्वविद्यालयों के त्याग का आह्वान किया, वह स्वागत योग्य है। परन्तु अब उद्देश्य केवल विधान सभा भंग आन्दोलन ही नहीं रह जाना चाहिए। उसका एक उद्देश्य समूची शिक्षा व्यवस्था की पुन-र्स्थापना होना चाहिए। लड़के कालेजों में तभी जाये जब यह व्यवस्था ठीक हो जाय। यह आन्दोलन राष्ट्र व्यापी हो। इस आन्दोलन के मुख्य बिन्दु हों — कि विशिष्ट वर्गों की शिक्षा-व्यवस्था को तुरन्त समाप्त किया जाय जिससे कि आसूदा और गरीब सभी के बालकों को एक स्थान पर पढ़ने का अवसर मिले और ऊँचे-नीचे सभी का हमारी सामान्य शिक्षा के सार में दिलचस्पी हो। विश्वविद्यालयों में शिक्षा सुविधाओं का विस्तार समाप्त किया जाय। वर्तमान सुविधाओं में राष्ट्रीय विकास की आवश्यकताओं तथा संभावनाओं को देखते हुए कटौती की जाए। भर्ती के लिए केवल बौद्धिक क्षमता ही एकमात्र मापदण्ड रहे और यथासम्भव क्षेत्रीय असंतुलन दूर किया जाय। शिक्षा के स्तर को समान करने के लिए प्रभृति क्षेत्रों में सुविधाएं वेतनमान इत्यादि को बढ़ाने के पहले पिछड़े क्षेत्रों के वर्तमान स्तर को ऊँचा करने का प्रयास किया जाय। इस प्रकार शिक्षा व्यवस्था में आमूल परिवर्तन के लिए राष्ट्र व्यापी आन्दोलन हो, जिसका युवा वर्ग नेतृत्व करे। युवा वर्ग को शिक्षा के क्षेत्र की सभी व्याधियों को निर्मूल करने का बीड़ा उठाना होगा। विश्वविद्यालयों को वे तब तक बन्द रहने के लिए मजबूर कर दें जब तक कि राष्ट्रीय स्तर पर इसका समाधानकारक हल नहीं निकालता। एक वर्ष का समय पर्याप्त है शासन को इसका हल ढूढ़ने के लिए।

त्रिसूत्रीय कार्यक्रम

इस प्रकार निर्वाचन प्रणाली का परिष्करण, उपभोगवाद पर प्रहार तथा शिक्षा पद्धति में आमूल परिवर्तन का त्रिसूत्रीय कार्यक्रम हमारे दूरगामी परिवर्तनों की आधारशिला हो सकता है। एक बार इन मूल बिन्दुओं पर सीधा प्रहार करना प्रारंभ किया तो अन्य पक्षों में भी कसाव आना प्रारम्भ होगा। क्षेत्रीय तथा स्थानीय संघर्ष नयी शक्ति को जन्म देंगे जो इस सतत संघर्ष को जारी रखेंगे। यह भी आवश्यक होगा संघर्ष का नेतृत्व करने वाले अपने को राजनैतिक शक्ति के खेल से दूर रखेंगे। युवा नेतृत्व को यह अहद करना होगा कि वे इस संघर्ष के आधार पर कभी भी राजनैतिक सत्ता के लिए प्रतिस्पर्धा में नहीं पड़ेंगे। उनका कार्य होगा सत्ता की गुत्थियों से बाहर एक संघर्षमय तपस्यापूर्ण जीवन बिताना जिसका एक ही लक्ष्य होगा राष्ट्रीय जीवन को सही रास्ते पर चलते रहने के लिए दिशा निर्देश। गांधी जी का अंतिम उपदेश वे आत्मसात करें। जन कल्याण के अनगिनत कार्य प्रतीक्षा में है नई शक्ति की। इस शक्ति का उपयोग स्वार्थ के लिए नहीं होगा, उसका उपयोग होगा जन सामान्य की सेवा के लिए। क्या युवा शक्ति इस चुनौती को स्वीकार करेगी?

विज्ञान कांग्रेस में रहस्योद्घाटन—

मेढकों की टांगों का निर्यात कृषि के लिए घातक

मथुरा तैल शोधनालय से जमुना का पानी अति दूषित हो जाएगा

डा० पी० जे० देवरस ने नयी दिल्ली में ता० ५ जनवरी को भारतीय विज्ञान कांग्रेस में मेढकों की टांगों के निर्यात के विरुद्ध चेतावनी देते हुए कहा कि इसके फलस्वरूप कीड़ों को मारनेवाली औषधियों का अधिक मात्रा में आयात करना पड़ेगा जिससे प्रादूषण में काफी वृद्धि होगी। आपने बताया कि मेढक उन कीड़ों को खाते हैं, जो फसलों को नुकसान पहुंचाते हैं। एक मेढक ६०० ग्राम या १० हजार कीड़ों को खा जाता है। यह कितने दुःख की बात है कि हम टांगों के निर्यात के लिए मेढकों की जान ले लेते हैं और कीड़ों-मकोड़ों को नियंत्रित करने के लिए ऐसे रसायनों का आयात करते हैं जिससे मेढक, मछलियां और अन्य आवश्यक जीव भी काफी संख्या में मर जाते हैं।

आपने बताया कि कीटनाशक औषधियों से केवल अनावश्यक कीड़े ही नहीं मरते हैं, बल्कि उन दीमकों की भी मृत्यु हो जाती है, जो खेत की उर्वरा शक्ति को बढ़ाते हैं।

आपने यह भी बताया कि मथुरा में बन रहे तैल शोधनागार से केवल ताजमहल को ही क्षति नहीं पहुंचेगी, बल्कि यमुना का पानी भी दूषित होगा। यमुना नहाने या मछली मारने योग्य नहीं रह जायेगी। उसका रूप यूरोप की दूषित नदी राईन की तरह हो जायेगा।

संविधान की 25वीं जयन्ती के अवसर पर

आइये हम चौकस रहें

अपने संविधान द्वारा हमने अपने लिए एक विशेष रास्ता... जीवन पद्धति... चुना है। यह विशेष रास्ता है संसदीय लोकतंत्र, जिसके द्वारा हम सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय प्राप्त कर सकते हैं।

हमारे ही कुछ लोग, जो इसे पसन्द नहीं करते, इसे नुकसान पहुंचाने में जुटे हैं। वे नहीं चाहते कि इस रास्ते पर चलकर हम अपने लक्ष्य प्राप्त करें। उनकी जिन्दगी का रास्ता दूसरा है। वे विघटन, तोड़फोड़, बेबुनियाद बदनामी और फासिज्म पर विश्वास करते हैं। हमें ऐसे लोगों से चौकस रहना चाहिए। तभी हम लोकतंत्र और स्वतंत्रता की रक्षा कर सकेंगे।

संविधान की रक्षा कीजिए

davp 74/433

उपदेशक और भजनीक

० डा० भवानीलाल भारतीय

आर्य समाज के वयोवृद्ध तथा ज्ञानवृद्ध विद्वान् पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय ने सम्भवतः आर्यसमाज (मासिक पत्र) कलकत्ता में एक लतीफा लिखा था— किसी आर्यसमाज के उत्सव के उपलक्ष में दो उपदेशक एकत्र हुए। एक ने समाज के मंत्री से दूसरे की निन्दा करते हुए कहा, अजी, वह तो उपदेशक क्या पूरा बैल है, उसे उपदेश से क्या वास्ता! इसी प्रकार अवसर पाकर दूसरे ने भी पहले के बारे में मंत्री जी से ऐसी ही निन्दात्मक बात कही— अजी, यह जो आये हैं, पूरे गधे हैं। इन्हें उपदेश करना क्या आता है। कहते हैं कि भोजन के समय पर मन्त्री जी ने एक के सामने भूसा और दूसरे के सामने दाना रख दिया तो वे बड़े चक्कर में पड़े। जब उन्होंने मन्त्री जी के इस असभ्य व्यवहार का अर्थ पूछा तो उन्हें उत्तर मिला, आपने ही एक दूसरे के गुण जो मुझे बताये हैं, उनके अनुसार आप जो ठहरते हैं, वैसी ही व्यवस्था मैंने की है।

इस लतीफे का तात्पर्य यह बताता है कि आर्यसमाज के उपदेशकों में परस्पर कितना अधिक मनोमालिन्य है। इन पंक्तियों का लेखक एक उत्सव में गया। वहां दो उपदेशक नामधारी जीवों का पारस्परिक वार्तालाप सुनने का अवसर उसे मिला। वार्तालाप का सार यही था कि अमुक व्यक्ति अमुक नगर में अपना सिक्का जमा रहा है। अमुक स्वामी ने अमुक क्षेत्र के समाजों पर अपना प्रभुत्व जमा रखा है। अमुक उपदेशक को कुछ आता जाता नहीं। अथवा इस वर्ष मैं बम्बई गया। वहां के एक आर्य श्रेष्ठी ने मेरा खूब स्वागत सत्कार किया। महानगरी का भ्रमण उसी की कार में हुआ और जाते-जाते इतनी द्रव्यराशि दक्षिणा के रूप में मिली।

यह सब लिखने की आवश्यकता इसलिये पड़ी कि आज आर्य समाज के उपदेशक अपने कर्त्तव्य से च्युत होकर उसके पतन के कारण बन रहे हैं। उनमें लेखराम, गुरुदत्त, श्रद्धानन्द और दर्शनानन्द का त्याग, तप, वैदुष्य और लगन का सर्वथा अभाव है। उपदेशक की सफलता इसी में मानी जाती है कि वह श्रोतृमण्डली द्वारा कितनी बार ताली पिटवा सकता है।

आज आर्यसमाज में उपदेशक बनने के लिये किसी प्रकार की योग्यता की कोई आवश्यकता नहीं समझी जाती। स्वेच्छा से ही लोग यह गुरुतर कर्त्तव्य स्वीकार कर लेते हैं, परन्तु उसे निभाने में असफल होते हैं। मैंने कई ऐसे उपदेशकों को देखा है जो इस व्यवसाय में अपनी सारी आयु को होम चुके हैं, परन्तु जिन्हें अवसरानुकूल बात कहना नहीं आता, जो प्रकरणवित् नहीं और जिन्हें इस बात का ज्ञान नहीं कि किस अवसर पर क्या कहना चाहिए। महिलाओं की उपस्थिति में सैक्स सम्बन्धी ऐसी-ऐसी बातें कही जाती हैं जिन्हें सुन कर श्रोताओं को भले ही लज्जा आ जाय परन्तु पलितकेशवक्ता को तनिक भी लज्जा नहीं आती। तभी तो वह निश्शंक होकर प्रजनन विज्ञान विषयक जटिल बातों को रस ले लेकर कहता रहता है।

आर्य समाज ने अपने प्रारम्भिक काल में उपदेशकों की शिक्षा दीक्षा पर पर्याप्त ध्यान दिया था। पं० लेखराम की स्मृति में आगरा में पं० भोजदत्त शर्मा द्वारा आर्य मुसाफिर विद्यालय चलाया गया, जिसमें इस्लाम के विशेषज्ञ उपदेशक तैयार किये जाते थे। स्व० मौलवी महेशप्रसाद आदि इसी उपदेशक विद्यालय की उपज थे। इस विद्यालय का लोहा महापण्डित राहुल ने भी माना जो स्वयं उस विद्यालय के छात्र रहे थे। पंजाब सभा के द्वारा गुरुदत्त भवन लाहौर में जो दयानन्द उपदेशक विद्यालय चलाया गया, उसने भी उच्चकोटि के उपदेशक आर्यसमाज को प्रदान किये हैं. परन्तु आज पंजाब के एकाध उपदेशक विद्यालय को छोड़ कर कोई ऐसी संस्था नहीं है, जहां आर्यसमाज के लिये उपदेशक तैयार किये जाते हों। विश्व को आर्य बनाने वालों को पहले आर्य उपदेशक तैयार करने की ओर ध्यान देना चाहिए।

उपदेशक तैयार करने के लिए हमें ईसाइयों से शिक्षा लेनी होगी, जिनके उपदेशक विद्यालयों में प्रवेश पाने की न्यूनतम योग्यता किसी विश्वविद्यालय का स्नातक होना है। वे विश्व भर के देशों के लिए अपने प्रचारक तैयार करते हैं। जो छात्र जिस देश में जाकर प्रचार करने का इच्छुक होता है उसे उसी देश की भाषा, धर्म, संस्कृति तथा इतिहास का अध्ययन करना पड़ता है। इस दृष्टि से मतमतान्तरों के विशेषज्ञ प्रचारक आर्यसमाज ने तैयार किये ही नहीं। हमारे यहां न तो ऐसे उपदेशक हैं जो द्राविड़ भाषा भाषी दक्षिण भारतीयों में उनकी भाषा के माध्यम से प्रचार कर सकें और न ही अंग्रेजी, फ्रैन्च आदि यूरोपीय भाषाओं के माध्यम से विदेशों में आर्यसमाज का प्रचार करने वाले विद्वान् ही हैं। पुनः 'कृण्वन्तोविश्वमार्यम्' के नारे का अर्थ। पाठकों को यह जानकर आश्चर्य होगा कि

सुप्रसिद्ध ईसाई पादरी जे० एन० फर्कुहर ने 'Modern Religious Movements in India' नामक अपनी पुस्तक की रचना उन ईसाई प्रचारकों के अध्ययनार्थ की थी जो भारत को अपना कार्य क्षेत्र बनाना चाहते थे। कहना न होगा कि उक्त पुस्तक भारत में प्रचलित वर्तमान धर्म और संस्कृति विषयक आंदोलनों का विश्व कोष ही है। एक विदेशी ईसाई प्रचारक का भारतीय धर्मांदोलनों का अध्ययन कितना सूक्ष्म और गम्भीर है यह इस पुस्तक से ही प्रकट होता है जबकि आर्यसमाज के कई पेशेवर प्रचारकों को अपनी भगिनी संस्थाओं (ब्राह्मसमाज, प्रार्थनासमाज, थियोसोफी आदि) के विषय में भी कुछ अधिक ज्ञान नहीं होता।

धर्म प्रचारक में योग्यता का होना तो आवश्यक है ही उसमें त्याग और कष्ट सहिष्णुता भी होनी चाहिए। आज पं० लेखराम जैसे त्यागी, तपस्वी और कष्ट सहिष्णु धर्मोपदेशक तो आर्यसमाज में कहां, जो जान को खतरे में डाल कर ऐसे स्टेशन पर चलती गाड़ी से भी उतर पड़ते थे जहां गाड़ी ठहरती नहीं थी। आज तो आर्यसमाज के उपदेशक जाते ही वहाँ हैं, जहाँ आर्य-समाजें होती हैं और जहाँ उन्हें सभी प्रकार की सुख सुविधायें मिलने का विश्वास होता है। यही कारण है कि भारत के लाखों गाँव आर्यसमाज के उपदेशकों के चरणस्पर्श से वंचित रहते हैं।

तथाकथित भजनोपदेशकों ने तो आर्यसमाज के धर्म प्रचार का और भी बंटाढार कर रक्खा है। संगीत मानव हृदय को आकर्षित करने वाली एक दिव्य शक्ति है। इसका सहारा लेकर मनुष्य-मनुष्य को ही नहीं पशु पक्षियों तक को मंत्र मुग्ध कर सकता है। सभी धर्मावलम्बी संगीत के माध्यम से धर्म प्रचार करते हैं। एक समय था जबकि आर्यसमाज में अमीचन्द, बस्तीराम, वासुदेव, तेजसिंह जैसे प्रचण्ड व्यक्तित्व वाले प्रभावशाली भजनोपदेशक थे। आज भी कुँवर सुखलाल का वाणीचातुर्य और कविरत्न पं० प्रकाशचन्द्र जी की मधुर स्वर लहरी को लोग भूले नहीं हैं परन्तु यह भी सत्य है कि आर्यसमाज में संगीत कला के मर्मज्ञ उच्च-कोटि के भजनोपदेशक अब अंगुलियों पर गिने जाने योग्य ही रह गये हैं। जनसाधारण में तो वर्तमान आर्य-समाजी भजनीकों के फूहड़ कला प्रदर्शन को देखकर यह धारणा सी बन गई है कि संगीत और आर्य भजनीक का सम्बंध ३६ का होता है। इस प्रसंग में मुझे 'चाँद' मासिक पत्र में प्रकाशित होने वाले स्व० पं० विश्वम्भरनाथ शर्मा कौशिक (उपनाम विजयानन्द दुबे जी) द्वारा लिखित उस चिट्ठी का स्मरण हो आता है जिसमें आर्यसमाजी भजनीकों को संगीत कला की हत्या करने वाला बताया गया है। बात यद्यपि कटु ही है फिर भी उसमें तथ्य है। आज कितने भजनोपदेशक हैं जिन्होंने विधिवत् आर्य सिद्धान्त और संगीत की शिक्षा ली है। यों ही हारमोनियम पर दो चार फिल्मी तर्ज के भजन गा लेना भजनोपदेशक बनने के लिए काफी नहीं है।

आर्यसमाज के भजनोपदेशक अपने भजनोपदेशक के नाम पर अब अधिक बकवास करते हैं, लेखक को १९६१ की मई में हुए उस आर्यमहासम्मेलन (नई दिल्ली) का ध्यान आता है जिसमें एक ओर तो आर्य-समाज की प्रचार प्रणाली में आवश्यक परिवर्तन लाने हेतु प्रमुख आर्यों के सम्मेलन में घण्टों वाद-विवाद हुआ और उसी सम्मेलन के खुले पण्डाल में, ठीक उसी समय जबकि आर्यसमाज का विचारक वर्ग प्रचार प्रणाली के दोषों को दूर करने हेतु गम्भीर विमर्श कर रहा था, एक रेडियो सिंगर कोटि के भजनीक गा रहे थे— "मम्मी की डैडी से लड़ाई हो गई। चीन की जापान पर चढ़ाई हो गई" कितनी विडम्बना है कितना अन्तर्विरोध (Self Contradiction) है हमारे विचार और व्यवहार में। जब तक आर्यसमाज के सर्वोच्च अधिकारी उपदेशकों और भजनीकों को पूर्ण नियंत्रित, अनुशासन-बद्ध तथा व्यवस्थित नहीं करेंगे तब तक आर्यसमाज का प्रचार कार्य इच्छित फलदायक नहीं हो सकेगा। रचनात्मक सुझावों की दृष्टि से इतना ही कह देना पर्याप्त होगा कि आर्यसमाज की सर्वप्रभुता सम्पन्न संस्था सार्वदेशिक सभा अपने नियंत्रण में एक विद्यालय ऐसा खोले जो उपदेशकों के सर्वांगीण शिक्षण में सक्षम हो। भजनीकों के लिए संगीत की उच्चशिक्षा की व्यवस्था भी होनी आवश्यक है। इसके बिना काम नहीं चलेगा। नान्यः पन्था विद्यते।

यह अंक आपको कैसा लगा?

राजधर्म के सुविज्ञ पाठकों से प्रार्थना है कि इस अंक के लेखों एवं सम्पादकीय पर अपनी समालोचना अवश्य भेजने की कृपा करें जिससे आपकी रुचि जान कर तथा आपके सुझाव मान कर हम उत्तरोत्तर राजधर्म को एक व्यापक शक्तिशाली पत्रिका बना सकें। आपके इस सहयोग के लिए आपके विशेष आभारी होंगे।

इस्लाम और मुस्लमान

० *जोरावर कादयाण*

पाकिस्तान के संविधान में लिखा गया है कि पाकिस्तान का राष्ट्रपति मुस्लमान होगा। आजकल श्री भुट्टो साहब मुस्लमान होने के नाते वहां के राष्ट्रपति हैं। मुस्लमान कौन है? इसका सबूत कुरान शरीफ और हजरत मुहम्मद के मुबारिक वचन मौजूद हैं। पहली बात तो गैर-इस्लामिक यह है कि पाकिस्तान जो बहु धर्म और जातीय राष्ट्र है उसके विधान में मुस्लमान कहलाने वाले लोगों ने "केवल मुस्लमान ही राष्ट्रपति होगा" पारित किया है। हजरत मुहम्मद ने सर्वप्रथम राष्ट्र का मदीना में विधान बनाया था। "खुलासा सीरत इब्न हशाम" में इस राष्ट्र का उल्लेख है।

विधान

१. खबहा (ताजीरात) और फदिया (कर-व्यवस्था) का तरीका पुराना रहेगा।
२. हर फरीक को धार्मिक आजादी होगी। एक दूसरे के दीन से कोई परहेज नहीं करेगा।
३. हर दो फरीक एक दूसरे के शुभचिन्तक होंगे।
४. बाहरी आक्रमण होने पर एक दूसरे के मददगार होंगे।
५. यदि आपस में झगड़ा हो तो खुदा या रसूल पर छोड़ दिया जायेगा।
६. यदि एक फरीक किसी से सन्धि करेगा तो दूसरे फरीक से सलाह लेकर किया जायेगा।
७. मजहबी लड़ाई इस से मुक्त होगी।
८. कुरेश या इनके जासूस को कोई आश्रय नहीं देगा।

सामाजिक सम्बन्ध के बारे में हजरत ने फरमाया है - "या ऐयोहन नासो इन्ना खलक नाकुममिन जक्रियं व उनसा व जाअलनाकूम शकूबों व कबाइला लेतआरिफू मिन्न अक्रम क्रम इन्दल्लोह अत काकूम इन्नल्लाह अलीमुन खबीर अर्थात् हमने तुम सब को एक स्त्री और एक नर से पैदा किया। इसी से तुम्हारे कुन्बे और कबीले बनाये ताकि एक दूसरे को पहचानो। बेशक तुम सब एक ही कुटुम्ब हो। जो इस सत्य को जानता है परहेजगार है, वही बड़ा है और अल्लाह के निकट है। यही आर्यों का विश्वास है "वसुधैव कुटुम्बकम्" वेद वाणी है।

धर्म पालन

रसूले इस्लाम ने उद्घोष किया। "ला इकराहा फिद्दीन" अर्थात् अहिंसा धर्म का वाहन है। धर्म प्रसार, प्रचार और परायणता में जोर जुल्म नहीं होगा।

गीता कहती है:—

यतः प्रवृत्तिर्भूतानां येन सर्वमिदं ततम्।
स्वकर्मणा तमभ्यर्च्य सिद्धि विन्दति मानवः॥

अर्थात्— परमेश्वर को अपने स्वाभाविक कर्म द्वारा पूजा कर।

इस्लाम शब्द "स्लाम" से बना है अर्थात् अमन-शान्ति। "स्लाम वालेकूम", "वालेकूम स्लाम" अभिवादन का अर्थ है आप अमन से रहें। सत्य और अहिंसा इस्लाम का आधार है। मुस्लमान का मोटा अर्थ है "शान्तिदूत"। "लकुमदीन कुम वलेयादीन" अर्थात् तुम्हारा धर्म तुम्हारे साथ और मेरा धर्म मेरे साथ है। तुम्हारा कल्याण तुम्हारे स्वधर्म द्वारा ही होगा। सब का धर्म व्यक्तिगत है। इसकी आजादी अनिवार्य हैं। स्वधर्म ही धारणीय हैं।

धर्म परिवर्तन

धर्म परिवर्तन के सम्बंध में ३:१६ सुरा में हजरत फरमाते हैं। प्रत्येक खुदा के बन्दे के पास इस्लाम की दावत पेश करो। वह कबूल करे तो अल्लाह को सिजदा करो परन्तु यदि वह मुँह फेर ले तो उसे खुदा पर छोड़ कर आगे बढ़ जाओ। तुम्हारा फर्ज केवल अर्ज करना है।

सुरा २२-४१ में फरमाते हैं कि हमने हर कौम को नबी दिये हैं। उन नबियों ने धर्म-शास्त्र दिये। ईश्वर की पूजा के स्थान बनवाये, जहां दीन इलाही का प्रचार हो। मुस्लमान के लिए लाजिम है कि वह हर नबी को माने, हर नबी के धर्म ग्रन्थ को माने और उनके धर्म स्थान का आदर करे।

अहिंसा

सुरा २:१६० में फरमाते हैं कि तुम कभी आक्रान्ता नहीं बनोगे। अपने बचाव हेतु आक्रान्ता से युद्ध कर सकते हो। खुदा आक्रान्ता से कभी प्रेम नहीं करता।

हजरत मुहम्मद की खुदापरस्ती

एक बार नजरान के ईसाईयों का वफद हजरत से मिलने आया। बन्दगी का समय होने पर

हजरत ने उन्हें अपनी मस्जिद में दुआ करने की आज्ञा दे दी। मुस्लमानों द्वारा उजर करने पर हजरत ने कहा– यह मस्जिद खुदा का घर है यहां हर खुदा का बन्दा बन्दगी करने का बराबर हक रखता है। बन्दगी के अनेक तरीके हैं।

काफिर कौन है

हजरत मुहम्मद फरमाते हैं – धर्म पाखण्डी काफिर है। सभी नबियों और उनके द्वारा दिये गये धर्म ग्रन्थों को न मानने वाला काफिर है। धर्म प्रसार में जोर जुल्म करने वाला काफिर है। खुदा की बन्दगी के स्थान की हुरमति करने वाला काफिर है। बांट कर न खाने वाला काफिर है। एक ईश्वर और एक इन्सान की जात व कुटुम्ब को न मानने वाला काफ़िर है। केवल अपने ही नवी को मानने वाला काफिर है। अन्नेसा २५० । २५२ ॥ में फरमाते हैं – बेशक जो लोग अल्लाह और इसके नबियों के बीच भेदभाव करे, इनकी सत्यता पर शक करें और कहें कि इसको मानूगा और उसको नहीं मानूंगा और चाहते हैं कि इसके बीच कोई रास्ता निकाल लें, वही तो वास्तव में काफिर है।

अल्बक्रा २७७ में फरमाया हैः— वला किन्नल-विर्रा मन आमना बिल्लाहे वलयोमिल आखरे वल मलाएक्ते वल किताबे वन्नबीईन ॥

अर्थात् नेकी तो यह है कि आदमी परमात्मा और अन्त पर तथा तमाम देवताओं और धर्म ग्रन्थों पर इमान लाये।

अल्वक्रा २८५ ॥

कुल आमना बिल्लाहे वल मलाएक्त ही व कुतोवही व रोसोली । लानोफ़ॅको सेना आहादिम मिर्रोसोली ॥ अर्थात् ईश्वर और उसके पैगम्बरों तथा धर्म-ग्रन्थों पर ईमान लाये और इनमें भेद न समझें।

हजरत मुहम्मद दुआ पढ़ते समय सदा यह जुमला कहा करते थे।

" सब नबी बरहक थे और मुहम्मद भी वर हक है"। हजरत मुहम्मद किसी को भी मुस्लमान नहीं बनाते थे जब तक वह संसार के सभी मसीहाओं की यकसां सदाकत हकानियत, रास्तबाजी, और मासूमियत का इकरार न कर ले (५८१)

सनातन धर्म

सुरा २२ ॥२५॥ हजरत मुहम्मद रसूले इस्लाम साहव ने उद्घोष किया कि संसार में दीनेइलाही आदिकाल से एक ही है और अन्त तक वही सनातन धर्म रहेगा। केवल शरीयत काल, पात्र और देश के साथ बदलती रहती हैं।

हजरत ने स्पष्ट शब्दों में उद्घोष किया था कि वह कोई नया दीन चलाने नहीं आये हैं। वह तो सनातन धर्म का पुनर्स्थापन करने हेतु भेजे गये हैं।

अलमोमिन ७८ में फरमाते हैः—

बलकद अरसलना रसूलम मिन्नकबलका मिनहुम मन कस्सना आलका व मिन्नहूमल्लहूम नकसुस अलका।

अर्थात् फिरश्ता जबरैल हजरत से फरमाते हैं- तुमसे पहले हम बहुत से रसूल भेज चुके हैं। इनमें से कुछ के हालात हमने तुम्हें बताये हैं और बाकी के नहीं।

हजरत ने उनसे पूर्व एक लाख चौबीस हजार नबियों के आये होने का जिक्र किया है।

धर्म इतिहास के ज्ञाता जानते है। इस काल में आर्य पांचवी मूल जाति पृथ्वी पर रहती है और वेद इनके धर्म शास्त्र है। आज मानव के पास वेदों से पुराना धर्म शास्त्र कहीं नहीं है। हजरत मुहम्मद ने आर्य धर्म के ही पुनर्स्थापन की बात कही।

हजरत का भारत प्रेम

हजरत मुहम्मद आर्यावर्त की ओर मुख करके नमाज पढ़ा करते थे। एक बार पूछने पर रसूले इस्लाम ने कहा कि मैं भारत की ओर इसलिए मुँह करके दुआ करता हूँ क्योंकि मुझे हिन्दुस्तान की ओर से वहदानियत के झोंके आते हैं। हजरत इकबाल ने इस बात को अपने शब्दों में यों कहा हैः—

वहदत की लय सुनी थी दुनियाँ ने जिस मकां से
मीरे अरब को आई ठण्डी हवा वहां से।

हजरत मुहम्मद की दावते इस्लाम

हजरत मुहम्मद ने हिजरी ५७ में बादशाहों को इस्लाम कबूल करने के दावतनामे भेजे। रोम के कैसर; शाह ईरान; शाह हब्सा; शाह मिश्र; शाह यमन; शाह बहरीन; ऊमान इत्यादि। परन्तु भारत के किसी भी प्राणी को नहीं भेजे। हजरत मुहम्मद रसूले इस्लाम को मालूम था कि खुदा ने उन्हें किन लोगों के लिए भेजा था और इस्लाम द्वारा किन का कल्याण होना था।

खान बादशाह ने पिछले दिनों कितना सत्य कहा था " हम सब आर्य हैं और मजहब हमें अनार्य नहीं बना सकता।"

नजरान के ईसाइयों से व्यवहार

नजरान के लोगों के लिए हजूर ने फतवा दिया सभी मत वाले आजादी से अपने धर्म का पालन करें। ईसाइयों के गिरजाघर में स्थापित मूर्तियां तथा पादरी सुरक्षित रहेंगे। पादरी के कहने पर कि हजरत गिरजा घर में निजाम पढ़े तो हजरत ने यह कहा

(शेषांश पृष्ठ १९ पर)

(शेषांश पृष्ठ ४ का)

की अशिक्षित जनता इन ऐय्याश व रसीले सामन्तों को देवताओं की तरह पूजती हैं । अतः इनके सामाजिक, सांस्कृतिक व परम्परागत अस्तित्व या 'इमेज' को सुरक्षित रखा जाये । परन्तु प्रशासनिक अधिकारों को सीमित व नियंत्रित कर दिया जाये ।

भारत एक मण्डी से अधिक कुछ नहीं बन सका

इस प्रकार जहाँ साम्राज्यशाहों ने देशी सामन्तों के राजनीतिक व आर्थिक अधिकारों को नियंत्रित कर कम्पनी सरकार की सत्ता का क्षेत्र बढ़ाया वहीं इनके अस्तित्व को जीवित रख कर इनके माध्यम से भारतीय जनता पर शासन किया तथा उसके सम्भावी विद्रोह पर भी अंकुश रखा । कुल मिलाकर मार्क्स के शब्दों में — 'देशी राजा-महाराजा अंग्रेजी शासन की वर्तमान पद्धति के दुर्ग हैं और भारत की उन्नति के रास्ते में सबसे बड़ी रुकावट है ।' वे आगे लिखते हैं— 'जहाँ तक पेनशनयाफ्ता राजाओं-महाराजाओं का सम्बन्ध है, ब्रिटिश सरकार ने भारतीय राजस्व में से उनको २४ लाख ६८ हजार ६६६ पौंड देना निर्दिष्ट किया है । जो लोग केवल चावल खाकर जीते हैं और जिन्दगी की प्राथमिक आवश्यकताओं से भी वंचित हैं, उनके लिए यह खर्च असह्य बोझ है। गिरावट और बेहूदगी के निम्नतम स्तर पर अपने राजवंश की नुमाइश करने के अतिरिक्त ये राजा-महाराजा और कुछ नहीं जानते ।

जहाँ ब्रिटेन में अंग्रेज पूंजीपतियों ने सामन्तों के सामाजिक प्रभाव को भी लगभग समाप्त कर दिया था, वहीं भारत में अन्तिम समय तक इस वर्ग के प्रभाव को अक्षुण्ण बनाए रखने की हर सम्भव कुचेष्टा की गयी । फलस्वरूप भारत का अर्थतन्त्र सौदागरी पूंजी एवं वित्तीय पूंजी पर ही आधारित रहा । जिस स्तर पर यूरोप में स्वतन्त्र पूंजी का नियोजन हुआ, भारत में उसकी अनुपस्थिति रही । कहने का अर्थ है भारत में सामन्ती व्यवस्था को समाप्त कर एक स्वतन्त्र औद्योगिक पूंजीवादी व्यवस्था का जो निर्माण होना चाहिए था वैसा नहीं हो सका । भारत एक मण्डी से अधिक और कुछ न बन सका । अंग्रेज चाहते भी यह थे । अंग्रेजों ने महाजनी पूंजी को अवश्य पनपने दिया या पनपाया जिसका प्रभाव सर्वत्र फैला ।

सामन्तों ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की

इन परिस्थितियों में भारत १८५७ की तरफ तेजी से बढ़ता जा रहा था । भारत एक ऐसी व्यापक जन-संग्राम की तैयारी कर रहा था जिसने साम्राज्यशाहों की घिनौनी सत्ता को बुरी तरह से झकझोरा । उसके आधार स्तम्भों की जड़ें हिला दीं । यदि सिंधिया, निजाम और पंजाब के सामन्त संग्रामी सैनिकों के साथ देते तो निश्चित ही साम्राज्यशाह १८५७ में ही कुचल दिए जाते । काश ! ऐसा हुआ होता !

इससे पूर्व कि हम १८५७ के मुक्ति संग्राम के चरित्र और उसमें सक्रिय शक्तियों द्वारा निभाई गई भूमिका पर चर्चा करें, पहले सामन्तों की वास्तविक स्थिति पर विचार कर लेना चाहिए, जिससे कि एक साफ तस्वीर सामने आ सके । इसमें कोई सन्देह नहीं कि १८५७ के मुक्ति संग्राम के दौरान सामन्तों की एक महत्वपूर्ण भूमिका रही है, जिसे आसानी से नजर-अन्दाज नहीं किया जा सकता ।

सामन्तों की भूमिका के सम्बन्ध में इतिहासकार एकमत नहीं हैं । मुख्यतः तीन पक्षों में विभाजित हैः पहला, सामन्तों ने राष्ट्रवाद से प्रेरित होकर संग्राम में भाग लिया, दूसरा प्रारम्भिक चरण में निजी स्वार्थों से प्रेरित और तीसरा शुद्ध रूप से अंग्रेजों की दलाली की यानि दलाल वर्ग । अब हम सिलसिलेवार तीनों मतों पर विचार करते हैं ।

पहले पक्ष के समर्थकों का मत है कि देशी राजा-महाराजा व नवाबों ने १८५७ के मुक्ति -संग्राम में शुद्ध देश भक्ति एवं राष्ट्रवाद से प्रेरित होकर भाग लिया था । वे भारतीय संस्कृति, परम्परा, धर्म आदि की रक्षा करना चाहते थे । इसलिए विदेशी शासन को समाप्त करना वे अपना परम-नैतिक व धार्मिक कर्त्तव्य मानते थे । इस पंथ के स्वतन्त्रता सेनानी वीर सावरकर का मत है कि 'स्वधर्म' एवं 'स्वराज्य' ने ही १८५७ की क्रान्ति को जन्म दिया है । वह यह स्वीकारते हैं कि कारतूस जैसी छोटी-छोटी बातें इस महा-क्रांति को जन्म नहीं दे सकती, जिसमें राजा-रंक, सैनिक और नागरिकों ने समानरूप से भाग लिया । परन्तु सावरकर यह भी मानते है — "जब कभी देशी रियासतों के प्रमुखों (सामन्त) ने क्रान्ति (१८५७) में शामिल होने से इन्कार किया, तो उन्हीं रियाशतों की जनता अनियंत्रित हो गई तथा शामिल न होने पर उसने संबधित प्रमुख की सत्ता उखाड़ फेंकने की, कोशिश की, ताकि वह राष्ट्रीय संग्राम में सम्मिलित हो सके । इससे यह बात तो साफ हो जाती है कि स्वधर्म या स्वराज्य से भी परे कोई 'प्रेरक शक्ति' थी, जिसने सामन्तों को संग्राम में भाग लेने के लिए बाध्य किया अन्यथा सावरकर को उपर्युक्त वाक्य लिखने की आवश्यकता न पड़ती । जहां तक राष्ट्रवाद का प्रश्न है, इस पर लगभग सभी इतिहासकार एकमत है कि भारत में १८वी व १६ वीं शताब्दी के मध्य तक राष्ट्रवाद का आधुनिक प्रचलित रुप नहीं था । १६ वीं शताब्दी के अन्तिम दशकों में राष्ट्रवाद की लहर व्यापक पैमाने पर फैली थी । इतिहासकार आर० सी० मजूमदार का मत है कि १८५७ या इससे पूर्व राष्ट्रीय संग्राम की उपेक्षा नहीं की जा सकती क्योंकि सही अर्थों में रा,वाद एवं देश भक्ति का उस समय उदय ही नहीं हुआ था । यद्यपि इस पर भी मतभेद हैं । परन्तु सावरकर का मत इससे स्वयं खण्डित हो जाता

(शेषांश पृष्ठ ३ का)

पूँजीवाद विरोधी समाजवादी क्रांति में नहीं परिणत हो जाता तब तक देश के वर्तमान आर्थिक ढांचे में बुनियादी परिवर्तन नहीं होगा और जन जीवन की बुनियादी समस्याओं के समाधान के वांछित लक्ष्य को नहीं प्राप्त किया जा सकता।

६ मार्च के प्रदर्शन के पश्चात् संकटकालीन स्थिति को खत्म करने के लिए पूरे देश में आन्दोलन चलाया जाएगा। इसीलिए ६ अप्रैल को देश भर में 'संकटकालीन स्थिति हटाओ" दिवस मनाने का आह्वान किया गया है। इसी बीच राज्यों के राजधानियों में भी ६ मार्च जैसे प्रदर्शन किए जायेंगे। उत्तर प्रदेश, हरियाणा, गुजरात और मध्यप्रदेश में अपने-अपने ढंग से आंदोलन का सचालन होगा। इसी कार्यक्रम के माध्यम से मीसा और भारत सुरक्षा अधिनियम के दुरुपयोग पर भी जनता को जागरूक किया जायेगा। इसी तरह आकाशवाणी को निगम बनाने का भी आंदालन किया जायेगा जिससे आकाशवाणी विरोधी दलों के साथ सौतला व्यवहार न कर सके।

राष्ट्रीय जन सम्पर्क समिति को विश्वास है कि इसमें देश भर से कम से कम दस लाख लोग अवश्य भाग लेंगे। इस प्रदर्शन में अधिकतर उत्तर प्रदेश और हरियाणा के जिलों, राजस्थान, पंजाब और मध्यप्रदेश से आयेंगे। आज वर्तमान सत्ता के विरुद्ध जनता में सर्वत्र असन्तोष और अविश्वास का वातावरण व्याप्त है। वह अब अपनी जीवन की असहनीय स्थिति के विपरीत उठ खड़ी हुई है। अतः ६ मार्च के प्रचण्ड जन-प्रदर्शन की सफलता असंदिग्ध है। यद्यपि इस क्रान्ति गर्भित जन-प्रदर्शन को विफल करने का सरकार हर सम्भव प्रयास करेंगी परन्तु उसे इसमें वांछित सफलता नहीं मिलेगी।

(शेषांश पृष्ठ १७ का)

है कि 'सामन्तों ने स्वेच्छा' से भाग नहीं लिया था। भाग भी लिया तो आधे-अधूरे मन से। सम्भवतः इसी लिए सावरकर को स्वीकार करना पड़ा —"यदि जनता के समक्ष स्पष्ट रूपरेखा होती, नये आदर्श होते, जो कि उसके हृदय को स्पर्श करते और आकृष्ट करते, तो निश्चित ही क्रान्ति का उदगम और समापन आरम्भ की तरह महान सफलता प्राप्त कर सकता था।" उन्होंने यह भी माना है कि सामन्तों के पारस्परिक संघर्षों ने विदेशी ताकतों को भारत में स्थापित होने के लिए प्रोत्साहित किया। स्वयं ब्रिटिश लेखक सर जोर्ज मंकमन ने स्वीकार किया है– "भारत के नरेश, या तो विद्रोह के लिए उपस्थित अवसर से फायदा नहीं उठा सके या फिर इसका विरोध करने व दबाने में सक्रिय रहे।

(क्रमशः)

समाचार दर्शन

दशम वार्षिक महोत्सव

हापुड़ । गुरुकुल महाविद्यालय ततारपुर डा० बाबूगढ़ छावनी (मेरठ) का दशम वार्षिक महोत्सव २२ से २५ मार्च १६७५ ई० को बड़े उत्साह पूर्वक मनाया जा रहा है जिसमें ब्रह्मचारियों के द्वारा व्याख्यान एवं शारीरिक प्रदर्शन का विशेष आयोजन किया जा रहा है । इसके अतिरिक्त आर्यजगत के विद्वान सन्यासी उपदेशक पधार रहे हैं जो विशेष सम्मेलन आयोजित करेंगे । अतः करबद्ध प्रार्थना है कि उत्सव पर पधार कर धर्म लाभ उठावें और उत्सव की शोभा बढ़ावें ।

आचार्य
धर्मपाल शास्त्री

शक्तिनगर दिल्ली में आंखों के मुफ्त आपरेशन

दयानन्द धर्मार्थ औषधालय शक्तिनगर की ओर से १५-३-७५ को अग्रवाल भवन २१/५ में आंखों का मुफ्त इलाज तथा आपरेशन होंगे । चारपाई तथा भोजन, चाय आदि का प्रबन्ध भी मुफ्त होगा ।

बन्सीलाल की पुलिस द्वारा मूनक (घरौण्डा) करनाल में हरिजनों पर अत्याचार

एक चोरी के केश में रिमाण्ड का बहाना बनाकर घरौंडा थाने की पुलिस ने एक २१ वर्षीय हरिजन लड़के को मूनक गांव से पकड़ कर पुलिस स्टेशन ले आयी । घरौंडा पुलिस स्टेशन में उसे बुरी तरह बेरहमी के साथ पीट कर मौत के घाट उतार दिया गया, ऐसा बताया जाता है । इस मामले में मूनक गाँव का सरपंच जो एक कांग्रेसी आदमी है, उसका अधिक हाथ है, ऐसा बताते हैं । उसने पुलिस की मदद से उस गरीब हरिजन को मौत के घाट उतरवाया । उस सरपंच ने झूठे गवाह तैयार कर लिये है जो यह कह रहे हैं कि हरिजन का लड़का दिल्ली को जाने वाले पानी के नाले में कूद कर मर गया है ।

ऐसी स्थिति में हरयाणा की सरकार को इस दर्दनाक अमानवीय घटना की शीघ्रता से निष्पक्ष न्यायिक जांच करवानी चाहिए जिससे अपराधियों को उनके कुकृत्य का दण्ड मिल सके और शोषित एवं उत्पीड़ित हरिजन परिवार को न्याय मिल सके ।

भारतीय आर्यसभा उत्तरप्रदेश

बिजनौर । १६ फरवरी दिन रविवार को आर्यसमाज बिजनौर में भारतीय आर्यसभा उत्तरप्रदेश शाखा तथा भारतीय आर्यसभा जिला बिजनौर की एक संयुक्त बैठक श्री प्रयागदत्त जी (प्रधान आर्यसमाज बिजनौर) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । इस अवसर पर श्री राजपाल आर्य (महामन्त्री भा० आर्यसभा उत्तरप्रदेश) ने आर्यसभा की नीतियों पर प्रकाश डाला । श्री योगेन्द्र कुमार (मंत्री भा० आर्यसभा जिला मु० नगर) ने पूँजीवादी व्यवस्था की तीव्र आलोचना करते हुए वर्तमान समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, बेरोजगारी तथा चोरबाजारी जैसी कुरीतियों को दूर भगाने के लिए 'वैदिक समाजवाद' की प्रगतिशील विचारधारा की आवश्यकता पर बल दिया । श्री प्रयागदत्त जी ने अध्यक्ष पद से बोलते हुए कहा कि सभी आर्य युवकों को विभिन्न दलों के भटकाव में न आकर आर्यसभा में योगदान देना चाहिये । अन्त में सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित किये गये ।

१. भारतीय आर्यसभा जिला बिजनौर के संयोजक श्री रामगोपाल नियुक्त किये गये ।

२. जिला बिजनौर में संगठन हेतु आर्यसमाज के जलसों का आयोजन किया जायेगा ।

३. भारतीय आर्यसभा की महासमिति के निर्णयों को अमल में लाने के लिए तुरन्त कदम उठाये जायेंगे ।

आर्य युवक परिषद, खन्ना (पंजाब)

आर्य युवक परिषद् खन्ना की बैठक दिनांक १२. १. ७५ रविवार को मोहनलाल जी की अध्यक्षता में हुई और निम्न प्रकार से चुनाव हुआ ।

१. प्रधान	श्री वृजेन्द्र मोहन आर्य
२. मन्त्री	" अशोक आर्य
३. कोषाध्यक्ष	" सुदेश आर्य

पृष्ठ १६ का शेषांश

ऐसा अन्याय न हो जाये कि किसी समय उनके अनुयायी गिरजाघर को मस्जिद बना बैठे ।" अतः इन्होंने बाहर निकल कर खुले स्थान पर नमाज पढ़ी ।

रसूले इस्लाम वेद वाणी "सर्वधर्म समभाव" को मानते थे । मूर्ति पूजा को धर्मांध तथा धर्म पाखण्ड मानते थे ।

(क्रमशः)

राजधर्म

पंजीयन क्रमांक RTK 28

Lic. to Post without

Pre Payment No. P-13

रोहतक

२८ फरवरी १९७५

हमारे विशेष उपहार
तथा
स्वर्ण मिश्रित औषधियां

च्य व न प्रा श

उत्तम पौष्टिक रसायन है। दैनिक नाश्ते में च्यवनप्राश का सेवन ... बलिष्ठ बनाता है। अब दो किलो के पकिंग में उपलब्ध है।

सि द्ध म क र ध्व ज

यौवन को स्थिर रखता है। शरीर में ताजगी लाता है।

बसन्त कुसुमाकर रस

पेशाव अधिक आने को कम करता है एवं समस्त मूत्र विकारों में लाभदायक है।

यो गे न्द्र र स

अनिन्द्रा, बेचैनी, अङ्गों की शिथिलता में सेवन कीजिए।

श्वास चिन्तामणि रस

श्वास रोगों में लाभप्रद है।

महालक्ष्मी विलास रस

उत्तम शक्तिवर्धक रसायन है।

चन्द्रप्रभावटी

शरीर में शक्ति एवं ताजगी पैदा करती है।

गुरुकुल कांगड़ी चाय

खांसी, जुकाम, ज्वर को दूर कर शरीर में ताजगी लाती है। दैनिक प्रयोग के लिए सर्वोत्तम है।

निर्माता : गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी

जिला सहारनपुर : रेलवे स्टेशन हरिद्वार। दूरभाष ।७३

शाखा कार्यालय :

गुरुकुल कांगड़ीफार्मेसी, ६३, गली राजा केदारनाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-६ दूरभाष ।२६१४३८

राजधर्म प्रकाशन के लिये राजधर्म प्रेस, रोहतक से स्वामी अग्निवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। फोन : ८८२।

राजधर्म

पिरामिड का परिवर्तन या लोकतंत्र की सिद्धि

अंग्रेजी: जो हमारी जड़ें खोखला कर रही है

धधकता जन-आक्रोश और डोलती कुर्सियाँ

विषमता-गरीबी-बेरोजगारी की काली आंधी

आपातकालीन स्थिति समाप्त करो

भगतसिंह द्वारा शहादत की पेशकश

संसद को जनता का मांग पत्र

3/4/75

७ अङ्क ६
मार्च द्वितीय
: ८८२।

प्रधान सम्पादक : स्वामी अग्निवेश
सह-सम्पादक । गिरजेश्वर

वार्षिक १५ रु०
एक प्रति ७० पैसे

आपातकालीन स्थिति खत्म करो

१५ अगस्त १९७२ को भारत की जनता ने स्वतंत्रता की रजत जयन्ती और २६ जन० ७५ को भारतीय संविधान की रजत जयन्ती मनायी । परन्तु यह अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है आज देश में संवैधानिक तानाशाही चल रही है । भारतीय जनता नागरिक स्वतंत्रताओं से वं० है । अशिक्षा तथा राजनैतिक दृष्टिकोण से चेतनाशील न होने के कारण अधिकांश भारतीय जनता इस बात का तनिक भी अहसास नहीं है कि १९७१ में पाकिस्तान से युद्ध के समय लागू संकटका० स्थिति से केन्द्रीय सरकार को कितने अधिकार प्राप्त हैं । इस स्थिति की विद्यमानता में संविधान बिना संशोधन किये वह अपने कार्यकाल को अनिश्चित काल तक बढ़ा सकती है । इस माम० न्यायपालिका भी हस्तक्षेप नहीं कर सकती । संविधान का संकटकालीन स्थिति वाला अध्याय हम० सरकार को बाकी सभी लोकतन्त्रीय संविधानों की बजाय ज्यादा व्यापक अधिकार प्रदान करता यदि एक बार संसद दो महीने से अधिक संकटकालीन स्थिति जारी रखने की स्वीकृति दे देती है वह अनिश्चित काल तक लागू रह सकती है । वह केवल तभी समाप्त हो सकती है जब कि राष्ट्र० अपनी इच्छानुसार उसे समाप्त करे । हमारे संविधान में आपातकालीन स्थिति को समाप्त करने खुद ब खुद कहीं भी कोई जिक्र नहीं है । यद्यपि हमारे संविधान का चरित्र संघीय है और सामान्य० यह सरकार को तानाशाह नहीं बनने देता है । परन्तु संकट कालीन कानून हमारे संविधान के सं० चरित्र को ही उलट देते हैं और वे संविधान को एक प्रकार से एकात्मक बनाकर छोड़ देते हैं ।

ऐसी स्थिति में भारतीय जनता के पास जनान्दोलन के अतिरिक्त अन्य कोई मार्ग शेष न० रहता जिसका अवलम्बन कर जनतन्त्र विरोधी इस स्थिति का समाप्त किया जा सके । विरोधी० इसे समाप्त करने की अनेक बार मांग कर चुके हैं । सर्वोच्च एवं उच्च न्यायलयों के न्यायाधीश इस सम्बन्ध में अनेक निर्णय दे चुके हैं । सर्वोच्च न्यायालय के न्यायाधीश श्री वी० आर० कृष्ण अ० ने पिछले महीने अपने एक निर्णय में कहा था— "नागरिक स्वतंत्रता के समर्थकों के लिए आप० कालीन स्थिति की छाया एक भयंकर अभिशाप है ।" इसके बावजूद भी सरकार आपातकालीन स्थि० समाप्त करने की घोषणा नहीं करती । सरकार आन्तरिक उपद्रव और आर्थिक संकट के नाम इस संकट कालीन स्थिति को कायम किये हुए है ।

अतः यदि हम चाहते हैं कि इस देश में बंगला देश की स्थिति न दुहरायी जाय तो आपात कालीन स्थिति को समाप्त करने के लिए ६ अप्रैल को संकट कालीन विरो० दिवस को सफल बनाने के लिए सचेष्ट प्रयास करना चाहिए । ६ मार्च के ऐतिहासिक प्रदर्शन बाद लोकनायक जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन का यह अगला चरण है । ६ अप्रैल का ऐतिहा० महत्त्व भी है । १९१९ में इसी दिन महात्मा गांधी ने विदेशी शासन के दमनकारी कानून रौलट ए० के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ा था । इसी ऐतिहासिक महत्त्व को दृष्टि में रख कर ही ६ अप्रैल को आ० कालीन विरोधी दिवस मनाने का फैसला किया गया है ।

आज जिस आन्तरिक उपद्रव और आर्थिक संकट को आधार बना कर संकट कालीन स्थि० को कायम रखा जा रहा है, वास्तव में उस स्थिति को कांग्रेसी सरकार ने ही अपने २७ वर्षों पूंजीवादी नीतियों के कारण उत्पन्न किया है । आज निजी स्वामित्व पर आधारित उत्पादन सम्ब० और अत्यधिक मुनाफे की प्रवृत्ति के आधार पर संचालित पूंजीवादी समाज व्यवस्था में देश के त० की समस्याओं का समाधान असम्भव है । इसीलिए वर्तमान ढांचे में समस्याओं का समाधान न क० कर सरकार का तानाशाही प्रवृत्ति की ओर अग्रसर होना लाजिमी है । अतः वह आपातकालीन स्थि० को समाप्त करना उचित नहीं समझती । परन्तु सरकार दमनात्मक तरीके अपना कर ज्वालामु० की तरफ अग्रसर राष्ट्र व्यापी प्रबल जनाक्रोश को अधिक समय तक नहीं दबाये रख सकती । ६ को दिल्ली में सम्पन्न होने वाले विशाल प्रदर्शन ने यह प्रमाणित कर दिया कि जनता शोषण आधारित वर्तमान व्यवस्था को नहीं बर्दाश्त करेगी । वास्तव में जब तक पूंजीवादी व्यवस्था को क० की चोट से उखाड़ फेंकने का जनान्दोलन प्रचण्ड रूप नहीं धारण करेगा, तब तक सरकार संवैधा० तानाशाही का शिकार जनता को बनाकर नागरिक स्वतन्त्रताओं का बेतहाशा हनन करती रहेगी ।

आज जनता सरकार से प्रश्न पूछ रही है कि युद्ध कालीन स्थिति खत्म हो चुकी है

जब शिमला समझौता सम्पन्न हो चुका है, युद्ध बन्दी लौटा दिए गए और उसके बाद देश में सामान्य स्थिति में हो सकने वाले आम चुनाव भी सम्पन्न हुए, राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति के भी चुनाव हुए तथा पाकिस्तान से व्यापार एवं संचार सम्बन्ध जारी करने के समझौते भी अमल में लाये गये तो फिर आपात स्थिति क्यों किसी न किसी बहाने कायम हैं। चूंकि सरकार जनता के इस जनतांत्रिक एवं न्यायोचित प्रश्न का उत्तर अपनी घोर नीचतापूर्ण तानाशाही प्रवृत्ति से दे रही है इसलिए भारत की जनता ६ अप्रैल को देशव्यापी संकटकालीन विरोधी दिवस के रूप में अपने प्रबल आक्रोश को व्यक्त कर सरकार के इस नीचतापूर्ण प्रवृत्ति का उत्तर देने का फैसला कर चुकी है।

गिरजेश्वर

दिवालिया सरकार का जानलेवा बजट

वित्तमन्त्री श्री चिदम्बरम सुब्रह्मण्यम द्वारा २८ फरवरी को संसद में १९७५-७६ का आम बजट प्रस्तुत किया गया। यह भारत का सबसे भारी बजट एक खरब सात अरब अड़सठ करोड़ रुपये का है। यह स्वतंत्रता के बाद पहला वर्ष है जबकि बजट को राशि दस हजार करोड़ रुपये से ऊंची गयी है। यह गत वर्ष की अपेक्षा १९ अरब रुपये अधिक का है।

यह बजट हर वर्ष की भाँति अधिकतम सामाजिक न्याय और आत्मनिर्भरता, तेजी के साथ विकास और स्थिरता की आवश्यकताओं में समुचित संतुलन कायम करने के नाम पर प्रस्तुत किया गया है परन्तु सच्चाई इसके ठीक विपरित है। इस बजट द्वारा जनता पर अत्यधिक भार लाद दिया गया है। यह कीमतों के बोझ से कराह रही जनता की पीड़ा को घटाने वाले कदमों को उठाने के बजाय, फिजूलखर्ची बढ़ाने वाला, कालाधन पनपने में सहायता देने वाला तथा इजारेदारों को लूट की खुली छूट देने वाला गैर समाजवादी बजट है। यह जनता के शोषण में एक और दस्तावेज के रूप में सामने आया है। गरीब जनता का गला घोटने वाला और बड़े बड़े पूंजीपतियों के पक्ष में राष्ट्रीय आय का पुनर्वितरण करने वाला वर्तमान बजट हर वर्ष को भाँति इस वर्ष भी कांग्रेसी सरकार के आर्थिक व्यायाम के नगे प्रदर्शन को हो स्पष्ट करता है। देशव्यापी मन्दी के भार को जनता के ऊपर लादकर प्रशासन और निहित स्वार्थों को इस बजट द्वारा पर्याप्त संरक्षण प्रदान किया गया है।

जहां देश की गरीब जनता से विभिन्न मदों में नये सिरे से २८८ करोड़ रुपये वसूल किये जायेंगे वहीं उत्पादन वृद्धि और पूंजी नियोजन को प्रोत्साहन देने तथा कृषि विकास के नाम पर उद्योगपतियों एवं भू-स्वामियों को नये सिरे से कई सुविधाएँ दी जायेंगी। रेल बजट ने अनाज की ढुलाई पर खर्च को बढ़ा कर पहले ही गरीबों को रोटी को और अधिक महंगा कर दिया है। अब इस आम बजट ने भी गरीबों की बोझ से दबी जनता की स्थिति को और अधिक असहनीय बना दिया है।

चीनी, खांडसारी, चाय, सीमेन्ट, पेट्रोलियम से बनी चीजें, एल्यूमिनियम, बिजली की तार और पंखे, रैग्स, पैकिंग पेपर, पल्प बोर्ड आदि वस्तुओं पर कर बढ़ा कर कुल राजस्व में अप्रत्यक्ष करों के अनुपात को और अधिक बढ़ा दिया है। अब तक कुल राजस्व का ८० प्रतिशत से भी अधिक भाग अप्रत्यक्ष करों से वसूल किया जाता रहा है। अप्रत्यक्ष करों का अत्यधिक प्रभाव देश की गरीब जनता पर ही अधिक पड़ता है क्योंकि पूंजीपति अपने मुनाफों में कमी करके इस कर को कभी नहीं चुकाते हैं। इसका प्रत्यक्ष प्रभाव मूल्य वृद्धि होती है जिसकी मार गरीब जनता पर पड़ती है।

इसके अतिरिक्त केन्द्रीय विक्री कर को ३प्रतिशत से बढ़ा कर ४ प्रतिशत करके अधिकांश उपभोक्ता वस्तुओं को महंगा कर दिया गया है। इसके पूर्व ऐसा क्रूर कदम नहीं उठाया गया था। इस कदम का प्रभाव कारखानों में बनी हर चीज तथा अखबारों, किताबों और पत्रिकाओं सहित छापाखाने से निकलने वाली हर वस्तुओं पर पड़ेगा। इस प्रकार केन्द्रीय उत्पादन शुल्क में वृद्धि से कुल २५० करोड़ रुपये, सीमा शुल्क से ३४ करोड़ रु०, कम्पनी करों से ११ करोड़ रुपये और केन्द्रीय विक्री कर से २ करोड़ रुपये की अतिरिक्त आमदनी की जायेगी।

वर्तमान बजट में गरीबों के दैनिक जीवन से सम्बन्धित वस्तुओं जैसे चाय, किरासिन ते
कपड़ा. चीनी आदि को महंगा कर जहां गरीबों की जिन्दगी को तबाह किया गया है, वहीं समा
के समृद्ध वर्ग तथा उद्योगपतियों को प्रत्यक्ष करों में प्रर्याप्त राहत प्रदान किया गया है।. वास्तव
व्यक्तिगत आयकर की वतमान दरों में कोई परिवर्तन नहीं किया गया है। यह अत्यन्त खलने वाल
बात है।

पूंजी नियोजन को बढ़ावा देने के नाम पर सामान्य शेयरों में लगी पूँजी को पांच वर्षों के लि
छूट देने का प्रस्ताव किया गया है तथा लाभांश कानून को पहले की अपेक्षा अधिक उदार बनाया गय
है। इसके अतिरिक्त कई विशेष उद्योगों को जिनका उत्पादन एक अप्रैल १६७६ के पहले शुरू होने
वाला है, पांच वर्षों के लिए कर अवकाश की छूट दी गयी है। इन शेयरों तथा लाभांशों से देश के
अधिकांश जनता की जिन्दगी से कुछ भी सम्बन्ध नहीं है क्योंकि आज देश की दो तिहाई आबादी
को दरिद्रता की सीमा रेखा के नीचे घोर विपन्नता में जीवन यापन करना पड़ रहा है।

जहां तक कम वेतन पाने वाले कर्मचारियोंऔर मजदूरों का सम्बन्ध है, उन्हें पहले ही से वेतन
जाम तथा जरूरी जमा कानूनों ने तबाह कर रखा है, और इस बजट में इस बात के संकेत दि
गए हैं कि सरकार वेतन वृद्धि तथा महंगाई भत्ते सम्बन्धी कर्मचारियों की मांगों के साथ कठोरता
अपनायेगी। वित्त मन्त्री ने इसीलिए, कीमतों, आय और वेतन में बार-बार तालमेल स्थापित करने की
बात को 'सुनियोचित' वृद्धि की प्रक्रिया में भारी रूकावट बताया है।

अतः सरकार 'समाजवाद' और "गरीबी हटाओ" की जितनी भी बातें करें, परन्तु पिछले २
वर्षों के कटु अनुभव ने यही प्रमाणित किया है कि कांग्रेस सरकार एकाधिकारी पूँजीपतियों की
गुलाम और पहरेदार के अतिरिक्त कुछ नहीं है। यह सरकार इजारेदारों तथा बड़े-बड़े भू-स्वामियों
की फिजूलखर्ची एवं बेहद मुनाफे पर पाबन्दी लगाने की शक्ति नहीं रखती। इसीलिए भारत की
प्रधानमन्त्री से लेकर सभी कांग्रेसी नेता क्रयशक्तिहीन जनता से ही बचत करने का अनुरोध करते
हैं।

कृषि विकास पर व्यय

बजट में कृषि उत्पादन को प्रश्रय देने के नाम पर कृषि क्षेत्र में अधिक पूँजी लगाने की बात कही
गयी है। इस क्षेत्र के विकास-व्यय हेतु २७० करोड़ रुपये रक्खे गये हैं। परन्तु कृषि क्रान्ति या हरित
क्रान्ति, बिना वास्तविक भूमि सुधार के असम्भव है। भूमि व्यवस्था में आमूल सुधार बिना कृषि-क्षेत्र
में लगायी गयी पूंजी का परिणाम देहातों के सम्पन्न तबकों की जेबों को भरना ही होगा। प्रायः २
वर्ष पूर्व भूमि सुधार कानून विभिन्न राज्यों में पास हुए, लेकिन आज तक उसे लागू नहीं किया गया।
इस सम्बन्ध में तत्कालीन योजना मन्त्री श्री डी० पी० घर ने भी बाध्य होकर स्वीकार किया था
कि भूमि सुधार कागजी बात रह गयी। भूमि के बँटवारे के कार्यक्रम को लागू नहीं किया गया—
(Land reforms had remained on Paper. There was no implementation of the Land
distribution Programme— Statesman 15. 1. 74.)। परन्तु प्रश्न उठता है कि ऐसा क्यों नहीं
हुआ। ग्रामीण जीवन से थोड़ा भी सम्बन्ध रखने वाले यह अच्छी तरह जानते हैं कि ग्राम के सम्पन्न
किसान ही कांग्रेस संगठन के आधार स्तम्भ हैं। आज गांवों की स्थिति यह है कि ५ प्रतिशत ये सम्पन्न
किसान ही गांवों की ५० प्रतिशत भूमि पर अपना आधिपत्य जमाये हुए हैं। इसके साथ ही साथ पिछले
कुछ वर्षों से गरीब किसानों की बेदखलियां सबसे अधिक तेज गति से बढ़ी हैं। यही कारण है कि अब
तक ठीक भूमि सुधार कानून को क्रियान्वित नहीं किया गया। और बिना भूमि सुधार के कृषि क्षेत्र में
अधिक धन नियोजित करके खाद्य समस्या का हल नहीं किया जा सकता। यदि ऐसा सम्भव होता
तो २७ वर्षों के कांग्रेसी प्रयासों से इस समस्या का निदान हो चुका होता।

घाटे का बजट

इसके अतिरिक्त बजट का सबसे महत्वपूर्ण पहलू, घाटे के बजट का है। सरकार १४ वर्षों से
लगातार घाटे का बजट बनाती आ रही है। आय और व्यय के रूप में प्रस्तुत बजट में कुल घाटा ४६४
करोड़ रुपए का है। इसमें २८८ करोड़ रु० के नये कर प्रस्तावों तथा ४६ करोड़ रुपए की नये सिरे से
दी गयी सम्पन्न तबकों को रियायतों के बाद भी कुल २२५ करोड़ का घाटा रह जाएगा। (क्रमशः)

असमानता-गरीबी बेरोजगारी की काली आंधी

○ विजय बहादुर गौड़

आजादी के बाद का इतिहास जनता को दमन के बल पर या तो कुचलने का इतिहास रहा है या फिर वायदों से टहलाने व रंगीन नारों के द्वारा बहकाये जाने का। परिणामस्वरूप दिनों-दिन असमानता की खाई बढ़ती गई। गरीब और गरीब हुआ। अमीरों के तो कहने क्या ? दिन-दूने रात चौगुने उनकी तिजोरियां आबाद होती रहीं, शासन चलाने वालों ने गरीब जनता को प्रत्येक चुनाव पर रंग-बिरंगे नारे देकर अपनी कुर्सी कायम रखने की राजनीति बनाये रखी। नेहरू के शासन में आजादी के गीत गाते पंचवर्षीय योजनाओं की फाइलें बनती रहीं।

इसी बीच युद्ध हो जाने से नया नारा दिया गया 'रक्त करो दान' जी उठे जवान" "आजादी खतरे में।" आदि। इस तरह आजादी के बाद तीन बार युद्ध का सामना भी देश को करना पड़ा। युद्ध के विनाश के बाद जरूरत थी तेजी के साथ विकास करने की। मगर-नारेबाज नेताओं ने असल कारणों को नजरंदाज कर, नारों से ही विकास की भूमिका बांधी। कभी "गमले में गेहूँ उगाओ" या "भूखे मरकर बचत करो"

इस तरह से भूख अभाव का घेरा कसता रहा, जिसे दबाने के लिए फौज-पुलिस का सहारा सरकार को समय-समय पर लेना पड़ा। बिहार का ताजा उदाहरण सामने ही हैं।

देश के महारथी नेहरू के जाने के बाद जनता ने महसूस किया था कि अब निश्चित रूप से कोई व्यापक परिवर्तन आएगा और गरीब परिवार से लाल बहादुर शास्त्री के आने के बाद आशा की एक किरण जो दिखाई दी थी, वह पुनः युद्ध की ज्वाला में शांत हो गई। उसके बाद आई इन्दिरा गाँधी जिन्होंने अपने बाप की तरह 'शब्द अभियान' से देश की पतवार को खेना चाहा और काफी हद तक उन्हें इसमें सफलता भी मिली। जहाँ राज्यों में सरकारों का टूटना शुरू हो चुका था – वहां कांग्रेस अन्तर्द्वन्द से इन्द्रा के जोशिले नारों के प्रभाव से जनता को पुनः आशा की किरण दिखाई दी। और जनता ने बिना सोचे समझे फिर एक बार अपने सरपर वजन धर लिया। जिसका नतीजा लम्बे समय से जनता को भुगतना पड़ रहा है।

वर्तमान में जन-लुटेरों की सरकार दिल्ली में फौज-पुलिस के घेरे में सुरक्षित रह कर नित नये फरमान जारी कर रही है। रंगीन नारों व वायदों के सब्जबाग फेल हो जाने पर 'इन्द्रा-सरकार' का जनविरोधी मोर्चा खुलेरूप में सामने आ गया है। जन-आन्दोलन को फासिस्टवाद की संज्ञा देकर जनता को बरगलाने की चाल डांगे पंथियों के साथ अमल में लाने के लिए शुरू हो चुका है।

ये वही डांगे साहब हैं जिन्होंने विश्व की सबसे लम्बी और सर्वहारा की ऐतिहासिक लड़ाई को, उस मोड़ पर आकर धोखा दिया, जहां पर मजदूरों का फैसला सन्निकट था। मगर ऐन—मौके पर गद्दारी करने की अपनी आदत के अनुसार जिसमें डांगे साहब पूर्णरूपेण मजे हुए हैं। सर्वहारा वर्ग की पीठ में छूरा भोंक दिया गया। और ऐतिहासिक आन्दोलन छिन्न-भिन्न होकर रह गया।

आज जबकि बिहार की जनता करवट ले रही है, भारी तादाद में लोग जेल के सीकचों में सड़ रहे है, २०० के आस-पास लोग मारे जा चुके हैं जन तूफान अपने पूर्णरूपेण बहाव पर आ गया है, तो वे जन-विरोधी सरकार के साथ कथित "लोकतन्त्र बचाओ" अभियान में, जन लड़ाकू शक्ति को छिन्न-भिन्न करने पर आमादा हैं।

सरकार द्वारा पटना में ४ नवम्बर ७४ एवं दिल्ली में ६ मार्च ७५ को होने वाले विशाल प्रदर्शन को नेस्तनाबूद करने के लिए, कटीले तारों का घेरा खड़ा किया गया, फिर भी इसके बाद बिहार ने भ्रष्ट शासन को ४ नवम्बर को तथा देश की जनता ने ६ मार्च ७५ को दिल्ली के शासन को हिला दिया। जयप्रकाश जी की गिरफ्तारी से कोई फर्क पड़ने वाला नहीं। जन-आन्दोलन को नेस्तनाबूद करने के लिए तारों का घेरा खड़ा किया गया, ये ऐसे वारदात हैं जो स्पष्ट रूप से लोकतन्त्र की मान-मर्यादाओं की धज्जियां उड़ा देते हैं। पुलिस, फौज का हजूम, सड़े गले कायदे-कानूनों की पकड़, जब जन आन्दोलन को रोकने में असफल सिद्ध होने लगे तो डांगे पंथियों के साथ नापाक संगम कर, "इन्द्रा सरकार" अपने 'इन्द्राई लोकतन्त्र' को जीवित रखने के लिए गरीब किसान-मजदूरों को उस

जनता को जिसकी कम्युनिस्ट पार्टी के नाम पर श्रद्धा है [और जो पिछड़े असलियत से नावाकिफ हैं] उस श्रद्धा को पिछड़े वर्ग के लोगों के साथ भिड़ा कर, 'चक्रव्यूह' का घेरा खड़ा कर, 'जन अभिमन्यु' का कत्ल कराना चाहती हैं। इतिहास की ये भयंकर भूल अब शायद नहीं होगी, ऐसा आन्दोलन के प्रचण्ड बहाव से स्पष्ट होता जा रहा है।

मीसा का असर फीका

देश व्यापी तस्कर विरोधी अभियान का नाटक आईने की तरह दिखाई देने लगा है। अदालतों में तस्करों द्वारा सरकार के कानून को चैलेन्ज करने पर बेदाग बरी हो जाना जाहिर करता है कि तस्करों के विरुद्ध छेड़ा गया ये अभियान जनता में उठ रहे महंगाई आन्दोलन को ठंडा करने व चुनावी हवा कायम करने का नाटक मात्र था।

अदालतों का इतिहास ये बताता है कि मुकद्मों के फैसले उतने देरी से हो पाते हैं कि मुकदमें लड़ने वाले लोगों के दिमाग का दीवाला ही निकल जाता है। मगर तस्करों के इतने फैसले जाहिर करते हैं कि तस्करों के विरुद्ध कानूनी कार्यवाही इतनी कमजोर थी कि न्यायाधीशों को भी इस पकड़ को 'अनुचित' बताना पड़ा।

सरकार को नजरबन्दी आदेश के जो अधिकार हैं, उसे अधिकारियों ने ठीक ढंग से इस्तेमाल नहीं किया। कारण साफ है कि इन तस्करों से अधिकारियों को लम्बी-लम्बी रकमें बन्धी हुयी हैं। और सरकार में इनकी शाख का अन्दाजा मस्ताना जैसे तस्करों के साथ प्रधानमन्त्री का फोटो खिच जाना सरकारी कर्मचारियों पर धाक रखने के लिए पर्याप्त है। करोड़ों रुपयों की चन्दे की कहानी भी जनता के कानों में झूठी नहीं है।

जन-आंदोलन सच्चा

सरकार का मीसा अदालतों के फैसले से कमजोर हो गया है। परन्तु जनता की पकड़ अब तेज होती जा रही है। २७ वर्षों से भूख-अभाव के शिकन्जे में कसते-कसते जनता अब छटपटाने लगी है। प्रति व्यक्ति ३ किलो माह में राशन वह भी सड़ा-गला भरपेट खाना न मिलना, बेरोजगारी का दिन प्रतिदिन बढ़ना, मजदूर-किसानों की इस शासन में होने वाली आये दिन की दुर्गति ने अब आन्दोलन का रूप ले लिया है।

राजस्थान में जोधपुर-धौलपुर जयपुर में जनता द्वारा लूट का मामला सामने आया है। देश का ऐसा कौनसा भाग है जहाँ पर इस किस्म की वारदातें न हुई हों; आखिर इनके पीछे कारण क्या है? इसे कौन नहीं समझता? सरकार द्वारा असलियत को नजरंदाज करना और पूंजीपतियों के अखबारों द्वारा व रेडियो स्टेशनों से हकीकत पर पर्दा डालने से सरकार को कामयाबी कभी नहीं मिलेगी। जनता को दीवालियेपन की स्थिति से बचाने के लिए बड़े धन्ना सेठों के धन को पूर्ण नियन्त्रण में लेना होगा। बिना बड़ों पर अंकुश लगाए काम चल नहीं सकता।

"आज आप अगर रूस में जायें तो आपको जान कर आश्चर्य होगा कि वहां पर पांच, कोपक [जो करीब ३० नये पैसे के लगभग होते हैं] इससे आप अन्डर ग्राउन्ड ट्रेनों में और बस वगैरह से घूम सकते हैं। आप किसी भी रेस्टोरेन्ट में चले जाइये आपको एक ही कीमत देनी होगी।"

आर्थिक ढांचे की दृष्टि से रूस का जीवन भारत से एकदम भिन्न प्रकार का है। यहां उत्पादन का पूरा संगठन और नियन्त्रण सरकार के हाथ में है। सामान का विभाजन और बिक्री सरकार के हाथ में हैं। सभी स्टोर और दुकानें सरकारी हैं। सभी वस्तुएं नियन्त्रित दामों पर बेची जाती हैं। नयी दिल्ली में जिस फ्लेट का किराया १५०० रुपया मासिक है, वैसा फ्लेट मास्को में २५० रुपया मासिक में मिल सकता है।

रूस जैसे देश का हाल यह है जो दरिद्र मुल्क कहलाता था— और हमारा भारत जिसे सोने की चिड़िया कहते है वहां के लोगों का हाल आये दिन होने वाले "जन आन्दोलन-हड़ताल" इन्द्रा सरकार की प्रगति की, झूठी कहानी का भण्डा फोड़ते हैं। जिसे अध्यादेशों के द्वारा दबाया नहीं जा सकता।

पिरामिड का परिवर्तन या लोकतंत्र की सिद्धि

० जयप्रकाश नारायण

पंचायती राज की स्थापना लोकतंत्र को अधिक स्थायी, लोकप्रिय और संतोषजनक बानाने के लिए एक कदम है,। यह ऐसा कदमहै, जो यदि ठीक ढंग से उठाया जाय, तो 'स्वराज्य' को जनता तक पहुंचाने में सफलता मिल सकती है। लेकिन यह अपने-आपमें पर्याप्त नहीं है। लोकतंत्र का भवन मजबूत और अभेद्यहो, इसके लिए उसकी ऊपरी मंजिलों का उसके बुनियादी ढाँचे पर खड़ा होना आवश्यक है। लेकिन आज की स्थिति में बुनियादी ढांचा जिला-स्तर तक ही उठाया जानेवाला है। उसके बाद अर्थात् राज्य और संघ के स्तर पर, एक बिलकुल भिन्न ढांचा रहेगा, जो बालू से ज्यादा किसी दूसरी मजबूत चीज पर नहीं टिका होगा और वह है व्यक्तिगत तथा असमान वोटरों का ढेर। यह लोकत्तन्त्र के दो भिन्न सिद्धान्तों और प्रक्रियाओं का पानी और तेल की तरह बड़ा ही दुःखद मेल है, जो कि कभी आपस में मिल नहीं सकते। दोनों का अन्तर संक्षेप में इस प्रकार है :

लोकतंत्र की दो भिन्न पद्धतियों में अन्तर

जो पद्धति व्यक्तिगत मतदाताओं पर खड़ी है, उसमें अनिवार्यतः उच्च स्तर पर सत्ता के केन्द्रीकरण की प्रवृत्ति आ जाती है, जबकि दूसरी पद्धति में सत्ता के विकेन्द्रीकरण का झुकाव होता है। पहली में सारा काम संघटित राजनीतिक दल चलाते हैं, जिनका नियंत्रण थोड़े-से विशिष्ट लोगों के हाथों में होता है। दूसरी में नीचे के स्तर में काम करने वाले समुदाय और सामुदायिक प्रतिनिधि संस्थायें निर्णायक प्रभाव डालती है। पहली में असंगठित मतदाताओं का अपने द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों पर कोई नियंत्रण नहीं रहता, जबकि दूसरी में निर्वाचन करने वाली संस्थायें अपने द्वारा ऊपर भेजे गये ्रतिनिधियों पर लगातार नियंत्रण रखती है। पहली पद्धति में जनता का योगदान वोट डालने तक ही सीमित रहता है, दूसरी पद्धति में ग्राम सभा के द्वारा पूरी जनता का प्रत्यक्ष योगदान रहता है। और ऊपर की प्रतिनिधिक संस्थाओं द्वारा भी काफी घनिष्ठ सहयोग रहता हे। पहली पद्धति में चुनाव खर्चीले होते हैं, जबकि दूसरी में इसका बिल्कुल उलटा है। पहली में बड़े पैमाने पर प्रचार के साधन चाहिए और उस प्रचार में अस्वस्थ मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक उत्तेजना रहती है, तो दूसरी पद्धति में ये बुराईयां कम-से-कम होती हैं। पहली पद्धति में अधिकांश वोटरों के लिए ज्यादा सम्भावना यही है कि चुनाव-काल में जो प्रश्न उनके सामने रखे जायें, उन्हें वे ठीक तरह से समझ न पायें, जब कि दूसरी पद्धति में हर स्तर के वोटरों से आशा की जाती है कि उन्हें जिन समस्याओं का सामना करना है, उनसे वे अच्छी तरह अवगत हैं।

वर्तमान लोकतंत्र में स्वराज्य जनता तक नहीं पहुँच सकता

उपर्युक्त कतिपय महत्त्वपूर्ण मुद्दों की ज्यादा विस्तार से विवेचना उपयोगी होगी। ऊपरी स्तर पर शक्ति के केन्द्रीकरण का प्रश्न लिया जाए, जो कि व्यक्तिगत वोटरों पर आधारित लोकतन्त्र की निष्प्राण पद्धति में लाजिमी है। वैसे यह बात अत्यन्त महत्त्व की है, लेकिन दुर्भाग्य से इसको अधिक पसन्द नहीं किया जाता। इस तरह के लोकतन्त्र में ऐसी कोई शक्ति नहीं होती, जो सत्ता को नीचे जनता की ओर खींच सके। मतदाताओं के पास, उनकी संख्या चाहे करोड़ों ही क्यों न हो, शक्ति का ऊपर की ओर खिचाव रोकने के लिए कोई संघटित साधन ही नहीं है। यह सही है कि राजनीतिक दल हैं और इनकी सदस्य-सख्या लाखों के ऊपर भी हो सकती हैं; लेकिन सर्वत्र— लोकतंत्रीय दलों में भी— झुकाव यही है कि सत्ता कुछ मुट्ठी भर हाथों में रहती है। फिर कुछ विशेष स्वार्थ भी हैं। मुख्यतः आर्थिक, जो इस तरह के लोकतन्त्र को प्रभावित करने का प्रयत्न करते हैं और ये प्रयत्न भी सत्ता के केन्द्रस्थलों पर ही होते हैं। राजनीतिक केन्द्रीकरण को सहायता और प्रोत्साहन देने वाली आर्थिक केन्द्रीकरण के विकास का पहले ही उल्लेख हो चुका हैं। यह सही है कि इस तरह के लोकतन्त्र को व्यापक आधार देने के लिए श्रमिक-संस्थायें, सहकारी-समितियाँ और इसी तरह की दूसरी संस्थायें हैं। लेकिन ये लोकतन्त्रीय ढांचे से सटी हुई चीजें नहीं है और उनमें स्वयं भी केन्द्रीकरण बढ़ता जाता है और चोटी का बोझ भारी होता जाता है। सत्ता के केन्द्रों पर अखबारों का थोड़ा-सा प्रभाव होता है, पर अखबार ही जनता नहीं है।

मतदाताओं के अपने प्रतिनिधियों पर नियन्त्रण का प्रश्न लिया जाए। वर्तमान व्यवस्था में मतदाताओं के पास अपने द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों पर नियंत्रण करने का कोई साधन नहीं है। यह सही है कि यदि वह उन्हें सन्तुष्ट नहीं करते, तो मतदाता उन्हें दूसरी बार नहीं भी चुन सकते हैं. लेकिन यह बहुत दूर का और प्रभावहीन ढंग का नियन्त्रण है

इसमें शक नहीं कि जिन पार्टियों के सदस्य होते हैं, वे पार्टियां उन पर कुछ नियन्त्रण रखती हैं। लेकिन दल का नियंत्रण मतदाताओं के नियन्त्रण से बिल्कुल भिन्न चीज है।

ये सब परिस्थितियां इस तरह के लोकतन्त्र को भ्रमात्मक चीज बना देती हैं।

सहयोगात्मक लोकतंत्र की स्थिति

सहयोगात्मक या सजीव लोकतन्त्र की स्थिति इससे बिलकुल भिन्न है। वह इसलिए कि इस लोकतन्त्र का ढाँचा, ग्राम-सभा के आधारभूत स्तर से शुरु होकर लोकसभा तक कई मंजिलों का होता है और हर मंजिल के अधिकार, कार्य, कर्त्तव्य और साधन स्पष्ट रूप से निर्दिष्ट हैं। इसलिए इस पद्धति में सत्ता का बंट जाना लाजिमी है। साथ ही चूंकि ऊपरी स्तर पर निचले स्तर की संस्थाओं के प्रतिनिधि आते हैं, इसलिए ज्यादा संभावना यह है कि सत्ता पर दखल नीचेवालों का होगा, न कि ऊपर वाले नीचेवालों पर हुकूमत करें। इस तरह ऊपरी स्तर के प्रतिनिधियों पर निचले स्तर की संस्थाओं की सतत आँख लगी रहती है और इसीलिए उन पर नियन्त्रण भी रह सकता है। यह भी ध्यान में रखना चाहिए कि किसी भी स्तर पर ये संस्थाएँ स्वत्वहीन व्यक्तियों का समूहमात्र न रह जायें; बल्कि ऐसी सुसंघटित संविधिक संस्थायें होती हैं, जिनके निश्चित सामूहिक अधिकार और कर्त्तव्य हैं।

इस व्याख्या से दोनों ढंगों के लोकतन्त्र का महत्त्वपूर्ण अन्तर स्पष्ट हो जाएगा। अब यदि पंचायत-राज जिला-स्तर तक ही सीमित रह जाता है और उसके ऊपर दलीय राज का प्रभुत्व बना रहता है, तो जनता अपने को ठगी हुई समझ सकती है। वह इस बेतुकी स्थिति का यह अर्थ लगायेगी कि राजनीतिज्ञ सचमुच सत्ता छोड़ने को तैयार नहीं हैं। जनता को ऐसा लगेगा — और उनका यह सोचना ठीक ही है कि सत्ता अभी दिल्ली और सूबों की राजधानियों में ही कैद पड़ी है और हमें जो अधिकार दिये गये हैं, वे वास्तविक नहीं हैं। खालिस दूध की बजाय थोड़ा आटा मिला हुआ सफेद पानी दे दिया गया। इस तरह जनता को जब सही स्थिति का भान हो जायेगा, तो उसका परिणाम अत्यन्त भयावह भी हो सकता है।

इसलिए आवश्यक है कि पंचायतराज को जिला-स्तर तक न रोककर आगे दिल्ली तक बढ़ाया जाय। यद्यपि यह तत्काल नहीं किया जा सकता, लेकिन यह लक्ष्य साफ-साफ सामने रहना चाहिए।

सच्चा लोकतंत्र सत्ता के सौंपने और प्रशासन के विकेन्द्रीकरण का है।

हमारी निर्वाचन-पद्धति के दोषों के बारे में देश के राजनीतिक नेता और प्रधान मन्त्री भी अनेक बार कह चुके है। पुरानी कांग्रेस के अध्यक्ष श्री संजीव रेड्डी ने भावनगर में चुनाव-पद्धति की टीका की थी। लेकिन यह ध्यान देने की बात है कि जब भी इस प्रश्न पर चर्चा होती है, तो 'प्रत्यक्ष निर्वाचन बनाम अप्रत्यक्ष निर्वाचन' की ही बात उठायी जाती है और यह कहा जाता है और सही ही कहा जाता है कि प्रत्यक्ष निर्वाचन-पद्धति बेतरह खर्चीली हो गयी है। साथ ही इससे जातिवाद तथा स्थानीय संकीर्ण निष्ठावाद जैसी बुराईयोंको बढ़ावा मिलता है।

इस तरह के प्रतिपादन में कोई खास बुराई नहीं है, लेकिन ऐसा करने से खास मुद्दों को हम छोड़ दे बैठते हैं। वह यह कि लोकतन्त्र का स्वरूप और ढांचा क्या हो, जिससे लोगों को सन्तोष हो और वे राजकाज में ज्यादा हिस्सा ले सकें। अन्य शब्दों में कहा जाए तो वास्तविक प्रश्न सत्ता के सौंपने और प्रशासन के विकेन्द्रीकरण का है।

जैसा कि मैं स्पष्ट कर चुका हूं, सत्ता तब तक हस्तान्तरित नहीं की जा सकती और प्रशासन का विकेन्द्रीकरण भी तब तक नहीं हो सकता, जब तक (अ) वर्तमान राज्य-स्तर के नीचे स्वशासन के केन्द्र और संस्थाओं की स्थापना नहीं की जाती, और (आ) तमाम विभिन्न अंग जानदार ढंग से और वैधानिक रूप से एक-दूसरे में पिरो नहीं दिये जाते, तब तक ऊपरी स्तर अपना अधिकार और सहारा निचले स्तर से प्राप्त करे और पूरा ढांचा अन्ततः देश की कुल वयस्क जनसंख्या द्वारा निर्मित 'ग्रामसभाओं' के व्यापक आधार पर टिक जाय।

बुराईयां और दोष हर पद्धति में रहेंगे। पंचायतीराज या सहयोगात्मक लोकतन्त्र में भी खराबी होगी। लेकिन यह पद्धति अधिक लोकतन्त्रीय होगी और इसके दोष भी ज्यादा आसानी से सुधारे जा सकेंगे—ठीक इसी कारण से कि वह ज्यादा लोकतांत्रिक होगी। बहुत सी बुराईयों को तो शुरू में ही खत्म किया जा सकता हैं, बशर्ते कि पंचायतों के चुनाव बिला मुकाबले के हो जायें।

अब विचारणीय प्रश्न यह रह जाता है कि पंचायती राज को किस प्रकार ऊँचे स्तरों तक बढ़ाया जाय?

(शेषांश पृष्ठ १८ पर)

६ मार्च १९७५ को दिया गया–

संसद को जनता का मांगपत्र

हम भारत के नागरिक यहाँ बिहार की जनता के उस संघर्ष के प्रति अपनी एकात्मकता जाहिर करने के लिए इकट्ठे हुए हैं जो कि पूरे देश की भावनाओं का प्रतीक बन गया है। ऐसे समय जबकि सार्वजनिक जीवन के बुनियादी उसूलों और सुशासन के तौर तरीकों को कुचलने की कोशिश हो रही है, नागरिकों का यह कर्त्तव्य है कि वे अपना विरोध जाहिर करें। हमारा आज का यह मार्च न्याय प्राप्त करने और प्रजातन्त्र को बचाने के लिए है।

हम समाज में एक ऐसी संपूर्ण क्रांति लाने के लिए प्रतिज्ञाबद्ध हैं जो गांधी विचारों पर आधारित सामाजिक-आर्थिक समानता, वास्तविक प्रजातन्त्र और नैतिक मूल्यों की एक नई व्यवस्था का निर्माण करेगी।

अपने घोषित उद्देश्यों की प्राप्ति की दिशा में आगे बढ़ने के लिए हम निम्नलिखित अत्यावश्यक मांगों की ओर ध्यान दिलाना चाहते हैं।

बिहार विधान सभा ने राज्य के लोगों का विश्वास खो दिया है। विधानसभा में अब लोगों से संपर्क करने की हिम्मत नहीं बची है। उसने अपने आपको अवरोधों और संगीनधारी बन्दूकों के घेरे के पीछे कर लिया है। एक अरसा हुआ जब से इसने लोगों की धड़कनों के साथ धड़कना बन्द कर दिया है। एक ऐसी सरकार का इस पर अधिकार है जिसने राज्य में कुशासन किया है और जनता के मौलिक अधिकारों को अपने पैरों से कुचल दिया है।

बजाय इसके कि कुशासन समाप्त होता और सरकार का सर्वव्यापी भ्रष्टाचार समाप्त होता, यह दुखद है कि बिहार विधानसभा ने भी सरकार के साथ अपनी भागीदारी कायम की है। राज्य के लोग जिनमें वास्तविक राजनीतिक संप्रभुता निहित है। एक अरसे से यह मांग किए हुए हैं कि वर्तमान कानूनी सप्रभुताओं को बर्खास्त किया जाए जिसने शक्ति का दुरुपयोग किया है।

एक साल पहले गुजरात में जन-आन्दोलन के जरिए सरकार को उखाड़ फेंका गया था और विधानसभा भंग कर दी गई थी। पर वहाँ स्वतन्त्र रूप से चुनावों की घोषणा होना अभी बाकी है। इसलिए हमारी पहली मांग यह है कि बिहार सरकार को तुरंत बर्खास्त किया जाये, विधानसभा भंग की जाए और जितनी जल्द हो सके बिहार और गुजरात में चुनाव की तारिखें तय की जायें।

जनता के सामाजिक - आर्थिक अधिकारों का प्राप्ति के लिए

सरकार की विनाशकारी नीतियों का परिणाम यह हुआ है कि एक तरफ तो आर्थिक अस्थिरता पैदा हो गई है और दूसरी तरफ गरीबी बढ़ी है, कीमतें आसमान छूने लगी हैं और बेरोजगारी में इजाफा हुआ है। आवश्यक वस्तुओं का न प्राप्त होना कमजोर तबके के लोगों की जिन्दगी का एक स्थायी भाव बन गया है। आबादी के लगभग ६० फीसदी लोग आधे पेट खाकर अपनी जिन्दगी बसर कर रहे हैं और इन लोगों की संख्या चौंकानेवाली गति से बढ़ती ही जा रही है। सामाजिक विषमतायें बढ़ती जा रही हैं।

लोगों के महत्त्वपूर्ण सामाजिक आर्थिक अधिकारों को तुरन्त बचाया जाना चाहिए और उसके लिए निम्नलिखित कदम उठाये जाने चाहिए।

(१) समाज के सबसे कमजोर तबके खासकर ६० प्रतिशत की आबादी के सबसे गरीब लोगों की जिन्दगी की आम जरूरतों की आवश्यक चीजें उनकी सामर्थ्य के भीतर की कीमतों पर उपलब्ध कराई जायें। (२) आवश्यक वस्तुओं की लागत और दामों के बीच संबन्ध होना चाहिए। साथ ही कृषि और औद्योगिक कीमतों के बीच एक उचित संतुलन होना चाहिए. कीमतों में स्थिरता होनी चाहिए और कीमतें राष्ट्रीय आय में होने वाली वृद्धि की रफ्तार से ज्यादा नहीं बढ़नी चाहिए। (३) आवश्कता - आधारित न्यूनतम मजदूरी और आमदनी की सबको गारंटी मिलनी चाहिए। (४) आर्थिक असमानतायें इतनी कम कर दी जानी चाहिए कि उन्हें एक से दस के बीच औचित्यपूर्ण मर्यादा के भीतर लाया जा सके। (५) प्रभावकारी भूमि सुधारों के जरिए न्यायोचित रूप से भूमि का पुर्नवितरण किया जाए, 'जो जोते जमीन उसकी' के सिद्धांत के आधार पर मिल्कियत हो, भूमिहीन बेघरबारों को बासगीत का पर्चा और कब्जा मिले, और खेतिहर मजदूरों को उचित मजदूरी प्राप्त हो जिसका एक हिस्सा उन्हें अनाज के रूप में दिया जाए। (६) सब लोगों को पूर्ण रोजगार का आश्वासन दिया जाए। सर्वोच्च प्राथमिकता देकर कृषि और ग्रामीण अर्थव्यवस्था का उपयुक्त तकनीक के इस्तेमाल के जरिए विकास हो। औद्योगीकरण के कार्यक्रम भी इसी प्रकार लागू किये जायें कि उचित तकनीक और

योजनाओं के जरिए देश में उपलब्ध विपुल मानवशक्ति की भागीदारी उसमें हो सके।

प्रजातांत्रिक अधिकार और नागरिक स्वतंत्रता

संविधान की आत्मा से खिलवाड़ करके सरकार देश में संकटकालीन स्थिति का माहौल बनाए हुए है। योजनावद्ध तरीके से विधि के शासन की जगह आँतरिक सुरक्षा अधिनियम, भारत रक्षा कानून और दूसरे अध्यादेशों का उपयोग किया जा रहा है। जनता के एक बड़े तबके के प्रजातांत्रिक अधिकारों का हनन कर लिया गया है और लोगों के वैध शांतिपूर्ण आंदोलन को केन्द्रीय और राज्य पुलिस के इस्तेमाल से दवाया जा रहा है।

लोकतन्त्र को स्थापित करने, उसकी रक्षा करने और उसे फैलाने के लिए हम मांग करते हैं कि—

(१) संकटकालीन स्थिति तथा मीसा, भारत रक्षा कानून और दूसरे कानून जो कि नागरिक स्वतन्त्रताओं के प्रतिकूल हैं उन्हें तुरन्त वापस लिया जाए।

(२) स्कूलों, कालेजों और विश्वविद्यालयों के सभी शिक्षक और गैर राजनीतिक और कर्मिक को संघ बनाने के अधिकार दिए जायें।

(३) सार्वजनिक क्षेत्र के व्यावसायिक और औद्योगिक प्रतिष्ठानों के सभी काम करने वालों को उनके पूरे राजनीतिक और मजदूर संगठन बनाने के अधिकार दिये जायें।

स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव

यह निहायत जरूरी है कि संसद और विधान-सभाओं को जन भावनाओं के प्रति ज्यादा वफादार बनाया जाए। सरकारी मशीनरी, पैसा, सत्ता और बल प्रयोग से चुनावों को प्रभावित होने से बचाया जाना चाहिए अतः हम मांग करते हैं कि—

(१) चुनाव सम्बंधी सुधारों के बारे में संयुक्त संसदीय समिति, जिसमें शासक दल के सदस्य भी शामिल थे, की सर्वसम्मत सिफरिशों को अविलम्ब लागू किया जाए। (२) जब चुनाव की तिथियां घोषित हो जायें, उसके बाद सरकार को महत्त्वपूर्ण नीतियों के बारे में बयान देने, उद्योगों की मंजूरी देने, शिलान्यास करने और ऐसे दूसरे कार्यक्रमों की घोषणा करने की इजाजत नहीं होनी चाहिए, जो मतदाताओं को लुभा सकें। (३) चुनाव आयोग में ज्यादा सदस्य होने चाहिए और उनमें ऐसे लोगों को शामिल किया जाना चाहिए, जिनकी सचाई संदेह से परे हो, जैसे सुप्रीम कोर्ट और हाईकोर्ट के जज। उनका चुनाव एक ऐसे बोर्ड के जरिए होना चाहिए जिसमें सुप्रीम कोर्ट चीफ जस्टिस, प्रधानमन्त्री और विरोधी दल के ने (या विरोधी दल का एक ऐसा प्रतिनिधि जिसे स स्वीकार कर सकें) शामिल हों। (४) राजनैतिक द को चुनाव सम्बन्धी खर्च का ब्योरा जरूरी तौर से दे चाहिए। उम्मीदवार जो ब्योरा दाखिल करें, उस पार्टियों के जरिए किसी उम्मीदवार के लिए किये ग खर्च का ब्योरा शामिल होना चाहिए, जिसमें दलों के सामान्य कार्यक्रमों के खर्च भी शामिल हों। (५ शासक दल के लिए रेडियो, टेलीविजन, हवाई जहा और और अन्य सरकारी साधनों का इस्तेमाल दली कामों के लिए निषिद्ध होना चाहिए— विरोधी दलों के साथ बराबरी के दर्जे पर ऐसा किया जा सकता है (६) मतदान से एक सप्ताह पहले पूरे चुनाव क्ष शराबबन्दी लागू की जाए। (७) मतदान के दिन नि मोटर गाड़ियों सहित तमाम सवारी गाड़ियों को, अनि वार्य सेवाओं के लिए इस्तेमाल में आ रही गाड़ियों क छोड़कर चलने से रोक दिया जाना चाहिए। (८ मतगणना जरूरी तौर से हर बूथ पर होनी चाहिए मतदान के तुरन्त बाद हर चुनाव केन्द्र के मतपत्रों क हिसाब जाहिर कर दिया जाना चाहिए और तीन य चार मत-पेटियों की जगह सिर्फ एक ही मत-पेटी ह चुनाव को मुहय्या की जानी चाहिए। अलबत्ता वक्त जरूरत के लिए अलग से इन्तजाम रखा जाना चाहिए। (९) हर मतदान केन्द्र पर, कुल मिलाकर जितने मत-पत्र डाले गए हों, या जिन का किसी दूसरी तरह से इस्तेमाल किया गया हो, जिसमें प्रथम और अंतिम मतपत्रों की संख्या भी शामिल हो, का हिसाब चुनाव लड़ने वाले सभी दलों के उम्मीदवारों के एजेंटों के लिए सुलभ होना चाहिए। (१०) मताधिकार की उम्र घटाकर १८ वर्ष होनी चाहिए। (११) संविधान में इस बात की व्यवस्था होनी चाहिए कि जनता द्वारा चुने सदस्य को वापस बुलाया जा सके।

राजनीतिक सत्ता का विकेंद्रीकरण

सत्ता के केन्द्रीयकरण और जनतन्त्र को जड़ से उखाड़ फेंकने की सरकार की प्रवृत्ति को ध्यान में रखते हुए, यह आवश्यक है कि वास्तविक स्वशासन के लिए सत्ता का विकेन्द्रीकरण करने और प्रभावी रूप से ग्राम पंचायतों, जिला बोर्डों, राज्यों और केन्द्र को उसका बटवारा करने के लिए, उसे संविधान की गारंटी दी जाए।

शिक्षा सम्बन्धी सुधार

(१) शिक्षा के लाजिमी तौर से इस स्मरण-पत्र में निहित आदर्शों के अनुकूल समाज के निर्माण का माध्यम होना चाहिए और उसका आधुनिकीकरण होना चाहिए, न कि पश्चिमीकरण। (२) राष्ट्री

(शेषांश पृष्ठ १६ पर)

अंग्रेजी : जो हमारी जड़ों को खोखला कर रही है

डा० प्रशान्त कुमार वेदालंकार

१४ सितम्बर, १९४९ को संविधान में सर्व-सम्मति से यह स्वीकार किया गया था कि २६ जनवरी १९६५ से अंग्रेजी का सर्वथा उन्मूलन हो जाएगा। सम्भवतः उस समय दृष्टिकोण यह था कि १९४९ में प्रथम अथवा दूसरी श्रेणी में पढ़ने वाला छात्र १९६५ तक एम० ए० कर चुकेगा और उसे इस प्रकार से शिक्षित किया जाएगा कि वह भारतीय भाषाओं में अपना सम्पूर्ण व्यवहार पूर्ण कर ले। किन्तु आज वर्षों बाद भी हिन्दी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को अपना पूर्ण अधिकार नहीं दिया गया। अंग्रेजी के पक्ष में सबसे प्रबल तर्क यह दिया जाता है कि सम्पूर्ण आधुनिक ज्ञान-विज्ञान आंग्लभाषा में ही उपलब्ध है, अतः उसके बिना शिक्षा का स्तर ऊंचा होना असम्भव है। इसके अतिरिक्त पारिभाषिक शब्दों का भारतीय भाषाओं में नितान्त अभाव है जिसके फलस्वरूप अंग्रेजी शब्दों के बिना व्यवहार में भी कठिनाई उपस्थित होगी, अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अंग्रेजी का अत्यधिक महत्त्व है, अतएव उसकी उपेक्षा करना मूर्खता है। आंग्लभाषी का महत्त्व प्रतिपादित करने के लिए कुछ अन्य तर्क भी दिये जाते हैं किन्तु वे सभी उपर्युक्त कारणों में ही अन्तर्भूत किये जा सकते हैं, अतः उनका पृथक उल्लेख करना व्यर्थ है।

अंग्रेजी के अध्ययन में देश की महती शक्ति का अपव्यय

अंग्रेजी के पक्ष में दिये गये उपर्युक्त कारणों की मीमांसा करने से पूर्व इस ज्वलन्त तथ्य से अवगत हो जाना अनिवार्य है कि आज हमारे देश की महती शक्ति मात्र इसी भाषा के अध्ययन में नष्ट हो रही है। पाँचवीं श्रेणी के उपरान्त भारत का प्रत्येक छात्र—विशेषतः उच्चतर माध्यमिक एवं बी० ए० का अपना आधे से अधिक समय इसी अंग्रेजी में दक्षता प्राप्त करने के लिए व्यय करता है। वह अतिरिक्त शिक्षा-शुल्क (ट्यूशन फी) भी केवल इसी अंग्रेजी के लिए ही देता है, किन्तु फिर भी अधिकांश छात्र इसी अंग्रेजी में ही अनुत्तीर्ण होते हैं। एक तो अनिवार्य विषय होने से तथा दूसरे इसको आवश्यकता से अधिक तूल देने के कारण न तो वह इसे छोड़ ही पाता है और न वह अपने अमूल्य समय और प्रतिभाशालिनी बुद्धि को अपनी रुचि के विषय में गणित, राजनीति, अर्थशास्त्र, विज्ञान आदि में— ही ठीक प्रकार से लगा पाता है। भारत का छात्र जितनी शक्ति (समय, बुद्धि और धन) अंग्रेजी को सीखने में लगाता है यदि उतनी ही शक्ति वह किसी दूसरे, अपनी रुचि के विषय में लगा पाये तो यह निश्चित है कि वह अपने विषय के साथ अधिक न्याय कर सकेगा और उसमें मौलिक चिन्तन की क्षमता भी जागरित हो सकेगी।

विचित्र विडम्बना यह है कि अष्टम श्रेणी के उपरान्त नवम् श्रेणी में विज्ञान का माध्यम अंग्रेजी हो जाने के कारण प्रायः वही छात्र विज्ञान ले पाते हैं जिनके माता-पिता निरन्तर तीन वर्षों तक अपने बच्चों पर अतिरिक्त-शिक्षा-शुल्क व्यय कर सकते हैं, अथवा जो प्रारम्भ से ही अंग्रेजी माध्यम के पब्लिक स्कूलों में पढ़े हैं। प्रकारान्तर से निर्धन प्रतिभाशाली छात्र से विज्ञान के अध्ययन का अधिकार छीन लिया जाता है। उच्चतर माध्यमिक श्रेणी के उपरान्त अर्थशास्त्र राजनीति, गणित आदि विषयों में ६५ अथवा ७० प्रतिशत अंक प्राप्त करने के उपरान्त भी अंग्रेजी में कम अंक होने के कारण विद्यार्थी को उस विषय की आनर्स करने का अधिकार नहीं दिया जाता। अभी तक इन विषयों में हिन्दी माध्यम को प्रश्रय नहीं मिला। ध्यान देने की बात यह है कि प्रायः ये वे निर्धन प्रतिभाशाली छात्र होते हैं जिन्हें विज्ञान नहीं लेने दिया गया था और अब साधारण कला में ही अतिरिक्त शुल्क देने में अक्षम होने से ये अंग्रेजी में अधिक अच्छे अंक न ले सकने के कारण अपनी रुचि के विषय में आनर्स करने के अधिकार से वंचित कर दिये जाते हैं -

सम्पूर्ण उपलब्ध ज्ञान - विज्ञान मात्र अंग्रेजी से ही नहीं प्राप्त हो सकता

आपका प्रश्न है कि अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध ज्ञान-विज्ञान को भारतीय छात्र किस प्रकार सीखें? पर यह प्रश्न अपने आप में अपूर्ण है, प्रश्न तो यह है कि विश्व की विविध भाषाओं में उपलब्ध ज्ञान को भारतीय विद्यार्थी किस प्रकार हृदयंगम करे? रूसी, जर्मन, फ्रेंच आदि भाषाओं के विविध-विषयों की जानकारी भारत का व्यक्ति सम्बन्धित भाषा के अंग्रेजी अनुवादों से करता है। पर ये अनुवाद मूलभाव से—

थोड़ी मात्रा में ही सही— निश्चय ही अलग हटे हुए होते हैं। अतः समस्या केवल अंग्रेजी में उपलब्ध ज्ञान-विज्ञान को भारतीय भाषाओं में लाने की नहीं है, वरन् विश्व की सम्पूर्ण प्रमुख भाषाओं में प्राप्त ज्ञान-विज्ञान को लाने की है। समस्या का समाधान यह हो सकता है कि प्रत्येक विषय के कुछ विशिष्ट विद्वान पृथक-पृथक भाषाओं का ज्ञान प्राप्त कर विषय की सामग्री का अनुशीलन करें और उसे भारतीय भाषाओं में सर्वथा मौलिक रूप से प्रस्तुत करें और यदि वे आवश्यकता का अनुभव करें तो किसी कृति विशेष का अविकल अनुवाद भी प्रस्तुत कर दें।

पारिभाषिक शब्दों के प्रश्न को भाषा के साथ सम्बद्ध न किया जाये तो अधिक अच्छा रहेगा। इस समस्या पर अत्यन्त उदारता से यहां केवल इतना कहना पर्याप्त है कि जो विद्वान भारतीय भाषाओं को विषयों के स्पष्टीकरण में अक्षम मानते हैं वे अंग्रेजी के पारिभाषिक शब्दों का प्रयोग कर लें। भाषा-विज्ञान शब्दों के आदान-प्रदान के सिद्धान्त को स्वीकार करता है।

जहां तक अंग्रेजी के अन्तःराष्ट्रीय स्तर पर महत्त्व की बात है वहां तक इसका सम्बन्ध केवल अन्तर्राष्ट्रिय महत्त्व के व्यक्तियों के साथ ही होना चाहिए। यों दुभाषिये भी इस दिशा में अच्छी सहायता कर रहे हैं। केवल उसके अन्तः राष्ट्रीय महत्त्व के कारण सम्पूर्ण राष्ट्र की उपेक्षा करना सर्वथा अव्यवहारिक एवं हास्यास्पद है।

भारत स्वतंत्र होते हुए भी परतन्त्र

सच बात तो यह है कि आज भारत में अंग्रेजी का उपयोग केवल सामाजिक प्रतिष्ठा बनाये रखने के निमित्त हो रहा है। और इसी कारण अंग्रेजी आज भी यहां अपनी जड़े जमाए हुए है। यह एक कटु सत्य है कि आज भी भारत का मस्तिष्क अंग्रेजियत से अभिभूत है और इस दृष्टि से वह स्वतन्त्र होते हुए भी परतन्त्र है। भारतीय भाषाओं का बड़े से बड़ा पण्डित यदि वह अंग्रेजी नहीं जानता तो लोगों की दृष्टि में पिछड़ा हुआ है। किसी उच्च पद को प्राप्त करने का अधिकारी होता हुआ भी वह वार्तालाप-आदि में अंग्रेजी का समुचित प्रयोग न कर सकने के कारण उस पद से वंचित रह जाता है। कुछ समय से हमारे देश के लोगों की एक अत्यन्त विचित्र और शोचनीय विचारधारा बनती जा रही है कि वार्तालाप में अंग्रेजी का प्रयोग करना फैशन है और अपने व्यक्तित्व को प्रभावशाली बनाने के लिए अंग्रेजी अपनाना अनिवार्य है। जिन घरों के बच्चे माता-पिता के लिए मम्मी-पापा, रसोई के लिए किचन और स्नानागार के लिए बाथरूम आदि शब्दों का प्रयोग नहीं करते वे अपने में कुछ हीन-भावना सी अनुभव करते हैं और बचपन से ही अपनी सन्तान को इस प्रकार के शब्दों का अभ्यास करवाते हैं। ऐसे लोग अंग्रेजी का समाचार पत्र क्रिय करने में गौरव का अनुभव करते हैं। ऐसे लोगों को मैं दकियानूसी और पिछड़ा हुआ, बाबा वाक्यं प्रमाणं की रट लगाने वाला मानता हूँ, क्योंकि वे अब भी अंग्रेजी राज्य की दूषित रूढ़ियों को छोड़ने में असमर्थ रहे हैं, और भारत के स्वतन्त्र वातावरण में उन्होंने अभी तक सांस नहीं ली। अन्यथा देश के करोड़ों लोगों की मांग और आवश्यकता की इस प्रकार से वे उपेक्षा न करते। अंग्रेजी हटाने की मांग स्वतन्त्र मस्तिष्क की नवीन मांग है, उसकी उपेक्षा करना अपने को पिछड़ा हुआ ही प्रदर्शित करना है।

मात्र अंग्रेजी साहित्य पर तूल देना व्यर्थ है

यदि अंग्रेजी को बनाए रखने के कारण केवल इस भाषा को सीख कर अर्थशास्त्र, विज्ञान आदि विषयों की जानकारी मात्र होता तो भारत में अंग्रेजी की बी० ए० आनर्स और एम० ए० जिसमें कि अंग्रेजी साहित्य का अध्ययन होता है न करवाई जाती। विज्ञान और अर्थशास्त्र के विद्यार्थियों को प्रायः किसी भी भाषा के साहित्य से कोई प्रयोजन नहीं होता। उनका प्रयोजन केवल भाषा से होता है। भारत में भी विज्ञान, अर्थशस्त्र आदि विषयों के छात्र अंग्रेजी, हिन्दी आदि के साहित्य में कोई रुचि नहीं रखते। अंग्रेजी साहित्य को पाठ्यक्रम मे निर्धारित कर इसमें आनर्स, एम० ए० एवं डाक्टरेट करवाने का केवल एक ही अर्थ है कि यहां के लोगों को अंग्रेजी साहित्य—जोकि वहां की संस्कृति एवं विचार-धारा का प्रतिबिम्ब है—से अभिभूत किया जाए। इसका अर्थ यह नहीं कि मैं विश्व की अन्य भाषाओं के साहित्य से भारतीय छात्रों को अपरिचित रखने के पक्ष में हूं। मेरा आरोप यह है कि केवल अंग्रेजी के ही साहित्य को इतना तूल क्यों दिया जाता हैं? अन्य यूरोपियन अथवा एशियन भाषाओं के साहित्यों के प्रति उपेक्षाभाव क्यों है?

दक्षिण वालों के विरोध का कारण उनके मन की यह व्यर्थ की आशंका है कि हिन्दी में हिन्दी प्रान्त वालो से कम अधिकार होने के कारण वे लोग कहीं केन्द्रीय सेवा कार्यों में पिछड़ न जायें। पर समस्या का यह समाधान कि अभी अंग्रेजी विद्यमान रहे— सर्वथा गलत है। प्रश्न है कि क्या उन प्रान्तों के लोग अपनी तमिल, तेलगु, मलयालम, कन्नड़ आदि भाषाओं से भी अधिक अधिकार अंग्रेजी पर रखते हैं जो उनकी मातृ भाषायें हैं। जिन्हें वे जन्म से ही जानते हैं। जबकि अंग्रेजी सीखने के लिए उन्हें परिश्रम करना होता है।

(शेषांश पृष्ठ १५ पर)

मुक्ति संग्राम के नायक कौन ?

० रामशरण जोशी

(गतांक से आगे)

अंग्रेजी शासक यह अच्छी तरह से जानते थे कि जब तक सामन्तों के सम्पूर्ण वर्ग को पंगु या प्रभावहीन नहीं बना दिया जाता तब तक भारत में उनकी सत्ता जमने वाली नहीं। अंग्रेजों ने उनकी रियासत ही नहीं हड़पी, बल्कि उनकी सुरक्षित पूँजी भी जब्त की थी। मार्क्स लिखते हैं— "क्या यह सच नहीं है कि जब साधारण भ्रष्टाचार से उनकी (अंग्रेज पूँजीपति) स्वार्थ लिप्सा शान्त न हुई, तब उन्होंने भारत में स्वयं उस कुख्यात लुटेरे लार्ड क्लाइव के शब्दों में, बड़ी क्रूरता के साथ लूट खसोट शुरु कर दी थी ? जहां यूरोप में वे राष्ट्रीय ऋण की पवित्रता का ढोल पीटते थे, वहां क्या वे भारत में उन राजाओं के लाभांशों को जब्त नहीं करते रहे जिन्होंने अपनी निजी बचत का रुपया स्वयं कम्पनी के शेयरों में लगाया था ?

स्वयं सामंतों के मध्य भी अन्तर्विरोध था। सामंतों में दो गुट थे। एक अंग्रेज समर्थक और दूसरा विरोधी। सामन्त एक दूसरे की सत्ता हथियाने के लिए अंग्रेजों से संधि करते और सैनिक सहायता निमंत्रित करते। साम्राज्यशाह इन अन्तर्विरोधों का खुल कर लाभ उठाते। १८ वीं शताब्दी के वजीर अली का विद्रोह, असम के सामन्ती तनाव आदि इसी प्रकार की घटनायें सामंतों के पारस्परिक अन्तर्विरोध की साक्षी है।

सामन्तों ने क्रान्तिकारी भूमिका नहीं बल्कि प्रगतिशील भूमिका ही अदा की।

दूसरे स्थान का अन्तर्विरोध- देशी सामंतों और शोषित जनता के बीच था। यह हम पहले ही देख चुके हैं कि अंग्रेजों के साथ साथ देशी सामंत व महाजन भी किसानों व कारीगरों का शोषण करते थे। शोषित जनता ने दोनों शोषकों के विरुद्ध आवाज उठाई थी। परन्तु १८५७ के मुक्ति संग्राम के दौरान दूसरे स्थान के अन्तर्विरोध में एक स्थायी शिथिलता आ गयी थी। सामन्त दो खेमों में विभाजित हो चुके थे। जनता के समर्थक और जनता के विरोधी। जनता ने अपने मतभेदों को भूलाकर समर्थक सामंतों से सहयोग प्राप्त किया। अतः यह मान लेना कि समूचे सामन्त वर्ग ने अंग्रेजों का साथ दिया और मुक्ति संग्राम के साथ विश्वासघात किया; अतिश्योक्तिपूर्ण निष्कर्ष होगा।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है; तत्कालीन शताब्दियों में मुख्य अन्तर्विरोध भारत की जनता और साम्राज्यवादी शासकों के बीच था। यह स्थिति कमोबेश अन्य उपनिवेशों की भी रही : हमें यह भी देखना होगा कि क्या उस समय शोषित वर्ग की क्रान्तिकारी राजनीति का भारत में जन्म हो चुका था ? क्या उस समय सही ढंग का क्रान्तिकारी नेतृत्व था ? हम समाजवादी क्रान्ति से पूर्व क्रान्ति के विभिन्न चरणों से गुजरने की वैज्ञानिक प्रक्रिया में विश्वास रखते हैं तथा इस प्रक्रिया में राष्ट्रीयपूँजीपति एवं छोटे पूँजीपति वर्ग के सहयोग की भी सम्भावना मानते है। यद्यपि राष्ट्रीय पूँजीपति एवं मध्यकिस्म के पूँजीपति एक वर्ग के रूप में क्रान्ति में शामिल नहीं होते हैं। इस वर्ग का एक हिस्सा ही हमदर्द के रूप में थोड़ा बहुत आगे बढ़ता है, वह भी अपने अस्तित्व रक्षा के लिए। ठीक इसी प्रकार १८वीं एवं १९ वीं शताब्दी के सामन्तों का भी एक हिस्सा विवश होकर मुक्ति संग्राम के साथ आया और अन्तिम समय तक सहयोग दिया। मसलन: सिराजुद्दौला, मीर कासीम, टीपू सुल्तान, वजीर अली, तीरथ सिंह, लक्ष्मीबाई, असम के रूपचन्द, अवध की बेगम, राव साहब, कुंवर सिंह, अमर सिंह, मौलवी अहमदशाह, राजा तेजासिंह, शोरापुर का राजा वेंकटप्पानायक, कोल्हापुर तथा दक्षिण मराठा प्रान्त के अन्य छोटे-मोटे राजाओं आदि ने दो सौ वर्षों में साम्राज्यशाहों से अवश्य टक्करें ली हैं। यद्यपि इनकी भूमिका को किसी भी अर्थों में क्रान्तिकारी नहीं कहा जा सकता। परन्तु प्रगतिशील तो कहा ही जाएगा। बीसवीं शताब्दी में चीन की क्रान्ति में अनेक सामन्तों यानी युद्ध स्वामियों (वार लार्ड) ने लाल सेना का साथ दिया था। माओ के प्रमुख सैनिक साथियों में से एक जनरल 'चुते' स्वयं सामन्ती परिवार से था। यहाँ यह दलील दी जा सकती है कि चीन में जिन सामन्तों ने क्रान्ति में सहयोग दिया था, वह क्रांतिकारी पार्टी (सी० पी० सी०) के नेतृत्व में दिया था। यह बिल्कुल सच है। परन्तु, यहां यह कहना चाहेंगे कि १८वीं एवं १९वीं शताब्दी के दौरान क्रान्तिकारी पार्टी की भारत में कल्पना करना मूर्खता होगी। अतः सामन्त वर्ग के एक हिस्से ने प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से मुक्ति संग्राम में सहयोग दिया था, इससे इन्कार नहीं किया

जा सकता है। इस अस्थायी सहयोग का चरित्र स्वरूप में प्रगतिशील रहा है।

मध्यम श्रेणी के सामन्तों पर आश्रित वर्ग की भूमिका

इस पर चर्चा समाप्त करने से पूर्व मध्यम श्रेणी के सामन्तों या राजा-नवाबों पर आश्रित वर्ग पर भी विचार करना प्रासंगिक होगा। जागीरदार, जमींदार इनामदार, ताल्लुकेदार आदि इस गिनती में आते हैं। ये लोग किसी भी तरह से कम महत्वपूर्ण नहीं है। मुक्ति संग्राम को अवरुद्ध करने या उसमें तत्कालीन आंशिक सहयोग देने में इनके 'रोल' को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता। इन के सम्बन्ध में भी हमें खुले दिमाग से सोचना होगा।

२७ जुलाई १८५७ को ब्रिटेन की संसद में भारतीय मामलों पर बोलते हुए डिजरेयली ने कहा था 'भारत में बड़ी जागीरों के मालिक, या जागीरदार और इनामदार भारी संख्या में पाए जाते हैं। जागीरदार वह व्यक्ति है, जिसे राजा के प्रति की जाने वाली राज्य सेवाओं के फलस्वरूप जमीन दी जाती है। इनामदार वह व्यक्ति है जिसे अपनी जमीन पर किसी प्रकार भूमि कर नहीं देना पड़ता। १८ वीं शताब्दी में गवर्नर जनरल लार्ड कार्नवालिस के शासन काल में स्थायी भूमि व्यवस्था के दौरान ताल्लुकेदार एक किस्म के सरकारी अधिकारी होते थे, जिन पर गांवों में लगाए गये कर की निगरानी व उगाई का उत्तरदायित्व था।

राजा-महाराजाओं की तरह जमींदारों व ताल्लुकेदारों की भी यही स्थिति लगभग रही। सम्पूर्ण वर्ग के रूप में यह भी अंग्रेजों के साथ नहीं गए। ऐसी भी मिसालें देखने को मिलती है जिनसे मालूम होता है कि पुश्तैनी सामन्तों ने अपने विलासमयी व वैभवयुक्त जीवन को भद्दे ढंग से बनाए रखने के लिए भारी लगान जमींदारों और जोतदारों पर थोपा था। विद्रोह करने पर सहयोगी संधि के तहत ब्रिटिश सेना ने उन्हें कुचल दिया था। ताल्लुकेदारों की भी यही स्थिति थी। फैजाबाद डिवीजन के अनेक ताल्लुकेदारों के खिलाफ़ अंग्रेजों ने कार्यवाहियाँ की, फलस्वरूप उनमें भी असन्तोष फूटा। अवध के अनेक ताल्लुकेदारों की हालत (१८५७ पूर्व) बद से बदतर बना दी गई थी। १८ वीं शताब्दी के अन्त में अनेक स्थानों पर जमींदारों ने विद्रोह भी किया। १९ वीं शताब्दी के प्रारम्भिक दशकों में उत्तरी भारत में जमींदारों के छुट-फुट विद्रोह देखने को मिलते है। १२ मई १८५७ को सहारनपुर के मजिस्ट्रेट ने अपनी एक रिपोर्ट में इस बात को स्वीकार किया है —" जमींदार और ग्रामीणों ने मौके का फायदा उठा कर महाजनों व बनियों से अपने कर्जे व मांग के बहीखाते छीन लिए है .." आर० सी० मजूमदार ने भी यह स्वीकार किया है —" अवध के ताल्लुकेदार, जिनकी भूमियां छीन ली गई थीं, एक 'कलाप' के रूप में उठ खड़े हुए और ताकत के बल पर छिनी हुई भूमियाँ नए मालिकों (बनिये) से खाली करवा कर वापस लेने लगे। अपनी स्थिति की सुरक्षा और ताकत के आधार पर ताल्लुकेदार विद्रोह के लिए आमादा हुए उनकी संख्या भी काफी थी और एक समान उद्देश्य था ...जोतदार तथा जनता में से अन्य तत्व भी विद्रोह में शामिल हुए और ताल्लुकेदारों को सहयोग दिया।"२२

विद्रोही ताल्लुकेदारों एवं भू-पतियों में अवध के गुलाम हसन, मौहम्मद हसन, माधोसिंह, निज़ाम अली खां, बरेली के खान बहादुर खां, फर्रुखाबाद का नवाब, हरिचन्द आदि उल्लेखनीय हैं जिन्होंने क्रमशः जौनपुर, अमरोहा, अमेठी, पीलीभीत, बरेली, सन्देला में अंग्रेजी सेना से लोहा लिया। यहां तक कि इन ताल्लुकेदारों ने भू-पतियों के विरुद्ध भी युद्ध किया जो अंग्रेजो के साथ थे, इन साम्राज्यशाही उपासकों में पवई के राजा, सरौन के बाबूराम प्रसाद सिंह, फैजाबाद डिविजन के राजा मानसिंह आदि थे। जब जब विद्रोही ताल्लुकेदारों ने इन पर हमला किया, ब्रिटिश सेनाओं ने उनकी रक्षा की।

अधिकांश आश्रित वर्ग १८५८ में जब्ती घोषणा के बाद ही विद्रोह किये

परन्तु, इससे यह अर्थ नहीं निकाला जाना चाहिए कि सम्पूर्ण ताल्लुकेदारों व भू-पतियों ने जनता को सहयोग दिया था। स्वयं मजूमदार आगे जाकर इस नतीजे पर पहुंचते हैं कि कतिपय अपवादों को छोड़कर ताल्लुकेदारों ने लार्ड कैनिंग द्वारा २० मार्च १८५८ की 'जब्ती घोषणा' के बाद ही विद्रोह में दिलचस्पी ली थी। क्योंकि इस घोषणा से ताल्लुकेदारों का अस्तित्व ही खतरे में पड़ गया था और अवैध ढंग से कमाई गई (यानी गरीब किसानों के शोषण से) सम्पत्ति इस घोषणा से छीनी जा रही थी। अतः उन्होंने समर्पण के स्थान पर अंग्रेजों के विरुद्ध विद्रोह करना ही उचित समझा।

इससे दो निष्कर्ष निकलते है: पहला ताल्लुकेदारों के विद्रोह (जिसमें अपवाद भी शामिल है) और जब्ती घोषणा से यह साफ हो जाता है कि अंग्रेजों और इस वर्ग के बीच बाकायदा अन्तर्विरोध था और ... जनता के विरुद्ध कोई कथित संयुक्त मोर्चा जैसी ... नहीं थी अन्यथा २० मार्च १८५८ को नई नीति ... करने की आवश्यकता नहीं पड़ती। बल्कि ऐसे ... समय में अंग्रेजों को ताल्लुकेदारों के सहयोग की ...

(शेषांश पृष्ठ १६ पर)

लहू की लालिमा से—

धधकता जन-आक्रोश और डोलती कुर्सियाँ

० जयदेव अनल

६ मार्च का वह दिन। दिल्ली की मुख्य सड़कों से गुजरने वाला हर आदमी सोच रहा था कि 'आज कुछ होने वाला है।' जिन सड़कों पर सुबह से ही चहल-पहल दिखती थी, वे आज वीरान सी दिखाई पड़ रही थीं। कभी-कभी पुलिस की गाड़ियों की घरघिट इस खामोशी को चीरती सी निकल जाती।

एक अजनबी ने धीरे से किसी दूसरे से पूछा, "महाशय जी यहां क्या होने वाला है? क्या किसी विदेशी फ़ौज ने दिल्ली को फतह करने के लिए हमला किया है? अथवा कोई संगठित दस्यु-दल राष्ट्रपति भवन को लूटने के लिए आ रहा है?"

दृश्य भी कुछ इसी तरह का दिखाई दे रहा था। लगभग १५,००० पुलिस के सिपाही अपने कठोर बूटों से दिल्ली की सड़कों को रौंद रहे थे। वे पुलिस के सिपाही जिनके नाम ही से बच्चे डर कर अपनी माताओं के आंचल में सर छिपा लेते हैं। निहत्थे नागरिकों पर लाठियां और गोलियां बरसाना जिनका 'जन्म सिद्ध अधिकार है' और है अबलाओं की अस्मत से खुल कर खेलना जिनका कानूनी हक। ये कानून के रक्षक कहे जाते हैं पर हैं जन-स्वातन्त्र्य के भक्षक।

लगभग ११ बजे जे० पी० के नेतृत्व में जलूस दरियागंज पहुँचा। एक अदम्य उत्साह के साथ– एक अपूर्व जोश के साथ। लाखों लोगों का ठाठें मारता हुआ जन-समुद्र। भिन्न-भिन्न प्रान्तों के लोग, भिन्न-भिन्न वेशभूषायें और भिन्न-भिन्न बोलियां......। सब कुछ तो भिन्न था। यदि कुछ सामंजस्य था तो इतना कि सभी के दिलों में आक्रोश सुलग रहा था। यह आक्रोश था इस व्यवस्था के खिलाफ और इसके रक्षक सत्ताधीशों के खिलाफ! एक बिगुल था बगावत का। लोग कहे जा रहे थे — **"सच कहना अगर बगावत है तो समझो हम भी बागी हैं।"**

इस विशालतम ऐतिहासिक जलूस में भाग लेने वाला हर नागरिक एक प्रश्न पूछ रहा था इस देश के पहरेदारों से, जनतन्त्र के ठेकेदारों से और उन सबकी आराध्या देवी इन्दिरा से। एक बेरोजगार युवक पूछ रहा था —**"क्या दिया है इस व्यवस्था ने मुझे? डिग्रियों के कागज में लपेट कर भूख और गरीबी ही न?"**

एक रिक्शावाला पूछ रहा था– "दमे का बीमार होने के बावजूद भी मैं सुबह शाम तक रिक्शा खिंचता हूं, लेकिन फिर भी भूखा रहता हूं –क्यों?'

इसी तरह के सवाल उन लाखों लोगों की जुबां पर अटके हुए थे। पर सभी ने अपने सीने में दहकते असंतोष के अंगारों को शान्ति की चादर से ढक रखा था गगनभेदी नारों से वातावरण गूंज रहा था। एक ओर से आवाज आती—

"सुनले ऐ दिल्ली की रानी, नहीं चलेगी अब मनमानी।"

दूसरा टोला कहता—

"ऐ संसद में सोने वालो, हम तुम्हें जगाने आये हैं।"

पीछे से तीसरा स्वर उभरता—

"जन-जन का स्वर बोल रहा है.
इन्दिरा शासन डोल रहा है।'

सचमुच में ही डोल उठा था इन्दिरा जी का शासन! हिल गई शोषक - शासकों के सपनों के महल की नींव। बोखला उठी सरकार। इधर एक ओर सत्तारूढ़ दल की आन्तरिक फूट और इधर दूसरी ओर पिछले २७ साल का हिसाब पूछती जन-मेदिनी।

ऐसे समय में सरकार ने वही किया जो एक चालाक शासक को करना चाहिए। जनता को गुमराह करने के लिए प्रचार के साधनों का दुरुपयोग किया गया। लगभग ७-८ लाख लोगों के प्रदर्शन को सरकारी अखबारों ने पचास हजार से लेकर तीन लाख तक की संख्या का जुलूस बताया। कांग्रेस अध्यक्ष डी० के० बरुआ ने तो इसे केवल '१ लाख लोगों का जमघट' बताकर यह सिद्ध करने का प्रयास किया कि जे० पी० के आन्दोलन से जनता असंतुष्ट है और अब यह 'फ्लाप' हो गया है।

सार्वजनिक रूप से बोले गए ये 'सरकारी झूठ' इस बात के गवाह हैं कि २७ साल के कांग्रेसी वृक्ष की जड़ें अब हिल चुकी है। जिस तरह डूबता हुआ आदमी उल्टे-सीधे हाथ-पैर मारकर अपने बचाव की जी-तोड़ कोशिश करता हैं, उसी तरह आज सरकार को भी अपने अन्तिम दिन दिखाई देने लग गये हैं। वह झूठ की कतरनों से सच्चाई की नग्नता को ढापने का प्रयास कर रही है। पर उसे गोयबल्स की नीति पर चलने से पूर्व हिटलर के अन्त को भी कभी-कभी याद कर लेना चाहिए।

(शेषांश पृष्ठ १२ का)

कुछ समय तक यह व्यवस्था की जा सकती है कि वैकल्पिक रूप से वे अपनी प्रान्तीय भाषाओं में उत्तर पत्र लिख सकें। इस प्रकार उनकी आशका निर्मूल हो जाएगी और व्यर्थ ही अंग्रेजी को बनाए रखने की वृत्ति की परिसमाप्ति हो सकेगी।

अन्त में यह स्पष्ट कर देना भी अनिवार्य है कि शिक्षा का उद्देश्य मस्तिष्क में ज्ञान-विज्ञान का संग्रह ही नहीं होता। वरन् चिन्तन तथा परिस्थिति के अनुसार काम करने क क्षमता प्राप्त करना हाता है। पर मात्र अग्रेजी ज्ञान-विज्ञान के अध्यापन से यह क्षमता ता उत्पन्न होती नहीं वरन् भारत का व्यक्ति अपने देश की परिस्थितियों से हट कर कुछ दूर की सोचने लगता है। यहां की परिस्थिति में और विदेश की परिस्थिति में महान भेद है। अतः दोनों देशों के अर्थशास्त्र, राजनीति समाजशास्त्र आदि विषयों के सिद्धान्त में भी भेद होना अनिवार्य है। इस अनिवार्य भेद का परिज्ञान ही हमारे देश की उन्नति में साधक सिद्ध होगा।

इसी प्रकार कृषि विज्ञान एवं वनस्पतिशास्त्र से सम्बन्धित अनुसंधानों से निकले निष्कर्ष भी प्रत्येक देश के पृथक-पृथक होते हैं। हमारी भूमि महान भेद है। ऐसी स्थिति में कृषि विज्ञान से सम्बन्धित पश्चिम के निष्कर्षों को हम अपने देश की कृषि पर अरोपित नहीं कर सकते। जलवायु की भिन्नता के कारण प्रत्येक देश का चिकित्सा विज्ञान भी पृथक-पृथक विकसित होना चाहिए। हमारा निश्चित मत है कि अपने देश की सर्वांगीण उन्नति के लिए अंग्रेजीं में लिखा ज्ञान विज्ञान बहुत उपयोगी नहीं है। जब तक हमारे देश का मस्तिष्क अपने ही देश की जलवायु भूमि, परिस्थिति आदि का अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टि से निरीक्षण परीक्षण नहीं करेगा तब तक न उसमें मौलिकता से विचार की क्षमता जागरित होगी और न उसके ज्ञान का अपने देश के लिए कोई उपयोग ही सिद्ध हो सकेगा।

(शेषांश पृष्ठ १४ का)

आवश्कता होनी चाहिए थी। परन्तु कैनिंग की घोषणा से ताल्लुकेदारों के विद्रोह को ही जन्म मिला, न कि किसी संयुक्त मोर्चे को। दूसरा नतीजा है- वर्गहित का। पुश्तैनी सामन्त और अंग्रेजों द्वारा जनित सामंत मुक्ति-संग्राम में उसी समय सम्मिलित हुए जब उनके वर्गीय स्वार्थों पर अंग्रेजों ने आक्रमण किया। अतः धर्म, मजहब अथवा तथाकथित देशभक्ति एवं राष्ट्रवाद वर्ग स्वार्थों के समक्ष सिर्फ गौण भूमिका निभाने के अतिरिक्त और कुछ नहीं करते। ये ही वर्ग स्वार्थ समाज की उन दो वर्ग-शक्तियों (उत्पादक-वर्ग और गैर उत्पादक वर्ग) का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनके बीच अन्तिम विजय (उत्पादक या शोषित वर्ग की) और अन्तिम शिकस्त (गैर उत्पादक या शोषक वर्ग की) के लिए युगों से संग्राम चला आ रहा है। विभिन्न अवस्थाओं एवं स्थानों पर इनके स्वरूप बदलते रहे हैं और रहेंगे (स्थानीय आवश्यकताओं के अनुसार) परन्तु इनके मूल स्वर तथा बुनियादी लक्ष्य में संशक्त एकरूपता होती है। और एक है- [illegible] मुक्ति और शोषित वर्ग की राजसत्ता की स्थापना। तो आइये मुक्ति संग्राम की स्वर्णिम मंजिल की ओर अग्रसर हों। यह मंजिल है १८५७ का महा मुक्ति संग्राम।

(समाप्त)

(शेषांश पृष्ठ १० का)

आवश्यकताओं का ध्यान रखते हुए शिक्षा का स्तर और उसके विषयों को प्रोन्नत करने के लिए प्रभावी उपाय किया जाए। मौजूदा ढांचे में प्रत्येक स्तर पर सुधार किया जाए। (३) माध्यमिक स्तर से शिक्षा को जीविकोन्मुख बनाया जाए, जिसके साथ आर्थिक योजना की एक ऐसी प्रणाली हो, जो काम-धन्धों की गारंटी देती हो। शिक्षण संबंधी नौकरियों के अतिरिक्त अन्य नौकरियों के लिए विश्वविद्यालयों की डिग्री आवश्यक न हो। (४) पांच वर्षों के अन्दर सार्वभौम प्राथमिक शिक्षा और सार्वभौम वयस्क शिक्षा का स्तर प्राप्त करने को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए। (५) शिक्षण-संस्थाओं में सरकारी हस्तक्षेप पर रोक लगे। इन संस्थाओं की व्यवस्था का भार सामान्यतया वहां के अध्यापकों को सौंपा जाए, जिसमें छात्रों का भी प्रजातांत्रिक सहभाग हो।

राजनीतिक भ्रष्टाचार का उन्मूलन

भ्रष्टाचार हमारे राजनैतिक जीवन के मर्म को नष्ट करता जा रहा है। यह विकास में रुकावट डाल रहा है, प्रशासन की जड़ काट रहा है और नियम-कानून का उपहास कर रहा है। यह जनता का विश्वास मिटा रहा है और सच्चे अर्थों में उनके धैर्य को खत्म कर रहा है।

जन-जीवन को कैंसर जैसी इस बीमारी से मुक्त करने के लिए हमारी मांग है—

(१) उच्चधिकारों-युक्त न्यायाधिकरणों (लोकपाल और लोकायुक्त) की बहाली, जिन्हें प्रधानमन्त्री तथा मुख्यमन्त्रियों जैसे उच्च पदस्थ व्यक्तियों पर लगाए गए आरोपों के सम्बन्ध में जांच करने का अधिकार हो। (२) भ्रष्टाचार के आरोपों के बारे में संथानम कमिटी की सिफारिशों को लागू किया जाए। किसी जाँच के सिलसिले में जहाँ यह संदेह हो कि प्रत्यक्ष अभियोग बनता है या नहीं, वहां सुप्रीमकोर्ट या हाईकोर्ट के किसी जज से निर्णय लिया जाए, न कि कार्यपालिका के किसी सदस्य से। (३) एक ऐसा कानून बनाया जाए, जिसके द्वारा सभी सार्वजनिक पदाधिकारियों के लिए आवश्यक हो कि पद-ग्रहण करने के तुरन्त बाद वे अपनी सम्पत्ति की घोषणा करें और उसके बाद भी निश्चित अवधि पर ऐसा करते रहें।

भगतसिंह द्वारा शहादत की पेशकश

० अमर नाथ राय

[२३ मार्च, १६३१ को भगत सिंह, सुखदेव तथा राजगुरु को फांसी दी गई थी। प्रस्तुत लेख में यह दिखाया गया है कि प्राणोत्सर्ग के लिए क्रांतिकारियों ने किस तरह आपस में होड़ लगा दी थी। भारतीय स्वतन्त्रता की नींव की ईंटें इन अमर शहीदों की खून से ही जुड़ी गई हैं।]

'मुझे दुःख है कि मैंने किसी व्यक्ति की हत्या की। परन्तु यह व्यक्ति एक बर्बर, घृणित और निकृष्ट प्रशासन का अंग था, इसीलिए उसे समाप्त करना नितांत आवश्यक था। वह भारत में ब्रिटिश प्रशासन का प्रतिनिधि था।...... मनुष्य का खून बहाना हमारा अभीष्ट नहीं...... हमारा उद्देश्य ऐसी क्रान्ति लानी है जो मनुष्य द्वारा मनुष्य के शोषण को सदा के लिए समाप्त कर दे।' ये शब्द जलियाँवाला बाग के नृशंस पुलिस-अधिक्षक सांडर्स की हत्या के बाद जारी किये गए अपने पत्रक में क्रांतिकारियों की केन्द्रीय समिति ने व्यक्त की थी। इस पत्रक को अमर शहीद भगतसिंह ने ही तैयार किया था। इससे यह बिलकुल स्पष्ट है कि भगतसिंह ने सांडर्स की हत्या मात्र हत्या करने के उद्देश्य से अथवा किसी वैयक्तिक दुश्मनी की वजह से नहीं की थी। यह बात इस तथ्य से और भी स्पष्ट हो जाती है कि जिस लाला लाजपत राय पर लाठियों का प्रहार करने के लिए भगतसिंह ने सांडर्स की हत्या की वे भगतसिंह की क्रान्तिकारी नीतियों के समर्थक नहीं थे और न ही भगतसिंह लालाजी की नीतियों के। भगतसिंह तो लाला जी को 'प्रतिक्रियावादी' मानते थे। एक सार्वजनिक सभा में भगतसिंह ने लाला जी को एक पुर्जा थमाया था जिसमें उन्होंने लाला जी को 'गया-गुजरा' नेता कहा था। इसे पढ़ कर लाला जी क्रुद्ध हो उठे थे और उन्होंने भगतसिंह को 'रूस का एजेंट' बताया। फिर भी जब पुलिस ने लाला जी को निर्दयतापूर्वक पीटा तो भगतसिंह ने उसे 'राष्ट्रीय अपमान' समझा और इसका प्रतिशोध लेने के लिए जान की बाजी लगाकर सांडर्स की हत्या की। इस लाहौर षड्यन्त्र अभियोग में ब्रिटिश सरकार ने उन्हें मुख्य अभियोगी करार किया था।

ऐसा प्रतीत होता है कि अभी भी भगतसिंह की शहादत की प्यास बुझी नहीं थी। फलस्वरूप उन्होंने यह लोमहर्षक पेशकश की कि उन्हें ४ अप्रैल,१६२६ को केन्द्रीय धारा-सभा कक्ष में बम फेंककर अपने को गिरफ्तार कराने दिया जाये। उनका तर्क था कि अभियोग की सुनवाई तथा फांसी के अवसर पर दल की नीतियों और उद्देश्यों का प्रभावशाली ढंग से प्रचार किया जा सकता है। परन्तु चन्द्रशेखर आजाद का विचार भिन्न था. उनका कहना था कि केन्द्रीय कक्ष में बम और क्रांतिकारी-पत्रक फेंककर साथी भाग निकलें। आजाद, सुखदेव तथा केन्द्रीय समिति के अधिकांश सदस्य भगतसिंह को इस अभियान पर जाने देने को राजी नहीं थे। क्योंकि भगतसिंह इस दल के बौद्धिक नेता थे, इसलिए दल को उनकी सलाह की सतत आवश्यकता थी। भगतसिंह की मांग पर केन्द्रीय समिति की आवश्यक बैठक बुलाई गई।

समिति के समक्ष भगतसिंह ने यह जोरदार वकालत की कि दल की नीतियों, और उद्देश्यों का प्रचार करने तथा इस दोषारोपण का मुंहतोड़ जवाब देने के लिए उन्हें आत्मबलिदान करने दिया जाये कि क्रांतिकारियों का दल डकैतों का एक गिरोह है जो हिंसा और आतंकवाद फैलाने पर उतारू है। समिति के सामने एक जबरदस्त असमंजस उपस्थित था। एक तरफ दल के हित के लिए भगतसिंह का रहना अत्यावश्यक था. दूसरी ओर भगतसिंह शहादत के लिए कृतसंकल्प थे। सदस्यों का विचार था कि श्री विजय कुमार सिन्हा तथा श्री बटुकेश्वर दत्त को ही जिन्हें इस काम के लिए पहले चुना गया था, यह कार्य सौंपा जाए - परन्तु भगतसिंह अपनी बात पर अड़े रहे। अन्ततोगत्वा समिति को झुकना पड़ा और भगतसिंह को आत्मोत्सर्ग की अनुमति मिल गई। श्री बटुकेश्वर दत्त ने धमकी दी कि यदि उन्हें भगतसिंह के साथ न भेजा गया तो वे दल से नाता तोड़ देंगे। राजगुरु ने भी प्रार्थना की कि उन्हें भी इस अभियान में शामिल किया जाये। परन्तु राजगुरु के लिए जाने की कोई गुंजाइश नहीं थी, क्योंकि यह पहले से ही तय था कि दो आदमी ही इस अभियान पर जायेंगे। फिर भी यह स्पष्ट है कि प्राणाहुति के लिए क्रांतिकारियों ने होड़ लगा दी थी।

निश्चित समय पर केन्द्रीय कक्ष में बम विस्फोट हुआ। यों तो विस्फोट से किसी की मृत्यु नहीं हुई परन्तु बम-विस्फोट की ध्वनि और 'इन्कलाब जिन्दाबाद' के उद्घोष से ब्रिटिश सल्तनत की नींव हिल गई। भगतसिंह तथा दत्त को आजीवन कारावास की सजा दी गई। लाहौर षड्यन्त्र के अपराधी के नाते भगतसिंह, राजगुरु तथा सुखदेव को फांसी की सजा सुनाई गई। २३ मार्च १६३१ की खूनी शाम को इन तीनों शहीदों को फांसी पर लटका दिया गया। फांसी के तख्ते पर भी देश के ये मतवाले हंसते रहे।

इस प्रकार क्रान्तिकारियों ने अपने प्राणोत्सर्ग कर भारत की भावी स्वतंत्रता की बुनियाद मजबूत की। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य से महज लोहा ही नहीं लिया अपितु सर्वप्रथम भारत में समाजवादी गणतन्त्र की स्थापना का उद्देश्य भी घोषित किया। भारत माँ के इन सपूतों को कोटिशः नमन।

(शेषांश पृष्ठ ८ का)

हर निचले स्तर द्वारा ऊपरी स्तर का निर्वाचन अधिक तर्कसंगत होगा, यानी गांव-पंचायतें पंचायत समिति को चुनें, समितियां जिला-परिषदों को चुनें, परिषदें राज्य असेम्बली को चुनें और राज्य-असेम्बलियां लोकसभा का निर्वाचन करें। लेकिन इस प्रश्न पर अधिक विचार करने पर यह विधि अवांछनीय मालूम होगी। इसके खिलाफ मुख्यतः दो आपत्तियां उठायी जा सकती है: (१) इसमें स्थानीय संकीर्ण निष्ठावाद को बढ़ावा मिलेगा। व्यक्तिगत नागरिक और निचले स्तर की संस्थायें यह सोच सकती है कि राज्य और संघ-स्तर की संस्थाओं के बनाने में उनका कोई हाथ नहीं रह गया और ये संस्थायें उनके प्रति किसी रूप में उत्तरदायी नहीं है। (२) सबसे नीचे के स्तर को छोड़कर अन्यत्र सब जगह मतदाताओं की संख्या कम होने के कारण धनिक वर्ग का स्वार्थ उन पर बेजा दबाव डाल सकेगा।

आज की चालू पद्धपि के सम्बन्ध में भी थोड़े बहुत भिन्न रूप में यही आपत्तियां उठायी जा सकती हैं। लेकिन प्रस्तावित पद्धति के दोषों के निराकरण के उपाय न ढूंढ़ने का यह कोई कारण नहीं बन सकता। इसका हल यह नहीं है कि चालू पद्धति से, जिसमें और भी ज्यादा दोष हैं, चिपक जायें।

विधानसभा और लोकसभा के लिए फिलहाल मैं निम्नलिखित विधि सुझा रहा हूं। इस विधि को अपनाने से उपर्युक्त आपत्तियों का समाधान भी हो जाएगा और इस निबन्ध में बताये गए लोकतन्त्रीय ढांचे के सजीव स्वरूप पर भी कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा।

ग्रामसभाओं के साथ निर्वाचन-परिषद् की स्थापना

हर निर्वाचन-क्षेत्र में हर 'ग्राम-सभा' नियमित रूप से आयोजित ग्राम बैठक में 'निर्वाचक-मण्डल' के लिए, जिसे 'निर्वाचन-परिषद्' भी कहा जा सकता है, इस विधि से दो प्रतिनिधि चुने। इस बैठक में उम्मीदवारी के लिए नाम मांगे जायें और प्रस्तावित तथा तथा समर्थित नामों की सूचि बता दी जाय और हो सके, तो एक अच्छे से बोर्ड पर लगा दी जाय। यदि दो नामों से अधिक का प्रस्ताव न हो, तो वे आपसे-आप निर्वाचित प्रतिनिधि बन जाते हैं। अन्य स्थिति में हर नाम पर मतदान होना चाहिए। यह मतदान हाथ उठा कर होना चाहिए। हर उम्मीदवार द्वारा प्राप्त मतों को बोर्ड पर दर्ज किया जाना चाहिए। दो से अधिक उम्मीदवारों की स्थिति में ऐसा मतदान बार-बार होना चाहिए और सबसे कम मत पाने वाले उम्मीदवारों को छांटते जाना चाहिए। चुनाव का यह ग्रा... और कम खर्चीला तरीका है। ज्यों ज्यों ग्रामस... बैठकें आयोजित करने, बजट पास करने और ... सामूहिक निर्णय करने के अनुभव प्राप्त करती जा... यह चुनाव-पद्धति उनके लिए मामूली बात हो जाये... निर्वाचन के आरम्भ में जो कठिनाईयां आयें, वे पंचायत-अध्यक्ष के नेतृत्व में किए गए पूर्वाभ्... (रिहर्सल) द्वारा दूर की जा सकती हैं।

यह चुनाव हो जाने के बाद निर्वाचन-प... बुलानी चाहिए। यानी क्षेत्र के किसी केन्द्रीय स्था... विधान सभा या लोक सभा से सम्बद्ध निर्वाचन-... की ग्रामसभाओं द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों की बै... की जानी चाहिए। इसके लिए निम्नलिखित पद्... अपनायी जा सकती है:

पहले उम्मीदवारों के नाम मांगे जायें और ... हर प्रस्तावित और समर्थित नाम पर वोट लिये जा... एक निर्धारित प्रतिशत–उदाहरण ३० प्रतिशत–से अ... क मत पानेवाले व्यक्ति विधान सभा या लोक सभा... लिए उस निर्वाचन-क्षेत्र से उम्मीदवार घोषित किये ज... चाहिए।

मेरा विचार है कि लोकतन्त्र की चरितार्थता... लिए— यह लोकतन्त्र चाहे किसी भी प्रकार का... न हो — इस बात का ध्यान रखना जरूरी है कि... की प्रक्रियाओं में जितना कम मत-विभाजन हो, उ... ही अच्छा है। अधिक स्पष्ट शब्दों में, वह जहां... सम्भव हो सके, एकतामूलक हो। इसलिए मेरा आ... है कि विविध शिक्षणात्मक और वैधानिक उपायों ... निर्वाचन-परिषदों को एक सीट के लिए एक उम्मीद... से ज्यादा न खड़े करने के लिए प्रोत्साहित किया जा... क्योंकि आखिरकार, अन्तिम रूप में पूरे निर्वाचन-... का प्रतिनिधित्व एक व्यक्ति ही करता है, उम्मीदव... की संख्या चाहे जितनी हो और चुनाव की विधि ... भी क्यों न हो। (यहां मेरा मतलब एक-सदस्... निर्वाचन क्षेत्र से है।) लोकतन्त्रीय सिद्धान्त में यह ... कुछ बेतुकी है कि एक बार जो प्रतिनिधि चुन लिया ... और उसका चाहे कितना ही प्रबल विरोध क्यों ... हुआ हो, वह 'पूरे' निर्वाचन-क्षेत्र का प्रतिनिधित्व क... है। ऐसा मान लिया जाता है कि वह उनकी भी ... करेगा, जिन्होंने उसका विरोध किया था। यदि नि... चन-परिषदों को केवल एक ही उम्मीदवार चुनने ... के लिए राजी किया जा सके, तो यह असंगति ... व्यर्थ की उत्तेजना तथा बल और पैसे की बर्बादी ब... जा सकती है। यदि कुछ क्षेत्रों में व्यावहारिक न हो ... उपर बताये ढंग से चुने गये व्यक्तियों के नाम उम्...

वारों के रूप में घोषित कर दिये जायें और तब अन्तिम निर्वाचन निम्नलिखित ढंग से किया जाय।

सहयोगात्मक लोकतंत्र में सत्ता का नीचे की ओर खिचाव सम्भव

निर्वाचन-परिषद् द्वारा चुने गये उम्मीदवारों के नाम सम्बद्ध निर्वाचन-क्षेत्र की सभी 'ग्राम-सभाओं' के पास भेज दिये जायें। फिर हर सभा ग्राम बैठक का आयोजन करे, जिसमें हर उम्मीदवार के नाम पर मत लिये जायें। उसके बाद निम्नलिखित दो विकल्पों में से एक अपनाया जाय।

(१) सबसे अधिक संख्या में वोट पाने वाले उम्मीदवार के बारे में घोषणा कर दी जाय कि यह 'ग्रामसभा' अपने प्रनिनिधि के रूप में इस मनुष्य को उच्च 'सभा' में भेजना चाहती है। ऐसे सब व्यक्तियों में से जिसे सभी ग्राम-सभाओं में सबसे अधिक वोट मिलें, उसे उस निर्वाचन-क्षेत्र से विधान सभा या लोकसभा (जिसके लिए भी चुनाव हुआ हो) का सदस्य घोषित किया जाय।

(२) विकल्पतः हर उम्मीदवार द्वारा हर ग्राम सभा की साधारण सभा में पाए गए वोटों को दर्ज कर लेना चाहिए। तब प्रत्येक उम्मीदवार द्वारा पूरे निर्वाचन-क्षेत्र की विभिन्न ग्रामसभाओं की बैठकों में प्राप्त वोटों को जोड़ लिया जाय। इस प्रकार सबसे अधिक मत पाने वाला उम्मीदवार उस निर्वाचन-क्षेत्र का सदस्य हो जाता है।

इस तरह यह देखा जाएगा कि चुनाव के इस तरीके द्वारा कई वांछनीय बातें पूरी हो जाती हैं। पहली यह कि यह लोकतंत्रीय ढांचे के ऊपरी स्तर को रचनात्मक ढंग से नीचे के स्तर से सम्बद्ध कर देती है और 'ग्रामसभाओं' को स्थानीयता के दलदल से उठा कर उसे प्रतिष्ठा, शक्ति और सार्थकता प्रदान करती है। दूसरी यह कि हर बालिग नागरिक को लोकतंत्र की ऊंची-से ऊंची संस्थाओं के निर्वाचन में योगदान करने का अवसर मिलता है और वे यह कार्य संघटित रूप से 'ग्रामसभाओं' और निर्वाचक-परिषदों द्वारा करते हैं, जिससे वे अपने प्रतिनिधियों पर उपयुक्त प्रभाव डाल सकते हैं। इस रूप में व्यक्तिगत मतदाता बालू के कणों की तरह बिखरे हुए और असहाय न होकर पत्थर की मजबूत ईंटें बन जाते हैं। पत्थर की ईंटों की नींव पर बना हुआ मकान बालू पर बने मकान से कहीं ज्यादा भिन्न होगा।

युवकों से अपील

१३ अप्रैल १९७५ के दिन आर्यसमाज अपने सौ वर्ष पूरे करने जा रहा है। इन सौ वर्षों के इतिहास की यदि हम देखें तो आर्य समाज की गोद में पले हजारों वीरों ने जहां समाज के कार्य को आगे बढ़ाया उसी के साथ साथ देश की आजादी के लिए भी हर प्रकार की कुर्बानी दी। अनेकों ने फाँसियां खाई, जेलें काटी और कठोर यातनायें सही और कभी अपने मार्ग से नहीं टले। परन्तु इतना स्वर्णिम इतिहास होने के बाद भी आज हम देखते हैं कि आर्य समाज के कार्य-क्रम में कुछ शिथिलता आ गई है। क्या हम श्रद्धानन्द, लेखराम व भक्त फूलसिंह के बलिदान को भूल गये, क्या हम भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद व रामप्रसाद बिस्मिल की शहादत को भूल गये। वे शहीद हो गए देश को आजाद कराने के लिए और आर्य संस्कृति एवं वैदिक मान्यताओं को देश में स्थापित करने के लिए। परन्तु देश आजाद हो कर भी आज बरबाद हो रहा है। आज आजादी के नाम पर देश की करोड़ों जनता को गरीबी, भुखमरी, बेरोजगार, महंगाई एवं शोषण की जंजीरों से बुरी तरह से जकड़ रखा गया है। चरित्र-हीनता, शराबखोरी, रिश्वतखोरी एवं भ्रष्टाचार राष्ट्र की जड़ें खोखली कर रहे हैं। अतः यह क्रान्ति का समय है; समाज एवं व्यवस्था परिवर्तन का समय है। यह कार्य केवल आर्य समाज ही कर सकता है। शताब्दी को यदि आप सही रूप में मनाना चाहते हैं और एक शोषण मुक्त समाज की स्थापना का बिगुल बजाना चाहते हैं तो आप को एक बार फिर आर्य समाज का वही गौरवमयी इतिहास दोहराना पड़ेगा। युवकों को विशेष तौर पर संकल्प लेकर मैदान में निकलना पड़ेगा। आज देश ज्वालामुखी के समान बन चुका है। इसमें विस्फोट कभी भी हो सकता है। ऐसी अवस्था में आर्य समाज की शताब्दी को हमें जोर-शोर से रचनात्मक रूप में मनाना चाहिए। यह जिम्मेदारी और किसी पर नहीं बल्कि उन्ही युवकों पर पड़ती है जो महर्षि दयानन्द के मिशन के प्रति प्रेम रखते हैं और वैदिक मान्यताओं के आधार पर आर्य राष्ट्र की स्थापना करने की तमन्ना रखते हैं। वे शताब्दी के उपलक्ष्य में कुछ ऐसा क्रान्तिकारी एवं ठोस प्रोग्राम जनता के सामने रखें कि उन्हें भविष्य की आशायें आर्य समाज में ही दिखाई दें और वे इसे ही अग्रदूत बनाकर क्रान्ति पथ पर चल पड़ें।

(शेष पृष्ठ २२ पर)

रोटी का मोल

० डा. मनोहरलाल चतुर्वेदी

एक समय की बात है। राज्य में सूखा पड़ा हुआ था। अकाल की काली छाया जन-जीवन पर बरसाती बादलों की भांति छा चुकी थी। अनावृष्टि के कारण खेतों में चलते हल ठप्प हो चुके थे। प्यासी धरती टकटकी लगाए आकाश में छिटके कुछ बेरहम बादलों को आशा भरी दृष्टि से निहार रहीं थी। सूखे नंगे पड़े पेड़ गर्मी से त्रस्त होकर भगवान इन्द्र देव से जल की याचना कर रहे थे। नदी पानी के लिये तरस गई थी। ... और जब प्रजा पेट में सुलगती भूख की ज्वाला को सहन नहीं कर सकी तो हताश होकर बादशाह सलामत के महल के सामने एकत्रित हुई। लाचार वृद्ध और बच्चे भूख से व्याकुल होकर चिल्ला रहे थे... 'हमें रोटी चाहिये"

बादशाह ने आश्चर्य से पूछा," यह कैसा शोरगुल है वजीरे आजम ?"

हुजूर, रिआया धरना दे रही है।

क्यों ?

क्योंकि वह भूखी मर रही है। मालिक । वतन में अकाल जो पड़ा है।

अकाल ? अकाल क्या होता है, वजीरेआजम ?

आलमपनाह-जब रिआया की तकदीर के सभी दरवाजे बन्द हो जाते हैं और उसे रोटी नहीं मिलती जब आसमान प्यासी धरती की प्यास नहीं बुझा पाता, खेतों में चलते हल जब ठप्प हो जाते हैं, रिआया जब दाने-दाने को तरस जाती है, ऐसी हालत को अकाल कहते हैं।

वजीरेआजम, तुम्हारी बात हमारी समझ में नहीं आती। ये लोग अपने खाने की आदत क्यों नहीं बदल डालते। रोटी नहीं मिलती तो इनसे कहो पूड़ी खायें, फल खायें, मेवा खायें। पानी की कमी है तो दूध पियें, फलों का रस पियें। चिल्लाते क्यों हैं। इन्हें सब्र से काम लेना चाहिए।

"मगर हुजूर, ये गरीब लोग ......"

"हम कुछ सुनना नहीं चाहते। सीधी तरह से नहीं जाते तो इनकी खाल खींच डालो" वजीरे आजम अपना-सा मुँह लटकाकर चले गये।

दूसरे दिन बादशाह सलामत ने वजीर के सामने शिकार खेलने का प्रस्ताव रखा, क्योंकि कल की घटना से उसका मन खिन्न हो गया था। शिकार की तैयारियाँ हुई। कुछ चुने हुए सरदारों को लेकर बादशाह तथा वजीर जंगल की तरफ चल पड़े। चलते-चलते उ[illegible] हिरणों के झुण्ड दिखाई पड़े। बादशाह सलामत त[illegible] वजीर उनका पीछा करते-करते घने जंगल में घुसते [illegible] चले गए। उनके साथी पीछे छूट गये। साथियों [illegible] बिछुड़ कर वे घने जंगल में भटक गये।

प्रातः हुआ। बादशाह सलामत के पेट में भूख [illegible] भभूके उठने लगे। पास ही में झरना झर रहा था [illegible] उन्होंने पानी पीने का प्रयत्न किया तो भूखे पेट में [illegible] होने लगा। धीरे-से वजीर से बोले—

"वजीरे आजम, मुझे भूख लग रही है।"

"आलम पनाह, सब्र करें, कुछ न कुछ तो मि[illegible] ही।"

वजीरे आजम ने ढाढस बँधाया !

दोपहर हुई, शाम हुई, सूरज ढल गया। च[illegible] चलते बादशाह थक चुके थे। आँखो के सामने अं[illegible] तैरता आ रहा था। वजीर से बोले—

वजीरे आजम, बहुत भूख लगी है। आं[illegible] सामने अंधेरा ही अंधेरा छा गया है।

"आलमपनाह सब्र करें। आगे चलिए। अल[illegible] पर भरोसा रखिए। रात फिर आई, आधी रात [illegible] बादशाह भूखे बैठे रहे। आज उन्हें पहली बार अ[illegible] हुआ कि खाली पेट नींद नहीं आती। बड़ी बेबश नि[illegible] से वजीर की तरफ देख रहे थे। अचानक वजी[illegible] कहा— वह देखिए हूजूर, कुछ घुड़सवार हा[illegible] मशालें लिए जा रहें हैं, शायद खानाबदोश हैं। [illegible] जल्दी चलिए। बादशाह शीघ्रता से उनके पास पहुं[illegible] कातर स्वर में बोला," रहम करो भाइयों—बड़ा [illegible] हूँ। दो रोटी मुझे दे दो।" सबके आगे उनका [illegible] था। वह आश्चर्य से बोला, अरे भाई तुम कौन [illegible] सूरत से किसी शरीफ खानदान के लग रहे हो। [illegible] गले में सोने का हार लटक रहा हैं और फिर [illegible] भूखे हो ?

हाँ भाई, यह हार तुम ले लो और बदले [illegible] रोटी दे दो। अल्लाह तुम्हें जन्नत बख्सेगा। [illegible] गिड़गिड़ा रहा था। लेकिन भाई हमें बहुत लम्ब[illegible] तय करना है और हमारे पास अधिक रोटियाँ न[illegible] हम लाचार हैं। बादशाह सलामत शिथिल पड़[illegible] उनकी आँखो से दो आँसू चू पड़े। सरदार को त[illegible] गया। उसने कुछ रोटियाँ दे दी। काफिला आ[illegible] गया।

समाचार-दर्शन

स्वामी इन्द्रवेश जी जन संघर्ष समिति के संयोजक

हरियाणा में विहार टाइप आन्दोलन प्रारम्भ करने तथा उसे तीव्रता के साथ चलाने के लिए "हरयाणा जन संघर्ष समिति" का पुनर्गठन किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के स्वामी इन्द्रवेश जी को इसका संयोजक नियुक्त किया गया। इस समिति में सभी गैर कम्युनिस्ट पार्टियों के प्रतिनिधि शामिल हैं। इस तरह २३ सदस्य संख्या वाले समिति का गठन किया गया है।

हरयाणा जन संघर्ष समिति के मनोनीत सदस्य

श्री देवीलाल, श्री मनीराम बागड़ी, श्री चांदराम (भालोद), श्री बलवन्त राय तायल, श्री इन्द्र सिंह श्योकन्द एडवोकेट, श्री गणपतराय जी एम० एल० ए० (संगठन कांग्रेस), डा० मंगल सेन, श्री शिवराम वर्मा, श्री सूरजभान भूतपूर्व ससद सदस्य-(जनसघ), स्वामी अग्निवेश, स्वामी शक्तिवेश जी, (आर्य सभा) श्री नेतराम, श्री पन्ना लाल एडवोकेट (सोशलिस्ट), सरदार रघुबीर सिंह, सरदार दारासिंह एडवोकेट (अकाली दल), श्रीराम शर्मा जी, श्री मूलचन्द जैन एडवोकेट, कप्तान रणजीत सिंह, सरदार खां (निर्दलीय) श्री ओमप्रकाश त्रिखा, श्री जयनारायण, ब० लक्ष्मीदेवी (सर्वोदय)

१३ मार्च को संघर्ष समिति की बैठक सम्पन्न

१३ मार्च १९७५ को हरयाणा जन संघर्ष समिति की बैठक सम्पन्न हुई। बैठक में लोकदल, जनसंघ, आर्य सभा, सोशलिस्ट, संगठन कांग्रेस, तथा अनेक निर्दलीय सदस्यों ने भाग लिया। सर्वोदय नेता सर्व सेवासंघ की बैठक में पवनार आश्रम जाने के कारण भाग नहीं ले सके।

बैठक में १० अप्रैल को चण्डीगढ़ के लिए जनता मार्च सम्पन्न करने का निश्चय किया गया। इस मार्च में सम्पूर्ण हरयाणा से चुने गये हजारों की तादाद में जनता के प्रतिनिधिगण भाग लेंगे और हरयाणा की जनता की तरफ से राज्यपाल को मांगपत्र प्रस्तुत करेंगे। ज्ञापन (मांगपत्र) तैयार करने के लिए एक उपसमिति का गठन किया गया जिसमें पं० भगवतदयाल शर्मा, डा० मंगलसेन, श्री मूलचन्दजैन, चौ० चांदराम, पन्नालाल एडवोकेट तथा स्वामी इन्द्रवेश जी होंगे।

समिति ने ६ अप्रेल को हरयाणा भर में आपात कालीन विरोधी दिवस मनाने का निश्चय किया जिसके अन्तर्गत जिले स्तर पर तथा तहसील स्तर पर जनता द्वारा सम्मेलनों का आयोजन होगा। हरयाणा जनसंघर्ष समिति के संयोजक स्वामी इन्द्रवेश जी प्रत्येक जिलों का दौरा करेंगे।

समिति ने अन्त में निम्नलिखित प्रस्ताव पास किया

हरयाणा संघर्ष समिति की यह बैठक हरयाणा में बढ़ते हुए सरकारी दमन चक्र की घोर निन्दा करती है। जीन्द, दादरी में अध्यापकों की गिरफ्तारी, हिसार, नरवाना, सोनीपत, कुरुक्षेत्र में विद्यार्थियों की गिरफ्तारियां और पिटाई, कुरुक्षेत्र विश्व विद्यालय से अनेक छात्रों का निष्कासन और दफा १०७/१५१ जाबता फौजदारी का बड़े पैमाने पर नाज यज प्रयोग—यह सब इस बात की निशानी हैं कि हरयाणा मे प्रजातन्त्र नहीं अपितु पुलिस राज हैं।

यह बैठक हरयाणा सरकार को सावधान करती है कि वह इस दमन चक्र को समाप्त करे और विद्यार्थियों पर बनाये मुकद्दमे तथा निष्कासन आदेश वापिस ले। यह बैठक हरयाणा की जनता से भी अपील करती है कि वह इस दमन के विरुद्ध संघर्ष के लिये तैयारी करे।

वार्षिक उत्सव सम्पन्न

गुरुकुल प्रभातआश्रम का वार्षिकोत्सव ११ मार्च को बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर सामवेद पारायण यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात् ब्रह्मचारियों का सस्वर वेद पाठ, संस्कृत, हिन्दी तथा अंग्रेजी में व्याख्यान बहुत आकर्षक रहा। जिसको सुन कर जनता बहुत प्रभावित हुई तथा लोगों ने दिल खोल कर दान दिया

स्वामी अग्निवेश जी की थाईलैंड-यात्रा

"वैदिक समाजवाद" की विचार धारा से अवगत होने के लिए थाईलैंड स्थिति "पेसीफिक आश्रम" की तरफ से स्वामी अग्निवेश जी को आमन्त्रित किया गया है। स्वामी जी २५ मार्च को दिल्ली से थाईलैंड रवाना होंगे और लगभग एक माह तक वहां रहेंगे। वहाँ वैदिक धर्म की वैज्ञानिक मान्यताओं के आधार पर "शोषणहीन एवं प्रशासन मुक्त" समाज व्यवस्था की स्थापना पर उनके अनेकों भाषणों का आयोजन होगा। आश्रम में विभिन्न देशों से आये हुए अनेक विद्वानों से भी विचारों का आदान-प्रदान करने का उन्हें शुभ अवसर प्राप्त होगा। अन्त में वहाँ की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों का अध्ययन करते हुए स्वामी अग्निवेश २० अप्रैल तक वापस आयेंगे।

समाज में एकता की परम आवश्यकता

हरयाणा छात्र परिषद् के आयोजन में आह्वान

कलकत्ता, आने वाले दिन अत्यन्त कठिन है। अतएव सम्पूर्ण मतभेदों को भुला कर समाज में सुदृढ़ एकता इस समय परम आवश्यक है—उक्त शब्द है - 'विश्वमित्र' के सम्पादक श्री कृष्णचन्द्र अग्रवाल के जो आज यहाँ हरयाणा छात्र परिषद् के वार्षिकोत्सव में प्रधान अतिथि पद से भाषण दे रहे थे। श्री अग्रवाल ने कहा कि वर्तमान समय छोटी-छोटी बातों को लेकर आपसी राग-द्वेष और तनाव का नहीं है। यदि समय रहते समाज के लोग सतर्क नहीं हुए, परस्पर प्रेम तथा एकता की भावना मजबूत नही हुई तो आगे चलकर भयावह प्रतिकूलता व कष्ट का सामना करने को वाध्य होना होगा। इस सन्दर्भ में आपने समाज के लोगों को यह सलाह भी दी कि वे स्थानीय समाज के साथ समरस होकर जीवन-यापन करें।

आयोजन का उद्घाटन करते हुए श्री गोविन्दराम भिवानी वाले ने कहा कि छात्र समाज को अनुशासन-बद्ध होना है और चरित्र का निर्माण करना है तभी वे आगे चल कर देश के अच्छे नागरिक हों सकेंगे।

संस्था के सचिव और सभापति क्रमशः श्री बजरंगलाल अग्रवाल व देवकीप्रसाद गुप्ता ने कार्य विवरण उपस्थित किया। सीतारामक लानोरिया व रामनिवास गुप्ता, हनुमान प्रसाद गोयल, अशोक बेरीवाल, रमेश केडिया, विनोदवंसल, बृजमोहन बेरीवाल, बालकिशन गुप्ता, भटनागर गुप्ता तथा उनके अनेक साथीगण आयोजन को सफल बनाने में सक्रिय थे।

आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह समिति

आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह समिति बंगाल और आसाम के तत्वावधान में एक विराट् समारोह सम्मेलन प्रान्तीय स्तर पर १२ अप्रैल से १५ अप्रैल १९७५ तक कलकत्ता में मोहम्मद अली पार्क में बड़े उत्साह के साथ मनाया जायेगा। इस आयोजन को सफल करने के लिए प्रान्त व्यापी प्रचार, जिला कम्प ने स्थानीय समाजों के दौरे, अधिकारियों और उपदेशकों ने आरम्भ कर दिया है। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण वृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया है। एक ऐतिहासिक संग्रहणीय स्मारिक का भी प्रकाशन किया जा रहा है। इस अवसर पर आर्य जगत् के मूर्धन्य संन्यासी, महात्मा, विद्वान, उपदेशक, केन्द्रीय तथा स्थानीय नेतागण सम्मिलित होंगे। आप इस महा सम्मेलन में सम्मिलित होकर तन, मन, धन से सहयोग देकर इस आयोजन को सफल बनाने की कृपा करें।

(पृष्ठ १९ का शेषांश)

अधिक नहीं तो मैं समझता हूं कि हर आर्य युवक जो जहां पर भी रहता है इतना ही कार्यक्रम अपनी पूरी जिम्मेदारी से स्थानीय तौर से मना कर पूरा करे।

१२ अप्रैल को प्रातः यज्ञ किया जाये। दिन में प्रभात फेरी या जलूस ओ३म् के झण्डे लेकर निकाले जायें। रात को ग्राम सभा करके आर्यसमाज के सम्बन्ध में लोगों को विचार दिये जायें। कम से कम ग्यारह युवकों को सदस्य बना कर आर्य युवक परिषद् का गठन किया जाए। खेल-कूद प्रतियोगितायें की जायें। सत्यार्थप्रकाश, महर्षि दयानन्द की जीवनी तथा रामप्रसाद बिस्मिल की आत्मकथा ज्यादा से ज्यादा संख्या में बांटी जाये। चरित्रवान एवं देशभक्त युवकों को समाज के कार्य हेतु पूरा जीवन लगाने का संकल्प करना चाहिए। अपनी सारी गतिविधि कार्यालय में पत्र द्वारा अवश्य भेजें ताकि हमें भी पूरी जानकारी मिल सके।

इस तरह से यदि हर युवक अपने स्थान पर तथा अपने आस पास प्रयत्न करके इस कार्यक्रम को पूरा करेगा और अपने जीवन में कोई न कोई क्रान्तिकारी सकल्प लेगा तो वास्तव में आर्यसमाज के भविष्य के लिए हम नवीनता पैदा कर सकेंगे और दुनियां के सामने आर्यसमाज के गौरव को ऊँचा कर सकेंगे। आज वास्तव में आर्य बनाने का स्वप्न सभी के मस्तिष्क से मिट चुका है। इस लक्ष्य को भूल कर हमने अपने आप ही अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मारी है। अतः आर्यो समय पुकारता है, उठो, अपने आधारभूत सिद्धान्तों के प्रसार का संकल्प लेकर आगे बढ़ो।

सम्पादक के नाम पत्र

संस्कृत पर प्रहार

महोदय,

भारत सरकार ने हाल ही में नवमी तथा दसवी कक्षा से संस्कृत को निकाल कर इस भाषा पर ऐसा प्रहार किया है कि इसके कारण संस्कृत कुछ ही दिनों में समाप्त हो जायेगी। नवीन पाठ्यक्रम के अनुसार संस्कृत अनिवार्य नहीं है। भाषा को अनिवार्य रखने से भाषा का महत्व बढ़ जाता है और उसके ऊपर अधिक जोर देकर पढ़ने तथा विद्यार्थियों के विशेष योग्यता प्राप्त करने की सम्भावना बढ़ जाती है। संस्कृत भाषा का प्रचार करने के लिये इस कदम को उठाना चाहिये। लेकिन जब भाषा को पढ़ने की अनिवार्यता समाप्त की जाती है तो विद्यार्थी को खुद क्या जरूरत पड़ी है कि वह संस्कृत में रुचि ले, अगर वह पढ़ेगा तो उसके पास धन तथा समय खूब होना चाहिये तथा उसे इसके प्रति विशेष लगाव भी होना चाहिये। समय उसी के पास होता है जो कपड़े और रहन-सहन के बारे में तो निश्चिन्त हो। लेकिन वर्तमान भयंकर स्थिति में कितने व्यक्ति ऐसे हैं जो रोटी आदि समस्याओं से निश्चिन्त हैं। मुश्किल से एक प्रतिशत लोग मिलेंगे। अब इसका तात्पर्य यह निकलता है कि संस्कृत पढ़ने वाले नमूने पर भी बड़ी मुश्किल से मिलेंगे। अर्थात् सरकार जानबूझकर संस्कृत भाषा और इस भाषा से प्राप्त संस्कृति, सभ्यता, सादगी और सदाचार आदि को छूमंतर करना चाहती है जो किसी भी समझदार भारतीय के लिये असहनीय और असम्माननीय है। यह समझ में नहीं आता कि इस सरकार को क्या-क्या सूझता है और क्या-क्या कर बैठती है। संस्कृत भाषा समाजवाद के रास्ते में रोड़ा तो है नहीं। आखिर सरकार इसको मिटाने का क्यों प्रयास करती है? पाश्चात्य सभ्यता से प्रेरणा प्राप्त इस देश के कर्णधारों को चाहिये कि अगर भारतवर्ष को पुनः संसार का गुरु बनाना है तो निःसन्देह भारतीय संस्कृति को पुनः संस्थापित करे और इसके लिये संस्कृत को अधिक महत्व दे। क्या सरकार से यह आशा की जाये कि वह पुनः नवमीं दसवीं कक्षाओं में संस्कृत को प्रमुख विषय के तौर पर पढ़ाने की व्यवस्था करेगी तथा आगे भी किसी तरह संस्कृत के प्रचार को रोकने का प्रयास नहीं करेगी?

संस्कृत एक ऐसी भाषा है जिसे विदेशी लोग भी सम्मान की नजर से देखते है। यह समस्त भाषाओं की जननी है। इसके प्रचार-प्रसार के लिये आकाशवाणी पर एक केन्द्र अलग से देना चाहिये जिस पर नियमित संस्कृत के नाटक, परिचर्चाएँ समाचार आदि प्रसारित हों।

श्रीमती सविता देवी आर्या
१६६६ तीमारपुर दिल्ली-११०००७

सरकार एवं फिल्म निर्माताओं को शर्म नहीं आयेगी

महोदय,

आज जहाँ राष्ट्र का एक बहुत बड़ा वर्ग भुखमरी, बेरोजगारी, अनाचार, लालफीताशाही जैसी बीमारियों से दुःखी है, वहाँ सरकार की ओर से इस तरह के प्रयास किए जाते हैं कि वे अन्याय और शोषण के खिलाफ आवाज उठाने योग्य न रह सकें। इन सामन्तवादी साधनों में सिनेमा भी प्रमुख भूमिका अदा कर रहा है

हिन्दी फिल्मों में नग्नता की बाढ़ आई हुई है। ऐसी-ऐसी फिल्में मार्केट में आती रहती है, जिन्हें पति-पत्नि भी इकट्ठे बैठकर नहीं देख सकते। नंगापन 'यथार्थवाद' का लेवल लगाकर सरकार और निर्माताओं के मिले-जुले प्रयास से राष्ट्र की अधिकांश गरीब, शोषित जनता को लूटने का प्रयत्न किया जा रहा है। अंग प्रदर्शन में नई अभिनेत्रियाँ एक दूसरे से आगे निकलना चाहती है। आखिर हम कब तक देखते रहेंगे—नग्नता (अश्लीलता के रूप में) के यह बीभत्स खेल! लगता है कि अपराध बढ़ते रहेंगे, मासूम बच्चे बिगड़ते रहेंगे, मासूम कलियाँ मसली जाती रहेंगी हम लुटते रहेंगे——लेकिन इन निर्माताओं को शर्म नहीं आएगी! सभ्यता के मापदण्ड पैसे में बिक रहे हैं!

सैक्स जीवन का एक अंग जरूर है, लेकिन इसके लिए यह जरूरी नहीं कि इस सत्य को पर्दे पर दिखाने के लिए भौंडे ढंगों का सहारा लिया जाए। सरकार की नर्मी से निर्माताओं का साहस काफी बढ़ गया है। नये कलाकारों से मनचाहे ढंग से रतिक्रिया कराई जा सकती है। हमारी नयी-नयी अभिनेत्रियाँ वक्ष-स्थल की ऊंचाईयों से लेकर नाभि की गहराईयों तक कुछ भी दिखाने में संकोच नहीं करती——उनका एकमात्र उद्देश्य पैसा है। आखिर कब तक बम्बईया फिल्म निर्माता अपने दिल की गंदगी को समूचे समाज पर थोपते रहेंगे और निरुपाय जनता को लूटते रहेंगे? आखिर कब तक सरकार चुपचाप जनता को इस तरह मानसिक, सांस्कृतिक रूप से पंगु होते देखते रहेगी। सरकार को इस शोषण के हथियार का प्रयोग बंद कर देना चाहिए——जनता का आक्रोश इन गन्दगी से लबालब भरी फिल्मों के प्रति बढ़ रहा है। सरकार को तथा फिल्म-निर्माताओं को जनता के विरोधी और विद्रोहात्मक आंदोलन का सामना करने के लिए तैयार रहना चाहिए।

कु० मिथिलेश आर्य
६ मलका नगर, दिल्ली-११०००७

राजधर्म

पंजीयन क्रमांक RTK 28

Lic. to Post without

Pre Payment No. P-13

रोहतक
३० मार्च १९७५

राजधर्म प्रकाशन के लिये राजधर्म प्रेस, रोहतक से स्वामी अग्निवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। फोन : ८८२।

राजधर्म

र्ष ७ अङ्क ७
प्रैल द्वितीय

प्रधान सम्पादक : स्वामी अग्निवेश
सम्पादक : गिरजेश्वर

वार्षिक १५ रु०
एक प्रति ७० पैसे

आर्य समाज शताब्दी

समारोह विशेषांक

यदि आर्य समाज धर्म के जीवित स्वरूप को न अपना सका तो—

भविष्य ही उसका भविष्य बतलायेगा

वैचारिक क्रान्ति के क्षेत्र में अद्भुत योगदान प्रदान करने वाला आर्य समाज १२ अप्रैल १९७५ को अपना सौ वर्ष पूरा कर शताब्दी के दूसरे चरण में प्रवेश कर रहा है। यदि आर्य समाज अपने सौ वर्षों की उपलब्धियों का लेखा जोखा करके अतीत के कटु अनुभवों से सबक नहीं लेगा और भविष्य के लिए नई योजनाओं का निर्धारण कर उसके अनुरूप क्रियाशील संगठन को अस्तित्व में ला करके अपनी गतिविधियों को समय के साथ मोड़ नहीं देगा तो आर्य समाज अपने क्रान्तिकारी स्वरूप को हमेशा के लिए समाप्त कर देगा।

आर्य समाज अपने गौरव के अनुरूप भूमिका अदा करे

आज हम शताब्दी समारोह ऐसे समय में मना रहे हैं जब देश स्वाधीनता के सत्ताईस वर्ष बाद नई करवट बदल रहा है क्योंकि वर्तमान सामाजिक अर्थव्यवस्था के गर्भ में विद्यमान असंगतियां ऐसी अवस्था में पहुंच गयी हैं जब परिवर्तन अवश्यम्भावी हो गया है। चारो ओर क्रान्ति और परिवर्तन के स्वर सुनाई दे रहे हैं। अतः ऐसे सयय में आर्य समाज अपने गौरव और परम्पराओं के अनुकूल भूमिका अदा कर ही अपने अस्तित्व को कायम रख सकेगा।

वर्तमान समय में आर्य समाज के क्रान्तिकारी भूमिका का ठीक निर्धारण तब तक नहीं हो सकेगा जब तक विद्यमान आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक स्थितियों का वैज्ञानिक विश्लेषण नहीं कर लिया जाता। इसके साथ ही साथ आर्य समाज जैसे क्रान्तिकारी संगठन की स्थापना जिन परिस्थितियों में महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा १८७५ में बम्बई में हुई थी, उनका भी स्मरण करना अति आवश्यक है। वास्तव में विगत परिस्थितियों में तत्कालीन समाज रूढ़िवादिता, पाखण्ड और अंधविश्वास में फंसा अपनी आत्म हत्या के ताने बाने बुन रहा था। अस्पृश्यता और जाति-पाति के भेद भाव से ग्रस्त समाज खोखला हो रहा था। स्त्रियों को पढ़ाने-लिखाने की बात तो बहुत दूर की थी, उन्हें गायत्री मन्त्र का उच्चारण तक करने की मनाही थी। धर्माचार्यों ने स्त्री शूद्रौ नाधीयताम् इति श्रुतै वेद में महिलाओं और शूद्रों को पढ़ने का अधिकार नहीं है, ऐसी व्यवस्थाएं दे रखी थी। बाल विवाह, वृद्ध विवाह और बहु विवाह पर उस समय कोई प्रतिबन्ध नहीं था। विधवा विवाह और पुनर्विवाह उस समय बहुत बड़ा अपराध माना जाता था। अछूत कहलाने वाले हरिजन मन्दिरों में जाकर मूर्ति के दर्शन नहीं कर सकते थे, सवर्णों के कुओं से पानी नहीं भर सकते थे। किसी तथाकथित उच्च वर्ण के व्यक्ति से उनका स्पर्श हो जाए तो उल्टा उन्हें ही दण्डित होना पड़ता था। दक्षिण भारत में ब्राह्मण और अब्राह्मण के बीच जो चौड़ी खाई आज देखने को मिलती है यह सब इसी के अवशेष हैं। यज्ञों में पशु बलि और सती प्रथा जैसी भयंकर बुराइयां शास्त्रों की आड़ लेकर पनप रही थीं। ऐसी विकट स्थिति में जब शासन और समाज दोनों उलटे रास्ते पर चल रहे हो तो उनसे टक्कर लेना कितना कठिन काम था। महर्षि दयानन्द ने इस विचित्र स्थिति में समाज को इन बुराइयों के विषाक्त वातावरण से मुक्त करने के लिए ही "आर्य समाज" जैसे क्रान्तिकारी संगठन की नींव डाली थी। वेदों और शास्त्रों की आड़ में पनप रही बुराइयों के दुर्ग को उन्हें शास्त्रार्थों का अवलम्बन लेकर ध्वस्त करना पड़ा। वास्तव में आर्य समाज के संस्थापक को आर्य समाज के जन्म काल के पूर्व से ही संघर्षों से जुझना पड़ा और इस संस्था की स्थापना के बाद तो यह संघर्ष और भी तीव्र हो गया। यह संघर्ष अन्याय और अज्ञान दोनो से करना पड़ा। परायों और अपनो से संघर्ष करते हुए आर्य समाज का स्वरूप निरन्तर निखरता गया।

धर्म प्रचार के साथ साथ आर्य समाज ने शिक्षा प्रचार के क्षेत्र में भी उल्लेखनीय योगदान प्रदान किया। लार्ड मैकाले ने अंग्रेजी की जिस शिक्षा पद्धति को आधार बना कर भारतीयों के मन एवं मस्तिष्क को हमेशा के लिए गुलाम बनाना चाहा, उसे आर्य समाज ने गुरुकुल और डी० ए० वी० कालेज खोलकर असफल प्राय सा कर दिया। इन संस्थाओं से निकले स्नातकों के हृदय में अजीब सी तड़प देश और समाज के लिए रहती थी। शिक्षण संस्थाओं की प्रमुख विशेषताओं में एक विशेषता यह रही कि उनकी शिक्षा का माध्यम हिन्दी रहा। इस तरह स्वतन्त्रता पूर्व भारत के शक्ति शून्य हृदय में महर्षि दयानन्द के पुण्य प्रयासों से आशा, विश्वास एवं स्वाभिमान की भावना का संचार हुआ।

आर्य समाज की रणनीति में क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं हुआ

वास्तव में लोगों के हृदय में स्वतन्त्रता की भावना उत्पन्न करने, पाखण्ड, अन्धविश्वास एवं रूढ़ियों को खत्म करने, जाति-पांत, छूआछूत की भावना को दूर करने तथा मत-मतान्तरो द्वारा स्थापित भेद-भाव की दीवारों [illegible] रहा। उन विकट स्थितियों में इससे भिन्न सोच

ही नहीं जा सकता। स्वतन्त्रता के पश्चात् परिस्थितियों में पर्याप्त परिवर्तन आया। परन्तु यह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण बात है कि स्वतंत्रता के बाद आर्य समाज की रणनीति में जन-आकांक्षाओं के अनुरूप कोई क्रान्तिकारी परिवर्तन नहीं आया। शोषण, जुल्म, अन्याय और उत्पीड़न की चक्की में पिस रही देश की अधिकांश जनता की समस्याओं का सही एवं वैज्ञानिक समाधान प्रस्तुत करने के बजाए, आर्य समाज अपने आपको साम्प्रदायिक स्वरूप में ढाल लिया। आर्य समाज के बड़े-बड़े उपदेशक और विद्वान भी समय के अनुकूल शिक्षित वर्ग के मस्तिष्क को प्रभावित करने वाली विचार धारा का प्रभाव नहीं बहा पाये। सामान्य जनता की साधारण भावनाओं को भजनों से थोड़ी देर गुदगुदा कर अथवा पुरानी बातों को दुहरा कर आर्य समाज अपने कर्त्तव्य की इतिश्री समझ रहा है। यदि किसी ने वैदिक सिद्धान्तों की अधिक महत्ता प्रतिपादित करना चाहा तो कम्युनिज्म और साइन्स पर प्रहार करना शुरू कर दिया। आलोचना प्रशंसनीय एवं लाभप्रद होती हैं यदि वह सत्यासत्य के विवेचन पर आधारित हो। किसी सिद्धांत की मूल भावना को समझे बिना ही उस पर ज्ञाता के घमण्ड में प्रहार करना महर्षि दयानन्द के बाद आने वाली एक पीढ़ी को छोड़कर उसकी अगली पीढ़ी के आर्य समाजियों का एक फैशन बन गया। वे दूसरे के साहित्य, सिद्धान्त और विचार धारा का गम्भीर अध्ययन किये बिना उन पर मिथ्या दोषारोपण करना अपने जीवन का अंग बना लिये। शोषण मुक्त समाज व्यवस्था के स्वरूप की झलक जिन वेद मन्त्रों में है, उसके आधार पर वैदिक सिद्धान्तों की व्याख्या करना व्यर्थ समझा गया। यही कारण है कि कम्युनिस्ट धर्म का विरोध जिस रूप में करते हैं, उस रूप में कोई भी विद्वान अथवा वक्ता बताने की कोशिश नहीं करता। जिस तरह पूंजीवादी अखबार चिल्लाते हैं, उसी प्रकार पूंजीपतियों के प्रतिनिधि धर्मोपदेशक एवं वैदिक विद्वान भी चिल्लाते हैं। जब कम्युनिस्ट मजहब का विरोध करता है तब पता नहीं कमजोर आत्मा वाले आर्य समाजी विद्वान क्यों वैज्ञानिक तथ्यों पर आधारित वैदिक धर्म के ह्रास अथवा नाश का भय व्यक्त करते हैं? वे क्यों नहीं अपने सिद्धांतों की प्रमाणिकता एवं श्रेष्ठता वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर प्रतिपादित करते? क्यों वे वर्षों पुरानी बातों को दुहरा कर ही अपनी भूमिका निभाना चाहते हैं? कम्युनिस्टों का विरोध उस मजहब से है, जो सम्पत्ति और शक्ति के आगे सिर झुकाता है, अन्याय और दमन को आशीर्वाद देता है। गरीबों को संतोष का पाठ पढ़ाता है और अमीरों को खुला शोषण करने की छूट दे देने के साथ ही उनके लिए स्वर्ग का दरवाजा खोलता है। जो मनुष्य को मनुष्य नहीं रहने देता और मानव समूह को दो अन्तर्विरोधी वर्गों में बांट कर सदा कलह का बीज बोने के लिए तैयार रहता है। वास्तव में कम्युनिस्ट मजहब का विरोध इसीलिए करते हैं कि वह विधर्मियों की शुद्धि, मन्दिर, मस्जिद, गिरजादि के निर्माण में लाखों रुपये बहाने वाले एवं भगवत्कीर्तन के समय नाँच उठने वाले मालाधारी भक्त सेठ को गरीबों का गला दबाने से, उनके घर बिकवाने से, ब्याज के नाम से तबाह करने से, चोर बाजारी और अतिरिक्त मुनाफाखोरी से रोक नहीं सकता। करोड़ों की सम्पत्ति के मठाधीश-त्यागी, साधु हैं पूज्य हैं और उनके यहां बेगार पर लगा हुआ खून को पसीना बना कर काम करने वाला श्रमिक नीच है। शास्त्र में चाहे 'शुनि चैवश्वपाके च पण्डिताः समदर्शिनः' की बात हो, पर व्यवहार में गरीब अमीर दोनों के धर्म अलग-अलग हैं। आर्य समाज में भी शुद्धिशुदाओं के साथ सम व्यवहार नहीं है। भंगी और हरिजनों के साथ अब भी व्यवहारिक रूप में वही हीनता की दृष्टि देखी जाती है।

आर्य समाजी खुद भौतिकवादिता के आरोप से ग्रस्त है

आर्य समाज के विद्वान कम्युनिस्टों के ऊपर भौतिकवादिता का आरोप लगाते हैं, यद्यपि कम्युनिस्ट ईश्वर में आस्था रखे बिना उत्पादन सम्बन्धों में भाई-चारा कायम कर निजी स्वामित्व की मनोभावना से उन्मुक्त मानवतावादी धारणा को प्रश्रय देते हैं। वहीं वेदों को 'सब सत्य विद्याओं का भण्डार" मानने वाले एवं 'इदं न मम" का रट लगाने वाले आर्यसमाज के विद्वान उस समय भी निजी स्वामित्व को प्रश्रय देना वैदिक भावना के अनुकूल मानते हैं, जब कि उत्पादन का चरित्र सामाजिक हो चुका है। ये विद्वान वेदों में बीज रूप में विद्यमान अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र के प्रावेशिक ज्ञान को वैज्ञानिक ढंग से स्पष्ट करके वैदिक सिद्धान्त के अनुकूल प्रमाणित करना अपना कर्त्तव्य नहीं समझते। इसलिए वे सामाजिक उत्पादन के साथ गैर सामाजिक वितरण को प्रश्रय देकर निजी स्वामित्व का कट्टरतापूर्वक समर्थन करके अर्थशास्त्र और समाजशास्त्र के मूल सिद्धांत की हत्या करते हैं। यदि हम सचमुच सैद्धांतिक स्तर पर बन्धुत्व की भावना से ओत-प्रोत होकर रहने का उपदेश आवश्यक समझते हैं तो हमें आर्थिक रिश्ते में भाई-चारे का सम्बन्ध कायम करके उसे साकार रूप प्रदान करना चाहिए। वस्तुतः समाज व्यवस्था के आर्थिक रिश्ते की पवित्रता पर ही उदात्त मानवीय मूल्यों की स्थापना होती है। अतः जब तक वैदिक धर्म में आस्था रखने वाले विद्वान सिद्धांत को व्यवहारिक रूप नहीं देते तब तक भौतिकवादिता के आरोप से वे खुद ग्रस्त हैं, न कि कम्युनिस्ट। कम्युनिस्ट नास्तिक होकर व्यवहार में अधिक मानवतावादी दिखाई पड़ता है, जब कि आस्तिकता में आस्था रखने वाले दार्शनिक स्तर पर अधिक मानवतावादी बनने का दावा करते हैं लेकिन व्यवहारिक

स्तर पर उससे बहुत दूर रहते हैं। यही कारण है कि वे आर्थिक रिश्ते में नौकर और स्वामी का सम्बन्ध कायम चाहते हैं और दार्शनिक स्तर पर भाई-चारे का पाठ पढ़ाते हैं।

यद्यपि कम्युनिस्ट ईश्वर में आस्था नहीं रखते, परन्तु चरित्र और नैतिकता सम्बन्धी वैज्ञानिक धारणा आस्था रखते हैं। मनु द्वारा प्रतिपादित धृति, क्षमा, दम, अस्तेय आदि शाश्वत धर्म के दश लक्षणों का कोई नहीं करता। जिन कर्मों को करते समय हृदय में निर्भयता, निःशंकता और आनन्दोत्साह की भावना उत्पन्न होती उन्हीं कर्मों को वे लोग भी अधिक प्रश्रय देते हैं और जिन कर्मों के करने में भीतर से भय, लज्जा और उत्पन्न होती है, उसे वे भी बुरा मानते हैं। कोई ईश्वर को माने अथवा न माने, अच्छे और बुरे कर्मों के भीतर से ऐसी भावनाएँ उत्पन्न होंगी ही। महर्षि दयानंद ने 'सत्यार्थ प्रकाश' सप्तम समुल्लास में कहा भी है "जब आत्मा मन और मन इन्द्रियों को किसी विषय में लगाता वा चोरी आदि बुरी वा परोपकार आदि अच्छी के करने का जिस क्षण में आरम्भ करता है, उसी समय जीव की इच्छा, ज्ञान आदि उसी इच्छित विषय पर जाती है, उसी क्षण में आत्मा के भीतर से बुरे काम करने में भय, शंका और लज्जा तथा अच्छे कामों के करने में अभय, निःशंकता और आनन्दोत्सह उठता है। वह जीवात्मा की ओर से नहीं बल्कि परमात्मा की ओर से है। इसलिए यदि कोई व्यक्ति वाणी से ईश्वर में आस्था नहीं प्रकट करता तो वह घृणित नहीं हो जाता है और एक दम बुरे कर्म ही करने लगता है। आधुनिक विज्ञान ने अब तक जो प्रमाण प्रस्तुत किए हैं आधार पर उन्हें ईश्वर की सत्ता में अभी तक विश्वास नहीं उत्पन्न हुआ है। परन्तु इस अविश्वास का यह कदापि नहीं कि यदि वैज्ञानिकता के आधार पर युक्तिपूर्ण ढंग से ईश्वर की सत्ता का प्रतिपादन कर दिया जाए भी वे ईश्वर में आस्था नहीं रखेंगे। अतः वैदिक धर्म मतावलम्बियों को बुद्धि और तर्क के आधार पर ईश्वर सत्ता का प्रतिपादन वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर मजबूती के साथ करना चाहिए और अपने आचरण की श्रे द्वारा लोगों को अपने सिद्धांत की उत्कृष्टता स्पष्ट करनी चाहिए।

आज हम विज्ञान के उत्कर्ष के युग में रह रहे हैं। जो सिद्धाँत निरीक्षण, परीक्षण और विश्लेषण के आ पर युक्तिपूर्ण नहीं प्रमाणित होगा, वह आज मान्य नहीं होगा अतः आज वैदिक मान्यताओं को वैज्ञा तथ्यों के आधार पर प्रतिपादित करने की अत्यन्त आवश्यकता है। त्रैतवाद की भित्ति पर आधारित वैदिक अपनी उपयोगिता खो देगा यदि वह वैज्ञानिक स्तर पर मान्य नहीं होगा। दार्शनिक स्तर पर मतभेद को कर ही हम अनेकों वादों से ग्रस्त संसार को राहत प्रदान कर सकते हैं। अतः आज आर्य समाज के अस्तित्व सबसे प्रबल चुनौती वैदिक सिद्धान्तों को वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर प्रतिपादित करने की है।

आर्य समाज के अस्तित्व के लिए दूसरी सबसे बड़ी चुनौती शोषण मुक्त और प्रशासन मुक्त समाज व्य के स्वरूप का सही निर्धारण है। क्योंकि मनुष्य अपना सर्वांगीण विकास तभी कर सकता है, जब वह जीव मूलभूत आवश्यकताओं के प्रति पूर्णतः आश्वस्त हो। इसके लिए दानवीय प्रवृत्तिओं की जननी सम्पत्ति के मौ अधिकार का उन्मूलन करना होगा। इसके बिना परिग्रह की वृत्ति को समाप्त कर सहज मानवीय अपरिग्र वैदिक भावना जिसमें न्यूनतम उपभोग, समान वितरण और अधिकतम उत्पादन की व्यवस्था है, को विकसित किया जा सकता और गुण, कर्म तथा स्वभाव के अनुसार लोगों को काम का मौलिक अधिकार नहीं प्रदान जा सकता।

आर्य समाज बिना भौतिक परिस्थितियों को बदले मात्र छूआछूत एवं जाति-पांत के भेदभाव को मिटाने पाखण्ड, रुढ़िवाद और अंधविश्वास को खत्म करने की बात करके वैदिक व्यवस्था को सही अर्थों में क्रियान्वि कर सकता। वास्तव में महर्षि दयानन्द जिस वर्णाश्रम व्यवस्था के आधार पर नये समाज का निर्माण चाहते थे, उसकी आधार भूमि समतामूलक थी। वैदिक धर्म की मूल भावना प्रकृतिकृत असमानता को कम का प्रयास करना और मनुष्यकृत असमानता को खतम करने के दृढ़ संकल्प में निहित हैं। इसीलिए वेद में कहा है "समानं मन्त्रमभि मंत्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि" अर्थात् सब मनुष्यों के लिए वेद मंत्र या ज्ञान समान है इसके अतिरिक्त इस यज्ञ रूपी संसार में हवि अर्थात् जीवन की आवश्यक सामग्री जैसे वायु, जल, प्रकाश और पदार्थ जो हैं सबको समान रूप में दी है

इस आधार पर जो समाज निर्माण होगा वह साम्यवादी समाज से उत्तम होगा। क्योंकि इस वैदिक व्यवस्था में सम्पत्ति की संस्था का खात्मा होगा वहीं इसमें आश्रम व्यवस्था द्वारा सत्ता की संस्था का भी खात्मा होता है लिए समाज शोषण मुक्त होने के साथ प्रशासन मुक्त भी होता है। परन्तु ऐसी व्यवस्था राज व्यवस्था के सम्भव नहीं। अतः आर्य समाज को जन जीवन में धर्म को व्यवहारिक रूप में लाकर शोषण पर आधारित व्यवस्था को खत्म करने के लिए जनता का नेतृत्व करना होगा। यदि वह ऐसा नहीं करेगा तो निश्चित है धर्म एव हतो हन्ति...... धर्म का नाश कर वह भी नष्ट होगा। मंच के व्याख्यान और प्रचार उसकी रक्षा कर सकेंगे। धर्म के शाश्वत नियम तो बने रहेंगे, पर आर्य समाज आज जिस गति से चल रहा है, उसे छोड़ धर्म के जीवित स्वरूप को न अपना सका तो भविष्य ही उसका भविष्य बतलायेगा।

—विरजे

वेद सन्देश—

वीर पुरुष कौन होता है ?

ओ३म् शूरग्रामः सर्ववीरः सहावाज् जेता पवस्व सनिता धनानि ।
तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा समत्स्वषाल्हः साह्वान् पृतनासु शत्रून् ।। (ऋग्वेद ९।९०।३)

वर्तमान कालान्तर्गत वीर पुरुष से तात्पर्य उत्तम व मोटे शरीरवालों अथवा अत्यधिक कार्य करने वाले से लिया जाता है। परन्तु वास्तव में वीर पुरुष कहलाने का अधिकारी कौन हो सकता है ? इसके लिए परमात्मा की अमर वाणी ऋग्वेद की यह ऋचा विशेष द्रष्टव्य है— जिस व्यक्ति के जीवन में निम्न गुण व लक्षण दृष्टिगोचर हो रहे होते हैं; वस्तुतः वही वीरत्व पद प्राप्त करने का अधिकारी होगा। वे गुण निम्नलिखित हैं:—

१. शौर्यत्व एवं वीरत्वादि क्षात्र गुणों से युक्त होवे।
२. पूर्ण सहन शक्ति से संयुक्त होवे। क्षणे रुष्टः क्षणे तुष्टः उसके जीवन के अन्दर नहीं होने चाहिए।
३. किसी भी क्षेत्र के अन्दर वह पूर्ण विजय की कामना रखता होवे।
४. समाज में धनादि वितरण की अव्यवस्था को समूल समाप्त कर वितरण की उत्तम व्यवस्था व विभाग करने की क्षमता रखने वाला होवे।
५. जिसके पास शत्रुओं को पराजित करने हेतु भयंकर अस्त्र-शस्त्र होवे और उनका समुचित प्रयोग भी जानने वाला होवे।
६. सर्व प्रकार के शस्त्र-युद्ध में पूर्ण प्रवीण होवे।
७. जिसके पौरुष को देखते ही शत्रु भयभीत होकर भागें।
८. सदैव युद्धों में शत्रु से लोहा लेने की प्रबल कामना रखता होवे न कि पीठ दिखाकर भागने की।

ऐसे अष्ट गुणों से संयुक्त व्यक्ति ही वीर पुरुष कहलाने का अधिकारी होता है। परमात्मा सब मनुष्यों को इन उत्तम गुणों से युक्त करें, ऐसी प्रबल प्रार्थना है।

—पं० वासुदेव शर्मा

कांग्रेस और कम्युनिस्ट हिंसा फैला रहे हैं

रयाणा जन संघर्ष समिति की तरफ से उसके संयोजक स्वामी इन्द्रवेश ने कलकत्ता में श्री जयप्रकाश नारायण पर कातिलाने हमले की प्रबल भर्त्सना करते हुए कहा कि यह हिंसा एवं आतंक फैलाने वाले कम्युनिस्ट और कांग्रेसी तत्वों का पूर्व नियोजित षड्यन्त्र था। इस घृणित काण्ड से यह साफ़ जाहिर हो गया कि लोकतन्त्र की दुहाई देने वाले दल कांग्रेस और कम्युनिस्ट ही हिंसा का वातावरण निर्माण कर रहे हैं। श्री जयप्रकाश नारायण पर आक्रमण के अवसर पर पुलिस ने जिस प्रकार से गुण्डों को संरक्षण प्रदान किया है, उससे इसमें सरकारी हाथ स्पष्ट है। इसी तरह फरवरी में रोहतक आते समय यदि श्री जयप्रकाश नारायण का मार्ग परिवर्तन न किया गया होता तो उन्हें यहां भी कांग्रेसियों के पूर्व नियोजित षड्यन्त्र का शिकार होना पड़ता।

अन्त में स्वामी जी ने देश की जनता को कांग्रेस की तानाशाही प्रवृत्ति और लोकतंत्र विरोधी रवैये के प्रति आगाह करते हुए कहा कि अब लोकनायक जयप्रकाश जी के नेतृत्व में चल रहे जनान्दोलन को सफलता की परिणति तक पहुँचा कर ही देश को सुरक्षित स्थान पर पहुँचाया जा सकता है।

हरियाणा जन संघर्ष समिति के संयोजक स्वामी इन्द्रवेश जी ने श्री मोरार जी देसाई के गुजरात विधान सभा के मई के अन्त तक चुनाव कराने की मांग का हार्दिक समर्थन किया। कांग्रेस सरकार पर आरोप लगाते हुए उन्होंने कहा कि ७९ वर्षीय वरिष्ठ संगठन कांग्रेस के नेता श्री देसाई को आमरण अनशनके लिए वाध्य कर सरकार ने यह सिद्ध कर दिया है कि उसका विश्वास जनतन्त्र से तेजी से उठता जा रहा है और वह दिन प्रति दिन तानाशाही की तरफ अग्रसर होती जा रही है। अन्त में उन्होंने कहा कि गुजरात विधानसभा का विघटन वहां राष्ट्रपति शासन लागू करने के लिए नहीं चाहा गया था बल्कि नए चुनाव द्वारा स्वच्छ जन प्रशासन की स्थापना को दृष्टि में रख कर किया गया था।

आवश्यक सूचना

१ मई, १९७५ से 'राजधर्म पाक्षिक' "राजधर्म दैनिक" पत्र के रूप मे रोहतक से प्रकाशित होने जा रहा है। प्रेस में दैनिक पत्र प्रकाशिक करने के अनुकूल अनेकों परिवर्तन करने हैं। प्रेस कर्मचारी इस कार्य में व्यस्त रहेंगे। अतः राजधर्म पाक्षिक का अप्रैल द्वितीय अंक प्रकाशित नहीं हो सकेगा। अब मई से 'राजधर्म पाक्षिक' मासिक पत्रिका के रूप में ४८ पृष्ठ का होगा

राजधर्म दैनिक का प्रकाशन १ मई १९७५ से प्रारम्भ

८ सितम्बर १९७४ को जब आर्यसभा की महासमिति ने बड़े उत्साह के वातावरण में दैनिक पत्र निकालने का निर्णय लिया तो सभी सदस्यों ने इस निर्णय का समर्थन किया और पूर्ण सहयोग देकर सफल बनाने का आश्वासन दिया। इसी लिए आर्य सभा के सभी वरिष्ठ कार्यकर्त्ता एवं नेतागण इस अभियान में जी-जान से जुट गये। परन्तु १६ फरवरी ७५ को राज्य में सम्पन्न होने वाले तीन उपचुनावों के राजनैतिक परिणाम को दृष्टि में रख कर, जनता उम्मीदवार को विजयी बनाने के लिए दल के अधिकांश कार्यकर्त्ताओं और नेताओं को २ माह पूर्व से ही पर्याप्त समय चुनाव अभियान में लगाना पड़ा। फलस्वरूप दैनिक पत्र के लिए निश्चित धनराशि का निर्धारित समय तक संग्रह नहीं हो सका। इसलिए दैनिक पत्र घोषित समय पर न निकल सका। इस विलम्ब के कारण बहुत से लोगों को निराश होना पड़ा तथा उनमें दैनिक पत्र के प्रकाशन में अविश्वास उत्पन्न हो गया। परन्तु यह जानकर हरयाणा निवासियों एवं इस प्रदेश से बाहर के अन्य सहयोगियों को अत्यन्त प्रसन्नता होगी कि "राजधर्म पाक्षिक" १ मई १९७५ से "दैनिक पत्र" के रूप में भी नियमित निकलना शुरू हो जायेगा और यह यहां के लोगों के बौद्धिक उत्पादन का एक सशक्त माध्यम बन कर जन जागृति की भूमिका निर्वाह करता रहेगा।

अतः हरयाणा में जन आकांक्षाओं को प्रतिबिम्बित करने के लिए, प्रशासन के हर गलत कदम का विरोध करने के लिए तथा हरयाणा की हर समस्या को निष्पक्ष भाव से जनता के सामने लाने के लिए आर्य सभा प्रदेश एवं देश की जनता से 'राजधर्म दैनिक" के प्रकाशन में हार्दिक सहयोग देने की अपील करती है। पत्र का मुख्य उद्देश्य हरयाणा की जनता में राजनैतिक, आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना का विकास करना तथा हर प्रकार के अन्याय के विरुद्ध जनमत जागृत करना है। आशा है कि हर प्रकार के शोषण से मुक्ति की आवाज को बुलन्द करने के लिए इस दैनिक पत्र के प्रकाशन में जनता अधिक से अधिक सहयोग देगी।

आवश्यकता है-

ऐसे निर्भीक और उत्साही युवकों की जो आगामी १ मई से प्रकाशित राजधर्म दैनिक के लिए हरियाणा के गांवों और नगरों से समाचार भेज कर जनता की सेवा कर सकें।

साथ ही साथ ऐसे समाचार पत्र एजेन्ट भी चाहिए जो अन्याय और शोषण के विरुद्ध जनता की आवाज को घर घर पहुँचा सकें।

कृपया सम्पर्क करें :

प्रबन्ध सम्पादक

राजधर्म दैनिक

झज्जर रोड, रोहतक, हरियाणा

रोहतक में विशाल शिविर का आयोजन

आप को यह जान कर अत्यन्त हर्ष होगा की हर वर्ष की भांति इस वर्ष जून में भी ५०० युवकों के लिए एक विशाल शिविर का आयोजन हरियाणा के ऐतिहासिक नगर रोहतक में किया जा रहा है। देश भक्त, चरित्रवान एवं ऐसे युवक जो अपने जीवन में कुछ कर गुजरने के अरमान लेकर अपना शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक विकास चाहते हैं और गर्मी की छुट्टियों का उपयोग अपने जीवन में एक क्रान्तिकारी परिवर्तन लाने के लिए करना चाहते हैं, उन्हें अभी से पत्र व्यवहार द्वारा आर्य सभा कार्यालय रोहतक से सम्पर्क करके अपना स्थान सुरक्षित करा लेना चाहिए। इस शिविर का विशेष महत्व यह होगा कि आर्य समाज शताब्दी समारोह में भाग लेने के लिए चुने हुये नौजवानों को विशेष रूप से तैयार किया जाएगा और देश में युवा आक्रोश के गम्भीर परिणामों से निपटने के लिए युवकों को प्रशिक्षित किया जाएगा।

राज्यपाल को १० अप्रैल, १९७५ को प्रस्तुत

हरियाणा की जनता का मांग-पत्र

हम हरियाणा निवासियों के प्रतिनिधि यहाँ इसलिए उपस्थित हुए हैं कि हम उस मांग पत्र का समर्थन करें जो लोकनायक जयप्रकाश नारायण व अन्य नेताओं ने ६-३-७५ को दिल्ली में लोक सभा के अध्यक्ष व राज्य सभा के सभापति को दिया था। इस मांग पत्र की एक प्रति संलग्न है। हम हरियाणा निवासी विहार में जो संघर्ष चल रहा है,उससे सहमत हैं एवं उसका पूर्ण समर्थन करते हैं। हम समाज में ऐसी सम्पूर्ण क्रांति चाहते हैं जिसमें सामाजिक और आर्थिक समानता हो और जिसमें गाँधी जी के आदर्श के अनुसार नैतिक मान्यताओं तथा वास्तविक प्रजातंत्र को अपनाया जावे। इन आदर्शों की पूर्ति के लिए हम प्रतिज्ञा वद्ध हैं

आपातकालीन स्थिति

हम आप के माध्यम से भारत सरकार से निवेदन करना चाहते हैं कि भारत पाक युद्ध के समय घोषित की गई आपातकालीन स्थिति को बनाए रखने का अब कोई औचित्य नहीं है। आपातकालीन स्थिति बाहरी आक्रमण अथवा आन्तरिक विद्रोह की आशंका के समय ही लागू होती है। परन्तु आज इन दोनों में से कोई स्थित नहीं है। जिस धरती को भारत के रणवाँकुरों ने रक्त बहाकर जीता था, वह लौटा दी गयी है तथा भारत के कुशल सेनापतियों की सफल रणनीति के कारण समर्पण करवाये गये ९८ हजार शत्रु सैनिकों को भी वापस लौटा दिया गया है। फिर भी आपातकालीन स्थिति को बनाए रखना जनता के मूलभूत अधिकारों को उनसे वंचित करने के अतिरिक्त और किस उद्देश्य की पूर्ति कर सकता है? अतः हमारा आग्रह हैं कि आपातकालीन स्थिति को अविलम्ब समाप्त किया जाय।

६ मार्च, १९७५ के मांग-पत्र में दी गयी मांगों के अतिरिक्त हरियाणावासियों के सामने कई गम्भीर समस्याएँ हैं, हरियाणा सरकार हरयाणा निवासियों की नागरिक स्वतंत्रता और संविधान द्वारा प्रदत्त मूलभूत अधिकारों का बुरी तरह दमन कर रही है। हरियाणे में पुलिस राज्य कायम है। रिवासा काण्ड और बरवाला काण्ड की गूंज अभी शान्त भी नहीं हुई कि कुरुक्षेत्र में २३-३-७५ को श्री धर्म सिंह राठी के साथ अमानवीय और लज्जाजनक व्यवहार किया गया। सभ्यता एवं शालीनता को पांव तले रौंद डाला गया।

विरोधी दलों के जलसों के लिए लाऊडस्पीकर की आज्ञा देने में उनको हर तरह से परेशान किया जाता है। कुरुक्षेत्र यूनिवर्सिटी के विद्यार्थियों का संघर्ष, उनके जलसे में लाउडस्पीकर के प्रयोग की आज्ञा न देने के कारण आरम्भ हुआ। जिस कानून ने सरकारी कर्मचारियों को लाऊडस्पीकर के प्रयोग की आज्ञा देने का अधिकार दिया वह इसलिए बनाया गया था कि जनता को हर समय शोर से बचाया जावे। परन्तु हरियाणा में विरोधी दलों की राजनैतिक गतिविधियों को अवरुद्ध करने के उद्देश्य से इस कानून का बड़े पैमाने पर दुरुपयोग किया जा रहा है। इसी प्रकार १०७।१५१ जा० फौ० के अधीन मौजूदा कांग्रेसी हुकूमत ने हजारों विरोधी दलों के कार्यकर्त्ताओं और नेताओं को गिरफ्तार किया। यह धाराएं गुलामी के जमाने में भी थी परन्तु विदेशी सरकार ने कभी इन धाराओं का इतना अधिक दुरुपयोग नहीं किया था। इन धाराओं का हरियाणा में जितनी निर्लज्जता एवं दुःसाहसपूर्ण ढंग से दुरुपयोग हो रहा है वह हरियाणा में कांग्रेस के प्रजातंत्रीय राज्य की मुँह बोलती तस्वीर का नमूना है। इसके अतिरिक्त कांग्रेसी नेताओं के जलसे में पाच-पांच हजार ट्रकों का गैर कानूनी इस्तेमाल और उसके विपरीत विरोधी दलों की सभाओं में सरकार की तरफ से हर प्रकार की रुकावट हरियाणा में आम बात हो गयी है। लोकनायक जयप्रकाश नारायण के २७ नवम्बर को कुरुक्षेत्र आने के अवसर पर कुरुक्षेत्र के लिए सब बसों के टिकट बन्द कर दिये गये, बसों से लोगों को बलात् उतार दिया गया और निकटवर्ती देहातों में पुलिस बैठा दी गई। करनाल, पानीपत आदि स्थानों पर कार्यकर्त्ताओं को गिरफ्तार किया गया। इसी प्रकार ६ मार्च को दिल्ली के ऐतिहासिक प्रदर्शन के अवसर पर भी हरियाणा से दिल्ली के लिए बसें बन्द कर दी। यह तानाशाही का नग्न रूप नहीं तो और क्या है?

हरियाणा में भ्रष्टाचार इतना बढ़ गया है कि उसका जितना भी वर्णन किया जाय उतना थोड़ा है। हरियाणा के २० विधायकों एवं १२५ सांसदों ने मुख्यमंत्री वंसीलाल के विरुद्ध जाँच की मांग की और ज्ञापन दिया किन्तु खेद है कि भारत सरकार ने उसकी जांच नहीं कराई। हमारा यह दावा है कि कांग्रेस के विधायकों, मंत्रियों तथा मुख्यमंत्री ने अपने पदों का दुरुपयोग करके बहुत बड़ी धनराशि इकट्ठी की है। विशुद्ध जन-जीवन का यह तकाजा है कि भारत सरकार 'कमीशन आफ इनक्वायरीज एक्ट' के अन्तर्गत जाँच कराये ताकि भारत का सार्वजनिक जीवन शुद्ध बनें।

हम अपने आरोपों को सिद्ध करने को तैयार हैं। भारत की संसद में विपक्ष के आग्रह पर भारत सरकार की ओर से बिजली बोर्ड के हिसाब-किताब की जो पड़ताल हुई है, उससे स्पष्ट है कि १०-१२ करोड़ रुपये का गोल-माल हुआ है। इस गोल-माल के पीछे किसका शक्तिशाली हाथ है, उसकी जांच नहीं कराई जा रही है। हरियाणा का बिजलीबोर्ड जो कुछ साल पहले स्टेट को मुनाफा देता था अब न केवल घाटे की संस्था बन गई है, बल्कि उसकी आर्थिक दशा इतनी चरमरा गई है कि उसे जीवन बीमा निगम, राष्ट्रीयकृत बैंक तथा दूसरे बैंक या अन्य आर्थिक संस्थान ऋण देने को तैयार नहीं। इस लिए हरयाणावासियों पर जबरदस्ती की जा रही है कि बिजली बोर्ड में कर्जे के तौर पर रुपया जमा करायें, वरना उनके लाईसेन्स रद्द करदिये जायेंगे, और बिजली के कनेक्शन काट दिए जायेंगे। क्या लोकतन्त्र की सरकार इस प्रकार चला करती हैं ?

हरियाणा सरकार के द्वारा अनुत्पादक परियोजनाओं पर अनाप-शनाप खर्च करने के दुष्परिणाम स्वरूप सरकार की आर्थिक स्थिति इतनी बिगड़ गई है कि वह बिजली बोर्ड को स्वयं ऋण देने में असमर्थ

प्रजातन्त्र में न्यायपालिका का सर्वोच्च स्थान होता है। परन्तु खेद का विषय है कि हरियाणा में बंसीलाल न्यायपालिका पर अंकुश रखने का प्रयास कर रहे हैं। श्री पी० सी० पण्डित की वरीयता की उपेक्षा, न्यायमूर्ति श्री देवीसिंह तेवतियाँ के साथ भिवानी दादरी में सरकार द्वारा किया गया व्यवहार, श्री एम० एस० राव सैशन जज के साथ अपनाया गया रवैया और हरियाणा सरकार का लोक सेवा आयोग द्वारा भर्ती किए जा रहे न्यायाधिकारियों के लिए साक्षातकार में २०० अंकों की व्यवस्था करना यह सिद्ध करता है कि हरियाणा सरकार लोकराज के सब से बड़े स्तम्भ न्यायपालिका को नष्ट करने पर तुली हुई है। यही नहीं सत्तारूढ़ दल हरयाणा विधान सभा को भी अपनी तानाशाही काररवाई के कारण उपहास का विषय बना दिया है। जिला परिषद् समाप्त कर दिए गए हैं, नगरपालिका निलम्बित है, मार्केट कमिटियां मनोनीत संस्थायें बना दी गयी हैं और ग्राम सचिव को पंचायतों का मालिक बना दिया गया है। इस प्रकार लोकतन्त्र की सारी विशेषताओं को समाप्त किया जा रहा है।

झज्जर में बीड़ सुनारी जमीन की सरकारी भूमि हरिजनों से चालाकी से छीनने का प्रयास किया गया। उसके विरोध में २७ हजार हरिजन बहन-भाईयों को जेल जाना पड़ा, तब बेदखली की तलवार उनकी गर्दन से हटी। उसी अवसर पर हरियाणा सरकार ने एक कमेटी नियुक्त की जिसे हरिजनों की समस्याओं के समाधान की रिपोर्ट तैयार करनी थी, परन्तु अब तक न रिपोर्ट ही बनी न हरिजनों की समस्याओं का समाधान ही किया गया।

सरकार की इस घोषणा पर भी हरियाणा में अमल नहीं हुआ कि बेघर गरीब लोगों को घरों के लिए प्लाट और कर्जे दिए जायेंगे। हमें खेद है कि हरियाणा सरकार किसानों को उनकी फसल का उचित दाम दिलाने में असफल रही है और खाद, बिजली, बीज, तेल के भाव बढ़ जाने के बावजूद गेहूं का भाव १०५ रु० प्रति क्विंटल रखा गया है, जो किसान के साथ स्पष्ट रूप से अन्याय है। आश्चर्य है कि उपभोक्ताओं को हरियाणा में डिपुओं और खुले बाजार में १५४ रु० क्विंटल गेहूं का आटा मिले और किसान से १०५ रुपये के भाव से गेहूं लिया जाता है तथा सरकार लेवी लगायेगी, यह प्रजातन्त्र की भावना के विपरीत है।

भूमिसुधार कानून भी हरियाणा में व्यर्थ सिद्ध हुआ है। वर्तमान वित्तमंत्री श्री रामशरण मित्तल की अध्यक्षता में एक कमेटी इस सम्बन्ध में नियुक्त की गई थी। उसकी रिपोर्ट आये कई वर्ष हो गए, उस पर भी कोई काररवाई नहीं की गई। दूसरी तरफ शराब की नदियां बहाई जा रही हैं। छोटे-२ नगरों ग्रामों तक में शराब की दुकानों की भरमार करके लोगों का चरित्र भ्रष्ट किया जा रहा हैं। हम हरियाणा निवासी मांग करते हैं कि भारतीय संविधान के नीति निर्देशक तत्वों के अनुरूप राज्यों में पूर्ण नशाबन्दी लागू की जाय।

अध्यापकों के साथ हरियाणा में जैसा बर्बरतापूर्ण व्यवहार किया जा रहा है वैसा अन्यत्र नहीं दिखाई पड़ता है। सैंकड़ों अध्यापकों को पुलिस द्वारा पिटवाया जाना वर्तमान हरयाणा सरकार के लिए आम बात है। गैरकानूनी ढंग से हजारों अध्यापकों को जेलों में भेजना और उन पर झूठे मुकदमे कायम करना मुख्यमंत्री बंसीलाल के लिए शिक्षकों की मर्यादा की अवमानना नहीं है। इस तरह हरियाणा में प्रजातन्त्र की जगह पुलिस राज कायम है।

इसी तरह हरियाणा के एक मात्र कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय की स्थिति अत्यन्त चिन्ताजनक है। शिक्षा संस्थाओं की स्वायत्तता नाम मात्र की चीज रह गयी है। वर्तमान उपकुलपति ने विश्वविद्यालय के विधि-विधान को ताक पर रख कर तानाशाही मचा रखी है। प्राध्यापक संघ समाप्त कर दिया गया है। छात्र परिषद के विधिवत निर्वाचित नेताओं पर झूठे मुकदमे चलाये गये हैं। छः विद्यार्थियों को निष्कासित कर दिया गया है

(शेषांश पृष्ठ २६ पर)

महर्षि दयानन्द ने संसार को क्या दिया ?

पं० रामस्वरूप 'पाराशर'

महर्षि दयानंद ने संसार को बहुत कुछ दिया। उन सब देनों का वर्णन यदि सूत्र रूप में करना हो तो ऋषि का यह वाक्य "वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है" पर्याप्त है। संसार वेद को भूलकर अनेकों भ्रमजालों में फंस गया था। वेदों के सम्बन्ध में संसार को अनेकों प्रकार की भ्रान्तियां थीं। कोई कहता था कि वेद गड़रियों के गीत हैं, कोई कहता था उनमें भूतप्रेत निकालने एवं टोना-टोटका करने की विधियों का वर्णन है, कोई उन्हें केवल यज्ञारक बताता तो कोई उन्हे बताता था ऐतिहासिक ग्रन्थ, बहुत्रा विद्वानों का विश्वास था कि भिन्न-भिन्न समय में भिन्न-भिन्न व्यक्तियों ने वेद-मंत्रों की रचना की। योरोपियों का तो कहना ही क्या ? अपने को वेदों का विश्वासी कहलाने वाले प्रायः सब ही भारतीय विद्वान भी वेदों को अपौरुषेय न मान कर मनुष्य कृत मानते थे।

इस युग में महर्षि दयानंद ही सर्वप्रथम ऐसे आचार्य हुये जिन्होंने वेदों के सम्बंध में फैली इन समस्त भ्रान्तियों का अपने अकाट्य तर्कों और ठोस प्रमाणों द्वारा निराकरण कर वेद का वास्तविक अर्थ बता कर संसार को चकित करके संसार का मुख फिर वेदों की ओर मोड़ दिया। वेद-विषय में भ्रम का कारण था 'वेदार्थ शैली की अनभिज्ञता।' महर्षि ने हमें वह शैली बताकर संसार पर एक महान उपकार किया है। उन्होंने बताया कि वेदों में न रूढ़ि शब्द है, न योगरूढ़ि। वेदों के शब्द यौगिक हैं। यह वह राजपथ था जिस पर चल कर वेदार्थ करने में पथ भ्रष्ट होने की संभावना प्रायः समाप्त ही हो जाती है।

वेदों के सम्बंध में महर्षि की कुछ धारणायें और स्थापनायें निम्न प्रकार की थीं:–

(१) वेद अपौरुषेय हैं। मानव जाति के कल्याणार्थ परमात्मा ने आदि सृष्टि में ऋषियों द्वारा यह ज्ञान प्रदान किया। ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण उसमें कोई त्रुटि नहीं है एवं पूर्ण ज्ञान है।

(२) सृष्टि के आदि में आने के कारण उसमें कोई मानवीय इतिहास नहीं है।

(३) मानवी सृष्टि से पूर्व परमात्मा ने मानवापयोगी प्रत्येक भौतिक वस्तु का निर्माण कर दिया था और उन सब प्राकृतिक वस्तुओं के नियम और उपयोगिताओं का ज्ञान हमें वेदोपदेश द्वारा करा दिया। प्राकृतिक वस्तुओं के वर्णन की इस प्रक्रिया को ही नित्य इतिहास कहते हैं, जिसका वेदों में अलंकार रूप में विशद वर्णन है।

(४) वेद का ज्ञान किसी देश, जाति, राष्ट्र, संप्रदाय अथवा व्यक्ति विशेष के लिए न होकर संपूर्ण संसार के लिए समान रूप से है।

(५) वेद में सब सत्य विद्याओं का ज्ञान बीज रूप में है।

इन पांच स्थापनाओं में से प्रत्येक इतनी महान है कि उनमें से एक एक की व्याख्या के लिए पर्याप्त समय और स्थान चाहिए। लेख के लम्बा हो जाने के भय से हम यहां 'वेद में इतिहास' विषय पर ही संक्षेप से विचार करेंगे।

वेद ज्ञान की आवश्यकता एवं उसकी अपौरुषेयता

संसार में दो प्रकार के प्राणी हैं। एक वे जिनका ज्ञान स्वाभाविक है, ईश्वर प्रदत्त है, उनकी भाषा भी ईश्वर प्रदत्त है। अपने जीवन यापन के लिए उन्हें किसी गुरु की शिक्षा अपेक्षित नहीं है। दूसरे वे प्राणी हैं जिनका ज्ञान नैमित्तिक है। शिक्षक अथवा गुरु के सिखाये बिना वह कुछ नहीं सीख सकते। मनुष्य प्राणी दूसरी कोटि में आता है। न इस की कोई निजी भाषा है, न रहन-सहन। मानव बालक जैसों में रहता है वैसा ही बन जाता है। एक भारतीय बालक ईरान में रह कर ईरानी और फ्रांस में रह कर फ्रेंच भाषा बोलेगा। जो रहन-सहन वेश-भूषा उन लोगों की होगी, उसे ही अपनायेगा। उसी प्रकार कोई भी विदेशी बालक भारतीयों के मध्य रह भारतीय बन जायेगा। इतना ही क्यों मनुष्य का बालक तो आरम्भ से ही यदि पशुओं के बीच रखा जाय और किसी मनुष्य का सहयोग उसे न मिले तो वह सर्वथा उन पशुओं के समान सबसे व्यवहार करेगा। इसके अनेकानेक परीक्षण किये जा चुके हैं। किन्तु मनुष्येतर जो भी प्राणी हैं, वह कहीं भी रहें, अपने स्वाभाविक गुण, रहन-सहन खान-पान, बोली, व्यवहार वो बिना किसी शिक्षक के ही सीख जाते हैं। सारे विश्व के घोड़ों की, कुत्तों की, गाय बैलों आदि की अपनी-अपनी जन्म जात बोलियां और भोजनादि की रुचि समान है। प्रश्न यह है कि जब बिना गुरु के मनुष्य को कुछ नहीं आता तो सबसे पहले मानव को ज्ञान किस प्रकार हुआ। बताया "स: पूर्वेषामपि गुरुः कालेनानवच्छेदात्।" सर्वप्रथम गुरु परमात्मा है। उसी ने सृष्टि के आदि मानव में

कल्याण और उत्थान के लिए जो ज्ञान दिया उसी का नाम वेद है। संसार की भौतिक उन्नति की चरम सीमा चक्रवर्ती राज्य और आध्यात्मिक चरमसीमा मुक्ति इनका संपूर्ण ज्ञान वेद में है। इसी कारण हम उसे पूर्ण ज्ञान कहते हैं। ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका में महाराज ने वेद शब्द की व्युत्पत्ति निम्न प्रकार की है, "विदन्ति जानन्ति विद्यन्ते भवन्ति विन्दन्ति विन्दते लभन्ते विन्दते विचारयन्ति सर्वे मनुष्याः सर्वाः सत्य-विद्या यैर्येषु वा तथा विद्वांसश्च भवन्ति ते वेदाः।" महाराज का इतना बड़ा व्युत्पत्ति-लक्षण 'सत्यं ज्ञानम-नन्तं ब्रह्म' वेद के इस लक्षण में आ जाता है। महाराज मनु कहते हैं श्रुतिस्तुवेदो विज्ञेयः'। निरुक्तकार यास्क ने लिखा है 'बुद्धि पूर्वावाक्या कृतिर्वेदे'। अतः यह निर्विवाद कहा जा सकता है कि आदि सृष्टि में जो ज्ञान हमें प्राप्त हुआ वह ईश्वरीय अथवा अपौरुषेय है। उसमें कोई भ्रम, भूल अथवा प्राकृतिक नियम के विरुद्ध कोई बात नहीं। चूंकि आदि सृष्टि में यह ज्ञान प्राप्त हुआ अतः किसी राजनीतिक इतिहास का इस में होने का प्रश्न ही नहीं उत्पन्न होता।

'विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे। इन्द्रस्य युज्यः सखा॥ यजु० अ० १३ मं० ३३॥ विष्णु (व्यापक, स्थिति करने वाली शक्ति) के कार्यों को देखो जिससे व्रत (नियम) निकले हैं। कैसा है वह विष्णु, बल देने वाली अतएव परमैश्यर्यवान इन्द्र-शक्ति के साथ समान गुण वाला मित्रवत हैं। वेद का नाम 'आगम' है। निगम में जो कुछ कहा गया है उसे सिद्ध करने वाला 'आगम' है। जब वेद का सीधे तौर पर समझना कठिन हो गया तो उसके समझाने के लिए अङ्ग उपाँग आदि का क्रम से विस्तार होने लगा— इसी विस्तार को आगम कहते हैं। वे वाक्य जो शासन करें अर्थात् धर्माधर्म एवं कर्तव्याकर्तव्य का बोध करायें उन्हें शास्त्र कहते हैं। वेद का नाम आम्नाय भी है। आम्नाय उसे कहते हैं जो सम्पूर्ण तथा बारंबार आवृत्ति करने योग्य हो। निगम को अपने पास स्थिर रखने के लिए निरन्तर अभ्यास करते रहने की आवश्यकता होती है। चूंकि प्राचीन आर्य निगम का निरंतर अभ्यास करते रहते थे अतः वेद को आम्नाय भी कहा जाने लगा। यदि हम उन नियमों को जानना चाहें जिनके आधार पर हम अपने इष्ट को प्राप्त कर सकते हैं तो हमें प्रकृति के उन पदार्थों का अध्ययन करके जो नियमित रूप से काम कर रहे हैं, उन नियमों का पता लगाना चाहिए। उन्हें ही Law of Nature कहते हैं।

यजु० के पुरुष-सूक्त में सृष्टि रचना का क्रम इस प्रकार हम पाते हैं। 'ततो विराडजायत विराजो अधि-पुरुषः स।जातो अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः॥ अ० ३१ म० ५, इसमें सर्वप्रथम विराट की बताई इसी ने अपने ज्ञान-बल से भूमि आदि जिस पर अन्य वस्तुयें स्थित हो सकें। फिर द्यज्जात्सर्वहुतः संभृतं पृषदाज्यम्। पशूंस्तांश्चक्रे व्यानारण्या ग्राम्याश्च मे" अ० ३१ मं० ६ बताया कि तदुपरान्त खाने-पीने का सामान करके नभ, जल, थलादि के पक्षी, पशुओं आदि सृजा फिर "तस्मादश्वा अजायन्त ये के चोभयाः गावो हि जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता अजावयः" ८॥ इसमें पशुओं के कुछ नाम दिये। जो मानव से पूर्व उत्पन्न किये गये।

अब मानव सृष्टि की उत्पत्ति की तैयारी वर्णन इस प्रकार किया है यज्ञं बर्हिषी प्रौक्षन् जातमग्रत। तेन देवा अयजन्त साध्या ऋषयश्च फिर १० वें और ११ वें मंत्रों में अनेक प्रकार मनुष्यों और वर्गों का वर्णन आता है। 'यत्पुरुषं कतिधा व्यकल्पयन् मुख किमस्यासीत्किं बाहू पादा उच्यते ॥१०॥ ब्राह्मणोस्य मुखमासीद् बाहू न्यः कृतः। उरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो ॥११॥ इस अध्याय के बीच में ७वां मंत्र बहुत पूर्ण है उसमें बताया है कि उसी परम शक्ति चारों वेदों का प्रादुर्भाव हुआ। मंत्र यह है। द्यज्ञात्सर्वहुत-ऋचः सामानि जज्ञिरे। छंदांसि तस्माद्यजुस्तस्मादजायत ॥७॥ इस प्रकार मनुष्य उत्पत्ति से पूर्व वेदों का प्रादुर्भाव कथन किया है।

जब वेदों का प्रादुर्भाव मानव की उत्पत्ति पूर्व हुआ तो उसमें मानवीय इतिहास का वर्णन संभव है। अतः वेदों में इतिहास की कल्पना है। चारों वेदों में सृष्टि की उत्पत्ति का क्रम समान है पुराणों की तरह विभिन्नता नहीं है वेद भिन्न भिन्न ऋषियों ने नहीं बनाये अपितु पर का दिया ज्ञान है जो एक ही समय में दिया।

वेदों में इतिहास का भ्रम क्यों हु

वेद के तीन संसार हैं। एक संसार मनु शरीर, इस पृथ्वी पर स्थित समस्त पदार्थों संसार दूसरा है। और तीसरा संसार है आ जिसमें सूर्य, चन्द्र, बादल, विद्युतादि पदार्थ हैं में इस आकाश वाले संसार का बहुत वर्णन है में राजा हैं, नगर हैं, वीथियां हैं, आर्य हैं, शत्रु हैं, पशु हैं, और वहां होते हैं संग्राम। साहित्य के अवलोकन से पता चलता है कि सारे में इतिहास से सम्बन्ध रखने वाले संभव, असं संभवासंभव तीन प्रकार के वर्णन पाये जाते हैं। भाग असम्भव वर्णन से सम्बद्ध हैं वह वेद का किसी न किसी चमत्कारिक अथवा जातिवाचक

(शेषांश पृष्ठ २७ पर)

प्रसिद्ध व्यक्तियों की दृष्टि में—

महर्षि दयानन्द

आदर्श सर्वतोमुखी सुधारक परमश्रद्धेय दयानन्द बड़े उदार विचारों के व्यक्ति थे। उनमें साम्प्रदायिक द्वेष वा संकीर्णता का लवलेश भी न था। इसीलिये सब जातियों के उदार विद्वान् उनका मान करते थे।

१-अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी के संस्थापक सर सय्यद अहमद खां ने—

महर्षि दयानन्द जी के ३० अक्टूबर, सन् १८८३ को बलिदान के ठीक पश्चात् ६ नवम्बर सन् १८८३ के अलीगढ़ इंस्टीट्यूट मैगजीन में लिखा था कि—

"निहायत अफसोस की बात है कि स्वामी दयानन्द साहेब ने जो संस्कृत के बड़े आलम (विद्वान) और वेद के बहुत मुहक्किक [समर्थक] थे, ३० अक्टूबर ७ बजे शाम को अजमेर में इन्तकाल किया। इलावा इल्मी फजल (उत्तम विद्या के अतिरिक्त) निहायत नेक और दरवेशसिफ्त (साधु स्वभाव) आदमी थे। इनके मोहतकिद (अनुयायी) इनको देवता मानते थे और बेशक वे इसी लायक थे। वे सिर्फ ज्योतिस्वरूप निराकार के सिवाय दूसरे की पूजा जायज (विहित) नहीं रखते थे। हमसे और स्वामी दयानन्द मरहूम (स्वर्गीय) से बहुत मुलाकात थी। हम हमेशा इनका निहायत अदब (आदर) करते थे कि हरेक मजहब वाले को इनका अदब लाजिमी (आवश्यक) था। बहरहाल ऐसे शक्स थे जिनका मसल (उपमा) इस वक्त हिन्दुस्तान में नहीं है और हर एक शख्स को उनकी वफात (मृत्यु) का गम (शोक) करना लाजमी है कि ऐसा बेनजीर शख्स (अनुपम मनुष्य) इनके दरमियान से जाता रहा।"

(अलीगढ़ इंस्टीट्यूट ६-११-१८८३)

सर सय्यद अहमद खां जैसे सुप्रसिद्ध मुसलमान नेता की ओर से ऐसी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की जानी महर्षि दयानन्द की असाम्प्रदायिकता का ज्वलन्त प्रमाण हैं। इससे उन लोगों की आंखें खुल जानी चाहिए जो उन्हें मुसलमानों का शत्रु समझते हैं। महर्षि दयानन्द का वैयक्तिक जीवन बहुत ही उच्च कोटि का था साथ ही वे बड़े कर्मयोगी सुधारक थे। जाति भेद और अस्पृश्यता आदि बुराइयों को दूर करने का उन्होंने घोर परिश्रम किया था। स्त्रियों की शोचनीय अवस्था को दूर करने के लिये भी उनका प्रयत्न प्रशंसनीय था।

२-इस विषय में जगद्विख्यात विचारक श्री रोम्याँ रोलाँ ने ठीक ही लिखा है कि—

"Dayananda transfused into the languid body of India his own formidable energy, his certainty, his lion's blood:

Dayananda Saraswati was a personality of the highest order. This man with the nature of a lion is one of those men whom Europe apt to forget when she Judges India, and whom she will probably be forced to remember to her cost, for he was the rare combination, a thinker of action with a genius for leadership." (Life of Rama Krishna P. 146)

अर्थात् ऋषि दयानन्द ने भारत के शक्तिशून्य शरीर में अपनी अजेय शक्ति, अविचल कर्मण्यता तथा सिंह समान पराक्रम फूंक दिये। स्वामी दयानन्द उच्चतम व्यक्तित्व-सम्पन्न पुरुष थे। कर्मयोगी विचारक और नेता के उपर्युक्त प्रतिभा, ये सभी प्रकार के दुर्लभ गुण उनमें विद्यमान थे। यह सिंह समान व्यक्ति उनमें से एक है जिसे यूरोप भारत के विषय में निर्णय करते हुए संभवतः भूल जाए किन्तु जिसे शायद उसे याद करने को बाधित होना पड़े क्योंकि उसमें कर्म के विचारक और प्रभावशाली नेतृत्व का दुर्लभ मिश्रण था।

आगे उन्होंने लिखा था कि—

"Dayananda would not tolerate the abominable injustice of the existence of untouchables and nobody has been a more ardent champion of their outraged rights."

अर्थात् स्वामी दयानन्द ने अस्पृश्यता के अन्याय को भी सहन नहीं किया। उनसे अधिक अस्पृश्यों के अपहृत अधिकारों का उत्साही समर्थक दूसरा कोई नहीं हुआ।

भारत में स्त्रियों की शोचनीय दशा को सुधारने में भी दयानन्द ने बड़ी उदारता व साहस से काम लिया। वास्तव में राष्ट्रीय भावना और जनजागृति के विचार को क्रियात्मक रूप देने में सबसे अधिक प्रबल शक्ति उन्हीं की थी।

"He (Swami Dayananda) was one of the most advent prophets of re-construction and of national Organisation."

अर्थात् वे पुनर्निमाण और राष्ट्रीय संगठन के उत्साही अग्रगामियों में से थे।

स्वामी दयानन्द जी ने सोते हुए भारतवासियों को जगाया। अन्धकार में ठोकरें खाते हुए को मार्ग

दिखाया । अज्ञान ... की ज्योति को जगाया । इस प्रकार के वे सच्चे मार्गदर्शक थे ।

३-नोबल पुरस्कार विजेता जगत प्रसिद्ध कवि श्री रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने जिन्हें महात्मा गांधी जी भी गुरुदेव के नाम से पुकारते थे, महर्षि दयानन्द का गुरु के रूप में स्मरण किया । उन्होंने अपनी श्रद्धांजलि इन स्वर्णिम शब्दों में अर्पित की—

'मेरा प्रणाम हो उस महान गुरु दयानन्द को जिसकी दृष्टि ने भारत के आध्यात्मिक इतिहास में सत्य और एकता को देखा । जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब अङ्गों को प्रदीप्त कर दिया । जिस गुरु का उद्देश्य भारतवर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति को लाना था, उसे मेरा बार बार प्रणाम है ।'

'मैं आधुनिक भारत के मार्गदर्शक उस दयानन्द को आदर पूर्वक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं कि जिसने देश की पतितावस्था में भी हिन्दुओं को प्रभु की भक्ति और मानव समाज की सेवा के सीधे वा सच्चे मार्ग का दिग्दर्शन कराया ।'

महर्षि दयानन्द आदर्श ब्रह्मचारी थे । उन्होंने पूर्ण पवित्रता और क्रियात्मक सुधार का उत्तम आदर्श समस्त जनता के समक्ष रखा जिसने सबको प्रभावित किया

४ विश्ववन्द्य महात्मा गान्धी जी ने महर्षि दयानन्द के विषय में लिखा था कि 'महर्षि दयानन्द के विषय में मेरा मन्तव्य यह है कि वे हिन्द के आधुनिक ऋषियों में, सुधारकों में, श्रेष्ठ पुरुषों में से एक थे । उनका ब्रह्मचर्य, उनकी विचार स्वतन्त्रता, उनका सबके प्रति प्रेम, उनकी कार्यकुशलता आदि सब को मुग्ध करते थे । उनके जीवन का प्रभाव हिन्दुस्तान पर बहुत ही पड़ा है ।'

आदर्श योगी दयानन्द

महर्षि दयानन्द अपने समय के सब से बड़े योगी थे । उनका स्थान संसार के सर्वोच्च योगियों और विद्वानों में हैं । उनकी शक्ति अद्भुत थी । उनका हृदय बड़ा विशाल था ।

५-सुप्रसिद्ध योगी श्री अरविन्द जी ने महर्षि दयानन्द के पवित्र चरित्र का चित्रण इस प्रकार के शब्दों में किया है—

'दयानन्द दिव्य ज्ञान का सच्चा सैनिक तथा विश्व को प्रभु की शरण में लाने वाला योद्धा था । वह मनुष्यों और संस्थाओं का शिल्पी तथा प्रकृति द्वारा आत्मा के मार्ग में उपस्थिति की जाने वाली बाधाओं का वीर विजेता था । उसके व्यक्तित्व की व्याख्या ... जा सकती है—

'एक मनुष्य ! जिसकी आत्मा में परमा... चक्षुओं में दिव्य तेज है और हाथों में इतनी ... कि जीवन तत्व में से अभीष्ट स्वरूप वाली मू... सके तथा कल्पना को क्रिया में परिणत कर स... स्वयम् एक दृढ़ चट्टान थे । उनमें ऐसी दृढ़ शक्ति ... कि चट्टान पर घन चला कर पदार्थों को सुदृढ़ व ... बना सकें ।'

महर्षि दयानन्द के वेद-विषयक मन्तव्य का ... समर्थन करते हुए योगी अरविन्द जी ने लिखा ... महर्षि दयानन्द की यह धारणा कि वेद में धर्म ... विज्ञान दोनों की सच्चाइयां पाई जाती हैं कोई ... सास्पद वा कल्पित बात नही है ।...वैदिक व्या... विषय में मेरा यह विश्वास है कि वेदों की ... अन्तिम व्याख्या कोई भी हो, महर्षि दयानन्द का ... निर्देशों के प्रथम आविर्भावक के रूप में सदा मान... जायेगा । पुराने अज्ञान और पुराने युग की मिथ्या... की अव्यव था और अस्पष्टता के बीच में यह ... ऋषि दृष्टि थी कि जिसने सच्चाई को निकाल ... और उसे वास्तविकता के साथ बांध दिया । सम... जिन द्वारों को बन्द कर रखा था उनकी चाबि... उसी ने पा लिया और बन्द पड़े हुए स्रोत की मुह... उसी ने तोड़कर परे फेंक दिया ।' सुप्रसिद्ध यो... अरविन्द जी की यह श्रद्धाँजलि अत्यन्त महत्व... इसमें संदेह नहीं हो सकता ।

महर्षि का लक्ष्य

महर्षि दयानंद का नाम नवीन भारत के ... ताओं में सदा आदर के साथ लिया जायगा । ... केवल धार्मिक और सामाजिक जागृति ही ... उत्पन्न नहीं की बल्कि स्वराज्य का महत्व भी ... देशवासियों के सम्मुख स्पष्ट शब्दों में रखते हुए ... वेदना के साथ अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्र... लिखा है कि—

"अब अभाग्योदय से और आर्यों के ... प्रमाद, परस्पर विरोध से अन्य देशों के राज्य ... तो कथा ही क्या कहनी, किन्तु आर्यावर्त में भी ... का अखण्ड, स्वतन्त्र, स्वाधीन, निर्भय राज्य इस ... नहीं है । जो कुछ भी हैं सो भी विदेशियों से पाद... हो रहा है । दुर्दिन जब आता है तब देशवासि... अनेक प्रकार का दुःख भोगना पड़ता है । कोई ... भी करे परन्तु जो 'स्वदेशीय राज्य होता है वह ... उत्तम होता है'। अथवा मतमतान्तर के आ... माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया ... विदेशियां का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है ... भिन्न–भिन्न भाषा, पृथक-पृथक शिक्षा, अ...

नारी जागरण में आर्य समाज की भूमिका

(कमला सिंघवी)

सन् १९७५। अन्तर्राष्ट्रीय महिला वर्ष के रूप में सर्वत्र मनाया जा रहा है। नारी स्वतंत्रता और जागरण के चर्चे आज आम बात है। लगता है नारी स्वातंत्र्य के इस आंदोलन की प्रतिध्वनियाँ सुदीर्घ काल तक हमारे बीच रहेंगी। देश के सभी दलों एवं संस्थाओं ने अनुरोध किया है कि महिलाओं के साथ सभी प्रकार के भेदभावों को समाप्त किया जाये और उन्हें प्रत्येक क्षेत्र में पुरुषों के समान अधिकार मिल सके, इसके लिए कानूनी कार्यवाही की जाए, आवश्यकतानुसार संबंधित कानूनों में संशोधन भी किये जायें।

आर्य समाज ने इस दिशा में बहुत पहले ही अद्भुत कदम उठाकर, नारी मन में चेतना, जागृति और साहस की लहर उत्पन्न करने का प्रयत्न किया था। इस वर्ष जबकि आर्य समाज अपना शताब्दी समारोह मना रहा है, नारी अधिकारों और नारी सुधारों के प्रति उसके योगदान और दृष्टिकोण, दोनों का स्मरण होना ऐसे अवसर पर स्वाभाविक है। नारियों को जब पर्दे और घर की देहरी से आगे बढ़ने तक पर समाज ने प्रतिबन्ध लगा रखे थे, उस समय आर्य समाज ने उनके विरुद्ध आंदोलन छेड़ा था। कन्याओं के विद्यालय प्रारम्भ में जब आर्य समाज ने खोले तो हिन्दुओं ने ही उसका यह कह कर विरोध किया कि लड़कियों को पढ़ा-लिखा कर मेम थोड़े ही बनाना है।

आर्य समाज ने समाज सुधार की शृंखला में भी नारियों की समस्या को प्राथमिकता दी और समाज में व्याप्त पारिवारिक कुरीतियों को समूल उखाड़ फेंकने के लिए कमर कस ली। हिन्दू महिलाओं की दयनीय दशा को देखकर रोना आता था। ईसाईयों ने तो कभी सिद्धाँत रूप में ही नारियों में जीवात्मा नहीं मानी थी। पर हिन्दू समाज तो उसे प्रत्यक्ष व्यवहार में परिणत कर रहा था। महर्षि दयानन्द और उनके आर्य समाज ने हिन्दू समाज को एक नया क्रान्तिकारी दृष्टिकोण दिया जो आगे चलकर परिवर्तन के मोर्चे को सुदृढ़ करने में सहायक सिद्ध हुआ। स्वामी जी इस युग के उन महापुरुषों में थे जिन्होंने एक मन्दिर के चबूतरे पर खेलती हुई ६ वर्ष की बालिका को देख कर अपना मस्तक झुका दिया। देखने वाले ने जब यह प्रश्न किया कि वैसे आप मूर्ति-पूजा का खण्डन करते हैं किन्तु मूर्ति का यह प्रभाव है कि आपका मस्तक अपने आप झुक गया। उन्होंने उत्तर दिया— मैंने अपना माथा मूर्ति को नहीं झुकाया अपितु इस छोटी-सी बालिका को झुकाया है। मैं इसका अभिवादन करके मातृशक्ति का अभिवादन कर रहा हूं।

शिक्षा के क्षेत्र में पहल

नारियों की शिक्षा के क्षेत्र में भी आर्य समाज ने युगान्तरकारी परिवर्तन प्रस्तुत किये। "स्त्री शूद्रो-नाधी यातामिति श्रुतेः' वाली मनगढ़न्त श्रुति को आर्यसमाज के प्रवर्तक स्वामी दयानन्द जी ने कभी प्रामाणिक नहीं माना। बल्कि यजुर्वेद के आधार पर उन्होंने यह प्रतिपादित किया— वेदों का प्रकाश ईश्वर ने सबके लिए किया है। अतः यह अनिवार्य हो जाता है कि लड़के और लड़कियों को विद्वान और विदुषी बनाने के लिए तन-मन-धन से प्रयत्न किया जाये जिससे स्त्रियां भी वेदाभ्यास करके गार्गी मैत्रेयी आदि विदुषियों की भांति विदुषी बन सके और तेजस्वी व्यक्तित्व विकसित कर सकें।" स्त्रियों के पढ़ने का निषेध आर्य समाज ने सदैव मूर्खता, स्वार्थपरता और निर्बुद्धि का परिचायक माना है। स्वामी जी के अनुसार विद्वान पति और अनपढ़ एवं असंस्कृत पत्नी गृहस्थी की गाड़ी को सुचारुरूप से कदापि नहीं खींच सकते। शिक्षित नारी ही अपने अधिकारों के प्रति मूलरूप से जागरूक रह सकती है। इसीलिए उन्होंने पुरुषों के समान स्त्रियों को भी व्याकरण धर्मशास्त्र, आयुर्वेद, गणित, शिल्प आदि सभी शिक्षाओं के योग्य ठहराया।

१९ वीं सदी के मध्य भाग में पर्दे की प्रथा तेजी से बढ़ रही थी। वैदिक और बौद्धकाल तक भारतीय स्त्रियों में पर्दे की प्रथा का उल्लेख नहीं मिलता। मुगलशासन काल की देन के रूप में इस कुप्रथा ने स्त्रियों की स्वतन्त्रता का हरण किया। आर्य समाज ने स्त्री शिक्षा के साथ-साथ इस ओर भी ध्यान दिया और सार्वजनिक कार्यक्रमों एवं समारोहों में स्त्रियों की उपस्थिति पर बल दिया। धीरे-धीरे आर्य समाज के प्रयत्नों से पर्दे की प्रथा एक ढोंग समझी जाने लगी और आर्य स्त्रियां इसे अपना अपमान समझने लगी।

सती प्रथा के विरुद्ध भी आर्य समाज ने अपनी बुलन्द आवाज उठाई और विधवाओं के मन और मस्तिष्कों पर नई चेतना के बीज अंकुरित किये। उन्हें नवजीवन और नव दिशा मिल सके, इसके लिए पुनर्विवाह की व्यवस्था करने का प्रयास किया और उसे अपना सम्पूर्ण क्रियात्मक समर्थन दिया।

(शेषांश पृष्ठ २३ पर)

वेद—एक दार्शनिक दृष्टि

(आचार्य वैद्यनाथ शास्त्री)

साधारण धारणा है कि वेदों में केवल कर्मकाण्ड का ही वर्णन है, इसी में वे पूर्णतया चरितार्थ हैं, परन्तु यह धारणा विचार करने पर एकान्तिक नहीं सिद्ध होती। वेद मन्त्रों का उपयोग कर्मकाण्ड में होता है, परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि उनमें इसके अतिरिक्त अन्य कोई ज्ञान, विज्ञान और दर्शन सम्बन्धी भाव नहीं है ।

वेद परा एवं अपरा दोनों विद्याओं का प्रतिपादक

यदि वेद में दार्शनिक और वैज्ञानिक ज्ञान का निदर्शन न होता, तो दर्शन और उपनिषदों की सत्ता ही हमारे समक्ष न आती। जिन दर्शनों पर विदेशी विद्वान भारत की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं, वे भी तो वेदों के सामने घुटने टेकते हैं। उपनिषदें भी चिल्ला-चिल्लाकर वेदों की ही महिमा गाती हैं। इन सबका मूल वेदों से ही पल्लवित होकर इस रूप में आया हैं । कई पाश्चात्य विद्वान और विशेषत: म० डयूसन महोदय ने अपनी पुस्तक 'आउट लाईन्स आफ इण्डियन फिलोसोफी' में यह लिखा है कि 'वेदों में परमात्मा के विषय का दार्शनिक वर्णन नहीं ऐसा उपनिषत्काल में ही पाया जाता है। इससे ज्ञात होता है कि परमात्मविद्या का प्रादुर्भाव भारत में उपनिषत्काल में हुआ। इसके पूर्व यह विचार-धारा आर्यों में नहीं थी।" डयूसन के इस विचार का मूल मुण्डकोपनिषद् के ३।१।१ का 'द्वा सुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्षं परिषस्वजाते"—यह मन्त्र है। परन्तु उसे यह नहीं मालूम था कि यह मन्त्र उपनिषद् का नहीं, अपितु ऋग्वेद का है। ऋग्वेद १। १६४। २० में यह मन्त्र विद्यमान है और वहीं से इस उपनिषद् में आया होगा - गीता के समय में यह तो सभी जानते थे कि वेदों में दार्शनिक ज्ञान का मूल है। परन्तु यह धारणा भी लोगों की थी कि उसमें गुणत्रय का ही वर्णन है त्रिगुणातीतावस्था या पराविद्या का ज्ञान नहीं। मुण्डकोपनिषद् में भी प्रसंग से वेदों को अपरा-विद्या में कहा गया है। इन उद्धरणों से वेद गुणत्रय का ही वर्णन करते हैं,जो अपर विद्या का विषय है,ऐसा ज्ञात होता है। परन्तु वेदाध्ययन और तुलनात्मक विवेचन से यह धारणा सम्यक् प्रतीत नहीं होती। मुण्डकोपनिषद् के 'अपरा' पद का यह अर्थ है 'केवल परा नहीं" अर्थात् वेदों में केवल "परा विद्या" का ही वर्णन नहीं, अपरा का भी वर्णन है। उपनिषदों से ही ब्रह्मविद्या आदि का विषय गीता में आया है। कई श्लोक तो ज्यों के त्यों लघुपरिवर्तन के साथ गीता में उपनिषदों के ही मिलते हैं। गीता के द्वितीयाध्याय में आत्मा के विषय का प्रसिद्ध श्लोक 'य एवं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्' कठोपनिषद् २। १९ में "हन्ता चेन्मन्यते हन्तु हतश्चेन्मन्यते हतम्" इस रूप में मिलता है। दूसरा पाद दोनों स्थानों पर समान है। गीता द्वितीयाध्याय का 'न जायते म्रियते वा कदाचिन्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः। अजो नित्यं शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे— कठोपनिषद् २। १८ में थोड़े से पाठभेद के साथ वैसे का वैसा ही पाया जाता है। अस्तु प्रकृत यह है कि गीता उपनिषदों से संगृहीत है। उपनिषदें बड़े बल से यह कहती है कि—"सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति" कठ० २। १५ अर्थात् सारे वेद जिस परम पद का वर्णन करते है, उसे हे नचिकेत: ! मैं संक्षेप में तुम्हें बतलाता हूं और वह पद 'ओ३म्' है। परविद्या के लक्षण लीजिए तो पता चलता है कि 'परा यथाऽक्षरमधिगम्यते': अर्थात् परा वह है जिससे अक्षर ओम् का ज्ञान होता है। ओ३म् का ज्ञान 'परा' विद्या है और वह वेदों में वर्णित पाया जाता है, जैसा कि उपनिषदें स्वयं कहती हैं, फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि वेद केवल 'अपरा' विद्या के प्रतिपादक हैं, उनमें 'परा' विद्या नहीं।

दर्शनों के विषय का उद्गमस्थान वेद ही है

अब वेद की अन्त: परिस्थितियों की जांच करके भी देखना चाहिए : उदाहरणार्थ ऋग्वेद के १० वें मण्डल के १२९ वें सूक्त को लीजिए। यह सूक्त 'नासदीय' के नाम से विख्यात है। इस सूक्त का 'देवता' = प्रतिपाद्य विषय भाव (Existence) है। इसमें जगत् के मूल में स्थित भाव पदार्थों का वर्णन है। इससे बढ़कर सृष्टिविद्या का दार्शनिक वर्णन और किसी धर्म में उपलब्ध नहीं होता। इसके साथ १० वें मण्डल के १९० वें सूक्त को मिलाने पर ज्ञात होता है कि ऋग्वेद का यह सूक्त सृष्टिविद्या सम्बन्धी समस्त दार्शनिक दृष्टियों का केन्द्र है। इस सूक्त में 'आनीदवातं स्वधया तदेकम्' 'रेतोधा आसन् महिमान आसन्" 'स्वधा अधस्तात् प्रयतिः परस्तात्' आदि-वादि वाक्य पाये जाते हैं। जिनमें संक्षेप में यह भाव निकलता है कि सृष्टि की प्रारम्भिक अवस्था में इसके कारणभूत परमात्मा जीवात्मा और प्रकृति आदि तत्त्व विद्यमान थे। पूर्वोक्त वाक्यों के अर्थ इस प्रकार

हैं— बिना किसी कम्पन के एक परमेश्वर अपनी शक्ति से प्रकृति के साथ श्वास ले रहा था। उस समय कर्म के फल को धारण करने वाले बद्ध और महिमान (मुक्त) जीव भी थे।" प्रकृति नीचे थी और प्रयत्न उसके ऊपर था। ये हैं तथ्य जो दर्शन के मूल हैं। इन्हीं का विचार वास्तव में दर्शन है। सारे दर्शनों का सूत्रपात इन्हीं के विचार से प्रारम्भ होता है। सांख्य की प्रक्रिया भारतीय दर्शनों में सबसे प्राचीन और पूर्ववर्ती मानी जाती है। पञ्चशिखाचार्य ने सांख्य-विचारधारा के प्रवर्तक आचार्य कपिल को 'आदि विद्वान' (First Philosopher) कहा है। इसका तात्पर्य यह है कि कपिल आदि दर्शन-प्रणेता है। कपिल का सांख्य दर्शन प्रकृति और पुरुष का वर्णन करता है। प्रकृतिविषय का प्रतिपादन सांख्य में 'नासदीय' सूक्त के "तम आसीत्तमसा" मन्त्र से लिया गया होगा। इस मंत्र में 'तमः' "सलिलं"; 'आभु', आदि पद आये हैं। इन पदों का अर्थ प्रकृति है; ऐसा प्राचीन साँख्याचार्य लोग मानते थे। आचार्य दुर्ग ने निरुक्त दैवत -प्रकरण के प्रथम वर्णन में ही इस का अर्थ दिखलाते हुए लिखा है कि "साँख्यास्तु तमःशब्देन प्रधानमाहुः" अर्थात् सांख्य लोग 'तम' शब्द से प्रकृति का अर्थ लेते हैं। यहां पर उसने सांख्य के एक प्राचीन सूत्र का उद्धरण भी दिया है। आभु और सलिल आदि पदों की व्याख्या करते हुए सांख्यकारिका पर युक्तिदीपिका-टीकाकार कहते है— सति उपादाने विकारो लीयते-अर्थात् उपादान में जगत् लीन होता है और वह प्रकृति है। यह युक्तिदीपिका की ५० वीं कारिका का सन्दर्भ है। वहीं पर पूर्वोक्त सूक्त में आये 'अम्भ" पर टीकाकार ने लिखा है "अमितं भातीति " अम्भः प्रधान है। आभु का अर्थ भी प्रधान है, इसलिए कि वह अपने कार्यमात्र में व्यापक होने से "आभु" कहलाता है। इसी सूक्त में सृष्टि की प्रागवस्था में 'काम' की स्थिति बतलाई गई है और उसे मन का रेत कहा गया है यह काम और मनोरेत प्रतिभा तथा महत्तत्त्व का बोधक है। प्रकृति से प्रथम कौन सा कार्य पदार्थ पैदा होता है, इस विषय में साँख्याचार्यों के दो विचार पाये जाते हैं। कुछ आचार्यों का कथन है कि प्रकृति से प्रथम कार्य—

पदार्थ महत्तत्त्व पैदा होता है और कई आचार्य मानते हैं कि महत्तत्त्व से भी पूर्व "प्रतिभा नामक पदार्थ पैदा होता है, पश्चात् महत्तत्त्व समुद्भूत होता है। इसे ही कई आचार्य अनिर्देश्य तत्त्व नाम से पुकारते हैं। यजुर्वेद २२। २३ में इसे ही पूर्वचित्ति पद से व्यवहृत किया गया ज्ञात होता है। पतञ्जलि, पञ्चाधिकरण वार्षगण लोग मानते थे कि प्रकृति से महत्तत्त्व उत्पन्न होता हैं। यास्काचार्य ने निरुक्त परिशिष्ट में सृष्टि के विकास और उपसंहार का क्रम दिखाते हुए— महत्तत्त्व से पूर्व प्रतिभा तत्त्व को माना है। प्रकृति को वैदिक साहित्य में अदिति कहा गया है। इसके दो शिर माने जाते हैं— ये हैं कार्यावस्था और कारण-वस्था। अन्य कई स्थलों पर 'सप्तशीर्ष्णी' भी उसे कहा गया है। प्रकृति की सात प्रकृति— विकृतियाँ ही सात शिर है। इस प्रकार सांख्य का ज्ञान वेद से निकला अन्य दर्शनों के विषय का भी उद्गमस्थान वेद ही है। यहाँ पर केवल निदर्शन दिखलाया गया है।

ज्ञान दो भागों में विभक्त

जिन देवताओं का कर्मकांड में विनियोग है अथवा वैदिक कर्मकाण्ड के जो देवता हैं उन पर यदि विचार किया जावे तो ज्ञात होगा कि ये एक महती दार्शनिक प्रक्रिया के उन्नायक हैं। वेद में जिन देवताओं का वर्णन है वे ढाई सौ से अधिक हैं। वे ही कर्म-काण्ड में प्रयुक्त होते हैं। कर्मकाण्ड में देवता का लक्षण है कि जिसको हविः प्रदान की जावे, वह देवता है। यथा— यस्यै हविर्निरुप्यते सा देवतेति। अथवा जिसका मंत्र वर्णन करते हों, वह देवता हैं आचार्य यास्क ने देवता की परिभाषा करते हुए लिखा है कि मन्त्र में जिस विषय का प्रतिपादन है, वह देवता है। कात्यायन की सर्वानुक्रमणी में भी बतलाया गया है "या तेनोच्यते" अर्थात् वेद मन्त्र से जो वर्णन किया जाता है, वह विषय ही देवता है। इस प्रकार निष्कर्ष यह निकला कि जो मंत्र का प्रति-पाद्य विषय है— वही देवता है। "अग्निमीळे पुरोहितम्" इस मंत्र का देवता अग्नि है। इस का तात्पर्य यह है कि इस मंत्र में अग्नि का वर्णन हैं। व्यापक-रूप में यह कहा जा सकता है कि जो मंत्रों का प्रतिपाद्य विषय है और जो मानव मस्तिष्क के ज्ञान का विषय हैं, वह देवता कहा जाता है। मनुष्य का ज्ञान कार्य-कारणात्मक नियम पर है। ये नियम हमें देश और काल में घेरते हैं। हम जिस वस्तु का ज्ञान करते हैं वह किसी न किसी काल में होगी — इसलिए देश और काल का इसके साथ सम्बन्ध है। शेष वस्तुविभाग भी दो प्रकार का ही हो सकता है, या तो द्रष्टा हो या दृश्य हो। हमारा ज्ञान इस प्रकार दो भागों में विभक्त है;— द्रष्टृप्रधान और दृश्यप्रधान। वेद में ढाई सौ से अधिक जिन देवताओं का वर्णन है, वे उनके प्रतिपाद्य विषय हैं। परन्तु ये अधिकांश देव कुछ विशेष देवों की महिमामात्र हैं। यदि सभी का विश्लेषण किया जावे तो पता चलेगा कि देव ३४ ही हैं। इनमें ३३ देव हैं और ३४ वां महादेव हैं। पूर्वोक्त सारे देव इन ३४ में ही अन्तर्भूत हो जाते हैं।

उदाहरणार्थ ओखली और मूसल वर्णन में भिन्न भिन्न विषयरूप देवता हैं परन्तु लकड़ी कहने पर सभी-का अन्तर्भाव हो जाता है। किरणें, उषा, मध्यान्ह आदि भिन्न भिन्न वर्णनीय हैं, परन्तु सूर्य और काल कह देने पर सभी उसमें अन्तर्भूत हो जाते हैं। इस प्रकार लघुकरण करने पर सब देवों का अन्तर्भाव इन में हो जाता है। अथर्व वेद १०।७।२७ में कहा गया है कि ३३ देव परमेश्वर के इस संसार-रूपी अङ्ग के भाग हैं। वे ही इसकी रक्षा करते हैं। इससे भाव यह निकला कि परमेश्वर के इस दृश्यमान जगत् के ये ३३ देव मूल तत्व है। परमेश्वर उनका भी देव महादेव हैं। ये ३३ देव इस प्रकार हैं, ८ वसु; ११ रुद्र; १२ आदित्य; प्रजापति और इन्द्र। वसुवों में पृथ्वी जल, अग्नि, वायु, आकाश, सूर्य और नक्षत्र हैं। रुद्रों में १० प्राण और ११ वां जीवात्मा है। ये शरीर में कार्य करने वाली शक्तियां और शरीर के संचालक हैं। जीवात्मा के सहयोग में शरीर का सारा कार्य इन्हीं से चलता है। १२ महीने आदित्य हैं। ये हैं सूर्य के भिन्न-भिन्न राशियो पर होने के परिणाम। प्रजापति यज्ञ है जो मन का विचारमय कार्य है। इन्द्र विद्युत का नाम है और यह सर्वत्र व्याप्त प्राकृतिक शक्ति है। इनका भी जब दार्शनिक दृष्टि से अन्तर्भाव करते हैं तो इस परिणाम पर पहुंचते हैं। १२ आदित्य का काल में अन्तर्भाव होता है। ११ रुद्रों में से प्राणों का शक्ति में अन्तर्भाव होता है और आत्मा स्वतन्त्र तत्व रह जाता है। आठ वसुवों की देश के अतिरिक्त और कोई स्थिति नहीं। प्रजापति मन का विचारपूर्वक कार्य और इन्द्र विद्युत है। इस प्रकार ३३ देवताओं का विश्लेषण हमें काल, देश, आत्मा, शक्ति, मन के विचारपूर्वक कार्य और शरीर के रक्षात्मक तथा अनिच्छापूर्वक कार्य आदि पदार्थों पर पहुँचाता है। इन छः का भी अन्तर्भाव होता है। आत्मा के अतिरिक्त पांच का अन्तर्भाव प्रकृति में होता है क्योंकि ये प्रकृति के अतिरिक्त कुछ नहीं। इस प्रकार प्रकृति और जीवात्मा दो पदार्थ जगत् के मूल में ठहरे। ३४ वां महादेव परमेश्वर इनसे अतिरिक्त हैं। उसे भी इस गणना में सम्मिलित कर देने पर प्रकृति, आत्मा और परमेश्वर तीन तत्व ठहरते हैं, जो वेद मन्त्र के प्रतिपाद्य विषय और मनुष्य के ज्ञान के विषय हैं ये ही दार्शनिक विचारों के मूल हैं। इन्हीं पर सारे दार्शनिकवाद खड़े हैं। यह निष्कर्ष ही वैदिक दर्शन का तत्व है। इन तीनों में भी परमेश्वर उपास्य देव हैं अन्य देव उसके अंग हैं। अन्यों का प्रतिपादन परमेश्वर की प्राप्ति के लिए ही है। इनका वर्णन होने पर भी वेदों में प्रधानतया उसी का वर्णन पाया जाता है। ऊपर यह बतलाया जा चुका है कि ज्ञान द्रष्टृप्रधान और दृश्यप्रधान दोनों रूप का है। दृष्टि से वेदों में दो प्रकार के वर्णन पाये जाते एक युष्मत्पदार्थ और दूसरे अस्मत्पदार्थ। यह देवताओं के विचार को तीन दृष्टियों से विचार ही निकलता है। ये तीनों दृष्टियां आध्यात्मिक, आ दैविक, और आधिभौतिक हैं। वैदिक वाङ्मय आधिभौतिक से आधिदैविक दृष्टि की प्रधानता है आधिदैविक से आध्यात्मिक की। आधिभौ और आधिदैविक लोक सम्बन्धी और आध्यात्मिक उनसे ऊंची है। दर्शनों में आधिभौतिक, आधिदैविक और उसके आध्यात्मिक का क्रम है। आध्यात्मिक हमारा है और वह इन दोनों से परे है। पाश्चात्यदर्शन उल्टे क्रम से लेते हैं उनके अनुसार आध्यात्मिक आधिदैविक प्राथमिक और दूसरी अवस्था के लोगों वृत्तियां हैं। समुन्नत और परिमार्जित लोगों की अधिभौतिक है। पाश्चात्य दार्शनिक कहते हैं कि भी विचार-धारा पूर्वावस्था में आध्यात्मिक, पश्चात् धिदैविक और अन्त में समुन्नत होकर आधिभौतिक धारण करती है। आज का विज्ञान इस आधिभौ दृष्टि का ही उपासक है। परन्तु हमारी दार्श धारा इस क्रम के विपरीत है। इन्हें ही आजकल पश्चिमी दर्शन में Metaphysical, Theolog और Positiveकहा जाता है। कमटे ने इसी क्रम दार्शनिक वादों का विश्लेषण किया है।

वेद दार्शनिक दृष्टि से ओत-प्रोत

इस आध्यात्मिक भावना को ध्यान में रख पूर्वोक्त ऋग्वेदीय सूक्त में कहा गया है 'स्वधा अवस्त प्रयतिः परस्तात्!' अर्थात् परमात्मा का प्रयत्न है और प्रकृति उसके नीचे हैं। प्रयत्न के अन्दर कर हीं प्रकृति का सारा कार्य होता है। परमात्मा निमित्तता के बिना जड़ प्रकृति से जगत् की रच असम्भव है। जब तक परमेश्वर और उसके प्र को न माना जावे जगत् को रचने में केवल प्र समर्थ नहीं हो सकती। इसी कारण भौतिक विज्ञा जगत् की सारी समस्याओं का समाधान करने में अ मर्थ हैं। बहुत प्रयत्न से वैज्ञानिकों ने प्रकृति और की जो कुछ व्याख्या की है वह तीन प्रकार के परमा Electron, Proton & Neutron हैं। ये जगत् के मे माने जाते हैं। यह प्रकृति की व्याख्या के रूप अथवा उसके स्वरूप में हमारे समक्ष रखे गये हैं। पर सत्त्व, रजस् और तमस् गुणों पर विचार करते पता चलता है कि ये तीन इन्हीं गुणों के रूप हैं।

आर्यसमाज वेदों के विज्ञान द्वारा विश्व का नेतृत्व करे।

[लेखक—श्री पं० वीरसेन जी वेदश्रमी इन्दौर]

आर्य समाज की घोषणा है कि वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। और इन "सब सत्य विद्याओं का आदि मूल परमात्मा है।" साथ ही "इन सत्य विद्याओं के द्वारा जो पदार्थ जाने जाते हैं उनका भी आदि मूल परमात्मा है"। अर्थात् पद में प्रतिपादित सब सत्य विद्याओं का यदि हम विश्व में प्रचार करेंगे तो विश्व में वेदों का प्रचार होगा। और उन विद्याओं के द्वारा मानव समाज उन सत्य विद्याओं के आदि मूल परम गुरु परमात्मा को भी प्राप्त करने में उद्यत हो सकेगा या उसको भी प्राप्त कर लेगा।

वेद की इन सत्य विद्याओं के द्वारा जब हम पदार्थों का बोध प्राप्त करेंगे तो भी हम आदि मूल के निकट ही अपने को पावेंगे। इसलिए आर्य समाज के लिए यह परमावश्यक है कि अपनी घोषणा या प्रतिज्ञा की विश्व के सामने उपयोगिता व सत्यता सिद्ध करने के लिए वेद की विविध विद्याओं के अनुसंधान एवं उनके द्वारा समस्त पदार्थों का बोध कराने के लिए उन विद्याओं को लोकोपकारार्थ व्यवहारोपयोगी भी बनाने का प्रयत्न करे।

आज विश्व में जो विद्यायें प्रचलित हैं उन का आदि मूल पाश्चात्य भौतिकवाद है। इन्हीं पाश्चात्य विद्याओं द्वारा समस्त विश्व को पदार्थों का भी बोध कराया जा रहा है। इसलिए इन विद्याओं के अध्ययन से अनात्मवाद, नास्तिकता एवं भौतिकवाद तक ही आज का मानव समाज पहुंच पाता है। आज की शिक्षा-दीक्षा, आज का समाज शास्त्र, अर्थशास्त्र, भूगोल व खगोलशास्त्र, शरीर रचना एव इन्द्रिय व्यापार शास्त्र, प्राणिशास्त्र, दर्शनशास्त्र, वाणिज्य शास्त्र, राजनीति, शासन चिकित्सा, निदान, भेषजशास्त्र एवं विज्ञान आदि सभी विद्यायें अध्येता और अध्यापक दोनों के ही मस्तिष्क में एक ऐसी विचारधारा को जन्म देते हैं जो वैदिक विचार धारा के ईश्वर, आत्मा, पुनर्जन्म, वेद के ईश्वरीय ज्ञान प्रवाह से सृष्टि के अनादित्व, धर्म, आश्रम व्यवस्था आदि विचारों से बिलकुल प्रतिकूल होनी है। यदि यही क्रम पाश्चात्य विद्याओं की उन्नति व प्रसार का रहा और वेद विद्याओं के अनुसंधान व प्रचार के प्रति आर्य समाज की भी उदासीनता बनी रही तो मानव जाति ईश्वर, आत्मा और वेद से सदा विमुख ही बनी रहेगी।

आज का विश्व क्यों न भौतिकवादी बने? जब कि उन्होंने अपनी विद्याओं का सर्वत्र प्रसार कर दिया है और उनको इतना व्यवहारोपयोगी बना दिया है कि विश्व का कार्य प्रत्येक प्रकार का उन्हीं विद्याओं के द्वारा सम्पन्न हो रहा है। अत: आज विश्व बलात एवं प्रसन्नता से उन विद्याओं में, और उन विद्याओं द्वारा पदार्थ बोध में संलग्न है तथा उनके द्वारा व्यवहार कार्य में भी पूर्णत: विमग्न है। इसलिये आज के मानव समाज की दृष्टि इन विद्याओं के मूल भौतिकवाद तक ही जाती है और आत्मा व परमात्मा उनसे सदा के लिए ओझल हो जाते हैं। जब आत्मा व परमात्मा ही उनसे ओझल हो जाते हैं तो ईश्वरीय ज्ञान वेद भी उनके द्वारा पूर्ण उपेक्ष्य और हेय हो जाता है।

इस विषय स्थिति से संसार को बचाने और वेदों की ओर लाने का एक मात्र यही उपाय है कि आर्य समाज अपनी प्रतिज्ञा अथवा घोषणा को केवल कथन मात्र के लिए प्रतिज्ञा व घोषणा न रखे, अपितु वेद की उन सब विद्याओं के अनुसंधान और उनको व्यवहारोपयोगी बनाने का भगीरथ प्रयत्न करे। वेद के अनुसंधान नाम पर हुये और हो रहे कार्यों को अपनी घोषणा पर या कसौटी पर कसे कि उसकी पूर्ति कहाँ तक कर रहे हैं यदि वे अनुसंधान कार्य प्रतिज्ञा की स्पष्ट २ पूर्ति नहीं कर रहे हैं तो व्यर्थ हैं। निरुपयोगी हैं ; केवल आत्म-तुष्टि मात्र हैं। ऐसे कार्य से वेदों के प्रति जो कुछ किन्हीं की श्रद्धा अवशिष्ट है वह न तो परम्परा को प्राप्त हो सकती है और न उसके जीवन में स्थिर ही रह सकती है। इस प्रकार हमारा स्वयं कार्य-क्षेत्र भी वेद के लिये संकुचित और सीमिति होता जाता है। जो अपने क्षेत्र को ही वेद से समृद्ध नहीं कर सकता, वह विश्व को वेद की विद्याओं से कैसे समृद्ध कर सकेगा ? और परिणामतः भौतिकवाद के द्वारा उत्पन्न विद्याओं की विश्व में प्रतिष्ठा रहेगी उसी की सभ्यता व संस्कृति का प्राधान्य मानव मात्र में होगा।

महर्षि दयानन्द दिव्यद्रष्टा थे। उन्होंने आर्य समाज के तीसरे नियम को हमें दिया—"वेद सब सत्य

विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना-पढ़ाना और सुनना-सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है" इसको इस लिये परमधर्म बताया जिस से आर्यसमाज द्वारा आर्यों का वेद के प्रति इतना गहरा अभिन्न सम्बन्ध हो जावे जो किसी भी, क्षण उससे पृथक न हो सके। आर्य समाज की आत्मा वेद ही रहे। वेद विद्याओं से ही आर्य जन विद्यामान हों और उन विद्याओं के द्वारा ही समस्त पदार्थों का बोध भी प्राप्त करें। इतना ही नहीं प्रत्युत उन विद्याओं को समस्त विश्व के लिए व्यवहारोपयोगी भी बनावें।

क्या हम इस के लिए कृत प्रयत्न हैं ? क्या हमारी संस्थायें इसके लिये कृत-प्रयत्न हैं ? क्या हमारी प्रांतीय और सार्वदेशिक सभायें इस के लिये किंचिन्मात्र भी प्रयत्नशील हैं ? क्या हमारे समृद्ध एवं वेद के प्रति श्रद्धावान् श्रीमन्न आर्य जन भी अपना धन अर्पण करने को उद्यत हैं ? परन्तु मैं तो इन में भी सर्वत्र भौतिकवाद का, आसुरी विज्ञान एवं विद्याओं का न्यूनाधिक साम्राज्य ही देख रहा हूं। भौतिकवादी शिक्षा-दीक्षा संस्कृति और सभ्यता को पालित एवं पोषित होते हुए ही देख रहा हूँ।

परन्तु आप विश्वास रखिये, आज भी विश्व की वर्तमान सभ्यता संस्कृति, शिक्षा-दीक्षा, विद्या और विज्ञान को ऐसी टक्कर दी जा सकती है जिससे विश्व में वेदों की ओर पुनः अग्रसर हो सके। आवश्यकता हम है, अपनी शक्ति को वेद की विविध विद्याओं के अन्वेषण- और उनको व्यवहारोपयोगी बनाने में लगा दें। वेद के आधार पर समाज शास्त्र अर्थशास्त्र, खगोल, भूगोल, भूगर्भशास्त्र, नक्षत्र विज्ञान, गणित, ज्योतिष, राजनीति, दर्शन, देवतावाद आदि विषय पर ऐसे ग्रन्थ लिखे जावे कि जिनके द्वारा पदार्थों के व्यवहारों का ज्ञान होकर मानव जाति परमात्मा को भी प्राप्त कर सके।

इससे भी गूढ़ विद्यायें प्राणियों के भाषा का ज्ञान, छान्दस शक्ति, वर्षा-विज्ञान, अतिवृष्टि व अनावृष्टि को रोकना, मैत्रावरुण-ग्रहविज्ञान- सोम विज्ञान, मरुविज्ञान, विद्युद्विज्ञान, देवतात्मक शक्तियों का निरुपण करते हुए उनका क्रमशः एक परमात्मा में अन्तर्भाव प्राणविद्या, यज्ञ विज्ञान, वृक्ष-वनस्पति विज्ञान, रश्मि विज्ञान आदि अनेक विद्यायें हैं जिनको वेदों से अनुसंधान करके विश्व के सामने रखा जा सकता है।

"निकामे निकामे नः पर्जन्यो वर्षतु" (यजु:अ २२ मं० २२) का हम पाठ कर सकते हैं परन्तु इसको प्रत्यक्ष बताने के लिए क्या हम "विष्टम्भेन वृष्ट्या वृष्टिं जिन्व" (यजु० अ० १५६) इस पर अग्रसर नहीं हो सकते। विष्टम्भ के दोनों प्रकारों में 'मित्रा वरुणौत्वा वृष्ट्यावताम्" (यजु० अ० २-१७) परम सहायक है वृश्निभूर्त्वा दिवंगच्छ ततोनो वृष्टिमावह' (यजु० २-१६) प्रकार बनाया है और इसमें जिसकी आ[illegible] को अन्तरिक्षस्थ करना उसका भी अन्वेषण करना

यदि हमने यज्ञ के द्वारा वृष्टि को रोकने या[illegible] को घनीभूत करके वर्षाने की आहुतियों के लिए औ[illegible] एवं वनस्पतियों, प्रधानतः सुपर्णी और कद्रू का वि[illegible] स्थलों एवं ऋतुओं में परीक्षण कर लिया और य[illegible] आहुति शक्ति, मन्त्र की शब्द एवं स्वर की शक्ति, [illegible] सामर्थ्य का विश्लेषनात्म अनुसंधान कर लिया [illegible] विश्व को यज्ञ के वर्षा विज्ञान की देन देनी तो स[illegible] विश्व का यज्ञ की ओर आकर्षण हो जायगा। तब अ[illegible]रिका इंग्लैण्ड, रूस, जर्मनी, फ्रांस, चीन, मिश्र व [illegible] आदि सभी देशों में यज्ञ-शालायें स्वतः ही स्थापित [illegible] जावेंगी और यज्ञ होने प्रारम्भ हो जावेंगे तथा वेद[illegible] भूमण्डल भर में अनायास ही प्रचार हो जायेगा।[illegible] वर्षा विज्ञान की सफलता ४ वर्ष के परीक्षा में [illegible] प्रकार संभव है।

"वाचं ब्रह्मेत्युपासीत। सयो वाचं ब्रह्मेत्युपा[illegible] यावद्वाचोगतं तत्र स्य यथा कामाचारो भवति" को[illegible] कर केवल उससे आत्मतुष्टि करने के स्थान पर [illegible] आज "तत्रास्य यथा कामाचारो भवति" इस फल[illegible] उपलब्धि के लिए योग दर्शन के वर्णन–"शब्दार्थ प्रत्य[illegible] नाभितरेतराध्यासात्संकरस्व प्रविभाग सयमात्सर्वभूत[illegible] ज्ञानम्" (पा० ३ सूत्र १७) इस शैली के आधार [illegible] अनुसंधान प्रारम्भ करें तो पशु-पक्षियों की बोलियों [illegible] सार्थक ज्ञान उपलब्ध करने में ५ वर्ष में अच्छी सफ[illegible] प्राप्त हो सकती है। वर्तमान विज्ञान ने अभी उ[illegible] ओर प्रयत्न भी नहीं किया और विश्व के अनेक [illegible] रहस्यों को जानने में इस से बड़ी सहायता मिल स[illegible] है। यदि इस विज्ञान को भी विश्व के सामने प्रस्तुत [illegible] दिया जावे तो भी विश्व का ध्यान वेद की ओर, [illegible] की और वैदिक विज्ञान की ओर अग्रसर हो जाये[illegible]

इसी प्रकार ,'आदित्यास्त्वा पृष्ठे सादया[illegible] (यजु० अ० १४-५) विश्वकर्मात्वा सादन्त्वन्तरि[illegible] पृष्ठे" (यजु० १४-१३), "नाकस्य पृष्ठे" स्वर्गेलोके[illegible] मामंच सादयन्तु" (यजु० अ० १५ म० १४) को प[illegible] "गायत्रेणवा छन्दसा सादयामि, त्रैत्टुभेनत्वा छ[illegible] सादयामि" (यजु० अ० १३-५) द्वारा छान्दस [illegible] के सामर्थ्य से ब्रह्माण्ड में सादन कर्म की ओर [illegible] नहीं की और छन्द को केवल पिंगल में ही आबद्ध [illegible] बैठ गये। उसके विस्तृत पर व उस की व्यापक [illegible] पर हम ने ध्यान नहीं दिया।

"गायत्रं छन्दमारोह पृथ्विवीमनु विक्रमस्व [illegible] छन्दमारोहांतरिक्ष मनुविक्रमस्व जागतं छन्द[illegible] दिवमनुविक्रमस्व" (यजु० अ० १२ म० ५) यह [illegible] छन्दों द्वारा ब्रह्मण्ड में पहुंचने की ओर संकेत [illegible]

आर्य समाज

○ पद्मभूषण स्व० रामधारीसिंह "दिनकर"

[राममोहनराय, रानाडे, केशवचन्द्र और तिलक से भिन्न स्वामी दयानन्द की विशेषता यह रही कि उन्होंने धीरे-धीरे पपड़ियां तोड़ने का काम न करके, उन्हें एक ही चोट से साफ करने का निश्चय किया। परिवर्तन जब धीरे-धीरे आता है, तब सुधार कहलाता है। किन्तु, वही जब तीव्र वेग से पहुँच जाता है, तब उसे क्रान्ति कहते हैं। दयानन्द के अन्य समकालीन सुधारक केवल सुधारक मात्र थे, किन्तु दयानन्द क्रान्ति के वेग से आये और उन्होंने निश्छल भाव से यह घोषणा कर दी कि हिन्दु-धर्म-ग्रन्थों में केवल वेद ही मान्य है अन्य शास्त्रों और पुराणों की बातें बुद्धि की कसौटी पर कसे बिना मानी नहीं जानी चाहिए]

सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में स्वामी दयानन्द ने ब्रह्म-समाज और प्रार्थना समाज के विषय में निम्नलिखित बातें लिखी हैं।

"जो कुछ ब्राह्म समाज और प्रार्थना समाजियों ने ईसाई मत में मिलने से थोड़े मनुष्यों को बचाया और कुछ, कुछ पाषाणादि मूर्ति-पूजा को हटाया, अन्य जाल ग्रन्थों के फंदों से भी बचाया इत्यादि अच्छी बातें हैं। परन्तु इन लोगो में स्वदेश भक्ति बहुत न्यून है। ईसाईयों के आचरण बहुत से लिये हैं। खान-पान विवाहादि के नियम भी बहुत बदल दिये हैं। अपने देश की प्रशंसा और पूर्वजों की बड़ाई करनी तो दूर रही, उसके बदले पेट भर निंदा करते हैं। व्याख्यानों में ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा भर-पेट करते हैं। ब्रह्मादि महर्षियों का नाम भी नहीं लेते। प्रत्युत, ऐसा कहते हैं कि बिना अंग्रेजी के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई विद्वान नहीं हुआ। आर्यावर्ती लोग सदा से मूर्ख चले आये हैं। वेदादि की प्रतिष्ठा तो दूर रही, परन्तु निंदा लरने से भी पृथक नहीं रहते। ब्राह्मण समाज के उद्देश्य के पुस्तक में साधुओं की संख्या में ईसा, मूसा, मुहम्मद नामक और चैतन्य लिखे हैं। किसी ऋषि, महर्षि का नाम भी नहीं लिखा।"

स्वामी दयानन्द जी ने हिन्दुत्व का ध्यान अपने धर्म के मूल रूप की ओर आकृष्ट किया

केशवचन्द्र और रानाडे की तुलना में दयानन्द वैसे ही दीखते हैं, जैसे गोखले की तुलना में तिलक। जैसे राजनीति के क्षेत्र में हमारी राष्ट्रीयता का सामरिक तेज, पहले, पहल, तिलक में प्रत्यक्ष हुआ, वैसे ही संस्कृति के क्षेत्र में भारत का आत्माभिमान स्वामी दयानन्द में निखरा। ब्राह्म समाज और प्रार्थना समाज के नेता अपने धर्म और समाज में सुधार तो ला रहे थे, किन्तु उन्हें बराबर यह खेद सता रहा था कि हम जो कुछ कर रहे हैं, वह विदेश की नकल है। अपनी हीनता और विदेशियों की श्रेष्ठता के ज्ञान से उनकी आत्मा, कहीं न कहीं, दबी हुई थी अतःएव, कार्य तो, प्रायः, उनके भी वैसे ही रहे जैसे स्वामी दयानन्द के, किन्तु आत्महीनता के भाव से अवगत रहने के कारण वे दर्प से नहीं बोल सके। यह दर्प स्वामी दयानन्द में चमका, रूढ़ियों और गतानुगतिकता में फंसकर अपना विनाश करने के कारण उन्होंने भारतवासियों की कड़ी निन्दा की और उनसे कहा कि तुम्हारा धर्म पौराणिक संस्कारों की धूल में छिप गया है। इन संस्कारों के गंद पत्तों को तोड़ फेंकों। तुम्हारा सच्चा धर्म वैदिक धर्म है, जिस पर आरुढ़ होने से तुम फिर से विश्व विजयी हो सकते हो। किन्तु, इससे भी कड़ी फटकार उन्होंने ईसाईयों और मुसलमानों पर भेजी जो दिन दहाड़े हिन्दुत्व की निन्दा करते फिरते थे। ईसाई और मुस्लिम पुराणों में घुस कर उन्होंने इन धर्मों में भी वैसे ही दोष दिखला दिये, जिस के कारण ईसाई, और मुसलमान हिन्दुत्व की निन्दा करते थे। इससे दो बातें निकली। एक तो यह कि अपनी निन्दा सुनकर घबराई हुई हिन्दु जनता को यह जान कर कुछ संतोष हुआ कि पौराणिकता के मामले में ईसाइयत और इस्लाम भी हिन्दुत्व से अच्छे नहीं हैं। दूसरी यह कि हिन्दुओं का ध्यान अपने धर्म के मूलरूप की ओर आकृष्ट हुआ एवं वे अपनी प्राचीन परम्परा के लिए गौरव का अनुभव करने लगे।

स्वामी जी सत्यारुढ़ एवं निर्भीक नेता थे

राममोहन और रानाडे ने हिन्दुत्व के पहले मोर्चे पर लड़ाई लड़ी थी, जो रक्षा या बचाव का मोर्चा था। स्वामी दयानन्द ने आक्रामकता का थोड़ा बहुत श्रीगणेश कर दिया, क्योंकि वास्तविक रक्षा का उपाय तो आक्रमण की ही नीति है। सत्यार्थ प्रकाश में जहां हिन्दुओं के वैदिक रूप का गहन आख्यान है, वहां उसमें इस्लाम और ईसाईयत की आलोचना पर भी अलग-अलग दो समुल्लास हैं। अब तक हिन्दुत्व की निन्दा करने वाले लोग निश्चिन्त थे कि हिन्दु अपना सुधार भले करता हो, किन्तु बदले में हमारी निन्दा करने का उसे साहस नहीं

होगा किन्तु इस मेधावी एवं योद्धा संन्यासी ने उनकी आशा पर पानी फेर दिया। यही नहीं, प्रत्युत, जो बात राममोहन, केशवचन्द्र और रानाडे के ध्यान में भी नहीं आयी थी, उस बात को लेकर स्वामी दयानन्द के शिष्य आगे बढ़े और उन्होंने घोषणा कर दी कि धर्मच्युत हिन्दु प्रत्येक अवस्था में अपने धर्म में वापस आ सकता है। एवं अहिन्दु भी यदि चाहे तो हिन्दु धर्म में प्रवेश पा सकते हैं। यह केवल सुधार की वाणी नहीं थी, जाग्रत हिन्दुत्व का समर नाद था। और सत्य ही, रणारूढ़ हिन्दुत्व के जैसे निर्भीक नेता स्वामी दयानन्द हुए, वैसा और कोई नहीं हुआ।

मुसलमानों में स्वामी जी का यथेष्ट सम्मान

इतिहास का क्रम कुछ ऐसा बना कि स्वामी दयानन्द की गिनती महाराणा प्रताप, शिवाजी और गुरु गोविन्द की सरणी में की जाने लगी। किन्तु, स्वामी दयानन्द मुसलमानों के विरोधी नहीं थे। स्वामी जी का जब स्वर्गवास हुआ तब सुप्रसिद्ध मुस्लिम नेता सर सय्यद अहमद खाँ ने जो समवेदना और शोक प्रकट किया, उससे स्पष्ट प्रतीत होता है कि मुस्लिम जनता के बीच भी स्वामी जी का यथेष्ट आदर था।......

सच पूछिये तो स्वामी जी केवल इस्लाम के आलोचक नहीं थे, वे ईसाइयत और हिन्दुत्व के भी अत्यन्त कड़े आलोचक हुए हैं। सत्यार्थ प्रकाश के त्रयोदश समुल्लास में ईसाई मत की आलोचना है और चतुर्दश में इस्लाम की। ग्यारहवें समुल्लास में बारहवें समुल्लास में तो केवल हिन्दुत्व के ही विभिन्न अंगों की बखियाँ उधेड़ी गयी है और कबीर दादू, नानक, बुद्ध, तथा चार्वाक एवं जैनों और हिन्दुओं के अनेक पूज्य पौराणिक देवताओं में से एक भी बेदाग नहीं छूटा हैं। वल्लभाचार्य और कबीर पर तो स्वामी जी इतने झपटे हैं कि उनकी आलोचना पढ़कर सहनशील लोगों की भी धीरता छूट जाती है। किन्तु, यह सब अवश्यंभावी था। यूरोप के बुद्धिवाद ने भारतवर्ष को इस प्रकार झकझोर डाला था कि हिन्दुत्व के बुद्धिसम्मत रूप को आगे लाये बिना कोई भी सुधारक भारतीय संस्कृति की रक्षा नहीं कर सकता। स्वामी जी ने बुद्धिवाद की कसौटी बनायी और उसे हिन्दुत्व, इस्लाम और ईसाईयत पर निश्छल भाव से लागू कर दिया। परिणाम यह हुआ कि पौराणिक हिन्दुत्व तो इस कसौटी पर खंड, हो ही गया, इस्लाम और ईसाइयत की भी सैकड़ों कमजोरियाँ लोगों के सामने आ गयी।

स्वामी दयानन्द जी विश्व मानवता के नेता

चूँकि ईसाइयत और इस्लाम हिन्दुत्व पर आक्रमण कर रहे थे, इसलिये हिन्दुत्व की ओर से बोलने वाला प्रत्येक व्यक्ति ईसाइयत या इस्लाम अथवा [illegible] का द्रोही समझ लिया गया। किन्तु इस प्रसंग से [illegible] हटने पर स्वामी दयानन्द विश्व-मानवता के नेता [illegible] हैं। उनका उद्देश्य सभी मनुष्यों को उस दिशा [illegible] जाना था, जिसे वे सत्य की दिशा समझते थे। उन्[होंने] सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका में स्वयं लिखा है:—"[illegible] जो सब मतों में सत्य बातें हैं, वे सब में अविरुद्ध है [illegible] से उनका स्वीकार करके जो जो मत मतान्तरों में मि[थ्या] बातें हैं, उन उनका खण्डन किया है। इसमें यह [illegible] अभिप्राय: रखा है कि जब मत मतान्तरों की गुप्त [illegible] प्रकट बुरी बातों का प्रकाश कर विद्वान अविद्वान [illegible] साधारण मनुष्यों के सामने रखा है, जिससे सबसे सब[का] विचार होकर परस्पर प्रेमी होकर एक सत्य मत [illegible] होवें। यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ [illegible] बसता हूँ तथापि जैसे इस देश के मत मतान्तरों [illegible] झूठी बातों का पक्षपात न करके यथातथ्य प्रकाश कर[ता] हूँ वैसे ही, देशस्थ या मतोन्नति वालों के साथ [illegible] बर्त्ता हूँ। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्न[ति] के विषय में बर्त्ता हूँ वैसा विदेशियों के साथ भी त[था] सब सज्जनों को भी बर्त्तना योग्य है। क्योंकि मैं [illegible] जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आजकल [illegible] स्वमत की स्तुति मण्डन और प्रचार करते और दूसरे म[त] की निन्दा, हानि और बन्द करने में तत्पर होते है, [illegible] मैं भी होता परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहर है।" अन्यत्र चौदहवें समुल्लास के अन्त में भी स्वामी जी [ने] कहा है कि "मेरा मन कोई नवीन कल्पना व मत मतान्त[र] चलाने का लेशमात्र भी नहीं है। किन्तु, जो सत्य है उसे मानना मनवाना और जो असत्य है उसे छोड़[ना] छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता [तो] आर्यावर्त्त के प्रचलित मतों में से किसी एक मत [का] आग्रही होता किन्तु मैं आर्यावर्त्त वा अन्य देशों में [जो] अधर्म युक्त चाल चलन है, उनको स्वीकार नहीं करता और जो धर्मयुक्त बातें हैं, उनका त्याग नहीं करता न करना चाहता हूँ, क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म [से] विरुद्ध है।

हिन्दुत्व के निर्मल एवं बुद्धि गम्य स्वरूप को प्रकट करने की आवश्यकता

उन्नीसवीं सदी के हिन्दू-नवोत्थान के इतिहास का पृष्ठ-पृष्ठ बतलाता है कि जब यूरोप वाले भारतवर्ष [में] आये, तब यहां के धर्म और संस्कृति पर रूढ़ि की [पर्तें] जमी हुई थीं एवं यूरोप के मुकाबले में उठने के लि[ये] यह आवश्यक हो गया था कि ये पर्त्तें एकदम उखा[ड़] फेंकी जाय और हिन्दुत्व का वह रूप प्रकट किया जाय जो निर्मल और बुद्धिगम्य हो। स्वामी जी के मत से [वह] हिन्दुत्व वैदिक हिन्दुत्व ही हो सकता था। किन्तु

हिन्दुत्व पौराणिक कल्पनाओं के नीचे दबा हुआ था। उस पर अनेक स्मृतियों की धूल जम गयी थी एवं वेद के बाद से सहस्त्रों वर्षों में हिन्दुओं ने जो रूढ़ियां और अन्धविश्वास अर्जित किये थे, उनके ढूहों के नीचे यह धर्म दबा पड़ा था। राममोहनराय, रानाडे, केशवचन्द्र और तिलक से भिन्न स्वामी दयानन्द की विशेषता यह रही की उन्होंने धीरे-धीर पपड़ियां तोड़ने का काम न करके, उन्हें एक ही चोट से साफ करने का निश्चय किया। परिवर्त्तन जब धीर-धीरे आता है, तब सुधार कहलाता है। किन्तु, वही जब तीव्र वेग से पहुँच जाता है, तब उसे क्रान्ति कहते हैं। दयानन्द के अन्य समकालीन सुधारक केवल सुधारक मात्र थे, किन्तु दयानन्द क्रान्ति के वेग से आये और उन्होंने निश्छल भाव से यह घोषणा कर दी कि हिन्दु-धर्म-ग्रन्थों में केवल वेद ही मान्य है अन्य शास्त्रों और पुराणों की बातें बुद्धि की कसौटी पर कसे बिना मानी नहीं जानी चाहिए। छह शास्त्रों और अठारह पुराणों को उन्होंने एक ही झटके में साफ कर दिया, वेदों में मूर्तिपूजा, अवतारवाद तीर्थों और अनेक पौराणिक अनुष्ठनों का समर्थन नहीं था, अतएव स्वामी जी ने इन सारे कृत्यों को और विश्वासों को गलत घोषित किया।

हिन्दू नवोत्थान अपने पूरे प्रकाश में

वेद को छोड़ कर कोई अन्य धर्म-ग्रन्थ प्रमाण नहीं है इस सत्य का प्रचार करने के लिए स्वामी जी ने सारे देश का दौरा करना आरम्भ किया और जहाँ-जहाँ वे गये, प्राचीन परम्परा के पण्डित और विद्वान उनसे हार मानते गए। संस्कृत भाषा का उन्हें अगाध ज्ञान था। संस्कृत में धारावाहिक रूप से बोलते थे। साथ ही वे प्रचण्ड तार्किक थे। उन्होंने ईसाई और मुस्लिम धर्म-ग्रन्थों का भी भली भांति मंथन किया था। अतएव अकेले ही, उन्होंने तीन तीन मोर्चों पर संघर्ष करना आरम्भ किया। दो मोर्चे तो ईसाइयत और इस्लाम के थे, किन्तु तीसरा मोर्चा सनातन धर्मी हिन्दुओं का था जिनसे जूझने को स्वामी जी को विभिन्न अपमान कुत्सा, कलंक और कष्ट झेलने पड़े। उनके प्रचण्ड शत्रु ईसाई और मुसलमान नहीं, सनातनी हिन्दु ही निकले और कहते हैं, अन्त में, इन्ही हिन्दुओं के षड्यन्त्र से उनका प्राणांत भी हुआ। दयानंद ने बुद्धिवाद की जो मशाल जलायी थी उसका कोई जवाब नहीं था। वे जो कुछ कह रहे थे, उसका उत्तर न तो मुसलमान दे सकते थे, न इसाई, न पुराणों पर पलने वाले हिन्दु पण्डित और विद्वान। हिन्दू नवोत्थान अब पूरे प्रकाश में आ गया था और अनेक समझदार लोग मन ही मन यह अनुभव करने लगे थे कि, सच ही पौराणिक धर्म में कोई सार नहीं है।

आर्य समाज की स्थापना

सन् १८७२ ई० में स्वामी जी कलकत्ते पधारे। वहां देवेन्द्रनाथ ठाकुर और केशवचन्द्र सेन ने उनका बड़ा सत्कार किया। ब्राह्म समाजियों से उनका विचार विमर्श भी हुआ, किन्तु ईसाइयत से प्रभावित ब्राह्म समाजी विद्वान पुनर्जन्म और वेद की प्रामाणिकता के विषय में स्वामी जी से एकमत नहीं हो सके। कहते हैं, कलकत्ते में ही केशवचन्द्र सेन ने स्वामी जी को यह सलाह दी कि यदि आप संस्कृत छोड़कर हिन्दी में बोलना प्रारम्भ करें तो देश का असीम उपकार हो सकता है। तभी से स्वामी जी के व्याख्यानों की भाषा हिन्दी हो गई और हिन्दी प्रान्तों में उन्हें अनगणित अनुयायी मिलने लगे। कलकत्ते से स्वामी जी बम्बई पधारे और वहीं १० अप्रैल सन् १८७५ ई० में उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की। बम्बई में उनके साथ प्रार्थना-समाज वालों ने भी विचार-विमर्श किया किन्तु यह समाज तो ब्राह्म-समाज का ही बम्बई संस्करण था। अतएव, स्वामी जी से इस समाज के लोग भी एकमत नहीं हो सके।

बम्बई से लौट कर स्वामी जी दिल्ली आये। वहां उन्होंने सत्यानुसंधान के लिए ईसाई, मुसलमान और हिन्दू पण्डितों की एक सभा बुलायी। किन्तु दो दिनों के विचार-विमर्श के बाद भी लोग किसी निष्कर्ष पर नहीं आ सके। दिल्ली से स्वामी जी पंजाब गये। पंजाब में उनके प्रति बहुत उत्साह जाग्रत हुआ और सारे प्रान्त में आर्य समाज की शाखायें खुलने लगी। तभी से पंजाब आर्य समाजियों का प्रधान गढ़ रहा है।

स्वामी जी संगमर्मर की मूर्ति से भी अधिक अडिग

जब थियोसाफिस्ट लोग भारत आये, तब थोड़े दिन उन लोगों ने आर्यसमाज से मिलकर काम किया किन्तु थियोसाफिस्ट लोगों की भी बहुत सी बातें स्वामी जी के सिद्धान्तों के विपरीत पड़ती थी। अतएव वे लोग भी आर्यसमाज से अलग हो गये किन्तु, अलग होने पर भी स्वामी जी पर थियोसाफिस्टों की भक्ति ज्यों की त्यों बनी रही। स्वामी जी के देहावसन के बाद मादाम ब्लेवास्की ने लिखा था कि 'जब समूह के के उबलते हुए क्रोध के सामने कोई संगमर्मर की मूर्ति भी स्वामी जी से अधिक अडिग नहीं हो सकती थी। एक बार हमने उन्हें कार्य करते देखा था। उन्होंने अपने सभी विश्वासी अनुयायियों को यह कहकर अलग कर हटा दिया कि तुम्हें हमारी रक्षा करने की कोई आवश्यकता नहीं है भीड़ के सामने वे अकेले ही खड़े हो

गये । लोग उतावले हो रहे थे, शुद्ध सिंह [illegible] सामने [illegible] स्वामी जी पर टूट पड़ने को तैयार थे । किन्तु स्वामी जी की धीरता ज्यों की त्यों बनी रही ।......... यह बिल्कुल सही बात है कि शंकराचार्य के बाद से भारत में कोई भी व्यक्ति ऐसा नहीं हुआ, जो स्वामी जी से बड़ा संस्कृतज्ञ, उनसे बड़ा दार्शनिक, उनसे अधिक तेजस्वी वक्ता तथा कुरीतियों पर टूट पड़ने में उनसे अधिक निर्भिक रहा हो' (रिनासाँ आव् हिंदुज्म) स्वामी जी की मृत्यु के बाद थियोसाफिस्ट अखबार ने उनकी प्रशंसा करते हुए लिखा था कि "उन्होंने जर्जर हिन्दुत्व के गतिहीन ढूह पर भारी बम का प्रहार किया और अपने भाषणों से लोगों के हृदयों में ऋषियों और वेदों के लिए अपरिमित उत्साह की आग जला दी । सारे भारतवर्ष में उनके समान हिन्दी और संस्कृत का वक्ता दूसरा कोई और नहीं था ।

हिन्दू धर्म की दुर्बलताओं का खात्मा और नारियों की मर्यादा में वृद्धि

कहा जाता है जैसे सिख धर्म, सनातन-धर्म का अरबी अनुवाद है वैसे ही, आर्य समाज भी इस्लाम धर्म की टीका है । सिक्ख धर्म के विषय में यह उक्ति कुछ दूर तक सही समझी जा सकती है, किन्तु, आर्य समाज के विषय में यह कहाँ तक सत्य है, यह बताना कठिन हैं । स्वामी जी ने ईश्वर, जीव और प्रकृति, तीनों को अनादि माना है, किन्तु यह तो इस्लाम से अधिक भारतीय योग-दर्शन का मत है । भिन्नता यह है कि स्वामी जी यह नहीं मानते कि भगवान पापियों के पाप को क्षमा करते हैं बल्कि, भगवान की कृपा के सहारे पाप करने की बात के लिए उन्होंने इस्लाम और ईसाइयत की बार-बार आलोचना की है । हां जिन बुराईयों के कारण हिन्दू धर्म का ह्रास हो रहा था तथा अन्य धर्मों के लोग जिन दुर्बलताओं का लाभ उठा कर हिन्दुओं को ईसाई बना रहे थे, उन बुराइयों को स्वामी जी ने अवश्य दूर किया, जिससे हिन्दुओं के सामाजिक संगठन में वही दृढ़ता आ गयी जो इस्लाम में थी । स्वामी जी ने छुआछूत के विचार को अवैदिक बताया और उनके समाज ने सहस्त्रों अन्त्यजों को यज्ञोपवीत देकर उन्हें हिन्दुत्व के भीतर आदर का स्थान दिया । आर्य समाज ने नारियों की मर्यादा में वृद्धि की एवं उनकी शिक्षा संस्कृति का प्रचार करते हुए विधवा-विवाह का भी प्रचलन किया । कन्या शिक्षा और ब्रह्मचर्य का आर्य समाज ने इतना अधिक प्रचार किया कि हिन्दी प्रान्तों में साहित्य के भीतर एक प्रकार की पवित्रतावादी भावना भर गयी और हिन्दी के कवि कामिनी नारी की कल्पना मात्र से घबराने लगे । पुरुष शिक्षित और स्वस्थ हों, नारियाँ शिक्षित और सबला हों, लोग संस्कृत पढ़ें, और हव[न] करें, कोई भी हिन्दू मूर्ति-पूजा का नाम न ले, न पुरो[हितों], देवताओं और पण्डों के फेर में पड़े, ये उपदे[श] उन सभी प्रान्तों में कोई पचास साल तक गूंजते रहे जहाँ आर्य समाज का थोड़ा-बहुत भी प्रचार था ।

आर्य समाज हिन्दुत्व की खड्गधर बांह सा[बित] हुआ । स्वामी जी के समय से लेकर, अभी हाल त[क] इस समाज ने सारे हिन्दी प्रांत को अपने प्रचार [से] औंट डाला । आर्य समाज के प्रभाव में आकर बहुत[से] हिन्दुओं ने मूर्ति पूजा छोड़ दी, बहुतों ने अपने घर[की] देवी देवताओं की प्रतिमाओं को तोड़ कर बाहर फें[क] दिया, बहुतों ने श्राद्ध की पद्धति बन्द कर दी औ[र] बहुतों ने पुरोहितों को अपने यहां से विदा कर दिया । जो विधिवत् आर्य समाजी नहीं बनें, शास्त्रों औ[र] पुराणों में उनका भी विश्वास हिल गया और वे [भी] मन ही मन, शंका करने लगे कि राम और कृष्[ण] ईश्वर हैं या नहीं और पाषाणों की पूजा से मनुष्य [को] कोई लाभ हो सकता है या नहीं । आर्य समाजियों [ने] जगह-जगह अपने उद्देश्यानुकूल विद्यालय स्थापित कि[ये] जिन में संस्कृत की विशेष रूप से पढ़ाई होती है औ[र] जहां के स्नातक स्वामी दयानन्द के उद्देश्यों के मूर्तिमा[न] रूप बन कर बाहर आते हैं । इन विद्यालयों के कन्[या] और युवक ब्रह्मचर्य वास भी करते हैं ।

शुद्धि और संगठन का प्रचार

आगे चल कर आर्य समाज ने शुद्धि और संगठ[न] का भी प्रचार किया । सन् १६२१ ई० में मोप[ला] (मालबार) मुसलमानों ने भयानक विद्रोह किया औ[र] उन्होंने पड़ोस के हिन्दुओं को जबरदस्ती मुसलमान ब[ना] लिया । आर्य समाज ने इस विपत्ति के समय संकट [के] सामने छाती खोली और कोई ढाई हजार भ्रष्ट प[रि]वारों को फिर से हिन्दू बना लिया । इस काण्ड के ब[ाद] आर्य समाजियों ने राजस्थान के मलकाना-राजपूतों [की] शुद्धि आरम्भ की, जिससे मुस्लिम सम्प्रदाय में क्[षोभ] उत्पन्न हुआ और लोग कहने लगे कि आर्य सम[ाज] मुसलमानों से शत्रुता कर रहे हैं । किन्तु शत्रुता [की] इसमें कोई बात नहीं है । जब अन्य धर्म वालों को [यह] अधिकार है कि वे चाहे जितने हिन्दुओं को क्रिश्[चियन] या मुसलमान बना सकते हैं, तब धर्म भ्रष्ट हिन्दुओं [को] फिर से हिन्दू बना लेने में ऐशा क्या अन्याय है ? [कि]न्तु आर्य समाजियों के इस साहस से मुसलमान बहुत [घब]राये एवं भारतीय एकता का संकट कुछ पीछे की [ओर] धुडक गया ।

आर्य समाजियों ने अपने साहस का दूसरा [परि]चय सन् १६३७ ई० में दिया, जब हैद्राबाद की नि[जाम] सरकार ने यह फरमान जारी किया था कि हैदरा[बाद]

राज्य में आर्य समाज का प्रचार नहीं होने दिया जायेगा। इस आज्ञा के विरुद्ध आर्य समाजियों ने सत्याग्रह का शस्त्र निकाला। एकेक करके, कोई बारह हजार आर्य समाजी सत्याग्रही जेल चले गये।

ईसाइयत और इस्लाम के आक्रमणों से हिन्दुत्व की रक्षा करने में जितनी मुसीवतें आर्य समाज ने झेली हैं, उतनी किसी और सस्था ने नहीं। सच पूछिये तो उत्तर भारत में हिन्दुओं को जगा कर उन्हें प्रगतिशील करने का सारा श्रेय आर्य समाज को ही है। पं० चमूपति ने सत्य ही कहा है कि आर्य समाज के जन्म के समय हिन्दू कोरा फुसफुसिया जीव था। उसके मेरुदण्ड की हड्डी थी ही नहीं चाहे कोई उसे गाली दे, उसकी हँसी उडाये, उनके देवताओं की भर्त्सना करे या उसके धर्म पर कीचड़ उछाले, जिसे वह सदियों से मानता आ रहा है फिर भी, इन सारे अपमानों के सामने वह दांत निपोर कर रह जाता था। लोगों को यह उचित शंका हो सकती थी कि यह आदमी भी है या नहीं, इसे आवेश भी चढ़ता है या नहीं अथवा वह गुस्से में आकर प्रतिपक्षी की ओर घूर भी सकता है या नहीं किन्तु आर्य समाज के उदय के बाद, अविचल उदासीनता की यह मनोवृत्ति विदा हो गयी। हिन्दुओं का धर्म एक बार फिर जगमगा उठा है। आज का हिन्दू अपने धर्म की निन्दा सुनकर चुप नहीं रह सकता। जरुरत हुई तो धर्म रक्षार्थ वह अपने प्राण भी दे सकता है (द कलचरल हेरिटेज आव् इन्डिया)

आर्य समाज का प्रचार कैसे हो ?

(ले० श्री भगवत शरण, बी. ए. आनर्स)

आर्य समाज आज भारत का सर्वाधिक पुराना एवं सर्वप्रथम संगठन १२ अप्रैल को बड़े धूम-धाम से अपनी शताब्दी मनाने जा रहा है। परन्तु दुर्भाग्यपूर्ण बात यह है कि सामाजिक क्षेत्र में जितना क्रान्तिकारी परिवर्तन का प्रचार कार्य अब तक होना चाहिए था उतना नहीं हो सका। यह कटु सत्य है और सभी को इसे स्वीकार करना पड़ेगा। "आर्य समाज के विचार का सर्वत्र प्रचार हो रहा है" यह कह कर कोई अपनी प्रशंसा चाहे भले कर ले पर यह कोरी संतोष दिलाने वाली बात है, आज आर्य समाज की स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। इस अवसर पर सभी आर्य नेताओं व कार्यकर्ताओं को इस विषय पर गम्भीरतापूर्वक सोचकर कुछ उपाय निकालना चाहिए। आज आर्य समाज में जोरदार व ओजस्वी लम्बे चौड़े भाषण अवश्य होते हैं, पर इसकी प्रगति रुक गयी है। सच तो यह कि आज आर्य समाज अपने पुराने पुण्य प्रताप से जीवित है, स्वामी दयानन्द का त्याग व बलिदान, स्वामीश्रद्धानन्द का संगठन व परिश्रम, पं० लेखराम की तपस्या व उनका अध्यवसाय, महात्मा हंसराज के बलिदान व आदर्श, लाला लाजपतराय का व्यक्तित्व और कार्य, स्वामी सर्वदानन्द जी का त्याग व प्रचार, भाई परमानन्द व गुरुदत्त विद्यार्थी के आदर्श कार्य तथा कुछ अन्यान्य लेखकों की कृति व अपने पिछले गौरव से आर्य समाज आज जीवित दिख रहा है अन्यथा वास्तव में आज इसकी अवस्था शोचनीय है।

अनेकों नेक आर्य नेताओं तथा विद्वानों से पर्याप्त विचार विमर्श करने के बाद इस सम्बन्ध में हम जिस निष्कर्ष पर पहुंचे है वह निम्नलिखित है।

पहली बात यह है कि आर्य समाज में आज नए नौजवानों का खून का आना बन्द हो गया है विशेषकर शिक्षित वर्ग का यह किसी भी संस्था के लिए अत्यन्त दुर्भाग्य की बात है कि उसकी ओर नवयुवक आकृष्ट न हों। अतः प्रत्येक आर्य समाज के पुराने अधिकारियों को चाहिए कि वे शिक्षित नवयुवकों को अपनी ओर आकृष्ट कर अपने बीच लावें और उन्हें मैदान में आकर कार्य करने का अवसर दे।

दूसरी बात है प्रचारकों के सम्बन्ध में जो कुछ कटु अवश्य है पर एक पत्रकार समाज के डाक्टर के नाते लिखना ही पड़ता है, १० २० ऊँचे दर्जे के प्रचारिकों को छोड़कर अन्य हमारे अधिकांश प्रचारक वास्तव में प्रचार के लिए उतने योग्य नहीं हैं जितना एक प्रचारक को होना चाहिए। यही कारण है कि उनके प्रचार का प्रभाव जनता पर नहीं पड़ता। अतः आर्य समाज की उन्नति के लिए दूसरी सबसे बड़ी आवश्यकता है योग्य प्रचारक तैयार किए जाने की। प्रचारक यथासंभव गृहस्थी न हो बल्कि विद्वान व त्यागी, अवैतनिक सन्यासी हों जिनके केवल भोजन व वस्त्र का व्यय ही समाजों पर पड़े।

तीसरी बात है प्रचार का स्थान आज शहरों, नगरों और कस्बों में तो आर्य समाज के प्रचार हो रहे हैं जहां इस प्रकार की आवश्यकता नहीं है पर देहातों में प्रचार की समुचित व्यवस्था आर्य समाज की ओर से नहीं है जहां वास्तव में प्रचार की आवश्यकता है और जहां की जनता प्रचार के लिए लालायित है। अतः आज शहरों, नगरों व कस्बों की ओर तो कम पर देहातों की ओर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता

है। प्रचारक व उपदेशक कोई एक सड़क से और रास्ते के एक एक ग्राम में दो दो, चार चार रोज प्रचार करते आगे बढ़ते जायं। इससे पैसे भी कम खर्च होंगे और प्रचार भी स्थिर और अधिक होगा।

चौथी बात है प्रचार की शैली व इसके ढंग से सम्बन्ध रखती है। जिस ढंग व शैली से आज आर्य समाज का प्रचार हो रहा है उस ढंग में अब परिवर्तन लाने की आवश्यकता है। गरजकर भाषण देने व ढोल तथा हारमोनियम बजाने से अब लाभ नहीं। अब तो बड़ी बड़ी सभाओं व सम्मेमन करने की अपेक्षा ग्रामों में घुसकर, जनता में मिलकर, उनसे हिलमिलकर, कथा वार्ता, सत्संग, गोष्ठी आदि के रूप में प्रचार करने की अधिक आवश्यकता है। जनमत प्राप्त करने तथा उनके हृदय पर विजय पाने के लिए अब तो उनके पास रह कर शामिल होकर सहयोगात्मक कार्य करने की आवश्यकता है। पांचवी आवश्यकता है अच्छे साहित्यों की। आज आर्य समाज में लेखन व प्रकाशन का कार्य बहुत ही न्यून हो गया है, विशेषकर ऊँचे दर्जे के साहित्य की तो रचना नहीं हो रही है। आर्य समाज के बड़े बड़े नेताओं व विद्वानों तथा प्रतिनिधि सभाओं और प्रकाशन केन्द्रों को इस ओर कोई ठोस पग उठाना चाहिए। प्रत्येक विषय पर बड़ी पुस्तकों के साथ छोटे छोटे सैंकड़ों ट्रैक्ट लिखे जाने चाहिए और लाखों नहीं करोड़ों की संख्या में मुफ्त बांटा जाना चाहिए। हमारे विश्वास है कि कोई आर्य समाज यदि अपने वार्षिकोत्सव पर १००० रुपया न खर्च कर दो दो आने वाली उपयोगी ट्रैक्ट हजारों की संख्या में अपने समाज के क्षेत्र के चारों ओर १० से २० मील की दूरी में बांट दे तो एक वर्ष में ही वह समाज दूना हो जाएगा, धन व सदस्यों, दोनों दृष्टि कोण से। इस प्रकार पांच वर्ष तक करते रहें चारो ओर आर्य समाज फैल जाएगा। और ... पर ग्रामीण जनता भी आएगी।

छठी बात कार्यक्रम से सम्बन्ध रखने वाली आर्य समाज के पास लोकोपयोगी समाजोद्धारक ... क्रमों की कमी नहीं है। शुद्धि हरिजनोद्धार, दलितो... द्धार, जातिभेद निवारण, कुरीति व कुप्रथा निवारण, ईसाई प्रचार निरोध, चरित्रिक दस्ती उन्नति, गुरुकुल शिक्षा आदि अनेकों कार्यक्रम हैं। इन में से सब ... थोड़ा २ बल देने की अपेक्षा किसी एक या दो ... क्रमों पर ही यदि पूरा बल दिया जाय तो समाज ... प्रचार उपयोगी व स्थायी होगा। अतः एक कार्य ... लेकर उसमें मिल पड़ने की आवश्यकता है। पांच ... तक एक कार्यक्रम को पूरा करके दूसरा कार्यक्रम ... नाया जाए।

सातवीं बात व्यवस्था की है आर्य समाज ... अधिकारी अपने संगठन की व्यवस्था को अब इस प्र... से बना लें कि प्रचार की उपरोक्त ढंग से उप... सफलतापूर्वक चलाया जा सके और इसमें कोई ... न हो। प्रतिनिधि सभाओं से इस विषय का वि... सम्बन्ध है।

अ ठ ी बात है स्पिरिट की उत्साह, लगन, ... व मिशन ी भावना से जिम्मेदारी योग्यतापूर्ण ढ... ठीक समय पर सुन्दर व प्रभावशाली रूप में सभी ... होते रहे, ऐसी व्यवस्था होनी चाहिए। शिक्षितों ... बीच नए सदस्य बनाने का आन्दोलन सदा चलता ... इसमें हर प्रकार के व्यक्ति आवेंगे जिन्हें अपने सत्सं... लाकर अपने प्रभाव से अपने अनुकूल व योग्य बना... हमारा काम होना चाहिए ताकि पर्याप्त संख्या में का... कर्त्ता सदा उपलब्ध रहें।

(पृष्ठ १४ का शेषांश)

हैं। अतः छन्द शक्ति के यांत्रिक विज्ञान के अन्वेषण द्वारा "सुपर्णोसि गरुत्मात् दिवंगच्छ" (यजु० अ० १२ म०) "तेनवयंगमेमबध्नस्य विष्टपं स्वोरुहाना अधिनाक मुनमम्" (यजु० अ० १८-५१) तथा ताभ्यांपनेमसुकृतासुलोकं यत्र ऋषयोजामुः प्रथमजाः पुराणाः (यजु० अ० १८ म० ५२) इत्यादि से प्रेरणा प्राप्त कर गमन के साधन यायानों का निर्माण कर सकते हैं जिनके लिये वेद ने—'त्रिवृत्त शिरं गायत्रं चक्षु: बृहदथन्तरेपक्षौ, छन्दान्स्यंगानि, हंजूंषिनाम सामते तनूर्वामदेव्यं यज्ञा यज्ञियंपुच्छं विष्ण्या शश्र: सुपर्णोसिमरुत्मान् दिवगच्छ स्वः पत"। (यजु० अ० १४ म० १८) के अनुसार या इसके आधार पर छन्दस् यन्त्रों का जो अनुसंधान कार्य हो सकता है वह यन्त्र युग में ऐसा मौलिक परिवर्तन कर सकता है कि बिना पेट्रोल आदि ईधन की सहायता से ऐसी कार ३ वर्ष के परीक्षण में तैयार हो सकती जो स्वल्प मूल्य में सर्व साधारण के लिए विक्री ... प्रस्तुत हो सके।

यन्त्र युग में वैदिक छन्दस्-शक्ति की यह वि... संसार को वेदों के अवगाहन के बलात् प्रेरणा ... वाली होगी। हमें प्रारम्भ में अपना रूढ़िवादी दृष्टि... बदलना होगा तभी हम छन्दस्-शक्ति और उसके ... यन्त्र विज्ञान के निर्माण में सफलता प्राप्त कर ... हैं। इसी प्रकार—

"यस्मिनृचः सामयजूंषि यस्मिन्प्रतिष्ठिता... भाविवाराः" (यजु० अ० ३४ म. ५) तथा "येने... भुवनं भविष्यत्परिगृहीतं" (यजु० अ० ३४ म० ३) ... पाठ हमें बड़े प्रेम से कर लेते हैं। "ज्योतिषां ज्यो... (यजु. अ. ३४ म. १) पर बड़ी बड़ी व्याख्या... डालते हैं। परन्तु क्या हम इसको प्रत्यक्ष करने के ...

प्राण विद्या के अनुष्ठान के निमित्त "योगांगानुष्ठादशुदिक्षये ज्ञानदीप्तिराविवेक ख्याते" (योग पाद २ सूत्र २८) से प्रेरणा प्राप्त कर "ततः क्षीयते प्रकाशविरणाम्" (योग पाद २ सूत्र ५२) की स्थिति प्राप्त करने के लिए वाह्याभ्यन्तरविषयाक्षेपी चतुर्थः)यो. पाद २ सूत्र ५१) से चतुर्थ प्राणायाम व अन्य प्राणायामों द्वारा मल विक्षेप आवरणों से रहित हो कर समाधि की भूमि को प्राप्त करने व कराने का अनुष्ठान करते हुये विश्व को इस दिशा में अग्रसर नहीं करा सकते।

यदि इस प्राण विद्या के अनुष्ठान और शिक्षण में भी आर्य समाज अग्रसर हो सके तो विश्व को आध्यात्मिक एवं शांति का संदेश देकर प्रभु की ओर भी अग्रसर करा सकेगा और आर्यसमाज विश्व का आध्यात्मिक नेता एवं प्रेरणा देने वाला बन सकता है।

विश्व चमत्कार को नमस्कार करता है। उसकी प्रतिष्ठा करता है और उसको अपना आदर्श व ध्येय बना लेता है अतः यदि हम भी अपने वैदिक विज्ञान के प्रभुत्व को विश्व में स्थापित कर दें तो विश्व भी वेदों की ओर आ सकता है तथा वैदिक सभ्यता की ओर भी अग्रसर हो सकता है। अन्यथा वेद का आर्यों एवं आर्य संस्थाओं से भी लोप हो जायगा और वेद केवल पुस्तकालयों में जीर्णशीर्ण दशा में तिरस्कृत ही पड़े रहेंगे।

इसलिये मैं बारम्बार निवेदन करता हूं कि वैदिक अनुसंधानशाला की नितांत आवश्यकता है जिस में वैदिक दृष्टिकोण से ही वैदिक विज्ञान एवं वेद की विविध विद्याओं के अनुसंधान का कार्य पूर्ण स्वच्छन्दता से हो सके और हम अपनी प्रतिज्ञा "वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है" को विश्व के सामने सत्य रूप में प्रकट कर सके।

इस कार्य के लिये हमें भारत सरकार का मुंह नहीं ताकना होगा। अभी वेद के विज्ञान का क. ख. ग. भी आरम्भ करना है और उसके परिणाम को जनता के सम्मुख रखना होगा। तभी सरकार भी इसमें सहायता करेगी अन्यथा नहीं। अतः सर्वप्रथम आर्यसंस्थाओं, गुरुकुलों, डी. ए. वी. कालेजों, प्रांतीय सभाओं एवं सार्वदेशिक सभा को यह काम हाथ में लेना पड़ेगा और हमारे धनी मानी दानियों तथा आर्य जनता को भी इसमें धनादि से पूर्ण सहायता करनी होगी जिससे अनेक विद्वान निश्चिन्तता से वेद की सत्य विद्याओं तथा वैदिक विज्ञान के अनुसंधान में निश्चिन्तता से संलग्न रह कर विश्व के लिये वैदिक विज्ञान एवं विद्याओं की भेंट दे सके।

(शेषांश पृष्ठ १२ का)

ही तीन हमारे दर्शनों में प्रकृति के तीन गुण हैं। ये कहे जाते हैं गुण, पर हैं द्रव्य और गुण दोनों ही। विज्ञान ने ईश्वर को ठुकराया परन्तु जगत् उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय की समस्या को वह अपने अनीश्वरवाद से सुलझाने में असमर्थ रहा। विज्ञान में एक महत्वपूर्ण नियम पाया जाता है Second law of Thermodynamics। इसका प्रतिपाद्य विषय यह है कि शक्ति का प्रवाह ऊँचे केन्द्र से नीचे केन्द्र की ओर होता है। प्रकृति के पदार्थों में यही नियम देखा जाता है। शक्ति का प्रवाह अधोमुख अर्थात् प्रलय की ओर है। इस बात कों यह नियम दिखलाता है। प्रलय का तात्पर्य है समता अथवा साम्यावस्था (Ebuilibrated state) जहाँ पर शक्ति के हस्तान्तरित न होने से कोई कार्य नहीं हो सकता। इस प्रकार शक्ति समीभूत होकर जब साम्यावस्था में प्रलय को प्राप्त हो जावेगी, तब पुनः शक्ति प्रवाह कैसे चलेगा और कैसे जगत् का कार्य प्रारम्भ होगा यह एक समस्या है, जिसका समाधान विज्ञान के पास नहीं है। वेद इसका समाधान करता है कि यह शक्ति पुनः परमेश्वर के "अभीद्धतप" से प्रकृति में आवेगी ऋग्वेद १०।१९० में आद्य मन्त्र—"ऋतञ्च सत्यञ्चाभीद्धातपसोऽध्यजायत" इसी विषय का प्रतिपादक है। इस प्रकार देखा गया कि वेद दार्शनिक दृष्टि में ओत प्रोत हैं। वास्तव में ये ही दार्शनिक विचारधारा के मूल हैं।

ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

११ मार्च,१९७५। आर्य युवक परिषद् के तत्वावधान में आर्य समाज मन्दिर थानेसर में ऋषि बोधोत्सव आचार्य देवव्रत जी की अध्यक्षता में धूमधाम से मनाया गया। इस उपलक्ष में परिषद् की ओर से भाषण प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया। प्रतियोगिता में श्री मोहनलाल सारस्वत, श्री रोहिताश्व एवं श्री जयप्रकाश क्रमशः प्रथम, द्वितीय व तृतीय रहे। [illegible] आज राष्ट्र को ठीक दिशा दे सकता है अतः हमें आर्य समाज के सिद्धान्तों का अधिकाधिक प्रचार करना चाहिए। श्री बाबूराम जी ने युवकों को कहा कि वे अन्धविश्वास के विरुद्ध अपना अभियान शुरू करें ताकि लोगों को ठीक दिशा मिल सके। आचार्य देवव्रत जी [illegible] भाषण में युवकों को

भारत की औद्योगिक उन्नति की दिशा में—

महर्षि दयानन्द की दूरदर्शिता

० कृष्णदत्त एम० ए०

महर्षि दयानन्द सरस्वती को प्रायः केवल धर्म प्रचारक या समाज सुधारक ही माना जाता है। निस्सन्देह स्वामी जी महाराज ने वेद प्रतिपादित धर्म का प्रचार किया और उन्होंने अनेक सामाजिक त्रुटियों की ओर संकेत करके उन्हें दूर करने के लिए आर्य समाज को प्रेरित और प्रोत्साहित किया। किन्तु स्वामी जी केवल इतना ही नहीं करना चाहते थे। वे इससे भी कहीं अधिक और इससे भी कहीं भिन्न कार्य करने के इच्छुक थे और अपनी उन्हीं महान् योजनाओं की परिपूर्ति के लिए आर्य समाज की स्थापना सन् १८७५ ई० में की थी। आर्य समाज के प्रचार से पूर्व ही वे सत्यार्थ प्रकाश नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ की रचना कर चुके थे। इसको एक प्रकार से आर्य समाज का 'मैनिफेस्टो' अर्थात् घोषणा पत्र कह सकते हैं। महर्षि ने आर्य समाज की स्थापना अनेक आशाओं को लेकर की थी। सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में महर्षि ने लिखा है' "जैसा आर्य समाज आर्यावर्त्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता।" इससे स्पष्ट है कि महर्षि ने भारत की सर्वांगीण तथा समुचित उन्नति को लक्ष्य में रख कर ही आर्य समाज की स्थापना की थी। इसलिए स्वामी जी महाराज ने सत्यार्थ प्रकाश में, मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु पर्यंत जिन—जिन कार्यों को करना उचित हैं, उन सभी के बारे में अपने विचार प्रकट किये हैं। वैयक्तिक कर्त्तव्य, धार्मिक आचार, सामाजिक दायित्व, राजनैतिक एवं आर्थिक, व्यवहार, तात्पर्य यह है कि जीवन के प्रत्येक अंग और क्षेत्र के बारे में उन्होंने एक आदर्श हमारे सामने प्रस्तुत किया है और यह सब कुछ वे आर्य समाज द्वारा ही करवाना चाहते थे।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जहां यह चाहते थे कि यहाँ के लोगों में धार्मिक शिक्षा का प्रचार हो, वहां वे यह भी चाहते थें कि भारत के लोग नाना विषयों को सीखें तथा राजनैनिक, सैनिक, व्यावसायिक, संगीत नृत्य आदि शिक्षाओं से विभूषित हो - (स. प्र. तृतीय समुल्लास) उसी प्रकार महर्षि ने यह भी चाहा था कि भारतीयों की औद्योगिक शिक्षा का भी उचित प्रबन्ध हो। उन्होंने जब यह देखा कि भारत की उर्वरा तथा शस्यशालिनी रत्न गर्भा भूमि की गोदी में उसकी अपनी प्रिय संतान भूखों मर रही ह तो स्वा जी बहुत दुखी हुए। वे इस परिणाम पर पहुँचे थे कि भारत की सुजला -सुफला भूमि में भारतीयों के अका पीड़ित होने के कारण यहां पर उद्योग धंधों का अभा था। अंग्रेजों ने जान बूझ कर यहा के उद्योगों विनष्ट कर दिया था। वे नहीं चाहते थे कि भारत औद्योगिक शिक्षा का विकास हो। महर्षि दयान चाहते थे कि भारतीय युवकों को भिन्न–भिन्न उद्यो की शिक्षा दी जाए। इंगलैन्ड से इसकी आशा ही न की जा सकती थी। यूरोप में उन दिनों भी जर्म औद्योगिक दृष्टि से बहुत उन्नत था। महर्षि दया का यह भी एक चमत्कार ही था कि किसी विदे भाषा के न जानते हुए भी उन्होंने विदेशों में अ अनेक भक्त और मित्र बना लिए थे। उन्हीं में से जं ए. बीस नामक एक जर्मन सज्जन थे। महर्षि इ बीस महोदय की मार्फत भारतीयों की औद्योगिक शि में लग गये।

सन् १८८० ई० में उन्होंने बीस महोदय अनेक पत्र लिखे। स्वामी जी ने उन पर इस बात जोर डाला कि भारत के छात्रों को विभिन्न औद्योगि शिक्षा दिलाने में वे उनकी सहायता करें। स्वामी के पत्र के उत्तर में २९ जून १८८० में लिखे पत्र बीस महोदय ने यह प्रकट किया, "जो-विषय आ विद्यार्थियों के प्रयोजन के लिए सबसे अधिक उपयो और आवश्यक प्रतीत होते हैं वे सब हम उन्हें सि देंगे। साधारण विद्यार्थियों की अपेक्षा, जिनके सा ऐसा कोई विशेष उद्देश्य नहीं होता, हम आ विद्यार्थियों की विशेष शिक्षा पर अधिक ध्यान देंगे। हम ऐसे प्रबन्ध करने के लिए उद्यत हैं जो आपके वासियों के लिए और हमारे लिए संतोष जनक हों।

ऐसा प्रतीत होता है कि स्वामी जी महारा यूरोपीय देशों के तत्कालीन लोगों के व्यवहार से अनुभव किया था कि वे लोग भारत को उचित उन्नति करते हुए नहीं देखना चाहते। सम्ब स्वामी जी महाराज ने श्री बीस महोदय को इस न्ध में लिखा भी होगा कि उनके भेजे गये वि महान् उद्देश्य को लेकर भेजे जा रहे हैं, अतः शिक्षा का बड़ा ही अच्छा प्रबन्ध होना चाहिए। पत्र के उत्तर में ३० जून १८८० में बीस महो बहुत बड़ा पत्र लिखा और उसमें स्पष्ट किया, "

पत्र का उद्देश्य आपको इस बात की सूचना देना है कि मैंने आपके नवयुवक देश-बन्धुओं को ऐसे स्थानों में भेजने के विषय में भी और अधिक पूछताछ की। वे विविध कलायें और व्यवसाय अत्यन्त क्रियात्मक (Practical) और वाचनिक (Theoretical) रीति से सीख सकते हैं। हम आपके आर्य विद्यार्थियों को सारी उपयुक्त कलायें और वस्तुयें सिखलाने के लिए अपनी रक्षा और देखरेख में लेने के लिए बड़े उत्सुक हैं।- मैं अपने नवयुवक भारतीय मित्रों की देखरेख और विकास पर पूर्ण ध्यान दूंगा। उनको मैं किसी दूसरे की देखरेख और रक्षा में कदापि नहीं छोड़ूंगा। इसके लिए चाहे मुझे अपने यूरोपीय विद्यार्थियों की रक्षा और शिक्षा के निमित्त दूसरों को भी नियुक्त करना पड़े।" बीस महोदय, ने इसी पत्र में एक बात विशेष रूप से लिखी है, जिससे महर्षि दयानन्द के मन में भारतीयों के प्रति यूरोपीय देशों के लिए जो आशंका उठी थी उसका समाधान है। वे स्वामी जी को लिखते हैं 'आपके पुत्र हमसे भौतिक कलायें और अन्य विद्यायें तथा शिल्प-कर्म सहर्ष सीख सकते हैं। हमें आपकी उन्नति का डाह नहीं हैं।

इसके अतिरिक्त महर्षि दयानन्द ने एक विशेष बात यह की कि इस कार्य के लिए धनवानों को भेजने की अपेक्षा निर्धनों को भेजना चाहा जिसके लिए सम्भव है उन्होंने बीस महोदय को लिखा था और उनसे व्यय आदि के लिए कुछ सहुलियत भी मांगी थी। उसके उत्तर में बीस महोदह ने स्वामी जी को लिखा- 'मैं निर्धन माता पिताओं के पुत्र लेने और उन्हें अपने सर्वोत्तम पुरुषों से शिक्षा दिलाने के लिए समुद्यत हूँ। कालान्तर में जब हमारी आय इस योग्य होगी, जब आप कहेंगे, तो आपके कुछ दरिद्र विद्यार्थी ले लूंगा। उनको बहुत थोड़े शुल्क पर अथवा बिना शुल्क शिक्षा दूंगा और उनकी उन्नति के लिए सहायता दूंगा।"

पत्रों के इन उद्धरणों से प्रकट होता है कि महर्षि दयानन्द केवल कह देने अथवा लिख देने भर को देश कल्याण नहीं समझते थे। उन्होंने जो लिखा और जो कहा उस पर आचरण किया और दूसरों को आचरण करने की प्रेरणा दी। उन्होंने बीस महोदय के पत्र व्यवहार के उपरांत लाहौर तथा अन्य कुछ नगरों को अपने कुछ धनी भक्तों के पास धन के लिए पत्र भी भेजे। धन संग्रह का कार्य चल ही रहा था। यह कार्य छोटा तो नहीं था क्योंकि स्वामी जी महाराज एक-दो छात्रों को भेज कर संतोष करना नहीं चाहते थे। वे ऐसे छात्रों के दल भेजना चाहते थे जिसके लिए विपुल धन की आवश्यकता थी। सरकार से वे इसमें सहायता की आशा ही नहीं कर सकते थे। किन्तु देश का दुर्भाग्य कि सन् १८८३ ई० में ही विष देकर उनकी इहलोक लीला समाप्त कर दी गई और इस प्रकार अनेक महान् कार्यों की भांति यह कार्य भी अपूर्ण रह गया। किन्तु महर्षि के ये प्रयत्न उनकी दूरदर्शिता को सिद्ध करते हैं। हम इनसे यह जान सकते हैं कि महर्षि देश की सर्वांगीण उन्नति में भिन्न-भिन्न बातों को बढ़ावा देना चाहते थे और उनके सम्मुख कितनी महान् योजनाएं थीं। ये योजनाएं पूर्ण नहीं हुई कुछ तो, प्रारम्भ भी न हो सकीं, किन्तु ये निश्चित रूप से महर्षि की महानता तथा दूरदर्शिता की सूचक हैं। ❁

(शेषांश पृष्ठ ६ का)

बाल विवाह के सम्बंध में सहस्त्रों कठिनाइयों एवं बाधाओं के बावजूद आर्य समाज ने प्रगतिशील कदम उठा कर इस कुरीति के विरुद्ध अभियान छेड़ा था। धीरे-धीरे विवाह योग्य आयु का स्तर ऊँचा होता गया और बहुत छोटी आयु के विवाह लगभग बन्द होने लगे। सेन्ट्रल असेम्बली में राजस्थान के प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता दीवान बहादुर हरविलास जी शारदा ने तो इसके लिए कानून भी बनवाया था। आर्य समाज का कहना था कि बाल्यावस्था में विवाह से जितनी हानि पुरुष की होती है, उससे अधिक स्त्री की होती है। जैसे कच्चे खेत को काट लेने से अन्न नष्ट हो जाता है, कच्चे फल और ईंख में मिठास नहीं होती, ठीक उसी तरह छोटी आयु में जो अपनी सन्तानों का विवाह कर देते है उनका वंश बिगड़ जाता है। बाल विवाह की तरह वृद्ध विवाह को भी हेय दृष्टि से देखा जाने लगा और लोग वृद्ध के लिए कुमारी कन्या से विवाह को त्याज्य मानने लगे।

आर्य समाज ने बहुविवाह का भी जम कर विरोध किया और एक विवाह के आदर्श सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। यही नहीं आर्य समाज ने स्त्रियों में जागृति के लिए यह सन्देश भी दिया कि विवाह के लिए केवल माता-पिता की अनुमति ही पर्याप्त नहीं बल्कि वर-कन्या की अनुमति को प्राथमिक मान्यता दी जानी चाहिए।

परिवार में नारी की प्रतिष्ठा के विषय में स्वामी जी पूर्णतया मनु से सहमत थे कि 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवताः' उन्होंने जननी का स्थान सर्वोपरि मान कर नारी के गौरव को सदा के लिए अक्षुण्ण बना दिया।

दहेज की अग्नि से दग्ध समाज को आर्य समाज ने शीतल छींटे दिये और दहेज के परिणामों की ओर

समाज का ध्यान आकर्षित किया। बिना दहेज के गरीब घरों की जिन कन्याओं के हाथ पीले नहीं हो पाते थे उन्हें आर्य समाज का आन्दोलन बरदान बन कर आया।

इस प्रकार आर्य समाज ने परम्परा को संशोधित रूप दिया और इस गलत धारणा को निर्मूल कर दिया कि भारतीय धर्म और संस्कृति में नारी के स्वतन्त्र विकास और गौरव के लिए कोई स्थान नहीं है। स्वामी जी ने महिलाओं की मर्यादा और शालीनता की सुरक्षा रखते हुए उसकी मुक्ति और विकास का मार्ग प्रशस्त किया। स्मरणीय है कि दयानन्द जी ने जिस युग में नारी जागरण का शखनाद किया था उस समय हमारा समाज विकृत और पतनोन्मुख था। भारत राजनैतिक दासता के कारागार में बन्दी था। हम स्वयं अपने भाग्य विधाता नहीं थे। किन्तु ... के अन्धेरे को चीर कर स्वामी जी का उज्ज्वल ... अरुणोदय बन कर भारतीय आकाश पर छा ... स्वामी जी की कल्पना एक विवेकशील और ... समाज की कल्पना थी, एक ऐसे समाज की कल्पना ... जो अपने अतीत के गौरव को आत्मसात कर ... और उसी के अनुरूप एक नये भविष्य का निर्माण ... सके। आज जबकि हम स्वतन्त्र और स्वाधीन हैं ... समाज की सरचना में संलग्न हैं और नारी स्वतन्त्र ... आधारभूत सिद्धान्त को स्वीकार कर चुके हैं, एक ... फिर वर्तमान परिप्रेक्ष्य में स्वामी दयानन्द जी के ... की संजीवनी शक्ति को सामाजिक जीवन में ... करने की अपेक्षा है, नारी जागरण के मर्म की ... के साथ व्याख्या की जरूरत है।

दर्शन और अध्यात्म

आचार्य उदयवीर शास्त्री, गाजियाबाद

संसार के दर्शनशास्त्र में 'अध्यात्म' और 'अधिभूत' ये दो पद अत्यन्त प्रसिद्ध हैं। यथा प्रसंग इनका प्रर्याप्त प्रयोग सभी दर्शनों में देखा जाता है। ज्ञातव्य है-इन का अभिप्राय क्या है ? साधारणरूप से आत्मा के विषय में जो कहा जाय वह अध्यात्म और भूतों के विषय में जो कुछ कहा जाय वह अधिभूत समझा जाता है। दर्शन में आत्मा और 'भूत' पद यथाक्रम चेतन और जड़तत्व के प्रतीक हैं। समस्त दर्शनों में अपने विभिन्न प्रकारों के साथ इन्हीं दो तत्वों का विवेचन प्रस्तुत किया जाता है। सव दर्शनों का ध्यान रखते हुए इस कथन में कोई बाधा नहीं, कि सृष्टि अथवा जगत् की रचना इन्हीं दो रूपों में होती है।

आदिं सर्गकाल में जब मूल तत्व परिणत होने लगते हैं, तब उनका सर्वप्रथम क्या होता है ? यह जिज्ञासा प्रत्येक तत्व-खोजी को उत्सुक बनाये रखती है। दर्शनों के वैदिक अवैदिक विभाग के अनुसार इस विचार को दो श्रेणियों में रक्खा जा सकता है। वैदिक दर्शनों में भारतीय न्याय आदि छः दर्शन समझे जाते हैं। अवैदिक दर्शन हैं—चार्वाक, जैन, बौद्ध एवं वर्त्तमान प्राचीन व नवीन यूरोपीय दर्शन। इन दर्शनों के अध्यात्म सम्बन्धी विचारों का अति संक्षेप से दिग्दर्शन कीजिए।

वैदिक दर्शन

वैदिक दर्शन—वैदिक दर्शनों में न्याय-वैशेषिक अधिभूत जगत् के उपादान कारण चार प्रकार के परमाणु बताते हैं—पृथिवी, जल, तेज, वायु के मूलभूत परम सूक्ष्म कण। ये स्वयं किसी कारण से उत्पन्न नहीं होते है, संसार में जो कुछ उत्पन्न होता है, वह इन्हीं का विकार है। जो इनसे उत्पन्न नहीं हुआ, कभी उत्पन्न नहीं होता, वह अविकारी तत्व है, ... द्रव्य गुण आदि इसी कोटि में आते हैं। आत्मा ऐसा तत्व है। इन दर्शनों में एकमात्र भौतिक सृष्टि वर्णन है, आध्यात्मिक का नहीं। इन्द्रियों की रचना यहाँ भौतिक सृष्टि के अन्तर्गत माना है, अन्तः ... मन को अविकारी नित्य स्वीकार किया है। इस ... दर्शनों का प्रतिपाद्य विषय एक नियत सीमा तक ... आधिभौतिक जगत् का विवरण प्रस्तुत करता है। ... परमात्म रूप में चेतन तत्व का साधारण विवेचन ...

मीमांसा—जगत् सृष्टि के सम्बन्ध में कोई ... रण प्रस्तुत नहीं करता। जैमिनी ने इस विषय ... अपने दर्शन का प्रतिपाद्य विषय नहीं बनाया। ... मीमांसा दर्शन की दृष्टि में किसी आद्य कार्य का ... नहीं उठता। आत्मतत्व को नित्य अविकारी स्वी... किया गया है।

सांख्य विचार के अनुसार अध्यात्म में ज्ञाता ... ज्ञान-साधनों का समावेश है। 'अध्यात्म' पद का जो ... प्रकट किया गया है, वह इस सब को लेकर पूर्ण ... है। न्याय-वैशेषिक में केवल अधिभूत सृष्टि का ... इसी आधार पर है, कि वहाँ ज्ञान साधनों को अ... के अन्तर्गत नहीं गिना। आत्मा और मन नित्य ... है, आत्मा ज्ञाता है और मन आन्तर ज्ञान-साधन ... बाह्यज्ञान साधन इन्द्रियाँ भौतिक हैं, उनका ... सृष्टि में समावेश है, वहां अध्यात्म सृष्टि के वर्णन ... अवकाश ही नहीं रहता। अन्य सब दर्शनों में ...

किसी रूप से इसका वर्णन किया गया है, चाहे कहीं ज्ञाता का भी सर्ग माना गया हो, या कहीं केवल ज्ञान साधनों का। अधिभूत की सृष्टि तो अल्पांश या सर्वांश में सब दर्शनों का प्रतिपाद्य विषय है।

सांख्य 'अध्यात्म' और 'अधिभूत' इन दो रूपों में सृष्टि का वर्णन करता है। समस्त दर्शनों की प्रवृत्ति के आधार पर 'अध्यात्म' पद से ज्ञाता और ज्ञान साधनों का ग्रहण होना चाहिए, यह अभी कहा है। ज्ञाता भोक्ता आत्मा को वैदिक दर्शन अपरिणामी एवं अत्रिगुणात्मक तत्व स्वीकार करता है। केवल मूल उपादान त्रिगुण, जगत् के रूप में परिणत हुआ करते हैं। उनके साथ आत्मा सदा एकरूप बना रहता है, इसलिए उसकी सृष्टि का प्रश्न नहीं उठता। इसलिए सांख्य 'अध्यात्म' की रचना में ज्ञान साधनों अथवा मात्र साधनों का समावेश करता है। आत्मा के ज्ञान एवं कार्य जिन साधनों से सम्पन्न होते हैं और जो समस्त सर्गकाल में आत्मा के साथ निरन्तर सहयोग बनाये रखते हैं; अथवा आत्मज्ञान होने तक जिनका सहयोग अनिवार्य रूप से बना रहता है, वे तत्व अध्यात्म और शेष अधिभूत सृष्टि में गिने गये हैं। इस प्रकार सांख्य में वर्णित तेरह करण अध्यात्म सृष्टि में तथा तन्मात्र और स्थूलभूत अधिभूत सृष्टि में आते हैं।

वेदान्त दर्शन में अध्यात्म और अधिभूत दोनों प्रकार की सृष्टि का संकेत मिलता है। पर इस प्रकार के कोई निश्चित विवेचन उपलब्ध नहीं होते जहाँ इनके पूर्वापर क्रम का निर्धारण किया गया हो। वेदान्त शंकर भाष्य के विभिन्न स्थलों [१।१।२॥१।१।२२॥-१।३।४६] में कतिपय ऐसे संकेत उपलब्ध होते हैं, जहां ब्रह्म से भूत सृष्टि का प्रसंगवश वर्णन किया गया है। तैत्तिरीय उपनिषद् [२।१—७] के आधार पर आचार्य शंकर ने आत्मा (ब्रह्म) से आकाश, उससे वायु, वायु से तेज, तेज से जल तथा जल से पृथ्वी की उत्पत्ति का निर्णय किया है। इस विषय का वर्णन वेदान्त दर्शन द्वितीयाध्याय के तृतीय पाद के प्रारम्भ में विस्तार के साथ किया गया है। यह सब अधिभूत सृष्टि है। अध्यात्म सृष्टि के विचार से मन इन्द्रिय आदि कारणों की उत्पत्ति का वर्णन आचार्य शंकर ने वेदान्त दर्शन [२।३।१५] के भाष्य में संक्षेप से किया है। इन प्रसंगों में अध्यात्म अधिभूत का विभाजन चाहे जैसे किया गया हो, पर दोनों प्रकार की सृष्टि के वर्णन में वेदान्त का कोई प्रातिकल्य नहीं है।

अवैदिक दर्शनों में चार्वाक

अवैदिक दर्शनों में चार्वाक दर्शन की जगत् के मूल उपादान और उसकी उत्पत्ति के विषय में न्याय वैशेषिक से पर्याप्त समानता है। इस दर्शन का दूसरा नाम सम्भवतः लोकायत दर्शन इसीलिये है, कि इसका विकास व विस्तार दृगोचर जगत् को समस्त विचारों का पूर्ण आधार मानकर हुआ है। यह दर्शन इन्द्रियगोचर पृथ्वी, जल, तेज वायु चार भूतों के मूलभूत चार प्रकार के परमाणुओं के अतिरिक्त किसी प्रकार की स्वतन्त्र चेतनसत्ता को स्वीकार नहीं करता। ये अचेतन तत्व किसी विशेष अवस्था में आकर- जो उन तत्वों के स्वाभाविक परिवर्तनों के कारण उपस्थित होती है-एक ऐसे स्वरूप को ग्रहण कर लेते हैं, जिसमें जड़ पदार्थों से कुछ विलक्षण स्थिति का अनुभव किया जाता है; तत्व की उस स्थिति को 'चेतन' कहने लगते हैं। नियतकाल के अनन्तर यह स्थिति परिवर्तित होकर पुनः अपनी जड़ अवस्था में चली जाती है। लोकायतदर्शन की यह विचारधारा–जड़ का चेतन में और चेतन का जड़ में परिवर्तित हो जाना–वर्तमान पाश्चात्य आधिभौतिक विज्ञान व दर्शन के साथ अत्यधिक समानता रखती है। इससे स्पष्ट है, लोकायतदर्शन अध्यात्म और अधिभूत दोनों प्रकार की सृष्टि का उपादान उन्हीं चार प्रकार के परमाणुतत्वों को मानता है।

जैन दर्शन

जैन दर्शन में भी जगत् के मूल उपादान चार प्रकार के परमाणु स्वीकार किये हैं। प्राणियों के कर्मानुसार जगद्रचना में ये कारण हैं। समस्त भूत-भौतिक जड़ जगत् इनका विकार है। इन्द्रिय आदि कारणों को आदि के समान इस दर्शन में भी भौतिक माना गया है। चेतन आत्म तत्व इन सबसे अतिरिक्त है। जैसे भारतीय अन्य दर्शनों की प्रवृत्ति मोक्ष प्राप्ति के साधनों को वर्णन करने की भावना से तत्व विवेचन के लिए है, यह बात पूर्ण रूप से जैन दर्शन पर भी लागू है। इस दर्शन में मोक्ष प्राप्ति के तीन साधन बताये गए हैं-सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान, सम्यक् चारित्र्य,[तत्वार्थसूत्र १।१]।

इस प्रकार तत्व और आचार विषयक विवेचन जैनदर्शन में जिस आरभटी के साथ किया गया है, वह दर्शन की अध्यात्म और अधिभूत के रूप में मीमांसा पद्धति को स्पष्ट करता है। जैन दर्शन की अर्थ विवेचन प्रणाली अपनी अद्भुत विशेषता रखती है। समस्त जगत् जीव-अजीव रूप से चेतन व जड़ में विभाजित है। ये 'अस्तिकाय' कहे जाते हैं। ये सत्ता सच्ची होने से 'अस्ति' और देहादि के समान विस्तारयुक्त होने से 'काय' हैं। चेतन जीवास्तिकाय और जड़ प्रद्गलास्तिकाय हैं। भूत परमाणुओं का नाम 'प्रद्गल' है, जो जगत को पूरते बनाते और गलाते रहते हैं। फलतः प्रद्गल रूप में चार प्रकार के परमाणु जड़ जगत के उपादान हैं और जीव चेतन सर्वथा अनुत्पाद्य है।

बौद्धदर्शन में किसी सद्रूप उपादान के अस्तित्व को स्वीकार नहीं किया गया । असत् अथवा शून्य ही वास्तविकता है । वही एक व्यवहार मात्र की भावना के रूप में 'सत्' ऐसे भासित होता रहता है । यह चित चैत्तरूप में वर्णित होता है । जिस रूप में यह जगत प्रतिभासित हो रहा है, वह सब चित्त अथवा विज्ञान के प्रतिक्षण परिणाम का चमत्कार है । जागतिक समस्त बाह्य-व्यवहार ज्ञाता और ज्ञेय इन दोनों रूपों मे पर्यवसित है, ज्ञान साधन का अवसर अनन्तर आता है; वह भी ज्ञेय कोटि में निविष्ट है, स्पष्ट है, ज्ञाता विज्ञान अथवा चित्त है और बाह्य रूप में उसका प्रतिभासित होना ज्ञेय है । फलत: जब 'असत्' सद्रूप में उभरने लगता है. तो वह चित्त अथवा विज्ञान रूप है. मूल 'असत्' और इस समस्त बाह्य 'ज्ञेय' के अन्तराल में 'विज्ञान' एक ऐसा केन्द्रबिन्दु है जिसके आधार पर यह अखिल विश्व चक्कर लगा रहा है, यह 'बिन्दु' ही जो यह सब होकर भासता है ।

यहां चित्त अथवा विज्ञान अध्यात्म और उसका यह समस्त लीला विलास अधिभूत है । फलत: बौद्ध दर्शन द्वारा जगत स्वरूप को प्रस्तुत करने में अध्यात्म का अवसर प्रथम और अधिभुत का अनन्तर आता है ।

यूरोपीय दर्शन जगत के मूल कारण तत्वों को अनन्त अथवा अनिर्वाच्य शक्ति का भण्डार मानते हैं भी वहां चेतना के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करता, चेतना की उद्भूति से बहुत पहले अचेतन सर्ग प्रारम्भ हुआ रहता है । सर्ग होने के पर्याप्त अनन्तर किसी विशेष परिस्थिति में आकर ही कहीं चेतना फूट पाती है । यदि इसमें हम चेतना को अध्यात्म और शेष जगत को अधिभूत कहें. तो यूरोपीय दर्शन के विचार से यह स्वीकार किए जाने में कोई बाधा न होगी, कि अधिभूत जगत पहले और अध्यात्म पीछे प्रादुर्भाव में आता है। बौद्ध दर्शन से जो हमने जाना, यहां उसके विपरीत देखते हैं वहां विज्ञान अध्यात्म शेष और समस्त अधिभूत का प्रतिभासक है, पर यहाँ अधिभूत में से अध्यात्म उभरता है, इस दृष्टि से यूरोपीय दर्शन और भारत चार्वाक दर्शन का विलक्षण साम्य है । यह बात समस्त संसार की विभिन्न दार्शनिक विचार धाराओं के श्रेणी विभाजन और उसके विकास क्रम के मूल आधार पर अच्छा प्रकाश डालती है, तथा विभिन्न सभ्यताओं के अति प्राचीन इतिहास की उलझन भरी गाँठ को सुलझाने में अच्छा सहयोग दे सकती है । कुछ भी हो, पर यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है, कि समस्त दर्शन किसी न किसी रूप में अधिभूत के साथ अध्यात्म का विवेचन अवश्य करते हैं ।

प्रसिद्ध व्यक्तियों की दृष्टि में ....

(पृष्ठ ८ का शेषांश)

व्यवहार का विरोध छूटना अति दुष्कर है । बिना इसके छूटे परस्पर का पूरा उपकार और अभिप्राय सिद्ध होना कठिन है ।" (सत्यार्थ प्रकाश अष्टम (समुल्लास)

इससे बढ़कर स्वराज्य के महत्व सूचक वाक्य क्या हो सकते हैं ?

सत्यार्थ प्रकाश के दशम समुल्लास में महर्षि ने लिखा है कि—

जब स्वदेश में हो स्वदेशी लोग व्यवहार करते और परदेशी स्वदेश में व्यवहार व राज्य करें तो विना दारिद्र्य और दुःख के दूसरा कुछ भी नहीं हो सकता ।'

'आर्याभिविनय' नामक प्रार्थना पुस्तक में भी महर्षि दयानंद ने अनेक स्थानों पर इस प्रकार की प्रार्थनाएं लिखी हैं कि—

'अन्य देशीय राजा हमारे देश में कभी न हों तथा हम लोग पराधीन कभी न हों ।'

'ऋजुनीमी नो वरुण' इस ऋग्वेद मन्त्र की व्याख्या में महर्षि ने आर्याभिविनय में लिखा है कि–

मह पर सहाय करो जिससे सुनीतियुक्त होकर हमारा स्वराज्य अत्यन्त बढ़े ।

राष्ट्रीय एकता के लिए एक राष्ट्र की आवश्यकता को अनुभव करते हुए महर्षि दयानंद ने ही गत शताब्दी में न केवल मातृभाषा गुजराती होते हुए भी आर्य भाषा हिन्दी में सत्यार्थ प्रकाशादि ग्रन्थ लिखे बल्कि हिन्दी को राष्ट्र भाषा की स्थिति दिलाने के लिये लाखों हस्ताक्षर कराने की योजना बनाई । राष्ट्र की साम्पत्तिक और शारीरिक अवस्था को उन्नत करने के लिए गोवध निषेध और गोपालन अत्यावश्यक है यह जान कर उन्होंने न केवल 'गोकरुणानिधि' आदि पुस्तकें लिखीं अपितु लाखों हस्ताक्षर कराकर महारानी विक्टोरिया के पास भिजवाने का यत्न किया । राष्ट्रीय एकता और सामाजिक उन्नति की दृष्टि से जाति भेद और अस्पृश्यता को अत्यन्त हानिकारक समझकर उन्होंने उनके विरुद्ध प्रबल आन्दोलन किया । बालविवाह, विषम विवाह, पर्या-बाधित वैधव्य, स्त्री शिक्षा का निषेध आदि कुरीतियों को राष्ट्रीय दृष्टि से भी अत्यन्त हानिकारक समझते हुए उन्होंने इनका प्रबल विरोध किया तथा इन्हें वेदादि सत्यशास्त्रों की शिक्षा के विरुद्ध बताया ।

राष्ट्रीय महासभा के उस समय के अध्यक्ष

(पृष्ठ शेष २७ पर)

स्व० श्रद्धेय राजर्षि पुरुषोत्तम दास जी ने ... अक्टूबर १९५० को आर्यसमाज चौक प्रयाग में ठीक कहा था कि—

'मैं स्वामी दयानन्द जी को साम्प्रदायिक नहीं मानता। मेरे विचार में वे महान् थे। उन का धर्म विस्तृत था। मैं उनको राजनैतिक गुरु भी मानता हूं।

ऐसे सर्वतोमुखी आदर्श सुधारक और कर्मयोगी महर्षि दयानन्द का स्मरण सब आर्यों में नई स्फूर्ति और नवजीवन का संचार कर दे जिससे हम सच्चे आर्य बन कर संसार में आर्यत्वका प्रसार कर सकें।

महर्षि दयानंद ने संसार को...

(शेषांश पृष्ठ ८ का)

से सम्बंध रखता है। किसी मनुष्य, नगर, नदी आदि से उसका कोई सम्बंध नहीं। परन्तु साहित्य का जो भाग संभव और संभवासंभव वर्णन से सबंधित है। वह पुराणों अथवा ब्राह्मण ग्रन्थों में आता है, वेदों से उसका कोई सम्बंध नहीं। वेदों जो ऐतिहासिक सामग्री दीखती है वह पुराणकारों की कृपा का ही परिणाम है। इसके लिए अनेक प्रमाण प्रस्तुत किये जा सकते हैं। इस ब्लैक मेल को पकड़ने की भी एक कसौटी है। वह यह कि सारे चमत्कारी और असंभव वर्णन वेदों के हैं। संभवसंभव वर्णन में कुछ भाग वेदों का और कुछ उन-उन नामों के व्यक्तियों का है। आधुनिक कवियों ने उन दोनों को मिला कर खिचड़ी बना डाला है। अतः संभव और असंभव की कसौटी पर कस कर दोनों को पृथक-पृथक कर लेना चाहिए। जो शुद्ध संभव भाग है वह तो है ही ऐतिहासिक।

मिश्र बन्धुओं ने अपनी पुस्तक में वेदों में जो एक इतिहास निकाला। हैं केवल उसका वर्णन करना पर्याप्त होगा। उन्होंने अपनी पुस्तक के अध्याय ११ पृष्ठ १७१-१८३ तक सुदास के पिता दिवोदास का शंबर के साथ युद्ध का एक लम्बा वर्णन किया है। इन्द्र और वृत्र के युद्धों का वर्णन किया है। दनु जो वृत्रासुर की माता थी, के वंशज दानव कहलाये। सुश्न वलि, समुचि, विप्र सर्वरादि सब दानव थे जिनका देवों, इन्द्रादि, से युद्ध होता रहता था। इन्द्र ने वृत्र के ९९ किले तोड़ दिये। यह किले उड़ने और चलने वाले थे। मिश्र बन्धु लिखते हैं कि उड़ने-चलने वाले किलों का अभिप्राय समुद्री जहाज से है। विप्र के ५० हजार सहायक मारे गये आदि।

'पुराणों में इस युद्ध का वर्णन नहीं मिलता। केवल ऋग्वेद के सातवें मण्डल में महर्षि वसिष्ठ ने इसका वर्णन किया है' ऐसा वह लिखते हैं। वेदों के आधार पर नहुष, ययाति, त्रिशंकु, शान्तनु, गंगा दुष्यन्त मेनका आदि का वर्णन पुराणों में पाया जाता है। इस का वर्णन क्यों नहीं। वास्तव में बात यह है कि पुराण तो मिश्रित बात कहते हैं और यह है कोरा वैदिक अलंकार-चमत्कारिक वर्णन। यह वर्णन इन्द्र वृत्र का है। तारा एवं ग्रहों के योग का विशद वर्णन अर्थात् नित्य इतिहास है। वेदार्थ शैली की अनभिज्ञता के कारण रस्सी का सांप बन गया है।

वास्तविकता क्या है?

वास्तव में भ्रम तब हुआ जब हम यह सिद्धान्त भुला बैठे कि वेद के सब शब्द 'यौगिक' हैं, रूढ़ि अथवा योगरूढ़ि नहीं। यौगिक शब्दों के अर्थ विषय प्रकरण के अनुसार विविध प्रकार के अर्थों वाली धातुओं के द्वारा प्रतिपादित होते हैं। इसी कारण एक-एक मन्त्र के आधिदैविक, आध्यात्मिक और आधिभौतिक अर्थ प्रकरणानुसार पूर्वापर संबध को दृष्टि में रखते हुए कई प्रकार के हो सकते हैं। वेदों में आये इन्द्र, वृत्र, त्रिशंकु, पुरुरवा, शुक्र, देवयानी, उर्वशी, ययाति, नहुष आदि सब आकाशीय पदार्थ हैं। किसी व्यक्ति विशेष के ये नाम नहीं। ये सब शब्द यौगिक हैं, रूढ़ि नहीं। लोक में उन-उन नामों वाले व्यक्ति भी हुये होंगे। पुराणकारों ने भ्रमवश अथवा किसी अन्य कारण से वेदमन्त्रों के साथ उन्हें जोड़कर इतिहास बना दिया जो कसौटी पर सही नहीं उतरता वेदों का पुरुरवा सूर्य है। उर्वशी उसकी एक किरण है। इन्द्र नाम भी सूर्य का है। इन्द्र की बहुत सी अप्सरायें हैं ये पुराण-प्रसिद्ध तथ्य हैं। यह प्रसिद्ध है कि पुरुरवा और उर्वशी से 'आयु' नामक पुत्र पैदा हुआ। यजु० ५.२ में उर्वश्यस्यायुरसि पुरुरवा असि' यह बताया है कि इस मन्त्र में उर्वशी और पुरुरवा अग्नि' कहे गये हैं। अग्नि से अग्नि ही उत्पन्न होती है अतः 'आयु' नामक पुत्र जो उन दोनों के संयोग से पैदा हुआ 'अग्नि' ही है। यही दैवी वंश है। यजु० १८।३९ में अत्यन्त स्पष्ट रूपेण कहा है 'सूर्योगन्धर्वस्तस्य मरीचयोऽप्सरसः, अर्थात् 'सूर्य' ही गंधर्व ' और उसकी किरणें ही अप्सरायें हैं'। अब यह अलंकारिक वर्णन समझना कठिन नहीं होगा 'यह वर्णन पृथ्वी के मनुष्यों का नहीं अपितु आकाशीय पदार्थों का है। इसे ही हम नित्य इतिहास कहते हैं। इस ही प्रकार के और भी अनेक वर्णन हैं जिनकी विस्तारभय के कारण हम चर्चा नहीं करते।

वेदों में प्रयुक्त पुरुषनाम वाचक कुछ शब्दों के वास्तविक अर्थ—राम (ऋ०१-३-३) रामं शर्वरं तमः-रात्रि के अन्धकार का नाम राम है। दशरथ के पुत्र का वर्णन वेद में नहीं।

(शेषांश पृष्ठ २९ पर)

आर्य समाज स्थापना शताब्दी कैसे मनायें ?

(जयदेव अनल)

१२ अप्रैल को आर्यसमाज की स्थापना के १०० वर्ष पूरे हो रहे हैं। हमारी शिरोमणि सार्वदेशिक सभा ने शताब्दी के लिए लगभग डेढ़ करोड़ रुपये की योजना बनाई है। दूसरी ओर "दयानन्द संस्थान" तथा इसके अन्य समर्थकों ने 'सार्वभौम आर्य प्रतिनिधि सभा' के नाम से एक समानान्तर सभा बनाकर कार्य आरम्भ किया है।

तरह-तरह के नेता तरह-तरह के नारे आर्य जनता को दे रहे हैं। आये दिन समाचार पत्रों में नेताओं की अपीलें आ रही हैं, जनता के नाम। कोई घर-घर वेद पहुंचाने की बात कहता है तो कोई लाखों की संख्या में "सत्यार्थ प्रकाश" बंटवाना चाहता है। कोई घर-घर में दिवाली मनाने की—घी के दिए जलाने की बात भी कहता है। ये सब अच्छी योजनाएँ हो सकती हैं। पर क्या अपने १०० वर्ष पूरे होते-होते आर्य समाज इस स्थिति में पहुंच गया है कि मूल बातों से कट कर, ऊपरी दिखावा मात्र करके शताब्दी मनाने की खानापूर्ति करना चाहता है।

मैंने अपने नेताओं के अनेकों भाषण सुने हैं, जिनमें आर्यसमाज के गौरवपूर्ण अतीत का वर्णन किया जाता है। आर्यसमाज का अतीत निश्चय ही प्रेरणा-स्पद, क्रांतिकारी और त्यागमय रहा है। पर आज हम यदि अपनी वर्त्तमान असफलताओं तथा कमजोरियों को सुन्दर अतीत के अंजीरी पत्तों से ढापने का प्रयास करना चाहते हैं तो यह हमारी भूल ही है और कुछ भी नहीं।

पैसा इकट्ठा किया जाना अपने आप में कोई महत्वपूर्ण काम नहीं। महत्वपूर्ण काम यह है कि इस पैसे का उपयोग कहाँ और कैसे करें ? साहित्य छापने के लिए हम करोड़ों रुपया एकत्र कर सकते है। प्रत्येक घर में "सत्यार्थप्रकाश" और वेद भी पहुंचा सकते हैं—पर इन्हें पढ़ेगा कौन ? हम, आप या हमारे कुछ गिने चुने विद्वज्जन ही न ? देश के ५७,४२,२०,००० (सत्तावन करोड़ बियालीस लाख बीस हजार) में से लगभग ३८ करोड़ लोगों के लिए तो (सरकारी आंकड़ों के अनुसार) आज भी "काला अक्षर भैंस बराबर" है। क्या अशिक्षा के कोढ़ को मिटाने के लिए हमने कोई योजना बनाई ?

मैं जानता हूं कि मेरे इस सवाल के पूछने पर कुछ लोग डी. ए. वी. शिक्षण संस्थाओं और गुरुकुलों के नाम गिनाने बैठ जायेंगे। हमारे ये ज्ञान मन्दिर हमारी उपलब्धियाँ हो सकते हैं पर महर्षि के स्वप्नों से दूर हटकर ये आज सरकारी दया पर पलने वाले अथवा सेठों के मोटे 'दान' से चलने वाले केन्द्र बन कर रह गये है। आज क्यों इनमें से एक भी ऋषि का सच्चा अनुयायी नहीं निकल पा रहा ? क्यों नहीं आज उसी के नाम से चलने वाले शिक्षण केन्द्रों से एक भी व्यक्ति उसकी तरह 'बागी' और विद्रोही बन कर निकल रहा ? कारण स्पष्ट है कि इनमें भी व्यवस्था-जन्य दोष आ चुका है। इनके संचालक और प्रबन्धक सभी अपने छात्रों को व्यवस्था की 'जी हुजूरी' करके स्वार्थ सिद्धि करने का पाठ पढ़ाते हैं।

हम आये दिन सरकारी तन्त्र के विरुद्ध ये प्रचार करते रहते हैं कि वह देश के नवयुवकों को गलत शिक्षा दे रहा है। उदाहरणार्थ हम कहते हैं कि हमारे छोटे २ बच्चों को 'आर्यों के बाहर से आगमन', 'अण्डों में विटामिन की विद्यमानता' तथा मांस-भक्षण स्वास्थ्य वर्द्धक है'—आदि बातें जबरदस्ती पढ़ाई जाती हैं। मैं इस बात से सहमत हूँ कि सरकार इसके लिए दोषी है। परन्तु क्या हम सरकार को दोषी बताकर ही 'मौनव्रत' धारण कर लें ? क्या हममें तनिक भी विरोध की हिम्मत या विद्रोह की ताकत नहीं है ? क्या हम इन पुस्तकों का अपने स्वयं के विद्यालयों में बहिष्कार करवा सके ? करवाते भी कैसे-आखिर गलती सरकार की है, जब वही न समझे तो हम क्या करें ? काश **शताब्दी वर्ष में एक भी विद्यालय या गुरुकुल हम ऐसा स्थापित कर पाते जहां एक गरीब का होनहार बेटा बिना किसी आर्थिक कठिनाई के अपना विद्याध्ययन कर सके ?**

आज हमारे कुछ बुजुर्ग जिन्होंने आर्यसमाज के सुनहरे दिन देखे हैं, चुपचाप एक कोने में बैठ कर उन दिनों को याद करके आंसू बहाते हैं। आखिर क्यों रोमांचित न हो उठेगा उन दिनों की याद आने पर ? तत्कालीन आर्यसमाज के विषय में सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् प. गंगाप्रसाद उपाध्याय ने कहा है—"आर्य समाज पृथ्वी के गुरुत्वाकर्षण के समान था, जो न दिखाई देता है और न ही महसूस होता है, पर प्रत्येक प्रकार के क्रिया-कलाप को प्रभावित किये बिना नहीं

रहता। यहां हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि इस समय आर्यसमाज की रगों में इसके संस्थापक का शुद्ध-पवित्र खून दौड़ रहा था। उस दयानन्द का जिसे श्रद्धांजलि देते समय पाश्चात्य विद्वान् रोम्यां रोलां को भी कहना पड़ा था—

"This man (Dayananda) with the nature of a lion is one of those whom Europe is too apt to forget when she Judges India but whom she will probably be forced to remember to her cost for he was that rare Combination, a thinker of action with a genius of leadership. Dayananda trans fused in to the languid body of India his own formidable energy his certainity, his lion's blood. His words rang with heroic power............ I feel that it was he who kept the vigil.

यदि आर्यसमाज अरबों रुपयों की सम्पत्ति का मालिक तथा लाखों आर्य समाजियों के होते हुए भी आज उस खोये हुए गौरव को प्राप्त नहीं कर रहा है तो इसका कुछ तो कारण होगा? मुझे सबसे बड़ा और मूल कारण जो दिखाई देता है वह है—सुयोग्य और संघर्षशील नेतृत्व का अभाव। ऐसे अनेक लोग आर्य समाज में आते रहे हैं, जो यदि १० मिनट भी समाज में बैठते हैं तो यह देखते हैं कि इसमें उनकी कितनी व्यक्तिगत स्वार्थ सिद्धि हो रही है अथवा उनकी नेतागिरी में कितनी प्रतिशत अभिवृद्धि हो रही है? दुर्भाग्य से समय ने पिछले समय में ऐसे ही लोगों का साथ दिया है। और इसके परिणाम युवाशक्ति तथा निःस्वार्थसेवी कार्यकर्त्ताओं के नैराश्य तथा अवसरवादी सिद्धान्तहीन तत्वों द्वारा समाज पर एकाधिकार किये जाने के रूप में सामने आये हैं। (क्रमशः)

(शेषांश पृष्ठ २७ का)

(कृष्णा) (ऋ० ११३-२ कृष्णा वर्ण रात्रिः,नि० २।२० अंधेरी रात्रि कृष्णा है।

सीता— (यजु० १७-२०) 'बीजाय या एषा योनिः क्रियते यत्सीता। (वेदार्थ कोष) कुदाल की नोक से जो गहरी लकीर जिसे कूंड कहते हैं— बनाई जाती है वह सीता है।

दशरथ— (ऋ० ११।२७।४) जीवात्मा व सेनापतिः (वेदार्थ कोष) रामायण के नहीं।

शन्तनु— (ऋ० १०।६८।७) शमस्मे तन्वा अस्तित्व ति (निरुक्त २।३) शारीरिक रूप से जो सुखी है। उसे शन्तनु कहते हैं— महाभारत के शन्तनु भीष्मपितामह के पिता नहीं।

कृष्ण— (ऋ० १-७०-२) कृष्णम् कृष्यते निकृष्टो (नि० २।२०) काले वर्ण को कृष्ण कहते हैं।

वसिष्ठ— (ऋ० २।६।११) प्राणो है वसिष्ठ ऋषिः। १।७।०८।१।१।६ प्राण का नाम वसिष्ठ है अथवा 'सर्वश्रेष्ठः वसिष्ठः' जो सब से श्रेष्ठ हो।

इसी प्रकार से वेद के प्रत्येक शब्द को जिन्हें भ्रमवश लोगों ने रूढ़ि शब्द समझ कर विशेष व्यक्ति नगर अथवा वस्तु विशेष समझ लिया — निरुक्ति और व्युत्पत्ति करने पर वेद सब सत्य विद्याओं का भण्डार बन जाता है।

(शेषांश पृष्ठ ४ का)

छात्र नेताओं को पुलिस द्वारा पकड़वा कर, उनके साथ अमानवीय व्यवहार किया गया और उनकी बेहद पिटाई की गई। इसी तरह हिसार, नरवाना, सोनीपत में भी विद्यार्थियों के साथ दुर्व्यवहार किया गया है। अतः हमारा आग्रह है कि शिक्षण संस्थाओं में पुलिस का दमन-चक्र समाप्त किया जाय विद्यार्थियों पर लगाये झूठे अभियोग तथा निष्कासन आदेश वापस लिए जाए और कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय में वर्तमान उपकुलपति को निलम्बित किया जाय क्योंकि वे अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करने में विफल सिद्ध हुए हैं, और विश्वविद्यालय की स्वायत्तता को अपने अधिकारों के दुरुपयोग द्वारा भंग कर दिया है तथा विद्या मन्दिरों को बर्बरता का अखाड़ा बना दिया है।

शुद्धि-पत्र

मार्च द्वितीय अंक के "भगतसिंह द्वारा शहादत की पेशकश" नामक लेख में कुछ उल्लेखनीय ऐतिहासिक गलतियां छप गयी हैं। अतः पाठकगण —

(१) "ये शब्द जलियांवाला बाग के नृशंस पुलिस अधिक्षक "सांडर्स की हत्या" की जगह "लाला लाजपतराय की हत्या के लिए जिम्मेदार, नृशंस पुलिस अधिक्षक सांडर्स की हत्या" पढ़ें।

(२) "४ अप्रैल १९२९ को चन्द्रीय धारा सभा कक्ष में बम फेंककर" की जगह "८ अप्रैल १९२९ को......" को पढ़ें

आर्यसमाज की स्थापना का लक्ष्य क्या था ?

हरिदत्त शर्मा

क्रान्तिकारी धार्मिक नेता स्वामी विरजानन्द सरस्वती के पट्ट शिष्य स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने अर्जित अनुभव को अपने महान गुरु के अनुभवों के प्रकाश में शोध कर जब युग सत्य से जोड़ दिया तब उनके हृदय में स्फूर्ति, मस्तिष्क में चमत्कारिक बुद्धि और हाथों में कर्म कौशल आ गया। उन्होंने अपने देश की पराधीनता, उसके कारणों, उसके संवाहकों के दलालों को अच्छी तरह से समझा और उसके साथ ही पराधीनता के शत्रुओं, यानी कि अपने मित्रों को भली-भांति पहचाना। साथ ही अपने देश को, उसकी संस्कृति सभ्यता को, उसकी अच्छी बुरी प्रवृत्तियों को, उसके इतिहास दर्शन परम्परा को बड़ी गहराई से जाना। उन्होंने अपने युग को भी बड़ी गहरी दृष्टि से देखा। सब कुछ समझ-बूझ कर देख-भालकर वे राष्ट्रीय मंच पर उतर आये और उसके लिये आर्यसमाज नाम से उन्होंने अपना एक प्लेटफार्म बनाया।

विकृतियों पर कड़े प्रहार

अपने इस मंच का उन्होंने शक्ति भर विस्तार किया और सारे देश में अपने तौर पर जागृति का शंखनाद दिया। इस जागृति को उन्होंने सीधे वैदिक परंपराओं से जोड़ा और वैदिक युग से लेकर उनके अपने युग तक उनकी अपनी समझ के अनुसार जितनी सामाजिक, सांस्कृतिक, दार्शनिक और धार्मिक विकृतियां आ गई थी, उन सब पर ज़ोर-दोर से प्रहार शुरू कर दिये। यद्यपि उन्होंने अपना क्षेत्र धार्मिक-सांस्कृतिक-सामाजिक रखा लेकिन अर्थनीति और राजनीति की महिमा उनके मन मस्तिष्क से ओझल नहीं थी। उन्होंने संस्कृति, अर्थनीति और रणनीति के समन्वय के महत्त्व को बड़ी अच्छी तरह से चीन्हा और अनेकानेक विधियों से राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम के सैनिक तैयार करने प्रारम्भ कर दिये।

इसके लिए उन्होंने सभी क्षेत्रों में कार्यक्रम बनाये और एक विधि संहिता तैयार की। विचारधारा, कार्यक्रम, विधि संहिता और कार्य नीति तैयार करके उन्होंने एक महान संगठक राष्ट्रीय कर्णधार की भूमिका अदा करनी प्रारम्भ कर दी।

स्वाधीनता संग्राम में योगदान

यह सुविदित है कि हमारे राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में आर्यसमाज द्वारा तैयार हुए क्रान्तिकारी हिंसावादी और

अहिंसावादी कार्यकर्त्ता और नेता आगे आते रहे। से अनेक विदेशों में भी गये और वहाँ पर उन्होंने देश की आजादी का झंडा फहराया। इस सि[illegible] में यूरोप में क्रांतिकर्म करने वाले श्यामजी कृष्ण का नाम विशेषरूप से उल्लेखनीय हैं जो गोर्की महान क्रांतिकारी लेखक की प्रशंसा के भी पात्र रूस के इस क्रांतिकारी चेतना के विपुल धन (मै[illegible] गोर्की) ने श्यामजी कृष्ण वर्मा के बारे में स्वनामधन्य लेखनी से एक लेख लिखा। इसी [illegible] भाई परमानन्द लाला हरदयाल व रासबिहारी भी स्वामी जी से प्रभावित रहे।

बात यह है कि स्वामी दयानन्द सरस्[illegible] दृष्टि में या कहना चाहिए रग-रग में राष्ट्रीय भावना समायी हुई थी और उसी के आधार पर [illegible] अपनी आस्था और विश्वास के दृढ़ सेतु तैयार कि[illegible] जिन पर उन्होंने अपनी योद्ध्य कार्यकर्ता दल [illegible] कर महाशक्तिशाली ब्रिटिश साम्राज्यवादियों से [illegible] निश्चय ही स्वामी जी का यह कृतित्व हमारे [illegible] सर्वपक्षीय इतिहास का सुनहरा पृष्ठ बन गया।

इस संदर्भ में स्वामी जी की एक विशे[illegible] भी रही कि उन्होंने अपनी सत्यमयी प्रगाढ़ [illegible] और ओजमय विश्वास का निर्माण तर्क के मा[illegible] किया। यूं भी कह सकते हैं कि वे आस्था और [illegible] की शीर्ष पर तर्क की सीढ़ी पर चढ़ कर प[illegible] बात उन्होंने अपने अनुवर्तियों को भी सिखाई, [illegible] अलग रही कि उनके बहुत से अनुवर्ती तर्क [illegible] तरह से न समझ पाकर कुतर्की बन गये। [illegible] पकड़ना या तर्क के सोपान पर चढ़ना सरल [illegible] होता, बहुत जटिल होता है। लेकिन उनके [illegible] में ऐसे लोग भी स्पष्ट रूप से दिखलाई पड़ते हैं [illegible] तर्क को ठीक तरह से पकड़ा। इनमें नवयुवक [illegible] उदाहरण के तौर पर अमर शहीद रामप्रसाद [illegible] और शहीदे आजम भगतसिंह ! इन दोनों के [illegible] इस बात के साक्षी हैं कि इन्होंने शत्रु-मित्र, [illegible] काल को पहचानकर और तदनुसार संघर्ष [illegible] अनुभवों के सही निचोड़ निकालकर तर्क [illegible] किये।

स्वामी जी की तर्क प्रतिष्ठा ने सबसे [illegible] लाभ धर्म के क्षेत्र में पहुंचाया। उन्होंने [illegible] [illegible]वाद और पाखण्ड के रूपों को जनता [illegible]

प्रस्तुत करके विश्वास, श्रम और सत्य के मार्ग पर आरूढ़ करने की सफल चेष्टाएं की। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि स्वामी जी ने अनेक मुस्लिम आक्रमणकारियों और शासकों तथा बाद के आक्रान्ता ब्रिटिश, पुर्तगाली व फ्रांसीसी साम्राज्यवादियों के सांस्कृतिक आक्रमणों को भी पर्याप्त गहराई में जाकर समझा और उनके सारतत्व को समाज को समझाया। उन्होंने समाज में अपने सांस्कृतिक अभ्युदय की भावनाएं भरकर उसके आर्थिक और राजनीतिक पथ को प्रशस्त किया।

इस सबको और भी विस्तार और गहनता के साथ समझने की आवश्यकता है क्योंकि अपने इतिहास और अपनी परम्परा को ठीक तरह से समझे बिना हमें सही रास्ता नहीं मिल सकता। अपने भूत का वर्तमान के लिये लाभ उठाने के हेतु भूत की अनुपयोगी प्रवृत्तियों को छोड़कर और उपयोगी वृत्तियों को लेकर हर नई पीढ़ी को आगे बढ़ना पड़ता है। इसी भाव से वह युग-सत्य को पहचान कर उसे ग्रहण कर सकती है। दरअसल, भूत, वर्तमान व भविष्य एक ही नदी के तीन तीर्थ स्थल हैं इनकी एकतानता प्रगति के लिए नितान्त आवश्यक है।

आर्य समाज का दायित्व

इस दृष्टि से स्वामीजी के व्यक्तित्व और कृतित्व का विश्लेषण करते हुए हमारे समाज और विशेषकर आर्यसमाज के लिये यह बड़ा आवश्यक हो जाता है कि वह देश में फैले विकारों को दूर करके अच्छे संस्कारों का निर्माण करे। कौन नहीं जानता कि आज हमारे देश में धर्म को अधर्म, संस्कृति को विकृति, अर्थनीति को अनर्थनीति और राजनीति को कुराजनीति बनाने की कितनी चेष्टाएं की जा रही हैं। नाना छद्मवेषों में पुराने और नये साम्राज्यवादी एजेन्ट इस देश पर सांस्कृतिक और बौद्धिक आक्रमण कर रहे हैं। उनके ही दलाल कालेधन के व्यापारी काली संस्कृति, काली समाज नीति, काली अर्थनीति और काली राजनीति की कालिमा को गहरा रहे हैं। चतुर्दिक नये-नये प्रकार के झूठ, फरेब, भ्रम, पाखण्ड और अन्धविश्वास फैलाये जा रहे हैं। काले अंधियारे के असुरों ने एक ऐसा चक्रव्यूह रच दिया है जिसमें जनसाधारण रूपी अभिमन्यु फसा खड़ा है।

ऐसी स्थिति में आर्य समाज

आर्यसमाज स्थापना शताब्दी समारोह पर औपचारिक महासभाओं और शोभायात्राओं में भी परम्पराओं की सद्वृत्तियों से ग्रथित युग-सत्य की इतनी बड़ी गुहार होनी चाहिये कि प्रपंच और पाखण्ड को समझने की सूझबूझ लोगों में पैदा हो। धूमधाम से विहीन अनौपचारिक प्रखर विचार, गोष्ठियां आजके युग के नये तत्वों का मंथन करके और युगधर्म का अमृत निकालकर उसमें ऐतिहासिक सारतत्व को जोड़कर नवोत्थान की भावनाओं को प्रसारित करें। उस प्रकाश से मंडित कर्म ही इस शताब्दी समारोह में प्राण भर सकता है और उसी से स्वामी जी की आत्मा को संतोष प्राप्त हो सकता है। घिसे-पिटे, मोहक, किन्तु शोषक व तावरण प्रसार से स्वामी जी की स्मृति महिमा नहीं बढ़ती। उनका महत्व तो शोषणहीन समाज की स्थापना में प्रेरणा और सम्बल प्रदान करने वाले कर्म प्रवाह से बढ़ता है।

राजस्थान विश्वविद्यालय में आर्य युवकों की एक और शानदार जीत

यह हर्ष का विषय है कि वैदिक मान्यताओं में दीक्षित एवं क्रांति की विचारधारा से ओत-प्रोत युवक विभिन्न स्थानों पर छात्रों तथा युवकों के नेतृत्व के लिए उभर कर सामने आ रहे हैं। आर्य युवकों को अपने पथ पर मिल रही सफलताओं से अब यह सिद्ध हो चुका है कि उनमें अब भी औरों की अपेक्षा कहीं अधिक नेतृत्व-क्षमता विद्यमान है।

राज० विश्वविद्यालय में हर वर्ष की भांति इस वर्ष भी 'सीनेट' के चुनाव सम्पन्न हुए। जनसंघ से सम्बद्ध विद्यार्थी परिषद् जैसे छात्र-सगठनों ने इस बार सीनेट में अपने छात्र-प्रतिनिधियों को भेजने के लिए सभी तरह के हथकण्डे अपनाये। परन्तु उनके उम्मीदवार श्री सुरेन्द्र कुमार बज हमारे उम्मीदवार श्री ओ३म्प्रकाश शर्मा के द्वारा हार गये।

यह प्रथम अवसर है जबकि विश्वविद्यालय से सम्बद्ध संस्कृत महाविद्यालय का कोई छात्र-प्रतिनिधि 'सीनेट' के लिए चुना गया है। ज्ञातव्य है कि श्री ओ३म प्रकाश महाराजा संस्कृत कालेज के छात्र हैं।

विजयी उंम्मीदवार को राजस्थान संस्कृत विद्यार्थी परिषद्, जयपुर के अध्यक्ष श्री सहदेव आर्य तथा महामन्त्री श्री भगवती प्रसाद देशवाल का सक्रिय समर्थन प्राप्त था। संस्कृत परिषद् उक्त छात्र नेताओं के नेतृत्व में संस्कृत विद्यार्थियों के न्यायोचित अधिकारों के लिए अपने जन्मकाल से ही निरन्तर संघर्षरत है।

'राजधर्म परिवार' इस सफलता का हृदय से स्वागत करता है।

— जयदेव अनल

राज० आर्यसभा का प्रतिनिधि सम्मेल

सम्पन्न

जयपुर, १६ फरवरी। राजस्थान आर्य सभा का प्रथम प्रतिनिधि सम्मेलन स्थानीय आर्य समाज किशन-पोल बाजार में सोत्साह सम्पन्न हुआ।

सम्मेलन में जोधपुर, पाली, बीकानेर, अलवर, जयपुर, झुंझुनू आदि विभिन्न स्थानों से आये हुए प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सम्मेलन की अध्यक्षता राजस्थान आर्य सभा के अध्यक्ष स्वामी शक्तिवेश ने की।

सभी प्रतिनिधियों ने अपने-अपने क्षेत्रों में आर्य सभा की तदर्थ समितियां गठित करके प्रान्त में तेजी से कार्य करने की शपथ ली।

इसी अवसर पर सभा के किसान, मजदूर व छात्र संगठनों की भी विधिवत घोषणा की गयी। श्री यशपाल को छात्र संगठन के संयोजन का भार सौंपा गया।

प्रान्तीय जन-संघर्ष समिति के लिए स्वामी शक्तिवेश तथा श्री जयदेव अग्रवाल को प्रतिनिधि चुना गया।

काफी उहापोह तथा गरमागरम बहस के बाद सम्मेलन में निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित किये।

ग्राम पंचायतों का चुनाव शीघ्र कराओ

राजस्थान आर्यसभा का प्रथम प्रतिनिधि सम्मेलन राजस्थान सरकार से मांग करता है कि वह शीघ्र ही समस्त ग्राम पचायतों के चुनाव कराने के लिए पग उठाये। आर्य सभा की दृष्टि में पंचायतों के चुनावों को निरन्तर टालते रहने की सरकारी नीति उसके कथित लोकताँत्रिक मुखौटे का फर्दाफाश करती हैं। सम्मेलन का मत है कि पंचायतों के शीघ्र चुनाव कराने के लिए लोकतन्त्र में विश्वास करने वाले सभी दलों को एक जुट होकर कोई आन्दोलनात्मक कदम उठाना चाहिए।

पूर्ण नशाबन्दी करो

राजस्थान आर्य सभा का यह अधिवेशन राजस्थान सरकार से तीव्र शब्दों में माँग करता है कि वह प्रान्त में पूर्ण नशाबन्दी करने के लिए शीघ्र कदम उठाये। सरकार बार-बार मद्यनिषेध का आश्वासन देने के बावजूद अपने वायदों से मुकर रही हैं। यही नहीं सरकार द्वारा शराब के व्यापार को अ[illegible] में लेने का प्रस्तावित निर्णय यह सिद्ध करता [illegible] वह प्रान्त की गरीब जनता को अधिकाधिक [illegible] पिलाने के पक्ष में हैं। अधिवेशन यह घोषणा [illegible] कि राजस्थान की भूमि से शराब के विष [illegible] करने के लिए सभा हर तरह का आन्दोलन [illegible] करने पर विचार करने को बाध्य होगी।

जयप्रकाश जी के आन्दो[illegible] का पूर्ण समर्थन

राजस्थान आर्यसभा का प्रथम प्रतिनिधि स[illegible] श्री जयप्रकाश नारायण के आन्दोलन का पूर्ण-स[illegible] र्थन करता है। जे० पी० ने अपने समग्र क्रा[illegible] आह्वान द्वारा जो समाज में सांस्कृतिक तथा [illegible] परिवर्तन की बात कही है, आर्यसभा उसकी [illegible] है। समाज में आमूल-चुल परिवर्तन के लिए दहे[illegible] जाति प्रथा आदि का सक्रिय विरोध आवश्यक है [illegible] ही जन–शक्ति को जाग्रत करने के लिए जयप्र[illegible] ने जो मार्ग सुझाया है, वह निश्चय ही अनुकरणी[illegible] आर्य सभा श्री नारायण को इस आन्दोलन में [illegible] देकर एक विषमता रहित मानव समाज के नि[illegible] विश्वास करती है। "समग्र क्रान्ति" के लक्ष्य [illegible] के लिए हम यह भी आवश्यक समझते हैं कि [illegible] पहले वर्तमान भ्रष्ट काँग्रेसी सरकार को सत्ता [illegible] कर एक व्यवस्था परिवर्तन की प्रक्रिया का [illegible] किया जाए।

किसानों को उचित मूल्य [illegible] निम्न एवं मध्यम वर्ग को [illegible] मूल्य पर अनाज मुहैया [illegible]

राजस्थान आर्य सभा का यह प्रतिनिधि [illegible] राज्य सरकार द्वारा किसानों पर लगाये जा[illegible] तथा अन्य करों का विरोध करता है। निरन्तर [illegible] वाद की दुहाई देने वाली सरकार आज स्वयं [illegible] करों को किसानों पर लाद कर 'शोषण का उ[illegible] बनी हुई है। किसानों को अधिकतम भावों में [illegible] बीज, खाद तथा अन्य आवश्यक वस्तुएं उपलब्ध [illegible] के कारण सरकार का इस तरह के टैक्स [illegible] कोई नैतिक अधिकार नहीं है।

सरकार द्वारा गेहूँ की वसूली मूल्य १०५ रुपये प्रति क्वि० निर्धारित करना भी उसकी किसान विरोधी नीति का परिचायक है। आर्य सभा के मतानुसार गेहूँ का कम से कम १३५ रुपये प्रति क्विंटल होना चाहिए। ज्ञातव्य है कि भारत सरकार भी अमेरिका से १६० रुपये प्रति० क्विंटल के हिसाब से गेहूँ आयात कर रही है, जबकि अपने ही देश के मेहनतकश किसानों को वह कम से कम मूल्य देने में विश्वास करती है।

इसके अतिरिक्त निम्न तथा मध्यम वर्ग के लोगों को कम से कम मूल्य (लगभग ८५रु० प्रति क्विंटल) के भाव से गेहूँ दिलाना आर्य सभा का उद्देश्य है।

राज्य के अकाल ग्रस्त क्षेत्रों में सरकार द्वारा अकाल राहत के नाम पर साधारण मजदूरों तथा किसानों के प्रति जो सौतेला व्यवहार अपनाया जा रहा है, वह भी निन्दनीय है।

कुछ अन्य प्रस्तावों द्वारा राज्य के स्वास्थ्य कर्मचारियों द्वारा गरीब लोगों को "परिवार नियोजन" अपनाने के लिए मजबूर करने, प्रान्त में "पुलिस राज" को बढ़ावा देने तथा सिनेमा आदि के द्वारा अश्लीलता को प्रोत्साहन देने के सरकारी रुख की भर्त्सना की गई।

फिल्मी संस्करणों के प्रकाशन बन्दी का हार्दिक स्वागत

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् लुधियाना की एक महत्वपूर्ण बैठक स्वामी वेदानन्द जी (प्रधान आर्य युवक परिषद् पंजाब) की अध्यक्षता में हुई। इसमें स्वामी जी ने आर्य युवकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि श्री लाला जगतनारायण जी तथा श्री वीरेन्द्र जी ने अपने अपने समाचार पत्रों से फिल्मी संस्करणों का प्रकाशन बन्द कर आर्य समाज के पुनीत सिद्धांतों का आदर किया और सत्यं, शिवं, सुन्दरं से अभिभूत पत्रकारिता के महान दायित्व की तरफ अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त किया है। पर्याप्त आर्थिक क्षति को सहन कर पत्रकारिता के गुरुतर दायित्व के भार को वहन करने के लिए स्वामी जी ने इनका हार्दिक धन्यवाद किया। इसी बैठक में उपस्थित आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना के महामन्त्री श्री वेदरत्न आर्य ने भी इस कार्य की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए आदरणीय लाला जी एव श्री वीरेन्द्र जी को हार्दिक धन्यवाद दिया और कहा कि दोनों सम्माननीय वरिष्ठ पत्रकारों का १०-११ मई को वैदिक साधु आश्रम रोपड़ में एक बड़े समारोह के साथ स्वागत किया जायेगा।

लाला जी एवं वीरेन्द्रजी को हार्दिक धन्यवाद

आज के आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना के साप्ताहिक सत्संग में सभी आर्य महानुभावों ने आदरणीय लाला जगतनारायण जी तथा श्री वीरेन्द्र का हार्दिक धन्यवाद किया कि उन्होंने फिल्मी संस्करणों का प्रकाशन बन्द कर दिया है। और आशा व्यक्त की कि भविष्य में भी वे आर्यों की भावनाओं का अनुभव करते रहेंगे। उन्होंने अन्य समाचार पत्रों से भी प्रार्थना किया कि वे भी इस ओर ध्यान देकर जन हित का कार्य करें। इस सत्संग में उपस्थित लोगों को स्वामी वेदानन्द जी, श्री सोहन सिंह जी एवं श्री योद्धा राम जी आदि ने भी सम्बोधित किया।

शादी में सत्याग्रह

जयपुर, १५ मार्च। राजस्थान आर्य सभा के अध्यक्ष स्वामी शक्तिवेश ने तिजारा में अपने दल के एक कार्यकर्त्ता श्री रत्न लाल आर्य के विवाह में सत्याग्रह किया। ज्ञातव्य है कि जनवरी में भारतीय आर्यसभा के चण्डीगढ़ अधिवेशन में दहेज प्रथा तथा विवाह आदि में अपव्यय के विरुद्ध इस तरह का निर्णय लिया गया था। अधिवेशन में २५ व्यक्तियों से अधिक बारात तथा सजावट आदि पर होने वाले फालतू व्यय के विरुद्ध प्रस्ताव पारित किया था। उपर्युक्त विवाह में इस निर्णय का उलंघन हुआ था।

इस विवाह में आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के मंत्री पं० हेतराम भी आये हुए थे। उन्होंने भी सत्याग्रह में स्वामी शक्तिवेश का साथ दिया।

इस घटना के तुरन्त बाद आर्य सभा नेता ने अपने वक्तव्य में नवयुवकों को आह्वान किया कि वे समाज से दहेज की बीमारी को समाप्त करने के लिए आगे आये। आपने चेतावनी दी कि भविष्य में भी इस तरह के कदम उठाये जायेंगे।

समाचार-दर्शन

नगूरा में आर्य सभा का विशाल सम्मेलन सम्पन्न

१७ मार्च १९७५ को जिला जीन्द के राजौन्द हल्के के गांवों की तरफ से नगूरा में सम्पन्न होने वाले विशाल सम्मेलन में आर्य सभा प्रधान स्वामी अग्निवेश जी का भव्य स्वागत हुआ। स्वामी जी ने सम्मेलन में उपस्थित पांच हजार से ऊपर जनता को सम्बोधित करते हुए कहा कि २७ वर्षों के कांग्रेसी कुशासन के फलस्वरूप देश अत्यन्त दयनीय स्थिति से गुजर रहा है। आज जन-जीवन बेदम हो उठा है। चारों तरफ स्वार्थ और छीना झपटी का साम्राज्य कायम है। लोकतांत्रिक एवं नैतिक मूल्यों का लोप हो चुका है। यह प्रसन्नता की बात है कि ऐसी स्थिति में लोकनायक जयप्रकाश नारायण के नेतृत्व में जनता में व्यापक जनाक्रोश देश व्यापी जनान्दोलन का रूप ग्रहण कर लिया है। आज वास्तव में जन जीवन को और देश को सुरक्षित स्थान पर पहुंचाने के लिए इस आन्दोलन को सफलता की परिणति तक पहुंचाना अत्यन्त आवश्यक है। तभी देश में आमूलचूल परिवर्तन द्वारा आध्यात्मिक मूल्यों के आधार पर शोषण-हीन समाज व्यवस्था की स्थापना हो सकती है।

अन्त में उन्होंने कहा कि हरियाणा में सरकारी दमनचक्र जोरों पर है। किसान, मजदूर, विद्यार्थी, अध्यापक तथा छोटा दुकानदार इस दमन चक्र का विशेष शिकार हुआ है। अतः यहां समस्त जनता को लोकतन्त्र की मर्यादा की स्थापना के लिए एकजुट होकर मैदान में आना चाहिए।

उन्होंने किसानों को अपने अनाज का उचित मूल्य लेने लिए सगठित होने का आह्वान किया और सरकार से बिजली तथा पानी पर बढ़े हुए टैक्सों को वापस लेने की माँग की।

इसी सम्मेलन में आर्य सभा के उपप्रधान स्वामी आदित्यवेश जी ने शोषण पर आधारित वर्तमान व्यवस्था को ध्वस्त करने का जनता को आह्वान किया। महामन्त्री रामधारी शास्त्री जी ने कहा कि जबतक समाज जीवन की मूलभूत आवश्यकताओं की चिन्ता से मुक्त नहीं होगा तब तक देश के लोगों का नैतिक और आध्यात्मिक विकास नहीं हो सकता। अतः उन्होंने कहा कि देश की मेहनतकश जनता को संगठित होकर शोषण पर आधारित वर्तमान सत्ता को समाप्त कर आर्य राष्ट्र की स्थापना के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए। इसी तरह विजयसिंह एडवोकेट तथा धर्मवीर कोथकला ने भी जनता को लोकतंत्र की हिफाजत के लिए संघर्ष का आह्वान किया।

छात्र नेता जगबीरसिंह तथा रोशनलाल एडवोकेट ने भी जनता को उनकी समस्याओं से अवगत कराकर उन्हें एक्यवद्ध होने का आह्वान किया।

जनता ने स्वामी भीष्म जी, ब्र. रामकिशन जी तथा चन्द्रभान जी के क्रान्तिकारी भजनों का रसास्वादन किया। इस तरह यह सम्मेलन बड़े धूम धाम से सोल्लास सम्पन्न हुआ।

नगूरा गांव के आर्य सभा के कार्यकर्त्ता रामकरण, साहबसिंह, धर्मपाल, चतरसिंह, गोपालराम, चन्दन, अगडीराम, करनसिंह, सेवासिंह, टेकराम आदि का सहयोग सम्मेलन को सफल बनाने में अत्यन्त सराहनीय रहा।

तानाशाही एवं बर्बरता का नंगा नाच

हरियाणा आर्य सभा के महामन्त्री श्री रामधारी शास्त्री ने २३ मार्च को कुरुक्षेत्र पुलिस द्वारा भूतपूर्व विधायक श्री धर्मसिंह राठी पर किये गये पाशविक अत्याचार को लोकतन्त्र की हत्या बताया। श्री शास्त्री जी ने कहा कि सारा हरयाणा पुलिस कैम्प में बदल दिया गया है और विशेष कर कुरुक्षेत्र में तानाशाही व बर्बरता का नंगा नाच हो रहा है। जनता के अधिकारों का हनन किया जा रहा है।

श्री शास्त्री ने केन्द्रीय सरकार से मांग की कि कुरुक्षेत्र काण्ड की न्यायिक जाँच तुरन्त कराई जाए और दोषी अधिकारियों को दण्ड दिया जाए।

प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की बैठक सम्पन्न

जिला महेन्द्रगढ़ की सभी आर्य समाजों के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की बैठक आर्य समाज मन्दिर कनीना में १-४-७५ मंगलवार को हुई। जिसमें आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह को व्यापक रूप में मनाने का निर्णय किया गया। जिसमें ऋषि दयानन्द जी के विचारों को दीवारों पर लिखा जायेगा तथा १२ अप्रैल को प्रत्येक समाजों में सामूहिक, यज्ञ, प्रभात फेरियों का आयोजन किया जायेगा और बैठक में सर्वसम्मति से जयप्रकाश नारायण द्वारा संचालित जनसंघर्ष का समर्थन किया गया और जून मास में वैदिक आश्रम रेवाड़ी में ५०० युवकों का शिविर लगाया जायेगा।

हरिश्चन्द्र
वैदिक आश्रम दिल्ली रोड, रेवाड़ी

पंजीयन क्रमांक RTK 28
Lic. to Post without
Pre Payment No. P-13

रोहतक
१५ अप्रैल १९७५

राजधर्म प्रकाशन के लिये राजधर्म प्रेस, रोहतक से स्वामी अग्निवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित । फोन : ८८२

आर्य

राजधर्म

वर्ष—८ 12/12 वार्षिक शुल्क—२०) रुपये
अंक—३ एक प्रति—१) रुपया

प्रधान सम्पादक :
स्वामी अग्निवेश

सम्पादक :
जगवीरसिंह

१२ दिसम्बर १९७६

सम्पादकीय

६ दिसम्बर का फैसला

सैंकड़ों आर्य समाजों के प्रतिनिधियों ने मिलके फैसला किया है कि अब हम आर्य समाज का मजाक उड़ता नहीं देख सकते। यदि हम संगठित होकर देव-दयानन्द की इस पावन संस्था को पतित करने वाले चन्द अनार्य समाजी नेताओं को आर्यत्व का आचरण अपनाने के लिए मजबूर नहीं कर सकते तो हमारा कृण्वन्तो विश्वमार्यम तथा आर्य राष्ट्र की स्थापना का नारा लगाना कोई अर्थ नहीं रखता। आज आकाश बाँधूं, पाताल बाधूं करने से पहले अपने चूने वाले छप्पर को बांधने की आवश्यकता है। आर्य समाज जींद में छ: दिसम्बर को हुई महत्वपूर्ण बैठक में सैकड़ों कार्यकर्ताओं ने जिस गम्भीरता और शालीनता के साथ अपने उत्तरदायित्व का परिचय दिया है उसे देखते हुये यह विश्वास होता है कि आर्य समाज का भविष्य अत्यन्त उज्जवल है और आर्य समाज के गौरव के साथ खिलवाड़ करने वाले व्यक्तियों को अब सावधान होकर अपनी चूहलबाजी पर नियन्त्रण करना होगा।

श्रद्धेय स्वामी इन्द्रवेश जो के नेतत्व में संगठित इस युवक शक्ति ने आर्य जगत के क्षितिज पर एक नई आशा की आभा बिखेरी है। १८-१९-२० फरवरी १९७७ को स्वामी श्रद्धानन्द अर्धशताब्दी सम्मेलन हरयाणा के प्रसिद्ध नगर जीन्द में करने का यह फैसला एक निर्णायक भूमिका अदा करेगा। हरयाणा के कोने-कोने से लाखों नर-नारी सम्मेलन में भाग लेंगे। तथा वर्तमान में आर्य समाज में चल रहे ऊहापोह के वातावरण में कांतिकारी एवं रचनात्मक कार्यक्रम तैयार करके निराशा का वातावरण सदा-सदा के लिए दूर किया जा सकेगा

श्रद्धानन्द बलिदान अर्ध शताब्दी समारोह की अध्यक्षता स्वामी इन्द्रवेश करेंगे

बै[illegible]ों अति उत्साह के व[illegible]रण में हरयाणा के कोने-कोने से आये हुये कार्यकर्ताओं ने हर्षध्वनि के के साथ स्वामी इन्द्रवेश से १८-१९-२० फरवरी को होने वाले इस समारोह के अध्यक्ष पद के भार को सम्भालने का आग्रह किया। स्वामी इन्द्रवेश ने बैठक में घोषणा की कि यह सम्मेलन आर्य समाज के आंदोलन में ऐतिहासिक भूमिका अदा करेगा जिसमें स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से प्रेरणा लेकर सैंकड़ों युवक आर्य समाज को अपना जीवन समर्पण करेंगे। उन्होंने कहा कि आर्य समाज के कार्य में गति लाने के लिए सैंकड़ों युवा संन्यासी तैयार होने चाहिए जो रात दिन वैदिक धर्म के प्रचार में जुट सकें।

संयोजक का कार्यभार रामधारी शास्त्री ने सम्भाला

सम्मेलन के संयोजक का गुरुत्तर भार श्री रामधारी जी शास्त्री ने अपने कन्धों पर लिया है। श्री शास्त्री जी पिछले दस वर्षों से आर्यसमाज के क्षेत्र में संगठन का कार्य कर रहे हैं। उन्होंने सिंहगर्जना करते हुए घोषणा की है कि इस सम्मेलन की प्रचण्ड जन-शक्ति को देखकर आर्य समाज के उन मठाधीशों की आंख खुल जाएंगी जो एयरकन्डीशण्ड बंगलों में बैठकर केवल बातें बनाना ही जानते हैं तथा युवा शक्ति के मार्ग में बाधक बनना चाहते हैं। शास्त्री जी ने विशेष-रूप से जींद, कुरुक्षेत्र तथा हिसार की जनता से अपील की है कि वह सम्मेलन को सफल बनाने के लिए अपनी पूरी संगठन शक्ति का परिचय दें।

हम किसी से पीछे नहीं रहेंगे

स्वामी चन्द्रवेश जी वेद प्रचार अधिष्ठाता ने कहा कि इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिए प्रत्येक आर्य को अपना योगदान देना होगा आज हमें समय

देने वाले कार्यकर्ताओं की आवश्यकता है। ऐसे व्यक्ति जो एक मास या दो मास का समय दें उन्हे आगे आना चाहिए और ओ३म् ध्वज लेकर गांवों में निकल जाना चाहिए। अपनी विशेष घोषणा करते हुये आपने कहा कि हम दिन रात एक करके सम्मेलन के लिए कार्य करेंगे और किसी से पीछे नहीं रहेंगे।

हरयाणा ही नहीं पूरे उत्तर भारत की आर्य-जनता सम्मेलन में भाग लेगी

पंजाब प्रांत के युवकों के नेता स्वामी वेदानन्द व सभामन्त्री पं० मुरारीलाल जी, आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान स्वामी शक्तिवेश, दिल्ली के वेद प्रचार अधिष्ठाता प्रेमपाल शास्त्री एवं पश्चिमी उत्तर प्रदेश में युवा आंदोलन में जुटे हुए श्री राजपाल आर्य आदि ने अपने विशेष सन्देश भेज कर यह स्पष्ट किया कि जीन्द का यह सम्मेलन केवल हरयाणा ही नहीं वरन् समस्त उत्तर भारत के आर्यों का सम्मेलन होगा और वे अपने-अपने प्रान्तों से हजारों आर्य लोगों को स्पेशल बसों व रेलों द्वारा लेकर पहुँचेगे। बैठक में गुरुकुल कांगड़ी के कुलपति डा० गंगाराम भी पधारे।

आर्य जनता से अपील

सम्मेलन की तिथि एवं स्थान निश्चित हो गये हैं। सम्मेलन के कर्णधारों ने अपनी जिम्मेदारी ले ली है। पर आर्य जनता की जिम्मेदारी शेष है। इस सम्मेलन की सफलता आर्य जनता के सहयोग पर ही निर्भर करती है। तन-मन और धन तीनों प्रकार के सहयोग की आवश्यकता है। कोई भी आर्य परिवार या व्यक्ति न बचे जिसका दान इस कार्य हेतु प्राप्त न हो। इस महान यज्ञ को सफल करने के लिए हर आर्य को जुटना पड़ेगा। आज से ही प्रतिज्ञा कर लेवें कि १८-१६-२० फरवरी १६७७ को जीन्द जरूर पहुँचना है। आर्यों अब हमारी परीक्षा का समय है। किसी भी प्रकार से हमें आलस्य नहीं करना चाहिए तथा घर-घर जाकर आर्य समाज एवं वैदिक धर्म प्रचार करने के लिए जुटना चाहिए। हमें पूरा विश्वास है कि आपका आशीर्वाद अवश्य ही मिलेगा और यह आयोजन सफल होगा।

कुछ राजधर्म के बारे में:—

'राजधर्म' जो आर्य समाज में युवा आन्दोलन एवं आर्य राष्ट्र निर्माण के लिए क्रान्तिकारी विचारों से ओतप्रोत एक शंखनाद है। अपने आठ वर्ष के जीवन काल में काफी उतार-चढाव देख चुका है। कई बार विशेष परिस्थितियों के कारण इसे बन्द भी करना पड़ा परन्तु यह निरन्तर जन जागृति का उदघोष करता ही रहा है। इससे प्रेम करने वालों की संख्या थोड़ी नहीं है परन्तु देश एवं विदेश में राजधर्म को एक नजर में पढ़ जाने वाले हितैषी महानुभाव हैं हजारों। राजधर्म का बीच में आप लोगों से कुछ सम्पर्क सा टूट गया था। किन्तु अब फिर राजधर्म आपकी सेवा करने लगा है। चूंकि यह पत्र आपके सहयोग एवं सदभावना पर ही टिका हुआ है अतः हम आपसे कुछ प्रश्नों का उत्तर चाहते है ताकि हमें यह मालूम हो जाऐ कि राजधर्म पाक्षिक के प्रति आप क्या विचार रखते हैं। आपके अमूल्य सुझावों को दृष्टिगत रखते हुए हम इसमें कुछ विशेष परिवर्तन कर सकेंगे जिससे आपको यह और अधिक पसन्द आये और आप इसे लोकप्रिय बनाने में अधिक सहयोग दे सकें।

१ सबसे पहले तो कृपया आप यह बतायें कि राजधर्म का साईज क्लेवर आदि आपके पसन्द है या इसमें कुछ परिवर्तन किया जाऐ।

२ राजधर्म को सुन्दर, आकर्षक और व्यापक बनाने के लिए इसमें विज्ञापनों की भी बड़ी जरूरत होगी। क्या आप यह बताने का कष्ट करेंगे कि आप इस दिशा में क्या और कैसी सहायता दिला सकते हैं।

३ एक बात आवश्यक है जो आप से पूछनी है। यह कि आपको किस प्रकार के लेख एवं सामग्री पसन्द हैं। आप इसे लेख प्रधान पत्रिका के रूप में देखना चाहते हैं या समाचार प्रधान। और आजकल आपको राजधर्म कैसा लग रहा है।

इसके अतिरिक्त और भी जो विचार आपके दिमाग में राजधर्म के सुन्दर एवं आकर्षक बनाने के लिए आये तो आपको कुछ समय निकालकर चिन्तन करना पड़ेगा तथा हमें लिखना होगा एक अन्तर्देशीय या कम से कम एक कार्ड। पर यह बात आप सच मानिए आपके द्वारा दिए गये सुझावों से राजधर्म का स्वरूप काफी कुछ निखर जाएगा और निश्चित ही यह आपको अधिक पसन्द आएगा। आशा है पाठकगण अवश्य विचारेंगे। —जगवीर सिंह

ग्रामीण जीवन का वास्तविक नाटक

भरतु और खजानी

★ धर्म सिंह नाहान

पात्र—परिचय

चौ० भरतु	गांव का एक किसान
श्रीमति खजानी	चौ० भरतु की पत्नी
रिसाल सिंह	एक आर्य समाजी, किसान, गांव का वैद्य ।
श्रीमति कमला	रिसाल सिंह की पत्नी
चौ० बदलू राम	एक सादा भोला ग्रामीण
खड्डू	चौ० भरतु का पुत्र
श्रीमति राजो	खड्डू की पत्नी
पाखण्डी बाबा	साधू [पौराणिक]
अन्य पात्र	खजानी की सहेलियां,

डाक्टर साहब, बैंक मैनेजर, पटवारी हल्का तथा ग्रोम प्रकाश मजाकिया

पहला दृश्य

समय : सुबह चार बजे

स्थान : चौ० भरतु का मकान

चौ० भरतु ग्रपने मकान में खरांटे भरकर सो रहा है। कभी खांसी उठती है तो कभी खर्राटे भरता है

खजानी मन्दिर में शिवजी की पूजा करने जाती है। भरतु की चारपाई से टकरा कर गिरती है, बाल्टी, लोटा, माचिस, जोत ग्रादि हाथ से छूट जाते हैं, गुस्से में लाल होकर गालियां देने लगती है।

खजानी: जाया रोया मरै बी कोन्या, बारणै कै ग्रागै ग्रड़ा के सोवैगा इस खाट ने, के चोर ले जा सै इन ढांडयां ने। कड़ै धरया था करमां में। दुनिया मरगी इसका बखत ना ग्राया, मेरी तै चुड़ी बी होगी। मरगी, हाय गोड़े बी फूटगे।

भरतु: (उठते हुए) चूड़ी फूटगी त ग्रौर पहर लिए मणियार कै की। क्यों कलह कररी से, राजा करण कै बखत।

ग्रोम० ताऊ तेरी ऐ पहन के पछतावै से, मणियार कै की ग्रौर पहरादे।

खजानी: जागै था रे, बोल्या बी कोन्या, छोह तै इसा ग्रावै से बाल्टी मारूं जले के सिर में।

ग्रोम०: ताई बाल्टी मारै इतने चावल क्योना मार दे। तेरा के लागै सै।

भरतु: कड़ै जा सै? इन ढांडयां ग्रागे न्यार ते गैर ज्या, फेर दोफारै ग्रावेगी।

खजानी: गैर ग्यार लिए ग्रापे, मेरे बस का कोन्या; मरण दे।

ग्रोम०: ताऊ, ताई के, भिरड़ै पाल रहा सै, भींयें भीं करै से।

भरतु: भाई, ग्रोमप्रकाश! इस खड्डू ने जगाईये रै।

ग्रोम०: (सोड़ खींच कर) ताऊ! कोन्या वो तै। बेरा ना कित गया।

भरतु: बस भाई जाणग्या. सांझ तै ग्रायाए ना दिखै से, कित्ते पी रहा होगा। जा बेटा एक होक्का भरल्या, देखिए के कामल छोरा सै ग्रपने ग्राप ते काम, बखते उठ ले सै, ग्रर दिखे पढण लागज्या सै। ग्रर इन म्हारे ग्राल्यां का के करले नीचां का बेरा बी ना पाटै कित जां सै।

ग्रोम०: ले ताऊ पी ले, (हुक्का ग्रागे सरकाते हुए)

भरतु: भर ल्याया भाई, ले बेटा माड़ी सी मेरी खाट ने भितर ने सरकवा दे, ग्राज तै किमे सीलक सी लागै स, फेर पढ़िये।

(दोनों चारपाई उठाकर अन्दर चले जाते हैं)

खजानी अपनी सहेलियों सहित मन्दिर में प्रवेश करती है तथा बाबा [साधू] को आदेश बाबा करके सम्बोधित करती है। अन्दर से आवाज नहीं आती है।

खजानी: आज बाबा किस बड़ग्या हे, बोलता ऐ कोन्या।

ओम०: के गोसे काढण बड़ रहा सै, आइया पड़ा होगा किते कूए में।

एक सहेली: यो नपूता आगग्ये पावै से, किते जा ले।

(अन्दर से बाबा आता है)

बाबा: आनन्द करती रहो माई की बेटी, किमे बखत तैं आगी आज तै, के बात सै।

खजानी: आज दशहरे का मेला सै ना बाबा, ज्यांह माड़ी सी बखत तैं उठली थी। मेले में जाणा सै।

बाबा: मेरी तांही के ल्यावैंगी, माई की बेटी, मेले मां ते।

ओम०: तेरी ताहीं बाबा नेजु ल्यावैंगी।

बाबा: मैं क्या करूंगा बच्चा नेजु का।

ओम०: फाँसी खा लिए बाबा, और के करैगा।

बाबा: बोलने की तमीज नहीं है।

ओम०: हां बाबा माड़ासा पाट रहा सै।

बाबा: माई की बेटी, तुम पूजा पाठ करलो, मैं माड़ी सी चाह बना लूं।

खजानी व उसकी सहेलियां: ले बाबा दूध पी ले, के काढैगा चाह मां तैं।

बाबा: (दुध के लोटे पकड़ते हुए) आज तो माई की बेटी मौज कर दी। (दुध पीता है)

ओम: हां, बाबा जै आडे १० दिन बी डटग्या तै तने पाल के इसा बना देंगी, जिसी मण्डी की बच्छिया हो सै।

[सभी सहेलियां पूजा-पाठ करती हैं, जय गणेश देवा, जय गणेश देवा, माता तेरी पार्वती, पिता महादेवा।]

ओम०: मैं और मेरी मेवा, मैं ओर मेरी मेवा, माता मेरी रामप्यारी, पिता सहदेवा, राबड़ी का भाग लागै, झाडां का खेवा।

खजानी: महाराज जी, दोयेक शब्द सुणादे नैं ज्ञान के।

बाबा: ले माई तम के रोज कहो सो, (गाता है) राख ले यशोधा मईया छेड़न लाग्या तेरा कन्हैया, संग में ले कर बलराम भईया, गईया चरावै था। हां हां गईया चरावै था। ।।टेक।।

हम आई थी सखी सहेली, आके बिन्द्राबन में खेली,
ले ली ओट गऊ की जाके,
आगे सी ने हाथ लफा के, भाज लिया मेरी मटकी ठाके,
जमना में बहावे था ।।१।।

हां हां गईया चरावे था।...............

हम न्हां थी म्हारे वस्त्र ठाके, टांग दिये रूखां पै जाके,
आंख बचा के लुकग्या बन में
जल में रहगी खड़ी नगन में, बाकी कोन्या मेरे तन में,
यो जलती नैं जलावै था ।।२।।

हाँ हां गईया चरावै था।...............

गवाल सिखा के रंग गिरवाया, गऊ मुत्र तैं तन भिजवाया,
न्याया कोन्या दुर दौड़ ग्या।
चलती का मेरा हाथ मोड़ ग्या, प्रेम का बन्धन कतई तोड़ग्या,
गैर तै प्रीत लगावै था।

हां हां गईया चरावै था..............

धर्मसिंह नादान कहै सै, इस ने सब भगवान कहें से,
महान कहें सैं जग का पालक,
अजर अमर सृष्टि संचालक, हम जाणां यो तेरा बालक,
हमने सतावै था।

हां हां गईया चरावै था ....

[भजन नं २]

मैंने गुरु मिले रहदास सासरे ना जांगीं, ना जांगी
हां मैंने गुरु मिले रहदास, सासरे ना जाँगी।

[चौ० मोलड़ का प्रवेश]

मोलड़: [गुस्से से] तम सासरे ना जाओगी तै थारा फूफा जा गा के, सरम ना आवती उलटे उलटे गीत गांवतीं, हाण्डैं सैं घर ते ठाली: यो सै तो पीसण खोटण का बखत, गोबर पानी, धार डोकी का योहे बखत थारे खडदू करण का, न्यों के भगवान मिलै सै, वो बहरा ना; जो थारे रूक्यां ते आज्या गा। सुन रे भोडे तने अच्छे-अच्छे भजन कीर्तन करने हो तो कर, तेरा मन्दिर सै चाहे १० दिन डट, अर जै तनें उलटे-उलटे पाखण्ड सिखाए तै दिखै से या जेली, मारूंगा पार लिकड़ ज्यागी। सरम ना आवती तेरी मां ते बी उमर बड़ी से जिन धोरै तूं पां दबवावै सै। अर डूब ते ये रही सैं असल में उपर की दाब हुया करै, किमे ल्याज सरम हुया करै, भाज्य जाओ आड़े तै।

ओम०: हां बाबा पास पकड़ जाईये ना तै मारैगा आल्य में आल्य पिल ज्यागी।

बाबा: भाई, बहोत छोहला माणस सै [गुस्से वाला आदमी है।] आर्यसमाजी होगा।

[शेषांश पृष्ठ २५ पर]

वैदिक समाज में नारी

डा० कुमारी सुशीला आर्या

आज यह कहा जाता है कि वर्तमान सभ्यता ने नारी को उठाया है किन्तु क्या यह सत्य है ? प्रस्तुत लेख में प्रसिद्ध लेखिका व विचारशील बहन से सुन्दर ढंग से वैदिक समाज में नारी की स्थिति पर प्रकाश डाला है ।

वर्तमान युग में हमें नारी के प्रति दो प्रकार की विचारधाराएं देखने को मिलती हैं, एक वह जिसके अनुगामी नारी को नरक का द्वार, पैर की जूती, विद्या प्राप्ति के अयोग्य और न जाने कितनी गर्हिता होने का दावा करते हुऐ निम्नांकित प्रकार की उक्तियां इस विषय में उद्धृत करते हैं "नारी शूद्रौ नाधीयतामिति श्रुतिः" । यद्यपि इस प्रकार की भर्त्सनीय विचारधारा अब अतीत का विषय बनती जा रही है तथापि इसके पक्ष पोषक हमारे समाज में अभी विद्यमान हैं ।

दूसरे प्रकार की विचारधारा तथा कथित उन प्रगतिगामियों की है जो नारी को नारीत्व की शृँखलाओं से मुक्त करने का दम भरते हैं । वे सभी क्षेत्रों में नर नारी की प्राकृतिक तथा सामाजिक भिन्नता की उपेक्षा करते हुए स्त्री को पुरुष के समान स्तर पर लाने का मानो ठेका लिए हैं । संसार देख रहा है और देखेगा कि ये दोनों ही विचारधाराएँ विनाश के पथ पर ले जाने वाली हैं । वस्तुतः जीवन का सामान्य एवं स्वाभाविक वेद विहित मध्यम मार्ग है जिस पर चलने से नारी का अपना तथा समाज व देश जाति का कल्याण निश्चित है ।

वेद का नारी के प्रति दृष्टिकाण समन्वयवादी है । वह नारी को समाज में सर्व प्रकारेण गौरव-पूर्ण पद पर स्थापित करता है । वेद में नारी की समुचित उन्नति, तथा उसके व्यक्तित्व के विकास के लिए वांछनीय स्वतंत्रता तथा मर्यादा, पुरुष के समान स्थान होते हुए भो नारी सुलभ विनम्रता का मणिकाञ्चन संयोग हुआ है । सर्व प्रथम तो वेद ने नारी जाति के लिए सभी ज्ञान विज्ञान के द्वार खोल दिये हैं । इस क्षेत्र में कोई ऐसा बन्धन नहीं जो उसे पुरुष वर्ग से पीछे धकेलता हो । अथर्ववेद के ब्रह्मचर्य-सूक्त में जहां पुरुषों के लिए ब्रह्मचर्य की महिमा वर्णित है वहां 'ब्रह्मचर्येण तपसा कन्या युवानं विन्दते पदतिम्' की उक्ति द्वारा ब्रह्मचर्य साधन अथवा ब्रह्मज्ञान की प्राप्ति का समाना-धिकार नारी को प्रदान किया गया है । वेद के अनुसार नारी 'पत्युरनुव्रता' होती हुई भी सम्राज्ञी के गरिमाशाली पद को अलंकृत करती है ।

सम्राज्ञ श्वसुरे भव, सम्राज्ञी श्वश्रुवांभव ।
ननान्दरि सम्राज्ञी भव, सम्राज्ञी अधिदेवृषु ॥

वह पति के पक्ष में 'अघोर चक्षु' होती हुई भी शत्रुघाती सन्ततिघ को जन्म देने एवं विजयिनी बनने की कामना करती हुई इस प्रकार की गर्वोक्ति कर सकती है ।

मम पुत्राः शत्रुहणोऽथ मे दुहिता विराट् ।
उताहमस्मि संजया पत्यौ मे श्लोक उत्तमः ॥

यद्यपि वह 'सुमंगली वधू, है । उसका तन, मन, धन पति के लिए है तथापि हमें इस भ्रम को कभी भी अपने मन में स्थान नहीं देना चाहिए कि वेद प्रकारान्तर से इस प्रकार के विवरणों द्वारा नारी को पुरुष की क्रीत दासी बना कर रखने के पक्ष में है । पति के लिए तो वह 'सखा' शब्द से संबोधित की ही गई है, साथ ही घर के अन्य सदस्यों सास श्वसुर ननंद देवरों के बीच भी उसकी स्थिति रानी' की सी है । वह न केवल घर के मानव-प्राणियों के लिए अपितु गवादि पशुओं के लिए भी 'शिवा' रूप धारण कर जीवन क्षेत्र में उतरती है ।

शिवा भव पुरुषेभ्यो गोभ्यो अश्वेभ्यः शिवा ।
शिवास्मै सर्वस्मै क्षेत्राय शिवा न इहेधि ॥

वह पुरुष की 'अनुव्रता' अवश्य है । पति के लिए मधुमती एवं शान्तिपूर्ण वाणी बोलने का उपदेश भी वेद में दिया गया है किन्तु पति को भी कहीं कभी उसे

अपमानित व प्रताड़ित करने का प्रमाण-पत्र नहीं दिया।

उसके पारिवारिक सम्बन्ध निर्वाह तथा प्रजोत्पति विषयक उत्तरदायित्व पुरुष से भी गुरुतर हैं किन्तु यह उसके लिए हीनता की नहीं अपितु गौरव की बात है। हम सदैव किसी व्यक्ति की योग्यता शक्ति बुद्धि व दक्षता के परिमाप से ही उसके कन्धों पर उत्तरदायित्वों का योग्यता पूर्वक निर्वाह करने की बलवती आशा रखते हैं नारी कितनी महती गौरव-शालिनी है। ज्ञानवती, बुद्धिमती, सहिष्णुता की प्रतिमा, त्याग व सेवा का साक्षात् प्रतीक, माधुर्य मंडिता। वेद चाहता है नारी अपनी इन योग्यताओं शक्तियों पर मान करे, गर्व का अनुभव करे। वह अपने सही स्वरूप को समझे, अपने कर्त्तव्य को पहचाने अपने दायित्वों को उपेक्षित न पड़ा रहने दे, और वेद के शब्दों में कहे।

अहं केतुरहं मूर्धा अहमुग्रा विवाचनी।

वह ज्ञानमयी है, इसी से जीवन में उसे मूधन्य स्थान प्राप्त हुआ है उपरोक्त विवरण से हमें यह धारणा भूल कर भी नहीं बनानी चाहिये कि वेद ने नारी को केवल घर की चारदिवारी में ही सीमित कर छोड़ा है। जहां वेद ने नारी को घर की रानी माना है वहां सामाजिक क्षेत्र में कार्य करने से भी वंचित नहीं किया। यह ठीक है कि सामाजिक हित की दृष्टि से उसका सबसे बड़ा उत्तरदायित्व गृहिणी और वीर प्रसविनी माता के रूप में है। देश और समाज की यही तो सब से बड़ी सेवा है। मंचों पर भाषण देने को लालायित रहने वाली आधुनिक नारियां समाज-सेवा के इस मर्यादित तथा उपयोगी रूप को क्या समझें? वेद ने अध्यापिका तथा उपदेशिका के रूप में नारी के सामाजिक कार्य-क्षेत्र की यत्र तत्र चर्चा की है। प्रस्तुत मंत्र में नारी के विद्वत्ता प्रभृति गुणों की प्रशंसा करते हुए उससे सदुपदेश की कामना की गई है—ड़े रन्ते हव्ये चन्द्रेऽदिते शरस्वति महि विश्रुति। एता तेऽध्न्ये नामामि देवेभ्यो मां सुकृत ब्रूतात्।

नारी के रूप की मनोहरता तथा आल्हादकता के उल्लेख में जहां 'रन्ता' 'काम्या' 'चन्डा' आदि विशेषता प्रयुक्त किए गए हैं वहां सरस्वती मही विश्रुति उसकी विदत्ता तथा सुकृतं ब्रुभान सामाजिक कार्यशीलता के परिचायक हैं।

सच तो यह है कि वेद में नारी के विविध रूपों में कर्त्तव्यों का विशद तथा आलंकारिक वर्णन पाया जाता है। वेद ने नारी का निष्ठामयी ब्रह्मचारिणी, सुपत्नी, वीर प्रसूमाता, उत्कृष्ट कोटि की उपदेशिका तथा पथ प्रदर्शिका के रूप में देखा है। लज्जाशीलता मर्यादा और शालीनता ही उसके बहुमूल्य आभूषण हैं वेद स्त्री को कुचल कर रखने का पक्षपाती कदापि नहीं किन्तु वह मधुर शब्दों में उसे अधः पश्यस्व मां उपरि की चेतावनी दिए बिना भी नहीं रह सकता।

दो शब्दों में कहना चाहें तो वेद का नारी के प्रति दृष्टिकोण अत्यन्त संतुलित, संयत तथा समन्वित है। वर्तमान नारी की कुत्सिति निर्लज्जता को वहाँ कोई स्थान नहीं। मर्यादा की कड़ी का छिन्न-भिन्न कर पश्चिमी सभ्यता को अन्धी में सुध-बुध भूल कर उड़ी जा रही भारतीय नारी जितनी शीघ्र वेद की चेतावनी पर कान दे, ऋजु वैदिक राजमार्ग को अपनाए उतना ही उत्तम है। यदि नारी जाति को जीने की चाह है तो उसे वेद की ओर लौटना ही होगा। केवल वेद ही समाज में उसे उसके योग्य स्थान दिलाने की क्षमता रखता है अन्यथा उसका अधोपतन अवश्यम्भावी है भले ही वह प्रगतिवादियों के लम्बे कदमों से कदम मिला कर चले अथवा तथाकथित पुरातनतावादियों के बन्धन रूपी नरक में दम घोट कर सड़ती रहे। जीवन दायिनी उन्मुक्त वायु में श्वास लेने के लिए उसे वेद की ही शरण में आना पड़ेगा।

यह अंक आपको कैसा लगा?

राजधर्म के सुविज्ञ पाठकों से प्रार्थना है कि इसके हर अंक के लेखों एवं सम्पादकीय' पर अपनी समालोचना अवश्य भेजने की कृपा करें जिससे आपकी रुचि जानकर तथा आपके सुझाव, मानकर हम राजधर्म को उत्तरोत्तर एक व्यापक व शक्तिशाली पत्रिका बना सकें। आपके इस सहयोग के लिए हम आपके विशेष आभारी होंगे।

—सम्पादक

स्वदेशी आन्दोलन और गांधी जी

श्री प्यारे लाल

स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाले प्रत्येक देश के लिए स्वदेश में बनी वस्तुओं या स्वदेशी की भावना के प्रति प्रेम संघर्ष का एक आवश्यक चरण रहा है ।

स्टाम्प अधिनियम को रद्द करने के बारे में किए गए एक प्रश्न के उत्तर में हाउस आफ कामंस की एक समिति के सामने पेश होने पर १९७६ में बेंजामिन फ्रेंकलिन से पूछा गया "अमरीकी किस बात पर गर्व किया करते थे ? "

" ग्रेट ब्रिटेन के पैन्शनों और उत्पादों को अंगीकार करने में " इसके बाद उनसे पूछा गया, " अब उनके लिए गौरव का विषय क्या है ? "

"जब तक नए वस्त्र बनाने की स्थिति में न हो; तब तक अपने फटे पुराने कपड़ों के फिर से पहनना "

जार्ज वाशिंगटन की फौज को " द होम सन्स" कहकर भी पुकारा जाता था । वे इसे प्रशंसा का सूचक मानकर गर्व के साथ स्वीकार करते थे । हमें बताया कि जब जार्ज वाशिंगटन ने अमरीका के पहले राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली तो उस समय उन्होंने सिर से लेकर पांव तक अमरीका में ही, अधिकांश रूप से माउंट वर्नन में, तैयार किए गए वस्त्र पहन रखे थे ।

स्वदेशी आन्दोलन का प्रसार

हमारे अपने देश में बंगाल विभाजन के पश्चात् स्वदेशी आन्दोलन का बढ़ना राष्ट्रवादिता के लिए किए गए संघर्ष के इतिहास में एक सुनहरी घटना है । व्हाईट हाल के दबाव में आकर जब लार्ड रिपन ने लंकाशायर के कपड़े पर आयात शुल्क समाप्त कर दिया तो इसका विरोध करने के लिए प्रसिद्ध विधि शास्त्री और वाइसराय की परिषद में मनोनीत सदस्य विश्वनाथ नारायण मंडलीक मोटी खादी के बने कपड़े पहन कर परिषद में उपस्थित हुए । कलकत्ता के एक कालेज के विद्यार्थियों ने अपनी परीक्षाओं में उत्तर पुस्तिकाएं लेने से इंकार कर दिया क्योंकि उनमें विदेश में तैयार किए गए कागज का उपयोग किया गया था तब छात्रों को स्वदेशी कागज से तैयार उत्तर पुस्तिकाएं उपलब्ध कराई गई बच्चों ने अपने जन्म दिवस पर विदेश में बने खिलौने को लेना या विदेश में तैयार जूतों को पहनना बन्द कर दिया । स्वर्गीय लोकमान्य तिलक ने महाराष्ट्र में देसी वस्तुओं का उत्पादन फिर से आरम्भ करने के लिए अपना प्रसिद्ध 'पैसा कोष' आरम्भ किया । बाल-लाल-पाल के त्रिगुट को पूरा करने के लिए बी० सी० पाल और लाला लाजपतराय ने लोकमान्य द्वारा चलाए गए स्वदेशी अभियान में अपना सहयोग दिया ।

ब्रिटेन में बने कपड़ों का बहिष्कार

ब्रिटेन में बने कपड़ों के बहिष्कार को प्रभावी बनाने के लिए बंगाल में जनता के चन्दे से बंग लक्ष्मी वस्त्र मिल चालू की गई । आदर्शवाद की प्रथम लहर के बाद मिल मालिकों की मुनाफाखोरी की प्रवृत्ति ने उनकी स्वदेशी की भावना पर काबू पा लिया और स्वदेशी भावना धीरे-धीरे समाप्त होती गई ।

स्वदेशी के बारे में गांधी जी का विचार

मूल रूप से स्वदेशी आन्दोलन का आशय स्वदेशी उद्योगों को पुनर्जीवित करने के लिए इसका बचाव के उपाय और ब्रिटेन में बने सामान का बहिष्कार कर ब्रिटिश को बाहर निकालने के लिए राजनीतिक और आर्थिक हथियार के रूप में प्रयोग करना था । महात्मा गांधी ने इस आन्दोलन के उग्रराष्ट्रीयतावादी तत्वों को दूर करके, इसके आधार को विस्तृत करके और इसमें एक मानवतावादी या आत्मिक दृष्टिकोण को शामिल करके इसे पुनर्जीवित किया । आन्दोलन के विषय की तह में जाकर उन्होने यह घोषणा की ।

"स्वदेशी में स्वार्थ के लिए कोई स्थान नहीं है"... स्वदेशी का सच्चा रूप सबकी सेवा की चरम सीमा है । स्वदेशी का सच्चा समर्थक किसी के भी प्रति विरोधी भावना से प्रेरित नहीं होगा...स्वदेशी घृणा की विचा-

रधारा नहीं है। यह निःस्वार्थ भाव से सेवा करने का सिद्धान्त है जिसकी जड़ें वास्तविक अहिंसा अर्थात् प्रेम में समाई हुई है।

स्वदेशी आन्दोलन से उग्रराष्ट्रवादिता के तत्व दूर करने से इस आन्दोलन को सही परिप्रेक्ष्य में रखने में मदद मिली। इससे पहले इसे सही परिप्रेक्ष्य में न रखे जाने के कारण ही मिल मालिक देश भक्ति की भावना का आदेश करने में सफल हो सके थे।

पहले गैर अधिवासी यूरोपियों द्वारा सचालित मिल को जिनमें विदेशों के दक्ष कर्मचारी और मशीन भी लगी होती थी, भारतीय उद्योग समझा जाता था यद्यपि वे ग्राम जनता के लिए हानिकारक हो सकती थी। गांधी जी ने फिर से व्याख्या कर यह बताया कि भारतीय उद्योग स्पष्ट रूप से ग्राम जनता के हित में होना चाहिये। इसमें लगी पूंजी व मशीनें भी भारतीय होनी चाहिए और साथ ही इसमें काम करने वाले मजदूरों को उचित वेतन दिया जाना चाहिए। उन्हें आरामदायक आवास की सुविधा भी दी जानी चाहिए। मालिकों द्वारा श्रमिकों के बच्चों के कल्याण की गारंटी दी जानी चाहिए। नई परिभाषा के अनुसार लाखों लोगों के हितों को पूरा करने वाली कोई भी वस्तु स्वदेशी हो सकती थी चाहे उसमें पूंजी और श्रम विदेशी ही क्यों न हो बशर्तें कि वे प्रभावी भारतीय नियंत्रण में हों। इस प्रकार खादी सच्ची स्वदेशी होगी चाहे इसमें लगी पूंजी विदेशी हो और भारतीय मंडल ने पश्चिमी विशेषज्ञ भी नियुक्त क्यों न कर रखे हो। इसके विपरीत किसी भी व्यक्ति द्वारा तैयार किए जाने वाले रबड़ के या अन्य जूते विदेशी होंगे "चाहे उन्हें तैयार करने के लिए भारतीय श्रमिक लगे हों और पूंजी भी भारत की हो"। नहीं, बल्कि यह तो 'दुगनी विदेशी होगी' क्योंकि इसका नियंत्रण विदेशी हाथों में होगा और तैयार वस्तु चाहे कितनी भी सस्ती क्यों न हो, उससे गांवों में चमड़ा कमाने वाले और गांव के चमार बेकार हो जाएंगे।

स्वदेशी के आधार का विस्तार

स्वदेशी के आधार का विस्तार करने के लिए गांधी जी इस बात पर जोर देते थे कि जिस प्रकार देसी उद्योग वरीयता के हकदार होते हैं और विदेशी उत्पादकों से उनकी रक्षा की जाती है, उसी प्रकार कुटीर और ग्रामीण उद्योगों को भी मशीन से बने सस्ते सामान, चाहे ये देशी हों या विदेशी, से संरक्षण मिलना चाहिए। शहरों द्वारा गांव के शोषण पर रोक लगनी चाहिए। शहरों को ग्रामीण क्षेत्र के फालतू माल के सम्पोरियमों के रूप में काम करना चाहिए।

गांव की दस्तकारी का संरक्षण

इस प्रकार जब कांग्रेस ने अन्तरिम सरकार बनाई और प्रान्तों में अपनी सरकारें बनाई तो गांधी जी ने लोकप्रिय मंत्रियों से कहा कि यह वे हृदय से यह मानते हैं कि उन्होंने ग्राम जनता के रक्षकों और उनके हितों के प्रतिनिधियों के रूप में यह कार्यभार संभाला है, तो वे जो भी काम करें उसमें गावों में बसी देश की लगभग अस्सी प्रतिशत जनता के प्रति चिन्ता का भाव होना चाहिए। उन्हें मिल मालिकों से अपने वस्त्र व सूत के उत्पादन को केवल अच्छी किस्म तक ही सीमित रखने को कहना चाहिए। ग्रामवासियों की आवश्यकता के लिए साधारण और मोटे किस्म के कपड़े के उत्पादन का पूरा काम हाथ से कताई करने वालों और हाथ से बुनने वालों के लिए छोड़ा जाना चाहिए। यदि मिल मालिक मोटे किस्म का कपड़ा या सूत तैयार करते भी हैं तो यह उत्पादन केवल पड़ोसी देशों की आवश्यकता पूर्ति के लिए निर्यात करने के लिए ही किया जाना चाहिए। इसी प्रकार मंत्रियों द्वारा ग्रामीणों को यह सूचना दी जानी चाहिए कि एक निर्धारित सीमा निश्चित किए जाने के बाद वस्त्र मिलों में उन्हें कोई वस्त्र नहीं दिया जाएगा या उन्हें बेचने की अनुमति नहीं दी जायगी। इसलिए उन्हें निश्चित तिथि तक वस्त्र और सूत की सप्लाई के बारे में अपने आपको आत्मनिर्भर बना लेना चाहिए। सरकार को उन्हें ऋण उपकरण, कच्चे माल, विपणन संगठन, प्रशिक्षण कर्मचारी और सुविज्ञ परामर्श के रूप में सुविधाएं उपलब्ध करानी चाहिए। उन्हें अपने आसपास बिजली से चलने वाली मशीनें या हाथ से कुटे चावल, हाथ से पिसा आटा, कोल्हू से निकले खाने के तेल, गुड़ आदि जैसे गांवतै में यार किए जाने वाले सामान के साथ प्रतियोगिता करने वाली मशीन से तैयार वस्तुओं का न खाने की छूट अवश्य दी जानी चाहिए।

[शेषांश पृष्ठ २९ पर]

वैदिक धर्म का प्रचार कैसे हो ?

● शान्ता कुमार आर्य

आर्यसमाज के संगठन को बने पूरे सौ वर्ष हो चूके हैं । वर्ष १९७६ में इसकी अन्तर्राष्ट्रीय शताब्दी भी मनाई जा चुकी है । इसके साथ -२ सारे भारत में प्रान्तीय स्तर पर भी शताब्दियों की धूम मची है । परन्तु बड़ी आन्तरिक वेदना के साथ लिखना पड़ रहा है कि सामाजिक क्षेत्र में जितना क्रान्तिकारी परिवर्तन का प्रचार कार्य अब तक होना चाहिए था उतना नहीं हुआ ।

कृण्वन्तो विश्वमार्यम, जो बोले! सो अभय कहकर तोते की तरह गायत्री की रट लगाकर, बिना किसी क्रियात्मक प्रोग्राम के केवल 'सन्ध्या हवन करके, मन-वचन-कर्म की समानता न होकर केवल लोकेषणायुक्त सत्संगो का आयोजन करके भले ही हम दिल बहला लें, पर यह कोरी दिल बहलाने वाली बात है । इस प्रकार आर्यसमाज की हालत संतोषजनक नहीं है । अतः आज जरूरत इस बात की है कि आर्यजगत के समस्त विद्वान, नेतागण तथा कार्यकर्त्तागण बड़ी ईमानदारी वं गम्भीरता के साथ सोचकर वैदिक धर्म के प्रचार के लिए कुछ ठोस उपाय निकालें ।

आज आर्यसमाज में एक तरह का गुरडम सा आ गया है । हम सिद्धान्त से दूर होकर स्वार्थ के गढ़े में गिरते जा रहे हैं। अधिकार व चौधराहट की भूख इतनी बढ़ गई है कि सारी शक्ति इसी में लगाकर रह गई । इस प्रकार समाज में ऐसे लोगों की बहुतायत हो गयी है जो ऋषि के सिद्धान्तों को जानते तक नहीं । या फिर अपने स्वार्थों के लिए सिद्धांतों को खूंटी पर टाँग देते हैं । जहां सिद्धांतों के लिए लोग बलिदान होते थे वहाँ आज के लिए सिद्धान्तों की दिन दहाड़े जान बूझकर हत्या की जाती है। यही कारण है कि आर्यसमाज केवल मन्दिरों की चार दीवारी में समा कर रह गया है । शिक्षित वर्ग आर्यसमाज से कटता चला गया है तथा नौजवानों का आना प्रायः बन्द सा हो गया हैं । आज हालत यह है कि कई समाजों की सदस्यता में तो दस-दस साल से कोई बढ़ोतरी नहीं हो रही है । अतः प्रत्येक आर्यसमाज के पुराने अधिकारियों को चाहिए कि उक्त बातों से ऊपर उठकर धैर्य एवं सहनशीलता का परिचय देते हुए नवयुवकों को अपनी ओर आकृष्ट करके आर्यसमाज में लावें और उनका मार्ग दर्शन करें ।

दूसरी ओर अत्यन्त महत्वपूर्ण बात यह है कि हमारी कथनी और करनी में बड़ा भारी अन्तर आ गया है । कहने को तो हम वर्णाश्रम के प्रबल समर्थक है । परन्तु व्यवहार में उससे कोसों दूर हैं । आज आश्रम पद्धति को मानने वाले जो वानप्रस्थ और संन्यास से दूर भागते हैं । उन्हें दयानन्द या श्रद्धानन्द का नाम लेने का अधिकार क्या हैं ?

जो अपने बच्चों को गुरुकुल में पढ़ाते हैं या चोटी जनेऊ व स्वदेशी खान पान करवाते हैं । यदि नहीं तो फिर उक्त बातों के समर्थन का क्या औचित्य है ? "वसुधैव कुटुम्बकम्" करने का क्या औचित्य है जबकि हम ग्राम जनता का दिल भी नहीं जीत पाते हैं । कहने का अभिप्राय यह है कि उन जोशीले गानों व जयघोषों से क्या फायदा यदि हम अपने जीवन को उनके अनुकूल नहीं बना पाते । अतः प्रत्येक आर्य बन्धु को अपनी कथनी व करनी, मन-वचन-कर्म की समानता पैदा करनी चाहिए और आत्मनिरीक्षण करके अपनी कमियों को दूर करके सच्चे मायने में आर्य समाज के प्रचार व प्रसार का संकल्प लेना चाहिए ।

प्रायः यह भी देखने में खूब आता है कि आर्यसमाज मन्दिर की बिल्डिंग की बनावट व सजावट में या किराए पर चढ़ाने के लिए अतिरिक्त कमरे बनाने में ही अधिकारी रुचि लेते हैं या फिर समाज मन्दिर की चार दीवारी के भीतर ही वार्षिक उत्सव पर पूरा तन-मन-धन लगाकर साल-भर के लिए निश्चित हो जाते हैं और समझ बैठते हैं कि हमने आर्यसमाज का या देव दयानन्द का ऋण उतार दिया है परन्तु वास्तव में समाज की पूर्ण शक्ति लगनी चाहिए । गरीब व अछूत भाईयों में जाने, उनके दुख - सुख मे शामिल होने , वहाँ आर्यसमाज का प्रचार करने, उनकी बस्तियों में आर्यसमाजें स्थापित करने , छोटे - २ हैण्ड बिल या ट्रेक्ट छपवा कर वितरण करने देहेज, प्रथा व अन्य सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध प्रचार करने, नशाबन्दी का प्रचार करने आदि में

कुछ स्वार्थी, पदलोलुप, जातिवाद व प्रान्तवाद के समर्थक व सिद्धान्त हीन मठाधीश लोग आज आर्यसमाज को अपनी दुकान समझकर इसका प्रयोग अपनी उदरपूर्ती व झूठी लीडरी चमकाने के साधन के रूप में कर रहे हैं। इस चक्र को चलाने के लिए इन लोगों ने स्वयं ऐसी परिस्थितियां पैदा करके हर जगह फूट के बीज बो रखे हैं। यही कारण है कि आर्यसमाज में छोटी से छोटी इकाई से लेकर अन्तर्राष्ट्रीय संगठन तक आपसी झगड़े, पार्टीबाजी व वैमनस्य बढ़ते जा रहे हैं। जो इस संगठन की पवित्रता एवं सार्वभौमिकता को नष्ट कर रही है। इसमें तो कोई दो राय नहीं कि हमारा संगठन एक होना चाहिए और आपस के झगड़े समाप्त होने चाहिए। परन्तु यहां पर मेरा मुख्य इशारा उन लोगों की की तरफ हो जो कि इस प्रकार की कठिन घड़ी में (जहां आपसी वैमनस्य के कारण समाज को बड़ा भारी नुकसान हो हो रहा हो) तटस्थ बनकर बैठे हैं। मैं इन 'तटस्थ' भाइयों से कहना चाहता हूँ कि आर्य समाज की पवित्र कसौटी पर तटस्थ उसे कहते हैं जो भीरु हो अथवा सत्य असत्य कहने सुनने का साहस न रखता हो। अतः प्रत्येक बन्धु को आर्यससमाज के चतुर्थ नियम के अनुसार अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर सत्य को जानकर सत्य का ही प्रचार करना अथवा पक्ष लेना चाहिए। तभी हमारा संगठन मजबूत होकर वैदिक धर्म का प्रचार कर सकेगा।

अन्तिम बात यह है कि आर्यसमाज के विभिन्न संगठनों से विभिन्न पत्र पत्रिकाएं (साप्ताहिक, पाक्षिक व मासिक आदि) वैदिक धर्म के प्रचार लिए प्रकाशित की जा रही है। परन्तु बड़े दुख के साथ लिखना पड़ता है कि उन पत्रिकाओं के सम्पादक महोदय लिखते समय अपना धैर्य एवं अस्तित्व खो बैठते हैं। उनकी कलम पवित्र एवं स्वच्छन्द नहीं रही है। ये लोग भी जहां पत्रिकाओं में वैदिक-धर्म का प्रचार होना चाहिए था वहां आपस के वैमनस्य को पत्रिकाओं के माध्यम से तोड़-मरोड़कर झूठ व फरेबी ढंग से प्रकाशित करते हैं अतः पत्रिकाओं के संचालकों व सम्पादकों से यह विनम्र प्रार्थना है कि इस तरह के निम्न स्तर से ऊपर उठकर केवल वैदिक धर्म का ही प्रचार करें जिससे राष्ट्रीय चरित्र उज्जवल हो और हमारा देश महान बने। यदि खण्डन ही करना है तो दहेज प्रथा, मादक द्रव्यों सामाजिक रूढ़ियों, नकली भगवानों व अवैदिक सम्प्रदायों का करें। जिन्होंने सारे समाज को खोखला कर रखा है। ऐसा करने पर ही आर्यसमाज की नींव मजबूत हो सकेगी। ★

परिचर्चा

४४वां संविधान संशोधन
कितना जायज, कितना नाजायज ?

संविधान की खास विशेषतायें

● के० परासरण
एडवोकेट जनरल, तमिलनाडु

देश भर में चर्चा का विषय बन जाने से संविधान में प्रस्तावित संशोधन अब काफी प्रसिद्ध हो गया है। इस छोटे लेख में मैं प्रस्तावित संशोधनों के बारे में विस्तृत रूप से न बताकर केवल इसकी मुख्य विशेषताओं की ही चर्चा करूंगा तथा इन संशोधनों के विरुद्ध की गई कुछ आलोचनाओं का उत्तर भी दूंगा।

प्रस्तावना

संविधान की प्रस्तावना में, जिसमें यह कहा गया है। "हम, भारत के लोग, भारत को एक सम्पूर्ण प्रभुत्व — सम्पन्न लोकतंत्रात्मक गणराज्य बनाने के लिए दृढ़ संकल्प होकर "दो अन्य शब्दों को शामिल करने का प्रस्ताव रखा गया है ताकि यह इस प्रकार पढ़ा जाये: "...... सम्पूर्ण प्रभुत्व-सम्पन्न समाजवादी धर्म निरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य"। 'समाजवादी' शब्द शामिल करने पर कुछ आलोचना की गई है। यह आलोचना यह कह कर की जाती है कि भिन्न-भिन्न लोगों, लोगों केलिए समाजवाद भिन्न-भिन्न और यहां तक कि परस्पर विरोधी अर्थ रखता है। इस लिए इस शब्द को शामिल किए जाने से सविधान का बुनियादी ढांचा स्पष्ट होने की बजाय अधिक खतरनाक रूप से अस्पष्ट हो जाएगा। इस प्रकार की आलोचना तर्क संगत नहीं है। प्रस्तावना संविधान की प्रवृत्ति को संक्षेप में दर्शाती है। संशोधन द्वारा शामिल किए जाने वाले "समाजवादी" शब्द को अब हमारे संविधान के प्रावधानों के सन्दर्भ में ही समझा जाना चाहिए। प्रस्तावित संशोधन में प्रयोग किए जाने वाले शब्द का अर्थ 'शार्टर आक्सफोर्ड डिक्शनरी" में दिए गए अर्थ के समान है। इसमें "समाजवाद" शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया हुआ है:-

"उत्पादन् पूंजी, भूमि, सम्पत्ति आदि पर कुल मिलाकर समाज के स्वामित्व व नियंत्रण तथा सभी के हित में इनके संचालन या वितरण का समर्थन करने वाले सामाजिक संगठन का सिद्धान्त या नीति"

यह जानने के लिए कि अब शामिल किए जाने वाले "समाजवाद' शब्द का यही अर्थ है इसके लिए हमें संविधान के वर्तमान अनुच्छेद ३९ को देखना होगा। अनुच्छेद की धारा (क) और (ख) के अनुसार राज्य अपनी नीति को इस प्रकार लागू करने का विशेष प्रयत्न करेगा जिससे समाज के भौतिक साधनों का स्वामित्व और नियंत्रण इस प्रकार वितरित हो जिससे आम हित का उद्देश्य बहुत ही अच्छी प्रकार पूरा हो सके और सम्पत्ति और उत्पादन के साधन आम आदमी के अहित में कुछ आदमियों के हाथों में इक्ट्ठे न हों "समाजवाद" शब्द शामिल किए जाने के विरुद्ध की गई आलोचना का यह पर्याप्त उत्तर है।

निर्देशक सिद्धान्त

अनुच्छेद ३१-ग में भी संशोधन करने का प्रस्ताव है ताकि यह स्पष्ट हो जाए कि राज्य नीति के सभी या किसी विशेष निदेशक सिद्धान्त को प्रभावी बनाने वाले किसी भी कानून को संविधान के १४, १९ या ३१ अनुच्छेदों के अन्तर्गत प्रदत्त अधिकारों को कम करने या समाप्त करने के आधार पर अमान्य या रद्द नहीं समझा जाएगा। इस संशोधन के बारे में वास्तव में कोइ आपत्ति नहीं होनी चाहिए क्योंकि भाग तीन में दिए गए अधिकारों और भाग चार में उल्लिखित राज्य नीति के निदेशक सिद्धान्तों के बीच संतुलित बनाना ही होगा। यदि अधिकारों को दृष्टि से देखा जाए तो भाग तीन को मौलिक अधि-

कार कहा जा सकता है, लेकिन यदि कर्त्तव्य के दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह कहा जा सकता है कि भाग तीन राज्य के इस कर्त्तव्य को बताता है कि वह ऐसे कानून न बनाए जिससे इस भाग में प्रदत्त अधिकार कम हों - या समाप्त हों। भाग तीन मे राज्य के कर्त्तव्य और व्यक्तिगत नागरिकों को प्रदत्त अधिकारों (भाग तीन में प्रदत्त गैर-नागरिकों के कुछ अधिकारों के बारे में भी) के बारे में बताता है। लेकिन भाग चार में राज्य और समाज को कुछ कर्त्तव्य पूरा करने को कहा गया है।

यह एक दम समझ लेना चाहिए कि समुदाय व समाज के हित व्यक्तिगत हितों से ऊपर रहने चाहिए। अनुच्छेद १६ पर एक दृष्टि डालने से पता लगता है कि धारा १६ (२) से लेकर ६ तक मौलिक अधिकारों पर लगाए गए उचित प्रतिबन्ध अन्य बातों के साथ-साथ सार्वजनिक हित में हैं और उनका उद्देश्य भारत की सम्पूर्ण प्रभुसत्ता व अखण्डता को बनाए रखना है। स्पष्ट रूप से यह इस बात पर जोर डालता है कि सार्वजनिक हित निजी हितों से ऊपर होने चाहिए। यदि ऐसा है तो भाग तीन भाग चार के नीचे रहना चाहिए। दुर्भाग्यवश, अनुच्छेद ३८ में की गई घोषणा से कि भाग चार के प्रावधानों को किसी भी न्यायालय द्वारा लागू नहीं करवाया जा सकेगा, लेकिन इस भाग में दिए गए सिद्धांत देश के शासन में बुनियादी होंगे, इस प्रकार की कुछ गलतफहमी और भ्रम पैदा हो गया है कि भाग तीन का दर्जा भाग चार से ऊंचा होना चाहिए। भाग चार किसी भी कानूनी न्यायालय द्वारा लागू नहीं किया जा सकेगा, यह उल्लेख इस लिए किया गया था क्योंकि कुल मिलाकर यह अधिकार समाज को सामूहिक रूप से दिया गया था और समाज द्वारा यह अधिकार लागू करने में व्यवहारिक कठिनाइयां सामने आएगी और कुछ व्यक्ति या समूह अनुच्छेद ३७ में दिए गए समाज के अधिकार को लागू करने की आड़ में जलदबाजी में कानून बनाने का प्रयत्न कर सकते हैं। इन्हीं कारणों से अनुच्छेद ३७ को इस रूप में ढाला गया था। इसके अलावा इन विधेयक सिद्धांतों को लागू करने का तरीका देश पर शासन करने वाली सरकार द्वारा इनके अनुकूल कानून बनाना है न कि भाग चार के प्रावधानों को कानूनी अदालत में लागू करवाना। इस प्रकार की गलतफहमी और भ्रम होने पर कि भाग तीन का स्थान भाग चार के ऊपर होना चाहिए, को ध्यान में रखते हुए अनुच्छेद ३१ (ग) में प्रस्तावित संशोधन करना आवश्यक समझा गया ताकि भाग चार में उल्लिखित राज्य नीति के निर्देशक सिद्धान्तों में शामिल सिद्धांतों को पूरा करने के लिए राज्य द्वारा तैयार की गई नीति को कार्य रूप देने के लिए बनाए गए किसी भी कानून को अनुच्छेद १३ के प्रावधानों के साथ पढ़े जाने वाले १४, १६, और ३६ अनुच्छेदों के मापदण्ड के अनुसार की गई जांच के आधार पर रद्द न किया जा सके। व्यक्तिगत हित को सार्वजनिक हित से नीचे रखा जाना चाहिए।

अनुच्छेद ३१ (घ) में निदेशन

अनुच्छेद ३१ (घ) में जो शब्द जोड़ने का प्रस्ताव रखा गया है उनका उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि राष्ट्र विरोधी कार्यों को रोकने या उन पर प्रतिबंध लगाने के लिए बनाया गया कोई कानून इस आशा पर रद्द न किया जा सके कि यह अनुच्छेद १४, १६ और ३१ में उल्लिखित मौलिक अधिकारों के विरुद्ध है। उपरोक्त अनुच्छेद में बताए गए राष्ट्र विरोधी कार्यों के जिन्हें कठोरता से रोका जाना चाहिए, संबध में किसी प्रकार की बहस की गुंजायश नहीं छोड़ी जानी चाहिए। बताए गए राष्ट्र विरोधी कार्यों का आशय (१) "किसी भी आधार पर भारत के राज्य क्षेत्र के किसी भाग का अध्यवर्ण या भारत के राज्य क्षेत्र के किसी भाग को अलग करना......" (२) "भारत की प्रभुसत्ता और अखंडता या राज्य को सुरक्षा अथवा राष्ट्र को एकता को खतरा पदा करना' (३) "विधि द्वारा स्थापित सरकार की शक्ति के प्रयोग द्वारा उलटने की स्थिति पैदा करना (४) "आन्तरिक उपद्रव करने या लोक सेवाओं को विच्छिन्न करना" और (५) "विभिन्न धर्मों, मूल वंशों, भाषाओं या प्रदेशों के समूहों या जातियों या समुदायों के बीच सौहार्द्र को खतरा पैदा करने या नष्ट करना है। यह कहने की काई आवश्यकता ही नहीं है कोई भी देशभक्त नागरिक इस प्रकार के कार्यों में भाग नहीं लेगा और न ही लेना चाहिए। राष्ट्र की एकताऔर अखंडता हमारे राष्ट्र का सत्व है।

विधि द्वारा स्थापित किसी भी लोकतांत्रिक सरकार को संविधान द्वारा अधिकृत लोकतांत्रिक माध्यम के सिवाय किसी अन्य तरीके से उलटने का प्रयास नहीं किया जाना चाहिए। जो लोग आन्तरिक गड़बड़ी पैदा करने या लोक सेवाओं की मांग करने जैसा कोई काम करते हैं वे राष्ट्र के सबसे बड़े शत्रु हैं और

प्रत्येक नागरिक को भारत में रहने वाली जनता में भाईचारे की ऐसी भावना को प्रोत्साहन देने का प्रयत्न करना चाहिए। जो भाषाई, क्षेत्रीय और वर्गगत अनेकताओं से परे हो। उन्हें यह समझना चाहिए कि वे सभी एक राष्ट्र के नागरिक हैं। यदि ऐसा है तो संविधान के अनुच्छेद ३१ (घ) में जोड़े जाने वाले शब्दों के बारे में क्या आपत्ति हो सकती है?

समाजवाद का लक्ष्य

भाग चार में किए जाने वाले प्रस्तावित संविधानों में यह शामिल किया गया है कि १) राज्य समान न्याय और निशुल्क कानूनी सहायता की व्यवस्था करेगा। २] उपयुक्त विधान द्वारा किसी उद्योग में लगे हुए उपयोग, स्थापनों अथवा अन्य संगठनों के प्रबन्ध में कार्यकारी द्वारा भाग लेना सुनिश्चित करेगा और ३] देश के पर्यावरण की रक्षा तथा उनमें सुधार करने और बन तथा अन्य जीवों की सुरक्षा का प्रयास करेगा। भारी संख्या में अनपढ़ होने से हमारे नागरिक अपने कानूनी अधिकारों के प्रति सजग नहीं हैं। अनेक नागरिक अपनी आर्थिक परिस्थिति के कारण वे वह कानूनी सहायता प्राप्त नहीं कर पाते जो आर्थिक रूप से सबल सौभाग्यशाली व्यक्ति पाने में सफल रहते हैं। इसलिए, यह सुनिश्चित करने के लिए कि कोई भी नागरिक अपनी आर्थिक या अन्ध अयोग्यता के कारण न्याय पाने से वंचित न रहे धारा ३९ क जोड़ने की आवश्यकता थी। अनुच्छेद ४३ क जोड़े जाने से संबंधित संशोधन से कर्मकारों को उद्योग में अपना सच्चा व उचित स्थान मिलेगा और यह समाजवाद का लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में एक कदम होगा।

मूल कर्तव्य

प्रस्तावित संशोधनों में मूल, कर्तव्य' शीर्षक से भाग चार क भी शामिल किया जाना है। उक्त कर्तव्यों के बारे में उठाई गई आपत्तियों में कोई जान नहीं है बल्कि वे तो केवल आपत्ति उठाने की खातिर ही उठाई गई हैं। ये तो वे मूल कर्त्तव्य हैं जो प्रत्येक नागरिक को अपने देश के प्रति पूरे करने होते हैं। भाग तीन, भाग चार और भाग चार क को इकठा रख कर देखने मे एक संतुलन बन जाता है क्योंकि भाग तीन में राज्यों को प्रत्येक नागरिक (और कुछ अधिकारों के संबंध में गैर-नागरिकों के प्रति भी) के प्रति कर्त्तव्य पूरा करने को कहा गया है, भाग चार में राज्य को पूर्ण समाज व समुदाय के प्रति अपना कर्त्तव्य पूरा करने की व्यवस्था दी गई है और इसके बदले में भाग चार क में नागरिकों से राज्य और समाज के प्रति, जो उसे कानून का संरक्षण प्रदान करते हैं, कर्त्तव्य पूरा करने को कहा गया है।

क्या कुछ अविवेकी तत्वों ने अपना विरोध प्रकट करने के लिए संविधान और राष्ट्रीय ध्वज को जला देने जैसे कारनामे नहीं किए? क्या इस घटना के परिणामस्वरूप राष्ट्रीय सम्मान का अपमान निवारक. अधिनियम, १९७१ नहीं बनाया गया? क्या यह कहा जा सकता है कि नागरिकों को संविधान का पालन करने, इसके आदर्शों और संस्थानों, राष्ट्रीय ध्वज और राष्ट्रीय गान का आदर करने जैसे उनके कर्त्तव्यों का हरण करना गलत है? इसी प्रकार भाग चार में शामिल किए जाने वाले अन्य कर्त्तव्य पूर्ण रूप से तर्क संगत हैं और उनमें से प्रत्येक के बारे में बताना आवश्यक है। यहां कुछ कर्त्तव्यों की चर्चा करते हुए कहा जा सकता है कि स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आन्दोलन को प्रेरित करने वाले उच्च आदर्शों को संजोये रखना और उनका पालन करना, देश की रक्षा करना और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करना, भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातत्व की भावना का निर्माण करना जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो. ऐसी प्रथाओं का त्याग करना जो स्त्रियों के विरुद्ध है, सार्वजनिक सम्पति की रक्षा करना और हिंसा से दूर रहना प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है ये नीरस बातें नहीं हैं बल्कि इनका उद्देश्य प्रत्येक नागरिक को उनके कर्त्तव्यों के बारे में अहसास जगाना है। नागरिक यह अनुभव करेंगें किये उनके पवित्र कर्त्तव्य हैं जिन्हें संवैधानिक कर्तव्य का दर्जा दिया गया है।

उच्च न्यायालय और उच्चतम न्यायालय के अधिकार क्षेत्र और न्यायाधिकरणों के गठन से संबंधित संशोधनों के बारे में इतना अधिक कहा जा चुका है कि स्थान की कमी होने की वजह से इस लेख में मैं इस संशोधन के बारे में अधिक नहीं कहूंगा। यहां यह कहना काफी होगा कि केन्द्रीय कानूनों की वैधता के बारे में राज्यों के उच्च न्यायलयों द्वारा निर्णय किए जाने को उनके अधिकार क्षेत्र से बाहर किए जाने एकरूपता सुनिश्चित की जा सकेगी। इस प्रकार के कानूनों की वैधता के बारे में उच्चतम न्यायालय ही अंतिम निर्णय देना और वह भी थोड़े से बहुमत से नहीं बल्कि दो तिहाई बहुमत से। इस प्रकार का निर्णय करने वाली बेंच में कम से कम सात न्याया-

धीश होगें। जब संसद जनता की इच्छा को वाणी देनी है तो यह न्यायोचित ही होगा कि यदि इसे रद्द किया ही जाना है तो कम से कम सात न्यायाधीशों का दिमाग इस पर विचार करें। यदि कोई कानून रद्द किया जाए तो ऐसा कम बहुमत से नहीं बल्कि दो तिहाई से होना चाहिए।

प्रशासनिक न्यायाधिकरण

श्री पालकीवाला ने, जिन्होंने कुछ प्रस्तावित संशोधनों की कड़ी अलोचना की है, संघ या किसी राज्य के कार्यों से सम्बद्ध लोक सेवाओं और पदों के लिए भर्ती तथा नियुक्त व्यक्ति की सेवा की शर्तों के बारे में विवादों और शिकायतों के न्याय निर्णय के लिए प्रशासनिक न्यायाधिकरणों के गठन के प्रस्ताव का स्वागत किया है। उनका कहना है: "राज्य व केन्द्र, दोनों स्तरों पर सेवा संबंधी विषयों का फैसला करने के लिए प्रशासनिक न्यायाधिकरण का गठन करने और श्रम न्यायालयों और औद्योगिक न्यायालयों से आने वाली अपीलों का फैसला करने के लिए एक अखिल भारतीय श्रम अपीली न्यायाधिकरण का गठन किए जाने का प्रस्ताव समान रूप से श्रेष्ठ है।" उनकी आपत्ति केवल यह है कि उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालयों को राजस्व व अन्य मामलों के बारे में अनुच्छेद ३२ और २२६ के अन्तर्गत दिए गए आदेश अधिकार क्षेत्र से वंचित रखने को केवल जनता का विश्वास पाने योग्य इस प्रकार के सक्षम और निष्ठ न्यायाधिकरणों की स्थापना के बाद ही उचित ठहराया जा सकता है। यह कोई उचित तर्क नहीं है कि पहले न्यायाधिकरणों की स्थापना की जानी चाहिए और उनके काम आरम्भ करने के पश्चात ही संविधान में संशोधन किया जाना चाहिए। इसी प्रकार प्रस्तावित अनुच्छेद ३२ ख के प्रावधान राजस्व के मामलों, विदेशी मुद्रा; सीमा शुल्क की सीमा के पार होने वाले आयात - निर्यात, भूमि सुधार, शहरी सम्पति की अधिकतम सीमा, खाद्य सामग्री आदि के उत्पादन, वसूली और पूर्ति के बारे में प्रशासनिक न्यायाधिकरणों का गठन दिए जाने से संबद्य हैं। आदेश अधिकार क्षेत्र का प्रयोग करते हुए न्यायालय किसी भी आदेश को इस प्रकार के सीमीत आधारों पर कि यह आदेश सहज न्याय भावना के विरूद्य है या यह अधिकार क्षेत्र से बाहर है चुनौती दे सकते थे।

दूसरी तरफ कानूनी न्यायधिकरण किसी भी विषय की पूरी और पर्याप्त जांच करके तथ्य और कानून दोनों दृष्टियों से फैसला कर सकते थे। अब न्यायालयों द्वारा मामलों को निपटाने में जो आवश्यक विलम्ब हो जाता था उससे बचा जा सकेगा। इससे हमेशा के लिए काफी राहत भी मिलेगी। अपनी बात को और स्पष्ट करने के लिए मैं एक उदाहरण दे सकता हूं। यदि आदेश कार्यवाही में किसी असैनिक कमचारी को बरखास्त किए जाने की चुनौती दी जाती है, यदि न्यायालय उसके दावे को सही ठहराता है, तो वह अपने सामने रखे गए एक न एक कानूनी आधार पर बरखास्तगी के आदेश को रद्द कर देगा। फिर नए सिरे से निर्णय लिए जाने के के लिए यह मामला न्यायधिकरण के पास ही भेजा जाएगा। इससे अधिक विलम्ब होगा ही। दूसरी तरफ यदि यह एक कानूनी न्यायधिकरण है तो मामले को वापिस भेजने की कोई आवश्यकता ही नहीं है क्योंकि न्यायधिकरण स्वयं ही विवाद के गुण-दोषों को जाँच करके फैसला कर सकता है। यदि किसी कर्मचारी (उदाहरण के तौर पर असैनिक कर्मचारी) का बरखास्तगी का आदेश रद्द कर दिया जाता है तो उसे अपने वेतन की बकाया राशी वसूल करने के लिए आवेदन करना होगा। जैसा कि उच्चतम न्यायालय ने व्याख्या की है आज कानून के अनुसार बकाया वेतन की कार्यवाही का कारण बरखास्तगी का आदेश रद्द किए जाने के समय पैदा नहीं होता। एक बार बरखास्तगी का आदेश अमान्य करार दिए जाने पर यह समझा जाना चाहिए कि वेतन हर महीने उपार्जित हो रहा है क्योंकि आदेश प्रारम्भ से ही रद्द समझा जाना चाहिए।

फैसला किए जाने तक बरखास्तगी के आदेश को रद्द किए जाने के बारे में उच्च न्यायालय में चल रही कार्यवाही को याचिका देश, लेट से पेटेन्ट के अन्तर्गत अपिल द्वारा और बाद में उच्चितम न्यायालय में अपिल करके देर तक लटकाया जा सकता है इस कार्यवाही में अनेक वर्ष लग जाते हैं। इसी बीच तीन वर्ष से अधिक समय के बकाया वेतन वसूली के दाव पर रोक लग सकती थी। यदि मामले को कार्यवाही के अन्तिम रूप के समाप्त होने से पहले ही, वेतन वसूली के दावे पर नेक से बचने के लिए, बकाया वेतन के लिए आवेदन कर दिए जाने की स्थिति में आवेदन खारिज कर दिए जाने की संभावना रहती है क्योंकि बरखास्तगी का आदेश इसके बारे में

अंतिम फैसला लिए जाने तक लागु रहेगा। इसका परिणाम केवल यही होता है कि कार्यवाहियों की संख्या रह जाती है और नागरिक की सौ कठिनाई होती हैं। प्रशासनिक न्यायधिकरण का गठन किए जाने से ये सभी कठिनाइयां और असंगतियां दूर हो जाएंगा।

जनता के सामाजिक-आर्थिक कल्याण के लिए संशोधन

इसलिये प्रस्तावित संशोधनों का उद्देश्य सम्पूर्ण प्रभूता सम्पन्न समाजवादी धर्मनिरपेक्ष लोकतंत्रात्मक गणराज्य के कार्य को सुचारु रूप से चलाने का मार्ग प्रशस्त करना है। कुछ प्रस्तावित संशोधन अनावश्यक हैं और कुछ संविधान के बुनियादी ढांचे के प्रतिकूल हैं, इस प्रकार के ढांचे गलतफहमियों पर आधारित हैं और ये संभवत निहित स्वार्थी की उद्देश्य पूर्ति के लिए ही किए गए हैं। प्रस्तावित संशोधनों के पारित होते ही देश में सच्चे मायनों में लोकतंत्र का मार्ग प्रशस्त हो जायगा। राज्य नीति के निर्देशक सिद्धान्तों को लागू करने, नागरिक द्वारा मूल कर्त्तव्यों का अनुभवी करने और उनका पालन करने तथा मूल अधिकारों और राज्य नीति के निर्देशक सिद्धान्तों व नागरिकों के मूल कर्त्तव्यों के बीच संतुलन बनाये जाने से देश काफी सीमा तक समाजवाद के लक्ष्य की तरफ तेजी से बढ़ सकेगा। ★

फिल्मी अश्लीलता कब तक ?

● हरीन्द्र कुमार

देश के जहां अन्य क्षेत्रों में प्रगति हो रही है, वहीं हमारे भारतीय फिल्म निर्माता देश को नर्क की गहरी खाई में धकेलने की पूरी कोशिश कर रहे हैं। फिल्मों में आज भी अश्लीलता, नग्नता, अपहरण, मारधाड़ बलात्कार व गन्दे हाव भाव आदि के दृश्य ठसाठस भरे हुए हैं। अब जब कि जमाना बदल रहा है, इन स्वार्थी पूंजीपति फिल्म-निर्माताओं के कानों पर जूं तक नहीं रेंगी है। पैसे को भगवान समझने वाले ये स्वार्थी फिल्म-निर्माता देश के प्रति अपना कोई कर्त्तव्य नहीं समझते। इनका उद्देश्य है तो केवल इतना कि कामुकता का नंगा नाच दिखा कर, पश्चिमी सभ्यता का सिक्का हमारे देश के नौजवानों के दिलों-दिमाग में जमा कर, उनकी जवानी को सरे बाजार लुट लेना।

आज भारत की ८०% जनता फिल्मों द्वारा मनोरंजन करती है। इनमें ६०% हमारे देश के वह भावी नौजवान हैं, जिनके कन्धों पर देश की जिम्मेदारी का भार सौंपा जाना है। परन्तु ये फिल्में हमारे देश की भावी पीढ़ी को नंगे तथा कामुकता भरे नाच, बलात्कार, घिनौने दृश्य दिखाकर क्या उनको अपने कर्त्तव्य के प्रति सजग रहने प्रेरणा दे सकते हैं। पश्चिमी सभ्यता के रंग में रंगे, भोगविलास में डूबे, रंगरेलियां मनाने वाले ऐसे नौजवान जिनके दिलो-दिमाग पर फिल्मी दुनिया की अमिट छाप पड़ी हुई है, क्या शहीद भगतसिंह चन्द्रशेखर आजाद, राम प्रसाद बिस्मिल आदि देश भक्तों की तरह शहीद होने का दावा कर सकते हैं। कदापि नहीं, क्योंकि इन फिल्म निर्माताओं ने हमारे देश के नौजवानों में कामकता तथा वासना की पाश्विक प्रवृत्तियों को भड़का कर उनको पशुवत बना दिया है। ये फिल्म निर्माता अपना उल्लू सीधा करना अपना परम-कर्तव्य समझते हैं। देश धर्म जाति से उन्हें कुछ लेना देना नहीं है

फिल्मी उद्योग के प्रणेता जब तक फिल्म में बलात्कार, अपहरण, मारधाड़, डाकैजनी, नंगेनाच तथा भद्दे गानों आदि के दृश्य नहीं देते तब तक वे फिल्म को अधूरी समझते हैं। सेंसर बोर्ड भी इन फिल्मों को (ए) का सार्टिफिकेट देकर पास कर देता है व्यस्कों के प्रति इनका कोई कर्त्तव्य नहीं होता। त्याग, बलिदान, आदर्श, चरित्र, शिक्षा आदि की बातों से फिल्मों को कोसों दूर रखा जाता है। जब कभी इन निर्माताओं से इस अश्लीलता के बारे में प्रश्न किया जाता है तो इसके उत्तर के लिए तोते की तरह रटा हुआ

केवल एक ही वाक्य है ''जनता जैसी फिल्में पसन्द करती है वैसी ही हम बनाते हैं'' फिल्मों की पसन्द का अन्दाजा ये फिल्मकार फिल्म के हिट होने, हाऊस फुल के बोर्ड से या थर्ड क्लास की टिकट खरीद कर देखने वाली घटिया स्तर के लोगों की भीड़ से लगाते हैं।

अपराधों की दुनिया में भी फिल्मों ने काफी तहलका मचाया हुआ है। फिल्मों में दिखाए जाने वाले बलात्कार, चोरी, डकैती आदि के दृश्यों से प्रभावित होकर अनेक नवयुवक अपराध के रास्ते पर चल रहे हैं। समाज में बढ़ते हुए भ्रष्टाचार, व्यभिचार, दुराचार, पापाचार आदि अपराधों के लिए फिल्मी दुनिया के ठेकेदार ही सर्वाधिक जिम्मेदार हैं। आजकल बाजारों में, सड़कों पर, सार्वजनिक स्थानों पर लड़कियों के साथ छेड़छाड़ करते हुए अनेक नवयुवकों को देखा जा सकता है। अनेक "सड़क छाप मजनू" लड़कियों के पीछे फिल्मी हीरो के अन्दाज में भद्दे गाने गाते देखे जाते हैं। रिक्शा, तांगे वाले, यहां तक कि स्कूल-कालेजों के लड़के व लड़कियां भी अक्सर भद्दे फिल्मी गाने गुनगुनाने में मस्त रहते हैं।

रेडियो पर सुबह से रात के ग्यारह बजे तक फिल्मी गानों को प्रसारित किया जाता है। ये गाने इतने भद्दे व अश्लील होते हैं कि दो मित्र भी उनको इकट्ठे बैठ कर नहीं सुन सकते। परिवारों में छोटे-छोटे बच्चों से लेकर ८० वर्ष तक के वृद्ध तक इन फिल्मी गानों को गुनगुनाते रहते हैं। समाज का नैतिक चरित्र इतना गिर चुका है कि मां-बाप, भाई-बहन, किसी की भी शर्म नहीं रही। इसके जिम्मेदार हैं ये स्वार्थी फिल्मी दुनिया के ठेकेदार।

स्कूल कालेजों में पढ़ने वाले कितने ही युवक व युवतियां हैं जो फिल्म अभिनेताओं से पत्र व्यवहार करना, उनके चित्रों को अपनी किताबों के बीच रखना, आटोग्राफ लेना अपनी एक बहुत बड़ी शान समझते हैं। फिल्मी हीरो की तरह ऐशो-आराम की जिन्दगी बिताने के लालच में कितनी ही लडकियों को नारकीय जीवन बिताने पर विवश हो जाना पड़ा। हीरो बनने के चक्कर में घर से भाग कर माँ बाप की आशाओं पर पानी फेर कर कितने नौजवानों को तबाही के रास्ते पर चल रहे हैं। फिल्मी हीरो आजकल के भगवान बने हुए हैं। इनका चरित्र कितना गिरा हुआ है। शराब आदि का नशा करने वाले ऐश्वर्य तथा विलासता में डूबे हुये ये लोग जनता के सामने हिजड़ों की तरह भोंडे प्रदर्शन करते है। सरकार से करों की चोरी करने वाले ये महा चोर, जो काले धन को बाथरूमों में छिपा कर नशों में चूर. कितनी ऐशो-आराम की जिन्दगी व्यतीत करते हैं। क्या कभी आपने इसका अन्दाजा लगाया है। हमारे देश की गरीब-भूखी जनता को नंगे नाच दिखा कर वासना का प्रलोभन देने वाले ये फिल्मी कलाकर जो इन्सानी की खाल में भेड़िये हैं। जनता का पैसा कितनी निर्दयता से लूट रहे हैं। इसको सभी भली भांती जानते हैं।

फिल्मी अश्लीलता का प्रभाव हमारे साहित्य पर भी बुरी तरह पड़ा है आज हजारों की संख्या में फिल्मी पत्रिकाओं एवं उपन्यासों का प्रकाशन होता है। जिनके अन्दर विचारों को दूषित करने के लिए प्रचुर मात्रा में सामग्री होती है। और उसके लिए युवा वर्ग बैचेन रहता है। बाजारों में, सार्वजनिक स्थानों पर, दीवारों पर फिल्मी पोस्टरों की भरमार रहती है। रेडियो के द्वारा भी इन फिल्मों के प्रचार करने में पूरी सहायता मिलती है।

आज जिस हद तक फिल्मी अश्लीलता बढ़ रही है उसको रोका जाना आवश्यक हो गया है। सरकार ने इस सम्बन्ध में थोड़ा बहुत प्रयास किया है पर सन्तोष जनक नहीं है। अतः इस राक्षसी कलंक को मिटाने के लिए सामाजिक, धार्मिक, व राजनैतिक नेताओं को भी गम्भीरता से सोचना चाहिए और इन फिल्म निर्माताओं के विरुद्ध कड़ाई का रुख अपना कर भारतीय संस्कृति एवं देश को युवा पीढ़ी की सुरक्षा करनी चाहिए।

अगर सरकार फिल्म उद्योग को अपने हाथ में ले लेवे तो इससे बहुत कुछ सुधार की आशा की जा सकती है। जब तक सरकार फिल्म उद्योग को अपने हाथ में नहीं लेती तब तक गन्दी व अश्लील फिल्में बनाने पर रोक लगा देनी चाहिए। वास्तव में सिनेमा उद्योग से एक जबरदस्त सामाजिक परिवर्तन लाया जा सकता है। समाज में व्याप्त कुरीतियां जैसे दहेज प्रथा, शराब खोरी, चरित्रहीनता, धार्मिक, पाखण्ड अंधविश्वास आदि बुराईयों को दूर कर एक स्वस्थ समाज का निर्माण किया जा सकता है।

विज्ञान कल, जो कितना महत्व-

शेषांश पृष्ठ २१ पर)

शहीद रामप्रसाद बिस्मिल का नवयुवकों को—

ब्रह्मचर्य-सन्देश

अमर शहीद ब्रह्मचारी रामप्रसाद जी ने भारत के नौजवानों के नैतिक पतन को देखकर युवकों का मार्ग दर्शन करने के लिए जेल की कोठड़ी में बैठकर फांसी से तीन दिन पहले अपनी आत्मकथा में एक विशेष सन्देश लिखा था। जिसमें नवयुवकों की आचारहीनता का वर्णन किया है। किसी भी देश की शक्ति उसके चरित्रवान युवक ही हुआ करते हैं। बिना चरित्र के राष्ट्रोत्थान असम्भव है। प्रस्तुत लेख में ब्रह्मचर्य की प्रेरणा देते हुए उन्होंने ब्रह्मचर्य के साधनों का भी उल्लेख किया है। युवकों को इस प्रेरणा दायक सन्देश से लाभ उठा कर जीवन निर्माण करना चाहिए।

—सम्पादक

वर्तमान समय में इस देश की कुछ ऐसी दुर्दशा हो रही है कि जितने धनी और गण्यमान्य नेता हैं, उनमें ९९ प्रतिशत ऐसे हैं जो अपनी सन्तान रूपी अमूल्य धन राशि को अपने नौकर व नौकरानियों को सौंप देते हैं। उनकी जैसी इच्छा होवे उसे बनावें। मध्यम श्रेणी के व्यक्ति भी अपने व्यवसाय तथा नौकरी इत्यादि में रहने के कारण सन्तान की ओर अधिक ध्यान नहीं दे सकते। सस्ता काम चलाऊ नौकर या नौकरानी रखते हैं। और उन्हीं पर बाल-बच्चों का भार सौंप देते हैं। ये नौकर बच्चों को नष्ट कर देते है। यदि कुछ भगवान की दया हो गई और ये बच्चे सेवकों से बच गये तो मुहल्ले की गन्दगी से बचाना बड़ा मुश्किल है। बाकी रहे सहे स्कूल में पहुँच कर पारंगत हो जाते हैं। कालेज पचहुँते-पहुँचते आजकल के नवयुवकों के सोलहों संस्कार हो जाते हैं। कालेज में पहुँच कर ये मनुष्य समाचार-पत्रों में दिये हुए औषधियों के विज्ञापन देख-देखकर दवाइयों को मगा-मगा धन नष्ट करना आरम्भ करते हैं। ९५ प्रतिशत कीआँखें खराब हो जाती हैं। कुछ को शारीरिक दुर्बलता तथा कुछ को फैशन से ऐनक लगाने की बुरी आदत पड़ जाती है। शायद ही कोइ विद्यार्थी ऐसा हो जिसकी प्रेमकथायें प्रचलित न हों। ऐसी विचित्र बातें सुनने में आती हैं कि जिनका उल्लेख करने से भी ग्लानी होती है। यदि कोई विद्यार्थी सच्चरित्र बनने का प्रयत्न भी करता है और स्कूल या कालेज में उसे अच्छी शिक्षा भी मिल गई तो परिस्थितियां जिनमें उसे निर्वाह करना पड़ता है उसे सुधरने नहीं देती। वे विचारते हैं कि थोड़ा सा इस जीवन का आनन्द ले लें। यदि कुछ खराबी पदा हो गई तो औषध का सेवन कर या पौष्टक पदार्थों से उसे दूर कर लेंगे। किन्तु यह उनकी भूल है। अंग्रेजी की कहावत है—

Only for once and for ever

तात्पर्य यह है कि यदि एक समय कोई बात पैदा हुई मानों सदा के लिए रास्ता खुल गया। औषधियाँ कोई लाभ नहीं पहुँचाती। अन्डों का जूस मछली का तेल, मांस आदि पदार्थ भी व्यर्थ सिद्ध होते हैं। सबसे आवश्यक बात चरित्र सुधारना ही होता है। विद्यार्थियों तथा उनके अध्यापकों को उचित है कि देश की दुर्दशा पर दया करके अपने चरित्र को सुधारने का प्रयत्न करें। संसार में ब्रह्मचर्य ही सारी शक्तियों का मूल है। बिना ब्रह्मचर्य-व्रत पालन किये जीवन नितान्त शुष्क और नीरस है। विद्या, बल तथा बुद्धि सब ब्रह्मचर्य से ही प्राप्त होते हैं। संसार में जितने बड़े हुए हैं, उनमें से अधिकतर ब्रह्मचर्य के प्रताप से ही बड़े बने और सैकड़ों हजारों वर्ष बाद भी उनका यशोगान करके मनुष्य अपने आपको कृतार्थ करते हैं। ब्रह्मचर्य की महिमा यदि जाननी हो तो परशुराम, राम लक्ष्मण, कृष्ण भीष्म, मेजिनी ईसा वदा रामकृष्ण, दयानंद तथा राममूर्ति की जीवनियों का अध्ययन करो।

जिन विद्यार्थियों को बाल्यावस्था में किसी बुरे कुटेव की आदत पड़ जाती है या जो बुरी संगत में पड़ कर अपना आचरण बिगाड़ लेते हैं और फिर अच्छी शिक्षा पाने पर आचरण सुधारने का यत्न करते हैं परन्तु वे सफल नहीं होते हैं। उन्हें निराश नहीं होना चाहिऐ। मनुष्य जीवन अभ्यासों का एक समूह है। मनुष्य के मन में अनेक प्रकार के विचार तथा भाव उत्पन्न होते हैं। उनमें जो उसे रुचिकर होते हैं वे प्रथम कार्य रूप में परिणत होते हैं। क्रिया के बार-बार होने से ऐच्छिक भाव निकल जाता है। और उनमें तत्कालीन प्रेरणा हो जाती है। इन तात्कालिक प्रेरक क्रियाओं की जो पुनरावृत्ति का फल है उसे अभ्यास कहते हैं। मानवीय चरित्र इन्ही अभ्यासों द्वारा बनता है। अभ्यास से तात्पर्य आदत, स्वभाव, बान है। अभ्यास अच्छे और बुरे दोनों प्रकार के होते हैं। यदि हमारे मन में निरन्तर अच्छे विचार उत्पन्न हो तो उनका फल अच्छे अभ्यास होगे और यदि मन बुरे विचारों में लिप्त हो तो निश्चय रूपेण अभ्यास बुरे होंगे। मन इच्छाओं का केन्द्र है। उन्हीं की पूर्ति के लिए मनुष्य को प्रयत्न करना पड़ता है। अभ्यासों के बनने में पैतृक संस्कार अर्थात् माता-पिता के अभ्यासों के अनुसार अनुकरण ही बच्चों के अभ्यास का सहायक होता है। दूसरे जैसी परिस्थितियों में निवास होता है वैसे अभ्यास भी पड़ते हैं। तीसरे प्रयत्नों से भी अभ्यास होता है। यह शक्ति इतनी प्रबल हो सकती है कि इसके द्वारा मनुष्य पैतृक संसार तथा परिस्थितियों को भी जीत सकता है। हमारे जीवन का प्रत्येक कार्य अभ्यासों के आधीन है। यदि अभ्यासों द्वारा हमें कार्य में सुगमता प्रतीत न होती तो हमारा जीवन बड़ा दुःखमय प्रतीत होता। लिखने का अभ्यास, वस्त्र पहनना, पठन-पाठन इत्यादि इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। यदि हमें प्रारम्भिक समय की भाँति सदैव सावधानी से काम लेना हो तो कितनी कठिनता प्रतीत होती। इसी प्रकार बालक का चलना और खड़ा होना भी है। उस समय वह कितना कष्ट अनुभव करता है, किन्तु एक मनुष्य मीलों पैदल चला जाता है। बहुत लोग तो चलते-चलते भी नींद ले लेते हैं। जैसे जेल में बाहरी दीवार पर घड़ी में चाबी लगाने वाले, जिन्हें बराबर छः छः चाबी देनी पड़ती हैं वे चलते-चलते सो लेते हैं।

मानसिक भावों को शुद्ध रखते हुए अन्तःकरण को उच्च विचारों में बलपूर्वक संलग्न करने का अभ्यास करने से सफलता अवश्य होगी। प्रत्येक विद्यार्थी नवयुवक को जो कि ब्रह्मचर्यव्रत के पालन की इच्छा रखता है, उचित है कि अपनी दिन-चर्या अवश्य निश्चित करे। खान-पान का विशेष ध्यान रखें। महात्माओं के जीवन चरित्र तथा संगठन सम्बन्धी पुस्तकों का अवलोकन करे। प्रेमालय तथा उपन्यासों में समय नष्ट न करें। खाली समय अकेला न बैठ। जिस समय कोई विचार उत्पन्न हो तुरन्त शीतल जल पीकर घूमने लगे या अपने से किसी बड़े के पास जाकर बातचीत करें। अश्लील गजलों, शेरों तथा गानों को न पढ़ें और न सुनें। स्त्रियों के दर्शन से बचता रहे। माता तथा बहन से भी एकांत में न मिलें। सुन्दर सहपाठियों या अन्य विद्यार्थियों से स्पर्श तथा आलिङ्गन की आदत न डालें।

विद्यार्थी प्रातः काल सूर्योदय से एक घण्टा पहले (प्रातः चार बजे लेकर) शैय्या त्याग कर शौचादि से निवृत हो व्यायाम करें या वायु सेवनार्थ बहार खुली हवा में जायें। सूर्योदय से ५-१० मिनट पूर्व स्नान से निवृत होकर यथा विश्वास परमात्मा का ध्यान कर सदैव कुएँ के ताजे जल से स्नान कर। यदि कुएँ का जल प्राप्त न हो तो जल को थोड़ा सा गुनगुना कर लें। गर्मियों में शीतल जल से स्नान करें। स्नान के पश्चात एक खुरदरे तौलिया या अंगोछे से शरीर को खूब मलें। उपासना के पश्चात थोड़ा सा जल-पान करे। कोई फल शुष्क मेवा दुग्ध अथवा सबसे उत्तम यह है कि गेहूं का दलिया रँधवा कर यथा रूचि मीठा या नमक डाल कर खावे। फिर अध्यन करें और दस बजे से ग्यारह बजे के मध्य में भोजन कर लेवे। भोजन में मांस, मछली, चटपटे, खट्टे, गरिष्ठ, बासी तथा उत्तेजक पदार्थों का त्याग करे। प्याज, लहसुन, लाल मिर्च, आम को खटाई और अधिक मसालेदार भोजन कभी न खावे। सात्त्विक भोजन करें। शुष्क भोजनों का भी त्याग करें। जहाँ तक हो सके सब्जी अर्थात् साग खूब खावे। भोजन खूब चबा-२ कर करे। अधिक गर्म तथा अधिक ठंडा भोजन भी वर्जित है। स्कूल अथवा कालेज से आकर थोड़ा सा आराम करके एक घंटा लिखने का काम करके खेलने के लिए जावें। मैदान में थोड़ा सा घूमें भी, घूमने के लिए चौक बाजार की गन्दी हवा में जाना ठीक नहीं। स्वच्छ वायु का सेवन

करे सायंकाल शौच जावे । थोड़ा सा ध्यान करके हलका-सा भोजन कर लें। यदि हो सके तो रात्रि को केवल दूध पीने का अभ्यास करे या फल खा लिया करे । स्वप्नदोषादिक व्याधियाँ केवल पेट के भारी होने से ही होती हैं । जिस दिन भोजन भली-भाँति नहीं पचता उसी दिन विकार होता है मानसिक भावनाओं की अशुद्धता से निद्रा ठीक न आकर स्वप्नावस्था में वीर्यपात हो जाता है। रात्रि के समय साढ़े दस बजे तक पठन-पाठन करें, पुनः सो जावें। सोना खुली हवा में चाहिए । बहुत मुलायम और चिकने बिस्तर पर न सोना चाहिए। जहाँ तक हो सके लकड़ी के तख्त पर एक कम्बल या गाढ़े की चद्दर बिछा कर सोवे । अधिक पाठ करना हो तो साढ़े नौ या दस बजे सो जावे । प्रातः साढ़े तीन या चार बजे उठ कर कुल्ला करके शीतल जलपान करे और शौच से निवृत्त होकर पठन पाठन करे। सूर्योदय के निकट फिर नित्य की भाँति व्यायाम या भ्रमण करे । सब व्यायामों में दण्ड बैठक सर्वोत्तम है। जहाँ जी चाहा, व्यायाम कर लिया। यदि हो सके तो प्रोफेसर राममूर्ति की विधि से दण्ड तथा बैठक करे। प्रोफेसर साहब की रीति विद्यार्थियों के लिए बड़ी लाभदायक है। थोड़े में ही पर्याप्त परिश्रम हो जाता है। दण्ड बैठक के अलावा शीर्षासन और पद्मासन का भी अभ्यास करना चाहिए और अपने कमरे में वीरों और महात्माओं के चित्र रखने चाहिए

[पृष्ठ १८ का शेषांश]

पूर्ण विष है बुद्धि जीवी वर्ग के लिए चलचित्र के माध्यम से इसका विकास कर प्रचारित किया जा सकता है। देश की भावी-पीढ़ी को देश भक्ति की भावनाओं से ओतप्रोत कर समाज के लिए समर्पण की भावना पैदा की जा सकती है। इसी तरह से धार्मिक आर्थिक, आध्यात्मिक एवं ऐतिहासिक फिल्मों का निर्माण करके यह उद्योग देश को काफी आगे ले जा सकता है। यदि ठीक दिशा में इस शक्ति को लगाया जाए तो यह एक महान कार्य होगा जिससे हम मनु-महाराज के इस श्लोक को चरितार्थ होता देख सकेंगे।

एतद्देश प्रसूतस्य शकासादग्र जन्मनः स्वं-स्वं चरित्रं शिक्षेरन पृथिव्यां सर्वमानवाः । मनु०

संभलने के दिन हैं संभलना पड़ेगा

(पं० प्रकाशचन्द जी कविरत्न, अजमेर)

उठो आर्यवीरो ! ये सुस्ती है कैसी
संभलने के दिन हैं, संभलना पड़ेगा।
लगी दौड़ उन्नति की जग क्षेत्र में है
तुम्हें सबसे आगे निकलना पड़ेगा।
सकल लोक-उपकारिणी वेद-वाणी
विमल सभ्यता, प्रिय सुराज्यादि के हित,
धधकती हुताशन में जलना पड़ेगा
तुम्हें घोर विष भी निगलना पड़ेगा ।
दयानन्द ऋषिराज के सार्वभौमिक
सदोद्देश्य की हो नहीं पूर्ति जिनसे
उन्हीं संस्थाओं व दल-बंदियों की
बिकट दलदलों से निकलना पड़ेगा ।
खुले आम नित नाच-रंग हो रहे हैं,
यहां सांस्कृतिक कार्यक्रम के बहाने,
पतन घोर, चारित्र्य-बल का हो जिससे
रवैया वो दूषित बदलना पड़ेगा ।
मृतक राष्ट्र को चेतना दी तुम्हींने
न हो तुच्छ तुम, है महाशक्ति तुम में
अरे ! क्रान्ति के, शान्ति के अग्रदूतो !
तुम्हें अग्रणी बन के चलना पड़ेगा।
प्रबल युक्ति से, शक्ति से है बचाना
सकल राष्ट्र को आक्रमणकारियों से
कृतघ्नी कुटिल, सांप घर में घुसे जो
प्रथम मुख उन्हीं का कुचलना पड़ेगा।
कहो ! जा के यह, नारियों से कि तुम भी
उठो ! देश को शत्रुओं से बचाने,
इन्हीं चूड़ीवाले करों में ले राइफल
निडर सिंहनी सम मचलना पड़ेगा ।
अगर चाहते हो "प्रकाशार्य" भारत
अखिल विश्व-गुरु की करे प्राप्त पदवी,
दयानन्द ऋषि के बताये सुपथ पर
तुम्हें पूर्ण श्रद्धा से चलना पड़ेगा।

आर्यग्राम अभियान का शुभारम्भ

मुण्डलाना में सात दिवसीय शिविर सम्पन्न

१४ नवम्बर से २१ नवम्बर तक सोनीपत जिले के प्रसिद्ध ग्राम मुण्डलाना में आर्य ग्राम निर्माण का अभियान स्वामी चन्द्रवेश जी वेद प्रचार अधिष्ठाता एवं जगवीरसिंह एडवोकेट मन्त्री हरयाणा आर्य युवक परिषद के संयोजन में पूरी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। आर्य समाज के क्षेत्र में यह परिक्षण एक व्यावहारिक व अनोखा कार्यक्रम था। सात दिन तक गांव के चारों ओर चोपालों में यज्ञ किए जहां शराब तथा अन्य मादक द्रव्यो को छोड़ने और धार्मिक आचरण को अपने जीवन में ढलने के लिए सैंकड़ों युवकों ने संकल्प लिए। यज्ञोपवीत दिए गये। रात्रि को शंका समाधान के द्वारा वैदिक सिद्धान्तों का प्रचार होता था और इस के माध्यम से मतमतान्तरों व धार्मिक पाखण्ड में फंसे कई भोले भाईयों को आर्यसमाज में दीक्षित किया। दिन में स्त्रियों का सत्संग होता था जिसमें गृहस्थ सम्बन्धी कर्तव्य, शुद्धि एवं सन्तान निर्माण के लिए उपदेश दिए जाते थे। स्कूल में जहां आस पास के गांव से भी सैंकड़ों विद्यार्थी पढ़ने आते हैं व्ययाम तथा प्राणायाम का क्रियात्मक प्रशिक्षण दिया गया लगभग ६०० विद्यार्थी दो घन्टे तक आसनों का अभ्यास करते थे परिणाम स्वरूप ८० विद्यार्थियों तथा मुख्याध्यापक सहित पांच अध्यापकों ने यज्ञोपवीत ग्रहण किया तथा विशाल यज्ञ का आयोजन हुआ जिसमें सभी ने दुर्गुण त्यागने की आहुती दी। इसी प्रकार गांव में गृहस्थों के घरों में भी यज्ञ हुये और पूरे परिवारों को आर्य बनने की प्रतिज्ञाएँ दिलाई। विशेष रूप से हरिजनों में कार्यक्रम अधिक सफल रहा। स्वामी अग्निवेश जी की प्रेरणा से यह आर्य ग्राम अभियान काफी हदतक सफल रहा। तथा स्वामी चन्द्रवेश जी की विद्वता की धाक जम गई। इस कार्य को सफल बनाने में सबसे अधिक योगदान मा० प्रतापसिंह आर्य तथा मा० हवासिंह जी का रहा। इनके अतिरिक्त मा० रत्नसिंह, मा० बलदेवसिंह, राममेहर, चन्दनसिंह, बलवानसिंह, मुन्शीराम, ईश्वरसिंह, तथा हैडमास्टर-इक बालचन्द जी ने भी दिनरात एक करके कार्य किया। बहन शान्ति देवी धर्मपत्नीमा० प्रतापसिंह ने स्त्रियों में काफी उत्साह से संयोजन किया अन्तिम दिन शिविर की शोभा उस समय और भी बढ़ गई जब आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश उप मन्त्री रामधारी शास्त्री व अन्य कई महानुभाव पधारे। दोपहर एक बजे शिविर का समापन काफी उत्साह एवं आशा के वातावरण में सम्पन्न हो गया सभी आर्य समाजों को इस कार्यक्रम मे प्रेरणा लेनी चाहिए।

आर्य समाज शताब्दी समारोह बिहार

२४ से २८ दिसम्बर को दानापुर (पटना) पहुंचे

देश भर में आर्य समाज स्थापना के शताब्दी समारोहों की श्रृंखला में अब बिहार प्रान्त का नम्बर आया है। इस प्रान्त को महर्षि दयान्द जी ने अपने चरण कमलों से पवित्र कर वैदिक सिद्धान्तों की दुन्दभि बजाई थी। आर्य समाज दानापुर जो राजधानी पटना में है की स्थापना भी महर्षि के कर कमलों से हुई। इस दृष्टि से बिहार प्रान्तीय यह आर्य समाज शताब्दी समारोह जहां एक विशेष ऐतिहासिक महत्व रखता है। वहीं आर्य समाज की वर्तमान परिस्थितियों में चल रहे मठाधीशवाद के विरूद्ध एक जबरदस्त कार्यक्रम भी है। अब तक जहां-२ भी शताब्दी समारोह हुये और आर्य समाज को सशक्त कार्य क्रम दिया वहीं पर मठाधीशों ने बौखला कर अपनी हिलती-डुलती नौका को बचाने के लिए असफल प्रयास किए। किन्तु युवा शक्ति के उभरते नेतृत्व की यह चिंगारी देश भर में फैल चुकी है। जो बहुत शीघ्र विशाल ज्वालामुखी बनकर आर्यसमाज का कायाकल्प करेगी। २४ से २८ दिसम्बर १९७६ तक बिहार प्रान्तीय आर्य समाज शताब्दी समारोह दानापुर (पटना) में हो रहा है। इस समारोह में देश भर की प्रचण्ड आर्य शक्ति का प्रदर्शन होगा। विभिन्न सम्मेलनों एवं कार्यक्रमों के द्वारा आर्य समाज का भावी कार्यक्रम घोषित किया जायेगा। शताब्दी समारोह को सफल करने के लिए भारी संख्या में पधारें तथा युवा शक्ति के हाथ मजबूत करें।

गंगा बिशन ठेकेदार संजीवकुमार बन गया

स्वामी इन्द्रवेश

१६ नवम्बर को प्रात: काल जालन्धर से बस में बैठकर में रूपनगर (रोपड़) आर्य समाज के एक सम्मेलन में भाग लेने के लिएगया। रोपड़ हैडवर्क्स पर मा० दिलाराम एम०ए०, रणवीर कुमार गुप्त, डा०धर्मपाल श्री अमृतलाल आदि आर्य जन ओ३म के झण्डे और फूल मालाऐं लिऐ पहले से ही प्रतीक्षा में खड़े थे। सब लोगों से नमस्ते आदि शिष्टाचार करने के वाद दस वर्ष के वालक संजीव कुमार ने भी पुण्य माला भेंट की। और साथ ही मा०दिलाराम ने कहा कि यह छोटा बालक जो आपका स्वागत कर रहा है पूर्व जन्म की अपनी कहानी सुनाता है। मा०दिलाराम की यह बात सुनकर मुझे बहुत उत्सुक्ता हुई क्योंकी पहले भी पूर्व जन्म की स्मृति बताने वाले ऐसे ही बच्चे को मुज्जफरनगर जिले के रसूलपुर गाँव में मैं देख चूका था। आर्य समाज का सम्मेलन रात्री को था। और दिन में मैं आर्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं से मिलता रहा। संजोव कुमार अपनी माँ और बड़ी बहन के साथ फिर मुझसे मिलने मा० दिलाराम के मकान पर आ गया। संजीव कुमार की मां श्री मति बिमलासूद एक आर्य महिला है। और इनके पिता जी का नाम राजेन्द्र कुमार सूद है जो कि गवर्मैन्ट कोन्ट्रक्टर है। संजीव कुमार की मां ने बताया और जिसका समर्थन सभी आर्य जनों ने एक स्वर से किया कि यह बालक पांच वर्ष की आयु तक बड़ा गम्भीर चिन्तामग्न तथा मौन रहता था। परिवार के लोगों को चिन्ता थी कि यह बालक बोल भी सकेगा कि नहीं फिर शनै-२ बोलना शुरू किया और अपने पिता जी से कहा कि आपकी तरह में भी एक ठेकेदार था। और भी कई बातें अपने बच्चों के बारे में: पत्नी के बारे में और परिवार के सम्बन्ध में बताने लगा। जिससे लोगों कि रुचि इस दिशा में हुई। बालक ने यह भी बताया कि मेरी एक कोठी शिमला में और मेरा घर सोलन के पास क्यारी बंगला में है। और मैंने दो शादियां कराई थी जिनमें से एक पत्नो जीवित है। संजीव कुमार को लेकर कुछ व्यक्ति उसके पूर्व जन्म के गांव में वास्तविकता जानने के लिए सोलन के लिए चले। सोलन से जब वे बस द्वारा क्यारी बंगला के लिए गए तो बालक ने बस में पूर्व जन्म की कुछ और बाते बतानी शुरू की जिस कारण यात्रियों का इस ओर आकर्षण बढ़ा। बस में बैठी एक जवान लड़की ने कहा कि यह हमारे घर की बातें बता रहा है। संजीव कुमार ने झट पहचान लिया कि यह तो मेरी ही लड़की है। संजीवकुमार बस से उतर कर सड़क की बजाय पगडण्डो के रास्ते से चलने लगा। लड़की ने कहा कि हमारा घर तो इस तरफ है पर संजीवकुमार ने कहा कि नहीं मेरे घर का रास्ता है। संजीवकुमार अपने घर जाकर बड़े विश्वास के साथ बैठ गया। उसने अपनी पत्नी और बड़े लड़के को भी पहचान लिया और अपने पौत्र की तरफ इशारा

संजीव कुमार

करके कहने लगा कि यह तो पप्पू है । बालक ने बताया मेरे दो ट्रक, एक कार व एक बस थी । संजीव कुमार ने कुछ ऐसी बातें भी बताई जिनको उसकी पत्नी और उसके सिवाय और दूसरा नहीं जानता था। बालक घर से उठा और नजदीक हलवाई की दुकान पर गया और हलवाई को परिचित का तरह कहने लगा सुनाओ भई तुम्हारा क्या हाल है । हलवाई ने बच्चे की तरफ ध्यान नहीं दिया इस पर बालक ने कहा की अरे तुम भूल गये मैं वही तो गगाबिशन हूं जो तुम्हारी दुकान पर बैठ कर मिठाई खाता था । सोलन और क्यारी बंगला में गंगाबिशन एक बड़ा दयालु, उदार और लोकप्रिय व्यक्ति था जिस की मृत्यु हृदय गति रुकने से ६० वर्ष की आयु में हो गई थी । क्यारी बंगला में गंगाबिशन ठेकेदार के लिए यह बात प्रसिद्ध है कि वह मरने से १३ दिन पहले सोलन जाकर अपने कफन का समान खरीद लाया था । लोगों ने कहा ठेकेदार साहब यह आप क्या कर रहे हैं। उसने कहा इसकी भी शीघ्र जरूरत पड़ने वाली है । गगाबिशन के लिए उस क्षेत्र में प्रसिद्ध बात है कि वह गरीब लोगों को हजारों रुपया दयाभाव से दे देता और उसे लौटाने के लिए कभी मांगता भी नहीं था । यह बात विशेष ध्यान देने योग्य है कि गंगाबिशन की मृत्यु के ११ महीने के बाद संजीव कुमार ६ जुलाई १९६७ में पैदा हुआ । उसकी मां ने बताया कि यह बालक केवल आठ महीने और दस दिन पेट में रहा यह घटना जो स्पष्ट रूप से वास्तविक है हमें जीवन की एक बहुत बड़ी पहेली की ओर संकेत करती है और पूर्व जन्म की बहुत बड़ी पहेली को सुलझाती है । अभी विज्ञान भौतिक क्षेत्र में ही गतिशील है समय आयेगा जब अध्यात्मिक क्षेत्र में भी प्रगति करेगा और मानव तत्वज्ञान की ओर अग्रसर हो सकेगा। जो व्यक्ति इस बालक के सम्बन्ध में जानकारी लेना चाहते हैं । वे राजेन्द्र कुमार सूद दुसाज को टेज नीयर पंजाब नेशनल बैंक रूप नगर के पते से सम्पर्क करें ।

[शेषांश पृष्ठ ६ का]

सहेली: हां बाबा दिखे अपनी बिरवानियां नै ना तै मन्दिर जाण दें, ना मेले देखण दें, ना सांग सनीमे में जाण दें और ना माता, गूगा परू माता, मसाणी कुछ ना पूजन दें, ऊं तै यो अच्छा भी बहौत सै, दिखे गाम में सड़क ल्यादी, सारे कुएं ठीक करा दिए, बिजली लगवादी गालां मां कै रात्यूं चान्दणा रह से। सरपंच बणा सै जिब ते आच्छे आच्छे गाँव में सारे ठाट कर दिये। नातै कुछ बी ना था इस मुखनपुर में। अच्छा बाबा चालां तैं।

बाबा: अच्छा माई फिर मिलेंगे।

सहेलियां; अच्छा जय महाराज, जय महाराज सभी करती है और मन्दिर से चली जाती है।

एक सहेली: (रास्ते में आते हुए) आहें तुं बहुँ कै ओपरा सा बतावैथी, बाबा नैं दिखावै ने किमे जाणता हो तै।

खजानी: आहें तने उड़ै याद ना दिवाई, भाण।

सहेली: इब बूझ के आऊं।

खजानी: तावली सी जा, कदे चाल्या जा ना बाबा।

सहेली: ना भाण तूं भी चाल्य, मनैं ना बेरा के कहूंगी।

(दोनों फिर मुड़ कर आती हैं)

दोनों एकसाथ: बाबा, किमे ओपरा पराया भी देख लिया करै के।

बाबा: हां माई की बेटी, सब काम जाणु सूं। ओपरा पराया, जादू, झाड़ा। के बात थी।

खजानी: एक बहु कै ओपरा सा आवै सै बाबा।

बाबा: जल्दी ले आओ, फिर मनैं जाणा सै।

खजानी: जाईये हे गन्दोड़ी, ल्याईये भाण बहु ने, तावली सी।

(गिन्दौड़ी जाती है, और बहु को लेकर आती है)

बाबा: (बहु का हाथ पकड़ कर, भभूत चटाता है, फिर चन्दों का झाड़ा उठाकर)
जय काली कलकत्ते वाली, तेरा वार ना जावै खाली, करदे पिटाई, दयूंगा मिठाई। दुश्मन नै मार दे, दुनिया तें तार दे, जय काली, जय माई आदि करता है।

राजो बहु: खा ज्यांगी, तेरे जिसे बाबा तै मैंने बेरा ना कितने क देखे सें, झपट कर बाबा की गरदन पकड़ लेती है। बाबा चिमटे मारता है, भष्म करने की धमकियां देता है, लात, मुक्के, घूंसे मारता है। राजो घबरा कर गिर जाती है। माफी मांगती है। मैं जां सूं। फेर नहीं आऊंगी।

खजानी: बस बाबा, इब कै रोग कटग्या, बहोत दिन की दुख दे रही थी।

गिन्दोडी: जीजी, यो बाबा तै स्याणाये बहोत सै। देखले बुला दी।

खजानी: हे जीजी मैंने तैं बैराये ना था। (बाबा की तरफ इशारा करके) बाबा तेरा के हो सै बताईये।

बाबा: बस माई सरधा समान, साधु का दान। गंगा स्नान के लिये जां सां जाओ एक कम्बल दे दो। बाबा नैं मौज करती रहोगी माई।

खजानी: घर से एक कम्बल लाकर दे देती है पैरों की धोक मार कर चली जाती है।

क्रमशः

[शेषांश पृष्ठ १० का]

विशिष्ट वर्ग उदाहरण पेश करें

गांधी जी ने यह भविष्यवाणी की थी कि शासक और विशिष्ट वर्ग अपने जीवन में स्वदेशी की भावना को साकार रूप दें और बुनियादी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए आत्मनिर्भरता और अपनी मदद आप करने के लक्ष्य का अनुभव कराने के लिए हमारे युवकों में आदर्श, उत्साह और शक्ति का संचार करें तो लाखों लोगों के जीवन में एक नई लहर आएगी और उनका भविष्य अच्छा होगा। बहुत ही थोड़े समय में हम ऐसे सुनहरे युग में प्रवेश करेंगे जिसमें भारतीय समुदाय समर्थ होगा और यहां की जनता अपने भाग्य की स्वयंनिर्माता होगी। यह चुनौती अभी पूरी की जानी बाकी है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यक्रम:

स्वामी इन्द्रवेश का तूफानी दौरा

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के तत्वाधान में बड़ी तेजी के साथ वेद प्रचार अभियान चलाये जा रहे हैं। पंजाब हरयाणा दिल्ली तीनों प्रान्तों में कार्य संतोषजनक हो रहा है। गत दिनों सभा प्रधान स्वामी इन्द्रवेश ने पंजाब के प्रमुख नगरों की समाजों का एक तूफानी दौरा किया जिसका विवरण निम्न प्रकार से है।

आपने वेद प्रचार हेतु १३ नवम्बर को आर्य समाज बिरला लाईन्स में दिल्ली की आर्य जनता को सम्बोधित किया। इसके बाद रात्रि को जालन्धर में आपका व्याख्यान हुआ।

१४ नवम्बर को आर्य समाज फिल्लौर के वार्षिकोत्सव पर युवक सम्मेलन में आपने आह्वान करते हुए कहा कि आर्य समाज में नयी पीढ़ी को अधिक दीक्षित किया जाये, स्वामी सुधानन्द जी का भी व्याख्यान हुआ।

१५ नवम्बर को आर्य समाज नवांशहर की ओर से विशाल कार्यक्रम का आयोजन किया गया तथा आर्य कालेज के प्रांगण में हजारों लोगों ने स्वामी जी का स्वागत किया। स्वामी जी को २१००) रुपये की राशि भेंट की गई। इसी तरह से रोपड़, लुधियाना, मोगा ५००) रुपये फरीदकोट फिरोजपुर तथा अन्य कई ग्रामीण समाजों में भी शानदार कार्यक्रम सम्पन्न हुए। स्वामी इन्द्रवेश के साथ स्वामी वेदानन्द सभा उपप्रधान डा० रामप्रकाश, पं० मुरारीलाल सभा मन्त्री, डा० पसरीचा तथा अन्य प्रमुख कार्यकर्ता भी थे। पंजाब की आर्य जनता ने फूलमालाओं तथा धन की मालाओं से जगह जगह आर्य नेताओं का स्वागत किया। इस तूफानी प्रोग्राम से पूरे पंजाब में एक आशा की लहर दौड़ गई हैं। स्वामी जी ने यह निश्चय कर लिया है कि अब हर महीने पंजाब में समय लगा कर आर्य समाज के कार्य को गति दी जाएगी। पं० मुरारी लाल जी ने पंजाब की आर्य जनता से अपील की कि वे युवा संन्यासियों के हाथ मजबूत करें और हर प्रकार का सहयोग करें तभी आर्य समाज का भविष्य उज्ज्वल बन सकता है।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद की आवश्यक विज्ञप्ति

आर्य समाज के क्रान्तिकारी शहीद ब्रह्मचारी रामप्रसाद बिस्मिल एक अद्वितीय प्रतिभा के नौजवान थे। उन्होने बहुत थोड़ी उम्र में ही देश के युवकों को संगठित कर देश हित बलिदान कर दिया। उनकी प्रेरणा से हजारों नौजवानों ने अपने जीवन को समाज केलिए समर्पित करने का संकल्प लिया १९ दिसम्बर १९२७ को गोरखपुर की जेलमें उनको फांसी दी गई थी अतः यह दिन देश के उन नौजवानों के लिए प्रेरणा दायक है जो इस देश की शोषित-पीड़ित एवं दलित जनता की सेवा हेतु अपना जीवन दान करना चाहते हैं। यदि आप चाहते है कि युवकों की एक सेना तैयार हो जो वैदिकव्यवस्था की स्थापना का संकल्प लें यदि आप चाहते हैं कि देव दयान्द और रामप्रसाद बिस्मिल का स्वप्न पूरा हो, तो बिस्मिल द्वारा निर्दिष्ट मार्ग को अपनाएं। गांव में गरीबों के मौहल्लों में जाकर कार्य करें। इस के लिए १९ दिसम्बर को सभी आर्यसमाजें, आर्य युवकों परिषदें तथा कुमार सभायें निम्नलिखित कार्य करें।

१ प्रातः काल यज्ञ किया जाए और अधिक से अधिक युवकों को प्रेरित कर यज्ञोपवीत दिए जायें।

२ दिन में युवक खेल प्रतियोगिता या व्यायाम प्रदर्शन का कार्यक्रम रखें तथा विशेष युवकों को पारितोषिक बांटे जाएं।

३ सायं काल को विशेष गोष्ठी करें जिसमें शहीदों को श्रद्धांजलि एवं उनके जीवन पर प्रकाश डाला जावे।

४ गांव में गलियों की सफाई या कीचड़ वाले गढ़ों की मरम्मत या और कोई रचनात्मक कार्य किए जाय।

५ प्रौढ़ शिक्षा केन्द्र चलाने की योजना बनाई जाय।

६ सभी आर्य समाजों तथा अन्य स्थानों पर आर्य युवक परिषदों की स्थापना की जायें।

वेद का आदेश :—

अग्नि-होत्र करें

राये अग्ने महे त्वा दानाय समिधीमहे ।
इडिष्वा हि महे वृष द्यावा होत्राय पृथिवी ॥६॥१३

ऋषिः—वामदेवः— ! कमनीय व्यवहारी :

(अग्ने) हे अग्नि, देव ! (महे) महान् (राये) रमणीय (दानाय) दान के लिए हम (त्वा) तुम्हें (समिधीमहे) प्रदाप्त करते हैं । (वृषन्) हे दान की वृष्टि करने वाले ! (महे) महान् (होत्राय) यज्ञ के लिए तुम (द्यावा+पृथिवी) द्युलोक तथा पृथिवी की (ईडिष्व हि) प्रशंसा करो ही ।

आज हमने आग जलाई है—इसलिए कि हम दान करें । छोटे-मोटे दान तो बिना श्रद्धा के "ह्रिया भिया"—लोक-लाज से, धर्म-भीरुता से भी हो सकते हैं । हम मानें न मानें, कुछेक टके तो बिरादरी अपने बल से भी रखवा ही लेती है । थोड़े-से पैसों के लिए हम समाज से लड़ने नहीं जाते । इसको चाहे समाज का भय समझा जाए या बिरादरी की लाज । हम इतना दान तो अपने दिल की कमजोरी से भी दे ही देते हैं । आज हम चाहते हैं कि हमारा दान महान् हो । उस दान के महत्त्व का—उसकी पूजा का—भाव स्वयं हमारे हृदयों में अंकित हो जाए । जब हम यह दान कर रहे हों, हमारा हृदय इसकी गम्भीरता को अनुभव करे, इसे एक पवित्र कार्य समझे । यह अनुभूति बिना यज्ञ की भावना के नहीं हो सकती । इसके लिए धूनी रमाने की—आग जलाने की, अग्नि-देव की उपासना करने की–आवश्यकता है । जब तक कि हम अपने आपको विश्व का अंग नहीं समझते हम यज्ञ नहीं कर सकते । जब तक हमारा रोम-रोम इस भावना से शराबोर नहीं हो जाता कि हम उसी आग की चिनगारी हैं जिसके द्वारा ब्रह्माण्ड के सम्पूर्ण परमाणु एक हो रहे हैं, तब तक इस महान् दान के हम अधिकारी ही नहीं हैं । भौतिक संसार को भौतिक ताप ने और फिर इस भौतिक को आध्यात्मिक अग्नि ने ही आश्रय प्रदान कर रखा है । योगी के हृदय में इस अग्नि की लपटें उठ रही हैं । आज हमने अपने अन्दर आग जलाई है ।

आज हमें एक महान् अग्नि-होत्र करना है । भगवान् का अग्नि-होत्र, दसों दिशायें कर रही हैं । विश्व-याग की आग में सब ओर से आहुति पड़ रही है । हर क्षण आहुति पड़ रही है । कितना बड़ा, विशाल, व्यापक यज्ञ हर समय हो रहा है ?

● पंचमूपति एम॰ ए॰

सम्पादक के नाम पत्र

श्री रामफल आर्य राजपुरा, जीन्द से लिखते हैं—

राजधर्म के पुनः आरम्भ होने के बाद दूसरे ही अङ्क में सम्पादकीय में बालयोगेश्वर तथा उसकी मां भाइयों तथा अनुयायियों पर कुठाराघात किया है । इसके लिए बधाई । आज देश में जहां जायें हमें जगह २ मन्दिर, मठ, शिवालय आदि बने मिलेंगे । इनमें मूर्तियों पर लाखों, करोड़ों रुपया खर्च होता है कहां से आता है ? हम देखते हैं कि आज बहुत लोग मूर्ति पूजते हैं । क्या मूर्ति पूजने से उनको रोटी मिल जाएगी । कपड़ा और मकान मिल सकेंगे ? ये तो पुरुषार्थ से ही मिलेंगे । आज दुनिया के अधिक देशों में मत-मतान्तर हैं, उनके मठाधीश धार्मिक रूप से ये भूखे इन्सानों को रोटी देने के स्थान पर उनकी रोटी छीनने में लगे रहते हैं । विश्व में करोड़ों भूखे नंगे रह कर जीवन लीला समाप्त करते हैं परन्तु इन मठाधीशों के कान पर जूं तक नहीं रेंगती । भगवान की बनाई हुई मूर्ति 'मानव' भूखे रहें और एक मन्दिर की मूर्ति पर लाखों रुपये लगें । मैं पूछता हूं कि क्या इसी का नाम धर्म है ? शायद धर्म के इसी रूप को देखकर एक बार स्वामी विवेकानन्द ने कहा था—"जो धर्म रोती विधवा के आंसू न पोंछ सके और गरीब को रोटी न दे सके वह धर्म नहीं ।" सरकार को चाहिए कि धर्म के नाम पर फैल रहे पाखण्डों के विरुद्ध कठोर पग उठाये ।

★ ★ ★

क्रान्तिकारी युवकों के विचारों का शंखनाद

एक लम्बे अर्से के बाद राजधर्म का अङ्क प्राप्त हुआ । अङ्क पाकर हृदय गद्‌गद् हो गया । कई दिनों के शिथिल शरीर में एक नई स्फूर्ति का आभास हुआ । राजधर्म भारत के विचारशील क्रांतिकारी युवकों के विचारों का शंखनाद है । इसको आप निरन्तर प्रकाशित करते रहें । हमारी शुभ-कामनायें आपके साथ हैं ।

● ओमप्रकाश बहलवाला
कलकत्ता

पंजीयन क्रमांक
पी/आर टी के ६८

राजधर्म
१२ दिसम्बर १९७६

पुस्तकालय
गुरुकुल कांगड़ी
हरिद्वार
सहारनपुर

शुल्क समाप्त है,
वार्षिक शुल्क भेजें

सभी आर्य समाजें २३ दिसम्बर को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस धूम धाम से मनाएँ

सभा प्रधान स्वामी इन्द्रवेश की अपील

२३ दिसम्बर १९७६ को अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी का ५०वां बलिदान दिवस है। महर्षि दयानन्द के बाद स्वामी श्रद्धानन्द जी ही एक ऐसे आर्य सेनानी थे जिन्होंने आर्यसमाज के कार्यक्रम को मूर्तरूप दिया। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल कुरुक्षेत्र आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब आदि विशाल संस्थाएं उनकी कर्मठता का ज्वलन्त उदाहरण हैं। स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से प्रेरणा लेकर आर्य जनता विशेष युवा पीढ़ी को कार्य करने का संकल्प लेना चाहिए। २३ दिसम्बर को सभी आर्यसमाजें निम्न कार्यक्रम के अनुसार समारोह मनाएं।

१ प्रातः ६ बजे से प्रभात फेरी निकाली जाए तथा स्वामी श्रद्धानन्द के नाम तथा उनके कार्यों के जयघोष किए जाएँ।

२ मध्यान्ह पूर्व समाज मन्दिरों तथा चौपालों में यज्ञ हों।

३ यज्ञों पर विशेषकर हरिजन बन्धुओं को आमन्त्रित किया जाए और जहां तक हो सके प्रीतिभोजों का आयोजन किया जाए।

४ दोपहर बाद गोष्ठियों का आयोजन हो जिसमें बुद्धिजीवी व्यक्तियों को आमन्त्रित किया जाए और स्वामी श्रद्धानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने के लिए योजनाओं पर प्रकाश डाला जाए।

५ रात्रि को जनसभाएं की जाएं जिनमें स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन तथा कर्त्तव्य पर प्रकाश डाला जाए।

विज्ञापन दरें

अन्तिम कवर पृष्ठ---	६०० रु०
दूसरा तथा तीसरा कवर पृष्ठ---	५०० रु०
सामान्य पूरा पृष्ठ---	४०० रु०
" आधा पृष्ठ--	२५० रु०
" चौथाई पृष्ठ---	१०० रु०

लगातार दस अङ्कों में प्रकाशित करने पर दस प्रतिशत की छूट दी जायेगी।

ओ३म्

राजधर्म

वर्ष-८
अंक-४

वार्षिक शुल्क-२०) रुपये
एक प्रति-१) रुपया

प्रधान सम्पादक
स्वामी अग्निवेश

सम्पादक
जगवीर सिंह

२७ दिसम्बर १९७६
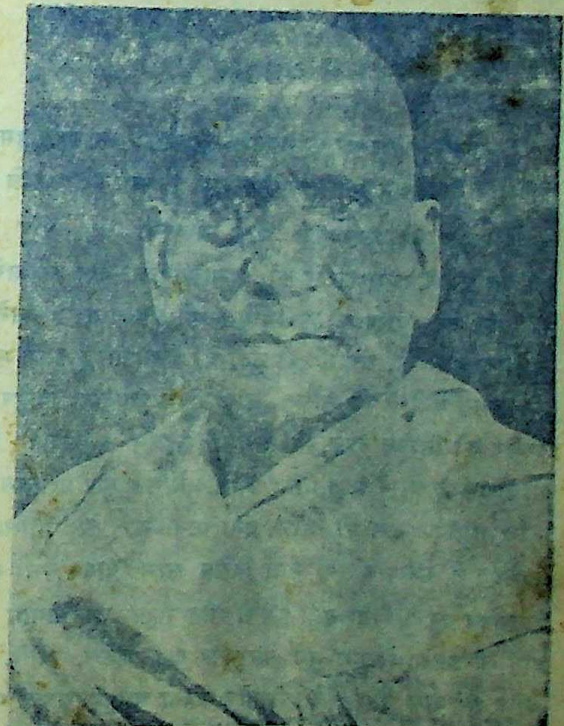
श्रद्धानन्द बलिदान अंक

रोगों से छुटकारा कैसे पायें ?

डा० धर्मवीर आयुर्वेदाचार्य

शीत ऋतु चर्या

नवम्बर मास से फरवरी मास तक भारत के अधिकांश क्षेत्र में शीतलता का क्षेत्र बना रहता है। यह मौसम शरीर को सुदृढ़ बनाने के लिये बहुत उपयोगी है इन दिनो जठराग्नि (उदर की अग्नि) बड़ी तीव्र रहती है अर्थात गरिष्ठ और पुष्टिकर पदार्थों का सेवन का समय है।

खाद्य पदार्थ

गेहूँ, उड़द, दूध एवं दूध से निर्मित पदार्थ गाजर एवं पाक, हलवा, खजूर, अखरोट, काजू, मुन्नका, किशमिश, तिलकुटी तथा घृतयुक्त वस्तुओं का सेवन ही योग्य रहता है। खान पान में ठडी चीजों की अपेक्षा शरीर को गर्मी पहुंचाने वाली वस्तुओं का सेवन करना चाहिये।

व्यायाम

उपरोक्त पदार्थों के सेवन करते हुए जिस तरह हमारी दिनचर्या में भोजन एक आवश्यक अंश है, इसी प्रकार यदि हम व्यायाम को भी आवश्यक अंश मानकर नित्य प्रति करे तो यह हमारे स्थूल शरीर को सामान्यावस्था तथा कृश शरीरों को पुष्ट बना प्राण को शरीर में लम्बी अवधि तक टिकाने में सहायक होता है, आदमी को मृत्यु का भय होता है इससे मुक्ति का उपाय यही है कि उचित व्यायाम व आहार विहार से शरीर को निरोग रहने की क्षमता उत्पन्न करे-इसके लिये आवश्यक है नित्य प्रति प्रात: ४, ५ बजे उठ मुख प्रक्षालन कर रूचि अनुसार जल पी, शौच, दन्त धावन कर, तेल मालिश में सूर्योदय के समय की रश्मियां विशेष लाभ दायक,तेल मर्दन से त्वचा पर झुरीया नही पड़ती शीत सहने की क्षमता पैदा होती है इसके पश्चात सूर्य नमस्कार दण्ड, बैठक, कुश्ती, दौड़ आदि व्यायाम बलार्ध के अनुसार करना चाहिए अर्थात शरीर की कुल ताकत से आधी ताकत तक व्यायाम करने से शरीर का विकास निरन्तर होता रहता है। इससे अधिक व्यायाम करने पर पतन ह्रास होता है-बलार्ध के लक्षण ये है-जब हृदयस्थ प्राण कण्ठ में आ जाये अर्थात गले में रुखापन आ जाये, श्वास प्रश्वास का न जुड़ना अर्थात हाफने लग जाना, बगल, माथे व छाती पर पसीना आना, थकान का अनुभव करना। ये लक्षण प्रकट होने पर व्यायाम बन्द कर देना चाहिए। व्यायाम से उत्पन्न उष्णता शान्त होने पर स्नान करे व्यायाम सम्बन्धि अधिक जानकारी के लिये 'आसन प्राणायाम" पुस्तक कार्यालय से मगा ले-आपके लिये बड़ी सहायक सिद्ध होगी। प्राणायाम् के साथ व्यायाम करने पर विशेष लाभ मिलेगा।

स्नान

अधिकतर लोग जाड़े में स्नान करना छोड़ देते है, यह हानीकर है। जिन लोगों ने बारहों मास शीतल जल से नहाने का अभ्यास कर लिया उनके शरीर पर शीत का दुष्प्रभाव नहीं पड़ता, ताजे जल का स्नान कोई हानि नहीं करता। यदि किसी को अनुकूल न पड़े तो थोड़ा गर्म पानी डाल गुनगुना कर स्नान करे, धीरे २ शरीर को ताजे जल से स्नान का अभ्यस्त करे जाड़ों में प्रात: स्नान कर लेने से दिन भर शीत का अनुभव नहीं होता और शरीर में स्फूर्ति बनी रहती है।

कुछ लोग क्षणिक उष्णता एवं उतेजना हेतू शराब चाय आदि का सेवन करते हैं। इन दोनो का सेवन हितकर नहीं है। यह आमाशय और यकृत को बहुत हानि पहुँचाती है। शरीर में वास्तविक गर्मी, पूर्वोक्त खाद्य पदार्थों एवं व्यायाम से ही अर्जित की जा सकती है।

स्नान के बाद कुछ समय ध्यान सन्ध्या के लिये निकाल लेना चाहिये यह सनातन धर्म की वैज्ञानिक प्रक्रिया है जो अच्छे गुणो को हमारे मानस क्षेत्र में स्थायित्व प्रदान करती है। सच्चे और अच्छे गुणो की आवश्यकता प्रत्येक पारिवारिक क्षेत्र अथवा किसी मजहब विशेष को मानने वाला होने पर भी सदैव बनी रहती है इसलिये ध्यान करते समय मेरे [illegible] अच्छाइयां बढ़े और बुराइयां दूर हों" ऐसा मनन चिन्तन करना चाहिए-इस प्रकार थोड़े समय ध्यान करने से आपका आत्म बल बढ़ेगा अथवा नैतिक जीवन बनेगा. व्यायाम जन्य थकान से मन ध्यान में जल्दी लगता है। स्वाध्याय, भोजना दि [illegible] अपने दैनिक कर्त्तव्य कर्मों को सम्भाले।

सम्पादकीय

अर्द्धशताब्दी बलिदान माँग रही है।

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द की प्रेरणा से देश एवं धर्म पर बलिदान होने वालों का एक स्वर्णिम इतिहास है। अनेकों शहीदों ने देश को आजाद कराने के लिए हंसते हंसते गोलियां खाई फाँसी के फंदे चूमे और कठोर कारावास की यातनायें सही। अमर शहीदों की इस लम्बी लड़ी में स्वामी श्रद्धानन्द जी एक अद्वितीय प्रतिभा के महापुरुष थे। आपके जीवन की धारा जहां रचनात्मक दृष्टि कोण से प्रवाहित थी उसी के साथ २ आन्दोलनात्मक दृष्टि कोण से भो परिपूर्ण थी स्वामी श्रद्धानन्द जी ने देश में सामाजिक धार्मिक एवं राजनैतिक क्रान्ति का संचालन किया। महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली को मूर्त रुप देने के लिए सर्व प्रथम आपने ही हिमालय की गोद में गंगा के किनारे गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना कर के एक क्रान्तिकारी आन्दोलन का सूत्रपात किया जिससे प्रेरणा लेकर पूरे देश में गुरुकुलों की स्थापना तेजी से होने लगी। इस तरह से समाज में व्याप्त जातिवाद छूआछात भेदभाव एवं पारस्परिक घृणा की भावना को मिटाने के लिए आपके दिल में एक टोस पैदा हुई पूरे देश में सामाजिक क्रान्ति का बिगुल बजा दिया। अछूतों को गले लगाने विधवा विवाह प्रारम्भ कराने, हरिजनों को कुओं पर पानी भरने तथा मन्दिर में घुसने का अधिकार दिलाने धर्म से विचलित लोगो को शुद्ध करने तथा समाज में दलित पीड़ित एवं शोषित लोगों को उनका हक दिलाने के लिए एक जबरदस्त आन्दोलन स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में छिड़ गया। इसी प्रकार स्वामी श्रद्धानन्द ने राष्ट्रीय आन्दोलन में भी पूरी तरह भाग लेकर अपने वर्चस्व को कायम किया। वे अंग्रेजों के दाँत खट्टे करने के लिए जहाँ चांदनी चौक के विशाल जलुस में स्वामी जी संगीनो के सामने छाती खोलकर खड़े हुए दिखाई देते हैं, वही अमृतसर में जलियां वालों बाग के भयानक कांड के विरोध में अखिल भारतीय कांग्रेस कमैटी के स्वागताध्यक्ष के रूप में आगे मिलते है। ऐसे राष्ट्र पुरुष मानवतावादी महान योद्धा को बलिदान हुये ५० वर्ष बीत चुके हैं। स्थान स्थान पर उनके बलिदान की अर्द्धशताब्दी मनाकर उन्हें श्रद्धाजलि दी जा रही है परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धाजली देने वाले बन्धुओं से मेरा एक प्रश्न है।

आर्य समाज के प्रहरियो। आज तुम्हें उस प्रश्न का उत्तर देना होगा। क्या आप कभी सोचते हैं कि जिस स्वामी श्रद्धानन्द ने अपने तप त्याग एवं बलिदान से कल्याण मार्ग का पथिक बन कर आर्य समाज के संगठन को मजबूत बनाया था और राष्ट्र निर्माण में अपनी जबरदस्त भूमिका निभाई थी। आज उसी के नाम पर जनता की आंखों में धूल भोक कर तथा झूठी बातों से बहकाकर कुछ अनार्य लोग आर्य समाज में विघटन के द्वारा संगठन को कमजोर नहीं बना रहे हैं। जिन लोगों ने स्वामी श्रद्धानन्द को गुरुकुल कांगड़ी से धक्के मार कर बाहर निकाला, आर्य समाज एवं स्वामी श्रद्धानन्द के नाम पर जनता को लूटना चाहते हैं। अपनी राजनैतिक सौदेबाजो करने एवं निजी व्यापार चमकाने के लिए बड़े-२ सम्मेलनों में श्रद्धालु जनता को इकट्ठा किया जाता है। दूसरी ओर व्यक्तिगत चरित्र एवं षडयन्त्रों से सिद्धान्तों की हत्या होती है। आर्य समाज एवं उसके शहीदों के साथ यह खिलवाड़ कब तक चलता रहेगा? स्वामी श्रद्धानन्द के ५० वें बलिदान दिवस पर नौजवानों को हमारा आह्वान है कि अब वे कमर कस कर आगे आएं। श्रद्धांजलि नहीं वरन जीवनाञ्जलि अर्पित करें। अतः साथियों! आओ दयानन्द की उस सेना में भरती हो जाओ जो स्वामी श्रद्धानन्द को जीवनाञ्जलि देने के लिए सिर पर कफन बान्ध मैदान में निकली हैं। आर्य समाज के निष्क्रिय नेतृत्व को दूर कर एक स्वस्थ एवं सबल कर्मठ नेतृत्व प्रदान करने के लिए और निराशा के बादलों को चीरने के लिए अब क्रांतिकारी बलिदानियों के इतिहास को दोहराने की जरूरत है। स्वामी श्रद्धानन्द के सपनों को साकार करने के लिए त्याग का रास्ता अपना कर जीने की प्रतिज्ञा जब तक नहीं की जाती तब तक श्रद्धांजलि अर्पित करने से कुछ भी होना जाना नहीं है।

सामयिकी

नकली भगवानों से बचाओ।

आज कल हमारे देश में रोजाना कोई ना कोई नया भगवान जन्म ले लेता है और दुनियां के सामने अपने अदभुत चमत्कार दिखाता हैं। विडम्बना की बातें तो यह है कि बड़े-२ बुद्धिजीवी एवं पढ़े लिखे लोग भी इनके चक्र में फंस जाते हैं। इनकी आरती उतारी जाती हैं चढ़ावे चढ़ते हैं तथा उनके बड़े -२ संत समागम मनाऐ जाते हैं। पिछले कई महिने से बिल्टज साप्ताहिक में तथा कथित भगवान सांईबाबा के गुणगान किए जा रहे हैं। बाबा के चमत्मारों की चर्चा भी होती हैं। बाबा कहते हैं कि उसके भक्तों एवं अनुयायियों को किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता है। उनकी गरीबी तथा हर बीमारी समाप्त हो जाती है। कितनी कमाल की बात है यह यदि साईबाबा अपने भक्तों की गरीबी, बदनसीबी तथा अन्य समस्याओं को नष्ट करने की शक्ति रखते हैं तो मैं उनसे प्रार्थना करूंगा महाराज। इस देश के करोड़ों लोग जो भुखमरी, बेकारी, अनपढ़ता तथा सामाजिक अन्याय के शिकार हो रहे हैं, आप कृपा करके उनसे मुक्ति दिलादें तो सारा देश ही आपका भक्त हो जाए। आपकी फूक में यदि इतनी जादू है तो इस देश पर दया करो परन्तु इस प्रकार के बनावटी भगवान कई आकर चले गये जिनका आज कोई नाम तक लेने को तैयार नहीं है। १४ वर्षीय बाल योगेश्वर भगवान ने तो २४ वर्षीय युवा लड़की से अमेरिका में जाकर शादी कर ली और तस्करी से करोड़ों कमाकर मौज ले रहे हैं। इसी तरह से आज साईबाबा तथा अन्य सभी तथा कथित भगवान भी भोली-भाली जनता की आंखों में धूल झोंक कर अपना उल्लू सीधा कर रहे हैं। ये लोंग जनता का धन लूट कर आलीशान बंगलों में एय्याशी करते हैं जनता जाए भाड़ में इन्हें क्या लेना देना है। धार्मिक जनता की भावनाओं के साथ धोखा करने वाले इन भगवानों की पोल शीघ्र ही खुल जाऐगी। अतः जनता को इनके षडयन्त्रों में नहीं फंसना चाहिए और अपने भाग्य का निर्णय अपने पुरुषार्थ से ही करने में विश्वास करना चाहिए।

मा० चन्दगी राम की चेतावनी

कुश्ती ऐसी कला है जिस में यदि मुकाबला होता है तो उसका निर्णय अखाड़े की मिट्टी में ही हो सकता है। परन्तु, पिछले एक साल से इस बात का निर्णय केवल अखबारों में चेतावनी देकर ही करने की कोशिश हो रही है कि मा० चन्दगी राम और सत्यपाल में से कौन तगड़ा है पिछले वर्ष रोहतक में आयोजित हिन्द केसरी दंगल में दोनों पहलवानों के हाथ मिल गये थे। पर बात आगे टल गई। और इस वर्ष २६ अक्टूबर से ३१ अक्टूबर तक दिल्ली में हुये भारत केसरी दंगल में भी दोनों मल्ल अखबारों के कालमों में ही लड़ते रहे और जनता अखाड़ों में उनकी प्रतीक्षा करती रही। युवा पहलवान सत्यपाल ने अपने पराक्रम से भारत केसरी दंगल फिर से जीत लिया। उस समय एक मौका था जब कि यह शक्ति परीक्षण हो जाता। पर हो सकता है मास्टर जी उस समय तैयारी पूरी न कर पाए हों। अब फिर एक बार मास्टर चन्दगीराम ने सत्यपाल से कुश्ती करने की चेतावनी दी है। देखते हैं यह घोषणा केवल चर्चा का विषय बनकर रह जाऐगी या दंगल जायेगा। वास्तविकता तो यह है कि अपने समय में मास्टर चन्दगीराम ने देश ही नहीं बल्कि विदेश के कुश्ती जगत में भी अपना सिक्का जमा दिया था। एशिया चैंमपियन आप बने भारत के बड़े-२ दिग्गज मल्ल आपके सामने मैदान छोड़गये। इसी तरह से आपका स्वाभिमान एवं पराक्रम आपको बार-२ कुश्ती के लिए प्रेरित करता रहता है। इसी प्रकार से जब हम गुरू हनुमान के शिष्य उदीयमान पहलवान सत्यपाल को इतनी छोटी उम्र में यह ख्याति एवं सफलता प्राप्त करते हुये देखते हैं तो यह अनुभव होता है कि सत्यपाल दुनिया में भारत का नाम रोशन करेगा। आज के दिन अखाड़े में सत्यपाल के मुकाबले पर कोई पहलवान नहीं ठहर सका है। और उसकी धाक कुश्ती जगत में जमी हुई है। ऐसी स्थिति में मास्टर जी की यह चेतावनी वैसे तो काफी महत्व रखती है और इस का फैसला भी हो जाना चाहिए। या तो सत्यपाल यह घोषणा करे कि वह मास्टर जी का सम्मान करता हैं और उससे कुश्ती लड़ने का औचित्य नहीं है। और या फिर अखाड़े में निर्णय हो ही जाए। अब बात बीच में नहीं रहनी चाहिए। जनता की यह इच्छा है। कि असल तो मास्टर जी को ही यह चेतावनी नहीं देनी चाहिये थी क्योंकि वे अब कुश्ती छोड़ चुके थे और अब उन्होंने घोषणा कर दी तो सत्यपाल को पीछे नहीं हटना चाहिए और शीघ्र दोनों का मुकाबला ही हो जाना चाहिए।

अध्यात्मिक चर्चा :-

परमात्मा की उपासना क्यों और कैसे

● आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति

ईश्वर-विश्वास और उस का जीवन पर प्रभाव

परमात्मा में विश्वास धर्म का आवश्यक अङ्ग है। ईश्वर में विश्वास के आधार पर ही धर्म खड़ा होता है। ईश्वरविश्वास के बिना धर्म, धर्म नहीं रहेगा। पर यह ईश्वर में विश्वास ऊपर ऊपर का सूखा और कोरा शाब्दिक विश्वास नहीं होना चाहिये। यह ईश्वर विश्वास हृदय की गहराई में बसने वाला, श्रद्धा से सींचा हुआ मन की भावनाओं में रहने वाला दृढ़ विश्वास होना चाहिए। इस विश्वास का प्रभाव हमारे मन, वचन और कर्म में स्पष्ट दिखाई देना चाहिये। हमारा जीवन इस विश्वास के रंग से रंगा हुआ होना चाहिए। जब हम ईश्वर को नहीं मानते थे तब हमारा जैसा जीवन था उसमें, और जब हम ईश्वर को मानने लग गए तब हमारा जैसा जीवन बन गया उसमें, स्पष्ट भेद दीखना चाहिए। धर्म को इसी लिए स्वीकार किया जाता है कि उसके स्वीकार करने से हमारे जीवन में परिवर्तन आ जायेगा। धर्म को स्वींकार करने का अर्थ है ईश्वर को स्वीकार करना--ईश्वर में विश्वास रखना। इस विश्वास का सीधा प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ना चाहिये। उससे जीवन में परिवर्तन आना चाहिए। ईश्वर में विश्वास रखने से हमें अपने जीवन में कोई लाभ मिलना चाहिए इस विश्वास का फलस्वरूप हमें कोई ऐसी नई चीज मिलनी चाहिए जिसे प्राप्त करके हम समझें कि हमारा जीवन पहले से भिन्न प्रकार का हो गया है और उस से हमें लाभ पहुंचा है।

ईश्वर विश्वास से जीवन को प्रभावित करने का उपाय : उपासना

ईश्वर में विश्वास रख कर उस से अपने जीवन को प्रभावित करने का और उस से अपने जीवन के लिये लाभ उठाने का उपाय क्या है ? वह उपाय है-प्रभु की उपासना। सभी धर्मों में ईश्वर की उपासना पर बड़ा बल दिया जाता है। सभी धर्मों में ईश्वरोपासना का बड़ा महत्वपूर्ण स्थान है। वस्तुतः ईश्वरोपासना को ही धर्म समझा जाता है। हम ने ईश्वर की उपासना कर ली तो समझा जाता है कि हम ने धर्म कर लिया। हम ईश्वर की उपासना करने वाले बन गये तो समझा जाता है कि हम धार्मिक हो गये।

उपासना का प्रचलित स्वरूप

ईश्वर की उपासना का स्वरूप क्या है ? और वह हमें लाभ किस प्रकार पहुंचाती है ? प्रायः सभी धर्मों में प्रभु के गुणों का कीर्तन करना, भगवान् की महिमा को बताने और उन के गुणों की प्रशंसा करने वाले भजनों, श्लोकों और मन्त्रों का पाठ करना भगवान् के किसी नाम या उन के किसी गुण को बताने वाले किसी वाक्य को बार बार दोहरा कर उस का जप करना और इस प्रकार प्रभु के गुण कीर्तन के अनन्तर उन को नमस्कार करना ईश्वरोपासना समझा जाता है। इस उपासना के पश्चात्, प्रभु के इस गुण कीर्तन के पश्चात् प्रभु से प्रार्थना की जाती है कि हे प्रभो ! आप तो सदा सब पर कृपा बरसाने वाले हो, मुझ पर भी अपनी कृपा दृष्टि कीजिये, मेरे अमुक अमुक कष्टों को दूर कर दीजिए और मुझे अमुक अमुक फल की प्राप्ति करा दीजिये। समझा यह जाता है कि इस प्रकार भगवान की उपासना करने से अर्थात् इस प्रकार भगवान को उन की महिमा और गुणों की प्रशंसा सुनाने से भगवान हम से प्रसन्न हो जाते हैं। और इस प्रकार प्रसन्न किये हुए भगवान से जब हम अपने कष्टों को दूर करने की तथा अपने कामों में सफलता-प्राप्ति की प्रार्थना करते हैं तो हमारी भक्ति और उपासना से हमारे द्वारा की गई अपने गुणों की प्रशंसा को सुन कर

हम से प्रसन्न हुए ये भगवान हमारे कष्टों को काट देते हैं और कामों में सफलता प्रदान कर देते हैं इस प्रकार भगवान् को उन के गुणों की प्रशंसा सुना कर प्रसन्न करना उनकी उपासना और उपासना के अनन्तर भगवान से अपने कष्टों को दूर करने तथा अपने कामों में सफलता प्रदान करने की प्रार्थना को भगवान से अपने जीवन में लाभ प्राप्त करने का उपाय समझा जाता है ईश्वर में विश्वास रख कर उस से लाभ उठाने का यही प्रकार प्रायः सब धर्मों में स्वीकार किया जाता है।

हमने भगवान् को अपने जैसा समझ रखा है

हम ने अपने भगवान को अपने जैसा बना रखा है। हम स्वयं जसे हैं हम ने अपने भगवान को भी वैसा ही समझ रखा है। हम प्रशंसा और खुशामद को पसन्द करने वाले हैं। हम में यह कमजोरी है। यदि कोई हमारी प्रशंसा और खुशामद कर दे तो हम उससे प्रसन्न हो जाते हैं, उसे अच्छा समझने लगते हैं और उस के दोषों और अवगुणों की ओर ध्यान नहीं देते, उधर से हम आंखें मीच लेते हैं। उस की प्रशंसा और खुशामद की रिश्वत से प्रभावित हो कर हम उस का पक्ष करने लगते हैं। योग्य और अधिकारी न होने पर भी हम उसे अन्याय पूर्ण रीति से लाभ पहुंचाने लगते हैं हम ने अपने परमात्मा को भी अपने जैसा प्रशसा और खुशामद को पसन्द करने वाला समझ रखा है। यह खुशामद की रिश्वत से प्रभावित होने की दुर्बलता हम ने अपने परमात्मा में भा डाल रखी है। हम समझते हैं कि हमारी प्रशंसा और खुशामद की रिश्वत को पाकर परमात्मा भी हम से प्रसन्न हो जाते हैं, हमें अच्छा समझने लगते हैं और हमारे हक में हो जाते हैं। हमारे दोषों और अवगुणों की ओर ध्यान नहीं देते उधर से आंखें मीच लेते हैं। हमारी प्रशसा और खुशामद की रिश्वत से प्रभावित होकर भगवान हमारा पक्ष करने लगते हैं। योग्य और अधिकारी न होने पर भी वे हमारे पक्ष में होकर हमारे कष्टों को काट देते हैं और हमारे कामों में हमें सफलता प्रदान कर देते हैं। भगवान हमारे आचरण और कर्मों को नहीं देखते वे तो हमारे द्वारा अपनी प्रशंसा और खुशामद को सुनने के भूखे हैं। जिस ने प्रशंसा और खुशामद सुनने की परमात्मा की यह भूख मिटा दी वे उसी के पक्ष में हो जाते हैं और उस के सब दुःखों को काट देते हैं तथा जो कुछ वह मांगता है वह सब उसे दे देते हैं। ऐसा हम ने अपने भगवान को समझ रखा है।

हमने उपासना को व्यापार की वस्तु बना रखा है

इस प्रकार हम ने परमात्मा की भक्ति और उपासना को व्यापार की, लेन देन की सौदे की, चीज बना रखा है। मुझे कुर्ता सिलवाने के लिए तीन गज कपड़ा चाहिये। दुकानदार को अपनी आवश्यकता की चीजे खरीदने के लिए पैसे चाहियें। एक चीज की मुझे आवश्यकता है, एक की दुकानदार को। दुकानदार मुझे कपड़ा देकर मेरी आवश्यकता पूरी कर देता है और मैं वदले में उसे पैसे देकर उसकी आवश्यकता पूरी कर देता हूं यही बात हम ने भक्ति और उपासना के सम्बन्ध में समझ रखी है। भगवान् को अपनी प्रशंसा और खुशामद चाहिये। मुझे अपने दुःखों से छुटकारा और कामों में सफलता चाहिये। एक चीज की भगवान् को जरूरत है और एक की मुझे। मैं भगवान् के गुण गा कर उन की जरूरत पूरी कर देता हूँ और बदले में भगवान मेरे कष्टों को काट कर तथा मुझे मेरे कामों में सफलता देकर मेरी जरूरत पूरी कर देते हैं। ऐसी सौदे और व्यापार की वस्तु हम ने भगवान् की भक्ति को बना रखा है।

भगवान् अपनी प्रशंसा के भूखे नहीं हैं

परन्तु भगवान् इस प्रकार के अपनी प्रशंसा और खुशामद की पसन्द करने वाले नहीं हैं और भक्ति इस प्रकार की सौदे और व्यापार की वस्तु नहीं है।

वैदिक धर्म में परमात्मा को आप्त-काम और पूर्णकाम माना जाता है। परमात्मा में कोई ऐसी कामना नहीं है जो पूर्ण नहीं हुई है, और जिसे उन्होंने पूरा करना है। उन की सब कामनायें सदा से स्वभाव से ही पूर्ण हैं। उन्हें कुछ भी नही चाहिए। उन्हें कोई कमी अनुभव नहीं होती। इस लिये उन में कोई भी कामना नहीं है। इसी लिये वैदिक धर्म में परमात्मा अकाम भी कहा जाता है। परमात्मा के ये आप्त-काम, पूर्णकाम और अकाम नाम एक ही बात को कहते हैं। क्योंकि परमात्मा की सभी कामनायें सदा से स्वभाव से ही पूर्ण हैं इसी लिये तो वे अकाम हैं—कामनाओं से रहित हैं। अथर्ववेद में भगवान् के सम्बन्ध में कहा है—

[शेष पृष्ठ २८ पर]

मदन लाल ढींगरा की कुर्बानी—

तुम्हें अपनी अग्नि परीक्षा देनी होगी

● इन्द्र जीत सूद ●

आजादी की बलिवेदी पर हंसते-हंसते फांसी का फंदा चूमने वाले क्रान्तिकारी शहीदों ने मिलकर कर अपने गरम लहू से इस सोई हुई धरती को एक क्रान्ति का स्वर प्रदान किया था। और विलासिता एवं भोगवाद के पुतले भारत के नौजवानों को भारत की करोड़ों शोषित-दलित एवं पीड़ित जनता के प्रति अपना उत्तरदायित्व समझने की प्रेरणा दी थी। शहीद मदन-लाल ढींगरा भी ऐसे ही नौजवान थे जिन्होंने लन्दन में जाकर भारत में होने वाले अत्याचारों के विरुद्ध एक अंग्रेज अधिकारी को अपनी गोली का निशाना बनाया था। आज उनकों अस्थियों के ऊपर श्रद्धा रूपी पुष्प चढ़ाकर हम अपनी जिम्मेदारी निभाना चाहते हैं। परन्तु शहीद मदन-लाल ढींगरा को सच्ची श्रद्धञजली देने के लिए भारत का नक्शा बदला होगा। जिस स्वप्न को लेकर वे बलिदान हुये उसको पूरा करना होगा। एक विषमता एवं शोषण रहित समाज की स्थापना करनी होगी। प्रस्तुत लेख में शहीद मदनलाल के जीवन पर बड़े ही सुलझे हुये विचार दिये गये हैं। आशा है युवा पीढी अवश्य प्रेरणा लेगी और देशभक्ति का बीज अपने दिल में अंकुरित करेगी।

भारत मां और स्वातन्त्र्य लक्ष्मी का एक परवाना था मदनलाल ढींगरा, जिसके बारे में बिना झिझक या प्रतिवाद या डर के यह कहा जा सकता है कि वह पंजाब का पहला शहीद था।

ढींगरा का जन्म अमृतसर के एक बहुत समृद्ध और अमीर परिवार में हुआ था- जिसका हर सदस्य सिर से पांव तक ब्रिटिश सरकार का वफादार था। ऐसे वातावरण में पला हुआ मदनलाल भी एक विलासी और आवारागर्द युवक बन गया था-परन्तु था वह बहुत तीव्र बुद्धि और होशियार। उसके पिता भारतीय मामलों के तत्कालीन मंत्री के खास सलाहकार सर कर्जन वाइली के परम मित्र थे। उन्होंने वाइली से परामर्श कर मदनलाल के बी० ए० करने के बाद, उसे उच्च शिक्षा की प्राप्ति के लिए इंगलिस्तान भेज दिया। लंदन में मदनलाल इंडिया हाऊस में वीर सावरकर और उनके अन्य क्रांतिकारी साथियों के सम्पर्क में आया और धीरे-धीरे उस विलासी

युवक के रक्त में विद्रोह को भावना पैदा होने लगी उसके विचार बदलने लगे।

जब सावरकर की बातों और विचारों से प्रभावित हो मदनलाल ने यह इच्छा प्रकट की कि वह उसे भी अपने क्रांतिकारी संगठन 'अभिनव भारत' का सदस्य बना लें, सावरकर जी तब तक उसके दिल की टोह ले चुके थे। उन्होंने सहज भाव से कहा-"अभिनव भारत का सदस्य बनने के लिए शर्त पूरी करनी पड़ती है -तुम्हें अपनी अग्नि पराक्षा देनी होगी।" मदन मान गया। सावरकर जी ने अभिनव भारत की प्रतिज्ञा सुनाई और मदन को दोहराने को कहा। मदन ने शब्द दोहराए।

मदन ने अपना हाथ उल्टा मेज पर रख दिया। सावरकर जी ने जेब से एक लम्बा छूरा निकाला। उसकी तेज धार क्षरण-भर के लिए दीपक की मद्धम लौ में चमकी और पलक झपकने की देर में छुरा मदन को हथेली को चीरता हुआ नीचे मेजके भी पार निकल गया लहू की गरम धारा फूट पड़ी। मगर मदन के चेहरे पर वही मुस्कान खेल रही थी। उसकी आखों में एक नई चमक उभर आई जैसे उसने सफलता की पहली सीढ़ी पार कर ली। मदन ने सावरकर की ओर देखा और सावरकर ने मदन की ओर। और दोनों ने अपना सिर भारत मां की तस्वीर के आगे झुका दिया।

तभी पहली जुलाई १९०९ को लंदन में एक ऐसा धमाका हुआ, जिसने न केवल सारे ब्रिटेन को कम्पा दिया बल्कि जो सात दिन तक यूरोप के समाचारपत्रों में भी चर्चा का विषय बना रहा। उस दिन जहांगीर हाल में एक सभा थी, जिसमें भारतीय मामलों के मंत्री के प्रमुख सलाहकार सर कर्जन वाईली ने भाषरण देना था। मदन लाल भी वह भाषरण सुनने के लिए गया। हिन्दुस्तान में सर कर्जन के निर्देश और नीति के अनुसार देशभक्तों पर हद से ज्यादा अत्याचार ढाए जा रहे थे। पचासों नवयुवकों को फांसी और सैकड़ो को आजीवन कारावास या अन्य लम्बी कैद की सजाए दी जा रही थी। और जब-अभिनव भारत के एक प्रमुख नेता बाबा गरणेश दामोदर सावरकर (वीर सावरकर के बड़े भाई) को आजीवन कारावास का दंड दिए जाने का समाचार लंदन पहुंचा तो सर कर्जन वाईली को 'समाप्त' करने का फैसला कर दिया गया। इस काम के लिए सावरकर ने मदनलाल को चुना और इस फैसला को कार्यान्वित करने के लिए वह अपने साथियों से कट कर एक ऐंग्लो-इंडियन क्लब का 'विलासी' सदस्य बन गया- ताकि किसी को सन्देह न हो जाए। मदन लाल छः गोलियों वाला भरा हुआ पिस्तौल जेब में डालकर सभा-स्थल पर गया उसी प्रकार मुस्कराता हुआ। दूसरे से हंसी मजाक करता हुआ कर्जन वाईली कार्यक्रम समाप्त होने पर उसी सभा में आए लोगों से मिल रहे थे। जब उन्होंने मदन लाल को देखा तो वह बहुत खुश हुए और उसने मिलने के लिए उसकी ओर बढ़े- आखिर वह उनके मित्र का लड़का था। मगर ज्यू ही सर कर्जन वाइली ने कुछ कहने के लिए मुंह खोला कि मदनलाल ने पलक झपकने की देर में पिस्तौल निकाल कर गोली दाग दी। वाइली वहीं ढेर हो गया एक और अंग्रेज ने मदन पर हमला किया, मदन ने उसे भी ढेर कर दिया। और अपनी पिस्तौल वाइली पर पर खाली कर दी! इसके बाद खाली पिस्तौल फैंक कर मदन ने अपने आपको लोगों की भीड़ के हवाले कर दिया जब पुलिस उसके हाथ बांध रही थी तो उसने मुस्कराते हुए किन्तु बहुत शांत लहजे और टिके हुए स्वर में कहा कृपया मुझे अपनी ऐनक तो ठीक कर लेने दे, तब मुझे हथकड़ी डाल लें!" समाचार जंगल की आग की तरह इंग्लिस्तान से निकल यूरोप में फैल गया और सात दिन तक यूरोपियन समाचार पत्रों में केवल इसी की चर्चा होती रही थी। यूरोप के लोग बड़े उतावलेपन से इस घटना का वास्तविक काररण जानने की प्रतीशा कर रहे थे।

इस तरह इस राजनीतिक हत्या ने पहली बार दूसरे देशोंका ध्यान भारत की पराधीनता के प्रश्न की तरफ खींचा था। हां राजनीतिक हत्या!! और वास्तव में यह थी भी राजनीतिक हत्या क्योंकि मदन लाल अपनी जेब में एक लिखित वक्तव्य डाल कर लें गया था जिसका पहला वाक्य यह था 'मैंने अंग्रेज का खून जानबूझ कर बहाया है। मेरे देश में स्वतन्त्रता की मांग करने वाले भारतीय नवयुवकों को जो अन्धाधुन्ध उम्र-कैद और फांसी की सजाएं दी जा रही हैं, मैंने उन अमानुषिक बल्कि दानवी अत्याचारों के विरुद्ध रोष प्रकट करने के लिए प्रोटैस्ट करने के लिए बहाया है।"

ढींगरा को जब अदालत में लाया गया तो उसने मांग की कि गिरफ्तारी के समय उसकी जेब में एक वक्तव्य था, जिसे पुलिस ने अपने कब्जे में ले लिया है

(शेष पृष्ठ २५ पर)

नारी जगत

लाला लाजपतराय ने कहा था

दासता की दोहरी जंजीरें–
शिक्षा द्वारा महिलाओं की आजादी

हमारे समाज में सबसे बड़ी आवश्यकता इस बात की है कि माताओं की देखभाल और सेवा का उत्तम प्रबन्ध हो। माताएं ही किसी जाति की निर्माता होती हैं और जब तक उनको अपनी स्थिति अच्छी न हो कुल और जातियां आगे नहीं बढ़ सकती। जब हम अच्छी और स्वस्थ स्थिति की बात कहते हैं उनमें हम उन सभी बातों को शामिल करते हैं, जिनसे जीवन आनन्दमय और प्रगतिशील बन सकता है।

किसी भी सामाजिक या राजनैतिक ऐकांश को समृद्धि और कार्य कुशलता का आधार यह है कि उनकी महिलाओं की कार्यकुशलता और समृद्धि का स्तर क्या है हमारी महिलाओं को अनेक कठिन स्थितियों में कार्य करना पड़ता है। उनकी योग्यता तथा कार्य-कुशलता को न केवल अज्ञानता तथा अन्धविश्वास से क्षति पहुंचती है, बल्कि शारीरिक दृष्टि से भी उनकी स्थिति काफी क्षीण है। उनकी शारीरिक बाधाओं का मुख्य कारण उन पर लगाई गई सामाजिक पाबंदियां हैं।

एक प्रकार से वह शेष जीवन अपंग रहकर ही व्यतीत करती है। जो महिलाएं बच्चे जनती रहती है, उनका जीवन एक दुःखी जीवन होता है जिसमें न कोई उत्साह होता है और न लगन।

आम तौर पर महिलाए अपने आहार की कोई परवाह नहीं करती. उन्हे तो केवल एक ही चिन्ता रहती है कि किस प्रकार परिवार के पुरुष सदस्यों को अच्छा खाना मिले। वह स्वयं किसी भी तरह जीवित रह लेती हैं। वास्तव में भारत के सभी लोग अपने आहार के बारे में वेपरवाह होते हैं। धनी लोग आवश्यकता से अधिक खाते हैं और निर्धन आवश्कता से बहुत कम। मध्य वर्ग और निर्धन परिवारों में महिलाए सारा दिन खाना पकाने में ही गुजार देती हैं। दोनों पुरुष और महिलाओं को यह पता नहीं होता कि जो कुछ वह खा रही हैं या पी रही हैं उसमें कितनी पौष्टिकता है। वह समय पर खाना खाने का महत्व भी नहीं जानती।

लाला लाजपत राय जितने महान स्वतन्त्रता सेनानी थे, उतने ही महान सामाजिक क्रांतिकारी भी थे। वह शिक्षा द्वारा महिलाओं की आजादी में विश्वास रखते थे। १९२३ में उन्होंने अखिल भारतीय हिन्दू शिक्षा सम्मेलन में जो भाषण दिया था वह पाठको की सेवा में प्रस्तुत है।

वह ऐसी आयु में माताएं बन जाती हैं। जिस आयु में दूसरे देशों की लड़कियां स्कूल में ही पढ़ती हैं। इस प्रकार उन देशों की लड़कियां शारीरिक व्यायाम में अपनी मांसपेशियां हाथों और पैरों को मजबूत बनाती हैं पहले बच्चे के जन्म के दौरान ही काफी बड़ी संख्या में इन महिलाओं की मृत्यु हो जाती है और बहुत सी महिलाए अपंग हो जाती हैं। और

महिलाएं न तो खुली वायु मे जाती हैं और न हो कोई व्यायाम ही करती हैं, फिर उनकी जाति और कुल में सुधार कैसे हो सकता है और कैसे उस कुल के लोगों में कार्यकुशलता पैदा हो सकती है। हमारी महिलाए काफी बड़ी संख्या में कम आयु में ही मर जाती हैं। इनमें से जो माताए होती हैं वह अपने बच्चों को भी अपनी ही तरह रोगी बना देती हैं। परिवार में

जो लोग क्षय रोग से पीड़ित होते हैं, उन्हें परिवार के दूसरे सदस्यों से अलग रखना तो एक प्रकार असम्भव ही है क्योंकि वह जब तक उन्हें अपने पास न रखें वह चैन से नहीं रह सकती।

बाल-विधवाओं की दशा तो और भी शोचनीय है। जो पुर्नविवाह के विरुद्ध हैं, उनका तो भगवान ही रक्षक है। उनके अन्धविश्वास के कारण अनेक प्रकार की बुराइयां पैदा हो जाती हैं और नतिक और शारीरिक स्तर पर उन्हें अनेक प्रकार कीं बाधाओं का सामना करना पड़ता है। इससे पूरे समाज को अनेक प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

शताब्दियों से दासता का शिकार

हमारी महिलाओ को जिन बाधाओं और विषमताओं का सामना करना पड़ता है, उसका प्रभाव पुरुषों पर भी पड़ता है। हम दूसरों को तानाशाही और धृष्टता को इसलिए सहन करते है क्योकि हम स्वयं दूसरों से यहो व्यवहार करते है। नम्रता महिलाओं के लिए एक वरदान है, किन्तु विवशता निर्भरता और असहायपन महिलाओं में ही क्यों हो ? मैं चाहता हूं कि भारतीय महिलाओं में नम्रता हो, अपने घर और परिवार के प्रति कर्त्तव्य परायणता हो किन्तु उसके साथ ही साथ उन्हें अपनी बात पर अटल रहने का गुर भी सीखना चाहिए। जिन लोगों में यह योग्यता नहीं होती वह कभी स्वतन्त्र नहीं हो सकते वह सुरक्षा के लिए हमेशा दूसरों का मुंह देखते हैं। यह नहीं कहता दूसरों के प्रति आक्रामक और घृणा की भावना अपनाई जाये परन्तु हमेशा सुरक्षात्मक रवैया अपनाने का भी कोई लाभ नहीं।

जीवन में ऐसे अवसर आते हैं जब लोगों को आक्रामक भावना से भी कार्य करना पड़ता है जब उसे किसी की स्वतन्त्रता या जोवन बचाने की इच्छा होती है। ऐसी स्थिति में आक्रामक भावना वास्तव में अपनी सुरक्षा का ही दूसरा नाम है। भारत का प्राचीन इतिहास इस बात का सूचक है कि प्राचीनकाल में महिलाए स्वतन्त्र थी। उनमें अपनी बात पर अड़ जाने की योग्यता अधिक थी। वह अधिक स्वावलम्बी थी और आज की अपेक्षा शारीरिक दृष्टि से भी उनमें अधिक क्षमता थी। उनकी सन्तान भी साहसी दयालु आत्मविश्वासी और मजबूत शरीर की होतो थी। यदि भारतवासियों को अपनी वर्तमान दुर्दशा मे बाहर निकलना है, तो उन्हें अपनी महिलाओं का स्तर सुधारना चाहिए।

ज्ञान द्वारा स्वाधीनता

भारतीय लड़कियों और महिलाओं को हर प्रकार के अन्धविश्वास से मुक्ति दिखाई जानी चाहिए, क्योंकि इसी से जीवन में नीरसता, आहार के प्रति उदासीनता शक्ति में कमी और अत्याचारों को चुपचाप सहन करने की आदत, भय और दूसरों पर निर्भरता की भावना पैदा होती है। मुझे गलत न समझा जाये यो मैं यह कहूंगा कि झगड़ालू, असभ्य तथा हठी नारी से अधिक घृणात्मक कोई नारी नहीं है, किन्तु यदि कार्यकुशल, साहसी, स्वतन्त्र और शारीरिक रूप से स्वस्थ माता बनने के लिए केवल इसी रास्ते से गुजरना पड़े तो मैं वर्तमान स्थिति को ही प्राथमिकता दूंगा। मैं अपने देशवासियों से केवल इतना ही कहूँगा "आप की महिलाए ही आपको निर्माता है। उनकी रक्षा कीजिए और उन्हें शिक्षित बनाइये।"

लेखकों से:—

* समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता शोषण, अन्धविश्वास छूआछात एवं जीवन केदोहरेपन पर प्रहार करने वाली रचनाओं के लिए राजधर्म आपका स्वागत करता है।
* वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर समाज व्यवस्था कैसी हो किस प्रकार से व्यक्ति का आत्मिक चरित्र एवं शारीरिक उत्थान किया जाए तथा समाज में नव चेतना कैसे फूकी जा सके आदि विषयक लेख राजधर्म द्वारा आमन्त्रित है।
* आपके विचारों से यदि जनता के दिल व दिमाग में अज्ञान अन्यया अभाव के विरुद्ध उथल पुथल मच सके और उनके जीवन में आशा की नई किरण फूट सके तो हम आपके अत्यन्त आभारी होंगे।
* उपरोक्त विचारों को लेकर अब हम राजधर्म को रचनात्मक दृष्टि कोण प्रदान करने बाला जनता का सबल प्रतिनिधि बनाना चाहते है क्या आपका हमें इस कार्य में पुनीत सदयोग मिलेगा ?

-: सम्पादक :-

क्या आप चाहते हैं कि............ ?

.........आपकी धमनियों में बहने वाला रक्त तेजी से दौड़ने लगे?.........यदि हां, तो निम्नलिखित साहित्य मंगाइये और पढ़िये!

※ फांसी की कोठरी में बैठकर शहादत से तीन दिन पूर्व लिखी गई महान् क्रांतिकारी रामप्रसाद 'बिस्मल' की आत्मकथा

—मूल्य २ रु०मात्र

※ तीन नवयुवकों के साहस, शौर्य और बुद्धिमत्ता की कहानी पर आधारित सय्याह सुनामी का उपन्यास--**"आखिरी जीत हमारी"**

—मूल्य २ रु० मात्र

※ वैदिक समाजवाद के विरोधियों की सभी शंकाओं का मुँह तोड़ जवाब देने वाली स्वामी अग्निवेश द्वारा लिखित पुस्तक—**'वैदिक समाजवाद'**

—मूल्य २रु० मात्र

※ भुजाओं में वज्र की सी कठोरता और शरीर में बिजली की सी स्फूर्ति लाने वाली पुस्तक **आसन प्रणायाम"**—लेखक स्वामी इन्द्रवेश

—मूल्य २ रु० मात्र

※ आर्य राष्ट्र उद्घोषक स्वामी समर्पणानन्द जी द्वारा पंच महायज्ञों के महत्त्व की वैज्ञानिक व्याख्या करने वाली पुस्तक—**पंच यज्ञ प्रकाश"**

—मूल्य २ रु० मात्र

※ स्व० इन्द्र विद्यावाचस्पति द्वारा रचित जीवन को हर पल नई दिशा देने वाली पुस्तक—**जीवन संग्राम"**

—मूल्य २ रु० मात्र

※ वैदिक अर्थनीति की सरल और सुन्दर ढंग से व्याख्या करने वाली सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान् आचार्य प्रियव्रत वेदवास्चपति की पुस्तक—**'वैदिक अर्थव्यवथा"**

—मूल्य १ रु० मात्र

इसके अतिरिक्त राजधर्म पाक्षिक की वार्षिक और छमाही फाइलें भी अत्यंत ही कम मूल्य—क्रमशः १० रुपये और पांच रुपये में दी जा रही हैं।

कुछ समय के लिए हम उपरोक्त सभी पुस्तकों पर २५ प्रतिशत के आकर्षक कमीशन की सुविधा अपने पाठकों को दे रहे हैं

अवसर का लाभ उठाइये! अपना आर्डर आज ही भेजिए।

राजधर्म प्रकाशन रोहतक

दूरभाष : ३८०१

आर्य युवा पीढ़ी के प्रेरणा स्तम्भ--स्वामी श्रद्धानन्द

कु० मन्जु

साहस, संयम और उत्साह की प्रेरणाओं से परिपूर्ण आर्य सन्देश का मूर्तिमान प्रतीक देखना हो तो स्वामी श्रद्धानंद का जीवन देखना होगा। आर्य वीर उनसे प्रेरणा लेकर कर्म-क्षेत्र में धूम मचा सकते हैं। वास्तव में स्वामी जी आर्यसमाज के उज्ज्वल रत्न, महर्षि दयानन्द के आदर्श अनुयायी, राष्ट्र के सच्चे सपूत व भारतीय संस्कृति के उज्ज्वल रत्न थे। स्वामी जी ने जीवन में अनेक क्रांतिकारी कदम उठाये और अदम्य उत्साह से आगे बढ़ते चले गए, उनका विचार अंकुरित होते ही फल फूल से लदा दीखने लगता था। यह महर्षि दयानन्द का ही प्रभाव था कि श्रद्धानन्द जैसा कर्मयोगी महानुभाव आर्य-जाति को प्राप्त हुआ, जिसने वैदिक धर्म पर न्योछावर कर दिया। स्वामी जी ने अपना लक्ष्य बनाया था--वैदिक शिक्षा एवं ब्रह्मचर्य प्रणाली का पुनरुत्थान। जिसकी नींव पर आर्यराष्ट्र स्थापित हो सके और कृण्वन्तो विश्वमार्यम का नारा साकार किया जा सके। गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की धूम श्रद्धानन्द जी को अपेक्षित थी। किन्तु वह स्वप्न आज की राजनीति के कुचक्र ने धूमिल कर दिया। स्वामी जी ने तो देश-धर्म के लिए सर्वमेध यज्ञ किया था। आर्य युवकों को उनसे प्रेरणा लेते हुए श्रेष्ठ आर्य मनीषियों के हाथ में राज्यसूत्र देना होगा। तभी उन गुरुकुलों का विशुद्ध रूप रखते हुए--वैदिक शिक्षा-प्रणाली को व्यवहारिक रूप में राष्ट्र में व्याप्त किया जा सकता है, तभी ब्रह्मचारी ऋषियों का युग ला सकते हैं। सारा काम राज्यसूत्र हाथ में लेने से होता है, सभी समस्यायें उसी के चारों ओर घूमती हैं।

स्वामी जी की विशेषता थी--संकल्प के पक्के रहना, जैसा कहना, वैसा करना। गुरुकुल खोलने का निश्चय किया तो प्रण किया--जब तक ३० हजार रुपये एकत्रित न कर लूंगा, घर नहीं लौटूंगा। यह प्रवृत्ति थी जिसने ला. मुन्शीराम को श्रद्धानन्द के रूप में राष्ट्र के सामाजिक व राजनैतिक प्रांगण में ला खड़ा किया। गुरुकुल में उन्होंने सर्वप्रथम अपने ही पुत्रों का प्रवेश कराया था। आज तो न केवल इस के अपितु विदेशों के शिक्षाविज्ञ भी गुरुकुल शिक्षा-प्रणाली की तरफ आशा भरी निगाहों से देख रहे हैं। कर्तव्य की पुकार युवकों का ही आह्वान कर रही है। आर्य भाषा के लिए आन्दोलन किया तो एक ही रात में अपने 'सद्धर्म प्रचारक' को उर्दू से हिन्दी में कर दिया। उन्होंने तो आर्य समाज के लिए अपनी चमकती वकालत को भी लात मार दी थी। क्या अग्नि भैया और इन्द्र भैया इसी राह पर नहीं चल रहे? अपने आदर्श को दखते हुए वे सत्य मार्ग पर चलने से कभी न डिगे।

स्वामी जी के जीवन का एक प्रमुख उद्देश्य था शुद्धि। देश, धर्म, शरीर, मन, आत्मा--जहां कहीं भी उनको मलिनता मिली, उसका शुद्धि द्वारा निराकरण किया। देश में मुसलमानों की दूषित मनोवृत्ति का सामना करने के लिए आपने अखिल भारतीय शुद्धि सभा की स्थापना कर लाखों भूखे, बिछुड़े और त्यागे हुए भाइयों को गले लगाया। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में मलिनता प्रवेश कर गई है, शुद्धि कितनी आवश्यक है-- सोचने की बात है। भारत में आपने ही पहला कन्या विद्यालय जालन्धर में स्थापित कर विद्या मन्दिर का द्वार स्त्री जाति के लिए खोल दिया, समाज सुधार के क्षेत्र में उन्होंने बेधड़क हो पर्दा-निवारण, जाति पांति बन्धन तोड़ना आदि अपने घर से आरम्भ किया।

राष्ट्र नायकों की नक्षत्रमाला में स्वामी श्रद्धानन्द जी एक चमकते हुए सितारे हैं। वे राजनीति विशारद तथा राष्ट्रीय आन्दोलन में चोटी के नेताओं में सिरमौर थे। मार्शल ला के दिनों में जब किसी और की हिम्मत न थी, तो स्वामी जी ने ही १९१९ में भारतीय कांग्रेस का अधिवेशन स्वयं स्वागताध्यक्ष बन कर अमृतसर में कराया। चांदनी-चौक दिल्ली में सन १९१९ की ३० मार्च को ऐतिहासिक जलूस का नेतृत्व करने वाले स्वामी श्रद्धानन्द ही थे, जिन्होंने फौज की बन्दूकों व संगीनों को पीछे धकेलते हुए कहा था 'यदि साहस हो तो पहले श्रद्धानन्द की छाती में गोली मारो।' उस समय किसकी ताकत थी कि दिल्ली की जामा-मस्जिद से वेद मन्त्रों का उच्चारण कर सके। किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जी ने जामा-मस्जिद की वेदी से 'त्वं ही नः पिता वसो त्वं माता' वाला वेदमन्त्र बोलकर हजारों हिन्दू-मुसलमानों की उपस्थिति में उपदेश दिया। युवा पीढ़ी को आज इसी साहस, हिम्मत, दृढ़ संकल्प और कर्मनिष्ठा की आवश्यकता है।

अपने जीवन में स्वामी जी ने अनेक क्रांतिकारी महान कार्यों का अनुष्ठान किया उन महान कार्यों में से एक था

[शेषांश पृष्ठ १९ पर]

देव दयानन्द के सपनों का आर्य समाज कैसे बने

स्वामी इन्द्रवेश

आर्य समाज अपनी स्थापना की एक शताब्दी पूरी कर चुका है। अपने १०० साल के इतिहास में आर्य समाज ने अनेक मोर्चों पर विजय हासिलि की है। विधर्मियों के साथ बहुत से शास्त्रार्थ किए हैं। वैदिक ज्ञान-विज्ञान के प्रचार-प्रसार, समाज-सुधार और शैक्षणिक दृष्टि से भी उसने क्रांतिकारी परिवर्तन की दिशा मे महत्वपूर्ण कार्य किया है।

परन्तु अपने अनेक महत्वपूर्ण उपलब्लियों से भरे इस कार्य-काल में आर्य समाज कुछ एक बातों की ओर उतना ध्यान नहीं दे पाया, जितना अपेक्षित था। ये बातें ऊपर से भले ही कम महत्व की दिखाई दें, पर वास्तव में मानव निर्माण की दिशा में वे बड़ी ही महत्वपूर्ण हैं। दूसरी ओर आर्य समाज के संगठनात्मक पक्ष को सुदृढ़ बनाने के लिए भी इनकी ओर ध्यान देना अत्यावश्यक है।

योगाभ्यास–

जिस तरह शरीर के लिए भोजन, बुद्धि के लिए स्वाध्याय और ज्ञान विज्ञान के अध्ययन की आवश्यकता होती है, उसी तरह आत्मा की परिशुद्धि के लिए योगाभ्यास परमावश्यक है। आर्य समाज के प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अष्टाङ्ग योग (यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान समाधि) को मनुष्य के जीवन में बड़ा महत्वपूर्ण स्थान दिया है। उन्होने प्रत्येक मनुष्य के आत्मनिर्माण के लिए इस बात का विधान किया है कि वह अपनी दिन-चर्चा से निवृत्त होकर सन्ध्या अवश्य करे। कम से कम आर्य समाजियों के लिए तो इसे करने का विशेष उल्लेख किया गया है। आज कुछ लोग संध्या के मन्त्र-मात्र उच्चारण करके एक तरह की मूर्ति पूजा सी करके उठ जाते हैं। न उन्हें मन्त्रों का समुचित ज्ञान होता है और न ही विभिन्न यौगिक क्रियाओं का

आज जो आर्य समाजी कार्यकर्त्ता अपनी आयु के अन्तिम चरण में वान प्रस्थ और संन्यासी होकर समाजसेवा का बीड़ा उठाने के स्थान पर या तो अत्याधिक लोकेषणा से ग्रस्त होकर समाज में पदों और सम्पति के लिए झगड़ते रहते हैं। अथवा खिन्न होकर असामाजिक जीवन अपना कर घरों में घुसकर बैठ जाते हैं, इसका कारण भी योगाभ्यास और साधना हीन जीवन है। महर्षि के अनुसार यदि मनुष्य प्रतिदिन के दैनिक जीवन में साधना को अपनाकर चले तो वह दिन निश्चतरूप से परोपकारी बनकर मान-अपमान सुख-दुःख आदि द्वंद्वो से ऊपर उठ सकता है। आर्य समाज के सौ वर्ष के आन्दोलनात्मक इतिहास में इस बात का बड़ा अभाव रहा है कि वह मानव को साधनामय जीवन अपनाने की प्रेरणा देने का तत्व अपने में समाविष्ट नहीं कर पाया। यही कारण है कि हम अपने अभीष्ट लक्ष्य की पूर्ति करने में सफलता प्राप्त नहीं कर सके।

एक स्वस्थ विचारवान् और शुद्ध हृदय वाले मानब का निर्माण करना आज आर्य समाज के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण तथा चुनौती भरा कार्य है। वर्तमान पूंजीवादी युग में जबकि प्रत्येक प्राणी भौतिक साधनों का क्रीतदास मात्र होकर रह गया है, उसे धन-दौलत के व्यामोह से ऊपर उठ कर अभ्यान्तर और बाह्य शत्रुओं को जीतने के लिए अपने भीतर आध्यात्मिक शक्ति को संचित करने की बड़ी आवश्यकता है।

आजकल योग, ध्यान और प्राणायामादि के काम पर बहुत सा पाखण्ड भी प्रचलित हो रहा है जो बुद्धिजीवी वर्ग को---दिग्भ्रमित करके उसका जीवन नष्ट कर रहा है। परन्तु वैदिक साहित्य में इस क्षेत्र में सही दिशा-निर्देश करने वाले आवश्यक तत्वों के होते हुए भो आज हम उन्हें क्रियात्मक रूप नहीं दे पा रहे हैं, यह शोचनीय विषय है।

पंच महायज्ञ–

वैदिक साहित्य एवं आर्य समाज में पंचमहायज्ञों का बड़ा ही विशिष्ट स्थान है। हर आर्य समाजी के लिए यह आवश्यक होना चाहिए कि वह पंच महायज्ञों को अपने दैनिक जीवन का अंग बनाये। आगे आने वाले १०० वर्षो में हमें आर्य समाज के सभी कार्यक्रमों में पंचमहायज्ञों का समावेश क्रियात्मक रूप से करना होगा।

आर्य समाज में आजकल कर्मकाण्ड की भी घोर उपेक्षा की जा रही है। प्रायः देखा गया है कि समाजों के अधिकारी तो दूर बैठ कर अखबार पढ़ते या गप्पें हाँकते रहते है और पुरोहित आदि ही यज्ञ सम्पन्न कराते हैं- अतः सभी अधिकारियों के लिए—समाज

के प्रधान और मन्त्री के लिए तो निश्चित रूप से-- यह आवश्यक होना चाहिए कि वे कर्मकाण्ड आदि के कार्यक्रमों में पूरी श्रद्धा और निष्ठा से भाग लें

संगठनात्मक-प्रगति--

एक छोटे से परिवार को सुचारू रूप से चलाने के लिए भी यह आवश्यक होता है कि उसका मुखिया अपना पूरा समय इसी कार्य के निमित्त लगाये। परन्तु आर्य समाज का यह विशाल सगठन जो पूरी व्यापकता के साथ देश-विदेश में फैला हुआ है ऐसे कबड्डी लीडरो के चंगुल में फंसा है, जो सप्ताह भर में केवल घंटे-आध घटें का समय इसके लिए दे पाते हैं। वैसे तो समाज में अनेकों संन्यासी वानप्रस्थी और ब्रह्मचारी भी हैं जो अपना पूरा समय समाज-सेवा में लगा रहे हैं, परन्तु वे या तो आर्य समाज के संगरनात्मक ढांचे के नियन्त्रण और अनुशासन में रहना नहीं चाहते या फिर विवादों और संघर्षों के झंझटों के भय से इस कार्य की उपेक्षा कर देते हैं।

आर्य समाज के संगठन में संन्यासियों. विद्वानों, उपदेशकों एंव पुरोहितों को शीर्षस्थानीय होना चाहिए। किन्तु आर्यसमाज के संगठन में इस पूजनीय वर्ग की घोर उपेक्षा की जा रही है। इसा कारण आर्य समाजियों में धार्मिक श्रद्धा का अभाव दिखाई देना है। कम से कम प्रांतीय सभाओं के वरिष्ट पदाधिकारी तो पूरा समय देने वाले कार्यकर्त्ता ही होने चाहिए। यहां एक बात और है। किसी प्रांतीय सभा के पदाधिकारी होने के लिए पूरा समय देना ही एक योग्यता नहीं होनी चाहिए उसके लिए यह भी आवश्यक समझा जाना चाहिए कि वह आर्यसमाज के सिद्धांतों और कार्यक्रमों के प्रति पूरी तरह निष्ठावान् हो और उनकी क्रियान्विति में पूरी तरह सचेष्ट और सजग हो। इसके लिए समय-समय पर कैम्प आदि लगा कर उन्हें पर्याप्त प्रशिक्षण दिये जाने की व्यवस्था भी होनी चाहिए।

आर्य समाज के क्षेत्र में पिछले काफी समय से इस बात पर भी बडा अन्तर्द्वन्द्व चला आ रहा है कि इसकी युवक और महिला इकाइयों का गठन कैसे हो? स्थानीय समाजों, जिला सभाओं तथा प्रांतीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर आज आर्य समाज में युवकों और महिलाओं के प्रति अत्यन्त उपेक्षा बरती जा रही है। समाज के इन उपेक्षित वर्गों की ओर ध्यान न देकर कुछ विशेष प्रकार के व्यक्ति ही निरन्तर अधिकारी बनते जा रहे हैं और समाज के मठाधीश बन बैठे हैं। इनका वर्तमान से जुड़कर समाज की सेवा करना नहीं, बल्कि निरन्तर उसकी प्रगति में बाधक बन कर निराशा और कुण्ठा का वातावरण उत्पन्न करने का हो गया है। इस सारी स्थिती पर दृष्टि पात करते हुए यह आशानी से कहा जा सकता है कि आगामी समय में आर्य समाज में युवा तथा महिला वर्ग की भूमि का बड़ी संघर्षपूर्ण होगी। इस लिए एक ओर जहाँ युवको और महिलाओं के पृथक संगठन बनना आवश्यक है वही सभी को चाहिए कि वे आर्यसमाज की विधिवत सदस्यता ग्रहण करें। और सामूहिक रुप से साप्ताहिक सत्संगों तथा अन्य कार्यक्रमो में सम्मिलित हों। आज आर्य वीर दल जैसे युवक संगठन और आर्य स्त्री-समाज जैसे महिला संगठन भी अपने कार्यक्रमो का निर्धारण स्वतन्त्र रुप से करने में असमर्थ हैं। क्योंकि वे कुछ व्यक्तियों के इशारों पर चलते है। इन संगठनों के प्रमुख भी उपर से थोपे जाते हैं। जिनके कारण निष्ठावान और इमानदार कार्यकर्ता पीछे रह जाते हैं। और चापलूसों तथा अवसरवादियों को सर्वेसर्वा बनने का मौका मिल जाता है

आज इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि आर्य समाज का संगठन जनसाधारण से जुडें। आर्य समाज के हर कार्यकर्ता के मन में साधारण आदमी के प्रति विशेष सहानुभुति होनी चाहिये जनसाधारण के उपकार के लिए जो कार्यक्रम आज से सौ साल पहले महर्षि दयानन्द तथा प्रथम पीढ़ी के अन्य नेताओं ने दिये थे संगठन के अभाव में वे भी कार्य रूप में परिणित नहीं हो पा रहे है इस लिए आज समय की यह मांग है कि प्रत्येक संन्यासी, कार्यकर्ता उपदेशक तथा भजनोंपदेशक किसी एक केन्द्र से प्रेरणा प्राप्त करें। वे अनुशासनात्मक दृष्टि से भी पूरी तरह इस केन्द्र के अधीन होकर कार्य करें और अपने-अपने उत्तर दायित्व पूर्ण पदो पर पूर्णतः सन्नद्ध होकर जुट जायें।

[शेषांश पृष्ठ १९ पर]

राष्ट्रीय जीवन में सर्वांगीण क्रान्ति के जन्मदाता

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द

★ जगवीर आर्य, पलवल

मिट गए खुद पर न मिटने दी थी कोमी आबरू।
उन शहीदा ने वतन को बार-बार मेरा प्रणाम ।।

२२ फरवरी, १८५७ को तलवन नामक गांव (जिला जालन्धर) के एक सम्पन्न पुलिस अफसर के घर पैदा होने वाला मुन्शी राम के जीवन पर महान समाज सुधारक देव दयानन्द के व्यक्तित्व और कृतित्व की एक ऐसी अमिट छाप पड़ी जिसने मुन्शी राम को महान देश भक्त स्वामी श्रद्धानन्द बना दिया।

एक परतन्त्र देश को पीड़ा के आँसुओं को अपने मन में बोने वाला यह वीर देश की शिक्षा प्रणाली व व्यवस्था को देखकर, अति दुःखी हुआ और इसने अपनी प्राचीन गौरवमयी संस्कृति का आदर्श पुनः स्थापित करने के लिए देशभर में गुरुकुलों का जाल बिछाया। इनके द्वारा खोले गये गुरुकुल कांगड़ी, कन्या गुरुकुल देहरादून, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरुकुल कुरुक्षेत्र आज भी राष्ट्रीय संस्कृति को प्रसारित करने में प्रकाश स्तम्भ बने हैं। गुरुकुल कांगड़ी की प्रशसा सुनकर महात्मा गान्धी भी श्रद्धा की वेजोड़ मूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द से मिलने गुरुकुल कांगड़ी गए। वहां राष्ट्रोत्थान व धार्मिक वातावरण को देखकर गांधी जी गदगद हो गए और कहने लगे।

"मुझे पता नहीं था कि देश की आजादी के लिए जिस काम को मैं अब शुरु कर रहा हूँ। आप इसी काम को बहुत पहले से कर रहे हैं मुझे विश्वास है कि आप धर्म प्रचार और देश की स्वतन्त्रता के लिए जो महान प्रयास कर रहे हैं, अवश्य ही सफल होगा।

मिस्टर गांधी को महात्मा गांधी बनाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द को महात्मा गांधी ने भी अपना गुरु स्वीकार किया था। आपके द्वारा सम्पादित व संचालित तेज व अर्जन नामक समाचार पत्रों ने सोये हुए राष्ट्र और जाति में एक नया जीवन फूंका और अंग्रेज सरकार को उखाड़ फेंकने में ऐतिहासिक योगदान दिया।

शुद्धि आन्दोलन के माध्यम से आपने लाखों कौम के जवानों को विधर्मी होने से रोका और जो लोग इस आर्य (हिन्दू) संस्कृति को मिटाने के गोरी सरकार के षडयन्त्र का शिकार हो विधर्मी बन गये थे उन्हें पुनः वैदिक धर्म में दीक्षित कर जो महान उपकार स्वामी जी ने हिन्दू जाति पर किया उससे हम सभी कभी भी ऋणी नहीं हो सकते। आपके द्वारा चलाई दलितोद्धार सभाओं के कार्य आज भी वर्तमान सरकार के लिए आदर्श है।

अपने जीवन के उच्च आदर्शों व व्यक्तित्व के कारण विधर्मी भी आपका आदर करते थे। हिन्दू मुसिलम एकता का वह बेजोड़ नमूना तब प्रस्तुत हुआ जब आपने जामा मस्जिद की वेदी से वेद के पावन मंत्रों से आपने अपना भाषण प्रारम्भ किया। सिक्खों के सबसे उच्च स्थान अकाल तख्त गुरु के बाग से भाषण देकर राष्ट्रीय स्वाधीनता का बिगुल बजाने वाले स्वामी श्रद्धानन्द ही थे। अंग्रेज सकार के छक्के छुडाने वाले इस महान, साहसी सेनानी को यह श्रय भी प्राप्त है कि १९१९ में अमृतसर में कांग्रेस के अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष बने और कांग्रेस के इतिहास में पहली बार अपना स्वागत भाषण हिन्दी में पड़ा। ध्यान रहे कि जलियाँवाला बाग के निर्मम हत्या कांड और अंग्रेज सरकार के दमन चक्र से भयभीत भारतीय जनता के नेताओं में से कोई भी इस अधिवेशन का स्वागताध्यक्ष बनने को तैयार न था।

अंग्रेजी दमन चक्र के विभीत्स रूप का वैज्ञानिक मुखौटा रौल्ट ऐक्ट के रुप में प्रकट हुआ। राष्ट्र भर में इसका विरोध हुआ दिल्ली में एक विशाल जलूस स्वामी श्रद्धानन्द के नेतृत्व में निकाला गया। चांदनी चोक पर इस विशाल जन-ज्वाला पर ठण्डा पानी पकने हेतु पुलिस ने इसे रोकने की कुचेष्टा की

(शेषांश पृष्ठ १८ पर)

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्धश[ताब्दी] स[म्मेलन]

१८-१९-२० फर[वरी १]९७७

समस्त आर्य ज[नता] उत्साह

हरयाणा के मुख्यमंत्री बनारसीदास गुप्त एवं [मु]ख्यमन्त्री

सम्मेलन की तैयारियां युद्धस्तर पर जारी

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी को शहीद हुये ५० वर्ष बीत चुके हैं। उन्होंने अपने जीवन को देश की आजादी के लिए, अछुतोदार, जातिपांति तथा अज्ञान को मिटाने के लिए होम कर दिया। उनके जीवन से प्रेरणा लेने की आज फिर जरूरत है। अतः स्वामी श्रद्धानन्द के इस पचासवें बलिदान वर्ष पर १८-१९-२० फरवरी १९७७ को जीन्द में होने वाले ऐतिहासिक अर्द्ध शताब्दी सम्मेलन को विशल स्तर पर मनाने के लिए स्वामी इन्द्रवेश के नेतृत्व में युद्ध स्तर पर तैयारियां प्रारम्भ हो चुकी हैं। जीन्द, हिसार और कुरुक्षेत्र जिलों के गांव-२ में विशेष रूप से प्रचार अभियान प्राराम्भ हो गया है। बाहर से पधारने वाले लाखों लोगों का आवास, भोजन एवं अन्य सुविधाऐं प्रदान करने के लिए जीन्द शहर की जनता व्यवस्था में जुटी हुई है। सभी धर्मशालायें स्कूल तथा अन्य सार्वजनिक स्थान सुरक्षित करवाए जा रहे हैं। स्थानीय प्रशासन का सहयोग भी पूरा मिल रहा है। इस तरह से हर कार्यकर्ता दिन रात एक करके कार्य में जुटा हुआ है।

सम्मेलन कार्यालय जींद में

अर्द्धशताब्दी सम्मेलन के लिए विशेष रूप से आर्य समाज मन्दिर जीन्द (हरयाणा) में कार्यालय खोला गया है। ५-६ व्यक्ति नियमित रूप से कार्य में जुटे हुये हैं। अतः शताब्दी सम्मेलन सम्बन्धी सभी सूचनाऐं वहीं से प्राप्त करें।

स्वामी इन्द्रवेश व रामधारी शास्त्री के तूफ़ानी दौरे

सम्मेलन के संयोजक श्री रामधारी शास्त्री ने जीन्द जिले का विस्तृत कार्यक्रम बना लिया है साथ ही स्वामी इन्द्रवेश जी ने भी स्थान-२ पर अपना तूफानी दौरा प्रारम्भ कर दिया है स्वामी जी के जाने से सभी कार्यकर्ताओं का हौसला बुलन्द हो जाता है और अब गांव-२ में धनसंग्रह एवं अन्य प्रबन्ध के लिए टोलियां कार्य में जुट गई हैं। स्वामी इन्द्रवेश जी सारे हरयाणा का दौरा कर रहे हैं और अन्य प्रान्तों में भी सम्मेलन की तैयारियों के लिए समय लगा लेंगे।

ग्राम करेला से प्रेरणा लो

जींद जिले के प्रसिद्ध ग्राम करेला में स्वामी इन्द्रवेश जी का भव्य स्वागत किया गया और गांव की ओर से साढ़े पांच हजार रुपये की राशि भेंट करने की घोषणा की। छोटा सा गांव पर भावना बड़ी ऊंची है। सभी आर्यों को इस गांव से प्रेरणा लेनी चाहिए और अर्द्धशताब्दी सम्मेलन के लिए बढ़-चढ़ कर दान देना चाहिए। यह मौका है जब आप अपने गांव का या अपना नाम ऊंचाकर सकते हैं।

डा० धर्मवीर व स्वामी चन्द्रवेश की टोली मैदान में

अर्द्ध शताब्दी सम्मेलन जीन्द के उमड़ते-घुमड़ते जोश को देखकर अब एक से एक कर्मठ व्यक्ति मैदान में उतरने लगा है। सभा के वेदप्रचार अधिष्ठाता स्वामी चन्द्रवेश व झज्जर के प्रसिद्ध कार्यकर्ता डा० धर्मवीर जी अपनी मोटर-साईकल लेकर जीन्द पहुंच गये हैं और कार्य में जुट गये हैं।

भजन मण्डलियों ने धूम मचादीः—

आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक सम्मेलन के प्रचार एवं धन संग्रह में पूरी शक्ति के साथ लगे हुये हैं। स्वामी रूद्रवेश जी ने कैथल व कुरुक्षेत्र का क्षेत्र सम्भाल रखा है और इसी तरह से पं० चन्द्रभान, खेमसिंह व पं चुनीलाल आदि भी अपनी मण्डलियों को लेकर प्रचार में व्यस्त हैं। घरौण्डा रामनगर आदि गांव में बड़ा सफल प्रचार हुआ है। धीरे-२ सभी गांव का कार्यक्रम बन रहा है। देवदयानन्द के ये सैनिक

वेद ...

आ...

लेक...
आर्य...
साई...
लेता...
दो है...
युवक...
है तो...
हैं, ...
१९७...
जम...
देकर...
रूप ...
टोली...
मादि...
भरे ...
उठते...
हां...

कलां...
जुट ...
अतः...
घोष...
रूप ...
सहयो...

शा समारोह का विशाल आयोजन

र१६७७ को जीन्द में

जा उत्साह की लहर

मुख्यमन्त्री नारायणदत्त तिवारी की स्वीकृति प्राप्त

वेद प्रचार की धूम मचा रहे हैं।

आश्चर्य जनक साईकिल द्वारा प्रचार यात्रा:-

ब्र० सूर्यदेव, सुभाषचन्द्र व श्री वीरपाल जी साईकिल लेकर शताब्दी प्रचार के लिए निकल पड़े हैं। जीन्द के प्रसिद्ध आर्यसमाजी कार्यकर्ता श्री सौदागर चन्द जी ने एक अद्भुत साईकिल का निर्माण किया है जो जनता को आकर्षित कर लेता है। इस साईकिल पर पांच व्यक्ति बैठ सकते हैं। दो हैण्डल चार पैंडल तथा तीन चैन इसमें काम करती हैं। युवकों की टोली जिस समय इस साईकिल पर गांव में पहुँचती है तो गांव के सैकड़ो लोग इसे देखने के लिए इकट्ठे हो जाते हैं, इस तरह से उनमें आर्यसमाज और १८-१९-२० फरवरी १९७७ को जीन्द में होने वाले अर्द्ध शताब्दी सम्मेलन का जम कर प्रचार किया जाता है। इसी तरह स्कूल में भाषण देकर स्कूल के बच्चो को गांव के चारों और शोभायात्रा के रूप में नारे लगाते हुये घुमाया जाता है। इन नौजवानों की टोली नगूरा, डाहोला, थुआ, कठाना, कुचराना, चूहड़पुर आदि अनेकों गांव में अपनी यात्रा कर चुकी है। इस जोश भरे वातावरण को देखकर गांव के लोग अनायास ही कह उठते हैं कि अब आर्यसमाज जाग गया भाई।

हांसी तहसील का मोर्चा श्री धर्मवीर आर्य कौथ ने सम्भाला

हिसार जिले के कर्मठ आर्य नेता चौ० धर्मवीरसिंह कौथ कलां वाले जीन्द के इस सम्मेलन की सूचना पाते ही कार्य में जुट गये हैं। और क्योंकि जीन्द से हांसी तहसील लगती है अत: उनकी भूमिका काफी महत्व रखती है। उन्होंने यह घोषणा की है कि हांसी तहसील की बड़ी-बड़ी खापें सामूहिक रूप से इस सम्मेलन में भाग लेंगी और तन-मन-धन से सहयोग करेंगी

श्री बनारसी दास गुप्त मुख्य मंत्री हरयाणा एवं श्री नारायण दत्त तिवारी उ० प्र० की स्वीकृति प्राप्त

फरवरी १९७७ में होने वाले इस ऐतिहासिक सम्मेलन में देश भर के उच्च कोटि के संन्यासी वक्ता एव राजनैतिक नेता भाग लेंगे। और स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज के जीवन पर प्रकाश डालकर श्रद्धान्जलि देंगे। गत दिनों स्वामी इन्द्रवेश जी ने हरयाणा के मुख्य मन्त्री श्री बनारसी दास गुप्त, उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री श्री नारायण दत्त तिवारी एवं पंजाब कांग्रेस के अध्यक्ष सरदार महेन्द्रसिंह गिल से भेंट की और उन्हें जीन्द पधारने का निमन्त्रण दिया। दोनों प्रदेशों के मुख्य मंत्रियों ने सहर्ष पधारने की स्वीकृति देदी है। और भी नेताओं से सम्पर्क किया जा रहा है।

जींद सम्मेलन का देश भर में स्वागत

हरयाणा के हृदय में स्थित जीन्द नगर में होने वाले इस बलिदान अर्द्ध शताब्दी सम्मेलन का देश भर के आर्यो ने स्वागत किया है। आर्य जनता का प्यार युवापीढी को आरम्भ से ही मिल रहा है। जींद सम्मेलन की सूचना मिलते ही सभी जगह उत्साह की लहर दौड़ गई है। नौजवानों में जोश भर गया और चारों ओर से प्राप्त होने वाले पत्रों से यह स्पष्ट हो रहा है कि लाखों लोग जींद पहुंचेंगे। आर्य समाज में नव क्रान्ति का उदय हो रहा है जिससे हर व्यक्ति आशान्वित है।

सम्मेलन की व्यापकता को देखते हुये विभिन्न प्रान्तों एव हरयाणा के विभिन्न जिलों में सयोजन समितियों का गठन कर दिया गया है। साथ ही सम्मेलन को प्रबन्ध समिति का भी गठन हो गया है। जिसका विवरण इस प्रकार है।

१ स्वामी इन्द्रवेश — अध्यक्ष
२ श्री रामधारी शास्त्री—संयोजक
३ श्री बिशन सिंह एडवोकेट कैथल सदस्य
४ स्वामी रुद्रवेश करनाल ,,
५ स्वामी वीरभद्र अम्बाला ,,
६ डा० धर्मवीर आर्य रोहतक ,,
७ जगवीर सिंह आर्य रोहतक ,,
८ स्वामी सुधानन्द जी गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ ,,
९ श्री लक्ष्मीचन्द आर्य पलवल ,,
१० डा० महासिंह जी छतैहरा सानीपत ,,
१२ धर्मवीर आर्य कौथकला हिसार ,,
१३ पं० ताराचन्द वैदिकतोप नारनौल ,,
१४ स्वामी चन्द्रवेश जी रोहतक ,,

जिला जीन्द के सदस्य

१ स्वामी सत्यवेश जी संयोजक, २ वीरेन्द्र कुमार जांगड़ा एडवोकेट नरवाणा ३ वीरेन्द्रसिंह एडवोकेट जीन्द ४ बलवान सिंह एडवोकेट जीन्द ५ जमादार रत्नसिंह करेला जीन्द ६ सूबेसिंह रोजला जीन्द ७ रणजीतसिंह अलेवा जीन्द ८ सुरेन्द्रसिंह एडवोकेट जीन्द ९ राजमल आर्य बुड्ायन जीन्द १० दलेल सिंह जुलाना शादीपुर ११ ओमप्रकाश जुलाना शादीपुर १२ जगन्नाथ जुलाना मण्डी १३ वेद प्रकाश राजौन्द १४ कलीराम जी नरवाणा मण्डी १५ रघुनाथ जी पाजू खुर्द १६ म० रामसिंह सफीदों मण्डी १७ शिवलाल मन्त्री आ० स० हाट, १८ सौदागर चन्द जीन्द शहर १९ छबीलदास प्रधान आ० स० जीन्द २० चौ० देशराज एडवोकेट मन्त्री आर्यसमाज जीन्द २१ टेकचन्द जी बजाज जीन्द २२ डा० रमेश जी जीन्द २३ प्रेम सिंह मन्त्री आ०स० सुन्दर नगर २४ चौ सत्यपाल प्रधान सुन्दरनगर २५ सत्यप्रकाश आर्य अनाजमण्डी २६ अभय सिंह आर्य काठमण्डी जीन्द २७ लाजपत राय बी०ई०ओ आर्य जीन्द शहर २८ प्रियाराम घोघड़ियां जीन्द २९ मा० रायसिंह घोघड़ियां जीन्द ३० प्रीत सिंह आर्य पौली ३१ कुन्दन लाल आर्य सिवाहा ३२ ओमप्रकाश बरसोला ३३ टेकराम एडवोकेट नरवाणा ३४ टेकचन्द एडवोकेट नरवाणा ३५ चौ० अतर सिंह सरपंच बिठमिड़ा जीन्द ३६ चौ० फूलाराम सच्चा खेड़ा जीन्द ३७ चौ० माई लाल धनौदा जीन्द ३८ घासीराम लोहचन जीन्द ३९ ओमकार प्रकाश नरवाणा जीद, ४० होश्यार सिंह लौन जीन्द ४१ रामसरुप जी घरौण्डा जीन्द ४२ फतेह सिंह सरपंच गुलकनी ४३ भलेराम जी जीन्द शहर ४४ ओम सिंह जी बागड़ ४५ विजय सिंह ऐंचरा कलां ४६ आत्मदर्शी मुवाना ४७ डा० रामसिंह मखण्ड, ४८ शेरसिंह शाहपुर ४९ दीवान सिंह कण्डेला ५० स्वामी गोरक्षानन्द गोशाला उचाणा खुर्द ५१ चतरसिंह उचाणा खुर्द ५२ भगत सिंह कावर ५३ रामकरण नंगूरा ५४ सरूपलाल सामदो ५५ लाला मनसाराम पेगां ५६ महावीर प्रसाद किठाणा धर्मपाल जी किठाणा ५७ मा० सत्वीर सिंह जुलाणी ५८ वैद्य रामचन्द्र जी अहीरका ५९ जयपाल भू० पू० सरपंच इक्कस जींद ६० मोमनराम बुडायन ६१ कर्णसिंह ओवर-सीयर जाजवाण ६२ हरिकिशन सुदकाण

जिला हिसार के सदस्य

१ स्वामी रत्नदेव गुरुकुल कुम्भाखेडा २ स्वामी देवानन्द जी आर्य ३ वानप्रस्थ चेतनदेव धीरणवास, ४ रविदत्त शास्त्री मन्त्री आ० स० नागौरीगेट ५ सत्यपाल आर्य प्रधान आ०यु० समाज ६ चौ० दीवानसिंह प्रधान आ० स० बालसमन्द ७ डा० बारूसिंह उमरा ८ चौ० बदलूराम मुकलाण ९ ला० इद्रराज जी आर्य हांसी १० मंगल सिंह आर्य घिराय ११ चौ नेकीराम शेखपुरा १२ प्रधान जुगलाल जी मिरजपुर १३ महावीर प्रसाद टोहाना १४ जुगलाल आर्य कन्हैड़ी, १५ ओमप्रकाश गोरखपुर, १६ दयाकिशन आर्य कापड़ो १७ हंसराज हांसी १८ मंगलदेव हैबतपुर

जिला कुरुक्षेत्र के सदस्य

१ चौ० दरियाव सिंह एडवोकेट कैथल २ शेरसिंह शेर एडवोकेट थानेसर ६ प्रो० भागसिंह एम०एम० सी० बिड़ी भररूआ ४ लालसिंह आर्य गूहना ५ बाबूराम चोहान कुरुक्षेत्र ६ प्रिंसीपल बीरूराम गीताहाई स्कूल कुरुक्षेत्र ७ जीवनदास शाहबाद ८ चौ० केहरसिंह जी शेरधर त० कैथल ९ चौ० हरिराम एडवोकेट कैथल १० शमशेरसिंह फरल ११ प्रो० दर्शनसिंह पूण्डरी १२ रामसिंह बरसाना

जिला अम्बाला के सदस्य

जगन्नाथ कपूर प्रधान आ० प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा हरयाणा युमनानगर २ कृष्ण चन्द मन्त्री आ० समाज युमनानगर ३ मा० किशोरी लाल जी नारायणगढ ४ प्रो० ऋषिराम एम० ए० डी० वी० कालेज अम्बाला ५ केहरसिंह सबीलपुर जाटान ६ प्यारेलाल आर्य साबेपुर ७ डा० नित्यानन्द आर्य मुलाना

जिला करनाल के सदस्य

१ वेदप्रकाश आर्य मन्त्री आ० स० दयालपुरा २ बलबीर सिंह लाठर एडवोकेट ३ डा० जुगलकिशोर पसरीचा ४ रतनसिंह लाठर प्रधान आ० स० हौली मौहल्ला ५ सुभाषचन्द्र आर्य मन्त्री ६ सुदर्शन जी आर्य ७ रुलियाराम एडवोकेट ८ बलदेव जी आर्य ९ बिशनस्वरूप पहलवान १० जगदीश चन्द्र आर्य ११ रणवीरसिंह १२ लखपतराय दादूपुर कलां १३ मा० दलीप सिंह सिवाह १४ मा. इन्द्रभान आर्य पानीपत १५ मुन्शीराम

जिला सोनीपत के सदस्य

१ सत्यपाल आर्य सोनीपत मन्त्री आर्य सभा २ प्रो० सुशील नासा मन्त्री आर्य सभा ऋषिनगर ३ मा. प्रतापसिंह आर्य मुण्डलाना ४ मा. रामसिंह आर्य सिसाना ५ आचार्य यशपाल जी गुरुकुल मटिण्डू ६ धर्मपाल सिंह आर्य हेडमास्टर डी. ए. वी. हाई स्कूल गोहाना ७ सुखदयाल आर्य गोहाना ८ दयास्वरूप ९ रघवीर सिंह आर्य नाहरी १० सुरजभान आर्य नाहरी ११ डा० राममेहर खरखौदा १२ मा० ज्ञानसिंह हिन्दू हाई स्कूल सोनीपत १३ छोटूराम खानपुर १४ चन्द्रसिंह सोनीपत १५ हरिश्चन्द गन्नौर

जिला रोहतक के सदस्य

१ प्रधान जगतराम आर्य भैणीसुरजन महम रोहतक २ पं रामचन्द्र आर्य भालौट ३ सूबेदार भरत सिंह मौखरा ४ ठा० प्रताप सिंह बराणी ५ जयभगवान एडवोकेट झज्जर ६ दयानन्द आर्य प्रधान आ० स० टिटौली ७ पं मौजी राम आर्य काठ मण्डी रोहतक ८ शान्ता कुमार आर्य ९ देशराज आर्य आर्यवीरदल १० मा० घनश्याम दास आर्यसमाज शिवाजी कलोनी ११ पूर्णसिंह सैनी पुरा १२ टेकराम आर्य मकड़ौली कलां १३ उदय सिंह कोका १४ मनोहर लाल किलोई १५ सुरेन्द्र सिंह उमेदसिंह दूबलघन

जिला गुड़गांव के सदस्य

१ राव हंसराम आर्य टीकरी २ ज्ञासीराम प्रधान आ० स० सोहना ३ नयनसुख जी हथीन ४ सुखदेव जी बन्चारी ५ नत्थी सिंह नम्बरदार औरंगाबाद ६ पद्मचन्द आर्य नगीना ७ स्वामी सिंह मुनि टीकली गौशाला ८ सत्यपाल आर्य पलवल ९ ईश्वर सिंह आर्य मिरजापुर १० खडगसिंह पृथला ११ राधेलाल आर्य आर्य समाज धतीर १२ वेद प्रकाश आर्य वल्लबगढ़। १३ मुन्नीलाल आर्य छपेड़ा।

जिला महेन्द्रगढ़ के सदस्य

१ लाला ईशरदास आर्य नारनौल प्रधान आ० स० खरकड़ी मोहल्ला २ मा० रामपत आर्य कनीना मण्डी ३ नवरंगलाल ४ स्वामी ऋतुवेश जी रिवाड़ी ५ महाशय किशनलाल आ०स० मोती चौक रिवाड़ी ६ वैद्य बुद्धदेव जी नीरपुर नारनौल ७ रामनिवास आर्य ग्राम घोलड़ा ८ जगदीश जी सरपंच ग्राम सैदअलीपुर ९ महाशय गगाराम यादव नारनौल १० महा० हीरालाल ११ स्वा० भजनानन्द वैदिक आश्रम रिवाड़ी

जिला भिवानी के सदस्य

१ देशबन्धु गुप्ता भिवानी २ जगदीश सर्राफ ३ वैद्य उजागर सिंह ४ नरेन्द्र कुमार ५ वैद्य रामेश्वर दयाल बालावास ६ रामसिंह बड़ेसरा

जिला सिरसा के सदस्य

१ चौ० जगदिश प्रसाद नहरा एडवोकेट सिरसा २ चौ० मनिराम जी मन्त्रि आ०स० सिरसा ३ श्री हरलाल जी आर्य सिरसा

पंजाब के सदस्य

१ स्वामी वेदानन्द जी उप-प्रधान आ०प्र०नि०सभा० पंजाब रोपड़ २ पं मुरारी लाल मन्त्री ३ सरदारी लाल आर्यरत्न कोषाध्यक्ष ४ डा० के० के पसरीचा रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद् ५ आशानन्द जी आर्य लुधियाना ६ एस० के० स्याल प्रिंसीपल आर० के० आर्य कालेज नवांशहर ७ वेदप्रकाश सरीन नवांशहर ८ यशवन्त साथी मोगा ९ वेदरत्न लुधियाना १० मा० दिलाराम एम.ए. रोपड़ ११ बलदेव कृष्णा रामां मंडी १२ रामनाथ बटाला १३ चमनलाल मेहता भटिण्डा १४ ओम प्रकाश शर्मा गुरदासपुर १५ वेदप्रकाश आर्य दीनानगर १६ ओमप्रकाश आर्य अमृतसर १७ पृथ्वीसिंह चौहान नगंलटाऊन

राजस्थान के सदस्य

१ स्वामी शक्तिवेश प्रधान आ०प्र०नि० सभा राजस्थान जयपुर २ मा० दलीपसिंह आर्य मन्त्री ३ मदनसिंह आर्य अधिष्ठाता आर्य वीरदल राजस्थान जोधपुर ४ झम्मटमल आर्य जयपुर ५ दीपचन्द आर्य अजमेर ६ मदनमोहन आर्य गगापुरसिटी ७ स्वामी शिवानन्द व्याना भरतपुर ८ वेदप्रिय शास्त्री वेदप्रचार अधिष्ठाता जयपुर ९ वृजानन्द आर्य खातन-खेड़ा बहरोड़ अलवर

उत्तर प्रदेश के सदस्य

१ स्वामी आनन्दवेश जी गुरुकुल शुक्रताल मु० नगर २ राजपाल सिंह आर्य मु० नगर ३ इलमचन्द आर्य शाहपुर मु० नगर ४ स्वामी सर्वदानन्द मु० नगर ५ योगेन्द्र कुमार शर्मा मु०नगर ६ बलजीत सिंह आर्य कुलसचिव गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार

(सहारनपुर) ७ डा० गंगाराम गर्ग कुलपति ८ पं० शोभा राम प्रेमी मेरठ ९ स्वामी वरूणवेश १० वेगराज जी आर्य भूड़िया मेरठ

दिल्ली के सदस्य

१ डा० कृष्ण लाल आनन्द उप-मन्त्री आ० प्रतिनिधि सभा पंजाब दिल्ली २ प्रेमपाल शास्त्री वेदप्रचार अधिष्ठाता दिल्ली ३ शिवकुमार करोल बाग नई दिल्ली ४ ब्र०राजसिहं आर्य आर्यपुर सब्जी मण्डी दिल्ली ५ ओमप्रकाश गुप्ता कमलानगर ६ ओमप्रकाश सपड़ा गुरूतेग बहादुर नगर ७ आनन्द कुमार आर्य राणा प्रताप बाग ८ विजय चौधरी आर्यसमाज अशोक विहार दिल्ली ९ सुदर्शन कुमार जी मोती नगर बेदीवाला बाग दिल्ली १० शिवराज शास्त्री राजौरी गार्डन दिल्ली ११ हरप्रकाश मेहता दरियागज दिल्ली

चण्डीगढ़ के सदस्य

१ पृथ्वीसिहं चौहान सैक्टर २१ चण्डीगढ़ २ विश्वबन्धु आर्य सैक्टर १९ चण्डीगढ़ ३ महेन्द्र पाल आर्य सैक्टर २२ चण्डीगढ़ ४ गिरधारी लाल स्वतन्त्र सैक्टर २३ चण्डीगढ़ ५ बहन आर्य प्रिया सैक्टर २१ चण्डीगढ़ ६ सत्यवीरसिंह आर्य समाज सैक्टर २२ चण्डीगढ़

[शेषांश पृष्ठ १३ का]

पर वाह रे मृत्युन्जय स्वामी श्रद्धानन्द। तुने स्वाधीनता की इस पवित्र ज्योती को प्रज्जवलित रखने के लिए अपना सीना गोरों की सगीनों से अड़ा दिया। पुलिस अधिकारी घबरा गए और जलुस अपने पूरे जोश व खरोश से निकला। आज भी दिल्ली के टाउन हाल के बाहर चांदनी चौक में खड़ी स्वामी जी की भव्य प्रतिमा समय की मधुर स्मृति व साहस की याद दिलाती है। स्वामी जी ने अपने जीवन के अन्तिम दिन शुद्धि आन्दोलन में लगाए। शुद्धि आन्दोलन से यवन स्वामी जी की जान लेने पर उतारू हो गऐ थे। अब्दुल रशीद नामक एक धर्मान्ध मुसलमान ने इन पर २३ दिसम्बर, १९२६ की शाम को गोली चलाकर हमसे हमारा रहनुमा छीन लिया। आर्य-जाति एक बार पुनः नेतृत्व विहीन हो गई।

हाय! हाय! कैसे झेले अब अपनी लज्जा उनका शोक,
दुष्ट यवनों के हाथों ही चला गया अपना प्यारा नेता परलोक।
आर्यों उठो! और स्वामी श्रद्धानन्द के कार्यों को पूरा करो!!
आर्य समाज रूपी आन्दोलन में अपना सर्वस्व न्यौछावर करके उस दिव्य पुरुष की अर्द्ध शताब्दी में श्रद्धान्जलि देने के अधिकारी बनों!!!

उनका ही पथ उनका ही व्रत अपनी सुम नाञ्जली होगी।
उनके कार्य पूर्ण करना ही सच्ची श्रद्धांजलि होगी॥

[पृष्ठ १२ का शेषांश]

सुदृढ़ केन्द्र की आवश्यकता--

उपर जिन कार्यक्रमों का जिकर किया गया है, उनके अतिरिक्त कुछ और भी आवश्यक कार्य हैं।

सस्ते प्रभावी और श्रेष्ट साहित्य के प्रकाशन का कार्य ऐसा कार्य है जिसे पूरी गम्भीरता और उतरदायित्व के साथ नहीं लिया गया है। साहित्य प्रकाशन के एक बहुत बड़े केन्द्र की स्थापना होना अभी शेष है।

उसके साथ ही हमारे पास ऐसा कोई भी स्थान नहीं जहाँ से सैकड़ों संन्यासी, वानप्रस्थी, उपदेशक, भजनोपदेशक तथा अन्य कार्यकर्ता समाजसेवा में अपना जीवन लगाने का प्रशिक्षण प्राप्त कर सके। जिन लोगों ने आर्यसमाज की सेवा में अपना जीवन खपाया है उनकी वृद्धावस्था में सेवा--शुश्रुषा और औषध-उपचार आदि की भी व्यवस्था किसी एक स्थान पर होने का प्रबंध होना चाहिए। और तो और जो लोग सत्यार्थ प्रकाश पढ़ कर या अन्य किसी तरह से प्रेरणा प्राप्त कर समाज में आते हैं। उन्हें समाज सेवा के लिए स्वयं क्षेत्र तैयार करना पड़ता है। आर्य समाज के पास ऐसा कोई केन्द्र नहीं जहां उन्हें अपनी न्यूनतम आवश्यक्ताएं पूरी करने की गारन्टी मिल सकती हो आज से ५० साल पूर्व इन कर्मठ उपदेशकों और भजनोपदेशकों आदि को जिन कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था उनमें आज कुछ कटौती होने के स्थान पर वृद्धि ही हुई है।

अतः इन सारी बातो को देखते हुए यह अत्यन्त आवश्यक है हमएक ऐसे सुदृढ़ केन्द्र की स्थापना के लिए प्रयास करें जहां से उपरोक्त सारे कार्यक्रमों और गतिविधियों का संचालन और नियंत्रण हो। यदि हम सामूहिक परिश्रम द्वारा इस तरह का कोई केन्द्र स्थापित कर सके तो यह अपने आप में एक अपूर्व उपलब्धि होगी। इस केन्द्र की स्थापना के द्वारा हम उपर बताए गये कार्यक्रमों क्रियान्वित रूप देखकर आर्य समाज को श्रेष्ठ रूप में खड़ा करके देव दयानन्द के सपनों को साकार करने में समर्थ हो सकेगे

[पृष्ठ १० का शेषांश]

शुद्धि जिसके पुण्य यज्ञ में उन्होंने आहुति देदी। २३ दिसम्बर, १९२६ को एक मतान्ध मुसलमान अब्दुल रसीद ने गोली का निशाना बना कर स्वामी जी को शहीद कर दिया। महात्मा गांधी ने ऐसी शानदार मौत को इन शब्दों में व्यक्त किया था--"शानदार जिन्दगी का शानदार अन्जाम। काश ! मुझे भी ऐसी ही शानदार मौत नसीब हो। आपके बलिदान से देश भर में एक जागृति की लहर उत्पन्न हो गई थी। 'कल्याण मार्ग का पथिक' 'आर्य पथिक' के पथ का अनुगामी बन चुका था। स्वामी जी मनुष्य जाति के पुनर्नर्माता थे। आपका कार्य क्षेत्र सीमाबद्ध न था। उनके जीवन की हर घटना हमें नई प्रेरणा दे रही है। डा० राजेन्द्र प्रसाद के शब्दों में "भारत के आधुनिक इतिहास में स्वामी जी का स्थान पथ-प्रदर्शक का है और जिनको साक्षात् का सौभाग्य प्राप्त नहीं हुआ, उनके लिए जीवन वृत्तान्त पढ़ना ही मनुष्य को उन्नति के मार्ग पर अग्रसर करने वाला है।"

आज युवा शक्ति को कर्मशीलता, गतिशीलता का जीवन अपनाना होगा नव-सृजन का भार है इस नई पीढ़ी पर। वीर, स्पष्ट वक्ता, सरल-हृदय, साहस और अभीप्सु तरुण ही एक मात्र वह आधार है, जिस पर हो सकता है भावी राष्ट्र, आर्य राष्ट्र का निर्माण। आर्य [श्रेष्ट] जनता भी शीघ्र निर्णय करे, यदि वेद, संस्कृत को उचित स्थान दिलाना है, आर्य राष्ट्र बनाना है, सुख शांति का साम्राज्य स्थापित करना है तो एक मंच पर सगठित होकर कार्य करे, देर घातक है। आर्य युवा शक्ति से तो यही कहना है—

'जिस युग में हम हुए हैं, वही तो अपने लिए बड़ा है,
अहा ! हमारे सामने कितना कर्मक्षेत्र पड़ा हुआ है।'

अन्त में ईश से प्रार्थना है कि हमें भी वह शक्ति दे जिससे हम स्वामी जी से प्रेरणा लेकर निर्भय कर्मक्षेत्र में कूद सकें और समग्र विश्व में शीघ्र ही वैदिक ज्योति को प्रकाशित कर विश्व को आर्य बना सकें।

श्रर्द्ध शताब्दी पर विशेष लेख–

स्वामी श्रद्धानन्द राजनैतिक क्षेत्र में

डा० प्रशान्त कुमार

२० मार्च सन १९१९ को अहमदाबाद में स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा दिये श्रोजस्वी भाषण को सुनकर तत्कालीन वायसराय चैम्सफोर्ड घबरा गये। उन्होंने भारत सचिव मि. माण्टेगू को तुरन्त तार भेजा, जिसका आशय था– महात्मा मुंशीराम, जिसने अब स्वामी श्रद्धानन्द नाम रख लिया है। बहुत पुराना नेता है, समाज सुधार के नाते भी उसने बहुत नाम पैदा किया है। अब मालूम होता है कि राजनीतिक आन्दोलन के नाते भी वह नाम पैदा करना चाहता है।

सारे जीवन भर धर्म, शिक्षा, समाज और संस्कृति के क्षेत्र में विविध कार्य करने के उपरान्त स्वामी जी अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में राजनीतिक क्षेत्र में भी पदार्पण करके स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

सन १९०६-७ के सरकारी दमन के विरोध में स्वामी श्रद्धानन्द ने लिखा था कि जेल भरने से यह रोग दूर न होगा अमरावती से प्रकाशित कर्त्तव्य ने एक बार घोषणा की कि हम कर्त्तव्य पालन से कभी विमुख नहीं होंगे, पर जब उस पर राजद्रोह का मुकदमा चला तो उसने क्षमा मांग ली। तब स्वामी श्रद्धानन्द ने लिखा था- ऐसे गिरे हुए लोग यदि स्वराज्य प्राप्त कर भी लें तो वह स्वराज्य रसातल में ले जाने वाला सिद्ध होगा। इसी प्रकार पंजाब के लेफ्टिनेण्ट गवर्नर इबिटसन के स्मारक बनाने का स्वामी जी ने घोर विरोध किया था। रायबहादुरान लालचन्द, मोहनलाल; ईश्वरदास के नाम लेकर उन्होंने लिखा था कि क्या आप इबिटसन के इसलिए कृतज्ञ हैं कि उन्होंने लाला लाजपतराय को बिना अपराध देश निकाला दिया था। रायबहादुर भक्त नारायण दास से मैं पूछूंगा कि क्या यह ठीक नहीं है कि आप गुजरांवाला की डिप्टीकमिश्नरी करते हुए इबिटसन साहब के धमकाने पर ही आर्य समाजों के अधिवेशनों में न जाते थे? मद्रास में कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष मि. नार्टन जब सरकारी गवाह बने तो उन्होंने उन्हें विश्वास घातक कहा इसी प्रकार महाराजा दरभंगा द्वारा बंगाल सरकार को ढाई लाख रुपया देने पर उन्हे कड़ी फटकार बतायी थी। एक लेख में उन्होंने आर्य समाजियों को प्रेरित करते हुए लिखा यदि अग्नि और खड़ग की धार पर चलने वाले दस आर्य भी निकल आवे तो राजा और प्रजा दोनों को होश में ला सकते हैं।

धर्म पर आधारित राजनीति

स्वामी श्रद्धानन्द स्वभाव से धार्मिक सत्यप्रेमी और अहिंसावादी थे। राजनीति में भी वे इन गुणों का समावेश चाहते थे। सन १९०७ में कांग्रेज के डेपूटेशनों पर लाला लाजपतराय गोखले और सुरेन्द्र बाबू जब विलायत भेजे गये थे तब आपने लिखा था–इन डेपूटेशनों से तरक्की की आशा रखना हानिकारक है मेरी अपनी राय यह है कि इस धन और समय को व्यर्थ न खोकर हिन्दुस्तान के एक एक व्यक्ति को अपना चरित्र और आगामी सन्तति के चरित्र को सुधारने में लग जाना चाहिए। जब दो राजनीतिक नेता बकील शराब पीकर एक वेश्या के यहां पहूंचे और किसी ने उन्हें रोका तो वे बोले-'खड़े तो हम स्वदेशी वेश्या के दर पर हैं।' 'इस पर स्वामजी ने लिखा भुमि में इन्द्रियों पर विजयपाकर आत्मा के स्वतन्त्र होने का नाम स्वराज्य प्राप्ति है।' सूरत में कांग्रेस की आपसी फूट को देख कर उन्होंने लिखा-'अधिकार की वासना को अपने हृदय से नोचकर फेंक दो। निष्काम भाव से धर्म का सेवन करो। माता पर जब चारों ओर से प्रहार हो रहे हों, जब उसके केश पकड़कर दुष्ट दुःशासन उसको भूमि पर घसीट रहा हो, क्या वह समय अधिकार की पुकार मचाने का है?' कांग्रेस में महात्मा गांधी के आने से सत्य और अहिंसा की नीति निर्धारित हुई तो वे कांग्रेस में सक्रिय हो गये। अमृतसर कांग्रेस अधिवेशन में स्वागताध्यक्ष की हैसियत से दिये भाषण में उन्होंने कहा : यदि जाति को स्वतन्त्र देखना चाहते हो तो स्वयं सदाचार को मूर्ति बनो। उन्होंने विदेशी खानपान, वस्त्र भूषा और भोगमय जीवन को तिलाजलि देने की जोरदार अपील की।

रौलेट ऐक्ट का विरोध

देश में रौलेट ऐक्ट की तीव्र प्रतिक्रिया हुई। स्वामी श्रद्धानन्द के तत्वावधान व उनके छोटे पुत्र इन्द्र विद्यावाचस्पति के सम्पादकत्व में निकलने वाले देहली के दैनिक 'विजय' ने

उस आन्दोलन में बड़ा काम किया । महात्मा गांधी ने सत्याग्रह आरम्भ किया तो स्वामी जी ने तुरन्त उन्हें तार दिया कि इस धर्मयुद्ध में सम्मिलित होने में मैं बहुत प्रसन्न हूं । धर्मयुद्ध शब्द उनकी सात्विक मनोवृति को प्रकट करता है । गांधी जी दिल्ली आए तो स्वामी जी ने यह कार्यक्रम प्रस्तुत किया कि पंचायती अदालतें स्थापित कर के सरकारी अदालतों का बहिष्कार किया जाए । अक्तूबर सन १९१९ तक भारत में दस जिले तैयार किये जाए जो एक साथ भूमि का लगान देना बन्द कर दें । पंजाब के पाँच जिलों को तैयार करने का भार स्वीकार करते हुए गुजरात के पांच जिलों को तैयार करने का काम गांधी जी को सौंपा .

स्वामी जी दिल्ली लौटकर आए तो सत्याग्रह का काम ठण्डा था । १४, २७ व २९ मार्च की विशाल जनसभाओं में भाषण देकर उन्होंने दिल्ली की जनता को तैयार किया, और ३० मार्च को हड़ताल की घोषणा कर दी । यह अभूत पूर्व हड़ताल हुई । तांगा और ट्राम तक बन्द थे । १२ बजे तक शहर में गश्त लगाकर स्वामी जी लौटे तो उन्हे स्टेशन पर गोली चलने का समाचार मिला । वे तुरन्त स्टेशन पहुँचे और हजारों की भीड़ को कम्पनी बाग में ले आए वहां वे भाषण दे रहे थे कि घण्टा घर पर भी गोली चलने और लोगों के घायल होने का समाचार मिला । उतेजित जनता को उन्होंने शान्त रखा । मशीनगनों के साथ सेना ने सभा को घेर लिया तो घोड़ें पर सवार चीफ कमिश्नर को सम्बोधित करते हुए, स्वामी जी ने कहा : यदि आप के आदमियों ने लोगों को उत्तेजित किया तो मैं शान्ति रक्षा का जिम्मेवार नहीं हूँ । नहीं तो शान्ति भंग न होने देने की सब जिम्मेवारी मुझ पर है ।

उसके बाद वे घण्टा घर की ओर बढ़े । चालीस हजार जन समूह आपके पीछे था । वहां पहुँचते ही बन्दूक दागी गयी लोगों में बेचनी फैल गयी । जनता को शान्त रहने का आदेश देकर आप आगे बढ़े तो दो गुरखो ने संगीनें आगे करके कहा 'तुमको छेद देंगे ।' एक हाथ से उतेजित जनता को शान्त करते हुए और दूसरे से अपनी छाती की ओर संकेत करते हुए स्वामी जी ने कहा—मैं खड़ा हूँ, गोली मारो । इतने में ८-१० संगीनें उनकी छाती के पास आ गयी । जनता चिल्ला उठी—पहले हम मरेंगे । आप नहीं । पर स्वामी जी हाथ के इशारे से जनता को रोके रहे । संगीनें स्वामी जी की छाती पर ओढी हुई चादर तक पहुंच चुकी थी कि एक घुड़सवार अंग्रेज के उधर आ निकलने से दिल्ली के इतिहास में लाल अक्षरों में लिखी जाने वाली यह भयकर घटना टल गयी । एक गुरखा अपनी खुकरी घुमाते पास आया भी, पर न जाने क्यों वार किये बिना ही वह लौट गया । स्वामी जी की इस अदभुत वीरता ने निर्भयता का संचार कर दिया ।

अमृतसर का कांग्रेस अधिवेशन

अमृतसर के जलियां वाला बाग में डायर अपनी राक्षसी हरकत का परिचय दे चुका था । उस अमृतसर शहर में जिसका अगप्रत्यंग छिदां हुआ था उस वर्ष कांग्रेस अधिवेशन होने की कोई कल्पना भी नहीं कर सकता था । पर स्वामीजी ने सब नेताओं को अमृतसर में कांग्रेस का अधिवेशन करने को मना लिया । कांग्रेस प्रधान मालवीय जी इस शर्त पर मानें कि सारी आर्थिक तथा प्रबंध सम्बन्धी व्यवस्था करनी होगी । स्वामीजी ने तब जिम्मेवारी अपने ऊपर ले ली । ठीक अधिवेशन के दिन घनघोर वर्षा हुई । सारा शहर पानी से भर गया । प्रतिनिधियों के लिए डाली हुई छोलदारियां पानी में तैरने लगी । १२ स्पेशल गाड़ियां आई थी । स्वामी जी ने सारे शहर में घूमकर अपील की कि आने वालों के लिए अपने घरों में स्थान खाली करो । उनकी अपील का ऐसा प्रभाव पड़ा कि लोग स्टेशन और रास्तों पर स्वयं जा खड़ें हुए और प्रत्येक आगन्तुक का अपने-अपने घरों में आतिथ्य किया । वह आतिथ्य अविस्मरणीय बन गया ।

स्वागताध्यक्ष के रूप में राष्ट्रभाषा हिन्दी में दिया गया स्वामी जी का ओजस्वी भाषण भी ऐतिहासिक था । कांग्रेस के मंच पर पहली बार हिन्दी प्रतिष्ठित हुई । अपने इस ऐतिहासिक भाषण में स्वामीजी ने जलियांवाला बाग को 'अमर वाटिका' नाम दिया । ३१ मार्च १९१९ को एक मुसलमान का जनाजा निकला जिसमें ५ हजार लोग शामिल थे । इसी जनाजें में पहली बार स्वामी जी की हकीम अजमल-खां से मुलाकात हुई । दोनों गले मिले । हिन्दू मुसलमान की यह मत्री इतिहास में अमर हो गयी । उसके बाद एक और भव्य दृश्य देखने को मिला । शाही जामा मस्जिद के मिम्बर से आर्य संन्यासी श्रद्धानन्द ने वेदमन्त्र का उपदेश दिया । स्वामी जी हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए सदा प्रयत्नशील रहे ।

स्वामी श्रद्धानन्द सच्ची धर्म निरपेक्षता के समर्थक थे । उन्होने एक बार लिखा था कि भिन्न-भिन्न धर्म तथा सम्प्रदाय भी देश में राजनीतिक तथा सामाजिक एकता पैदा करने में बाधक नहीं हो सकते और ३१ करोड़ भारतवासी देश में

सच्ची राष्ट्रीयता स्थापित कर सकते हैं। सनातन धर्मी, आर्य समाजी, ब्राहम्. जैन, बौद्ध, पारसी, मुसलमान, ईसाई और यहूदी आदि सब अपने अपने ढंग से पूजापाठ करते हुए भी भारत माता की पूजा में एक होकर संगठन पैदा कर सकते हैं। हिन्दू समाज मे अछूत जातियों को अलग करके उसको दो टूकड़ों में बांट देने की सरकारी गूढ़ चाल को महात्मा गांधी सन १९३१ में दूसरी गलमेज कान्फ्रेंस में समझ पाये थे। स्वामीजी ने अमृतसर कांग्रेस के स्वागताध्यक्ष के भाषण में सन १९१९ में ही इस ओर ध्यान आकृष्ट करते हुए कहा था--'लन्दन में भारत की रिफार्म स्कीम कमेटी के सामने ईसाई-मुक्ति-फौज के बूथ टकर साहब ने कहा है कि भारत के साढ़े ६ करोड़ अछूतों को विशेष अधिकार मिलने चाहिएं, क्योंकि वे भारत में ब्रिटिश सरकार रूपी जहाज के लंगर है। सन् १९२१ के कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन में आपने अछूतोद्धार सम्बंधी एक प्रस्ताव भी पेश किया था। एक बार उन्होंने महात्मा गांधी को लिखा--'जब तक साढ़े ६ करोड़ लोग हमारे पांव तले रोंदी हुई जातियां ब्रिटिश नौकरशाही की शरण लें रही है। तब तक स्वदेशी का पूरा प्रचार कैसे होगा? उन्होंने देश के कई राष्ट्रीय स्कूलों का निरीक्षण किया, वहां उन्होंने दुःखपूर्वक देखा कि किसी भी विद्यालय में अछूतों के बालकों का प्रवेश नहीं दिया गया था। लखनऊ में आल इंडिया कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन में उन्होंने कहा था: जिन्हें अछूत बतलाकर जाति का चौथाई अंग काट दिया गया है, उनकी शिक्षा का काम हाथ में लिया जावे और उन्हें भारत माता के शत्रु बनने का जो यत्न अंग्रेजो की ओर से शुरु हुआ है, उसका मुकाबला किया जाए। ३ जून सन १९२२ को आपने कांग्रेस के प्रधान मंत्री को लिखा-'आप जानते है कि दलितोद्धार की समस्या मेरे लिए कितनी महत्वपूर्ण है। . . . मेरा प्रस्ताव है कि दलितभाइयों को सार्वजनिक स्थानों में सबके साथ बैठने दिया जाय और राष्ट्रीय स्कूलों तथा कालेजों में उनके बच्चों को भरती किया जाय, वहां सबके साथ उनको उठने बैठने दिया जाए।'

अहमदाबाद में जून १९२४ में होने वाले आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी के अधिवेशन के अवसर पर महात्मा गान्धी को दिये तार में उन्होंने कहा--'कृपा करके अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के प्रान्तीय हिन्दू सभासदों को, जो नौकर रख सकते हैं, कहिए कि वे अपनी व्यक्तिगत सेवाओं के लिए जो नौकर रखे, उनमें एक नौकर अवश्य अछूतों में से ही हो जो ऐसा न कर सकें वे कांग्रेस के पदाधिकारी न रहे।

स्वामी श्रद्धानन्द ने स्वतंत्र रूप से दलितोद्धार सभा बनाई और इस समस्या को हल करने के लिए उन्होंने महामण्डल, हिन्दू महासभा आदि की भी सहायता की। सन १९२६ से साप्ताहि 'लिबरेटर' दलितोद्धार की समस्या के लिए निकाला था। अस्पृस्यो के लिए 'दलित' शब्द का प्रयोग भी उन्हीं की सूझ थी। अपने संन्यास जीवन में सर्वाधिक महत्व स्वामी जी ने इसी प्रश्न को दिया---

स्वामी जी के मन में देश की स्वतन्त्रता की कितनी ललक थी, यह उनके २५ सितम्बर १९२० को प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामकृष्णजी को लिखे पत्र से प्रकट होती हैं। वे लिखते हैं--इस समय मेरी सम्मति में असहयोग की व्यवस्था के क्रियात्मक प्रचार पर ही मातृ भूमि का भविष्य निर्भर है। यदि यह आन्दोलन अकृतकार्य हुआ और महात्मा गांधी को सहायता न मिली तो देश की स्वतंत्रता का प्रश्न पचास वर्ष पीछे जा पड़ेगा। इस लिए मैं इस काम में शीघ्र लग जाऊंगा। में इस कार्य से रुक नहीं सकता। मुझे यह काम इस समय सर्वोपरि दीखता है।

आप यह भी करें–

१. अपने नगर, ग्राम, कालेज, स्कूल में आर्य कुमार सभा एवं आर्य युवक परिषदों का निर्माण कर संगठन को मजबूत बनाएं
२. राजधर्म का अधिकाधिक प्रचार कर वैदिक राष्ट्रवाद की स्थापना में अपना पुनीत योगदान करें। स्वयं ग्राहक बनें तथा औरो को बनावें
३. गाँव में तथा अपने-२ स्थानों पर योगासन व व्यायाम शिवर लगाएँ तथा यज्ञ करवायें इसके लिए परिषद के कार्यालय सुभाष मार्ग रोहतक से सम्पर्क करें।
४. हरिजन तथा पिछड़े कहे जाने वाले भाइयों को हर सामाजिक कार्य में अधिक प्रोत्साहन एवं सम्मान दिया जाऐ तथा उनके घरों में यज्ञ किऐ जाएं तथा यज्ञोपवीत दिए जाएं।

आर्य ग्रामों का चयन प्रारम्भ

बिजौरावास (अलवर) दिनांक ५ दिसम्बर को यहां आयोजित श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्ध शताब्दी समारोह में राजस्थान आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष स्वामी शक्तिवेश ने विशाल जन समूह को सम्बोधित करते हुऐ कहा है कि प्रतिनिधि सभा की अन्तर रंग ने डाल की बैठक में "आदर्श आर्य ग्राम ,, निर्माण हेतु विजौरावाश और दूसरा ग्राम पालूपुरा जिला जोधपुर को चुना है जिसका उपस्थित जनसमूह ने करतल ध्वनि के मध्य स्वागत किया। स्थानीय लोगों ने इस शुभ निर्णय के प्रति पूर्ण सहयोग का आश्वाशन भी दिया

देश विदेश के नेताओं की स्वामी श्रद्धानन्द जी को–श्रद्धांजलियां

भव्य मूर्ति में ईसा के दर्शन

"वर्तमान काल का कोई कलाकार यदि भगवान ईसा की मूर्ति बनाने के लिए कोई सजीव माडल (Model) चाहे तो मैं इस भव्यमूर्ति (महात्मा मुंशीराम जी)की ओर इशारा करूंगा। यदि कोई मध्यकालीन चित्रकार सैण्ट पीटर के चित्र के लिए नमूना माँगेगा तो मैं उसे इस जीवित भव्यमूर्तिके दर्शन करने की प्रेरणा दूंगा।"

रैम्जे मैकडानल्ड भूतपूर्व प्रधानमन्त्री बृटिश गवर्नमैण्ट

स्फूर्ति का स्रोत

"स्वामी श्रद्धानन्द जी का उत्कृष्ट उदाहरण युवक पीढ़ियों के लिए स्फूर्ति का स्रोत होगा, जो सदा उनमें आत्म-त्याग, तपस्या और कष्ट-सहन की भावना का विकास करने वाला होगा।"

श्री पं० मदनमोहनजी मालवीय

शाहीदों के खून से नये शहीद

"स्वामी जी की हड्डियों से यमुना के तट पर एक विशाल वृक्ष उत्पन्न होगा जिसकी जड़े पाताल में पहुँचेंगी। शहीदों के खून से नये शहीद पैदा होते हैं।"

शेरे पंजाब ला. लाजपतराय

सत्य ही जीवन व जीवन ही सत्य

"श्रद्धानन्द जी की भारत को देन उनकी सत्य में श्रद्धा है श्रद्धानन्द यह नाम ही उनकी उस भावना का परिचायक है। उनके लिए सत्य और जीवन एक हो गये थे--सत्य ही जीवन था और जीवन ही सत्य था उनकी मृत्यु उनके निर्भीक अनथक प्रयत्नों के अमर चित्रों को आलोकित करती हुई प्रकाश किरण की तरह हमारे सामने आती है।"

कवीन्द्र रवीन्द्रनाथ ठाकुर

वे कर्मवीर थे–वाकशूर नहीं

"स्वामी श्रद्धानन्द जी एक सुधारक थे। वे कर्मवीर थे, वाक्शूर नहीं। उनका जीवित-जागृत विश्वास था। इसके लिए उन्होंने अनेक कष्ट उठाये थे। वे वीरता और साहस के मूर्त रूप थे। वे संकट आनेपर कभी घबराते नहीं थे। वे एक वीर-सैनिक थे। वीर-सैनिक रोग शय्या पर नहीं, किन्तु रणाङ्गण में मरना पसन्द करता है। —वे वीर के समान जिये और वीर के समान मरे।"

मोहनदास कर्मचन्द गांधी, यंग इण्डिया ३० दिस० १९२६

गांधीजी की निम्न श्रद्धांजलि भी बहुत महत्व पूर्ण है --

महात्मा मैं नहीं—श्रद्धानन्द जो हैं।

"स्वामी श्रद्धानन्द जी से बढ़कर बहादुर आदमी मैंने संसार भर में नहीं देखा। जब कोई मुझे महात्मा कहता है तो मेरा दिल कहता है, 'महात्मा मैं नहीं, श्रद्धानन्द जी हैं।"

कैसे भूल सकता हूँ

"स्वामी श्रद्धानन्द में निर्भीकता की आश्चर्यजनक मात्रा थी। लम्बा कद, शाही शक्ल संन्यासी के वेश में बहुत उम्र हो जाने पर भी बिल्कुल सीधी चमकती हुई आँखें और चेहरे पर कभी-कभी दूसरों की कमजोरियों पर आने वाली चिड़चिडाहट या गुस्से की छाया का का गुजरना......में इस सजीव तस्वीर को कैसे भूल सकता हूँ? अक्सर वह मेरी आँखों के सामने आ जाती है।"

--पं जवाहरलाल नेहरू 'मेरी कहानी से

लो चलाओ गोलियां

"स्वामी श्रद्धानन्दजा की याद आते ही १९१९ का दृश्य मेरी आँखों के सामने खडा हो जाता है। सरकारी सिपाही फायर करने की तैयारी में हैं, स्वामी जी छाती खोलकर आगे जाते है और कहते है 'लो, चलाओ गोलियां।" उनकी उस वीरता पर कौन मुग्ध नहीं हो जाता? मैं चाहता हूं कि उस वीर संन्यासी का स्मरण हमारे अन्दर सदैव वीरता और बलिदान के भावों को भरता रहे।"

सरदार बल्लभभाई पटेल

ग्रामीण समाज का कितना बड़ा मज़ाक ?

वास्तविक भारत देखना हो तो आप को शहर की चमकती हुई दुनिया से दूर देहात के किसी गांव में जाना होगा। और यदि आपके दिल में ग्रामीण जनता के प्रति कुछ सहानुभूति है तो उनके साथ उड़ती हुई धूल एवं सड़ती कीचड़ में रह कर समाधान ढूंढना होगा। परन्तु जो लोग गगन चुम्बी अटालिकाओं, होटलों एवं क्लबों में बैठकर शराब की प्याली को हाथ में लेकर गाँव के लोगों की बदनसीबी पर मगर मच्छी आंसू बहाते हैं वे ग्रामीणों के हितैषी नहीं वरन दुश्मन हैं। अतः साथियो। आओ गांव की ओर चलें और समाज के अन्तिम मानव की मुक्ति के लिए रास्ता खोजें

-: सम्पादक :-

ग्रामीण भारत और ग्रामीण जीवन के बारे में चर्चा करना आजकल एक फैशन बन गया है। शहरी बुद्धिजीवी बड़े गर्व की भावना से कहते हैं कि ग्रामीण भारत ही असली भारत है। यह बात गलत नहीं है पर जिन लोगों के द्वारा यह बात कही जाती है वे एक हाथ में विदेशी सिगरेट द्वारा गहरे कश खींच रहे होते हैं तथा दूसरे हाथ में विदेशी शराब का जाम पकड़े होते हैं,

यह बुद्धि जीवी जब दो दो इंच के नाखून बढ़ाये, ऊंगलियों में कीमती अंगूठी पहने, अपनी आलीशान कोठियों के गद्देदार सोफों में बैठकर गांव की चर्चा करता है तो उसकी बातों का खोखलापन प्रत्यक्ष रूप से सामने आ जाता है। यही वे लोग हैं जो एक घंटा एअरकंडीशनर बन्द होने पर आसमान सिर पर उठा लेते हैं। अपने नौकरों के साथ ये लोग एक पालतू कुत्ते से भो बुरा व्यवहार करते हैं। गांव के नाम पर आँसू बहाते समय ये लोग भूल जाते हैं कि ये नौकर भी गाँव से उजड़कर आये बेरोजगार ग्रामीण युवकों में से ही हैं।

ये भद्र पुरुष अक्सर ग्रामीण शिल्प और ग्रामोद्योग पर लच्छेदार चर्चा करते है लेकिन जब अपने लिए कुछ खरीदने का सवाल आता है तो इन्हें गाँवों की अपेक्षा विदेशी वस्तुयें ही पसन्द आती हैं। ऐसा लगता हैं कि ये खुद भी भारतीय न होकर विदेशी ही हैं। ये भद्र पुरुष गांव या शहर के गरीब तबके के लोगों के साथ बातचीत करना भी पसन्द नहीं करते हैं और पार्टियों आदि में ग्रामीण भारत की बात करते हैं। इन लोगों को समाज में बिना शहरी जीवन की सुविधाओं का त्याग किये गांव पर घड़ीयाली आँसू बहाकर अपनी 'इमेज' बना कर रखना सरल दिखाई देता है। ऐसा चर्चा कुछे हद तक उन युवकों के द्वारा हो जो अपने कालेज के सुखद जीवन तो बात कुछ ठीक लगती, लेकिन उन अधिक पढ़े लिखे युवकों के बारे में क्या कहा जा सकता है जो समाजवाद और ग्रामीण जीवन की बात करते हैं पर जब गांव में जाकर नौकरी करने की बात आती है तो वे वहां जाने के बदले ऊँचे वेतन पर शहरों में आफीसरी के लिए लालायित रहते हैं, यही वो तबका है जिसके लिए ग्रामीण जीवन की बात अपना सम्मान बनाने और जनता को बेवकूफ बनाने के लिए उपयुक्त होती है पर स्वयं उनके जीवन में कोई महत्त्व नहीं होता है।

इन बातों का यह अर्थ नहीं है कि ये बुद्धि जीवी अपना शहर का आराम व सुविधापूर्ण जीवन छोड़कर गांवों में जाकर बस जायें और जहाँ कुएं से पानी खींच-कर अपनी ग्राम भक्ति का परिचय दें, लेकिन जो लोग गांवों के गरीब किसानों के प्रति अपनी सहानुभूति रखते हैं या प्रकट करना चाहते हैं तो वे रचनात्मक रूप से कुछ काम करें। केवल सहानुभूति से कुछ लाभ नहीं होगा, यदि गांवों के गरीब लोगों के प्रति इन भद्र पुरुषों के दिल में इतना दर्द है तो वे शहरों में रहने वाले गरीब व शोषित तबकों के लाखों लोगों के लिये कुछ क्यों नहीं करते ताकि उनकी सहानुभूति व सच्चाई का कुछ प्रमाण मिल सके ये लोग ग्रामीण युवतियों के सौंदर्य की तारीफ करते हैं, गांवों के शांत आकाश में सूर्यास्त का समय वर्णन करते हैं, लोकगीतों की तारीफ तथा रंगबिरंगी ग्रामीण पोषाकों का वर्णन करते हैं पर जब गाँव में जाकर रहने का सवाल उठता है तो ये लोग विदेशों में जाकर सैर के उतावले होते हैं, इनके नौकर भी अगर छुट्टी माँगकर गाँव जाना चाहें तो ये उसका वेतन काट लेते हैं या उसके जाने पर नया नौकर रख लेते हैं। नयी-नयी फैशनेबुल पत्र पत्रिकायें भी ग्रामीण जीवन के गीत गाकर अपना प्रगतिशील चरित्र उजागर करती हैं। जब किसी आधुनिक पत्रिका के पृष्ठ उलट कर देखें जायें तो एक ना एक लेख ग्रामीण जीवन पर मिलेगा। जैसे—ग्रामीण मजदूर के जीवन का एक दिन या फिर कैसे गांव के उजड़े शोषित शिल्पियों की पारम्परिक हस्तकला का पुनरुद्धार किया जाये। ये लेख आमतौर पर बड़े पिछले स्तर के भावुकता पूर्ण होते हैं।

पत्रकार, लेखकों आदि के अलावा अब नई लहर के चलचित्र निर्माता और कलापूर्ण डाक्यूमेन्टरी बनाने वाले भी इस ग्रामीण भारत को निचोड़ने में लगे हैं। हाँलाकि इस दिशा में कुछ ने वास्तव में सद्प्रयास किया है लेकिन अधिकतर मामलों में यह छलावा ही है। यदि हिन्दी फिल्म वाले अपने घिसे पिटे ढग से गाँव के जीवन की तस्वीर अपनी नाटकीय व भावपूर्ण शैली में बनाते हैं तो यह उतना बुरा नहीं लगता जितना कि ये शहरी भद्र पुरुष कहे जाने वाले लोग गाँवों के बारे में पाखंड-भरी व लच्छेदार चर्चा करते हैं। --वेप्पाराव

[पृष्ठ ६ का शेश]

यह वक्तव्य अदालत में पेश किया जाये ताकि उससे 'पब्लिक' स्वयं निर्णय कर ले कि इस हत्या के लिए कौन उत्तरदायी है-ढींगरा या ब्रिटिश सरकार किन्तु पुलिस वह वक्तव्य पेश करने का तैयार न हुई।

ढींगरा ने अपनी सफाई पेश करने के लिए कोई वकील नहीं किया न ही लिया और अदालत को निर्भीक होकर कहा-"मैं आपके अधिकार को स्वीकार नहीं करता इसलिए आप जो चाहें, मुझसे कर सकते हैं। मुझे रत्ती मात्र भी परवाह नहीं। मगर याद रखो, वह दिन अवश्य आयेगा जइ हम शक्तिशाली होंगे और उस दिन हम अपनी मरजी के अनुसार तुम से सलूक करेंगे।"

मदन लाल ढींगरा के इस वक्तव्य ने इंगलिस्तान के वायुमंडल में आग सी लगा दी। सर कर्जन वाइली की हत्या के समाचार से यूरोप में जितनी सनसनी फैली थी, इस बयान ने उसने कहीं ज्यादा धमाका पैदा कर दिया। जब जज ने आखिर उस फांसी की सजा सुनाई तो मदनलाल ने कहा--"मैं इस मेहरबानी के लिए आपका धन्यवाद करता हूं। मुझे गर्व है कि मुझ इस तरह अपना तुच्छ जीवन मातृभूमि के लिए अर्पण करने का अवसर देकर मेरा सम्मान किया गया है!"

अदालत में ढींगरा के अन्तिम शब्द ये थे-"एक हिन्दू के नाते मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि मैं फिर से हिन्दूस्तान में जन्म लूं। अपनी राष्ट्र माता को बन्धन विमुक्त करवाने के लिए स्वातंत्र्य लक्ष्मी की बलिवेदी पर अपने प्राणों कीभेंट चढ़ा दूं ओर इस प्रकार बार--बार जन्म लेकर अपने तुच्छ प्राण माता की सेवा के निमित उसके चरणों में अर्पण करता रहूं ताकी मेरी भारत माँ, मेरा हिन्दुस्तान विदेशियों के चंगुल से आजाद होकर संसार को सच्ची शांति और कल्याण का सन्देश दे सके।

१६ अगस्त, १६०६ को प्रातः ६ बजे मदनलाल ढींगरा को लंदन की ब्रिक्स्टेन जेल में फांसी पर लटका दिया गया।

जब वार्डर ने सुबह आकर उसे तैयार होने को कहा, उस समय वह मजे से गहरी नींद सोया हुआ था। उसने उठ कर मुंह-हाथ धोया शौच आदि से निवृत्त हो स्नान किया, रोज की तरह नाश्ता किया और अपना सर्वोत्तम सूट पहनकर फांसी घर की ओर चल दिया। उस दिन मदन वास्तव में बहुत ही सुन्दर लग रहा था।

फांसी घर में पहुँच स्वय आगे बढ़ा और सिर और मुंह पर काली टोपी पहने बिना नंगे मुंह ही तख्ते पर चढ़कर फांसी के फंदे को चूमकर गले में डाला और तुरन्त कूद गया।

ढींगरा--पंजाब का पहला शहीद था, जिसने अपने बलिदान से भारत की स्वतंत्रता के काज की ओर पहली बार संसार का ध्यान आकर्षित किया था।

उस शहीद के चरणों में हमारा बारम्बार प्रणाम हो!

आर्य युवक परिषद थुआ [जीन्द] में ऋषि निर्वाण दिवस :—

आर्य समाज थुआ जिला जीन्द में ऋषि निर्वाण दिवस धूमधाम से मनाया गया। दिन में आर्य युवक परिषद के तत्वाधान में कबड्डी कुश्ती व अन्य व्यायाम प्रदर्शन हुए रात को सत्यवीर आर्य मन्त्री आर्य समाज रघुवीर सिंह आर्य अर्जुन सिंह ने स्वामी दयानन्द को श्रद्धांजली दी और युवको को आर्यसमाज में आने की प्रेरणा दी। महासिंह आर्य एवं रामसिंह आर्य ने गीतों द्वारा महर्षिदयानन्द सरस्वती के जीवन व कार्यों पर प्रकाश डाला।

सत्यवीर आर्य

मन्त्री आर्य समाज थुआं (जीन्द)

"स्वामी श्रद्धानन्द एक वार्ता"

गाँव की चौपाल से

पं० रामचन्द्र आर्य

गोपी, कूड़े, जुगलाल, चौ० सुरजा चौपाल मैं बैठे बात कर रहे हैं इतने में पं० सोमदेव जी आ जाते है। देखते ही सभी, एक साथ बोल उठते हैं। पं० जी नमस्ते।

सोमदेव:–नमस्ते सब भाईयों को। आज किस विषय पर बात चीत हो रही है। बड़ी बहस कर रहे हो आपस में।

गोपी चमार–बैठो पं० जी आपकै आगै तो जरूर बतावांगे।

सोमदेव:–हां बताओ भाई यह कहते हुए बैठ जाते है।

चौ० सुरजा:--पंडित जी यह दोनों हरिजन भाई यह पूछ रहे हैं कि हम बहुत दिन से स्वामी श्रद्धानन्द का नाम सुनते आ रहे हैं। और आज काल भी अखबांरा मैं और बड़े-२ आदमियों में उसकी बड़ी चर्चा सुनी जा रही है। उस बाबत बताओं न उस न क्या-२ काम किया है।

सोमदेव:--वाह भाई। आज तो बहुत अच्छी चर्चा कर रहे हो। स्वामी श्रद्धानन्द तो इस देश के बहुत बड़े आदमी हुए हैं स्वामी जी युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द के शिष्य थे। उन्ही से प्रेरणा लेकर वो देश के चोटि के व्यक्तियों में पहुंच गये।

गोपी:--पंडित जी यूं सुना है, इनका असली नाम मुन्शीराम था और ये वकील थे। ये फेर साधू कैसे बने।

सोमदेव.--भाई। देखो बात ये है। ये पढ़े लिखे तो थे ही। एक दिन महर्षि दयानन्द का व्याख्यान सुन लिया, बस। क्या था, उसी दिन उसको फटकार लग गई और यह आर्य समाजी बन गये।

कूड़े और जुगलाल--दयानन्द भी गजब का आदमी था। इनता भारा वकील भी आर्य समाजी बना दिया।

चौ०सुरजा:--पंडित जी आप तै उस न आर्य समाजी लीडर बताओ सो, वो तो कांग्रेस के भी बहुत बड़े लीडर बताए, ये दोनों बात कैसे हुई।

सोम:–हां भाई उन में ये दोनों बातें थी। मैं तुम्हें बताता हूं. समझने की कोशिश करो। देखो उस समय हर एक दयानन्द का सिपाही आर्य समाजी देश को आजाद कराना चाहता था। इस लिए सब आर्य समाजी कांग्रेसी बन गये थे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने कांग्रेस का नेता बनकर उस समय आजादी के लिए बहुत बड़ा काम किया था। जब अमृतसर में कांग्रेस का साधारण अधिवेशन हुआ तो स्वामी जी ही उसके स्वागताध्यक्ष बने क्योंकि जलियांवाला बाग के कांड से सभी भयभीत थे और कोई भी इस कार्य को तैयार नहीं था। स्वामी जी इसी प्रकार जिस समय दिल्ली में अन्दोलन के अग्रणी नेता थे। उस समय बहुत बड़ा जलूस निकाला गया और जलूस की अगवाणी स्वामी जी खुद कर रहे थे। चादंनी चौक में खड़ी हुई अग्रेजी फौज की टुकड़ी ने जलूस को रोका और कहा जलूस आगे नहीं जाएगा और जो व्यक्ति आगे निकलेगा उसे गोली से उड़ा दिया जाएगा। इतना शब्द सुनते ही स्वामी जी छाती तानकर आगे आए और कहा कि चलाओं गोली पहली गोली मेरी छाती में लगेगी। निर्भय वीर संन्यासी की यह घोषणा सुनकर अंग्रेज फौज ने बिना गोली चलाए जलूस के लिए रास्ता छोड़ दिया जुलूस सफल रहा और स्वामी श्रद्धानन्द, महात्मा गांधी के गगन भेदी नारों से आकाश गूंज उठा। उस समय देश के सभी नेताओं ने स्वामी जी की त्याग तपस्या का लोहा मान लिया। ये थे स्वामी श्रद्धानन्द।

गोपी:--बहुत बढ़िया बात बताई दादा। ठीक ही स्वामी श्रद्धानन्द का नाम ले रहे लोग हैं।

जुगलाल:--पंडित जी और के-२ काम करा स्वामी जी ने।

सोमदेव:–भाई और भी बहुत घने काम करे स्वामी जी ने, लो मोटे-२ तुम्हारे सामने बता देता हूं। पहला एक तो तुम्हारे सामने देश की आजादी का काम बता दिया। दूसरा गुरुकुल शिक्षा प्राणाली की स्थापना की। भाइयों सबसे पहला गुरुकुल कागड़ी हरद्वार में स्वामी श्रद्धानन्द ने ही

खोला था और फिर देश के अन्दर गुरुकुलों के जाल बिछा दिये स्वामी जी ने।

३ शुद्धि का काम - जो भाई आर्यधर्म [हिन्दू धर्म] को छोड़ कर मुसलमान अथवा ईसाई बन गये थे स्वामी जी उनको शुद्ध करके दोबारा आर्यों हिन्दुओं में मिला देते थे। स्वामी जी ने यह बहुत बड़ा काम आर्य जाति के लिए किया। लाखों नौजवानों को ईसाई आदि बनने से बचाया।

४ अछूतोद्धार- स्त्री शिक्षा - स्वामी जी ने जो अछूत समझे जाते थे उनसे प्रेम किया। और आर्य समाज के गुरुकुलो में एक पैसा भी न लेकर उनको पढ़ाया और विद्वान पं० बनाया। आर्य समाज के प्रचार व उपदेश से हरिजनों के साथ नफरत करना दूर किया। कन्याओं के लिए शिक्षा का अलग प्रबन्ध करवाया।

कूड़े:--ठीक कहो सो पंडित जी मैं छोटा सा था तै हम ने भी देखी थी। यह पता नहीं कुणसा जमाना था।

सोमदेव:—भाई कूड़े। ठीक कह रहे हो आप, वो स्वामी श्रद्धानन्द जी का ही जमाना था उस समय स्वामी श्रद्धानन्द जी ही आर्य समाज के सबसे बड़े नेता थे।

सुरजा:--भाईयों स्वामी जी तो देश का एक बहुत महान नेता हुआ है इतने बड़े-२ काम करना साधारण आदमी के बसका रोग नहीं है।

सोमदेव:--हां भाई। स्वामी जी महान व्यक्ति था इसलिए तो अब सारे देश में उनके नाम से स्वानी जी की अर्द्ध शताब्दी मनाई जा रही है। अपने-२ प्रान्त में आर्य समाजी बहुत बड़े-२ जलसे करेंगे, जिसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी का गुण-गाण और उनके चलाये हुए कार्यों को पूरा करने का संकल्प लिया जावेगा।

गोपी:--पंडित जी कोई म्हारे हरयाणे में भी बड़ा जलसा होवेगा, स्वामी जी के नाम का। जै लवै सी हो तो मेने भी जरूर बताईयो। मैं तो अपने घणे हरिजन भाईयाँ ने लेकै जलसे मैं जाऊंगा क्योंकि हमारा हरिजनों का सबसे बड़ा उपकार आर्य समाज ने ही किया है।

सोमदेव:--भाई। हरयाणे में सबसे बड़ा जलसा स्वामी श्रद्धानन्द के नाम होली से दो चार दिन पहले हरयाणे की प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगरी जींद में होगा। वहां पर लाखों की सख्यां में जनता आयेगी और उस जलसे में आर्य समाज के प्रसिद्ध युवा सन्यासी स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश भी पधारेंगे सब जने एक साथ–ओहो! फेरतो हम दल बल के साथ सब चलांगें जलसे में।

जुगलाल:--अच्छा अब सोने का समय होग्या। चलो अपनी अपनी सौड़ न्युवाई करो।

सोमदेव:–अच्छा सब मिलकर बोलो स्वामी श्रद्धानन्द की सब एक आवाज से–जय! हो एक दूसरे से नमस्ते कहते हुए चले जाते हैं।

श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्ध शताब्दी के लिए नरवाना तहसील की ओर से ५० हजार रुपये की घोषणा। १६ दिसम्बर की बैठक में चौ. कलीराम आर्य को सर्वसम्मति से तहसील का संयोजक चुना गया।

१६ दिसम्बर नरवाना। आज यहां नरवाना तहसील के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की महत्वपूर्ण बैठक स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में हुई। १८-१६-२० फरवरी को जीन्द में होने वाले श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्ध शताब्दी के सहयोग के लिए सर्वसम्मति से श्री कलीराम जी आर्य को तहसील का संयोजक चुना गया और उन्हें ही अपनी समिति गठन करने का अधिकार दिया गया। बैठक में उपस्थित श्री टेकचन्द एडवोकेट वीरेन्द्र कुमार एडवोकेट, चौ० माई लाल दनौदा' डा० अभेसिंह व श्री कलीराम आदि ने विचार-विमर्श करने के बाद में घोषणा की कि अर्द्ध शताब्दी के लिए वे ५० हजार रुपये की थैली स्वामी इन्द्रवेश जी को भेंट करेंगे। इसी अवसर पर नरवाना के प्रतिष्ठित व्यक्ति श्री कृष्ण गोपाल ने यह विश्वास दिलाया कि वे ५० ट्रक सम्मेलन में लोगों को ले जाने के लिए जींद भेजेंगे। बैठक को श्री रामधारी शास्त्री संयोजक अर्द्ध शताब्दी सम्मेलन ने भी सम्बोधित किया और हजारों की संख्या में जींद पहुंचने का आह्वान किया।

ग्राम मिर्जापुर (हिसार) की ओर से २३०० रुपये की राशि प्राप्त

अर्द्ध शताब्दी के लिए ग्राम मिर्जापुर में १७-१८ दिसम्बर को खेमसिंह जी की भजनमण्डली द्वारा जोशीला प्रचार किया गया। और २३०० रुपये की राशि स्वामी इन्द्रवेश जी को भेंट की गई। स्वामी जी के साथ वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी चन्द्रवेश वेदाचार्य शताब्दी समारोह के संयोजक रामधारी जी शास्त्री स्वामी सत्यवेश, धर्मवीर जी आर्य कौथ आदि भी पधारें।

[पृष्ठ ४ का शेष]

"वे प्रभु अकाम" हैं–सारी कामनाओं से रहित है, उन्हें अपने लिये किसी भी वस्तु को प्राप्त नहीं करना है, वे धीर हैं - संसार के किसी भी परिवर्तन से उन में किसी प्रकार का विकार उत्पन्न नहीं होता, सदा एक-रस रहते हैं, अपनी समावस्था को नहीं खोते, वे अमृत हैं मृत्यु से रहित हैं, वे स्वयंभू है - अपनी सत्ता का हेतु स्वयं ही हैं, उन की सत्ता में और कोई कारण नहीं उन्हें किसी ने नहीं बनाया है, वे सदा से स्वयं ही चले आ रहे हैं, वे रस से अर्थात् आनन्द से तृप्त हैं, परिपूर्ण हैं, वे कहीं से भी किसी प्रकार की कमी वाले नहीं हैं।' इस प्रकार के आनन्द से तृप्त और परिपूर्ण, सब प्रकार की कमियों से रहित अकाम परमात्मा को अपने लिये किसी भी वस्तु की इच्छा और आवश्यकता नहीं है। उन्हें कुछ भी नहीं चाहिये अपना प्रशंसा और गुणावली का गान भी नहीं चाहिये।

हमें अपने किये का फल अवश्य भोगना पड़ता है

इस लिये हमारे मुख से अपनी प्रशंसा सुन कर भगवान् के प्रसन्न होने और प्रसन्न हो कर हमारे दुखों को काट देने का प्रश्न ही उत्पन्न नहीं होता। वैदिक धर्म के अनुसार मनुष्य को अपने कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है। हमारे शुभ कर्मों का फल सुख होता है और अशुभ कर्मों का फल दुःख होता है। हम जैसा करेंगे वैसा भरेंगे। हमारे ऋषियों ने कहा है- "हमें अपने अच्छे और बुरे कर्मों का फल सुख और दुःख भोगना ही पड़ता है।" कर्म का फल जब तक भोग न लिया जाये तब तक वह सौ करोड़ कल्पों में भी क्षीण नहीं होता है।" स्वयं वेद भगवान में कहा गया है मनुष्य जैसा पकाता है जैसा करता है वह पकाने वाले को, करने वाले को, वैसा ही प्राप्त होता है। भाव यह है कि हम जैसा करते हैं वैसा भरते हैं। वेद में अन्यत्र कहा है हे वरणीय प्रभो! (वरुण) असत्य-वादी को तुम्हारे पास बाध लेवें और सत्यवादी को छोड़ देवें। और कहा है मनुष्यों को पहिचानने वाले हे वरणीय प्रभो! (वरुण) अनृतवाणी वाला झूठा व्यक्ति तुम्हारे पाशों से छूट नहीं पाता है। अन्यत्र कहा है राजा वरुण सब लोगों के सत्य और झूठ को भली भांति देखते हुए सब के बीच में चल रहे हैं। राजा वरुण सब के बीच में है, सब के हृदयों में हैं और सब के झूठ और सच को भली भांति देख रहे हैं, असत्यवादी का उन के पाश बांध लेते हैं और सत्यवादी को छोड़ देते है। वेद के इन कथनों का स्पष्ट अभिप्राय यह है कि हमे हमारे पुण्य और पाप कर्मों का फल सुख और दुःख मिल कर ही रहता है। उस से छुटकारा नहीं है।

इस प्रकार वैदिक धर्म के अनुसार मनुष्य को अपने अच्छे बुरे कर्मों का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। परमात्मा हमारे मुख से अपनी प्रशंसा के गीत सुन कर हमारे पक्ष में नही हो जाते और हम सर कृपा कर के हमारे दुःखों को नहीं काटते। वे तो हमारे द्वारा की गई अपनी प्रशंसा की ओर ध्यान न दे कर हमारे आचरणों को देखते हैं और हमारे शुभाशुभ आचरणों के अनुसार ही हमें सुख या दुःख देते है। सौदे और व्यापार की मनोवृत्ति से की धई हमारी भक्ति से वे कभी प्रभावित नही होते।

स्वामी श्रद्धानन्द अर्धशताब्दी हेतु दान दाताओं की सूची :–

नाम		राशि
श्रीं मोजड़ सिंह आर्य डाहौला		५१
,, धर्मसिंह डाहौला		७५
चौ० मांगेराम	,,	५१
चौ० मनफूल सिंह	,,	१०१
श्री हवासिंह नम्बरदार	,,	५१
,, सज्जन सिंह	,,	२१
;, लेखसिंह	,,	२१
,, ऋषिराज	,,	२२
चौ० इन्द्रसिंह	,,	२१
महन्त रामनाथ जी	,,	३०
श्री मांगेराम सु० दलसिंह		१०१
,, पंजाब सिंह दुधान	,,	१०१
,, मा० हरिसिंह	,,	१०१
,, सरला देवी जीन्द	,,	५०
,, रामचन्द्र .	,,	२१
,, बहन शान्ति देवी जीन्द		१२५
;, मानसिंह सु० जप्ती	,,	२५
,, लालचन्द	,,	२५
,, भीमसिंह	,,	५१

समाचार दर्शन

बिजौरावास में श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्ध शताब्दी समारोह सम्पन्न

आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के तत्वाधान में गत ५ दिसम्बर को अलवर जिले के ग्राम बिजौरावास में अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द अर्द्धशताब्दी समारोह विशाल स्तर पर मनाया गया। सम्मेलन की अध्यक्षता स्वामी शक्ति वेश प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने की। वयोवृद्ध आर्य नेता स्वामी भीष्म जी महाराज स्वामी इन्द्रवेश प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब स्वामी चन्द्रवेश जी अधिष्ठता आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब स्वामी व्रतानन्द चितोड़ क्रांतिकारी भजनोपदेशक स्वामीं रुद्रवेश पं० ताराचन्द वैदिक तोप जगवीर सिंह एडवोकेट श्री धर्मवीर एम,एल.ए. चौ० रामसिंह चैयर मैन बहरोड़ बहिन कलावती आदि प्रसिद्ध वक्ताओं और भजनोपदेशको ने जनता को सम्बोधित किया स्वा: इन्द्रवेश जी ने अपने व्याख्यान में कहा कि अब युवा शक्ति का यह उठता हुआ सूर्य सारे देश में प्रकाश करेगा और सभी निराशा के बादल कट जायेंगे। आर्य समाज का कायाकल्प होगा। आपने यह भी प्रेरणा की कि राजस्थान सभा के अधिकारी अगामी वर्ष में अलवर जिले में कम से कम सौ नई आर्य समाजों की स्थापना करे। सम्मेलन का संयोंजन मा० दलीप सिंह मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान ने संभाला तथा श्री वृज्ञानन्द दयाराम बस्तीराम रामानन्द सुरेशचन्द दाताराम आदि नौजवानों ने बढ़ चढ़ कर प्रबंध किया।

आर्य उप-प्रतिनिधि सभा गुड़गावां का गठन औरंगाबाद में विशाल यज्ञ सम्पन्न

जिला भर के सैकड़ों कार्यकर्ताओं के बीच २८ नवम्बर रविवार को आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में यह महत्वपूर्ण निर्णय लिया गया कि गुड़गावां जिले में आर्यसमाज के संगठन को सुदृढ़ करने और दलित एवं पीड़ित जनता की रचनात्मक कार्यों द्वारा सेवा करने के लिए जिला की समस्त आर्यसमाजों का एक शक्ति शाली संगठन बनाया जावे जिसके द्वारा अधिक से अधिक गांवों में आर्यसमाजों का निर्माण हो सके साथ ही २३ दिसम्बर १९७६ को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस जिला स्तर पर पलवल में धूम धाम से मनाया जावेगा।

चुनाव—स्वामी आदित्यवेश प्रधान, श्री हंसराज आर्य खड़क सिंह आर्यवरिष्ठ उप प्रधान, नत्थी सिंह उपप्रधान, पं० बालकराम उपप्रधान, लक्ष्मीचन्द मन्त्री, डा० बृजेन आर्य उप मन्त्री, बलवीर सिंह शास्त्री उपमन्त्री, मूलचन्द कोषाध्यक्ष कृपा राम सरक्षक, ओमप्रकाश संरक्षक।

कार्यालय अध्यक्ष सुबेदार भरत सिंह

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप-कार्यालय रोहतक में १ दिसम्बर १९७६ से कुशल समाज सेवी कार्यकर्ता सूबेदार भरतसिंह जी को कार्यालयाध्यक्ष के रूप मे नियुक्त किया गया है। अब कार्यालय व्यवस्था उनकी देख रेख में ही चलेगा।

सभा उप मन्त्री सुभाष मार्ग रोहतक।

५-६-७ नवम्बर जयपुर समारोह की स्मारिका का प्रकाशन किया जा रहा है।

सभीं को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि राजस्थान की राजधानी जयपुर में ऐतिहासिक त्रिदिवसीय आर्य समाज का शताब्दी समारोह बड़ी ही धूमधाम से महाराजा सुदर्शन देव जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। इस अभूतपूर्व समारोह की स्मारिका का प्रकाशन शीघ्र ही किया जा रहा है

स्मारिका के लिए विद्वान लेखकों पत्रकारों के सुलझे हुए और विभिन्न क्षेत्रों में भावी कार्यक्रमों को निर्दिष्ट करते हुऐ लेख, कहानी कविताएं सादर आमत्रिंत हैं।

स्मारिका में समारोह की आकर्षक झांकियां कार्यक्रातओं के चित्र और परिचय आर्य समाज की गतिविधियों का विवरण में प्रकाशित किया जाऐगा। स्मारिका १५० पृष्ट की होगी जो कि लगभग ५००० की संख्या में छपेगी।

विज्ञापन दाताओं को सूचित किया जाता है कि शीघ्र अति शीघ्र अपना स्थान सुरक्षित कराएं।

विज्ञापन की दर इस प्रकार है:—

फुल समारिका का साइज २०"३०"	८
फुलपृष्ट कवर नं० २,३,व ४	१०००
फुल पृष्ठ अन्दर	५००
आधा पृष्ठ	३००
चौथाई	२००

यशपाल सम्पादक

राजधर्म

पंजीयन क्रमांक
पी/आर टी के ६८

२० दिसम्बर १९७६

देश भर के आर्यों से अपील

आर्यो। एक बार फिर कठोर परीक्षा एवं कसौटी का समय आ गया है जब दयानन्द के सैनिकों ने अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्ध शताब्दी के अवसर पर ठोस निर्णय लेने का संकल्प किया है। १८-१९-२० फरवरी १९७७ को हरयाणा के प्रसिद्ध नगर जींद में स्वामी श्रद्धानन्द अर्द्ध शताब्दी सम्मेलन विशाल स्तर पर मनाया जा रहा है। जगह-२ जलसों एवं बैठकों में जनता के उमड़ते हुये प्यार और उत्साह को देखकर यह विश्वास है कि यह सम्मेलन ऐतिहासिक रूप से मनेगा। परमपिता परमेश्वर की विशेष अनुकम्पा, आर्य जनता के अगाध प्यार, नौजवानों के असीम सहयोग एवं हितैषियों की पवित्र सहानुभूति से पिछले दस वर्ष में हम काफी आगे बढ़े हैं। आर्य राष्ट्र स्थापना का संकल्प अपने अपने दिलों में संजोकर जिस समय कुरुक्षेत्र की धरती से हमने दिल्ली की ओर प्रस्थान किया था तो हमारे पास सिवाय ईश्वर विश्वास एवं बुजुर्गों, माताओं के प्यार के और कुछ नहीं था। पर हमारे पास महर्षि दयानन्द के पावन सिद्धान्त थे जो हमारा मार्ग दर्शन करते रहे। हमारे रास्ते में बड़ी-२ रूकावटें थी। पर दयानन्द के दीवानों की यह सेना निरन्तर मञ्जिल की ओर बढ़ती गई। आर्यसमाज के मठाधीशों ने हमारा डट कर विरोध किया। हमारे बारे में कुछ का कुछ लिखा गया। परन्तु हमने महर्षि दयानन्द के सपनों का क्रियान्वित रूप देने के लिए जो अभियान छेड़ा था हम उसमें निरन्तर आगे बढ़ते रहे। हर स्थिति में हमें जनता का आशीर्वाद प्राप्त हुआ। और उसी का परिणाम यह है कि आज देश के सभी प्रान्तों में वैदिक सिद्धान्तों में निष्णात कर्मठ नौजवान आर्य समाज को अपना जीवन समर्पित कर रहे हैं। हजारों नौजवानों ने जीवन भर महर्षि के मिशन को जन २ तक फैलाने की प्रतिज्ञाऐं की हैं तथा पचासों तपस्वी एवं उच्च शिक्षा प्राप्त युवकों ने भरी जवानी में संन्यास की दीक्षा लेकर आर्य राष्ट्र के यज्ञ में अपनी आहूति दी है। अब संगठन शक्ति बढती जा रही है। गत वर्ष रोहतक में हमने आर्य समाज शताब्दी सम्मेलन का आयोजन किया बहुत थोड़े समय में आप लोगों के सहयोग से इतना जबरदस्त सम्मेलन होना अपने आप में युवा शक्ति के प्रबल पुरुषार्थ का साक्षात उदाहरण है।

अतः आर्यो! अपना तन मन धन जिसका जितना सामर्थ्य हो उतना इस महान यज्ञ में आहूत कर वैदिक क्रान्ति की इस ज्वाल शिखा को प्रज्वलित करे स्वामी श्रद्धानन्द के अमर बलिदान से प्रेरणा लेने के लिए १८, १९, २० फरवरी १९७७ को जीन्द पहुंचे यह हमारी परीक्षा का अवसर है। हमें अपनी शक्ति से दुनियां के लोगों को प्रभावित करना है। इसलिए हमारी सारे देश के आर्य बन्धुओं से प्रार्थना है कि जहां कहीं भी जो आर्यवीर, दयानन्द का सैनिक चाहे वह मजदूर हो या किसान, दुकानदार हो या व्यापारी, ब्रह्मचारी हो या संन्यासी, भजनोपदेशक हो या प्रचारक हमारी प्रार्थना को पढ़ने के तुरन्त पश्चात जीन्द सम्मेलन की तैयारी में जुट जाऐं। जो जीन्द के क्षेत्र में अभी से पहुंच कर समय दे सके उसका भी हम स्वागत करेंगे। सभी का परम कर्त्तव्य है कि इस समय पूरी शक्ति लगाकर सहयोग करें तभी यह महान यज्ञ सफल होगा।

विनीत

इन्द्रवेश

अध्यक्ष अर्द्ध शताब्दी सम्मेलन आर्यसमाज जींद (हरयाणा)

राजधर्म प्रकाशन के लिए राजधर्म प्रेस, रोहतक से स्वामी इन्द्रवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित।

ओ३म्

युगधर्म

प्रधान सम्पादक — स्वामी अग्निवेश
सम्पादक — जगवीर सिंह
वर्ष—८
वार्षिक शुल्क—२०) रुपये
प्रति—१) रुपया

१८, १९, २० फरवरी १९७७ को

आर्यो ! जीन्द चलो

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्धशताब्दी

२ लाख से अधिक व्यक्ति भाग लेंगे
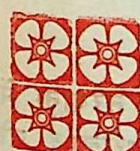
जनता में भारी जोश

सम्मेलन की तैयारीयां जोर शोर से जारी

जीन्द में भारी हलचल

नौजवानो दल-बल से जीन्द चलो

देश भर में प्रान्तीय सम्मेलनों की धूम बिहार की धरती पर नये अध्याय का सूत्रपात

● जगवीर सिंह

आर्य राष्ट्र स्थापना का एक संकल्प लेकर जिस समय हम सिर पर कफन बांध कर निकले थे तो हमने अपना कार्य क्षेत्र हरियाणा प्रान्त को बनाया था। उस समय हमारे पास सीमित साधन एवं कार्यकर्ता थे। हम इच्छा रखते हुए भी देश भर से आने वाले निमन्त्रण को भी स्वीकार नहीं कर पाते थे। परन्तु निरन्तर दस वर्ष तक कठोर तपस्या एवं संघर्ष करने के बाद आज स्वामी इन्द्रवेश एवं स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व में हरियाणा ही नहीं बल्कि पंजाब, दिल्ली, राजस्थान, पश्चिमी उत्तरप्रदेश और अब बिहार में भी हमारे हजारों साथी आर्यसमाज के संगठन को मजबूत करने में जी जान से जुटे हुए हैं। और हर स्थान पर युवा आन्दोलन को बराबर जबरदस्त सहयोग मिल रहा है। अपने दिलो में क्रांति की ज्वाला रखने वाले कर्मठ नौजवान चाहे वह देश के किसी भी कोने में बैठे हैं पूज्य स्वामी इन्द्रवेश जी के आह्वान पर तेजी के साथ संगठित होते जा रहे हैं। गत नवम्बर एवं दिसम्बर के महिनो में प्रचार कार्य तेजी से हुआ है। ५-६-७ नवम्बर १९७६ को जयपुर में राजस्थान प्रान्तीय आर्य समाज शताब्दी समारोह ऐतिहासिक रुप से सम्पन्न हुआ। समस्त राजस्थान के हजारों आर्य नर-नारी उल्लास के साथ सम्मेलन में पधारे। जोधपुर, कोटा, गंगापुर सीटी बहरोड़ आदि स्थानों से आर्य वीरों की टोली दल-बल से सम्मेलन की तैयारी में जुटी हुई थीं। इस सम्मेलन से हमें जहां आय जनता का आर्शीवाद एवं स्नेह प्राप्त हुआ। उसके साथ अनेक आर्य विद्वानों नेताओं एवं संन्यासियों का सानिध्य भी मिला। आर्य नरेश शाहपुराधीश श्री सुदर्शन देव जी ने इस सम्मेलन की अध्यक्षता करके हमें अपना जो स्नेह दिया वह कभी भुलाया नहीं जा सकता। इसी तरह से हैदराबाद के पं० वेदभूषण, श्री बालाराम आर्य झालरापाटन, स्वामी ब्रह्ममुनी परिव्राजक, स्वामी भीष्म, श्री भगवती प्रसाद अभय, श्री वेगराज जी, पं० शोभाराम प्रेमी आदि प्रमुख आर्य विद्वानों एवं प्रचारकों से भी मिलने का मौका मिला। इस सम्मेलन का गुरुतर भार आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी शक्तिवेश जी के कन्धो पर ही था। परन्तु उन के इस भार को हल्का करने के लिए श्री मदनसिंह आर्य सेनापति आर्य वीरदल राजस्थान पं० वेदप्रिय शास्त्री वेदप्रचार अधिष्ठाता, श्री रामस्वरुप रक्षक, श्री धर्मवीर आर्य कार्यालयध्यक्ष, श्री यशपाल यश, श्री झम्मटमल खूबानी, श्री दीपचन्द आर्य अजमेर, श्री रामकृष्ण कोटा, श्री मा० दलीपसिंह सभा मन्त्री, एवं अन्य सैंकड़ो कर्मठ कार्यकर्ता कार्य में जुटे हुए थे। कुल मिलाकर यह सम्मेलन काफी प्रभावशाली रहा और आर्यसमाज की युवक क्रांति का राजस्थान में भी सूत्रपात हो गया। इसी तरह से ५ दिसम्बर को फिर एक मास के बाद अलवर जिले के ग्राम बिजीरावास में एक विशाल सम्मेलन में श्रद्धेय स्वामी इन्द्रवेश जी के साथ जाने का मौका मिला जहा पर दस हजार के अपार जनसमूह को देखकर हमें काफी आशा एवं उत्साह प्राप्त हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में यह सम्मेलन विशाल आर्य शक्ति को जन्म देने वाला सिद्ध हुआ। और परिणाम स्वरुप आज गांव-गांव में आर्य समाज का बिगुल बज उठा है।

अर्द्धशताब्दी के अवसर पर

१९ दिसम्बर को जिस समय देहात में प्रचार करने के बाद स्वामी इन्द्रवेश जी आर्य समाज नरवाना में कार्यकर्ताओं की एक बैठक में पधारे तो उन्हें एक तार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के मन्त्री पं० मुरारीलाल जी का मिला। तार में लिखा था कि तुरन्त उनसे सम्पर्क किया जाए इसी कार्य की सूचना देने के लिए एक व्यक्ति रोहतक कार्यालय से भी स्वामी जी के पास नरवाना पहुचा। बैठक समाप्त करने के बाद श्री कलीराम जी के साथ जब हम सभी नरवाना के प्रतिष्ठित व्यक्ति श्री कृष्ण गोपाल के घर पर भोजन करने गए तो वहां पर पं० मुरारीलाल जी से टेलिफोन पर बात की और पंजाब सरकार की ओर से मनाये जा रहे स्वामी श्रद्धानन्द जी के पचासवें बलिदान दिवस के उपलक्ष्य में २२ दिसम्बर को दल-बल से स्वामी श्रद्धानन्द जी के जन्म स्थान तलवन पहुचने का कार्यक्रम तय हो गया। पहले वहां जाने का कोई कार्यक्रम नहीं था। परन्तु जब पंजाब के मुख्य मन्त्री

(शेष कवर ३ पर)

सम्पादकीय

चुनौती कौन स्वीकार करेगा ?

आज के इस अवसर पर जब कि हम नये वर्ष में पदार्पण कर रहे हैं। और परस्पर मिलते समय और पत्र व्यवहार के द्वारा भी नव वर्ष की बधाईयां तथा शुभ कामनाऐं दी जा रही हैं। मेरा एक प्रश्न है देश के उन सभी देश भक्त एवं विचारशील नौजवानों से जो एक नये समाज की रचना करना चाहते हैं। हमने स्वतन्त्रता प्राप्त की देश के हजारों ज्ञात-अज्ञात अमर शहीदों के पावन बलिदान से, जिन्होंने आजाद हिन्दुस्तान का एक सपना देखा था। वे चाहते थे कि ऐसे भारत का निर्माण किया जाए जिसमें आदमी और आदमी के बीच आर्थिक असमानता एवं गैर बराबरी की दीवार टूटे, समाज के हर व्यक्ति को भोजन आवास, शिक्षा, औषधी, न्याय एवं विचार अभिव्यक्ति का समान अधिकार प्राप्त हो, भ्रातृभाव बढ़े सामाजिक विषमता का गढ़ फूटे और हर इन्सान को उन्नति के बराबर हक दिए जा सके। एक स्वस्थ समाज की कल्पना करके ही इस देश को आजाद कराने के लिए फांसी के फन्दे चूमे गये, यातनाऐं सही गई और असहयोग एवं भारत छोड़ो जैसे जबर दस्त आन्दोलन करके लाखों ने जेलें काटीं। यह एक स्वर्णिम अक्षरों में लिखा हुआ इतिहास है। निश्चय ही वह युग स्मरणीय है। तथा इससे हमें प्रेरणा मिलती है और आगे भी मिलती रहेगी। परन्तु क्या अतीत के गीत गाकर और बड़ी २ शेखीयां मारकर के हम उनके सपनों को साकार कर पाऐंगे। आज हमारे सामने हर वर्ष चुनौतियों से भरा हुआ है। देश में जहां औधोगिक एवं तकनीकी क्षेत्र में बेहद प्रगति हुई है। बड़े २ वैज्ञानिक आयुधों की ईजाद हुयी है तथा निर्यात द्वारा विदेशी मुद्रा भी काफी कमाली है। वहीं पर आज भी समाज का अन्तिम मानव भुखमरी, गरीबी, बेकारी तथा शोषण की चक्की में बुरी तरह से पिस रहा है। शराब खोरी फैशन परस्ती एवं अश्लीलता की आँधी में देश की युवा पीढ़ी तेजी के साथ पतन की ओर जा रही है। धार्मिक अन्धविश्वास, पाखण्ड एवं सामाजिक अन्याय का शिकार होकर करोड़ों जनता भाग्यवाद के सहारे अन्तिम सांस ले रही है, दहेज प्रथा एवं दिखावे की घृणित बीमारी ने लाखों नौजवान लड़कियों के जीवन की आशाओं के दीपक बुझा दिए हैं। पूरे समाज की जड़ों को एक प्रकार से इन समस्याओं ने खोखला बना दिया है। आज हर व्यक्ति कुन्ठा एवं निराशा अनुभव कर रहा हैं। उसे कोई हल नहीं दीखता है। आज वह इस अन्धकार के वातावरण में उस किरण को ढूंढ रहा है जो उस को रोशनी दे सके और उसको एक राहत की सांस मिले। नये वर्ष के सन्दर्भ में ये कुछ मौलिक बातें है जिनके उपर आपको गम्भीरता से सोचना पड़ेगा। आज जरूरत है उन सिर फिरे नौजवानों को जो घरों से निकलें और इन चुनौतियों का सामना करने के लिए अपने जीवन को समाज के अन्तिम मानव के लिए समर्पित करें। शहरी चकाचोंध और विलासिता के जीवन को ठोकर मारकर तप त्याग और बलिदान का रास्ता चुनने की हिम्मत वाले नौजवानो की आज इस जर्ज रत समाज को जरुरत है। आज एक सामाजिक क्रान्ति की आवश्यकता है जो इस जीर्ण शीर्ण समाज को पुनर्जीवित कर सकें। सारा समाज इस समय परिवर्तन के दौर से गुजर रहा है। कौन है जो इस समय को पहचान सके आर्य समाज के कार्य कर्ताओं तुम्हीं इस महान संकल्प को कर सकते हो। अब नेताओं को प्रस्ताव पास करने में ही लगे रहने दो और लेने दो उनको मौज। उनके बस का यह कार्य नहीं है कि वे त्याग के रास्ते पर चल सके। अब आप ही एक रचनात्मक योजना बनाऐं और उसको लेकर गाव २ में फैल जाए गांव में बैठे पढ़े लिखे बेरोजगार नौजवानों को काम मिले इसके लिये गांव में प्रोढ़शिक्षा केन्द्र की स्थापना करो। कुछ नौजवान धोबी, बढ़ईगिरी, दस्तकारी तथा छोटे उद्योग लगाकर काम करें। कोई आदमी बेकार न रहे, अनपढ़ न रहे और खुशहाली प्राप्त करे इसके लिए हमें गांव के लोगों को प्रशिक्षित करना पड़ेगा और इसके लिए हजारों कार्यक्रताओं की जरूरत पड़ेगी। देश में लगभग सात लाख गांव हैं। बहुत बड़ा कार्य अभी बाकी है। हम मंजिल की ओर बढ तो रहे हैं। पर धीमी गति से, अतः आपकी आहूती पड़ने से यह यज्ञाग्नि और प्रज्जवलित हो उठेगी और इसकी सुगन्ध से सारा देश और फिर विश्व प्रसन्नता से खिल उठेगा। इस नव वर्ष के लिए हमें इस कार्यक्रम पर विचार कर अमल में लाने के लिए जुट जाना चाहिए।

जगवीर सिंह

शराब शैतान की ईजाद है।

★ महात्मा गांधी

जैसा कि कहा जाता है, शराब शैतान की ईजाद है। इस्लाम की किताबों में कहा गया है कि जब शैतान ने पुरुषों और स्त्रियों को ललचाना शुरु किया तो उसने उन्हें शराब दिखाई थी। मैंने कितने ही मामलों में यह देखा है कि शराब आदमियों से न सिर्फ उनका पैसा छीन लेती हैं बल्कि उनकी बुद्धि भी हर लेती हैं। उसके नशे में वे कुछ क्षणों के लिए उचित और अनुचित का, पुण्य और पाप का यहां तक कि माँ और पत्नि का भेद भूल जाते हैं। मैंने शराब के नशे में मस्त बेरिस्टरों को नालियों में लोटते और पुलिस के द्वारा घर ले जाये जाते देखा है। दो अवसरों पर मैंने जहाज के कप्तानों को शराब के नशे में ऐसा गर्क देखा है कि उनकी हालत जब तक उनका होश वापिस नहीं आया तब तक अपने जहाजो को नियंत्रण करने योग्य नहीं रह गयी थी। मांसाहार और शराब दोनों के बारे में उत्तम नियम तो यह है कि "हमें खाने, पीने और आमोद-प्रमोद के लिए नही जीना चाहिए, बल्कि इसलिए खाना और पीना चाहिए कि हमारे शरीर ईश्वर के मंदिर बन जाए और हम उनका उपयोग मनुष्य की सेवा कर सकें। औषधि के रूप में कभी-कभी शराब की आवश्यक्ता हो सकती है। और मुमकिन है कि जब आदमी मरने के करीब हो तो शराब की घूंट उसकी जिन्दगी को थोड़ा और बढ़ा दें। लेकिन शराब के पक्ष में इससे अधिक और कुछ नहीं कहा जा सकता।

आपको उपर से ठीक दिखाई देने वाली इस दलील के भुलावे में नही आना चाहिए कि शराब बन्दी जोर-जबरदस्ती के आधार पर नहीं होनी चाहिये और जो लोग शराब पीना चाहते हैं उन्हें उसकी सुविधाएं मिलनी ही चाहिए। राज्य का यह कोई कर्त्तव्य नही है कि वह अपनी प्रजा की कुटेवो के लिए अपनी ओर से सुविधाए दें। हम वेश्यालयों को अपना व्यापार चलाने के लिए अनुमति-पत्र नहीं देते इसी तरह हम चोरों की अपनी चोरी की प्रवृति पूरी करने की सुविधाए नहीं देते। मैं शराब को चोरी और व्यभिचार दोनो से ज्यादा निंद्य मानता हूँ। क्या वह अवसर इन दोनो बुराईयों की जननी नहो होती?

शराब की लत कुटेव तो है ही लेकिन कुटेव से ज्यादा वह एक बीमारी है। मैं ऐसे बीसियों आदमियो को जानता हूँ जो यदि छोड़ सके तो शराब पीना बड़ी खुशी से छोड़ दें। मैं ऐसे भी कुछ लोगों को जानता हूं जिन्होने यह कहा है कि शराब उनके सामने न लायी जाए। और जब उनके कहने के अनुसार शराब उनके सामने नहीं लायी गई तो मैंने उन्हें लाचार होकर शराब की चोरी करते हुए देखा है। लेकिन इसलिए मैं यह नहीं मानता कि शराब उनके पास से हटा लेना गलत था। बीमारों को अपने-आप से यानी अपनी अनुचित इच्छाओं से लड़ने में हमें मदद देनी ही चाहिए।

मजदूरों के साथ अपनी आत्मीयता के फलस्वरुप मैं जानता हूँ कि शराब की लत में फंसे हुए मजदूरों के घरों का शराब ने कैसा नाश किया है। मैं जानता हूँ कि शराब आसानी से न मिल सकती होती तो वे शराब को छूते भी नही। इसके सिवा हमारे पास हाल के ऐसे प्रमाण मौजूद है कि शराबियों से ही कई खुद शराब बन्दी की मांग कर रहे हैं। शराब की आदत मनुष्य की आत्मा का नाश कर देती है। और उसे धीरे-धीरे पशु बना डालती है, जो पत्नी, माँ और बहन में भेद करना भूल जाता है। शराब के नशे में यह भेद भूल जाने वाले लोगों को मैंने खुद देखा है।

शराब और अन्य मादक द्रव्यो से होने वाली हानि कई अशों में मलेरिया आदि बीमारियों से होने वाली हानि की अपेक्षा असंख्य गुनी ज्यादा है कारण बीमारियों से तो केवल शरीर को ही हानि पहुंचती है जब कि शराब आदि से शरीर और आत्मा दोनो का नाश हो जाता है। मैं भारत की गरीब होना पसन्द करुगाँ, लेकिन मैं यह बरदाश्त नही कर सकता कि हजारों लोग शराबी हो। और भारत में शराब बन्दी जारी करने के लिए लोगों को शिक्षा देना बन्द करना पड़े तो कोई परवाह नहीं, मैं वह कीमत चुका कर भी शराब खोरी को बन्द करुगां।

जो राष्ट्र एक शराब की आदत का शिकार है, कहना चाहिए कि उसके सामने विनाश मुह बाये खड़ा है इतिहास में बात के कितने ही प्रमाण हैं कि इस बुराई के कारण साम्राज्य मिट्टी में मिल गए हैं। प्राचीन भारतीय इतिहास में हम जानते हैं कि वह

पराक्रमी जाति जिसमें श्री कृष्ण ने जन्म लिया था, इसी बुराई के कारण नष्ट हो गई। रोम-साम्राज्य के पतन का एक सहायक कारण निसन्देह यह बुराई ही थी। यदि मुझे एक घन्टे के लिए भारत का डिक्टेटर बना दिया जाए तो मेरा पहला काम यह होगा कि शराब की दुकानों को बिना मुआवजा दिये बन्द करा दिया जाए और कारखानों के मालिकों को अपने मजदूरों के लिए मनुष्योचित परिस्थितियां निर्माण करने तथा उनके हित में ऐसे उपहार-ग्रह और मनोरंजन ग्रह खोलने के लिए मजबूर किया जाये, जहां मजदूरों को ताजगी देने वाले निर्दोष पेय और उतने ही निर्दोष मनोरंजन प्राप्त हो सके।

ताड़ी

एक पक्ष ऐसा है जो कि निश्चित (मर्यादित) मात्रा में शराब पीने का समर्थन करता है और कहता है कि इसमें फायदा होता है। मुझे इस दलील में कुछ सार नहीं लगता। पर घड़ी भर के लिए इस दलील को मान ले तो भी अनेक ऐसे लोगों के खातिर, जो कि मर्यादा में रह ही नहीं सकते, इस चीज का त्याग कर देना चाहिए। पारसी भाईयों ने ताड़ी का बहुत समर्थन किया है। वे कहते हैं कि ताड़ी में मादकता तो है ही मगर ताड़ी एक खुराक है और दूसरी खुराक को हज्म करने में मदद पहुँचाती है। इस दलील पर मैंने खुद विचार किया है और इस बारे में काफी पढ़ा भी है।

मगर ताड़ी पीने वाले बहुत से गरीबों की जो दुर्दशा मैंने देखी है, उस पर से मैं इस निर्णय पर पहुँचा हूं कि ताड़ी को मनुष्य की खुराक में स्थान देने की कोई आवश्कता नहीं है। ताड़ी में जो गुण माने गये हैं वे सब दूसरी खुराक में मिल जाते हैं। ताड़ी खजूरी के के रस से बनती है। खजूरी के शुद्ध रस में मादकता बिल्कुल नही होती। उसे नीरा कहते हैं। ताजी नीरा को ऐसी की ऐसी पीने से कई लोगों को साफ दस्त आता है। मैंने खुद नीरा पीकर देखी है। मुझ पर उसका ऐसा असर नहीं हुआ। परन्तु वह खुराक का काम तो अच्छी तरह से देती है। चाय इत्यादि के बदले सवेरे नीरा पी ले, तो उसे दूसरा कुछ पीने या खाने की आवश्यक्ता नहीं रहनी चाहिये नीरा को गन्ने की तरह पकाया जाएतो उससे बहुत अच्छा गुड़ बनता है खजूरी ताड़की एक किस्म हैं। हमारे देश में अनेक प्रकार के ताड़ कुदरती तौर पर उगते हैं। उन सब में नीरा निकाल सकती है। नीरा एक ऐसी चीज है जिसे निकालने की जगह पर ही तुरन्त पीना अच्छा है। जहां उसका तुरन्त उपयोग न हो सके वहां उसका गुड़ बना लिया जाए तो वह गन्ने के गुड़ की जगह ले सकता है। कई लोग मानते हैं कि ताड़-गुड़ गन्ने के गुड़ से अधिक गुणकारी है। उसमें मिठास कम होती है इसलिए वह गन्ने के गुड़ की अपेक्षा अधिक मात्रा में खाया जाता है। जिन ताड़ों के रस से ताड़ी बनाई है उन्हीं से गुड़ बनाया जाय तो हिन्दुस्तान में गुड़ और खांड की कभी तंगी पैदा न हो और गरीबों को सस्ते दाम में अच्छा गुड़ मिल सके। ताड़-गुड़ की मिश्री और शक्कर भी बनाई जा सकती है मगर गुड़ शक्कर या चीनी से बहुत अधिक गुणकारी है। गुड़ में जो क्षण होते हैं वे शक्कर या चीनी में नहीं होते। जैसे बिना क्षण की शक्कर को अधिक स्वाभावि स्थिति में खाई जाए, उतना ही अधिक पोषण उसमें से हमें मिलता है।

बीड़ी और सिगरेट पीना

शराब की तरह बीड़ी और सिगरेट के लिए भी मेरे मन में गहरा तिरस्कार है। बीड़ी और सिगरेट को मैं कुटेव ही मानता हूँ। वह मनुष्य की विवेक-बुद्धि को जड़ बना देती है और अक्सर शराब से ज्यादा बुरी सिद्ध होती है क्योंकि उसका परिणाम अप्रत्यक्ष रीति से होता है। यह आदत आदमी को एक बार लग जाए फिर उससे पिडं छुड़ाना बहुत कठिन होता है। इसके सिवा वह खर्चीला भी है। वह मूंह को दुर्गंधयुक्त बनाती है दांतो का रंग बिगाड़ती है और कभी-कभी कैसंर जैसी भयानक बीमारी को जन्म देती है। वह एक गन्दी आदत है।

एक दृष्टि से बीड़ी और सिगरेट पीना शराब से ज्यादा बड़ी बुराई है क्यों कि इस व्यसन का शिकार उससे होने वाली हानि को समय रहते अनुभव नही करना। वह जंगली पन का चिन्ह नही मानी जाती। बल्कि सभ्य लोग तो उसका गुणगान भी करते हैं। मैं इतना कहूँगा कि जो लोग छोड़ सकते हैं वे उसे छोड़ दे औ: दूसरो के लिए उदाहरण पेश करें।

तम्बाकू ने तो गजब नशा है। भाग्य से ही कोई इसके पंजे से छूटता है। ... टॉलस्टॉय ने इसे व्यसनों में सबसे खराब व्यसन माना है। हिन्दुस्तान में हम लोग तम्बाकू केवल पीते ही नही सूंघते भी हैं और जरदे के रुप में खाते भी हैं। ... आरोग्य का पुजारी दृढ़ निश्चय करके सब व्यसनो की गुलामी से छूट जाएगा बहुतों को इसमें से एक या दो या तीनो व्यसन लगे होते हैं। इसलिए उन्हें इससे घृणा नही होती।

स्वामी श्रद्धानन्द अर्द्ध शताब्दी

हरयाणा के जिम्मेदार आर्य कार्यकर्ताओं की बैठक

२ जनवरी को जीन्द में महत्वपूर्ण निर्णय

स्वामी इन्द्रवेश की अध्यक्षता में

विभिन्न जिलों एवं तहसीलों की ओर से धन संग्रह को घोषणा, अन्न भी देंगे, धन भी देंगे, घी भी देंगे, और दल बल से सम्मेलन में पधारेंगे । आर्यों का संकल्प ।

धन संग्रह के लिए विभिन्न टोलियों का गठन

स्वामी इन्द्रवेश हरयाणा के तूफानी दौरे करेंगे ।

स्वामी अग्निवेश की सम्मेलन में पधारने की आशा

भारत के रक्षा मन्त्री श्री बंसीलाल, हरयाणा के मुख्य मन्त्री बनारसीदास गुप्ता एवं उत्तर प्रदेश के मुख्य मन्त्री नारायणदत्त तिवारी भी सम्मेलन में पधारेंगे ।

लगभग २ लाख लोगों के भाग लेने की सम्भावना

जीन्द शहर के लोग स्वागत के लिए तैयार

१८ फरवरी को ऐतिहासिक शोभा यात्रा का आयोजन ।

२ जनवरी १९७७ रविवार को आर्य समाज मन्दिर जीन्द शहर में हरयाणा के सभी जिलों के प्रमुख कार्यकर्ताओं की महत्वपूर्ण बैठक स्वामी इन्द्रवेश कों अध्यक्षता में हुयी । जिसमें १८-१९-२० फरवरी को होने वाले स्वामी श्रद्धानन्द अर्द्धशताब्दी समारोह की विस्तृत योजना बनाई गई । बैठक में कई गुरुकुलों के आचार्य, सन्यासी, वकील एवं जिम्मेदार कार्यकर्ता उपस्थित थे जिन्होंने अपने जिम्मे काम सम्भालने की जोरदार घोषणाऐ की और स्वामी जी को विश्वास दिलाया कि वे पूरी शक्ति लगाऐंगे ।
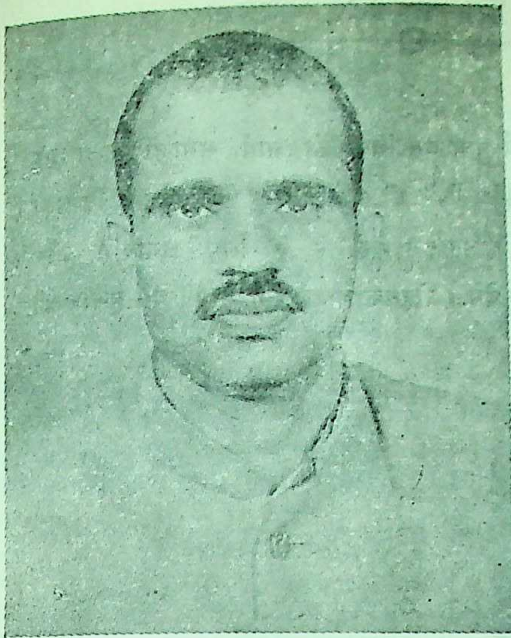
रामधारी शास्त्री संयोजक की अपील

अर्द्धशताब्दी सम्मेलन के संयोजक श्री रामधारी शास्त्री ने अपनी एक अपील में कहा कि पिछले पन्द्रह दिनों में जनता में जाने के बाद मैं यह विश्वास के साथ कह सकता हूं कि यह सम्मेलन काफी विशाल स्तर पर होगा। लोगों में इतना जोश है कि अभी से वे सम्मेलन की तैयारी में जुटे हुये हैं। आपने कहा कि सम्मेलन की विशालता को देखते हुये यह आवश्यक है कि धन संग्रह अधिक से अधिक किया जाए और हम सभी को अब दिन रात एक करके इस कार्य में जुट जाना चाहिए।

धर्मवीर आर्य कौथ की घोषणा

जिला हिसार के आर्य समाजों के प्रधान श्री धर्मवीर आर्य ने कहा कि हिसार जिला जीन्द से लगता है अतः जहाँ पचासों ट्रैक्टरों को लेकर दल बल से पधारेंगे वहाँ हम ३५ हजार रुपये की धन राशि इस सम्मेलन के लिए देंगे। बैठक में उपस्थित हिसार जिले के प्रतिष्ठित व्यक्तियों श्री राजमल जी गगनखेड़ी, बदलूराम बजरंग लाल मुकलान, राजेन्द्र सिंह सिसाय, जुगलाल मिरजपुर आदि ने भी इसका समर्थन किया।
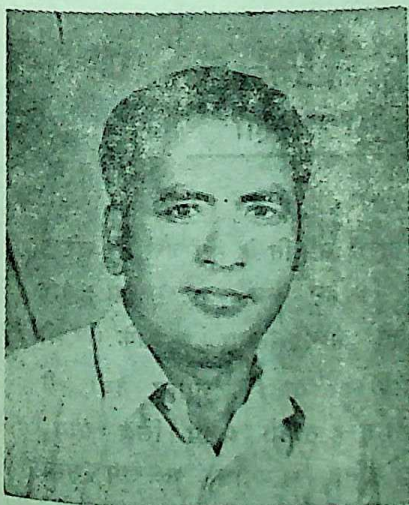
चौ० कलीराम जी नरवाना

आपने अपनी नरवाणा की बैठक में की गई घोषणा को दोहराते हुये कहा कि हम नरवाणा तहसील की ओर से ५० हजार रुपये की राशि स्वामी इन्द्रवेश को जीन्द में भेंट करेंगे। आपने यह भी स्पष्ट कहा कि स्वामी अग्निवेश को हमें हर हालत में जेल से इस सम्मेलन में बुलाना चहिए क्योंकि जनता उन्हीं के विचार सुनना चाहती है।

श्री बिशन सिंह एडवोकेट कैथल

कुरुक्षेत्र जिले के कर्मठ आर्य नेता एवं जिला की आर्य समाजों के प्रधान श्री बिशन सिंह एडवोकेट ने कुरुक्षेत्र जिले की ओर से यह आश्वासन दिलाया कि हम रोहतक शताब्दी से अधिक शक्ति इस सम्मेलन के लिए लगाएंगे और भारी संख्या में लोगों को लेकर पहुंचेंगे। रोहतक शताब्दी में आपने दस हजार की राशि भेंट की थी।
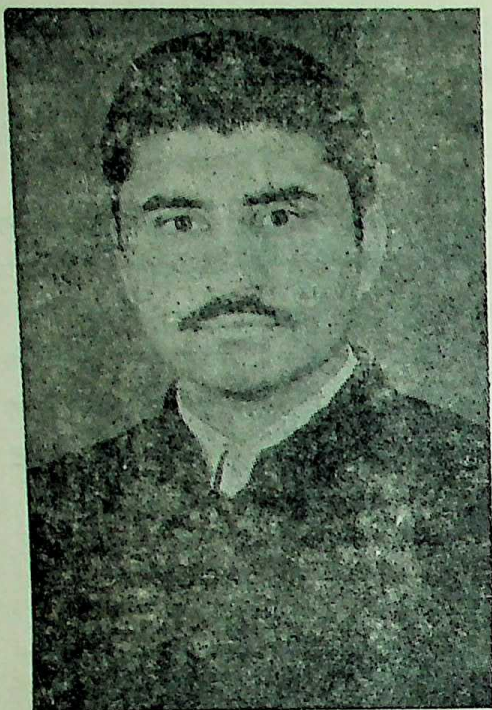
सुबेदार भरतसिंह व प्रधान जगतराम द्वारा पन्द्रह हजार का निश्चय

चौबीसी महम के प्रधान श्री जगतराम जी एवं कर्मठ कार्यकर्ता सूबेदार भरत सिंह जी ने बड़े विश्वास के साथ कहा कि जीन्द जिले का रोहतक के ऊपर ऋण है क्योंकि जीन्द से गत वर्ष रोहतक के शताब्दी समारोह में बहुत बड़ा सहयोग प्राप्त हुआ था। अतः हम दिन रात जुट कर के पन्द्रह हजार रुपये की राशि जीन्द के अर्द्ध शताब्दी सम्मेलन में स्वामी इन्द्रवेश को भेंट करेंगे।

जीन्द शहर से दस हजार की राशि देंगे सुरेन्द्र सिह एडवोकेट की घोषणा

युवा कार्यकर्ता एवं जीन्द शहर अर्द्ध शताब्दी समिति के संयोजक श्री सुरेन्द्र सिह एडवोकेट ने बड़े उत्साह के साथ यह कहा कि हम कम से कम दस हजार की राशि तो देंगे ही पर कोशिश करेंगे कि इसे और बढ़ाया जा सके। श्री सुरेन्द्र सिंह जी के पिता जी चौ० देशराज एडवोकेट माता शान्ति देवी जी भी सम्मेलन के लिए कार्य में जुटे हुये हैं। इसी तरह से श्री अभय सिंह आर्य, सौदागर चन्द आर्य, टेकचन्द, टिकायराम, प्रेमसिह, सत्यपाल, भलेराम, सत्य प्रकाश आदि कार्यकर्ता भी लग्न के साथ कार्य कर रहे हैं।

धन के साथ अन्न भी देंगे और घी भी देंगे

अर्द्ध शताब्दी समारोह के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश जी के इस सुझाव पर कि हम जहां गांव में धन संग्रह करें वहीं प्रति गांव एक दो बोरी गेहूँ भी इकट्ठी करनी चाहिए और साथ ही यज्ञ के लिए घी भी अभी से जुटा लेना चाहिए। कई प्रमुख व्यक्तियों ने जोश के साथ घोषणाएँ की वे अपने गाँव से अन्न भी भेजेंगे चौ० राजमल ग्राम गंगन खेड़ी त० हांसी ५ क्विंटल, मा० ओमसिंह आर्य ग्राम इक्कस ५ क्विंटल, चौ० तेलूराम ग्राम शाहपुर (जीन्द) ५ क्विंटल तथा पं० जुगतीराम ग्राम भम्भेवा की ओर से ५ क्विंटल गेहूं ऋषि लंगर हेतु देने की घोषणाएँ की गई। इस के साथ ही चौ० दीवान सिंह ग्राम अलेवा (जुलाना) ने सर्व प्रथम यह कहा कि वे दो किलो घी यज्ञ के लिए देगें। परन्तु स्वामी सत्यवेश जी ने कहा कि वे दस मन घी इकट्ठा कर के यज्ञ के लिए देगें। इस घोषणा से वैदिक धर्म की जय हो के नारे लगने लगे और सभी आर्य जन उत्साह से झूम उठे।

नारनौल में सम्मेलन की तैयारियां जोरों से

प्रसिद्ध कार्यकर्ता एवं आर्य समाज खरकड़ी मौहल्ला के प्रधान लाला ईशर दास आर्य ने अपना विशेष सन्देश देकर श्री भगवान दास जी को जीन्द की इस बैठक में भेजा। तथा उसने बताया कि महेन्द्रगढ और नारनौल में धन संग्रह का काम जारी है और दो स्पेशल बसें लेकर वहां से आर्य लोग पधारेंगे।

पलवल बल्लभगढ़ तथा गुड़गावां से हजारों लोग पहुंचेंगे

पलवल के लगनशील कार्यकर्ता श्री भजनलाल आर्य ने जीन्द की बैठक में बड़े गर्व के साथ आह्वान किया कि पलवल में गुड़गाँव जिले की बैठक बुलाकर हमने फैसला कर लिया है कि स्पैशल बसों तथा ट्रकों से जीन्द पहुँचेंगे। इसके लिए श्री लक्ष्मी चन्द आर्य के संयोजन में कार्य प्रारम्भ हो चुका है।

सोनीपत जिला कभी किसी से पीछे नहीं रहा

सोनीपत जिले के कई कर्मठ कार्यकर्ता बैठक में पधारे। श्री गंगाराम एडवोकेट, सुखदयाल आर्य, मा० प्रताप सिंह मा० रत्न सिंह आदि ने सलाह करके यह विश्वास दिलाया कि वे तन-मन धन से सम्मेलन को कामयाब करने के लिए शक्ति लगाएंगे। श्री सुखदयाल जी ने कहा कि हमारी जिला उपसभा के प्रधान डा० महासिंह जी तथा श्री सत्यपाल आर्य जी के निश्चयानुसार हमने अपना काम बांट लिया है गोहाना शहर से उन्होंने कहा हम एक हजार की राशि भेंट करेंगे।

पानीपत व करनाल की जिम्मेदारियां

जीन्द अर्द्ध शताब्दी सम्मेलन का जितना जोश करनाल जिले में है। शायद ही और कहीं हो। इस बात की घोषणा करते हुये प्रसिद्ध क्रान्तिकारी भजनोपदेशक स्वामी रुद्रवेश ने बताया कि वे करनाल के कई गाँव में प्रचार करके आये हैं। हर स्थान पर पूरा उत्साह का वातावरण है। पानीपत के श्री इन्द्रभान आर्य नें पानीपत की युद्ध भूमि बताते हुये यह घोषणा की अन्य जिलों की तरह हम अपनी जिम्मेदारी अवश्य पूरी करेंगे। श्री महेन्द्र सिंह ग्राम शाहपुर त० पानीपत से उत्साही नौजवान हैं, उन्होंने अपनी ओर से एक सौ रुपये दिया। स्वामी रुद्रवेश ने यह भी कहा कि वे शीघ्र ही करनाल में प्रमुख कार्यकर्ताओं वेदप्रकाश जी, बलवीर सिंह लाठर आदि से इसके लिए सम्पर्क करेंगे। वैसे स्वामी रुद्रवेश जी की हर स्थान से भारी मांग रहती है।

दीवारों पर नारे लिखने का अभियान जारी

श्री ब्र० सूर्यदेव तथा सुभाष चन्द आर्य दोनो नौजवान सर्दी की भी परवाह न करके दिन-रात दीवारों पर स्टैंन्सल लगाने का कार्य तेजी के साथ कर रहे हैं। उनके पास श्री सौदागर चन्द आर्य द्वारा निर्मित नये किस्म की साईकिल है जो अपने आप में प्रचार का एक साधन है। इस साईकिल में दो पैण्डल, दो सीट, चार पैंडल, तीन गिरारीं तथा दो चैंन हैं लम्बाई भी और साईकिलों की बजाय अधिक है लोग इस को देखने के लिए एकदम इकट्ठे हो जाते हैं। और उन लोगों में फिर सम्मेलन एवं आर्य समाज का प्रचार किया जाता है। इन नौजवानों ने पूरे जीन्द रोहतक, गोहाना. हांसी जाने वाली सभी सड़कों पर आने वाले गाँवों में स्टैन्सल द्वारा धूम मचा रखी है। यह अभियान सभी जगह चलना चाहिए।

गुरुकुलों एवं पाठशालाओं के विद्यार्थी दल बल सें भाग लेंगे

जहां इस सम्मेलन में आर्य जनता लाखों की संख्या में पधारेगी वहीं विभिन्न गुरुकुलो के ब्रह्मचारी एव पाठशालाओं के विद्यार्थी भी बढ-चढ़कर भाग लेंगे। गुरुकुल कुम्भाखेड़ा एवं कन्या गुरूकुल खरल के आचार्य स्वामी रत्नदेव जी गुरूकुल धीरणवास के आचार्य वानप्रस्थ चेतनदेव जी. गुरूकुल मटिण्डू एवं कन्या गुरूकुल खरखौदा, के आचार्य यशपाल जी, बैठक में उपस्थित थे। इसी तरह से गुरूकुल आर्य नगर (कुरड़ी) गुरूकुल गदपुरी, गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ, गुरूकुल कालवा, गुरूकुल सिंहपुरा, गुरूकुल लडरावरण, कन्या गुरूकुल पाढ़ा तथा गुरूकुल खेड़ाखुर्द के मान्य आचार्यो की ओर से कुछ की स्वीकृति तो पहुंच गई हैं तथा कुछ से अभी सम्पर्क किया जा रहा है। गुरूकुलों के साथ ही डी० ए० वी० हाई स्कूल भम्भेवा डी० ए० वी० कालेज हसनगढ़, आर्य पाठशाला जुलाना, आर्य पाठशाला पौली, आर्य पाठशाला चिड़ी, आर्यपाठशाला मदीनादागी आदि संस्थाओं के विद्यार्थी भी पधारेंगे, इस तरह से एक फौज सी युवकों एवं ब्रह्मचारियों की देखने को मिलेगी।

रोहतक शहर के कार्यकर्ता सक्रियः—

रोहतक आर्य समाज की गतिविधियों का केन्द्र है। जींद के अर्द्ध शताव्दी सम्मेलन के लिए सभी समाजों के आर्य बन्धु सक्रियता से जुट गये हैं। आर्य समाज काठमण्डी के प्रधान श्री प्रहलाद राय, पं० मौजीराम आर्य व श्री ओमप्रकाश जी बैठक में पधारे और उन्होंने संकल्प किया है कि अब सम्मेलन तक रोहतक शहर में हम जोरों से इसकी तैयारी करेंगे। आर्य समाज शिवाजी कालोनी के प्रमुख कार्यकर्ता एवं रोहतक समिति के मन्त्री श्री शान्ता कुमार ने घोषणा की है कि वे सात दिन की छुट्टी लेकर सम्मेलन के लिए जुटेंगे। स्वामी इन्द्रवेश जी ने भी व्यक्तिगत रूप से प्रसिद्ध समाज सेविका बहन लक्ष्मी देवी, श्री दयाकिशन आर्य, पूर्णसिंह आर्य, जयपाल आर्य अनांज मण्डी, देशराज आर्य आर्य वीरदल तथा अन्य सज्जनों को प्रेरणा की है। तथा कार्य प्रगति पर है। शहर की संयोजन समिति गठित कर दी है जिस के प्रधान के रूप में आर्य समाज माडल टाऊन के प्रधान डा० उमेश विग को चुना गया है। श्री जगदीश आर्य, मा० घनश्यामदास मित्रसैन आर्य, वेदप्रकाश आर्य, बहन विद्यावन्ती जी, बहन दयावन्ती जी, आदि भी समिति के सदस्य बनाए गये हैं।

(शेष पृष्ठ २१ पर)

जब मुखबिरों पर अदालत में गोलियाँ चली

● सुखदेवराज

फरवरी १९३० में एक ऐसी घटना घटित हुई जिससे क्रांतिकारियों के प्रति जनता की आस्था को जबरदस्त बल मिला ।

भगवानदास माहौर ने जलगाँव की अदालत में मुखबिर जयगोपाल पर गोली चला कर उसे जख्मी कर दिया और एक सब इन्स्पेक्टर नानकशाह पर गोली दाग दी जो उसके कंधे को छीलती हुई निकल गई ।

बात दरअसल में यों हुई कि जिन दिनों विरोधियों के घृणित प्रचार के फलस्वरूप भैया, भगवती भाई को शंका की दृष्टि से देखते थे वे उन दिनों बड़ी ही कठिन परिस्थितियों में से गुजर रहे थे । लाख प्रयत्न करने के बावजूद झांसी में उनके पैर जम नहीं पा रहे थे । अतः एक दिन भगवानदास माहौर और सदाशिव को बुलाकर भैया बोले, 'तुम दोनों पूना चले जाओ लेकिन जाना जरा सँभलकर, पुलिस आजकल बड़ी चौकस है ।'

पुलिस का सन्देह :—

पूना में राजगुरु का जमाया हुआ पार्टी का एक बहुत बड़ा अड्डा था। अतः भैया का आदेश पाकर सदाशिव और भगवानदास पूना के लिए रवाना हो गए । रास्ते में भुसावल स्टेशन पर गाड़ी बदलनी पड़ती थी । वहाँ एक्साइज पुलिस जरूरत से ज्यादा चौकन्नी रहती जरा सा संदेह हुआ नहीं कि पुलिस ने मुसाफिर का सामान खुलवाया नहीं ।

संयोगवश भगवानदास और सदाशिव पर भी पुलिस को संदेह हो गया । दोनों को रोक कर पुलिस वाले बोले, 'अपनी गठरी और बक्से की जाँच कराओ । '

सदाशिव ने बड़ी कोशिश की, पुलिस को बहुत समझाया-बुझाया लेकिन वह नहीं मानी और बक्स की तलाशी करानी ही पड़ी । तेजाब की बोतलें उसमें से निकल आई । देखते ही इन्सपेक्टर बोला, ' यह क्या है ?'

'ये कुछ कीमती दवाइयाँ हैं,' भगवानदास ने चाल चली । लेकिन पुलिस भी कच्ची गोलियाँ थोड़े ही खेली थी । तलाशी उसने जारी रखी । कारतूसों की बड़ी सी पुड़िया पुलिस के हाथ पड़ गई कपड़े में लिपटा हुआ एक पिस्तौल भी रखा हुआ था परन्तु उसे पहले ही हाथ की सफाई दिखाकर भगवानदास ने बाहर निकाल लिया था । दोनों साथी पुलिस को बहकाने का जितना भी प्रयत्न कर रहे थे पुलिस को उतना ही संदेह बढ़ता जा रहा था और साथ ही एक के बाद एक संकटपूर्ण सामग्री भी उनके सामान में से निकलती चली आ रही थी । स्थिति को बिगड़ती देखकर भगवानदास ने सदाशिव को संकेत किया-

'देखते क्या हो पिस्तौल उठाओ और भागो । '

लेकिन सदाशिव कुछ और ही समझा, उसने पूरे का पूरा बक्सा उठाया और भागना शुरु कर दिया । बस फिर क्या था दोनों साथी आगे-आगे और पुलिस पीछे-पीछे । सिपाहियों ने शोर मचा दिया, 'पकड़ो-पकड़ो ! बम बनाने वाले जा रहे हैं । '

भीड़ भी पुलिस के साथ दौड़ने लगी। कुछ दूर जाकर सदाशिव का पैर सिगनल के तार में फँस गया । साथी को संकट में देख कर भगवानदास ने हवाई फायर किया परन्तु भीड़ रुकी नहीं, सदाशिव को उठने का अवसर अवश्य मिल गया । मार्ग से अपरिचित दोनों साथी रास्ता बदल कर बस्ती की ओर भाग चले और पुलिस चौकी में ही जा पहुंचे जहाँ उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया ।

दोनों साथियों को बगैर कुछ किए पकड़े जाने का बेहद दुख था और इससे भी अधिक दुख इस बात का था कि दल की बहुमूल्य सामग्री पुलिस के हाथ पड़ गई है । उधर मुखबिरों के बयानों से भी यह मालूम हो गया था कि लाहौर-षड़यन्त्र में भी उनका हाथ है । इस बीच पुलिस उसे धूलिया जेल से एक बार लाहौर भी लाई । मुखबिरों पर भगवानदास और सदाशिव को बड़ा गुस्सा था । इसलिए एक दिन अपने एक विश्वस्त वकील श्री……से इन्होंने कहा, आप हमारा एक आवश्यक सदेश भैया तक पहुँचा दें तो बड़ी मेहरबानी होगी । '

'क्या ?' वकील साहब ने पुछा ।

'जयगोपाल और फणींद्र हमारे मुकदमे में दोबारा गवाही देने के लिए जलगाँव की अदालत में आवेंगे, अगर एक पिस्तौल किसी प्रकार हमें मिल जाय तो हम मुखबिरों का काम तमाम कर सकते हैं । '

भगवान और सदाशिव अक्टुबर १९२९ में गिरफ्तार हुए थे और उनका यह संदेश भैया को जनवरी १९३० में मिला । इस बीच भगवती भाई के प्रति जो मैल उनके मन में था वह धुल चुका था और वे दोनों एक दूसरे के कंधे से

कंधा मिलाकर काम करने लगे थे। अतः भैया ने भगवती भाई को बुलाकर कहा, तुम सम्पूर्ण स्थिति का अध्ययन, करके अपनी राय दो।'।

भगवती भाई झाँसी के वकील के रूप में भगवानदास और सदाशिव से मिले, सम्पूर्ण स्थिति को समझा लौटकर भैया को रिपोर्ट दे दी।

'काम बन सकता है :—

भैया की अनुमति मिलने पर फरवरी के आखरी दिनों में जब एक दिन सदाशिव के भाई शंकर राय जेल में सामान देने के लिए गये तो एक भरी हुई पिस्तौल भी कटोरदान में डालकर ले गए। इस बीच दोनों साथियों ने अपनी शिष्टता और सौजन्य की धाक पुलिस पर जमा ली थी, कभी-कभी सिपाहियों को गीत सुनाकर उनका मनोरंजन भी वे किया करते थे—इसलिए कोई संदेह पुलिस को उन पर नहीं हुआ और खाने में भरा हुआ पिस्तौल उन तक पहुँच गया।

गद्दार से बदला :-

२१ फरवरी १६३० को जलगाँव की सेशनकोर्ट में पेशी थी। दोनों मुखबिर भी गवाही के लिए आये हुए थे। दोपहर में शंकरराव दोनों साथियों के लिए खाना लेकर आये। दोनों की हथकड़ियाँ दाहिने हाथ से खोल कर खाना खाने के लिए बाएँ हाथ में डाल दी गई। जिस बरामदे में वे भोजन कर रहे थे उसी के पीछे एक छोलदारी में मेज-कुर्सियो पर बैठे दोनों मुखबिर खाना खा रहे थे। शंकरराव के संकेत पर दोनों साथियों ने परामर्श किया और भगवानदास एकदम उछल कर छोलदारी की ओर लपके। दरवाजे पर सबइन्सपेक्टर नानक शाह ने उन्हें रोका परन्तु भगवानदास की गोली उसके कंधे में लगी और वह चीखता हुआ जान बचा कर भागा।

गोली की आवाज सुनते ही फणींद्र मेज के नीचे दुबक गया लेकिन भगवानदास के छोलदारी में घुसते ही जयगोपाल उस पर झपटा। भगवानदास ने गोली दाग दी। जयगोपाल घायल होकर अदालत की ओर भागा। मुखबिरों के साथ खाना खा रहा पुलिस इन्चार्ज भी जान बचाने के लिए मेज के नीचे जा छिपा। भगवानदास ने झुक कर गोली चलानी चाही लेकिन पिस्तौल जाम हो गया।

भगवानदास अदालत के कमरे की ओर इसलिए भागे कि भुसावल में पकड़ी गई अपनी पिस्तौल उठा लें। उससे पूर्व सदाशिव भी इसी प्रयत्न में भागते हुए पकड़े गये, घायल नानकशाह अदालत के दरवाजे पर था। भगवानदास को इस ओर आते देख उसे ऐसा लगा जैसे साक्षात् उसका काल ही दौड़ा आ रहा हो। अतः प्राणों का मोह छोड़ कर वह भगवानदास पर टूट पड़ा। भगवानदास उसके भार से दब गया। कुछ अन्य सिपाही भी नानकशाह की मदद को आ गए। भगवानदास को पकड़ लिया गया।

साम्राज्य वादियो के दिल दहले :—

इस घटना का इतना अच्छा असर हुआ कि जो भीड़ वहाँ मुकदमे की कार्रवाई सुनने के लिए जमा थी उसकी सहानुभूति क्रांतिकारियों के प्रति उमड़ पड़ी और अदालत का सम्पूर्ण वातावरण 'इनकिलाब जिन्दाबाद' के नारों से गूँज उठा। अदालत की कार्यवाही स्थगित कर दी गई और मुखबिरों को सशस्त्र पुलिस के संरक्षण में एक बंद गाड़ी में बिठाकर एक सुरक्षित स्थान की ओर रवाना कर दिया गया। परन्तु भीड़ इतनी उत्तेजित थी कि उसने मुखबिरों की गाड़ी पर जम कर पथराव किया और 'गद्दार मुर्दाबाद' के गगनचुम्बी नारों से अँग्रेज साम्राज्यवादियों के दिल दहला दिए। बड़ी मुसीबत से पुलिस स्थिति को सँभाल पाई। १४ व्यक्ति गिरफ्तार कर लिए गए और जलगाँव में धारा १४४ लागू कर दी गई।

भारत मां के उन सपूतो को देखो :—

इस घटना की अनुकूल प्रतिक्रिया केवल जनता-जनार्दन पर ही नहीं हुई बल्कि भारतीय पुलिसवालों की सहानुभूति भी क्रांतिकारियों के प्रति जाग उठी। इसका ज्वलत उदाहरण यह है कि अधिकारियों ने भारतीय सिपाहियों को गिरफ्तार क्रातिकारियों की चौकसी करने के अयोग्य मान कर जब तत्काल उनकी जगह गोरे सार्जेण्ट तैनात कर दिये तो कुछ भारतीय सिपाही दंड पाने के ख्याल से घबराये। इस पर उनके शेष साथियों ने उन्हें फटकारा—

'डर के मारे प्राण क्यों दिये दे रहे हो···राजा रूठेगा सुहाग ले लेगा भाग (भाग्य) थोड़े ही लेगा···ज्यादा से ज्यादा ४-६ मास की सजा हो जायगी···माँ के इन सपूतों को तो देखो जिन्होंने देश और कौम के लिए सिर की बाजी लगा रखी है।

राजधर्म परिवा से अपील

राजधर्म से हमारे सुहृद पाठक विशेष स्नेह रखते हैं। यह जान कारी पाकर हमें विशेष बल मिलता है हम चाहते हैं कि राजधर्म अधिक से अधिक लोगों के पास पहुंचे। इसके लिए सभी राजधर्म के सदस्यों एवं हितैषियों को एक अभियान प्रारम्भ करना चाहिए। अतः आप से प्रार्थना है कि आप अपने अतिरिक्त पांच ग्राहक अवश्य बनाऐं।

—व्यवस्थापक

परमात्मा की उपासना क्यों और कैसे

● आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति

मनुष्य जाति के इतिहास की साक्षी

हमें अपने किए का फल अवश्य भोगना पड़ता है। वैदिक-धर्म के इस मन्तव्य की पुष्टि मनुष्य जाति के आज तक के इतिहास से भी होती है। मनुष्य के वैयक्तिक और जातीय जीवन के इतिहास पर दृष्टि डालने से हमें पता लगता है कि भगवान इस प्रकार हमारे मुख से अपनी स्तुति सुनकर खुशामद-पसन्द मनुष्य की भाँति खुश होकर हमारे दुःखों को कभी नहीं काटते। वर्तमान और पुराने इतिहास में हम देखते हैं कि भक्ति करने वाले पुरुषों के जीवन में उसी प्रकार भांति भांति के कष्ट और क्लेश आते रहते हैं। उन्हें भी बीमारी, मृत्यु, काम-काज में घाटा, लड़ाई-झगड़े, प्रिय परिजनों का वियोग, आग, अतिवृष्टि और अनावृष्टि, अकाल, मानापमान, मुकदमेबाजी आदि से मिलने वाले कष्ट और क्लेश उसी प्रकार प्राप्त होते रहते हैं। महाराज हरिश्चन्द्र और महाराज रामचन्द्र जी जैसे आस्तिक-शिरोमणि लोगों के जीवन में भी भांति-भांति के कष्ट आते रहे हैं।

इस प्रकार की भक्ति करने वाली, धार्मिक कही जाने जातियों के जीवन में भी हम देखते हैं कि उन्हें उसी प्रकार भाँति-भांति के कष्ट क्लेश होते रहते हैं जिस प्रकार दूसरी जातियों को होते रहते हैं। भारत वर्ष की हिन्दू-जाति बड़ी धर्मप्राण समझी जाति है। हिन्दू लोग बड़े भक्तिशील हैं। नगरों की गली-चली में हिन्दुओं के मन्दिर हैं और नगर नगर में उन के तीर्थ स्थान हैं। मन्दिरों के निर्माण और मन्दिरों में प्रतिष्ठापित देवताओं की मूर्तियों की सजावट पर हिन्दू लोग लाखों और करोड़ों रुपये खर्च कर देते हैं। हिन्दुओं के सोमनाथ के मन्दिर की वैभव, सम्पति और सजावट की कहानी तो इतिहास प्रसिद्ध है। उस मन्दिर के घण्टे दो सौ दो सौ मन की सोने की जजीरों पर लटका करते थे और उसकी मूर्ति पर करोड़ों रुपये की कीमत के मणि-माणिक्य जड़े हुए थे। आज भी हिन्दू लोग अपने मन्दिरों और उन में के देवताओं की मूर्तियों की सजावट पर बहुत भारी खर्च करते हैं और इन मन्दिरों में जाकर बड़ी श्रद्धा से अपने देवताओं के आगे नत-मस्तक होकर उनकी भक्ति और उपासना करते हैं पर यह सब कर के भी क्या हिन्दू-जाति जीवन में आने वाले भांति-भांति के कष्ट क्लेशों से बची रह सकी? और कष्टों की बात तो जाने दीजिए, पिछले लगभग हजार वर्ष हिन्दू जाति पराधीन रही है पहले मुसलमानों के और फिर अंग्रेजों के। इस पराधीनता की अवस्था में हिन्दू जाति को जो कष्ट भोगने पड़े हैं उन्हें इतिहास पढ़ने वाला प्रत्येक व्यक्ति जानता है। उन्हें यहा दोहराने की आवश्यकता नहीं है।

इसी प्रकार मुसलमानों को लीजिए। मुसलमानों की धर्म की कट्टरता तो हिन्दुओं से भी कहीं बढ़ी चढ़ी है। प्रत्येक मुसलमान बड़ी श्रद्धा और आस्था के साथ दिन में पांच बार नमाज पढ़ता है। पर क्या श्रद्धापूर्वक पढ़ी गई पांच बार की नमाज ने उनकी रक्षा कर ली? भारतवर्ष के मुसलमान लगभग दो सौ साल तक हिन्दुओं की भांति ही अंग्रेजों के गुलाम रहे हैं। इस गुलामी के कारण मुसलमानों को भी हिन्दुओं की तरह ही तरह तरह के कष्ट भोगने पड़े हैं। इतिहास में एक समय ऐसा रहा है जबकि धरती के प्रत्येक मुसलमानी देश पर योरुप के किसी-न-किसी राष्ट्र का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभुत्व रहा है। संसार-भर के मुसमानों की इस गुलामी और उससे मिलने वाले कष्टों से उनकी पाँच बार की नमाज रक्षा नहीं कर सकी।

यदि यह बात सत्य होती कि दुःख घटाने की नीयत से की हुई भगवान की स्तुति से प्रसन्न होकर भगवान भक्तों के दुःख काट दिया करते हैं तो इतिहास में हमें ऐसी भक्ति करने वाले व्यक्तियों और जातियों के जीवन में कभी दुःख नहीं दीखना चाहिए था।

परमात्मा की उलझन

यहां एक बात और देखने की है। यदि परमात्मा हमारी स्तुति से प्रसन्न होकर हमारे पक्ष में हो जाया करें और हमारे पक्ष की बातें करने लगे तो परमात्मा के लिए ऐसी उलझन पैदा हो जाए कि उस में से निकलने का उपाय स्वयं परमात्मा को भी न सूझे। न्यायालय में दो व्यक्तियों का अभियोग चल रहा है। दोनों ईश्वर-भक्त हैं। दोनो ईश्वर से अपने-अपने जीतने की प्रार्थना करते हैं। अब परमात्मा दोनों में से किस को विजय दिलाऐ? अंग्रेजों और जर्मनी के पिछले दोनों महायुद्धों में इन दोनों देशों और उन के साथी देशों की सरकारों ने अपनी प्रजाओं को हिदायत दी थी कि वे अपने पक्ष की विजय के लिए अपने मन्दिरों में परमात्मा से प्रार्थनायें

करें। दोनों पक्षों के देशों के मन्दिरों में ऐसी प्रार्थनाएं की गई थीं। अब परमात्मा क्या करता? वह अंग्रेजों के पक्ष को विजय दिलाता या जर्मनों के पक्ष को? स्पष्ट है कि परमात्मा हमारी इस प्रकार की प्रार्थनाओं से हमारे पक्ष में नहीं हो सकते। वे तो हमारे चरित्र और कर्म देखते हैं। और उनके अनुसार ही हमें फल देते हैं।

उपासना का सही प्रयोजन—प्रभु की संगति

तब क्या हमें भगवान की भक्ति और उपासना नहीं करनी चाहिए। क्या वैदिक-धर्म प्रभु भक्ति का उपदेश नहीं देता है? हमें भगवान की भक्ति और उपासना अवश्य करनी चाहिए। वैदिक-धर्म में प्रभु-भक्ति का बड़ा उपदेश दिया गया है। परमात्मा को मानने से हमें जो लाभ मिल सकता है वह भक्ति और उपासना के द्वारा ही मिल सकता है। पर उपासना का प्रयोजन वास्तव में क्या है, वह हमें लाभ किस प्रकार पहुँचाती है, इसे भली-भांति समझ लेना चाहिए।

उपासना के प्रयोजन पर स्वयं उपासना शब्द बड़ा सुन्दर प्रकाश डाल देता है। उपासना शब्द संस्कृत के "उप" और "आसना" इन दो शब्दों से मिलकर बना है। "उप" का अर्थ होता है समीप और "आसना" का अर्थ होता है बैठना - इस प्रकार उपासना का शब्दार्थ है—समीप बैठना, संगति में बैठना। उपासना के द्वारा हमें भगवान के समीप उन की संगति में बैठना होता है। संगति का जो लाभ है वही लाभ उपासना का है।

संगति का प्रभाव

संगति का प्रभाव कितना भारी होता है, वह जीवन में किस प्रकार आमूल-चूल परिवर्तन कर देने की शक्ति रखती है, इस सम्बन्ध में यहां विस्तार से कहने की आवश्यकता नहीं है। प्रत्येक व्यक्ति संगति के प्रभाव को जानता है।

किसी बालक और बालिका को सच्चरित्र और निर्दोष मित्रों और सखी-सहेलियों की संगति में रहने दीजिए वे सच्चरित्र और निर्दोष बने रहेंगे। उन्हें ही साल-छः महीने के लिए दुश्चरित्र और दुष्ट मित्रों और सखी-सहेलियों की संगति में रख दीजिए वे भी दुश्चरित्र और दुष्ट बन जायेंगे। आप किसी बालक या युवक में जो गुण पैदा करना चाहते हैं उसी गुण वाले लोगों की संगति में उसे रख दीजिए, वह उसी गुण का धनी बन जायेगा। और यदि कोई अवगुण उसमें डालना चाहते हैं तो उसी अवगुण वाले लोगों की संगति में उसे रहने दीजिए, वह उस अवगुण या बुराई का पण्डित बन कर आप के पास आयेगा।

हमारे घरों में होने पैदा वाले नन्हें-नन्हें बच्चे शुरु में कुछ भी नहीं जानते होते। उन्हें घर के तथा पास पड़ोस के लोगों की संगति प्राप्त होने लगती है। कुछ अरसे में इस संगति का प्रभाव होता है कि वे बच्चे हमारे जैसी भाषा बोलने लगते हैं और हमारे जैसी ही उनकी अच्छी और बुरी आदतें बन जाती हैं। घर और पास-पड़ौस के लोगों के अनन्तर उन्हें गली-मुहल्ले के लोगों की संगति मिलने लगती है, विद्यालय में अध्यापकों और सहपाठियों की संगति मिलने लगती है, मोटरों और रेलों में यात्रा करते समय दूर-दूर से लोगों की संगति मिलने है। पुस्तकों, समाचारपत्रों, खेल-तमाशो आदि के रूप में उन्हें और भी अनेक प्रकार की संगति मिलने लगती है। इस सारी संगति का परिणाम यह होता है कि जब बच्चे बड़े होकर घर की जिम्मेवारियों को सम्भालने वाले बनते हैं तो वे हूबहू अपने से पहली पीढ़ी वाले नागरिकों जैसे बने हुए होते हैं— उन्हें जैसी अच्छी और बुरी आदतों वाले, यह है संगति का प्रभाव!

हम सब में अच्छा बनने की इच्छा रहती है

प्रत्येक नर-नारी में अच्छा बनने की स्वाभाविक इच्छा है। हम सब को सच्चरित्रता और गुणों की उच्चता पसन्द आती हैं। हम सभी सच्चरित्र और गुणी बनना चाहते हैं। यदि हम में कोई बुराई होती है जिसे हम नहीं छोड़ पाते तो भी हम अन्दर ही अन्दर अपनी उस बुराई को नापसन्द करते हैं। हम अपनी उस बुराई को अपने बच्चों में नहीं आने देना चाहते। शराबी अपने बच्चों को शराबी बनाना नहीं चाहता। वेश्या, बस चले तो, अपनी कन्या को वेश्या नही बनने देगी। यही बात अन्य बुराईयों के सम्बन्ध में भी है। स्वभाव से हम अपना और अपनी सन्तानों का बुरा हो जाना पसन्न नहीं करते। हमारी स्वाभाविक इच्छा तो सब दोषों से रहित पूर्ण, निर्मल, निष्कलंक चरित्र वाले और सब गुणों का बनने की रहती है।

हमें संसार में पूर्ण श्रेष्ठ संगति नहीं मिल सकती

परन्तु हम कैसे बनेंगे यह तो इस बात पर निर्भर करता है कि हमें संगति कैसी प्राप्त होती हैं। हमें अपने दैनिक सांसारिक जीवन में तो ऐसे लोगों की संगति प्राप्त नहीं हो पाती जो सब दोषों से रहित पूर्ण पवित्र जीवन वाले हों। पहले तो ऐसे सब दोषों से रहित पूर्ण पवित्र जीवन वाले पुरुषों का संसार में प्रायः अभाव रहता है। फिर यदि कभी ऐसे महापुरुष उत्पन्न भी हो जाते हैं जिनके जीवन में दोषों का बहुत अधिक रहता है और जो पवित्रता की बहुत ऊंची कोटि में पहुंचे हुए होते हैं, तो उस अवस्था में कठिनाई यह रहती है कि ऐसे महापुरुषों की संगति सब को नहीं प्राप्त हो

(शेषांश पृष्ठ २८ पर)

परमात्मा की उपासना क्यों और कैसे

● आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति

मनुष्य जाति के इतिहास की साक्षी

हमें अपने किए का फल अवश्य भोगना पड़ता है। वैदिक-धर्म के इस मन्तव्य की पुष्टि मनुष्य जाति के आज तक के इतिहास से भी होती है। मनुष्य के वैयक्तिक और जातीय जीवन के इतिहास पर दृष्टि डालने से हमें पता लगता है कि भगवान इस प्रकार हमारे मुख से अपनी स्तुति सुनकर खुशा-मद-पसन्द मनुष्य की भाँति खुश होकर हमारे दुःखों को कभी नहीं काटते। वर्तमान और पुराने इतिहास में हम देखते हैं कि भक्ति करने वाले पुरुषों के जीवन में उसी प्रकार भांति भांति के कष्ट और क्लेश आते रहते हैं। उन्हें भी बीमारी, मृत्यु, काम-काज में घाटा, लड़ाई-झगड़े, प्रिय परिजनों का वियोग, आग, अतिवृष्टि और अनावृष्टि, अकाल, मानापमान, मुकदमे-बाजी आदि से मिलने वाले कष्ट और क्लेश उसी प्रकार प्राप्त होते रहते हैं। महाराज हरिश्चन्द्र और महाराज रामचन्द्र जी जैसे आस्तिक-शिरोमणि लोगों के जीवन में भी भांति-भांति के कष्ट आते रहे हैं।

इस प्रकार की भक्ति करने वाली, धार्मिक कही जाने जातियों के जीवन में भी हम देखते हैं कि उन्हें उसी प्रकार भाँति-भांति के कष्ट क्लेश होते रहते हैं जिस प्रकार दूसरी जातियों को होते रहते हैं। भारत वर्ष की हिन्दू-जाति बड़ी धर्मप्राण समझी जाति है। हिन्दू लोग बड़े भक्तिशील हैं। नगरों की गली-चली में हिन्दुओं के मन्दिर हैं और नगर नगर में उन के तीर्थ स्थान हैं। मन्दिरों के निर्माण और मन्दिरों में प्रतिष्ठापित देवताओं की मूर्तियों की सजावट पर हिन्दू लोग लाखों और करोड़ों रुपये खर्च कर देते हैं। हिन्दुओं के सोमनाथ के मन्दिर की वैभव, सम्पति और सजावट की कहानी तो इतिहास प्रसिद्ध है। उस मन्दिर के घण्टे दो सौ दो सौ मन की सोने की जजीरों पर लटका करते थे और उसकी मूर्ति पर करोड़ों रुपये की कीमत के मणि-माणिक्य जड़े हुए थे। आज भी हिन्दू लोग अपने मन्दिरों और उन में के देवताओं की मूर्तियों की सजावट पर बहुत भारी खर्च करते हैं और इन मन्दिरों में जाकर बड़ी श्रद्धा से अपने देवताओं के आगे नत-मस्तक होकर उनकी भक्ति और उपासना करते हैं पर यह सब कर के भी क्या हिन्दू-जाति जीवन में आने वाले भांति-भांति के कष्ट क्लेशों से बची रह सकी? और कष्टों की बात तो जाने दीजिए, पिछले लगभग हजार वर्ष हिन्दू जाति पराधीन रही है पहले मुसलमानों के और फिर अंग्रेजों के। इस पराधीनता की अवस्था में हिन्दू जाति को जो कष्ट भोगने पड़े हैं उन्हें इतिहास पढ़ने वाला प्रत्येक व्यक्ति जानता है। उन्हें यहां दोहराने की आवश्यकता नहीं है।

इसी प्रकार मुसलमानों को लीजिए। मुसलमानों की धर्म की कट्टरता तो हिन्दुओं से भी कहीं बढ़ी चढ़ी है। प्रत्येक मुसलमान बड़ी श्रद्धा और आस्था के साथ दिन में पांच बार नमाज पढ़ता है। पर क्या श्रद्धापूर्वक पढ़ी गई पांच बार की नमाज ने उनकी रक्षा कर ली? भारतवर्ष के मुसलमान लगभग दो सौ साल तक हिन्दुओं की भांति ही अंग्रेजों के गुलाम रहे हैं। इस गुलामी के कारण मुसलमानों को भी हिन्दुओं की तरह ही तरह तरह के कष्ट भोगने पड़े हैं। इतिहास में एक समय ऐसा रहा है जबकि धरती के प्रत्येक मुसलमानी देश पर योरुप के किसी-न-किसी राष्ट्र का प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष प्रभुत्व रहा है। संसार-भर के मुसमानों की इस गुलामी और उससे मिलने वाले कष्टों से उनकी पाँच बार की नमाज रक्षा नहीं कर सकी।

यदि यह बात सत्य होती कि दुःख घटाने की नीयत से की हुई भगवान की स्तुति से प्रसन्न होकर भगवान भक्तों के दुःख काट दिया करते हैं तो इतिहास में हमें ऐसी भक्ति करने वाले व्यक्तियों और जातियों के जीवन में कभी दुःख नहीं दीखना चाहिए था।

परमात्मा की उलझन

यहां एक बात और देखने की है। यदि परमात्मा हमारी स्तुति से प्रसन्न होकर हमारे पक्ष में हो जाया करें और हमारे पक्ष की बातें करने लगे तो परमात्मा के लिए ऐसी उलझन पैदा हो जाए कि उस में से निकलने का उपाय स्वयं परमात्मा को भी न सूझे। न्यायालय में दो व्यक्तियों का अभियोग चल रहा है। दोनों ईश्वर-भक्त हैं। दोनों ईश्वर से अपने-अपने जीतने की प्रार्थना करते हैं। अब परमात्मा दोनों में से किस को विजय दिलाए? अंग्रेजों और जर्मनी के पिछले दोनों महायुद्धों में इन दोनों देशों और उन के साथी देशों की सरकारों ने अपनी प्रजाओं को हिदायत दी थी कि वे अपने पक्ष की विजय के लिए अपने मन्दिरों में परमात्मा से प्रार्थनायें

करें । दोनों पक्षों के देशों के मन्दिरों में ऐसी प्रार्थनाए की गई थीं । अब परमात्मा क्या करता ? वह अंग्रेजों के पक्ष को विजय दिलाता या जर्मनों के पक्ष को ? स्पष्ट है कि परमात्मा हमारी इस प्रकार की प्रार्थनाओं से हमारे पक्ष में नहीं हो सकते । वे तो हमारे चरित्र और कर्म देखते हैं । और उनके अनुसार ही हमें फल देते हैं ।

उपासना का सही प्रयोजन—प्रभु की संगति

तब क्या हमें भगवान की भक्ति और उपासना नहीं करनी चाहिए । क्या वैदिक-धर्म प्रभु भक्ति का उपदेश नहीं देता है ? हमें भगवान की भक्ति और उपासना अवश्य करनी चाहिए । वैदिक-धर्म में प्रभु-भक्ति का बड़ा उपदेश दिया गया है । परमात्मा को मानने से हमें जो लाभ मिल सकता है वह भक्ति और उपासना के द्वारा ही मिल सकता है । पर उपासना का प्रयोजन वास्तव में क्या है, वह हमें लाभ किस प्रकार पहुँचाती है, इसे भली-भांति समझ लेना चाहिए ।

उपासना के प्रयोजन पर स्वयं उपासना शब्द बड़ा सुन्दर प्रकाश डाल देता है । उपासना शब्द संस्कृत के "उप" और "आसना" इन दो शब्दों से मिलकर बना है । "उप" का अर्थ होता है समीप और "आसना" का अर्थ होता है बैठना - इस प्रकार उपासना का शब्दार्थ है—समीप बैठना, संगति में बैठना । उपासना के द्वारा हमें भगवान के समीप उन की संगति में बैठना होता है । संगति का जो लाभ है वही लाभ उपासना का है ।

संगति का प्रभाव

संगति का प्रभाव कितना भारी होता है, वह जीवन में किस प्रकार आमूल-चूल परिवर्तन कर देने की शक्ति रखती है, इस सम्बन्ध में यहां विस्तार से कहने की आवश्यकता नहीं है । प्रत्येक व्यक्ति संगति के प्रभाव को जानता है ।

किसी बालक और बालिका को सच्चरित्र और निर्दोष मित्रों और सखी-सहेलियों की संगति में रहने दीजिए वे सच्चरित्र और निर्दोष बने रहेंगे । उन्हें ही साल-छः महीने के लिए दुश्चरित्र और दुष्ट मित्रों और सखी-सहेलियों की संगति में रख दीजिए वे भी दुश्चरित्र और दुष्ट बन जायेंगे। आप किसी बालक या युवक में जो गुण पैदा करना चाहते हैं उसी गुण वाले लोगों की संगति में उसे रख दीजिए, वह उसी गुण का धनी बन जायेगा । और यदि कोई अवगुण उसमें डालना चाहते हैं तो उसी अवगुण वाले लोगों की संगति में उसे रहने दीजिए, वह उस अवगुण या बुराई का पण्डित बन कर आप के पास आयेगा ।

हमारे घरों में होने पैदा वाले नन्हें-नन्हें बच्चे शुरु में कुछ भी नहीं जानते होते । उन्हें घर के तथा पास पड़ोस के लोगों की संगति प्राप्त होने लगती है । कुछ अरसे में इस संगति का प्रभाव होता है कि वे बच्चे हमारे जैसी भाषा बोलने लगते हैं और हमारे जैसी ही उनकी अच्छी और बुरी आदतें बन जाती हैं । घर और पास-पड़ोस के लोगों के अनन्तर उन्हें गली-मुहल्ले के लोगों की संगति मिलने लगती है, विद्यालय में अध्यापकों और सहपाठियों की सगति मिलने लगती है, मोटरों और रेलों में यात्रा करते समय दूर-दूर से लोगों की संगति मिलने है । पुस्तकों, समाचारपत्रों, खेल-तमाशो आदि के रूप में उन्हें और भी अनेक प्रकार की संगति मिलने लगती है। इस सारी संगति का परिणाम यह होता है कि जब बच्चे बड़े होकर घर की जिम्मेवारियों को सम्भालने वाले बनते हैं तो वे हूबहू अपने से पहली पीढ़ी वाले नागरिकों जैसे बने हुए होते हैं— उन्हें जैसी अच्छी और बुरी आदतों वाले , यह है सगति का प्रभाव !

हम सब में अच्छा बनने की इच्छा रहती है

प्रत्येक नर-नारी में अच्छा बनने की स्वाभाविक इच्छा है । हम सब को सच्चरित्रता और गुणों की उच्चता पसन्द आती हैं । हम सभी सच्चरित्र और गुणी बनना चाहते हैं । यदि हम में कोई बुराई होती है जिसे हम नहीं छोड़ पाते तो भी हम अन्दर ही अन्दर अपनी उस बुराई को नापसन्द करते हैं । हम अपनी उस बुराई को अपने बच्चों में नहीं आने देना चाहते । शराबी अपने बच्चों को शराबी बनाना नहीं चाहता। वेश्या, बस चले तो, अपनी कन्या को वेश्या नही बनने देगी। यही बात अन्य बुराईयों के सम्बन्ध में भी है। स्वभाव से हम अपना और अपनी सन्तानों का बुरा हो जाना पसन्न नहीं करते । हमारी स्वाभाविक इच्छा तो सब दोषों से रहित पूर्ण, निर्मल, निष्कलंक चरित्र वाले और सब गुणों का बनने की रहती है ।

हमें संसार में पूर्ण श्रेष्ठ संगति नहीं मिल सकती

परन्तु हम कैसे बनेंगे यह तो इस बात पर निर्भर करता है कि हमें संगति कैसी प्राप्त होती हैं । हमें अपनेदैनिक सांसारिक जीवन में तो ऐसे लोगों की संगति प्राप्त नहीं हो पाती जो सब दोषों से रहित पूर्ण पवित्र जीवन वाले हों। पहले तो ऐसे सब दोषों से रहित पूर्ण पवित्र जीवन वाले पुरुषों का संसार में प्रायः अभाव रहता है । फिर यदि कभी ऐसे महापुरुष उत्पन्न भी हो जाते हैं जिनके जीवन में दोषों का बहुत अधिक रहता है और जो पवित्रता की बहुत ऊंची कोटि में पहुंचे हुए होते हैं, तो उस अवस्था में कठिनाई यह रहती है कि ऐसे महापुरुषों की संगति सब को नहीं प्राप्त हो

(शेषांश पृष्ठ २८ पर)

संयम द्वारा परिवार नियोजन

● प्रो० सी० पिंगले

हमारे देश में एक समय वह भी था जब देश की जनसंख्या बहुत ही कम थी। देश वन और वनस्पति की सम्पत्ति से सम्पन्न था। कृषि के लिए मनचाही भूमि का एक विशाल क्षेत्र उपलब्ध था। किंतु आज का दृश्य ठीक विपरीत है। जनसंख्या चक्रवृद्धि दर से बढ़ती जा रही है और परिणाम यह हो गया है कि इस कृषि प्रधान देश में आज कृषि की भूमि हर व्यक्ति के हिस्से में इतनी कम पड़ती है कि उस पर उत्पन्न होने वाले अन्न से उस व्यक्ति का निर्वाह भी संभव नहीं होता। सारांश यह है कि दोनों दृश्य परस्पर विरोधी हैं। एक की दिशा पूर्व है तो दूसरे की पश्चिम। जनसंख्या की दृष्टि से पचास वर्ष पूर्व की और आज की परिस्थिति में तो जमीन आसमान का अंतर स्पष्ट ही परिलक्षित है।

यदि जनसंख्या इसी क्रम से बढ़ती गई और उस पर नियंत्रण नहीं किया गया तो निकट भविष्य में ही दरिद्रता, स्वास्थ्यहीनता, बेरोजगारी, बेकारी, आवास-निवास की समस्या आदि भाँति-भाँति के भीषण संकट या जटिल समस्याएं भी देश के समक्ष सुरसा जैसे मुंह बाये आ खड़ी होंगी जिन्हें देश सुलझा न पाएगा।

प्राचीन काल में विवाह एक यज्ञ ही माना जाता था जिसमें पति-पत्नी का गठबंधन हो। दोनों यज्ञदेवता के समक्ष यह संकल्प भी लेते थे कि यह विवाह उनके विषयवासना की तृप्ति-सतुष्टि का विषय न हो, वे सतर्कता सजगता और सावधानी बरतेंगे और वे संयम नियम का ही जीवन बिताएंगे एव उनका जीवन अपने लिए नहीं, वरन औरों के लिए ही रहेगा। परहितरत जीवन रहेगा। अपने और विश्व कल्याण के पावन यज्ञ में ही वे जुटे रहेंगे। ऐसे संयम-नियम के सुव्यवस्थित जीवन में संतानोत्पत्ति भी काबू में ही रहती थी और संतान का पालन-पोषण उल्लास व उत्साह से ही होता था जिससे पारिवारिक जीवन हर्षोल्लासपूर्ण था।

आज तो विवाह एक यज्ञ न होकर केवल विषयवासना की तृप्ति व सतुष्टि का ही साधन हो बैठा है। विवाह होते देर नहीं; पूरा वर्ष भी बीत नहीं पाता कि बच्चे पैदा होना आरंभ हो जाता है और एक बार प्रारंभ हुआ कि तांता ही बध जाता है। इधर बच्चों की फौज तो तैयार हो जाती, है, किंतु उनके पालन-पोषण के कोई साधन जुटे नहीं रहते। उनकी कोई व्यवस्था ही नहीं रहती, चिंता ही नहीं होती। परिणाम यही होता है कि नन्हें-मुन्ने अन्नाभाव से, वस्त्राभाव से और सभी जीवन तत्वों के अभावों से अस्थि-पंजर कंकाल देखे जाते हैं। तब फिर उनके दीर्घजीवी होने की आशा कैसे की जाए? ऐसी दुरवस्था में बच्चों पर समुचित ध्यान देना संभव नहीं हो पाता जिससे बच्चे बेचारे जंगली घास-फूस की तरह बढ़ते, अन्नसंकट, स्वास्थ्य-संकट आदि भांति-भांति के संकटों की चक्कियों में पिसते और दिन काटते हैं और मृत्यु-मुख में जा समाते हैं।

आज की इस दुर्दशा को देखकर 'देर आया दुरुस्त आया, के अनुसार अब तो देश को जाग्रत होना चाहिए। यह कुम्भकर्ण की नींद कब तक? विषय पर गंभीर चिंतन-मनन करना चाहिए और समस्या का अविलम्ब हल भी करना चाहिए। अन्यथा, स्थिति सुधर न पायेगी। विस्फोट की ही स्थिति आ खड़ी होगी।

वस्तुतः मनुष्य काम उतना ही हाथ में ले जिसे वह संतोषजनक रूप से पूरा कर सके, जिसका निर्वहन कर सके। संतानोत्पत्ति के विषय का यह मूलभूत सिद्धान्त सूत्र रहे। यह सदैव स्मरण रहे कि संतानोत्पत्ति क्रीड़ा-विनोद व मनोरंजन मात्र नहीं, वरन् उसके पीछे एक बहुत बड़ा दायित्व भी जुड़ा है। ऐसी स्थिति में पहले तो यही देखना होगा कि उस दायित्व का निर्वाह किस तरह होगा। दायित्व पूरा होने का विचार व तैयारी पहले करनी होगी। तभी संतानोत्पत्ति के मार्ग पर समय रखना होगा। यही जीवन-नीति आज की पहली आवश्यकता है।

दिखाने के लिए तो हम पत्नी-प्रेम का नाटक रचते हैं, किंतु यथार्थ में प्रेम का यह केवल प्रदर्शन मात्र है। अन्तर में तो विषयवसना की संतुष्टि का ही आधिपत्य रहता है। ऊपर-ऊपर तो हम पत्नी से दिखावटी प्यार करते हैं, किंतु व्यवहार कसाई का करते हैं। प्रजनन के बोझ से कराहती पत्नी मृत्युमार्ग पर अग्रसर हो जाती है। उसकी सुरक्षा के दायित्व की चादर को तो हम फूंक ही देते हैं। सुरक्षा की यथार्थ चिंता हो तो ऐसा कसाई का व्यवहार क्यों करते?

शेषांश पृष्ठ १६ पर)

राष्ट्रभाषा सम्मेलन या अंग्रेजी हटाओ सम्मेलन ?

● डा० वेदप्रताप वैदिक

भाषा के प्रश्न पर आर्य समाज को नये सिरे से विचार करने की जरूरत है। हम यह देख रहे हैं कि आर्य समाज के हर बड़े उत्सव पर राष्ट्रभाषा सम्मेलन का आयोजन किया जाता है तथा आर्य समाज के अलावा अन्य कई संस्थाएं भी हिंदी या राष्ट्रभाषा के प्रचार के लिए कटिबद्ध हैं तथापि स्वतन्त्र भारत में हिन्दी का प्रभाव दिनोदिन गिरता जा रहा है। इसका क्या कारण है ? इस कारण को यदि नहीं खोजा गया तो अगले हजार बरस तक राष्ट्रभाषा सम्मेलन करने के उपरान्त भी हिंदी अपने स्थान से एक अंगुल आगे नहीं बढ़ेगी।

वास्तव में राष्ट्रभाषा का प्रचारक यह नहीं जानता कि उसका असली दुश्मन कौन है ? यह है--अंग्रेजी ! जब तक अंग्रेजी का दबदबा खत्म नहीं किया जायेगा, हिंदी कभी आगे नहीं बढ़ेगी। हम लोग हिंदी चलाने की बात करते हैं लेकिन अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम की पाठशालाओं में भेजना पड़ता है, नौकरी प्राप्त करने के लिए अंग्रेजी का इस्तेमाल करना पड़ता है और देश में चलनेवाला सारा ऊंचा काम-काज अंग्रेजी में होता है। अब आप हिन्दी की जय बोलते रहिये लेकिन हिंदी जहां है, वहीं रहेगी।

आज हिंदी को चलाने के बजाय अंग्रेजी को हटाने की जरूरत है। अंग्रेजी हटाओ का मतलब यह कतई नहीं है कि हमें अंग्रेजी से नफरत है। किसी भी भाषा या साहित्य से कोई मूर्ख ही नफरत कर सकता है। यदि कोई स्वेच्छा से अंग्रेजी या दुनिया की अन्य भाषाएं पढ़ना चाहे, उनके माध्यम से ज्ञान का दोहन करना चाहे तो हमें प्रसन्नता ही होगी। लेकिन आपत्ति तब उपस्थित होती है जब ज्ञान के एक साधन को रुतबे का, विशेषाधिकार का, शोषण का हथियार बना लिया जाए।

अँग्रेजी हटाओ आन्दोलन अंग्रेजी का नहीं, बल्कि उसके रुतबे का, उसकी शोषण की प्रवृत्ति का विरोधी है। इसलिए हमने कहा 'अंग्रेजी हटाओ' हमने यह कभी नहीं कहा कि 'अंग्रेजी मिटाओ'। अब सवाल यह है कि अंग्रेजी कहा से हटे ? न्यायालय से हटे, राजकाम से हटे, कारखानों से हटे, फौज से हटे, अस्पताल से हटे, पाठशाला प्रयोगशाला से हटे, घर-द्वार-बाजार से हटे। हट कर कहां जाय ? पुस्तकालयों में जाए, विदेशी भाषा-शिक्षण संस्थाओं में जाए। वहां भी सारी जगह घेरकर पसरे नहीं। दुनिया की अन्य भाषाओं के लिए भी थोड़ी-थोड़ी जगह खाली करे। हटना उसे सभी जगह से पड़ेगा। कहीं से थोड़ा, कहीं से ज्यादा।

लुधियाना के कुछ आर्य समाजी बंधुओं ने मुझ से कहा कि 'अंग्रेजी हटाओ' में निषेधात्मकता की गंध आती है। यह 'निगेटिव' नारा है मैंने पूछा, अहिंसा क्या है, अस्तेय क्या है, अपरिग्रह क्या हैं, ब्रह्मचर्य क्या है ? क्या ये सब निषेध के सिद्धांत नहीं हैं ? आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने पाखंड-खंडिनी पताका फहराकर बुराईयों को टक्कर मारकर गिराने का जो साहस पैदा किया, क्या वह निषेधात्मक नहीं है ? सत्यार्थप्रकाश के आखिरी चार समुल्लासों में क्या स्वामी जी ने पाखंडों को बेरहमी से नहीं ढहाया है ? महात्मा गांधी का 'असहयोग' क्या था ? निषेध से डरिए मत सृष्टि के नियम को समझिए। बिना ध्वंस के निर्माण नहीं हो सकता। छोटा-सा मकान भी बनाना हो तो नींव खोदनी पड़ती है। जो खुदाई के डर से नींव नहीं डालता, उसके मकान का अंजाम क्या होगा ? वहीं होगा जो पिछले पच्चीस वर्षों में हिंदी को हुआ। हिंदी वाले लोग अंग्रेजी को हटाये बिना हिंदी का लाना चाहते थे। नतीजा क्या हुआ ? अंग्रेजी अपने स्थान पर जमी रही और हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में एक नकली लड़ाई चल पड़ी। अंग्रेजी हटाओं आंदोलन इस नकली लड़ाई का विरोध करेगा। वह समस्त भारतीय भाषाओं को अंग्रेजी के वर्चस्व के विरुद्ध एक सशक्त चट्टान की तरह खड़ा करना चाहता है। जब तक अंग्रेजी नहीं हटती, भारतीय भाषाएं एक नहीं होंगी।

अंग्रेजी हटाओं आंदोलन और हिंदी चलाओं आंदोलन में भी बुनियादी फर्क है। हिंदी आंदोलन वाले लोग चाहते हैं कि अंग्रेजीं का स्थान हिंदी ले ले ! उन्हें इस बात की चिंता नहीं है कि अंग्रेजी की तरह हिंदी भी शोषण का, विशेषाधिकार का और रुतबे का हथियार बन सकती है अगर हिंदी के आने का

नतीजा यह हो कि अन्य भाषा वालों के लिए नौकरियों का, अवसरों का, आगे बढ़ने का मार्ग दुर्गम हो जाए तो फिर हिन्दी को लाने से फायदा क्या हुआ? वह भी अंग्रेजी की तरह देश में गैर-बराबरी को बढ़ाएगी। फर्क इतना होगा कि आज अंग्रेजी के कारण जहां दो प्रतिशत लोग सारे देश को रौंद रहे है, वहां ३० प्रतिशत लोग बाकी ७० प्रतिशत लोगों के साथ अन्याय करेंगे। आर्य समाजियों को हर अन्याय के विरुद्ध लड़ना चाहिए चाहे वह छोटा हो या बड़ा। मैं नहीं चाहता कि मेरी मातृभाषा वहा घिनौना कार्य करे जो कि अंग्रेजी कर रही है। इस लिए हम सारे देश में हिंदी को थोपने के विरोधी हैं।

डा० वेदप्रताप वैदिक

इसका मतलब यह नहीं है कि हमने सारे देश को जोड़ने वाली भाषा के सवाल पर विचार नही किया है। सारे देश को जोड़ने वाली भाषा कोई भी भारतीय भाषा हो सकती है लेकिन इस काम के लिए हिंन्दी सबसे अधिक अनुकूल भाषा होगी क्योंकि किसीभी एकभाषा की तुलना में इसके बोलने वाले सबसे ज्यादा हैं, इसकी लिपि–देवनागरी--सरल और वैज्ञानिक है तथा यह भाषा भारत के सबसे बड़े इलाके में बोली जाती है। जहां तक हिंन्दी देश की सारी भाषाओं को जोड़ती है, वहां तक हिंन्दी को लाने में हमें कोई एतराज नहीं है। लेकिन हिंन्दी अन्य भाषाओं का हक मारे, यह उचित नहीं है। हर प्रदेश में, उस प्रदेश की भाषा पूरी तरह से चलनी चाहिए। केन्द्र में भी प्रदेशों से आने वाले लोगों को अपनी-२ भाषा के जरिए नौकरी पाने संसद में बोलने न्याय पाने और शिक्षा पाने का पूरा अधिकार होना चाहिए। उन्नति के अवसरों में हिन्दी को आड़े नहीं आना चाहिए। हिन्दी का काम केवल विभिन्न भाषा-भाषियों के बीच संपर्क स्थापित करना है। केंद्रीय सरकार और केन्द्रीय संस्थाओं का अपने तईं सारा काम काज केवल हिन्दी में चल सकता है, चलना चाहिए। लेकिन प्रदेशों से उनकी भाषा में आने वाले पत्रों को केन्द्र के द्वारा न केवल स्वीकार किया जाना चाहिए बल्कि उन्ही की भाषा में उन पत्रों का जवाब दिया जाना चाहिए। किसी व्यक्ति, संस्था या प्रादेशिक सरकार को इस लिए घाटे में नहीं रखा जाना चाहिए कि वह हिन्दी में प्रवीण नहीं है।

इस कार्य को कम खर्चीला और सुगम बनाने के लिए यह आवश्यक है कि हर सरकारी विभाग के साथ कुछ अनुवादक संलग्न कर दिये जायं। ऐसे अनुवादक भी हो सकते हैं, जो कि तीन-तीन चार-चार पांच-पांच भाषाएं एक साथ जानते हों। इन अनुवादकों पर होने वाला खर्च अनिवार्य अंग्रेजी को चलाए रखने के लिए होने वाले खर्च से निश्चित रूप से कम होगा।

सोवियत संघ और यूरोप के उन देशों में जहां अनेक भाषाएं बोली जाती हैं वहां ऐसा ही किया जाता है, कोई भी देश अनुवाद के खर्चे के डर से किसी विदेशी भाषा को अपने आप पर नहीं लादता। देशी भाषाओं की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि एक होने के कारण उनमें परस्पर अनुवाद करना इतना सरल होता है कि कुछ ही वर्षों में बहुत से लोग अपने आप कई भाषाएं सीख जाते हैं और फिर अनुवादकों की जरूरत नहीं रहती, जैसा की स्विटजरलैंड और यूगोस्लाविया में हुआ है।

इस बात पर यह आपत्ति की जा सकती है कि सरकार अपना समय राजकाज में लगाये या वह इन भाषाओं के चक्कर में पड़ जाए। मैं पूछता हूँ कि अगर जनता से सीधे उनकी जुबान में उनके दुःख दर्द नहीं सुनोगे और सीधे उसकी जुबान में उसकी समस्याओं का समधान नहीं दोगे तो अच्छा और सच्चा राज-काज कैसे चलाओगे? नकली समस्याओं और उनके नकली समाधानों का राज-काज तो इस देश में पिछले पच्चीस साल से चल ही रहा है। अगर आप देश के एक औसत आदमी को यह विश्वास दिलाएंगे कि बड़े से बड़े स्तर पर भी उसकी भाषा को नीचा नहीं देखना पड़ेगा तो काम चलाऊ हिंन्दी सीखने में उसे जरा भी एतराज नहीं होगा।

आज दक्षिण का आदमी हिन्दी का विरोध क्यों करता है ? सिर्फ इस लिए कि उसे डर है कि उसकी नौकरियां चली जाऐंगी। वह अवसरों की दौड़ में पिछड़ जाऐगा। हिन्दी आन्दोलन ने 'हिन्दी-हिन्दी' चिल्लाकर इस डर को बढ़ाया है इस डर को पुख्ता तौर पर खत्म किया जाना चाहिए। यह डर तभी खत्म होगा जब की अंग्रेजी हटेगी। अंग्रेजी हटेगी तो उत्तर भारत के लोग दक्षिण की भाषाऐं सिखेंगे। अंग्रेजी रहती है तो उत्तर भारत के लोग सोचते हैं कि तमिल, तेलुगु, कन्नड़, मलयालम सीखकर क्या करेंगे ? अंग्रेजी में ही बात करलेंगे। इसी प्रकार दक्षिण वाले भी सोचते हैं। कि जब अंग्रेजी में ही काम चल जाता है तो हिन्दी क्यों सीखें ? इस प्रकार अंग्रेजी की कृपा से उत्तर-दक्षिण के बीच सच्चा मेल-मिलाप ही नहीं होता। अंग्रेजी के जरिऐ जो नकली मेल-मिलाप होता है वह भी कितने लोगो का ? २ प्रतिशत लोगों का भी नहीं। इन्हीं दो प्रतिशत लोगों का काम चल रहा है। बाकी ९८ प्रतिशत लोगों का काम ठप्प है उनके जीवन में अँधेरा ही अँधेरा है। अँधेरे वाले लोगों में दक्षिण और उत्तर की सभी साधारण जनता शामिल है अंग्रेजी हटाओ आंदोलन देश के करोड़ो लोगों को अँधेरे से उजाले की ओर ले जाऐगा। वह उत्तर और दक्षिण में, पूरब और पश्चिम में कोई भेद नहीं करेगा। उसके लिए सारे देश की गरीब; ग्रामीण, दलित, पीड़ित, विपन्न जनता एक है। वह इस सामान्य जनता की भाषाओं को आगे लायेगा और एक छोटे से छोटे आदमी के दिल में भी यह अहसास पैदा करेगा कि वह अपनी भाषा के जरिये बड़े से बड़े पद पर पहुँच सकता है। इसी आधार पर मैं कहता हूँ कि अंग्रेजी हटाओ मनुष्य मात्र की मुक्ति का आन्दोलन है।

इस संक्षिप्त लेख में मैने अंग्रेजी हटाओ आदोलन पर मोटे तौर से विचार किया है। (इस विषय पर मेरे विचार विस्तार पूर्वक जानने के लिए पढ़िये—'अंग्रेजी हटाओ : क्यों और कैसे ? पुस्तक) आर्य समाज अंग्रेजी हटाओ आंदोलन को सारे देश में फैलाने का संकल्प करें। शुरूशुरू में चार-पांच बड़े-२ काम किये जायें।

१. संघ तथा प्रादेशिक लोक--सेवा आयोगों की परीक्षा से अंग्रेजी की अनिवार्यता समाप्त करवायें।

२. अंग्रेजी माध्यम वाले स्कूलों को बंद करवायें।

३. स्कूलों और कालेजों में अंग्रेजी की अनिवार्य पढ़ाई खत्म करवायें।

४. न्यायालयों और विधान सभाओं में अंग्रेजी के प्रयोग को अवैधानिक घोषित करायें।

५. बाजारों घरों पर लगे अंग्रेजी नामपटों को पोते।

इन सब कार्यों को करने के लिए आर्य समाज को पत्र व्यवहार, वार्ता, प्रचार, प्रदर्शन, सत्या ग्रह एवं अन्य अहिंसक कार्यों के लिए तैयार होना पड़ेगा। यदि आर्य समाज इस महत् कार्य का बोझ अपने कंधों पर उठा ले तो एक बार फिर लाखों नौजवान उसके आक्रोड़ में आ जाऐंगे।

(पृष्ठ १३ का शेषांश)

दुर्बल माताएं कैसे हृष्टपुष्ट अथवा सद्गुणी संतानें पैदा करें ?

सारांश यही है कि आज की परिस्थिति में संतानवरदान तो नहीं, अभिशाप ही सिद्ध होती है। अतएवं देश के लिए यही कल्याणकारी व उपादेय है कि परिवार नियोजन के इस महत्वपूर्ण विषय पर देश गंभीर चिंतन-मनन करें और संयम द्वारा परिवार को ऐसा सुनियोजित रखे कि पारिवारिक जीवन में कोई संकट झांक न पाए और जीवन सुख-शान्तियुक्त हो।

लेखकों से:-

* समाज में व्याप्त आर्थिक विषमता, शोषण, अन्धविश्वास, छुआछात एवं जीवन केदोहरेपन पर प्रहार करने वाली रचनाओं के लिए राजधर्म आपका स्वागत करता है।
* वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर समाज व्यवस्था कैसी हो किस प्रकार से व्यक्ति का आत्मिक चरित्र एवं शारीरिक उत्थान किया जाए तथा समाज में नव चेतना कैसे फूकी जा सके आदि विषयक लेख राजधर्म द्वारा आमन्त्रित हैं।
* आपके विचारों से यदि जनता के दिल व दिमाग में अज्ञान अन्याय अभाव के विरुद्ध उथल पुथल मच सके और उनके जीवन में आशा की नई किरण फूट सके तो हम आपके अत्यन्त आभारी होंगे।
* उपरोक्त विचारों को लेकर अब हम राजधर्म को रचनात्मक दृष्टि कोण प्रदान करने वाला जनता का सबल प्रतिनिधि बनाना चाहते है क्या आपका हमें इस कार्य में पुनीत सहयोग मिलेगा ? (सम्पादक)

जीवन-संघर्ष में:–

योग्यतम किसे कहते हैं ?

● स्व० पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

विजय के आधार

हम यह रोज देखते हैं कि संघर्ष मनुष्य के जीवन का अनिवार्य साथी है। उस संघर्ष में सफल होकर जीवित रहने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य व्यष्टि रूप से और समष्टि रूप से भी बलवान बने। संघर्ष में बलवान की ही जीत हो सकती है, निर्बल और असमर्थ की नहीं। कभी-कभी ऊपर से बलवान दीखने वाला व्यक्ति, ऊपर से निर्बल दीखने वाले व्यक्ति से परास्त होता दिखाई देता है। परन्तु यदि गहराई में जाकर खोज करें तो हमें मालूम होगा कि जो व्यक्ति ऊपर से बलवान दिखाई देता था, वह वस्तुतः अन्दर से जर्जरित हो चुका था। कोई आदमी मोटा हो तो उसका यह अर्थ नहीं कि वह बलवान भी है। कभी-कभी तो मोटाई ही उसकी निर्बलता बन जाती है क्योंकि वह आसानी से हाथ-पांव नहीं हिला सकता। ऐसे मोटे आदमी को किसी हल्के आदमी से पछाड़ खाते हुए देखकर अविवेकी लोग कभी-कभी इस परिणाम पर पहुंच जाते हैं कि निर्बल को भगवान बल दे देते हैं। असल बात यह होती है कि जिसे हम बलवान समझ रहे हैं, वह वस्तुतः बोदा हो चुका होता है। मनुष्य में केवल शरीर की स्थूलता और पट्ठों की मोटाई को ही बल नहीं कहते। जीतने वाले बल में कई प्रकार के बल सम्मिलित होते हैं, जिन के समझे बिना जीवन-संग्राम के सिद्धान्त को भली-भांति नहीं समझा जा सकता। इस कारण अब हम कुछ विस्तार से यह बतलाने की चेष्टा करेंगे कि जीवन-संग्राम में विजयी होने के लिए किस प्रकार की योग्यता आवश्यक है। पारिभाषिक शब्दों में इस प्रश्न को इस प्रकार रख सकते हैं कि 'योग्यमत किसे कहते हैं ?'

जीवन की प्रबल इच्छा

जीवन-संग्राम में जीतने की सबसे पहली शर्त यह है कि 'जीवन की इच्छा' प्रबल हो। हम इस सारे विवेचन में में जीवन-संग्राम की इकाई जाति या राष्ट्र को मानेंगे। यह समझ लेना चाहिए कि संग्राम में जीतने के उसूल व्यक्ति और जाति पर, थोड़े से उलट फेर से, लगभग एक से ही लागू होते हैं। भेद केवल इतना है कि जहाँ जाति के अवयव 'व्यक्ति' हैं, वहां व्यक्ति के अवयव उसके अपने शरीर मन और आत्मा है। यहां जिन सिद्धान्तों का हम जाति के सम्बन्ध में प्रयोग करेंगे, पाठकों को उनका प्रयोग व्यक्ति के बारे में स्वय अवस्थानुसार कर लेना चाहिए। जाति को इकाई मान कर हम कह सकते हैं कि जातियों के अवश्यम्भावी सघर्ष में वही जाति जीतने और जीवित रहने की आशा रख सकती है जिसमें प्रबल जीवनेच्छा विद्यमान हो।

यहां शायद पूछा जाय कि जीवन की इच्छा किस में नहीं है ? हरेक प्राणी जीना और जीतना चाहता है। इस प्रश्न का उत्तर यह है कि प्रथम तो यही ठीक नहीं कि हरेक प्राणी जीना ही चाहता है। स्वाभाविक तो यह है कि मनुष्य जीवन इच्छा रखे, परन्तु कभी-कभी रोगी मनुष्य में मरने की इच्छा भी पैदा हो जाती है। आत्महत्या का यही मूल कारण है। आत्महत्या तो जीवित न रहने की इच्छा का उग्र उदाहरण है, ऐसे मानसिक रोगी भी बहुत संख्या में मिलेंगे जो इतने शक्तिहीन हो जाते हैं कि उनकी आत्महत्या तक करने की शक्ति भी नष्ट हो जाती है और वह अपने से उदासीन होकर प्राकृतिक शक्ति द्वारा नष्ट होना ही उचित समझते हैं।

ऊपर कहे हुए दोनों प्रकार के मानसिक रोगी धर्म और तत्त्वज्ञान से अपने रोग की पुष्टि किया करते हैं। जर्मनी के फिलासफर शोपनहर का मत था कि मनुष्य का विस्तार आत्महत्या से ही हो सकता है। इधर वेदांतियों का सिद्धान्त है कि कुछ न करके मनुष्य ब्रह्मस्वरूप बन सकता है। देखने में यह दोनों विचार भिन्न मालूम होते हैं, परन्तु इनका मूल कारण एक ही है। जो लोग जीना नहीं चाहते वह दो तरह अपने जीवन को नष्ट कर सकते हैं, या तो अपने हाथ से अपनी हत्या करके, अथवा निरन्तर उपेक्षा द्वारा नैसर्गिक शक्तियों से अपना नाश कराके। दोनों जगह प्रेरक कारण यही है कि मनुष्य जीना नहीं चाहता। जो जीना नहीं चाहता वह जीत कर क्या करेगा ? ऐसे व्यक्तियों या जातियों के लिए जीवन-संग्राम में विजयी होने की कोई आशा नहीं है। जिसे जीवन ही नहीं चाहिए, वह जीवन के लिए करेगा क्यों ?

जो जीना नहीं चाहते वे तो हारेंगे और मरेंगे ही परन्तु जो केवल जीना चाहते हैं और जीवन की प्रबल इच्छा नहीं रखते उनके भी जीवन-संग्राम में विजयी होने की सम्भावना बहुत कम रहती है। जीतने के लिए जीवन की प्रबल

अभिलाषा चाहिए। जो जाति केवल जीना चाहती है—फिर वह जीवन चाहे कितना ही जलील, दासतापूर्ण और अपमानित हो—उसे विजय की क्या जरूरत? और जिसे विजय की जरूरत नहीं, उसके पास विजय का आगमन ही क्यों होगा? जीतने की इच्छा उसी राष्ट्र के हृदय में पैदा होगी, जो जीवन की प्रबल अभिलाषा रखता हो।

संघ की भावना

व्यक्तियों में जीवन-संग्राम के सिद्धान्त काम तो करते हैं, परन्तु जिस समाज के वे अंग हों उस समाज की आत्मरक्षण की भावना व्यक्तियों की परस्पर प्रतिस्पर्धा को बहुत कम कर देती है। इस कारण प्रायः जीवन-संग्राम का सिद्धान्त अपना पूरा काम नहीं करता, परन्तु समुदायों में ऐसा नहीं। अभी वह दिन नहीं आया, जब मनुष्यों की सामाजिक सत्ता की इकाई सारा मनुष्य समाज हो। अभी तक मनुष्य जाति बहुत से समुदायों में बंटी हुई है, जिनमें परस्पर प्रतिस्पर्धा का सिद्धात पूरी घनता और तीव्रता से काम करता है। इसका कारण यह कहना युक्तिसंगत है कि जीवन-संग्राम की असली इकाई वर्तमान युग में मनुष्य समुदाय है।

मनुष्यों का समुदाय भी कई कारणों से बनता है और वह कारण समय की गति के साथ बदलते रहते हैं। किसी समय केवल पारिवारिक बन्धनों से समुदाय बना करते थे। कुरु के वंशज कौरव, और पाण्डु के वंशज पाण्डव, यदु के वंशज यादव और रघु के वंशज राघव कहलाते हैं। राजपूतों में अब तक भी चौहान, सिसोदिया, तोमर आदि वंशों की भावना का आधार पारिवारिक है। ऐसे स्थानों पर संघ का आधार वंश होता है, इस कारण जीवन-संग्राम की इकाई वंश ही को माना ज ता है।

समय की प्रगति के साथ संघ का आधार भी बदल जाता है। केवल वंश को छोटी मात्रा समझा जाने लगता है और धर्म के आधार पर समुदाय बनने लगते हैं। भारतवर्ष में धार्मिक आधार पर संघ भावना मुसलमानों के सफल आक्रमण के पश्चात पैदा हुई, परन्तु यूरोप और मध्य एशिया में वह भावना इससे बहुत पहले उत्पन्न हो चुकी थी। क्रुसेड की लड़ाइयों में ईसाई और मुसलमान बिना किसी राष्ट्रीय भेद के लड़ते रहे। ईसाई पक्ष में प्रायः यूरोप के सभी बड़े-बड़े देशों के प्रतिनिधि और नेता लड़ा करते थे। धर्म के आधार पर समुदाय बना कर लड़ाइयां लड़ी गईं। उनमें यूरोप में रोमन कैथोलिक और प्रोटेस्टेण्ट ईसाइयों की परस्पर लड़ाइयां और एशिया में मुसलमान योद्धाओं की मुस्लिम विभिन्न जातियों से लड़ाइयां बहुत प्रसिद्ध हैं।

भारतवर्ष में धार्मिक आधार पर बने हुए समुदायथों में युद्ध की बुनियाद मुसलमानों के आक्रमन के साथ पड़ी। इससे पूर्व यहाँ के युद्ध प्रायः राजनीतिक होते थे और उनका आधार वांशिक होता था, यहां तक कि पूर्व समय के यवन, हूण, सीथियन, आदि जातियों के आक्रमणों का भी भारत में कोई धार्मिक महत्व नहीं समझा गया। उन जातितों के आक्रमण केवल राजनीतिक थे और उनका आधार आर्थिक था।

परन्तु वर्तमान काल में राजनीतिक समुदाय धार्मिक आधार पर नहीं बनते। ईसाई देश एक दूसरे के खून के प्यासे दिखाई देते हैं, मुसलमान राज्यों में आपस का कोई विशेष सानिध्य नहीं, और जापान और चीन— जो मुख्यतः एक ही धर्म के अनुयागी हैं—बरसों से आपस में लड़ रहे हैं। वह देश और राज्यों से सम्बद्ध है। समुदाय की जो भावना एक देश और एक राष्ट्र में केन्द्रित है उसी को राष्ट्रीय भावना कहते हैं।

संघर्ष में सफल होने के लिए संघ की प्रबल भावना और संघ-शक्ति की अनिवार्य आवश्यकता हैं। यह अत्यन्त स्पष्ट है कि जब दो संघ टकरायेंगे, तब उसी संघ को सफलता मिलेगी, जिसके अंग मजबूत होंगे और उन अंगों का संगठन भी मजबूत होगा। निर्बल संघ एक ही टक्कर से टूट फूट जायेगा।

जीवन-संग्राम में विजयी होने के लिए जहां सबसे पहली वस्तु जीवन की प्रबल अभिलाषा है, वहां सबसे आवश्यक वस्तु जबरदस्त संघ-शक्ति है, जो वर्तमान काल में गहरे राष्ट्रीय भाव और राष्ट्रीय संगठन से पैदा होती है।

शारीरिक बल

जैसे व्यक्ति के जीवित रहने के लिए शरीर की आवश्यकता है उसी प्रकार राष्ट्र को जीवित रखने के लिए भी शरीर चाहिए। यह फिलासफी तो बिल्कुल सत्य है कि शरीर नश्वर है और आत्मा अनश्वर, परन्तु इस फिलासफी के आधार पर जो लोग शरीर की उपेक्षा का सिद्धान्त बना लेते हैं, वे मनुष्य जाति के साथ भयंकर अन्याय करते हैं। शरीर के नश्वर होते भी जीवन उसी दशा को कहते हैं, जब आत्मा का शरीर में निवास हो।। शरीर नष्ट होने वाला है, मल-मूत्र का खजाना है, व्याधियों का घर है इत्यादि सब स्थापनायें हजार बार दुहराई जाए तो भी इस सत्य को नहीं दबा सकती कि आत्मा को सांसारिक अर्थों में जीवित रखने के लिए शरीर की आवश्यकता है। मनुष्य नाम ही शरीर वाली आत्मा का है। ऐसी दशा में शरीर की उपेक्षा करना जीवन की उपेक्षा करना है। शरीर के बिना जीवन शब्द का कोई अर्थ ही नहीं। इस विवेचन से मालूम होगा कि जो लोग—वे फिलासफर हों या पादरी, वे मुनि हों या महात्मा—मनुष्य

जीवन-संघर्ष में:—

योग्यतम किसे कहते हैं ?

● स्व० पं० इन्द्र विद्यावाचस्पति

विजय के आधार

हम यह रोज देखते हैं कि संघर्ष मनुष्य के जीवन का अनिवार्य साथी है। उस संघर्ष में सफल होकर जीवित रहने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य व्यष्टि रूप से और समष्टि रूप से भी बलवान बने। संघर्ष में बलवान की ही जीत हो सकती है, निर्बल और असमर्थ की नहीं। कभी-कभी ऊपर से बलवान दीखने वाला व्यक्ति, ऊपर से निर्बल दीखने वाले व्यक्ति से परास्त होता दिखाई देता है। परन्तु यदि गहराई में जाकर खोज करें तो हमें मालूम होगा कि जो व्यक्ति ऊपर से बलवान दिखाई देता था, वह वस्तुतः अन्दर से जर्जरित हो चुका था। कोई आदमी मोटा हो तो उसका यह अर्थ नहीं कि वह बलवान भी है। कभी-कभी तो मोटाई ही उसकी निर्बलता बन जाती है क्योंकि वह आसानी से हाथ-पांव नहीं हिला सकता। ऐसे मोटे आदमी को किसी हल्के आदमी से पछाड़ खाते हुए देखकर अविवेकी लोग कभी-कभी इस परिणाम पर पहुंच जाते हैं कि निर्बल को भगवान बल दे देते हैं। असल बात यह होती है कि जिसे हम बलवान समझ रहे हैं, वह वस्तुतः बोदा हो चुका होता है। मनुष्य में केवल शरीर की स्थूलता और पट्ठों की मोटाई को ही बल नहीं कहते। जीतने वाले बल में कई प्रकार के बल सम्मिलित होते हैं, जिन के समझे बिना जीवन-संग्राम के सिद्धान्त को भली-भाँति नहीं समझा जा सकता। इस कारण अब हम कुछ विस्तार से यह बतलाने की चेष्टा करेंगे कि जीवन-संग्राम में विजयी होने के लिए किस प्रकार की योग्यता आवश्यक है। पारिभाषिक शब्दों में इस प्रश्न को इस प्रकार रख सकते हैं कि 'योग्यमत किसे कहते हैं ?'

जीवन की प्रबल इच्छा

जीवन-संग्राम में जीतने की सबसे पहली शर्त यह है कि 'जीवन की इच्छा' प्रबल हो। हम इस सारे विवेचन में में जीवन-संग्राम की इकाई जाति या राष्ट्र को मानेंगे। यह समझ लेना चाहिए कि संग्राम में जीतने के उसूल व्यक्ति और जाति पर, थोड़े से उलट फेर से, लगभग एक से ही लागू होते हैं। भेद केवल इतना है कि जहाँ जाति के अवयव 'व्यक्ति' हैं, वहां व्यक्ति के अवयव उसके अपने शरीर मन और आत्मा है। यहां जिन सिद्धान्तों का हम जाति के सम्बन्ध में प्रयोग करेंगे, पाठकों को उनका प्रयोग व्यक्ति के बारे में स्वय अवस्थानुसार कर लेना चाहिए। जाति को इकाई मान कर हम कह सकते हैं कि जातियों के अवश्यम्भावी सघर्ष में वही जाति जीतने और जीवित रहने की आशा रख सकती है जिसमें प्रबल जीवनेच्छा विद्यमान हो।

यहां शायद पूछा जाय कि जीवन की इच्छा किस में नहीं है ? हरेक प्राणी जीना और जीतना चाहता है। इस प्रश्न का उत्तर यह है कि प्रथम तो यही ठीक नहीं कि हरेक प्राणी जीना ही चाहता है। स्वाभाविक तो यह है कि मनुष्य जीवन इच्छा रखे, परन्तु कभी-कभी रोगी मनुष्य में मरने की इच्छा भी पैदा हो जाती है। आत्महत्या का यही मूल कारण है। आत्महत्या तो जीवित न रहने की इच्छा का उग्र उदाहरण है, ऐसे मानसिक रोगी भी बहुत संख्या में मिलेंगे जो इतने शक्तिहीन हो जाते हैं कि उनकी आत्महत्या तक करने की शक्ति भी नष्ट हो जाती है और वह अपने से उदासीन होकर प्राकृतिक शक्ति द्वारा नष्ट होना ही उचित समझते हैं।

ऊपर कहे हुए दोनों प्रकार के मानसिक रोगी धर्म और तत्त्वज्ञान से अपने रोग की पुष्टि किया करते हैं। जर्मनी के फिलासफर शोपनहर का मत था कि मनुष्य का विस्तार आत्महत्या से ही हो सकता है। इधर वेदांतियों का सिद्धान्त है कि कुछ न करके मनुष्य ब्रह्मस्वरूप बन सकता है। देखने में यह दोनों विचार भिन्न मालूम होते हैं, परन्तु इनका मूल कारण एक ही है। जो लोग जीना नहीं चाहते वह दो तरह अपने जीवन को नष्ट कर सकते हैं, या तो अपने हाथ से अपनी हत्या करके, अथवा निरन्तर उपेक्षा द्वारा नैसर्गिक शक्तियों से अपना नाश कराके। दोनों जगह प्रेरक कारण यही है कि मनुष्य जीना नहीं चाहता। जो जीना नही चाहता वह जीत कर क्या करेगा ? ऐसे व्यक्तियों या जातियों के लिए जीवन-संग्राम में विजयी होने की कोई आशा नहीं है। जिसे जीवन ही नहीं चाहिए, वह जीवन के लिए करेगा क्यों ?

जो जीना नहीं चाहते वे तो हारेंगे और मरेंगे ही परन्तु जो केवल जीना चाहते हैं और जीवन की प्रबल इच्छा नहीं रखते उनके भी जीवन-संग्राम में विजयी होने की सम्भावना बहुत कम रहती है। जीतने के लिए जीवन की प्रबल

अभिलाषा चाहिए। जो जाति केवल जीना चाहती है—फिर वह जीवन चाहे कितना ही जलील, दासतापूर्ण और अपमानित हो—उसे विजय की क्या जरूरत? और जिसे विजय की जरूरत नहीं, उसके पास विजय का आगमन ही क्यों होगा? जीतने की इच्छा उसी राष्ट्र के हृदय में पैदा होगी, जो जीवन की प्रबल अभिलाषा रखता हो।

संघ की भावना

व्यक्तियों में जीवन-संग्राम के सिद्धान्त काम तो करते हैं, परन्तु जिस समाज के वे अंग हों उस समाज की आत्मरक्षण की भावना व्यक्तियों की परस्पर प्रतिस्पर्धा को बहुत कम कर देती है। इस कारण प्राय: जीवन-संग्राम का सिद्धान्त अपना पूरा काम नहीं करता, परन्तु समुदायों में ऐसा नहीं। अभी वह दिन नहीं आया, जब मनुष्यों की सामाजिक सत्ता की इकाई सारा मनुष्य समाज हो। अभी तक मनुष्य जाति बहुत से समुदायों में बंटी हुई है, जिनमें परस्पर प्रतिस्पर्धा का सिद्धात पूरी घनता और तीव्रता से काम करता है। इसका कारण यह कहना युक्तिसंगत है कि जीवन-संग्राम की असली इकाई वर्तमान युग में मनुष्य समुदाय है।

मनुष्यों का समुदाय भी कई कारणों से बनता है और वह कारण समय की गति के साथ बदलते रहते हैं। किसी समय केवल पारिवारिक बन्धनों से समुदाय बना करते थे। कुरु के वंशज कौरव, और पाण्डु के वंशज पाण्डव, यदु के वंशज यादव और रघु के वंशज राघव कहलाते हैं। राजपूतों में अब तक भी चौहान, सिसोदिया, तोमर आदि वंशों की भावना का आधार पारिवारिक है। ऐसे स्थानों पर संघ का आधार वंश होता है, इस कारण जीवन-संग्राम की इकाई वंश ही को माना जाता है।

समय की प्रगति के साथ संघ का आधार भी बदल जाता है। केवल वंश को छोटी मात्रा समझा जाने लगता है और धर्म के आधार पर समुदाय बनने लगते हैं। भारतवर्ष में धार्मिक आधार पर संघ भावना मुसलमानों के सफल आक्रमण के पश्चात पैदा हुई, परन्तु यूरोप और मध्य एशिया में वह भावना इससे बहुत पहले उत्पन्न हो चुकी थी। क्रुसेड की लड़ाइयों में ईसाई और मुसलमान बिना किसी राष्ट्रीय भेद के लड़ते रहे। ईसाई पक्ष में प्राय: यूरोप के सभी बड़े-बड़े देशों के प्रतिनिधि और नेता लड़ा करते थे। धर्म के आधार पर समुदाय बना कर लड़ाइयां लड़ी गई। उनमें यूरोप में रोमन कैथोलिक और प्रोटैस्टेण्ट ईसाइयों की परस्पर लड़ाइयां और एशिया में मुसलमान योद्धाओं की मुस्लिम विभिन्न जातियों से लड़ाइयां बहुत प्रसिद्ध हैं।

भारतवर्ष में धार्मिक आधार पर बने हुए समुदायथों में युद्ध की बुनियाद मुसलमानों के आक्रमन के साथ पड़ी। इससे पूर्व यहाँ के युद्ध प्राय: राजनीतिक होते थे और उनका आधार वांशिक होता था, यहां तक कि पूर्व समय के यवन, हूण, सीथियन, आदि जातियों के आक्रमणों का भी भारत में कोई धार्मिक महत्व नहीं समझा गया। उन जातितों के आक्रमण केवल राजनीतिक थे और उनका आधार आर्थिक था।

परन्तु वर्तमान काल में राजनीतिक समुदाय धार्मिक आधार पर नहीं बनते। ईसाई देश एक दूसरे के खून के प्यासे दिखाई देते हैं, मुसलमान राज्यों में आपस का कोई विशेष सानिध्य नहीं, और जापान और चीन— जो मुख्यत: एक ही धर्म के अनुयागी हैं—बरसों से आपस में लड़ रहे हैं। वह देश और राज्यों से सम्बद्ध है। समुदाय की जो भावना एक देश और एक राष्ट्र में केन्द्रित है उसी को राष्ट्रीय भावना कहते हैं।

संघर्ष में सफल होने के लिए संघ की प्रबल भावना और संघ-शक्ति की अनिवार्य आवश्यकता हैं। यह अत्यन्त स्पष्ट है कि जब दो संघ टकरायेंगे, तब उसी संघ को सफलता मिलेगी, जिसके अंग मजबूत होंगे और उन अंगों का संगठन भी मजबूत होगा। निर्बल संघ एक ही टक्कर से टूट फूट जायेगा।

जीवन-संग्राम में विजयी होने के लिए जहां सबसे पहली वस्तु जीवन की प्रबल अभिलाषा है, वहां सबसे आवश्यक वस्तु जबरदस्त संघ-शक्ति है, जो वर्तमान काल में गहरे राष्ट्रीय भाव और राष्ट्रीय संगठन से पैदा होती है।

शारीरिक बल

जैसे व्यक्ति के जीवित रहने के लिए शरीर की आवश्यकता है उसी प्रकार राष्ट्र को जीवित रखने के लिए भी शरीर चाहिए। यह फिलासफी तो बिल्कुल सत्य है कि शरीर नश्वर है और आत्मा अनश्वर, परन्तु इस फिलासफी के आधार पर जो लोग शरीर की उपेक्षा का सिद्धान्त बना लेते हैं, वे मनुष्य जाति के साथ भयंकर अन्याय करते हैं। शरीर के नश्वर होते भी जीवन उसी दशा को कहते हैं, जब आत्मा का शरीर में निवास हो।। शरीर नष्ट होने वाला है, मल-मूत्र का खजाना है, व्याधियों का घर है इत्यादि सब स्थापनायें हजार बार दुहराई जाए तो भी इस सत्य को नहीं दबा सकती कि आत्मा को सांसारिक अर्थों में जीवित रखने के लिए शरीर की आवश्यकता है। मनुष्य नाम ही शरीर वाली आत्मा का है। ऐसी दशा में शरीर की उपेक्षा करना जीवन की उपेक्षा करना है। शरीर के बिना जीवन शब्द का कोई अर्थ ही नहीं। इस विवेचन से मालूम होगा कि जो लोग—वे फिलासफर हों या पादरी, वे मुनि हों या महात्मा—मनुष्य

को शरीर की उपेक्षा करना सिखलाते हैं। वे मनुष्य व्यक्ति और मनुष्य जाति दोनों के शत्रु हैं, स्वस्थ आत्मा के निवास के लिए स्वस्थ शरीर की आवश्यकता है और स्वस्थ राष्ट्र की सत्ता को कायम रखने के लिये स्वस्थ और बलिष्ठ राष्ट्रीय शरीर का होना अवश्यम्भावी है।

वह राष्ट्र जीवन-संग्राम में कभी नहीं जीत सकता, जो शारीरिक दृष्टि से क्षीण हो। जीतना तो एक ओर रहा, उसका जीवित रहना भी कठिन है।

जाओ, और राजपूताना तथा महाराष्ट्र के अदभुतालयों में पड़ी हुई पुरानी तलवारों और कवचों पर दृष्टि। महाराणा प्रताप और छत्रपति शिवाजी तथा उनके समय के लोग जिन खड्गों से शत्रु का नाश करते थे, उन्हें उठा कर अपने बल की परिक्षा करो। उन लोहे के कवचों को एक बार शरीर पर पहिनने का यत्न करो। एक सपना-सा मालूम होगा। हाथ उन खड्गों के उठाने में असमर्थ मालूम होता है, और शरीर उन कवचों के नीचे पिसने लगते लगता है। वे आजाद थे, और आजादी के नाम पर लड़ रहे थे। हम दास हैं, और दासता से निकलने की चेष्टा तक नहीं कर सकते।

रोमन साम्राज्य के नाश के कारणों पर प्रकाश डालते हुए इतिहास-लेखकों ने यह माना है कि उसका एक बड़ा कारण रोमन लोगों की वह शारीरिक क्षीणता थी, जो साम्राज्य के उपभोग के कारण पैदा हुई थी। उस क्षीणता का दृष्टान्त इतिहास के लेखकों ने यही दिया है कि साम्राज्य बाननेवाले रोमन योद्धाओं के कवचों के बोझ को साम्राज्य का उपभोग करने वाले रोमन के लोगों के शरीर असह्य समझते थे।

यह भारतवर्ष के दुर्भाग्य हैं कि यहां चरसिया वैराग्य, झूठे धर्म और अनूठे तत्त्वज्ञान के कई प्रचारकों ने शरीर के प्रति उपेक्षाभाव उत्पन्न करने की सदियों तक चेष्टा की, और वह अब तक भी जारी है। आज भी भारतवर्ष में सन्तपन और महात्मापन के निम्नलिखित चिन्ह समझे जाते हैं—

शरीर दुबला-पतला हो। कपड़े बेढंगे हों। खाना पुष्टिकारक न होकर साधारण लोगों से अद्भुत हो, तेल, भूसा घास-फूंस कुछ भी हो, परन्तु अन्न, घी, दूध आदि न हो। बाल बढ़े हुए हों या बिल्कुल न हों। नाखून कभी न कटाये जायें। बालों को कभी न धोया जाय। सिर पर मोर पंख बांधे जायं। पैर नंगे हों। सारांश यह है कि कुछ अद्भुत चीज हो, जिससे सिद्ध हो सके कि इस व्यक्ति को शरीर की परवाह नहीं है। बस ऐसा मनुष्य भारत में सन्त-महात्मा और पहुंचा हुआ माना जाने लगेगा। यदि मनुष्य समाज को संचालित करने वाले नियमों पर दृष्टि डाली जाय तो मालूम होगा कि स्वस्थ और बलवान शरीर के बिना न व्यक्ति का जीवन सम्भव है न और न समाज का। जो धर्म या तत्त्वज्ञान मनुष्य को शरीर की उपेक्षा करना सिखलाता है वह मनुष्य जाती का घोर शत्रु है।

जो राष्ट्र शान के साथ जीवित रहना चाहता है, उसे अपनी भावी सन्तति के शारीरिक स्वास्थ्य का व्यक्तिगत और सामाजिक रूप से पूरा प्रबन्ध करना चाहिए। कमजोर प्राणियों का कोई राष्ट्र जीवन के संघर्ष में खड़ा नहीं रह सकता।

स्वच्छ जीवन, उत्तम भोजन, व्यायाम और समूहात्मक संगठनों द्वारा व्यक्ति और समाज के शरीर को बलिष्ठ और सहिष्णु बनाना राष्ट्र का काम है जो राष्ट्र इस कर्तव्य का पालन नहीं करता, वह अपनी आदर-सहित स्वाधीन सत्ता को खो देता है।

चरित्र की दृढ़ता

जैसे राष्ट्र के व्यक्तियों का शारीरिक बल संगठित और शृंखलाबद्ध होकर राष्ट्र का शारीरिक बल बनता है, उसी प्रकार राष्ट्र के व्यक्तियों का चरित्रबल भी एक लक्ष्य में केन्द्रित और एकीभूत होकर राष्ट्र का चरित्रबल बनता है। यदि कड़ियें कमजोर होंगी तो जंजीर कभी मजबूत नहीं हो सकती। और यदि बहुत मजबूत कड़ियें अलग-अलग पड़ी रहें तो वह किसी काम नहीं आ सकतीं, उनमें और पत्थर के टुकड़ों में कोई भेद नहीं रहता इस कारण जब हम यह कहते हैं कि राष्ट्र से जीवन के लिए चरित्रबल की आवश्यकता है तो उसमें व्यक्तिगत और सामूहिक चरित्र—दोनों का ही समावेश हो जाता है।

यहाँ यह स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि आचार सम्बधी शुद्धता चरित्र का पहला अंग है। चरित्र का दूसरा रूप यह है कि राष्ट्र के व्यक्तियों में राष्ट्र के प्रति अगाध प्रेम हो, जिसके कारण वह किसी बड़े से बड़े प्रलोभन या भय के अवसर में आकर भी राष्ट्र के साथ द्रोह न कर सकें। विश्वास की सच्चाई, विश्वास के लिए मर मिटने की भावना और सम्मान से जीवित रहने की प्रबल इच्छा=यह बल चरित्र के व्यावहारिक रूप हैं, जिनका निर्माण आचार सम्बधी पवित्रता के अधार पर ही हो सकता है।

कभी कभी क्रियात्मक राजनीति के व्याख्याकार कह दिया करते हैं कि राष्ट्र के व्यक्तियों के निजू चरित्र का राष्ट्र की भलाई बुराई से सम्बन्ध नहीं है। अनुभव ने सिद्ध किया है कि यह विचार ठीक नहीं हैं। प्रत्येक राजनीतिक आन्दोलन अथवा राष्ट्रीय-संघ की सफलता उपके सभी सिपाहियों और विशेषतः उसके नेताओं के चरित्रबल पर अवलम्बित रहती है। अमरीका को इंग्लैण्ड की दासता से छुड़ाने के जो

कारण थे, उनमें उसके सेनापति वाशिंगटन का निर्दोष और दृढ़ चरित्र एक प्रमुख कारण था। उस समय के अमरीकन लोग भी प्रायः सत्य और स्वाधीनता-प्रेमी सिपाही होते थे, वह आजकल के ऐश्वर्य और विलास की सामग्री से सम्पन्न चिकने-चुपड़े अमरीकनों से बहुत भिन्न थे।

स्वतन्त्रता-प्रेमी इंग्लैंड में कामवैल को राजनीतिक क्रान्ति के सफल बना देने का जो श्रेय प्राप्त हुआ, उसमें सबसे बड़ा कारण कामवैल और उसके अनुयायी सिपाहियों का सच्चा निर्मल और अक्खड़ चरित्र ही था। विशाल मुगल साम्राज्य को गरीब मराठा सेनाओं ने छलनी कर दिया था, इसका मुख्य कारण यही था कि जहां चिरकालीन वैभव ने मुगलों को चरित्रहीन और कायर बना दिया था वहां सन्तों के प्रचार और शिवाजी के दृष्टांत ने प्रारम्भिक मराठा योद्धाओं में सादगी, निर्भयता और दृढ़ता कूट-कूट कर भर दी थी। वर्तमान इतिहास में जिस घटना को सबसे अधिक आश्चर्यजनक समझा जा सकता है, वह केवल २० वर्ष में वारसाई की सन्धि द्वारा पददलित जर्मन का पुनरुत्थान है। ढूंढ़ कर देखो कि असाधारण तीव्र गति से प्राप्त हुए इस नये जीवन का रहस्य क्या है? इतिहासकार बतलायेंगे कि जर्मनी की प्रगति के नेता हिटलर का निर्दोष और दृढ़ चरित्र ही इस चमत्कार का कारण था।

ये कुछ दृष्टांत हमने इस बात के दिये कि अन्य सब प्रकार के मानवीय भवनों की तरह मनुष्य जाति के राष्ट्रीय भव भी चरित्र-बल की दृढ़ नींव पर ही खड़े किये जा सकते हैं। यदि चरित्र-बल की नींव मजबूत न होगी तो या तो भवन खड़ा होने से पहले ही गिर जायगा और यदि यथा-तथा खड़ा भी हो गया तो चिरस्थाई न हो सकेगा।

अब हम कुछ दृष्टांन्त इस सचाई को स्पष्ट करने के लिये देंगे कि जिस राजनीतिक आन्दोलन की बुनियाद चरित्र-बल पर न हो, वह या तो असामयिक गर्भ की तरह बीच में नष्ट हो जाता है, अथवा पैदा होकर शैशव में ही मृत्यु का शिकार हो जाता है।

फ्रान्स की प्रसिद्ध राज्य-क्रान्ति पूरी तरह सफल क्यों नहीं हुई? उससे देश का कल्याण होने की अपेक्षा अधिक अनिष्ट क्यों हुआ?—इन प्रश्नों का एक ही उत्तर है। फ्रान्स की क्रान्ति को जो नेता मिले थे, उनके चरित्र में दृढ़ता नहीं थी, आचार के सम्बन्ध में वह लापरवाह थे, और उनके विचारों में दृढ़ता का अभाव था। यही कारण था कि ऊंचे आदर्शों को लेकर प्रारम्भ होने पर भी क्रान्ति को इतने अधिक उतराव-चढ़ाव में से गुजरना पड़ा; फ्रान्स को क्रान्ति के कारण इतना अधिक घायल होना पड़; और अन्त में स्वाधीनता का वह कल्पवृक्ष, जो क्रान्ति के बीज से पैदा हुआ था, नैपोलियन की तानाशाही के जल प्रवाह में गर्क हो गया। फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति ने जहां राजनीतिक बन्धनों को तोड़ा, वहां फ्रांस के दुर्भाग्य से फ्रेंच लोगों ने आचार-सम्बन्धी बन्धनों को भी तोड़ दिया। यदि गम्भीरता से विचार किया जाय तो प्रतीत होगा कि आज तक भी फ्रांस उस समय की चरित्र-सम्बन्धी शिथिलता के दुष्परिणामों से ऊपर नहीं उठ सका। वही आचार-शिथिलता का अभिशाप उसे आज तक भी नीचे घसीटे लिये जा रहा है।

दूसरा दृष्टान्त आयरलैण्ड के होम-रूल आन्दोलन के इतिहास में मिलता है। इंग्लैंड के विख्यात प्रधान मन्त्री मि० ग्लैडस्टन ने जिन दिनों पार्लमेण्ट में आयरलैण्ड के लिये होम-रूल का बिल पेश किया था, उन दिनों आयरलैण्ड के राष्ट्रीय नेता मि० चार्ल्स स्टुअर्ट पार्नल का सितारा बुलन्दी पर था। पार्नल बड़ा कुशल खिवय्या था। वह बहादुर लड़ाकू भी था। आयरलैण्ड के स्वाधीनता-युद्ध में उसने जान डाली थी। जनता की उस समय की प्रधान संस्था लैण्ड-लीग और उसके गैरकानूनी घोषित होने पर नैशनल लीग के नेता की हैसियत से होम-रूल आलन्दोलन का वीरतापूर्ण नेतृत्व मि० पार्नन ने किया था, उसी का परिणाम था कि मि० ग्लैडस्टन ने आयरलैन्ड को होम-रूल देने में इग्लैण्ड की भलाई समझी। यद्यपि पार्लमेंट ने उस समय ग्लैडस्टन के प्रस्ताव को रद्द कर दिया था, तो भी आयरलैण्ड की दृढ़ता को देख कर इंग्लैण्ड के विचारकों का यह मत हो गया था कि आयरलैण्ड को स्वाधीन शासन का अधिकार देना ही चाहिये। मि० ग्लैडस्टन और अन्य उदार अंग्रेजों के मत-परिवर्तन का सबसे बड़ा श्रेय मि० पार्नल के वीर और सुन्दर नेतृत्व को ही दिया जा सकता है। अंग्रेजी पार्लमेंट में आयरिश पार्लमेण्टरी पार्टी के नेता और बाहर नेशलन लीग के नेता की हैसियत से पार्नल उस समय के आयरलैंड का सब से अधिक प्रभावशाली अगुआ था, और निश्चय था कि होम-रूल बिल के गिर जाने के बाद पार्नल की कमान में आयरलैण्ड के देशभक्त जोरदार आन्दोलन उठाते तो इंग्लैंड को उसी समय झुक जाना पड़ता, परन्तु दुर्दैव से १८९० में अदालत के सामने एक तलाक की दर्खास्त पेश हुई. जिसमें यह बयान किया गया कि पार्नल ने एक श्रीमती ओ० शिया (Mrs. O. Shea) के साथ व्यभिचार किया है इस आरोप का उत्तर देने के लिए जब पार्नल को अदालत में बुलाया गया तो वह हाजीर न हुआ, जिससे संसार को विश्वास हो गया कि पार्नल ने व्यभिचार किया है। नेता के इस जुर्म का आयरलैण्ड की उस समय की राजनीति पर बड़ा भयंकर असर हुआ। नैशनल पार्टी छिन भिन्न हो गयी, आन्दोलन बिखर गया, आयरलैंण्ड की स्वाधीनता के विरोधीयों की बन आई। यह सर्वसम्मत बात है कि पार्नल की उस चरित्र-सम्बन्धी निर्बलता ने आयरलैण्ड की स्वाधीनता को २० वर्ष पिछे डाल दिया।

(शेष अगले अंक में)

(पृष्ठ ८ का शेष)

नेहरू स्टेडियम की स्वीकृति—

जींद बस अड्डे के पास ही रानी तालाब के साथ सुन्दर एवं विशाल खेल-कूद नेहरू स्टेडियम है चारों ओर से ऊंची दीवारों से घिरा होने से सम्मेलन के लिए यह स्थान काफी उपयुक्त है। अत: जिलाधीश महोदय से इस स्थान की स्वीकृति लेने के लिए आवेदन पत्र दे दिया है। जब यह अकं आपके हाथों में होगा तब तक स्थान की स्वीकृति हमें मिल जाएगी।

कालेजों के युवक आगे आए—

ग्राम राजपुरा जि० जींद के उत्साही युवक श्री रामफल आर्य ने अपना पूरा समय देने की घोषणा की और गांव से दस ट्रैक्टर और कालेजों से पांच सौ रुपया इक्ठा करने का निश्चय किया इसी प्रकार श्री महेन्द्रपाल आर्य जलालपुरा सेवासिंह आर्य नगूरा, सत्यवीरसिंह थूआ बलदेव आर्य बुडायन ओमप्रकाश बरसोला, रामकरण नगूरा आदि नौजवान भी कार्य में जुट गये हैं।

ऐतिहासिक शोभायात्रा की तैयारी अभी से-

इतना विशाल सम्मेलन हो और उसमें यदि शोभायात्रा न निकाली जाए तो वह कार्य अधूरा ही माना जाता है। अत: यह निर्णय किया गया है कि १८ फरवरी १९७७ को जींद नगर में शोभा यात्रा का आयोजन किया जाए। स्वामी इन्द्रवेश जी ने लोगों के उत्साह एव प्रेम को देखते हुये यह आशा व्यक्त की है कि यह जुलूस इतना विशाल होगा कि जींद में आ भी नहीं सकेगा। बैठक में उपस्थित चौ० राजमल ग्राम गगन खेड़ी ने कहा कि वे दस ट्रैक्टर अपने गांव से लेकर आएंगे। इसी तरह नरवाणा के श्री कृष्णगोपाल ने २० ट्रक भेजने का वचन दिया। सभी के विचारों के बाद यह निष्कर्ष निकाला गया कि लगभग २०० ट्रैक्टर जुलूस में होंगे। २ हाथी ५० घोड़े, साईकिल तथा मोटर साईकिलें होंगी। हर वाहन के ऊपर ओ३म् ध्वज फहराऐ होंगे और सभी आर्य समाजों एवं संस्थाओं के नामपट होंगे। जुलूस की तैयारी अभी से प्रारम्भ हो चुकी है। और इसके पूरे संयोजन के लिए उप समिति गठित कर दी है।

स्वादिष्ट पूरी एवं सब्जी देशी घी में बनाई जाऐगी—

जीन्द की बैठक में यह भी एक आनद दायक निर्णय सर्व सम्मति से लिया गया कि लंगर में पूरी एवं सब्जी में देशी घी का प्रयोग किया जाये। इससे भोजन में काफी आनन्द आऐगा और भोजन स्वादिष्ट बनेगा।

विभिन्न कार्यों के टोलियों का गठन-

२ जनवरी की बैठक के बाद विभिन्न टोलियां निकल पड़ी हैं। धन संग्रह के लिए श्री धर्मवीर आर्य कौथ स्वामी सत्यवेश एवं खेमसिंह की मण्डली हांसी तहसील व हिसार के अन्य क्षेत्रों से धन संग्रह के लिए जुट गये हैं। रामधारी शास्त्री व स्वामी चद्रवेश, सूबेदार भरतसिंह, प्रधान जगतराम व झाबेराम, सुरेन्द्रसिंह व सौदागर चन्द आदि की टोलियां बन गई हैं। श्री दलीपसिंह आर्य व दयानन्द आर्य अन्न संग्रह में जुट गये हैं। स्वामी रूद्रवेश की मण्डली पं० चूनीलाल की मण्डली प्रचार कार्य में व्यस्त हैं। श्री वीरपाल जी जनसम्पर्क कर रहे हैं। तथा डाक्टर धर्मवीर आर्य कार्यालय का काम सम्भाल रहे हैं। इस तरह से कार्य विभाजन करके सभी कार्यकर्ता युद्ध स्तर पर जुट गये हैं। स्वामी इन्द्रवेश जी सभी को प्रेरणा एवं मार्ग दर्शन देने के साथ-२ धनसंग्रह भी तेजी के साथ कर रहे हैं।

रक्षामंत्री चौ० बंसीलाल भी सम्मेलन में पधार रहे हैं।

एक जनवरी को भारत के रक्षामन्त्री श्री बंसीलाल से स्वामी इन्द्रवेश जी ने भेंट और लगभग डेढ घण्टे तक कई आवश्यक विषयों पर बातचीत हुई। जब स्वामी जी ने जींद सम्मेलन में पधारने के लिए रक्षा मंत्री जी को निमन्त्रण दिया तो उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया। इसी तरह से हरयाणा के मुख्य मन्त्री श्री बनारसी दास गुप्त एवं उत्तरप्रदेश के मुख्य मन्त्री नारायणदत्त तिवारी की भी मौखिक स्वीकृति पहले ही मिल चुकी है। आर्यसमाज के संन्यासी गण व विद्वानों की स्वीकृति मिल रही हैं।

● और अब बिहार में ....

(कवर ३ का शेष)

में लोग पलवल पहुंचे हुए थे । तीन घण्टे तक बड़ा रुचिकर कार्यक्रम चला । चौ० रणवीरसिंह एम० पी० एवं श्री मति शारदारानी गृह राज्य मन्त्री हरियाणा भी स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धांजलि देने के लिये पधारे स्वामी इन्दवेश जी ने अपने अध्यक्षीय भाषण में कार्यकर्ताओं का स्वामीश्रद्धानन्दजी के बताये मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी इनके अतिरिक्त स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी सुधानन्द जी, प्रेमपाल शास्त्री, स्वामी रुद्रवेश, तथा मैंने भी विचार रखे । सम्मेलन की सफलता में लक्ष्मीचन्द्र जी एवं वीरेंद्र जी का विशेष योगदान रहा ।

बिहार की धरती पर एक नए अध्याय का सूत्रपात

२३ दिसम्बर को दिल्ली से हम पटना के लिए रवाना हुये । स्वामी इन्द्रवेश जी के साथ स्वा० सुधानन्द जी, स्वा० शक्तिवेश जो तथा स्वयं मैं भी था । २४ से २८ दिसम्बर तक बिहार प्रांतीय आर्य समाज स्थापना शताब्दी समारोह विशाल स्तर पर किया जा रहा था । बिहार में हमारे साथियों का आग्रह था कि एक बार बिहार में स्वामी जी अवश्य पहुंचे । वैसे तो पूज्य स्वामी अग्निवेश जी पहले दोबार बिहार हो आए थे । और उन से प्रभावित हो कर वहां के नौजवानो के दिल में यह कोतुहल मचा हुआ था कि किसी प्रकार बिहार प्रान्त को स्वामी जी अपना कार्य क्षेत्र बना लेवें । आपस के विचार की उहापोह के बीच हम दानापुर (पटना) पहुँच गए । हमारा बिहार जाने का उद्देश्य वहां की आर्य समाज की पूरी पृष्ट भूमि की जानकारी लेना और बिहार की जनता को आर्य समाज में चल रहे मठाधीसवाद के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देना था । जिस समय हम स्वामी इन्द्रवेश जी के साथ मंच पर पहुँचे उस समय क्रांतिकारो नारायण स्वामी जी का व्याख्यान हो रहा था हमारे जाने से पूरे पंडाल में एक हलचल सी मच गई और सभी के मुख से यह बात बड़ा खुशी से निकल रही थी कि स्वामी अग्निवेश जी के साथी स्वामीइन्द्रवेश जी आगये हैं अब हमारी शताब्दी सफल हो गई । स्वामी जी के पहुँचने की सूचना काफी प्रभाव शाली ढंग से नारायण स्वामी जा ने अपने व्याख्यान में दे दी थी । २५ दिसम्बर को शोभा यात्रा का कार्यक्रम था नौजवानों के आग्रह पर आयं सबसे आगे खुली जीप में विशाल व्यक्तित्व एवं उन्नत ललाट के धनी स्वामी इन्द्रवेश जी शोभायमान थे उनके साथ नारायण स्वामी शक्तिवेश, स्वामी सुधानन्द, बेगराज जी तथा मैं भी जीप पर ही बैठ गया था एक मील लम्बा जलूस जोश खरोश के साथ चल रहा था । जीप में ही बिहार के प्रसिद्ध आर्य नेता राम नारायण शास्त्री की क्रांतिकारी वाणी के साथ सैकड़ों नौजवान उछल २ कर वैदिक समाजवाद के नारे लगा रहे थे । पूरा शहर जलूस को देखने के लिए उमड़ पड़ा था । स्वामी इन्द्रवेश स्वामी अग्निवेश जिन्दाबाद के नारों से आसमान गूंज रहा था । रात्रि को खुला अधिवेशन हुआ । मुख्यवक्ता के रूप में लगभग एक घन्टे तक स्वामी इन्द्रवेश जी का व्याख्यान हुआ और जब युवापीढ़ी के बढ़ते चरणों की पूरी रूप रेखा उन्होंने रखी तो जयकारों एवं कातल ध्वनि से सभी ने इसका स्वागत किया २६ दिसम्बर को दोपहर सामाजिक क्रांति सम्मेलन का उदघाटन भी स्वामी जी ने ही किया । स्वामी शक्तिवेश उसके मुख्य उदबोधक रहे और मैंने भी प्रो० रामनाथ के प्रस्ताव पर आध घन्टे तक अपने कुछ विचार रखे।

सांय को हिन्दी साहित्य सम्मेलन में गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के आचार्य स्वामी सुधानन्द जी का ओजस्वी व्याख्यान हुआ दो दिन तक इसी प्रकार से व्यस्त कार्यक्रम करने के बाद नौजवानों की एक हगामी बैठक बुलाई गई दो सौ नौजवानों ने इसमे भाग लिया कई युवकों ने अपने उदगार प्रकट करते हुये बिहार की धरती पर कार्य करने की अपील थी । उनकी हार्दिक इच्छा थी कि देश के अन्य प्रान्त की तरह से बिहार की वा पीढी का मार्ग दर्शन स्वामी इन्द्रवेश जी ही करें । स्वामी जी ने नौजवानों को गोष्ठी में भावी कार्यक्रम की रूप रेखा कि संगठन में फैले भ्रष्टाचार को दूरकरने के लिए संघर्ष स्वामी जी के विचारों का जोर दार स्वागत किया गया इस सम्मेलन से जहां बिहार की धरती पर एक नये अध्याय का सूत्रपात हुआ है वहीं हमें कई उच्च कोटि के विद्वान एवं कार्यकर्ताओं काविशेष परिचय भी मिला है । आचार्य पं० रामानन्द शास्त्री पं० रामनारायण शास्त्री प्रौ० योगेन्द्रनारायण जैसे तपस्वी एवं विद्वान व्यक्तियों के कन्धों पर ही बिहार का आर्य समाज खड़ा है । आर्यसमाज के लिए हर प्रकार का त्याग करके भी ये महारथी उसकी गाड़ी को डा० दुःखन राम जैसे निष्क्रीय लोगों से मुक्त करा पाए हैं । बिहार की धरती पुकार रही है बिहार के इस सम्मेलन की सफलता का श्रेय सच्चे आर्यों में आर्य समाज कानापुर के प्रधान पं देवकी नन्दन, प्रो० योगेन्द्रनारायण, रामनारायण शास्त्री आचार्य रामानन्द शास्त्री, कुबेर सिंह सभा मन्त्री. सन्त कुमार जी, ईश्वरी प्रसाद जी, राजेश्वर जिज्ञासु जी, सुरेन्द्रकुमार सुनील शास्त्री, ज्ञानदेव शास्त्री, डा० रामनाथ आदि प्रमुख कार्यकर्ताओं को ही जाता है । २६ दिसम्बर की रात को हम वापिस दिल्ली के लिए लोट आये ।

चण्डीगढ़ में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्ध शताब्दी २६ दिसम्बर को धूम धाम से सम्मपन्न (विशेष सम्वाददाता द्वारा)

आर्य समाज के महान सेनानी अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की बलिदान अर्द्ध शताब्दी २६ दिसम्बर १९७६ रविवार को आर्य समाज २२ सैक्टर चण्डीगढ़ में नौजवानों के नेतृत्व में शानदार ढंग से मनाई गई। चण्डीगढ में क्योंकि बुद्धिजिवियों कों सख्या अधिक है। अतः यह समारोह अपने आप में विशेष महत्व रखता है। सम्मेलन को सम्बोधित करने के लिए आर्य समाज के गौरव एवं वैदिक सिद्धान्तों पर धाराप्रवाह बोलने वाले युवक हृदय सम्राट डा० रामप्रकाश जी एवं शास्त्रार्थ महारथी पं० ओमप्रकाश खतौली वाले पधारे हुये थे डा० रामप्रकाश जी ने अपनी सिंहगर्जना में आर्यसमाज के वर्तमान नेतृत्व की कठोर शब्दों में भर्त्सना करते हुये कहा कि जो लोग स्वार्थ सिद्धी एवं पदलो लुपता के वशीभूत होकर आर्य समाज का दुरूपयोग कर रहे हैं, युवा पीढ़ी अब उनको बदश्ति नहीं करेगी। आपने स्वामी श्रद्धानन्द जी के जीवन से गरीब वर्ग की सेवा करने की शिक्षा लेने पर बलदिया। सम्मेलन का विशेष आकर्षण यह था कि सैकंड़ों हरिजन भाईयों के साथ आर्य युवकों ने सहभोज किया और दस हरिजन परिवारों को पांच-२ गज कपड़ा भी दान में दिया। पं० ओमप्रकाश ने भी स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धान्जलि देते हुये हरिजनों के इस आमन्त्रण के लिए युवकों की प्रशंसा की इस सम्मेलन की सफलता का श्रेय मुख्य रूप से श्री बलबीरसिंह चौहान, श्री विश्वबन्धु आर्य, श्री गिरधारीलाल स्वतन्त्र, महेन्द्रपाल आर्य, सत्यवीर सिंह आदि की है। इस कार्य क्रम से बुद्धिजीवी वर्ग में काफी प्रभाव आर्यसमाज का बढ़ा है।

डा० राम प्रकाश को बार-बार वधाई एक और विजय

पंजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ़ की सीनेट का चुनाव बड़े भारी बहुमत से जीत लेने के बाद आर्य समाज के गौरव डा० रामप्रकाश जी ने एक और महान विजय प्राप्त करली है। और अब आप सिण्डीकेट के सदस्य भी चुन लिए गये हैं। इस चुनाव की विशेषता यह रही कि आपने किसी भी वोटर को न हो पत्र लिखा और न ही किसी प्रकार की दौड़ धूप की, उसके बावजूद भी आपके तेजस्वी व्यक्तित्व के कारण आपको सबसे अधिक मत प्राप्त हुये। वास्तव में डाक्टर साहिब के जीवन एवं सेवाओं की छाप इतनी गहरी है कि आज वे चण्डीगढ़ ही नहीं वरन समस्त शिक्षा जगत के लो प्रिय विद्वान हैं। आर्य समाज का बड़ा सौभाग्य है कि आप जैसे उन्नत व्यक्तित्व के धनी वैदिक सिद्धान्तों के [illegible]। आपके पुरुषार्थ से ही पंजाब विश्वविद्यालय में दयानन्द पीठ की स्थापना हुयी जो बहुत बड़े गौरव की बात है। डा० रामप्रकाश जी की ओर सफलता के लिए हार्दिक बधाई।

युवा संन्यासी स्वामी धर्मवेश का विदेश प्रस्थान

आर्य समाज एवं वैदिक सिद्धान्तों के प्रचारार्थ युवा संन्यासी स्वामी धर्मवेश जी २३ दिसम्बर १९७६ को प्रातः सिंगापुर के लिए रवाना हो गये। स्वामी जी एक वर्ष तक सिंगापुर में हिन्दी शिक्षक एवं धर्म प्रचारक के रूप में कार्य करेंगे। स्वामी धर्मवेश जी उच्च शिक्षा प्राप्त योग्य नौजवान हैं। आपने हिन्दी की एम०ए० एवं आयुर्वेद की बी० आई० एम० एस० उपाधियां प्राप्त करने के बाद सामाजिक कार्य करने का बीड़ा उठाया। और गत वर्ष मुजफरनगर आर्य समाज शताब्दी समारोह के अवसर पर आपने अपने ब्रह्मचर्य से सीधा संन्यास की दीक्षा लेकर युवा पीढी के सामने-त्याग का एक जबरदस्त उदारण प्रस्तुत किया। इससे पूर्व आप गुरुकुल शुक्रताल में स्वामी आनन्दवेश जी के सानिध्य में भी रह चुके हैं। आर्य समाज में नौजवानों के लिए आप प्रेरणा का कार्य करेंगे। इसी दृष्टि से आप ने विदेश जाने का निश्चय किया और गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में रहकर आपने अपनी तैयारी की। २३ दिसम्बर को प्रातः ही आपको विदाई देने के लिए आर्य जगत के प्रसिद्ध संन्यासी एवं आर्य प्रनिनिधि सभा पंजाब के प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी, गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के आचार्य स्वामी सुधानन्द, वेदप्रचार अधिष्ठाता स्वामी चन्द्रवेश, क्रान्तिकारी भजनोपदेशक स्वामी रूद्रवेश, दिल्ली के युवानेता प्रेमपाल शास्त्री, जगवीर सिंह सम्पादक राजधर्म आदि ने दिल्ली पालम हवाई अड्डे पर आपका फूल मालाओं से स्वागत किया। इनके अतिरिक्त श्री प्रकाशचन्द जी, नरेन्द्र जी, चौ० सुमेरसिंह मकड़ौली खुर्द, रामकुमार, प्रेमसिंह, फूलसिंह पथिक (ड्राईवर) एवं प० रामचन्द्र (स्वामी धर्मवेश के पिता जी) आदि भी पालम पर पहुंचे और आपको भाव भीनी विदाई दी। स्वामी जी की यह विदेश यात्रा सफल रहे प्रभु से यही प्रार्थना है।

भरतु और खजानी

★ धर्म सिह नादान

चौ० भरतु हुक्का पी रहा है और अपने आप कुछ बुड़बुड़ा रहा है।

रिसाल सिंह का प्रवेशः–

रिसाल सिंह—भाई साहब नमस्ते।

भरतुः— नमस्ते भाई नमस्ते। रिसाल सिंह, आज्या भाई, लै न्यू नै बैठ। सरकते हुऐ।

रिसालसिंह– बांवा बाही करली कै, आज हल नहीं जोड़या।

भरतु-- भाई यौ कुणबाये बस मैं कोन्या, वा राण्ड तै आधी रात लिकड़ कै गई थी, इब ताहीं ना आई सै, ना ढाण्डयां आगै न्यार गेर कै गई। ना उस छोरे का बेरा कित लिकड़ ग्या

रिसाल सिंह– न्यार तंनै गेर लिया होता, यौ कं हल जोड़न का वख्त रह रहा सै ८ बज रहे।

भरतु— भाई मेरै तै माड़ी सी चोट लाग रही सै, कौडा मूध्या ना हुआ जाता। अरे भाई इस राण्ड नै शिवजी की घणी चिंता रहै सै। कुणबा जाप्रां चाहे धाड़य कै

(खजानी का प्रवेश)

खजानी— के चुगली कर रहया सै, तेरै सारी हाण मेरा रोवणा पड़्या रहै सै।

रिसालसिंह–भाभी नमस्ते, कड़ै गई थी

खजानी— नमस्ते, कितै ना आड़ये थी, देवर और सुणा ठीक ठ्याक सै

रिसाल सिंह–समझ गया मन्दिर में गई होगी। साच्यहें बावलिये रही दुनिया बदलगी, थम ना बदली।

भरतु— जा माड़ी सी चाह बणा ल्या, आप तैं बी देख लिया कर कोण आ रहया सै।

ओम— यां कै बटिया घालण आ रहया सै। आड़ये ना रहै सै रोज।

खजानी— दूध तै कोन्या आज,

भरतु— सांझ ने धरणा नहीं, प्या आई होगी उस साण्ड नैं। दिखैं सैं लखण।

खजानी— तु तै न्युये जल्या करै, साधु सन्ता नैं देखकै वो कै रोज आवै सै बिचारा।

रिसाल सिंह–कौण आरहया सै आज, किनै बखतै इकतारा सा बाजता सुणै था।

खजानी— बड़ा आच्छा सन्त सै, इसी आच्छी-आच्छी बात बतावै सै बुझै मतना।

रिसाल सिंह–ये पाखण्डी हों सै, आच्छे उच्छे ना हुया करैं बावली, इन नैं तं इस देश का नाश कर दिया, दिखै वालकां नैं सुल्फा दारू पीवणी ये सिखा दं लुगाईयाँ नै ठगं ले ज्यां, छान्य जलवादें, बिटोड़े फुंकवादे आर तम इन नैं दूध चूरमे खुवाओं।

भरतु— अरै या तै भाई शिवजी पूजण जा सै, देखिये इस की घाघरी मां तै बांस आवै सै अर शिवजी नैं नुहावती हाण्डै से, सप्त ना आवती।

खजानी— तेरे तैं बी कोये सुगला होगा, ७-७ दिन बी ना नहावै।

भरतु— मेरा केसै मैं हाली माणस सूं।

खजानी— आच्छा पड़या रहे, बोलवाला, सै जिसा

भरतु— जिब न्यु ना मिलं भगवान कदे तेरै वहम होना।

खजानी— तु बतादे तै क्योंकर मिलैगा।

ओम— मैं बताऊं ताई (गाना गा कर) तेरे मन...
तेरे मन के चाहे तैं, झुठे ढोगं रचाए...
भगवान मिलै ना बावली, तेरे मन के...
शिवजी पै नीर चढ़ाये, तैं जदोश हरे के...
तैं, मन्दिर मैं टाल बजाये तैं भगवान मिलै...
कान्धै काम्बल ठाये तैं, तन मैं राख रमा...
तैं, दिखे चटियल मूंड मुडाये तैं, भगवा...
मिलै ना–
गंगा जमना के न्हाये तै. सोलह संस्कार
कराये तें मावस ने पोप जिमाये तैं भगवा...
मिलैना इकतारे धंडे बजाये तैं फिर उ...
सुर ते गाये तैं, सत्संग पै माल उडाये
भगवान मिलैना–धर्मसिह सब तैं हिल...
बिना, फिर दिल के दीपक जले बिना,
सुरत निरतं में मिले बिना भगवान मि...
ना बावली। तेरे मन के चाहे त–

भरतु— और इन दुष्टों का नाम जा रा देख जो दुनिया नै खाण नै दे उसनैं ये खुवावै। सारी गंगा जटा में समेट ली, उसनै एक बालटी नै नहावै रै देखो। पाखण्ड रै

ओम— ताऊ नरक मैं ताई तनै बी गले ये ले ज्यागी। करड़ा हो लिये।

भरतु— आ रै तुं गाया करै वाहे बात इस राण्ड नैं सुणा दे जे किमे मान ज्या तै या।

ओम— (गाता है) जागे नरक द्वार यार भगवान भकावणिया—

गाना—

जागे नरक द्वारा यार भगवान भकावणिया
डूबगे मझधार, यार भगवान भकावणिया।
इनसान से नफरत करते हैं, फिर ध्यान हरि का धरते हैं
पाप की जोत जगावणियां —२
दिन भर जुलम कमाते है, फिर श्याम नैं सण्ख बजाते है,
नकली श्यान बणावणियां—२
उपर से तन उजियाले है, ये पापी दिल के काले है,
झूठा नैम जतावणियां। —३
जिन नें ठेका लिया धर्म का, अपणै ना पड़दा ल्याहज सरम का।
ये कपटी आपा चाहवणिया—४
धर्मसिंह ये नादान ज्ञान बिन खाली, रै जो माल चरैंसैं ठाली,
मोटा पेट फूलावणिया—५

भरतु— आई किमे समझ में यो छोरा कहरहया सै।

रिसालसिंह— इसी तावली समझ मे ना आया करं इनकै— दिखे, उरे नै सुणा बावली (खजानी की तरफ इसारा करके) दिखे अपने पति की सेवा करै, आये गये अतिथि की सेवा करै अपने पड़ौसी तैं मेल जोल तैं रहै। अपनी औलाद नैं पढावैं लिखावै। आच्छा उढ़ावै पराहवै।

ओमप्रकाश—पति की सेवा करै के, खुरहरा फेरण लागज्या, ताऊ, ताऊ। मनैं देखी एक दिन सूबे का बहू, दो ईटां का सिर जोड़ रही, और उननैं लाग री दाबण, मैं बोल्या या ना कहे। तेरा कमाऊ जिवता रहें, तु बूढ़ सुहागण हो, तेरै बेटे हो मेरे पां दाब के दिखावै नै, मा तनै आसोस दे दे ठाडी भर दयूं तै।

खजानी— मैं तै जासू कोण भीके थारी गेल। सारे एक से हो रहे सै मैं तै बहू का गण्डा बणावावण गई थी उसके माड़ासा ओपरा सा हो रहया सै।

भरतु— भाई रिसाल सिंह के हो सै यो ओपरा पराया तु भी तै जाण सै लिये देखिये म्हारी तैं बहुं कतीये मरली। या राण्ड तै किते दिखावै ना।

रिसालसिंह– जा बुला ले बहु नैं आड़ये लिया वा नैं,

भरतु— खड़ी होले नैं, सुणता कोन्या कानां पर कै तारै सै बातां नैं।

ओम— ताऊ, कतिये कानां पर कै सरड़क बनारही सै।

खजानी— (जोर की आवाज दे कर राजो, राजो हे) ऊरे नैं आईये।

भरतु— इसका बोलणा देख, ऊंये मारै सै रुके।

ओम— जण मण्डी मैं आ रही सै।

(राजो आती है। और आ कर बैठ जाती सै

रिसालसिह—हाथ दिखाइये बेटी। सरमावण की बात नहीं सै, मेरे आगे सारी साच्ची साच बताईये। बेटी जीभ काढिये दिखां।

राजों— जीभ दिखाती है।

रिसालसिह—कुछ खाया सै बेटी।

राजो— ना दादा।

रिसालसिह– बहु तै मार ना ग्यरी, आं रै मै आडये ना था। कदे बी ना दिखाई। भाई इस का तै खून बसान तें रहग्या।

भरतु— भाई मनै तै के बेरा घर मे के हो रहा सै अर या राण्ड सै जिसी तुं जाणै सै।

रिसालसिह– कागज पीलसन मंगाले, में दवाई लिखवादू सूं। झज्जर तें मंगालिये देशी दवाईयां की दुकान पर तें।

भरतु— वा भाई कलोईयां नें खोल राखी सै (गुरुकुल कांगड़ी वाली) उस पर तें।

रिसालसिह– हां उसे पर तें ल्याईये ठीक देगें।

ओम— ल्या ताऊ बोल्य क लिखणा सै।

रिसालसिह–ना मंनैं दे में लिख दुयूं।

ओम— ताऊ बस तूं बोल दे, मै बोलण तें पहल्यांए लिख दुयूंगा।

रिसालसिह–लिख, गुरुकुल कांगड़ी का लोहास्व एक बोतल, और चन्द्रप्रभावटी।

ओम— ताऊ जगाधरी का बोतल ... ...।

रिसालसिंह–राजो बेटी गोडे से टूटे रहते होंगे।

राजो— हां दादा आंसग ये कोन्या देही मै ।

रिसालसिंह–रोटी नहीं भावती होंगी।

राजो— दादा रोटी खायां तै मेनैं ५-६ दिन होंगे।

रिसालसिंह–अच्छा जा बेटी। (राजो चली जाती है।) (भरतु से पूछता है कि बहु के पेट में बच्चा है?)

भरतु— मनैं तै भाई बेरा ना इसै नै बेरा होगा।

खजानी— ५ महोने का सै।

रिसालसिंह–मार ना दई बहु तै। मनैं हजार बै समझाली किमे किसी कै होज्या तै मने दिखा लिया करे, तेरे किमैं पाईसे लागै सें।

भरतु— भाई इस नैं तै इस घर कै पहिया लावणा सै।

ओम— ताऊ, जागी चोंकस हो लिए, बाबा तें बतलारी सै।

खजानी— बईमान के बीज नै पाड़ दूयूंगी बिचाले तैं, उलटा बोल्या तै। तेरी मां चाली जागी बाबा गेल्यां।

ओम— ताई उखरागी सै। डाटियों भाईयों।

(लाला जी का प्रवेश)

लाला जी– जय रामजी की, भाईयों।

भरतु, रिसाल सिंह, खजानी आदि जयरामजो की आईये।

लालाजी— खजानी की तरफ इसारा करके, आज तै भाभी किमै बखतै पासणा पाटयरहा था कित जावो थो। अर दिखे म्हारै भी वा बनारसी की मां बखते उठली थी मै बूझण लाग्या तै दिखे पाडण भाजीं।

ओम— बान्ध्य नहीं राखी थी लाला जी।

लालाजी— आदमो किते तेरे बाप दादा कै बान्धे जां सैं उतका उत।

ओम— आदमी किते आदमीयां नैं पाड़या करैं के उत के उत।

(एक लड़की का प्रवेश)

खजानी— आंरी ताई आज्या नैं मेरी मां हर तैं कोढ़ाणें की तेरी बाट देखण लागरी सैं।

ओम— चाल बेटी इब आई माड़ी सी कण्ठी बान्ध्य ल्यूं।

ओम— ताई तनैं एक बात बताऊं, मानैं तै।

खजानी— पड़या रै बेईमान ढेड मैं सब जाणूं सूं तेरी बातां नैं।

ओम— दिखे गेले में कैम्प लाग्य रहया सै, तेरी (नसबन्दी करदेगें)

खजानी— तेरै बाबू की करेंगे बेईमान, मेरै तै बालक होणे बी बन्द होगे। अर वो आऐ साल १ बना दे, बैरी, १०-१२ नावड़ते बी कोन्या घर मैं।

अखिल भारतीय आर्य महिला सम्मेलन धूम-धाम से सम्पन्न

नई दिल्ली २० दिसम्बरः– आज यहां जोरबाग नई दिल्ली में अखिल भारतीय आर्य महिला सम्मेलन विशाल स्तर पर मनाया गया। विभिन्न प्रान्तों विशेषकर दिल्ली, हरयाणा, उत्तरप्रदेश आदि से लगभग दस हजार महिलाओं ने सम्मेलन में भाग लिया। और आर्य समाज के इतिहास में एक जबरदस्त उदाहरण पेश किया। सम्मेलन की संयोजिका माता शकुन्तला जी के कुशल नेतृत्व में आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की गई थी तथा दिल्ली की माताओं एवं बहनों ने दिन-रात जुट कर के इसमें अपना योगदान दिया। एक-२ मौहल्ले में जाकर माताओं ने दान इकठ्ठा किया और आर्य समाज के नाम को घर-२ पहुंचाया। सम्मेलन में श्री मति शारदा रानी गृहराज्य मन्त्री हरयाणा, श्री मति सुभद्रा जोशी संसद सदय, श्री मति सविता बहन, तथा अन्य योग्य विदूषी बहनों ने पधार कर सम्बोधित किया और मातृ शक्ति को देश एवं समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारियों से अवगत कराया। धन्य है दिल्ली की महिलाओं की संगठन शक्ति जो इतने विशाल स्तर पर आयोजन पूरे जोश-खरोश के साथ हुआ। कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्होंने यह चेतावनी दी कि हमारी चाहे सारी जायदाद भी बिक जाए पर इस महिला सम्मेलन को सफल नहीं होने देगें। और उन्होंने हर प्रकार से सम्मेलन के विरूद्ध अफवाऐं फैलाकर रूकावटें डालने का प्रयास किया। परन्तु बधाई है माताओं बहनों को जिन्होंने यह सफल ऐतिहासिक सम्मेलन करके ऐसे निकृष्ट लोगों की नाक जमीन पर घिसा दी और माफी मांगने पर मजबूर कर दिया। आर्य समाज का सौभाग्य है जो महिला जगत में इतना साहस एव आत्म-विश्वास जाग गया है। अब आर्य समाज का भविष्य उज्जवल हो रहा है और महिला एवं पुरुष जगत दोनों क्षेत्रों में सक्रिय एवं सबल नेतृत्व उभरकर सामने आने लगा है। केन्द्रीय आर्य महिला सभा की प्रधाना श्री मति सुशीला देवी, मन्त्राणी सरला देवी एवं कोषाध्यक्ष बहन तारावैद आदि के विशेष पुरुषार्थ से दिल्ली में यह सम्मेलन सफल हुआ।

स्वामी रुद्रवेश द्वारा

आर्य समाजों में वेद प्रचार

आर्य समाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक एवं क्रान्तिकारी संन्यासी स्वामी रूद्रवेश जी ने गत तीन मास में हरयाणा तथा आस पास के क्षेत्रों में घूम-घूम कर प्रचार किया जहां भी स्वामी जी का कार्यक्रम हुआ वहां पर सैकड़ों लोग आर्य समाज के अनुयायी बने। स्वामी जी की ओजस्वी वाणी एवं तेजस्वी व्यक्तित्व से विशेष रूप से युवक प्रभावित होते हैं और आपकी हर स्थान पर माँग रहती है। कार्यक्रम का विवरण इस प्रकार से है

१ आ० स० गुरुकुल कांगड़ी (हरिद्वार :—१-२ अगस्त को प्रचार हुआ। ३-४ अगस्त को हरिद्वार में अवधूत आश्रम में। गुरूकुल कांगड़ी से प्राप्तधन १५१ रूपये

२ आ० स० रामनगर (जीन्द):—९ अगस्त को प्रचार हुआ। सभा के लिए ५० रूपये प्राप्त हुए

३ मिर्जपुर [हिसार]:–१०-११-१२ अगस्त तीन दिन तक जोरदार कार्यक्रम रहा। १५६ रूपये प्राप्त हुए। वर्षा के बावजूद भी प्रचार चलता रहा।

४ आ० स० गतौली [जीन्द] :—१५-१६ अगस्त को आ०समाज की स्थापना की। तथा प्रचार किया। सभा हेतु ८१ रूपये प्राप्त हुये।

५ आ० स० थुआ [जींद] :—२३-२४-२५ अगस्त को प्रचार किया २५ युवकों को यज्ञोपवीत दिए तथा शराब छुड़ाई। सभा हेतु १४३ रूपये प्राप्त।

६ आ० स० डाहोला [जींद] २५-२६-२७ अगस्त को यज्ञ एवं प्रचार किया २५ पुरुषों एवं ५ महिलाओं ने जनेऊ लिए १५० रूपये की राशि मिली

७ आ० स० बुडायन [जींद]:—२८-२९-३० अगस्त वेद प्रचार सम्पन्न हुआ सभा हेतु २०८ रूपये की राशी प्राप्त हुई

८. आ० स० मखण्ड (जीन्द) ३१ अगस्त व १-२सितम्बर तीन दिन तक ग्राम मखण्ड में प्रचार हुआ। आर्य समाज की स्थापना की गई तथा ३० युवकों ने जनेऊ लिए। सभा को २२५ की राशी प्राप्त हुयी।

९. आ० स० कनीना (महेन्द्रगढ] :—४-५-६ सितम्बर को प्रचार हुआ तथा स्वामी चन्द्रवेश जी वेद प्रचार अधिष्ठाता के वेद विषयक व्याख्यान हुये। श्री रामकुमार, सूबेसिंह तथा स्वामी जी के भजनों से लोग झूम उठे सभा को २०० रूपये की राशि प्राप्त हुई।

१०. आ० स० करेला [जींद] :–आर्य समाज की स्थापना हुयी ९-१०-११सितम्बर को वेद प्रचार हुआ युवकों ने यज्ञो पवीत लिये २५० रूपये की राशी प्राप्त हुई।

११. आ० स० काठमण्डी(रोहतक):–वेदप्रचार सप्ताह १३ से १६ सितम्बर तक हुआ सभा को २०० रूपये की धन राशी प्राप्त हुयी।

१२ आ० स० गुरदासपुर (पंजाब):–१७-१८-१९ सितम्बर को वार्षिक उत्सव सम्पन्न हुआ। सभा को वेद प्रचार हेतु २०० रूपये प्राप्त हुये।

१३. आ० स० खरल (जींद):–२३-२४-२५ सितम्बर को आर्य समाज का प्रचार हुआ। सभा को ८३ रूपये प्राप्त हुये।

१४. लोन (जींद):–२६ सितम्बर को प्रचार व यज्ञ हुआ ८३ रूपये प्राप्त हुये।

१५. कन्हड़ी (जींद):–२७ सितम्बर को प्रचार हुआ। ६० रूपये की राशी प्राप्त हुई

१६. आ० स० धतोर (गुड़गांवा):—२-३ अक्तूबर को वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ है। सभा को १७५ रूपये की राशी प्राप्त हुयी।

१७. आ० स० खन्नोदा (कुरूक्षेत्र):—७-८ अक्टूबर को वेद प्रचार हुआ। सभा को १६४ रूपये की धन राशी मिली।

१८. आ० स० नली रोड़ान (करनाल):–९-१० अक्तूबर को कुटिया मेला पर प्रचार किया। धन राशि १०५ रूपये प्राप्त हुयी।

१९. आ० स० करेड़ा (मेरठ उ० प्र०):—११-१२-१३ अक्टूबर को वार्षिकोत्सव हुआ १७० रूपये प्राप्त हुऐ।

२०. आ० स० बफेडा (अलीगढ उ० प्र०):–१४-१५-१६-१७ अक्तूबर को वार्षिकोत्सव सम्पन्न हुआ। सभा हेतु १३० रूपये प्रातत हुये।

२१. आ० स० पाड़ला (कुरूक्षेत्र):–२०-२१ अक्तूबर को ग्राम पाड़ला में आर्य समाज की स्थापना की। श्र लाल सिंह आर्य ने व्यवस्था की। ५ जनेऊ दिए तथा १० व्यक्तियों ने शराब छोड़ी।

२२. आ० स० औगंद (कुरुक्षेत्र) :–२३से२५ अक्टूबर तक प्रचार व यज्ञ हुआ आर्य समाज की स्थापना हुयी। कई लोगों ने हुक्का शराब छोड़ने के व्रत लिए। सभा हेतु १५५, रूपये की राशी मिली।

२३. आ० स० जाजनपुर (कुरूक्षेत्र) :-२७ अक्टूबर को प्रचार किया एवं गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के लिए अन्न संग्रह किया। सभा हेतु ३५,रुपये मिले।

२४. आ० स० फरल (कुरूक्षेत्र) :-२६ अक्टूबर को प्रचार एवं गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के लिए अन्न संग्रह किया तथा बिशनसिंह एडवोकेट व स्वामी सुधानन्द के व्याख्यान हुये।

२५ आ० स० खनौन्दा में वेदप्रचार हुआ तथा अन्न संग्रह किया। स्वामी सुधानन्द तथा बिशनसिंह एडवोकेट भी पधारे।

२६. आ० स० खठकड़ (कुरूक्षेत्र) :-२९-३० अक्टूबर को वेद प्रचार हुआ १०६ रुपये की राशा प्राप्त हुयी

२७. आ० स० सोलुमाजरा (कुरूक्षेत्र) :-३१ अक्टूबर को धूमधाम के साथ प्रचार हुआ तथा बिशनसिंह एडवोकेट का व्याख्यान हुआ।

२८. ५-नवम्बर से ७ नवम्बर तक आर्य समाज शताब्दी समारोह जयपुर में भाग लेकर अपने प्रचार से हजारों लोगों को मन्त्र मुग्ध किया।

चुनाव :- आर्य समाज गन्नौर मण्डी (जिला सोनीपत)

प्रधान–चौ० साबूराम मल्होत्रा
मन्त्री–हरिचन्द बत्रा
कोषाध्यक्ष–बिशनाराम बत्रा
पुस्तकाध्यक्ष–बारात घर व्यवस्थापक हरिचन्द बत्रा।

आर्य समाज विनय नगर–नई दिल्ली

प्रधान–वैद्य श्री प्रकाश चन्द शास्त्री
मन्त्री—श्री बहोरी लाल काश्यप
कोषाध्यक्ष—ओम् प्रकाश बहल
पुस्तकाध्यक्ष —अमृतसिंह पाल
लेखानिरीक्षक—अमरसिंह चौहान

आर्य समाज छोत

दिनांक १०-१२-७६ को आर्य समाज छोत का सर्व सम्मती से स्वामी रुद्रवेश जी की अध्यक्षता में चुनाव इस प्रकार सम्पन्न हुआ :-

१ प्रधान : श्री बीरू राम जी पहलवान
२ मन्त्री : श्री दरिया सिंह जी
३ कोषाध्यक्ष : श्री धर्मपाल जी आर्य
४ पुस्तकाध्यक्ष : श्री चन्द्रभान जी आर्य
५ प्रचार मन्त्री : श्री जगतसिंह जी

(पृष्ठ १२ का शेष)

सकती और जिन्हें कभी प्राप्त भी हो जाती है उन्हें सदा प्राप्त नहीं रहती है। भगवान राम और कृष्ण की, महात्मा बुद्ध और शंकर की, ऋषि दयानन्द और महात्मा गान्धी जैसे महापुरुषों की संगति उनके काल के सब लोगों को प्राप्त नहीं हो सकती और जिन्हें सौभाग्य से कभी प्राप्त भी हो जाती है उन्हें सदा प्राप्त नहीं रह सकती। ऐसे श्रेष्ठ महापुरुषों की संगति कुछ लोगों को कुछ काल के लिए ही प्राप्त हो सकती है।

साधारणतया हमें बुरी संगति ही मिलती है

अधिकांश में तो हम सब सांसारिक लोगों को आपस में अपने जैसे सांसारिक लोगों की संगति ही प्राप्त होती है। हम सभी सांसारिक लोग अच्छाइयों और बुराईयों के मिश्रण हैं। और हमारा दुर्भाग्य यह है कि प्राय: हम में अच्छाइयां कम तथा बुराइयां अधिक रहती हैं। हम सांसारिक लोगों में बुराइयां कितनी अधिक हैं इसे जानने के लिए किसी दूसरे की ओर अंगुलि उठा कर दिखाने की आवश्यकता नहीं है कि देखो! तुम में यह दोष है और वह दोष है हम में से हर कोई अपनी आंखें बन्द करके अपने हृदय की पड़ताल करले, हमें पता लग जायेगा कि हम में कितनी बुराइयां हैं। हमें पता लगेगा कि काम हम में है, क्रोध हम में है, लोभ हम में है, ईर्ष्या और द्वेष हम में हैं, लोभ हम में है, आलस्य हम में है निन्दा-चुगली हम में है, हिंसा हम में है, अन्याय और झूठ हम में है। कौन सा दोष है जो हम में नहीं है? ऐसे अच्छाई और बुराई के मिश्रण, जिन में अच्छाई कम और बुराई अधिक है, हम सांसारिक लोगों की संगति आपस में एक दूसरे को मिलती है। इस संगति का परिणाम यह होता है कि हम सभी अच्छाई और बुराई का मिश्रण बने रहते हैं—ऐसा मिश्रण जिस में प्राय: अच्छाई बहुत कम रहती है और बुराई बहुत अधिक हमारे जीवन में बुराई रहने का परिणाम यह होता है कि हमारे आचरण और कर्म अशुभ रहते हैं। और अपने इन अशुभ कर्मों का फल भगवान् की न्याय-व्यवस्था के अनुसार हमें भांति-भांति के कष्ट-क्लेशों के रूप में भोगते रहना पड़ता है। हमारी इन बुराइयों और अशुभ कर्मों के कारण हम वैयक्तिक जीवन भी भांति-भांति के दुःखों से पीड़ित रहते और हमारे राष्ट्र भी क्लेशित रहते हैं। इन अपने अशुभ निन्दित आचरणों के कारण न वैयक्तिक रूप में उठ पाते हैं और न ही अपने राष्ट्रों को उन्नत कर पाते हैं।

राजधर्म पाक्षिक के सदस्य ब[illegible]

ज्ञानी जैलसिंह का निमन्त्रण की [illegible] एम० एल० ए० के माध्यम से पं० मुरारीलाल ने स्वामी जी के पास भेजा तो उन्होंने सभी कार्यक्रम छोड़कर पंजाब जाने का निश्चय कर लिया। यह सम्मेलन अपने आप में काफी महत्व पूर्ण था क्योंकि इसका प्रबन्ध एवं आयोजन पंजाब सरकार की ओर से मुख्य मंत्री ज्ञानी जैलसिंह की अध्यक्षता में किया गया था। राज्य स्तर पर तैयारियां हो रही थी हर मजहब एवं संस्था के लोग इसमें भाग ले रहे थे। इसी दृष्टि से यह एक अच्छा मौका था। जाने की तैयारी हो गई परन्तु २० दिसम्बर को अखिल भारतीय आर्य महिला सम्मेलन में माता शकुन्तला जी के आदेश से एक दिन के लिए दिल्ली में रहने के बाद २१ दिसम्बर को प्रातः ही दिल्ली से चलकर स्वामी इन्द्रवेश जी पहुंचे। जीप लेकर हम पहले से ही पानीपत पहुंच चुके थे। जीप में वेद प्रचार अधिष्ठाता स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी रुद्रवेश जी, सूबेदार भरत सिंह, सुमेरसिंह जी, रामकुवार, प्रेम तथा मैं स्वयं भी था। हम सभी चण्डीगढ़ के लिए रवाना हुए क्योंकि वहां से युवा नेता डा० रामप्रकाश जी को भी साथ लेना था। रास्ते में पूज्य स्वामी भीष्म जी महाराज से भी हम आशीर्वाद लेने के लिए घरोण्डा में उनसे भेंट करने के लिए गए। उसके बाद चण्डीगढ़ से डा० रामप्रकाश जी को साथ लेकर रात को लगभग ११ बजे हम जालन्धर पहुचे पं० मुरारीलाल जी डा० पसरीचा जी सरदारी लाल जी, स्वामी वेदानन्द जी आदि तलवन जाने की तैयारी में जुटे हुए थे। परन्तु हमें आश्चर्य उस समय हुआ जब जालन्धर जाने के बाद बताया गया कि आर्य समाज के ही कुछ शरारती तत्व हमारे इस कार्यक्रम से निराश एवं दुःखी है। और वे स्थानीय अधिकारीयो से मिलकर यह प्रयास करते रहे हैं कि हमें पुलिस द्वारा तलवन जाने से रोका जा सके। परन्तु लाख प्रयत्न करने के बाद भी वे इस षडयन्त्र में सफल नहीं हो सके बलिक हताश होकर एक तथाकथित आर्य नेता को तो दिल का दौरा ही पड़ गया। परन्तु धन्य है ज्ञानी जैलसिंह जिसने आर्य युवकों का इतना सम्मान किया। और आर्यसमाज को अपनी बपौती समझने वाले लोगों के षडयन्त्रों से तलवन के इस महान समारोह को सुरक्षित रखा और एक बुद्धिमत्ता का परिचय दिया। २२ दिसम्बर को तीन चार कारों एवं अपनी जीप के द्वारा जब हम वीर प्रसविनी पावन भूमि तलवन पहुचे तो नवाँशहर, मोगा, लुधियाना, रोपड़, अमृतसर, फगवाड़ा फरीदकोट, आदि स्थानों से पहुचेहुए हजारों आर्यों के गगन भेदी नारों से इन्द्रवेश की जय हो स्वामी अग्निवेश की जय हो, पं० मुरारी लाल जिन्दाबाद आदि नारें लगने लगे। स्वामी इन्द्रवेश को फूल मालाओं से लाद दिया गया सारा वातावरण जोश से ओतप्रोत था। हम सभी यज्ञवेदी पर पहुंचे ही थे कि उसी क्षण मुख्य मन्त्री ज्ञानी जैलसिंह भी पूर्णाहुति देने के लिए यज्ञवेदि पर पधारे। और जिस प्रेम के साथ ज्ञानी जी स्वामी जी से गले मिले वह दृश्य अविस्मरणीय है। दोनों ही काफी देर तक मुस्कराहटों के बीच है। इसके बाद पंडाल में मंच पर नेताओं के भाषण हुए और स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धाञ्जलि दी ज्ञानी जैलसिंह ने स्वामी श्रद्धानन्द स्मारक बनाने एवं तलवन को धार्मिक स्थान के रुप में विकसित करने की घोषणा की। स्वामी इन्द्रवेश जी ने अपने विशेष सन्देश में कहा कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के नाम से गरियों के लिए निःशुल्क आयुर्वैदिक औषधालय वहां चलाना चाहिए क्योंकि स्वामी श्रद्धानन्द जो सदैव गरीबों एवं अछूतो के लिए कार्य करते थे। इसी प्रकार से अन्य कई राजनैतिक एवं धार्मिक नेताओं ने भी स्वामी श्रद्धानन्द को श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर विशेषतया नवाँशहर के हमारे साथियों की केसरिया पगड़ी तो अत्यन्त ही प्रभावशाली लगती थी। पूरे उत्साह के वातावरण में पंजाब प्रान्त का यह सम्मेलन सम्पन्न हुआ और हमारे साथियों का काफी हौसला बढ़ा। पूरे प्रांत में आशा की एक नई किरण फूट पड़ी।

सम्मेलन समाप्ति के बाद तलवन से हम दिल्ली के लिए रवाना हुए और रात के लगभग ग्यारह बजे चौ० बलवीर सिंह लाठर के घर हमने निवास किया। नौ व्यक्तियों का काफिला था फिर भी लाठर साहब एवं उनकी धर्मपत्नी एवं बच्चों ने बहुत शीघ्रता से श्रद्धा के साथ भोजन कराया और सोने की अच्छी व्यवस्था की। प्रातः ही चार बजे उठकर हम फिर दौड़ पड़े क्योंकि २३ दिसम्बर का बड़ा व्यस्त कार्यक्रम था। प्रातः ९ बजे हम पालम हवाई अड्डे पर स्वामी धर्मवेश को सिंगापुर के लिए विदाई देने पहुचे। और फूल मालाओं से उनका स्वागत किया। उनको भाव भीनी विदाई देने के पश्चात गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में भोजन करके स्वामी सुखानन्द जी को साथ लेकर हम पलवल पहुंचे। जिला गुड़गांव का स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्ध शताब्दी सम्मेलन बड़ी धूमधाम से मनाया गया गुड़गाँवा जिले के सभी कार्यकर्ता दल बल से पधारे। टैक्टरो एवं ट्रकों के द्वारा चार पांच हजार की संख्या

शेषांश पृष्ठ २२ पर

पी/आर टी के ६८ राजधर्म १२ जनवरी १९७७

१८, १९, २० फरवरी १९७७ को

आर्यो ! जीन्द चलो

अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के आर्य समाज के उन महापुरुषों में से थे जिन्होंने इसे जन-जन तक पहुँचाया। स्वामी जी को बलिदान हुये ५० वर्ष बीत चुके हैं। आज स्वामी श्रद्धानन्द जी के बलिदान से नई प्रेरणा लेने की जरुरत है। अतः इसी उद्देश्य को लेकर १८,१९, २० फरवरी १९७७ के हरयाणा के प्रसिद्ध नगर जीन्द में बलिदान अर्द्ध शताब्दी समारोह विशाल स्तर पर मनाया जा रहा है। जीन्द शहर हरयाणा के हृदय में स्थित है। रेल एवं बस दोनों सेवाऐं सुचारु रूप से उपलब्ध हैं। हरयाणा के किसी भी कोने से चलकर चार घण्टे में जीन्द पहुंचा जा सकता है। यह सम्मेलन हरयाणा ही नहीं बल्कि उत्तर भारत की समस्त आर्य जनता के लिए ऐतिहासिक महत्व रखता है। सम्मेलन की तैयारियां जोरों से चल रही हैं। पचासों कार्यकर्ता दिन रात एक करके कार्य में जुटे हुये हैं। परन्तु आर्यो ! यह कार्य बहुत बड़ा है। लगभग २ लाख लोगों के सम्मेलन में पधारने की सम्भावना है। आवास, भोजन एवं प्रबन्ध के कार्यों में सैकड़ों कार्यकर्ताओं की जरुरत पड़ेगी और इसके साथ ही इतने विशाल आयोजन के लिए धन की भी अत्यधिक जरुरत पड़ेगी। समय अब बहुत ही थोड़ा बाकी है। हो सकता है आपसे हम सम्पर्क न कर पाएं। परन्तु आपसे मेरी यह प्रार्थना है कि आपको जिस भी तरह से इस महान यज्ञ में अपनी पवित्र आहुति देनी है। यदि आपके दिल में स्वामी श्रद्धानन्द के प्रति श्रद्धा है और युवा पीढ़ी के लिए थोड़ा भी प्यार है तो आप अपनी कमाई में से थोड़ा सा दान इस यज्ञ के लिए अवश्य निकालें। आपके सहयोग के बल पर ही यह महान संकल्प हमने किया है। और इसके साथ ही एक सहयोग आप यह भी अवश्य करें कि तीन दिन का समय जीन्द के इस धार्मिक मेले में अवश्य लगाएं ओ३म् ध्वज लेकर, केसरिया पगड़ी बान्धे और माताएं केसरिया दुपट्टे ओढ कर जब तराने गाते हुये काफिले लेकर चलेंगे तो सच मानिए एक बार हरयाणा की धरती खिल उठेगी। महर्षि की जय-जय कार से आसमान गूंज उठेगा और सभी जगह जो बोले सो अभय वैदिक धर्म की जय का नारा सुनाई देगा। इतनी बड़ी उपलब्धि पावन आर्यसमाज की होगी। अतः आओ इस महायज्ञ का सफल करें।

विनीत

रामधारी शास्त्री 'संयोजक'

पाक्षिक

राजधर्म

प्रधान सम्पादक
स्वामी अग्निवेश

सम्पादक
जगवीर सिंह

वर्ष—८ अंक—७

१२ फरवरी १९७७

वार्षिक शुल्क-२०)
एक प्रति-१) रुपया

महर्षि दयानन्द सरस्वती

अग्नि ही मेरा रथ है ।

प्रेष्ठं वो अतिथिं स्तुषे मित्रमिव प्रियम् ।
अग्ने रथं न वेद्यम् ॥ ५ ॥

ऋषि—उशना—[illegible]वाला ।

मैं (वः) तुम्ह (प्रेष्ठं) परम प्यारे, (मित्र इव) मित्र की तरह (प्रियं) दुलारे (अतिथि) निरन्तर फेरी करने [illegible] को (स्तुषे) स्तुति करता हूँ। (अग्ने) हे [यज्ञ-[illegible] की] आग ! (वेद्यम्) तेरी प्रतीति मुझे ऐसी [illegible] है (रथं न) जैसे [योद्धा का] रथ की ।

फेरी करने वाले संन्यासी का अपना घर-घाट नहीं [illegible] है। वह निरन्तर फेरी करता है। आज इस द्वार पर [illegible] उस द्वार पर अलख जगाता है। उस का कल्याण इसी [illegible] है कि संसार-भर का कल्याण करता फिरे। उसके दर्शन का कोई समय नियत नहीं। वह आता और अपने तेजोमय [illegible] तेजोमय वेष, तेजोमय उपदेश से सभी घरवालों का कल्याण कर जाता है। वह परमप्रिय है। स्नेह का पुतला है। अपने स्नेह की ज्योति से दूसरों के हृदय में स्नेह का दीप जलाता है। फेरी करनेवाला अतिथि अचानक आता है और आते ही अपने प्रेम के पात्रों का अत्यन्त प्यारा, अत्यन्त दुलारा बन जाता है। वह परम मित्र है—आत्मा का मित्र सुधार करने वाला—सच्चा मित्र।

आज मुझे अपने अन्दर से ही एक संन्यासी के दर्शन हो रहे हैं—फेरी करने वाले अतिथि के। मेरे हृदय-द्वार पर अलख जग गई है। किसी ने धूनी रमाई है। मेरा रमता-राम [illegible] उठा है। मेरी जीवन-याग की आग अपनी तेजोमय ज्वालाओं से मेरे हृदय को प्रकाशित कर रही है, आलोकित कर रही है। लो ! मेरा संन्यासी फेरी लगाने लगा। वह विश्व-याग की आग में अपने आप की आहुति कर [illegible] उदय होते सूर्य को, दसों दिशाओं में बिखर रही लालिमा के रंग में रंगा जा रहा है। मुझे अपने [illegible] का यह रूप अत्यन्त प्यारा लगता है यह रूप स्नेह-स्वरूप है। यज्ञाग्नि का आज्वल्यमान रूप है—स्निग्ध रूप, प्रदीप्त रूप।

मैं लंगड़ा था। संसार के राज-पथ पर चलने का कोई साधन न था। विषयों की, वृत्तियों की, नैतिक उलझनों की, प्रलोभनों की भारी भीड़ में मुझे रास्ता ही न मिलता था। मुझ लंगड़े को कुचल जाने का डर था। एक नहीं, हजार समस्यायें थीं। जीवन का उद्देश्य क्या है? मेरा सम्बन्ध मेरे घरवालों से, पड़ोसियों से, ग्राम से, देश से, सम्पूर्ण विश्व के निवासियों से—नहीं-नहीं इस विशाल, अनादि ब्रह्माण्ड में विद्यमान जड़-चेतन सभी वस्तुओं से क्या है? कर्म क्या है और उसका फल क्या? विषय-वासनाओं ने मुझे क्यों घेर रखा है? मैं इनसे तृप्ति चाहता हूँ और वह मिलती नहीं आज मुझे इस फेरी वाले की अलख में इन सब समस्याओं का समाधान मिल गया है। विश्व की सम्पूर्ण सत्ता यज्ञ-रूप है। हम आग हैं और विश्व आग। जड़-चेतन—सभी इस यज्ञाग्नि के स्फुलिङ्ग हैं—चिनगारियाँ हैं। चिंगारी बन कर मेरे सम्पूर्ण देह में स्फूर्ति छा गई है। लंगड़े को रथ मिल गया है। मैं वीर हो उठा हूँ। मेरा जीवन युद्ध है—इन प्रलोभनों के, इन भय-भीतियों के, इन नैतिक उलझनों के, कठिनाइयों के, कड़ाइयों के विरुद्ध युद्ध। मैं अग्नि-देव के रथ पर चढ़ा एक साथ इन सब दुःखों के सम्मुख अकेला उठ खड़ा हुआ हूँ। आज मैं अनुभव करता हूँ। अग्नि ही मेरा रथ है, अग्नि ही शास्त्रास्त्र है, अग्नि ही मेरा अमोघ कवच है। इस सुरासुर-संग्राम में अब मुझे कौन जीत सकता है? मेरा सम्पूर्ण जीवन अग्नि की स्तुति है। मेरे अंग-अंग में अग्नि की वेदना है—अनुभूति है। मेरे रोम-रोम में अग्नि का स्तोत्र है—क्रियात्मक स्तोत्र है।

● पं० चमूपति एम० ए०

जींद सम्मेलन स्थगित

सभी आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि १८, १९, २० फरवरी को जीन्द में होने वाले श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्धशताब्दी सम्मेलन को लोक सभा के चुनाव को दृष्टिगत रखते हुये स्थगित कर दिया है। अब यह सम्मेलन मई मास में मनाया जायेगा। इसकी तिथियां बाद में तय की जायेंगी।

सम्पादकीय

शिवरात्रि का सन्देश–

आग बुझने न पाए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन में जहां अनेक महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन आता है उनमें सम्वत १८८४ विक्रमी की फाल्गुण वदी चतुर्दशी की शिवरात्रि का विशेष स्थान है । इसी शिवरात्रि के कारण हम महर्षि दयानन्द को एक युवा पुरुष के रूप पाते हैं । एक पौराणिक परिवार में जन्म लेकर जीवन में इतना क्रान्तिकारी परिवर्तन करना उसी घटना का परिणाम था जो शिवरात्रि को शिव पूजा के समय बालक मूल शंकर के साथ घटी थी । अपने पिता के साथ रात्रि जागरण का सकल्प लेकर बिना आहार खाएँ जिस समय १४ वर्ष का यह अबोध बालक शिव के दर्शन करने के लिए टंकारा में नदी तट पर स्थित शिवमन्दिर में गया, तो उसने एक अजीब दृश्य देखा जिसने उसके दिल व दिमाग को आन्दोलित कर दिया। शिव की मूर्ति पर भक्तों ने अनेक व्यंजन एवं भोग चढ़ाए। कीर्तन-भजन किए गए। पर आधी रात होते होते सभी पूजापाठ करने वाले सो गए। उनके अन्दर किसी प्रकार की जिज्ञासा नहीं थी। वे अन्धे भक्त थे, परन्तु मूलशंकर एक अद्वितीय प्रतिभा का बालक था। वह वास्तव में उस शिव के दर्शन करना चाहता था जो सर्वशक्तिमान और सर्वजगत रचयिता बताया जाता था। बड़े प्रयत्न से अपनी आखों पर पानी के छींटे मारकर वह जागता रहा सारावातावरण शान्त एवं निस्तब्ध था। उसी समय में कुछ चूहे आकर पत्थर के शिव पर चढ़े भोग को खाने लगे और वही पर टट्टी पेशाब भीं किया और उछल-कूद कर कुचेष्टा करने लगे। परन्तु सर्वशक्ति मान समझा जाने वाला वह शिव थोड़ा सा हिला तक भी नहीं। मूल शंकर के दिल में एक जबरदस्त प्रश्न पैदा हुआ कि जो शिव चूहों से अपने चढ़ावे की रक्षा नहीं कर सकता वह दुनिया की क्या रक्षा करेगा? वह वास्तविक शिव नहीं है। सच्चा शिव कहीं और है, और उसी की खोज करनी चाहिए। यह एक छोटी सी बात प्रतीत होती है परन्तु इसके पींछे बादमें एक बहुत लम्बा इतिहास बना। कई व्यक्ति यह आश्चर्य करते हैं कि इतनी सामान्य बात से क्या परिवर्तन हो सकता है। परन्तु क्या एक विशाल वट वृक्ष का कारण उसका छोटा सा बीज नहीं होता। न्यूटन ने एक वृक्ष से जब फल को जमीन पर गिरते हुये देखा तो गुरुत्वा कर्षण के एक महान सिद्धान्त का आविष्कार क्या नहीं हुआ था। वास्तव में घटना चाहे छोटी हो चाहे बड़ी महत्व घटना के आकार का नहीं बल्कि मनुष्य के मन पर उस घटना से होने वाली प्रतिक्रिया के आकार का है। बालक मूलशंकर का मन इतना ग्रहणशील और पूर्व जन्म के संस्कारों से इतना निर्मल था कि इस छोटी सी घटना ने उसके मानस मुकुर पर एक अमिट छाप छोड़दी जो उनके जीवन की मार्ग दर्शिका बनी ।

इसके बाद मूलशंकर का जीवन इसी प्रश्न के समाधान के लिए समर्पित हो गया। गृह त्याग किया, वैराग्य धारण किया, माता-पिता एवं सगे सम्बन्धियों की ममता छोड़ी, योगी महात्माओं और साधु सन्तों की चरण सेवा की, दर-दर भटके, बीहड़ जंगलों को पार किया, हिमाच्छादित पर्वतशिखिरों पर आरोहण किया, और हर प्रकार के कष्ट सहन करके भी अपनी मंजिल की ओर बढते गये। उन्होंने अपने संकल्प को पूरा करने के लिए आजीवन ब्रह्मचर्य की प्रतिज्ञा की और संन्यास की दीक्षा लेकर मूलशंकर से दयानन्द सरस्वती बन गये। कौपीन धारी ब्रह्मचारी दयानन्द के सामने "कार्यं वा साधयेयम देहंवा पातयेयम" का आदर्श कार्य कर रहा था। जिस लक्ष्य को जीवन का साध्य बनाया उससे वे कभी विचलित नहीं हुए। गुरूवर विरजानन्द के चरणों में पहुचकर अपने लक्ष्य की ओर बढने के लिए आपको सही मार्ग मिला और प्रज्ञाचक्षु गुरू ने ज्ञानाञ्जन की शलाका से शिष्य की आखें खोल दी। अब आपकी आंखों के सामने पूरे मानव मात्र की भलाई का लक्ष्य था ।

शिवरात्रि को प्राप्त महर्षि का यह बोध केवल एक व्यक्ति का बोध नहीं था बल्कि समाज की तत्कालीन पददलित अवस्था एवं अज्ञान-अन्याय के विरुद्ध एक जबरदस्त चेतना का शंखनाद था। अपने बोध को

ऋषि ने सिमेट कर नहीं रखा बल्कि जन-जन को बोध कराने केलिए जीवन लगा दिया। और परिणाम-स्वरूप जैसे दीपक जलता है और अग्निनाडग्निः समिद्यते आग से आग जलती है उसी प्रकार महर्षि से प्रेरणा लेकर समाज के लिए समर्पण करने वालों की एक लम्बी श्रृंखला बनगई। आर्य समाज को जन्म देकर ऋषि दयानन्द ने एक महान कार्य किया। इसका क्रांतिकारी इतिहास स्वर्णाक्षरों में लिखा हुआ है। आर्य समाज की क्रान्ति महलों से लेकर-झोपड़ियों तक पहुंची। महर्षि के अमर सन्देश को लेकर आर्यसमाज ने जहां व्यक्ति में क्रांति की, व्यक्तिगत जीवन की आचार संहिता तैयार की वहीं सामाजिक क्रांति का भी बिगुल बजाया। धार्मिक अन्धविश्वास, पाखण्ड, छूआ छात, नारी अशिक्षा, तथा हर प्रकार की विषमता के ऊपर महर्षि दयानन्द ने एक भयंकर चोट की थी। स्थान-२ पर इन कुरीतियों के विरुद्ध मोर्चा लगाया था। कोई क्षेत्र ऐसा नहीं था जो आर्यसमाज के कार्यक्रम से प्रभावित न हुआ हो। धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक हर क्षेत्र में इसकी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका पायी जाती है। स्वधर्म, स्वभाषा और स्वदेशी के साथ आर्य समाज ने स्वराज्य को भी अपने प्रोग्राम का आवश्यक अंग माना। ऋषि दयानन्द ने विदेशी शासन को अभिशाप बताया और राजधर्म तथा स्वराज्य की अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में निर्भीक प्रेरणा दी। व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र में परिवर्तन का शंखनाद करने वाले महर्षि दयानन्द के बारे में अमेरिका के प्रसिद्ध विद्वान एण्ड्रो-जेक्सन डेविस ने लिखा था:—मुझे एक आग दिखाई पड़ती है जो सर्वत्र फैली हुई है। इस अपरिचित अग्नि को देखकर जो निस्सन्देह राज्यों, साम्राज्यों, और संसार के प्रशासन तथा नीति सम्बन्धी कलुषों को जलाकर राख कर देगी, मैं अत्यन्त आनन्दित हो ही रहा हूँ।" यह आग दयानन्द सरस्वती के हृदय में जली थी। अनेक लोगों ने इस आग को बुझाने का प्रयास किया पर यह अमर ज्योति थी। इस को बुझाने वाले स्वयं बुझ गए। इस को प्रज्जवलित रखने के लिए स्वामी श्रद्धानन्द, पं० लेखराम, पं० रामप्रसाद बिस्मिल आदि अनेक शहीदों ने ऋषि की प्रेरणा से अपने खून की आहूति दी और इस महान् यज्ञ की सुगन्धि दूर दूर तक फैली। परन्तु शिवरात्रि के अवसर पर बड़े दुःख के लिखना पड़ रहा है कि देव दयानन्द की जलाई उस पवित्र अग्नि को जो संसार का उपकार करने और हर प्रकार की विषमता समाप्त करने केलिए प्रारम्भ की थी उसे आज ऋषिभक्त कहलाने वाले स्वयं बुझाने का प्रयास कर रहे हैं अपने गलत आचरण एवं ईर्ष्या द्वेष की आग से कुछ लोग ऋषि के मिशन को कलंकित कर रहे हैं। क्या मनुष्य और मनुष्य के बीच जातिवाद, छुआछात, आर्थिक असमानता एवं सामाजिक भेद भाव की चौड़ी खाई को हम ने पाट दिया? आज समाज तेजी से बदल रहा है। इस के शीर्षस्थ कहलाने वाले नेता व्यक्तिगत स्वार्थों की पूर्ति के लिए इस पवित्र संगठन को बेचना चाहते हैं। इनकी कथनी और करनी में जमीन आसमान का अन्तर है। ऐसी स्थिति में क्या शिव-रात्रि के पावन दिवस पर कुछ नौजवान ऐसे हैं जो महर्षि के जीवन से बोध प्राप्त कर के उन के बताए मार्ग पर चलने को तैयार हैं और मार्ग में रोड़ा बनने वाले स्वार्थी लोगों को अपनी कर्मठता से दूर हटाकर वैदिक सिद्धान्तों के आधार पर आर्यराष्ट्र की स्थापना करने के लिए अपना जीवन लगाना चाहते हैं। आशा है कि यह शिवरात्रि हमें एक नई प्रेरणा देगी और फिर नवयुवकों की विशाल सेना तैयार होगी जो अन्यायी आततायी का नाश कर विशुद्ध वैदिक व्यवस्था के लिए संघर्ष का रास्ता अपनाएगी। अतः शिव-रात्रि का यही पुण्य सन्देश है कि एक सौ वर्ष पहले जलाई गई अग्नि बुझने न पाए।

समाज सुधारक संत रविदास

जगदीश सिंह सोलंकी

महान भक्त और समाज सुधारक संत रविदास का नाम सारे भारत में प्रसिद्ध है। लोग उन्हें महान ईश्वर उपासक और सन्त के रूप में जानते हैं। देश में महा-पुरुषों को देव तुल्य माना गया है। महापुरुष जनताजनार्दन की सेवा करके या ईश्वर के उपासक बन कर ख्याति प्राप्त करते हैं। मानवता की निस्वार्थ सेवा के लिए उनके परिश्रम एवं त्याग के कारण वह अपने क्षेत्र में और अन्य स्थानों में यानि सारे देश में सन्त महात्मा महापुरुष माने जाते हैं। सन्त महात्माओं ने ऊंच नीच के भेद का सदैव तिरस्कार किया और जाति भेद की उपेक्षा की, ऐसे सन्तों में से संत रविदास का जन्म ६०० वर्ष पहले हुआ। आज रविदास की ६०० वीं जयन्ती उनकी याद में उनसे प्रेरणा लेने के लिए मनाई जा रही है।

सन्त रविदास का जन्म वाराणसी के ग्राम मंडुआडीह में माघ पूर्णिमा रविवार के दिन हुआ था ये उस जाति के थे जिन्हें बिहार और उत्तर प्रदेश में चमार, राजस्थान, मध्य प्रदेश, गुजरात में रेगर (रैदास) तथा पंजाब के जिला गुरदासपुर में आर्य कहा जाता है। रविवार के दिन जन्म होने से इनको रवि नाम से पुकारा जाने लगा।

इनके परिवार में लोग जूते बनाने का काम करते थे। इसलिए यह भी जूते बनाने का काम करने लगे। जूतों की आय में से कुछ भूखे-प्यासों की सेवा में खर्च करने का स्वभाव बन गया। इस कार्य के बाद जो भी समय मिलता वह हरि का जाप-कीर्तन में लगाते थे जिसे सत्संग कहा जाता है। कीर्तन-सत्संग करते तो अनेक भक्त स्त्री-पुरुष सत्संग में सम्मिलित हो जाते। प्राय: ग्रामों में ऐसा वातावरण होता था कि जहां कीर्तन-सत्संग होता हो वहां बिना किसी के बुलाए हीं वह सम्मिलित हो जाया करते थे।

संत रैदास ने अनेक ग्राम-शहरों का भ्रमण भी किया। राजस्थान के राज्य परिवार में जन्मी मीरा ने संत रैदास जी को अपना गुरु माना जिसके अनेक प्रमाण हैं। आखर वाई ग्राम में रैदास आश्रम है।

सत्संग के समय वह कहते थे कि मेरी यह प्रबल इच्छा है कि मेरा चित सदा प्रभु के ध्यान में लगा रहे, मैं सदा उनके दर्शन करता रहूं, मेरी जिह्वा से प्रभु के नाम का कीर्तन होता रहे। उनकी वाणी में रहस्य भावना एवं निराकार, सर्वव्यापक की उपासना के दर्शन भी होते हैं जैसा कि उन्होंने कहा—

कहे रविदास ताहि कू पूजूं ।।
जाके गांव ठांव नांव नहीं कोई ।।

यह निर्विवाद सत्य है कि संत रविदास में किसी प्रकार का लोभ एवं अभिमान नहीं था। वे अपनी सारी उपलब्धियों का श्रेय भगवान को देते थे। अपनी जाति का छुपाना वे घोर पाप समझते थे।

रविदास अपने समय में भक्ति के क्षेत्र में सिद्धि के चरम शिखिर पर थे। उनकी उपासना सहज भाव की उपासना थी। उसमें किसी पाखण्ड की गुंजायश न थी और न उनका प्रभु किसी दायरे में बन्ध सकता था। जिस प्रभु की बात रैदास करते हैं वह सभी मानवों का है, सभी मानव उसके हैं। वह भेदभाव की भूमिका से परे है। फिर उसके नाम पर ही मनुष्य में भेद क्यों? इस सम्बन्ध में रैदास की दृष्टि बिल्कुल स्पष्ट है कि विभिन्न धर्मों में प्रभु के नाम अलग अलग हैं पर है वह एक ही। अत: भक्त रैदास ने नांव ठांव विहीन सर्वव्यापी प्रभु को उपास्य बताया।

रैदास अनपढ़ थे लेकिन भक्तिभाव की तत्परता एवं ईश्वरीय विभूति ने उन्हें ऐसी आत्मिक ज्योति दी थी कि वे गूढ़ दार्शनिक विषयों को भी अपनी सीधी सादी भाषा में सरल अभिव्यक्त करते थे।

महात्मा रैदास के जीवन की चर्चा में बड़ो आलोकिक करामातों और सिद्धियों की चर्चाएं आती हैं। यहां उनकी सिद्धियों का वर्णन न कर यह कहना ही सर्वोत्तम है कि वे एक पुरुष थे।

देश के पूर्वजों में सन्त-महात्मा सेवा-भावी महापुरुषों को याद करना और उनके जीवन से प्रेरणा लेना महान शुभ कार्य है। परम संत रविदास जी के अनमोल गुणों से प्रेरणा लेकर अपना सुधार करें परिवार जाति का सुधार करें तब ही देश शक्तिशाली हो सकता है। देश में सदाचार, संयम, ब्रह्मचर्य, सेवा-भाव, राष्ट्र-भावना जागृत हो इसकी इस समय आवश्यकता है। ●

भारतीय आर्य सभा की कार्य समिति की हंगामी बैठक

लोकसभा के आम चुनाव का स्वागत

आपात कालीन स्थिति समाप्त करने और सभी राजनैतिक बंदियों को रिहा करने की मांग।

जनतापार्टी के साथ मिलकर चुनाव लड़ने का फैसला

देशभर के कार्यकर्त्ताओं से लोकतन्त्र को रक्षा के लिए चुनाव में कूदने का आह्वान

रोहतक २६ जनवरी। आज यहां दोपहर दो बजे से भारतीय आर्य सभा की कार्य समिति की एक हंगामी बैठक कार्यवाहक प्रधान श्री बिशन सिंह एडवोकेट की अध्यक्षता में हुयी। प्रार्थना मन्त्रों से बैठक प्रारम्भ की। सर्वप्रथम स्वामी इन्द्रवेश जी ने आर्य सभा तथा अन्य राजनैतिक पार्टियों की वर्तमान हालत पर प्रकाश डालते हुये यह स्पष्ट किया कि आपात कालीन स्थिति की घोषणा के बाद कोई राजनैतिक गतिविधि नहीं हो पा रही थी परन्तु लोक सभा के चुनाव की घोषणा होने और आपात कालीन स्थिति में ढील दिए जाने के बाद अब फिर राजनैतिक गतिविधियां तेज हो गई हैं। ऐसी स्थिति में आर्य सभा को भी अपनी रणनीति तय कर लेनी चाहिए। सबसे पहले स्वामी जी ने आर्य सभा के तीन वरिष्ठ कार्य कर्ताओं श्री गगा राम एडवोकेट, प० देवीराम, रोशन लाल आर्य का कार्य समिति की ओर से स्वागत करने के लिए एक प्रस्ताव रखा और कहा कि इन तीनों नेताओं ने आर्य सभा की ओर से निरन्तर २० महीने तक जेल काट कर महान त्याग एवं साहस का परिचय दिया है। इनकी कुर्बानी से पार्टी की प्रतिष्ठा बढ़ी है। इसके साथ ही आर्य सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी एव उप-धान स्वामी आदित्व वेश को अभी तक जेल में नजरबन्द रखने के लिए हरयाणा सरकार की निन्दा की गई बैठक में निम्नलिखित प्रस्ताव पारित किए गये।

आपात कालीन स्थिति समाप्त करो

आर्य सभा की कार्य समिति ने एक प्रस्ताव के द्वारा देश में लगी आपात कालीन स्थिति को समाप्त करने की मांग करते हुये यह अनुभव किया कि ऐसी स्थिति में नागरिक स्वतन्त्रता एवं मौलिक अधिकारों का कोई भी प्रयोग नहीं कर सकता है। अब जब कि प्रधान मन्त्री ने चुनाव कराने की घोषणा कर दी है तो आपात काल का कोई औचित्य नहीं है। सभा ने यह भी मांग की है कि मीसा जैसे काले कानून को भी तुरन्त समाप्त किया जाना चाहिए क्योंकि यह कोई तरीका नहीं है कि किसी नागरिक को बिना मुकदमा चलाऐ जेल में बन्द कर दिया जाए और जब तक सरकार चाहे इसे न छोड़े। इसमें सरकार तानाशाही का व्यवहार करती है और व्यक्तिगत स्वतन्त्रता का हनन होता है।

सभी नजरबन्द छोड़े जाए और चुनाव स्वतन्त्र हों

एक अन्य प्रस्ताव के माध्यम से आर्य सभा ने सरकार से यह मांग की कि सभी राजनैतिक नजरबन्दों को तुरन्त रिहा किया जाना चाहिए। सभा के प्रधान स्वामी अग्निवेश जी उप प्रधान स्वामी आदित्यवेश जी अभी तक नजर बन्द हैं जब कि अन्य पार्टियों के नेता लगभग छोडे जा चुके हैं। परन्तु अभी भारी संख्या में राजनैतिक कार्यकर्ता बन्दी हैं। आर्य सभा ने यह भी मांग की है कि लोकसभा के चुनाव स्वतन्त्र एवं निष्पक्ष करऐ जाएें। सरकार ऐसी व्यवस्था करे कि विपक्ष को वे सभी अधिकार प्राप्त हों जो कांग्रेस को हैं। रेडियो टेलिविजन तथा अखबार पर विपक्ष को भी अपना पूरा प्रचार करने का मौका मिले। इसी तरह से प्रत्येक व्यक्ति को स्वेच्छा से वोट डालने का मौका दिया जाये और किसी भी प्रकार का आतंक तथा दमन समाप्त किया जाऐ। आर्य सभा की कार्य समिति ने यह अनुभव किया कि चाहे चुनाव के लिए समय थोडा है फिर भी आने वाले चुनाव का स्वागत करना चाहिए। चुनाव से लोकतन्त्र की सुरक्षा होगी और जनता को अपना मत प्रकट करने का मौका मिलेगा।

(शेषांश पृष्ठ २३ पर)

न्यायमूर्ति खन्ना को अपने स्वतन्त्र चिन्तन और मानसिक इमानदारी की कीमत चुकानी पड़ी

● एन. ए. पालकीवाला

केशवानन्द भारती केस में सात जजों ने जो कि सुप्रीम कोर्ट में जजों की बहु संख्या थे, कहा था कि संसद को किसी भी बुनियादी अधिकार को संक्षिप्तकरने या संविधान के किसी प्रावधान को, अपनी संशोधन-कारी शक्तियों का इस्तेमाल करतेवक्त संशोधन करने का अधिकार है, लेकिन यह संविधान के ढांचे या बुनियादी निर्माण को ही परिवर्तित या नष्ट नहीं कर सकती उन सात जजों में से चीफ जस्टिस श्री एस. एम. सीकरी फैसला सुनाने के एक दिन बाद २५ अप्रैल १९७५ को रिटायर हो गए थे। जस्टिस जे एम. शेलट, के. एस. हेगड़े, तथा ए. एन. ग्रोवर ने भारत के चीफ जस्टिस पद के लिए उपेक्षित कर दिए जाने पर त्याग पत्र दे दिया था। जस्टिस ए. के. मुखर्जी की मृत्यु हो गई तथा जस्टिस जगमोहन रैड्डी कालांतर में रिटायर हो गए। उन सात जजों में अन्तिम जज श्री एच. आर. खन्ना शेष थे जिन्होंने कहा था कि संशोधन प्रक्रिया द्वारा संविधान की पहचान समाप्त नहीं की जा सकती और गत शुक्रवार को उन्होंने भी त्यागपत्र दे दिया। जबकि सुप्रीम कोर्ट में वरिष्ठतम होते हुए भी, चीफ जस्टिस पद के लिए उनकी उपेक्षा कर दी गई।

न्यायमूर्ति खन्ना को अपने स्वतन्त्र चिंतन और मानसिक इमानदारी की कीमत चुकानी पड़ी : न्यायधीश शाह को केवल डेढ़ माह के लिए मुख्य न्यायाधीश बनाया गया था : विधि आयोग की सिफारिशों के अनुसार न्यायाधीश खन्ना मुख्य न्यायाधीश बनने के सबसे बड़े अधि-कारी थे : वह पूर्णतःयोग्य थे।

श्री खन्ना की उपेक्षा किए जाने के सन्दर्भ में सरकारीतौर पर जो कारण बताया गया है वह यह है कि श्री खन्ना ने सिर्फ पांच महीनों के लिए ही चीफ जस्टिस बनना था। उन वकीलों के अपवाद के अलावा जो कि राजनीति में भी उलझे हुए हैं, बार के सदस्यों की करीब करीब सर्व-सम्मत राय यही है कि श्री खन्ना की उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए थी तथा उन्हें अपनी स्वतन्त्रता और बौद्धिक अखण्डता का मूल्य अदा करना पड़ा है श्री खन्ना में यह गुण अत्यधिक तीक्ष्ण बुद्धि तथा उदारता, उल्लेखनीय गौरव और मृदु व्यवहार के साथ मौजूद हैं। जिस अवधि के लिए उच्चतम न्यायिक पद पर रहना था, क्या वह ऐसी थी कि इतने अच्छे जज के लिए वह उसकी योग्यता बन जाती? हमारे सर्वा-धिक महत्वपूर्ण चीफ जस्टिसों में से एक श्री जे. सी. शाह को इस पद पर नियुक्त किया गया था हालांकि उन्होंने सिर्फ डेढ़ महीने के लिए ही इस पद पर रहना था।

जब विधि आयोग ने यह सिफारिश की कि "वरीयता के भेदभाव के बगैर" सर्वाधिक उपयुक्त व्यक्ति को ही भारत का चीफ जस्टिस चुना जाना चाहिए, उनका तात्पर्य कार्यपालिका के दृष्टिकोण से 'उपयुक्तता' नहीं था। उनकी सिफारिश निम्नलिखित शब्दों में है :—

"भारत के चीफ जस्टिस के कर्त्तव्य पालन के लिए सिर्फ योग्यता एव अनुभव वाले जज की ही आवश्यकता नहीं है बल्कि वह एक कुशल प्रशासक भी हो जो कि समय समय पर उठने वाले उलझावदार मामलों को निपटा सके, वह व्यक्तियों और व्यक्तित्वों का एक निपुण निर्णायक हो और सर्वोपरि बात यह है कि वह दृढ़ स्वतन्त्रता, अटल व्यक्तित्व का स्वामी हो जो कि कोई भी मौका आने पर न्याय पालिका की स्वतन्त्रता के निगरान का कार्य कर सके। अत हमारे दृष्टिकोण में भारत के चीफजस्टिस पद की आसामी भरते समय उपरोक्त बातों पर सूक्ष्मतापूर्वक सोचा जाना चाहिए। हो सकता है कि वरिष्ठतम जज उप-रोक्त आवश्यकताओं की पूर्ति करता हो। यदि ऐसा हो तो इस पद पर उसकी नियुक्ति के सन्दर्भ में कोई आपत्ति नहीं होनी चाहिए।"

यदि विधि आयोग द्वारा वांछित योग्यता ही वास्तविक मापदंड है तो इस बात का सुदृढ़तम सम्भावित केस मौजूद था कि जस्टिस ऐच.आर. खन्ना की अपेक्षा नहीं की जाये। "दृढ़ स्वतन्त्रता" तथा न्यायपालिका की स्वतन्त्रता के निगरान की अपनी हैसियत में वे किसी के आगे नहीं झुके जहां तक प्रशासकीय अनुभव की बात है तो वे पहली ही अत्यन्त विशिष्टता पूर्वक दिल्ली हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस के तौर पर कार्य कर चुके थे। क्या ऐसी बात कही जा सकती है कि एक जज के रूप में श्री खन्ना के शानदार गुणों की सिर्फ इस एक तथ्य से महत्ता घट गई कि चीफ जस्टिस के तौर पर उनका कार्यकाल कम था। समय ने इसे सबसे बड़ा विचारणीय प्रश्न बना दिया है कि क्या एक सर्वाधिक संतोषजनक मशीनरी सुप्रीमकोर्ट के चीफ जस्टिस व जजों के चयन के लिए नहीं बनाई जानी चाहिए बजाय इसके कि कार्यपालिका की इच्छा से ऐसा हो।

हैबियस कार्प्स केस

श्री खन्ना की स्वतन्त्रता तथा न्यायिक अखंडता का उदाहरण हैबियस कार्प्स केस है। गत अप्रैल मास में सुप्रीमकोर्ट की पांच सदस्यीय बैंच ने इस पर फैसला दिया था जिसमें श्री खन्ना का ही एकमात्र असहमतिपूर्ण निर्णय दिया गया था। बहुसंख्या ने यह निर्णय दिया था कि बुनियादी अधिकारों के निलम्बन के समय कोई नजरबन्द हैबियस कार्प्स या अदालत द्वारा दिये गये किसी अन्य आदेश के कानूनी आज्ञापत्र के लिए नहीं कह सकता हालांकि वह यह दिखाने में सक्षम हो कि उसकी नजरबन्दी अवैध है या बदले की भावना से की गई है या उसी कानून के अन्तर्गत अधिकृत नहीं है जिसके अन्तर्गत उसे नजरबन्द किया जाना वांछित है। जस्टिस खन्ना ने इस दृष्टिकोण को रद्द कर दिया तथा कहा कि बुनियादी अधिकारों का निलम्बन भारतीय नागरिक को ब्रिटिश नागरिक जितनी बुरी हालत में ही डाल देता है जहां बुनियादी अधिकारों की कोई गारंटी नहीं दी गई है या उसकी हालत ब्रिटिश भारत के नागरिक जैसी है तथा एक अवैध या बुरे इरादे से की गई नजरबन्दी की एमरजेंन्सी के दौरान भी न्याय की अदालत में चुनौति दी जा सकती है। उसके फैसले की कुंजी उनके प्रारम्भिक शब्दों में ही निहित है, "निवारणात्मक नजरबन्दी का कानून, नजरबन्दी बिना मुकद्दमे के, उन सब लोगों के लिए ईश्वर का एक शाप है जो कि व्यक्तिगत स्वतन्त्रता से प्यार करते हैं। ऐसा कानून बुनियादी मानवीय स्वतन्त्रताओं में गहरे आन्तरिक रास्ते बना देता है जिन पर हम सब गर्व करते हैं तथा जिन्हें जीवन के उच्चतम मूल्यों में प्रमुख स्थान प्राप्त है।" जस्टिस खन्ना ने आगे कहा कि बुनियादी अधिकारों की अनुपस्थिति में भी सरकार को कोई अधिकार नहीं है कि वह व्यक्ति को उसके अधिकारों या नागरिक स्वतन्त्रताओं से वंचित कर दे। हैबियस कार्प्स केस पर फैसला देते हुए उन्होंने यह अविस्मरणीय भूमिका निभाई। आने वाली पीढ़ियां उनके निर्णय को न्यायिक अखंडता के एक चमकदार उदाहरण के रूप में याद रखेंगी। नजरबन्दी केसों में उनका फैसला धरती का कानून बन गया। यदि चीफ जस्टिस ह्यूज के शब्दों में कहें तो हमें यह कहना होगा कि श्री खन्ना की असहमति कानून की भावना के प्रति एक प्रार्थना है कि भविष्य का कोई निर्णय इस भूल को ठीक कर देगा।

प्रैस व न्यायपालिका

लोकतन्त्र के दो अत्याज्य तत्व हैं मुक्त प्रैस तथा स्वतन्त्र न्यायपालिका। जस्टिस फ्रैंक फुर्टर ने कहा था कि, "अदालत यदि जमाने पर रोजमर्रा के दबावों को ही प्रदर्शित करे तो उसके अस्तित्व का कोई औचित्य नहीं है। हमारी प्रणाली इस विश्वास पर आधारित है कि इस विशेष कार्य के लिए अलग किये गए व्यक्तियों को तत्कालीन प्रभावों से तथा दुनियांदारी की आकाँक्षाओं के मोह से मुक्त कर दिया जाए।"

वह जज जिसने सर्वोच्च अदालत के सर्वोच्च पद पर अपनी नियुक्ति का सवाल उठने से कुछ ही समय पहले बिना आरोप, बिना मुकद्दमे तथा कानून के भी अधिकार के बिना नजरबन्द किये गए नागरिक के पक्ष में फतवा दिया, निश्चित रूप से दुनियांदारी के मोहजाल में फंसा हुआ नहीं था। जब तक स्वतन्त्र न्यायपालिका है, संविधान द्वारा गारंटी न दिए जाने के बावजूद भी नागरिक की स्वतन्त्रताएं सुरक्षित हैं लेकिन एक बार यदि न्यायपालिका कार्यपालिका तथा पार्टी के दर्शन के समक्ष झुक जाए जो कि उस समय सत्ता में हो तो, संविधान प्रदत्त बुनियादी अधिकारों का लाभ भी नागरिक नहीं उठा पाएगा क्योंकि कानून की अदालतें तब सरकार की अदालतों का स्थान ले लेंगी। यदि नमक अपने आधारत्व से ही वंचित हो जाए तो उसमें नमकीनी कहां से आएगी? अन्तिम विश्लेषण में नागरिक के अधिकारों की अंतिम गारंटी हमारे सुप्रीमकोर्ट के जजों का व्यक्तित्व तथा उनकी बौद्धिक अखंडता है।

ऋषि दयानन्द एक महान् व्यक्तित्व

● डा० सुनीति एम. ए. पी. एच. डी.

संसार में महापुरुष वे माने जाते हैं 'जो युग को नया संदेश और प्रगति के नए मार्ग बतलाते हैं या किसी क्षेत्र में नए आविष्कार करते हैं। ऐसे महापुरुषों में मोहम्मद पैगम्बर, ईसा मसीह, भगवान बुद्ध, महावीर, महात्मा गांधी, कार्ल मार्क्स, न्यूटन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

किन्तु महर्षि दयानन्द इन सब महापुरुषों की श्रेणी से सर्वथा पृथक् कहे जा सकते हैं। यह महान आत्मा जो कि हर दृष्टि से स्वयं अनुपम प्रतिभा वाली थी. उनकी सबसे बड़ी विशेषता महानता यही कही जा सकती है कि इस महापुरुष ने युग को कोई नया सन्देश या नया आदेश नहीं दिया। उन्होंने स्पष्ट रूप से लिखा है कि मैं ने उन्ही बातों को दुनियां के सामने रक्खा है जिन को ब्रह्मा से लेकर जैमिनी ऋषि पर्यन्त मानते चले आए हैं। महर्षि की इस महानता का विश्व में कोई दूसरा उदाहरण नहीं मिलता जिसने इतनी विनय के साथ अपने अद्भुत व्यक्तित्व को अपने महान् कार्यों से सर्वथा पृथक् रखने का प्रयत्न किया हो! बहुत से ऐसे महापुरूष हैं जो पुत्र कामना से सर्वथा निर्लिप्त आदर्श ब्रह्मचारी रहे। बहुत से ऐसे महापुरुष हैं जो धन की लिप्सा से सर्वथा दूर रहे। बहुत से ऐसे भी महापुरुष हैं जिन्होंने पुत्र कामना और अर्थ लिप्सा दोनों पर समान रूप से विजय प्राप्त करली। पर संसार में ऐसे कम महापुरुष ढूंढे से मिल सकेंगे जिसने अपने यश की कामना, प्रसिद्धि की कामना को जीत लिया हो।

किन्तु इस युग में ऐसे महापुरुष एक मात्र महर्षि दयानन्द ही हुए जिन्होंने पुत्र, धन और कीर्ति तीनों ही कामनाओं पर छोटी अवस्था में विजय प्राप्त की और विनयी सेवक की भान्ति घूम घूम कर जनहितार्थ अपनी हर श्वास और रक्त की अन्तिम बूंद तक लोक कल्याण के लिए उत्सर्ग कर दी।

कर्त्तव्य की दृढ़ता और न्याय के पथ से वे जीवन भर डिगे नहीं। उन्हें सत्य के मार्ग से कोई भी विमुख न कर सका। नीति निपुण जन उनकी प्रशंसा करे या निन्दा कोई उनसे प्रसन्न हो अप्रसन्न जीवन में हानि हो या लाभ मृत्यु स्वागत के लिए सामने खड़ी हो या जीवन मुस्कराता रहे इन सब की परवाह किए बिना महर्षि स्वामी दयानन्द जीवन में सदा न्याय पथ पर आगे बढ़ते रहे और कांटो के मार्ग पर चलते ही रहे।

गुरु जी की प्रथम आज्ञा हुई कि—अब तक जितने मनुष्य कृत ग्रन्थों को तुमने पढ़ा है उन्हें यमुना में बहा आओ! विनय दयानन्द ने बिना ननु नच इस आज्ञा का अन्तःकरण से पालन किया। महर्षि दयानन्द के संघर्षमय महान् जीवन में ऐसी शतशः घटनाएं बिखरी पड़ी हैं जिनका एक एक अंश भी उन्हें समस्त महापुरुषों से भी ऊँचे शिखर पर अनायास ही बिठा सकता है। उनके जीवन का आधार सत्य था वे एक निर्भीक सत्यान्वेषी थे। उनका सत्य आग्रहपूर्ण और आदेशात्मक नहीं था. वे हर मनुष्य को यही सिखलाना चाहते थे कि तुम्हें जो प्रत्यक्षादि अष्ट प्रमाणों से सत्य लगे उसे मन, वचन, कर्म से स्वीकार कर लो। सत्यार्थ प्रकाश की पहली पंक्तियों में वे लिखते हैं। "मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्यासत्य के अर्थ का प्रकाश करना है और जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है।" आगे की पंक्तियां कहीं अधिक ध्यान देने योग्य हैं।

"वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान पर असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाए किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य कहाता है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वालों के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है इसी लिए वह सत्यमत को प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए विद्वान आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश वा लेख द्वारा सब मनुष्य के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दे पश्चात वे स्वयं अपना हिताहित समझ कर सत्यार्थ ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग कर के सदा आनन्द में रहें।"

महर्षि दयानन्द के ये शब्द उनके सत्य के प्रति महान आस्था को स्पष्टतः चित्रित करते हैं। फिर वे अपने द्वारा प्रस्तुत सत्य को किसी पर बलात् थोपने के पक्षपाती भी नहीं हैं। विद्वानों का कार्य तो सत्य को प्रस्तुत भर कर देना है।

इसी संदर्भ में मानव मस्तिष्क के सूक्ष्म रहस्य का उद्घाटन करते हुए ऋषि दयानन्द लिखते हैं–

"मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य को जानने वाला है। तथापि अपने प्रयोजन सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है। किन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रक्खी है। और न किसी का मन दुःखाना किसी की हानि पर तात्पर्य है। किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण असत्य का परित्याग करें क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति कारण नहीं है।" महर्षि दयानन्द के उद्गारों से यह बात अत्यन्त स्पष्ट हो जाती है कि—स्वामी दयानन्द ने जीवन भर सत्य की खोज की और जिस सत्य को उन्होंने पाया उसे मानव कल्याण के लिए संसार के समक्ष रक्खा।

वे सारे विश्व को फिर से उसी मार्ग पर ले जाना चाहते हैं जिसमें मानव मात्र का सुख व कल्याण निहित है। सामाजिक क्रान्ति के रूप में जहाँ हम स्वामी दयानन्द के इस सत्य को देख सकते हैं वहाँ विद्वत्ता के क्षेत्र में भी उनका स्थान निर्विवाद सर्वोपरि माना जाता है। आज के युग में जिस वैदिक वाङ्मय के स्वरूप को जहाँ अधिक क्लिष्ट व जटिल माना जाता है महर्षि दयानन्द उसके सब से महान् यथार्थ वेत्ता थे। यदि यह कहा जाए तो अतिशयोक्ति न होगी कि वे अपने आप में एक पूर्ण पुरुष थे। संसार के इतिहास में ऐसा दिव्य व्यक्ति ढूंढे नहीं मिल सकता जो एक साथ शारीरिक, बौद्धिक और आध्यात्मिक धरातल पर एक साथ समान ओज और तेज को लेकर प्रस्तुत हुआ हो।

स्वामी दयानन्द के ग्रन्थों को देखकर यह भली भाँति स्पष्ट हो जाता है कि उन्होंने न केवल वेद शास्त्रों का गहन अध्ययन किया था अपितु बाईबल. कुरान आदि ग्रन्थों का भी उन्होंने सूक्ष्मदृष्टि से अध्ययन किया था। जितने भारतीय दर्शन उस समय तक प्रचलित व उपलब्ध थे न केवल उन्होंने उसके दर्शन पर ही चिन्तन किया था अपितु उन्होंने उनके निर्माताओं जन्म दाताओं और रचनाकारों के इतिहास की भी खोज कर उस पर भी अनुसन्धानात्मक लेखनी चलाई है प्रत्येक दर्शन व तथाकथित धर्म शास्त्रों की गहराई में उतर कर उसे तर्क की कसौटी पर कस कर उसका बौद्धिक विश्लेषण किया है। प्राचीर अन्ध परम्पराओं और रूढि ग्रस्त मस्तिष्कों पर महर्षि दयानन्द का यह कार्य के समान दुखदायी अवश्य प्रतीत होता है किन्तु उसके पीछे उस दिव्य पुरुष की जो दृष्टि रही है उससे आज समझने का प्रयत्न ही नहीं किया गया।

महर्षि दयानन्द की चार भूमिकाएं जो उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश के उत्तरार्द्ध में खण्डन मण्डन विषयक अपने ११ वें. १२ वें १३ वें समुल्लासों के प्रारम्भ में लिखी हैं उसको पढ़े बिना उनका सत्य स्वरुप प्रकट हो ही नहीं सकता महर्षि लिखते हैं "सब मनुष्यों को न्याय दृष्टि से बर्तना अति उचित है। मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य का निर्णय करने कराने के लिए है। न कि वादविवाद विरोध करने कराने के लिए"। यह निश्चय है कि इन विद्वानों के विरोध ही ने सबको विरोध जाल में फँसा रक्खा है।

वे सभी विद्वानों के पारस्परिक राग द्वेष को छुड़वा कर एक ही सत्य के बन्धन में बाँधना चाहते थे। ऐसे सर्वमान्य सर्व सम्मत सिद्धान्तों पर आधारित मान्यताओं के पीछे चल कर वे एक ऐसे पथ पर लाने के इच्छुक थे जिसमें मानव जाति का कल्याण सन्निहित है।

१२ वें समुल्लास की पृष्ट भूमि में लिखते हैं कि जब तक वादि प्रतिवादी होकर प्रीति से वाद का लेख न किया जाए तब तक सत्यासत्य का निर्णय नहीं हो सकता।

सर्व प्रथम महर्षि ने अपने घर की बुराइयों के भ्रमजाल को दूर करने का प्रयत्न किया। वे शैव मत के कट्टर अनुयायी श्री करसनलाल जी तिवारी के घर गुजरात के टंकारा क्षेत्रीय जीवापुर ग्राम में जन्मे थे। आपका जन्म सन् १८२० में हुआ था।

अतः ऋषि ने सर्व प्रथम पौराणिकों और तथाकथित सनातनधर्म की मान्यताओं पर विचार किया बाद में चारवाक जैन और बौद्ध धर्म की समीक्षा की—इस के बाद महर्षि ने अन्य विदेशी मत मतान्तरों की भी निष्पक्ष समालोचना प्रस्तुत की है। महर्षि ने अपनी प्रारभिक भूमिका में जो लिखा है उससे महर्षि का विशाल दृष्टिकोण सभी मत मतान्तरों के लिए सम दृष्टि स्पष्ट झलकती है वे लिखते हैं कि–

यद्यपि मैं आर्यवर्त्त देश में पैदा हुआ और बसता हूँ— तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरों के झूठी बातों का पक्षपात न कर यथा तथ्य प्रकाश करता हूँ वैसे ही दूसरे देशस्थ व मतोन्नति वालों के साथ भी बर्तता हूं। वैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में बर्तता हूँ। वैसा विदेशियों के साथ भी तथा सब सज्जनों को भी बर्तना योग्य है।

यह है इस युग के सर्व महान उस ऋषि की विशाल मानवीय दृष्टि जो सांप्रदायिकता संकीर्णता के दोषों से सर्वथा मुक्त एवं श्रेष्ठतम दिव्य दृष्टि ही कही जायगी। स्वार्थ तत्पर सांप्रदायिक विषैले परमाणुओं से युक्त व्यक्ति उस महान आत्मा के वास्तविक स्वरूप तक पहुँच ही नहीं

शेष पृष्ठ २० पर

ऋषि-द्रोहियों की अवस्था

● स्वामी इन्द्रवेश

योग दर्शन के "क्लेश: मूल: कर्माशयो दृष्टादृष्ट जन्म वेदनीय" सूत्र पर भाष्य करते हुए महर्षि व्यास जी महाराज लिखते हैं—"विश्वासोपगतेषु वा महानुभावेषु वा तपस्विषु वा कृत: पुन: पुनरपकार स चापि पाप कर्माशय: सद्य एव परिपच्यते" अर्थात् जो मनुष्य किसी महापुरुष के साथ विश्वासघात करता है अथवा किसी तपस्वी का पुन: पुन: अपकार करता है तो उसे इस पाप कर्म का फल शीघ्र ही दु:ख रूप में प्राप्त होता है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज अपने समय के विश्ववन्द्य महापुरुष थे। विचार भेद के कारण कितने ही लोग उनके प्राणद्रोह शत्रु बन गये थे। किन्तु उन्होंने किसी का अनिष्ट चिन्तन नहीं किया। अपने को विष देने वाले को भी रुपए तक देकर दूर देश में भेज दिया। जब एक विषदाता को तहसीलदार ने कैद में बन्दी किया तब ऋषि ने उसे यह कहते हुए मुक्त कर दिया था कि मैं लोगों को बन्द कराने नहीं अपितु कैद से मुक्त कराने आया हूँ।

महर्षि के विचार सब लोगों के प्रति उदार होते हुए भी महर्षि व्यास के मतानुसार उन ऋषि-द्रोहियों को क्या दण्ड प्राप्त हुआ, इसे पाठकों के समक्ष उपस्थित किया जा रहा है।

जगन्नाथ पाचक की अवस्था

अनेक जीवन चरित्र लेखक मानते हैं कि महर्षि दयानन्दजी को उनके पाचक जगन्नाथ ने जोधपुर में नन्हीं जान वेश्या द्वारा लोभ देने से दूध में कांच पीसकर पिलाया था।

और जब महर्षि को इसका ज्ञान हुआ तब जगन्नाथ ने अपना अपराध स्वीकार भी कर लिया था। इस पर महर्षि ने कहा—वह वेश्या तो तुझे क्या धन देगी ले तू यह कुछ रुपये लेकर यहाँ से भाग जा। यदि तेरे इस कुकृत्य का पता राजा को हो गया तो निश्चित् ही तुझे प्राणदण्ड देंगे। इस प्रकार जगन्नाथ महर्षि से कुछ रुपए लेकर नेपाल की ओर भाग गया, मार्ग में ही उसने एक स्थान पर अपने वस्त्र गेरू से रंग लिये। लोभ के कारण जगन्नाथ ने महर्षि को विष तो दे दिया किन्तु महर्षि के महान् व्यक्तित्व से वह अतीव प्रभावित हुआ। उसकी अन्तरात्मा इस अति नीच कृत्य पर उसे धिक्कारती थी, उसे अति आत्म-ग्लानि रहने लगी। उसके मस्तिष्क का सन्तुलन बिगड़ गया और वह पागल होकर बड़बड़ाता हुआ इधर-उधर घूमने लगा। मेरठ जिले में गंगा के किनारे रामघाट नामक स्थान पर यह जगन्नाथ एक व्यक्ति को सायंकाल के समय मिला। वह व्यक्ति इसकी गैरिक वस्त्र होने से महात्मा समझ अपने घर पर ले चलने का आग्रह करने लगा। यह साधु अति विक्षिप्त सा प्रतीत हो रहा था और गाँव में चलने को किसी प्रकार भी तैयार नहीं हो रहा था। किन्तु घण्टों अनुनय-विनय करके ये सज्जन उस साधु को अपने घर ले आये। वहाँ घर पर आकर एक विशेष घटना हुई। जब यह साधु घर में घुसने लगा तब इसे सामने दीवार पर लगा हुआ महर्षि दयानन्दजी महराज का चित्र दिखाई दिया जिसे देखकर यह साधु वहीं द्वार पर बैठ गया और जोर-जोर से रोने लगा। जो मनुष्य इस साधु को अपने साथ लाया था उसे अति कुतूहल हुआ। साधु को रोते हुए देखकर आसपास के लोग भी एकत्र हो गये। बहुत बार पूछने पर भी इसने रोने का कारण नहीं बताया और न रोना बन्द किया। कई घण्टों के बाद इस साधु ने रोना तो बन्द कर दिया किन्तु सिर नीचा करके मौन बैठा रहा। बहुत बार पूछने पर इसने बताया कि यह चित्र जिस महर्षि का आपके यहाँ रखा है उसका हत्यारा मैं ही हूँ। मेरा नाम जगन्नाथ है यह नीच कार्य मेरे से हो गया। और महर्षि ने मेरे से कहा भी कुछ नहीं किन्तु अब मुझे क्षण-भर भी चैन नहीं है। न रात को सो सकता हूँ। आँख बन्द करते ही महर्षि का चित्र समक्ष आता है जिसे देखकर अपने पाप का स्मरण कर कांप उठता हूँ। इस प्रकार उस रात्री को जगन्नाथ ने कुछ भी नहीं खाया। सारी रात नीचे गर्दन किये बैठा रहा और प्रात:काल अन्धेरे में ही उठकर कहीं अन्यत्र चला गया। इसी प्रकार बहुत दिनों यह इस अवस्था में भटकता रहा और अन्त में किसी जलाशय में कूदकर आत्म-हत्या करके अपने अपवित्र शरीर को समाप्त कर दिया।

राव कर्णसिंह की अवस्था

महर्षि दयानन्दजी महाराज अवधूत अवस्था में गंगा तट पर वेद नाद गुँजाते हुए घूम रहे थे तो एक दिन कर्णवास में बरौली के ठाकुर कर्णसिंह महाराज की सेवा में उपस्थित हुए। महर्षि के दिव्य प्रकाश को देखकर यह दिवान्ध (उल्लू) घबड़ा उठा तथा अपनी नीचता की वृत्ति प्रकट करते हुए महर्षि की ओर वार करने के विचार से नंगी तलवार लेकर बढ़ा। महर्षि इसकी दुर्भावना को समझ गये और पैंतरा बदलकर उसके हाथ से छीन ली, भूमि पर नोक रखकर तोड़ दी और कर्णसिंह का हाथ इस प्रकार पकड़ा कि रक्त संचार बन्द होकर मूर्च्छित-प्राय हो गया।

अन्त में महर्षि ने अपने सहज उदार स्वभाव से उसे क्षमा प्रदान की। और वह कर्णसिंह अति लज्जित होकर वहाँ से चला गया। इसने एक बार पुनः महर्षि को क्षति पहुँचाने का यत्न अपने सेवकों द्वारा किया। रात्रि में जब इसने शस्त्रधारी सैनिकों को महर्षि का वध करने के लिये भेजा, उस समय प्रथम तो उनका साहस ही नहीं हुआ। और जब अनेक गालियाँ, फटकार सुनकर वे महाराज की कुटिया के समीप पहुंचे तो महर्षि ने इस प्रकार का नाद किया कि बेचारे एक दूसरे पर गिरते-पड़ते वापिस भाग गये। और महर्षि के भक्त डा० किशनसिंह आदि की धमकी से डरकर कर्णसिंह वहां से रात में ही भाग गया। घर आकर इसका अति प्रिय घोड़ा मर गया जिसने वह अति दुःखी हुआ। इसके अतिरिक्त उसके उदर में अति तीव्र शूल होने लगा जो कि अनेक उपचार करने पर भी शांत नहीं हुआ। एक मुकदमे में इसे बहुत बड़ी राशि की हानि उठानी पड़ी और अपमान भी अत्यधिक हुआ। दो विवाह करने पर भी एक कन्या के अतिरिक्त कोई सन्तान नहीं हुई। और यह पुत्रोपलब्धि की तृष्णा से संतप्त रहने लगा। अन्त में इसने एक बालक को दत्तक के रूप में गोद लिया किन्तु उस बालक से भी कोई सन्तान पैदा नहीं हुई। पुनः कर्णसिंह ने अपनी पुत्री का विवाह किया और उसकी सन्तान से कुलतन्तु को जीवित रखने की आशा बाँधी किन्तु वह भी मृग-मरीचिका के समान दुराशा ही सिद्ध हुई। और उस कन्या से भी कोई सन्तान नहीं हुई। इस प्रकार महर्षि दयानन्द के साथ द्वेष करने वाला महापातकी कर्णसिंह आजीवन चिन्ता-चिता में जलता रहा उसकी कोई भी इच्छा पूरी न हो सकी तथा उसकी मृत्यु के साथ ही उसके कुल का भी सर्वनाश हो गया। आचार्य उदयवीर जी (गाजियाबाद) ने एक बार लेखक से कहा था कि आस-पास के लोग यही विश्वास रखते हैं कि कर्णसिंह को यह दारुण दुःख महर्षि दयानन्द के साथ किये दुर्व्यवहार से ही मिला था।

डा० अलीमर्दान खां की अवस्था

जोधपुर नरेश के यहां जब अनेक धूर्तों के षड्यन्त्र से महर्षि को विष दिया गया तब उनकी चिकित्सा राजकीय डाक्टर अलीमर्दान खां ने करनी आरम्भ की। यह डाक्टर अति धूर्त तथा प्रथम दर्जे का चापलूस था। चिकित्सा शास्त्र में इसका विशेष परिज्ञान न होने पर भी यह अपनी चापलूसी की कुशलता से राजकीय उच्च वैद्यों में माना जाता था। विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि महर्षि की मृत्यु का षड्यत्र इंग्लैण्ड से चला और महर्षि की चिकित्सा के लिये अलीमर्दान को नियुक्त करने में अंग्रेजों का भी हाथ था। उस डा० अलीमर्दान खाँ ने अति नीचता का परिचय देते हुए महर्षि की औषधि के व्याज से भयंकर विष देना प्रारम्भ किया जिसके परिणामस्वरूप रोग बहुत अधिक बढ़ गया दस्तों की संख्या ५-६ से बढ़कर सैकड़ों तक पहुंच गई मुख में छाले पड़ गये। सारे शरीर पर विष के कारण भयकर छाले और दाह होने लगा। ऐसी भयंकर अवस्था में भी महर्षि मौन साधे रहे। उन्होंने अलीमर्दान खां की धूर्तता जानते हुए भी लोगों के समक्ष व्यक्त नहीं किया मानो वे इस वंचनामय षड्यन्त्रों में हस्तक्षेप न कर भगवान् पर आश्रित रहना ही श्रेयस्कर समझते हों। परन्तु डा० अलीमर्दान खां अपने पाप से स्वयं घबड़ा गया। उसने सोचा कि जब इस षड्यन्त्र की वास्तविकता संसार के आगे प्रकट होगी तो निश्चित ही संसार तेरे नाम तक को भी घृणा की दृष्टि से देखेगा। अतः उन्होंने महर्षि को जोधपुर से आबू पर्वत पर भेजने का यत्न किया। महर्षि तो आबू पर्वत पर चले गये और इधर नीच डाक्टर को कुछ दण्ड नहीं दिया गया। दो-तीन वर्ष के बाद अलीमर्दान जोधपुर राज्य से अपना सेवाकाल समाप्त कर अपने घर पर आ गया। यह हस्तिनापुर के समीप के किसी गांव का रहने वाला था। धार्मिक दृष्टि से यवन होने पर भी इस डाक्टर को अपने कुकृत्य पर ग्लानि होने लगी और वह पागल हो गया। और यह पागलावस्था में हर समय प्रलाप करता था कि मैंने एक बहुत बड़े फकीर का खून किया है। हाय! खुदा अब मुझे किस प्रकार क्षमा कर सकते हैं? इस प्रकार एक कट्टर यवन पर भी महर्षि के महान् व्यक्तित्व का प्रभाव पड़ा और वह पागल अवस्था में ही भटक-भटक कर मर गया।

पं भीमसेन की अवस्था

पंडित भीमसेन इटावा के निवासी थे। इनका स्वभाव अति लालची एवं उच्छृङ्खलतापूर्ण था। महर्षि के पास ये लेखक का कार्य करते थे।

महर्षि के पत्रों से ज्ञात होता है कि प्रारम्भ से ही इनका व्यवहार कपटपूर्ण था और महर्षि इनको धमकाकर कार्य लेते थे। अवसर मिलते ही ये महर्षि की पुस्तकों में मनमानी बातें डाल देते थे, जिनको महर्षि पुनः शुद्ध कराते थे। महर्षि के स्वर्गारोहण के पश्चात् इन्होंने अपने को महर्षि का शिष्य घोषित करना आरम्भ कर दिया और खूब यश कमाया। किन्तु इसकी स्वच्छन्दता से आर्य सिद्धान्तों पर कुप्रभाव पड़ने से तत्कालीन आर्य नेताओं ने इसे आर्यसमाज से बहिष्कृत कर दिया। इससे चिढ़कर इसने

शेष पृष्ठ २० पर

ग्रामीण जीवन का वास्तविक नाटक

भरतू और खजानी

● धर्मसिंह नाद्दान

(जोर जोर से रोने की आवाज आती है, हाये मैं तै लुटली रे हाय—)

भरतु— कोणसै रै इसी भूण्डी ढाल रोवै। देखियो, जाकै।

ओमप्रकाश— ताऊ, किमे आवाज तै ताई कैसी आवै सै।

भरतु— भाजिये भाई क्यांह नैं खाली राण्ड, देखियो। (कमला आदि गांव की औरतें, मर्द बच्चे) आ जाते हैं)

कमला:— के होया है, रोवै मतना, बता तै सही।

एक लड़की:— ताई इसकी कंण्ठी तोड़ली मेले में।

कमला:— आँ हे, किमै वैरा कोना पाटया,

खजानी— रोते हुये, ना जीजी, पूते बेरा ना कोण थे। एक नै तै मुहं भीच लिया अर एक नै मारा झटका, जीजी भाजते ये दीखे।

कमला— तेरी ना ओड वुढी की अकल मार रही सै। तूं के टाट खान जा थी बूढी राण्ड। सरम नहीं आवती तनैं, पोते पोतियां की होण नैं होरी।

खजानी— जीजी मेरीये अकल मारी गई आड़ये नाटैं थे। पर वखत ठा लेग्या।

भरतु— अधर उठ रही थी ना, इब बखत ठा ले ग्या तैनै, मेरा कर तै दिया तैनै टीवा। इब क्यों रोवै सै। रहाण दे, वा रोये तैं ना आवै।

कमला— रोवै मतना।

(रिसालसिंह का प्रवेश)

रिसालसिंह— के रौला था रै।

भरतु— भाई, के बताऊं। मेरा तै इस राण्ड नै अर इस छोरे नै कतई नास ठा दिया भाई। बिराणी कण्ठी मागं कै लेगी थी तुडवाआई मेले में।

रिसालसिंह पहलम तै तनैं सिर पै धरली, इब रोवै सै, मैं तनैं रोज नहीं कहा करता, कुणबे नैं बसमैं राख्या कर, जिब तै न्यु ना दिखै थी तनैं। इब रोले के बणै सै।

भरतु— भाई तुं तै ठीक कहा करता, पर मनैं के बेरा था न्यु बण ज्यागी, या राण्ड लुट पिट के आ तै गई, पर उस नीच का बेरा बी कोन्या कड़ै सै।

रिसालसिंह— लोग न्यूं थोड़े कहगे—अक कण्ठी मेले में टूटगी। न्यूं कहगे अक टोटे में राखली।

भरतु— रिसालसिंह भाई मैंतै सब तरहां मर लिया अर तेरा बदला तै पनैः आगले जन्म में बी ना उतरैगा। या राण्ड लुट पिट कै आतै गई अर उस नीच का बेरा बी कोन्या काल का कित जा रहया सै।

खड्डू— (शराब के नशे से धुत थानेदार को गालियां देता है) फूक दूंगा, आग लादूंगा, गाम में जै कोऐ मनैं किमैं कह देगा तैं। तीन सौ थानेदार मेरी गोझ मैं पड़े सैं।

लड़का— ताऊ दिखै वो खड्डू शराब पी रहया सै, अर उसकै मूंह माकै खून आवै सै, अर बालक डले मारैं सै।

भरतु— आंहरै कित सै वो।

लड़का— यो बड़ग्या छान में, दिखै मेले में यो छोहरियां नै खूब पीटा अर इसने शिबलाल अर धर्मसिंह लुट व कै ल्याये सैं।

भरतु खड्डू के पास जाकर—आंहरै ओ नीच बस लण दे इस धरती पै, तनैं कर तै दिया घर की ठोड़ बिटोडा, पइसे कड़े तै ल्याया था रै।

खड— उस राजेन्दर नें प्यादी, उकै छोरा हुआ सै।

(रिसालसिंह का प्रवेश)

रिसालसिंह— के रोला था रै भरतु।

भरतु— के बताऊं भाई, कुच्छ बतावण की बातै कोन्या।

रिसालसिंह— किमे होगा भी।

भरतु— भाई वो नीच शराब पी रहया सै वो पड़या छान मैं।

रिसालसिंह— जब भाई तूं कै घाट था, मां करै सो बेटी, बाप करै सो बेटा।

कमला— तूं क्यों पड़या करै इनके झगड़यां मैं, ये अपने तैं बड़ा किसे नैं ना समझरे। दिखै वो ब्रह्ममुनी शराब का ठेका बन्ध करवावण की खातिर सरपंच धोरै लिखवा वै था, यो मन्झोली सी मूच्छां आला आगै पड़ा कूदकै, न्यो बोल्या ये

लागड़ खोल कै। आर्य समाजी सैं ना इन नै देश सुधार का ठेका ले राख्या सै कोये बार त्योहार नें पीलें ये ना पीवणदें । इननें और कोये कामै ना पांवता।

भरतु— बोहड़िया नास तै मनंये कर राख्या सै और किस की गलती बताऊं ।

(खजानी का प्रवेश)

खजानी— जीजी कमला या लाई कान कै आंट मैं कितै मेले वेलां में जा ना जीजी इब कै माफ करदे।

(सारे उठ कर छान में जाते हैं और रिसालखड्डु का कान पड़क कर)

रिसालसिंह— आरै छोरे ऊस दिन क्यों कहथा अक कदे नहीं पीऊंगा, आज क्यों पीई सै।

खडू— ताऊ माडी सी पीई सै बैंस बैंस-बैंस दो क्वेन्टल पीई सै बैंस।

रिसालसिंह— अरै नीच के बच्चे शर्म नहीं आंवती तनैं। सारी धरती नैं धर कै पीगे, इन बालकां का के हाल होगा।

भरतु— इस कै मुंह पै मारो, क्यों कर उलटा बोलै पै।

रिसालसिंह— आरै ओं नीच, पापी किसै कि तै सरम कर लिया करो।

खडडू— ताऊ फेर नहीं पीऊंगा, धर्म तै कहुं सुं।

रिसालसिंह— थारै रोज धर्म उठें सैं।

खडडू— बस इब पाच्छै नहीं पीऊंगा ताऊ, इब इब कै माफ कर दे।

रिसालसिंह— जा बेटी के मुऐ मुहं धो ले, खड़ा हो छोड़ मेरे पाहयां नें।

(सभी चले जाते हैं।)

चौथा दृश्य

अन्दर से जोर की हिचकियों की आवाज आती है, कभी रोने की तो कभी कराहट की।

खजानी— कोये हो तै भाजियों तावले से आईयों।

भरतु— के चाला सै, इसी के बीजली पड़ती आवै सै।

खजानी— तावला सा बुलाइये रिसालसिंह नै, बहू कै तै बेरा ना के होग्या।

भरतु— जाइये रै ओम प्रकाश लांइये बुला कै, दिखे खुसी राम आली पोली में होगा।

ओम प्रकाश—चला जाता है खुसी राम की पोली मैं पहूंच कर रिसालसिंह से। ताऊ तनैं मेरी ताई बुलावै सै, भरतु की बहु।

(जल्दी जल्दी आ ता है)

रिसालसिंह— के बात थी रै, भरतु।

भरतु— देखिये भाई, बहु की तै जाड़ी सी भिच रही सैं।

रिसालसिंह— बहुं की हालत देख कर, सहम जाता है, बस तावल करो बहुत खतरे मे सैं गाड़ी लाओ जोड़ कै।

भरतु— भाई रात नैं के डाक्टर पाज्यागा, आड़ये बुलाल्यां तै।

रिसालसिंह— नहीं भाई तकाजा करो।

(खडडु गाडी जोड़ कर लाता है, बहु को गाड़ी मे लिटाकर। हस्पताल की ओर।

हास्पीटल में पहुंच कर रिसालसिंह डा० साहब को नमस्ते करते हैं,

रिसालसिंह— डाक्टर साहब नमस्ते जी।

डाक्टर— नमस्ते जी, चौ० रिसालसिंह आज रात को कहां, ठीक तो हो।

रिसालसिंह— डा० साहब एक बहु कै करड़ी तकलीफ सै; उसनें लाऐ थे।

डाक्टर— कहां है देखें।

रिसालसिंह— बाहर गाड़ी मैं सै जी।

डाक्टर— अन्दर लियावो उसे।

रिसालसिंह— हालत खराब सै, डा० साहब। उड़यें देखलो।

डाक्टर— गाड़ी के पास जा कर बहूं की हालत देख कर गुस्से से लाल हो जाता है (कौन है इसका वारिस) आप हैं रिसालसिंह जी।

रिसालसिंह— हा जी इब तै मनै ये समझ लो।

डाक्टर— सच सच बताओं, कौन है इसका वारिस।

रिसालसिंह— या चौ० भरतु कै छोरै की बहु सै जी।

डाक्टर— आपको ऐसे लोगों के साथ आये सरम नहीं आती, इसके पेट में बच्चा मर गया है।

(एक तरफ बैठ कर भरतु जोर-२ से रोता है)

भरतु— लुट ग्या रै हाय रै।

रिसालसिंह— इब रोऐ तें के या आवै सै भाई जो कुछ होग्या सो होग्या। बिना कन्टरोल तै न्यूं ये खेल बिगड़ा करैं।

भरतु— अरे भाई मैं इस राण्ड नें लुटवा दिया रै। इसनै, ओपरा ओपरा करकै दो छोरे और खो दिये अर आज या पराई जाई दे दी रै।

रिसालसिंह— खड़ा हो (हाथ पकड़ कर उठाते हुऐ) रोया ना करैं। थारी होगी तै जी ज्यागी चाल खड़ा हो।

भरतु— अरे क्यूं कर सबर करूं, भाई कुछ बी ना दिखता रै।

रिसालसिंह— हिम्मत कर, बावले, दुख सुख माणसां की गैल लाग रहे सैं, उठले।

भरतु को उठ कर अपने साथ ले आंता है।

आध्यात्मिक चर्चा:-

परमात्मा की उपासना क्यों और कैसे?

● आचार्य प्रियव्रत वेदवाचस्पति

प्रभु-भक्ति के प्रेम का उपासक पर प्रभाव

उपासना के समय का प्रभु-भक्ति का प्रेम बहुत सात्त्विक और उत्कृष्ट कोटि का प्रेम है। इस प्रेम के समय भी उपासक के मन की अवस्था उसी प्रकार की हो जाती है जिस का पिछले लेख की पंक्तियों में वर्णन है। उपदेशकों, साधु-सन्तों और महात्माओं के मुख से प्रभु की महिमा और गुणावली को सुनकर तथा शास्त्रों का पाठ कर के उपासक के मन में भगवान के प्रति कुछ आकर्षण और प्रेम उत्पन्न होता है और वह दोनों काल उपासना में बैठकर भक्ति मे भर कर भगवान के गुणों का चिन्तन और गान आरम्भ कर देता है। प्रभु के गुणों के इस गान और चिन्तन से उपासक के मन में प्रभु के प्रति प्रेम प्रति दिन गहरा होने लगता है और उसे प्रभु के और नये-नये गुण तथा उनकी और नई-नई महिमायें और विभूतियां दृष्टिगोचर होने लगती हैं। जितना ही अधिक अधिक वह प्रभु की महिमा को अनुभव करने लगता है उतना ही और अधिक वह प्रभु के प्रेम में तन्मय होने लगता है प्रभु के प्रेम की इस तन्मयता में उसे बड़ाआनन्द अनुभव होने लगता है उस आनन्द की अनुभूति के काल में उस के पास किसी प्रकार के सांसारिक दुःख और कष्ट-क्लेश फटकने नहीं पाते। उस समय वह भगवान के प्रेम में विभोर होकर आनन्द में मग्न हो जाता है।

भगवान के प्रेम में डूबे रहने और प्रेम में भर कर भगवान के गुणों का चिन्तन करते रहने का परिणाम यह होता है कि वह अपने जीवन का भगवान के साथ मिलान कर के देखने लगता है। वह सोचने लगता है कि मेरे प्रेम के पात्र मेरे उपास्य देव परमात्मा तो सत्य, न्याय, दया ज्ञान, बल और संयम आदि के समुद्र हैं। उन में सत्य आदि पवित्र गुणों की पराकाष्ठा हो गई है—हद हो गई है। उन में सत्य आदि ये गुण इस असीम सीमा तक पहुँचे हुए हैं कि शास्त्र उन्हें सत्यस्वरूप आदि नामों से पुकारते हैं। जैसे प्रकाश के साथ अन्धेरा नहीं रह सकता वैसे ही मेरे भगवान के साथ सत्य आदि गुणों के विरोधी झूठ आदि अवगुण नहीं रह सकते। जैसे प्रकाश के स्वरूप में अन्धकार की सत्ता सोची नहीं जा सकती वैसे ही प्रभु के स्वरूप में असत्य, अन्याय आदि अवगुणों की सत्ता की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भगवान में तीनों कालों में इन सत्य, न्याय आदि पवित्र गुणों की विद्यमानता रहती है। इन सत्य आदि गुणों का अभाव और इन के विरोधी झूठ आदि अवगुणों का भाव भगवान में कभी रहा न रहेगा। वे तो सदा ही सत्यशील, न्यायशील और दयाशील आदि रहते हैं। तभी तो शास्त्र उन्हें सत्य-स्वरूप, न्यायस्वरूप और दयामय आदि नामों से पुकारते हैं। ऐसे सत्य आदि पवित्र गुणों के महासागर हैं मेरे भगवान, जिन के साथ मैंने अपने प्रेम की लौ लगाई है, जिनका मैं उपासक और भक्त बना हूं, जिनका मैं अपने आप को बन्दा कहता हूं। इधर तो ये मेरे भगवान हैं और उधर मैं अपने आपको देखूं। मैं तो अपने भगवान के इन पवित्र गुणों के विरोधी असत्य, अन्याय, अदया, अज्ञान असंयम आदि दुर्गुणों से भरा हुआ हूं। मैं तो प्रातः काल जागने से लेकर रात को सोने के समय तक अपने दैनिक व्यवहार में असत्य और अन्याय आदि के ढेर के नीचे दबा रहता हूं। मैं सत्यस्वरूप आदि नामों वाले भगवान का उपासक, भक्त और बन्दा कैसा?

भगवान के प्रति इस प्रेम और इस प्रेम में भर कर उन के गुणों का इस प्रकार चिन्तन करने अपनी अवस्था का उनके साथ मिलान करने से उपासक के मन में एक बिजली सी दौड़ने लगती है जिससे उसे अपने अवगुणों से नफरत होने लगती है। अपने अवगुणों के प्रति उत्पन्न हुई इस घृणा के कारण वह अपने अवगुणों का परित्याग करने लगता है और उनके विरोधी भगवान के सत्य आदि अवगुणों को अपने भीतर धारण करने लगता है। कुछ काल अभ्यास करते-करते वह भगवान के विरोधी अपने सभी ऐबों को छोड़ देता है। जैसे सांप अपनी केंचली को परे फेंक कर साफ और स्वस्थ निकल आता है वैसे ही उपासक अपने दुर्गुणों का परित्याग कर के और उनके स्थान में प्रभु के सदगुणों को अपना कर स्वच्छ और निर्मल हो जाता है। भगवान पाक और पवित्र है। उपासक भी भगवान के गुणों को धारण कर के पाक और पवित्र बन जाता है। भगवान अपने विराट रूप में पाक और पवित्र हैं। उपासक अपने छोटे क्षेत्र में पाक और पवित्र बन जाता है। भगवान के प्रति अपने सच्चे प्रेम

की वृत्ति के कारण भगवान के गुणों का अनुकरण कर के उपासक भी अपने क्षेत्र में भगवान जैसा ही बन जाता है।

प्रभु-भक्ति उपासक को प्रभु जैसा पवित्र बना देती है

इस प्रकार सत्पुरुषों की संगति का जो लाभ होता है। वही लाभ प्रभु की उपासना का होता है। जैसा ऊपर दिखाया गया है, संसार में तो हमें प्रायः अपने जैसे अच्छाई और बुराई के मिश्रण—जिनमें आम तौर पर अच्छाई कम और बुराई बहुत अधिक रहती है—लोगों की संगति ही मिलती है। अच्छी संगति के इस अभाव को हम भगवान की उपासना द्वारा पूरा कर लेते हैं। दोनों काल उपासना के समय हम अपने विचार द्वारा प्रति दिन परमपुरुष भगवान की संगति में जा बैठते हैं। उन की संगति में बैठकर उनके गुणों का प्रेम पूर्वक चिन्तन करने से हमारे मन में उन जैसा बनने की लालसा जाग उठती है। इस लालसा के कारण हम भगवान के गुणों का अनुकरण करने लगते हैं और अपने अवगुणों को छोड़ने लगते हैं। निरन्तर इस संगति में बैठते रहकर कुछ काल के अभ्यास के पश्चात हमारे सारे अवगुण जाते रहते हैं और उन के स्थान पर भगवान के पवित्र गुण हमारे अन्दर आकर बस जाते हैं। और हम प्रभु की भांति सर्वदा सदगुणी बन जाते हैं। हम प्रभु जैसे पवित्र बन जाते हैं।

पवित्र जीवन का परिणाम सुख ही सुख

जैसा ऊपर कहा गया है हमें जीवन में जो दुःख प्राप्त होते हैं वे हमारे बुरे कर्मों का फल होते हैं और जो सुख प्राप्त होते हैं वे हमारे शुभ कर्मों का फल होते हैं। उपासना के समय भगवान की संगति में बैठकर उनके सदगुणों को धारण करके हमने अपनी सब बुराईयां छोड़ दीं। अब हम में कोई अवगुण और दोष रहा ही नहीं। हम में तो अच्छाईयां और सदगुण आ गए। हमारे आचरण और कर्म शुभ होने लग पड़े। जब हमारे आचरण अशुभ नहीं रहे तो हमें दुःख कहां से मिलेगा ? हमारे कर्म तो अब शुभ हो गए हैं। अब तो हमें सुख ही सुख मिलेगा।।

सच्ची उपासना में सौदेबाजी नहीं है

इस उपासना में कोई सौदे और व्यापार वाली बात नहीं है, इसमें भगवान की प्रशंसा और खुशामद कर के उन्हें रिश्वत देने वाली कोई बात नहीं है। इस उपासना में तो भगवान् की संगती में बैठ कर उन के गुणों का चिन्तन करके अपने आप को भगवान् जैसा सद्गुणी बनाना होता है। इसमें अपने कष्टों को काटने और सुख देने की याचना भगवान् से नहीं करनी होती। इसमें तो भगवान् की संगति में बैठ कर उन जैसा पवित्र बनना होता है। हमारी इस पवित्रता का और उस से पैदा होने वाले हमारे शुभ कर्मों का परिणाम यह होता है कि भगवान् को बिना मांगे हमें सुख देना पड़ता है। हमारे शुभ कर्मों का फल सुख भगवान् को हमें देना ही है।

उपासना से उपासक के कष्ट किस प्रकार कटते हैं

उपासना से हमारे दुःख कटते हैं और सुख बढ़ते हैं यह तो ठीक है। पर अपने आचरणों को बिना सुधारे और बुराइयों में पड़े रहते हुए, भगवान् को उनकी प्रशंसा और तारीफ की रिश्वत चढ़ाने वाली मनोवृत्ति से सौदे और व्यापार की दृष्टि से की गई उपासना से हमारे कष्ट नहीं कटते। इस प्रकार की उपासना असल में उपासना है ही नहीं। उपासना को भगवान् की संगति में बैठ कर प्रेमपूर्वक उनके गुणों का स्मरण करने और उन गुणों को अपने जीवन में धारण करने का नाम है। इस सच्ची उपासना से हमारे कष्ट अवश्य कटते हैं। और वह इस प्रकार कि उपासना से हमारे दुर्गुण छूट कर हम सद्गुणी और शुभ कर्म करने वाले बन जाते हैं। शुभ कर्मों का फल सुख भगवान् हमें देंगे ही। अशुभ कर्म हम ने छोड़ दिये। जब अशुभ करेंगे ही नहीं तो हमें दुःख कहां से मिलेगा दुःख तो अशुभ कर्मों का फल होता है। उपासना से हमने अशुभ कर्म छोड़ दिये तो हमें दुःख कहां से प्राप्त होगा ? इस प्रकार सही रीति से की हुई उपासना हमारे दुःखों को काट देती है और सुखों की वृद्धि कर देती है।

असल में उपासना पाप को काटती है

यहां एक बात स्पष्ट रूप में समझ लेनी चाहिए। उपासना से असल में हमारे बुरे कर्म कटते हैं। बुरे कर्मों के कारण मिलने वाला कष्ट नहीं कटता। जो बुरे कर्म हम कर चुके उनके फल के रूप में मिलने वाला कष्ट तो हमें परमात्मा की न्याय-व्यवस्था के अनुसार मिल कर ही रहेगा। किये हुए कर्म का फल भोगना ही पड़ता है। इसीलिए हम देखते हैं। कि बड़े बड़े सचरित्र और शुभ आचरणों वाले महात्माओं के जीवन में भी कष्ट आते रहते हैं। ये कष्ट उन के पिछले अशुभ कर्मों का फल होते हैं। इस समय के उन के सचरित्र और शुभ कर्मों का फल उन्हें आगामी जीवन में सुख के रूप में अथवा मोक्षावस्था के ब्रह्म-साक्षात्कार के आनन्द के रूप में मिलेगा। और इस समय भी उनके जीवन में जो आनन्द है वह उनके पिछले अथवा इस जन्म के शुभ कर्मों का ही फल है। उपासना तो हमारे द्वारा भविष्य में होने वाले बुरे कर्मों को काटती है। उपासना से पवित्र बन अब भविष्य में हम बुरे कर्म नहीं करेंगे। और इसी लिए भविष्य में हमें कष्ट भी नहीं मिलेंगे। बुरे कर्म छूट जाने के कारण उन का फल दुःख अपने आप छूट गया। जो बुरे कर्म हम पहले कर चुके हैं और उन में से जिन का फल अभी तक नहीं भोगा गया है उनके फल के रूप में मिलने वाला कष्ट तो हमें भोगना ही पड़ेगा यह कष्ट उपासना से नहीं कटता। उपासना पाप को काटती है। हम आगे पाप नहीं करेंगे। उपासना पहले किए जा चुके पाप के फल कष्ट नहीं काटती। वह तो भोगना ही होगा। ★

अपना वोट किसको दें ?

● डा० धर्मवीर छिक्कारा

संविधान की प्रस्तावना में भारत को एक लोकतान्त्रिक देश स्वीकार किया गया है। भारत की केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों में जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि जाते हैं प्रजातन्त्र का अर्थ होता है जनता का, जनता के लिए तथा जनता द्वारा निर्मित शासन। इसलिए शासन की अच्छाई बुराई की मुख्य जिम्मेदारी जनता के ऊपर है। जनता स्वयं अपने भाग्य की विधाता होती है। जैसे प्रतिनिधि जनता द्वारा चुने जायेंगे वैसी ही शासन व्यवस्था वे दे सकेंगे। प्रतिनिधि अच्छे चरित्रवान तथा त्याग भाव से सेवा करने वाले होंगे तो जनता के कल्याण करने वाली सरकार बनेगी और यदि प्रतिनिधि ही भ्रष्टाचारी, शराबी और गुण्डों को प्रश्रय देने वाला होगा तो फिर सरकार जनता का कल्याण की बजाय बरबादी ही करेगी। अतः चुनाव के अवसर पर मतदाताओं के सामने यह प्रश्न है कि वोट का वास्तविक अधिकारी कौन है। इस प्रश्न पर गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

सर्वप्रथम हमारे सामने यह प्रश्न खड़ा होता है कि अच्छे प्रतिनिधि चुनने के लिए क्या २ कसौटियां हो सकती हैं जिनके आधार पर हम उसे अपना वोट दे सकें। इसके लिए यह आवश्यक है कि हमें अपने उद्देश्य, मांग तथा कुछ चुनाव लड़ने वाले प्रत्याशी के लिए आवश्यक बातें निर्धारित करनी पड़ेगी। कौन व्यक्ति हमारी भावनाओं तथा उद्देश्यों की पूर्ति कर सकता है तथा वोट का सही अधिकारी है। इसके लिए यजुर्वेद के पहले मन्त्र में बड़े ही सरल ढंग से हमारी समस्या का समाधान किया गया है। और कहा है, 'या वः स्तेन ईशतः, मा अघशंसः'' (हे मतदाताओ ! चोर और पाप का अनुमोदक तुम्हारा प्रतिनिधि न हो।) इस से स्पष्ट है कि किसी भी प्रकार से दूसरे के पदार्थ को या अधिकार को चोरी से हड़पने वाला तथा समाज के नियमों, मर्यादाओं, मान्यताओं को तोड़ने वाला व्यक्ति चाहे वह किसी भी वर्ग से सम्बन्ध रखता है आपका प्रतिनिधि नहीं होना चाहिए। जो व्यक्ति दूसरों का गला काटता है, दिन रात ठगी, छल-कपट से तथा चोरी से औरों का धन या पारिश्रमिक लूटता है वह समाज का दुश्मन है। वह आम जनता का प्रतिनिधि नहीं हो सकता। इसी प्रकार वेद के मन्त्र में दूसरा शब्द पाप आया है। इसका अर्थ भी यही होता है कि जो गरीबों को कष्ट देता है, जनता के वोटों से चुनाव जीतकर ऐय्याशी करता है और भ्रष्टाचार रिश्वतखोरी तथा तानाशाही को फैलाता है या फैलाने वाले का समर्थक है उसका उत्साह बढ़ाता है या किसी भी रूप में सहयोग करता है वह पापी है। पापी व्यक्ति सही प्रतिनिधित्व जनता को नहीं दे सकता। ऐसे व्यक्तियों को शासन में भेजने का मतलब है कि भक्षक को प्रजा का खून चूसने तथा संविधान की मर्यादा को भंग करने और अराजकता को जन्म देने के लिए उसको अधिकार देना। फिर उसका दोष कम समझा जाता है। क्योंकि आम तौर पर चुनाव में बार २ परखे हुए व्यक्तियों को ही हम दोबारा निर्वाचित कर देते हैं और फिर पांच वर्ष तक उनके दमन एवं अन्यायों की चक्की में पिसते रहते हैं। अतः हमें देखना चाहिए जो व्यक्ति बुराई का हर स्थान पर विरोध करे वही हमारा प्रत्याशी हो।

अथर्ववेद के बारहवें काण्ड में पृथ्वी सूक्त है जिसमें यह वर्णन किया गया है कि पृथ्वी को सत्य एवं सुन्दर बनाने के लिए क्या कुछ करना चाहिए। हमारा देश समृद्ध हो, हर स्थान पर खुशहाली हो इसके लिए यह आवश्यक है कि वेद मन्त्र के शब्दार्थों पर विशेष ध्यान दें। सत्यं—मन वचन और कर्म की एकरूपकता बृहत—उदारता, हृदय की उदारता, सहानुभूति, जिनके व्यवहार में अपने पराये का भेदभाव नहीं। ऋतं—नियमों का पालन कर्तव्य परायणता, उग्रम—शासन के संचालनार्थ दृढ़ स्वभाव, न्याययुक्त, सामाजिक नियमों का कठोर पालन, दीक्षा—योग्यता, कार्य कुशलता तपः—संयम, सुख दुख, मान अपमान, लाभ हानि की सहन शक्ति, नियमित जीवन, इन्द्रियों को वश में रखना, यज्ञः—शुभ कर्म तथा ब्रह्मः—ज्ञान व शिक्षा आदि। गुण ही विकास एवं समृद्धि को धारण करते हैं। इसलिए इन्हीं गुणों से परिपूरित व्यक्ति एवं राष्ट्र ही विकसित, समृद्धिशाली, दर्शनीय एवं प्रशंसनीय हो सकते हैं। अतः जो व्यक्ति इन गुणों को धारण करता हो, वह उसका चयन जनता को अपने राष्ट्र के हित में करना चाहिए नहीं 'बोये पेड़ बबूल के आम कहां से होय' वाली बात के अनुसार कष्ट भोगना पड़ेगा।

प्रजातन्त्र में जनता का वास्तविक प्रतिनिधि वह समझा जाता है जो जातिवाद, छुआछात एवं भाई भतीजावाद से अलग होकर हर एक आदमी की बात सुने और उसकी कठि-

नाई को दूर करने की कोशिश करे। आने वाले चुनाव में मतदाताओं को इसी आधार पर अपना वोट उस प्रत्याशी को देना चाहिए जो ऊपरलिखित योग्यता रखता हो। भय-लोभ लालच एव जातिवाद से ऊपर उठकर विचारें कि आपके वोट का अधिकारी कौन है। ऐसे भी लोग चुनाव में प्रत्याशी बन कर आ जाते हैं तो जो सिवाय अपनी राजनैतिक लिप्सा या स्वार्थ पूर्ति के कोई कार्य नहीं करते । ऐसे लोगों से सावधान रहने की जरूरत है और अपने वोट का सदुपयोग करना चाहिए।

परिवर्तन

कौंध जाता है एक प्रश्न मन में
परिवर्तन
किसमें
उस कराहती हुई मानवता में
उन शोषित जनों में
उन भूखे बच्चों में
उन निर्वस्त्र बहनो में
जो कराह रहे है।
इस मानवता के नाम पर कलंक
पाश्चात्य सभ्यता में
कर परिवर्तन इस सभ्यता
में नाद वैदिक सभ्यता
का बजाना होगा
परिवर्तन इस धर्म में भी
जहाँ धर्म निरपेक्षता की आड़
में पनप रहा पाखण्ड
किया जा रहा है मानव को बलि
मार कर लात पेट पर
उन भूखे बच्चों के
नहलायी जा रही दूध में
प्रतिमा भगवान की
नित्य नये ले रहे अवतार जन्म
कर भस्मी भूत इन अवतारों को
वैदिक धर्म का नाद बजाना होगा
परिवर्तन कर इस समाज में भी ऐसे समाज का प्रतिष्ठापन करना होगा।
जहां न हो सकेगा शोषण
किसी गरीब का
न बेचनी पड़ेगी अस्मत
किसी बहन को
न होगे नीलाम बैल किसी सुखिया के
ऐसा समाज निर्माण करना होगा

कुलदीपसिंह

दयानन्द सा देखा न सुना

यूँ तो कितने ही महापुरुष हुए दुनिया में,
कोई गुरुदेव दयानन्द सा देखा न सुना।
पाला हनुमान पवनसुत ने ब्रह्मचर्य था बस,
आपने स्वामी श्री रामचन्द्र के रिझाने को।
सुना है पाला ब्रह्मचर्य परशुराम ने था,
धरा से नाम क्षत्रिय वंश मिटाने को॥
पाला था ब्रह्मचर्य भीष्म पितामह ने भी,
अपने पितु शान्तनु को सुखी बनाने को।
किन्तु ऋषिराज दयानन्द ब्रह्मचारी ने,
पाला था ब्रह्मचर्य जग के दुःख मिटाने को॥
दीन दुखियों की दशा देख दुःखी होता था,
सारा जग चैन से सोता था तब वो रोता था।
विश्व कल्यान के साधण सभी संजोता था,
एक पल भी वो कभी व्यर्थ न खोता था॥
योगी जो आठ पहर ध्यान मग्न रहते हैं,
देख स्वामी की तपस्या को वो यही कहते हैं।
यूँ तो कितने ही महापुरुष हुए दुनिया में,
कोई गुरुदेव दयानन्द सा देखा न सुना॥
मारते मान रहे मिथ्याचार भण्डी के,
पूर्ण प्रतिद्वन्द्वी रहे पातकी पाखण्डी के।
वेद अनुयायी थे रक्षक थे ओ३म् झण्डी के,
निराले शिष्य थे गुरु विरजानन्द दण्डी के॥
जैसे कवि अपने मधुर छन्द पर निछावर है।
जैसे प्रेमी चकोर चांद पर निछावर है।
भृंग अरविन्द के मकरन्द पर निछावर है,
तैसे दिल मेरा दयानन्द पर निछावर है॥
जिसने मृत आर्य जाति को पुनः जिलाया है,
खुद जहर पी के वेद अमृत हमें पिलाया है।
धैर्य विधवा अनाथ दलितों को दिलाया है,
जिसने पिछुड़े हुओं को हमसे फिर मिलाया है।
उस दयानन्द पै बलिहार क्यों न जायें हम,
क्यों न उसके लिये सर्वस्व भी चढ़ायें हम।
आर्य बन सच्चे क्यों न उसका ऋण चुकायें हम,
क्यों न श्रद्धा से गीत ये 'प्रकाश' गायें हम॥
यूँ तो कितने ही महापुरुष हुए दुनियां में।
कोई गुरुदेव दयानन्द सा देखा न सुना।

प्रकाशचन्द्र कविरत्न, अजमेर

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल का वार्षिक अधिवेशन सम्पन्न

आर्यसमाज का नेतृत्व युवा नेताओं के कन्धों पर

श्री गजानन्द आर्य सभा प्रधान एवं श्री सोमदेव गुप्त सभा मन्त्री निर्वाचित

आर्य प्रतिनिधि सभा बंगाल (कलकत्ता) का त्रैवार्षिक अधिवेशन ९ जनवरी को बड़े उत्साह के वातावरण में सम्पन्न हुआ। यह बेहद प्रसन्नता की बात है कि बंगाल में आर्य समाज के प्रोग्राम एवं संगठन को व्यापक बनाने के लिए वहां के आर्य भाईयों ने नौजवान कार्यकर्त्ताओं को नेतृत्व सौंपा है। इससे आर्य युवकों को बहुत अधिक प्रोत्साहन मिलेगा। अब युवकों को अपनी जिम्मेदारी समझकर आगामी तीन वर्ष में बंगाल में आर्यसमाज के कार्य को तीव्र गति प्रदान करनी है। देश भर के आर्य इसी प्रकार नौजवान को आगे लाने का आदर्श बंगाल के आर्यों से प्राप्त कर सकते हैं। अधिवेशन में चुने गये अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों की सूचि इस प्रकार से है।

गजानन्द आर्य

सोमदेव गुप्त एडवोकेट

१. श्री गजानन्दजी आर्य — प्रधान
२. " बटकृष्णजी वर्मन, एडवोकेट — कार्यकर्त्ता प्रधान
३. " राजेन्द्रकुमारजी पोद्दार, संसद सदस्य (राज्य सभा) — उप-प्रधान
४. " दिनेशचन्दजी गुप्ता, एडवोकेट — "
५. " रामलखनसिंह, एम० ए० बी० टी० — "
६. " मोहनलालजी आर्य — "
७. " छबीलदास सैनी — "
८. " सोमदेव गुप्त, एम० काम०, एल० एल०, बी० एडवोकेट — सभामन्त्री
९. " जगदीश प्रसाद शुक्ल, इन्जीनियर — संयुक्तमन्त्री
१०. " दयाशंकर जैसवाल, बी० एस.सी० (एजी) एल० एल० बी० — उप-मन्त्री
११. " श्याम कुमार मंडल, एम० ए० एल० एल० बी०, एडवोकेट — "
१२. श्री सुशीलकुमार गुप्त, बी० ए० — उपमन्त्री
१३. " ओ३म् प्रकाश अग्रवाल — कोषाध्यक्ष
१४. " पुष्करलाल आर्य — पुस्तकाध्यक्ष
१५. " सोमनाथ आर्य — अधिष्ठाता आर्य वीर दल
१६. श्री पण्डित शिवाकान्त उपाध्याय, बी० एस०सी० — कलकत्ता आर्य समाज
१७. " गणेशप्रसाद जायसवाल, बी० कम० — " "
१८. " फूलचन्द्र आर्य — बड़ाबाजार
१९. " ओ३म् प्रकाश बहलवाला — " "
२०. श्री चन्द्रबली गुप्त — जोड़ासाकूं आर्य समाज
२१. " गिरिधारीलाल साव — मल्लिकबाजार "
२२. " जनकलाल गुप्ता — खिदिरपुर "
२३. " विजयप्रसाद ठाकुर बी० ए० — बैरकपुर "
२४. " भगवानदास बी० ए० — काकीनाड़ा "
२५. " लालबहादुर सिंह, एम० ए०, बी० टी० — ईच्छापुर "

२६. " रतीराम शर्मा	सिलिगुड़ी	"
२७. " देशराज जी	ग्रासनसोल	"
२८. " चन्द्रिका सिंह, एम० ए०, बी० टी०, एल० एल० बी०	खड्गपुर	"
२९. " ग्राचार्य श्री चैतन्य शास्त्री	काउचण्डी मिदनापुर	"
३०. " दिलीपकुमार वर्मन, बी० ए०		"
३१. " पण्डित सुरेन्द्रनाथ, सिद्धान्त विशारद	हवडा ग्रार्य समाज	
३२. " निमाईचांद पात्र, बी० ए०, बी० एड०	हुगली	"
३३. " द्विजेन्द्रनाथ दवे शर्मा	२४ परगना	"
३४. " श्री मती शान्ति देवी लूथरा	भवानीपुर स्त्री समाज	

पृष्ठ १२ का शेष

वैदिक सिद्धान्तों का खण्डन करना ग्रारम्भ किया । ग्रपने व्याख्यानों में पेट भरकर गाली देना था । जब यह वृद्ध हो गया तब मैनपुरी में एक दिन इनके शिष्य श्री ग्राचार्य दिवाकर जी जब पैर दबा रहे थे तब उन्होंने पूछा —गुरुजी ! ग्रापको यह पैरों पर कुष्ट क्यों हो गया ? इससे पंडित भीमसेन ने ग्रति दुःख प्रकट करते हुए कहा था कि ये सब मेरे गुरुद्रोह के पाप का परिणाम है । मैंने महर्षि दयानन्द को गालियां देकर इतना पाप किया है कि ग्रनेकों जन्मों तक दुःख भोगने पर कहीं पिण्ड छूटेगा । यह पंडित भीमसेन ग्रपने जीवन में ग्रति रुग्ण रहा ग्रौर मानसिक सन्ताप से सन्तप्त रहते हुए ही इसने ग्रपने जीवन के दिन पूरे किये ।

ष्ठ १० का शेष

सकते ग्राज जब की सारा विश्व जात-पात ग्रौर मत मतान्तरों के राजनीति षड्यन्त्रों में धर्म प्रचार की खाल ग्रोढे हुए धर्माचार्यो के चंगुल में फँसता चला जा रहा है महर्षि दयानन्द के वास्तविक मूल्याङ्कन में सर्वथा ग्रक्षय ग्रौर ग्रसमर्थ है। धीरे-धीरे जैसे-जैसे विश्व में मानवीय गुणों का मूल्य बढ़ेगा। मत मतान्तरों के दुराग्रह नष्ट होंगे वैसे-वैसे भारतीय ग्राकाश में चमकने वाले इस ज्योति पुंज दयानन्द के वास्तविक रूप का दर्शन संसार कर सकेगा । व्यक्ति के जन्म से लेकर ग्रौर ग्रन्तर्राष्ट्रीय सरकार की स्थापना तक जिसे महर्षि ने चक्रवर्ती राज्य की संज्ञा दी है ग्रौर उससे ग्रागे ग्रात्मा की उस चरमावस्था तक का भी एक पूर्ण कार्यक्रम विस्तृत घोषणा ग्रार्यसमाज की एक मात्र थाती है । ग्राज धरती पर जितने भी वाद या इज्म चल रहे हैं जिनमें साम्यवाद की ग्रोर प्रमुख रूप से दुनियां की ग्रांखे गड़ी हुई हैं किन्तु इस प्रकार के सारे वाद केवल मात्र समाज की ग्रार्थिक समस्या को ग्राधार बना कर चलते हैं । किन्तु मानव समाज का एक मात्र उद्देश्य ग्रर्थ नहीं है । उसके पूर्ण पुरुषार्थ ४ प्रकार के हैं जिन्हें संसार का सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद. धर्म ग्रर्थ काम ग्रौर मोक्ष के रूप में प्रस्तुत करता है ।

इस प्रकार कहा जा सकता है महर्षि स्वामी दयानन्द किसी देश या राष्ट्रविशेष की सीमाग्रों में ग्राबद्ध नहीं थे। उनके विचार व सिद्धान्त मानव मात्र के लिए तथा सार्वभौम रहे हैं । यह ठीक है कि उन्होंने ग्रपना प्रारंभिक कार्य उसी भारत से प्रारम्भ किया जिस भारत ने कभी इसी धराखण्ड से संपूर्ण विश्व में ज्ञान का स्वर्णिम ग्रालोक फैलाया था। वे इस बात में गौरव ग्रनुभव करते हैं कि उनका देश ग्रार्यवर्त देश है ग्रौर उस ग्रार्यवर्त की प्राचीन संस्कृति व सभ्यता वेदानुकूल ही रही है उस युग में जब कि देशवासी विदेशीसत्ता को एक ग्रधर्माचार समझते थे । ऋषि ने इस भावना झकझोरा ही नहीं ग्रपितु श्यामजी कृष्ण वर्मा सरीखे क्रान्तिकारियों को विदेश भेजा । उस युग में उन्होंने ग्रार्यसमाज के सामने जो ग्रार्थिक व्यवस्था रक्खी उसका घोषणा पत्र गो कृष्यादि रक्षिणी सभा में उन्होंने स्पष्ट किया । गाय ग्रौर कृषि ये दो सबल ग्राधार नई ग्रर्थ व्यवस्था के लिए स्वामी दयानन्द ने सर्व प्रथम प्रस्तुत किए । इस देश में शान्ति पूर्ण पहला ग्रान्दोलन गौ हत्या बन्दी का महर्षि द्वारा ही चलाया गया था जिसमें करोड़ों हस्ताक्षर करा कर वे महारानी विक्टोरिया से प्रार्थना करना चाहते थे कि देश में गौ हत्या का कलंक मिटे ग्रौर कृषि की उन्नति हो । हिन्दी को देश की राष्ट्र भाषा के रूप में ग्रासीन कराने का प्रथम प्रयत्न ऋषि दयानन्द ने ही किया था । शिक्षा के क्षेत्र में गुरुकुल प्रणाली को वे प्रचलित कराना चाहते थे । देशी सिद्धान्तों को एक सूत्र में बाँधने का जो कार्य स्वतंत्रता के बाद लौह पुरुष सरदार पटेल ने किया था उसे स्वतंत्रता से पूर्वक ही रहने के प्रयत्न ऋषि दयानन्द ने प्रारभ कर दिए थे । २० वर्ष की ग्रल्पावधि में हर क्षेत्र में एक क्रान्ति को जन्म देने वाले क्रान्त दर्शी स्वामी दयानन्द ही माने जाते हैं ।

★ ★

शिवरात्रि जिन का बौद्ध दिवस है "महर्षि दयानन्द सरस्वती"

● नरेन्द्र प्रभाकर

महर्षि दयानन्द का जन्म सन १८२४ ई० भाद्रपद शुक्ल नवमी संवत १८८१ में मौरवी राज्य काठियावाड गुजरात में एक कट्टर परम्परावादी ब्राह्मण परिवार में हुआ। पिताजी का नाम पं० करसन जी त्रिवेदी तथा माता जी का नाम श्रीमती अमृतबाई था। छोटी अवस्था में ही धर्म के प्रति गहरी अभिरुचि का विकास हुआ। आठवें वर्ष में उपनयन के पश्चात यजुर्वेद का अभ्यास प्रारम्भ किया। चौदह वर्ष की आयु में पिता जीकि आज्ञा से शिवरात्रि का व्रत एक महत्वपूर्ण घटना बन गई और जीवन में महान परिवर्तनकारी सिद्ध हुई। अर्धरात्रि के पश्चात शिवजी की पिंडी पर चढ़ाये नैवैद्य को चूहों के द्वारा खाया जाता देखकर बालक को जिज्ञासा हुई कि यह तो सच्चा शिव प्रतीत नहीं होता और सच्चे शिव कि खोज में आपने गृह त्याग दिया। घर से सम्बन्ध विच्छेद होने पर अनेक साधुओं-महात्माओं की सगति की। संन्यास दीक्षा ली। अन्त में मथुरा में दण्डी स्वामी विरजानन्द जी के निकट रह कर तात्विक ज्ञान की उपलब्धि से यह युवा महर्षि दयानन्द के रूप में सूर्य के समान चमक उठा

१८६४ ई० में उन्होंने जनता में प्रचार करना, उपदेश देना आरम्भ किया। महर्षि ने अपने जीवन के साढे दस वर्ष ही प्रचार लेखन प्रवचन एवं शास्त्रर्थ आदि किए। इस सीमित समय में ऋग्वेद यजुर्वेद के भाष्य, सत्यार्थ प्रकाश, संस्कारविधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका तथा व्याकरण, निरुक्त एवं ब्राह्मणादि ग्रन्थों की रचना की। १० अप्रैल १८७५ ई० को सर्वप्रथम आर्यसमाज की स्थापना बम्बई में की। पाठशालाओं तथा परोपकारिणी के रूप में मुद्राणालय की स्थापना की। इस प्रचारकाल में आप को १७ बार विष दिया गया किन्तु अपनी यौगिक शक्ति से आप को हानि नहीं दे सका। अन्त में १८८३ में जोधपुर में आप को आप के ही रसोइये जगन्नाथ द्वारा विष दिया गया जिस में शीशा मिला हुआ था। इस लिए यह विष प्राण घातक सिद्ध हुआ, जिस के कारण आप दीपावली के पुनीतपर्व पर निर्वाण पथ के पथिक बने।

(१) वेद ईश्वरीय ज्ञान है तथा जगत की सर्वप्रकार की विद्याओं के मूल स्त्रोत है।

(२) वर्ण व आश्रम की गुण कर्मानुसार वैदिक परिपाटी ही मनुष्य जीवन के लिए हितकर एवं आदर्श है।

(३) वेद ही एकमात्र स्वत: प्रमाण है। वेद अर्थात केवल चार मूल वेदों की संहिताएं ही अभिष्ट है।

(४) सामाजिक दृष्टि से विधर्मियों (मुसलमान, ईसाई आदि) का धर्मान्तरण (शुद्धिकरण) आवश्यक है।

(५) आप के विचारों का "आदेश प्रतिनिधि" आर्य समाज है।

(६) नारी शिक्षण पर्दाप्रथा का बहिष्कार तथा नारी को आदर्श गृहलक्ष्मी बनाने के पक्षपाती थे। आज राष्ट्र में ही नहीं अपितु विश्व में स्थान स्थान पर आप के नाम से विद्यालय भवन मार्ग आदि तो विद्यमान हैं ही पर भारत सरकार ने संसद भवन की विशाल चित्र विथिका में आप का चित्र प्रथम पंक्ति में रखा है।

★ ★

शिवरात्रि का सन्देश

श्री योगेन्द्र 'पुरुषार्थी' योगाधाम, आर्यनगर ज्वालापुर

शिवरात्रि का सन्देश नव संचार का आधार है।
शिवभक्ति के सच्चे स्वरूपों का यही उद्गार है॥
जड़पूजकों की भ्रान्ति से जो बन गया व्यापार है।
युगभ्रान्त ऐसे मानवों के जन्म का पतवार है॥१॥

शिवरात्रि से सन्देश पाकर 'मूल' यतिवर बन गये।
प्राप्त करके सत्यशिव को शुद्ध ऋषिवर बन गये॥
एक ईश्वर पूज्य है आदेश सबको कर गये।
बहुदेव पूजन है नहीं, यह वेदसम्मत कर गये॥२॥

नित नये भगवान् पैदा हो रहे हैं फिर यहां।
पाखण्ड नानाविध बढ़ाये जा रहे हैं फिर यहां॥
आचार के नाशक सिनेमा बन रहे हैं फिर यहां।
शक्तिनाशक खाद्य भी तो बिक रहे हैं फिर यहां॥३॥

विविध भ्रष्टाचार का एक वेद ही सदुपाय है।
संघशक्ति प्रेम से बोले यदि समुदाय है।
यदि वेशभूषा एक भाषा धर्म एक निकाय है।
तो एकता के सूत्र का यह एकमात्र उपाय है॥४॥

हे आर्यजन ! सम्भव तभी जब आर्य राष्ट्र बन जायगा।
वैदिक विधानों से सभी शासन चलाया जायगा॥
गोवंश घातन दोष तब इस देश से मिट पायगा।
जब घातकों को गोलियों से उड़ाया जायगा॥५॥

निःशुल्क शिक्षा, न्याय हो बेकार रहना बन्द हो।
तब छात्र-आन्दोलन हटें हड़ताल करना बन्द हो॥
पालन करें ब्रह्मचर्य का व्यभिचार करना बन्द हो।
'पुरुषार्थी' विद्वान होवें आर्य नहिं मतिमन्द हो॥६॥

पंजाब व हरियाणा से लोकसभा के चुनाव में २० लाख नौजवान वोटर अधिक प्रभावशाली सिद्ध होंगे

चण्डीगढ़–पंजाब व हरियाणा में लोकसभा के चुनाव लड़ने वाले उम्मीदवारों को न केवल १९७१ के बाद वोटर बनने वाले नौजवानों से परिचय करना होगा अपितु संसदीय क्षेत्रों की नई हदबंदी के कारण नए क्षेत्रों से भी मैत्री करनी होगी। इस हदबन्दी के कारण दोनों राज्यों में लोकसभा के सभी क्षेत्र प्रभाव कारी हुए हैं। हरियाणा में भिवानी का नया लोक-सभाई क्षेत्र वजूद में आया है जबकि झज्जर, कैथल और गुड़गांव की जगह सोनीपत, कुरुक्षेत्र और फरीदा-बाद ने ली है। इस प्रकार हरियाणा के लोकसभाई क्षेत्रों की संख्या नौ से बढ़कर दस हो गई है। पंजाब में फाजिल्का लोकसभाई क्षेत्र समाप्त कर दिया गया है। उसकी जगह फरीदकोट क्षेत्र वजूद में आया है। परन्तु पंजाब में लोकसभा क्षेत्रों की संख्या पहले की तरह तेरह ही है। हरियाणा में विधानसभा क्षेत्रों की संख्या ८१ से बढ़कर ९० हो चुकी है और पंजाब में १०४ से बढ़कर ११७, इस प्रकार दोनों राज्यों में हर लोकसभाई क्षेत्र के नीचे नौ विधान सभाई क्षेत्र हैं।

दोनों राज्यों में वोटरों की संख्या अगस्त १९७६ के चुनाव नियमों के अनुसार एक करोड़ ३८ लाख हो गई है। इनमें ८१ लाख से अधिक पंजाब और ५७ लाख से अधिक हरियाणा में थे। मतदाता आगामी ५ फरवरी तक इन सूचियों में शुद्धियां करवा सकते हैं और हो सकता है कि वोटरों इस संख्या में वृद्धि हो जाए। इन एक करोड़ ३८ लाख वोटरों में से बीस लाख के करीब ने १९७१ के लोकसभाई चुनाव के बाद वोट डालने का अधिकार प्राप्त किया। इन में से अधिकांश की आयु २५-२६ वर्ष से कम है। इन नौजवान वोटरों की पसन्द तथा नापसन्द अधि-कांशत: बड़े राजनीतिक प्रश्नों द्वारा निर्धारित किए जाने की सम्भावना है। पंजाब, हरियाणा भारत के दो समृद्धतम राज्य हैं और इसलिए भी यहां के मतदाता बड़े राजनीतिक सवालों के आधार पर ही अपने उम्मीदवार चुनने की जाहिरा तौर पर हिम्मत भी कर सकते हैं।

ये युवक १९७१ के चुनावों के बाद वोटर-सूची में शामिल किए गए हैं जनसंघ व अकाली दल के संगठन से जनता पार्टी को लाभ सम्भावित वर्तमान चुनावों में उम्मीदवारों की किस्मत का फैसला 'राजनीतिक प्रश्न' करेंगे।

दोनों राज्यों में लोकसभा चुनावों के परिणाम क्या होंगे, इसका अभी से कोई अन्दाजा लगाना समय से पूर्व होगा परन्तु आम विचार पाया जाता है कि देश के दूसरे हिस्सों की तरह यहां भी चुनाव में कांग्रेस और जनता पार्टी के भाग्य का फैसला बहुत हद तक बड़े राजनीतिक प्रश्न करेंगे। आम वोटर ने अभी से इन प्रश्नों पर विचार प्रकट करना शुरू कर दिया है चाहे वह कांग्रेस की ओर से उठाए जा रहे हैं या जनता पार्टी की ओर से। इसलिए यह कहा जा सकता है कि गत चुनावों के परिणामों के विश्लेषण "ऊंट किस करवट बैठेगा" इसका अन्दाजा लगाने वालों के कोई अधिक काम नहीं आएंगे।

संगठनात्मक समस्याएं

सठनात्मक दृष्टिकोण से जनता पार्टी के लिए पंजाब तथा हरियाणा में काम चलाऊ परन्तु प्रभावी ढांचा खड़ा करना कोई कठिन काम नहीं होगा जनता पार्टी में शामिल जनसंघ के यूनिट पंजाब में ब्लाक स्तर तक कायम हैं। यहाँ भालोद संगठन कांग्रेस तथा सोश-लिस्ट पार्टी का अस्तित्व नाममात्र का होते हुए भी यद्यपि थोड़ी बहुत महत्ता रखता है तो भी जनता पार्टी का ज्यादा संगठनात्मक काम जनसंघ को ही करना पड़ेगा। हरियाणा में जनसंघ के साथ भालोद के एवं संगठन कांग्रेस के यूनिट भी काफी मजबूत हैं इसलिए हरियाणा में ये तीनों पार्टियां मिल कर यह बोझ

उठाएंगी। हरियाणा का सोशलिस्ट नेतृत्व यद्यपि इन तीन पार्टियों के समान प्रभावशाली नहीं तथापि इसे स्थानीय महत्व प्राप्त है विशेषत: हिसार व सिरसा जिलों में। कांग्रेस को दोनों राज्यों में कोई विशेष संगठनात्मक समस्या दरपेश नहीं है।

पंजाब में कांग्रेस की सबसे बड़ी प्रतिद्वंद्वी अकाली पार्टी है। जनता पार्टी से इसके तालमेल से एक जबरदस्त राजनीतिक शक्ति अस्तित्व में आ गई है जिसका मुकाबला कांग्रेस को करना होगा। पंजाब में अकाली दल की जड़ें पाताल तक पहुँची समझी जाती हैं तथा इस के पैरोकारों में पार्टी का कामकरने की जबरदस्त शिद्दत मौजूद है। यही कारण है कि चुनाव जलसों तथा जलूसों के मौके पर इसकी संगठनात्मक श्रेष्ठता का प्रदर्शन होता रहता है। दोनों पार्टियां मिलकर राजनीतिक वर्करों की एक बहुत बड़ी फौज इकट्ठी करने में सफल होंगी। हरियाणा में भी जनता पार्टी को अकाली दल से गठजोड़ के कारण अत्यधिक राजनीतिक लाभ मिलने की आशा है। हरियाणा में लोक सभा क्षेत्रों के पुनर्गठन के बाद इसके विधान सभा क्षेत्र अम्बाला कालका, नारायणगढ़, सिढौरा, छिछरौली, यमुना नगर, अम्बाला छावनी, अम्बाला शहर, नंगल तथा मलाना। सिढौरा नया क्षेत्र है। कुरुक्षेत्र—जगाधरी, शाहबाद, रादौर, थानेसर, पिहोवा, गोहला, कैथल, पुन्डरी, और पाई। जगाधरी अम्बाला से रादौर करनाल से निकाल कर शामिल किए गए हैं तथा गोहला व पाई नए क्षेत्र हैं। करनाल इन्दरी, नीलो खेड़ी, करनाल, जंडला, घरौंडा, असन्ध, पानीपत, समालखा, नौलथा। असन्ध नया क्षेत्र है। सोनीपत—बरोदा, गोहाना, जुलाना तथा सफींदों रोहतक से निकालकर शामिल किए गए हैं। रोहतक—हसनगढ, कलोई, रोहतक, महम, कलानौर, बेरी, सालावास, झज्जर तथा बारमी। हसनगढ, बेरी सालावास और झज्जर क्षेत्र को तोड़कर शामिल किए गए गए हैं तथा बादली नया क्षेत्र है। फरीदाबाद-फरीदाबाद, महाराजपुर, बल्लभगढ, पलवल, हसनपुर, हथिन, फिरोजपुर झिरका तथा तावड़ू। महाराजपुर तथा तावडू नए क्षेत्र हैं। महेन्द्रगढ—सोहना, गुड़गांवा पटौदी, बावल, रिवाड़ी, जाटुसाना, महेन्द्रगढ़, एटल तथा नारनौल। सोहना व गुड़गांव क्षेत्र को तोड़कर शामिल किए गए हैं। भिवानी—भादरी, दादरी, मंडलखुर्द, भिवानी, तोशाम, लोहारू, भिवानी खेड़ा, हांसी तथा आदमपुर। भादरा महेन्द्रगढ़ से तथा दादरी मंडलखुर्द से भिवानी, तोशाम लोहारू भिवानी खेड़ा और हाँसी हिसार से तथा आदमपुर सिरसा से निकालकर शामिल किए गए हैं। हिसार—बरवाला, हिसार, धराई, कलायत, नरवाना, नारनौंद, उचाना कलां राजौंद तथा जींद। बरवाला, सिरसा से जींद रोहतक से और कलायत, नरवाना राजौंद पुराने कैथल क्षेत्र से निकालकर मिलाए गए हैं। जबकि उचाना कलां नया क्षेत्र है। सिरसा (शैड्यूल्डकास्ट)—मुट्टो कलाँ टोहाना रैता, फतेहाबाद, डेरबा कलां, ऐलनाबाद, सिरसा, रोडी तथा डबवाली।

(पंजाब केसरी से साभार)

(पृष्ठ ६ का शेष)

जनता पार्टी और आर्य सभा

आर्य सभा की कार्य समिति ने इस बात पर विशेष प्रसन्नता प्रकट की कि देश की चार राष्ट्रीय पार्टियों (जनसंघ, संगठन कांग्रेस, भालोद, सोशलिस्ट पार्टी) ने जनता पार्टी का गठन करके देश की राजनीति में एक ऐतिहासिक मोड़ दे दिया है। प्रजातान्त्रिक अधिकारों की रक्षा के लिए यह आवश्यक था कि देश में एक सुदृढ़ प्रतिपक्ष हो। इस राजनैतिक ध्रुवीकरण से राजनीति में व्यस्त अस्थिरता समाप्त होगी। आर्य सभा ने यह निर्णय किया कि चुनाव के बाद अन्य राजनतिक दलों की भांति आर्यसभा भी जनता पार्टी में विलीन हो जाएगी।

कार्य समिति की बैठक का संयोजन श्री रामधारी शास्त्री महामंत्री आर्यसभा ने किया। शान्तिपाठ के बाद बैठक समाप्त हुयी।

आर्यसमाज नाहरी (सोनीपत) का चुनाव

दिनांक २३-१-७७ (रविवार) को श्री सूरजभान जी की अध्यक्षता में आर्य समाज नाहरी का सन १९७७—सम्वत २०३३— के लिए चुनाव हुआ निम्न पदाधिकारी चुनुगए:—

१. श्री पृथ्वीसिंह जी संरक्षक
२. श्री होश्यारसिंह प्रधान
३. श्री मोजीराम जी उपप्रधान
४. श्री जिले सिंह जी मन्त्री
५. श्री रमेश चन्द्र जी कोषाध्यक्ष
६. श्री जोगीराम जी लेखा निरीक्षक

जिलेसिंह
मन्त्री आर्य समाज नाहरी (सोनीपत)

चुनाव आयोग की २३ सूत्रीय चुनाव प्रचार संहिता घोषित

लोकसभा का चुनाव लड़ने वाले राजनीतिक दलों व उम्मीदवारों केलिए चुनाव आयोग ने एक २३ सूत्री आचार संहिता जारी की है। इस संहिता में कहा गया है कि राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों को अपना चुनाव अभियान ऐसे चलाना चाहिए जिससे जातियों और समुदायों के बीच घृणा पैदा नहीं हो और मतभेद तीव्र नहीं हों।

संहिता में उनसे सभाओं में अड़चन नहीं डालने अथवा सभा और जलूस तोड़ने की कोशिश न करने का आग्रह किया गया है। राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों से इस सम्बन्ध में संयम बरतने को कहा गया है। यह भी कहा गया है कि जलूस में लोग ऐसी चीजें साथ लेकर न चलें, जिनका अवांछित तत्व उत्तेजना में दुरुपयोग कर सकें।

आचार संहिता में कहा गया है कि कोई भी दल या उम्मीदवार ऐसी कोई कार्रवाई नहीं करेगा, जिससे विभिन्न जातियों, समुदायों, धर्मों या भाषाई समूहों के बीच तनाव पैदा हो या मतभेद बढ़े। राजनीतिक दलों की जब भी आलोचना की जाए तो वह उनकी नीतियों और कार्यक्रमों अथवा उनके पुराने काम या उपलब्धियों के बारे में ही होनी चाहिए। अन्य दलों के नेताओं और कार्यकर्ताओं के सार्वजनिक जीवन से असम्बद्ध निजी जीवन के किसी भी पहलू की आलोचना से विरत रहना जरूरी है। अपुष्ट आरोपों या बातों को तोड़ मरोड़ कर किसी दल या कार्यकर्ता की अलोचना नहीं की जानी चाहिए।

आचार संहिता में कहा गया है कि राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों को देखना चाहिए कि उनके समर्थक अन्य दलों की सभाएं और जलूसों में अड़चन डालने या उन्हें तोड़ने की कोशिश नहीं करते। एक राजनीतिक दल के कार्यकर्ताओं और समर्थकों को दूसरे राजनीतिक दल की सभाओं में जबानी या लिखित सवाल पूछ कर अथवा पर्चे बांट कर विघ्न नहीं डालना चाहिए। एकदल को उस स्थान से जलूस नहीं निकालना चाहिए जहां दूसरे दल की सभा हो रही हो। एक दल द्वारा जारी किए गए पोस्टर दूसरे दल के कार्यकर्ताओं द्वारा हटाने नहीं चाहिए।

संहिता में कहा गया है कि यदि किसी पुलिस सिपाही के विरूद्ध शिकायत हो तो सबसे पहले सम्बन्धित पुलिस अधीक्षक के ध्यान में लाई जाए और उसके बाद उससे ऊपर के अधिकारियों से कहा जाए। यदि पुलिस अधीक्षक या उससे ऊपर के अधिकारियों द्वारा की गई कार्यवाही से संतोष न हो तो जनता के सामने शिकायत की चर्चा की जाए। सत्तारूढ़ दल को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह ऐसी शिकायत का कोई अवसर नहीं देगा कि उसने अपने चुनाव अभियान में सत्ता का उपयोग किया है। वोट पाने के लिए जाति या समुदायिक भावनाओं को नहीं उभारा जाना चाहिए। मस्जिद, चर्च, मन्दिर अथवा अन्य पूजा गृहों का चुनाव प्रचार के लिए उपयोग नहीं किया जाना चाहिए।

मतदान शांतिपूर्वक और नियमानुसार हो, इसके लिए संहिता में सभी दलों और प्रत्याशियों से अपेक्षा की गई है कि वे चुनाव कार्य में लगे अधिकारियों के साथ सहयोग करेंगे। यह इसलिए आवश्यक है कि मतदाता बिना किसी अड़चन या दबाव के मतदान कर सकें। पुलिस ऐसे किसी व्यक्ति के विरुद्ध तत्काल और उचित कार्यवाही कर सकती है, जो मतदाताओं को मतदान केन्द्र तक जाने में अड़चन या दबाव डालेगा लेकिन मतदान केन्द्र के पास पार्टी कार्यकर्त्ताओं के वैधानिक कार्यों में बाधा नहीं डाली जानी चाहिए। राजनीतिक दलों को अपने अधिकृत कार्यकर्त्ताओं को उचित बिल्ले अथवा परिचय पत्र देने चाहियें।

सभी दलों और प्रत्याशियों को भ्रष्ट तरीके और चुनाव के कानून के अन्तर्गत घोषित अपराधों से सावधानीपूर्वक दूर रहना चाहिए, जैसे मतदाताओं को रिश्वत देना, मतदाताओं को डराना, जाली मतदाता ले जाना, मतदान केन्द्र के सौ मीटर के घेरे में चुनाव प्रचार करना, मतदान के अड़तालीस घंटे पूर्व चुनाव प्रचार बन्द होने के बाद भी प्रचार जारी रखना, मतदात्ताओं के लिए मतदान केन्द्र से और मतदान केन्द्र तक वाहन सुलभ करना।

संहिता में सभी राजनीतिक दलों और उम्मीदवारों से अपेक्षा की गई है कि वे इस बात पर सहमत हों कि वे मतदाताओं को जो पर्ची देते हैं, वह सफेद कागज पर हो और उस पर कोई चिह्न, उम्मीदवार का या दल का नाम नहीं होना चाहिए मतदान के दिन और १२ घण्टे पहले शराब बेची नहीं जायेगी और न किसी को दी या वितरित की जाएगी। दल को या उम्मीदवार को स्थानीय पुलिस अधिकारियों को प्रस्तावित

(शेषांश पृष्ट २७ पर)

सामयिकी कांग्रेस की नाव भंवर में

देश की राजनीति में जबरदस्त धमाका। जगजीवनराम सत्पथी, और बहुगुणा सहित अनेक नेताओं ने कांग्रेस छोड़ दी। लोक सभा के आगामी चुनाव में देश के भविष्य का निर्णय होगा। जनता पार्टी, अकालीदल व आर्य सभा मिलकर चुनाव लड़ेगी। मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी व जगजीवन राम की लोकतान्त्रिक कांग्रेस भी जनता पार्टी से चुनाव समझौता करेंगी। एक के मुकाबले पर एक उम्मीदवार की सम्भावना। उम्मीदवारों में सीटों के लिए जबरदस्त होड़। विभिन्न स्थानों पर चुनाव अभियान प्रारम्भ तथा विशाल सभाओं का आयोजन। देश भर में एक नई आशा की लहर। कांग्रेस ने फिर गरीबी हटाओ का नारा दिया।

देश में चुनाव की चक्की फिर चल पड़ी है। प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने चुनाव की घोषणा करके एक प्रकार का जुआ खेला है। लोकसभा का यह चुनाव भारत की राजनीति में अपनी एक ऐतिहासिक भूमिका अदा करेगा। स्वतन्त्रता के बाद हुये सभी आम चुनावों की निसबत इस चुनाव में राजनीतिक परिस्थितियां बदल चुकी हैं। देश में आपात कालीन स्थिति में सरकार की तानाशाही नीतियों से आम जनता काफी असन्तुष्ट है। श्रीमति गांधी कहा करती थी कि विरोधी दलों के लोग उन्हें कार्य नहीं करने देते इसलिए देश को प्रगति पथ पर ले जाने के लिए उन्होंने एमरजेन्सी लगाई है परन्तु श्री मति गांधी का यह बहाना फेल होगया, और निरन्तर पिछले २० महीने से सभी राजनैतिक कार्यकर्ताओं एवं नेताओं को जेलों में बन्द करके तथा एमरजेन्सी लागू करके सरकार ने काफी मनमानियां की हैं। इसके बावजूद भी समाज में व्याप्त सभी आर्थिक समस्याएं, गरीबी, भुखमरी तथा शिक्षा की कमी अभी तक ज्यों की त्यो बनी हुयी है। सरकार जनता को दिये वचन पूरे नहीं कर सकी। अतः जनता इसके वास्तविक स्वरूप को अच्छी तरह समझ चुकी है। परिवार नियोजन के नसबन्दी अभियान को लेकर लोगों के साथ जो ज्यादतियां की गई हैं वे अभी तक भुलाई नहीं गई हैं। इस प्रकार से आपात कालीन स्थिति में हुये अन्याय से जनता पूरी तरह नाराज है। परिणाम स्वरूप पूरे देश में विपक्ष की जबरदस्त लहर आई हुई है। जनता की नब्ज को समझ कर इधर चार प्रमुख राष्ट्रीय पार्टियों ने मिलकर जनता पार्टी का गठन कर लिया है। इसी तरह से पंजाब में अकाली दल, हरयाणा में आर्य सभा, बंगाल व केरल में मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी तथा इसी प्रकार की अन्य प्रान्तीय पार्टियों ने भी जनता पार्टी के साथ चुनाव समझौता करके चुनाव लड़ने का फैसला कर लिया है। इस से जनता को यह विश्वास हो गया है कि आने वाले चुनाव में सरकार जनता पार्टी की बनेगी। इसी प्रकार कांग्रेस के सबसे पुराने महारथी व श्री मति गांधी को सर्वाधिक प्रश्रय देने वाले बाबू जगजीवनराम, उत्तरप्रदेश के भूतपूर्व मुख्य मन्त्री श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा तथा उड़ीसा की भूतपूर्व मुख्यमन्त्री श्री नन्दिनी सत्पथी के साथ अनेक वरिष्ठ नेताओं के कांग्रेस छोड़ देने से राजनीति में जबरदस्त धमाका हो गया है। जिस जगजीवनराम के नाम पर कांग्रेस को हरिजन की वोट मिलनी थी अब उसकी आशा बिल्कुल समाप्त हो गई है। ऐसी स्थिति में श्रीमति इन्दिरा गांधी के खेमें में बेहद निराशा आई है। तथा असन्तुष्ट कांग्रेसी अब जगजीवनराम की लोकतान्त्रिक कांग्रेस में भाग-२ कर मिल रहे हैं। आम आदमी की जबान पर यही बात है कि इस बार इन्दिरा गांधी की सरकार नहीं बन सकती। परन्तु बात केवल कहने मात्र से नहीं बनेगी अब लोगों को जुटना पड़ेगा और वर्तमान लहर को स्थायी बनाए रखने के लिए हर प्रकार का सहयोग देकर जनता पार्टी को मजबूत बनाना होगा। तभी देश में लोकतन्त्र की रक्षा हो सकेगी।

सम्पादक के नाम पत्र

राजधर्म ऐसा हो।

मान्यवर, जगवीर सिह जी !

राजधर्म पाक्षिक को यदि आप लोकप्रिय एवम् जनहित की पत्रिका बनाना चाहते हैं जो वास्तव में बनना ही चाहिए तो निम्न सुझाव हैं यदि ये सत्य सत्य लगें तो अमल में लाने का कष्ट करें:—

१ इस पत्रिका को कम से कम साप्ताहिक जरूर बनायें।

२ एक कालम जनता के नाम से निश्चित करें और इस में आम व्यक्तियों की वह आवाज छापी जाए जो आर्य समाज के भले के लिए आम आदमी आवाज निकालते हैं।

३ "जनता दरबार" नाम से एक कालम रखा जाए जिसमें आम आदमी अपनी दुख तकलीफ छपवा सके किउसे समाज का कार्य करते यह तकलीफ है कोई भी उसे सुलझाने के लिए हल बता सके।

४ आर्य समाज के सिद्धान्त घर घर में, गांव गांव में, प्रदेशों में, देशों में—विश्व के कोने कोने में कैसे फैले इस प्रकार के सुझाव जनता से मांगे जाऐं जो "आप के सुझाव" नामक कालम में छापे जाएं।

५ इस पत्रिका में केवल उन व्यक्तियों के पत्र व विचार छापे जाए जो आर्य समाज के कार्यो में अपना समय (तन), मन, धन खर्च करते हैं और जिसने आर्य समाज के सिद्धान्तों को अपने अन्दर, अपने परिवार के अन्दर धारण कर रखा है। केवल बातूनी व्यक्तियों के विचार व लेख न छापे जाए

६ इस पत्रिका को बिल्कुल आर्यसमाज की मांयताओंके अनुरूप की ही पत्रिका रखें और प्रत्येक अंक में आम साधारण भोली जनता के लिए बच्चे, युवक युवतियों, स्त्री-पुरुषों एवम् वृद्धों के लिए ऐसे ऐसे लेख हों जिन को वे सभी अपना कर आर्य समाज के कार्यो में अपना अनपा योग दे सके–आर्य समाज में रूचि लेने लगे। आप की पत्रिका पढ़ने में समय का सदुपयोग अनुभव कर सकें और हर लेख को पढ़ने के बाद अपने जीवन में परिवर्तन लाने का विचार कर सकें।

७ यदि कार्य कर्त्ताओं की (छोटे से बड़ों तक की) मेरे जैसे छोटे व्यक्ति में आप जैसे वड़े तक की भावना सात्विक होगी और तदुअनुसार हमारे आचरण शुद्ध होंगेतो कोई कारण नहीं कि हम जीवन में आर्य समाज का कार्य बच्चे बच्चे तक जन जन तक. तमाम विश्व भर में न फैला सके हरियाणा तक तो मामूली बात है।

★ ★ ★

प्रियवर नमस्ते।

लम्बे अन्तराल के उपरान्त आज चिर परिचित राजधर्म जनवरी ७७ मिला। सम्पादकीय पढकर इतनी प्रसन्ता हुई जो अभिव्यक्ति से बाहर की वस्तु है।

सचमुच स्वस्थ पत्रकारिता ही हमारा हम आर्यों का मार्ग प्रशस्त कर सकती है। 'वादों' से दूर आर्यसमाज रहे, दलगत कमजोरियों में न फंसे तब ही धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक उन्नति हो सकती है यही स्वस्थ कामना है।

नेता जी सम्बन्धी लेख उत्तम जानकारियां देता है। गांधी जी का वक्तव्य भला लगा। भविष्य में राजधर्म में इसी प्रकार की सामग्री का समावेश किया जाए।

सुन्दर भविष्य की कामना में।

वैद्य ब्रह्मचारी विद्या प्रकाश
ग्राम तिवारा, डा० अटेली मण्डी (महेन्द्रगढ़)

श्री सत्यव्रत वेदी का निधन

उत्तर भारत के प्रसिद्ध अंग्रेजी दैनिक 'ट्रिब्यून' के विशेष संवाददाता श्री सत्यव्रत वेदी का गत दिनों हृदय गति रुक जाने से देहान्त हो गया। श्री वेदी जी एक कर्मठ समाज सेवी एवं कुशल पत्रकार थे। आप बड़े ही शौम्य स्वभाव के व्यक्ति थे। राजधर्म पत्रिका एवं आर्यसभा के आप प्रबल समर्थक तथा सहयोगी थे। आप के असामायिक स्वर्गवास से समस्त बुद्धिजीवी समाज को गहरा दुःख हुआ है। राजधर्म परिवार की ओर से परमात्मा से प्रार्थना है कि शोक संतप्त परिवार को सहनशक्ति प्रदान करें और दिवगंत आत्मा को शान्ति दें।

सम्पादक

(पृष्ठ २४ का शेष)

सभाओं का स्थान और समय काफी पहले सुनिश्चित कर देना चाहिए ताकि यातायात नियन्त्रण और शान्ति व्यवस्था बनाए रखने के लिए आवश्यक प्रबन्ध किए जा सकें।

संहिता में कहा गया है कि जिस स्थान पर सभा की जाने वाली हो वहां कोई प्रतिबन्ध या निषेधात्मक आदेश तो लागू नहीं है, उसका पता राजनीतिक दलों को पहले से कर लेना चाहिए। यदि ऐसे आदेश लागू हों तो उनका कड़ाई से पालन किया जाना चाहिए। यदि इन से छूट चाहिए तो इसके लिए समय पर आवेदन कर पहले आदेश प्राप्त कर लेने चाहियें।

यदि किसी प्रस्तावित सभा के लिए लाउडस्पीकर या अन्य सुविधाओं के लिए अनुमति लेने की आवश्यकता हो तो दल को इसके लिए समय से पूर्व संबंधित अधिकारियों को आवेदन कर अनुमति या लाइसेंस लेना चाहिए।

सभा को तोड़ने की कोशिश करने या अव्यवस्था फैलाने वालों से निपटने के लिए संयोजकों को हमेशा वहां तैनात पुलिस की मदद लेनी चाहिए—संयोजकों को स्वयं ऐसे लोगों के विरुद्ध कार्यवाई नहीं करनी चाहिए।

संहिता में राजनीतिक दलों को कहा गया है कि जलूस निकालने का समय, जलूस शुरू होने का स्थान तथा जलूस का मार्ग पहले तय कर ले। पूर्व निर्धारित कार्यक्रम में परिवर्तन नहीं होना चाहिए। आयोजनकर्ताओं को स्थानीय पुलिस को अग्रिम सूचना देनी चाहिए ताकि वे आवश्यक प्रबन्ध कर सकें।

जलूस को जहां तक हो सके, नियन्त्रित कर सड़क के दाहिनी ओर रखा जाना चाहिए और मौके पर तैनात पुलिस के निर्देशों और सलाह का पूरी तरह पालन होना चाहिए।

यदि दो या अधिक राजनीतिक दलों ने एक ही मार्ग से एक ही समय जलूस निकालने का फैसला किया हो, तो उनके संयोजकों को पहले आपस में विचार-विमर्श कर लेना चाहिए। ताकि ये जलूस आपस में न तो टकरायें और न ही यातायात में बाधा उपस्थित करें, जिससे कोई अवांछनीय परिस्थिति उत्पन्न हो जाए।

जहां तक सम्भव हो, राजनीतिक दलों को जलूस में भाग लेने वालों द्वारा ऐसी वस्तुएं, जिनका अवांछनीय तत्व दुरुपयोग कर सकते हैं, ले जाने पर नियन्त्रण करना चाहिए किसी भी राजनीतिक दल को न तो ऐसे पुतले ले जाने चाहिए और न ही जलाने चाहिए जो अन्य राजनीतिक दलों या उनके नेताओं को दर्शाते हों।

सभी राजनीतिक दलों को प्रत्येक व्यक्ति के अपने घर में शांति पूर्वक रहने के अधिकार का सम्मान करना चाहिए, चाहे उनकी राजनीतिक विचारधारा कुछ भी हो। उनका विरोध करने के लिए उनके घरों पर धरना देना या प्रदर्शन करना हर हालत में निषिद्ध होना चाहिए।

किसी राजनीतिक दल को अपने समर्थकों को इस बात की छूट नहीं देनी चाहिए कि वे किसी व्यक्ति की जमीन, भवन, आंगन व दीवार आदि पर उसकी अनुमति के बिना झंडा फहरायें पताका लटकायें, पोस्टर लगायें या नारे लिखें।

स्वामी आदित्यवेश जेल से रिहा
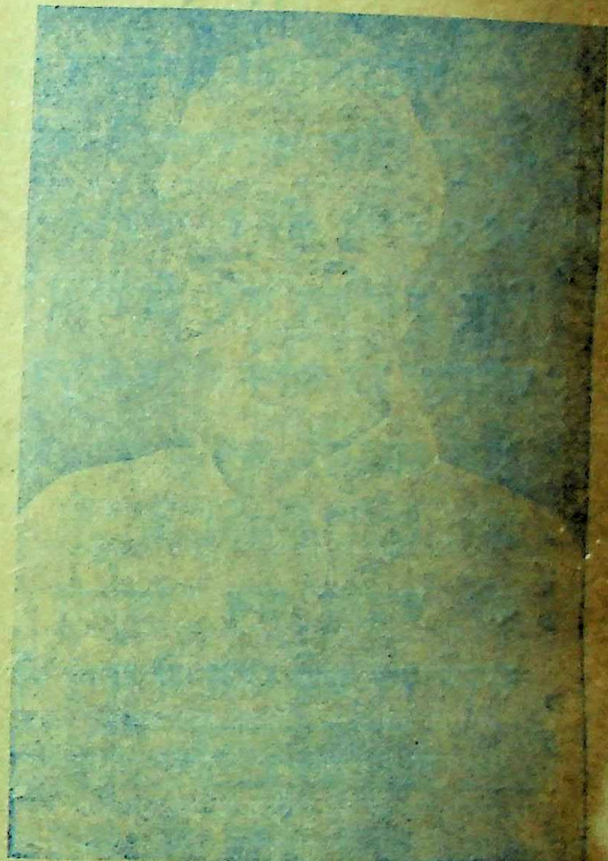
भारतीय आर्य सभा के उपाध्यक्ष श्री स्वामी आदित्यवेश जी १ फरवरी १९७७ को प्रातः ही सैन्ट्रल जेल अम्बाला से रिहा हो गये। स्वामी जी गत २६ जून १९७६ को आपात स्थिति की घोषणा के बाद मीसा के अन्तर्गत नजरबन्द थे। आप पूरे २० मास तक जेल में रहे और घोर तप किया। स्वामी आदित्यवेश जी गत दस वर्ष से हरयाणा के गुड़गावां जिले में गरीब किसान मजदूर की लड़ाई लड़ रहे हैं। वर्तमान तानाशाही सरकार की पूंजीवादी नीतियों का पर्दाफाश करके वैदिक समाजवाद की स्थापना करने के लिए आप ने संन्यास की दीक्षा ली। प्रारम्भ में आप गुड़गावां तथा बाद में अम्बाला सैन्ट्रल जेल में नजरबन्द रहे।

पंजीयन क्रमांक

पी/आर टी के ६८

राजधर्म

१२ फरवरी १६७७

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्धशताब्दी

जीन्द सम्मेलन स्थगित

अर्द्धशताब्दी सम्मेलन के संयोजक श्री रामधारी शास्त्री ने एक प्रेस वक्तव्य में कहा है कि १८, १६, २० फरवरी १६७७ को जीन्द में होने वाले सम्मेलन को मई महिने के लिए स्थगित कर दिया है। लोकसभा के आम चुनाव की घोषणा हो जाने से देश का वातावरण बदल गया है। हर एक आदमी चुनाव की सरगर्मियों में रुचि लेने लगा है। अतः ऐसी स्थिति में यह निर्णय किया गया है कि फरवरी की बजाए अब स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्धशताब्दी सम्मेलन मई मास में पूरी तैयारी के साथ मनाया जाएगा।

राजधर्म प्रकाशन के लिए राजधर्म प्रेस, रोहतक से स्वामी इन्द्रवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित।

ओ३म्

राजधर्म

महर्षि दयानन्द
बलिदान विशेषांक
दीपावली 10 नव० 1977

वर्ष 9 अंक 1

संपादक : स्वामी अग्निवेश
सहसंपादक : श्री जगबीर सिंह

मूल्य—30 पैसे
वार्षिक—13.00

सरकार बदली है
क्या समाज बदलेगा ?

●

ग्रामोत्थान की समस्यायें

●

वर्ग वर्ण और जातिवाद

●

शराब से कैन्सर

●

योग से रोग मुक्ति

●

सम्पादकीय

सरकार बदली है, क्या समाज बदलेगा ?

लगभग $2\frac{1}{2}$ साल के बाद राजधर्म प्रकाशन फिर से पटरी पर चढ़ रहा है। आपातस्थिति की घोषणा के साथ ही राजधर्म दैनिक को तत्कालीन तानाशाही सरकार के आदेश से बन्द कर दिया गया था। आपात्काल के अन्तिम दिनों में राजधर्म पाक्षिक के रूप पुनः आरम्भ हुआ था पर परिस्थितियाँ बड़ी विषम होने के कारण वह प्रयास भी सफल नहीं हो पाया। अब आप सबके सहयोग से राजधर्म साप्ताहिक के रूप में चण्डीगढ़ से पुनः प्रकाशित हो रहा है। इतने उतार चढ़ाव के बावजूद भी आप लोगों का आशीर्वाद इसे मिल रहा है यही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है। बिखरे हुए सम्बन्धों को पुनः संगठित कर यह **राजधर्म साप्ताहिक** सारे देश में नई चेतना का शंखनाद करे-ऐसी प्रभु से प्रार्थना है।

इन्हीं उतार चढ़ाव के दिनों में आर्यसमाज ने अपने 100 साल पूरे कर सृजन और संघर्ष की नयी शताब्दी में कदम रखा है। उधर भारत की राजनीति में भी मोड़ आया है। 30 साल से चली आ रही एक खानदान की हुकूमत समाप्त हुई और जनता सरकार ने शासन सूत्र संभाले हैं। इस मोड़ को लाने का सबसे बड़ा श्रेय यदि किसी को जाता है तो वह है इस देश की मेहनतकश जनता को जो निर्धन होने के बावजूद, अनपढ होने के बावजूद, जहालत भरी जिन्दगी के बावजूद प्रजातांन्त्रिक चेतना के माप दण्ड पर खरी उतरी। गाँवों में रहने वालों को पहली बार यह अहसास हुआ है कि जिनको हम चुनकर गद्दी पर बैठा सकते हैं- उन्हें जरूरत पड़ने पर नीचे घसीट भी सकते हैं। यह अहसास बहुत बड़ी उपलब्धि बन सकती है बशर्ते लोगों को यह विश्वास दिलाया जा सके कि **जैसे सड़ी गली सरकार बदली जा सकती है उसी तरह सड़ा गला समाज भी बदला जा सकता है।**

आवश्यकता उस जनसंकल्प को जगाने की है जनसंगठन खड़ा करने की है।

जनसंकल्प जगाने की दिशा में लोकनायक जयप्रकाश नारायण ने ऐतिहासिक कार्य किया है। उन्होंने समाज के सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक, शैक्षणिक आध्यात्मिक आदि चहुंमुखी क्रान्ति को "संपूर्ण क्रान्ति" का नाम दिया है लेकिन इस संपूर्ण क्रान्ति की मशाल को हाथों में थामकर नया समाज गढ़ने वाले **जनसंगठन** के अभाव में यह कार्य बिखर रहा है।

सौ साल पहले महर्षि दयानन्द ने भी संपूर्ण क्रान्ति का कार्यक्रम देते हुए कहा था- "संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना" अपनी इस सर्वांगीण क्रान्ति का संवाहक उन्होंने बनाया था- आर्य समाज को। आर्य समाज ने पिछले 100 सालों में महर्षि के जनसंकल्प को जगाया भी और जनसंगठन भी खड़ा किया। पर धीरे धीरे संगठन संस्थाओं में बदलने लगा और संस्थायें संपत्तियों में बदलने लगीं। इतिहास का क्रम भी बड़ा अजीब है- चारों ओर संपत्ति का ढेर हो तो संकल्प धुंधला पड़ने लगता है, संपत्ति संकल्पाग्नि को ढाँप लेती है- विपत्ति आने पर संकल्पाग्नि प्रज्वलित हो उठती है।

यही कुछ हुआ और हो रहा है। दुनियाँ के हर महामानव को उसके नाम पर बनने वाली संपत्ति, संस्था, निधि और ट्रस्ट खा जाते हैं। गाँधी जी के मरते ही 10 करोड़ रू० की गाँधी निधि बनी जो गांधी को खा गई। जे० पी० के नाम पर भी 75 लाख रु० इकट्ठे हो रहे हैं। यदि सतर्कता न बरती गई तो यह निधि भी जे० पी० के जीवन काल में ही झगड़े की जड़ बन सकती है। अस्तु।

सवाल है कि क्या आर्य समाज संस्थाओं और संपत्तियों के व्यामोह को छोड़कर जनसंकल्प जगाने और जनसंगठन खड़ा करने के ऐतिहासिक कार्य को अपने हाथों में लेगा ? क्या हमारा युवा वर्ग देश के लाखों गावों में बसने वाले करोड़ों किसान मजदूरों को आन्दोलित कर संगठित कर आज के वास्तविक अनाय समाज एवं दस्यु समाज के मुकाबले में आर्यसमाज का सृजन करेगा ? क्या जिस तरह हमने सड़ी गली सरकार को बदला है उसी तरह सड़े गले समाज को भी बदलने के लिये संघर्षरत होंगे ?

परमात्मा की प्रेरणा से हमें यह विश्वास है कि हिन्दुस्तान के 5 लाख गांवों से 50 लाख युवा विद्रोही संघर्ष का बिगुल बजाते हुए निकलेंगे; एक नये समाज के निर्माण का संकल्प लेकर आगे बढ़ेंगे—एक ऐसा समाज जिसमें गांवों से बसने वाले मेहनतकशों के जीवन के फैसले हजारों मील दूर राजधानी की कोठियों में बैठे हुए लोगों को नहीं करने दिया जायगा-वे फैसले गांव वाले खुद करेंगे। जिसमें गांव से कच्चा माल मिट्टी के मोल खरीद कर उन्हें पक्का माल सोने के भाव नहीं बेचने दिया जायगा। गांव के जरूरत का कपड़ा गांव में बनेगा, गांव में जूता, साबुन, कागज, साइकिल, बैलगाड़ी के पहिये सब गांव में बनेंगे। ऐसा समाज जिसमें गांवों वालों की खून पसीने की कमाई को शराब के शोषण का शिकार नहीं होने दिया जाएगा। एक ऐसा सुन्दर समाज बनायेंगे जिसमें न जातिवाद का ज़हर होगा न भाग्यवाद का भगन्दर न कोई अनपढ़ होगा न कोई पढ़ालिखा बेकार। न किसी विधवा का करुण क्रन्दन होगा और न ही किसी अत्याचारी का अट्टहास।

दयानन्द की सेना में भरती शुरू हो चुकी है। हरियाणा और राजस्थान के गांव गांव में संगठन तेजी से हो रहा है। हर जिले में एक एक आदर्श आर्यग्राम भी बनने लगे हैं। पंजाब और हिमाचल के युवकों में जागृत आ रही है। उतर प्रदेश और मध्यप्रदेश में संगठन रूप ले रहा है। सुदूर विहार और मराठवाड़ा से अभी पूरा संपर्क दुबारा नहीं जुड़ पाया है पर आने वाले पत्रों से युवकों की कसमसाहट का परिचय मिल रहा है। और भी जहाँकहीं युवा शक्ति उदित हो रही हो—हम उनसे जुड़ें, वे हमसे जुड़ें।

आज दीवाली की काली अमावस्या की रात है—इसी रात में एक आदित्य ब्रह्मचारी ने अपने देदीप्यमान शरीर की आहुति देकर एक दिव्य ज्वालशिखा को प्रज्ज्वलित किया था—आइये ! हम, आप सभी उस दिव्य ज्योतिसे अपना दिया जलाकर इस संसार को इस समाज को ज्योतिर्मय कर दें।

—अग्निवेश

महात्मा आनन्द स्वामी को श्रद्धाञ्जलि

समस्त आर्यजगत् के लिये महात्मा आन्नद स्वामी का निधन बड़े आघात का विषय है। लगभग पिछले 50 सालों से स्वामी जी की अमृतवर्षा से देश विदेश के आर्यजन तृप्त होते रहे। मुझे स्वयं उनके प्रवचनों से बड़ी प्रेरणा मिली। मैं जब कलकत्ते में पढ़ता था तो पूज्य स्वामी जी के प्रवचनों का पूरा रसास्वादन करता। आज उनका पार्थिव शरीर हमारे बीच नहीं है फिर भी उनका सदा मुस्कराता हुआ चेहरा और बच्चों की सी खिलखिला कर हंसी आज भी सामने है। परमात्मा हमें शक्ति दे कि दिवंगत आत्मा से प्रेरणा लेकर हम आर्यसमाज को पारस्परिक कलह से मुक्त कर एक मजबूत संगठन खड़ा कर सकें और महर्षि के मिशन को संसार भर में फैला सकें-यही महात्मा जी के प्रति सच्ची श्रद्धाञ्जलि होगी।

अग्निवेश

आर्य प्रतिनिधि पंजाब का वार्षिक अधिवेशन सोनीपत में सम्पन्न

स्वामी अग्निवेश

सर्वसम्मति से सभा प्रधान निर्वाचित।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक साधारण अधिवेशन 9 अक्टूबर 1977 रविवार, को बड़े ही जोशपूर्ण वातावरण में सोनीपत में सम्पन्न हुआ। दिल्ली, हरयाणा पंजाब व हिमाचल प्रदेश से सैकड़ों आर्य प्रतिनिधि अधिवेशन में पधारे। हिन्दू हाई स्कूल का हाल खचाखच भरा हुआ था और चारों ओर उत्साह दिखाई दे रहा था। अधिवेशन की अध्यक्षता आर्य जगत के मूर्धन्य एवं वयोवृद्ध संन्यासी **स्वामी भीष्म जी, महाराज** ने की तथा कार्यवाही का शुभारम्भ वेद मन्त्रों की गूंज से हुआ। सर्व प्रथम, शोक प्रस्ताव व धन्यवाद प्रस्ताव की प्रकिया पूरी कर लेने के बाद, सभा के प्रधान पद के लिए युवकों के हृदय सम्राट, **स्वामी अग्निवेश जी,** को सर्व सम्मति से चुन लिया गया। स्वामी जी के नाम का प्रस्ताव श्री आशानन्द आर्य लुधियाना ने किया और अनुमोदन सर्वसम्मति से ही हुआ एक बार वैदिक धर्म की जय के नारे से आकाश गूंज गया आर्य समाज के संगठन में एक नई स्फूर्ती आ गई। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री पं० मुरारी लाल जी ने एक अन्य प्रस्ताव के द्वारा साधारण सभा से मांग की कि अन्य पदाधिकारियों की नियुक्ति एवं सभा की अन्तरंग, विद्या सभा, विद्या परिषद, सार्वदेशिक सभा, गुरुकुल कांगड़ी सीनेट एवं न्याय सभा आदि के लिए व्यक्ति छाँटने का अधिकार भी स्वामी अग्निवेश जी को ही दे दिया जावे। यह प्रस्ताव भी हर्ष के साथ सर्वसम्मति से पास होगया।

इस अधिवेशन के वे क्षण जिस समय आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पूर्व प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ने अपना उद्बोधन दिया विशेष महत्व रखते हैं। समुद्र सी गम्भीरता, उदारता, त्याग एवं समर्पण से ओत प्रोत व्यक्तित्व के धनी श्रद्धेय स्वामी इन्द्रवेश जी ने अपने संकल्प पूर्ण अभिभाषण के द्वारा आर्य समाज को एक नई दिशा की ओर अग्रसर कर दिया। स्वामी जी ने कहा कि पिछले तीन साल तक सभा प्रधान के रूप में कार्य करने के बाद अब उन्होंने यह निश्चय किया है कि जन-2 तक आर्य समाज एवं देव दयानन्द के सन्देश को पहुंचाने के लिए अपनी पूरी शक्ति लगा देंगे। हरयाणा के गांव-2 में आर्य समाज बनाकर, आने वाले एक साल में हजारों युवकों की एक सेना तैयार की जाएगी जो महर्षि के मिशन को देश एवं बिदेश में पहुंचाने के लिए जुटेगी। स्वामी जी ने जहां अपने कार्य काल में साथ कार्य करने वाले सभी अधिकारियों एवं प्रमुख सहयोगियों का धन्यवाद किया वहीं यह भी आशा प्रगट की कि स्वामी अग्निवेश जी के प्रधान बनने के बाद अब हमारा संगठन एक नई शक्ति प्राप्त करके देश भर में फैल जायेगा और डेढ़ वर्ष के बाद दिल्ली के रामलीला मैदान में एक राष्ट्रीय स्तर का महा सम्मेलन किया जाऐगा। स्वामी जी ने विशेष रूप से पं० मुरारीलाल का धन्यवाद करते हुये कहा कि वे लौहपुरूष के समान सभा के कार्य को सम्भाले हुये हैं। अन्त में नव निर्वाचित सभा प्रधान स्वामी अग्निवेश ने सभी प्रतिनिधियों, सोनीपत के आर्य बन्धुओं एवं स्वामी भीष्म जी महाराज का धन्यवाद करते हुये यह विश्वास दिलाया कि जो भी कार्यक्रम सभा तैयार करेगी उसे क्रियान्ति करने के लिए पंजाब, क्रियान्ति करने के लिए हरयाणा, दिल्ली, हि० प्रदेश के लिए पूरी शक्ति लगा देंगे। सभा प्रधान जी ने कहा कि चाहे मैं प्रधान बनूं या साधारण कार्यकर्ता की हैसियत से कार्य करता रहूं हम सभी के अग्रणी एवं नेता स्वामी इन्द्रवेश जी हैं और उन्हीं के मार्ग दर्शन में हम आगे बढ़ेंगे।

सभा के अन्य अन्य अधिकारियों व अन्तरंग सदस्यों की सूचि निम्न प्रकार से सभा प्रधान ने घोषित की हैं।

उप-प्रधान	1. डा० राम प्रकाश
	2. श्री रूपलाल साथी
	3. श्रीमती लीलावती आर्या
महामन्त्री	4. श्री मुरारीलाल
उप-मन्त्री	5. श्री दिलाराम
"	6. श्री रामचन्द्र आर्य

कोषाध्यक्ष 7. स्वामी आदित्यवेश
पुस्तकाध्यक्ष 8. डा० महासिंह
अन्तरंग 9. स्वामी इन्द्रवेश जी — रोहतक
10. स्वामी वेदानन्द जी — रोपड़
11. स्वामी सुधानन्द जी — रेवाड़ी
12. स्वामी रूद्रवेश जी — करनाल
13. स्वामी रतन देव जी — हिसार
14. श्री रामाधारी शास्त्री — जींद
15. श्री देशबन्धु गुप्त — भिवानी
16. श्री बिशनसिंह जी — कुरुक्षेत्र
17. श्री रोशनलाल जी — अम्बाला
18. श्री सत्यपाल जी — सोनीपत
16. श्री आशानन्द जी — लुधियाना
20. श्री बलदेव कृष्ण — रामा मण्डी
21. डा० के० के० पसरीचा — जालन्धर
22. श्री सरदारी लाल जी — जालन्धर
23. श्री वेद प्रकाश सरीन — नंवाशहर
74. श्रीमती ज्ञानदेवी आर्या — नंगल
25. श्री वेद प्रकाश आर्य — दीनानगर
26. श्री भारत भूषण जी — शकूर बस्ती दिल्ली
27. श्री हकीम नानकचन्द जी — देवनगर दिल्ली
28. श्री के. एल. आनन्द — शक्ति नगर दिल्ली
29. श्री वेद रतन आर्य — ऊना हिमाचल प्रदेश
30. श्री मूलचन्द भारद्वाज — लुधियाना

विशेष मनोनीत :—

1. श्री सतवीर सिंह — हरियाणा
2. श्री बीरेन्द्र जी — हरियाणा
3. श्री रणजीत सिंह जी — हिमाचल
4. श्री कर्मचन्द माली — जालंधर

रोहतक के प्रत्येक गाँव में आर्य समाज बनाने का अभियान प्रारम्भ

23-24-25 सितम्बर को जीन्द में हुए स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्ध शताब्दी के अवसर पर हरयाणा के प्रत्येक गांव में आर्य समाज बनाने की घोषणा के अनुसार रोहतक जिले में आर्य समाज बनाने का अभियान प्रारम्भ हो गया है।

सर्वप्रथम सम्पूर्ण जिले में दस-दस बारह-बारह गांवों के वेद प्रचार मण्डलों की स्थापना की जायेगी जिसके अनुसार वेद प्रचार मण्डल रोहतक नगर, डीघल, भालोठ. सांपला, सांघी, सुण्डाना, बहु अकबरपुर, आसौदा, कलाहवड, महम, लाखन माजरा, मदीना, कलानौर, बेरी, जहाजगढ, झज्जर, छारा, दुल्हेड़ा, बहादुरगढ़ बादली, किलोई सुहरा, माछरौली, कासनी, कोसली, लडायन, बहु झोलरी, रोहणा, खरखौदा, आदि मण्डल होगें। इसी प्रकार जिला सोनीपत, पानीपत तहसील एंव हाँसी तहसील तथा मुढ़ाल, भिवानी और दादरी क्षेत्रों में आर्य समाज बनाने का कार्य शीघ्र ही चालू किया जायेगा। यह सब क्षेत्र स्वामी इन्द्रवेश जी ने सघन कार्य के लिए चुने हैं।

क्रान्तिकारी दयानन्द

आकाशवाणी रोहतक से ९ नवम्बर को प्रसारित स्वामी अग्निवेश की वार्ता

एक दिन हिमालय की एक चट्टान पर एक वीतराग संन्यासी परमात्मा के ध्यान में समाधिस्थ बैठा था-सामने कलकल निनदिनी गंगा की पावन धारा प्रवाहित हो रही थी। अचानक उस सुनसान तपोवन में बैठे सन्यासी के कानों में एक महिला के रोने सिसकने की आवाज आई। जैसे ही उनका ध्यान टूटा उन्होंने देखा कि एक मां अपने गोद में अपने बच्चे का शव लिये नदी की ओर बढ़ रही है और अपने नौनिहाल के पार्थिव शरीर को गंगा की गोद में सौंपकर वह मां उस कफन के टुकड़े को गंगा में निचोड़ कर रोती सुबकती वापस लौटने लगती है। संसार से विरक्त, मोक्ष की साधना में लगा हुआ संन्यासी का हृदय करुणा से पिघल उठता है और वे उस महिला से पूछते हैं- मेरी मां! तुम सच-सच बताना तुमने अपने बच्चे के शव को बहाने के बाद यह कफन वापस क्यों रख लिया? उस देवी ने रोकर कहा-ऐ दिव्य सन्यासी! इस क्रूर समाज में ये मेरा इकलौता बेटा अन्न और दवा के अभाव में तड़प-तड़प कर मर गया, मेरे पास इसके कफन का इन्तजाम नहीं था– लाचार होकर मैंने अपनी साड़ी का आधा हिस्सा फाड़कर इसका कफन बनाकर इसे बहाने लाई थी। अब इसे निचोड़ कर अपनी लाज ढकने के लिए वापस ले जा रही हूं।

आज से 100 साल पहले भारत की गरीबी की उस दर्दनाक तस्वीर को देखकर उस वीतराग संन्यासी का हृदय रो पड़ा। आंखों से अश्रुधारा फूट पड़ी और उन्होंने वहीं खड़े होकर प्रतिज्ञा की कि जब तक विदेशी दासता के चंगुल में जकड़ी भारत की गरीब जनता को मुक्ति नहीं दिला लेता तब तक अपनी मुक्ति के लिये अलग से प्रयास नहीं करूंगा।

मानव मुक्ति का मिशन लेकर निकल पड़ा वह महान संन्यासी। उसका नाम था स्वामी दयानन्द।

स्वामी दयानन्द के क्रांतिकारी व्यक्ति के तीन महत्त्व-पूर्ण आयाम थे। स्वामी दयानन्द एक प्रखर राष्ट्रवादी थे, दार्शनिक दृष्टि से त्रैतवादी और आर्थिक सामाजिक दृष्टि से वास्तविक समाजवादी थे।

राष्ट्रवादी दयानन्द ने अंग्रेजी साम्राज्यवाद की चक्की में पिस रहे करोड़ों भारतीयों को अपने गौरवशाली अतीत की याद दिलाकर स्वतन्त्रता संग्राम में कूदने का आह्वान किया। इतिहासकार अब इस खोज की पुष्टि करने लगे हैं कि जहां एक ओर दयानन्द के गुरु स्वामी विरजानंद मेरठ और मुजफ्फर नगर के जंगलों में हिन्दु मुसलमान सरदारों की सर्व खास पंचायतें बुलाकर 1857 को पहली आजादी की लड़ाई के लिये तैय्यारी कर रहे थे वहां दूसरी ओर नर्मदा के किनारे, विन्ध्याचल की पहाड़ियों में भेष बदल कर, घोड़े पर सवार युवा संन्यासी दयानन्द नाना साहब पेशवा, झांसी की रानी लक्ष्मी बाई आदि स्वतन्त्रता के परवानों को संगठित करने में लगे थे।

खराब से खराब स्वदेशी राज्य को भी अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य की तुलना में अच्छा बता कर स्वामी दयानन्द ने अपने भाषणों, लेखों और वेद मंत्रों के भाष्य में और दैनिक प्रार्थना में भारत माता की परतन्त्रता की बेड़ियां काटनेका संकल्प घोषित किया। उनके जीवन की यह घटना ऐतिहासिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है। जब तत्कालीन वाइसराय लार्ड नार्थ ब्रुक ने उनसे पूछा कि पंडित दयानन्द आपको हमारे राज्य में प्रचार करने में कोई कठिनाई तो नहीं होती? स्वामी दयानन्द ने उत्तर में कहा नहीं, मुझे आपके राज में अपनी प्रचार करने की पूरी आजादी है। तब मौका देखकर वाइसराय ने कहा फिर तो आप परमात्मा से भारत में अंग्रेजी राज के फलने फूलने की प्रार्थना किया करें। ऐसा सुनते ही महर्षि दयानन्द ने पूरी निडरता से अपने उत्कट राष्ट्रप्रेम का परिचय देते हुए कहा वाइसराय महोदय मैं तो रोज परमात्मा से भारत में अंग्रेजी राज के विनाश और स्वदेशी राज की स्थापना की प्राथना करता हूं।

दार्शनिक संसार में महिष दयानन्द ने वैदिक त्रैतवाद का प्रतिपादन किया और बताया कि प्रकृति जीवात्मा तथा परमात्मा तीनों अनादि अनंत सत्तायें हैं और सृष्टि का प्रयोजन प्रकृति की सहायता से जीवात्मा द्वारा परमात्मा के परमानन्द की प्राप्ति सिद्ध किया। आदि

शंकराचार्य के केवल ब्रह्म की सत्ता पर आधारित अद्वैतवाद और कार्लमार्क्स की केवल भौतिकवादी सत्ता पर आधारित द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद-दोनों की तुलना में, महर्षि दयानन्द का ब्रह्म, प्रकृति और जीवात्मा तीनों की सत्ता पर आधारित त्रैतवाद बड़ा मौलिक दर्शनिक दृष्टिकोण है। इस दृष्टिकोण के अनुसार यह भौतिक संसार न तो स्वप्नवत् मिथ्या मायाजाल है और न ही खाओ पिओ मौज उड़ाओ के विलासी भोगवाद की सामग्री है। महर्षि दयानन्द के त्रैतवादी दर्शन में नये समाज के निर्माण की महत्वपूर्ण संभावनायें छिपी पड़ी हैं।

इसी तरह महर्षि दयानन्द का आर्थिक सामाजिक दृष्टि-कोण समतामूलक वैदिक समाजवादी दृष्टिकोण है। अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में स्वामी दयानन्द ने किसान मजदूर आदि परिश्रमशील लोगों को राजाओं का भी राजा बताया है। जन्म के ऊपर आधारित सड़ी गली जातिवादी पूंजीवादी शोषण की व्यवस्था पर चोट करते हुए स्वामी दयानन्द ने वैदिक साहित्य के प्रमाण देकर गुण कर्म स्वभाव पर आधारित वैदिक वर्णाश्रम व्यवस्था का प्रतिपादन किया है। स्वामी दयानन्द का समाजवाद छोटे बच्चों से शुरु होता है-वे कहते हैं कि पाठशाला में पढ़ने वाले हर बच्चे को चाहे वह राजकुमार हो या राजकुमारी अथवा किसी दरिद्र की संतान-सब को तुल्य वस्त्र, खानपान और आसान मिलने चाहिये। स्वामी दयानन्द की समाजवादी विचारधारा इतनी प्रखर है कि वे संपत्ति के साथ-साथ संतति पर भी वैय्यक्तिक स्वामित्व को स्वीकार नहीं करते।

स्वामी दयानन्द ने हजारों सालों से समाज के दलितों और शोषितों के पतन के लिये भाग्यवाद की ज़हरीली विचारधारा को, मूर्ति पूजा और अन्य अन्धविश्वासों को, धर्म के नाम पर पनप रहे पाखण्ड जाल को दोषी ठहराया और इन सबके विरुद्ध उन्होंने एक चहुंमुखी संघर्ष छेड़ दिया।

कुम के मेले में पाखण्ड खण्डिनी पताका गाड़कर उस आदित्य ब्रह्मचारी ने धार्मिक मठाधीशों को शास्त्रार्थ की चुनौती दी। चाहे काशी हो या कलकत्ता, बम्बई हो या लाहौर-सारे देश में घूमघाम कर महर्षि दयानन्द ने एक नये समाज की स्थापना के लिये राष्ट्र का आह्वान् किया। "प्रत्येक को अपनी ही उन्नति से संतुष्ट न रहना चाहिये किन्तु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए" इस मूलमन्त्र के आधार पर उन्होंने 1875 में आर्य समाज की स्थापना की और कहा कि केवल हिन्दुओं का या भारतवासियों का ही नहीं वरन् समस्त संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है अर्थात् शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति करना।

महर्षि दयानंद के तेजस्वी देदीप्यमान व्यक्तित्व से सभी प्रगीतशील हिन्दू मुसलमान सिख ईसाई आदि बेहद आकृष्ट हुए। चाहे वे सर सैय्यद मुहम्मद थे या फिर कर्नल अल्काट और मैडम ब्लवेट्स्की चाहे रोमा रोलों थे या फिर योगी अरविंद सभी उस महामानव के क्रान्तिकारी व्यक्तित्व के सामने नतमस्तक थे।

दूसरी तरफ जो निहित स्वार्थ के गढ़ थे और विशेषकर अंग्रेज शासक वर्ग उनके विचारों से प्रकम्पित था। उन्हें परास्त करने की कोशिशों में असफल होने के बाद उन्होंने महर्षि दयानंद को भयंकर ज़हर देकर मार डालने की साजिश की और दूध में शीशा घोलकर उन्हें पिला दिया।

सन् 1883 को कार्तिक अमावस्या दीवाली के दिन-विष के प्रभाव से क्षतविक्षत देव दयानन्द का पार्थिव शरीर अब उपयोगी नहीं रहा—उन्होंने शिष्यों को बुलाकर अपने पीछे खड़ा कर लिया और पद्मासन में बैठकर परमात्मा के ध्यान में मग्न हो गए। थोड़ी देर बाद उनके मुंह पर एक अद्भूत मुस्कराहट खेल गई और आनंद विभोर होकर वे बोल उठे "हे ईश्वर तूने अच्छी लीला की तेरी इच्छा पूर्ण हो" इसके साथ ही एक गहरे विश्वास के साथ उन्होंने प्राण त्याग दिया"।

यह अंक आपको कैसा लगा ?

राजधर्म के सुविज्ञ पाठकों से प्रार्थना है कि इसके हर अंक के लेखों एंव सम्पादकीय पर अपनी समालोचना अवश्य भेजने की कृपा करें जिस से आपनी रूचि जान कर तथा आपके सुझाव मान कर हम राजधर्म को उत्तरोतर एक व्यायक व शक्तिशाली पत्रिका बना सके आपके इस सहयोग के लिए हम आपके विशेष आभारी होगें।

स्वास्थ्य परिचर्चा

योग से रोग मुक्ति

भारतीय दर्शन वास्तव में मानव के सम्पूर्ण विकास का दर्शन है। वर्तमान में भौतिकवाद के भोग से तृप्त व्यक्ति अध्यात्म की पिपासा तृप्ति के लिये भारत की ओर निहार कर देखरहे हैं। भारतीय आर्ष साहित्य में योग-दर्शन जो अपने आप में एक सामाजिक दर्शन है और इस को अष्टांग योग भी कहते हैं। इसमें वर्णित यम (अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह), नियम (शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय, ईश्वर प्रणिधान) आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान व समाधि पूर्णतः व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक व बौद्धिक विकास एवं समाज विकास के सूत्र हैं। वर्तमान में उपरोक्त दार्शनिक तथ्यों को समाज आंशिक रूप में अपनाए हुए है। भविष्य में पूर्णांश की आवश्यकता बनी हुई है, क्यों कि यह सार्वभौमिक सार्वकालिक सत्यता है। जिसे समाज को आज नहीं तो कल अपनाना ही पड़ेगा। तभी सुख शान्ति का मार्ग खुलेगा। इन दार्शनिक मान्यताओं के अभाव में समाज रोगी है, पीड़ित है। प्रज्ञापराध ही रोग का मूल कारण है :—

शरीर क्रियाएँ सबकी समान हैं। चाहे वह हिन्दू, सिक्ख, मुसलमान या अन्य किसी सम्प्रदाय का अनुयायी हो। शरीर रचना एवं क्रिया में कोई भेद नहीं है। आयुर्वेद में स्वस्थ रहने के उपायों का वर्णन करते हुए दिनचर्या एवं रात्रि-चर्या अर्थात् ऋतुचर्या का सम्यक् आचरण करने वाला व्यक्ति ही सर्वदा स्वस्थ रह सकता है। इसके विपरीत आचरण करना रोगों को निमन्त्रण देना है। काल, इन्द्रियों के विषय और कर्मों का हीन, मिथ्या, अतियोग, रोगों का कारण है। इन कारणों को जानना आवश्यक है। जो हम जानने पर भी भूल करते रहते हैं यही प्रज्ञापराध है—उदाहरणतः—सूर्य की ओर देखना मिथ्या योग है, आंख पर पट्टी बान्धे रखना, बिल्कुल न देखना हीन योग, इससे अंग अपनी क्रियाएं खो बैठता है, अधिक देर तक पढ़ते रहना या देखते रहना अतियोग है—इस प्रकार प्रत्येक इन्द्रिय का योग क्या है, अयोग क्या है यह समझाना आवश्यक है। शरीर, मन, आत्मा, इन्द्रियां योग अयोग का अधिष्ठान हैं। हमें वह कार्य नहीं करने चाहियें जिनके करने से भय, शंका व लज्जा उत्पन्न होती हो। भले ही इसमें सम्प्रदायवादी रूढ़िवादी बन्धनों को तोड़ना पड़े। तभी हम अपना व इष्ट मित्रों का हित कर सकेंगे व राष्ट्र की प्रगति में सहायक हो सकेंगे।

आहार :—मनुष्य स्वभाव से (शाकाहारी) फल, दूध पर निर्भर रहने वाला प्राणी है। इसके दान्तों व आन्त्र की संरचना इसका प्रमाण है। किसी भी मांसाहारी प्राणी के स्वभाव से तुलना कीजिये, गुण विपरीतता देख आप समझ सकेंगे। शुद्ध सात्विक पुष्टिकर भोजन सेवन करें, शीत ऋतु में उष्ण प्रकृति के फल मेवे आदि भोजन में लें, विविध प्रकार के गरिष्ठ पाक व्यंजन घी (घृत) दुग्धादि का प्रचुर मात्रा में सेवन करें। इस ऋतु में जठराग्नि (उदरस्थ अग्नि) प्रबल होती है।

आसन :—योग दर्शन में वर्णित प्राणायाम के साथ आसनों की क्रियाएँ करने से शरीरस्थ प्रत्येक अंग अपने स्थान पर सक्रिय रहता है वह अपना स्थान व क्रिया तथा आकार बनाये रखता है—कुछ आवश्यक आसन नित्य प्रति करें। ताड़ासन, सर्वाङ्गासन, त्रिकोणासन, पादहस्तासन, अर्धमत्स्येन्द्रासन व चक्रासन आदि नित्य प्रति करने से शरीर में स्फूर्ति बनी रहती है जकड़ाहट समाप्त होती है वृक्क, फेफड़े, हृदय आदि अंगों की क्रियाएँ सामान्य बनी रहती हैं। रक्त संचार, मल मूत्र विसर्जन की क्रियाएँ सामान्य बनी रहती हैं— आयु की वृद्धि होती है। शरीर रोगों से मीलों दूर रहता है—आप निश्चय करें दीपावली से व्यायाम करने का, प्रातकाल शौचादि से निवृत हो तैल मर्दन कर नित्य प्रति व्यायाम करने का। यदि आप चाहते हैं रोगों से मुक्ति मिले, शरीर सशक्त बना रहे जिसके माध्यम से हम जीवन की नैतिकता बनाए रखने में सक्षम हो, अर्थोपार्जन की क्षमता बनी रहे, इच्छापूर्ति एवं मुक्त स्वभाव से जीवन जीयें तो शरीर का विरोग होना आवश्यक है। व्यायाम द्वारा तपाया शरीर ही अन्ततोगत्वा सहायक है। आसनों की अधिक जानकारी के लिये राजधर्म प्रकाशन की **आसन-प्राणायाम** पुस्तक अवश्य देखें। यह चित्रों सहित आपका मार्ग दर्शन करेगी।

ब्रह्मचर्य :— व्यक्ति के शारीरिक, आत्मिक एवं बौद्धिक विकास के लिये पूर्व मनीषियों ने आयु के प्रारम्भिक 25 वर्षों तक की आयु को उपयुक्त समझा और इसका नाम ब्रह्मचर्याश्रम रखा । इसमें सदाचार की उन सब बातों का समावेश है, दिनचर्या में प्रातः चार बजे उठना, मुख प्रक्षालन कर शौचादि से निवृत हो व्यायाम कर स्नान, सन्ध्या वन्दन आदि कर दैनिक कार्यक्रम में जुटे विद्याध्यन आदि । परन्तु देश की बागडोर पिछले तीस वर्षों में ऐसे लोगों के हाथों में रही जो भारतीय संस्कृति के विरोधी थे, जिन्होंने देश में अश्लील साहित्य व सिनेमा, शराब, मांस, व्यभिचार, भ्रष्टचार आदि दुर्गुणों को प्रचलित प्रसारित करने की खुली छूट दी जिससे देश का भयंकर नैतिक पतन हुआ । सदाचार के स्थान पर नौजवानों की मनोदशा उदण्डी स्वभाव की बन चुकी है । न उनमें पितृभक्ति का अंश है, न राष्ट्र भक्ति । कांग्रेस शासन में सदाचार का दिवाला पिट गया । महाभारत काल के प्रमाण मिलते हैं एक व्यक्ति की तीन-तीन पीढ़ियाँ युद्ध में लड़ती थीं । व्यक्ति की आयु चार सौ वर्ष होती थी । परन्तु सदाचर के अभाव में आज औसत आयु 60-70 वर्ष रह गई है । समय से पहले दीप टिम टिमा कर बुझ जाता है । न व्यक्ति का अपना निर्माण हो पाता है न सन्तान का । इस प्रकार राष्ट्र हर क्षेत्र से पंगु होता जा रहा है । राष्ट्रीय आवश्यकता को देखते हुए ऐसे घातक अंशों शराब, मांस, चाय, धूम्र पान आदि त्याज्य द्रव्यों के प्रचलन को पूर्ण रूप से बन्द किया जाऐ ।

शराब :—उष्ण, तीक्ष्ण व राजोगुणी होने के कारण शरीर अङ्गों (यकृत, वृक्क व अन्त्र) एवं धातुओं की घातक है व आयु को कम करती है । बुद्धि पर रजोगुणी प्रभाव से कलह, विवाद उदण्डता की जननी होने से राष्ट्रीय जन-जीवन में विघटनकारी प्रवृतियों को जन्म देती है ।

मांस :— यह तमोगुणी, मन्द बुद्धि व विवेक को समाप्त कर पाशिवक प्रवृति को जन्म देने वाला है । इसके सेवन से मनुष्य अपना मानव धर्म छोड़कर पाशिवक रूप धारण कर पिशाच स्वभाव से स्वयं व समाज को रुगणता की ओर ले जाता है ।

चाय :—यह विटामिन सी (Calcium) को निष्क्रिय कर देती है । जिस (Calcium) (खटिक) तत्व से बच्चों के शरीर में रस रक्त मांस आदि धातुओं का निर्माण होता है चाय पिलाकर व पीकर हम स्वयं तथा दूसरों को उस तत्व (सी) से वंचित कर देते हैं, शरीर बार-बार क्षणिक उत्तेजना के लिये सेवन करने का आदी हो जाता है और जीवन को कष्ट में डाला जाता है – शरीरिक विकास में चाय बाधक है तथा इसके सेवन से जीवन शक्ति घटती है ।

धूम्रपान :— यह भी एक प्रकार से व्यर्थ का व्यसन सारे राष्ट्र को लगा है । बहुत धन व्यर्थ व्यय होता है—श्वसन संस्थान में कैंसर रोग को उत्पन्न करता है । विष है ।

इस लिये राष्ट्र के नौजवानों व बुजर्गों, माताओं, बहनों, व बालकों को उपरोक्त अनावश्यक द्रव्यों से दूर रहना चाहिए । यह शरीर केवल आपका नहीं बल्कि आपके परिवार व राष्ट्र की सम्पति है । इसको मद्य, मांस, चाय, धूम्रपान, व्यभिचार आदि दोषों से बचायें । सदाचारी बनें । अश्लील सिनेमा देखना, रात्रि देर तक जागरण व प्रातः सूर्य उदय होने पर उठना, विस्तर पर चाय पीना—ये सब क्रियाएं हानिकारक हैं । इस प्रकार की लहर में समाज आज आधुनिकता के नाम पर पतन की ओर बहा जा रहा है—शरीर की रोग क्षमता घट रही है । शरीर रोगक्षम बना रहे इसके लिए आवश्यक है अष्टांग योग मार्ग अपनाएं । इससे शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक सभी प्रकार के रोग एवं दोष समाप्त होगें । इसी आधार पर हम अपना आचरण प्रशस्त करें तो समस्त विश्व के मानव समाज को शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति का मूल मन्त्र दे सकते हैं ।

आर्य बन्धुओ ! सुनहरी अवसर है । देश का प्रधान मन्त्री शराब मांस आदि अपथ्य द्रव्यों एवं अश्लीलता के कलंक को देश के माथे से मिटाना चाहते हैं । आप भी नारे लिख जन जागृति अभियान को दीपावली के शुभ पर्व से प्रारम्भ करें । यही महर्षि दयानन्द को सच्ची श्रद्धांजली होगी ।

धर्मवीर आयुर्वेदाचार्य
प्रबन्धक गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ

—o—

ग्रामोत्थान की समस्यायें और समाधान

शोभाराम श्रीवास्तव

गांवों के सम्बन्ध में हमारी परिकल्पना प्रतिवादी है। जब हम गांवों को खुशहाली के विषय में सोचते हैं तो हम द्वापर युग में चले जाते हैं जबकि गांव-गाँव में घी-दूध की नदियां बहती थीं। ग्रामवासियों के घर अन्न भंडारों से भरे रहते थे तथा सामाजिक जीवन में छोटे बड़े का कोई भेद नहीं था। 'खेलत में को काको गुसईयां' की भावना जन-जीवन में व्याप्त थी। हर दिन त्यौहार और हर रात उत्सव के रूप में मनाई जाती थी। गांवों के सामूहिक दुख-सुख में प्रत्येक व्यक्ति भागीदारी निभाता था।

गांवों के पतन के बारे में जब हम सोचते हैं तो शहरों के प्रति बुद्धिवादी व्यक्तियों ने साम्यवादी नजरिये से गांवों की गरीबी का जो चित्रण अपने लेख, कहानी, कविताओं में किया है और इस शताब्दी के चौथे और पांचवें दशक में जिसका बहुत प्रचार-प्रसार हुआ है, वह छवि हमारी आंखों के सामने झूलने लगती है।

खेतों में अन्न उपजाता किसान फटे चिथड़ों में लिपटा भूख से छटपटा रहा है। शोषणकर्त्ता जमींदार महफिलों में खुशामदियों-जीहजूरों से घिरा शराब की बोतलें लुढकाता पतुरियों का नाच देख रहा है।

बात बात में लाठियां ठनकती हैं, गोलियां चलती हैं। कमजोर लोगों को पेड़ों से बंधवा कर हंटरों से पीटा जाता है। हर तरफ शोषण, उत्पीड़न और क्रन्दन है।

वास्तव में हमारे गांवों की स्थिति इन दोनों चित्रणों के अनुसार नहीं है। भारत के शहरों और देहातों में कोई विशेष फर्क नहीं है। यह महज कोरी कल्पना है कि शहरों की जिन्दगी भाग-दौड़ से भरी प्रगति की ओर अग्रसर है और देहातों की जिन्दगी ठहरी हुई है।

आज़ादी के बाद विकास की दिशा में की गई हमारी विभिन्न कोशिशों से शहर भी आगे बढ़े हैं और गांव भी। शहर अधिक प्रगतिशील हमें केवल इस लिए लगते हैं क्योंकि वहां आबादी का घनत्व अधिक है और साधन घनीभूत हो गए हैं। गांवों में पिछड़ापन इस लिए दिखाई देता है क्योंकि वहां आबादी का घनत्व कम है और साधन बिखरे हुए है।

ताजा चुनाव परिणामों से एक बात तो स्पष्ट हो गई है कि चाहे इस देश की जनता साक्षर न हो, पर वह अचेत नहीं है। समय के साथ उसकी जागरुकता-साहस और कुछ नया करने की ललक उसमें है। वह गतिशील है, यथा-स्थितिवादी नहीं। इस नए परिवेश में ग्रामोत्थान की चर्चा करते समय हमें अपने दृष्टिकोण में कुछ मौलिक परिवर्तन करने होंगे।

अभी तक ग्राम विकास की जो योजनाएं बनीं और चलीं, उन पर अर्थशास्त्र बुरी तरह से हावी रहा। गांवों की गरीबी हटे, वे खुशहाल और समृद्ध हों, इसके लिए मात्र अर्थशास्त्रों के सिद्धान्तों के आधार पर विचार करने से हमारे प्रयास एकपक्षी हो गए। हमारे मनों में ग्रामवासी गौण हो गया और प्राकृतिक साधन, उनका उपयोग और उनके उत्पादन के सुनहले सपने नाचने लगे।

हमने गांवों का मन नहीं समझा। ग्रामों की परम्पराओं और रीतिरिवाजों को दूसरे दर्जे की दृष्टि से देखा। जबकि ग्राम जीवन में इन्हीं का सर्वाधिक वर्चस्व है।

फलस्वरूप हमारे ग्राम-विकास के प्रयास वे परिणाम नहीं दे सके जिनकी अपेक्षा की गई थी।

शिक्षा के प्रसार के लिए गांव-गांव स्कूल खुले, किन्तु शिक्षा का स्तर निरंतर गिरता गया। कृषि-विकास के लिए करोड़ों रुपयों का कर्ज अनुदान वितरित हुआ पर उसका दुरुपयोग ही हुआ। पंचायतों के चुनावों में फूट और दलबन्दी को बढ़ावा दिया। लघु उद्योगों के नाम पर बिचौलियों ने सरकारी अनुदान हड़पने की गन्दी कोशिशें की। नौकरशाही के शिकंजे तेज हुए। भ्रष्टाचार लगातार बढ़ता गया।

अच्छी नीतियों का निर्माण करना एक बात है और उसका सफल क्रियान्वयन करना अलग बात है। अच्छी नीतियों के गलत क्रियान्वयन के क्या परिणाम होते हैं वह इन आम चुनावों के नतीजे से सबके सामने आ गया है।

मूल रूप से ग्रामोत्थान के तीन चार काम ही करने हैं। उन्नत कृषि के लिए सिंचाई साधनों की बढ़ोतरी तथा आधुनिक कृषि टेकनालाजी का प्रसार, लघु और कुटीर उद्योगों की स्थापना तथा विस्तार, शिक्षा का प्रसार, बिचौलियों एवं शोषण कर्त्ताओं का अन्त।

इन कामों के लिए बदली हुई परिस्थिति में हमें गांवों का मन तथा परम्पराओं को आधार मान कर अपनी योजनाओं को संशोधित करना होगा।

भारत के गांवों के मन की तीन चार मौलिक विशेषताएं हैं। भारतीय ग्रामवासी सगुण का उपासक है। अपने हर प्रयत्न या त्याग का परिणाम मूर्तरूप में देखना चाहता है। लगातार शोषण और उत्पीड़न का शिकार होने के कारण वह शासकीय प्रयासों को ऊपर से आरोपित प्रयास मानता है। और उनमें पूरे मन से सहयोग नहीं दे पाता है। वह अपनी परम्पराओं और विश्वासों को सहजता से बदल नहीं पाता है। जो व्यक्ति या समूह उसकी परम्पराओं और विश्वासों से मेल नहीं खाते वह उनसे कट कर तटस्थ हो जाता है और उसके प्रयासों में एक अजीब किस्म का ठंडापन आ जाता है।

वह कोर्ट कचहरी और दफ्तरों के चक्कर लगाना पसन्द नहीं करता है। अधिक नियम और कायदे कानूनों को एक उलझन मानता है। लिखा-पढ़ी और कागज के काम में परेशानी महसूस करता है। वह सहज विश्वासी है और अपनी बात निभाने की पूरी कोशिश करता है। ग्रामोत्थान के प्रयासों में हमें ग्रामवासियों की इन मानसिक विशेषताओं का बड़ी सूझबूझ के साथ उपयोग करना चाहिए।

जहां तक संभव हो, ग्राम-विकास की योजनाएं गांवों में गांव वालों के द्वारा गांववालों के हित के लिए बने, शासन का मात्र मार्गदर्शन ही रहे। गांवों से अधिक से अधिक सक्रिय सहयोग इन कामों में लिया जाये।

कितनी हास्यप्रद स्थिति होती है कि किसी गांव में अस्पताल की इमारत बननी है, उसका ठेका उस गांव से सैंकड़ों मील दूर शहर के किसी ठेकेदार को मिलता है और वह बाहर के अपने मजदूरों को लाकर इमारत बनाता है।

किन्हीं गांवों में सिंचाई सुविधा के विस्तार के लिए बांध बांधना है और उस पर नहर खुदाई का काम बाहर के ठेकेदारों के बाहरी मजदूर कर रहे हैं।

इन स्थितियों में ही गाँव वाले इन कामों को सरकारी काम मान कर दूसरी नजर से देखने लगते हैं और उनका ममत्व उस काम या उसके परिणाम से नहीं रहता है। इसलिए बहुत जरूरी है कि ग्राम विकास की योजनाओं, कार्यों आदि में स्थानीय प्रतिभा, श्रम तथा साधनों का अधिक से अधिक उपयोग हो।

शासकीय कर्मचारियों के जिस वर्ग को ग्राम विकास के सिलसिले में गांववालों के सीधे सम्पर्क में आना पड़ता है वे ग्रामवासियों के रीति-रिवाजों परम्पराओं, भाषा, वेशभूषा आदि में इतना रचपच जायें कि गांव वाले उन्हें अपना ही एक अंग मानने लगें।

गांवों में नियमों-कानूनों में प्रदत्त दंडात्मक अधिकारों को प्रयोग में लाने के पूर्व संबंधित अधिकारियों को मामले की बड़ी सूझ-बूझ के साथ जांच कर लेना जरूरी है। बार-बार दंडात्मक अधिकारों का भय बताना लाभप्रद सिद्ध नहीं होता है।

गाँवों में आपसी सद्भाव और नैतिक आचरणों के द्वारा अच्छा अनुशासन स्थापित किया जा सकता है। गांव वाले अदालत-कचहरी से उतना नहीं डरते जितना स्वयं अपने गांव वालों की निगाह में नीचा गिर जाने से डरते हैं।

अब आवश्यकता इस बात की है कि चाहे ग्राम विकास की योजनाएं कम बनें, पर जो बनें इनका व्यवहारिक दृष्टि से पूरा-पूरा पालन हो, उनके परिणाम सुनिश्चित हों। इससे गांव वालों का विश्वास प्रशासन पर जमेगा और वे प्रशासन को हुकूमत करने वालों की जमात न मानकर अपना सहयोगी और विकास का भागीदार मानने लगेंगे।

आवश्यक सूचना

पिछले एक वर्ष से आर्य सामाजिक एंव राजनैतिक गतिविधियों में मेरे अति व्यस्त रहने के कारण सुभाष मार्ग रोहतक कार्यालय व्यवस्थित ढंग से नहीं चल सका और इसी लिए जिले के साथ सम्पर्क का कार्य भी ढीला रहा। अब यह कार्यालय पुनः सुचारू रूप से कार्य करने लग गया है। मैं स्वयं भी प्रति सप्ताह बुधवार को अवश्य उपस्थित रहता हूं।

इन्द्रवेश

शराब से कैंसर व जिगर रोग का खतरा

शराब का सेवन शरीर के लगभग सब अंगों के लिए हानिकारक है। आज जबकि हम गांधी जयंती मनाने जा रहे हैं तो शराब बन्दी का महत्व और भी अधिक बढ़ जाता है। इसी परिप्रेक्ष्य में यहाँ शराब पीने से शरीर में उत्पन्न होने वाले कुछ विकारों का ब्योरा प्रस्तुत कर रहे हैं।

गैस्ट्रोटिट्स—शराब पीने से पेट की विभिन्न क्रियाओं में खराबी पैदा होती है और इसके नतीजे के तौर पर पेट में तीव्र ज्वलनशील दर्द, वमन तथा उलटियां आदि आने के विकार पैदा होते हैं। अक्सर इसके परिणामस्वरूप भारी मात्रा में रक्तस्राव भी हो जाता है जोकि शराब पीने वाले आदमी के शरीर के रक्त पर इसके दुष्परिणामों का पहला संकेत है।

हालांकि इस प्रकार की घटनाएं अत्यन्त भयानक होती हैं लेकिन सामान्यत: एक दायरे तक ही सीमित होती हैं। अक्सर खून की उलटी इतनी जबरदस्त हो सकती है कि रोगी की जान पर भी बन सकती है। इसकी रोकथाम 'सेडाटिव' तथा 'एंटासिड' दवाओं द्वारा की जाती है लेकिन जब रक्त स्राव अत्यन्त अधिक हो तो पेट के अन्दर जमा हुए खून के नतीजे के तौर पर खून जमा हो जाता है जिसको निकालने के लिए आप्रेशन का सहारा लेना पड़ता है तथा ट्यूबों की मदद से खून निकाला जाता है।

चूंकि शराब एक अत्यन्त कुढ़ाने वाली चीज है इसलिए पैप्टिक अल्सर होने का यह एक मुख्य कारण है। जो लोग लम्बे समय से शराब का सेवन करते चले आ रहे हों, उन्हें अधिक उल्टियां आने के कारण उन के गले की शिराएं फट जाने का खतरा भी रहता है। यदि नालियों के फटने की यह क्रिया सिर्फ कुछ सीमा तक ही सीमित हो तो बेतहाशा रक्त स्राव ही एकमात्र समस्या होती है लेकिन यदि यह पूर्णत: फट जाए तो गले की नालियों में विद्यमान सब कुछ छाती में उतर जाता है जिसका नतीजा आखिरकार मौत की संभावनाएं बेहद बढ़ जाने के रूप में निकलता है। इस स्थिति का इलाज काफी लम्बा चलता है और कठिन भी होता है।

पैन्क्रीटिट्स (अग्नयाशय)—शराब पीने से अक्सर यह रोग विभिन्न 'डिग्रियों' में उत्पन्न होता है, हालांकि यह रोग किस प्रकार उत्पन्न होता है यह बात पूरी तरह समझ में नहीं आई है। ऐसा विश्वास किया जाता है इसके नतीजे के तौर पर अग्नयाशयी प्रणाली अवरुद्ध हो जाती है क्योंकि शराब के सेवन के कारण कोशिकाएं जम जाती हैं। इससे सामर्थ्यवान एन्जाईम नष्ट हो जाते हैं और सामान्य मानव की पाचन प्रणाली ही नष्ट हो जाती है। इसका अन्तिम परिणाम अग्नयाशय के विस्तार के रूप में निकलता है और यदि यह सिलसिला बहुत लम्बे समय तक जारी रहे तो इस महत्वपूर्ण अंग का पूर्ण विनाश हो सकता है। पेट और पीठ के ऊपरी हिस्से में भयानक दर्द होता है और यही इस बीमारी की सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण निशानी है। अक्सर बुखार भी हो सकता है और कई मामलों में तो इसका हमला बिल्कुल स्पष्ट हो जाता है। पेट शरीर का एक अत्यन्त नाजुक भाग होता है। इसलिए डाक्टरों के लिए उन रोगियों का इलाज करना बड़ा मुश्किल होता है। और जिस डाक्टर को रोगी की शराब पीने की आदतों के बारे में नहीं बताया जाता है उसे तो ऐसे रोगी का इलाज करने में और भी कठिनाई पेश आती है क्योंकि इस स्थिति में वे उसे 'पर्फोरेटेड पैटिक अल्सर' का केस समझ सकते हैं और आप्रेशन करने का निर्णय ले सकते हैं। खून तथा पेशाब में 'एन्जाईम' के स्तर (जो कि अग्नयाशय की स्थिति में बेहद बढ़ जाता है) के अध्ययन से सम्भावित विनाश से बचा जा सकता है। यह बीमारी सामान्यत: दो-तीन दिनों में ही बढ़ जाती है जिसके इलाज के लिए एनालजेसिक दवाओं के अलावा और कोई चीज कारगर नहीं होती। सिवाय इसके कि रोगी को मानसिक दबाव से बचाया जाए।

जिगर की खराबी—यह बात तो अब सिद्ध हो चुकी है कि शराब जिगर के लिए हानिकारक है। जिगर पर इसका सबसे पहला असर तो यह होता है कि इससे जिगर में चर्बी जमा हो जाती है और बाद में जिगर की कोशिकाएं पूर्णत: नष्ट हो जाती हैं जिसका अन्तिम परिणाम जिगर के नाकारा हो जाने के रूप में निकलता है। यह तथ्य है कि बहुत कम शराब पीने वाले कम खाते हैं, इससे शराब के टाक्सिक एक्शन में वृद्धि हो जाती है क्योंकि जिगर को महत्वपूर्ण पोषक तत्व प्राप्त नहीं हो पाते। आंकड़ों से पता चलता है कि जिगर की खराबी को घातक बनने में पाँच से पन्द्रह वर्ष लगते हैं। इसकी वजह यह है कि जिगर

में ध्वस्त हुई कोशिकाओं की क्षतिपूर्ति कर लेने की अपूर्व क्षमता होती है लेकिन इसके प्रारम्भिक संकेत कमजोरी, थकान एवं जाँडिस हैं। जैसे-जैसे वक्त बीतता जाता है तो ये संकेत भी मिलने शुरू हो जाते है कि जिगर जवाब देता जा रहा है। ये संकेत हैं—शरीर के बालों का गिरना, पेट व पैरों में विकार उत्पन्न होना, शरीर पर खून के धब्बों का उभरना और भुजाओं की शक्ति का क्षीण होना। बहुत बाद के चरण में जाँडिस का रोग पुनः हो जाता है, खून की उल्टियां आती हैं और बाद में सब खत्म हो जाता है।

***शराब पीने से जिगर के रोग इस सीमा तक बढ़ जाते हैं कि इलाज मुश्किल हो जाता है* वक्त रहते इस्तेमाल छोड़ दिया जाए तो आयु में 8–10 वर्ष वृद्धि की सम्भावना रहती है।**

शराब पीने की आदत का पता चलने पर डाक्टर अक्सर जिगर की खराबी का सन्देह करते हैं। ताप-तिल्ली का विस्तार, पेट व इसकी नाड़ियों में तरल पदार्थों का जमा होना जिगर की खराबी के संकेत हैं जिसे डाक्टरी भाषा में 'किरोसिस' कहा जाता है। इसके डायग्नोसिस की तीन तरीकों से पुष्टि की जाती है—1. जिगर के काम की जांच करके, 2. बेरियम की खुराक दिला कर सम्बद्ध अंग का एक्स-रे लेकर, 3. यदि जरूरी हो तो जिगर की बायोप्सी करके।

'किरोसिस' में जिगर की खराबियों को रोकने के लिए किसी तरीके का ज्ञान नहीं है लेकिन शराब पीने से परहेज किया जाए तो जिगर के और ध्वस्त न होने की सम्भावना हो सकती है और उम्र भी बढ़ सकती है। शेष के लिए उपचार सिर्फ उपलब्ध संकेतों के आधार पर ही होता है। शरीर में तरल पदार्थों के जमा होने से रोकने के लिए नमक के सेवन पर प्रतिबन्ध लगाने की सिफारिश की जाती है। एनीमिया (रक्ताल्पता) (जोकि सामान्यतः इसके साथ ही उत्पन्न हो जाती है) का उपचार दवाओं द्वारा तथा रक्त कणों के निर्माण में तेजी लाकर किया जाता है। यदि पेट में यह तरल पदार्थ भारी मात्रा में चला जाए तो इसे एक सुई डालकर निकाला जाता है। मृत्यु जैसे हालात में प्रोटीन पर रोक लगाई जाती है और इंट्रा-वीनस (शिराओं के जरिए) तरल पदार्थ दिए जाते है क्योंकि प्रोटीन उत्पादनों में बाधा पड़ने से मृत्यु की सम्भावनाएं भी बढ़ जाती हैं। कोशिकाओं अथवा नाड़ियों में खराबी आ जाने की वजह से खून सीधा दिल तक पहुंचने लगता है। इस रोग का शिकार रोगी यदि शराब पीना छोड़ दे तो उसकी जीवन आयु 8-10 वर्ष बढ़ जाती है और शराब पीने वाले व्यक्ति की आयु पांच वर्ष घट जाती है।

कैंसर—मुंह, पेट, कंठ तथा गले के कैंसर की शिकायत शराब पीने वालों में आम होती हैं। इसकी भी वजह वही अर्थात् शरीर के सम्बद्ध अंगों पर शराब के थकान पैदा करने वाले प्रभाव ही है। इससे पाचन प्रणाली भी प्रभावित होती है। किरोसिस के बाद जिगर का कैंसर होना भी आम बात है।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् का अधिवेशन २१-२२ जनवरी को होना निश्चित।

दुनियां का कोई भी कार्य जिसे क्रियान्वित रूप दिया जाना हो वह युवाशक्ति के बिना पूरा नहीं हो सकता। युवक ही देश की धरोहर और क्रान्ति की कुञ्जी होते हैं। आज भारत में बदलती हुई परिस्थितियों के मध्य देश के युवकों को एक झण्डे के नीचे एकत्रित हो जाना चाहिए। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् जो अपनी पिछली मान्यताओं के बलबूते पर एक शक्तिशाली तथा युवा संगठन के रूप में उभर कर सामने आया है। पिछले कुछ दिनों से राजनैतिक उथल-पुथल के कारण थोड़ी शिथिलता के पश्चात् पुनः अंगड़ाई ले उठा है। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ जिसे एतिहासिक रूप से क्रान्तिकारियों का गढ़ कहा जा सकता है। उसके पत्थर की दीवारें पुकार-पुकार कर युवकों को आह्वान कर रही हैं कि यदि देश का भविष्य उज्जवल बनाना है और देश की स्वतन्त्रता को अखण्ड रखना है तो युवकों को 21-22 जनवरी 1978 को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के प्रांगण में पहुंचकर अपना भावी कार्यक्रम बनाना चाहिए। देश भर के आर्य युवक प्रतिनिधियों के नाम व पूरे डाक पते शीघ्र हमारे पास कार्यालय में पहुंच जाने चाहिऐं ताकि उन्हें हम हर प्रकार की सामग्री भेज सकें। आशा है युवक बन्धु जोश खरोश के साथ अधिवेशन में पहुंचने की तैयारी करेंगे।

वर्ण व्यवस्था, वर्ग व्यवस्था

डा० सिद्धेश्वर भट्ट

अस्पृश्यता जातिवाद का कुप्रथा को एक दुष्परिणाम है। परन्तु जातिवाद को प्रायः वर्ण व्यवस्था के पर्याय के रूप में मानकर विचारकों ने एक बहुत बड़ा घपला पैदा कर रखा है। अस्पृश्यता के निवारण के लिए जातिवाद का उन्मूलन करने के बजाय वर्ण व्यवस्था के विरोध में आवाज मुखरित की जाती रही है।

संभवतः यह भ्रम उत्पन्न करने के पीछे अस्पृश्यता को बनाये रखने की कोई चाल हो जिसे स्वार्थी तत्वों ने हमारे चिंतन में प्रविष्ट कर दिया हो।

यह उल्लेखनीय है कि महात्मा गांधी ने वर्ण व्यवस्था और जातिवाद में भेद को समझा था तथा वर्णव्यवस्था का अनुमोदन कर जातिवाद का खंडन किया था। आज पुनः जातिवाद एवं वर्ण व्यवस्था में भेद किये जाने की आवश्यकता है ताकि अस्पृश्यता के कारणों का सही विश्लेषण हो सके।

वर्णव्यवस्था प्राचीन भारतीय सामाजिक संरचनामें श्रम विभाजन के लिए प्रयुक्त विधि है, जो मानव स्वभाव के गहन अध्ययन एवं सूक्ष्म निरीक्षण के उपरान्त स्थापित एक सुनिश्चित वैज्ञानिक सिद्धांत पर आधारित प्रतीत होती है। इसके विपरीत जातिवाद परवर्ती भारतीय समाज की एक कुत्सित मनोभावना एवं सामाजिक कुप्रथा रही है जिसके कारण समाज में भ्रामक वर्ग भेद स्थापित कर एक वर्ग दूसरे वर्ग को शोषित करता है।

वर्गभेद पर आधारित जातिवाद वर्ण भेद पर आधारित चातुवर्ण्य या इसी तरह की अन्य कोई संभावित समाज व्यवस्था से पूर्णतः भिन्न है। इन दोनों के गुण-दोषों को एक दूसरे पर अध्यस्त नहीं किया जा सकता और एक की स्वीकृति या अस्वीकृति को दूसरे की स्वीकृति या अस्वीकृति नहीं मानी जा सकती।

वशिष्ठ और बाल्मीकि

जहां तक वर्ण व्यवस्था का संबंध है, उसे प्राचीन भारतीय चिंतकों ने समाज में कार्य-प्रणाली के नियमन के लिए स्थापित किया था। इस व्यवस्था का लक्ष्य मानव के गुण एवं प्राकृति के आधार पर उसके व्यवसाय का वरण या चयन करना था। व्यवसाय का यह वरण व्यक्ति की मानसिक एवं शारीरिक संरचना के आधार पर था, न कि जन्म या अन्य कोई पैतृक आधार पर। इतिहास में वशिष्ठ और वाल्मीकि के उदाहरण इस तथ्य की पुष्टि के के लिए पर्याप्त हैं।

जीव विज्ञान एवं मनोविज्ञान द्वारा संपुष्ट यह अकाट्य तथ्य है कि सभी व्यक्तियों की मानसिक एवं शारीरिक संरचना एक जैसी नहीं होती। मनुष्य की अनेक विध, सामाजिक आवश्यकताएं होती हैं और एक ही व्यक्ति अपने आप अपनी सब प्रकार की आवश्कताओं की पूर्ति करने में समर्थ नहीं होता। अतः स्वभाव कौशल की दृष्टि से यह नितांत जरुरी है कि समाज में श्रम का विभाजन हो। इसी पारस्परिक सेवा एवं सहायता के नियमन का सिद्धान्त है।

यह संभव है कि उस समय की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए वर्ण व्यवस्था का चातुवर्ण्य रूप सर्वाधिक उपयुक्त था और आज की परिवर्तित परिस्थितियों में उसकी उपयोगिता समाप्त हो गयी परन्तु इसका तात्पर्य यह नहीं कि वर्ण व्यवस्था के आधार में श्रम विभाजन का वर्ण का जो सिद्धान्त है वह ही झुठला गया है।

ध्यान देने की बात यह है कि चातुवर्ण्य वर्ण व्यवस्था का पर्याय नहीं है, उसका एक प्रकार हैं। वर्ण व्यवस्था का कोई अन्य प्रकार संभव हो सकता है। अतः बिना वर्ण के सिद्धांत को छोड़े चातुवर्ण्य की व्यवस्था को छोड़ा जा सकता है और वर्ण व्यवस्था के किसी अन्य रूप को अपनाया जा सकता है।

जातिवाद का जन्म

वर्ण या व्यवसाय के चयन में अव्यवस्था न केवल कर्म के कौशल में बाधक है वरन् मानव स्वभाव के भी प्रतिकूल है। समाज में 'वोकेशनल गाइडंस' की आज भी वैसी ही आवश्यकता है जैसी कि पहले थी और हमारे वर्तमान के विचारकों को इस बारे में चिंतन करना चाहिए कि ऐसा कौन सा व्यवस्था का रूप प्रस्तुत किया जा सकता है जो आज की परिस्थितियों एवं मांगों के अनुरूप हो।

वर्ग भेद की प्रवृत्ति वर्ण व्यवस्था की विकृति होते हुए भी उसका अनिवार्य परिणाम नहीं है। वर्ण व्यवस्था को दूषित करने पर ही जातिवाद का जन्म होता है। वर्ण व्यवस्था के मूलभूत सिद्धांतों से जातिवाद अनिवार्यतः फलित नहीं होता। अतः जातिवाद को समाप्त करने का करने का तात्पर्य वर्ण व्यवस्था को समाप्त करना नहीं।

वर्तमान में हमारा प्रयास जातिवाद का उन्मूलन करना होना चाहिए, न कि वर्ण व्यवस्था की आलोचना। वर्ण व्यवस्था की समाप्ति तो संभव नहीं प्रतीत होती है पर वर्ग व्यवस्था या जातिवाद की समाप्ति अवश्य संभव है और इसकी तात्कालिक आवश्यकता भी है।

जातिवाद वर्ण व्यवस्था की विकृति मात्र ही नहीं। इस विकृति के साथ अनेक मनोवैज्ञानिक, आर्थिक एवं राजनीतिक तत्व भी जुड़े हुए हैं। अतः जातिवाद को थोड़ी देर के लिए वर्ण व्यवस्था का पर्याय मान लेने पर भी मात्र वर्ण व्यवस्था की समाप्ति से जातिवाद का उन्मूलन नहीं हो सकता है। वर्तमान में वर्ण व्यवस्था का चातुवर्ण्य रूप नष्ट प्राय सा है और एक तरह की फंक्शनल अनार्की (श्रम-अराजकता) विद्यमान है तथापि जातिवाद ज्यों का त्यों बना पड़ा है। अत; हमें सच्चे रूप में जातिवाद का उन्मूलन करना है तो वर्ण व्यवस्था से इसे पृथक कर इसी को लक्ष्य बनाना चाहिए।

अस्पृश्यता

वर्ण व्यवस्था और जातिवाद में स्पष्ट भेद कर लेने के उपरान्त हमें अस्पृश्यता के बारे में विचार करना चाहिए। यहाँ हमें स्वास्थ्य की दृष्टि से किये गये छूआछूत और सामाजिक कुप्रथा के रूप में किये गये छूआ-छूत से हमें कोई विरोध नहीं है परन्तु सामाजिक कुप्रथा के रूप में समाज के एक विशिष्ट वर्ग से किये जा रहे सतत् छूआछूत पूर्णतः निंदनीय और त्याज्य है। इसी को हम अस्पृश्यता की समस्या मानकर इस के विरुद्ध एक सुसंगठित संघर्ष की आवश्यकता का अनुभव करते हैं।

अस्पृश्यता की समस्या पर विचार करते ही कुछ तथ्य बड़े स्पष्ट रूप से उभरकर आते हैं। पहला तो यह कि जातिवाद इस का कारक और पोषक तत्व है। जातिवाद के कारण एक विशेष वर्ग के साथ एक विशेष व्यवसाय को पैतृक रूप से संबंधित कर दिया जाता है। जातिवाद ही विभिन्न व्यवसायों में ऊंच-नीच के भाव को जोड़ देता है जो वर्ग संघर्ष को जन्म देता है।

अस्पृश्यता के अलावा जातिवाद के कई अन्य दुष्परिणाम हैं, जो हमारे जीवन को दूषित किये हुए हैं। अतः यह सुनिश्चित है कि जितना शीघ्र जातिवाद समाप्त होगा उतनी ही जल्दी सामाजिक सामंजस्य स्थापित हो सकेगा।

जब कभी भी अस्पृश्यता की समस्या की चर्चा होती है, प्रायः अस्पृश्य और परिगणित जाति को पर्याय रूप मान लिया जाता है। परन्तु इन दोनों में पर्याप्त भेद है। यद्यपि अस्पृश्यता जाति परिगणित जाति के अंतर्गत आती है, परन्तु यह सही नहीं कि सभी परिगणित जातियाँ अस्पृश्य जातियाँ कहलाती हैं। उदाहरणार्थ एक सुथार या बढ़ई परिगणित जाति में आता है पर अस्पृश्य जाती में नहीं। 'परिगणित जाति' पर अधिक व्यापक और अनिश्चित भी है।

अभी तक हम यह स्पष्ट नहीं कर पाये हैं कि कौन-सी जाति को परिगणित माना जाये और कौन-सी जाति को नहीं। यह भी विवादास्पद है कि इस प्रकार के वर्गीकरण का कौन-सा समुचित एवं सुनिश्चित आधार हो, इस के विपरित 'अस्पृश्य जाति' पद का दायरा सीमित है और उसकी सुनिश्चित परिभाषा है।

परिगणित जाति एवं अस्पृश्य जाति में हमें सुस्पष्ट भेद कर अस्पृश्य जाति के कल्याण के लिए तात्कालिक ध्यान देना चाहिए। वस्तुतः 'हरिजन' शब्द का प्रयोग महात्माजी ने अस्पृश्य जाति के लिए किया था परन्तु आज स्वार्थी तत्वों ने उसके अर्थ का विस्तार अनेक वर्गों के लिए कर लिया है जो भ्रामक है।

अस्पृश्यता के उन्मूलन के लिए हमें कुछ पहलुओं पर ध्यान देना होगा। इन में से सर्वाधिक महत्वपूर्ण है उस वर्ग का प्रश्न जो अपने व्यवसाय का पालन करने के एक अस्वास्थ्यकर ढंग के कारण अस्पृश्य माना जाता है।

आज के वैज्ञानिक युग में मैला उठाने की अवैज्ञानिक एवं अस्वास्थ्यकर पद्यति हास्यापद है। समस्त शहरों में जहां नगरपालिकाएं है, अनिवार्यतः शौचालय फ्लश पद्यति के होने चाहिए। इसी तरह समस्त गाँवों में शौचालयों को पंचायतों के माध्यम से गोबर गैस संयंत्र के साथ जोड़ा जाना चाहिए। इस से कृषि के लिए श्रेष्ठ खाद की उपलब्धि होगी तथा अस्पृश्यता को जन्म देने वाली स्थिति भी समाप्त हो जायेगी।

इन दोनों कार्यों के लिए पर्याप्त धन की आवश्यकता है। इन की अनिवार्यता को देखते हुए हमें साधन जुटाने को कटिबद्ध होना चाहिए। इस में व्यय किया गया धन

शेष पृष्ठ 17

दीवाली के अवसर पर

बुझे दीपकों की पुकार

विक्रम कुमार विवेकी

[श्री विक्रम जी उड़ीसा के अत्यन्त निर्धन परिवार के प्रतिभाशाली युवक हैं-अधुना पंजाब विश्वविद्यालय दयानन्द पीठ में पी एच. डी. के लिये शोध कर रहे हैं।]

संपादक

10 नवम्बर को फिर दीवाली आ रही है। जहां इस दिन राष्ट्र में बल्बों, पटाखों और रोशनी की झिलमिलाती संध्या में कुछ लोग शोषण से एकत्रित काले धन के बलपर गुलछर्रें उड़ाते दिखाई देंगे वहाँ ठीक उन्हीं आलिशान कोठियों के बगल में भारत के श्रमजीवी शोषित कुछ अब और कुछ तब के चिन्तान्धकार में निमग्न दिखाई पड़ेंगे। बाहर सड़कों पर पंचास रूपये के एक एक पटाके की आवाज़ में गरीब के बच्चे का करुण-क्रन्दन दबा रह जायेगा। फूलों से लदे द्वार पर पारदर्शक कपड़ों से लिपटे अर्धनग्ना के हाथों में फुलझड़ी की मुस्कराहट के साथ ही साथ पड़ोस की फटे गुदेड़ों से लदी बुढ़िया की आँखों में भूख और विवशता के आंसू तैरते हुए स्पष्ट दीख जायेंगे।

लक्ष्मी मां की सन्देश वाहिका यह दीवाली हर साल आती तो जरूर है पर उन लोगों के लिये जो पहले से ही भरपूर हैं। इन छोटे वर्ग वाले दरिद्रों की पुकार को न दीवाली ही सुन पाती है, न दीप जलाने वाले।

भारतीय इतिहास में दीवाली की कहानी भी निराली रही है। जहाँ इस दिन भगवान बुद्ध, महावीर, राम कृष्ण परमहंस, स्वामी दयानन्द, महारानी लक्ष्मी बाई के अनुयायी उनके निर्वाण को याद कर आँसू वहा जाते हैं और सम्पन्न लोग ऐय्याशी में डूब जाते हैं वहाँ राष्ट्र का यह बुझा हुआ दीपक (दरिद्र) भी दीपावली की आराधना के लिये लालायित हो उठता है। परन्तु वह बेचारा पेट में तैल न होने के कारण हिम्मत नहीं बटोर पाता जिससे वह स्वयं जलकर भी प्रकाश दे सके।

भारत में आज एक तरफ कुछ अत्यधिक जगमगाते दीपक आंखों को चौंधिया देते हैं तो दूसरी ओर करोड़ों बुझे हुये दिये जलने के लिये तेल को तरस रहे हैं। आज का सम्पन्नवर्ग और भी बटोरने के लिये कोशिशें कर रहा है। दो घन्टे की सर्विस करके दो-दो ढाई-ढाई हजार रुपये कमाने वाले बुद्धिजीवी वर्ग व अन्य लोग बोनस व महंगाई भत्ते की बढ़ौतरी के लिये हड़तालें करके अपनी मांगे पूरी करवा लेते हैं। 1000 रुपये रोज बनाने वाला व्यापारी सरकार द्वारा गतिरोधक कदम उठाये जाने पर तड़प उठता है कि कभी 1000 से घटकर 999 न हो जायें। तथा 1000 के स्थान पर 1100 बनाने लग जाता है। परन्तु दिन रात एक कर मजदूरी करने वाले मजदूर, किसान, पहरा देने वाले जवान तथा झाड़ू लगाने वाले छोटे कर्मचारी के 200-250 रु० में बढ़ौतरी के लिये कोई भी आवाज नहीं उठ पाती। ये बेचारे असमर्थता के कारण स्वयं आवाज उठा नहीं पाते और ऊपर का सम्पन्न समाज भी इनको उपेक्षित समझकर इनके साथ सहानुभूति नहीं रख पाता।

ऐसी परिस्थिति में जलते दीपकों का यह धर्म बनता है कि बुझे दीपकों को सहारा दें। स्वयं के स्वार्थ को छोड़ कर दूसरे साथियों की भी चिन्ता करें। अमावस की कालिमा को धोकर सर्वत्र व्यापक प्रकाश करने के प्रतीक रूप में यह दीवाली हमें धरती से अज्ञान, अन्याय व अभाव के अन्धेरे को भी दूर करने का महान् सन्देश दे रही है। हर वर्ष दीपावली के अवसर पर ये बुझे दीपक मूक रूप से पुकारते हैं पर क्या ये जलते दीपक अपने भाइयों की यह करुण मूक-पुकार सुनेंगे ?

—o—

खर्च नहीं, भविष्य के लिए लगायी जाने वाली पूंजी है, तोइसे खर्च के रुप में भी लिया जाय, तो भी इस प्रकार का व्यय सार्थक एवं आवश्यक है।

अंतिम उल्लेखनीय बात यह है कि जातिवाद एवं अस्पृश्यता की समाप्ति के लिए हमें अपनी मनोवृत्ति में आमूल परिवर्तन लाना होगा। यह परिवर्तन अस्पृश्यता बरतने वालों और अस्पृश्य कहे जाने वालों—दोनों में आवश्यक है। वस्तुतः यह अस्पृश्य कहे जाने वाले में और भी अधिक आवश्यक है ताकि उनमें असुरक्षा और हीनता की भावना समाप्त हो और वे स्वार्थी तत्वों के शोषण से बच सकें। उन्हें अब अधिक समय तक परमुखापेक्षी न बन कर स्वावलम्बी बनना चाहिए और दूसरे वर्गों के साथ समानता की प्राप्ति की योग्यता हासिल करनी चाहिए।

—o—

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में प्रमुख आर्य सामाजिक कार्यकर्ताओं एवं नेताओं की तीन दिवसीय गोष्ठी में लिए गये निर्णयों की रूप रेखा ।

आर्य समाज के कार्यक्रम को तेज करने एवं संगठन को मजबूत बनाने के लिए कई दिन से एक विचार चल रहा था कि आर्य नेताओं, कार्यकर्त्ताओं एवं विद्वानों की कोई गोष्ठी की जाए जिसमें आर्य समाज के संगठन को युवकों, महिलाओं, बुद्धिजीवियों एवं समाज के शोषित, पीड़ित व पिछड़े हुये लोगों तक पहुंचाने के लिए एक विस्तृत योजना तैयार हो सके। पहले यह गोष्ठी पांच दिन की रखने का विचार था परन्तु बाद में कुछ व्यस्तताओं के कारण यह 13, 14, 15 अक्तूबर को तीन दिन के लिए ही बुलाई जा सकी। समयाभाव एवं कार्यक्रम में परिवर्तन होने के कारण देश भर के उन विद्वानों एवं कार्यकर्त्ताओं की इस बैठक की सूचना भी हम नहीं दे पाये जो आर्य समाज में बढ़ती हुई युवा शक्ति से बेहद स्नेह एवं सहानुभूति रखते हैं। परन्तु फिर भी इस गोष्ठी में जितने भी लोग उपस्थित थे उन्होंने तीनों दिन तक एक-एक विषय पर पूरी बहस करके कुछ ठोस निर्णय लिए जिनको क्रियान्वित करने के लिए आर्य समाज का हर कार्यकर्त्ता प्राणपण से जुट कर कार्य करेगा। हालांकि इस प्रकार की गोष्ठी बुलाने का यह पहला ही अवसर था परन्तु फिर भी इससे एक अच्छा अनुभव प्राप्त हुआ और यह निश्चय हुआ कि संगठन को मजबूत बनाने एवं उसे जन-जन तक पहुंचाने के लिए यह अत्यावश्यक है कि इसके कार्यक्रम एवं नीति निर्धारण में अधिक से अधिक कार्यकर्त्ताओं को शामिल किया जाऐ और पूरे मन्थन के बाद निर्णय लेकर कार्य क्षेत्र में जाया जाए। तीन दिवसीय विचार गोष्ठी में मुख्य रूप से निम्नलिखित विषयों पर विचार-विमर्श किया गया तथा निर्णय लिए गए। बैठक की अध्यक्षता स्वामी इन्द्रवेश ने की।

आर्य युवक संगठनः—

युवा-शक्ति समाज का सबसे महत्त्वपूर्ण अंग होती है। इसी के बल पर बड़ी से बड़ी क्रान्ति एवं परिवर्तन हुआ करते हैं। आर्य समाज में युवकों को भारी संख्या में दीक्षित किया जा सके इसके लिए यह निश्चय किया गया कि सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद को पुनः एक शक्तिशाली संगठन के रूप में खड़ा किया जाए। दस वर्ष पहले स्वामी इन्द्रवेश व स्वामी अग्निवेश ने अपने साथियों सहित इसी संगठन आधार बनाकर कार्य करना प्रारम्भ किया था। परिणाम-स्वरूप स्वामी जी का कार्य क्षेत्र जहाँ आर्य समाज के विशाल संगठन में विस्तृत हो गया वही पर राजनैतिक क्षेत्र में भी उनको किसान, मजदूर, अध्यापक, विद्यार्थी आदि कई वर्गों के हितों के लिए संघर्ष करना पड़ा और युवक संगठन की गतिविधियाँ कुछ धीमी पड़ गई। देश की बदलती हुई वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए यह अत्यन्त आवश्यक हो गया है कि आर्य समाज में युवकों की एक विशाल सेना भर्ती की जाए और वैदिक समाजवाद का विचारधारा को लोकप्रिय बनाया जाए। इसीलिए यह निर्णय हुआ कि सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद का वार्षिक अधिवेशन 21-22 जनवरी 1978 को गुरूकुल इन्द्रप्रस्थ में बुलाया जाए जिसमें देश भर से युवक प्रतिनिधि भाग लें। इस अधिवेशन से पहले आर्य युवक परिषद का घोषणा पत्र एवं कार्यक्रम छपवा कर सभी के पास भेज दिया जाए ताकि सभी विचार करके ही अधिवेशन में पधारें। कार्यक्रम तैयार करने की जिम्मेदारी श्री जगवीर सिंह को और पत्र व्यवहार की जिम्मेदारी श्री वेद प्रकाश की लगाई गई। कार्यक्रम को अन्तिम रूप देने के लिए एक समिति बनाई गई जिसमें सर्व श्री स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश, स्वामी वेदानन्द, स्वामी शक्तिवेश, प्रेमपाल जी शास्त्री, योगेन्द्र नारायण, पटना, श्री हरिश्चन्द्र गुरु जी, महाराष्ट्र, आदि हैं। आर्य युवक परिषद के सदस्यों के लिए गणवेश निर्धारित की गई। विशेष समारोह आदि में सफेद कुर्ता, सफेद धोती या पाजामा और सिर पर केशरिया पगड़ी तथा व्यायाम व शारीरिक शिक्षा में केसरिया रंग का कच्छा व सफेद सैण्डो बुनियान। इस प्रकार से आर्य युवक परिषद को मजबूत व व्यापक बनाने के लिए हमें अपनी पूरी शक्ति लगानी है।

महिला संगठनः—

नारी शिक्षा एवं उत्थान का कार्य सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ने ही प्रारम्भ किया था। उनसे पहले नारी को पढ़ने एवं समाज में सम्मान का स्थान पाने का हक नहीं था। महर्षि दयानन्द ने इसके विरुद्ध अपनी प्रचण्ड एवं प्रखर वाणी से विद्रोह किया और नारी जाति को पुरुष के समान दर्जा दिलवाने की नींव रखी। वैसे भी एक महिला अगर अच्छे संस्कारों की होगी तो पूरा घर ही ठीक हो जाता है। अतः आर्य समाज के कार्यक्रम को महिलाओं में प्रचारित करने के लिए यह आवश्यक है कि एक महिला संगठन बनाया जाए जो महिलाओं को गाँव तथा शहर में संगठित करें। इस के लिए एक बहनों की समिति बनाई गई जिसका संयोजन श्रीमती शान्ति राठी एम० एल० ए० करेंगी। समिति में बहन कलावती आर्या, बहन निर्मल जी, प्रो० रूपरेखा एम० ए० तथा डा० सुशीला आर्या होंगी।

लेखक एवं पत्रकार संगठन :—

लेखकों एवं पत्रकारों का किसी भी विचारधारा को प्रसारित करने में महत्वपूर्ण योगदान होता है। अतः हमें आर्य विचारों तथा प्रगतिशील विचारों के लेखकों एवं पत्रकारों का सम्मान करना चाहिए तथा उनकी सेवाओं का लाभ उठाकर वेद प्रचार को बढ़ावा देना चाहिए। इसके लिए श्री ओमप्रकाश आर्य, किंग्जवे कैम्प दिल्ली, को संयोजक बनाया गया तथा एक लेखक एवं पत्रकार संगठन शीघ्र बनाने का निर्णय किया गया।

आर्य समाजों की स्थापना :—

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान अर्द्धशताब्दी सम्मेलन जीन्द व सोनीपत में स्वामी अग्निवेश जी ने यह घोषणा की थी कि एक साल के अन्दर-2 हरयाणा प्रान्त के प्रत्येक ग्राम में आर्य समाज की स्थापना की जाएगी। उसी के अनुरूप यह निर्णय लिया गया कि इस लक्ष्य को पूरा करने लिए जिलेवार कार्य बांट लेना चाहिए तथा 15 दिसम्बर तक प्रत्येक जिले में हर 10-15 गांवों के वेद प्रचार मण्डलों के कार्यकर्ताओं की यह जिम्मेदारी हो कि वे अपने मंडल के अन्य गांवों में आर्य समाज की इकाई की स्थापना करें। इससे कार्य विभाजन हो जाऐगा और जल्दी हो सकेगा। जिलेवार जिम्मेदारियां निम्न प्रकार से बांटी गई।

1. गुड़गावां :—स्वामी आदित्यवेश, कार्यालयः-जी० टी० रोड पलवल
2. महेन्द्रगढ़ः—स्वामी सुधानन्द, कार्यालयः-वैदिक आश्रम दिल्ली रोड रिवाड़ी।

(स्वामी सुधानन्द जी भिवानी जिले के बाढड़ा लोहारू, तोशाम तथा बवानी खेड़ा हल्कों में भी कार्य करेंगे)

4. रोहतक :—स्वामी इन्द्रवेश कार्यालयः—सुभाष मार्ग रोहतक।
4. सोनीपत :—स्वामी इन्द्रवेश, कार्यालय : आर्य समाज ऋषिनगर सोनीपत।

(इनके अतिरिक्त स्वामी इन्द्रवेश जी पानीपत हांसी, दादरी तहसीलों एवं भिवानी तथा मुंढाल क्षेत्रों का कार्य भी सम्भालेंगे)

5. जीन्द :—रामधारी शास्त्री :—कार्यालय : आर्य समाज मन्दिर जीन्द शहर।
6. कुरुक्षेत्र :—विशनसिंह एडवोकेट : कार्यालय : निकट कचहरी, कैथल।

अन्य जिलों का कार्य स्वामी इन्द्रवेश जी व्यक्ति तलाश करके सौंप देंगे)

निश्चय किया गया कि प्रत्येक जिला के कार्यालय में कम से कम एक हजार कार्यकर्ताओं के पते होने चाहिए। एक भजन मण्डली एवं एक व्यायाम शिक्षक की व्यवस्था हो तथा एक व्यक्ति पूरा समय देकर संयोजन का कार्य संभाले। यह सारा कार्य पूरा करने के लिए सभी ने संकल्प लिया और मंडल बनाकर मंडलों की सूचि 15 दिसम्बर तक देने का निर्णय लिया गया।

3. राजधर्म प्रकाशन

राजधर्म को साप्ताहिक पत्र के रूप में चण्डीगढ़ से निकलने का निर्णय किया गया और श्री जगवीर सिंह को स्वामी अग्निवेश जी के साथ सहयोग करने के लिए कार्य सौंपा गया। यह भी निश्चय किया गया कि शीघ्र ही चण्डीगढ़ में पत्र-कार्यालय बनाकर इसे प्रारम्भ किया जाए, ताकि सभी कार्यकर्ता इसके ग्राहक बनाने में जुट सकें।

4. दयानन्द साधु आश्रम

आर्य समाज में अनेक संस्थाऐं कार्य कर रही हैं जिसका कोई ऐसा केन्द्र नहीं है जो पूरे तन्त्र को नियन्त्रण या अनुशासन में चला सके। और नहीं कोई उपदेशक या कार्यकर्ताओं के लिए सुन्दर सा प्रशिक्षण केन्द्र ही है अतः यह निर्णय लिया गया कि एक महर्षि दयानन्द साधु आश्रम की स्थापना की जाऐ जहां पर सैंकड़ों सन्यासी, वानप्रस्थ एवं उपदेशक अपनी साधना करके वैदिक धर्म प्रचार में जुटें। उन सभी की व्यवस्था आश्रम की ओर से की जाए। एक

प्रकार का प्रेरणा स्थल यह आश्रम बने जिसमें योगाभ्यास कर्म काण्ड एवं अन्य आर्य सामाजिक प्रवृतियां पैदा की जा सकें। साधु आश्रम की योजना एवं निर्माण के लिए स्वामी इन्द्रवेश जी को संयोजक बनाया गया। आश्रम के लिए कम कम 4 एकड़ भूमि होना आवश्यक है। और यह आश्रम रोहतक में होना चाहिए क्योंकि धार्मिक, सामाजिक एवं राजनैतिक दृष्टि से यह स्थान उपयुक्त है और दिल्ली के भी निकट है तथा हरयाणा के बीच में स्थित है।

5. राष्ट्रीय संगठन एवं आर्य महा सम्मेलन

आर्य समाज में एक ऐसा तत्व पैदा हो गया है जो अपने निजी स्वार्थों के वशीभूत होकर इसके मंच को अपवित्र कर रहा है। पिछले बीस साल से इसी स्वार्थी एवं घटिया नेतृत्व की वजह से आर्य समाज का कार्य शिथिल सा पड़ता जा रहा है। इनका कार्य सिवाय समाज की संस्थाओं एवं सभाओं की सम्पत्ति को हड़पने के और दूसरा नहीं है। अतः जब आर्य समाज की युवा पीढ़ी ने स्वामी इन्द्रवेश और स्वामी अग्निवेश के सबल एवं तेजस्वी नेतृत्व में अंगड़ाई ली तो इन्हीं स्वार्थी तत्वों ने उभरती हुई युवा शक्ति का डट कर विरोध किया और घटिया स्तर के आरोप लगाने की कोशिश की। परन्तु देश भर की आर्य जनता इन लोगों को भली भांति पहचानती है। इस समय आर्य समाज में एक विकल्प की जबरदस्त आवश्यकता है। राजस्थान, बिहार, पंजाब, हरयाणा, दिल्ली, मध्य भारत, महाराष्ट्र पश्चिमी बंगाल एवं हैदराबाद आदि सभी प्रान्तों से प्रगतिशील आर्य जनता एवं युवा आर्य वीर अब आर्य समाज के उस राष्ट्रीय संगठन से जुड़ना चाहते हैं जो इन स्वार्थियों से आर्य समाज को बचा सके। ऐसी स्थिति में यह आवश्यक है कि एक राष्ट्रीय आर्य प्रतिनिधि सभा का गठन किया जाए जिसमें सभी प्रान्तीय सभाओं के प्रतिनिधि भाग लें और देश भर में आर्य समाज का एक सुदृढ़ एवं सशक्त संगठन बन सके। इसी उद्देश्य को लेकर यह निश्चय हुआ कि मार्च 1979 में लगभग डेढ़ साल बाद दिल्ली के रामलीला मैदान में एक राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन किया जाए जिसमें देश भर से लाखों आर्य नर-नारी एवं युवक भाग लें तथा इसी अवसर पर राष्ट्रीय संगठन का भी निर्माण कर दिया जाऐ। इस कार्य के लिए स्वामी अग्निवेश प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को संयोजक नियुक्त किया गया। इस के लिए सभी प्रान्तों के आर्य नेताओं एवं कार्यकर्ताओं से सम्पर्क किया जाएगा।

6. शराब बन्दी आन्दोलन :—

हरयाणा में शराब बन्दी कार्यक्रम को लेकर पिछले कई साल से आर्य समाज ने संघर्ष किए एवं जेलें काटी हैं। अतः वर्तमान जनता पार्टी के शराब बन्दी निर्णय का स्वागत करते हुये यह आवश्यक है कि शराब बन्दी के लिए जबरदस्त जनमत तैयार किया जाए। इसके लिए जहाँ लोगों से शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा करवाई जाऐ वहीं शराब के ठेकों के विरुद्ध ग्राम पंचायतों के प्रस्ताव भी पास करवाए जाए। शराब बन्दी के लिए यह नीति बनाई गई कि इस वर्ष सरकार देहात के सभी ठेकेबन्द कर दे और नए ठेके न खोले तथा अगले वर्ष शहर के ठेके बन्द हो जाऐं। शराब बन्दी समिति का संयोजक स्वामी आदित्यवेश विधायक को बनाया गया। तथा निर्णय हुआ कि मार्च 1978 तक हरयाणा में ब्लाक स्तर पर शराब बन्दी सम्मेलन अवश्यमेव किए जाऐं। अगर सरकार मार्च में देहात के ठेके बन्द नहीं करेगी तो निर्णय किया गया कि आर्य समाज की ओर से आन्दोलन किया जाएगा।

6. आर्य ग्राम निर्माण योजना:—

आपात काल के दौरान जिस समय स्वामी अग्निवेश जी अम्बाला जेल में नजरबन्द थे तो उन्होंने आर्य समाज के लिए आर्य ग्राम निर्माण की योजना की रूप रेखा लिखकर भेजी थी जो राजधर्म पत्रिका में प्रकाशित भी की गई थी। उस योजना के अनुसार आज हमें अपने सिद्धान्तों एवं विचारों को क्रियात्मक एवं व्यावहारिक रूप देना पड़ेगा। अगर हम वैदिक समाज वाद की विचार धारा को सबसे अधिक उपयोगी मानते हैं तो हम इसे किसी एक गांव में लागू करके तो देखें। इसी दृष्टि से निश्चय हुआ कि प्रत्येक जिले में एक-2 आर्य ग्राम का निर्माण किया जाऐ। जिसमें समानता हो, सहकारी खेती हो शराब न हो, यज्ञादि होते हों, सभी पुरूष, महिलाऐं पढ़े हुए हों, गाँव की बनी हुई चीजों का उपयोग होता हो तथा जाति के आधार पर कोई व्यक्ति छूत-अछूत न हो। सभी जिला संयोजकों ने यह भी जिम्मेदारी ली कि एक—2 गांव इन आदर्शों को पालन करने वाला अवश्य तैयार करने का प्रयास करेंगे। यह कार्य बड़ा कठिन है पर असम्भव नहीं है।

8. आचार संहिता

हम अपने दैनिक जीवन में देखते हैं कि कोई दिन चर्या यम नियम या कर्मकाण्ड हम नहीं कर पाते हैं। बहाना होता है कि हमारे पास समय कम है। परन्तु यह सब आलस्य के के कारण हो रहा है। बेकार की बातों में हम अपना समय बरबाद करते रहते हैं उसे तो हम सदुपयोग समझ लेते हैं। और एक समय ईश्वर का ध्यान करने या व्यायाम करने या समय पर भोजन एवं सोने-जागने आदि को नियमित

करने के लिए हमारे पास समय नहीं होता। यह अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है और अपने जीवन के साथ अन्याय है। इसी भावना को दृष्टिगत रखते हुये यह निश्चय हुआ कि एक आचार संहिता बनाई जाए जिसका सभी पालन करेंगे।

जागरण :—प्रातः चार बजे
शयनः–रात्रि दस से ग्यारह बजे तक

ध्यान :—एक घन्टे तक योगाभ्यास

व्यायाम :–चाहे दस दण्ड या पांच आसन ही करें पर अनिवार्य है।

स्वाध्याय :–उपनिषद् या आर्ष आध्यात्मिक ग्रन्थों का आधा घण्टे तक स्वाध्याय आवश्यक होगा।

भोजन : - दोपहर एक बजे से पहले और सायं साढे आठ बजे से पहले-2 भोजन कर सकते है। बाद में नहीं। दिन में अधिक से अधिक चार बार मुंह झूठा किया जा सकता है।

जो नियम का उल्लंघन करेगा उसे अपनी दैनिक डायरी में वह लिखना होगा और प्रायश्चित करना पड़ेगा।

इस तीन दिवसीय गोष्ठी के निर्णयों का संक्षिप्त विवरण ऊपर निर्दिष्ट किया गया है। इन्हें पूरा करने के लिए हमें दिन रात एक करके जुटना पड़ेगा। इस कार्य को करने से हमारा मनोबल बढेगा और आनन्द आएगा। अतः सभी आर्य बन्धुओं से निवेदन है कि अपना तन-मन-धन से समर्थन देकर इस महान प्रोग्राम को सफल करें। ताकि हम सभी महर्षि दयानन्द सरस्वती के सपनों को साकार कर एक आर्य राष्ट्र की स्थापना कर सकें।

बेरी के मेले पर विशाल शराब बन्दी सम्मेलन

रोहतक जिले के बेरी गांव में गत 18 अक्टूबर 77 को देवी के मेले के अवसर पर विशाल शराबबन्दी सम्मेलन का आयोजन आर्य नेता स्वामी इन्द्रवेश की अध्यक्षता में हुआ। मेले में देवी पूजा के लिए देहात से आये हुये हजारों लोगों ने सम्मेलन में भाग लिया और बैठकर आर्य समाज के उपदेशकों एवं नेताओं के विचार सुने। सम्मेलन का आयोजन श्री शांताकुमार आर्य ने किया। इस अवसर पर जनता को आह्वान करते हुये स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ने कहा कि हरयाणा की धरती से शराब का कलंक मिटाने के लिए हमें कटिबन्द्ध होना पड़ेगा। स्वामी जी ने एक प्रस्ताव के द्वारा जनता की राय ली कि शराबबन्दी के लिए अगर सत्याग्रह करके जेल जाना पड़े तो वे तैयार हैं या नहीं। हजारों हाथ एक दम इस प्रस्ताव के समर्थन में उठ गये और तालियों की गड़गड़ाहट के बीच जहां यह प्रस्ताव पास हुआ वहीं लोगों ने शराब छोड़ने की भी प्रतिज्ञा की। इस सम्मेलन में अन्य वक्ताओं में स्वामी चन्द्रवेश आचार्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ, श्री जगवीर सिंह, श्री वीरेन्द्रकुमार एम० ए०, डा० धर्मवीर एवं प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री खेमसिंह जी की मण्डली ने मुख्य रूप से भाग लिया। रात को आठ बजे से 1 बजे तक कार्यक्रम चलता रहा और जनता को मन्त्रमुग्ध कर दिया। लोग देवी पूजा को भूल वेद प्रचार में मग्न हो गये।

वेद प्रचार मण्डल रोहतक नगर की स्थापना !

रोहतक नगर के प्रमुख आर्य समाजी कार्यकर्त्ताओं की एक बैठक सुभाष मार्ग स्थित आर्य प्रतिनिधि पंजाब के कार्यालय में स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में मण्डल की स्थापना तथा अधिकारियों का चुनाव किया गया। बैंठक में नगर के प्रत्येक मोहल्ले में आर्य समाज बनाने का निश्चय हुआ। मण्डल के निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान :—सर्वश्री म० मौजीराम काठमण्डी, उपप्रधान—बहिन लक्ष्मी देवी रेलवे रोड़, मित्रसेन आर्य माडल टाऊन, प्रेमसिंह सैनीपुरा, मन्त्री–शान्त कुमार आर्य शिवाजी कालोनी, प्रचार मन्त्री—राम स्वरुप "निडर", मनफूल सिंह ओमप्रकाश, कोषध्यक्ष—म० हरद्वारी लाल आर्य नगर।

मण्डल का प्रथम आर्य परिवार सम्मेलन 6 नवम्बर को होगा।

एक कफन की कहानी

(रचियता प० प्रकाशचन्द्र जी कविरत्न, अजमेर)

गुरूदेव ऋषि दयानन्द आदित्य ब्रह्मचारी,
बैठे थे गंगा तट पर था दृश्य मनोहरी।
इतने में एक नारी दुर्दैव की सतायी,
प्रिय पुत्र का लिये शव, रोती बिलखती आई।
था मास नहीं तन पर, बस सूखी हड्डियां थीं,
आंखें धँसी हुई थीं, गालों पर झुरियां थीं।
मुरझाया हुआ मुख था, बिखरे थे केश सारे,
थे पाँव लड़खड़ाते, मग में क्षुधा के मारे।
ढकने को लाज तन की, कपड़ा नहीं था पूरा,
बेटे की लाश पर भी, था हा! कफन अधूरा।
थी एक ही तो उस पर, जर्जर मलीन साड़ी,
हाथों से वही उसने, थी बीच में से फाड़ी।
साड़ी का एक टुकड़ा, उसने पहन लिया था,
और दूसरे से अपने, सुत का कफन दिया था।
आधा कफन भी उसने, सुत लाश से उतारा,
फिर वे कफन बहाया, गंगा में पुत्र प्यारा।
अति करूणा पूर्ण ऋषि ने, जब दृश्य यह निहारा,
आंखों से लगी बहने आँसू की प्रबल धारा।
चाचा के मरण पर भी, आँसू न एक निकाला,
भगिनी के निधन पर भी, आँसू न एक निकाला।
देखी, दुःखी, दरिद्रा, जब एक देश नारी,
रोये, वो विकल होकर, परमार्थ के पुजारी।
सोचा, लगे थे जिनके ठाट वस्त्र अन्न धन के,
हा! शोक, आज उनको लाले पड़े कफन के।
बन्धन में ग्रस्त करते, क्रन्दन हैं देश के जन,
मैं कर रहा हूं बैठा, एकान्त मोक्ष-चिन्तन।
मैं मोक्ष का अकेला आनन्द न चाहूँगा,
कल्याण पथ करोड़ों मनुष्यों को बताऊंगा।
व्रत ब्रह्मचार्य सेवा की प्रिय पुनीत धारा,
जग संताप मिटाने को जीवन प्रकाश वारा।

आत्मदाह

—नीना मल्होत्रा—

आओ मित्र, हम किसी
वातानुकूल कमरे में बैठकर
कुछ अपने देश के बारे में,
कुछ विदेश के बारे में,
कुछ राजनीति
या समाज के बारे में,
या फिर भविष्य के बारे में,
या फिर मंगल ग्रह के बारे में
बढ़ती हुई जनसंख्या के बारे में
दहेज की लपेट में आने वाली
युवतियों के बारे में,
औरतों की दुर्दशा के बारे में,
(या फिर जिस के बारे में तुम कहो)
विचार कर लें।
कुछ विचार करने से पूर्व
जरा ध्यान से सुन लो
केवल आदर्श भरी बातों से
कुछ न होगा।
इसलिए केवल सोचना नहीं,
यह वक्त तो करने का है,
पूछते हो—
हमें क्या करना होगा ?
जाने दो, सब बाद में
देखा जाएगा।
समय बर्बाद न करो
पहले सामने पड़ी काफी पी लें।
कहीं ऐसा न हो कि
हमारी घुटन भरी बातों में
यह काफी घुट-घुट कर
आत्मदाह कर ले ?

राजधर्म परिवार से अपील।

बन्धुओ। आपका प्रिय पत्र राजधर्म दीपावली के पुण्यपर्व ऋषि निर्वाण दिवस के अवसर पर पूरी सज-धज के साथ निकलने जा रहा है। बीच का समय राजनैतिक उथल-पुथल एंव आपातकाल स्थिति का होने की वजह से राजधर्म आपकी सेवा नहीं कर पाया। इस के लिए हमें खेद है। परन्तु इस बार विशेष बात यह है कि राजधर्म साप्ताहिक रूप में आपको आनन्दित करेगा और सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एंव राजनैतिक विषयों की गम्भीर चर्चा से परिपूर्ण होगा। सभी से यह प्रार्थना है कि जहां आप स्वयं ग्राहक बनें वहां कम से कम पांच सदस्यों को और राजधर्म के ग्राहक बनाकर अनुग्रहीत करें। इसका वार्षिक शुल्क मात्र 15 रुपये है।

पंजीयन क्रमांक

एन० डब्लू/सी० एन० 99

राजधर्म

10 नवम्बर 1977

आप अपने गांव की शहर की दीवारों पर सुन्दर अक्षरों में निम्नलिखित नारे स्थान स्थान पर लिखवाएं ताकि जनचेतना का अभियान तेज हो सके :—

1. आर्यराष्ट्र बनायेंगे—पूंजीवाद मिटायेंगे — आर्यसमाज
2. भ्रष्टाचार मिटायेंगे नया समाज बनायेंगे — आर्यसमाज
3. धन और धरती बंट के रहेगी — आर्य युवक परिषद्
4. जातिवाद मिटाना है—धरती को स्वर्ग बनाना है — आर्यसमाज
5. वैचारिक क्रान्ति के लिये सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें — आर्यसमाज
6 शराब के ठेके बन्द करो - रोटी का प्रबन्ध करो — आर्य युवक परिषद्

प्रतिदिन कम से कम एक घण्टा समय समाज परिवर्तन के लिये देने का जो युवक संकल्प लें वे आज अपने और अपने साथियों के नाम, पते, रुचि प्रवृति का विवरण देते हुए संपर्क करें । :—

अग्निवेश
आर्यसमाज सैक्टर 16 चण्डीगढ़

राजधर्म प्रकाशन के लिए अखंड [illegible] स्वामी अग्निवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित

साप्ताहिक

राजधर्म

वर्ष ९ अंक २—४ | संपादक — स्वामी अग्निवेश | मूल्य ५० पैसे वार्षिक १५ रु०

आर्य ग्राम की तरफ बीस कदम

इनकी बन्दूकें छीन लो

गांधीवादी अर्थशास्त्री : शुमाकर

जो गाँव से भाग कर शहर में गये

पंचायत के परमेश्वर ?

एक रिक्शे वाले की कहानी

मराठवाड़ा में आर्य युवा शक्ति पुनः संगठित

अग्निवेश

1973 से बाद मेरा मराठवाड़ा जाना संभव नहीं हुआ। कुछ हम प्रतिनिधि सभा के कार्यों में व्यस्त हो गये—फिर जयप्रकाश जी का आन्दोलन और उसके साथ आपातस्थिति। इस सारे दौर में मराठवाड़ा के क्रान्तिकारी आर्य युवकों से संबन्ध शिथिल हो गया। अम्बाला जेल से मैंने वहां के कुछ साथियों से पत्राचार आरम्भ किया और मुझे यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि इतने लम्बे अन्तराल के बावजूद हमारे युवा मित्रों के हृदय में समाज परिवर्तन की आग उसी तरह सुलग रही है।

अभी 6 नवम्बर को मराठवाड़ा विभागीय आर्य कार्यकर्ताओं की एक महत्वपूर्ण बैठक आर्य समाज लातूर में आयोजित हुई। इसमें अन्य युवकों के अतिरिक्त श्री सुभाष लिम्बाकर, श्री प्रदीप देशमुख, श्री सम्भाजी पवार, बहन भारती जाधव आदि एकत्र हुए थे। इन सभी युवकों ने आर्य युवक परिषद् के माध्यम से आर्य ग्राम निर्माण आन्दोलन में सक्रिय भाग लेने तथा वैदिक समाजवाद की विचारधारा के प्रचार को तेज करने का कार्यक्रम बनाया है।

यह जानकर बड़ी खुशी हुई कि भारती बहन अब लातूर के शाहू महाविद्यालय में वनस्पति शास्त्र की प्राध्यापिका नियुक्त हो गई हैं—साथ ही पी० एच० डी० के लिए अपना शोध प्रबन्ध भी तैयार कर रही हैं। भारती जी के दिल में आर्यसमाज के प्रति बड़ी लगन है—कुछ साल पहले उन्होंने मराठवाड़ा में आर्य युवती परिषद् का भी गठन किया था। आशा है युवक परिषद् के साथ अब युवती परिषद् भी सक्रिय होगी।

इसके साथ-साथ यह भी विशेष समाचार प्राप्त हुआ है कि मराठी के ओजस्वी वक्ता श्री प्रदीप देशमुख जी महाराष्ट्र विधान सभा के आगामी चुनावों में जनता पार्टी के प्रत्याशी हैं। प्रदीप भाई पूना लॉ कालेज के अंतिम वर्ष में हैं और मराठवाड़ा के गिने हुए छात्र नेताओं में से हैं। 1972 में जब लातूर में 500 युवकों का दस दिन का प्रशिक्षण शिविर लगा था उस अवसर पर मेरा उनसे परिचय हुआ था। इस शिविर में श्रद्धेय स्वामी भीष्म जी और और स्वामी रुद्रवेश जी भी पधारे थे। श्री हरिश्चन्द्र गुरुजी बड़े लगन के साथ युवकों को आर्यत्व की ओर प्रेरित करते हैं। एक उसी तरह का शिविर पुनः आयोजित किया जा सके तो बड़ा प्रभावशाली रहेगा। भाई सुभाष जी और भाई संभाजी युवा संगठन के प्रमुख स्तम्भ हैं अपने लगन और निष्ठा के नमूने हैं। श्री सुभाष लिम्बाकर जी धाराशिव जिला छात्र युवा संघर्ष वाहिनी के संयोजक और जयप्रकाश नारायण अमृत महोत्सव के सचिव भी हैं। लातूर के प्रा० वसन्तरावजी जगताप तथा श्री ओम्प्रकाश जी आर्य बहुत सुलझे हुए कर्मठ कार्य कर्ता हैं। एक बार इन युवा साथियों ने मिलकर मराठी राजधर्म प्रकाशित करने की योजना बनाई थी —अब उसके क्रियान्वित करने का सुन्दर मौका है। श्री जयप्रकाश माने इस क्षेत्र के सुलझे हुए युवा पत्रकार हैं। "वैदिक समाजवाद" के मराठी रूपान्तर की भी योजना भाई जयप्रकाश के हाथों में है।

राजधर्म परिवार को मैं मराठवाड़ा के आर्य युवकों की गतिविधियों से अवगत करता रहूंगा। अन्य अंचलों में भी जो ठोस रचनात्मक कार्य चल रहे हैं उनकी सूचना आपलोगों को मिलती रहेगी। अब तो सारे देश के युवकों को नया समाज बनाने की दिशा में प्राणपण से जुट जाना चाहिए और अपने तप त्याग एवं बलिदान से मठाधीशों को झंझोड़ देना चाहिए।

सम्पादकीय

आर्य ग्राम की तरफ बीस कदम

भारत का नया समाज गांवों में खड़ा होगा—हल चलाते किसानों के, कुदाल चलाते मजदूरों के, लकड़ी छीलते बढ़ई और हथौड़ा चलाते लौहार के माथे पर पसीने की बूंदों में नये भारत के दर्शन होंगे। देश का कमेरा ही असली मायने में आर्य है और इन आर्यों को दस्युओं (लुटेरों) के चंगुल से बचाकर उन्हें सुन्दर स्वस्थ जीवन प्रदान करना ही आर्यसमाज का आन्दोलन है।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के छठे सम्मुलास में "किसान आदि परिश्रमशील व्यक्तियों को राजाओं का राजा" बताया है। परन्तु ३० साल की आजादी के बाद भी ये राजाओं के राजा हमारे देश के पांच लाख से अधिक गांवों के अंधेरे में, वहां की उड़ती हुई धूल और सड़ते हुए गोबर, भिनभिनाती मक्खियों और भयंकर गरीबी की मार में दबे पिस रहे हैं—सिसक रहे हैं। इस हालत में परिवर्तन लाने का बीड़ा हमने उठाया है। गुलाम गांवों को आजादी दिलाने की चुनौती युवा पीढ़ी ने स्वीकारी है—ग्राम स्वराज का सशक्त संदेश गांवों के हर कोने में, हर झोंपड़ी में पहुंचा कर एक नया सूरज उगाने का फैसला इस देश के युवकों ने किया है। इस ग्राम स्वराज की दिशा में जो नितान्त आवश्यक बीस कदम हैं उनका नीचे वर्णन है—इनमें कहीं कोई संशोधन जरूरी हों तो सुझाव भेजिए, कहीं कोई ठोस काम हो रहा हो तो सूचना भेजिए और यदि अभी तक कुछ नहीं किया पर आगे कुछ करने की, कुछ बदलने की उमंग उठ रही हो तो अपना पावन सकल्प भेजिए—

१. हर एक गांव में आर्यसमाज की स्थापना होनी चाहिए। अधिक से अधिक व्यक्ति इसके सदस्य बनने चाहियें पर गांव के हरिजन तथा अन्य निर्धन तबकों से ज्यादा से ज्यादा सदस्य लिये जाएं। गांव की महिलाओं को भी इसका सदस्य बनाया जाय। हो सके तो वे एक ही की समाज के सदस्य हों पर यदि ग्रामीण परम्परा स्त्री-पुरुषों एक सम्मिलित समाज बनाने में हिचकिचाहट पैदा करे तो उसी जगह एक महिला आर्य समाज बना ली जाय। पृथक होते हुए भी विशेष पर्वों आदि पर इन दोनों के सत्संग सम्मिलित हो सकें ऐसी व्यवस्था की जाय।

२. गांव की आर्यसमाज के लिए सदस्यता शुल्क अधिक न रखा जाय पर दान की प्रवृत्ति पर जोर दिया जाय। दान भी रुपये पैसों में अधिक न लेकर सामान के रूप में हो तो अधिक उपयुक्त होगा—जैसे फसल के समय अनाज, भवन के लिए ईंट, लकड़ी, श्रमदान, हवन के लिए घी आदि।

३. सामान्य रूप से गांव की आर्यसमाज पूर्णिमा और अमावस्या पर सम्मिलित हो। विशेष पर्वों पर भी प्रतिनिधि सभा से कोई विशेष आदेश आने पर उसके अनुसार विशेष बैठक हो।

लेकिन आर्य समाज गांव की सामाजिक चेतना का ऐसा केन्द्र हो कि वहां प्रतिदिन की गतिविधियां भी चलती रहें।

४. सबसे आवश्यक वहां एक पुस्तकालय होना चाहिये। इसमें वैदिक धर्म संबन्धी साहित्य के अलावा अन्य प्रगतिशील साहित्यिक पत्र-पत्रिकायें होनी चाहिएं। रोज दोपहर तीन से छः बजे तक खुले। इसमें सस्ते बाजारू साहित्य और जासूसी उपन्यासों का प्रवेश निषिद्ध हो। एक रजिस्टर हो जिस पर लाभ उठाने वाले हस्ताक्षर करें।

५. समाज के प्रांगण में एक ओर अखाड़ा और व्यायामशाला हो ताकि प्रतिदिन प्रात: एवं सांय युवक वहां आकर कसरत करें। एक मलखम्भ, पैरललबार, आदमकद शीशा डम्बल आदि भी हों।

६. प्रत्येक रविवार को समाज भवन में युवकों की वाद-विवाद सभा होनी चाहिए जिसमें गांव के लड़के आपस में किसी को संयोजक आदि बनाकर समाजोपयोगी विषयों पर वादविवाद करें। इसके पीछे मुख्य उद्देश्य गांव के लड़कों में भाषण कला का विकास, सामाजिकता बढ़ाना और दब्बूपना या झेंपू प्रवृति को हटाना हो ताकि

कभी भी ये युवक या युवतियां अपने को किसी शहरी युवक युवतियों के सामने हीन न समझें।

७. समाज भवन के मुख्य कक्ष सभागार में महापुरुषों के चित्रों के साथ शराब, मांस, दहेज, शोषण, जातिवाद, मूर्ति पूजा, भाग्यवाद आदि कुरीतियों के विरुद्ध भी चित्र हों।

८. पाक्षिक सत्संगों में और समय समय पर विशेष अभियान द्वारा आर्य समाज गावों में प्रौढ़ शिक्षा, स्वच्छता, प्राकृतिक चिकित्सा, नारी जागृति, पिछड़े वर्ग के संगठन, गोबर गैस का सदुपयोग, आदि का भी प्रचार करे।

९. गांव की आर्थिक आत्म-निर्भरता का लक्ष्य सामने रखकर आर्य समाज के अधिकारी एवं सदस्य अपने दैनिक जीवन की अधिक से अधिक आवश्यकतायें गांव में ही बनी चीजों से करें — जैसे गाँव का बना कपड़ा, गांव में बने जूते, टोकरी आदि। इसको अपने जीवन में उतारते हुए अन्य ग्रामवासियों को भी इसके लिए प्रेरित करें। और स्वदेशी को भावना का अधिक से अधिक प्रचार करें। शहरों के मिल कारखानों की बनी हुई चीजों का जहां तक हो सके—बहिष्कार किया जाय।

१०. इस दशा में आर्यसमाज गांव में खड्डियां कर्घा लगवाने, छोटे मोटे लघु उद्योगों की व्यवस्था करने तथा सहकारी क्रय-विक्रय केन्द्र खोलने में उत्साह दिखायें।

११. आगे चलकर आर्य समाज गांव में सहकारी कृषि का भी परीक्षण आरम्भ करे। भूमिसीमा कानून को, बंधक मजदूर मुक्ति को, साहूकारी ब्याज मुक्ति को और इस तरह की अनेक ग्राम सुधार योजनायें जो सरकार की ओर से घोषित होती हैं, उन्हें लागू कराने के लिए सक्रिय भूमिका निभायें।

१२. आर्य समाज का यह प्रमुख दायित्व हो कि वह गांव में बहुमत को शराब आदि नशीली चीजों के विरुद्ध जागृत एवं संगठित कर उस गांव से वैध अवैध शराब को जड़ से समाप्त कर दें।

१३. गांव वालों की आपसी मुकदमेबाजी प्रवृति को समाप्त करने की दिशा में भी आर्य समाज सक्रिय हो। जहां तक हो सके ऐसे झगड़े आदि पंचायती ढंग से सुलझ जायं या किसी आर्य समाजी वकील या न्यायाधीश की निःशुल्क सेवायें प्राप्त की जांय।

१४. सरकार से मिलने वाली सहायता आदि का लाभ उठाकर आर्य समाज गांवों में साफ सुथरे सार्वजनिक शौचालय की (विशेषकर महिला वर्ग की सुविधा के लिये) व्यवस्था करे। यह कार्य जितना अधिक आवश्यक एवं उपयोगी है उतना ही कठिन भी है। लेकिन कठिन कार्य को तो हाथ में लेकर कामयाव बनाना आर्य समाज की विशेष पहचान है।

१५. गांव में सरकारी तन्त्र का भ्रष्टाचार भी बड़ा व्यापक होता है। आर्य समाज इसके विरुद्ध जनमत संगठित कर समय समय पर मोर्चा ले ताकि जनता के ये सेवक जनता के मालिक न बने रहें। इसी तरह गांव में तथा-कथित ऊंची जातिवाले अपनी सम्पन्नता और कुछ राजनैतिक प्रभाव के बल के कारण गांव के निर्धन पिछड़े लोगों पर अत्याचार करते हैं— सदियों पुराना जातिवाद का कोढ़ भी इसमें सहायक होता है। ऐसी स्थिति में आर्य समाज को निर्बल वर्ग की डटकर हिमायत करनी चाहिये और उनमें स्वाभिमान की भावना भरनी चाहिये।

१६. गांवों में गंदगी का साम्राज्य होता है। मैले कुचैले कपड़े, गंदी नालियां जहाँ तहाँ टट्टी करते या बीड़ी पीते बच्चे पशुओं और मनुष्यों का एक ही कमरे में रहना, घर में धुआं निकलने और स्वच्छ हवा धूप आदि आने की व्यवस्था का न होना, कुआं तालाब आदि सार्वजनिक जलाशयों की अस्वच्छता आदि बातें ऐसी हैं जो सभ्य जीवन के विपरीत होने के साथ बीमारियों का भी कारण बनती हैं। इसलिये आर्य समाज इस दिशा में ग्राम स्वच्छता का अभियान चलाये।

१७. इतने सारे काम एक ही संगठन के द्वारा चल पाने कठिन होंगे। इस लिए आर्यसमाज के व्यापक सैद्धाँतिक ढांचे में आर्य युवक परिषद्, आर्य महिला समाज आर्य सहकारी संघ आदि उपसंगठन चलाये जायें। इनके हरेक के दान खर्चादि का हिसाब किताब बहुत स्पष्ट हो। और वार्षिक विवरण अवश्य तैयार हो। किसी जानकार व्यक्ति से हिसाब की जांच भी होती रहनी चाहिये।

१८. इस सब प्रचार एवं संगठन कार्य के लिए प्रचार माध्यमों में भी नवीनता लाई जाए।

पाक्षिक हवन, भजन प्रवचन तो होंगे ही, साल में तीन दिन का वार्षिक महोत्सव भी जरूर हो। साल में दो बार सार्वजनिक ढंग से वाद-विवाद सभा का आयोजन हो।

प्रचार के लिए नाटक मंच का सदुपयोग जरूरी है। शोषण एवं सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध मनोरंजक किन्तु स्वस्थ नाटक खेले जायें। वाद-विवाद नाटक आदि में पुरस्कार का भी प्रबन्ध हो। कबड्डी, दंगल खेलकूद के टुर्नामेंट भी आयोजित हों। प्रोजेक्टर मैजिक लालटेन आदि द्वारा भी प्रचार प्रभावशाली बनाया जाये। दीवारों पर शिक्षाप्रद नारे लिखे हों। स्वस्थ लोक गीतों का प्रचार हो। वार्षिकोत्सव पर गांव के पांच सबसे अधिक वृद्ध वृद्धाओं का सार्वजनिक सम्मान कर श्राद्ध किया जाय। वार्षिक यज्ञ में बीड़ी सिगरेट हुक्का से लेकर शराब आदि बुराइयां छोड़ने की प्रतिज्ञा की जाय।

१९. उपर्युक्त सारे काम काज गाँवों में किस हद तक सफल हो रहे हैं—किस हद तक गाँव का नक्शा बदल रहा है, यह जानने के लिए उस गाँव के आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से सबसे अधिक पिछड़े ५ परिवारों को माप-दण्ड बनाया जाय। काम शुरू होने से पहले उनकी हालत क्या है, काम शुरू होने के बाद हर महीने उनके जीवन में क्या परिवर्तन आ रहे हैं, इसका रिकार्ड रखा जाय।

२०. और अन्त में यह सब काम करते हुए जब भी फुरसत मिले तो गांव की चौपाल में बैठकर, खेत की मेंड़ पर या फिर किसी पेड़ की छांव में बैठकर यह सामूहिक चिन्तन किया जाय कि क्या वजह है कि अन्नदाता किसान का बेटा भूखा है, कपड़ा बनाने वाले की माँ बहनें अधनंगी हैं और मकान बनाने वालों के माँ बाप खुले आसमान के नीचे ठिठुर रहे हैं? ऐसा क्यों है? क्या ईश्वर का नियम है? या समाज-रचना का दोष है? क्या दुनियां के किसी हिस्से में इस दिशा में कुछ बदलाव आया है? और यदि आया है तो हम क्यों नहीं ला सकते?

—अग्निवेश

वेदवाणी

सोम का चमत्कार

पाता वृत्रहा सुतमा घा गमन्तारे अस्मत्। नि यमते शतमूति:॥ सा० ३/१/१६५९।

यह (सुत पाता)=सोम का पान करने वाला इन्द्र (वृत्रहा) =कामादि ज्ञान के आवरण को सचमुच हनन करने वाला होता है। संयमी पुरुष की ज्ञानाग्नि इस प्रकार दीप्त होती है कि वह काम रूप वायु से बुझ नहीं सकती। वास्तविकता तो यह है कि काम उसका सहायक हो जाता है अर्थात् उसकी ज्ञानप्राप्ति की कामना और अधिक बढ़ जाती है। जब हम इस प्रकार सोम का पान कर वासना को विनष्ट करते हैं तो उस समय (घा)=निश्चय से वह प्रभु का सान्निध्य प्राप्त होता है।

यह (अति:)=वासनाओं से अपनी रक्षा करने वाला (शतम्)=सौ के सौ वर्ष (आनियमते) सर्वथा अपने जीवन में संयमी बनता है। सौ वर्षों तक वासनाओं को काबू में रखता है। संसार में यही तो बुद्धिमत्ता पूर्वक चलने का मार्ग है। इसी से इसका नाम 'मेधातिथि' है। यह मेधातिथि वासनाओं का शिकार न होने से अन्त तक शक्तिशाली बना रहता है—सो 'आंगिरस' है। संक्षेप में 'मेधातिथि' आंगिरस का जीवन यह है कि :—

(१) वह सोम का पान करता है—शक्ति की रक्षा करता है।

(२) वासनाओं का विनाश करता है।

(३) प्रभु से यह दूर नहीं जाता।

(४) अपनी रक्षा करता है, सौ के सौ वर्ष तक संयमी जीवन बिताता है।

भावार्थ :—हम संयमी जीवन बितायें, यही तो प्रभु सान्निध्य का सर्वोत्तम साधन है।

सामयिकी

जगवीर सिंह

नशाबन्दी

आजकल प्रतिदिन समाचार पत्रों में नशाबन्दी के ऊपर काफी चर्चा हो रही है। जब से प्रधान मन्त्री श्री मुरार जी देसाई ने देश में नशाबन्दी लागू करने का निश्चय किया है तभी से शराबियों की नीन्द हराम हो गई है। परन्तु शराबी तो चिन्तित हों यह बात तो समझ में आ जाती है पर जो लोग शराब बन्दी के समर्थक भी हैं और यह चाहते हैं कि देश में पूर्ण नशाबन्दी लागू हो वे भी जब इस सवाल पर नुक्ताचीनी करते हैं तो आश्चर्य होता है। कई बड़े पक्के गान्धीवादी भी कह रहे हैं कि प्रधान मन्त्री को शराबबन्दी के ऊपर इतना जोर नहीं देना चाहिए क्योंकि कानून से शराब बन्द नहीं हो सकती। वे कहते है कि अगर वैध शराब बन्द कर दी गमी तो अवैध शराब निकाल कर लोग पीने लगेंगे। परन्तु उनका यह तर्क बिल्कुल निराधार है। अगर उन्हीं के मत के अनुसार कोई भी कहने लगे कि चोरी, भ्रष्टाचार, व्यभिचार, मिलावट, डाके कत्ल आदि जुर्मों को कानून के द्वारा बन्द नहीं करना चाहिए क्योंकि अगर ऐसा किया गया तो लोग फिर अवैध रूप से यह अपराध करेंगे। यह बात बुद्धि से परे की है। अत: अगर देश में कानून की व्यवस्था है और जनता को कानून के बराबर हर प्रकार की सुरक्षा एवं न्याय हम दे सकते हैं तथा हर गलत अपराध को रोक सकते हैं तो शराब जैसे महा पाप एवं सामाजिक अन्याय को रोकने में तनिक भी संकोच नहीं करना चाहिए। वैसे भी अगर आंकड़ों के आधार पर देखा जाये तो देश की कुल जनसंख्या का बहुत थोड़ा हिस्सा ही शराब पीता है क्योंकि न तो औरतें, छोटी उम्र के बच्चे, बड़ी उम्र के बूढ़े आदि शराब पीते हैं और प्रोढ़ों में भी कुछ प्रतिशत ही पीते हैं। फिर इतने लोगों के मात्र नाराजगी के भय से अगर कोई कल्याणकारी कार्य सरकार नहीं कर सकेगी तो फिर और क्या आशा की जा सकती है। अत: जो लोग केवल कागजी घोड़े दौड़ा कर सरकार के इस पुनीत कार्य में रोड़ा अटकाना चाहते हैं उनके कोरे थोथे तर्क है और शराब बन्दी के मार्ग में कोई बाधा नहीं है। सारे देश की गरीब जनता को बहुत बड़ी राहत इस कार्य से मिलेगी। यह आवश्यक है कि शराब विरोधी प्रचार भी रेडियो आदि से सरकार करे तथा समाजसेवी संस्थाएं भी करें ताकि लोग इससे पूरा परहेज कर लेवें।

गलत नियुक्ति

हाल ही में महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के कुलपति पद पर श्री हरद्वारी लाल को नियुक्त किया गया है, जिस पर शिक्षा जगत में बेहद रोष है। श्री हरद्वारी लाल जी के लिए तो यह बिल्ली के भागों छिक्का टूट जाने वाली बात हो गयी क्योंकि उनके खिलाफ श्री उदय सिंह दलाल ने चुनाव याचिका दायर कर रखी थी जिसमें श्री हरद्वारी लाल जी के हार जाने की पूरी पूरी सम्भावना थी। अत: अहसान का अहसान जमा लिया और अपना काम निकाल लिया। ऐसा सौभाग्य तो विरले ही व्यक्ति को मिलता है। परन्तु जो भी हुआ है यह सब गलत हुआ है। समझ में नहीं आता कि एक इस प्रकार के आदमी को इतना सम्मानित एवं लाभ का पद देना चौ० देवी लाल ने कैसे उचित समझ लिया जिसे बिना पेन्दी का लोटा कहा जा सकता है। हरयाणा की राजनीति में जितना दल-बदलू एवं अवसरवादी व्यक्ति श्री हरद्वारी लाल को समझा जाता है इतना और किसी को नहीं। जिस समय हरयाणे के मुख्य मन्त्री चौ० बंसी लाल थे उस समय श्री हरद्वारी लाल जी दुर्भाग्य से विधान सभा में विपक्ष के नेता बन गये थे। परन्तु बंसी लाल जी ने दो टुकड़े फैंककर इन्हें अपनी कठपुतली बना लिया था। पर जब किसी बात पर बंसी लाल जी से अनबन हुई तो उसके खिलाफ बकना शुरु कर दिया। इस बार जब विधान सभा के चुनाव हुये तो इन श्रीमान जी के रोजाना ब्यान आते थे कि अगर हरयाणा का मुख्य मन्त्री श्री देवी लाल जी को बनाया गया तो मैं

सत्याग्रह कर दूंगा। परन्तु जब चौ० देवी लाल जी मुख्य मन्त्री बन गये और उन्होंने श्रीनान जी के आगे हरयाणा बाढ़ समिति की चेयरमेनशिप की थी कि जबान चुप और चौ० देवी लाल के गुण गाने लगा। परन्तु बीच में एक ऐसा समय आया जब जनता पार्टी के ही कई वरिष्ठ नेताओं ने चौ० देवी लाल जी पर दबाव डाला और कहा कि इस प्रकार के स्वार्थी व्यक्तियों को महत्व क्यों दिया जा रहा है। इस से भी बढ़कर अभी हाल में हरयाणा विधान सभा का जो अधिवेशन हुआ उस में तो इसकी हरकतों से स्वयं चौ० देवी लाल नाराज थे और मार्शल तक को बुलाने की बात कर रहे थे। परन्तु इतना सब कुछ होने पर भी यह बात समझ में नहीं आती कि चौ० देवी लाल जी ने यह क्या समझ कर नियुक्ति की है। वैसे भी महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय में तो कम से कम इस प्रकार के व्यक्ति की नियुक्ति गलत है क्योंकि जो आदमी न महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों में आस्था रखता हो न जानता ही हो तो यह विडम्बना नहीं तो और क्या है। इस नियुक्ति से जहां समस्त शिक्षा के क्षेत्र मे बेहद असन्तोष है वहां हरयाणा के राजनैतिक क्षेत्र में भी यह चर्चा है कि यह कार्य अत्यन्त ही ठेस पहुंचाने वाला है। अतः इस नियुक्ति पर पुर्नविचार होना चाहिए ताकि सब की भावनाओं का आदर हो सके।

आर्य ग्राम निर्माण

आर्य समाज का अतीत बड़ा स्वर्णिम है। समय २ पर आर्य समाज ने देश एवं जाति के लिए ऐतिहासिक बलिदान किए हैं। अनेक आन्दोलन लड़े। अछूतोद्धार नारी शिक्षा एवं पाखण्ड खण्डन के कार्य में आर्य समाज ने क्रान्तिकारी कदम उठाये। परन्तु वर्तमान में हम केवल अतीत की उपलब्धियों वाले ढोल पीटते रहें और रचनात्मक कार्य न करें तो दुनिया के सामने हमारा प्रोग्राम खोखला हो जाएगा। अतः इसी दृष्टि से आर्य समाज के भावी कार्यक्रम को लेकर स्वामी अग्निवेश जी ने अम्बाला जेल मे एक योजना लिखी, जिस का मुख्य लक्ष्य था आर्य ग्राम निर्माण आन्दोलन का सूत्रपात करना। एक आर्य ग्राम कैसा होना चाहिए. इसकी पूरी रूपरेखा हमें प्रतिदिन अपने वैदिक जीवन पद्धति पर दिए जाने वाले भाषणों से भी मिल सकती है। परन्तु मुख्य रूप से एक आर्य ग्राम में वैदिक समाजवादी व्यवस्था पूर्णरूप से लागू होनी चाहिए। जहां तक लोगों के दैनिक जीवन का सम्बन्ध है उसमे वैदिक धर्म-काण्ड, पंच महायज्ञों का पालन, पूर्ण नशाबन्दी होनी चाहिए। सामाजिक रूप से कोई जाति-पाति न हो, सभी फैसले गाँव में हों, कोई व्यक्ति अनपढ़ न हो, सबको समान शिक्षा मिले और गांव की आवश्यक वस्तुएं गांव में ही पैदा की जाएं। मुख्यरूप से खेती सहकारी हो और सबका सामूहिक स्वामित्व हो। यह है एक खाका आर्य ग्राम का। क्या आप अपने गांव में ऐसी व्यवस्था लागू करना चाहते हैं। यदि हां तो फिर आप अभी से इस ओर कदम बढ़ाएं। अगर हम इस प्रकार का एक भी गांव बना पायें और अपनी व्यवस्था पूर्णरूप से लागू कर पायें तो कम से कम हमें अपने सिद्धान्तों की व्यावहारिकता पर तो दृढ़ विश्वास हो जाएगा और फिर उसे हम पूरे समाज में लागू करने में सफल होंगे।

सूचना

स्वामी रुद्रवेश जी के व्यापक कार्यक्रम

गुरुकुल कुम्भाखेड़ा की ओर से १३ अक्तूबर से ७ नवम्बर तक हिसार जिले के गांवों में व्यापक प्रचार कार्य-क्रम रखे गये जिसमें निम्न गांवों में स्वामी जी के प्रभावशाली भजन हुये। साथ में श्री रणसिंह जी वानप्रस्थ, श्री रामकुमार जी व श्री कंवरसिंह जी के भी मनोहर भजनों ने लोगों को मन्त्रमुग्ध कर दिया।

बधनवड़, जुगलैण, महला, दहमान, गोरखपुर, सिवामी, किरमाश, खेदड़, बोबुआ आदि प्रत्येक गांवों में दो-दो तीन-तीन दिन के प्रोग्राम रखे गये। सिवानी में ४० व्यक्तियों ने जनेऊ लिये तथा प्रत्येक गांवों में लोगों ने शराब छोड़ने की प्रतिज्ञायें कीं।

इनकी बंदूकें छीन लो

बिहार के मुख्यमंत्री श्री कर्पूरी ठाकुर ने गांधी जयंती पर कहा था कि अगर अगले तीन महीनों में ग्रामीण क्षेत्रों में बढ़ती सामंती हिंसा नहीं रुकी तो सरकार मजबूरन या तो जमींदारों की बंदूक छीन लेगी या मजदूरों में बंदूक बांट देगी। इस घोषणा के पीछे देश भर में, खास कर बिहार में बढ़ती सामंती हिंसा तथा बंदूक के दुरुपयोग की पृष्ठभूमि है, बिहार में तो तीन महीने में बेलछी, पथड़ा, छौड़ादानों सरीखी वर्ग संघर्ष की गंभीर वारदातें घट चुकी हैं। आज चारों ओर से जमींदारों की बंदूकें जब्त कर लेने की मांग तेज हो रही है।

इस घोषणा से सत्ता ने पहली बार सार्वजनिक तौर पर यह कबूला कि गांवों में अभी भी 'बंदूक राज' कायम है। फलस्वरूप यह तीखी बहस चल निकली है कि एक पक्ष को निशस्त्र करने की बजाय दूसरे पक्ष को भी सशस्त्र करने से क्या समस्या सुलझेगी? मजदूर तबके को राज्य सत्ता कैसे शस्त्र देगी, देने पर क्या वह शस्त्र ग्रहण करने तथा उसका उपयोग करने की स्थिति में होगी? उपर्युक्त सवालों का जवाब पाने के लिए यह छानबीन जरूरी है कि अब तक सरकार ने किन लोगों को क्या तथा कैसे शस्त्र दिया? किस व्यवस्था की किन खोटों के चलते संपत्तिधारी वर्ग शस्त्रधारी बन कर खुलेआम बंदूक चलाता और बचता रहा? यह संदेह भी लोगों के मन मे घर कर रहा है कि क्या नागरिक को अपनी सुरक्षा का भार राज्य की बजाय स्वयं ही उठाना चाहिए।

कौन बंदूक लेता है

बिहार में लगभग 67 हजार गांव हैं। प्रति गांव वैध बंदूकों की औसत संख्या लगभग सात है। इसके अतिरिक्त शहरों में दस लाख से ऊपर वैध बंदूकें हैं: यानी लगभग पौने सात लाख वैध बंदूकें होंगी। एक उच्च पुलिस अधिकारी के अनुसार अवैध बंदूकों की संख्या इस से चौगुनी पच्चीस लाख होगी। वैध अवैध रिवाल्वर-पिस्तौल इस के अतिरिक्त हैं। अवैध देशी बमों की संख्या अनगिनत है।

जाहिर है गांवों मे शहरों से ज्यादा असुरक्षा महसूस की जाती है। पर एक शस्त्र दंडाधिकारी के मुताबिक शहर का पढ़ा लिखा बाबू तबका भी बंदूक के प्रति कम आकर्षण नहीं महसूस करता, पुलिस के हाथ में लाखों आग्नेय अस्त्र इन सब के अलावा हैं। पटना के शस्त्र दंडाधिकारी के यहाँ नित सौ-पचास आवेदन पड़ते हैं।

भारतीय शस्त्र अधिनियम 1958 तथा भारतीय शस्त्र कानून 1962 के तहत किसी भी भारतीय नागरिक को राज्य सत्ता से कानूनन शस्त्र लेने का अधिकार है। यह सुन कर ताज्जुब होता है कि आज से कुछ वर्ष पूर्व तक बंदूक का लाइसेंस सिर्फ उसी व्यक्ति को दिया जाता था जिस के पास कुछ संपत्ति होती थी। दूसरे शब्दों में गरीब नागरिक को शस्त्र लेने का कानूनी अधिकार नहीं था। अनुभवी प्रशासनिक अधिकारियों के मुताबिक 60 प्रतिशत बंदूक संपत्तिशाली मजबूत तबका, 20 प्रतिशत डकैत, 15 प्रतिशत कमजोर वर्ग तथा 5 प्रतिशत भूमिगत क्रांतिकारियों के पास है। शतप्रतिशत लोग 'आत्मरक्षार्थ' अथवा 'संपत्ति की रक्षार्थ' बंदूकें माँगते हैं। शस्त्र नियमों में फसल रक्षा हेतु बंदूक देने का प्रावधान साफ लिखा है। कुल मिला कर 'संपत्ति रक्षा' ही बंदूकें प्राप्ति का मुख्य लक्ष्य हैं। आत्मरक्षा तो उस संपत्ति की रक्षा के क्रम में पैदा हुए खतरों से करनी होती है। इधर आवेदनों में डकैतों के अलावा नक्सलियों का भय ज्यादा लिखा मिलता है, डकैत तथा नक्सली को एक ही समान समझते-समझाते हुए संपत्ति रक्षा तथा

आत्मरक्षा का औचित्य दिखलाना वस्तु सत्य है या प्रचार सत्य ? रूपसपुर से ले कर चवरी तथा बेलछी से छौड़ादानों तक की घटनाएं यह दिखाती हैं कि जमींदार तबके ने डकैत के नाम पर बंदूकें हासिल कर के ८0 प्रतिशत मामलों में निहत्थे हरिजन मज़दूरों पर ही गोली चलायी है। ग्रामीण क्षेत्रों के अब तक के गोली चालनों के आँकड़ों से यह आरोप स्वयंसिद्ध होगा।

सम्पति का आधार

सपत्तिवान संपत्ति रक्षा हेतु बंदूकें कैसे प्राप्त करते हैं? दारोगा स्तर से एस. पी, से होते हुए एस. डी. ओ. तथा अंततः डी. एम. लाइसेंस देने के अधिकारी होते हैं। यह मात्र गैरपाबंदी तथा विशिष्ट शस्त्र का लाइसेंस (पिस्तौल-रिवाल्वर भारी राइफल) देने का अधिकार कमिश्नर तथा उस के ऊपर राज्य सरकार को ही हैं। सभी मामलों में प्रारंभिक अनुशंसा तथा चरित्र जांच का जिम्मा दारोगा स्तर से शुरू होता है। एक बंदूक हासिल करने में डेढ़ दो साल लेना तथा 600-700 रु. ऊपरी खर्च हो जाना सस्ते छूटना है। दारोगा को जाँचना है कि आवेदनकर्त्ता सम्मानित तथा प्रतिष्ठित नागरिक है या कहीं क्रोधी तथा प्रतिशोधी दिमाग का तो नहीं है? इसे बंदूक देने से कहीं इलाके की सार्वजनिक शांति तथा जनसुरक्षा भंग तो नहीं होगी? हालाँकि शस्त्र अधिनियम की संशोधित धारा 14 अध्याय दो में साफ लिखा है कि संपत्ति नहीं रखने वाले व्यक्ति को मात्र इसी आधार पर बंदूक का लाइसेंस देने से इनकार नहीं किया जा सकता। लेकिन इसी से तो संपत्तिवालों और संपत्तिहीनों में बंदूक की संख्या संतुलित नहीं हो जाती। बेहतर हो पुलिस समिति की अनुशंसा की बजाय स्थानीय नागरिक समिति की अनुशंसा पर बंदूक का लाइसेंस दिया जाय। उस समिति के समक्ष अन्य नागरिक विशेषकर कमज़ोर तबके को, गवाही हेतु बुलाया जाये। इस से एक ही वर्ग को अन्धाधुन्ध बंदूक मिलना कम होगा।

वकील, पुलिस और बंदूक

अब तक बंदूक जब्ती : वकीलों की आम राय है कि 60 प्रतिशत केसों में बंदूक ज़मीन के सवाल पर चलती है। कब्जा, बेदखली, फसल रक्षा, मजदूरी भुगतान को ले कर ज्यादा झंझट होता है। एक सरकारी वकील ने एक गहरी पेंच की बात बतलायी—गोली चलाना आसान होता है किन्तु कानून के सामने यह सिद्ध करना अत्यंत कठिन कि अंतिम स्थिति आने पर ही आत्मरक्षार्थ गोली चलायी गयी है। अतः वकील अपने 'आक्रमणकारी' जमींदार मुवक्किल को यह नकारने की सलाह देते हैं कि उन्होंने गोली चलायी। मजदूर पक्ष के लिए यह सिद्ध करवा लेना आसान नहीं कि जमींदार पक्ष ने आक्रमणार्थ गोली चलायी, क्योंकि आम तौर पर जमींदार 'अवैध बंदूकों से गोली चलाते हैं और उसे गायब कर देते हैं। पुलिस जाँच में 'वैध' बंदूक प्रस्तुत कर उसे 'अचालित' घोषित करवा लेते हैं। फिर पैसे के बूते पर वकील, गवाह तथा पुलिस सहानुभूति अर्जित कर ली जाती है। इस प्रकार आत्मरक्षार्थ प्राप्त बंदूक का आक्रमणार्थ दुरुपयोग कर के बचा जाता है।

आम तौर पर वैध बंदूकों की जब्ती तभी संभव है जब उस बंदूकधारी से जनशांति तथा सुरक्षा पर खतरा सिद्ध होता हो। मजदूर के शिकायत करने तथा पुलिस प्रशासन के मात्र लिख देने से सिद्ध नहीं हो जाता कि वाकई उस बंदूकधारी से शांति व्यवस्था को खतरा है। इस के लिए वस्तुगत स्थिति, साक्ष्य तथा वारदात का सिलसिलेवार अकाट्य विवेचन चाहिए। पुलिस प्रशासन को इतनी फुर्सत तथा इच्छा कहाँ? अतः ज्यादातर स्थितियों में बंदूक जब्ती बार-बार गोली चालन तथा हत्याएं होने के बाद ही हो पाती है। दरअसल पटना जिला के गोपालपुर गांव में हाल में सात राइफलें प्रशासन ने तब जब्त कीं जब अनेक बार गोली चल चुकी तथा 'एक और बेलछी कांड' दुहराने का खतरा उपस्थित नहीं हो गया। अगर प्रशासन चुस्त तथा चरित्र से जनोन्मुख होता तो बेलछी के जमींदारों की बंदूकें क्या पहले जब्त नहीं की जा सकती थीं?

बंदूक जब्त के पूर्व उनका औचित्य सिद्ध करने के लिए उच्चाधिकारी दारोगा से जाँच करवाते हैं। जिस इलाके के दारोगा की सिफारिश पर बंदूक मिली तथा चली उसे भी गलत सूचना देने का दोषी माना जाना चाहिए। उस से दुबारा जाँच करने की प्रार्थना की बजाय कड़ा स्पष्टीकरण मांगना चाहिए।

दंड प्रक्रिया को अचालित वैध बंदूक, झूठे गवाह, बड़े वकील के जाल में ऐसा फंसाया जाता है कि आरोप सिद्ध नहीं हो पाता; यानी बंदूक जमींदार के हाथ में साफ बची रहती है। न्यायालय तक में जमींदार बंदूक ले कर मूंछ ऐंठते हुए मौजूद दीखते हैं। सामान्य प्रशासनिक कार्रवाई द्वारा बंदूक जब्ती पांच प्रतिशत तथा न्यायालय द्वारा एक प्रतिशत हो पाती है। पुलिस को पूछना चाहिए कि अगर

मजदूर वैध बंदूक से नहीं घायल हुआ या मरा तो वह (अवैध) बंदूक कहां, किस के पास है ? उसे प्रस्तुत करने में विफल पुलिस पर कारंवाई होनी चाहिए।

एक किलो बम ६ रु० में

अवैध शस्त्र समस्या : अगर मान लिया जाये कि सरकार जमींदार वर्ग से सभी आग्नेय अस्त्र वापस कर ले तो भय है कि जमीदार वर्ग अवैध के बूते अतिक्रमण तथा आक्रमण जारी रखेंगे। वैध शस्त्रों की जब्ती से अवैध शस्त्रों की जब्ती टेढ़ी खीर है। बिहार में नालंदा तथा मुंगेर जिले में ऐसे गांव हैं जहाँ घर घर देशी बंदूकें बनती हैं। इनकी कीमत 500 से एक हजार रु० के बीच होती है। कहतेकि मात्र नालंदा मुंगेर जिले में 300 ऐसे गुप्त भूमिगत कारखाने चालू हैं। आये दिन इन पर छापे पड़ते हैं। आये दिन नये खुलते हैं, बेगुसराय का वीहट तथा शाहाबाद का नोखा इलाका देशी बम उत्पादन हेतु कुख्यात है। बीहट में तो 6 रुपया किलो बम बेचने की बात की जाती है, आवाजी कारतूस तथा जली गोली की खाली खोली में शीशा भर कर उस से 'गोली' बना ली जाती है। देशी पिस्तौल 50 रु. से 250 रु. में उपलब्ध होती है। गांव के लुहारों द्वारा पाइपों से निर्मित देशी पिस्तौल सैंकड़ा में तीस प्रतिशत युवकों के पास दीखती है। ग्रामीण स्कूलों में पचास प्रतिशत लड़के अपने घर से बाप-दादों के ये 'खिलौने' ले कर आते हैं।

जब मात्र पूना के किरकी कारतूस कारखाने में कारतूस बन कर वहीं से सारे भारत के अनुबंधित लाईसेंसधारी विक्रेताओं मे वितरित होती है तब बोरा भर कर कारतूस काला बाजार में कैसे बिकता है ? लाइसेंसी दूकान पर एक एक कारतूस तथा बंदूक पर जांच प्रतिजांच का अचूक बंदोबस्त है। बिहार राज्य शस्त्र दूकानदार रिलीफ सोसाइटी के मन्त्री श्री रामेश्वर सिंह के अनुसार जिलाधिकारी से परमिट प्राप्त व्यक्ति कारतूस उठा कर एक रुपया बढ़ी दर पर या तो दूकानदार को बेच डालना है या किसी परिचित बंदूकची को। भारी मात्रा में युद्धों के समय शस्त्र भारत में अवैध तरीके से लाये बेचे जाते गये। जब कोई संभ्रांत व्यक्ति विदेश जाता है तो एक दो बंदूक पिस्तौल लाना नहीं भूलता। 2000 रुपये के एक आग्नेय अस्त्र पर कस्टम ड्यूटी 80 प्रतिशत लगनी चाहिए। ऐसा न कर के वह परिचित कस्टम वाले से उस पर 500 रु. जुर्माना करा के अस्त्र छुड़ा लेता है। कस्टम ड्यूटी लगे अस्त्र को सालों तक बेचने की मनाही है। जुर्माना लगे 2000 रुपया के विदेशी अस्त्र को वह तुरन्त 8-10 हजार में बेच डालता है। ऐसे बेउली स्कॉट रिवॉल्वर जुर्माना सहित 2000-2500 में प्राप्त हो कर 10 हजार में बिक जाता है। यों तो पुरातत्व महत्व की अंग्रेजकालीन बंदूकों का भी व्यापार होता है पर ये देश में रहती नहीं। ये भारी मात्रा में विदेश भेजी जा रही हैं। बड़े डीलरों ने क्षेत्र बांट कर राजाओं, पुराने अफसरों के पास ऐसी बंदूकों का पता लगाने के लिए बाकायदा जासूस छोड़ रखे हैं। ये जासूस डबल बैरल राइफल, हैवी बोर, इनग्रेव माडल, टू पीस इजेक्टर, साइड लौक, हैमर लेस, ओरोजनल कंडीशन किस्म की बंदूकें तथा राइफलें खोजते फिरते हैं। 470 बोर मेकजिम पर्डी मेड इन बरनिंगम ; हॉलैंड एंड कालैंड मेड इन बरमिंघम, जजिल मेड इन बरमिंघम तथा डब्लू जे जैपी बरमिंघम मेड की विदेश में कीमत 50 हजार से एक लाख तक मिल जाती है। प्रिवी पर्सस खात्मे के जमाने में बहुत से ऐसे दुर्लभ अस्त्र विदेशी संग्रहालयों में पहुंचे थे।

वोट लो बंदूक दो

बाधाएं : अवैध शस्त्र जब्त करने की कानूनी स्थिति आसान है, किन्तु क्रियात्मक रूप अत्यंत कठिन। वैध शस्त्रों में दुर्भाग्यवश स्थिति एकदम उलटी है। क्रियात्मक रूप से जमींदार की हवेली से वैध शस्त्र जब्त करना आसान है। इस की कानूनी स्थिति घोर बाधक है, क्योंकि संविधान में व्यक्ति को व्यक्तिगत संपत्ति की सुरक्षा का मौलिक अधिकार प्राप्त है।

दूसरी बाधा राजनीति है। राजनीतिकों की जोरदार पैरवी के बगैर बंदूक का लाइसेंस प्राप्त करना असंभव है। राजनीतिक अपने रिश्तदार जमींदार तबका को आत्मीयता के अलावा एक और विशेष कारण से बंदूक उपलब्ध कराते हैं। आजाद हिन्दुस्तान में गत तीस वर्षों से राजनीतिक तथा सामन्तों में एक अलिखित समझौता चला आ रहा है—**वोट लो, बंदूक दो यानी बंदूक दो, वोट लो।** यह ताकतवर के लोकतन्त्र का खोट है कि फसल की खेती की तरह 'वोट की खेती' भी बंदूक के बूते बोयी काटी जा रही है। **वोट तथा बंदूक में जो अवैध रिश्ता है उसे तोड़े बगैर क्या जमींदार तबके को निशस्त्र करना संभव होगा ?**

कदम उठाते समय भोजपुर के उस क्षुब्ध जमींदार की

(शेष पृष्ठ 18 पर)

गांधीवादी अर्थशास्त्री : शुमाकर

कोई चार वर्ष पहले जब ई. एफ. शुमाकर की "लघु सुन्दर है" पुस्तक प्रकाशित हुई, बहुत थोड़े लोगों ने उनका नाम सुना होगा। किन्तु इस वर्ष जिनेवा के एक अस्पताल में ४ सितम्बर को जब उनका निधन हुआ तो पश्चिमी और विकासशील देशों का शायद ही कोई ऐसा बुद्धिजीवी होगा, जो उनके नाम और काम से परिचित नहीं हो चुका होगा।

उनकी पुस्तक की अर्थशास्त्रियों और आलोचकों ने उपेक्षा की किन्तु पश्चिम के आम लोगों में वह बड़ी लोकप्रिय हुई और उसकी खूब बिक्री हुई।

शुमाकर की बुनियादी मान्यता यह है कि दैत्याकार उद्योगों से विकासशील देशों का भला नहीं हो सकता। उन्हें ऐसी तकनीक की जरूरत है जो आदिम युग से आगे बढ़ी हो किन्तु उतनी आगे न बढ़ी हो जितनी पश्चिमी देशों में है। वह इसे मध्यवर्ती तकनीक की संज्ञा देते हैं जो गरीब देशों की जरूरतों को पूरा कर सकती है। इन देशों में खाने वाले बहुत हैं और काम करने वाले हाथ भी बहुत हैं।

शुमाकर जी ने गांधी जी को हमारे जमाने का सबसे बड़ा अर्थशास्त्री बताया। उन्होंने गांधी जी के इस कथन को दोहराया कि विकासशील देशों को सामूहिक उत्पादन नहीं बल्कि आम लोगों द्वारा उत्पादन की आवश्यकता है और यह भी कि दुनियां में हर आदमी की जरूरत पूरी करने लायक सामग्री मौजूद है, किन्तु वह इतनी नहीं है कि हर आदमी के लालच को पूरा कर सके।

जितनी बड़ी मशीन उतना ही अधिक आर्थिक सत्ता का केन्द्रीयकरण। वह वातावरण को दूषित करती है और उसे प्रगति की निशानी नहीं समझा जा सकता। वह विवेक का अभाव सूचित करती है। विवेक का तकाजा है कि हम विज्ञान और तकनीक को नया जामा पहनाएं।

तीन कसौटियां

हम वैज्ञानिकों और तकनीक-विशारदों से क्या अपेक्षा करते हैं? यही कि हमें ऐसी तकनीक और औजारों की जरूरत है जो (१) इतने सस्ते हों कि हर किसी को वे सुलभ हो सकें। (२) छोटे पैमाने पर उनका उपयोग संभव हो और (३) मनुष्य की रचना शक्ति को सन्तुष्ट कर सकें।

इन तीन विशेषताओं से अहिंसा का जन्म होता है मनुष्य प्रकृति के साथ अपना सम्बन्ध जोड़ता है। उनमें स्थिरता आती है। अगर उनमें से किसी एक की भी उपेक्षा होगी तो खराबी हो कर रहेगी।

शुमाकर प्रेमी और रहम दिल व्यक्ति थे। वह जर्मनी में पैदा हुए और द्वितीय महायुद्ध के पहले एक छात्रवृत्ति प्राप्त करके आक्सफोर्ड में अध्ययन करने पहुंचे। युद्ध शुरु होने पर उन्हें शत्रु देश का आदमी समझा गया और उन्हें पांच वर्ष तक एक खेत पर मजदूर बनकर काम करना पड़ा। प्रति सप्ताह उन्हें ५ पौण्ड की मजदूरी मिलती थी। इन को गरीबी का सामना करना पड़ा और अन्य अर्थशास्त्रियों के विपरीत अपने हाथों से कठोर परिश्रम करना पड़ा। वह गरीबों के सम्पर्क में आए और उनमें सहानुभूति की भावना जागृत हुई जो हमेशा बनी रही। खेत पर काम करते हुए अपने बचे हुए समय में उन्होंने युद्ध के बाद की दुनियां के पुनर्निमाण और मुद्रा प्रणाली पर एक निबन्ध लिखा, जिसे सहज मान्यता प्राप्त हुई।

शुमाकर कहते थे कि कि भारत ने उनके विचारों को बहुत अधिक प्रभावित किया था। वह भारत भी आए थे। महाराष्ट्र के गांव में उन्होंने देखा कि एक कुम्हार अपना चक्का घुमा रहा है ठीक उसी प्रकार जैसे वह दो हजार वर्ष पहले घुमाता होगा। वह एक हाथ से रस्सी खींच कर चक्के को घुमाता था और दूसरे हाथ से वह

चीजों को आकार देता था। कुम्हार के चक्के की कीमत कोई ६० रु० होगी। शुमाकर का ख्याल था कि वह कुम्हार पांच सौ रु. की पूंजी लगाकर पांव से चलने वाला चक्र लगा सकता है जो हमेशा घूमता रहेगा।

अगले दिन शुमाकर गांव के समीप ही चलने वाले इंजीनियरिंग कारखाने को देखने गये। वहां ४० हजार की कीमत की एक लैद मशीन लगी थी। एक नवयुवक मराठा उसके चक्र को चला रहा था। शुमाकर ने उससे प्रश्न किया कि यहां काम सीखने के बाद वह क्या करेगा। उसने कहा कि बम्बई या पूना जा कर काम तलाश कर लेगा।

शुमाकर ने सोचा कि भारत इतना गरीब देश है कि एक व्यक्ति को काम देने के लिए ५० हजार रु. की पूंजी नहीं लगा सकता। इसके अलावा गांव का आदमी काम सीखकर शहरों की भीड़ भाड़ में वृद्धि करता है। इसका एक मात्र विकल्प यह है कि बड़े उद्योगों पर जार देने के बजाय लघु उद्योगों को पुन: जीवित किया जाए और उसमें उत्पादन बढ़ाने की दृष्टि से थोड़ा बहुत हेरफेर कर दिया जाए।

जाम्बिया का अनुभव

शुमाकर एक बार जाम्बिया के राष्ट्रपति श्री कौण्डा के अतिथि बनकर जाम्बिया गये थे। उन्हें राष्ट्रपति की कार में राजधानी के कई मील दूर एक आधुनिक कारखाना देखने ले जाया गया। कारखाने के फाटक पर लोगों की भीड़ जमा थी और लोग धक्कम पेल कर रहे थे। शुमाकर ने समझा कि कोई दंगा फसाद हो रहा है। उन्हें बताया गया कि इस इलाके में यही एक कारखाना है, जहां रोजगार मिल सकता है। लोग यहां कोई भी काम पाने की आशा में जमा हुए हैं। कारखाना वातानुकूलित था और कपड़ा बुनने की मशीनें एकदम आधुनिक थीं। कारखाने के डच प्रबन्धक ने बताया कि कारखाने में ७०० लोगों को काम मिला हुआ है और उनने बड़े गर्व के साथ कहा कि उनकी संख्या घटाकर ३५० कर दी जाएगी।

यह सुनकर शुमाकर हैरान रह गये। उन्हें बड़ा दुःख हुआ कि पश्चिमी देश अपनी उन्नत तकनीक विकासशील देशों पर थोप कर उनकी प्राचीन अर्थ व्यवस्था को अस्त व्यस्त कर रहे हैं और लाखों बेरोजगारों को अकथनीय विपत्ति में डाल रहे हैं।

कई वर्षों तक शुमाकर की उपेक्षा हुई। उन्होंने ब्रिटेन और अमेरिका में योग्य तकनीक की खोज करने के केन्द्र स्थापित किए। ऐसा एक केन्द्र लखनऊ में भी चल रहा है। ये केन्द्र किसानों और कारीगरों को अपनी समस्याओं के हल के लिए आधुनिक विज्ञान को अपनाने में मदद देते हैं।

एक अफ्रीकी देश में एक ईसाई मिशन ने किसानों को खेती के आधुनिक तरीके अपनाने की प्रेरणा दी। फलस्वरुप फसल की पैदावार दूनी हो गई। किन्तु दूसरे साल किसान फिर पुराने तरीके पर लौट गये।

ईसाई मिशन नाराज हो कर वहां से चला गया। डा. शुमाकर ने अपने कुछ आदमी जांच करने के लिए भेजे। किसान इस बात से तो खुश थे कि पैदावार बढ़ी, किन्तु उनके सामने सवाल था कि अपनी उपज को बेचने के लिए बड़े गांव के बाजार में कैसे ले जाएं। यह कुछ दूर स्थित था। पहले औरतें उपज को बाजार को ले जाती थीं। अब उपज का वजन बढ़ गया तो उन्होंने यह अतिरिक्त श्रम करने से इन्कार कर दिया। इसलिए किसानों ने सोचा कि कम पैदावार करना ही अच्छा होगा।

डा. शुमाकर के साथियों ने किसानों से चर्चा करके एक साधारण गाड़ी बनाई, जिसके सब हिस्से गांव में बनाए जा सकते थे। डा. शुमाकर के दल ने ऐसी मशीन बनाई, जिस की लागत १०० रु. थी और जो बिना बिजली के चल सकती थी। इस प्रकार उन्होंने किसानों को ऐसी तकनीक अपनाने में मदद दी, जिसके द्वारा वे अपनी स्थिति सुधार सकते थे।

बड़े उद्योगों की निरर्थकता

डा. शुमाकर को यह देख कर बड़ी हंसी आई कि पश्चिम के जिन अर्थशास्त्रियों ने शुरु में उनकी उपेक्षा की थी, वही अन्त में उन से कहने लगे कि आप विकासशील देशों की समस्याओं पर क्यों अपना दिमाग खपा रहे हैं जबकि हमें आपकी मदद की जरूरत है। किन्तु डा. शुमाकर ने मान्यता की कभी चिन्ता नहीं की। वह उस सत्य से चिपके रहे जो शुरू में अलोकप्रिय था। उन्होंने यह सोच लिया था कि पश्चिमी देशों को भी एक दिन विशाल उद्योग की निरर्थकता अनुभव करनी होगी। बड़े उद्योग और बड़े नगर मनुष्य को प्राकृतिक वातावरण से जुदा कर देते हैं। मनुष्य प्राकृतिक जगत के साथ सौमनस्य स्थापित करें, यह न केवल वांछनीय है, बल्कि आवश्यक भी है।

कहानी उनकी —

जो गाँव से भाग कर शहर में गये

गांधीजी ने एक बार कहा था कि भारत की आत्मा गांवों में बसती है। भारतवर्ष का नवनिर्माण यदि सही ढंग से करना है तो गांवों से प्रारम्भ करना होगा। हिन्दुस्तान की जागृति के लिए गांवों का उत्थान करना आवश्यक है। लेकिन भारत के आजाद होने के पश्चात से स्थिति में कुछ ऐसे परिवर्तन हुए कि गांवों के युवा शहरों के सुने-सुनाये आकर्षण से अपने को न बचा पाए। उन्हें शहर अपनी ओर खींचने लगे। सोलह-अठारह वर्ष की तरुणावस्था में कदम रखते ही उन्होंने या तो घर से भाग कर बगैर किसी को बताये शहर की गाड़ी पकड़ ली अथवा घर की गरीबी को ढकने के लिए और माँ-बाप के आक्रोश से बचने के लिए शहर का रुख कर लिया। लेकिन शहर पहुंचने पर उन्हें मिलती है दर-दर की ठोकरें। शिक्षा में आधे-अधूरे होने के कारण शहरों की गहमा-गहमी में अपने को पूर्णतया नहीं खपा पाते। खेती के अतिरिक्त उनके हाथ में कोई हुनर भी नहीं होता। जहां तक प्रश्न है मजदूरी करने का, वह तो उन्हें अपने गांव में भी मिल सकती है...और अंत में वे न तो गांव के ही रह पाते हैं और न शहर के...मैं ऐसे ही कुछ युवकों से मिला। उन्होंने जो कहा वह आपके सामने है :

गेदआ ग्राम जिला सोनीपत का रामनिवास कुछ समय पूर्व अपने रूठे हुए भाई को दिल्ली लेने आया था। उस समय तो भाई को वापस गांव ले गया लेकिन बाद में उसी रास्ते से स्वयं दिल्ली आ गया। उसके भाई रामफूल से रूठने का कारण पूछा तो बोला—'बाबू बड़ा गुस्सैल है। बात-बात में लाठी उठा लेता है। उस दिन भी बस यों ही...खेत में जा रहा था...कुछ देर हो गई। बस चढ़ गया लाठी ले के और मैं भाग गया घर से। जरूरत पड़ी तो अपने आप बुलाया।

'पर तुम भाग कर गये कहां?' मैंने बात काटते हुए पूछा।

हाथ की डंडी एक ओर रखते हुए रामनिवास बोला—जाणा कित्त था। (कहां जाना था?) पता ही नहीं था। बस, गाडी में बैठ गये और पहुंच गये दिल्ली। पर स्टेशन पर ही पकड़ लिया टी. टी. ने। दो दिन उसने अपने साथ रखा। टिकट के पैसे भी उसी ने दिये थे। साले ने घर पत्र भी डाल दिया पर कोई बुलाण नहीं आया।

—फिर क्या किया तुमने दिल्ली में?

—दो दिन रखकर टी. टी. ने घर से निकाल दिया। कई दिन दफ्तरों-दुकानों के चक्कर लगाए तो भी कोई काम नहीं मिला। सारा दिन का भूखा, रात को बिछाने-ओढ़ने को कोई लत्ता-कपड़ा नहीं, कोई छत नहीं...फिर टी. टी. के पास वापस आ गया। उस बाबू का दिल पता नहीं कैसा-कैसा था। रोटी खिलाई और फिर भगा दिया। स्टेशन पर किसी का सामान उठाने लगा तो और कुलियों ने मारा। पुलिस वाले मुझे पकड़ कर ले गये। उन्होंने पूछा कि मैं कहां से आया हूं तो मैंने फेर (फिर) टी. टी का पता बता दिया। बेचारा बाबू मुझे फेर छुड़ा के लिवा गया। उसने दया करके स्टेशन पर ही पाणी पिलाणे का काम दिलवा दिया और फेर (फिर) कुछ दिणां मां (दिनों में) रामनिवास लिवा ले गया। बाद में वा भी भाग गया...कोई बात नहीं, ठोकरां खा खा कर वापस आ जागा।

सामायण गांव के श्रीकृष्ण की रामकहानी और ही है। उसे किसी शहरी बाबू ने बताया था कि शहर में सोना बरसता है। वहां जिस चीज को हाथ लगा दो वही सोना हो जाती है। श्रीकृष्ण को खेत में ही हल चलाते-चलाते मैंने उसके अनुभव के बारे में पूछा तो बोला—बाबू, सारे शहरी झूठे होते हैं।

बात सुनकर मैं एकदम सकपका गया। मैंने पूछा—कैसे? मैंने क्या झूठ बोला?

एकदम हंस पड़ा 'हो हो' करके, और फिर अचानक चुप होते हुए बोला—मुझ से नहीं तो किसी और से बोला

होगा। पर शहरी होते झूठे हैं। अब देखो वो बाबू आया था। दो दिन टिक्कड़ (रोटी) तोड़े ? दोन बखत (समय) सेवा की और जाते-जाते झूठ बोल गया—शहर जाकर कमाओ, कमाई जादा (ज्यादा) होवे है। दिल्ली गया भी, गांठ में पांच सौ से कुछ जादा (ज्यादा) ही रुपे (रुपये) थे और सारे खो के आ गया।

—क्यों किसी ने काट ली थी तुम्हारी जेब ?

'नहीं जेब तो नहीं काटी', उसने मेरी ओर सीधा देखते हुए कहा—वहां किसी ने रोटी टूक को भी नहीं पूछा, जिससे कहा, उसने या तो सुना नही या फिर दुत्कार दिया, ईब (अब) देखो, तुम आड़े (यहां) आये ही हो तो रोटी-टूक मेरे संग ही खाओगे और कहां जाओगे।

— फिर बगैर जान-पहचान शहर में गये ही क्यों ?

'कहा न पिस्सा कमाण' (पैसा कमाने)—उसने कुछ तलखी से कहा।

इसके बाद ग्राम बास में एक घर के सामने खड़े होकर मैंने पानी मांगा। पानी देने वाला एक बुड्ढ़ा सा आदमी सिर पर साफा बांधे और गाढ़े खद्दर का कुरता व घुटनों तक धोती बांधे था। उसने मुझे अंदर बैठ कर सुस्ताने को कहा। चारपाई पर बैठते हुए उसने हुक्के का मुंह मेरी ओर कर दिया। मैंने कहा—जी, मैं तम्बाकू नहीं पीता।

मेरी बात सुनकर उसकी आंखें आश्चर्य से फैल गयीं। उसने कहा—शहर में रहते हो, बीड़ी सिगरेट नहीं पीते।

'बाबा, शहर में हर कोई बीड़ी-सिगरेट थोड़े ही पीता है', मैंने सफाई देने का प्रयत्न किया।

'पर गोडू चमार का लौंडा आया है। इब्बी-इब्बी, वा तो बतावे है कि शहर में बिगेर (बगैर) दारू के कोई बात भी ना करे, उसने हुक्का मेरी ओर से हटाते हुए कहा।

'ठीक है, मुझे पुछवाओ, मैंने अपनी ही बात पर जोर देकर कहा। वे बुजुर्ग मुझे लेकर गांव के दूसरे सिरे पर बने एक घर में गये। बाहर से आवाज दी—गोंडू...गोडू।

आवाज सुनकर एक लड़का घिसी हुई पैंट और टैरालिन की बुशर्ट पहने बाहर निकला। 'आओ काका', उसने अन्दर बुलाते हुए कहा।

'नहीं, नहीं ठीक है। यहीं बात कर लें। बुजुर्ग ने टालते हुए सी बात की—तू कहवे था कि शहर मां सब शराब पीवे हैं, पर ये बाबू अखबार मां काम करे है पर हुक्का-सिगरेट भी ना पीवे हैं।

मुझे वहां छोड़कर बाबा चले गये। मैंने कहा—

'यार पहले पानी पिलाओ, फिर बात होगी। उसने क्षण भर मुझे ताज्जुब से देखा 'हम चमार हैं, आप हमारे घर का पानी पीयेंगे ?' मैंने कहा 'क्यो नहीं ?'

तो उसका रंग बदला। पानी लाया और साथ ही थोड़ा सा गुड़ लाया। बोला—खाली पेट पानी नहीं पीते, ये गुड और पानी ले लो।

मैंने कहा—'भई रोटी भी तो खिलाओगे ही या भूखा भेजोगे ?'

बात सुनकर वह उछल पड़ा। 'हां, हां इब्बी बण जावे है रोटी भी।'

थोड़ी देर में रोटी और लस्सी लेकर जब हम दोनो खाने बैठे तो मैंने कहा—शहर कितने दिन रहे ?'

'दो साल, पहले रोहतक रहा, फिर दिल्ली चला गया।'

'वहां क्या करते थे ?'

'जो यहां करता हूं। पढ़ा लिखा तो हूं नहीं, जूती गांठता हूं। कुछ दिन रोहतक में जूता बनाना सीखा और फेर कृष्णा नगर में बैठ गया जाकर। वहां पैसा तो ठीक, ठीक मिल जावे है पर रहने खाने का कोई ठिकाना नहीं था ...कभी-कभी खुली सड़क पर भी सोना पड़ा।'

तुम्हें अच्छा क्या लगता है ? शहर या गांव।

'अच्छा तो शहर है पर शांति गांव में है। कहीं आना-जाना नही। यहीं बैठे-बैठे काम आ जावे है।'

'यहां दिल कैसे बहले है ? उसी की भाषा की कुछ टोन में बोला।

'बहुरिया जो है' (पत्नी जो है) उसने हंसते हुए कहा, उसने अपने सात बच्चों को बुलाया।

मैंने आश्चर्य से देखा तो उसने बतलाया 'बाबू मेरी सादी बारह बरस की उमर में हो गयी थी। मेरे बाबा ने बहुरिया को दो सौ रुपया में खरीदा था।

मैंने पूछा 'तुम्हारी उमर क्या है।'

'बाईस साल, उत्तर था।

(शेष पृष्ठ २३ पर)

एक रिक्शे वाले की कहानी

विक्रम कुमार विवेकी

हरयाणा और पंजाब की अट्टहास करती राजधानी सैक्टर १७ की मदमाती संध्याकाल में दुकान व कोठियों से लगे नीलम सिनेमा के पीछे का 'बस स्टाप' कुछ दूर हटकर पुराने से रिक्शे में बैठा एक बूढ़ा रिक्शा वाला यात्री की प्रतीक्षा में दायें बायें देख रहा था। लोग पास से गुजर जाते थे, रिक्शावाला सोचता था आठ आने झोली में पड़ेंगे परन्तु आध घण्टे तक कोई भी सवारी नहीं मिली। ७ सैक्टर में आर्य समाज में मनाये जाने वाले उत्सव में भाग लेने के लिए मैं भी बस की प्रतीक्षा कर रहा था। परन्तु २९ नं० की बस मिली नहीं। सोचा आज रिक्शे वाले से ही दो बातें कर लूं। दस कदम आगे सरकने पर रिक्शेवाले और मेरे बीच बात चल पड़ी।

ले०—सैक्टर ७ बी. जाना है, क्या लोगे ?

रि० - साहब ! जो मर्जी दे देना। आप खुद पढ़े लिखे बाबू हैं।

ले०—फिर भी ?

रि०—डेढ़ रुपया लेते हैं, आप जो भी दें, दे देना, बैठिये न।

इतने में ही सैं० ७ को जाने वाली बस दूर से दिखाई दी, परन्तु रिक्शेवाले से कुछ जानने की इच्छा से मैं रिक्शा में बैठ गया, और चल पड़े मैंने पूछा बाबा जी क्या नाम है आपका, किधर के रहने वाले हो ?

रि०—रामलाल कहते हैं बाबू जी, अब तो ५ साल से चण्डीगढ़ में ही रिक्शा चलाता हूं। इलाहाबाद के पास गांव है।

मैंने कहा बाबा जी एक बात बताओगे तो एक बार मेरी ओर पीछे देखकर बोला —बोलो साहब !

ले०—रिक्शेवाला धन्धा कैसा चल रहा है, क्या कमा लेते हो आजकल, दिनभर की मजदूरी कितनी बन जाती है।

रि०—(थोड़ा रुककर) बाबू जी ! बस भगवान की दया है, मालिक जो दे दे वही बहुत है।

ले०—सुना है रिक्शेवाले २५-३० रुपये डेली कमा लेते हैं। १५-२० रुपये तो आपके भी बन जाते होंगे।

रि०—कहां बाबू जी, हमारे जैसे बूढ़े आदमियों को देखकर और पुराने रिक्शे को देखकर सवारी पास नहीं आती। आज सुबह से कुल ३ रुपये बने हैं। जैसे तैसे शाम तक मालिक की दया से ८-१० बन जाते हैं।

ले०—२५-३० रुपये क्या कोई भी नहीं कमाता। रिक्शेवाले शराब भी तो पी जाते हैं। इतना पैसा फिर कहां से आ जाता है।

रि०—बाबू जी हम तो नहीं पीते। हां जवान लड़के महीने में कभी बन जाएं तो २०-२५ रु० तक भी कमा लेते हैं, हर रोज कहां मिलता है बाबू जी। यदि रोज इतना मिल जाये तो बुढ़ापे में भी इतनी मेहनत कौन करने वाला है। शराब पीने वाले भी रोज थोड़े ही पीते हैं। कभी-कभी थकान मिटाने के लिए जवान लड़के पी भी लेते हैं। जमाने के अनुसार सिनेमा भी देख लेते हैं। यह भी तो जरूरी है बाबू जी।

ले०—अच्छा बाबा जी, बच्चे थोड़े बहुत पढ़े लिखे भी हैं या नहीं, घर में कितने लोग है ८-१० रुपयों से घर का गुजारा चल पड़ता है क्या ? दिवाली इस बार कैसी मनाई ?

रि०—पढ़ाई तो बाबू जी न मैं कभी स्कूल जा सका। ३ लड़के और २ लड़कियां हैं। बुढ़िया बीमार हो के ४ साल पहले भगवान के पास चली गई। लड़कों को पढ़ाने के लिए स्कूल की फीस कहां से लायें बाबू जी। बड़े लड़के के दो बच्चे भी हैं उनको भी नहीं पढ़ा सकते। दो बेटे भी रिक्सा चलाते हैं, तभी जाकर घर में रोटी पानी का खर्चा निकलता है दिवाली पर तो बाबू जी खील और बताशे से लक्ष्मी पूजन किया था, छोटे बच्चों ने घर में भी दो एक रुपये के पटाखे चलाए होंगे। चण्डीगढ़ में तो हमारा कोई घर नहीं है। हम रिक्शे वाले सभी इकट्ठे हो कर रात कहीं भी गुजार लेते हैं। आजकल १६ सैक्टर मार्किट के सामने

बरामदे में ही सो लेते हैं, मिलकर रोटी बना लेते हैं। दिवाली वाले दिन गोभी टमाटर की सब्जी बनाकर पूड़ियों का प्रसाद भी खाया था।

ले०—बाबा जी इस धन्धे से क्या आप को पूर्ण सन्तुष्टि है ? कोई दूसरा अच्छा धन्धा क्यों नहीं करते। अपने नौजवान बेटों से काम करवा कर इस उमर में तो आपको आराम करना चाहिए, हल्का सा काम करते थोड़ी बहुत भगवान की भक्ति करनी चाहिये, । लड़के बात नहीं मानते क्या ?

रि०—लड़के तो मेरे हैं बाबू जी। पर यदि मैं भी इस काम को न करूं तो पेट कैसे पालें। लड़कों की इतनी कमाई कहां जिससे पेट पाल सकें। यदि मैं भी रिक्शा न चलाऊं और सबसे छोटा लड़का होटल में नौकरी न करे काम कैसे चलेगा। दूसरा धन्धा करने के लिए घर में पूंजी नहीं। बड़ी लड़की की जैसे तैसे शादी कर दी। छोटी वाली इलाहाबाद में ही बाबू जी के घर नौकरानी है। जैसे तैसे जिन्दगी चल रही है. साहब

मैं और कुछ पूछने से रुक गया। इतने से ही हिन्दुस्तान के एक गरीब नागरिक की जीवन कहानी को भांप गया गन्तव्य स्थान पर पहुंच कर डढ़ रूपये रिक्शे वाले को देकर मैं समाज के पण्डाल में व्याख्यान सुनने को बैठ गया। आंखें वक्ता की ओर थी परन्तु मस्तिष्क खोया हुआ था दरिद्रों की करुण दशा में।

आज न जाने हिन्दुस्तान में ऐसे कितने मेहनतकश मजदूर कठोर एवं दारुण जिन्दगी बिता रहे हैं। लेखक को कोई दुःख नहीं होता इस बात पर कि हिन्दुस्तान का एक बूढ़ा दादा रिक्शा चलाकर जिन्दगी बसर कर रहा है, उसके बेटे भी रिक्शा चलाते है, होटल में नौकरी करते हैं बेटी भी बाबू जी की नौकरी करती है बशर्ते कि उसके पोते किसी स्कूल में पढ़ रहे होते। बीमारी के कारण ही दवा की की कमी से धर्मपत्नी का देहान्त न हुआ होता। और थोड़ी ही सही पर बेटे बेटों की शिक्षा स्कूल या कालेज में हो गई होती। लेकिन रोना तो यह है कि पीढ़ी दरपीढ़ी से पूरी मेहनत करके कमाने के बाद भी न बाप ही पढ़ पाया न बेटे और न पोते। यही कहानी हम देश के हर गांव के किसानों के घर भी देख सकते हैं। पीढ़ियों कमाती आ रही हैं पर प्याज और रोटी के सिवाय. पढ़ने लिखने व उन्नति के पथ पर कदम रखने के लिए ये लोग दो पैसे भी नहीं जुटा पाते। मेहनत के बाद भी यदि एक तरफ जीवन की मूलभूत आवश्यकतायें पूरी नहीं होतीं और दूसरी ओर छल, कपट, बेईमानी रिश्वतखोरी, मुनाफाखोरी से जब एक ही साल में ५ लाख की कोठी खड़ी हो जाती है, सड़कों पर कारें दौडने लग जाती हैं तो इसको भाग्य का चमत्कार कहना गरीबों की जिन्दगी का मज़ाक उड़ाना है।

आज देश का यह दलितवर्ग कोस रहा है १९४७ की उस आजादी को जिस दिन देश के भाग्यविधाता ये अभागे सोचते थे कि 'स्वराज्य' में 'सुराज्य' भी आयेगा। मोतीलाल के सुपुत्र जवाहर लाल समाजवाद लायेंगे, जवाहर लाल की बेटी इन्दिरा समाज बाद लायेगी। साम्यवाद समाजवाद के अनेक नारे देश में लगाये गये। परन्तु—

व्यवस्था वही पुरानी है. यहां वाद बदलते आये हैं।
इस खूनी वधशाला के, जल्लाद बदलते आये हैं।।

देश के नेताओं ने गावों में जा कर गरीबों को सम्भालने के बदले दिल्ली, बम्बई और कलकत्ता को सजाया। चण्डीगढ़ जैसे खुले शहर को सजाने बसाने की स्कीम में पैसे वालों को बड़े बड़े प्लाट व चौड़ी चौड़ी सड़के उपलब्ध हो गई पर साथ के ही गांव में रहने वाले हरिजन को रहने को जमीन का छोटा सा टुकड़ा भी मुयस्सर नहीं हो सका। फुब्बारे, पार्क आदि बनाने को तो प्राथमिकता मिल गई परन्तु मच्छरों से भिनभिनाती गांव की कीचड़ भरी नालियों में दो ईंट बिछाने को पैसा नहीं मिल सका। मन्त्रियों की कोठियो में फर्नीचर के लिए हजारों रूपये सरकार के पास हैं उनके डी०ए० टी०ए० का प्रबन्ध झट हो जाता है परन्तु यह सब पैसा जहां से आता है उन गरीब ग्रामीण जनता की सुविधा के लिए उनके जीवन में भी खुशियों के दो क्षण लाने के लिये सरकार के पास न धन है और न समय।

देश की जनता ने बड़ी घुटन के बाद देश में एक परिवर्तन किया है। देश की व्यवस्था से तंग आकर कांग्रेस सरकार को उखाड़ जनता सरकार की स्थापना की गई है इस आशा के साथ कि सरकार परिवर्तन के साथ ही साथ व्यवस्था में भी परिवर्तन होगा। इसलिए एक आदमी एक ही काम की नीति से बेरोजगारी को मिटाकर तथा विषमता के अन्याय-पूर्ण अन्तर को मिटाकर १ और १० के अनुपात से समाजवादी कदम उठाने से ही गरीबों के साथ सहानुभूति हो सकती है केवल विधानसभा व लोक सभा में आपसी झगड़ों में उलझ कर नेतागिरी के मोह में आकर व काफी और बिस्कुट के सामने कुर्सियों पर बैठ कर प्रस्ताव पास करने से गरीबी नहीं मिटेगी।

पंजाब प्रांतीय आर्य युवक परिषद्

पंजाब प्रांतीय आर्य युवक परिषद् की बैठक दिनांक 25-9-77 रविवार आर्य समाज लक्ष्मणसर, अमृतसर में स्वामी वेदानन्द जी सरस्वती, प्रधान पंजाब प्रांतीय आर्य युवक परिषद् की अध्यक्षता में हुई। (जिसमें श्री नंद किशोर जी एम० ए०, मंत्री प्रांतीय युवक परिषद्, पंजाब, श्री ओम प्रकाश जी, मंत्री आर्य समाज लक्ष्मणसर तथा उप-प्रधान पंजाब प्रांतीय युवक परिषद् प्रो० विनोद पाल जी एम०ए० कार्यकारी प्रधान आर्य समाज लक्ष्मणसर, श्री अशोक कुमार महता, प्रधान केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् अमृतसर, श्री विजय कुमार जी ग्राम पनयाड़ (दीनानगर) तथा बीस अन्य नवयुवकों ने भाग लिया।)

इसी संदर्भ में 7-7-77 को स्वामी वेदानंद जी की अध्क्षता में ज्ञान आश्रम हायर सैकंडरी स्कूल में एक सैद्धांतिक शिविर का आयोजन हुआ था, जिसमें लगभग 40 नवयुवकों (कालिज विद्यार्थियों) को आर्य समाज के सिद्धांतों का गहन परिचय कराया गया। भाग्यवाद तथा पुरुषार्थवाद, अवतारवाद, और आर्य राष्ट्र निर्माण आदि अनेकों विषयों पर युवकों ने जम कर वाद-विवाद किया। यह शिविर तीन दिन तक चला।

अगामी कार्यक्रम हेतू लिए गए निर्णय :

1. प्रांतीय आर्य युवक परिषद् की गतिविधियों में तीव्रता तथा प्रचंडता लाने के लिए यह निश्चय हुआ कि एक वैतानिक कार्यकर्ता रखा जाए, जो ग्राम-ग्राम नगर-नगर में जाकर परिषद् (आर्य समाज, के सिद्धांतों अर्थात् युवकों को चरित्र निर्माण की ओर प्रोत्साहित करे।

2. दिसम्बर, 1977 में होने वाले शीत अवकाश में सप्ताह भर के लिए शिविर का आयोजन किया जाए। इसके साथ ही विधिवत् चुनाव भी कर लिया जाएगा।

3. प्रांतीय युवक परिषद् पंजाब का स्थाई कार्यालय (पत्र व्यवहार के लिए) आर्य समाज लक्ष्मणसर में होगा।

4. परिषद् अपना पाक्षिक पत्र शीघ्र ही निकाले।

5. पंजाब सरकार ने 1978 में होने वाली आठवीं कक्षा की परीक्षा में केवल 1978 के लिए ही हिंदी माध्यम की छूट दी है। परिषद् मांग करती है कि इस छूट को स्थाईरूप दिया जाए ताकि आठवीं की परीक्षा में बैठने वाले एक लाख छात्रों एवं उनके अभिभावकों को हर वर्ष माध्यम के कारण होने वाली परेशानी से सदा के लिए मुक्ति मिले। ऐसा प्रस्ताव पास करके हर स्थानीय परिषद् पंजाब सरकार को भेजे।

6. पंजाब के डी०ए०वी० कालिजों के मान्यवर प्रिंसीपल महोदयों से प्रार्थना की जाए कि कालेज में होने वाले सभी समारोहों में हिंदी भाषा का अधिक से अधिक प्रयोग हो। डी०ए०वी० कालजों का मुख्य उद्देश्य आर्य भाषा तथा आर्य संस्कृति की रक्षा करना ही था। सभी परिषदों से आग्रह है कि वे स्थानीय डी०ए०वी० कालिजों के प्रिंसीपलों से प्रार्थना करें कि कालिजों में और सामारोहों में हिंदी के उपयोग को उचित स्थान दें। इसी सम्बन्ध में 28-9-77 के पंजाब केसरी मे प्रिंसीपल बहन के नाम सम्पादकीय लेख के लिए लाला जी को सभी परिषदें धन्यवाद देती हैं।

7. सभी परिषदों को सूचित किया जाता है कि मद्य निषेध के पक्ष में जोरदार प्रस्ताव पास करके केन्द्रीय सरकार को भेजें।

नंद किशोर एम०ए०,
मंत्री पंजाब प्रांतीय आर्य युवक परिषद्।

लुधियाना में आर्य समाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं की हंगामी बैठक :

30 अक्तूबर को तिलकनगर लुधियाना में श्री यशपाल जी आर्य के मकान पर लुधियाना के आर्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्ताओं की बैठक अत्यन्त उत्साह के वातावरण में श्री स्वामी वेदानन्द की अध्यक्षता में हुई जिसमें लुधियाना जिले की सभाओं को सक्रिय करने तथा नई आर्य समाजें स्थापित करने का निर्णय लिया और श्री आशा

नन्द जी वेद रत्न जो, श्री सन्त कुमार जी, श्री अमर नाथ जी महाजन, श्री विनय कुमार जो मरीत श्री मा० ज्ञान चन्द जी एवं ठा० कान्तिनन्द ने जिले भरके सभी कस्बों एवं नगरों की आर्य समाजों में जा कर वहा के कार्य कर्ताओं एवं अधिकारियों से सम्पर्क करने का उत्तरदायित्व अपने पर लिया। लुधियाना के आर्यो ने स्वामी जी से शीघ्र पंजाब प्रांत की उपप्रतिनिधि सभा के गठन करने की मांग की। शीघ्र लुधियाना जिले की सभी समाजों के कार्यकर्ताओं की एक बैठक करने का निश्चय किया जिसमें आर्य प्रतिनिधि मण्डल निर्माण किया जायेगा तथा जिले में आर्य समाज के कार्य के विस्तार करने की योजना तैयार की जायेगी।

फिल्लौर में आर्य युयक परिषद् की स्थापना

30 अक्टूवर को आर्यसमाज फिल्लौर में आर्य युवकों की एक बैठक श्री स्वा० वेदानन्द ने की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमे 38 नवयुवकों ने भाग लिया तथा लुधियाना के आर्य युवकों ने भी इस अवसर पर पहुंच कर फिल्लौर के नवयुवकों का उत्साह बढ़ाया। अत्यन्त उत्साह के वातावरण में होनहार युवकों ने सदस्य वनकर आर्य युवक परिषद् का पुनर्गठन किया तथा शीघ्र ही फिल्लौर में एक युवक सम्मेलन तथा योगासन तथा व्यायाम की शाखा चालू करने व्यायाम शाखा के रुप में व्यवस्था करने का निर्णय लिया।

इसी बैठक में परिषद् का चुनाव भी कर दिया गया जिसके संयोजक एवं संरक्षक श्री विनोद जी तथा प्रधान श्री मनमोहन जी गोयल तथा उनके सहयोगी कार्यकर्ता श्री जीवन सन्देश, श्री मा० कृष्ण जी शर्मा, श्री वेदप्रकाश जी तथा प्रदीप कुमार जी भण्डारी इत्यादि को मनोनीत किया है। सभी आर्ययुवकों ने न केवल फिल्लौर नगर में अपितु आस पास के ग्रामीण क्षेत्रों में भी ऋषि दयानन्द एवं वेद के विचारों की धारा को फैलाने के लिए दृढ़ संकल्प किया।

(पृष्ठ १० का शेष)

यह जबरदस्त चेतावनी याद रखनी होगी—क्या अगली बार वोट नहीं लेना है ? कहा जाता है कि अभी हाल के विधान-सभा चुनाव में बिहार के गोपालगंज जिले के एक 'नमूना' चुनाव क्षेत्र में दोनों उम्मीदवारों की ओर से 500-500 बंदूकें तथा एक एक मशीनगन कमजोर गरीब तबके के 'वोट अपहरण' करने में संलग्न था। कुछ विधि विशेषज्ञों की दो टूक राय है कि अगर वाकई 'बंदूक की राजनीति' तथा 'बंदूक राज' के वर्चस्व का अंत करना है तो सर्वप्रथम संविधान में सम्पत्ति की सुरक्षा के मौलिक अधिकार की विदाई करनी होगी। उस की जगह संपत्ति की सुरक्षा का 'कानूनी अधिकार' रखा जा समता है। व्यक्ति तथा व्यक्तिगत हित की कारगर सुरक्षा का जिम्मा राज्य सत्ता को पूर्णरूपेण लेना होगा, तभि न रहे बाँस (सम्पत्ति) न बजे बांसुरी (बंदूक)।

बंदूक शक्ति का असली जवाब संगठित जनशक्ति है और दीर्घायु जनशक्ति का आधार है टिकाऊ जनसंगठन। गांव गांव तत्काल खेत मजदूर ट्रेड यूनियनों का गठन शुरू होना चाहिए। ऐसे संगठन सुरक्षा तथा सशस्त्रता का बंदोवस्त स्वयं तथा सरकार की मदद से कर लेंगे। शहरों में कारखाना मालिक अपने संगठित मजदूरों पर गोली चलाने के लिए पुलिस को बुलाते हैं, अत: सरकार को अपने पुलिस बल के संगठन तथा मिजाज में जनोन्मुख परिवर्तन लाना चाहिए।

ज़मींदार की बंदूक शक्ति को घटाने, मजदूर की जनशक्ति को बढ़ाने तथा पुलिस का मिजाज दुरुस्त रखने पर शक्ति संतुलन आज की तरह एकपक्षीय हो कर डगमगायेगा नहीं।

सूचना

समाज बदलने का संकल्प लेना ही महर्षि को सच्ची श्रद्धाँजलि है।
—डॉ० रामप्रकाश

अबोहर नवम्बर ७, आज यहां डी० ए० वी० कालेज आफ एजूकेशन के प्रांगण में महर्षि दयानन्द निर्माण दिवस के अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उप-प्रधान एवं पंजाब विश्वविद्यालय की सीनेट के सदस्य डॉ० रामप्रकाश जी ने कहा कि वर्तमान समय में समाज के गले-सड़े ढांचे को बदल कर एक नये समाज की पुनर्संरचना करना जिसमें वैदिक वर्ण-आश्रम व्यवस्था के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति को उन्नति के समान अधिकार प्राप्त हों, ही महर्षि दयानन्द को सच्ची श्रद्धाञ्जलि हो सकती है। उन्होंने उपस्थित हजारों युवकों को आह्वान किया कि वे महर्षि के सपनों का आर्य राष्ट्र निर्माण करने के लिए आर्य समाज में अधिक से अधिक भर्ती हो कर संगठन शक्ति का परिचय दें। उत्सव की व्यवस्था कालेज के प्रिंसीपल श्री सत्यपाल दुग्गल ने की।

कहानी

पंचायत के परमेश्वर?

मधुकर सिंह

हमारे गाँव से एकदम सटा भेखीटोला है, जहां मुश्किल से पंद्रह-बीस परिवार रहते हैं। वे सभी मजदूर हैं, जो अगल-बगल के गांवों में हलवाई या दूसरे-दूसरे काम करते हुए यों ही बस जी रहे हैं। औरतें घास काट कर बेचने के लिए शहर ले जाती है। तीन-चार नौजबान शहर में रिक्शा-मजदूर भी हैं। वे खूब तड़के उठ कर शहर चल देते हैं और रात दस-ग्यारह बजे तक गांव लौट आते हैं। बीच रास्ते में एक छोटी-सी नदी पड़ती है, जिसका रूप बरसात के दिनों में बड़ा भयानक हो जाता है। तैर कर आना-जाना पड़ता है। औरतों के लिए तो नदी और भी मुसीबत है। माथे पर गट्ठर ले कर नदी में घुसना ही पड़ता है। पर साल छबीला बहू पांव फिसल जाने से धार में गिर गयी थी। एक-दो औरतें साथ में थीं, जिनके माथे पर भी घास के गट्ठर थे। वे छबीला बहू को संभाल नहीं सकीं। छबीला बहू पानी के भीतर बैठ गयी और संगी-साथी औरतें चीख-चिल्ला कर चुप लगा गयीं। हर साल ऐसी घटनाएं होती रहती हैं। तब भी उनका आना-जाना कभी नहीं रुकता है। मरना कोई मतलब नहीं रखता न! जीने के यिए नदी का सीना चीर कर आना-जाना ही एक मतलब रखता है। आखिर नदी हर साल अपना राकसी रूप बढ़ाती क्यों जाती है? क्या बेबस और निर्दोष भेखीटोला वालों से इस नदी की भी दुश्मनी है? ये कितने सरल हैं कि मजदूरी बढ़ाने की बात अभी तक इनके कानों तक नहीं पहुंची है। ये मजदूर बड़े ही निस्तेज और प्राण हीन हैं।

गंगा-पार से आ कर भोला मियां कुछ दिनों से यहीं बस गया है। टोले में आते ही, इन लोगों के साथ ऐसा घुल-मिल गया, जैसे इन्हीं के साथ का, खानदानी बाशिंदा हो। वैसे, खानदानी बाशिंदा यहां कोई भी नहीं है। भेखी राउत को तीस-चालीस साल पहले मेरे गांव के साधूसिंह ने बेदखल कर दिया, तो वह अपनी पांच कट्ठा धरती के एक कोने में मड़ई बना कर रहने लगा। वहीं भेखी राउत फैल कर कई घर हो गया है। बाकी लोग इधर-उधर से आ कर गैर-मजरुआ जमीन पर बसते गये। भोला मियां उन्हीं भगोड़ों में एक है। उसे यहां यही लगता है जैसे बाप-दादों की बस्ती में लौट आया हो। भोला मियां में एक चीज बड़ी जबरदस्त है। भेखीटोला वालों को जब शहरी घटनाएं सुनाता है, तब वे बड़े अचरज में पड़ जाते हैं। भोला शेर-दिल आदमी है। क्या मजाल, जो पुलिस उसे छू तक दे। न किसी से किराया कम लेता है, न ज्यादा। किसी ने आंख दिखाने की चेष्टा की, तो भोला तन जाता है। एक बार सिपाही उसके रिक्शे पर चढ़ कर बिना किराया दिये चला जा रहा था। भोला मियां ने उसका गट्ठा पकड़ लिया। पुलिस ने उसे पटक कर मारा जरूर, मगर भोला भी अन्याय का मामूली दुश्मन नहीं है। उसने शहर के रिक्शा-मजदूरों को इकट्ठा किया और दिन भर की हड़ताल करा दी। तब से पुलिस भी बिना किराये रिक्शे पर चढ़ने में डरती है। भोला मियां फटाफट, जब चाहता है, निडर होकर मन की बातें बक देता है—'बे, मुर्दे की औलादो! यूनियन बनाओ, यूनियन। नहीं तो ताकतवरों की जात होती है बड़ी जालिम। यूनियन बना कर रहोगे तो कोई तुम्हारी तरफ आँख उठा भी नहीं सकता।' इतना तो है कि भोला मियां के चलते शहर में बड़ी तगड़ी यूनियन है। रिक्शाचालकों को पहले जैसा भय अब नहीं है। कुछ भी हो, भेखीटोला बिलकुल हैरत में है कि भोला मियां पुलिस के साथ कैसे लड़ जाता है! यहां तो साधूसिंह की आज भी बहुत चलती है। वैसे, गांवों में एक-दो नहीं, दर्जनों साधूसिंह हैं।

भोला मियां की बात फैलते-फैलते साधूसिंह के कानों तक चली गयी थी। साधूसिंह ने किसी से कुछ कहा नहीं। परंतु इतना समझ लिया कि भोला मियां नाम का जीव जरूर कोई नेता-टाइप आदमी है। भेखीटोला और अगल-बगल के लोगों को भड़काता है। लेकिन इसे गंभीरता से भी लेने की जरूरत नहीं है। कभी साले पड़ गये फेर में, तब तो तीनों लोक नजर आने लगेगा कि कहां-से-कहां रहने के लिए चले आये हैं। भेखीटोला छोड़कर कहीं दूसरी जगह

जाना नहीं पड़ गया, तब फिर क्या ! असल में भेखीटोला ही आँखों का कांटा है। साले मजदूर बड़े मंहगे होते जा रहे हैं ! अधिकतर वे शहर की ओर भागने लगे हैं। कहते हैं, गांव में मजदूरी कम तो मिलती ही है, सांसत भी बहुत ज्यादा है। शहर में तो जो भी मिलता है, चैन से मिल जाता है। यहां की तरह खिच-खिच तो नहीं न है। यही बात यहां के बड़ों के लिए बर्दाश्त के बाहर है। ऊपर से भोला मियां आग में खर का काम कर रहा है। भोला की बातें भी तो किसिम-किसिम की होती रहती हैं। एक दिन वह साधूसिंह से बोला, 'मालिक, रिक्शा की जब भी जरूरत हो, मैं बराबर हाजिर हूं।'

साधूसिंह ठठा कर हंसे। फिर बोले, 'तुम्हें तो कोई काम-वाम नहीं करना चाहिए, भोला। नेता लोग काम नहीं करते।'

भोला बड़ी सरलता से मुसकराया, 'वे लोग तो, मालिक, घर के इतने बड़े और निश्चित होते हैं कि कुछ न करते हुए भी जी सकते हैं। नेतागिरी के लिए तो आप ही बड़े सही आदमी हैं, मालिक। आपके सामने मुझे कौन नेता मानेगा ?'

'अच्छा, भोला मियां !' साधूसिंह ने बात बदल दी, 'तुम्हारा नाम भी गजब है। हिंदू हो या मुसलमान—इसका कुछ पता नही चलता !'

'आज तक यह सब, सोचने-विचारने के लिए फुर्सत ही कहां मिली, मालिक !'

'मंहगाई का सबसे बड़ा कारण यह भी है भोला मियां, कि मजदूर सोना-चांदी से भी अधिक मंहगे होते जा रहे हैं।'

'आदमी से भी वजनी सोना है। है न ?'

साधूसिंह दोबारा ठठा कर हंसे।

पहली बार भोला मियां को एक जबरदस्त भय महसूस हुआ था।

'तुम्हारी मेहरारू को बकरी का बड़ा शौक है न ?' साधूसिंह ने पूछा।

'नहीं, सरकार।' भोला मियां बोला, 'आप लोगों के बधार में बकरियां चराती फिरती है कि इन्हें पोसने—पालने से बेच कर दो-चार पैसे मिल जायेंगे। मुझे भी तो टी. बी. है। बहुत अधिक रिक्शा नहीं खींच पाता।'

'रिक्शा चलाना कोई काम है ?' साधूसिंह ने गुस्से में थूका, 'मेरे दरवाजे पर तो इससे भी बढ़िया-बढ़िया काम हैं।'

'चलता हूं, सरकार !' भोला की उदासी अचानक गहराने लगी थी।

'एकाध खस्सी कभी खिलाओ, भोला मियां !'

'खिलाऊंगा, मालिक।'

'पक्का ?'

'बाप कसम, पक्का !'

* * *

सचमुच भोला मियां एक खस्सी साधूसिंह के दुआर पर पहुंचा आया था। भेखीटोला वाले फिर अचरज में पड़ गये थे। यह भोला मियां खुशामद में खस्सी दे आया कि डर से – कुछ भी पता नहीं चलता। भोला की सब हेकड़ी कहां घुस गयी ? अरे, कुछ दिन और गांव में रह ले तब सही हालत समझ में आने लगे। हंकड़ते होंगे शहर में। यहां तो भीगी बिल्ली बन कर ही रहना पड़ता है।

लेकिन एक चीज जरूर है। भेखीटोला की औरतें और बच्चे, भय के मारे अपनी बकरियां उनके खेतों की ओर कभी नहीं जाने देते। जहां उनके खेत में एक भी पड़ी कि वे लाठी दिखाकर उठा लेते हैं और मार कर खा जाते हैं। कोई कुछ भी नहीं बोल सकता। नदी-किनारे पठार पर इनकी बकरियां चरती हैं। बरसात के दिनों में कुछ ही दिनों चरी रहती हैं। बाकी दिनों में बकरियां यों ही हाँफती रहती हैं। उन्हें भी आदमियों की तरह भय हो गया है। वे बहक कर भी उनके खेतों की ओर नहीं जातीं। सारा दिन नदी की तलहटी में ही सारी बकरियाँ पड़ी रहती हैं। लेकिन भोला मियाँ की बकरियों पर ताज्जुब हैं। ये बकरियां परती खेतों में कैसे चली जाती हैं ! इसकी मेहरारू तो गजब है। अपनी बकरियाँ उन्हीं खेतों की तरफ हांक कर ले जाती हैं। और सारा दिन वहीं बैठ कर चराती रहती है। उसे वे लोग मना क्यों नहीं करते ? क्या भोला मियां की मेहरारू शहरी किसिम की है, इसीलिए सभी उससे भय खाते हैं ?

जो ही, भोला मियां यहां आया है, तब से भेखीटोला में काफी रौनक रहती है। पहले तो यहां इतना सूनापन और जड़ता थी कि पता ही नहीं चलता था कि कोई आदमी भी रहता है। सब कुछ आज ही सुअर के कोटोरों जैसा ही है। शाम होते ही भोखीटोला धुएं में डूबता जाता है।

अन्धेरे के भीतर गुमसुम भेखीटोला सूर्योदय के पहले तक काफी मटमैला और बरारफटी तलैया जैसा नजर आता है। सूर्य की किरणों के साथ ही मिमियाती बकरियां नदी कि ओर भागती हैं। सारा टोला खाली रहता है। यहां तक कि बुढ़े और बूढ़ियां भी घूटनों और पिंडलियों के बल सरक-कर बधार में घास के लिए निकल जाते हैं।

* * *

एक दिन भोला मियां की बकरी जनकधारी रामतरोई के खेत में घुस गयी। उसकी मेहरारू अभी तक आरी पर ही बैठी थी। नजर पड़ते ही बकरी हांकने के लिए दौड़ी। तब तक जनकधारी ने उसकी बकरी पकड़ ली थी और एक टांग पकड़ कर ऐसे नचा कर फेंक दिया कि बकरी वहीं साफ हो गयी। भोला बहूबुक्का फाड़ कर ऐसे रो-छछन रही थी, जैसे बेटा मर गया हो। जनकधारी का गुस्सा तब भी नहीं ठंडाया, तो कसकर लाठी भोला बहु के माथे पर चला दी। बेचारी औरत जात! कबूत ही कितनी! सिर फट गया और जोरों से खून चलने लगा। थोड़ी देर तक छटपटानें के बाद बेहोश हो कर शांत हो गयी।

दूर से देखकर एक-दो औरतें और कुछ लड़के वहां आये और भोला बहु को उठाकर टोले पर ले आये। वह थोड़ी देर के बाद होश में आती थी और फिर बेहोश हो जाती थी टोले के लोग बिल्कुल असहाय थे और उन्हें यह समझ में नहीं आ रहा था कि भोला मियां की औरत को बचाने के लिये क्या उपचार किया जाये।

भोला रात को शहर से लौटा। घटना सुनते ही गुस्से में आ गया। वह पागल की तरह चिल्ला रहा था। दो-चार नौजवानों को खीचकर गरियाने लगा, 'साले, तुम लोग आदमी नही जानवर हो, जानवर! मैं परदेसी तुम्हारी शरण में आयाहूं और मेरी गैरहाजरी औरत का मगज चूर करवा दिया। अब बताओ तो, इस लाश को लेकर आधी रात में किसके पास ले जाऊं? तुम कैसे नामर्द हो—तुम्हारी दवा गांवजवार वाले ठीक करते हैं। काम कराते हैं और लात मारकर भगा देते हैं। ठीक करते हैं एकदम ठीक करते हैं.........

जो लोग उसके साथ वहां थे, वे सभी नामर्द ही तो थे। कुछ तो गूंगे की तरह भोला मियां का बकवास सुन रहे थे। कुछ अपने-अपने बाड़ों में खिसक गये थे। जो खड़े रह गये, उन्हें सम्बोधित करते हुए भोला फिर कहने लगा तुम लोग सुन रहे हो कि नहीं? मैं जनकधारी पर मुकदमा करूंगा। उसने असहाय और बेबस औरत पर हाथ छोड़ा हैं और जान की कोशिश की है।'

नौजवानों में उसकी बातों से गर्मी भी आयी थी। कुछ भोला मियां की ओर से गवाही के लिए तैयार भी थे। भोला का गुस्सा अब धीरे-धीरे शांत हो गया था और वह अपनी औरत के सिरहाने बैठकर रो रहा था।

वे लोग उसी रात को भोला बहु को खाट पर लाद कर शहर ले आये। सब से पहले टाउन थाना में गये, जहां थानेदार या मुंशी कोई भी नहीं था। खाली संतरी चौकी पर बैठा-बैठा ऊंघ रहा था। उसने उसे डांट कर खदेड़ दिया कि यहां अभी कोई नहीं मिलेगा। दो-ढ़ाई बजे रात में भला अच्छा आदमी मिलता है? कुत्तों, गुंडों और चोरों के अलावा कौन इस वक्त मिल सकता है? सुबह दस ग्यारह तक आना बड़े साहब रहेंगे। अभी तो बड़े छोटे सब सो रहे हैं। वे जब अस्पताल के फाटक पर आये, तब जेल का घंटा तीन बजा रहा था। कार्यालय के बरामदे में पीलापन लिये हुए अन्धेरा था। जिस डाक्टर की ड्यूटी थी वह घर चला गया था। कंपाउंडर चारों तरफ से दरवाजे खींचकर आफिस की टेबिल पर चित्त पड़ा हुआ था। उसकी नाक इतने जोरों से बज रही थी कि उसके जागने का सवाल ही नहीं था। भोला फफक-फफक कर रो रहा था और कंपउंडर को जगा रहा था। मगर वहां सुनने के लिए तैयार कौन था? अस्पताल के भीतर जो विशाल वट वृक्ष है, उसके ऊपर दर्जनों बगुले रह-रह कर चीख और पंख फड़फड़ा रहे थे। जहां पोस्टमार्टम घर है, वहां का खूनी सन्नाटा विशाल राक्षस की शक्ल में अस्पताल के चारों तरह गहराया हुआ था। वे चारों तरफ से थक कर भोला बहु की खाट के पास बैठ गये। जगदीश, जमुना गुलाब, मच्छू सनीचर, गंगा, यहां तक कि भोला मियां भी—सबके सब समझ रहे थे कि इस औरत का बचना मुश्किल है। किसी भी क्षण प्राण त्याग सकती है, क्योंकि रह-रह कर आंखे तरेर देती थी और बकने लगती थी,... सबके सब राकस हो राकस! मुझे मारने के लिए खाट पर लाद कर ले आये हो! यह अस्पताल ही है न! सब समझती हूं। यहां से तुम लोग कब्रगाह ले जाओगे.........'

'तुम सो जाओ न! भोला ने उसे समझा, जोर से बोलोगी तो घाव और भी दरद करने लगेगा। सुबह तक डाक्टर साहब आ जायेंगे, तब तुम अच्छी हो जाओगी। और हम शाम तक घर लौट चलेंगे।'

'तुम कौन हो ?' वह बोली ।

'मैं हूं, मैं । भोला मियां — तुम्हारा मरद ।'

औरत ने जोर से हंसने की कोशिश की—मेरे मरद को तो राकस निगल गये हैं । तुम मेरे मरद कैसे हो तकते हो ।'

भोला मियां की आंखों मे अश्रूधारारुक नहीं सकी । गंगा, सनिचर मच्छु, जगदीश आदि सब मिल-झुल कर समझाने लगे ।

दूसरे दिन लगभग दस बजे भोला की बहू को टांका पड़ा और पट्टियां बधीं । स्ट्रेचर पर उसे बाहर निकाला गया. तो बह बेहोश थी ।

लगभग एक दिन बाद उसे होश आया ।

जब डाक्टर ने यह कहा कि मरेगी नहीं, बच जायेगी, तब भोला मियां के चेहरे पर कई दिनों के बाद मुस्कराहट आयी । डाक्टर ने रिपोर्ट बड़ी ईमानदारी से तैयार की थी । उसमें बताया गया था कि चोट बड़ी गम्भीर है दिमाग के भीतर गहरा आघात है और मस्तिष्क विकृत होने का भी भय है । एक दो रोज के बाद से ही साथी रिक्शाचाक बारी-बारी अस्पताल पहुंचने लगे थे । इसलिए भोला ने मच्छू को देखभाल के लिए अस्पताल में ही छोड़ दिया और खुद भखीटोला आ गया ।

वह सीधे साधूसिंह के दुआर पर पहुंचा और बोला, 'मालिक ! जनकधारी बाबू ने मेरी औरत को मार कर ठीक काम नहीं किया है । यह डॉक्टर की रपट पढ़ लीजिए । थानेदार अस्पताल में आया था । मेरी औरत का बयान ले गया है । मैं आपसे मदद और दो-चार गवाहों के लिए आया हूं । चाहता हूं कि आज ही शाम को आप ही के दुआर पर पंचइती करूं । क्या सलाह देते हैं ?'

पंच तो परमेश्वर होता है, भोला मियां. साधूसिंह ने कहा, 'मैं परमेश्वरों से अलग कहाँ जाऊंगा ?'

शाम को साधूसिंह के दुआर पर ज्वार-पथार के लगभग पच्चीस-तीस चुने हुए लोग भोला मियां के बुलाने से पंचाइत में आये । सब मिला कर सौ-सवा सौ आदमी हो गए थे । भोला मियां के अलया भेखीटोला और इस तरह के दूसरे आदमियों को यही भरोसा था कि जनकधारी को जम कर दण्ड मिलेगा । बाप रे बाप ! भला ऐसा जुल्मी आदमी कहीं होता है । खेत में वकरी घुम गयी, तो हांक देते या भोला मियां की मेहरारू को ही डांट देते कि आगे से ऐसी गलती नहीं हो । सच्ची बात यही थी कि बकरी अभी तक पेड़ सूंघ भी नहीं पायी थी कि जनकधारी को नजर पड़ गयी । बेचारे भोला को बकरी से तो हाथ धोना ही पड़ा, औरत को भी मार कर खराब कर दिया । वाह रे जनकधारी, वाह ! धन-जन का इतना घमण्ड ! कमजोरों के लिए तो यह दुनिया बनी ही नहीं । ताकत है तो क्या मतलब, जिसे चाहोगे चबा जाओगे ?

पंचइती परमेंसरों ने यही फैसला किया था कि जनकधारी को हठात लाठी नहीं चला देनी चाहिए थीं । परन्तु जनकधारी भी कोई ऐरा-गैरा आदमी नहीं । इस बेचारे की भी मर्यादा है । भोला मियां को मुकदमा करना हो था, तो दो-चार अच्छे लोगों से पूछ लेना चाहिए था कि ऐसा काम करने जा रहा हूं । लेकिन भोला मियां भी गरीब आदमी है । हमारी शरण में चला आया, तो इसकी भी इज्जत है । यही सब ख्याल करके भोला मिया से आरजू है कि वह पहले जनकधारी के खिलाफ मुकदमा उठा ले । तभी पंच को भी मुंह है कि जनकधारी से कहे कि दवा-दारू में जो भी हरजा-खरचा लग गया है, वह भोला मियां को दे दे । कोई भी गवाही देने नहीं जाएगा ।

पंचाइत के बाद फिर कहाँ हिम्मत थी कि भेखीटोला का एक भी आदमी गवाही के लिए तैयार हो जाए ! अब तो उनकी आरी पर चलना भी जुल्म था । क्या ठिकाना ! किसे कब आरी पर चलने के जुल्म में मार दें ! भोला मियाँ का बड़बड़ाना पंचाइत में ही शुरू था । वह अपमान-बोध से जला जा रहा था । उसने कहा, 'पंचो ! नीयत में खोट है, खोट ! कहाँ तक एक परदेशी और गरीब आदमी की मदद करते, तो सीधे फैसला सुना दिया कि पहले भोला मियां केस में सुलह कर ले ? वाह रे पंचो, वाह ! आग लगा दूं ऐसी पंचइती में ! परदेशी आदमी था । इन्हें चाहिए था । कि मुझे अपनी हथलियों पर उठा लेते । मैं जब तक जिंदा हूं, मुकदमा वापस नहीं ले सकता । मैं यहा के नामर्दी को दिखला दूंगा कि स्वाभिमान क्या होता है ।'

कुछ दिनों तक तो इस मामले की बड़ी चर्चा रही । मगर खाली चर्चा से क्या होता है ? धीरे-धीरे बात दबती चली गयी । भेखीटोला के जो भी एक-दो गवाही के लिए तैयार थे, वे सभी मुकर गये । उन्हें भविष्य की भी तो चिन्ता थी । सनीचर, जगदाश, मच्छू, गंगा, जमुना, गुलाब, सभी डर के मारे भोला मियां से अलग हो गये ।

* * *

पूरे एक महीने बाद भोला की औरत अस्पताल से लौटी। सचमुच उसका दिमाग ठिकाने नहीं लगता था। लग रहा था कि भेखीटोला के किसी भी आदमी को नहीं पहचानती है। यहां तक कि भोला मियां से भी खौफ खाती है। चुपचाप घर से निकल जाती है और जनकधारी की आरी पर बैठ कर खेतों की ओर ताकती रहती है। भोला समझा-बुझा कर थक जाता है मगर झगड़ कर फिर वहीं भागती है। जब से अस्पताल से लौट कर आयी है, तब से एक बार भी हंसी नहीं है, जैसे ब्रह्मा ने कभी न हंसने वाली मूरत अकेली इसी भोला बहु को बनाया है।

भोला मियां रिक्शा खींचता रहता है और सवारियों के साथ कुछ न कुछ बड़बड़ाता रहता है, '....भेखीटोला वाले एक दम नामर्द हैं, बाबू जी! जुल्म के खिलाफ मुकदमा कर दिया, तो एक भी गवाह नहीं मिलता। सभी डरते हैं...पुलिस से नहीं, ज्वार-पथार के बड़े लोगों से। दुनिया कहीं कुछ बदली?'

कुछ तो रुचि लेकर उसकी कहानी सुनते हैं, कुछ उसकी अनसुनी करते हुए भीड़ में खोये रहते हैं। भोला मियां की परेशानियां दुगुनी हो गयी है। ससुरी औरत को गांव छोड़ने के लिए समझाता है, तो टकटकी बांध कर निहारती रह जाती है। नदी के पास तक आ कर फिर भाग जाती है। एक दिन भोला ने औरत को कस कर डांटा, 'क्या चाहती है तू? जनकधारी से प्रेम हो गया है क्या? उसी के साथ रहना है, तो चली जा। मेरा मन भेखीटोला में बिलकुल नहीं लगता। मैं यहां से हमेशा के लिए चला जाता हूं।'

औरत ताबड़तोड़ जनकधारी के खेत की ओर ही नहीं, भोला मियां के ऊपर भी ढेला चलाने लगी। लोगों ने उसे पगली कह कर चिढ़ाना शुरू कर दिया था। भोला बहू को जनकधारी ने लाठी से नहीं मारा था।

औरत का दिमाग तो पहले से ही खराब है। इधर आ कर पागलपन उभर गया है। ये सारी बातें और स्थितियां भोला बर्दाश्त नहीं कर पाता। वह खुलेआम पंचइती परमेश्वरों को ललकारता रहता है। पंचइती परमेश्वरों को सुन-सुन कर बड़ा दुख होता है। यह साला शांति भंग करने के लिए कहां से चला आया है? मगर भोला क्या करे। नामर्दों और जुल्मियों के बीच अपनी मेहरारू के चलते ही आता रहता है।

एक दिन भोला मियां नदी की तलहटी में मरा हुआ पड़ा था। जनकधारी का सारा दुख ही समाप्त था। मगर भोला बहू का पागलपन एकदम बदल गया है। चीखती-चिल्लाती मेरे गांव में भी चली आती है। लोग इसी फेर में हैं कि पगली को दूसरी जगह ले जा कर छोड़ दें—गांव-ज्वार को बहुत परेशान करती है।

करने को यह भी किया जा सकता है—कोई खाने के लिए अन्न का एक दाना मत दे। खुद टटा-टटा कर मर जायेगी, यह साली भोला बहू भी।

(पृष्ठ १४ का शेष)

मैंने भी कहा—पर और कुछ...कोई खेल, मेला त्योहार गाना, जात्रा, सिनेमा?'

'खेल तो हमें कोई खिलाता नहीं। कबड्डी खेलने का मन होता है' उसकी आवाज में निराशा थी—कबड्डी में बीस सारे लड़के होते हैं हमारी जात में है नहीं...मेला त्योहार तो घर में मना लें। हां कभी-कभी ताश खेल लेते हैं। सिनेमा तो शहर गया था तभी देखा था।

और अब जब दिल्ली वापस आया हूं तो रामनिवास से भी मुलाकात की। एक प्रेस में कागज मोड़ते हुए टांगें फैलाये बैठा था। उसे मैंने बताया कि उसके घर होकर आया हूं तो उसकी आंखों में आंसू छलक आए। बोला-कैसे हैं घर पर सब?

'ठीक हैं, तुम्हें याद करते हैं। मैंने उसे सांत्वना देते हुए पूछा—तुम खुश नहीं हो? तुम तो कहकर जिद्द करके आये थे दिल्ली...मैं कमा कर लाऊंगा दिल्ली से।'

'हां, जी', उसने अपनी आंखें पोंछते हुए कहा—मेरी गलती थी। मैं आठवीं में कम्पार्टमेंट फेल हूं। यहां बी. ए. पास को नौकरी नहीं मिलती। धक्के खाकर देख लिया। घर से पैसे मंगा कर गुजारा करता हूं।'

मैंने बात काट कर पूछा—क्यों घर में काम नहीं है तुम्हारे लायक?

'जमीन कितनी है घर पर?'

'सौ बीघा'।

'काम ज्यादा हो जाता है तो क्या करते हैं घर वाले?'

'मजदूर रखते हैं दस रुपये, आठ रुपये रोज पर।

'मैं हंस पड़ा, बोला—' कमाल है दूसरों को तो अपने काम में दो ढाई सौ, तीन सौ रुपये और खुद पाओ—सवा सौ रुपये।

मेरी बात पर उसने पेंडुलम जैसा सिर हिलाया... शायद कुछ समझ में आ गया हो।

पंजीयन क्रमांक

एन० डब्लू/सी० एच० ९९

राजधर्म

३० नवम्बर, १९७

प्रकाशवीर शास्त्री अब नहीं रहे

आर्यजगत् के ओजस्वी वक्ता, तेजस्वी व्यक्तित्व और प्रतिभा के धनी भाई प्रकाशवीर जी हम से सदा के लिए छीन लिए गये। रेवाड़ी के निकट किसी मानवता के दुश्मन ने रेल की पटरियाँ खोल कर जो रेल दुर्घटना कराई—हमारे शास्त्री जी उसी दुर्घटना के शिकार हो गये।

शास्त्री जी इस देश में राष्ट्रवाद के प्रचण्ड प्रहरी थे—राष्ट्रभाषा के अग्रण्य प्रचारक और बड़े शालीन सांसदी थे। बड़े से बड़े मतभेद के बावजूद वे कभी अपनी गरिमा का परित्याग नहीं करते थे।

आर्य जगत् का यह दुर्भाग्य है कि एक वर्ष में ऋषि दयानन्द के चार सेनानी हमें छोड़कर चले गए। सबसे पहले हैदराबाद के पं० नरेन्द्र जी, फिर एटा गुरुकुल के स्वामी ब्रह्मानन्द जी दण्डी—उसके बाद महात्मा आनन्द स्वामी जी और अब युवा आर्य नेता भाई प्रकाशवीर जी। जहां अन्य तीन नेता वृद्धावस्था के परिपाक तक पहुंच चुके थे वहां प्रकाशवीर जी का 54 वर्ष की आयु में असामयिक निधन हम सबके लिए बेहद कठोर आघात है—परमपिता की इच्छा सर्वोपरि है—उसी से प्रार्थना है कि हमें शक्ति और साहस दे, सद्बुद्धि और सद्प्रेरणा दे ताकि हम इन वर्चस्वी नेताओं के आदर्शों को पूरा करने में आजीवन संघर्ष मार्ग पर आगे बढ़ते रहें।

अग्निवेश
प्रधान
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

राजधर्म प्रकाशन के लिए रोक्साना प्रिंटरज, 83-84 सैक्टर 16-डी, चण्डीगढ़ से स्वामी अग्निवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित आर्यसमाज सैक्टर 16 चण्डीगढ़।

साप्ताहिक

राजधर्म

वर्ष ६ अंक ६ संपादक स्वामी अग्निवेश मूल्य ५० पैसे
वार्षिक १५ रु०

डीग बदल रहा है !

इसके बाद की अगली बैठक गांव की चौपाल में की गई। इस गाँव की यह विशेषता पाई कि सूचना मिलने के दस मिन्ट में सारा गांव इक्ट्ठा हो जाता है। इस बार हमारे साथ भाई बिशन सिंह जी के अलावा कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय के रीडर डा० जयभगवान गोयल भी थे। उन्होंने एक विचार दिया कि गांव का सुधार करने के लिये आवश्यक है कि गांव का सर्वे किया जाय। यह काम युवकों की ग्राम सुधारसमिति को सौंपा गया। उनसे कहा गया कि वे निम्न बातों का पता लगायें।

१. गाँव की कुल जनसंख्या कितनी है और कुल परिवार कितने हैं ?
२. कितने लोग पाँच एकड़ से अधिक जमीन के मालिक हैं कितने इससे कम ?
३. कितने हैं जिनके पास जमीन के अलावा दूसरा तीसरा आमदनी का साधन है और कितने हैं जिनके पास जमीन बिल्कुल नहीं है पर जो मजदूरी पर जीते हैं।
४. ऐसे कितने लोग हैं जिन के पास न जमीन है न मजदूरी ?
५. शिक्षित (कम से कम मैट्रिक) अर्धशिक्षित और अशिक्षित कितने हैं ?

इस तरह के दो चार और प्रश्न थे। डीग के युवकों के लिये इस तरह का काम सर्वथा नया था। उन्हें एक सप्ताह का समय दिया गया था। मुझे कहते हुए बड़ी खुशी हो रही है कि इस कार्य को हमारे युवकों ने बड़ी कुशलता से समय के अन्दर संपादित किया। उन्होंने तो एक-एक व्यक्ति परिवार की विस्तृत सूची बनाई है पर उनका निचोड़ इस तरह है :—

१. कुल घर—515, जनसंख्या-[illegible]892
२. शिक्षित बे-रोजगार –
   बी० ए०-3, प्रेप व इंटर-9, दसवी-41, दसवी से नीचे-36, तकनीकी-13=कुल=102
३. पाँच एकड़ भूमि से कम घर=170
   पांच एकड़ से अधिक घर=144
   भूमिहीन परिवार=201

इस चौपाल की पहली बैठक में गांव में शराब की खपत को लेकर बड़ी स्पष्ट चर्चा हुई। इस बात की सबको बेहद प्रसन्नता थी कि पहले की अपेक्षा शराब की खपत बहुत कम हो गई है। गांव में अवैध शराब निकालना तो लगभग बन्द ही हो गया है और बाहर से लाकर पीना भी सत्तर प्रतिशत कम है। आठ व्यक्तियों की समिति ने अपनी जिम्मेदारी का और कड़ाई से निर्वाह करने का आश्वासन दिया। आपातकाल में जिस सरपंच के बारे में बड़े जुल्म करने की शिकायत थी वही श्री पासी राम जी शराब के बड़े विरोधी दिखाई पड़े। इनका विरोधी पार्टीबाजी ने सारे गांव को फाड़ रखा था। शराब की कमी के साथ पार्टीबाजी में भी बहुत कमी आ गई और गांव के विकास के लिये दोनों ग्रुप मिलकर सहयोग देने के लिये तैयार हो गये।

इस बैठक के साथ ही मैंने यह निश्चय किया कि यथा समय हर शनिवार को कुछ देर के लिये डीग अवश्य आऊंगा और लोकशक्ति के जागरण से गांव का नक्शा बदलने का प्रयास करूंगा।

कुछ ऐसा संयोग बना कि अगले शनिवार को मेरे साथ श्रद्धेय स्वामी इन्द्रवेश जी भी डीग पधारे। इसदिन स्वामी जी नें भी डीग की मुख्य सड़क को कीचड़ से भरा देखकर दुःख व्यक्त किया। परिणामस्वरुप चौपाल की बैठक में हमने संकल्प किया कि सारा गांव जुट कर उस सड़क पर मिट्टी आदि डालकर उसे सुन्दर सुथरा बना देगा। यह भी तय हुआ कि अगले शनिवार तक सड़क बनी हुई नहीं मिली तो हम सन्यासी वृन्द स्वयं श्रमदान करेंगे। इस घोषणा से एकत्रित जनता का अभिक्रम जाग उठा और वे बड़े जोश के साथ सड़क निर्माण में अपना योगदान लिखाने लगे। यह निश्चय ही बड़े उत्साह का वातावरण था। विशेष प्रसन्नता की बात तो यह थी युवकों की समिति ने अपने पुरुषार्थ को गांव की एक ऐसी ही दल दल ग्रस्त सड़क का उद्धार किया था और उसमें गांव की जनता का जहां एक ओर उन युवकों के प्रति विश्वास पैदा हुआ था वहां दूसरी ओर उनमें स्वयं अपनी शक्ति पर भी आस्था बढ़ने लगी थी। हमारे साथ उस दिन डा० मदनगोपाल जी के अलावा पुण्डरी डी० ए० वी० कालेज के प्राध्यापक श्री दर्शन सिंह जी भी थे। उन्होंने लोगों की चेतना का उदय देखकर स्वयं भी आकर इस काम में सहयोग की जिम्मेदारी उठाई।

सड़क वाले काम के साथ साथ एक और काम हाथ में लिया गया। गांव में व्याप्त निरक्षरता के आंकड़ों से सबने महसूस किया कि यह हमारे गांव के लिए शर्म की बात है। यह बात कैसे मिटाई जाय? फैसला हुआ कि महीने भर में हम सारे गांव में एक भी व्यक्ति (स्त्री या पुरुष) ऐसा नहीं रहने देंगे जो कम से कम अपना नाम न लिख सकता हो। इस काम का बीड़ा उठाया गांव के स्कूल में पढ़ने वाले छोटे छोटे बच्चों ने हर एक बालक ने संकल्प लिया कि कम से कम एक अंगूठाछाप व्यक्ति को अपना नाम लिखना सिखा देगा। हर बच्चे के अपने घर में माता या पिता, चाची, ताई आदि कई अनपढ़ थे-उन्होंने वहीं से साक्षरता अभियान चलाना स्वीकार किया।

इस तरह स्वामी इन्द्रवेश जी की उपस्थिति से प्रेरणा लेकर डीग आबाल वृद्ध एक नये गांव का स्वप्न देखने लगे।

ठीक सात दिन बाद मैं शनिवार को निश्चित समय पर डीग की चौपाल में पहुंचा तो यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि लोगों ने सचमुच अपने पुरुषार्थ से उस कीचड़ भरी मुख्य सड़क का रूप ही बदल दिया था। अब कार जीप ट्रैक्टर-ट्राली, बैलगाड़ी सभी आराम से गांव में प्रवेश कर सकते थे। पर्याप्त मिट्टी डालकर और पीट कर सड़क बढ़िया बना ली गई थीं। पक्की तो नहीं बनीं थीं पर इस छोटी सी उपलब्धि मे भी लोगों में बेहद खुशी जाहिर हो रही थी। सब से ज्यादा श्रमदान का श्रेय गया गांव के एक गरीब किसान श्री बलदेवा को।

साक्षरता अभियान में इस सप्ताह विशेष प्रगति नहीं दिखाई पड़ी। केवल दो बालकों ने अपने परिवार के सदस्यों को नाम लिखना सिखाया था—बाकी संकोच कह गये। इन दोनों बालकों को सारे गांव वालों ने सराहा और पुरस्कृत किया।

शराब के बारे में पता लगा कि गांव में कोई नहीं पीता पर दो चार आदमी ऐसे हैं जो कभी कभी बाहर से पीकर गाँव में आ जाते हैं। इस कमजोरी को दूर करने के लिये समस्त ग्रामवासियों ने संकल्प लिया। सबकी यही राय थी कि शराब का कलंक मिटाने के लिये प्रेमपूर्वक समझाने बुझाने का मार्ग दण्ड के मार्ग से अधिक कारगर होगा। यह भी निश्चय हुआ कि अगले शनिवार तक यदि कोई शराब के नशे में पाया गया तो सारे गाँव की ओर से मैं उस व्यक्ति के दरवाजे पर जाकर उससे हाथ जोड़कर यह लत छोड़ने की विनती करूंगा।

आगे की कहानी अगले अंक में

—अग्निवेश

गीत

तूलिके !
नूतन छवि को आंक !
सड़कों पर ठिठुरे शैशव की
गुदड़ियों में झांक !
अंधों की बस्ती में हरदम
तम का ही त्योहार मनेगा,
अन्यायी दौलत के बल पर
क्रूरों का ही भवन तनेगा,
गंदी बस्ती के मलबे पर
दो आंसू तू टांक !
एक अन्धेरा है सरगम का
गीतों की दुनियां बहरी है,
शीत ऋतु के अधनंगों की
हाय व्यथा कितनी गहरी है,
कोई रंग सुनहला ले कर
कोरे तन का ढांक !

—चेतन

एक बूढ़ा आदमी

—सूर्यभानु गुप्त

चीजों के आर पार है इक बूढ़ा आदमी,
बापू की यादगार है इक बूढ़ा आदमी।
बैसाख की चिनार है इक बूढ़ा आदमी,
सपने लिए हजार है इक बूढ़ा आदमी।
झुण्ड हाथियों के उतरे तो बह गये,
दरिया की तेज धार है इक बूढ़ा आदमी।
अपने धड़ों से यारो दोबारा जुड़े हुये,
चेहरों का एतबार है इक बूढ़ा आदमी।
महकेगा बिन बजे भी बशर्ते करीब हो,
चन्दन का इक सितार है इक बूढ़ा आदमी।
जाड़े उतर चुके हैं दरख्तों से दर्द के,
फूलों का इंतजार है इक बूढ़ा आदमी।
भनेगी हर पहाड़ की पगड़ी उतार के
साहब। वो रह गुजार है इक बूढ़ा आदमी।
जन क्रान्ति भुग्गियों से न हो जब तलक शुरू,
इस मुल्क पर उधार है इक बूढ़ा आदमी।

* लेखकों द्वारा व्यक्त विचारों से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।

'राजधर्म' सम्बन्धित सभी प्रकार के प्रगतिशील विचारों का स्वागत है। किसी प्रकार की जानकारी हेतु इस पते पर सम्पर्क करें :—

* राजधर्म में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

व्यवस्थापक
राजधर्म प्रकाशन
१ सैक्टर १६-ए
चण्डीगढ़

प्याज के छिलके जैसी सम्पूर्ण क्रांति

—शरद जोशी

क्रांति शब्द को किसी विशेषण की दरकार नहीं होती। यदि वह क्रांति है, तो यह कह देना काफी होता है कि वह क्रांति है। दूसरे हर क्रांति हो जाने के बाद क्रांति कहला सकती है। न होने या करने की कोशिश में फिस्स होने पर उसे क्रांति कहना अजीब लगेगा। जैसे किसी क्रांति को उसकी शुरुआत से पहले 'संपूर्ण क्रांति' कहना बड़ी मजेदार बात है अभी घोषणा पत्र नहीं बना है, क्या होगा, कौन करेगा, करने की उसकी वजहें क्या होंगी, हो गयीं तो नतीजे क्या होंगे, किस शुभ घड़ी में उसका श्रीगणेश होगा आदि कोई बात स्पष्ट नहीं है, पर एक बात साफ है कि जो भी क्रांति होगी, वह संपूर्ण होगी अपूर्ण नहीं होगी। यद्यपि यह विचारना अभी बकाया हैं कि किस हालत पर पहुंचने पर इस क्रांति को संपूर्ण समझेंगे और क्या भविष्य की ऐसी स्थिति की अभी से कल्पना की जा सकती है, जो संपूर्ण हो और भविष्य का वह क्षण आने पर व अपूर्ण न लगने लगे? मतलब यह है कि क्या संपूर्ण संपूर्णता, संपूर्ण रूप से संभव है एक क्रांति पूर्ण होने पर यों भी संपूर्ण क्रांति हो सकती है बशर्ते वह पूर्ण हो। और पूर्ण और संपूर्ण में अंतर क्या है? 'हम 'संपूर्ण' क्रांति करेंगे, कहने के बजाय 'हम क्रांति पूर्ण करेंगे' नहीं कहा जा सकता क्या? और यदि कहा जा सकता है, तो क्या सिर्फ कहने से काम नहीं चलेगा कि हम 'क्रांति करेंगे! क्योंकि जब करेंगे तो वह पूर्ण होगी (या अपुर्ण रहेगी) और फिर यह अलग बहस है कि अपूर्ण हो या संपूर्ण, क्रांति करने या होने की बात है या कहने और घोषणा की? चाहे अपूर्ण हो या संपूर्ण, क्रांति कहने से कौन-सी क्रांति हुई है? और जो हो गयी, उसे होने के तुरत बाद कौन संपूर्ण या अपूर्ण कह सका है? और जो संपूर्ण कह भी दिया तो क्या वह संपूर्ण थी? सपूर्ण क्रांति के संपूर्ण कर्णधारों ने इस बारे में क्या सोचा है?

वे इस समय क्रांति की तैयारियों में जुटे हैं। तरीका यह है कि वे इस जुमले को हरिनाम की तरह बार-बार उच्चारित कर रहे है। जैसे पहले हमारे मध्यम वर्गीय मित्र सर्वहारा क्रांति की कल्पना करते रहते थे कि वह अवश्य होगी और जब होगी, हम उसमें जुड़ जायेंगे। अपने मकान के अहाते में बैठ जुलूस का इन्तजार करना कि जब वह आयेगा, हम उसमें शामिल होंगे। यह बैचेनी कि हाय, आ क्यों नहीं रहा, जबकि जुलूस के न चल जाने का कारण ही यह था कि सब अपने घर के अहाते में बैठ उसका इंतजार कर रहे हैं! जुलूस जिस मुकाम से आरंभ होना था, वहां कोई नहीं गया। बार-बार संपूर्ण क्रांति उच्चारित करने से लाभ यह होगा कि अपने घर के अहाते में खड़े इंतजार करते लोगों की बेचैनी बढ़ जायेगी कि हाय, क्रांति चालू क्यो नहीं हो रही और अभी तक चालु नहीं हुई तो संपूर्ण कब होगी? जबकि क्रांति की विशेषता यह है कि वह संपूर्ण से ही चालू हुई है। अब यह अलग बात है कि कहने को संपूर्ण है, पर आरंभ नहीं हुई है।

अब सवाल यह है कि यह संपूर्ण क्रांति कहां से आरंभ होगी दिल्ली से, पटना से या किसी ग्राम से, तो ग्राम कहां का होगा? शुरु में क्या होगा अर्थात क्या ऐसा होने लगेगा कि आप कह सकें कि वह शुरु हो गयी? कौन शुरु करेगा? जयप्रकाश जी शुरु करेंगे, मोरारजी भाई, जिले का कलक्टर, उस गाव का पटवारी, या वहां की जनता पार्टी का स्थानीय

: क्षणिका :

हर आदमी!
जिसको अपने जीवन का आधार मानता है,
जिसके लिए आदमी कसमें खाता और बिलखता है
वह सच्चाई कितनी बड़ी है, जिसमें हर आदमी मुंह चुराकर
मानवता का पथ छोड़ पशुता का जीवन अपनाता है।

—रामकुमार आत्रेय

नेता। इस क्रांति के प्रति सरकार का क्या रुख होगा? यदि रुख सहयोगात्मक एवं प्रोत्साहनकारी हुआ, तो क्रांति का मजा क्या रह जायेगा? और बजाय सहयोग और प्रोत्साहन के सरकार खुद क्यों न कर डालेगी? केबिनेट का प्रस्ताव होगा, योजना कमीशन ब्योरा तैयार करेगा। अफसर प्रपोजल बनायेंगे, कलेक्टर साहब जिला संपूर्ण क्रांति समिति के चेयरमैन होंगे, डी. एस. पी. कड़ी नजर रखेगा कि विरोधी क्रांति की प्रक्रिया को सेबोटाज न कर दें। अभी कुछ पता नहीं कि कैसे होगा, कब होगा। यह हो सकता है कि अगली पंचवर्षीय योजना के प्रारूप की भूमिका में संपूर्ण क्रांति का जिक्र हो, जैसे पहले समाजवाद का रहता था और यह भी हो सकता है कि आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक क्षेत्र में सरकारी विभाग जो भी करे उसे संपूर्ण क्रांति की दिशा में एक कदम घोषित कर दें। फिलहाल समझ में नहीं आता कि क्या होगा।

मुझे लगता है अंततः ग्रामोद्योग के कागज पर त्रैमासिक पत्रिका का प्रकाशन होगा (यदि वह पहले से न हो रहा हो) जिसका नाम होगा 'संपूर्ण क्रांति'। उसमें भवानी भाई की कविता, मावले जी का संस्मरण, गांधीवादी अर्थशास्त्रियों के दो निबंध तथा जयप्रकाश जी के इंटरव्यू होंगे। एक अंक निकलेगा, फिर दूसरा अंक निकलेगा उनमें फिर यही होगा और इसी तरह निकलता रहेगा। संपूर्ण क्रांति के समय दैनिक पत्र होने की कामना लिये यह पत्र अंततः वार्षिक हो जायेगा। वर्षों बाद सभाओं में वक्ता यह कहते सुनाई देंगे कि हमें संपूर्ण क्रांति के स्वप्न को पूरा करना है। और करना भी है। इस देश को सुभाष, अरविंद, भगत सिंह, गांधी, नेहरु, लोहिया आदि किसानों के सपनों को पूर्ण करना हैं। पूर्ण नहीं, संपूर्ण फिलहाल तो चौधरी चरण सिंह का ही पूरा नहीं हो पा रहा है।

वीर्य रक्षा से महत्त्व की प्राप्ति

यस्ते शृङ्गवृषो नपात् प्रणपात कुन्डपाय्य : न्यस्मिन दध्र आ मन : ॥ ३ ॥ ५ ॥ ७२७॥

प्रभु कहते हैं कि ऐ इरिम्बिठि! (य:)=जो सोम (ते)=तेरा (**शृंगवृषोनपात**)=धर्म के शिखर से गिरा देने वाला है। (**वृषस्यशृंग**)=शृंगवृष:=राजदन्तवत् यहा वृष का परनिपात है। जो (**प्रणपात्**)=जो अतिशयेन पतन से बचाने वाला है और (**कुण्डपाऽय:**)=दाह जलन ईर्ष्यादि से तेरी रक्षा करने वाला है (**बुद्धि वाहे**) (नि)=निश्चय से (**आस्मिम्**)=इस सोम में (**ते**)=तेरा (**मन:**)=मन (**ओदध्र**)=सर्वथा धारण किया जाय। तू सब प्रकार से इसकी रक्षा करने वाला बन।

धर्म के वृष कहते हैं चूंकि यह सचमुच सुखों की वर्षा करने वाला है। जब मनुष्य वीर्य रक्षा के लिए अपने मन को दृढ़ निश्चयी बना लेता है तो यह सुरक्षित वीर्य इस संयमी पुरुष को धर्म के शिखर से गिरने नहीं देता। इसमें धर्म अधिक दृढ़ होता चलता है। प्रायः असंयमी पुरुषों का ही झुकाव पापों की ओर होता है।

यह वीर्य शरीर में उर्ध्वगति वाला होकर मनुष्य को भी ऊंचा उठता है और उसका पतन नहीं होने देता। वास्तविकता तो यह है कि इसके संयम का निश्चय करते ही मनुष्य '**निष्पाद**'=पापियों से ऊपर उठकर **शूद्र** बन जाता है। वीर्य के रुधिर में प्रवेश करते ही यह **विश=वैश्य** हो जाता है। अब वीर्य इसकी क्षतों रोगादि से रक्षा करता है और यह भी **क्षत्र=बनता** है और जब यह सुरक्षित वीर्यज्ञानाग्नि का ईंधन बनता है तो यह भी ब्राह्मण बन जाता है। एवं वीर्य की उर्ध्वगति के अनुपात में मनुष्य ऊपर व ऊपर उठता जाता है।

इन दोनों बातों से बढ़कर बात तो यह है कि यह संयमी पुरुष ईर्ष्या जलन व द्वेषादि की वृतियों से ऊपर उठ जाता है। वीर्य कुण्ड=से पाय्य=रक्षा करने वाला है। सामान्यतः जिनको हम बड़े-बड़े आदमी कहते हैं उनमें भी संयम का ऊंचा आदर्श न होने पर पारस्परिक जलन दिखती है। एक सद्गृहस्थ भी इस ऊंचे आदर्श से नीचे आ जाने के कारण पड़ोसी से ईर्ष्या करता है। राष्ट्र में नेता परस्पर मिलकर नहीं चल पाते। पारस्परिक ऐक्य का सम्भव नहीं होता है। सोम रक्षा के अभाव में कुछ मैं की गन्ध भी तो एक नहीं होने देती। संयम के होने पर जब ईर्ष्या द्वेष से रहित हमारा संसार होगा तो यह कितना ही मधुर हो जायेगा। आजकल चुनाव के समय की कटुताएं वहा न होगी। माधुर्य होगा।

भावार्थ : हमारी सारी शक्ति वीर्य की रक्षा पर केन्द्रित हो ताकि हम धर्म के शिखर से गिरें नहीं, उन्नति करते करते उन्नति पर्वत के शिखर पर पहुंचे तथा ईर्ष्या द्वेष से उपर उठ जाएं।

नोट : स्वामी दयानन्द ने सदाचार के प्रकरण में जितेन्द्रियता को केन्द्र रखा है तथा बाकी सब गुणों को परिधि के रूप चित्रित किया है। एवं सभी गुण उसी पर अवलम्बित हैं।

— पं० हरिशरण, सिद्धान्तालंकार

किसान की लूट बन्द हो

✲ जगवीर सिंह वर्मा

गेहूं की खरीद का काम जब सरकार ने अपने हाथ में लिया तो किसान ने चैन की सांस ली थी, उसका ख्याल था कि शायद अब उसकी खून पसीने की कमाई आढ़तियों व बिचौलियों की लूट से बच जाएगी। उसे उचित कीमत मिलेगी और पैसे के लिए तंगी का सामना नहीं करना पड़ेगा। कार्तिक बैशाख में उसका गल्ला सरकार जिस कीमत पर खरीदेगी वही उसे जाड़ों या बरसात में वापस खरीदने पर ड्योढ़े दोगने दामों पर नहीं मिलेगा, लेकिन उसका यह सपना पूरा नहीं हो सका।

उस ने तब तो और भी माथा पीट लिया जब सरकारी प्रचार के बहकावे में आ कर उस ने नईनई किस्म के गेहूं का उत्पादन किया, सहकारी समिति के बैंक या कहीं और से कर्ज ले कर ड्योढ़े दोगुने दामों पर खाद्य खरीद कर लगाई पर उसे समय समय पर पर्याप्त पानी उपलब्ध न हो सका. बिजली की इंतजार में वह रात-रात भर कभी आसमान ताकता रहा, कभी बुझे बल्ब को देखता रहा कि कब बिजली आए और कब वह सिंचाई करे।

और इस तरह जैसे तैसे फसल हाथ आई तो उसे यह देखकर ताज्जुब हुआ कि सरकार ने गेहूं की दर 86 रुपए प्रति क्विंटल निश्चित की है, उसमें भी गेहूं की विभिन्न किस्में थीं और कुछ किस्मों को इस से भी दो तीन रुपए प्रति क्विंटल कम दामों पर खरीदा गया. खरीद केंद्रों के कर्मचारियों ने सौ सौ कारण बताए, नाकभौं सिकोड़ी और किसान के साथ अबे तबे का व्यवहार किया गया।

तौल में भी गड़बड़

सन् 1973 से ले कर 1977 तक कितने ही खरीद केंद्रों से यह शिकायतें प्रकाश में आई कि तौल में भी गड़बड़ी की गई. यानी कहीं-कहीं तो हर क्विंटल के पीछे एक-एक किलोग्राम की गड़बड़ी की गई, जिसे बाद में कर्मचारियों ने आप मिलबैठ कर बांट लिया।

गेहूं की सरकारी खरीद के चक्कर में गरीब किसान तो मारा गया पर चालाक किस्म के देहातियों, प्रधानों, पंचों की पौ बारह रही. उनके गेहूं का दाम सही लगाया गया, तुलाई भी सही हुई और पैसा भी तुरंत मिल गया. आम किसान की आढ़तियों से भी ज्यादा लुटाई हुई और उसे अपने गेहूं के पैसों के लिए महीनों सहकारी बैंक के चक्कर लगाने पड़े; शाखा प्रबन्धकों की फटकारें सुननी पड़ीं और चपरासियों के धक्के खाने पड़े।

इन चार वर्षों में आज तक यह बात समझ में नहीं आई कि बैंक के खाते में खरीद विभाग द्वारा पर्याप्त पैसा क्यों नहीं जमा किया गया। किसानों को समय पर उनके पैसे के भुगतान की सुविधा-जनक व्यवस्था क्यों नहीं की गई और उसे अपना कामधाम छोड़ कर तपती दोपहरी में बैंक के दरवाजे पर भिखारियों की तरह सुबह से शाम तक बैठा क्यों रहना पड़ा ?

भारतीय खाद्य निगम एवं राज्य सरकारों द्वारा खरीदे गए गेहूं के भुगतान में इस तरह की कोई गड़बड़ी प्रकाश में नहीं आई, पर मूल्य निर्धारण के मामले में किसान के साथ यहां भी ज्यादती की गई। सुनने में तो यहां तक आया कि सीजन में क्वालटी इंस्पेक्टरों और सीनियर तथा जूनियर मार्केटिंग इंस्पेक्टरों की खूब चांदी रही और रिश्वत का व्यापार गेहूं के ऊपर पास होने तक चलता रहा। कितना ही गेहूं पहले नापास किया गया और बाद में वही खरीदा गया। यानी बोरी बंद गेहूं की क्वालिटी ही बदल

कलकत्ता में हरयाणा सूचना केन्द्र

(रमेश भाटिया —प्रेस रिपोर्टर द्वारा)

हरयाणा के मुख्यमन्त्री श्री देवी लाल जी के प्रयत्न से कलकत्ता में हरयाणा सूचना केन्द्र की स्थापना करने की ईजाजत कलकत्ता की प्रसिद्ध विद्यार्थी संस्था हरयाणा छात्र परिषद को मिल गई है। संस्था के प्रधान सचिव श्री सत्यनारायण अग्रवाल ने वर्तमान हरयाणा सरकार की भूरि-भूरि प्रशसा की।

गई। तोल के ठेकेदार और उनके पल्लेदार भी खासे मुनाफे में रहे। अब यदि नुकसान में रहा तो वह किसान, जिसने हाड़ तोड़ कर साल भर मेहनत की और जो इसी भुलावे में रहा कि सरकार यह सब उसके ही लाभ के लिए कर रही है।

बीच में एक वर्ष तो ऐसा भी आया जब गेहूं के मुकाबले में जौ का बाजार भाव कहीं ज्यादा ऊंचा रहा और किसान यही सोच कर कुढ़ता रहा कि आखिर गेहूं की खेती पर ज्यादा लागत लगाने का उसे क्या फल मिला, जब कि जौ की खेती पर कम लागत आती है। यह सब सरकार की असफल खाद्य नीति की ही जीतीजागती मिसालें हैं।

गंगापुर तहसील में नशाबन्दी आंदोलन

दिसम्बर। गंगापुर सिटी (राज०)। आर्य युवक परिषद के अध्यक्ष, श्री सुरेश चन्द आर्य ने राज्य सरकार को एक पत्र द्वारा चेतावनी देते हुए बताया है कि इस क्षेत्र में कई अवैध शराब के ठेके चल रहे हैं जिन पर शीघ्र ही रोक लगाना जरूरी है। इसके साथ ही आगे लिखते हुये बताया कि यदि इस माह के अन्त तक पूर्ण नशा बन्दी नहीं की गई तो युवा शक्ति को बगावत का बिगुल बजाने को बाध्य होना पड़ेगा।

अनियमितता

साल दर साल इसी तरह अनियमितताएं बढ़ती गई हैं। फसल के बाद गेहूं के मूल्यों में उतार चढ़ाव आते रहे हैं। आढ़तियों और बिचौलियों की बनती रही है, नए किस्म के बिचौलिए पैदा होते रहे हैं, पर सरकार इस की रोकथाम के लिए कुछ भी नहीं कर पाई। नहीं तो जिन के हाथ पैर मैले न हों, उनके गोदाम भरे रहें और मेहनत कर के आनाज पैदा करने वाला भूखा मरे या खुद के खाने के लिए उसे आनाज औने पौने दामों पर खरीदना पड़े, ऐसा कभी न हो।

शहरों में तो फिर भी सस्ते गल्ले की दुकाने हैं, पर गांवों में अभी तक ऐसी कोई व्यवस्था नहीं है, जबकि आज देश का हर कोई समझदार आदमी यह जानता है कि कितने प्रतिशत मजदूर गांवों में रहते हैं।

ऐसी स्थिति में अभी तक गांव वालों के लिए उचित दर पर आनाज उपलब्ध न होना यह साबित करता है कि गांव और किसान की कितनी उपेक्षा की जा रही है। उसकी तरफ पर्याप्त ध्यान देना तो दूर रहा, उसकी शिकायतों तक की भी सुनवाई नहीं है।

हाल ही में मेरे कस्बे की सरकारी बैंक के शाखाप्रबन्धक के खिलाफ सैकड़ों शिकायतें किसानों ने की कि उनके पैसे के भुगतान में वह आदमी अनावश्यक रूप से देरी करता है, उसका व्यवहार ठीक नहीं है और वह लोगों को फिजूल परेशान करता है। इन शिकायतों की जांच वगैरा भी हुई, लेकिन उसका आज तक कुछ नहीं हो सका क्योंकि सुनने में आया कि भूमि विकास बैंक के संचालक मंडल में कोई वरिष्ठ आदमी उसका 'खास' है।

तभी शायद उस का यह आलम रहा कि वह बैंक के मुख्य गेट में ताला लगवा देता ताकि भीड़ न हो जाए, बाहर से किसान बुरा भला कहते और भीतर से शाखा-प्रबंधक बंदर घुड़क तथा पुलिस की धमकी देता रहता। बिचौलिए आते तो या तो उनके चैक दस बजे से पहले ही जमा हो जाते या फिर शाम को पांच बजे के बाद 5,000 रुपए के चैक पर 25 रुपए कमीशन ले कर उन के धन का भुगतान कर दिया जाता।

जून में गेहूं बेचने वाले किसान जुलाई की समाप्ति तक चैक लिए घूमते रहे हैं।

आढ़तियों और बिचौलियों के चंगुल से किसान को बचा कर उस की फसल की सही कीमत देने के लिए ही यह व्यवस्था की गई थी, क्योंकि किसान के पास इतनी गुंजाइश तो होती नहीं कि वह अपने आनाज को कुछ दिन भी रोक सके। ईखबहुल क्षेत्रों को छोड़ कर कातिक की फसल में किसान को ज्यादा कुछ उत्पादन या आय हो नहीं पाती, इसलिए वर्ष भर का तमाम व्ययभार बैसाख की फसल पर ही पड़ता है। लगान आबपाशी, तकाबी, सहकारी और दूसरे बैंक कर्जो की अदायगी, विवाह तथा अन्य रीति-रिवाजों का खर्च यानी किसान का सारा काम इसी रबी (गेहूं की फसल) पर निर्भर होता है।

और अकसर तो यह होता है कि बैसाख की फसल बेच कर भी किसान हाथ झाड़ कर खाली का खाली रह जाता है। उस के कितने ही जरूरी काम अधर में ही लटके रह जाते हैं। क्योंकि सदा ही फसल अनुमान से कम होती है। प्रकृति का प्रकोप किसी न किसी रूप में बना ही रहता है इस साल भी वर्षा ने गल्ले को बहुत नुकसान पहुंचाया है। क्षतिपूर्ति के लिए सरकारी स्तर पर कोई व्यवस्था नहीं की गई है। ज्यादा लगान माफी की सुविधा मिलती है, पर वह भी राहत नाम पर एक अजीब सा खिलवाड़ ही लगती है।

खरीद मूल्य

जनता पार्टी के माध्यम ने जितसे नेता सत्ता में आए हैं.

वे चुनाव से पहले एक स्वर से चिल्लाते थे कि गेहूं की उत्पादन लागत को देखते हुए उस का खरीद मूल्य कम से कम 125 रुपए प्रति क्विंटल होना चाहिए । मगर उन के सत्ता में आने के बाद मूल्य निर्धारित किया 110 रुपए प्रति क्विंटल उस में भी गेहूं की विभिन्न किस्मों के हिसाब से कुछ प्रतिशत काट लेने की व्यवस्था थी, जिस के तहत खरीद केंद्र के कर्मचारियों ने 104-105 रुपए प्रति क्विंटल तक गेहूं की खरीद की और बहुत कम किसानों को ही 110 रुपए प्रति क्विंटल के दाम मिल पाए, इस तरह कुल मिला कर किसान ही घाटे में रहा ।

इन सब अनियमितताओं और परेशानियों को देखते हुए किसान ने अपना गेहूं उन नए बिचौलियों को बेचने में ही लाभ समझा जो या तो गांव के बेरोजगार युवक थे या माल ढोने का काम करते थे ।

बिचौलियों की सांठ गांठ

इन बिचौलियों ने केन्द्र के कर्मचारियों से सांठगांठ की कि घटिया स्तर का गेहूं भी 108-109 रुपए प्रति क्विंटल की दर पर खरीद लिया जाएगा, लेकिन 50 पैसे से लेकर एक रुपए प्रति क्विंटल के हिसाब से उन्हें कमीशन देना होगा । बिचौलियों ने वही हिसाब देख कर किसानों से गेहूं खरीदा और जब धन के भुगतान का सहकारी बैंकों में तमाशा देखा तब तो उन की और भी बन आई । किसान ने भी चाहे एक रुपए कम दाम मिले अपना गेहूं उन्हें ही बेचना ठीक समझा । इस के अलावा पैसे की एकदम जरूरत और आढ़तियों तथा दूसरे लेनदारों के दबाव ने भी किसान को अपना गेहूं मंडी में कम दामों पर बेचने के लिए विवश किया ।

कितनी ही जगहों पर गेहूं रखने की उचित व्यवस्था नहीं थी । गेहूं की बोरियों को ढकने तक के लिए तिरपाल वगैरा भी देर से आए और वर्षा ने अपना काम कर दिखाया । कई खरीद केंद्रों पर खाली बोरियां समाप्त हो गई तो उन की व्यवस्था में ही तीन-तीन दिन लग गए और किसान परेशानी भुगतता रहा । पर्याप्त गोदामों की समस्या भी अभी तक नहीं सुलझ पाई है ।

आढ़तियों और बिचौलियों ने गेहूं खरीद कर भारतीय खाद्य निगम को एक रुपए प्रति क्विंटल अधिक की दर पर वहीं का वहीं बेच लिया और उन से सांठगांठ करके अच्छी कमाई की ।

सरकारी स्तर पर खरीद का काम समाप्त होने की घोषणा के अभाव में भी खरीद बंद कर दी गई और कुछ दिनों तक गेहूं बाजार में सस्ते दामों पर बिका । अब देखने में आ रहा है कि गेहूं के दामों मे फिर से वृद्धि हो रही है । किस को लाभ मिलेगा इस मूल्य वृद्धि का ? क्या आम किसान को ? पर बेचारे की बिसात ही क्या है ?

क्या जनता सरकार शीघ्र ही कोई उचित और सुविधाजनक व्यवस्था करेगी ? क्या सत्तारूढ़ दल के कार्यकर्त्ता किसान के साथ होने वाली इस लूट को रोकने के लिए अपनी कोई सक्रिय भूमिका निबाहेंगे ? क्या इस दोहरी व्यवस्था का कभी अंत होगा ? क्या मंडी समितियां अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निबाहेंगी ?

न जाने ऐसे कितने सवाल हैं जिन के उत्तरों की किसानों को आशा है । क्या उसके वे प्रतिनिधि जिनको उस ने जिता कर लोक सभा और विधानसभाओं में भेजा है, जबाब देंगे ?

निर्णय

एक राजा के तीन पुत्र थे । तीनों ही वीर, आज्ञाकारी और सदाचारी । तीनों पर राजा को बराबर स्नेह था । अंत समय निकट जानकर उसने अपना उत्तराधिकारी घोषित करने का निश्चय किया । कौन-सा राजकुमार सिंहासन के लिए उपयुक्त होगा, यह निश्चय कर पाना उसके लिए कठिन प्रतीत होता था ।

राजा ने राजगुरु से परामर्श किया । राजगुरु ने तीनों राजकुमारों को बुलाकर उनसे एक प्रश्न किया, 'तुम्हें राज्य में किसी बुरे व्यक्ति के बारे में सूचना मिले तो सबसे पहले तुम क्या करोगे ?

पहले राजकुमार ने कहा, "उसका जीवित रहना राज्य एवं जनता के लिए हानिकर हो सकता है, अतः मैं उसे प्राण दण्ड दूंगा ।"

दूसरा राजकुमार बोला, "मैं पहले जांच कराऊंगा । अभियोग ठीक निकला तो पहले उसे समझाने का प्रयत्न करूंगा । इस पर भी न माना तो आजन्म कारावास ही ठीक रहेगा ।"

तीसरे ने कहा, "सबसे पहले मैं यह देखूंगा कि वह दोष स्वयं मुझमें तो नहीं है । यदि है, तो पहले अपने आपको सुधारूंगा ।"

राजगुरु के सुझाव पर राजा ने तीसरे राजकुमार को राज्य दे दिया ।

○ सीतेश आलोक

भगवान् कहां गए ?

शकुन्तला शर्मा

आज के वैज्ञानिक युग में अवतारों के नए-नए तमाशों में उलझ कर अंधविश्वासी लोगों को क्या हासिल होता है ?

एक परिचित सज्जन से मिलने पर जब उनकी बच्ची का हाल पूछा तो उन्होंने बड़े दुःख और पश्चाताप भरे स्वर में कहा, "क्या बताएं, बहनजी, हमारा तो भाग्य ही खराब है कि भगवानजी कहीं चले गये। थोड़े दिन और रह जाते तो हमारी बच्ची अवश्य ठीक हो जाती। इस बार तो हम सब कुछ मालूम कर के नियमानुसार ही भगवान के पास गए थे, पर सरकार ने उन के दर्शनों पर टैक्स लगा कर सब गड़बड़ा दिया। भला आप ही बताइए, देवी देवता या भगवान और उनके भक्तों के बीच सरकार अपनी टांग अड़ाए या उनसे कुछ लाभ उठाए ऐसा कहीं भगवान सहन कर सकते हैं ?

इससे कुछ दिन पहले भी इन सज्जन और इनकी पत्नी ने बताया था कि अमुक गाँव में भगवान पैदा हुए हैं, जो रोगियों को अपने हाथ की लकड़ियों, मोरपंख छुआ कर ठीक कर देते हैं और अब वे भी बच्ची को लेकर वहाँ जाने वाले हैं।

पाखंडियों का चक्कर

उन की बच्ची तरह तरह से पूजापाठ, दानपुण्य, व्रतउपवास, यज्ञहोम करने, अनेक देवीदेवताओं की मनौती मनाने और इलाज करवाने पर भी ठीक नहीं हुई। अब वह इन भगवान का सिर पर झाड़ा लगवाने पर अवश्य ठीक हो जाएगी। यह बात उन्होंने कुछ ऐसी प्रसन्नता और विश्वासपूर्वक कही कि मानो उनकी बच्ची ठीक ही हो गयी हो। बस भगवान की छड़ी छुआने भर की देर है।

उनकी बातें सुन जब मैंने अविश्वास से मुस्करा कर कहा कि "भाई साहब, यह तो दूसरों को मूर्ख बना कर अपना उल्लू सीधा करने के लिए पाखंडियों का चलाया चक्कर है, आप इनके फेर में न पड़ कर किसी अच्छे चिकित्सक से अपनी बच्ची का इलाज कराइए," तो वह बोले, "नहीं बहनजी, इसमें कोई धोखा या छल नहीं है, आप विश्वास कीजिए, मैंने स्वयं अपनी आंखों से वहां बैसाखी, छड़ीछातों और चश्मों का ढेर पड़ा देखा है, जो भी बीमार, अपाहिज भगवान के झाड़े से ठीक हो जाते हैं, वे इन चीजों को अपने लिए फालतू समझ वहीं पर छोड़ जाते हैं।

यह सज्जन कई बार अपनी अर्धविक्षिप्त और विकलांग लड़की को ले कर इन तथाकथित भगवान के पास जा चुके थे, पर इन्हीं के कथनानुसार वहां जाने के नियम में इनसे हर बार कोई न कोई गलती रह जाती, जिसके कारण इनकी बच्ची ठीक न हो पाती।

जब यह पहली बार गए तो इन्हें मालूम ही न था कि रोगी के पहने हुए कपड़े वहीं एक पेड़ पर टांग आने चाहिए। दूसरी बार अतिरिक्त कपड़े लेकर गए तो पता चला कि वहाँ रात्रिवास करना जरूरी है। बेचारे तीसरी बार जब रात्रि-वास की भी तैयारी करके गए तो वहां भीड़ ही इतनी थी कि कई दिनों तक वहाँ पड़े रहने के बाद भी भगवान से झाड़ा करवाने की इन की बारी न आ सकी और चौथी बार जब हर तरह से कमर कस कर वहां पहुंचे तो पता चला भगवानजी ही कहीं चले गए हैं।

यह सज्जन अच्छे पढ़े लिखे हैं और ये बातें इन्हीं से नहीं बल्कि और दूसरे बहुत से लोगों के मुंह से भी सुनी तो जिज्ञासावश मैंने इस भगवान के बारे में पता लगाया।

हरियाणा के एक छोटे से गाँव के गरीब परिवार में एक बच्चे का जन्म हुआ। यह लड़का तीन साल तक आम बच्चों की तरह ही रहने के बाद एक चमत्कारिक घटना के कारण एकाएक अवतार सिद्ध हो गया।

मनगढ़ंत घटना

घटना इस प्रकार बताई जाती है कि एक दिन वह लड़का जमीन पर तिनका गाड़ कर अपने पिता जी से बोला "इस तिनके से मैंने चलती हुई रेलगाड़ी को रोक दिया है जिसमें दो अंधे और लंगड़े आदमी बैठे हैं. तुम वहां जा कर शीघ्र ही उन्हें रेलगाड़ी से उतारो ताकि मैं अपनी लकड़ी मार कर उन दोनों को ठीक कर दूं। रेलगाड़ी भी इसके बाद ही चल सकेगी अन्यथा नहीं।"

लड़के की बात पर पहले पिता ने कुछ ध्यान न दिया, पर जब लड़का हठ से बार बार यही कहता रहा तो पिता ने गाँव के पास निकलने वाली रेलवे लाइन तक जा कर आश्चर्य से देखा कि रेलगाड़ी सचमुच ही रुकी हुई है और ड्राइवर, गार्ड आदि इंजन की किसी खराबी के बिना ही गाड़ी के रुक जाने से परेशान हो रहे हैं।

कुतूहलवश जब पिता ने डिब्बों के अंदर घुस कर देखा तो उस के आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि उस में सचमुच ही एक अंधा और लंगड़ा मौजूद हैं, तब तो और भी कमाल हो गया जब उसके पुत्र के लकड़ी मारते ही अंधा और लंगड़ा ठीक हो गए और रेलगाड़ी चल पड़ी।

रेल कर्मचारियों और यात्रियों ने यह चमत्कार अपनी आँखों से देखा था और किसी प्रकार के संदेह की कोई गुंजाइश न थी, फ़िर एक दिन की बात नहीं, अब तो ट्रेन भी रोजाना नियमित रूप से अपने आप ही रुकने लगी थी जिस में बैठे अपाहिजों को वह लड़का छड़ी मारता था और उन के ठीक होते ही ट्रेन चल पड़ती थी।

भगवान के चमत्कार

ऐसी बातों को फैलते जरा देर नहीं लगती। शीघ्र ही दूरदूर तक लड़के की ख्याति फैल गई कि अमुक गांव में भगवान अवतरित हुए हैं जिन के बस छड़ी छुआ देने मात्र से ही अंधा अच्छी तरह देखने लगता है, लंगड़ा घोड़े के समान सरपट दौड़ने लगता है, गूंगा पटरपटर बोलने लगता है, बहरा पता खड़कने तक की आवाज सुनने लगता है, कोढ़ियों की काया निर्मल हो जाती है, असाध्य रोगी रोगमुक्त हो हृष्टपुष्ट हो जाते हैं और प्रत्येक की मनोकामनाएं पूरी हो जाती है।

भला ऐसे स्वर्णिम अवसर को कौन हाथ से जाने देता है? तुरन्त ऐसी लहर आई कि पंजाब, हरियाणा, राजस्थान और उत्तर प्रदेश से सैकड़ों लोग भगवान से छड़ी का स्पर्श कराने के लिए आने लगे।

भगवान् ने ट्रेन तक जाना बंद कर दिया और गाँव में ही एक स्थान पर बैठ कर जरूरतमंद लोगों को सारे दिन छड़ी लगाते रहते। उनके सामने भक्तों द्वारा चढ़ाए फल, मिठाई, कपड़े और खिलौनों का अंबार लग जाता और रुपयों का ढेर उन के घर वाले समटते रहते। छोटे से गांव में मेले जैसी रोनक हो गई। जीप, कार, ट्रक, मोटर और बैलगाड़ियों की कतारें लगने लगी।

चूंकि भगवान एक छोटे से गाँव में रहते थे और बाहर से आने वाले दर्शनार्थियों के लिए आवागमन के साधन

बीस वर्ष के बाद आर्य समाज बहु अकबर पुर का उत्सव सम्पन

आर्य समाज बहु अकबर पुर रोहतक जिले की प्रमुख आर्य समाजो में से एक है। हिंदी आन्दोलन के समय यह समाज सबसे अधिक पुलिस दमन का शिकार हुई थी। युवा शक्ति के उत्साह के कारण यहां की समाज ने अपना उत्सव 2, 3 तथा 4 दिसम्बर को धूमधाम से सम्पन किया उत्सव में पूरा गाँव भारी संख्या में उमड़ कर पण्डाल में पहुंचता था। इस अवसर पर स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, खेमसिंह, भजनोपदेशक मण्डली सहित, महाशय जगत राम जी, महाशय झाबेराम जी. जगबीर सिंह एडवोकेट, बलवान सिंह प्रधान छात्र युनियन महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, सत्यवीर सिंह वेदालंकार आदि के व्याख्यान हुए।

और वहां रुकने की सुविधाएं पर्याप्त न थीं इसलिए राज्य सरकार को तमाम प्रबन्ध अपने हाथ में लेना पड़ा। लोगों के ठहरने के लिए टिन के शेड बनवाए गए, बिजली पानी का प्रबन्ध किया गया और यात्रियों की सुविधा के लिए स्थानस्थान से गांव तक के लिए स्पेशल बसों को परमिट दिया गया। इन सब से भी बड़ा प्रबन्ध यह किया गया कि प्रत्येक व्यक्ति को भगवान के दर्शन और छड़ी का स्पर्श अवश्य और सुविधापूर्वक हो जाय। इस के लिए भगवान का सरकारीकरण कर दिया गया। अब भगवान के दर्शन पर दो रुपए प्रति व्यक्ति टिकट लगा दिया गया, जिस का कुछ प्रतिशत भाग भगवान के घर वालों को भी दिया जाता।

अब सरकार की ओर से नियुक्त आदमी ही लोगों को लाइन में खड़ा करते और चूंकि भगवान छोटे से बच्चे थे और लोगों को सारे दिन छड़ी मारमार कर ठीक करने के कारण स्वयं बड़े कमजोर और बीमार हो गए थे, इसलिए एक सरकारी आदमी ही उन्हें गोद में लेकर लोगों को भगवान के हाथ की छड़ी का स्पर्श करा देता, पंजाब में तो इन तथाकथित भगवान की उमर के फर्जी बच्चों को बिठा कर ही कई अवसरवादियों ने लाभ उठा लिया।

तमाशा कुल मिला कर काफी दिनों तक चला। इस के बाद न वहां भक्त रहे, न भगवान, न उनके चमत्कार। कोई कहता है कि भगवान कहीं चले गए और कोई कहता है कि वह इतनी ही अवधि के लिए संसार में आये थे। सही कुछ भी हो, सवाल यह है कि भगवान के बारे में जो कुछ कहा गया वह कहाँ तक सच है? चलती ट्रेन कैसे अपने आप रुक जाती थी? रोगी रोगमुक्त कैसे हो जाते थे? लाखों लोग कैसे उन से प्रभवित हो गए।

प्रचार करने के ढंग

इस में दो मत नहीं कि किसी भी विषय की प्रसिद्धि में उसके प्रचार का बहुत बड़ा हाथ होता है। यह प्रचार जितनी सूझबूझ और कुशलता से किया जाए उतना ही वह अधिक प्रभावशाली हो जाता है। किसी भी खुराफाती दिमाग के आदमी को अपनी स्वार्थसिद्धि के लिए सिद्ध बाबा या अवतार के प्रचार की योजना बना कर अंधविश्व सी लोगों पर उस की सत्यता का विश्वास जमा देना मुश्किल काम नहीं। इस भगवान के मामले में भी केवल प्रचार करने के ढंग का चमत्कार था, हां यह अवश्य है कि इतनी बड़ी योजना बनना एक दो लोगों के बस का काम नहीं, इस में कईयों का हाथ हो सकता है। इसकी सत्यता का अनुमान ट्रेन के रुकने और लोगों के रोगमुक्त होने की कथित बातों पर विचार कर के सहज हो लगाया जा सकता है।

कौन जानता है कि ट्रेन अपने आप रुकी, जान बूझ कर चालक द्वारा रोकी गई या किन्हीं दूसरे लोगों द्वारा रुकवाई गई, रेल इंजन के कलपुर्जों से अनभिज्ञ आम यात्रियों के पास तो यह पता लगाने का कोई उपाय भी नहीं होता कि ट्रेन जानबूझ कर रोकी गई है या किसी अलौकिक शक्ति से अपने आप रुक गई है। यात्रियों से कह दिया गया कि भगवान ने ट्रेन रोक दी है और उन्हें विश्वास कर लेना पड़ा। वे उसी समय जांच तो कर या करा नहीं सकते थे। फिर ट्रेन पहले भी कभी इस प्रकार रुकी न थी कि शक किया जाता और फिर यह तो प्रत्यक्ष प्रमाण था कि बहुत से यात्रियों के सामने ही लड़के के छड़ी मारने से अंधा देखने और लगड़ा चलने लगता था।

ट्रेन रुकने का कारण तो बहुत कुछ समझ में आ गया। अब लोगों के रोगमुक्त होने के रहस्य का भी सहज अनुमान लगाया जा सकता है।

किसी प्रकार का लालच दे कर पहले कुछ लोगों से भीड़ के सामने अंधे, लंगड़े और अपाहिज होने का अभिनय कराया जाए और फिर उक्त भगवान की छड़ी का स्पर्श पाते ही वे छू मंतर की तरह ठीक होने का अभिनय करने लगें तो चमत्कारों में विश्वास करने वाले दर्शकों पर मनचाहा असर पैदा किया जा सकता है।

मनगढ़ंत बातों पर विश्वास

इसी तरह छड़ी, छाते, बैसाखी और चश्मों का ढेर लगा देना भी कोई कठिन काम नहीं। पहले कहीं से जुटा

हरियाणा राजकीय अध्यापक संघ

जिला शाखा भिवानी का चुनाव सम्पन्न

दिनांक 20-11-77 को श्रीमती शान्ति राठी विधायिका हरियाणा विधान सभा एवं निवर्तमान उपप्रधान ह० रा० अ० संघ की अध्यक्षता में जिला शाखा भिवानी का चुनाव इस प्रकार सम्पन्न हुआ :—

1. श्री शेर सिंह, रा० उ० वि० कंवारी, प्रधान
2. श्री प्रभुदयाल शास्त्री रा०उ० वि० मन्डवा, महामन्त्री
3. श्री तुलसी राम रा० प्रा० पा० माँढड, कोषाध्यक्ष
4. श्री नेतराम रा० उ० वि० बरालु, संगठन मंत्री
5. श्री शोभाकर रा० उ० वि० कौन्ट, प्रचार मन्त्री
6. श्री मनबीर शर्मा रा० उ० वि० सांजर वास, वरिष्ठ उपप्रधान
7. श्रीमती रिसालो देवी रा० क० उ० वि० बौन्द, उप-प्रधान
8. राव बलवन्त सिंह रा० मा० वि० झिझर, सहसचिव

कर ये चीजे रख दी गई और फिर तो ढेर लगाया जाता रहा होगा कि इन का परित्याग करने से ही वे ठीक हो सकेंगे।

इन चमत्कारों के प्रचार के लिए अधिक प्रयास नहीं करना पड़ता। हम लोगों का यह विशेष गुण है कि वैज्ञानिकों की भविष्यवाणियों को असंभव कह कर हम उनकी उपेक्षा कर देते हैं, बड़े बड़े सुधारकों, विद्वानों की बातों को मूर्खतापूर्ण कह कर उड़ा देते हैं, पर किसी भी मनगढ़ंत चमत्कार की बात पर तुरन्त विश्वास कर लेते हैं, चाहे वह किसी अविश्वसनीय व्यक्ति द्वारा ही कही गई हो फिर हम लोग ही ये बातें एक दूसरे से कह सुन कर उसके प्रचार में इतने अधिक सहायक होते हैं कि कल्पना भी नहीं की जा सकती।

किसे लाभ हुआ ?

सिद्ध महात्मा और अवतारों पर विश्वास करने वाले यदि लाखों भक्तों से अलग अलग पूछा जाए कि उन की शरण में जाने से क्या आप को कुछ लाभ हुआ हैं तो हर आदमी यही कहेगा कि "मुझे नहीं, दूसरों को हुआ है।" "दूसरे किन लोगों को हुआ है," यह पूछने पर भी यही जवाब मिलेगा, "यह तो हमें पता नहीं, हम ने तो सुना है। आप किसी ऐसे व्यक्ति का, जिसे कुछ लाभ हुआ हो, पता कदापि नहीं लगा सकते क्योंकि किसी को कुछ लाभ हुआ हो तब तो पता चले !

कुछ लोगों की मनोकामनाएं पूरी भी हो जाती हों तो इस का कारण सिद्ध या अवतार नहीं बल्कि उन के स्वयं के प्रयत्न या संयोग होते हैं। जैसे रोगी एक ओर तो इन महात्माओं की शरण में जाते हैं और दूसरी ओर डाक्टरों से भी इलाज करवाते रहते हैं। कुछ बिमारियां भी ऐसी होती हैं कि पहले इलाज कराने पर ठीक नहीं होतीं, पर मियाद पूरी होने पर अपने आप ही ठीक हो जाती हैं। कुछ लोग विश्वास होने या ठीक होने की प्रबल इच्छाशक्ति के कारण ठीक हो जाते हैं व उन पर कुछ ऐसा मानसिक प्रभाव पड़ता है कि ठीक न होने पर भी वे अपने आप को ठीक हुआ समझने लगते हैं और इस का सारा श्रेय सिद्ध, बाबा या अवतार को देते हैं। जो ठीक नहीं होते वे इसे अपना दुर्भाग्य समझ संतोष कर लेते हैं पर बाबा की ख्याति में कोई फर्क नहीं आने देते।

अब यदि इन भक्तों से पूछा जाता है कि भगवान कहां गए तो वे बात को घुमाफिरा कर कहते हैं कि भगवान ने तो केवल इतने दिनों के लिए ही अवतार लिया था या वह पूर्वजन्म में अमुक मत के गुरु थे, इसलिए इस जन्म में उन के अनुयायी उन्हें ले गए।

सिद्ध या अवतार बनाने के नाटकों के सूत्रधार ऐसे चालाक और चतुर होते हैं कि वे दर्शकों के सामने कभी मंच पर नहीं आते और परदे के पीछे रह कर ही सब काम करते हैं। आम आदमी यदि इन की वास्तविकता का पता लगाने की कोशिश भी करे तो इन के प्रपंचों का सिरा भी पकड़ पाने में वह असमर्थ रहता है।

कहते हैं कि ठोकर खा कर अक्ल आ जाती है, पर हम तो बारबार ठोकरें खा कर भी अक्ल को अपने पास नहीं फटकने देते। आश्चर्य है कि इस विज्ञान के युग में जब एक नहीं बहुत से अवतारों का भंडाफोड़ हो चुका है, लोग नित नए अवतारों पर कैसे विश्वास कर उन के अंधभक्त बन जाते हैं ?

"गोहाना तहसील में वेदप्रचार की धूम"

हरयाणा के प्रत्येक गांव में आर्य समाज बनाने के महान संकल्प को सार्थक करने के लिए वेद प्रचार अभियान जोरों से आरम्भ हो गया है। इस सम्बन्ध में सोनीपत जिले की गोहाना तहसील के कार्यकर्ता प्रशंसा के योग्य है यहां के उत्साही आर्यवीरों ने पूरी तहसील में आठ वेद प्रचार मण्डलों में विभक्त कर दिया है। वेद प्रचार मण्डल मुण्डलाना का सम्मेलन महमूदपुर गाँव में, खान पुर वेदप्रचार मण्डल का सम्मेलन खानपुर गांव में, बुटाना वेद प्रचार मन्डल का सम्मेलन गंगाना गांव में अती उत्साह के वातावरण में सम्पन हुआ। इसी प्रकार बरोदा मण्डल में भी सम्मेलन अतीव सफल रहे। सम्मेलनों पर हजारों व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत ग्रहण किये, शराब तथा हुक्का छोड़ने की प्रतिज्ञा की, अपने मण्डल के प्रत्येक गांव में आर्य समाज की स्थापना का संकल्प लिया। इन सम्मेलनों में स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी रुद्रवेश जी मण्डली सहित, श्री गंगा राम एडवोकेट एम. एल. ए., श्री जगबीर सिंह एडवोकेट आदि के व्याख्यान तथा उपदेश होते रहे। मण्डलों की स्थापना से क्षेत्र में नवजीवन का संचार हो गया है।

कौन कितने गांधीवादी हैं ?

● गजानन चिटणीस

इन दिनों गांधी जी के सितारे जरूर ही बुलंदी पर हैं शायद ही कोई दिन ऐसा जाता हो, जब कोई न कोई सरकारी नेता गांधी के सपनों को चरितार्थ करने की बात न कहता हो। यह अलग बात हैं कि हरेक के दिमाग में गांधी जी और गाँधीवाद की अलग-अलग पहचान है। किसी के लिए मद्य-निषेध कानून का सख्ती से पालन गांधीवाद है, तो दूसरे के लिए कुटीर उद्योगों पर पूरा-पूरा जोर देना ही गांधी जी की सीख का सार है। फिर 'ट्रस्टीशिप' की बात तो इन दिनों हर नेता की जबान पर है! बस यह सवाल मत पूछिए कि अपनी अपने नजदीकी नाते-रिश्तेदार की संपत्ति की सार्वजनिक घोषणा के लिए ट्रस्टीशिप के कितने हिमायती तैयार हैं? जैसे कांग्रेसी मंत्री वैसे ही जनता पार्टी के भी अधिकतर मंत्री, प्रधान मंत्री संपत्ति का हिसाब दे कर अंतरात्मा का बोझ हल्का कर लेना चाहते है। उनमें से कुछेक अपवादों को छोड़ कर कोई भी कांग्रेस की परंपराओं से आगे नहीं जाना चाहते, जाये भी क्यों? आखिर इन तीस वर्षों में गांधीवाद का जो रूप निखरा है, उसे नकारना आसान काम नही।

इन तीस वर्षों में गांधीवाद की एक शाखा सरकारी पूंजीवादी रही हैं। राष्ट्रपति भवन, राजभवनों, मंत्रियों के बंगलों में पूरी शान-शौकत और अधिकार-भावना के साथ जिंदगी गुजारनेवाले ये गांधीवादी हर साल, २ अक्टूबर और ३० जनवरी को राजघाट पर चरखा कातने और प्रार्थना करने आते रहे हैं। साल में दो बार सार्वजनिक रूप से गांधी जी को श्रद्धांजलि देने के बाद इन गांधी-वादियों को शायद ही कभी गांधी की जरूरत महसूस हुई हो। गांधी जी के इन सरकारी शिष्यों के लिए सिद्धांत और व्यवहार दो अलग-अलग चीजे रहीं, उन्होंने फुर्सत में बैठ कर कभी यह सोचा ही नहीं कि हमारी राज्य-शक्ति का उपयोग गांधी जी के आदर्शों को पूरा करने के लिए हो रहा है या नहीं? यदि नहीं हो रहा है, तो क्यों नहीं? खामी हम में हैं या गांधी जी के आदर्शों में? नतीजे के रूप में गांधी बन गये पूजा की चीज और सत्ताधारी गांधीवादियों की देख-रेख में, उनकी अपनी नीतियों के चलते होता रहा राजनीतिक आर्थिक शक्ति का भरपूर केंद्रीकरण। अजीब बात यह रही कि सत्ताधारी गांधीवादी शांतिपूर्ण ढंग से उठाई गयी वाजिब मांगों को अनसुनी करते रहे, अहिंसक आंदोलन का दमन करते रहे, लेकिन हिंसक तरीकों से रखी गयी अनुचित मांगों के आगे घुटने भी टेकते रहे। यह सत्त्वहीन, ढकोसलापंथी गांधीवाद एक ओर बिड़ला-टाटा भी बनाता गया और दूसरी ओर इंदिरा गांधी-जैसी स्वेच्छाचारियों की शक्ति भी बढ़ाता गया। पूंजीवाद और राजनीतिक स्वेच्छाचार को बांधने में कांग्रेस के भीतर के गांधीवादी सर्वथा पंगु और पुंसत्वहीन साबित हुए। आपात स्थिति के दौरान एक दिन वह भी आया, जब सरकारी गांधीवादियों ने राजघाट पर प्रार्थना का अधिकार भी अपने तईं सुरक्षित कर लिया और बूढ़े आचार्य कृपलानी को प्रार्थना सभा तक नहीं करने दी।

गांधीवादी की दूसरी शाखा सर्वोदय वालों की रही है। राजसत्ता से अलग, पर उससे टकराते हुए नहीं, उसके सहारे सहारे चलते हुए। और बहुत हुआ तो उसकी उपेक्षा करते हुए, संपत्तिवानों, भूस्वामियों, के हृदय परिवर्तन का पराक्रम करनेवाले लोग भूदान, ग्रामदान, संपत्तिदान-एक के बाद दूसरे दान की एक लंबी फेहरिस्त, देश भर में

मेड़ता रोड़ ज० (नगौर) में आर्य वीर दल की स्थापना

नगौर जिले के प्रमुख शहर मेड़ता रोड़ जंक्शन में 7 नवम्बर को श्री शिवहर जी मास्टर की अध्यक्षता में आर्यवीरदल की स्थापना की गई। श्री कन्हैयालाल को सेना-पति व श्री रामजी सोनी को व्यवस्थापक पद पर नियुक्त किया गया।

उक्त दल की स्थापना में जिले के प्रधान सेनापति माणक चन्द आर्य का कार्य विशेष प्रशंसनीय है।

एकत्र भूमि के लंबे-चौड़े आंकड़े और सब से अधिक बुनियादी क्रांति करने की घोषणाएं। कहा गया कि हम समाज में आमूल परिवर्तन का प्रयास कर रहे हैं, एक ऐसा समाज बना रहे हैं, जिस में वर्ग-विग्रह के लिए कोई स्थान नहीं रहेगा, लेकिन इन सारी सुहावनी घोषणाओं के पीछे हमेशा झांकती रही एक कठोर वास्तविकता, स्थापित सत्ता के साथ नाते-रिश्ते जोड़ रखने की। उन नातों-रिश्तों के बूतों पर ही आश्रमों और प्रतिष्ठानों की श्रृंखला जमी, उन नातों-रिश्तों के कारण ही बरसों तक कांग्रेसी महामंत्री श्रीमन्नारायण जैसे नामधारी गांधीवादी सरकारी और गैरसरकारी गांधीवादियों के बीच संपर्क-सूत्र का काम करते रहे। आश्चर्य की बात यह है कि कांग्रेस शासन में योजना आयोग के सदस्य, राज्यपाल, विदेश में राजदूत जैसे महत्व पूर्ण पदों को सुशोभित कर चुकने के बाद अब श्रीमन्नारायण फरमा रहे हैं कि जनता पार्टी सरकार के रूप में देश में पहली बार ऐसी सरकार बनी है, जो गांधी जी के आदर्शों पर अमल करने के लिए वचनबद्ध हैं। क्या कोई श्रीमन्नारायण से पूछ सकता है कि सरकार जब गांधी जी के आदर्शों से विपरीत काम करती रही, तब आप उनकी ओर से तोहफे के तौर पर मिले एक से-एक ऊंचे ओहदे पर क्यों बैठे रहे ?

इस सिलसिले में अकेले श्रीमन्नारायण का जिक्र करना शायद उनके साथ अन्याय करना है। वे अपने में अकेले नहीं हैं। वस्तुतः वे तो गांधीवादियों की एक पूरी कोटि और कतार के प्रतीक हैं। जो लोग इतने नामी-गरामी नहीं थे, वे भी अपने-अपने ढंग से सत्ता-प्रतिष्ठान की चाकरी करते रहे हैं। न सही मुकम्मिल ओहदा, किसी बड़े सरकारी आदमी के इर्द-गिर्द मंडरा सकने का मौका ही कम लुभावना होता है। इस तरह ऊंचे हलकों में अपनी बात पहुंचा तो सकते हैं। यह सुविधा भी न मयस्सर हो, तो कम-से-कम किसी-न किसी गांधी संस्थान में बैठ कर गांधी-विचार की जुगाली तो की ही जा सकती है। 'सरकार के साथ सहकार' के दौर में सर्वोदयी और गांधीवादियों ने ऐसी पूरी पीढ़ी तैयार की थी। जब जयप्रकाश नारायण ने जन आंदोलन की राह पकड़ी, तो पीढ़ों पर बैठी यह पीढ़ी एकाएक अचकचा गयी। जाने क्या-क्या तोहमते जयप्रकाश पर लगायी गयीं और तो और जब देश पर इंदिरा गांधी की तानाशाही की काली रात आ घिरी, तब भी पीढ़ों पर बैठी यह पीढ़ी अपनी हरकतों से बाज नहीं आयीं गांधी शांति प्रतिष्ठानों के आला गांधी वादी प्राध्यापक, अनुसंधानकर्ता, गांधीवाद के नख-दंत-विहीन संस्करण की तैयारी में जुट गये। आपातस्थिति विरोधी सत्याग्रह को गैर गांधीवादी सत्याग्रह कह कर उसकी बदनामी करने की भी कोशिश हुई। कुछ ज्यादा चतुर लोगों ने जेल में बैठे या जसलोक में रोग-शैया पर लेटे जयप्रकाश नारायण की पीठ पीछे संस्थाओं के अध्यक्ष के रूप में जयप्रकाश जी के नाम का उल्लेख तक बंद कर दिया। यह सब तब हुआ, जब गांधी-अनुयायियों का सबसे तेजस्वी तबका, अनगिनत सर्वोदय कार्यकर्त्ता, वक्त के सबसे अहम संघर्ष के आमंत्रण को स्वीकार कर तानाशाही से जूझ रहा था। घने अंधकार के सब से कठिन दौरे मे इन्हीं लोगों ने गांधी की ज्योति का प्रकाशमान रखा लेकिन लोक सभा चुनाव का नतीजा आते ही आपातस्थिति में चोला बदलने वालों ने फिर चोला बदल लिया। वे आंदोलन की आग में से तप कर निखरे लोगों को पीछे ठेल कर आगे आने की पेशकश में जुट गये। किसी हद तक वे इस सब में सफल हो गये हैं।

आर्य वीर दल–जम्मू कश्मीर का पुनर्गठन

प्रांतीय समिति

अधिष्ठाता—प्रो० प्रभुशूर आर्य सत्यार्थ भास्कर, संचालक—ब्र० ऋषिपाल नैष्ठिक, मन्त्री— श्री विजय कुमार।

जम्मू मण्डल समिति

अधिष्ठाता—डा० योगेन्द्र कुमार, संचालक—श्री क्षमानन्द, मन्त्री—श्री जगमोहन खन्ना।

अवसरवाद का यह संकट सिर्फ गांधीवादियों तक ही सीमित नहीं हैं। देश में ऐसे छद्म वामपंथियों की कमी नहीं जिनके लिए साम्यवादी लफ्फाजी रूस या पूर्वी यूरोप के देशों की यात्रा का परवाना साबित होती रही है। पत्रकारिता विश्वविद्यालयों, अकादमियों में ऊंचे ऊंचे ओहदों पर बैठे इन वामपंथी लफ्फाजों के लिए मार्क्सवाद भी वैसी ही जुगाली की चीज है, जैसी कतिपय गाँधीवादियों के लिए गांधीवाद। सर्वहारा की एकता और क्रांति की बातें करते हुए बुढ़ाते रहने वाले ये लोग कभी सर्वहारा से सीधा साक्षात्कार नहीं करते। अपनी खान-पान और रहन-सहन की शाही आदतों के चलते, वे उस आदमी तक शायद पहुंच भी नहीं सकते, जिस की मुक्ति की बात मार्क्स ने की थी। स्वाभाविक ही इस किस्म के वामपंथियों के लिए नेहरू और इंदिरा गांधी देश के सबसे प्रगतिशील नेता थे।

नेहरू रहे नहीं और इंदिरा गांधी इतना बदनाम हो चुकी है कि उनको नेता मानने से अपनी रही सही हैसियत भी गिरती है। इसलिए देश के छद्म वामपंथियों में इन दिनों बड़ी बेचैनी है। उनको जरूरत है एक ऐसे नेता कि, जो सत्ता प्रतिष्ठान का सामने आदमी हो, वामपंथी बुद्धिजीवियों को सारी सुविधाओं और शान-शौकत की सुरक्षा दे सकें ओर जिसे अपना खड़ा करके बड़े आराम से दक्षिण-पंथ बनाम वामपंथ की बहस चलाई जा सके।

फिलहाल ऐसा कोई नेता मंच पर नहीं है और खिसयानी बिल्लियां खंभा नोच रही हैं। आम आदमी की तलाश में खुद बड़े आदमी बन जाने वाले छद्म वामपंथी बुद्धिजीवी, लेखक, पत्रकार इन दिनों पानी पी-पी कर देश के सामान्य जन और जयप्रकाश नारायण को कोस रहे हैं कि हाय, इन लोगों ने हमारी 'रानी मां इन्दिरा गांधी को इस हालत में क्यों ला छोड़ा। अब हमारी परजीवी बेल किसके सहारे फलेगी-फूलेगी ? कमोबेश यही दुखड़ा निर्मला देशपांडे-जैसी महत्वाकांक्षी सर्वोदयी लोगों का है जिनके लिए समूची आपात स्थिति अनुशासन-पर्व मात्र थी। इन विचारों के लिए 'अनुशासन पर्व' की उपलब्धियां सचमुच बड़ी थीं।

चूहा आदमी से डरता है।

आदमी औरत से डरता है।

और औरत चूहे से डरती है।

—डा गोपालप्रसाद 'वंशी'

प्रसिद्ध खगोल-विज्ञानी हेनरी नोरिस रसल ने एक बार आकाशगंगा के बारे में भाषण दिया। भाषण के बाद श्रोताओं से कहा गया कि यदि उन्हें कुछ पूछना हो तो पूछें। तब एक महिला ने उठकर कहा— 'अगर हमारा संसार छोटा है और ब्रह्मांड इतना विशाल, तो क्या हम माने कि ईश्वर हमारी ओर ध्यान नहीं दे पाता होगा ? रसल ने उत्तर दिया—यह इस बात पर निर्भर है कि आप कितने बड़े ईश्वर में विश्वास रखती हैं।'

आर्य युवक परिषद अम्बाला

जिला अम्बाला की आर्य युवक परिषद का गठन प्रांतीय पर्यवेक्षक श्री रोशन लाल आर्य की अध्यक्षता में हुआ। जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये -

1. प्रधान—श्री कंवरपाल सिंह 2. उप प्रधान—श्री राजकरण सिंह 3. महामन्त्री—श्री जगपाल सिंह 4. सहमन्त्री—श्री विक्रम सिंह 5. संगठन मन्त्री - श्री नेपाल सिंह 6. कोषाध्यक्ष—श्री बीर सिंह

डी. ए. वी. कालिज अम्बाला में आर्य युवक परिषद के निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए—

1. प्रधान —श्री नरेन्द्र सिंह 2. उपप्रधान-श्री रविन्द्र कुमार 3. महामन्त्री—श्री नरसिंह 4. सहमन्त्री—श्री वेद प्रकाश 5. कोषाध्यक्ष—श्री प्रमोद कुमार

पंजीयन क्रमांक

एन० डब्लू/सी० एच० ६६

राजधर्म

१५ दिसम्बर, १६७७

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कामों में हस्तक्षेप के विरुद्ध स्टे अब भी लागू

—मुरारी लाल

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामंत्री पंडित मुरारी लाल ने एक ब्यान में कहा कि सर्वश्री पृथ्वी सिंह आजाद, बीरेंद्र, रामचन्द्र जावेद, राम गोपाल शालवाले तथा अन्य छ: व्यक्तियों के विरुद्ध सभा के कार्य में हस्तक्षेप करने पर जो निषेधाज्ञा जालंधर के सब जज, दर्जा अव्वल ने मेरी दरख्वास्त पर जारी की थी, वह अब भी लागू है। बयान में बताया गया कि स्टे श्री एम. एस. टिवाना सब जज की ओर से हटाए जाने के बाद मेरी 7 नवम्बर 1977 की याचिका श्री आर. पी. गैंद एडीशनल डिस्ट्रिक्ट मैजिस्ट्रेट ने पक्षों के वकीलों की बहस सुनने के पश्चात् स्वीकार कर ली। अत: 14 जून 1976 की निषेधाज्ञा पहले की भांति लागू है। श्री मुरारी लाल ने यह भी कहा कि पिछले दिनों गुरुदत भवन के खोले जाने के बारे मेरा और श्री वीरेन्द्र का समझौता हुआ था। इस प्रकार मैंने सभा का झगड़ा समाप्त करने के लिए मार्ग समतल किया था। जिसकी पुष्टि हम दोनों ने अपनी-अपनी अन्तरंग सभाओं से करा ली थी परन्तु बाद में श्री वीरेन्द्र ने समझौते की बात को एक ओर रखकर सरकार की सहायता से सभा की संस्थाओं पर अवैध कब्जा करना शुरू किया था। अत: समझौते की बात आगे न बढ़ सकी। समझौते के लिए हमारे द्वार हमेशा खुले हैं और रहेंगे। दोनों पक्षों ने अदालतों में लिखकर दिया था कि हमने अपने मतभेद समाप्त कर दिए हैं, भविष्य में हम मिलकर कार्य करेंगे। इस सद्भावना के अन्तर्गत गुरुदत भवन खोला गया था। अब अपील स्वीकार होने के परिणामस्वरूप श्री वीरेन्द्र का गुरुदत भवन में बैठना कोई महत्व नहीं रखता क्योंकि वह सम्पत्ति आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की है और आर्य प्रतिनिधि सभा वही कहला सकती है जिसका विभाजन नहीं हुआ। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पिछले दिनों दो चुनाव हुए हैं, उनके विरुद्ध कोई निशेधाज्ञा नहीं थी। जबकि श्री वीरेन्द्र की सभा के जालन्धर और राजपुरा के दोनों चुनाव स्टे के मध्य लड़े गये हैं।

बयान में यह भी कहा गया है कि पिछले दिनों हरियाणा में गुड़गांव और भिवानी के दोनों मुकद्दमे उस आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के पक्ष में है, जिसका मैं मंत्री हूं। अन्त में श्री मुरारी लाल ने कहा कि आंखों की रोशनी कम होने के कारण मैं समाचार पत्रों से सम्पर्क नहीं रख सका, जिसका मुझे खेद है।

महर्षि दयानन्द साधु आश्रम की स्थापना हो गई।

आर्य समाज के क्षेत्र में कई वर्ष से यह अनुभव किया जा रहा था कि एक ऐसे प्रशिक्षण केन्द्र का निर्माण किया जाए जहां योग अभ्यास, वैदिक कर्मकांड तथा वैदिक सिद्धांतों की जानकारी के साथ सामाजिक क्षेत्र में प्रचार कार्य करने की भी ट्रेनिंग दी जाए। प्रथम तो आर्य समाज में वानप्रस्थी तथा सन्यासी बनते ही बहुत कम लोग हैं और यदि कोई साहस करके इस क्षेत्र में आगे कदम बढ़ा भी देता है तो किसी भी संस्था में अथवा आर्य समाजों में ऐसी व्यवस्था नहीं है जिससे नया व्यक्ति निरन्तर उत्साह प्राप्त कर सके। मैंने 'राजधर्म' के माध्यम से साधु आश्रम बनाने की आवश्यकता पर सभी साथियों से विचार विमर्श किया था। यह योजना उचित स्थान के अभाव में क्रियान्वित नहीं हो पा रही थी।

गुरुकुल सिंहपुरा, सुन्दरपुर के अधिकारियों का धन्यवाद!

रोहतक के समीप $1\frac{1}{2}$ मील की दूरी पर जीन्द रोड पर निर्मित गुरुकुल सिंहपुरा सुन्दरपुर एक हरी भरी एवं सुन्दर संस्था पिछले पन्द्रह वर्ष से कार्य कर रही है। मेरे मन में यह विचार उत्पन्न हुआ कि नयी संस्था बनाने की अपेक्षा इसी गुरुकुल को यदि साधु आश्रम के रूप में बदल दिया जाए तो कार्य सुलभ रहेगा। इसी भावना से मैंने श्री राममेहर जी एडवोकेट से सम्पर्क किया। श्रीराममेहर जी इस संस्था की स्थापना के समय से ही इसके प्रधान अथवा प्रमुख अधिकारी रहे हैं। उन्होंने तन मन धन से इस संस्था को सहयोग दिया है। उन्होंने मेरी साधु आश्रम की योजना को सहर्ष स्वीकार करते हुए अपना पूर्ण समर्थन देने का आश्वासन दिया। उसके बाद गुरुकुल के वर्तमान प्रधान श्री रघुवीरसिंह सरपंच, मन्त्री श्री मा० माहसिंह तथा कोषाध्यक्ष श्री महाशय हरद्वारी लाल जी एवं चौ० किशन चन्द जी आदि गुरुकुल के प्रमुख कार्यकर्ताओं से सम्पर्क किया और उन्होंने अपनी अन्तरंग सभा की बैठक बुला कर सर्व सम्पत्ति से गुरुकुल का नाम महर्षि दयानन्द साधु आश्रम गुरुकुल सिंहपुरा सुन्दरपुर रोहतक स्वीकार कर लिया तथा साधु आश्रम के भावी कार्यक्रम के लिए एक उप समिति का गठन भी कर दिया। 4 दिसम्बर 1977 को गुरुकुल की साधारण सभा तथा आर्य समाज के प्रमुख कार्य कार्यकर्ताओं की बैठक में आश्रम की योजना को स्वीकार करके इसे अन्तिम रूप दे दिया। मैं गुरुकुल के अधिकारियों का अतीव आभारी हूं एवं धन्यवादी हूं कि उन्होंने एक क्रान्तिकारी निर्णय लेकर आर्य समाज के क्षेत्र में नई ज्योति जलाई है।

★ स्वामी इन्द्रवेश

राजधर्म प्रकाशन के लिए स्वामी अग्निवेश द्वारा कोठी नं० 1, सैक्टर-16-ए, चण्डीगढ़ से रोक्साना प्रिंटरज, 83-84 सैक्टर 16-डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित एवं मुद्रित।

साप्ताहिक

राजधर्म

वर्ष ६ अंक ७ संपादक—स्वामी अग्निवेश मूल्य ५० पैसे

बुधवार, १ मार्च, १९७८ वार्षिक १५ रु०

★ जनता पार्टी कौन तोड़ेगा ?

★ भारतीय समाज की एक नंगी तस्वीर

★ सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद का वार्षिक अधिवेशन एक दृष्टि में

★ चुनाव परिणाम—एक चुनौती

गुरुकुल कांगड़ी और भूख हड़ताल

पिछले 22 जनवरी को आर्यसमाज दीवानहाल दिल्ली में आदरणीय लाला रामगोपाल शालवाले ने अपने आमरण अनशन की घोषणा करते हुए भारत सरकार से मांग की, कि वह गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से "स्वामी अग्निवेश आदि का अवैध कब्जा समाप्त कर श्री वीरेन्द्र शाल-वाले आदि का कब्जा बहाल करायें।" लगभग 11 दिन चलने वाले इस आमरण अनशन का अन्त क्या और किस तरह हुआ इसकी दिलचस्प कहानी आपको बताना चाहता हूं।

अनशन की घोषणा कर चुकने के बाद जब 22 जनवरी को कुछ आर्य नेताओं को बुलाकर लाला जी ने उस पर उनकी मुहर लगवानी चाही तो अधिकांश व्यक्तियों ने कहा कि इस तरह की घोषणा से पहले सार्वदेशिक की अन्तरंग आदि की स्वीकृति लेनी चाहिए थी। अपने आप फैसला करके अब हमसे पुष्टि कराने का क्या महत्व रह जाता है ? अंत में रो धोकर लोगों को सहमत कराया और अनशन शुरू हुआ। श्री लाला जी को आशा थी कि संत फतह सिंह के अनशन की तरह उनकी इस घोषणा से सरकार हिल जाएगी पर 5-7 दिन की लगातार भूखहड़ताल के बावजूद जब सरकार ने कोई ध्यान नहीं दिया तो श्रीलालाजी ने धमकी दी कि 31 जनवरी से सत्याग्रह शुरू हो जाएगा। पर सत्याग्रह तो क्या वहां लोगों ने मौखिक सहानुभूति भी दिखाने में कोई विशेष रुचि नहीं ली। पोस्टरों और बयानबाजियों से भी जब माहौल गर्म नहीं हो पाया तो पूरी निराशा के साथ श्री लाला जी और उनके साथियों ने जान बचाने का कोई रास्ता ढूंढना शुरू किया।

मैं उन दिनों होडल के पास एक गांव में श्रमदान के कार्य को लेकर तथा बादली उपचुनाव के सिलसिले में हरयाणा भवन दिल्ली में ठहरा हुआ था। मेरे पास श्री विजय कुमार मल्होत्रा संसद सदस्य का फोन आया कि स्वामी जी कोई रास्ता निकालो। मैंने कहा कि कोई भी व्यक्ति न्याय-अन्याय का निर्णय करना चाहे तो हम हमेशा बातचीत के लिए प्रस्तुत हैं पर अनशन की धमकी का हम पर या आर्यसमाज पर कोई

प्रधानमंत्री जी पर छोड़ देते हैं मैंने कहा कि प्रधानमंत्री जी को तो मैं स्वयं कई बार लिख चुका हूं कि आपात्स्थिति के दौरान हमारे संगठन को विघटन करने का षड्यन्त्र हुआ है, उसकी वे निष्पक्ष जांच करायें। शाह आयोग को भी हमारे महामन्त्री श्री मुरारीलाल जी ने अपना केस भेजा हुआ है। श्री विजय कुमार जी ने आग्रह किया कि एक बार फिर आप प्रधान मंत्री जी को इस आशय का एक पत्र लिख दें। मैंने सहर्ष निम्नलिखित एक संक्षिप्त पत्र उन्हें दे दिया।

दिनांक : 31-1-78

श्रद्धेय मोरारजी भाई,

नमस्ते।

आपातस्थिति की घोषणा के साथ ही आर्य समाज के कतिपय अवसरवादी तत्वों ने आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब मे विघटन की प्रक्रिया आरम्भ कर दी थी। इसका हमारे रचनात्मक समाजसुधार के कार्यक्रम पर बड़ा प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है।

आपसे प्रार्थना है कि 26 जून 1975 से आरम्भ की गई षडयन्त्रकारी प्रवृतियों के अन्तर्गत हमारी इस उच्चादर्श युक्त संस्था के साथ की गई ज्यादतियों को समाप्त करायें और नैतिक तथा वैधानिक दृष्टि से सही व्यक्तियों को अपना पूरा सहयोग प्रदान करें। हमारे और श्री शालवाले ग्रुप के बीच जो संघर्ष चल रहा है। इसका आप मध्यस्ता करें। इसकी कानूनी उलझन को सुलझाने के लिए आप किसी विख्यात न्यायविध को सारा मामला सौंप सकते हैं। उदाहरण लिए श्री एच. आर. खन्ना या श्री सिकरी जी या श्री वी. एम. तारकुण्डे। आप से अनुरोध है कि इस सारे प्रकरण को अपने हाथ में लें। आप जो भी न्याय करेंगे वह हमें मान्य होगा।

भवदीय
स्वामी अग्निवेश
कुलाधिपति

श्री मोरारजी भाई
प्रधानमंत्री
भारत सरकार
नई दिल्ली-1

उसी दिन रात श्री मल्होत्रा का फोन आया कि प्रधानमंत्री जी ने मध्यस्ता करनी स्वीकार कर ली है आप उनसे बातें करने के लिए प्रस्तुत हो जांय। मैंने सीधे शब्दों में कह दिया कि जब तक अनशन जारी है मैं इस बारे में बात करना उचित नहीं समझता। अगले दिन मैं तो बादली उप चुनाव में चला गया। इधर प्रधानमंत्री जी की कोठी पर श्री वीरेन्द्र, श्री विजय कुमार मल्होत्रा, श्री ओमप्रकाश त्यागी, श्री चौधरी देशराज जी आदि इस प्रतीक्षा में बैठे रहे कि मैं वहाँ जाऊंगा और प्रधानमंत्री जी से कुछ तय किया जाएगा। पर निर्धारित समय प्रातः साढ़े 8 बजे जब मैं वहां नहीं गया तब प्रधान मंत्री जी ने भी एक पक्ष से बात करना उचित न समझकर उन्हे विदा कर दिया। उस दिन शाम को रेडियो पर आ गया कि अगले दिन सुबह अनशन समाप्त हो जाएगा। जब मैं देर रात को हरियाणा भवन वापस आया तो मुझे सूचना मिली कि सुबह सात बजे प्रधानमंत्री जी के यहाँ बातचीत के लिए मुझे बुलाया गया है। मैंने मन बना लिया कि जब तक अनशन बिना शर्त समाप्त नहीं होता, मैं कोई बात नहीं करूँगा। 2 फरवरी की सुबह सात बजे फिर श्री विजय कुमार जी का, श्री त्यागी जी का फोन आया कि हम प्रधानमंत्री जी के घर पर आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं जल्दी आइये। जब मैंने इन्कार कर दिया तो वे बेचारे बड़े असमंजस में पड़े। मैंने प्रधानमंत्री जी से फोन पर निवेदन किया कि अनशन साढ़े 9 बजे टूटने की घोषणा हुई है मैं उसके बाद आने के लिये तैयार हूं। प्रधान मंत्री जी ने मेरी बात का औचित्य मानकर साढ़े 10 बजे आने के लिए कहा।

सवा 9 बजे के लगभग मेरी बाबू जगजीवन राम जी से फोन पर बात हुई जिसमें उन्होंने कहा कि मैं अनशन तुड़वाते समय कोई आश्वासन नहीं दूंगा बाकी मेरे जाने से किसी की जान बचती हो तो मुझे कोई हर्ज नहीं।

इस तरह साढ़े 9 बजे बिना किसी आश्वासन के बिना किसी अपनी मांग को स्वीकार करवाये श्री लालाजी ने अपने आमरण अनशन का नाटक समाप्त कर दिया।

साढ़े 10 बजे जब मैं श्री प्रेमपाल शास्त्री और श्री देव शर्मा जी के साथ प्रधानमंत्री जी के निवास पर पहुंचा तो श्री वीरेन्द्र जी सहित उक्त चारों सदस्य वहाँ विराजमान थे। वे मुझसे कहने लगे सभी इकट्ठे होकर प्रधानमंत्री जी से मिल लें। मैंने कहा कि मैं पहले उनसे अलग पांच मिनट बातें करूंगा और तब बाकी सभी आ जांय।

मैंने पहले प्रधानमंत्री जी से जाकर पूछा कि क्या उन्होंने श्रीलाला जी का अनशन तुड़वाने के लिए कोई आश्वासन दिया है? उन्होने कहा कि मेरा इस अनशन से कोई मतलब नहीं और न ही मैंने कोई उन्हें आश्वासन दिया है। तब मैंने और भाई प्रेमपाल जी ने उन्हें बताया कि किस तरह दिल्ली में झूठे पोस्टर लगाकर श्री लाला रामगोपाल ने घोषणा की है कि प्रधानमंत्री जी के आश्वासन पर वे अपना अनशन तोड़ रहे हैं।

आदरणीय मोरार जी भाई ने अपने संयम एवं साधना से क्रोध पर लगभग विजय प्राप्त कर ली है किन्तु इस झूठे प्रचार का उन्हें बड़ा बुरा लगा और उन्होंने तत्काल श्री वीरेन्द्र श्री त्यागी, श्री मल्होत्रा और श्री देशराज को अपने कमरे में बुलवाकर अपनी अप्रसन्नता जाहिर की। श्री त्यागी जी कहने लगे कि ऐसा कोई पोस्टर हमने नहीं लगाया। प्रधानमंत्री जी ने पूछा कि क्या फिर वह पोस्टर स्वामी जी ने लगवाया है? बेचारे चारों खिसियाये हुए एक दूसरे का मुंह देखने लगे। इस पर मोरारजी भाई ने सख्त होकर कहा कि अब आपलोग जाकर बाकायदा वक्तव्य दें कि अनशन तुड़वाने में मैंने कोई आश्वासन नहीं दिया है और यह प्रचार झूठा है।

जब त्यागी जी ने मोरारजी भाई को यह बताया कि बाबू जगजीवन राम ने भी अनशन तुड़वाते समय कोई आश्वासन नहीं दिया तो प्रधानमंत्री दुबारा अपनी अप्रसन्नता व्यक्त करते हुये कहने लगे कि आप लोग बाबूजी को वहाँ क्यों ले गये—अनशन तोड़ना था तो अपने आप तोड़ लेते बाबू जी को वहाँ ले जाना उचित नहीं है इस बात से उन चारों महानुभावों पर जो बीती वे ही जानते हैं।

थोड़ी देर बातें करने के बाद प्रधानमंत्री जी ने कहा कि 20-25 दिन में वे दक्षिण के चुनाव आदि से फुरसत पाकर दोनों पक्षों से सारी बातें सुनकर अपना निर्णय देंगे। तब तक के लिए सरकारी ग्राण्ट आदि की सुविधा की दृष्टि से वे श्रीसोम भाई अध्यक्ष खादी कमीशन को प्रशासक नियुक्त करेंगे। श्री सोमभाई के निश्छल स्वभाव से मैं परिचित था। मैंने उनके नाम की स्वीकृति दे दी और कहा कि प्रशासक महोदय गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के 13 लाख रु० के गबन की आरोपों की भी जांच करायें। इसको जब प्रधानमंत्री जी ने स्वीकार किया तो पास बैठे श्री वीरेन्द्र जी थोड़ा तिलमिलाये और कहने लगे "प्रधानमंत्री जी, इन्होंने 13 लाख के गबन में मुझे भी फंसाया हुआ है—आप मुझे इजाजत दीजिए यदि इनके आरोप झूठे साबित हो तो मैं इन्हें कोर्ट में ले जाऊंगा।" प्रधानमंत्री जी ने मुस्करा कर कहा कि आपको मेरे इजाजत की क्या जरूरत है आप बेशक इन्हें आज ही कोर्ट में ले जायें। प्रधानमंत्री जी के इस सीधे सपाट जवाब के बाद श्री वीरेन्द्र जी के लिए आगे कुछ कहना मुश्किल हो गया।

इसके बाद मैंने श्री मोरारजी भाई को बताया कि मेरे एक सहयोगी के भयंकर कैन्सर का उपचार मैंने उनके द्वारा अनुमोदित 'स्वमूत्र चिकित्सा पद्धति से करना शुरू किया है और उसका रोगी को चमत्कारिक लाभ हो रहा है। इससे मोरारजी भाई बड़े प्रसन्न हुए और उन्होंने लगभग आध घन्टे इस उपचार प्रणाली का इतिहास और अपने अनुभव आदि सुनायें इसके बारे में अपने पाठकों को मैं फिर कभी विस्तार से लिखूंगा।

—अग्निवेश

जनता पार्टी को कौन तोड़ेगा ?

• उदयन शर्मा

[लेखक की सभी बातों से सहमत न होते हुए भी वर्तमान राजनीति पर लिखे इस विश्लेषणात्मक लेख को आपकी सेवा में अविकल रूप से प्रस्तुत किया जा रहा है—अपनी टिप्पणी अवश्य भेजिये। —सम्पादक]

कांग्रेस के ३० वर्षीय शासन की समाप्ति के पांच महीने बाद ही जनता पार्टी की राष्ट्रीय कार्यसमिति में पेश अपने एक गुप्त 'बैकग्राउंड पेपर में पार्टी अध्यक्ष चन्द्रशेखर ने लिखा—'जनता, बुद्धजीवियों तथा जनमत बनानेवाले लोगों के बीच जनता पार्टी की सरकार और नेताओं की प्रतिष्ठा साफ घट रही है। इसकी वजह है सरकार और जनता के बीच लगभग संवादहीनता की स्थिति (जनता मोर्चे के भीतर अंदरूनी संघर्ष की संवादमयता अलग है), यह अनुभूति कि कोई खास काम नहीं हो रहा है और जो कुछ होता भी है, उसकी खबर जनता को नहीं दी जाती। लोग यह भी महसूस कर रहे हैं कि मंत्रिगण न तो निजी स्तर और न सरकार के रूप में सामूहिक तौर पर वैचारिक ताजगी का परिचय दे पा रहे है। वे तोतारटंत लफ्फाजी में व्यस्त हैं—उनके कार्यों का कोई खास दिशा नहीं बन पा रही है।''

उस पार्टी के अध्यक्ष को उपर्युक्त वाक्य आखिर क्यों लिखने पड़े, जो आपात्काल हटाने, मीसा सरीखे काले कानूनों को खत्म करने, 'कानून शासन' और प्रेस स्वतन्त्रता की पुर्नस्थापना, काम करने के मौलिक अधिकार, राजनैतिक और आर्थिक शक्ति के विकेन्द्रीकरण, मंत्रियों के रहन-सहन में सादगी, कृषि को प्राथमिकता, अर्थनीति की पुनंरचना आदि के रंगीन वायदों के साथ चुनाव लड़ी थी? उपर्युक्त दस्तावेज जहां शासक दल की बिखरती हालत का प्रमाण है, वहीं इसके शहरी चिंतन का नंगा सबूत। इस वक्तव्य में बुद्धिजीवियों 'एलिट' वर्ग में अपनो तसवीर की फिलम दिखाई गई है, जिनका जनता पार्टी की जीत में रत्ती भर भी योगदान नहीं था। यानी वस्तुस्थिति सिर्फ इसलिए स्वीकार की गई, क्योंकि एक वर्ग विशेष ने इंगित किया। यदि यही बात एक मजदूर या किसान कहता तो क्या वह दस्तावेज इस रूप में होता? और यही जनता पार्टी का मूल संकट है। यह अभी तक अपनी सही दिशा निश्चित नहीं कर पायी है, कि इसे किस वर्ग की पार्टी बननी है, शहरी हितों की रक्षा आवश्यक है या ग्रामीण जनता की भावनाओं का आदर जरूरी है? इस पूरी बहस में जो किताबी लोग हरिजन या भूमिहीन को ग्रामीण से अलग मानते हैं वे दया के पात्र हैं और राजनीतिक शोशेबाजी में यकीन करते हैं।

जनता पार्टी के अंदरूनी संकट को आंकने से पहले एक और सत्य भी स्वीकारना चाहिए कि यह पार्टी १९७४-७५ के जय प्रकाश आंदोलन की देन नहीं है, बल्कि इमर्जेंसीजनित दमन से बचने की प्रक्रिया से पैदा एक मोर्चा थी। २५ जून १९७५ ने जे० पी० आन्दोलन को खत्म करके पुराने राजनीतिज्ञों की दुकानें फिर जमवा दी, अन्यथा आज मोरारजी देसाई या जगजीवन राम राजनीति में शक्तिमान न होते। यह आन्दोलन इंदिरा गांधी से लेकर जॉर्ज फर्नांडिस, मोरारजी देसाई तक प्रत्येक दल की स्थापित राजनीति और राजनीतिक नेतृत्व के खिलाफ परिवर्तन की प्रक्रिया थी। इंदिरा गांधी ने खुद को बचाने के लिए उसे कुचला और साथ में वे बाकियों को भी बचा ले गयीं।

आपसी झगड़ों के रहते हुए भी यदि जनता पार्टी के नेता देश को एक सही सोच की अर्थ नीति, औद्योगिक व्यवस्था दे पाते, तो भी बात बनती। इन दोनों मोर्चों पर यह पार्टी बेइंतहा पिटी है। खासकर हमारे प्रिय जार्ज ने दस महीनों में नयी औद्योगिक नीति के नाम पर 'मरा चूहा' जनता को थमा दिया है तो एच० एम० पटेल की पूरी अर्थ नीति कांतिभाई के रिश्तेदारों—समर्थकों की समझ-बूझ पर रची जा रही है।

जनता पार्टी ने सबसे जबरदस्त भूल की जून १९७७ के विधान सभा चुनावों में। १९५१ में कांग्रेस यदि चाहती, तो जाति चक्र को ध्वस्त कर सकती थी। उसने ऐसा नहीं किया। १९५१ में जाति कांटा के आधार पर टिकट बंटे। यही भूल जून ७७ में दोहराई चन्द्रशेखर, चरणसिंह, बहुगुणा, मोरारजी देसाई ने। और जनता पार्टी सीधे-सीधे दो खेमों में बंट गई। चरणसिंह समर्थक और चरणसिंह विरोधी। दिसम्बर में यह प्रतिस्पर्धा घटाटोप थी, जब यह अफवाह फैली कि चरण सिंह को मंत्रिमंडल से निकालने का प्रयास हो रहा है।

कौन किसको निकाल सकता है, इसका खाली हिसाब करने के बजाय २३ मार्च १९७७ की स्थिति देखनी चाहिए। मार्च के चुनाव में जनता पार्टी और लोकतांत्रिक कांग्रेस के ३१० उम्मीदवार जीते थे। उस समय घटकानुसार संख्या थी—भालोद के ७८, जनसंघ के ९०, संगठन कांग्रेस के ५०, सोशलिस्ट पार्टी के ४५, लोकतांत्रिक कांग्रेस के २८, चन्द्रशेखर गुट के पांच, अन्य पाँच।

आज १९७८ में उपर्युक्त आंकड़े अमूमन ऐसे ही हैं, यह सोचना सरासर गलत होगा, क्योंकि लो० कां० के जगजीवन राम और हेमवतीनंदन बहुगुणा एक दूसरे से बहुत दूर जा चुके हैं तो भालोद के एच. एम. पटेल चौधरी चरणसिंह के बजाय कांति देसाई के ज्यादा नजदीक जा चुके हैं। जनसंघ का खेमा आज भी एकजुट है, क्योंकि पूर्व निर्धारित रणनीति के तहत इसके अधिसंख्यक दिग्गज सत्ता से बाहर है। चंद्रशेखर का गुट था रामधन, कृष्णकांत और मोहन धारिया का। बहरहाल करीब दस माह की उठापटक में सिर्फ दो शक्ति केन्द्र इस पार्टी में उभरे हैं—एक चौधरी चरणसिंह स्वयं दूसरा चरणसिंह विरोधी खेमा जिसका नेतृत्व मोरारजी देसाई, जगजीवन राम, जार्ज फर्नाडिस, बहुगुणा, चंद्रशेखर करते हैं। दूसरे खेमे की तकलीफ यह है कि सभी भावी प्रधानमंत्री बनने के दावेदार हो सकते हैं—बहुगुणा को छोड़ कर।

चरणसिंह खेमे में राजनारायण, नानाजी देशमुख के अतिरिक्त महत्त्वपूर्ण आगमन हुआ है—श्यामनंदन मिश्र और उत्तर प्रदेश के बनारसी दास का। दोनों संगठन कांग्रेस के करीब १२ संसद सदस्य इस तरफ ले आये हैं। अपने विरोधियों से मोर्चा लेने में चरण सिह को एक बहुत बड़ा लाभ उनकी अर्थनीति का मिल रहा है। संभवत: जनता पार्टी का यही एकमात्र मंत्री है, जिसका नजरिया प्रत्येक समस्या पर साफ है, कोई उस नीति से असहमत हो यह, दूसरी बात है आर्थिक मसलों पर चरण सिंह का मत स्पष्ट है। कम्युनिस्टों के खिलाफ भी इस व्यक्ति की राय उलझी हुई नहीं है। इसलिए शहरी हितों और बड़े उद्योगों के खिलाफ बात करने के बावजूद पीलू मोदी, बीजू पटनायक को वे अपने साथ ले चलने में सफल हैं। इसीलिये चरण सिंह खेमे में न होकर भी मधु लिमये उनके भारी समर्थक हैं—नीतियों के आधार पर। दोनों शहरी सोच के घोर खिलाफ हैं और किसानों की बात करते हैं पहली बार कोई आदमी सरकार में बैठ कर बड़े उद्योगों के खिलाफ, शहरी सोच के खिलाफ, अंग्रेजी और अंग्रेजीयत क खिलाफ साफ बातें कह रहा है।

दूसरी ओर है, मोरारजी देसाई, जो यह नहीं समझ पा रहे हैं कि करना क्या है या चन्द्रशेखर है जो चाहते हुये भी कहते कुछ भी नहीं हैं। मजेदार बात यह है कि कुछ व्यक्ति जब पार्टी की बेहतरी के लिये चरण सिंह-चन्द्र शेखर दोस्ती की बात कहते हैं तो दोनों खेमों के संचालक काफी परेशान दिखते हैं। एक ने कहा, अरे भाई, चंद्रशेखर दोस्ती क्यों करें ? दोस्ती का मतलब चरण सिंह को प्रधान मंत्री मानना होगा। आखिर चंद्रशेखर जी खुद दावेदार क्यों न बनें।'

इस पूरे मामले में असली सिड़ी साबित हुये हैं पुराने समाजवादी। पिछले ३० सालों में उन्होंने जो कुछ सीखा किया—सहा था, मंत्री बन कर सब भूल गये हैं। कहाँ गये १९७६ के जार्ज फर्नांडिस ? सत्ता के कोहासे में कहीं दूर जा चुके हैं। राजनारायण की तनी भृकुटि अब चंद्रस्वामी के सम्मुख शिथिल है। जमुना प्रसाद शास्त्री, रघु ठाकुर, शरद यादव की आर० एस० एस० से अकेले लड़ने की हिम्मत नहीं पड़ी, तो सुभद्राजोशी के साथ मंच बना बैठे। मात्र दो समाजवादी आज भी वहीं हैं, जहां थे—मधुलिमये और सुरेन्द्रमोहन। आर्थिक-सामाजिक नीतियों पर मधु लिमये का सोच ही थोड़ा बहुत डॉ० लोहिया को याद करने की कोशिश करता है। बाकी ने २४ मार्च १९७७ को डॉक्टर साहब का तर्पण कर दिया लगता है।

बाबू जगजीवन राम अपनी राजनीति की दुकान पं० जवाहरलाल नेहरू के नाम पर जमाने के चक्कर में रोज

मद्रास, बंबई के चक्कर काट रहे हैं तो अध्यक्ष चंद्रशेखर दुनिया के सर्वाधिक दु:खी व्यक्ति प्रतीत होते हैं। मोरारजी देसाई प्रधानमंत्री बन कर तृप्त नजर आते हैं।

इस अफरातफरी में चरण सिंह को, गलत या सही, विचारधारा के दो खूंटे मिल गये हैं। पहला कृषि-प्रधानता वाली अर्थ व्यस्था का और दूसरा नेहरू प्रतिभा के खंडन का। चरण सिंह के विरोधी लगातार यह रणनीति भूल कर रहे हैं कि वे चरण सिंह पर आक्रमण के लिए नेहरू प्रशस्ति का सहारा लेते हैं। डॉ० राममनोहर लोहिया की मृत्यु के दस साल बाद एक व्यक्ति चरण सिंह—आज यह कहने की हिम्मत कर रहा है कि इस मुल्क की बरबादी का असल जिम्मेदार नेहरू परिवार है। नेहरू परिवार भारतीय राजनीति में झूठ, फरेब और खानदानी महत्वकांक्षाओं का प्रतीक हैं। चरण सिंह की भूमिका भारतीय राजनीति में सिर्फ इसलिए याद की जायेगी कि उन्होंने नेहरू मिथक के खिलाफ खड़े होने की हिम्मत और राजनीति में छाये शहरी सम्पन्न वर्ग की जगह गाँव के निपट देहाती किसानों की ताकत को प्रतिष्ठित करने की कोशिश की। किंतु चौधरी साहब के साथ दिक्कत है कि वे दुश्मन बड़ी जल्दी बनाते हैं।

तब क्या जनता पार्टी टूटेगी ? काफी उलझा हुआ और विवादास्पद प्रश्न है। बंगलूर में जनता पार्टी की कार्यकारिणी की बैठक ने उनकी इच्छाओं पर पानी फेर दिया, जो इस टूट के बेहद इच्छुक थे। पर यह कहना भी मूर्खता होगी कि दल एकजुट है और प्रेम-भावना के साथ काम कर रहा है। दल की एकता का एकमात्र कारण है—सत्ता का आकर्षण। इसे कौन छोड़ें। और छोड़े भी तो जाये कहा।

आंकड़ेबाजी और दिल्ली की अफवाहों को मिला कर देखें, तो सिर्फ तीन आदमी इस पार्टी को तोड़ने की स्थिति में हो सकते हैं—जगजीवन राम, हेमवतीनंदन बहुगुणा और चौधरी चरण सिंह, एक-एक करके लें। बाबू जगजीवन राम अब बहुगुणा से भी दुखी हैं। वे छटपटा रहे हैं। बाहर जाने की इच्छा भी प्रकट कर चुके हैं। किंतु उनकी त्रासदी मंत्री की कुर्सी है, जिसे वे छोड़ नहीं सकते। क्योंकि वे आज तक प्रतिपक्ष में रहना तो दूर, कुर्सी से भी अलग नहीं रहे। यदि वे जाते भी तो इसे दूर नहीं माना जायेगा।

जनता पार्टी छोड़ कर जा सकने वालों में हेमवती नंदन बहुगुणा की चर्चा सबसे ज्यादा रहती है। पर बंगलूर में सोफे पर लेटे बहुगुणा ने हंस कर कहा, 'बच्चा, मैं जाऊंगा कहां, अगर जाना भी चाहूं ? मैं इस पार्टी को नहीं छोड़ने वाला।

बहस घूम फिर कर फिर चरण सिंह पर आ जाती है। किसान रैली के बाद पार्टी में उनका खेमा काफी पुख्ता हुआ है और उनके समर्थकों की संख्या १६० बताई जाती है। उन्हें दल से निकालने की अब कोई सोच भी नहीं सकता, क्योंकि उनके पक्ष में इस समय का सामाजिक आर्थिक जाति समीकरण है। चौधरी साहब के एक लेफ्टीनेंट ने हाल में एक पत्रकार से कहा, 'सौ बेलछी और होने दो और तुम्हारे जैसे उसे १००० गुना बढ़ा कर दिखायें। तुम शहरी किताबी कीड़े हमारे जाल में फंसते जा रहे हो।' उसका तर्क सही था। कुर्मी किसानों में सबसे छोटा किसान है, उसके और हरिजन के झगड़े को जाति-संघर्ष के रूप में प्रचारित करके चरण सिंह विरोधी चरण सिंह के कुछ विशिष्ट जातियों के गठबंधन के आधार को पुख्ता करते हैं। और जाटों के अतिरिक्त अहीर, कुर्मी, लोधा, काछी, गड़रिया तथा दो ऊंची जातियों, भूमिहार और ठाकुरों को मिल कर एक मजबूत आधार बनता है और हरिजन अकेला पड़ता है। अखबारों में वर्ग-संघर्ष की दुहाई देने वाला खुद पिटते-जलते हरिजन को बचाने का कोई प्रयास नही कर पाता।

इस प्रक्रिया में चौधरी-कल्ट घोर शहर विरोधी के रूप में ताकतवर होता जा रहा है। इसी बूते पर वे मजदूर आंदोलन, हड़तालों, छात्र आंदोलन आदि के खिलाफ मनमर्जी की बातें कहने में समर्थ हैं, जबकि उनका विरोधी खेमा विभिन्न नीतियों पर पूर्णत: दिग्भ्रमित है।

१९६९ से चरण सिंह के साथी अक्सर दल बदल कर भागते रहे हैं, पर चुनावों में वे दोबारा अपने उतने ही प्रत्याशी जिता लाते हैं। १९७७ के बाद वे एक शक्तिशाली किसान नेता के रूप में उभरे हैं, जिसका दिमाग एकदम साफ है। अत: चरण सिंह से विचारधारा के धरातल पर ही लड़ा जा सकता है। गाँवों में जा कर। और हमारा

गाँव मार्क्स या पाश्चात्य विचारकों को नहीं समझता। इसीलिए जनता पार्टी में चरण सिंह को चुनौती देने की संभावित शक्ति सिर्फ चन्द्रशेखर और बहुगुणा में है। और पार्टी तब तक नहीं टूट सकती जब तक चरण सिंह चंद्रशेखर के वर्तमान शक्ति समीकरणों में कोई भारी परिवर्तन नहीं होता। दोनों एक-दूसरे के संतुलन हैं, क्योंकि पत्रकारों, बुद्धजीवियों, छात्रों एवं युवा वर्ग में चंद्रशेखर की अपनी छवि है। इसलिते दूसरे खेमे का नेतृत्व धीरे-धीरे चन्द्रशेखर के हाथों में जा रहा है। बहस के लिए यदि 'पाचजन्य' को पुराने जनसंघियों का मुखपत्र मानें, तो उसके हाल के एक अग्र लेख के बाद स्थिति यह बनती है कि वे चरण सिंह के साथ तभी तक है, जब तक चौधरी जनता पार्टी में है। क्योंकि वे अब प्रधानमंत्री पद में परिवर्तन का अर्थ अटलविहारी बाजपेयी का आना मानते हैं।

दूसरी ओर चौधरी चरण सिंह अपने विरोधियों से टक्कर लेने के मूड में हैं और प्रतिपक्ष में बैठने को मानसिक तौर पर तैयार भी। बजट के समय वे निश्चित ही पार्टी में अपनी बात रखेंगे और उनका झगड़ा कृषकों के हितों को लेकर अपरिहार्य है। जहाँ तक भावनात्मक संबंधों का सवाल है ऐसा प्रतीत होता है कि वे जनसंघ से पिंड छुड़ाना चाहते हैं और जनसंघी उनसे। कारण, किसान और बिचौलिए व्यापारियों की दोस्ती ज्यादा दिन टिक नहीं सकती। दोनों के हित परस्पर विरोधी हैं।

वास्तविकता यह है कि जनता पार्टी धीरे-धीरे एक दल के रूप में उभर रही है और पुराना घटकवाद खत्म हो रहा है। किंतु आभास यह भी होता है कि चरण सिंह ने खुद को सत्ता से बाहर बैठाने की मानसिक तैयारी कर ली है। अतः यदि जनता पार्टी तोड़नें की किसी में कूवत और औकात है, तो सिर्फ चरण सिंह में। १९८२ के चुनाव में जनता पार्टी में या तो चरण सिंह नहीं होंगे या पुराने जनसंघी। १९८२ का लोकसभा चुनाव हो सकता है, पुराने जनसंघी अकेले और एक हो कर लड़ें। फिर भी इस प्रश्न का उत्तर कि जनता पार्टी कौन तोड़ेगा, सिर्फ एक है-- अगर ऐसा सम्भव हुआ, तो चौधरी चरण सिंह। ●

रविवार से साभार

गाँव की याद

★ सरोज

मुझको अपने घर
अपने गाँव की याद आती है
जब भी किसी गरीब का—
छोटा सा कच्चा घर
किसी सड़क के किनारे दी जाता है
या बारिश के बाद,
जब मेरे बगीचे से —
सोंधी-सोंधी मिट्टी की सुगन्ध
उड़कर मेरे कमरे में फैल जाती है
मुझको अपने गाँव की याद आती है।
बस में जब, कट जाती है—
किसी गरीब की जेब,
याद आते हैं वे भोले किसान
जो दे आते हैं अपना धान
उस मोटे बनिये को
जिसका कर्ज कभी नहीं उतरता
पर वो, जो भरता है सबका पेट
खुद भूखा मरता है।
उसका पीठ से लगा पेट
और भीतर धंस जाता है
जब किसी सफ़ेद-पोश नेता की
बड़ी तोंद नजर आती है।
मुझको अपने गाँव की याद आती है।
देखकर ऊंचे-ऊंचे भवन
पक्की साफ-सुथरी सड़कें
और मंजे बर्तनों से चमकते लोग,
याद आते हैं—
अपने गाँव के कच्चे घर
थिरकते आम और नीम के बिरवे
उन पर कूकती कोयल
धूल मिट्टी से सने
मस्त, बेफिक्र लोग
और वो लचीली, छोटी सी,
आड़ी तिरछी पगडंडी
जो दूर कहीं जाकर
हरे खेतों में खो जाती है
मुझको अपने गाँव की याद आती है। ●

हरियाणा राजकीय अध्यापक संघ रजि०
के प्रान्तीय पदाधिकारियों की सूची :

१. प्रधान : श्री सोहन लाल जी ओ० एस० डी० एजू० बोर्ड चण्डीगढ़
२. उप प्रधान : श्री रेशमी चन्द्र जी रा० उ० वि० दादरी जिला भिवानी
३. उप प्रधान : श्री मित्रसिंह रा० उ० वि० महम जि० रोहतक
४. महामंत्री : श्री चन्द्रप्रकाश शर्मा मु० अ० रा० उ० वि० फरीदाबाद शहर (गुड़गाँव)
५. संयुक्त मंत्री : श्री नरदेव गुप्त रा० क० मा० वि० चीका जि० कुरुक्षेत्र
६. संगठन मंत्री : श्री अमृत लाल रा० मा० वि० ढ़ाकल जि० जीन्द
७. प्रचार मंत्री : श्री हरप्रसाद वर्मा रा० मा० वि० रायवाली (नारायणगढ़) अम्बाला
८. कोषाध्यक्ष : श्री लक्ष्मी चन्द मलिक रा० मा० वि० रिसालु (पानीपत) करनाल

सदस्यगरण

(१) जिला अम्बाला

९. प्रधान : श्री जरनैलसिंह मार्फत गुलाटी क्लाथ हाउस नारायणगढ़
१०. महामंत्री : श्री जगदीश राम रा०उ० वि० निन्योला

(२) जिला कुरुक्षेत्र

११. प्रधान : स० अमोलसिंह रा० मा० वि० थाना थाना (कैथल)
१२. महामंत्री : श्री ओ० पी० आर्य रा० उ० वि० अजरानाकलां

(३) जिला करनाल

१३. प्रधान : श्री धारीसिंह काटियां रा० प्रा० पा० डिवाना (पानीपत)
१४. महामंत्री : राम रत्न शर्मा रा० प्रा० पा० काहंड (घारौण्डा)

(४) जिला सोनीपत

१५. प्रधान : श्री ब्रह्मदेव राणा रा० उ० वि० खरखोदा
१६. महामंत्री : श्री राजेन्द्र पाल मदान रा० प्रा० पा० डब्बल स्टोरी सोनीपत

(५) रोहतक

१७. प्रधान : श्री बलवन्तसिंह रा० उ० वि० भालोठ
१८. महामंत्री : श्री परशु राम रा० उ० वि० साँपला

(६) जीन्द

१९. प्रधान : चौ० कर्मसिंह खण्ड शिक्षाधिकारी नगूराँ
२०. महामंत्री : श्री हरीशचन्द्र रा० उ० वि० किठाना

(७) जिला भिवानी

२१. प्रधान : श्री शेरसिंह रा० उ० वि० कंवारी
२२. महामंत्री : श्री प्रभुदयाल रा० उ० वि० सण्डवा (तोषाम्)

(८) जिला गुड़गाँव

२३. प्रधान : श्री जवाहरसिंह रा० उ० वि० औरंगाबाद
२४. महामंत्री : श्री अजमतखाँ रा० उ० वि० मालव (नूह)

(९) जिला महेन्द्रगढ़

२५. प्रधान : राव गणपत सिंह रा० उ० वि० रिवाड़ी
२६. महामंत्री : राव भगवान सिंह रा० मा० वि० डेरोलीअहीर

(१०) जिला हिसार

२७. प्रधान : श्री किताब सिंह रा० उ० वि० ढण्ढेरी
२८. महामंत्री : श्री ओ० पी० बहार रा० मा० वि० लाम्बा (रतिया)

(११) जिला सिरसा

२९. प्रधान : श्री बहादुर सिंह गोदारा रा० प्रा० पा० कैनाल कालोनी सिरसा
३०. महामंत्री : श्री गुरतेज सिंह रा० उ० वि० सूचान।

आर्य समाज डाहोला (जीन्द) में निर्वाचन :

स्वामी रुद्रवेश की अध्यक्षता में आर्य समाज डाहोला, जिला जीन्द का वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी चुने गये :—

(१) प्रधान - श्री पंजाबसिंह आर्य,
(२) महामन्त्री – श्री उदयसिंह आर्य
(३) कोषाध्यक्ष—श्री ऋषिराम आर्य।

अजरौन्दा (फरीदाबाद) में युवा ग्राम सुधार समिति के चुनाव में निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए :—

(१)अध्यक्ष—कंवर राजेन्द्रसिंह (२) उपाध्यक्ष—श्री दुर्गा प्रसाद शर्मा (३) सचिव—श्री सुखवीरसिंह मालवीय (४) कोषाध्यक्ष—श्री अमीचन्द सैनी।

भारतीय समाज की एक नंगी तस्वीर

● सुल्हखां

[हरयाणा के सबसे पिछड़े इलाके —"मेवात" के उदीयमान लेखक साथी सुल्ह खां की तथ्यों एवं आंकड़ों पर आधारित जलते हुए सवाल कहां खड़े हैं हम ? कितने खोखले हैं हमारे नारे ?

30 साल की आज़ादी की दिल को हिला देने वाली कहानी, —अपनी प्रतिक्रिया लिखिये— संपादक]

1. आज हमारे देश में ही नहीं बल्कि दुनियाँ के दो तिहाई हिस्से में जहाँ एक ओर दौलत के अम्बार खड़े हैं वहाँ दूसरी ओर भूख से दम तोड़ती जिन्दगी खड़ी है। इस के बहुत सी खतरनाक नतीजे, भुखमरी, बेरोजगारी, गरीबी वेश्यावृति, भ्रष्टाचार, हत्या, बलात्कार उत्पीड़न और दमन इत्यादि २ के रूप में हमारे सामने है। देश के लाखों लोग भीख माँग कर गुजारा करते हैं। हाथ पसारे रिरियाता हुआ बुढ़ापा चन्द एक बचे कुचे झूठ टुकड़ों के लिये लड़ते हुये हाथ पसारते बच्चे. चिपके हुये गाल एवम् लड़खड़ाती हुई जवानी–हमारे देश की बिगड़ी हुई तस्वीर पेश नहीं करते तो और क्या है ?

2. पेट की आग बुझाने के लिये जिस्म का सौदा करने वाली सैकड़ों औरतें आपको प्रायः हर शहर में मिल जायेगी इन घोषित वेश्याओं के इलावा मध्यवर्ग की हजारों लड़कियां अपने गरीब मां बाप एवं भाई बहनों के पालन पोषण के लिये जिन मालिकों के यहाँ नौकरी करती है उन्हें अपना शरीर सौंप देने को भी विवश हो जाती हैं। सुन्दर तथा चुस्त लड़की चाहिये के पीछे दौलतमंद भेड़ियों के शरीर की भूख होती है। नेशनल लेबर इन्सीट्यूट के नवम्बर 1974 के सर्वेक्षण के मुताबिक उत्तर काशी के पुरोला की विवाहित लड़कियाँ कुछ वर्षों के लिये नगरों में में जाकर वेश्यावृति करती है और हर दिन बीस-२ पच्चीस-२आदमियों को अपना जिसम बेचती हैं तब कहीं 4-5 साल में जाकर कर्जमुक्त हो पातीहैं।

3. दूसरी ओर गरीबी का फैलता हुआ दायरा इतना बढ़ चुका हैं प्रायः 1947 से कहा जाता था कि हमारी गरीबी का प्रमुख कारण विदेशी लूट है मगर 1947 के बाद भी गरीबी घटने की बजाय बढ़ी है। 1947 में 50% लोग गरीबी के दायरे में जाते थे वह इन्डीयन एक्सप्रेस 19-12-77 के मुताबिक 60%, 1974 की मोहन धारियां की संसद में दी गयी रिपोर्ट के मुताबिक 69% और अब यह 70% पहुंच चुकी है। नवम्बर 1977 शक्ति संचार में प्रताप धीर के बयान के मुताबिक सरकार ने 1939 व 1948 में 30/- रूपया मासिक तक कमाने वाले को गरीब माना था जब कीमते अब तक 18 से 30 गुणा बढ़ गई है मगर वर्तमान वेतन केवल 7 गुणा बढ़े हैं। टाईमज आफ इंडिया (3 अक्तूबर 1974) के अनुसार बंगाल के जलपाईगडी में 400 व्यक्ति भूख से मरे। गरीबी के कारण लोग बचे कूचे जूठ व उलटियों तक को भी खा जाते हैं। तीसरे बेकारी का बढ़ता हुआ काफला जिसने अपना विराट रूप धारण कर लिया है एक २ दो २ खाली स्थानों लिये हजारो अर्जियां पहुंच जाती हैं। 1974 में योजना आयोग के अनुसार 1 करोड़ 15 लाख बेकार थे जबकि 1980 तक 6 करोड़ होने की सम्भावना है तथा बताया कि 30% लोग रोजगार दफ्तरों में नाम दर्ज नहीं कराते हैं जबकि दूसरी ओर किसानों व खेतिहर मजदूरों में छिपी बेकारी भारी संख्या में है। बेकारी भी गरीब व मध्य वर्ग में ही प्रसारित है। सन् 1973 में बेरोजगार सम्बन्धी

विशेषज्ञ समिति के अध्यक्ष भगवती के अनुसार बेकार इन्जीनियरिंग में 75% 100/- मासिक और 30% 100 से 200 रूपया मासिक आय कमाने वाले परिवारों के लड़के थे।

4. चौथे यहां अपराधो का काफला अन्तहीन बढ़ना जा रहा है। आर्थिक संकट अपराधों को विस्तार दे रहा है। चोरी, डकैती, उठाईगरी, डाकाबाजी, हत्या, बलात्कार, रिश्वतखोरी-मिलावट, कालाबजारी एवं तस्करी इत्यादि वारदातें तेजी से बढ़ रही है। गृह मंत्रालय की रिपोर्ट बताती है कि 1960 से 70 के बीच में 57 7% व रिसर्च ब्योरों के मुताबिक 1962 से 1972 के बीच में 46% अपराध बढ़े। इन अपराधों में समाज विरोधी तत्व ही शामिल नहीं बल्कि पुलिस, नौकर शाही, धन्ना सेठ तथा शोषक वर्ग के राजनितिज्ञ भी अपने भ्रष्टाचारों द्वारा अपराधी की जमात में शामिल हैं। 6 मार्च 1974 के हिन्दुस्तान टाईम्मस को केन्द्री ब्योरों के अनुसार 1975 में 807 गजटिड अफसरों के विरुद्ध भ्रष्टाचार केस दर्ज किये तथा जनवरी से 15 मई 1976 तक यू० पी० सरकार ने 2211 पुलिस अफसर व कर्मचारियों के विरुद्ध कार्यवाही की। 'कोल समिति' की रिपोर्ट बताती है कि साल में 40 करोड़ रुपये की विदेशी मुद्रा का गोलमाल होता है। 14 जनवरी 1974 के हिन्दुस्तान के मुताबिक 50 करोड़ मीटर कपड़ा चोर बाजारी में बिकता है। 14 मार्च 1974 की स्टेन्डर्ड में इंडियन चैम्बर आफ-कामर्स के अध्यक्ष ने कहा था कि क्या हम सत्ताधारी लोगों को रिश्वत देकर या उनके दलों को चुनाव में दान देकर भ्रष्टाचार नहीं बढ़ाते? 1977 के संसद के चुनाव में कांग्रेस ने सत्ता दुरुपयोग द्वारा सोनिवर में विज्ञापन के नाम से 30 करोड़ रूपया 2500 कम्पनियों से प्राप्त किया था और वह प्रकाशित भी नहीं किया गया। 18 सितम्बर 1977 की इलस्ट्रेड वीकली के मुताबिक बड़े २ उद्योगपति राजनैतिक दलो को दान, विधान एव संसद सदस्यों की लोबिंग, अफसरसाही व ब्योराक्रेसी से गहरे सम्बन्ध तथा उत्पादन बन्द करने की धमकी इत्यादि के द्वारा आर्थिक, घरेलू एवं विदेशी नीतियों को कन्ट्रोल रखता है और अपने ही भले एवं स्वार्थ की नीतियों का निर्माण कराते हैं।

जहां पर वलर्ड बैंक सर्वे के मुताबिक भारत की 63% जनता सस्ते से सस्ता मकान भी सहन नहीं कर सकती वहां दौलतमन्द व सरकारी अफसर बड़ी-बड़ी कोठियां बनवा रहे हैं। बैंक बैलैंस बढ़ा रहे हैं, सोना चांदी खरीद रहे हैं। शराब के साथ जिन्दा दहती का भक्षण कर रहे हैं। लेकिन हमारी सरकार इनसे कुछ भी नहीं कहती क्योंकि पूंजीपतियों के मुनाफों में विस्तार और उनकी दौलत की सुरक्षा नौकरशाही आज तक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती रही है। जब शासक दल स्वार्थी पूंजीपत से जुड़ जाता है तो भ्रष्टाचार पर रोक लगाना सम्भव नहीं हुआ करता।

गरीब का स्वास्थ्य पर भी भारी असर पड़ता है और पौष्टिक भोजन के अभाव मे आदमी से स्वास्थ्य नहीं रह पाता, जिसका उसके मानसिक विकास पर भी भारी प्रभाव पड़ता है। 'यू० एन० ओ० की रिपोर्ट के मुताबिक हमारे देश में आधे से ज्यादा बच्चे मूर्ख पैदा होते हैं। गरीबी के कारण खराब सेहत की वजय से यूरोप तथा समाजवादी देशों की तुलना में हमारी औरतों की ही नहीं मर्दो की भी उम्र बहुत कम है। कमजोर स्त्री पर हमला करके बीमारियों ने देश की गरीब मेहनतकश जनता को पूरी तरह अपनी गिरफ्त में ले लिया है। 28 मार्च 1974 को 'श्रम विभाग' के सर्वेक्षण ने बताया है कि खेतीहर मजदूरों एवं गरीब किसानों को 80 से 110 कैलोरीन तक नहीं मिल पाती है जबकि गरीब किसानों को कम से कम 3000 कैलोरीन की ज़रूरत होती है तथा इसी असन्तुलन ने हमें बीमार बना रखा है। 14 मार्च 1976 को विश्व स्वास्थ्य संगठन के डा० बुजेबक ने बताया कि पौष्टिक भोजन की अभाव में इस शताब्दी के अन्त तक 2 करोड़ व्यक्ति अन्धें हो जायेंगे।

जहां गरीबी हमें शारीरिक एवं मानसिक रूप में कमजोर बनाती है वहां दिमागी स्तर को भी शिक्षा के लिये आगे नहीं बढ़ने देती। आज भी हमारे यहां 70% से अधिक जनसंख्या अशिक्षित है। हमारी जनसंख्या 2.3% वार्शिक दर से बढ़ती है जबकि साक्षरता सिर्फ .75% की दर से बढ़ती रही है वैसे भी जनतन्त्र की आधारशिला मेहनतकश आम जनता शिक्षित न बनाकर उच्च वर्ग को ही ऊंची शिक्षा देने की नीति पर देश की पूंजीवादीसरकार चलती है। सरकार जितना खर्चा विश्व विद्यालयों पर तेजी से बढ़ा रही है उतनी ही तेज़ी से प्राईमरी शिक्षा पर खर्चा कम करती जा रही है। भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री 'नूरुल हसन' ने लोक सभा में स्वीकार किया था कि राज्य सरकारें प्राईमरी शिक्षा के प्रति उदासीन हैं।

सातवीं गरीबी के कारण हमारे देश की मेहनतकश

जनता कर्ज के सहारे पेट भरती है। और फिर अपनी गाढ़ी कमाई को पीढ़ी दर पीढ़ी सूद के रूप में देती रहती है। यह ब्याज की दर प्राय: 50% से 3000% तक होती है। शहरी कस्बों, में मजदूर इस कर्ज से भारी दबे हुये हैं। इनमें सूदखोर, मुनाफाखोरी, महाजन मजदूरी मिलते समय एवं फसल उठाते समय पर ही सब कुछ छीन लेते हैं।

आठवे इसी गरीबी के कारण आज भी अनेक रूपों में गुलामी देखी जा सकती है। देश के अनेक भागों में कर्ज के बदले पीढ़ी दर पीढ़ी बेगार लेते रहते हैं। कितने अभी तक बधंवा मजदूर हैं। 18 जनवरी 1973 के टाईम्ज आफ इंडिया के मुताबिक वांदा में बेगार न करने पर एक हरिजन को गोली मार दी गई, 5 दिसम्बर 1972 के मुताबिक पिछले 2 वर्ष 6 माह में गुजरात में 62 हरिजनों की हत्यायें हुयीं 'दिनमान' 1 अक्तूबर 1972 के अनुसार पिछड़े व अनुसूचित जातियों को साहूकारों व सामन्तों ने सिकन्जे में जकड़ा हुआ है। 27 नवम्बर 1977 के धर्म युग के अनुसार 1976 में 124 हरिजनों की हत्यायें की गई तथा जून 1976 से जून 1977 तक 21 हरिजनों की हत्यायें हुई। मई 11, 1973 में बिहार के दो गावों में हरिजनों पर अत्याचार व उनकी महिलाओं के साथ बलात्कार किये गये। पिछड़े एवं अनसूचित लोग के आयुक्त के मुताबिक राज्यों तथा केन्द्रीय प्रशासित क्षेत्रों में प्राय: किसी न किसी प्रकार की दास प्रथा प्रचलित हैं।

नवें जिन्दगी एक बड़ी खूबसूरत हकीकत है। आदमी मरना नहीं चाहता मगर इस सड़ी हुई पूंजीवादी सामान्ती ढाचे से तंग आकर आत्महत्या तक की घटनाये बढ़ती जा रहीं है। 1 अप्रैल 'हिन्दुस्तान टाईम्ज' के मुताबिक एक औरत तीन बच्चों समेत कुए में कूद कर गिर गयीं। 1969-70 के गृह मंत्रालय द्वारा दी गयी रिपोर्ट में दो वक्त की रोटी न मिलने की वजह से दो हजार व्यक्तियों की आत्म हत्या कर लेने की बात कहीं गई है। 4 मार्च 1974 के हिन्दुस्तान स्टैन्डर्ड के अनुसार सरकारी अनुमान है कि 1966 में 36104 लोगों ने आत्म हत्याये की और 219 भूख से मरे। दास युग में आदमियों, बच्चों, एवं औरतों की खरीद फरोक्त तो जरूर होती थी मगर बच्चे की मां दुबारा बेचे जाने की घटनाये तो उस बर्बर युग में नहीं थी जो आज पढ़ने व सुनने को मिलती रहती है। लेकिन क्या आप जानते है कि सरकार के कानून किस तरह हिफाजत करते हैं जब रोटी नौकरी के लिये मांग करता है तो सरकार दे नहीं सकती मगर जब आत्म हत्या करने से बच जाता है तो सरकार खुदकशी का मुकदमा चलाकर जेल में उसी को बल्कि सारे सम्बन्धियों तक को बन्द कर देती है।

दसवें बलर्ड बैंक के सर्वेक्षण मुताबिक यहां की 63% जनता सस्ते से सस्ता मकान को भी सहन नहीं कर सकती अर्थात मकान रहित हैं जबकि दूसरी ओर मुनाफखोर कालाधन चोर बाजारी, रिश्वत इत्यादि द्वारा लूट वाली दौलत से मलटी स्टोरी बिल्डिग बनवा रहे है जो कि उसकी किमत का 20 से 30% का मुनाफा कमा लेते हैं। तथा इनके एक कमरे के किराये को मध्यवर्ग का व्यक्ति बरदास्त नहीं कर सकता है। 1971 की जनगणना के मुताबिक हर पांचवा मकान रहने योग्य नहीं है तथा गिराने योग्य हैं। 5000 से उपर आबादी वाले शहरे में 50% लोग एक कमरे में प्राय: 4-4 आदमी रहते हैं। और 75% के पास सिवरर्ग मीटर जगह भी नहीं आती है। इसके मुताबिक 12 करोड़ 20 लाख मकानों से 6 करोड़ की दीवारे छत इत्यादि कीचड़ व कच्ची ईंटों से बनी हुई है। 40% दिल्ली व कलकत्ता, 10 लाख मद्रास 45 लाख व्यक्ति घास फूस कीचड़ फटे हुए कपड़ों की झोपड़ियों में रहते हैं। जो गन्द सड़ने बीमारियों से भरपूर है तथा उसकी हालात से काल कोठरियों की हालत लाख दर्जे बढ़िया होती है। पहली से पांचवी योजना तक सरकार ने सिर्फ 4 रुपये 50 पैसे फी आदमी के हिसाब से खर्च किया है जबकि एक यूनिट(मर्द × औरत × बच्चे) कम से कम से कम 4 से 6 हजार रूपये का मकान सर छुपाने के लिये चाहिये तथा इण्डियन एक्सप्रेस 22-12-77 के अनुसार 2700 करोड़ रूपया मकानों पर खर्च किया जाना चाहिये जबकि यह प्राय: 38, 120, 142, 218, तथा 297 क्रमश: योजनाओं मे रखा गया था। दूसरे ग्रामों में आवास समस्या की ओर कोई ध्यान ही नहीं दिया है।

दूसरी तरफ यदि हम तस्वीर का दूसरा पहलू देखें तो हम एक ऐसा वर्ग नजर आता है जो तेजी के साथ माला-माल होता जा रहा है यानी धनी वर्ग। आजादी मिलने के के समय 12 करोड़पति थे जो अब बढ़ कर 100 से भी अधिक हो गए हैं। और यह भी देश की 60% दौलत के स्वामी हैं। राज कमेटी की रिपोर्ट के मुताबिक 10% लोगों के पास देश का 75% धन केन्द्रित है। 18 सितम्बर 1977 की 'इलस्टेंड वीकली,' के अनुसार बीस बड़े घरानों की उद्योगिक सम्पति 45.3% दर से बढ़ रही है। इनके पास 1975-76 में 5111 करोड़ की सम्पति थी

सिर्फ 1975-76 को 600 करोड़ का मुनाफा हुआ। बिड़ला को 119 करोड़ रूपया सलाना मुनाफा होता है। इसकी 1950 में कुल 55 करोड़ की सम्पति थी जो 1975-76 में 1064 6 करोड़ व टाटा की 974·6 करोड़ हो गई थी। वे मुनाफाखोर सैंकड़ों करोड़ रुपया सलाना मुनाफा ही नहीं कमाते बलकि लगभग 10 हजार करोड़ का काला धन भी इनके पास है। कितना ही करोड़ों रूपया इनकमटैक्स का इनकी और बकाया है। रिजंव बैंक के सर्वेक्षण के अनुसार 1950 51 से 54-55 तक उत्पादन मे मजदूरों का हिस्सा 57.4 था जबकि मालिकों का 42.6 था। यह 1974 75 में 43.3 और 56.7 क्रमशः हो गया था और अब मजदूरों का हिस्सा सिर्फ 33% तक घटकर पहुंच गया है। दूसरी ओर 1971 के जनगणना के मुताबिक 72% लोग खेती पर आधारित है जिनमें से 30% खेतीहर मजदूर हैं जो अब 34.43%(धर्म युग 21 नवम्बर) पहुंच गया है। इसमें से 24% के पास 81% भूमि है इसमें से 5% के के पास 37.1 प्रतिशत (अब 40% तक पहुंच गई है) भूमि है और 76% के पास सिर्फ 19% भूमि है। इस तरह यहां पर 5% भूमिपति और 1.6% पूंजीपति हो ऐशोआराम की जिन्दगी गुजार रहे हैं। और अधिक से अधिक 10% लेकिन केन्द्रीय सलाना करो का वजन टानीर्वा पर 1951-56 में 120 करोड़ और जनता पर 275 करोड़, वाह धनी वर्ग पर 1971-72 में 614 करोड़ जबकि जनता पर 2688 करोड़ भार था।

पूंजीपतियों जमीदारों के साथ-२ सरकारी अफसरों एवं मंत्रियों के धन में भी बेइनतहा बृद्धि हुयी है। इन लोगों ने हजारों एकड़ जमीन खरीद ली है गगनचुम्बी इमारते बनाई हैं तथा देश विदेश के बैंकों में करोड़ो रूपया जमा कर लिया है। ये धनी वर्ग को लूट मुनाफाखोरी में सहयोग दे कर उससे कमीशन प्राप्त कर लेते हैं। ये सब धनी वर्ग ही खुशहाल जिन्दगी गुजार रहे हैं इनके पास अनेक कोठियां, बंगले भिन्न-२ कारें, अशोका -ताज जैसी होटलों की रातें, पेरिस बर्लिन की तफरी तथा खाने पीने के लिए बेन्डताहा दौलत की जखीरे हैं। मेहनतकश वर्ग पेट में घुटनेगाड़ कर भूख से मरता है रोटी, मकान, कपड़ा व दवा से हीन अपने बच्चों व खुद को तड़फ-२ कर मरते देखता रहता है। जहां यह लोग शराब से नहाते हैं सुन्दरियों में तैरते हैं, जो मांस अण्डे बिस्कुट, इन्जीशन गद्देदार पलंग तथा रेशमी रजाईयां इनके कुत्ते खाते ओढ़ते हैं। देश की 70% जनता स्वप्न में भी कल्पना नहीं कर सकती मेहनतकश गरीब जनता भूखमरी से तंग आकर अपनी रोटी रोजी की हिफाजत के लिए संघर्ष करना चाहती है तो उस समय यह ढांचा रोटी रोजी तो नहीं दे सकता मगर मीसा, डी-आई-आर, इमरजन्सी जैसे कुचक्र आंतक व कुचलने वाली साजिसे आरम्भ जरूर कर देता है।

अत: एक तरफ भूखमरी, गरीबी बेकारी बेगार, उत्पीड़न शोषण, अत्याचार, बलात्कार, जुल्म बीमारियां, अशिक्षा, ऊंच नीच, जाति पाति, छुआ-छूत रिश्वत खोरी, भ्रष्टाचार, आत्म हत्याएं, जिस्म का खूले आम सौदेबाजी, मालिक द्वारा मजदूर की लूट, मेहनत का सही फल न मिलना, सामाजिक असुरक्षा, विकास की गति का भारी धीमापन तथा रिरिपाती हुई जवानी, है जबकि दूसरी तरफ दौलत के के अम्बार इसी गलीसड़ी पूंजीवादी सामन्ती व्यवस्था का अभिशाप नहीं तो और क्या है। जब तक यह व्यवस्था बदलती नहीं तब तक समस्याओं का समाधान असम्भव है।

"स्वामी आनन्द वेश की हत्या का समाचार सरासर झूठा"

दयानन्दमठ रोहतक से प्रकाशित होने वाले 'सर्वहितकारी' के २१ जनवरी के अंक में गुरुकुल शुक्रताल के संस्थापक-और संचालक श्री आनन्द वेश जी (ब्रह्मचारी बलदेव नैष्ठिक) को गोली मारकर हत्या कर दी गई है, यह समाचार प्रकाशित हुआ है जो नितान्त असत्य है। कुछ गुरुकुल विरोधी लोग जनता में भ्रम फैलाने के लिये यह कुटिल चाल चल रहे हैं। हमें पता चला है कि गुरुकुल को ठेस पहुंचाने के लिये इन सर्व-अहितकारियों ने एक आध अन्य पत्रों में भी ऐसी अनगिनत बातें प्रकाशित की हैं। धर्म प्रेमियों से निवेदन है कि ऐसी अफवाहों से वे भ्रमित न हों और ऐसे लोगों की निन्दा करें। गुरुकुल का कार्य सुचारू रूप से चल रहा है और स्वामी जी आर्य समाज के सेवा में दिन रात लीन हैं।"

गुरुकुल आमसेना में दीक्षांत समारोह सम्पन्न :

गुरुकुल आमसेना (कालाहांडी) की पवित्र भूमि में वार्षिक महोत्सव ६, ७, ८ जनवरी १९७८ को सम्पन्न हुआ। इसी अवसर पर सामवेद परायण यज्ञ बहिन प्रमोद जी रायपुर की ओर से हुआ।

७ जनवरी को गुरुकुल में विद्याप्राप्त स्नातकों का दीक्षान्त समारोह पं० उमाकान्त जी उपाध्याय की अध्यक्षता में हुआ। इस में एड़ीसा के राज्यपाल श्री भगवद्दयाल जी शर्मा ने दीक्षान्त भाषण दिया। तथा प्रमाण पत्र प्रदान किये। इसी अवसर पर केन्द्रीय रक्षा राज्य मंत्री प्रो० शेरसिंह जी ने गुरुकुल की ओर से उड़िया भाषा में प्रकाशित ईशोपनिषद् का विमोचन किया। महोत्सव में अनेक विद्वान् वक्ता उपस्थित थे।

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन एक दृष्टि में :

सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के गत दस वर्ष के इतिहास में २१, २२ जनवरी सन् ७८ का वार्षिक अधिवेशन सुनहरी पन्नों पर लिखा जायेगा। अपने भूतकाल में परिषद् का संगठन काफी विघ्न-बाधाओं एवं उतार-चढ़ाव के बीच से गुजरा है। १९६७ में जिस समय देश के क्षितिज पर इस संगठन का अभ्युदय युवा संयासी स्वामी इंद्रवेश के नेतृत्व में हुआ और स्वामी अग्निवेश जैसे क्रांती कारी सन्यासी एवं अन्य नौजवान घरबार एवं ऊंची २ नौकरियों को छोड़कर इस देश से अज्ञान-अन्याय एवं अभाव को समाप्त कर एक विशुद्ध वैदिक सिद्धान्तों पर आधारित समाजवादी समाज की स्थापना का संकल्प लेकर मैदान में निकले तो आर्य समाज एवं इससे बाहर एक खलबली सी मच गई। परिणाम-स्वरूप स्वार्थी लोगों की नींद हराम हो गई और आर्य युवक परिषद् के हर कार्यक्रम का इन लोगों ने डट कर विरोध करना शुरू कर दिया। वह संघर्ष का वातावरण अभी समाप्त नहीं हुआ है। संघर्ष के कारण परिषद् का कार्य रुकने की बजाय और तीव्र गति से बढ़ता जा रहा है और युवा पीढ़ी बड़ी भारी संख्या में संगठित हो रही। इसके साथ ही देश की जनता भी परिवर्तनशील हो चुकी है और उसने ३० साल पुरानी कांग्रेसी सरकार को गद्दी से उतार फेंक कर इसका जीता जागता सबूत दिया है। ऐसी परि-स्थितयों में सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् का वार्षिक अधिवेशन करने का क्रान्ति कारी निर्णय लिया गया। कई वरिष्ठ व्यक्ति एकाध बार कुछ निराश हो जाते थे और परिषद् के महत्व को पूरी तरह से आंक नहीं पाते थे उनकी बात भी सत्य थी क्योंकि पिछले तीन साल से देश में राज-नैतिक उथल-पुथल के कारण परिषद् का कार्य ठप्प पड़ा था। परन्तु बहुत मामूली सी तैयारी एवं सूचना के बावजूद इस दो दिवसीय अधिवेशन में युवकों के उमड़ते हुए जोश एवं उत्साह को देखकर एक बार फिर आशा की किरण फूट पड़ी है।

२१ जनवरी को जब ग्यारह बजे तक बहुत ही कम युवक गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में पहुंचे तो गुरुकुल के आचार्य स्वामी चन्द्रवेश वेदाचार्य मुझसे कहने लगे कि आपका यह कार्यक्रम फीका रहेगा। मैंने उनसे कहा कि आप भोजन की व्यवस्था पूरी रखे तथा समय की प्रतीक्षा करें। लग-भग आधा घण्टे बाद ही नौजवानों के काफिले सिर पर अपने बिस्तरे रखे व हाथों में ओ३म् के झण्डे लिए आस-मान को गुंजा देने वाले नारे बोलते हुए गुरुकुल भूमि में पदार्पण करने लगे। साढे ग्यारह बजे युवकों में आशा का प्राण फूकने वाले श्रद्धेय स्वामी इन्द्रवेश जी ने ध्वजारोहण किया। वैदिक राष्ट्र गान गाया गया और अधिवेशन की प्रथम बैठक प्रारम्भ हुई। प्रथम बैठक का मुख्यविषय सार्व-देशिक आर्य युवक परिषद् का सिंहावलोकन करना था। इस बैठक में स्वामी आदित्यवेश, डा० महासिंह, मा० धर्मपाल आर्य, छात्र नेता रोशनलाल आर्य, सत्यपाल आर्य, आचार्य यशपाल एवं श्री आनन्द राव गणपत राव देशमुख ने अपने विचार रखे। चार घण्टे की इस बैठक में परिषद् की गत कार्य विधियों एवं उपलब्धियों पर खुल कर चर्चा हुई, और अपने लेखा-जोखा पर दृष्टिपात किया गया। इसी बैठक में सभी नौजवानों का परिचय भी कराया गया। इस तरह से लगभग चार बजे यह बैठक समाप्त हुयी। लगभग साढ़े पाँच बजे गुरुकुल यज्ञवेदी पर सामूहिक सन्ध्या हुयी और इसके उपरान्त भोजन आदि करके ठीक आठ बजे बड़े हाल में दूसरी बैठक प्रारम्भ हुयी। हाल पूरी तरह से खचाखच भरा हुआ था। इस बैठक का मुख्य विषय भावी कार्यक्रम निर्धा-रित करना था। भावी कार्यक्रम से सम्बन्धित एक महत्व-पूर्ण प्रस्ताव अधिवेशन के संयोजक जगवीर सिंह ने पढ़ कर सुनाया और इसका अनुमोदन आ० प्रति० स० राजस्थान के प्रधान स्वामी शक्तिवेश ने किया। प्रस्ताव के ऊपर विस्तृत रूप से सा० आ० यु० परिषद् के पूर्व प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने युवकों को सम्बोधित किया उन्होंने व्यवस्था परिवर्तन के लिए आर्य युवकों को सामने आकर कार्य करने

की प्रेरणा दी। प्रस्ताव के ऊपर बोलते हुए स्वामी इन्द्रवेश जी ने आह्वान किया किया कि अगर यह प्रस्ताव वास्तविक रूप में पास करना है तो कुछ युवको को इसके लिये अपना जीवन समर्पित करना होगा। उन्होंने कहा कि जो नौजवान अपना पूरा समय या एक वर्ष का समय देकर परिषद् का कार्य करने की तमन्ना रखते हैं उन्हें तुरन्त घोषणा करनी चाहिए। इस आह्वान पर लगभग दस युवकों ने पूरा समय देने की प्रतीज्ञा की। अन्त में सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव पास हुआ और शांति पाठ के बाद बैठक विसर्जित हो गई।

२२ जनवरी को प्रात: आठ बजे यज्ञ प्रारम्भ हुआ और समय देने वाले नौजवानों ने आहूतियाँ दी। अनेक युवकों ने स्थानीय ढंग से कार्य में जुटने की प्रतिज्ञायें की। भोजनादि के बाद अन्तिम बैठक ११ बजे से प्रारम्भ हुयी। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश के प्रधान आचार्य विश्वबन्धुशास्त्री, गुरुकुल कांगड़ी के पूर्व कुलपति डा० सत्यकेतु विद्यालंकार भी उपस्थित थे। स्वामी इन्द्रवेश जी ने आर्य युवक परिषद् के महत्व पर प्रकाश डालते हुये यह बताया कि संगठन तभी आगे बढ़ेगा जब इसका कार्य कोई ऐसा व्यक्ति सम्भाले जो पूरा समय इसी में लगाऐ। उन्होंने प्रधान पद के लिये स्वामी शक्तिवेश का नाम प्रस्तुत किया जिसका अनुमोदन स्वामी आदित्यवेश विधायक ने किया और सर्वसम्मति से उन्हें प्रधान चुन लिया गया। बाद में निम्न लिखित कार्यकारिणी की भी घोषणा की गई।

प्रधान—स्वामीशक्तिवेश, राजस्थान

उप प्रधान—राजपाल आर्य, मुजफ्फरनगर(उ० प्र०)

,, —ओम प्रकाश आर्य, अमृतसर (पंजाब)

,, —सुभाष निम्बालकर, निलंगा (महाराष्ट्र)

महामन्त्री—जगबीरसिंह, रोहतक (हरयाणा)

मन्त्री—प्रेमपाल शास्त्री, दिल्ली

कोषाध्यक्ष—ओमपालसिंह, मेरठ (उ० प्र०)

अन्तरंग सदस्य:—

१. श्री रोशन लाल आर्य कुरुक्षेत्र
२. ,, जयवीर आर्य बल्लभगढ़
३. ,, सुभाष आर्य रिसर्चस्कालर हिसार
४. ,, प्रो० भागसिंह आर्य हिसार
५. ,, संभाजी पंवार महाराष्ट्र
६. ,, प्रदीप देशमुख महाराष्ट्र
७. ,, प्रो० विजय कुलकर्णी महाराष्ट्र
८. ,, मदनसिंह आर्य जोधपुर
९. ,, धर्मवीर आर्य बहरोड़
१०. ,, दयावीर आर्य ,,
११. ,, प्रो० जयसिंह आर्य शिकारपुर उ०प्र०
१२. ,, ओम प्रकाश आर्य मथुरा ,,
१३. ,, योगेन्द्र पुरुषार्थी हरिद्वार ,,
१४. ,, विक्रमसिंह आर्य नंगला मेरठ उ० प्र०
१५. ,, प्रो० योगेन्द्र नारायण पटना बिहार
१६. ,, हीरा प्रसाद शास्त्री बिहार
१७. ,, पृथ्वीसिंह चौहान नंगलटाऊनशिप पंजाब
१८. ,, यशवन्त राय साथी मोगा पंजाब
१९. ,, वेदप्रकाश आर्य दीनानगर पंजाब
२०. प्रो० शिवाकान्त उपाध्याय कलकत्ता
२१. श्री तारकेश्वर आर्य कलकत्ता
२२. ,, डा० धर्मवीर आर्य झज्जर
२३. ,, विजय कुमार चौधरी दिल्ली

नव निर्वाचित अधिकारियों को आशीर्वाद देते हुये आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री ने कहा कि मैंने अपने जीवन में एक स्थान पर इतनी संख्या में युवक कभी नहीं देखे थे। उन्होंने कहा कि दो हजार नौजवान वे उत्तर प्रदेश से तैयार करेंगे और तन मन व जीवन से परिषद् का सहयोग करेंगे। इसी प्रकार स्वामी अग्निवेश जी ने घोषणा की कि आने वाले एक वर्ष में जब दिल्ली में राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन होगा तब देशभर से दस हजार नौजवान आर्य युवक परिषद् के झण्डे के नीचे होगे उन्होंने युवकों को समाज की शोषित, पीड़ित एवं गरीब जनता के लिये संघर्ष करने की प्रेरणा दी। वर्तमान पूंजवादी समाज व्यवस्था में व्याप्त भ्रष्टाचार, जातिवाद, पाखण्ड एवं अन्धविश्वास के विरुद्ध एक जबरदस्त क्रान्ति करने के लिये युवकों को बलिदान के मार्ग पर चलने का आह्वान किया। अन्त में अधिवेशन के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश जी ने युवकों को आर्शीवाद देते हुये यह कहा कि आर्य समाज का भविष्य युवकों के उत्साह एवं निष्ठा को देखकर बड़ा उज्जवल प्रतीत होता है। शांति पाठ के बाद कार्यवाही समाप्त हुई।

अधिवेशन में लगभग ६०० युवकों ने भाग लिया जो

देश के विभिन्न प्रांतों से पधारे हुये थे। प्रमुख रूप से श्री दयालसिंह व कृपालसिंह जोधपुर, हवासिंह विधावाचस्पति चुरन, सुरेश चन्द्र गंगापुर सिटी, श्री राजपाल आर्य मुजफ्फरनगर, ब्र० योगेन्द्र पुरुषार्थी हरिद्वार, ब्र० ओमपाल सिंह मेरठ, ओ३मपालसिंह शास्त्री किरठल, स्वामी अभयदेव आदर्श नंगला, । श्री वेदप्रकाश आर्य दीनानगर, हीरा प्रसाद शास्त्री बिहार, आनन्दराव गणपतराव देशमुख महाराष्ट्र, प्रेमपाल शास्त्री, अनिलकुमार आर्य दिल्ली। रोशनलाल आर्य कुरुक्षेत्र, सुभाष चनु. हरिश्चन्द्र, भोपालसिंह वर्णवीर आर्य व रामकुमार आर्य करनाल, ओमप्रकाश आर्य जुलाना, सत्यपाल आर्य हिसार, नरेन्द्र प्रभाकर एवं मनोहरलाल आनन्द भिवानी, दयानन्द आर्य लैहमंन, भूप सिंह आर्य दादरी, रामनिवास आर्य रिवाड़ी, समय सिंह श्योराजमाजरा, नवरंगलाल आर्य गाहड़ा, प्रेमदेव खूडन, महेन्द्रसिंह शास्त्री खटकड़ा सुभाष आर्य गोहाना, जगवीर सिंह शास्त्री गोहाना, मा० इन्द्रसिंह आर्य आहूलाना, मा० प्रतापसिंह व हवासिंह मुडलाना, डा० महासिंह जी, सत्यपाल आर्य, धर्मपाल आर्य सोनीपत, वेदप्रकाश कतलूपुर, रघवीरसिंह, सूरजभान नाहरी, सत्यव्रत नरेला, जगदीश आर्य मा०मेहरसिंह आर्य नांगल, राजरूप भठगांव, रणवन्त सिंह थानाकलां, ब्रह्मदेव शास्त्री खरखोदा, आचार्य यशपाल मढिण्डू, प्रो० राजेन्द्रसिंह जीन्द, सुभाष आर्य रोहतक, सत्यवीर विद्यालंकार रोहतक, ईश्वरसिंह आर्य, जयवीर आर्य एवं नत्थू पहलवान मिर्जापुर, सुभाष सेठी बल्लभगढ़, चरण सिंह धतीर, आदि के अतिरिक्त बलजीतसिंह आर्य रजिस्ट्रार गुरुकुल कांगड़ी, डा० जसवन्तसिंह यादव दिल्ली, स्वामी अग्निदेव भीष्म, अभयदेव आदि महानुभाव अधिवेशन में उपस्थित थे।

अधिवेशन में आये हुये युवकों के जोश एवं उत्साह को देख कर यह हर व्यक्ति के मुंह से सुनाई देता था कि अब आर्यसमाज का मिशन तेजी के साथ आगे बढ़ेगा। देशभर में बैठे हुये सभी क्रांतिकारी, निष्ठावान एवं प्रगतिशील आर्ययुवकों का अधिवेशन में लिये गये निर्णयों का स्वागत करना चाहिये और इसे क्रियान्वित करने के लिये अपनी पूरी शक्ति लगा देनी चाहिये। आने वाले एक साल में हमने दस हजार युवकों की एक सेना तैयार करने का निर्णय किया है। ईश्वर से प्रार्थना है कि हमें इस संकल्प को पूरा करने की शक्ति दे।

जगबीर सिंह
महामन्त्री, सा० आ० यु० परिषद्
गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ दिल्ली-४४

1.	प्रकाशन स्थान	चण्डीगढ़
2.	प्रकाशन अवधि	साप्ताहिक
3.	मुद्रक का नाम	स्वामी अग्निवेश
	(क्या वह भारत का नागरिक है)	भारतीय
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	नहीं
	पता	1, सैक्टर 16-ए चण्डीगढ़
4.	प्रकाशक का नाम	स्वामी अग्निवेश
	(क्या वह भारत का नागरिक है)	भारतीय
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	नहीं
	पता	1, सैक्टर 16-ए चण्डीगढ़
5.	संपादक का नाम	स्वामी अग्निवेश
	(क्या वह भारत का नागरिक है)	भारतीय
	(यदि विदेशी है तो मूल देश)	नहीं
	पता	1, सैक्टर 16-ए चण्डीगढ़
6.	उन व्यक्तियों के नाम व पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा जो समस्त पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के सांझेदार या हिस्सेदार हो।	राजधर्म प्रकाशन

मैं, स्वामी अग्निवेश एतद द्वारा घोषित करता हूं कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिये गये विवरण सत्य हैं।

स्वामी अग्निवेश
प्रकाशक के हस्ताक्षर

ता० १ मार्च, १९७८

पंजीयन क्रमांक
एन० डब्लू/सी० एच० ९९

राजधर्म
१ मार्च, १९७८

चुनाव परिणाम—एक चुनौती

देश के पांच प्रांतों के विधान सभाई चुनावों में दो विशाल प्रांतों में श्रीमती इन्दिरा गांधी की कांग्रेस का पूर्ण बहुमत प्राप्त करना देश की प्रजातान्त्रिक समाजवादी ताकतों के लिए जबरदस्त चुनौती है। तीस साल की खानदानी हुकूमत के बाद और 19 महीने की निरंकुश तानाशाही के बाद हिन्दुस्तान के नक्शे से इंदिरा जी और उनकी कांग्रेस का नामोनिशान तक मिटने की नौबत आगई थी। पर लगता है कि लगभग एक साल की जनता पार्टी की हुकूमत ने इंदिरा कांग्रेस को फिर जिन्दा कर दिया और यदि यही हाल रहा तो कोई आश्चर्य नहीं होगा कि दो चार साल बाद फिर इंदिरा जी अपने तानाशाही शिकंजे कसने लगें।

इसलिए यदि हमें देश में प्रजातान्त्रिक समाजवादी व्यवस्था को मजबूत बनाना है तो कर्नाटक और आंध्रप्रदेश में हुई इंदिरा कांग्रेस की इस अप्रत्याशित किन्तु चौंका देने वाली जीत को एक राजनैतिक चुनौती के रूप में स्वीकार कर आगे के लिए कार्यक्रम तैयार करना चाहिये।

असली मुद्दा इस देश में गरीबी का है—शोषण का और गैर बराबरी का है। इन्हें समाप्त करने की दिशा में अभी तक हमने कोई स्पष्ट नीति भी नहीं दी—अमल करना तो दूर रहा। घोषणा पत्र में हमने कहा था कि संविधान से संपति का मौलिक अधिकार समाप्त करेंगे और रोजगार का मौलिक अधिकार प्रदान करेंगे। इसका क्या बना? 42 वाँ संशोधन आज तक क्यों बना हुआ है? मंहगाई कम क्यों नहीं हुई? क्या हमने दस-बीस जमाखोरो को मिलावट और मुनाफाखोरों को कठोर दण्ड देकर कोई उदाहरण प्रस्तुत किया? राष्ट्रपति महोदय के लिए अभी तक छोटा सादा मकान उपलब्ध क्यों नहीं कराया जा सका? मंत्रियो के तथा अफसरों के ठाटबाट में कमी क्यों नही हुई? हमारा आपस का घटकवाद घटने के बदले बढ़ता क्यों गया? क्या हमने कपड़े की बड़ी मिलों को, जूतों की बड़ी फैक्टरियो को, साबुन के बड़े कारखानों को बन्द करके गांव-गाँव में छोटे-छोटे उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए कोई कारगर कदम उठाये?

ये चुनौतियाँ हैं जिन्हें स्वीकार करके ही तानाशाही को उभरने से रोका जा सकता है। वरना कुछ अखबारी आजादी और कुछ शहरी आजादी का उपभोग करने वाला मध्यमवर्गीय शहरो में संगठित मजदूर सगठनों के माध्यम स अपनी वेतनवृद्धि कराता रहेगा और देश का 80% किसान मजदूर ऐसी आजादी को कोसता रहेगा।

आवश्यकता है देश फिर से लोकनायक जयप्रकाश नारायण को याद करे - उनके बताये गाँधीवादी कार्यक्रम को लागू करें या कम से कम लागू करने की नीयत का परिचय दे।

— अग्निवेश

राजधर्म प्रकाशन के लिए रोक्साना प्रिंटरज, 83-84 सैक्टर 16-डी, चण्डीगढ़ से स्वामी अग्निवेश द्वारा कोठी नं० 1, सैक्टर-16-ए चण्डीगढ से प्रकाशित एवं मुद्रित।

साप्ताहिक

राजधर्म

वर्ष ९ अंक ८ ९

बुधवार, १६ मार्च, १९७८

संपादक – स्वामी अग्निवेश

मूल्य ५० पैसे

वार्षिक १५ रु०

आखिर कब तक चलता रहेगा ?

९ मार्च १९७८ के दैनिक हिन्दुस्तान में नीचे लिखी खबर छपी थी :

शानो शौकत व विलासिता से भरपूर शादी

"गोरखपुर (ह. स.)। शानोशौकत एवं विलासिता से परिपूर्ण एक शादी, जिस पर लगभग १३ लाख रुपये खर्च होने का अनुमान है, आजकल नगर एवं आसपास के क्षेत्रों में चर्चा का विषय बनी हुई है।

लगभग ३०० बारातियों के काफिले को लगभग २०० किलोमीटर की दूरी से एक विशेष ट्रेन द्वारा जिसमें १२ प्रथम श्रेणी की बोगियां थी, यहाँ लाया गया। केवल ट्रेन यात्रा पर लगभग ६०,००० रु० व्यय हुआ।

बारातियों के ठहरने की व्यवस्था रेलवे स्टेडियम में की गई जहां एक ऐसा विशाल पंडाल लगाया गया, जिसमें ५,००० आदमी एक साथ बैठ सकते हों।

बारातियों के मनोरंजन के लिये इलाहाबाद, वाराणसी, गाजीपुर एवं जौनपुर की मशहूर नर्तकियाँ बारात के साथ लाई गई। इसके अलावा विख्यात पार्श्वगायक एवं फिल्म जगत के एक संगीत निदेशक श्री हेमंत कुमार और उनकी पार्टी ने बम्बई से यहां पहुंचकर लगभग ढाई घण्टे तक बारातियों का मनोरंजन किया

रात्रि में चार सजे सजाये हाथियों एवं घोड़ों के साथ जो एक मील लम्बी बारात रेलवे स्टेडियम से बैंक रोड़ के लिये रवाना हुई, उसकी कोई मिसाल नहीं है। बारात के पीछे गोरखपुर, इलाहाबाद व दिल्ली की बैंड पार्टियां, टिवस्ट करती नर्तकियाँ, लगभग दस रिक्शों पर भव्य एवं आकर्षक झांकियां, फिर विद्युत साज-सज्जा से सुसज्जित एक विशेष बैण्ड के साथ 'भंगड़ा' नृत्य करती पंजाब की एक मशहूर पार्टी और इन सबके पीछे बन्दूकधारी एवं फरसाधारी अंगरक्षकों के बीच एक खुली मरसीडीज मोटरकार में बैठा खुशकिस्मत दुल्हा।

नोटों की वर्षा

बारात की यात्रा के दौरान पाँच एवं दस रुपये के नोट हजारों की तादाद में लुटाये गये। बारात के दौरान प्रयोग में लाये गये सात ट्रक कागज के फूलों पर ही २०.००० रु० व्यय होने का अनुमान है।

शादी के दिन लगभग ४,००० व्यक्तियों ने बहूमूल्य एवं विशिष्ट भोजन किया। बारातियों सहित लगभग १,५०० व्यक्तियों ने मद्यपान एवं बहूमूल्य भोजन किया। उसी रात बहादुरगंज एवं फाफामऊ के मशहूर आतिशबाजों के बीच आतिशबाजी प्रतियोगिता हुई। इसके पूर्व दिन भर जनवासे में मुजरा चलता रहा।

बताया जाता है कि वधू पक्ष ने फिल्मी संगीतज्ञ हेमन्त कुमार एवं पार्टी के लिए एक अन्य होटल बुक कर रखा था। शादी की पूर्ण व्यवस्था के लिये लगभग ४५० मजदूरों की सेवाएं ली गई।"

इस खबर को पढ़कर हृदय आक्रोश से भर उठा। भारत के ६० करोड़ में से उन ४० करोड़ गरीब मेहनतकश लोगों के ऊपर यह कैसा क्रूर अट्टहास है जो दिन भर की खून पसीने की मशक्कत के बाद रात को अपनी अंधेरे, सीलन भरी झोपड़ी में भूखे पेट या आधे पेट सोने के लिये मजबूर हैं।

और यह वही गोरखपुर का पूर्वी उत्तर प्रदेश एवं उत्तरी बिहार का इलाका है जहां से खबरें छपती हैं कि शीत लहर से ठिठुर कर आज १२७ व्यक्ति मर गये, लू लग जाने से ४२ व्यक्ति मर गये। शीत लहर और लू से कोई खातापीता आदमी नहीं मरता—वे ही बेचारे मरते हैं जिनके पास जिन्दा रहने के लिए जरूरी रोटी कपड़े का प्रबन्ध नहीं होता।

शादियों में इस प्रकार की फिजूलखर्ची और अपने काले धन का वीभत्स प्रदर्शन तब तक चलता रहेगा जब तक इस देश की गरीब मेहनतकश जनता संगठित होकर पूंजीवादी व्यवस्था को उखाड़ कर फेंक नहीं देती। लेकिन ऐसी क्रांति की भूमिका तैयार करने के लिये जरूरी है कि लोग वैभव के इस प्रकार भौंडे प्रदर्शन से घृणा करना सीखें। बजाय इसके कि ऐसी शादियों की लोग तारीफ करें—उनकी तीव्र भर्त्सना करनी चाहिए और युवकों को इसके खिलाफ धरने आदि के द्वारा जनमत जागृत करना चाहिए।

मुझे गोरखपुर के विश्वविद्यालय के छात्रावास में, प्रमुख कालेजों और रेलवे मजदूरों में जाकर सेवा करने का मौका मिला है—उनकी सामाजिक चेतना से मैं प्रभावित हूँ। इस लेख के माध्यम से मैं अपने सभी युवा साथियों से अनुरोध करूंगा कि वे गोरखपुर की सड़कों पर, बाजारों में ऐसे पूंजीपति नर पिशाचों के खिलाफ प्रदशन आयोजित करें—और उचित समझें तो बेशक ऐसे शादी मे शरीक दुल्हा दुल्हन, सास ससुर और विशेष बारातियो के पुतले बनाकर खंभों से लटका दें और आने जाने वालों को कहें कि उन पर थूकें।

जब तक समाज को शोषित एवं समझदार वर्ग पूरी उग्रता के साथ इन सड़े गले मूल्यों के विरुद्ध जनभावना को नहीं उभारता और इसके अपराधी व्यक्तियों को लानत नहीं भेजता तब तक सामाजिक आर्थिक क्रांति की भूमिका नहीं बन सकती।

तीस साल हो गये इस प्रकार के अमीरों के चोचले बर्दाश्त करते—आखिर और कब तक करते रहेंगे? कुछ वर्ष पहले मराठवाड़ा के एक मंत्री महोदय के घर शादी में इसी प्रकार कुंओं में बर्फ की सिल्लियाँ और चीनी के बोरे डालकर शरबत पिलाई गई थी। अभी हाल में गुजरात के किसी तथाकथित यज्ञ पर एक करोड़ रुपये 'स्वाहा' किये गये। इस तरह की बहुत सी बातें और भी हो रही हैं पर इनमें से कोई कोई ही अखबारो में छप पाती है। आर्य समाज जैसी जागरूक संस्था से आशा की जाती है कि वह इनके विरुद्ध जनमत बनाये। यदि कुछ 'आर्य पूंजीपति' भी इसकी चपेट में आते हों तो उनका भी "यथायोग्य स्वागत" किया जाना चाहिये।

—अग्निवेश

बहस—

जनता पार्टी का आर्थिक दर्शन

✲ चरणसिंह

[इस लेख पर अपनी प्रतिक्रिया अवश्य व्यक्त करें व लिखें कि आप इस दर्शन से कहां तक सहमत व असहमत हैं—संपादक]

यदि इस लेखक को जनता पार्टी के आर्थिक दर्शन का वक्तव्य लिखने की जिम्मेदारी सौंपी जाय तो वह संक्षेप में निम्न प्रकार से लिखेगा :

मनुष्य केवल रोटी के सहारे जीवित नही रहता। उसके लिए स्वतन्त्रता व समानता उतनी ही आवश्यक है जितनी भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति। इसलिए जनता पार्टी ऐसी अर्थ-व्यवस्था बनाने के लिए वचनबद्ध है जिसमें अधिकतम सम्भव मात्रा में मनुष्य की तीनों आवश्यकताएं—रोटी, स्वतन्त्रता, समानता पूरी हो सकें।

मानव इतिहास ऐसे उदाहरणों से भरा हुआ है जिनसे पता चलता है कि स्वतन्त्रता का शुद्ध रूप एक दूसरे के सदा से कटिबद्ध शत्रु है। जहाँ एक का बोलबाला होता है, वहाँ दूसरे का खात्मा। मनुष्यों को स्वतन्त्र छोड़ देने से उसकी स्वाभाविक असमानताएं दिन दूनी रात चौगुनी बढ़ जाती है। उनको एक समान बनाने का प्रयत्न करने पर वे परतंत्र बन जाते हैं। इस वजह से भारत के लिए आवश्यक है कि दो अति उग्र मार्गों का—अर्थात् उस पूंजीवादी जनतंत्र के मार्ग का जिसका प्रादुर्भाव पश्चिमी देशों में हुआ, तथा जनतंत्रीय केन्द्रीयता के मार्ग का जिस पर कम्युनिस्ट राज्य चल रहे हैं—एक विकल्प निकालें।

जनता पार्टी का विश्वास है कि दोनों के बीच के मार्ग पर चल कर ऐसा समाज बनाना चाहिए जिसमें हर मनुष्य ऐसा धंधा करे जिसका वह स्वयं मालिक हो। व्यावहारिक योग्यताओं में हर व्यक्ति दूसरे से भिन्न होता है, यह जानते हुए भी जनता पार्टी ऐसे समतावादी समाज मे विश्वास करती है जिसमें आयों में अन्तर बहुत कम हो और कुछ अपवादों को छोड़कर नागरिकों को स्वतन्त्रता हो कि वे अपने लिए कोई भी आर्थिक जीवन चुने और कैसे भी अपना आर्थिक जीवन चलायें।

जनता पार्टी हर ऐसी व्यवस्था के विरुद्ध है जिसमें किसी व्यक्ति को दूसरे की आर्थिक आवश्यकताओं का शोषण करने की असीम स्वतन्त्रता हो। साथ ही जनता पार्टी इसके भी खिलाफ है कि राज्य द्वारा लोगों की पेशकदमी को रोकने आर्थिक स्वतन्त्रता का हनन करने के लिए राज्य अपने हाथों में असीम शक्ति ले और राज्य की इजारेदारी कायम की जाएं। दूसरे शब्दों में, छोटे आदमी का मित्र अथवा सेवक होने तथा पीड़ितों का उत्थान के साथ जनता पार्टी किसी ऐसी व्यवस्था में विश्वास नहीं करती जिसमें मानव को गरिमा व स्वतन्त्रता से वंछित किया जाय। साथ ही, उद्यम स्वतन्त्रता में विश्वास रखते हुए जनता पार्टी किसी ऐसी व्यवस्था में भी विश्वास नहीं रखती जिसमें दूसरों की मेहनत का शोषण किया जाय।

जनता पार्टी विश्वास करती है कि सम्पति व उत्पादन के साधनों के स्वामित्व का अधिकतम बिखराव अथवा विसर्जन ही जनतन्त्र के संरक्षण व स्थायित्व का एक मात्र आश्वासन है। इसलिए जनता पार्टी आर्थिक शक्ति के केन्द्रीकरण के हर रूप की विरोधी है। केन्द्रीकरण चाहे कुछ पूंजीपतियों के हाथों में हो चाहे स्वयं राज्य के हाथों में, उससे एक तो स्वतन्त्रता पर बन्धन लगते है और दूसरे आयों के स्तरों में अनुचित असमानाताएं आ जाती हैं—और यह दोनों सामाजिक व आर्थिक तनाव पैदा करती है।

अपने उद्देश्यों की पूर्ति की लिए जनता पार्टी आर्थिक शक्ति के वर्तमान धारणों व भावी अधिग्रहणों पर जहां सम्भव हो रोक लगायेगी, या उनकी अधिकतम वस्तुपरक

सीमा निर्धारित करेगी, या आयों पर विभेदक लगायेगी, या और कोई आवश्यक कदम उठायेगी ताकि असमानताएं कम से कम हो सकें। यह इसलिए भी किया जायेगा कि आर्थिक प्रचालन, विशेष रूप से औद्योगिक उत्पादन की तकनीकों, उसके उपायों को व उसके आकार को विनियमित किया जा सके तथा निर्धारित किया जा सके। आज फैली हुई इजारेदारी व आयों की असमानताओं को फिर से उभरने से रोकने के लिए ऐसा करना जरूरी है। उत्पादन की तकनीक विशेष से न केवल विशिष्ट आयों की उत्पति होती है बल्कि उन आयों का वितरण भी विशेष ढंग से होता है।

यह संक्षेप में है पार्टी की विचारधारा, उसका आर्थिक दर्शन। सवाल यह है कि इस विचारधारा अथवा दर्शन को कार्यान्वित कैसे किया जाता है। देश के सामने आर्थिक क्षेत्र में जो तीन समस्यायें हैं अथवा जो तीन बिमारियां देश को सता रही है, उनको पहचाना जा सकता है। वे है, गरीबी, बढ़ती हुई बेरोजगारी और सम्पतियों व आयों में बढ़ती हुई असमानतायें।

इसलिए हमारी आर्थिक नीति का उद्देश्य ऐसी संरचना का निर्माण होना चाहिए जिसमें उत्पादन में वृद्धि के साथ साथ रोजगार मिले, और यदि पूरी तरह से आय की असमानताओं का उन्मूलन न हो सके तो उनमें कमी अवश्य हो। क्योंकि सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक जीवन एक दूसरे से गुंथा हुआ है, इसलिए हमें ऐसी अर्थ-व्यवस्था पसंद होनी चाहिए जो अधिकतम रोटी, समानता का आश्वासन देने के साथ ही उन शक्तियों को भी जन्म दे जो जनतन्त्रीय जीवन पद्धति को आगे बढ़ाये व सशक्त बनायें। हमने अपने लिए जनतन्त्रीय जीवन पद्धति को ही चुना है।

उपर्युक्त विश्वासों को कार्यान्वित करने में किसी भी राजनीतिक दल को, जनता पार्टी को भी देश की कारक निधि को ध्यान में रखना होगा। यह निधि ऐसी आर्थिक संरचना को सहारा दे सकती है जिसमें उत्पादन को सीमित करने वाले कारक की प्रति इकाई से अधिकतम उत्पादन किया जा सके। इसलिए यह भूमि वह कारक है जो उत्पादन को सीमित बनाये तो उद्देश्य प्रति एकड़ अधिकतम मुनाफा होना चाहिए। यह श्रम वह कारक हो जो धंधे को सीमित करे तो श्रम की प्रति इकाई अधिकतम लाभ हमारा उद्देश्य होना चाहिए। इसी प्रकार यदि पूंजी वह कारक हो जो उत्पादन को सीमित करती हो तो हमारा उद्देश्य होना चाहिए की निश्चित पूंजी लागत की हर इकाई पर अधिकतम मुनाफा मिले।

जनता पार्टी ऐसी अर्थव्यवस्था की स्थापना के लिए प्रयत्नशील रहेगी जिसमें :

(क) (1) क्योंकि हमारी परिस्थितियों में भूमि भी वह मुख्य कारक है जो उत्पादन को सीमित करती है और इस कारण श्रम या पूंजी से अधिक मूल्यवान है—इसलिए कृषि के क्षेत्र में भूमि के प्रति इकाई उत्पादन में वृद्धि हो सके, (2) क्योंकि उद्योग के क्षेत्र में पूंजी का तुलनात्मक अभाव है और इस कारण वह श्रम से अधिक मूल्यवान है, इसलिए पूंजी की हर इकाई से अधिकतम उत्पादन प्राप्त किया जा सके।

(ख) कृषि में भूमि की प्रति इकाई और उद्योग में पूंजी लागत की प्रति इकाई अधिकतम रोजगार मिल सके क्योंकि हमारे यहां जनसंख्या और बेरोजगारी बराबर बढ़ रही है।

(ग) आमदनियों की असमानता को कम किया जा सके क्योंकि असमानताओं के बने रहने से व बढ़ते जाने से सामाजिक व राजनीतिक तनाव बढ़ते जाते है।

(घ) दूसरों के श्रम के शोषण को अधिकतम हद तक रोका जा सके ताकि हमारी आबादी की अधिकतम संख्या को अपने व्यक्तित्व के विकास व व्यक्तिगत हितों की साधना के लिए अवसर मिल सके।

भारत का काम ऐसी व्यवस्था से ही चलेगा जिसमें कृषि के क्षेत्र में सेवा सहकारी संस्थाओं द्वारा एक-दूसरे से जुड़े हुए छोटे-छोटे स्वतंत्र किसानों के फार्म हो और विनिर्माण उद्योगों के क्षेत्र में कुछ अपवादों को छोड़कर (ऐसी परियोजनाओं को छोड़कर जिनको लघु स्तर पर नहीं चलाया जा सकता) मुख्य रूप से कुटीर व लघु उद्योग हो जिनकी सेवा के लिए जरूरत के स्थानों पर सहकारी सस्थाएं हो। इस तरह की अर्थ व्यवस्था में अधिक माल का उत्पादन होगा, अधिक लोगों को रोजगार मिलेगा, आय की असमानताएँ कम होंगा और जनतन्त्रीय जीवन प्रणाली को बल मिलेगा।

आज हमारी औद्योगिक व्यवस्था मिश्रित है। इसमें दो क्षेत्र शामिल है—एक निजी व दूसरा सार्वजनिक। निजी क्षेत्र पूंजीवाद का प्रतिनिधित्व करता है। इसलिए क्रमिक रूप से बढ़ती दर से भारी कर लगाने की और कर प्राप्तियों को सीधे ही जरूरत मदों को हस्तांतरित करने या ऐसी

परियोजनाओं पर जिनसे धनिकों की अपेक्षा गरीबों को अधिक लाभ हो, खर्च करने की जरूरत है। लेकिन प्रति व्यक्ति आय बहुत कम होने और कुल राष्ट्रीय आय का बहुत ही असमान वितरण होने के कारण यहाँ उन लोगों का दायरा बहुत छोटा है जिन पर कर लगाया जाता है। इसलिए प्रत्यक्ष करों को उत्तरोत्तर बढ़ाना और बड़े स्तर पर अप्रत्यक्ष कर लगाना बहुत जरूरी है। लेकिन इस प्रकार क्रमिक दर की कर व्यवस्था उद्यम व पूंजी लगाने को हतोत्साहित करती है। अप्रत्यक्ष कर कुछ ऐसे बाधक होते हैं कि उनका बोझ धनिकों की अपेक्षा गरीबों पर ज्यादा पड़ता है और उनको व्यापक स्तर पर लगाने से, जो भारत में किया गया है, सारी अर्थव्यवस्था में उत्पादन की लागत बढ़ जाती है।

सार्वजनिक क्षेत्र मार्क्सवादी समाजवाद (या उसे कम्युनिज्म कहें) का प्रतीक है, कम से कम हमारे देश म तो उनका कार्य बहुत ही निराशा जनक रहा है। इस क्षेत्र में कर लगाने का कोई सवाल नहीं, लेकिन उससे किसी प्रकार का ऐसा अतिरिक्त उत्पादन भी नहीं मिलता जिसे प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से गरीब व अल्प रोजगार वालों को हस्तांतरित किया जा सके या ऐसी परियोजनाओं में लगाया जा सके जो उनकी आवश्यकताओं को पूरा करती हैं। सार्वजनिक क्षेत्र किसी और ढंग से भी भारत के लिए उदाहरण नहीं बन सकता—कम्युनिस्ट देशों ने अति असमानताएँ तो खत्म कर दी है लेकिन ऐसा करने के लिए बहुत बड़ी कीमत उन्होने इस रूप में अदा की है कि व्यक्तिगत आजादी व पेशकदमी को खत्म कर दिया है।

लेकिन एक और भी रास्ता है जिसका प्रतिपादन गांधी जी ने किया था वह रास्ता यह है कि साधारण श्रम प्रधान तकनीकों के द्वारा छोटे स्तर व विकेन्द्रित ढंग से उत्पादन ही हमारे औद्योगिक ढांचे का प्रमुख रूप हो। इस व्यवस्था से राष्ट्रीय आय का आरम्भ में ही इस प्रकार का वितरण होता है जिससे श्रमिकों को फायदा हो। यह व्यवस्था इजायरेदारियों के लिए बहुत कम गुंजाइश छोड़ती है। इस व्यवस्था में यह जरूरत नहीं होगी कि बाद मे राज्य द्वारा आय का पुनर्वितरण किया जाय। जिन तकनीकों से उत्पादन किया जाता है, वे यह तय करती है कि विभिन्न लोग किस रूप में उत्पादन क्रिया में भाग लें और उससे होने वाली आय में उनका हिस्सा कितना हो। श्रम प्रधान उद्यमों में आय का सबसे बड़ा हिस्सा श्रमिकों को जाता है और पूंजी प्रधान इकाइयों में पूंजीपति को। और फिर यह तो सभी मानेंगे कि मजदूरी पाने के लिए काम करने से कहीं अच्छा यह है कि व्यक्ति ऐसा धंधा करें जिसका वह स्वयं मालिक हो। ऐसा धंधा साधारण श्रम तकनीकों से ही किया जा सकता है। वह रास्ता जिस पर चलने से जनसंख्या का अत्याधिक प्रतिशत धंधों में लग सके जिनका व्यक्तिगतरूप से श्रमिक ही स्वामी हो, उत्पादन के साधनो का मालिक हो और उनकी जीविका के लिए किसी और पर आश्रित न हो, उस रास्ते से कहीं अधिक अच्छा है जिस पर चलने से पहले तो थोड़े से लोग सम्पति का उत्पादन कर पायें व थोड़े से हाथों में सम्पति केन्द्रित हो—भले ही इन लोगों के हाथों में राज्य सत्ता सीमित हो और फिर बाद में मुनाफे या अतिरिक्त बचत को नौकरशाही के माध्यम से वंचित लोगों को विभिन्न रूपों में हस्तांतरित किये अथवा उनमें बांटे जायें।

अपने जीवन के उत्तरार्द्ध में गांधी जी ने एक योजना सोची थी जिसके अन्तर्गत उद्योगपति समाज के न्यासी (ट्रस्टी) के तौर पर काम करेंगे। उन्होंने यह योजना भारी उद्योग को जीवित रखते हुए उसकी बुराइयों से बचने के लिए सोची थी। इसके बारे में उन्होंने कई बार लिखा व कहा। कदाचित् इस योजना की सबसे संक्षिप्त व सबसे स्पष्ट व्याख्या उन्होंने हरिजन के एक अंक में प्रकाशित एक लेख में की थी जिसमें लिखा था कि उद्योगपतियों को "अपने धारणों का सचालन अपने पास रखने दिया जायेगा और अपनी योग्यताओं को सम्पति की वृद्धि के लिए इस्तेमाल करने दिया जायेगा, लेकिन अपने लिए नहीं, बल्कि राष्ट्र के लिए और इसलिए बिना (दूसरों का) शोषण किये। राज्य यह तय करेगा कि उनको समाज की सेवा करने के लिए कमीशन दिया जाय—कमीशन उनकी सेवा के मूल्य के अनुरूप होगा। उनके संचालन की जिम्मेदारी विरासत के रूप में तभी पायेंगे जब उसके लिए अपनी योग्यता सिद्ध कर देंगे।"

उनका उद्देश्य था कि उद्योगों के प्रबन्ध व नियन्त्रण की ऐसी व्यवस्था करना जिसमें श्रमिकों उपभोक्ताओं, कच्चामाल, आस पास रहने वालो और आमतौर से सारे समाज के उद्यमों के भागीदारों के भी-पभी के-द्रित ध्यान में रहें और मालिकों व प्रबन्धको विशेषज्ञता का भी लाभ उठाया जा सके व उत्पादन बढ़ाने के लिए उन्हें प्रेरणा भी मिलती रहे। इस योजना के अन्तर्गत सारा मुनाफा राज्य के पास जायेगा और फिर उसे अर्थ व्यवस्था में लगा दिया जायेगा। भारी का उद्योगों अतिरिक्त लाभ न तो मजदूरों

की मिल्कियत है न मालिकों की, बल्कि सारे राष्ट्र की मेहनत से व सूझबूझ से ही भारी उद्योग बनते हैं व चलते हैं। इस रास्ते पर चलने से निजी पूंजी से भी बचा जा सकता है और राज्य की सर्वोच्च सत्ता से भी। गांधी राज्य की सर्व प्रभुता के विरुद्ध थे। उनके विरोध के लिए उचित कारण थे—आज हममें से बहुत लोग ऐसा मानने लगे हैं हालांकि जब गांधी जीवित थे तब हमारी समझ में यह बात नहीं आती थी।

लेकिन इस दुनियादारी वाले समाज में यह सम्भव नहीं है कि मालिकों की दानवीरता व उनके राष्ट्रीय कर्तव्य की दुहाई देकर ही उन्हें उद्योगों पर अपना नियंत्रण छोड़ने के लिए राजी किया जा सके। गांधी तो जगदगुरु थे और अन्तिम सत्य की बात करते थे व इतने उच्चे आदर्श हमारे सामने रखते थे जिनको कम से कम आज तो प्राप्त करना मुश्किल है। फिर भी जनता पार्टी चुने हुए क्षेत्रों में उनके द्वारा प्रतिपादित ट्रस्टीशिप का परीक्षण करना चाहती है।

[चौ० चरणसिंह कृत "भारत की अर्थनीति गांधी-वादी रूप रेखा" से उद्धृत]

सूरज के लिए

माना कि
सूरज पर
तुम्हारा हक है
लेकिन
किरणों पर नहीं,
सूरज
कुछ लोगों का हो सकता है
लेकिन
किरणें हम सब की हैं,
जब तक किरणें हमारे साथ हैं,
हम आगे बढ़ते रहेंगे···
सूरज के लिए···लड़ते रहेंगे।

शैलेन्द्र जार्ज

शायद ही मिलते हैं

— राजीव कुमार रस्तोगी

बहुत मिलते हैं
फूलों को छूने वाले
खुशियों को चाहने वाले
गलती बनाने वाले
ठुकरा भी देने वाले
बहुत मिलते हैं
आग भभकाने वाले
प्रश्न पूछने वाले
लड़ाई कराने वाले
दिल तोड़ने वाले
बहुत मिलते हैं
लेकिन शायद ही मिलते हैं
कांटों को छूने वाले
गम को चाहने वाले
सुझाव देने वाले
अपना बनाने वाले
शायद ही मिलते हैं
आग बुझाने वाले
उत्तर समझाने वाले
फैसला कराने वाले
हौसला बढ़ाने वाले
शायद ही मिलते हैं।

पिंजौर में नये आर्य समाज की स्थापना :

(१) प्रधान—श्री प्रेमचन्द शर्मा, (२) उप प्रधान—श्री रामगोपाल गोयल, (३) मंत्री—श्री प्रेमप्रकाश (४) कोषाध्यक्ष श्री राजेश सिंह आर्य।

जिला जीन्द में आर्य युवक परिषद के शिविर सम्पन

जिला जीन्द के कर्मठ आर्य युवक ब्र० सूर्य देव आर्य "व्यायाम-शिक्षक" ने गाँव-गाँव के विद्यालयों में जाकर व्यायाम शिविरों का आयोजन किया। इन्होंने क्रमशः जाजवान, घोघड़िया, मोहनगढ़, बरोली, निडानी, खोखरी, सिवाह आदि गाँवों में शिविर लगायें।

शिक्षा : गांधीवादी मूल्य--

कलम और कुदाल बराबर हो

देवनंदन प्रसाद यादव

पिछले कुछ सालों से यह आवाज तीव्र गति से सुनाई दे रही है कि शिक्षा में आमूल परिवर्तन करो, शिक्षा को जीवनोपयोगी बनाओ। हमें यह मैकाले की शिक्षा नहीं चाहिए, इत्यादि इत्यादि। जब कभी आम चुनाव का वक्त आता है तो हर राजनीतिक दल अपने चुनाव घोषणापत्र में शिक्षा में आमूल परिवर्तन करने का आश्वन देता है। चुनाव हो जाने पर मंत्रिमंडल के गठन के दिन तक एक ऐसे सांसद या विधायक की खोज की जाती है, जिसे शिक्षा-क्षेत्र का अनुभव रहा हो या खुद शिक्षाविद रहा हो, मंत्रिमंडल का गठन हो जाता है। शिक्षामंत्री पद भार ग्रहण करते हैं। पहले दिन मंत्री जी अपने कार्यालय जाते हैं। सभी उच्चाधिकारियों से उनका परिचय कराया जाता है। परिचय गोष्ठी में मंत्री जी का संक्षिप्त भाषण होता है। अपने संक्षिप्त भाषण में मंत्री जी सभी अधिकारियों को आगाह करते है कि पिछले दिनों जो गलतियां हो गयी है, वे दोहरायी नहीं जायेंगी और हम पूर्णरूपेण इस शिक्षा-पद्धति में परिवर्तन करेंगे।

दूसरे दिन अखबारों में मुखपृष्ठ पर समाचार छपता है : "शिक्षा में मौलिक सुधार शिक्षामंत्री की घोषणा।" सारा राष्ट्र या राज्य के मंत्री रहे तो राज्य भर में तहलका मचता है। आशा बंधती है, अब शिक्षा में सुधार हो जायेगा क्योंकि नये शिक्षमन्त्री ने आदेश दे दिया है। शिक्षामंत्री का निवासस्थान हो या कार्यालय, दूसरे दिन से कुछ शिक्षा शास्त्री, कुछ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर, कुछ तकनीकी अधिकारी, कुछ राजनीतिक कार्यकर्ता, कुछ शिक्षक संगठनों के अधिकारी अपने-अपने सुझाव ले कर मंत्री जी से मुलाकात करने चले जाते हैं, दो-तीन दिन बाद पुन: एक रोचक समाचार मोटे हरफों में अखबार में आता हैं। 'नयी शिक्षा प्रणाली के लिए आयोग गठित।'

बैठकें शुरू हुई, दो-ढाई साल तक खोज होती रही। एक पुस्तिका के रूप में रिपोर्ट छप कर तैयार हो गयी। इस रिपोर्ट के अध्ययन के लिए पुनः एक उपसमिति का गठन किया गया। इस प्रकार शिक्षा-मंत्रालयों में पड़ी अनेक रिपोर्टों की संख्या में एक और बढ़ोतरी हो गयी अंत में शिक्षामंत्री भी दफ्तर के 'पुराने रूल' के सदस्य हो गये। जो पहले शिक्षामंत्री के कार्यालय में होता था, सब वही हो रहा है। इस तरह चार साल गुजर गये और एक साल के बाद चुनाव आनेवाला है। कुछ पहले से तैयारी करनी चाहिए। शिक्षामंत्री अपने दल के संगठन कार्यों और चुनाव कार्यों में ज्यादा रुचि लेने लगे। शिक्षा सचिव, संयुक्त सचिव का या तो तबादला हो गया या प्रमोशन। बेचारे पुराने 'एक्स-कैडर' वाले परमानेंट अधिकारियों के दुर्बल कंधों पर ही पूरे शिक्षा-परिवर्तन का भार पड़ गया। शिक्षा मंत्री पुनः उस पद पर नहीं आयेंगे, सभी ने मान लिया। बेचारी शिक्षा जहां थी वहीं रह गयी।

अब एक अहम सवाल पैदा होता है कि आखिर शिक्षा है क्या ? भारतीय परिप्रेक्ष्य मे शिक्षा का क्या रूप होना चाहिए। यह सवाल हमारे सामने आ कर खड़ा होता है। हम बातें जितनी भी करें, ले दे कर गांधी जी ही याद आते हैं। और हमारी समस्या का समाधान गांधीवाद ही रह जाता है। यह गांधीवाद है क्या ?

महात्मा गांधी ने अपने विचार में कहा है कि शिक्षा का उद्देश्य अंततोगत्वा एक ऐसे समाज की रचना करना है, जहाँ शोषण और हिंसा न हो और प्रत्येक युवक और युवती, चाहे वह किसी वर्ग, धर्म और जाति का हो, उत्पादनशील, सर्जनात्मक और समाजोपयोगी कार्यक्रमों में मुक्त रूप से हाथ बंटा सके।

समता का समाज तैयार करना, जहां उत्पीड़न और शोषण न हो, ऐसी बात हर पढ़ा लिखा व्यक्ति करता है।

(शेष पृष्ठ ८ पर)

गुरूकुल कांगड़ी स्थापना दिवस समारोह

दिनांक 22 फरवरी 1978 की प्रात: 10 बजे विश्वविद्यालय परिसर के अमनचौक पर स्वामी धर्मानन्द विद्यामार्तण्ड की अध्यक्षता में गुरूकुल स्थापना दिवस सामारोह का सफल आयोजन हुआ जिसमें गुरूकुल के समस्त छात्र, कर्मचारी, अध्यापक, प्रधान तथा मंत्री और अधिकारियों के अतिरिक्त योगधाम के स्वामीगण आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर के प्रधान तथा मंत्री अनेक वानप्रस्थी मातृशक्ति एवं पंचपुरी के गणमान्य महानुभाव अपार संख्या में सम्मलित हुए। दान की सामान्य सी अभियाचना पर लगभग एक हजार रूपये हाथ के हाथ हो गये। जिसमें कुलपति जी ने 151 रू०, कुलसचित्र ने 51 रू०, श्री रविकिरणेने 101 रू०, श्री कर्ण सिंह ने 101रू०, श्री ज्योति स्वरूप ने 100 रू०, तथा श्री कमवेश ने 80 रू० दान किये।

वक्ताओ मे प्रो० योगेन्द्र पुरूषार्थी, प्रो० ओम प्रकाश, विज्ञानमहाविद्यालय के प्रावार्य प्रो० बुद्ध प्रकाश शुक्ल, योगधाम के स्वामी विजयानन्द जी, स्वामी यज्ञानन्द जी वानप्रस्थ की माता सरस्वती, पंवनार सहारनपुर के प्रेम कुमार आर्य, विश्वविद्यालय के कुलसचिव प्रो० बलजोत सिंह आर्य, कुलपति श्री विजयपाल सिंह जी वर्मा आदि ने अपने विचार व्यक्त किये। विशेष उल्लेखनीय बात यह है कि संघर्ष से गुजरते हुए इतनी विषम परिस्थितियों में भी लगभग 18 वर्षों पश्चात इस वर्ष गुरूकुल स्थापना दिवस बड़े धूमधाम से मनाया गया। जिसमें कई ब्रह्मचारियों ने स्वामी दयानन्द के आदर्शो पर चलकर राष्ट्रोत्थान का संकल्प लिया।

अध्यक्षीय भाषण में स्वामी धर्मानन्द विद्यमार्तण्ड जी ने अपना पूरा योगदान करने का आश्वसन ही नहीं दिया अपितु, गुरूकुल माता के प्रति श्रद्धांजली रूप में लिखी कविताएं भी सुनाई तथा कंठावरोद में यह व्यक्त किया कि इस प्रकार के आयोजन होते रहने चाहिये जिस पर शौधकर्ता विशालमणि बहुगुणा ने सबके समक्ष विदेशी वेशभूषा त्याग दी तथा भविष्य में कभी भी न धारण करने का हठ संकल्प लिया।

विश्वविद्यालय के कुलपति श्री वी० एस० वर्मा ने यह संकल्प लिया कि हाथ का प्लास्टर उतरते ही मैं विदेशी वेशभूषा ही सदा के लिए त्याग दूंगा तथा भारतीय वेशभूषा धारण करूंगा। कुलसचिव जी ने अपने छात्र जीवन के संस्मरण सुनाये कि प्राध्यापक के कहने पर भी भारतीय वेशभूषा नहीं छोड़ी अपितु उस प्राध्यापक के विषय का परित्याग कर दिया।

समारोह प्रारम्भ वैदिक यज्ञ से हुआ तथा शान्ति पाठ से सभा समाप्त हुई। संयोजन हिन्दी विभाग के कार्य वाहक अध्यक्ष श्री रामाश्रय मिश्र ने किया।

(पृष्ठ ७ का शेष)

राजनीतिज्ञ तो हर भाषण और वार्ता में इसकी चर्चा करते हैं। परन्तु गरीबी की स्थिति अभी भी बनी हुई है। किसी अर्थशास्त्री से पूछिए कि शिक्षा में परिवर्तन क्या है, सामाजिक ढांचे का आर्थिक स्वरूप कैसे बदलेगा, तब वह सज्जन आंकड़ों की उलझन में हमें फसा कर असलियत को भुला देते हैं।

अपने मंत्रित्व के कार्यकाल में न जाने मैंने कितनी शिक्षा संस्थाओं को देखा और कितने शिक्षा शास्त्रियों स भेंट की। सभी से पूछा, शिक्षा मे क्या परिवर्तन होना चाहिए? ज्यादातर लोगों ने सुझाव दिया, नये सिरे से सोचने के लिए इस पर एक कमेटी गठित कर दीजिए। विरले ही शिक्षाशास्त्री मिले जो दिल की गहराई से चिंतित दिखाई दिये। सभाओं और गोष्ठियों में भाषण करना ता आसान है, परंतु जेठ मास की दोपहरी में जा कर किसानों के साथ काम करना आसान नहीं। जब तक दर्जा कलम और कुदाल का बराबर नहीं होगा, तब तक शिक्षा में आमूल परिवर्तन की बात सोचना इस देश की गरीब जनता और दस करोड़ छात्र समुदाय को धोखा देना होगा।

(भू. पू. केंद्रीय उपमंत्री, शिक्षा तथा समाज कल्याण)

मेवात की मेहनतकश जनता तथा उसके शोषक

—सुल्हखां

मेवात की गरीब मेहनतकश जनता आज उस दौर से गुजर रही है जिसमें घोर गरीबी रूपी भूख से परेशान होकर ईन्सान अपने बेटे या बेटी जो उस के खुद के दिल के टुकड़े होते हैं, खां रहा है। अपनी इज्जत, इमान, इखलाक, इन्सानियत, इबादत, धर्म-दीन एवम् सुहाग तक को भी सिर्फ भूख से करवट खाते हुये पेट के लिये बेचा जा रहा है। इसी गुरबत की वजय से जिसका जिम्मेदार यह पूंजीवादी-सामन्ती ढांचा है, का नतीजा निकल रहा है कि यहां पर लड़कियों को पढ़ाना अभी तक पाप समझा जाता है, स्त्री का बराबर का हक तो दूर रहा बल्कि मर्दो से खेती व घरों में अधिक काम करने के बावजूद भी पैर की जूती समझी जाती है। रिश्वतखोरी ने अपना विराट रूप धारण कर रखा है। शादियों, अदालतों, पुलिस आदि पर वेईन्तहा रूपया फिजूल ही खर्च किया जा रहा है। महाजनों-सूदखोर-मुनाफाखोरों द्वारा कर्जे को ऊंची ब्याज की दर पर देने की वजय से भारी संख्या में मेहनतकश गरीब किसानों की जमीन-जायदाद-जेवरों के मालिक बन चुके हैं व बनते जा रहे है। बालकपन में ही शादी कर देना, फिजूलखर्ची खुदगर्जी व झूठी शान के लिये लड़ना तकदीर पर भरोसा रखना, फल की चिन्ता न करना, मुंह फाड़े बेकारी का बढ़ता हुआ काफला, सहायक काम-धन्धों का न होना, सरकार द्वारा मुख मोड़ना, किसी कारखाने इन्सटीच्यूट का न होना, खुदा द्वारा सब कुछ मिलना। छीनना पर यकीन, नेतागण द्वारा अपनाई हुई, फूट, दमन, लड़ाओ और राज करों की नीति आदि का नतीजा यह निकल रहा है कि लोग गुरबत से लथपथ है। इसका यह गलासड़ा पूंजीवादी ढांचा तो जिम्मेदार है ही मगर यहां पर इसके अंग समाज विरोधी तत्व जैसे सूदखोर, मुनाफाखोर, नकाबपोष ढ़ोंगी, दलाल, ग्रोह, तबलीकी जमात द्वारा प्रप्फुलिलत मुलला ग्रोह, दमनकारी पुलिस नौकरशाही एवं भ्रष्ट अफसरशाही तथा नकाबपोष नेतागण का शोषण इतना बढ़ गया है कि ये गुरबत की दल-दल में फंसी हुई मेवात की जनाजे रूपी लाश पर अपना जश्न मना रहे हैं ये शराब या मांस की थालियां आगे रखकर इनकी गुरबत का मजाक खिलखिला कर उड़ाते हैं।

यहां के लोग जो प्राय: 98% सूदखोरों के कर्जदार भारी संख्या में खेतिहर मजदूर बनते जा रहे हैं तब वे जमीन जयदाद बेचने के बावजूद भी कर्जमुक्त नहीं हो पाते तो उसके यहां बंधवा मजदूरी करने लगते है और यदि फिर भी पीछा नहीं छूटता है तो अपने दिल के टुकड़े लड़कियों-बहनों का पशुओं के भाव आंखें बन्द करके, अन्दर मे गुरबत को गुनहगार ठहराकर बेच देते हैं। तथा एक बार ही नहीं कई बार बेचते रहते हैं। यहां के लोगों का मुख्य धन्धा खेतीबाड़ी है जिसमें 5 साल के बच्चे से 70 साल तक का बुजुर्ग दिन रात काम करने के बावजूद, खाद, बीज औजार अत्याधिक मंहगे होने की वजय, आपासी के लिये पानी व बाढ़ों की रोकथाम का इन्तजाम न होना—सिर्फ पैदावार इतनी होती है कि 2 पैसे रोज की भी मजदूरी नहीं मिल पाती है। जो कुछ पैदा होता है उसे समाज का का शोषक दुश्मन सूदखोर, मुनाफाखोर फसल की उठाई के समय ही नीची दर पर ले जाता है अत: वह उसी से कर्जा या अनाज उधार लेता है तथा यह एक ऐसा चक्कर बनता है कि वह उसकी पीढ़िया तक भी इससे पीछा नहीं छुड़ा पाती है।

दूसरे दमनकारी व भ्रष्ट अफसरशाही, पुलिस एवं नेतागण द्वारा उत्पन्न किया गया नकाबपोष ठोड़ा (दलाल) ग्रोह के द्वारा इन मासूम मेहनतकशों का रिश्वत एवं दमन के रूप में शोषण करते रहते हैं। ये ही दलालग्रोह यहां कि

मार्कीटिंग कमेटी, सोसाईटियों, भिन्न-२ पंचायतों, दुग्ध सप्लाई इत्यादि-२ पर हावी हैं इनमें इन्होंने भारी चोर-बाजारी भ्रष्टाचारी, रिश्वतखोरी मचा रखी है। मिसाल के तौर पर जो कोई इनके खिलाफ़ आवाज उठाता है उसका जीना मुश्किल कर देते हैं। मौ० शरीफ सैलजमेन मार्कीटिंग कोओपरेटिव सोसाईटी से निकाल दिया था। 'मेवात' अखबार दिनांक 25.4,76 के शीर्षक 'मेवात क्षेत्र की जनता ठोडाओं की शिकार' में इस्लामुद्दीन ने ब्यान किया है कि 'जब तक मेवात की जनता ढ़ोंगी ठोडाओं व नकाबपोषों को नहीं पहचानेगी व उनकी नकल करनी नहीं छोड़ेगी तब तक ये रीतिरिवाज एवं दहेज प्रथा खत्म नहीं हो सकती। 25.4.76 की नूंह में हुई पंचायत जो ब्याहशादी पर कम खर्चा, पुराने रीतिरिवाजों व दान दहेज पर पाबन्दी इत्यादि के हुये फैसले वाली पंचायत में ये नकाबपोष शामिल थे जिन्होंने खुदों के द्वारा किये गये फैसलों पर अमल नहीं किया है। मिसाल के तौर पर चौ० असरफ नीवाहेडी ने अभी हाल में हुई अपने लड़के की शादी में 5,100 रू० व बहुत सारा सामान दान दहेज का लिया व अपनी लड़की की शादी में 7 मन 20 किलो रूपया व अन्य बहुत सारा सामान दिया तथा लग-भग 100 मन चावल खर्चा किया। इसी तरह चौ० उसमान बाबला ने अपने लड़के की शादी में 100 आदमी ले गया व बहुत सारा रूपया सामान दहेज में लाया। अफसोस है कि इनमें सारे ढ़ोंगी ठोड़े शामिल थे। जो दिन रात गलियों में शोर मचाते फिरते हैं कि खर्चा कम करो वहां दूसरी तरफ ये ही नकाबपोष ठोड़ा इलाके की लड़कियों को जो बेचारी अनपढ़ मासूम हैं बिकवाते हैं तथा गरीब आदमियों से जयदाद के लालच में ज्यादा खर्चा करवा कर उनकी माली हालत कमजोर बनाते जाते हैं और इनकी जमीनों को खरीद लेते हैं व उन्हें भूमिहीन मजदूर बना देते हैं। यदि सरकार इन नकाबपोषों पर कड़ी नजर रखे तो मेवात की गरीब आवाम इनके स्वार्थी, भ्रष्ट, दमन एवं शोषण के चक्कर से बच सकती है। इनके पास ही अधिकतम जमीने व जायदादें है, ये ही पचायतों में सोसाइटियों, मार्कीटिंग कमेटियों पर हावी है, नेतागणों का हारना जीतना भी इन्हीं पर आधारित है। खुद अफसरशाही पुलिस के दलाल के रूप में, नेतागण पर दबाब डालकर गरीबों का शोषण व अपनी ऐशोइस्रत से भरपूर्ण जीवन के लिये भ्रष्ट नीतियां रचते रहते हैं। जब भी दमन, किसान मजदूर विरोधी साजिसे सरकार व पुलिस अफसरशाही द्वारा रची जाती है तो ये जनता को कुचलवाने व अफसर-शाही की हिफाजत में दिन रात एक कर देते हैं। इन सब का आंतक इतना बढ़ गया है कि यहां लोगों के नागरिक अधिकार छीन लिये हैं। यहां पर सरकारी अर्द्ध सरकारी दफ्तरों में अफसरशाही द्वारा लूट एवं शोषण इतना बढ़ गया है कि पब्लिक वर्क्स के विभागों में कर रही मजदूरी, लड़कियों की इज्जत को भी नहीं बक्शा जाता है।

तीसरे तबलीकी आन्दोलन द्वारा बनाया गया मुल्ला-मौलवी ग्रोह ने भी यहां अपने प्रचार—लड़कियों को मत पढ़ाओ, बचपन में शादियां करो, किस्मत पर यकीन रखो, सारी समस्याओं का कारण इस्लाम पर यकीन पूर्ण नहीं, जो कुछ होता है वह खुदा की मरजी से अच्छा ही होता है। हिन्दी पढ़ाने से हिन्दू हो जाओगे इत्यादि तरह गुमराह कर रखा है। मिसाल के तौर पर अगस्त 1947 में मेवात इलाकों में भारी बाढ़ आई जिसका नतीजा यह निकला है कि (12 अगस्त से अगस्त 30,1977 तक के 'दी ट्रिबून' के अनुसार) जि० गुड़गावां की नूह व फिरोजपुर झिरका तह० की 1,02,150 हैक्टर भूमि में पानी भरा जिसका सिर्फ 39,000 हैक्टर में खरीफ की फसल का अनुमान 3,43,00,000 रूपया लगाया गया व 30 लाख की जयदाद का नुकसान हुआ, 600 पशु मरे, 2 आदमी मरे। जहां दूसरी और 420 ग्राम डूबे, 47 उजड़े, 27,793 कच्चे मकान गिरे व 7,443 टूटे फूटे तथा इनमें से 124 ग्रामों में 30 000 मलेरिया की चपेट में आये। लेकिन असलियत ये है कि जहां चौ० रहीमखां एवं स्वामी आदित्यवेश की रिर्पोट के मुताबिक 100 से अधिक आदमी मरे वहां कितने ही हजारों पशु मरे, मकान गिरे, घर बरबाद हुये और मौते इतनी हुई कि शायद पिछली दस सालों में नही हुई होंगी। बीमारियां अभी तक जारी हैं। इतना भयंकर प्रकोप आने पर भी इस ग्रोह ने जो बाढ़ के समय तो नजर नहीं आते थे और न ही शारीरिक एवं आर्थिक सहायता की बल्कि उल्टा गरीब मेहनतकश मासूम मेवातियों पर इलजाम लगाया कि यहां पर गुनाह बहुत बढ़ गये हैं, तुम्हारा खुदा व इस्लाम पर पूरा यकीन नहीं हैं इसलिये खुदा ने तुम पर अजाब व कहर भेजा है। लेकिन अफसोस है कि यदि यह अजाब या कहर किसी जैबी जादूगर या खुदा का है तो वह शोषक वर्ग से भी बढ़कर अत्याचारी है जिसने इन बेकसूर गरीबों का इतना जानी व माली नुकसान किया है। हमें इस तरह की बेहूदी, बेतुकी एवं अवैज्ञानिक मनघडंत हवाई कहानियों के द्वारा बहकावे

से चुस्त रहना चाहिये।

चौथे भारतीय समाज में भिन्न रिपोर्ट के निष्कर्ष के मुताबिक 70% लोग गरीबी की लाईन के नीचे जीते हैं। मगर यहां पर 98% गरीबी की लाईन से नीची भुखमरी-ग्रस्त जिन्दगी गुजार रहें हैं। लेकिन अफसोस है कि सरकार ने अभी तक इस इलाके को पिछड़ा हुआ इलाका घोषित नहीं किया है कोई भी भारी व छोटा उद्योग नहीं खोला है। और तो और ऐसे-२ कानून बना रखे हैं प्रायः यहां पर बार-२ बाढ़ आने की बजय से मच्छियों का ठेका छोड़ा हुआ है, जहां खेतों में जब पानी उतर जाता है तो फसलें उगा सकते हैं काट सकते हैं मगर पानी भरने पर मच्छियां नहीं पकड़ सकते। जो रूपया ग्रामीण बैंकों द्वारा उधार, बीज, खाद की सप्लाई पर भारी ऊंची ब्याज की की दर व भाव की दर रखी है तथा बाढ़ग्रस्त व अबाढ़ग्रस्त की दरों में फर्क नहीं डाला है न ही पूरी बाढ़ राहत पहुंची है लेकिन यह फिर भी तानाशाह कांग्रेस सरकार द्वारा अपनाई गई सहायता न देने से, फिर भी सन्तोषजनक रही है।

पाचवे मेवाती नेतागण ने कभी भी मेवात की तरक्की समृद्धि, लोगों की परेशानियों व शोषण से मुक्ति, मेवात विकास के लिये 'डिवलपमेन्ट बोर्ड' की स्थापना जो 1966 की योजना आयोग में दी गई रिपोर्ट के मुताबिक हो इत्यादि-२ नहीं की है। और न ही करने की उम्मीद है। क्योंकि ये लड़ाओ, अपने चुंगल में फसाओ, फूट डालो भाववाद में बहाओ, दमन व शोषण करना व करवाना, मरने वाले मरे जीवितों के मालिक हम हैं व 'राज करो' की नीति को लेकर चले हुए हैं। अतः इस तरह के नेतागण से मेवात की आर्थिक समृद्धि एवं मुक्ति की कल्पना करना भेड़ियों द्वारा भेड़ की हिफजात करने वाली बात है।

[नोट : समस्याओं का हल अगले अंक में पढ़ें]

* * *

कुलदीप आर्य गामड़ी "राजधर्म" में परम्रा और आधुनिकता का स्वस्थ मेल होना चाहिए। कुछ नौजवानों से, नामक कालम के अन्तंगत नौजवानों के लिए विशेष सामग्री होनी चाहिए। मुख्य विषय शराबबन्दी, स्वास्थ्य एवं चरित्र हो।

शिकायत

नये सूरज ने
मटमैली सीलनभरी
दीवारों में
भरा है नया उजास
दीमक लगे घर के मुहानों पर
जड़ा है सतरंगा इश्तहार
और रचे हैं
बदनुमां फिजा की सांसों में
सोंधी खुशबू के नये छंद,
लेकिन
एक हादसा है
मौसम के चेहरे पर दुर्निवार
नये सूरज का भी
क्षितिज से
वही पुराना रिश्ता है।

—शिवमंगलराय

दिनांक 25/10/77 को आर्य समाज नीमका के प्रधान श्री सूबेदार खचेड़ू राम जी की अध्यक्षता में मीटिंग सम्पन्न हुई। जिसमें सब सदस्यों ने अपने अपने विचार महर्षि दयानन्द के कार्यक्रम (मिशन) को गति देने के लिए रक्खे। अधिकतर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के नव-निर्वाचित प्रधान श्री स्वामी अग्निवेश के शराब (नशाबन्दी) दूर करने के आहवान पर विचार रक्खे कि गांव नीमका में शराब कोई नहीं पियेगा। सरकार भी शराब को बन्द करने को इच्छुक है।

आर्य समाज नीमका, सरकार व आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यक्रम को शराब बन्द करवाने में पूरा पूरा सहयोग देगी। सर्व सम्मति से पास किया कि गांव नीमके में नशाबन्दी कार्यक्रम को गति दी जावें। ग्राम पंचायत नीमका व रजिस्टर्ड युवक ग्राम सुधार सभा नीमका ने भी आर्य समाज की मीटिंग में भाग लिया। कंधे से कंधा मिलाकर शराब विरोधी अभियान में पूरा पूरा सहयोग देने का वचन दिया।

साहसी महिला—कमल गोइंदी

[आपातकाल में जेलों में ठूंसे गये अनेक राजनीतिक पुरुष बंदियों के साथ ही अनगिनत महिलाएं भी जेलों में ठूंस दी गयीं। पिछले दिनों हमारी भेंट कुमारी कमल गोइंदी से दिल्ली में हुई, जिन्होंने आपातस्थिति लागू होने से लेकर 6 फरवरी 1977 तक अपने दिन जेल में यातनाएं सह कर बिताये।

55 वर्षीया कु० कमल गोइंदी का जन्म 23 जनवरी 1922 में करनाल (हरियाणा) में हुआ। पिता स्वर्गीय सरदार भगवानसिंह जी ने 1921 में सरकारी नौकरी छोड़ी और महात्मा गांधी के साथ स्वतन्त्रता संग्राम में लगे रहे। माताजी, स्वर्गीया श्रीमती अनंत कौर भी आंदोलन मे लगातार भाग लेती रहीं।]

एक राज्य से दूसरे राज्य में अवैध शराब की तस्करी जारी थी। लगता था, अवैध शराब का ये धंधा वैध हो चुका है। न केवल शराब बल्कि अन्य अनेक वस्तुओं की तस्करी भी एक राज्य से दूसरे राज्य में हो रही थी। पुलिस को इसकी जानकारी होते हुए भी शायद नहीं थी। एक दिन, अचानक उस तस्करी के क्षेत्र में ही सीधी-सादी, भोली-भाली दिखने वाली दो लड़कियां उधर से आ निकलीं। तस्करी का काम जारी था। तस्करी करनेवाले बदमाशों ने उन लड़कियों की ओर घूरना शुरू कर दिया। इससे पूर्व कि वे बदमाश उस एकांत स्थान में उन लड़कियों का कुछ बिगाड़ पाते, तेज हार्न बजाती हुई पुलिस वैन आयी और तस्करों को रंगे हाथ पकड़ लिया गया।

एक स्थान पर शराब की बिक्री पर प्रतिबंध था। लेकिन लुके-छिपे वहां शराब का सौदा होता था और यही नहीं लड़कियों के जिस्म का व्यापार भी शराब के साथ-साथ चलता था। उसी स्थान पर आधुनिक वस्त्र धारण किये हुए 18 वर्षीया युवती बड़ी स्टाइल से होठों में सिगरेट दबाये आयी और आंखें मटकाते हुए उसने अवैध शराब का धंधा करने वाले व्यक्ति से शराब की बोतल मांगी। शराब वाला समझ गया लड़की 'चालू' है। उसने बोतल निकाल कर दे दी। उसी क्षण उस लड़की ने अपना मेकअप उतार फेंका। उसी समय न जाने कहां से जवान और वृद्ध महिलाओं की एक पूरी-की-पूरी टोली ने शराब की इस दुकान को घेर लिया। पुलिस आ गयी। शराब का धंधा करने वाला पुलिस के पंजे में आ गया।

उपर्युक्त दोनों मामलों में बदमाशों को पकड़वाने में जिन महिलाओं का हाथ था, वे सब कु० कमल गोइंदी के भ्रष्टाचार एवं शराब विरोधी आंदोलन की सदस्या थीं। महिलाओं का यह दल भारत के एक स्थान पर नहीं टिकता। कालाबाजारियों, तस्करों, अवैध शराब का धंधा करने वालों के खिलाफ गुप्त रूप से कार्यवाई करने के लिए कु० कमल गोइंदी के नेतृत्व में ये दल न जाने कब देश के किस भाग में अपनी कारस्तानी गुप्त रूप से दिखा डालेगा, ये किसी को पता नहीं होता।

(प्रस्तुति—सुधीर भटनागर)

किस को खायें ?

नरेंद्र अतुल

पहले बिकते ये आश्वासन, अब बिकती हैं सत्य कथाएं
भाग्य वही है देश वही है, मिटी नहीं है तनिक व्यवथाएं।
यह सच है हथकड़ियां टूटी, यह भी सच है कैदी छूटे
लेकिन अब भी न्यायालय में, वही न्याय है वही सजाएं
डंड बदले कंधे बदले, लेकिन अब तक दर्द न बदला।
हर गरीब का तन दुखता हैं, जहांकहीं भी हाथ लगायें।
यह सच है कुछ कुर्सी बदली, किस्सा कुर्सी का न बदला।
मेरे देश भक्त तिकड़म मे कैसे कुर्सी को हथियायें
माना जिस मसीहा हमने, जिसको पूजा जिसे सराहा
उसी देव के द्वार बंद हैं, और कहां झुन-झुना बजायें
वही निकम्मी नौकरशाही, ढीली पोली रीति-नीति है
जो भी मिला शिखंडी निकला, किसकी धोती और उठायें।
भूखी जनता पूछ रही है, प्रजातंत्र के ठेकेदारों
अब हम संविधान को खायें या फिर प्रजातंत्र को खायें।

"नर्सिंग होम बन्द हों"

राज किशोर

सुश्रूषा-घरों (नर्सिंग होम) की ठीक-ठीक तुलना पब्लिक स्कूलों से ही की जा सकती है। गरीब अभिभावक के बच्चों के लिये सरकारी या साधारण स्कूल हैं, जबकि समृद्ध घरों के लड़के विशेष स्कूलों में पढ़ने के लिये भेजे जाते हैं। वहां से ये शुमांखर के शब्दों में विशेषाधिकार का पारपत्र ले कर निकलते हैं। इसी तरह समृद्ध और अधिकार संपन्न वर्ग के लिये विशेष सुश्रूषा-घर हैं, जहां उनकी अच्छी तरह देखभाल होती है।

सुश्रूषा—घरों का अर्थशास्त्र उतना ही सीधा है, जितना उनका मनोविज्ञान। पिछले दिनों देश में एक बड़ा वर्ग विकसित हुआ है, जिसके पास अपार पैसा है। सही माने में 'हरित क्रांति' (हरे नोटों की क्रांति) वहीं फलित हुई है। उनके पास इतना वक्त नहीं कि वह अस्पतालों के चक्कर काटे, लंबी-लंबी पंक्तियों में शामिल हो। अस्पताल के नियंत्रित वातावरण में किसिम-किसिम के आदमियों के साथ मरीज बनकर पड़ा रहे। जैसे उसने निर्धनता के समुद्र में विलासता के टापूनुमा अपने घर और होटल बना रखे हैं, इसी तरह वह चाहता है कि वह अपना विशेष छोटा-सा अस्पताल हो बना ले. जहां उसी के वर्ग के आदमी आते-जाते हों। अच्छे चिकित्सकों को सेवायें मिलें, खूबसूरत नर्सों का साया रहे और साफ-सुथरा, अभिजात वातावरण हो। नव-समृद्ध वर्ग की इसी आकांक्षा के कारण पिछले दशक में सभी शहरों में सुश्रूषा-घरों की संख्या में तीव्र विकास हुआ है। चिकित्सा के लिये सुश्रूषा-घर में दाखिल होना अब हैसियत का एक प्रतीक हो गया है जिसकी जितनी बड़ी हैसियत होती है, वह उतने ही महंगे सुश्रूषा-घर में दाखिल होता है।

सुश्रूषा घरों के विकास को डाक्टरों के नजरिये से भी समझा जा सकता है। जो काम पहले प्रतिष्ठा और आदर का माना जाता था, अब उसमें व्यावसायिकता पूरी तरह घर कर चुकी है। अब अच्छा डॉक्टर वह नहीं है, जिसने सर्वाधिक जानें बचायी हों। बल्कि वह है जिसकी फीस सबसे तगड़ी हो। बढ़ती हुई व्यावसायिकता ने चिकित्सा व्यवसाय के मानदंड ही बदल दिये हैं। डाक्टर जैसे-जैसे सफल होता जाता है, वैसे ही वैसे शोषण और दोहन के नये तरीके अख्तियार करता जाता है। इसी क्रम में सुश्रूषा-घर उसके व्यवसाय मे जुडते हैं। आज सभी बड़े डॉक्टरों का संबंध प्रतिष्ठित सुश्रूषा-घरों से है। हर उगता हुआ डॉक्टर चाहता है कि वह किसी सुश्रूषा-घर से जुड जाये, ताकि उसकी आय और प्रतिष्ठा बढ़ सके। बहुत-से डॉक्टरों के तो अपने सुश्रूषा-घर हैं। अस्पताल चैंबरों के लिये रोगी जुटाने के साधन भर बन गये हैं और चैंबर से मरीजों का चलान सुश्रूषा-घरों के लिये होता है। सुश्रूषा-घर चूंकि स्वतंत्र इकाई हैं और उन पर स्वास्थ्य विभाग का कोई नियंत्रण नहीं है, इस लिये वहां व्यवस्थापक और डॉक्टर स्वछंद रूप से सारा काम करते हैं। गर्भपात को जब कानूनी स्वीकृति नहीं मिली थी, तब भी प्रायः सभी सुश्रूषा-घरों में अवैधानिक गर्भपात का काम जोर-शोर से चालू था। इस से डॉक्टरों को अच्छी कमाई होती थी।

व्यवस्था का दोगला पन

जिस तरह पब्लिक स्कूलों की बढ़ती हुई मांग के कारण बड़े शहरों में जहां-तहां व्यापारिक उद्देश्यों से प्रेरित किंडर-गार्टेन और 'पोश' स्कूल खुल गये हैं, उसी तरह सुश्रूषा-घरों का भी कुकुरमुत्तों, की तरह अबाध उदय हुआ है। अच्छे सुश्रूषा-घर कुशल डॉक्टरों के कारण चलते हैं, तो अधकचरे सुश्रूषा-घर उनकी नकल के कारण यही वजह है कि इनमें कभी-कभी ऐसी मौतें हो जाती हैं, जो रोकी जा सकती थी। चिकित्सकीय सेवाओं का जो प्रतिमानीकरण इनसे अपेक्षित है, उनके अभाव में ये सिर्फ सजे सजाये खूबसूरत गुड़िया-घरों में तबदील हो गये हैं। चिकित्सा-व्यवसाय मे फिलहाल जो अराजकता है, उसका यह एक अनिवार्य परिणाम है।

फिर भी यह सच है कि आमतौर से सुश्रूषा-घरों में चिकित्सा तथा सुश्रूषा का स्तर काफी बढ़िया होता है। न

केवल अच्छे डॉक्टरों की कुशल सेवायें उपलब्ध होती हैं, बल्कि अनुपलब्ध दवायें भी आसानी से मिल जाती हैं। मरीज को भी तसल्ली होती है। सुश्रूषा-घर के परिष्कृत और सेवाधर्मी वातावरण में मरीज अपने को आश्वस्त पाता है और आरोग्य की ओर तेजी से बढ़ता है—यद्यपि सुश्रूषा-घरों की राजनीति मरीजों को आवश्यकता से अधिक दिनों तक टिकाये रखने की होती है। लेकिन सुश्रूषा-घरों की यही विशेषतायें गरीब आदमी के लिये जानलेवा बन जाती हैं, जब समृद्ध और विशेषाधिकार-संपन्न वर्ग (जैसे मंत्री, संसद-सदस्य इत्यादि) अपनी चिकित्सा सुविधाओं के प्रति आश्वस्त रहता है, तब उसे मामूली आदमी के स्वास्थ्य की चिन्ता नहीं रह जाती। यही वह वर्ग है, जिसकी आवाज समाज के वर्तमान ढांचे को नियंत्रित करती है जब इस वर्ग को तकलीफ होती है, तब यह समाधान के नये उपाय निकालता है। जब तक कुशल सुश्रूषा-घर है, तब तक अस्पतालों की हालत सुधारने के बारे में कोई क्यों सोचे ? ऐसी हालत में डॉक्टरों को दोष देने का भी कोई अर्थ नहीं है। पूंजीवादी समाज के अपने नियम होते हैं। वे प्रत्येक कला या कौशल का बाजारीकरण करके ही दम लेते हैं।

सुना है, नए स्वास्थ्यमंत्री राजनारायण पब्लिक और फैंसी स्कूलों के बहुत खिलाफ हैं। वे अंग्रेजी का इस्तेमाल भी पसंद नहीं करते। पर क्या उनका अपना विभाग भी उतना ही जनवादी है ? क्या राजनारायण ने सुश्रूषा-घरों के अर्थशास्त्र और समाजतंत्र पर भी विचार किया है ? केन्द्रीय स्वास्थमंत्री ने गांवों में पैदल डॉक्टरों की एक योजना बनाई है—यद्यपि इस पर भी तत्परता से अमल नहीं हो रहा है। पैदल डॉक्टरों की योजना गरीबों के लिये है—अमीर अपनी व्यवस्था खुद कर रहे हैं। यह व्यवस्था का दोगलापन है। स्वास्थ्यमंत्री को इसे महसूस करना चाहिए और कोई ऐसी व्यवस्था सोचनी चाहिये, जिससे आदमी और आदमी की जान की कीमत बराबर हो। और यह निजी सुश्रूषा-घरो को खत्म या नियंत्रित किये बिना नहीं हो सकता। जब तक सामान्य सुविधाएं देश के हर औरत-मर्द को नहीं मिलें, तब तक विशेष सुविधाएं किसी भी क्षेत्र में नहीं होनी चाहिए—न शिक्षा के, न चिकित्सा के, न यात्रा के। गरीब देश में विशेष सुविधाओं की निरंतरता मामूली आदमी के साथ एक भयानक षड्यंत्र होती है।

विदेह जी भी चले गये

80 वर्ष की आयु में लगभग 30 वर्ष से अधिक एकाग्र भाव से कल्याणी वेदवाणी का प्रचार करने वाली वह अमृत वाणी अब शान्त हो गई। सबसे पहले मेरी मुलाकात उनसे आर्यसमाज जंगपुरा नई दिल्ली में आज से लगभग 15 साल पहले हुई थी। उन दिनों मैं कलकत्ते में प्राध्यापन करता था और छुट्टियों में दिल्ली प्रवास पर डिफेन्स कालोनी अपने आत्मीयजनों के पास ठहरा था। रविवार के दिन स्वभावतः मैं ढूंढता हुआ आर्यसमाज के सत्संग में पहुंचा तो वहाँ स्वामी विद्यानन्द जी विदेह की दिव्यमूर्ति के दर्शन हुये। उनके सरल, व्यावहारिक वैदिक उपदेशों से मैं प्रभावित हुआ और और घन्टों अलग शंकासमाधान करता रहा। मुझे देखते ही उन्होने कहा कि जिस चक्रवर्ती आर्यसमाज की महर्षि दयानन्द ने कल्पना की है वह आपके द्वारा पूरी होगी। यह कहकर उन्होंने इसी विषय पर स्वलिखित एक पुस्तक भेंट की। पहली बार किसी आर्य सन्यासी ने मुझे खुलकर राजनीति में आने की प्रेरणा दी—यह मेरे लिये आश्चर्य एवं प्रसन्नता का विषय था।

उसके बाद तो मैं कई दिन उनके साथ रहा और कलकत्ते में उनके उपदेश में विशेष भाग लेता रहा। उन दिनों सार्वदेशिक सभा ने उनकी वेदी बंद कर रखी थी पर उनके कार्यक्रमों में लोगों की इतनी अगाध श्रद्धा थी कि श्रोतागण बरबस खिंचे चले आते थे। उनकी वाणी में एक अद्भुत मिठास था। अभी जनवरी के अन्तिम सप्ताह में करनाल के डा. जे. के. पसरीचा जी के निवास स्थान पर उनका प्रवचन सुनने का सौभाग्य मिला। प्रवचन के बाद रात्रि $10\frac{1}{2}$ बजे तक वे आर्यसमाज के संगठन आदि के बारे में बड़े व्याकुल हृदय से मुझसे अलग चर्चा करते रहे।

एक साधरण पुलिस कर्मचारी के पद से अपने अनथक स्वाध्याय एवं साधना के बल पर वे आर्यजगत के अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के उपदेशक तथा वैदिक भाष्यकार सुशोभित हुये यह हम सभी युवकों के लिये विशेष प्रेरणा की बात है। अन्तिम समय सहारनपुर मे वैदिक मंत्र की व्याख्या करते हुये उन्होंने अपना नश्वर शरीर छोड़ दिया—इस अकेली घटना से उनके सारे जीवन का सौंदर्य निखर कर सामने आ जाता है।

परमात्मा ऐसी दिव्यात्मा को सद्गति प्रदान करे और हमें उनके मिशन को आगे बढ़ाने की प्रेरणा दे—शक्ति दे!

अग्निवेश

मराठवाड़ा आर्य युवक परिषद के मन्त्री भाई प्रदीप देशमुख ने मराठवाड़ा आर्य युवक परिषद की तरफ से मुझे राज्य सभा में जाने की मांग की है। मैं उनके प्रस्ताव और अपना उत्तर पाठकों की सेवा में प्रेषित कर रहा हूं।

मराठवाड़ा के आर्य युवकों की मांग :

स्वामी अग्निवेश जी आर्य समाज और युवक परिषद के एक राष्ट्रीय स्तर के नेता हैं। अपने क्रांतिकारी विचारों से आपने सारे राष्ट्र के युवकों को किसान मजदूर तथा दलित समाज को आर्य समाज के वैदिक समाजवाद की ओर आकर्षित किया है। राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्र में स्वामी अग्निवेश जी के क्रान्तिकारी विचारों का राज्य सभा जैसे राष्ट्रीय सांसदीय मंच पर ऊच्चारण होने से राष्ट्र के सभी लोगों को उन विचारों का परिचय होगा और उसके ऊपर बहस होकर उन विचारों की यथार्थता सिद्ध होगी। इसलिये स्वामी जी की संसद में जाने की सक्त जरूरत है।

पिछले लोकसभा चुनाव में ही स्वामी जी संसद में जा सकते थे। मगर लोकनायक जयप्रकाश नारायण जी के कहने पर अपनी उम्मीदवार वापिस ले कर आपने जनता उम्मीदवार का समर्थन किया और अपनी उदारता का परिचय दिया। इतना ही नहीं राष्ट्र की मांग को ध्यान में रखते हुये जनता पार्टी में आर्य सभा को विलीन करके नये राजनैतिक परिवर्तन का स्वागत और समर्थन किया।

इसलिये अब जनता पार्टी के राष्ट्रीय और हरियाण राज्य के नेताओं का यह कर्तव्य है कि वे स्वयं स्वामी अग्निवेश जी को राज्य सभा के लिये मनोनीत करे। स्वामी जी का नेतृत्व जनता पार्टी को भी एक वरदान सिद्ध होगा।

पंजाब के आर्य समाजी कार्यकर्ताओं से आर्य युवकों से भी मेरी अपील है कि वे स्वामी अग्निवेश जी को राज्यसभा में भेजने के लिये जनता पार्टी के राज्य व राष्ट्रीय नेताओं से आग्रह करे।

उत्तर :

11-3-78

आदरणीय भाई प्रदीप जी,

5 मार्च का लिखा आपका पत्र मिला। आप और अन्य सभी साथी मुझे राज्य सभा में भेजना चाहते हैं, यह आप सब लोगों की बड़ी उदारता है जिस भावना से प्रेरित होकर आपने यह लिखा है, उसका मैं बहुत आदर करता हूं। लेकिन मेरे कुछ ऐसे अनुभव हैं कि संसद में पहुंचने वाला व्यक्ति ऊपर का ऊपर रह जाता है, नीचे की समस्याओं और विशेष कर के सरकारी तन्त्र प्रक्रियाओं से वह अवगत नहीं हो पाता। हमारी बड़ी बड़ी योजनायें एस. डी. ओ., बी. डी. ओ., पटवारी, तहसीलदार और थानेदार तथा ग्राम पंचायत के स्तर पर आकर लागू होने से रह जाती हैं। विधायक बनने के बाद मुझे ऐसी बहुत सी व्यावहारिक कठिनाईयों का पता चला है, जिसे कि ऊपर ही ऊपर ही देश के स्तर पर व्याख्यान देते हुये कभी नहीं जान सकता था। बल्कि मेरी तो अब धारणा यह बन रही है कि हर विधायक के लिये पहले गांवों का सरपंच होना और हर सांसद के लिये पहले विधान सभा का सदस्य होना बहुत लाभकारी है। इसलिये फिलहाल मेरी संसद में जाने की कोई इच्छा नहीं है। लेकिन क्रांति की जिस भावना से तरंगित होकर हमने राजनीति के क्षेत्र में प्रवेश किया था उसके अनुसार हमें अपने नेताओं से कोई कार्यक्रम नहीं मिल पा रहा है। इसलिये मन में दुबारा एक खोज शुरू हो रही है अपने आपको सही क्रांतिकारी शक्तियों के साथ जोड़ने की।

एक विचार बल पकड़ता जा रहा है कि शासन तन्त्र के माध्यम से क्रांति नहीं आ सकती। यह तो जब भी आयेगी समाज में एक व्यापक अहिंसात्मक किन्तु उग्र आन्दोलन के माध्यम से ही आयेगी। जिस व्यवस्था को हम तोड़ना चाहते हैं उस व्यवस्था की रक्षा का दायित्व अपने ऊपर लेना हमारे लिये घातक सिद्ध होगा। आने वाले साल में देश में एक नये जन आन्दोलन की भूमिका बनते हुये दिखाई पड़ रही है।

आप अपनी परीक्षा से मुक्त होकर गांवों में भूमिहीन किसानों मजदूरों आदि के संगठन में उनकी समस्याओं को समझने में कुछ समय लगायें। इधर जून में हम गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में 10-15 दिन का एक विशाल शिविर का आयोजन करेंगे, यदि सम्भव हो तो उसमें भाग लेने के लिए आयें। जुलाई में यदि मराठवाड़ा की तरफ कोई शिविर रखा गया तो मैं आने का प्रयास करूंगा, मेरे मार्ग व्यय आदि की चिन्ता आपको नहीं होने दूंगा। सभी साथियों के प्रति हार्दिक शुभकामनायें।

—अग्निवेश

पंजीयन क्रमांक

एन० डब्लू/सी० एच० ६६

इसी प्रकार का एक और पत्र आर्य युवक परिषद धोलेड़ा नांगल चौधरी जिला महेन्द्रगढ़ के मन्त्री भाई हनुमानसिंह जी, बी. ए. बी. एड. का प्राप्त हुआ : "हम नांगल चौधरी क्षेत्र में वेद प्रचार मण्डल की स्थापना करना चाहते हैं। यदि आप समय दे सकें तो आप, नहीं तो स्वामी इन्द्रवेश जी को किसी दिन भेज दें। महेन्द्रगढ़ जिले में आर्य समाज का कार्य बिल्कुल नहीं हो रहा है। यदि स्वामी इन्द्रवेश जी 4-5 दिन का समय दे दें तो बड़ा अच्छा हो। सारे जिले में वेद प्रचार मण्डलों की स्थापना हो जाये, तथा नारनौल जिला सम्मेलन भी हो जाये। यहाँ की आर्य जनता बिना प्रचार के उदास हो रही है। संगठन से सम्पर्क का एक ही साधन है "राजधर्म" परन्तु राजधर्म भी नियमित नहीं है अत: काफी समय तक संगठन सम्बन्धी कोई सूचना नहीं मिलती जिससे जनता निरुत्साहित हो रही है। समय रहते सम्भाल न ली गई तो डर है कहीं यहां की आर्य जनता भी विरोधी धड़े की तरफ न झुक जाये अत: आपसे प्रार्थना है कि 4-5 दिन का समय लगा कर फिर से यहां के संगठनों को तेज किया जाये।"

इस पत्र का उत्तर :

आदरणीय भाई हनुमान जी, नांगल चौधरी और नारनौल के इस इलाके से लेकर अलवर बहरोड़ तक के सारे क्षेत्र से मेरा बहुत अधिक लगाव है। मेरी तो पहली योजना नारनौल को ही केन्द्र बनाने की थी किन्तु अब लगभग सालभर होने जा रहा है उधर जा ही नहीं पा रहा हूँ। आपकी शिकायत और मांग उचित ही है। श्रद्धेय स्वामी इन्द्रवेश जी रोहतक के पास दयानन्द साधु आश्रम की स्थापना करके 500 संन्यासियों, वानप्रस्थियों का एक विशाल केन्द्र बनाने जा रहे हैं। इस महत्त्वपूर्ण काम से जो उन्हें सुविधा होगी नारनौल की तरफ भी अपना समय अवश्य देंगे। गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में स्वामी शक्तिवेश जी राष्ट्रीय स्तर पर युवकों के प्रशिक्षण का एक मजबूत केन्द्र निर्माण कर रहे हैं। वहां हर महीने की पहली से दस तारीख तक युवक प्रशिक्षण का कार्य चलता है। आप में से जिन युवकों में से सुविधा हो इससे लाभ उठायें। मैं यहां चण्डीगढ़ शिक्षा बोर्ड के माध्यम से पाठ्यक्रम आदि में आवश्यक सुधार का प्रयास कर रहा हूँ। राजधर्म भी नियमित निकलता रहे, कुछ नया साहित्य हम प्राप्त कर सकें इस दिशा में प्रयत्नशील हूँ। आप लोग अपने ढंग से युवकों का संगठन का विस्तार करते चलें और इलाके के एक-२ गाँव में आर्य युवक परिषद का गठन कर सामाजिक क्रान्ति की मशाल जलाये रखें। इसके अनुसार यदि कोई कार्यक्रम आपने शुरू कर रखा हो तो उसकी सूचना राजधर्म में अन्य पाठकों के लाभ के लिये अवश्य भेजें।

हार्दिक शुभकामनाओं के साथ।

—अग्निवेश

"महर्षि दयानन्द साधु आश्रम का वार्षिक महोत्सव"

17, 18 व 19 मार्च को गुरुकुल सिंहपुरा सुन्दरपुर रोहतक में महर्षि दयानन्द साधु आश्रम के पहले वार्षिक महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है। साधु आश्रम में युवा सन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व में, नैष्ठिक ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों व साधुओं को 6 माह की ट्रेनिंग दी जायेगी। इस ट्रेनिंग में उन्हें, संस्कार करवाना, सन्ध्या, हवन औषधिज्ञान तथा वैदिक भजनादि की शिक्षा दी जायेगी। प्रथम शिविर में लगभग 50 (पचास) सन्यासी, वानप्रस्थियों के रहने आदि की व्यवस्था का पूर्ण प्रबन्ध कर दिया गया है। साधु आश्रम का ध्येय वैदिक विचार धारा का प्रसार तथा प्रचार करना है। आगामी वर्षों में हरयाणा प्रदेश में पांच सौ साधुओं को संगठित रूप से तैयार किया जायेगा। प्रत्येक दस-दस गांवों पर एक-एक साधु को स्थापित कर, वे प्रतिदिन सुबह सांय लाऊड स्वीकार पर सन्ध्या व हवन का आयोजन कर सकें। यह कार्यक्रम समाज में व्याप्त कुरुतियों को दूर करने हेतु एक रचनात्मक एवं ठोस योजना होगी, जो अपने प्रकार का पहला प्रयोग होगा। इससे वैदिक धर्म की विचारधारा का प्रसार होगा व आर्य समाज के संगठन को बहुत व्यापक बल मिलेगा।

सभी इच्छुक महानुभावों से अनुरोध है कि जिसके हृदय में वैदिक धर्म के प्रचार करने की इच्छा हो वे सभी शीघ्रही
मुख्याधिष्ठाता, महर्षि दयानन्द साधु आश्रम गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक से सम्पर्क करें।

राजधर्म प्रकाशन के लिए रोक्साना प्रिंटरज, 83-84 सैक्टर 16-डी, चण्डीगढ़ से स्वामी अग्निवेश द्वारा
कोठी नं० 1, सैक्टर-16-ए चण्डीगढ़ से प्रकाशित एवं मुद्रित।

ओ३म्

राजधर्म

पाक्षिक

राजधर्म फिर आपकी सेवा में

तमिलनाडू की सरकार को बधाई

क्रान्ति की प्रक्रिया और विघ्न

भारत का शिक्षित : पश्चिम का दीक्षित : कितना अशिक्षि

काफिला आगे बढ़ रहा है

युवक क्रान्ति अभियान अमर रहें

सम्भलो ओ ! ताज तख्त वालो !

प्रधान सम्पादक
स्वामी अग्निवेश

★

सम्पादक
जगबीर सिंह

★

१२ अक्टूबर १९७८

वर्ष ६ : अंक १

वार्षिक शुल्क १५ रु०

एक प्रति ७० पैसे

कार्यालय
महर्षि दयानन्द साधु आश्रम
गुरुकुल सिंहपुरा, रोहतक (हर०)

दान की महिमा

ओ३म् । स व्राधतो नहुषो दंसुजूतः शर्धस्तरो नरां गूर्तश्रवाः ।
विसृष्टरातिर्याति बाढसृत्वाविश्वासु पृत्सु सदमिच्छूरः ।। ऋ १।१२२।१०।।

(स:) वह (व्राधितः) उपासक (नहुषः) मनुष्यों के (दसुजूतः) तेज से प्रदीप्त हुआ (शर्धस्तरः) अतिशय बलवान (नराम्) मनुष्यों में (गूर्तश्रवाः) प्रसिद्ध यश वाला (विसृष्टरातिः) खुला दान देने वाला (शूरः) शूर (बाढसृत्वा) प्रबल वेगवान् होकर (विश्वासु) सभी (पृत्सु) युद्धों में (सदम+इत) सदा ही (याति) जाता है। वैदिक धर्म में दान का बहुत माहात्म्य है। दान न देने वाले कंजूस को वेद में अराति कहते हैं। लौकिक संस्कृत में अराति का अर्थ शत्रु है। सचमुच जो दान नहीं देता, वह समाज का शत्रु है। दान यज्ञ का अङ्ग है धर्म का एक स्कन्ध है। जो धर्म का=सामाजिक नियम का उल्लंघन करता है वह सचमुच सामाजिक समता में आघात पहुंचाने के कारण समाज का शत्रु है।

दान के कई सौपान हैं। पीछे एक मन्त्र की व्याख्या में लिख चुके हैं कि धन-दान, तन-दान वाणी दान करने से यज्ञ की सफलता होती है। दान का अर्थ जैसे की बता चुके हैं, अपनी अधिकृत वस्तु पर से अपना अधिकार हटा कर दूसरे का अधिकार स्वीकार करना दान है। मनुष्य सब कुछ दे सकता है, शरीर तक दूसरों के लिए उत्सर्ग कर सकता है, किन्तु अहंकार ममकार त्यागना बहुत कठिन है। अहंकार ममकार त्याग कर जब भक्त अपने आपको भगवान के अर्पण करता है, तब भगवान उस अपने उपासक को अपने तेज से तेजस्वी कर देता है। शास्त्र में उस तेज का नाम 'ब्रह्मवर्चस' है। वेद कहता है, दानी मनुष्य—'व्राधतो नहुषस्य दंसुजूतः' उपासक मनुष्य के तेज से तेजस्वी होता है। अर्थात् निष्काम भाव से दान करने वाला, आत्मसमर्पण करने वाले उपासक के समान तेजस्वी होता है। अतः एव वह शर्धस्तरः बलवत्तर= अत्यन्त बलवान् होता है और 'नरां गूर्तश्रवा'=मनुष्यों में उसकी कीर्ति की चर्चा होती है। ऐसे दानी के लिए वेद में आदेश है कि वह कृणुते सखायम [ऋ० १०।११७/३] विपत्तियों के समय के लिये मित्र बना लेते हैं। दाता को मित्रों की कमी नहीं रहती और अतःएव वह 'विसृष्टरातिर्याति बाढ सृत्वा विश्वासु पृत्सु सदमिच्छूरः' यह दानी शूर महावेगवान् होकर सभी युद्धों में सदा जाता है। अकेला वह ही नहीं, उसके साथी, मित्र सहायक पर्याप्त हैं। अतः वह पूर्ण वेग से संग्रामों में घुस जाता है। जिसने अपना दान दे दिया, उसे तो सबसे महान सखा मिल गया है, उसे तो भय रहा ही नहीं। इस महत्व को समझ कर दान करो। ★

महर्षि दयानन्द साधु आश्रम में

औषध निर्माण के कार्य का शुभारम्भ

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि महर्षि दयानन्द साधु आश्रम में आयुर्वेदिक औषधियों का निर्माण प्रारम्भ हो गया है। प्रथम औषध के रूप में हम शुद्ध च्यवन प्राश का निर्माण कर रहे हैं जो कई विशेष जड़ी बूटियों से युक्त होगा। च्यवनप्राश का शीत ऋतु में सेवन करने से यह शरीर को समस्त व्याधियों से मुक्त रखता है। फेफड़ों व दिल को मजबूत करता है। नजला, जुकाम, श्वास कास रोग जिन्दगी भर निकट नहीं फटकते शरीर को पुष्ट एवं मस्तिष्क को तरो ताजा रखता है, आयु को बढ़ाता है। व्यक्ति को बुढ़ापे से जवानी की ओर ले आता है।

अतः हम सभी स्वास्थ्य प्रेमियों से लम्बी आयु तक सुख भोगने के लिए आग्रह करते हैं कि वे अपने अग्रिम आदेश शीघ्र सुरक्षित करा लेवें। अग्रिम आदेश सुरक्षित कराने वाले को हम 20 रु० किलो के हिसाब से देगें। आप शीघ्र अपने लिखित आदेश भिजवाएं वरना बाद में आप इस औषध को कम कीमत पर प्राप्त नहीं कर सकेंगे.

डा० धर्म वीर आयुर्वेदाचार्य
अध्यक्ष—आश्रम फार्मेसी
पो० गुरुकुल सिंहपुरा
जिला रोहतक

सम्पादकीय

राजधर्म फिर आपकी सेवा मे

पिछले लगभग दस साल से राजधर्म कभी पाक्षिक व कभी साप्ताहिक रूप में आपकी सेवा करता आ रहा है। आपात काल से पहले लगभग डेढ़ महीने तक राजधर्म हरयाणा का एक मात्र दैनिक भी रह चुका है। परन्तु अनेक राजनैतिक सामाजिक उतार-चढाव एवं कठिनाइयों के कारण बीच बीच में यह बन्द भी होता रहा जिससे हमारे ग्राहक एवं पाठकगण बहुत निराश हुए, क्योंकि जो वैचारिक मानसिक खुराक उन्हें राजधर्म के माध्यम से मिलती थी वह बन्द हो जाने से निराश होना स्वाभाविक था। स्थान की दृष्टि से भी राजधर्म रोहतक-चण्डीगढ़-दिल्ली शहरों आदि से निकलता रहा। गतवर्ष विधानसभाओं के चुनाव के बाद जब स्वामी अग्निवेश विधायक चुने गए तो राजधर्म को व्यवस्थित एवं सुचारू रूप से निकालने की दृष्टि से प्रारम्भ किया गया, परन्तु सभी को ज्ञात है कि स्वामी जी राजनैतिक सामाजिक कार्यों में व्यस्त हो गए जिससे राजधर्म आदि का कार्य ठप्प पड़ गया। संगठन के सभी सम्पर्क सूत्र टूट जाने से हमें भी बहुत अधिक कष्ट अनुभव हो रहा था। कार्यालय में निरन्तर पत्र प्राप्त हो रहे थे कि राजधर्म कब प्रकाशित हो रहा है। क्यों बन्द हो गया ? संगठन के प्रचार एवं वैचारिक क्रान्ति की शिथिलता की दृष्टि से भी यह कमी बहुत खटक रही थी। ऐसी परिस्थितयों को देखकर यह निर्णय लिया गया कि राजधर्म को नियमित एवं व्यवस्थित रूप से प्रकाशित करने के लिए महर्षि दयानन्द साधु आश्रम गुरुकुल सिंहपुरा (रोहतक) सबसे उपयोगी स्थान है और इसे यही से प्रकाशित किया जाए। अब राजधर्म फिर आपके हाथों में है। इसे नियमित एवं व्यवस्थित बनाने में जहां हम पूरी शक्ति लगायेंगे वहां आपके भी सक्रिय सहयोग की आवश्यकता है। सबसे पहले तो आप हमें राजधर्म को सुन्दर आकर्षक एवं प्रभावशाली बनाने के लिए अपने अमूल्य सुझाव दें तथा इसके बारे में अपनी प्रतिक्रिया अवश्य लिखें। दूसरे राजधर्म को जन जन तक पहुंचाने के लिए आप कम से कम दस ग्राहक अवश्य ही बनायें और अपने निकट जो भी पुस्तकालय हो उसमें सम्पर्क करके अवश्य मंगावने की व्यवस्था करें। अगर हम इस कार्य में लगन के साथ जुट जायें तो बहुत शीघ्र राजधर्म श्रेष्ठ पत्रिकाओं में स्थान प्राप्त कर सकता है। राजधर्म अपने संगठन का एक जबरदस्त शंखनाद है और इसमें सभी सूचनाएँ एवं कार्यक्रम नियमित छपते रहेंगे। अतः आप इसे अवश्य मंगायें तथा अपना पुनीत सहयोग प्रदान करें।

कुछ अपने बारें में

वैसे तो संगठन के नाते राजधर्म के साथ मेरा प्रारम्भ से ही गहरा सम्बन्ध रहा है और बीच बीच में इसमें सक्रियता से भी कार्य करने का अवसर मुझे मिलता रहा है परन्तु किन्हीं कारणों से वह सम्पर्क निरन्तर नहीं चल सका। और राजधर्म की अनियमितता तथा कठिनाइयों को देखकर मैंने नई साप्ताहिक पत्रिका प्रारम्भ करने का निश्चय किया। परन्तु यह योजना जब स्वामी अग्निवेश जी के सामने रखी तो उन्होंने मेरे मन को बदल दिया और कहा कि आप राजधर्म मे ही अपना समय लगायें तो ज्यादा अच्छा रहेगा। मेरे दिमाग में तब एक बात बैठ गई कि एक संगठन का प्रमुख पत्र है अगर उसे जिन्दा किया जाये तो हजारों कार्य-

कताओं का उत्साह बढ़ेगा ... कि राजधर्म अब नहीं निकल सकता, आशा में बदल जायेंगी। स्वामी अग्निवेश जी व स्वामी इन्द्रवेश जी की अत्यधिक व्यस्तताओं के कारण यह निकल नहीं पा रहा था। अतः ऐसी स्थिति में मैंने यह दृढ़ निश्चय किया है कि अब राजधर्म निरन्तर आपकी सेवा में अवश्य जाता रहे और मैं अपना समय इसमें लगाऊँ। ईश्वर से इस कार्य के लिए शक्ति मिलेगी। आप सबका आशीर्वाद एवं सहयोग प्राप्त होगा तो मेरा विश्वास है कि कुछ ही दिनों के बाद राजधर्म फिर अपनी उसी शिखर पर पहुँच जायेगा। मेरा कोई अधिक लिखने का अनुभव या योग्यता नहीं है न हीं, मैं किसी विषय का विद्वान हूँ, परन्तु कार्य करने की दिल में एक तड़प है। उसी के बल पर तथा मेरे आदरणीय विद्वानों एवं लेखकों के सहयोग से मैं राजधर्म को आप तक पहुँचाने का प्रयास करूंगा। अतः मेरा नम्र निवेदन है सभी लेखकों व आर्य समाज के कार्यकर्ताओं से कि वे अपनी रचनाएं व सूचनाए भेजकर राजधर्म हेतु सामग्री जुटाने में सहयोग करें तथा उत्साह बढ़ायें।

—जगवीरसिंह

संभलो ओ ! ताज-तख्त वालो !

★ नीरज

छिपते जाते हैं सूरज, चांद सितारे सब
मुरदा मिट्टी अम्बर पर चढ़ती जाती है
हो सावधान ! संभलो ओ ! ताज तख्त वालो।
भूखी धरती अब भूख मिटाने आती है।।

कंकालों की जुड़ रही भीड़ चोराहे पर
फिर से बनने वाला है कोई वज्रबान,
बिक रहे प्राण, बिक रहे शीश बिक रही मौत,
फिर से जगने को हैं सोये मरघट मसान
हर ओर मची है होली खून पसीने की,
हर ओर अगारों की खेती लहराती है।

हो सावधान ! संभलो ओ ! ताज तख्त वालो।
भूखी धरती अब भूख मिटाने आती है।।

है कांप रही मन्दिर मस्जिद की मीनारें
गीता कुरान के अर्थ बदलते जाते हैं,
ढहते जाते हैं दुर्ग द्वार मकबरे महल
तख्तों पर इस्पाती बादल मंडराते हैं,
अंगड़ाई लेकर जाग रहा इन्सान नया
जिन्दगी कब्र पर बैठी बीन बजाती है।

हो सावधान ! संभलो ओ ! ताज तख्त वालो।
भूखी धरती अब भूख मिटाने आती है।।

मासूम लहू की गंगा में आ रही बाढ
नादिरशाही सिंहासन डूबा जाता है,
गल रही बर्फ सी डालर की काली कोठी,
एटम को भूखा पेट चबाए जाता है,
निकला है नभ पर नये सवेरे का सूरज
हर किरण नई दुलहिन सी सेज सजाती है।

हो सावधान ! संभलो ओ ! ताज तख्त वालो।
भूखी धरती अब भूख मिटाने आती है।

पड़ रही समय की भौंहों में सलवटें भिन्न
विन्ध्याचल करवट शिघ्र बदलने वाला है,
उठने वालों है आग समुन्दर के दिल से,
हिमवान किसी का खून उगलने वाला है,
हर एक हवा का रूख कुछ बदला बदला है,
हर एक फिजाँ में गरमी सी दिखलाती है।

हो सावधान ! संभलो ओ ! ताज तख्त वालो।
भूखी धरती अब भूख मिटाने आती है।

तुम कफन चुराकर जा बैठे महलों में,
देखो ! गाँधी की अर्थी नंगी जाती है,
इस राम राज्य के सुधर रेशमी दामन में,
देखो सीता की लाज उतारी जाती है,
मानवता के कातिलो ! मगर यह याद रहे,
कातिल की तलवार उसे खा जाती है।

हो सावधान ! संभलो ओ ! ताज-तख्त वालो।
भूखी धरती अब भूख मिटाने आती है।।

सामयिकी

आर्य समाजियों चेतो

—जगवीरसिंह

आर्य समाज के पिछले पचास साल के इतिहास पर दृष्टिपात करने से मालूम होता है कि जहां भी पाखण्ड अन्ध विश्वास एवं शोषण के अड्डे होते थे वहीं आर्य समाज के मिशनरी प्रचारक जाकर अपना मोर्चा लगाते थे और शास्त्रार्थ करके पाखण्ड के गढ़ तोड़ कर लोगों को वैदिक धर्म में दीक्षित करते थे। परन्तु शनैः शनैः मिशनरी प्रचारकों की श्रृंखला होती चली गई और उसका परिणाम यह हुआ कि आज उपदेशकों एवं भजनीकों का अभाव खटक रहा है जिसके कारण आर्य समाज की गूंज धीमी पड़ती जा रही है। आर्य समाज का एक वर्ग जो वर्तमान संगठन पर हावी है वह तो प्रचार से दूर अपने व्यापार के लिए समाज का उपयोग करता है परन्तु जिन के उपर यह आशा है कि दयानन्द का काम इनके द्वारा पूरा होगा उन्होंने भी प्रचार तन्त्र फीका कर दिया तथा और ही धन्धों में उलझ गए। अभी हाल ही में कुरुक्षेत्र जिले में फल्गू का मेला देखने का मुझे मौका मिला। लाखों की संख्या में लोग श्राद्ध तर्पण करने वहां पहुंचे हुए थे। अनेक सम्प्रदायों के लोग अपने विशाल प्रचार कैम्प लगाकर जनता को अपने अपने विचार दे रहे थे। कहीं साधु, सन्यासियों के लिए भण्डारे चल रहे थे। कोई अपने स्वयंसेवकों को मेले की व्यवस्था में जुटा कर जनता की भावना जीतने का प्रयास कर रहा था। परन्तु मन को बेहद दुःख उस समय हुआ जब पूरे मेले में ढूंढ़ने पर भी आर्य समाज का प्रचार कैम्प दिखाई नहीं दिया। मुझे सैकड़ों कार्यकर्ता भी मिले जिन्होंने मेरे से सवाल किया कि अपना पंडाल किधर है परन्तु मेरे पास इसका उत्तर नहीं था। आर्य समाजियो ! क्या यह हमारी जिम्मेदारी नहीं है कि पाखण्ड में फंसी जनता को सही रास्ते पर लाने के लिए हम ऐसे अवसर पर विशाल मोर्चे लगायें और हजारों लोगों के ठहरने व प्रचार सुनने की व्यवस्था करके धूआंधार प्रचार करें और उन्हें अन्धकार से निकालें। परन्तु इस काम को कौन करें। कहां है मिशनरी प्रचारक व उपदेशक ? बेचारे दक्षिणा और मार्ग व्यय की चिन्ता में पड़े हुए हैं। आर्य समाज के पास कोई ऐसी व्यवस्था नहीं दीखती जो हजारों प्रचारकों को जन जागरण, जन सेवा और वेद प्रचार में जुटा सके। उधर पाखन्डी और धूर्त कहलाने वाले लाखों रुपया खर्च करके अपने प्रचारक भेजते हैं और लोगों की सेवा में समय लगाते हैं। आज यह आर्य समाज के लिए जागने का समय है। देश परिवर्तन के कगार पर खड़ा है। लहरें उठ रही हैं। हमें एक योजना बनाकर हजारों मिशनरी उपदेशक तैयार करने चाहिएं जो जनता की सेवा के साथ वैदिक सिद्धांतों का प्रचार भी तेजी के साथ करें। इस मेले के सन्दर्भ में मैं बधाई देना चाहता हूं श्री रामसरुप निडर को जिन्होंने हमारी प्रार्थना पर रात को प्रचार करने की व्यवस्था की और उसमें स्वामी चन्द्रवेश जी, श्री रामधारी शास्त्री आदि विद्वानों के व्याख्यान हुये। ऐसे ही प्रातः यज्ञ भी किया जिसमें सैकड़ों स्त्री पुरुषों ने पाखण्ड छोड़ने की आहुति देकर प्रतिज्ञा की। स्वामी अग्निवेश जी ने भी मेले की आम प्रसारण व्यवस्था का उपयोग करके दो बार व्याख्यान दिए और मेले में आई लाखों जनता को शराब, दहेज, जातिवाद व पाखण्ड से मुक्त होने की प्रेरणा दी। आशा है आर्य समाज के कर्णधार और कार्यकर्ता मेरी शिकायत पर विचार कर समय रहते चेत जाएंगे वरना इतिहास उन्हें क्षमा नहीं करेगा।

तमिलनाडू की सरकार को बधाई।

अभी-अभी 2 अक्टूबर को गान्धी जयन्ती के उपलक्ष में तमिलनाडू की अन्ना द्रमुक की सरकार ने शराब बन्दी हेतु जो

अध्यादेश जारी किया है वह एक जबरदस्त क्रान्तिकारी कदम है। हमारे दिमागों में एक विचार रहता था कि दक्षिण के लोग तो अधिक शराब पीते होंगे। परन्तु बधाई है वहाँ के मुख्यमन्त्री एम० जी० रामचन्द्रन को जिनकी सरकार ने सारे देश के सामने एक आदर्श प्रस्तुत कर दिया। इस अध्यादेश के द्वारा शराब पीने वाले अवधिकृत शराब बेचने वाले या अवैध शराब बनाने वाले व्यक्ति को कम से कम तीन मास से लेकर आजीवन कारावास तक दण्ड दिया जा सकता है पहली बार पीए हुए जाने पर तीन मास की सजा और एक हजार रुपया जुर्माना होगा। इसके साथ ही तीन साल की सजा वाले व्यक्ति की जमानत नहीं होगी। सरकारी कर्मचारियों पर भी यह नियम लागू होगा। और उन्हें दुगनी सजा मिलेगी। ऐसे मुकद्दमों की सुनवाई विशेष अदालत में ही होगी। सारकर अफसरों से इस कानून का कठोरता से पालन करवाएगी तो निश्चय ही शराबबन्दी में भारी प्रगति होगी और गरीब जनता को इस जहर से छुटकारा मिलेगा। क्या अन्य प्रान्तों की सरकारें तमिलनाडू की सरकार से मार्ग दर्शन लेकर इस तरह के कठोर दण्ड की व्यवस्था युक्त कानून बनाकर शराबबन्दी के इस महान यज्ञ को सफल बनाने करेंगी। अगर सारे देश में शराबखोरी को मिटाना है तो कठोर दण्ड व्यवस्था करनी होगी। और उस कानून का पालन करवाने के लिए अफसरों पर कड़ी निगरानी रखनी होगी।

राव साहब की खायत खत :—

गत २३ सितम्बर १९७८ को रिवाड़ी में आयोजित शहीद रावतुलाराम स्मृति सम्मेलन में राव वीरेन्द्र सिंह जी ने श्रीमती इन्दिरा गान्धी को आमन्त्रित किया। इसकी सूचना समाचार पत्रों में दस दिन पहले ही छप गई थी। राजनैतिक पत्रों में इन्दिरा जी के इस आगमन का अर्थ यह लगाया गया कि उस दिन राव तुलाराम को श्रद्धा भेंट करने आए हजारों लोगों की भीड़ में राव साहब इन्दिरा को यह दिखाने का प्रयास करेंगे की उनकी विशाल हरयाणा पार्टी कितनी लोकप्रिय है। और इन्दिरा जी को प्रभावित करके इन्दिरा कांग्रेस में विलय के नाम पर अपने लिए उच्च-स्थान सुरक्षित करा लेंगे। जब यह अन्दाजे अखबारों में भी छपे तो शहीद सम्मेलन से तीन दिन पहले राव साहब ने इस विचार का जोरदार शब्दों में खण्डन किया और कहा कि उनका इन्दिरा कांग्रेस में जाने और विशाल हरयाणा पार्टी के विलय का सवाल ही नहीं पैदा होता। परन्तु धन्य है नकाबपोश राव साहब। आप भी लोगों की आंखों में खुब धूल झोंकते रहे। पर लोग बड़े जागरूक हैं अब वह आपके चक्र में नहीं आ सकते। 23 सितम्बर के सम्मेलन में राव साहब के नकली चेहरे का नकाब उतर गया और असली चेहरा जनता के सामने आगया। उन्होंने दस माल पुरानी विशाल हरयाणा पार्टी और अपने चन्द एजेन्टों सहित स्वयं को इन्दिरा देवी के चरणों में डाल दिया और प्रार्थना की कि हे देवी, मेरा उद्धार करो। वास्तविकता यह है कि राव साहब पिछले दस साल से विशाल हरयाणा पार्टी के नाम से भोली जनता की आंखों में धूल झौंक कर अपनी दुकान चला रहे थे। वास्ताव में ये वह कांग्रेसी थे, नीचे-२ वह कांग्रेस के नेताओं से तालमेल रखते थे। जिसका ज्वलन्त उदाहरण उनके द्वारा लोकसभा का चुनाव कांग्रेस के समर्थन से लड़ना है। पर कुछ भी हो उस समय राव साहब की लोगों के दिलों में कुछ इज्जत थी। परन्तु उनकी इस सारी षड्यन्त्र पूर्ण योजना का क्षेत्र के प्रगतिशील बुद्धिजीवी नौजवानों और जागरूक जनता को अब पूरी तरह ज्ञान हो गया था और नया नेतृत्व राव साहब के मुकाबले पर उभरने लगा था। इसी भय से अब उनके सामने इसके सिवाय कोई चारा नहीं था कि वे अपने को बड़े खेमे में शामिल करके अन्य वर्गों में भी अपना समर्थन पैदा करें। उन्हें एक यह लालच भी है कि आने वाले चुनाव में शायद कांग्रेस आई फिर सत्ता मे आये तो उन्हें ही देवी जी हरयाणा की बागडोर सौंप दे। परन्तु राव साहब। आप दही के भरोसे कपास न खा बैठना यह जनता बहुत समझदार है यह इन्दिरा और बंसीलाल के जुल्मों को अभी भूली नहीं है। और अगर कोई वातावरण सत्ता के आस पास पहुंचने का बन भी गया तो फिर वही जालिम बसीलाल पर्दे के पीछे दाव लगाए बैठा है। और राव साहब आपको तो कांग्रेस आई में शामिल भी तब किया गया है जब इन्दिरा जी को बंसीलाल ने हरी झण्डी दिखा दी और यह विश्वास दिला दिया कि राव को मैं काबू कर लूं गा कोई खतरा नहीं। राव वीरेन्द्रसिंह अब देश की भ्रष्ट और तानाशाही ताकतों के साथ जा मिले हैं। अतः महेन्द्रगढ़ क्षेत्र के उत्साही प्रगतिशील युवकों को चाहिए कि वे तेज़ी से वहां की जनता को संगठित करें और राव वीरेन्द्रसिंह की खायत को मिट्टी में मिला दें तथा नया चरित्रवान नेतृत्व तैयार करें।

ब्रह्मचर्य शिविर—

युवक क्रान्ति अभियान, अमर रहें !

—प्रो० मोहन 'मनीषी'

गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ……एक जाना पहचाना नाम ……स्वामी श्रद्धानंद के संकल्पों का मूर्त्तरूप। प्राकृतिक सुषमा ऐसी कि दिल कहे……रुक जा रे रुक जा यहीं पे कहीं, जो बात इस जगह वो कहीं पे नहीं। पहाड़ियों के बीच, शहर के घुटन भरे वातावरण से दूर गुरुकुल का भव्य भवन अपनी पूर्ण सजधज, सप्राणता और जीवन्तता के साथ ऐसे खड़ा है जैसे अपने विश्वस्त साथियों के मध्य खड़ा मेवाड़ केसरी राणा प्रताप।

21 जून 1978 संध्या पांच बजे वैदिक समाजवाद के प्रणेता युवा संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने ध्वजारोहण के साथ शिविर का उद्घाटन किया। शिविरार्थियों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने देश की विषम परिस्थितियों पर सूत्र रूप से प्रकाश डालते हुए ब्रह्मचारियों को अभाव, अज्ञान और अन्याय जसे विशाल दुर्दान्त अजगर के दांत तोड़ कर उसके चगुल से देश को छुड़ाने की अपील की। स्वामी शक्तिवेश जी जो इस शिविर के परिचालक की भूमिका निभा रहे थे, ने कहा कि बिना त्याग और तपस्या के कोई जाति प्रगति नहीं कर सकती है अतः यदि हम शान के साथ जिन्दा रहना चाहते हैं तो विलासी समाज को संयम का पाठ पढ़ाना होगा।

विभिन्न प्रदेशों हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार से लगभग 135 आर्य सैनिक इन बातों को चातक बनकर स्वाति बिन्दुओं के रूप में ग्रहण कर रहे थे। योग्य शिक्षक चाहते थे दस दिन में हम अधिक से दें डालें और शिविरार्थियों की इच्छा थी कि अगस्त्य के समान हम सारे ज्ञान-समुद्र को आत्मसात कर लें। साधना प्रारंभ हुई। दिन-रात साधना के विभिन्न कालखण्डों में बांट दिए गये।

ब्राह्म मुहूर्त्त…मीठे-मीठे सपनो की गोद में सोये पड़े ब्रह्मचारी चार बजे लम्बी सीटी की आवाज सुनते ही बिस्तर छोड़ देते और एक स्थान पर समूहबद्ध होकर ईशस्तुति के मन्त्रोच्चारणों परान्त पात्र उठाकर शौचादि से निवृत होने के लिए चले जाते। पांच बजे से सात बजे तक आसन, प्राणायाम, दण्ड-बैठक, बाक्सिंग, जिमनास्टिक का सिलसिला नित्य चलता। तत्पश्चात स्नानादि से निवृत्त होकर संध्या और यज्ञ के मंत्रों से सारा वातावरण गूंज उठता और आकाश यज्ञ धूम से आप्लावित। प्रातःरास लेकर कुछ समय श्रम का परिहार करने के लिए विश्राम के पश्चात मस्तिष्क को खुराक देने के लिए विभिन्न विषयों पर 10 से 12 बजे तक बौद्धिक का क्रम चलता।

दिखाई पड़ते कभी 'आर्य समाज और ईश्वर' को मान्यता पर प्रकाश डालते हुए गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के आचार्य वेद प्रकाश, कभी वैदिक समाजवाद का उद्घोष करते हुए स्वामी अग्निवेश और कभी आर्य समाज और दयानन्द के सिद्धान्त पक्ष पर प्रकाश डालते हुए हैदराबाद से पं० वेद भूषण जी और कभी ईश्वर के स्वरूप और उसके व्यावहारिक ज्ञान को स्पष्ट करते हुए गाजियाबाद से प्रा० रत्नसिंह जी। मजे की बात तो यह कि जागरूक शिविरार्थी हर बात को तर्क की कसौटी पर कसकर वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य के सामने रख कर ही किसी बात को स्वीकार करता। किसी भी भाषण को सत्य वचन महाराज कहकर स्वीकार ने की प्रवृत्ति उनमें नहीं देखी गई। विद्वान वक्ता अपना वक्तव्य ज्योंही समाप्त करता था कि प्रश्नों की बौ-

छारों से ढक जाता था। कई बार तो वक्ता बौखला भी उठता था प्रश्नों की तीक्ष्णता और नये पन के कारण।

बारह बजे बौद्धिक समाप्त होता और भोजन की घन्टी बज जाती। साधारण मगर सुस्वादु भोजन पौष्टिक से पौष्टिक भोजन का काम दे रहा था। दो बजे से चार बजे फिर बौद्धिक कभी पं० शोभाराम प्रेमी कभी म० खेमसिंह जी तो कभी पं० चिरञ्जीलाल जी के मधुर भजन स्वस्थ मनोरंजन के साथ-साथ वैचारिक ईंधन का काम कर रहे थे। कभी-कभी तो शिविरार्थी इतने भाव विभोर हो उठते कि साथ-साथ झूम-झूम कर गाने लगते:—

'जिस दिन वैदिक मंत्रों से धरती को सजाया जायेगा।
उस दिन मेरे गीतों का त्यौहार मनाया जायेगा॥'

कहते हैं सपने सच्चे नहीं होते और कल्पना मात्र कल्पना ही रहती है। परन्तु चार-पांच शिविरार्थियों की श्रद्धा-भावना और लगन को देखकर लगा कि कभी कभी स्वप्न भी साकार हो उठते हैं।

"कदम चूम लेती है खुद आके मंजिल,
मुसाफिर अगर आप हिम्मत न हारे।"

चार ब्रह्मचारी स्वामी शक्तिवेश जी के पास आये औपचारिक वार्तालाप के पश्चात स्वामी जी कहा कि जाओ अपना प्रवेश पत्र बनवा लो तो सभी एक स्वर में बोले कि स्वामी जी भोजन शुल्क १५) तो हम नहीं जुटा सके। घरवालों की इच्छा के विरुद्ध मजदूरी करके कुछ पैसे जुटाये थे वे रेल के किराये और ड्रेस बनवाने में लग गए। अर्थाभाव पर मन रो रहा था परन्तु एक कौने में कहीं मुस्कान फूट रही थी धन्य हैं ऐसे नवयुवक।

दो कार्य एक साथ हो रहे थे एक अम्बर में और एक गुरुकुल के पुन्य प्रांगण में। मेघ, तपनी धरती की प्यास बुझा देना चाहते थे, थोडे-थोड़े अन्त राल पर बरसात करके। झुलसती गर्मी शीतलता में बदल गई मगर दूसरी ओर स्वामी अग्निवेश जी अपने क्रांतिकारी विचारों से शिविरार्थियों के हृदयों में आग लग रहे थे। अपने साथी को कमजोर जानकर स्वामी इन्द्रवेश जी भी मैदान में आ डटे। रोटी, कपड़ा, और मकान, अज्ञान अभाव और अन्याय, शिक्षा, न्याय और और चिकित्सा जैसे ज्वलंत प्रश्नों के बीज भूमि में आरोपित हुए और स्वामी इन्द्रवेश जी ने अध्यात्मवाद का जल सींच दिया। कभी शान्ति, कभी क्रान्ति के झूलते ब्रह्मचारी असीम आनन्द का अनुभव कर रहे थे।

दूर कहीं पर 'जो बोले सो अभय, वैदिक धर्म की जय' का स्वर उभरा। जिधर से स्वर आया था सब उधर ही देखने लगे। दिखाई पड़ा पर्वतों में आग लगी हुई है। वह आग धीरे-धीरे ओ३म ध्वज की लपटें थामें गुरुकुल की ओर बढ़ रही थी...... वह कोई और नहीं गुरुकुल सिंहपुरा का साधु मण्डल था।

प्रातः काल की भांति सायं 2 बजे से चार बजे के बौद्धिक क्रम में शिविरार्थियों को अपने विचार व्यक्त करने का अवसर दिया ताकि उनमें भी वक्तृत्व कला का विकास हो सके। चार से पांच फिर एक घण्टा शौचादि से निवृत होने के लिए मिलता। पांच बजे सायं शिविरार्थी पुनः ध्वज के नीचे एकत्रित होते और अपने अपने शिक्षकों के साथ शारीरिक प्रशिक्षण हेतु भिन्न भिन्न स्थानों पर चले जाते। व्यायाम करने से शिविरार्थियों के तन पर विशेष रोनक आ गई थी उन्हें देखकर मुझे जयशंकर प्रसाद की निम्न पंक्तियां बार-बार याद आ रही थी:—

"अवयव की दृढ मांस पेशियां, ऊर्जस्वित था वीर्य अपार स्फोत शिराएँ स्वस्थ रक्त का होता था जिनमें संचार।"

स्वेद-स्नान करके स्नानोपरान्त सध्या करके भोजन के लिए पाकशाला में चले जाते। भोजन करते करते साढ़े आठ बज जाते। तत्पश्चात सभी शिविरार्थी यज्ञशाला के पास एकत्रित हो जाते। भोजन के तुरन्त बाद बैठ जाना स्वास्थ्य-विज्ञान की दृष्टि से उचित नहीं है, इस बात को ध्यान में रखकर सभी समूहबद्ध घूमते हुए सामूहिक गान बोलते। पन्द्रह मिनट तक यही सिलसिला चलता रहता। निम्नोक्त समूह गान इतने अधिक प्रचलित हुए कि हर रोज बड़े जोश के साथ सस्वर गाए जाते:—

(शेष पृष्ठ 16 पर)

क्रान्ति की प्रक्रिया और विघ्न

● डॉ० युगेश्वर

किसी भी क्रान्ति के दो चरण होते हैं—एक, क्रान्तिकारियों द्वारा सत्ता पर कब्जा और दूसरा, सत्ता जमाव को क्रान्ति की इच्छाओं के अनुरूप ढालना। दूसरी प्रक्रिया प्रथम की अपेक्षा महत्वपूर्ण और कठिन है। सामान्यत: क्रान्ति के छः कारण बताए गए हैं :—

(1) शासनतंत्र की अक्षमता, (2) आर्थिक संकट, (3) युद्ध या कोई वैसी स्थिति, (4) भ्रष्टाचार, (5) सामान्य ऊब तथा (6) शासकों द्वारा समय के अनुसार अपने को न बदलना। इनके द्वारा क्रान्ति की स्थितियां पकती हैं, किन्तु इनके साथ श्रेष्ठ नेतृत्व, चुस्त और अनुशासित संगठन तथा क्रान्ति के विचारों की जनता में लोकप्रियता भी क्रान्ति के लिए आवश्यक है। इन सबों से क्रान्ति की इच्छा पूरी होती है। सामान्यत: हम समझते हैं कि क्रान्ति गरीबी और अभाव से पैदा होती है, किन्तु गरीबी और अभाव क्रांति के महत्वपूर्ण तत्व होकर भी ये किसी क्रान्ति को पूरा नहीं करते कभी-कभी तो ये प्रति क्रान्ति और तानाशाही पैदा करते हैं। जाल में फंसा यदि कायदे से प्रक्रियापूर्वक जाल को न काटे तो वह मुक्त होने की अपेक्षा जाल में और भी जकड़ जाता है। इंदिरा गाँधी की सरकार ने 1974-75 की क्रान्ति की सारी स्थितियों का निषेध करते हुए आपात स्थिति लागू कर दी। क्रान्ति का सारा माहौल कुचल दिया गया। स्थिति की ठीक उलटी व्याख्या की गई—(1) देश में शासन के विरुद्ध गहरा व्यापक षडयंत्र था, (2) वातावरण आन्दोलनों और हड़तालों से भर गया था, (3) साम्प्रदायिक भावना उभारी जा रही थी, (4) प्रधान मन्त्री को झूठे आरोपों द्वारा बदनाम किया जा रहा था (5) हिंसा का वातावरण तैयार कर दिया गया था, (6) सामान्य कार्य में बाधा डाली जा रही थी, और (7) कानून और व्यवस्था को बार-बार चुनौती दी जा रही थी। कुछ वर्गों ने उनकी व्याख्या स्वीकार की। सरकार में रहने के कारण इंदिरा गांधी की यह व्याख्या बलात् भी जनता के गले उतारी गई। यह बात स्वीकार करने की जरूरत थी कि 1977 की क्रान्ति के लिए जिस नेतृत्व और संगठन की जरूरत थी उसका देश में सर्वथा अभाव था। श्री जय प्रकाश इस क्रान्ति की शक्ति और सामर्थ्य अवश्य थे किन्तु क्रान्ति पर उनका प्रभाव वाह्य था। वे क्रान्ति के आरम्भ के जन्मदाता न थे। सबसे महत्वपूर्ण बात थी इस क्रान्ति के दलों और व्यक्तियों का आपसी सम्बन्ध।

इस क्रान्ति में इकठ्ठे लोग न केवल एक विचार और एक प्रकार की क्रिया के थे बल्कि उनमें लम्बे अरसे तक साथ काम करने और उसके दुःख-सुख को भोगने की आदत भी न थी। क्योंकि वे प्राय: परस्पर विरोधी लोग थे। कुछ खास स्थितियों ने उन्हें साथ किया किन्तु अब तक यह मि [illegible] दिमाग का मिलन नहीं हो पाया है। यह बिहारीलाल का तपोवन है। जहां दीर्घ गर्मी से कई प्रकार के जीव इकठ्ठा हो गये हैं—

कहलाने एकत बसत अहि मयूर मृग बाघ।
जगत तपोवन सो कियो दीरघ दाघ निदाघ॥

जनता पार्टी और सरकारें ऐसे ही तपोवन में हैं, जहां मोर और सांप पूंछ से जुड़े हैं, जो अकसर एक दूसरे को खा जाने के लिए मुँह-पूँछ पटकते हैं। शासन और प्रशासन ही नहीं जन प्रतिनिधियों का अनुशासन भी ढीला है। ढीला नहीं बिल्कुल खत्म है। एक ही दल के भीतर लोग दुश्मनों का सा आचरण कर रहे हैं। विचारों की भिन्नता का अभाव है। व्यक्तिक लिप्सा की प्रमुखता है। देश के करोड़ों में डर प्रकार का भयानक प्रभाव है। थोड़े

से उनके प्रतिनिधि महत्वाकांक्षाएं बढ़ा रहे हैं। बढ़ी महत्वाकांक्षाओं के लिए शासन और प्रशासन को बेकार बना रहे हैं। राजाओं, नवाबों और सामन्तों की सीमा निर्धारित थी, अतः उनकी महत्वकांक्षा भिन्न ढंग की थी। वे आपस में लड़ते अवश्य थे किन्तु जनता को प्रायः छोड़े रहते थे। उनके आपसी द्वन्द्व का जनता पर देर से प्रभाव पड़ता था किन्तु आज की प्रतिनिधिक प्रणाली में शासन-प्रशासन का द्वन्द्व जनता को तुरत-तुरत और सीधा प्रभावित करता है। अराजकता और तानाशाही में चुनाव की स्थिति कायम की जा रही है। स्वार्थी समुदाय और व्यक्ति लोकतन्त्र के शान्तिमय जीवन को नष्ट कर देने पर तुले हैं। शासन और प्रशासन अच्छे ढंग से चले, सुधरकर चले इसमें दिलचस्पी रखने वालों की संख्या है भी तो बहुत बड़ा समुदाय प्रशासन को समाप्त कर देना चाहता है। इसमें दो प्रकार के लोग हैं—एक जो जनता पार्टी में रहकर अपनी महत्वाकांक्षा को सर्वोपरि मानते हैं। ऐसे ही लोगों में वे लोग हैं जो जनता पार्टी में नहीं हैं किन्तु हैं। दूसरे वे लोग हैं जिन्हें जनता पार्टी ने शासन च्युत किया है। चूंकि जनता पार्टी ने देश को निर्भयता का पाठ पढ़ाया तो लोग निर्भय होने की अपेक्षा दुःसाहसी हो गए हैं। ऐसों में भय कहीं न कहीं व्याप्त है। समय आते ही भय उभर आयेगा। ऐसी स्थिति में जनता सरकार की छवि नहीं बन पा रही है। ऐसे में क्रांति का दूसरा चरण जनता को निराश करता है। भारतीय युवजनों को विरोध की किसी प्रकार की ट्रेनिंग है किन्तु सरकार चलाने की ट्रेनिंग नहीं है। क्रांति से अर्जित सरकारें क्रांति के विचारों को सरकारी माध्यम से कैसे पूरा करें इस ट्रेनिंग का सर्वथा अभाव है। यही स्थिति बहुत कुछ प्रशासन में लगे लोगों की है। जिस बिहार ने समग्र क्रान्ति की शुरुआत और नेतृत्व किया था वह आज बिल्कुल अशान्त है। समता में विश्वास करने वाले दलों और समूहों की कमजोरी रही है कि वे उत्पादन पर जोर न देकर केवल बटवारे पर जोर देते आए हैं। यही हाल आरक्षण का है। आरक्षण ने द्विजों में दुहरा भय पैदा किया है।। एक तरफ बढ़ती हुई बेकारी और दूसरी ओर अपने बच्चों के प्रति बेकारी जन्य आरक्षण की आशंका। सबको काम चाहिए। धन्धे की जरूरत सबको है। सारी सरकारी घोषणाओं के बावजूद काम के क्षेत्र का विस्तार नहीं हो पा रहा है। उत्पादन सम्बन्धी क्रांति का क्षेत्र बन्द है। उत्पादन धैर्य का काम है। अधैर्य से काम और पिछड़ता है। विश्वविद्यालयों की अशांति पूर्ववत है। छात्र सरकार से लड़ने की अपेक्षा कुलपतियों से संघर्ष कर रहे हैं। कुछ सवाल पर जहां सरकार से लड़ते हैं वहां की शिक्षा संस्थाओं का प्रयोग सेना भर्ती के लिए करते हैं शिक्षा संस्थाएं शान्त रहें तो विद्यार्थी नेताओं को लड़ाई के लिए फौज कहां से मिलेगी? इसलिए प्रत्येक सवाल पर विश्वविद्यालयों को अशान्त करते हैं। शिक्षा में परिवर्तन की मांग खतम है। कोई भी सरकार शिक्षा बदलने की स्थिति में नहीं है। असली मुद्दा है लोगों को काम देने का। काम का क्षेत्र बढ़ाने का आन्दोलन होना चाहिए तभी आरक्षण सार्थक होगा।

जो लोग सरकार में हैं उनकी समस्या सरकार चलाने की है। किन्तु जो सरकार के बाहर हैं उनकी क्रांतिकारिता भी सरकार के आस-पास सिमट आयी है। क्रांति के उद्देश्य कैसे पूरे हों इस तरफ गैर-सरकारी स्तर पर प्रयत्न होना चाहिए। अमूमन क्रान्तियां दो वर्ग पैदा करती हैं एक क्रान्ति समर्थक सरकार और दूसरा क्रान्ति विरोधी राजनीतिक दल। क्रान्ति की सरकार इतनी मजबूत होती है कि वह प्रायः अपने विरोधियों को खा जाती है। वह बड़ी मछली का काम करती है किन्तु जहां क्रान्ति शान्तिमय तरीकों से मत परिवर्तन के द्वारा होती है वहां एक तीसरी शक्ति भी होती है। यह तीसरी शक्ति उन लोगों की है जो क्रान्ति चाहते हैं। क्रान्तिकारी शक्ति और सरकार के साथ है, तानाशाही और प्रतिक्रान्ति के विरोधी हैं। ऐसे व्यक्तियों को खुले दिल से क्रान्ति के विचारों को प्रयोग में लाने की कोशिश करनी चाहिए। सर्वोदय आन्दोलन ने इस भूमिका को निभाने का संकल्प लिया था। किन्तु श्री विनोबा भावे में संकल्प-शक्ति का अभाव और सरकारी संत बनने के लोभ ने इस काम को बीच में ही रोक दिया। श्री जयप्रकाश नारायण में इस स्थिति की ऊब स्पष्ट है। यह ध्यान देने लायक बात है कि जैसे-जैसे श्री जयप्रकाश सरकार के विरोध में खुलकर आते गए वैसे-वैसे श्री विनोबा मौन होते गए दो सर्वोदयी नेताओं के ये दो अलग चरित्र है। अगर विनोबा की आपातकाल को अनुशासन पर्व वाली बात को सही मानलें तो स्पष्ट है कि विनोबा सरकारी संत बनने के चक्कर में भयकर क्रूर हो गए थे। लाखों व्यक्तियों की गिरफ्तारी का विरोध तो किया नहीं उल्टे उसका समर्थन किया। तटस्थ और गैर सरकारी समूह का मुख्य झुकाव लोक की ओर होना चाहिए। उदारता प्रायः गृहस्थ धर्म है। महाबोधि संत की अनुदारता प्रसिद्ध है। सर्वोदय आन्दोलन समाप्त प्रायः

है। इस कार्य के लिए अन्य किसी नेता और समूह की प्रतीक्षा है।

गाँव की ओर जाने का नारा क्रांतिकारी अवश्य है। किन्तु अभी देश में मार्क्सवाद और पश्चिमीकरण का मोह गहरा व्याप्त है। ये दोनों मोह कहीं जाकर एक हो जाते हैं। मार्क्सवाद मूलत: सम्पत्ति के सरकारीकरण का पश्चिमी हथियार है। यह पश्चिम के प्रति अन्धानुरक्ति पैदा करता है। मार्क्सवादी प्रभाव गोरों में ही मालिक का चुनाव करता है। वह अपनी स्वतन्त्र सत्ता का विकास नहीं करता। आजकल योरोकम्युनिजम की चर्चा है। फ्रांस, इटली और स्पेन अपने ढंग से कम्युनिज्म का विकास करना चाहते हैं। इसकी दाद दी जा रही है। किन्तु एशिया में ऐसी स्थिति नहीं है। गांव, कुटीर उद्योग, देशीकरण तकनीकी, सीमा का सवाल, भाषा, सांस्कृतिक, आध्यात्मिक आदि सवालों पर मार्क्सवादी चिन्तन पश्चिमी देशों के साथ है। मार्क्सवादी पश्चिमी औद्योगिक क्रांति और प्रसार का हिस्सेदार है। बहुत दूर तक वह रंगीन मुल्कों में पश्चिमी साम्राज्यवाद का भी समर्थक रहा है। क्योंकि उसकी दृष्टि में इससे रंगीन मुल्कों के विकास का रास्ता खुला है। यह इसलिए हुआ कि मार्क्सवादी चिन्तन ने दुनियां के विकास का योरुप माडल स्वीकारा। उसे ही सारी दुनियां पर थोपना चाहा है। इस दृष्टि से मुक्ति का मार्क्सवादी नारा अमरीका के मुक्ति नारे के समान ही खोखला है। मार्क्सवाद ने कहीं भी मुक्ति और स्वतन्त्रता के स्वत: स्फूर्त और आत्मचैतन्य प्रणाली को प्रोत्साहित नहीं किया। मार्क्सवाद स्वयं मे केन्द्रो योरुपी विचारधारा है। उसकी दृष्टि में किसी राष्ट्र की स्वचेतना और आत्म-अन्वेषण की पद्धति प्रतिक्रियावादी और पूंजीवादी है। मार्क्सवाद से अलग जो है वह प्रतिगामी है। योरुप विकास की अन्तिम मंजिल है और मार्क्सवाद उस मंजिल की अन्तिम विचारधारा। ऐसी स्थिति में भारत की क्रांति को बहुत सावधान रहना होगा। भारत के नेताओं ने स्वयं अपनी राय बनाई है। गांधी एक पूर्ण समाज द्रष्टा थे। उनकी चिन्तन प्रणाली में नवीन मानव सभ्यता के उदय की परिकल्पना मार्क्स की अपेक्षा गहरी है। मार्क्सवाद सामाजिक प्रक्रिया को बदलने की बात करता है, किन्तु उस प्रक्रिया में मनुष्य के स्व का बिलकुल तिरस्कार है। जबकि गांधी मानव केन्द्री सभ्यता का विकास करना चाहते हैं: इसलिये वे समाज के साथ व्यक्ति को बदलना चाहते हैं। मार्क्सवादी तरीके से राज की पूंजीवाद का विकास होता है। गांधीवादी तरीके से आत्मनिर्भर मानव समाज का विकास होता है। मार्क्स का व्यक्ति समाज रूपी विशाल यंत्र का चमकदार पुर्जा है। गांधी का मानव विवेकशील आत्मनिर्भर स्वतन्त्र प्रणाली है।

भारत में परिवर्तन और क्रान्ति की मार्क्सवादी व्याख्या गलत है। इस देश की प्रगति के अवरोध का एक कारण समाज की मार्क्सवादी व्याख्या भी है। इसे शीघ्र छोड़ना होगा। लोहिया ने रंगीन मुल्कों के सन्दर्भ में मार्क्स की निरर्थकता को बहुत पहले समझ लिया था। उन्होंने स्पष्ट देखा कि आर्थिक दृष्टि से अत्यन्त पिछड़े देशों में साम्राज्यवादी शोषण के साथ ही पूंजीपति का शोषण है। किन्तु सर्वहारा और मजदूर के नाम पर एक वर्ग खड़ा हो गया है। इस वर्ग का जन्मदाता आधुनिक पूंजीवाद, साम्राज्यवाद और समाजवाद है। समाजवाद मात्र शहरी सफेद पोश संगठित मजदूर का हिमायती है। उसने अपना एक ऐसा वर्ग बना लिया है जो केवल अपनी सुविधाओं के लिए संघर्ष करता है। उसे देश के दूसरे पीड़ित वर्गों से कोई मतलब नहीं। इसीलिये लोहिया ने नित्य मजदूरी बढ़ाने की अपेक्षा दाम बांधो पर जोर दिया। बंधे दामों से सभी वर्गों का लाभ है। वे चाहे संगठित हों असंगठित हों, किसान हों या मजदूर हों। जनता पार्टी के विचारों और कार्यक्रमों में अभी निश्चित समाजदर्शन विकसित नहीं हुआ है। विचारों और समाज दर्शन का घटकवाद अधिक खतरनाक है। कहने के लिये जनता पार्टी का दर्शन गांधीवादी है किन्तु अभी तक गांधी दर्शन को सम्पूर्ण आवेग में ग्रहण करना कठिन हो रहा है। क्रान्ति की पूर्ति के लिए चरित्र, इच्छा और विचार दर्शन तीनों की जरूरत है।

ooo

भारत का शिक्षित : पश्चिम का दीक्षित : कितना अशिक्षित !

※ योगेश अटल

भारत का शिक्षित जो पश्चिम में दीक्षित हुआ है वह एक विशेष किस्म का प्राणी है। सचमुच उस के सुरखाब के पंख लगे हैं। वह पूज्य है, प्रतिष्ठित है, मंहगा है, माननीय है। उस के चिन्तन में पश्चिम की गन्ध है, उस का व्यवहार विदेशी है, और वह अपनी धरती पर भी पराया है। वह पश्चिम पर आसक्त है, वहां की माया पर मुग्ध है, यहां के अभाव उसे खलते हैं, इस सापेक्षिक अप्रवंचन से वह क्षुब्ध है।

राजनीतिक दल भारतीयकरण की बात करने लगे हैं। सत्तारूढ़ दल के अध्यक्ष शासनतन्त्र की अप्रतिबद्धता से बड़े रूष्ट हैं। प्रधानमन्त्री भारतीय विज्ञान कांग्रेस में वैज्ञानिकों को भारतीय संदर्भ में सोचने के लिए आह्वान करते हैं; अपने दीक्षान्त-भाषण में शिक्षा प्रणाली में आधारभूत परिवर्तन की आवश्यकता पर बल देते हैं। नया नारा यह है—भारतीय समस्याओं का भारतीय समाधान। पश्चिमी तन्त्र में जकड़ा भारतीय मानस राजनीतिक मुक्ति के 25 वर्ष बाद अब छटपटाने लगा है।

विदेशी सत्ताओं के होने वाले अनवरत आक्रमणों ने देश के कई बन्द गवाक्ष खोले। उपनिवेशवादी अंग्रेजों ने तो अपने प्रभावों से भारत के जनमानस को पूरी तरह अवगाहित करने के लिए दो देशों के बीच की दीवार को तोड़ कर आवागमन के लिए बड़ा-सा राजपथ ही तैयार कर दिया था। अंग्रेजों से पहले जो आक्रान्ता बन कर इस देश में आए वे कालान्तर में यहीं घुल-मिल गए, उनकी संस्कृतियां भारत की संस्कृति की मूल धारा में समा कर उसे 'विविध भारती' बना गई। पर अंग्रेज न घुले, न मिले। बहुत अधिक अंशों में वे यहां के लोगों को यहां से विमुख कराने में समर्थ सिद्ध हुए। भारत में पाश्चात्यकरण की प्रक्रिया का उन्होंने समारम्भ किया।

पश्चिम का आगमन पूर्व में

अंग्रेजों के आगमन से पूर्व भारत की शिक्षा-पद्धति भारतीय थी। विषय वस्तु और पठन-पाठन का ढंग प्राची विशिष्टता लिए हुआ था। उस पद्धति से दीक्षित व्यक्ति के लिए भारत ही 'विश्व' था। उसकी दृष्टि का विस्तार उसकी संस्कृति की परिधि तक ही था। निरक्षरता के प्रकोप से ग्रसित इस देश का बहुत छोटा-सा भाग ही परम्परा में साक्षर होता था और उस का ध्येय परम्परा का निर्वाह ही रहता था। अपने शासन की जड़ें जमाने के उद्देश्य से प्रेरित अंग्रेजी हुकूमत ने शिक्षा की प्रणाली में आमूल परिवर्तन की आवश्यकता अनुभव की और मैकाले की विशाल योजना कार्यान्वित की गई—रंग में काले, पर व्यवहार और चाल-चलन में गोरे बन्धुओं के निर्माण के लिए स्कूलों और कालेजों के रूप में कारखाने खोले गए। पढ़ा-लिखा भारतीय बाबू हुकूमत के नीचे स्तरों पर काम करने वाला एक पुर्जा बना। जो पुर्जा मशीन में ठीक नहीं बैठा, उसे कूड़े-करकट में फेंक दिया गया। जिस पुर्जे ने मशीन बदलनी चाही। उस पुर्जे को मशीन ने कुचलना शुरू किया। नई प्रणाली से शिक्षा प्राप्त करने वालों की जमात की संख्या में वृद्धि होती गई। किताब और कक्षा के माध्यम से 'पश्चिम' भारत में आया। पुरानी शिक्षा प्रणाली के लिए सचमुच यह सूर्यास्त का काल था।

भारत में जब अन्धेरा हो तो स्वाभाविक है कि जीरो डिग्री देशान्तर पर लोगों को सुबह की सुहानी किरणें दीखें। पाश्चात्य शिक्षा ने यह सिद्ध कर दिया कि भारत में अन्धकार है और लोगों को उस गवाक्ष का मुह दिखाया जिधर सूर्योदय हो रहा था। इतना ही नहीं, इस बात पर बल दिया गया कि ब्रिटिश-शासन ही ऐसा है जिसमें सूरज कभी डूबता ही नहीं। हम में से कई, स्वाभाविक रूप से, अन्धेरे से उजाले की ओर भागे—तमसो मा ज्योतिर्गमय!

पश्चिम हम पर अभिभूत हो चुका था। इस देश के धनी मानी अपने बच्चों को न केवल पढ़ने के लिए 'विलायत'

भेजने लगे, बरन् उन के कपड़े भी वहीं से धुल कर आने लगे। जहां एक ओर परम्परा में बंधे लोग जाति की रीति-नीति की रक्षा के लिए लोगों के विलायत जाने पर आपत्ति करते थे, विलायत पढ़ने जाने वालों के घर वाले इसमें बड़ा गौरव अनुभव करते थे कि उनका लड़का बाहर पढ़ने गया है। इस प्रकार जाने वालों में 'गांधी' कम थे जो शाकाहारी बने रहे, और जिन्हें बालरूम डांस करते समय पांवों में पड़ा अंगद-सी परम्परा ने रोका।

पढ़ने के लिए बाहर जाने वालों में उन घरों के लोग ही थे जो धनी थे, जिनके पास महंगी शिक्षा देने के लिए पर्याप्त साधन थे। परम्पराबद्ध भारत में भी ये धनी मानी लोग शेष समाज से हटे हुए से थे—उन के बीच पैसे की दीवार थी। पश्चिम की पढ़ाई ने उन्हें 'अपटु डेट' बना दिया। कपड़े रहन-सहन, भाषा और उन की आकांक्षाएं सभी ही भिन्न थीं। जो इण्डियन सिविल सर्विस (आई. सी. एस.) में आए उन्हें तो विशेष रूप से लोगों से अलग-थलग रहने और उन पर अंकुश रखने की दिशा में प्रशिक्षण दिया गया। जो शासन की सेवा में नहीं गए वे बैरिस्टर बने।

जहां पाश्चात्य-शिक्षा ने लोगों को जनता से दूर किया, वहां शिक्षितों का यह 'मध्यम वर्ग' अंग्रेजों के समूह में भी ठीक से नहीं मिल सका। अंग्रेज अपनी 'उच्चता' के कायल थे, अपने शासन को मजबूती से जमाने के लिए वे ऊंचे पदों पर 'नेटिव' की नियुक्ति नहीं करते थे। शिक्षा प्राप्त कर लेने पर भी उस के अनुरूप नौकरी न मिलने का खेद एक प्रकार के 'फ्रस्ट्रेशन' में बदला। आंग्ल-साहित्य ने 'लिबर्टी' और 'फ्रेटर्निटी'—जैसे संबोधों से उन का परिचय करा ही दिया था। ये शब्द इस मध्यम-वर्ग के कानों में गूंजने लगे। समकालीन व्यवस्था से क्षुब्ध जो भारतीय अंग्रेजी सरकार की सेवा में नहीं थे उन्होंने 'क्रान्ति' और 'इन्कलाब' के नारे उठाए और भारत के जनमानस को उस शासन से लोहा लेने के लिए तैयार किया। निरक्षर जनता जो क्षेत्रीय राजनीतिक संस्कृति में पली थी, या जो अपने को 'प्रजा' से अधिक नहीं समझती थी, नए नेतृत्व में पश्चिम की खिड़की से बाहर झांक सकी। आजादी के नारे लगे, आन्दोलन हुए, और एक दिन अंग्रेज चले गए।

जिस उद्देश्य से विदेशी-सत्ता ने पाश्चात्य शिक्षा का प्रसार किया, वह मनोरथ सिद्ध नहीं हुआ पश्चिम के मूल्यों ने भारतीयों में जागृति पैदा की और जनतन्त्र के लिए जनमत तैयार हुआ।

स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद के वर्षों में शिक्षा का प्रसार तेजी से हुआ है। लेकिन शिक्षा की प्रणाली बदली नहीं है। अंग्रेजों के जाने के बाद भारतीय शासक ने अपने अपमान और अपवचन का जैसे बदला लेने के लिए ठीक उसी ढंग से व्यवहार करना प्रारम्भ किया जैसा कि विदेशी शासक करते थे।

हम यह जानते हैं कि अतीत कभी दुहराता नहीं, कि अन्य देश की परम्परा ज्यों-की-त्यों इस देश में नहीं जम सकती, फिर भी हम दुस्साहस किए जा रहे हैं।

पश्चिम का मोह अभी भी टूटा नहीं है। पहले कभी जो भी भारत से जाता था, लन्दन याने इंग्लैण्ड याने विलायत जाता था। पढ़-लिख कर वहां का मोहताज हो कर लौटता था। स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद यूरोप से अधिक अमेरिका के चुम्बकों ने आकर्षित किया; पढ़ने के लिए अधिकांश लोग आज अमेरिका जाते हैं, कल वे इंग्लैण्ड जाते थे। इसके कई कारण हैं :

१. स्वतन्त्रता-आन्दोलन के कारण इंग्लैण्ड के प्रति थोड़ा विमोहन-सा हो गया।

२. अमेरिका ने भारत के साथ अपनी इस समानता पर बल दिया कि दोनों ही देश कभी अंग्रेजों के पराधीन थे।

३. ज्ञान और विज्ञान के क्षेत्र में अमेरिका की स्थिति कई दृष्टियों से इंग्लैण्ड से काफी ऊंची है।

४. अध्ययन के लिए अमेरिकी सरकार ने छात्रवृत्तियों और यात्रा अनुदानों की योजनाओं से सुविधाएं भी बहुत अधिक मात्रा में प्रदान की जिसके कारण छोटे घरों के भी अध्ययन-कुशल लड़के-लड़कियां वहां जाने में समर्थ हुए।

कभी कक्षा और किताब के माध्यम से इंग्लैण्ड भारत आया तो अब इन माध्यमों से अमेरिका ने भी प्रवेश किया। भारतीय केम्पस की संस्कृति में यह नया प्रभाव आसानी से देखा जा सकता है।

स्वतन्त्रता-प्राप्ति के बाद की स्थिति थोड़ी भिन्न है। पहले जब बाहर पढ़ने के लिए लोग जाते थे तब भारत में वे

सुविधाएं उपलब्ध नहीं थी। अब इन सुविधाओं के होते हुए भी लोग बाहर जाते हैं। पहले जो जाते थे, वे दीक्षित हो कर लौट आते थे, आज जो जाते हैं उनमें से कई लौट कर नहीं आना चाहते। पहले शायद यह उतना सम्भव नहीं था जितना कि आज है। और आज जब देश को अपने प्रगति-अभियान में सुप्रशिक्षित लोगों की आवश्यकता है, तभी ही प्रतिभा का पलायन एक समस्या बन गया है। पिछले वर्षों में 'ब्रेन-ड्रेन' पर ढेरों रचनाएं प्रकाशित हुई हैं।

प्रतिभा का पलायन

'ब्रेन ड्रेन' अर्थात् प्रतिभा के पलायन पर यहां कुछ कहना आवश्यक है। मैं यह नहीं मानता कि जो भी व्यक्ति पासपोर्ट बना कर विदेश का टिकट कटा लेने में समर्थ होता है वह 'प्रतिभा' सम्पन्न होता है। और यह भी नहीं कहा जा सकता कि जो भी जाकर विदेश में रुक जाता है या बस जाता है, वह भारत-पुत्र धरती मां का गौरव होता है। हरेक बाहर बसने वाला डा० हरगोविन्द खुराना नहीं होता। पारस की खोज में हर पाषाण को नहीं सहेजा जा सकता। ऐसा नहीं है कि यहां का पत्थर वहां जा कर पारस में बदल जाता है। हमारा अपराध यह है कि हम किसी को पारस तब गिनते हैं जब कि वह पराया हो जाता है।

प्रश्न यह है कि यहां से पारस क्यों निर्यात हो जाता है? हमारी शिक्षा-प्रणाली प्रतिभा को क्यों नहीं परख पाती? क्या कारण है कि यहां के विद्यार्थी अपने सन्दर्भ-समूह पश्चिम में खोजते हैं? यहां की शिक्षा-दीक्षा से उन्हें असन्तोष क्यों कर नहीं होता?

आज सब कहने लगे हैं कि शिक्षा-प्रणाली दोषपूर्ण है, फिर क्या कारण यह बात 'कोठारी आयोग' ने कही, छात्र-नेता इसे चिल्ला-चिल्ला कर कहते हैं, अध्यापक इस कथन का समर्थन करते हैं, यहां तक कि प्रधानमन्त्री भी इस की घोषणा कर चुके हैं।

ऐसा नहीं है कि परिवर्तन लाने की दिशा में यत्न नहीं हुए हैं। पर असमंजस इस बात का होता है कि उन परिवर्तनों का भारी विरोध हुआ है। मेरठ का नया विश्वविद्यालय जब खुला तो उपकुलपति ने नई राह अपनाने का प्रयास किया और उसका सर्वाधिक विरोध किया, सम्बन्द्ध कालेजों के प्राध्यापकों ने। वे ही उपकुलपति जब हिमाचल के नए विश्वविद्यालय में नियुक्त हुए तो एक बार फिर विरोध का सामना कर रहे हैं। हम परिवर्तन चाहते हैं, वर्तमान से असन्तुष्ट हैं, पर परिवर्तन का विरोध करते हैं और स्थिति यथावत बनी रहती है।

आवश्यकता इस बात की नहीं है कि परिवर्तन का विरोध करने वालों का विरोध किया जाए। उनकी बुराई में देश की भलाई नहीं है। देखना यह है कि परिवर्तन का विरोध क्यों कर हुआ? इन कारणों की गवेषणा वैज्ञानिक ढंग से होनी चाहिए। कहीं ऐसा तो नहीं है कि पश्चिम की-ही कोई दूसरी प्रणाली उधार ली जा रही है और परिवर्तन के नाम पर थोपी जा रही है। उस की नवीनता, हो सकता है, आरोपित सत्य है। हमें अनुभूत सत्य को स्थापित करना है।

विदेशी 'माडल' को अपनाने की हमारी क्षुधा बड़ी प्रबल है। पर जो भी हम अपनाते हैं वह आडम्बर अधिक होता है; अपनायी गई वस्तु, अथवा संस्था, के निहित मूल्यों की हम अवहेलना करते हैं। पश्चिम में पढ़ा-लिख कर, और वहां नौकरी का अनुभव कर; लौटने वाला व्यक्ति अपने वेश-विलास में तो पूरा अंग्रेज दीखता है पर, उसका व्यवहार सदैव ही वहां के मूल्यों के अनुरूप नहीं होता। स्वयं 'एकेडेमिक फ्रीडम' की दुहाई देने वाला वह व्यक्ति अपने विभाग के अन्य व्यक्तियों की बौद्धिक स्वतन्त्रता का दमन करने का भरसक यत्न करता है। 'श्रम की महत्ता' का सबक, भूल कर वह बड़ी मेज-कुर्सी, टेलीफोन, चपरासी और प्राइवेट सेक्रेटरी के व्यामोह में फंस जाता है और अपने विभाग को जागीर मानने वाला ठाकुर-जमींदार हो जाता है।

नियुक्ति देने वाले लोग भी बाहरी उपाधियों को तरजीह देते हैं। और इस चक्कर में कई बार नियोक्ताओं की आंखों में धूल झोंक कर गलत किस्म के व्यक्ति ऊपर उठ जाते हैं और शिक्षा-व्यवस्था पर कहर ढाते हैं।

ऐसे कई उदाहरण हैं। एक सज्जन संस्कृत के पाठों का उल्था करने अमेरिका के किसी विश्वविद्यालय में एकाध वर्ष

के लिए गए। लौट कर वह उस विश्वविद्यालय के पी-एच. डी. और प्रोफेसर के नाम से अपने को प्रसिद्ध करने में सफल हुए, जोरदार नौकरियां मिलीं, और रहस्य खुलने पर दो बार नौकरियों से उन्हें हाथ भी धोना पड़ा, पर तीसरी बार फिर अन्य स्थान पर प्रोफेसर के पद पर प्रतिष्ठित हो गए।

एक अन्य सज्जन तृतीय श्रेणी में परीक्षाएं उत्तीर्ण करने के अपने दैदीप्यमान रिकार्ड के साथ अपने पिता की पूंजी के आधार पर विदेश जाने में सफल हुए। वहां से कृपा भाजन बन उपाधि ले आए और तब वह अपने विषय के भारत के अन्य सब विद्वानों को अपने से ओछा गिनने लगे। पश्चिम की उपाधि के आधार पर विश्वविद्यालय में नियुक्ति मिली और उन्होंने अपनी तथा अपने श्वसुर से मिली अपार धन-राशि का प्रदर्शन कर अपनी धाक जमाई। ऐसे व्यक्ति के लिए यह आवश्यक नहीं है कि वह शोध-पत्र छापें या कि कक्षाएं पढ़ाएं। व्यक्तिगत तरक्की की सीढ़ी पर चढ़ने के लिए अन्य जो भी प्रक्रम आवश्यक है उन्हें जुटाने में वह संलग्न हैं।

उपरोक्त दो उदाहरण दो व्यक्तियों तक सीमित नहीं हैं। कई ऐसे हैं जो इस वर्णन के उपयुक्त ठहरते हैं।

ऐसे व्यक्तियों की सत्ता और महत्ता निस्सन्देह छात्रों को प्रभावित करती है और सामर्थ्यवान छात्र विदेशों में जाने के लिए लालायित हो उठते हैं। भारतीय करदाता के पैसे से जो शिक्षण-संस्थाएं चलती हैं उनमें ऐसी प्रतिभाएं तैयार होती हैं जो विदेशी विश्वविद्यालयों में जा कर सजती-संवरती हैं। यह बौद्धिक-उपनिवेशवाद का ही प्रतिफल है कि हम बाहर जा कर यह स्वीकार करते हैं कि हमारी शिक्षा उन की शिक्षा से हीन है और हम दीन-भाव से वे जो कुछ भी देते हैं ग्रहण कर लेते हैं।

अपमान का मान

अमेरिका की छात्र-वृत्तियों पर जो लोग यहां से चुने जाते हैं उनके लिए यह आवश्यक होता है कि वे एम. ए. हों, दो वर्ष का उन्हें अध्यापन का अनुभव हो। और उसके बाद कई प्रकार के परीक्षणों, भेंटवार्त्ताओं आदि से सफलता से निकलने के बाद ही विश्वविद्यालय का लेक्चरार छात्र-वृत्ति का पात्र बनता है। पर वह जब अमेरिकी विश्वविद्यालय में पहुंचता है तब दस वर्ष तक अंग्रेजी का प्राध्यापक होने पर उसे अंग्रेजी के ज्ञान का 'टेस्ट' देना पड़ता है और उस का प्रवेश उस की बी. ए. की डिग्री के आधार पर होता है। यह सब अपमान हम इसलिए बर्दाश्त कर लेते हैं कि इससे विदेश जाने को मिलता है और लौट कर हम 'रंगे सियार' हो जाते हैं।

पश्चिम में जो शिक्षा पाते हैं उनमें बहुत से ऐसे हैं जो वहां जा कर फिर नहीं लौटते।

जो जा कर फिर नहीं लौटते उनमें से बहुतों का न लौटना ही शुभ है। वे इस धरती में समवस्थित नहीं हो पाएंगे। अपनी सानफ्रांसिस्को की यात्रा के दौरान मुझे एक भारतीय इंजीनियर से मिलने का मौका मिला। उनकी बड़ी कृपा थी कि उन्होंने मुझे भोजन के लिए अपने घर आमंत्रित किया। मैंने बातों ही बातों में उनसे पूछा कि वह भारत कब लौटने का इरादा रखते हैं? उनका उत्तर मुझे आज भी याद है, "भारत में क्या है? मुझे जो वेतन यहां मिलता है वह भारत के राष्ट्रपति से भी अधिक है।"

मैंने मन-ही-मन उनके कथन को आगे बढ़ाया—"यह बात दूसरी है कि यहां मुझे खुद भोजन बनाना पड़ता है और अपनी तथा अपने अतिथियों की झूठी तश्तरियां खुद अपने हाथ से धोनी पड़ती हैं!"

यह सम्भव है कि मेरे लेख में किसी को यह लगे कि मैं कूप-मण्डूकता की दुहाई दे रहा हूं। मैं उस प्रकार के भारतीयकरण का हामी नहीं हूं जो स्वयं को महान समझ कर सब को तिरस्कार की दृष्टि से देखें, जो इतिहास के गौरव का बखान कर अपने वर्त्तमान से सन्तुष्ट हो। आज के भारत को राम और कृष्ण के युग में पुनः नहीं भेजा जा सकता। हमें देखना आगे की ओर है। न हमें अपने अतीत को देखकर आश्वस्त होना है और न ही हमें पाश्चात्य को अन्ध-अनुकरण का ध्येय बनाना है।

मैं यह भी नहीं मानता कि विषय और विज्ञान देश और काल की मर्यादा में बंधे होते हैं। यह गलत होगा कि हम विज्ञान के कुछ सम्बोधों को केवल इस लिए ठुकरा दें कि वे बाहर कहीं जन्मे हैं। न रसायन-शास्त्र भारतीय हो सकता है, न समाजशास्त्र। इन शास्त्रों के सिद्धान्तों और सम्बोधों को सार्वभौमिक होना पड़ेगा। इसके लिए नया समाज शास्त्र या रसायन-शास्त्र गढ़ने की आवश्यकता नहीं है।

बुद्धि जीवियों की नई पीढ़ी अपने दायित्व से परिचित होने लगी है। उसे अपने आत्म-गौरव का आभास है। और वह पश्चिमी तन्त्र की मन्त्र-सिद्धि के विफल प्रयासों से अवगत है। समानता के धरातल पर भारतीय वैज्ञानिक बाहर के वैज्ञानिकों से मिलने को तैयार है। वह अपने देश के सन्दर्भ में सोचने लगा है।

पर बौद्धिक-दासता की लम्बी परम्परा इतनी आसानी से टूटने वाली नहीं है। उपनिवेशवादी पद्धति से चलाया जाने वाला, पुरानी पीढ़ी के पश्चिम शिक्षितों का शासन-तन्त्र आज भी अनेक बाधाएं उपस्थित करता है। बिना इस तन्त्र को झकझोरे हम भावी पीढ़ी की निराशा को आशा में बदलने में शायद समर्थ न हो सकें।

यह वर्तमान की सब से बड़ी चुनौती है।

मैं चाहता हूं कि इस पर चिन्तन हो, विवाद हो, और कोई रास्ता निकले।

(पृष्ठ 8 का शेषांश)

खिदमते धर्म पर जो कि मर जायगे,
नाम अपना वो दुनियां में कर जायेंगे।
तुम न पूछो कि मर कर किधर जायेंगे,
वो जिधर भेज देगा उधर जायेंगे ।।
करना है निर्माण हमें तो करना है।
आर्य राष्ट्र निर्माण हमें तो करना है ।।

समूहगान समाप्त होते तो सभी शिविरार्थी अपने अपने दलों में बैठ जाते और होता मनोरंजन कार्यक्रम का प्रारम्भ। दिन भर के श्रम से श्रांत-क्लान्त शिविरार्थियों की थकान शिक्षाप्रद चुटकलों, संस्मरणों, गीतों, भजनों और हंसी के ठहाकों से दूर हो जाती। दस बजते बजते यज्ञग्रतैः दूर मुदैती............के मन्त्रों के पश्चात सभी शयन के लिए चले जाते। यही क्रम नित्य चलता। चार बजे प्रातः उठना और दस बजे सो जाना इस बीच कितने क्रमों से गुजरना होता ऊपर कहा जा चुका है।

इसी बीच शिविरार्थियों को स्वामी आदित्यवेश, डा० रामप्रकाश, पत्रकार देवदत्त जी, रमाधार जी आदि महानुभावों को सुनने का अवसर मिला।

दस दिन का यह शिविर बहुत कुछ दे गया, बहुत कुछ कह गया। कुल मिलाकर यह शिविर बहुत ही अच्छा रहा।

फिर भी कुछ कमियां रह जाती हैं। मुझे कुछ त्रुटियां दृष्टिगोचर हुई उनका उल्लेख कर देना भविष्य के लिए कुछ प्रेरणा दे सकता हैं।

1. शिविरार्थियों से श्रमदान नहीं लिया गया। जबकि उनसे सड़क निर्माण, वृक्षारोपण इत्यादि का कार्य लिया जा सकता था, जो गुरुकुल की स्थाई निधि होती।
2. गुकुरुल इन्द्रप्रस्थ में शिविर लग रहा था, परन्तु आस पास के गांवों में कोई चेतना नहीं दीख पड़ी, न ही गुरुकुल की भूमि में काम कर रहे मजदूरों से कोई सम्पर्क किया गया।
3. एक हजार शिविरार्थियों के शिविर में भाग लेने की बात थी परन्तु आशा अपेक्षा से बहुत कम शिविरार्थियों ने भाग लिया।
4. बौद्धिक सुचारु रुप से नहीं चला। वक्तागण पूरी तैयारी के साथ नहीं आये। कई-कई बार तो प्रश्नों की बोछारों पर समुचित उत्तर नहीं मिल पाये।

यदि उपरोक्त त्रुटियों में सुधार कर लिया जाये तो भविष्य में शिविरों के माध्यम से बहुत कुछ किया जा सकता है। एक सुझाव और कि शिविरार्थियों से सम्पर्क सूत्र जोड़े रखना चाहिए। इस प्रकार की लहर यों ही चलती रही तो वह दिन दूर नहीं जब दयानन्द के स्वप्न साकार हो सकेंगे। अपनी ही पंक्तियां—

पावक की लहरों में पड़कर सोना कुन्दन बन जाता है,
भाव शुद्ध हो तो धागा भी रक्षा-बंधन बन जाता है,
संघर्षो की भट्ठी में जल जाना छोटी बात नहीं है,
त्याग-तपस्या से मानव माथे का चन्दन बन जाता है।

★★★

महर्षि दयानन्द साधु आश्रम गुरुकुल सिंहपुरा-सुन्दरपुर [रोहतक]

में ११से १८ अगस्त ७८ तक आयोजित

सत्संग-स्वाध्याय शिविर-एक दृष्टि में

★ डा० धर्म वीर आयुर्वेदाचार्य

महर्षि दयानन्द साधु आश्रम गुरुकुल सिंहपुरा में आयोजित ११ अगस्त से १८ अगस्त तक आयोजित सत्संग स्वाध्याय शिविर अपने आप में एक एतिहासिक शिविर था। पहले कभी इस स्तर का शिविर देखने को नहीं मिला जब निरन्तर ३०० व्यक्तियों ने सात दिन तक एक निश्चित दिनचर्या एवं अनुशासन में रहकर साधना एवं सत्संग द्वारा जीवन निर्माण का प्रशिक्षण लिया हों। इस शिविर की विशेषता यह थी कि जिन महानुभवों ने इसमें भाग लिया उनमें से प्रत्येक की अन्त तक यह इच्छा बनी रही कि अभी शिविर और चलना चाहिए। वरना आमतौर से हमने शिविरों में यह अनुभव किया है कि शिविर माप्त होते-२ शिविरार्थी अपने घरों को लौटने के लिए बेताब हो उठते हैं। भाग लेने वाले व्यक्तियों में कुछ युवकों को छोड़कर सभी बुजुर्ग एव हरयाणा के कौने-२ से पधारे आर्य समाजों के प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। प्रातः चार बजे से लेकर रात दस बजे तक बहुत ही व्यस्त कार्यक्रम चलता था। कार्यक्रम प्रातः शौचादि से निवृत होने के बाद साढ़े चार बजे प्रारम्भ हो जाता था। डेढ घटे तक स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ध्यान एवं प्राणायाम का क्रियात्मक अभ्यास कराकर योग पर प्रवचन करते थे। इसके बाद आसानों का प्रशिक्षण श्री जगवीर सिंह जी देते थे। यह कार्यक्रम दैनिक नियमित रुप से चलता था, इसी प्रकार से दिन में तीन गोष्ठियां होती थी। प्रातः ८ से १० बजे तक यज्ञ प्रवचन, एवं भजन। दोपहर १२ से २ बजे तक भजन एव व्याख्यान शंका समाधान। २ बजे से ५ बजे तक विचार गोष्ठी जिसमें शिविरार्थी स्वयं भाग लेते थे और अपने-२ सुलझे हुये विचार रखते थे। साय ५ से ६ बजे तक खेलादि में रस्सा खिंचाई, दौड़, संगीत-कुर्सी दौड़ आदि व्यायाम करवाये जाते थे और रात्रि ८ से १० बजे तक मनोरंजन तथा भजन होते थे। किसी को भी शिविर से बाहर दुनियादारी की बात सोचने की फुर्सत ही नहीं रहती थी और सीखने की लग्न तथा इच्छा बढती ही जाती थी। व्याख्यान देने के लिए श्री स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी सोम मुनि जी मेरठ, स्वामी सदानन्द जी यमुनानगर, स्वामी चन्द्रवेश जी आचार्य गुरुकुल सिंहपुरा, ब्र० योगेन्द्र पुरुषार्थी गु० कांगड़ी, श्री रामधारी शास्त्री, स्वामी विज्ञानानन्द जी रोहतक, श्री बिशनसिंह एडवोकेट कैथल श्री रामेहर एडवोकेट रोहतक, स्वामी रुद्रवेश क्रान्तिकारी भजनोपदेशक, श्री खेमसिंह आर्य भजनोपदेशक, विक्रम कुमार विवेकी, वीरेन्द्र कुमार शास्त्री आदि वैदिक विद्वान, सन्यासी एवं नेता पधारे। शिविर का सारा कार्यक्रम पूज्यपाद स्वामी भीष्म जी महाराज की अध्यक्षता एवं युवा सन्यासी स्वामी इन्द्रवेश जी के संयोजन में सम्पन्न हुआ। शिविर के अन्तिम दिन श्रावणी उपाक्रम मनाया गया जिसमें निम्नलिखित महानुभावों ने वानप्रस्थ की दीक्षा ली तथा अन्य उपस्थित व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत परिवर्तित किया तथा अपने-२ जीवन में विशेष प्रतिज्ञायें भी की।

वानप्रस्थ की दीक्षा :

1. पं० दूलीचन्द ग्रा० बरौदा = वानप्रस्थ आर्यदेव मस्ताना
२. श्री छोटूराम ग्रा० सिलाना = वानप्रस्थ सुखदेव
3. महाशय नत्थूराम ग्रा० भाड़ौदा = वानप्रस्थ नरदेव
4. श्री चदगीराम आर्य ग्रा० धर्मगढ़ = वानप्रस्थ कर्मदेव
5. श्री धर्मा [illegible] ग्रा० डाहोला = वानप्रस्थ सहदेव
6 श्री पुन्नुराम आर्य गुन्दयाना = वानप्रस्थ सत्यदेव

इनके अतिरिक्त स्वामी सत्यानन्द, स्वामी विचारानन्द, स्वामी सेवानन्द आदि ने प्रचार के लिए अपने-अपने स्थान चुनकर कर्म करने की घोषणा की। दीक्षा गुरू स्वामी भीष्म जी महाराज ने सभी को उपदेश एवं आशीर्वाद दिया। बड़े ही आनन्द एवं प्रसन्नता के वातावरण में शिविर सम्पन्न हुआ। शिविर के प्रबन्ध एवं व्यवस्था में गुरुकुल के प्रधान श्री रघवीर सिंह सरपंच सिंहपुरा कालां, कोषाध्यक्ष महाशय हरद्वारी लाल आर्य डा० धर्म वीर आर्य, जगवीर सिंह, महाशय भाबेराम आर्य मकड़ोली कलां तथा गुरुकुल के ब्रह्मचारियों ने विशेष योगदान दिया. जिन दानी महानुभावों ने शिविर के भोजन प्रबन्ध एव अन्य व्यवस्था हेतु दिल खोलकर दान दिया उनकी सुचि इस प्रकार है।:-

1. माता ज्ञानवती जी चण्डीगढ़	5.0-
2. गाव सिंहपुरा रोहतक	600-
3. श्री रामप्रकाश रामपाल रोहतक	300-
4. श्री जयपाल आर्य रोहतक	300-
5. सैनीपुरा रोहतक	300-
6. आर्य समाज रिटोली	300-
7. महाशय हरद्वारीलाल रोहतक	300-
8. वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल सिंहपुरा	298-
9. आर्य समाज काठ मन्डी रोहतक	265-50
10. भक्त दरियाव सिंह गुरुकुल खरखोदा	200-
11. स्वामी जीवा नदं गुरुकुल झज्जर	101-
12. श्री महेन्द्र सिंह सुपुत्र चौ० बलदेव सिंह रोहतक	101-
13. मा० दलीप सिंह सूदकरण खूर्द	100-
14. मंत्री आर्य समाज उमरा	100-
15. श्री नन्दलाल खेड़ी छिछड़ाना	10.-
16. श्री जगदीश सरपंच सैदअलीपुर	101-
17. श्री गोविन्दराम देवराला	52-
18. श्री धर्म सिंह निमाणा	51-
19. श्री उग्रसैन निदाना	51-
20. श्री पुष्करलाल आर्य कलकत्ता	5.-
21. श्री हनुमान आर्य शिकन्णो मण्डी	101
22. कप्तान शेरसिंह सुण्डाना	50-
23. श्री चन्दूराम आर्य गोरखपुर	50-
24. श्री ओमप्रकाश आर्य गोरखपुर	30-
25. श्री मांगेराम माजरी	25-
26 श्री सुलतान सिंह गुमाना	25-
27. सत्यानन्द वैदिक आश्रम सैदअलीपुर	21-
28. चौ० लालचंद टिटौली	21-
29. श्री महावीर प्रसाद बोंद कलां	21-
30. वानप्रस्थी सत्यदेव	2 -
31. श्री चन्द्रदेव वानप्रस्थी	20-
32. श्री चन्द्ररुप सामलो कलां	20-
33. श्री वारुराम आर्य गोरखपुर	15-
34. श्री भोलूराम थुराना	11-
35. महाशय चदंगीराम चांग रोड़	11-
36. मा० जगदीश सिसाना	11-
37. पहलवान जगदीश कालवास	1.-
38. रिसालसिंह गुन्दयाणा	1-
39. श्री रण सिंह गुमाना	11-
40 श्री रणवीर सिंह अमीन	11
41. परिवारिक सतसंग रोहतक	11-
42. स्त्री आर्य समाज शिवाजी कालोनी रोहतक	11-
43. श्री डा० हरस्वरूप गौरड़	10-
44. श्री किशनलाल टोकली	10-
45. श्री कर्मसिंह जुलानी	10-
46. श्री रिछपाल सिंह लौन	10-
47. श्री कलीराम लौन	10-
48. श्री डा0 मनीराम करेला	10-
49. श्री सूबेदार रत्नसिंह करेला	10-
50. श्री जयसिंह सूताना	10-
51. श्री कृपालसिंह सिवानी मण्डी	10-
52. श्री पंजाब सिंह डाहौना	10-
53. श्री रणवीर सिंह करौथा	10-
54. श्री भरतसिंह गुमाना	10-
55. श्री बलदेव सिंह बोंद	10-
56. श्री आर्य समाज सूदकान कलां	10-
57. श्री हवासिंह खरेंटी	10-
58. कमलेश	10-
59. श्री कुलदीप निदाणा	10-

यह अंक आपको कैसा लगा

पाठकगण,

राजधर्म पाक्षिक आपके हाथों में है। इसमें बौद्धिक सामग्री हमने काफी ऊंचे स्तर की देने की कोशिश की है। परन्तु हम चाहते हैं कि राजधर्म को और अधिक प्रभावशाली बनाया जाये। कृपया आप अपनी प्रतिक्रिया भेजें कि यह अंक आपको कैसा लगा। हम आपकी भेजी प्रतिक्रिया को रा धर्म में प्रकाशित करेंगे। —सम्पादक

पीलिया रोग की अचूक दवा

जिन बच्चों को मिट्टी खाने से पीलिया रोग हो जाता है। उनके लिए हमारे पास पेटेन्ट दवा तैयार है। इसकी केवल पाँच पुड़िया बच्चे के दस्त बन्द कर पेट की मिट्टी को मल मार्ग से बाहर निकाल पेट को साफ कर देती है तथा इसके सेवन से नया खून बनना शुरू हो बच्चा तन्दरुस्त हो जाता है।

मूल्य 5/- डाक खर्च अतिरिक्त

दन्त बिन्दू

दांत में लगे कीड़े को एक बार लगाने से यह दवा जादू की तरह समाप्त करती है। इसके लिये बार-२ सेवन से दांत में कीड़ा नहीं लगता तथा दातों में पानी लगना, दर्द आदि को तुरन्त शांत करती है और दांतों को मजबूत बनाती है।

मूल्य एक शीशी १/- मात्र डाक व्यय अतिरिक्त।

मिलने का पता:— डा० धमवीर आयुर्वेदाचार्य
आश्रम फार्मेसी पो० गुरुकुल सिंहपुरा (रोहतक)

दयानन्द साधक मण्डल का गठन

शिविर के अवसर पर ही दयानन्द साधक मण्डल का गठन किया गया जिसमें सर्वसम्मति से पूज्य स्वामी भीष्म जी महाराज को अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश जो को मन्त्री एवं महाशय हरद्वारी लाल को कोषाध्यक्ष चुना गया। निर्णय हुआ कि दयानन्द साधक मण्डल के ज्यादा से ज्यादा सदस्य बनाये जायें और आर्य महानुभावों में साधना एवं योगाभ्यास की प्रवृत्ति बाढ़ई जाये। जब तक आर्य समाज के कार्यकर्ता साधना एवं योगाभ्यास को जीवन में क्रियात्मक रूप नहीं देंगे तब तक प्रचार कार्य में उत्साह नहीं बन सकेगा। अतः अब स्थान स्थान पर दयानन्द साधक मण्डलों की स्थापना करके साधना की ओर लोगों को मार्गदर्शन किया जायेगा।

उपदेशक व भजन मंडलियों की आवश्यकता

पिछले दिनों महर्षि दयानन्द साधु आश्रम गुरुकुल सिंहपुरा में आर्यसमाज के विशेष कार्यकर्ताओं की बैठक सम्पन्न हुई। जिसमें हरियाणा में वेद प्रचार कार्य को तीव्रता से चलाने का निर्णय किया है और वेद प्रचार विभाग का कार्यालय गुरुकुल सिंहपुरा रोहतक में रखा गया है। इस समय हमें भजन मण्डलियों व उपदेशकों की आवश्यकता है। जो भी महानुभाव वेद प्रचार का कार्य करना चाहते हों वे कृपया गुरुकुल सिंहपुरा से सम्पर्क स्थापित करें तथा अपने आवेदनपत्र शीघ्र ही भिजवायें।

वेद प्रचार अधिष्ठाता
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब महर्षि दयानन्द
साधु आश्रम गुरुकुल सिंहपुरा रोहतक

संगठन का केन्द्रीय कार्यालय

पिछले कई महीने से आर्य समाजों एवं अन्य संगठन प्रेमी महानुभावों को इस बात की कठिनाई अनुभव हो रही थी कि स्वामी जी से कहां कब संपर्क हो सकता है किस [illegible] पत्र-व्यहार किया जाये। आपको जानकर हर्ष होगा कि [illegible] संगठन का केन्द्रीय कार्यालय महर्षि दयानन्द साधु आश्रम गुरुकुल सिंहपुरा में बना दिया है। यहां पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वेद प्रचार विभाग राजधर्म पक्षिक, [illegible] साधक मण्डल आदि के कार्यालय विधिवत कार्य कर [illegible] स्वामी इन्द्रवेश जी की देख-रेख में इनका कार्यभार [illegible] प्रकाश विद्रोही सभाल रहे है। कृपया पत्र व्यवहार [illegible] पते पर करें।

महर्षि दयानन्द साधु [illegible]
पो० गुरुकुल सिंहपुरा [illegible]

राजधर्म

....

क्या आप चाहते हैं ?

कि आपकी धमनियों में बहने वाला रक्त तेजी से दौड़ने लगे ?···यदि हां, तो निम्नलिखित साहित्य मंगाईए और पढ़िये ।

★ फांसी को कोठरी में बैठकर शहादत से तीन दिन पूर्व लिखी गई महान क्रान्तिकारी रामप्रसाद 'बिस्मिल' की आत्म कथा
—मूल्य २ रु० मात्र

★ वैदिक समाजवाद के विषय में सभी शंकाओं का मुंह तोड़ जवाब देने वाली स्वामी अग्निवेश द्वारा लिखित पुस्तक "वैदिक समाजवाद"
—मूल्य २ रु० मात्र

★ भुजाओं में वज्र की सी कठोरता और शरीर में बिजली की सी स्फूर्ति लाने वाली पुस्तक "आसन प्राणायाम" लेखक स्वामी इन्द्रवेश
—मूल्य २ रु० मात्र

★ स्व० इन्द्र विद्या वाचस्पति द्वारा रचित जीवन को हर पल नई दिशा देने वाली पुस्तक "जीवन संग्राम"
—मूल्य २ रु० मात्र

★ वैदिक अर्थ नीति की सरल और सुन्दर ढंग से व्याख्या करने वाली सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान आचार्य प्रियव्रत की पुस्तक "वैदिक अर्थ व्यवस्था"
—मूल्य २ रु० मात्र

★ अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा लिखित अपनी आत्म कथा "कल्याण मार्ग का पथिक"
—मूल्य ५ रु० मात्र

इसके अतिरिक्त राजधर्म पाक्षिक की वार्षिक और छःमाही फाइलें सुन्दर बांईडिंग में बहुत ही कम मूल्य—क्रमशः सात रु० और पांच रु० में दी जा रही हैं ।

कम से कम ५० रुपये का साहित्य खरीदने पर हम २५ प्रतिशत के आकर्षक कमीशन भी दे रहे हैं तथा १०० रुपये से ऊपर का साहित्य खरीदने वाले को ३० प्रतिशत कमीशन मिल सकेगा । अवसर का लाभ उठाइए । अपना आर्डर आज ही भेजिए । 'राजधर्म पाक्षिक' के १५ रु० वार्षिक शुल्क भेजकर ग्राहक बनें ।

व्यवस्थापक
राजधर्म प्रकाशन
गुरुकुल सिंह पुरा, रोहतक ।

राजधर्म प्रकाशन के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रैस गोहाना रोड़ रोहतक से स्वामी इन्द्रवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित ।

ओ३म्

आर्य धर्म

ऋषि निर्वाण अंक

पाक्षिक

२७ अक्तूबर, १९७८

वेद भाष्य :—

एवा नः सोम परिषिच्यमान,
आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति ।
इन्द्रमाविश बृहता मदेन,
वर्धया वाचं जनया पुरंधिम् ॥

सामः अ० ३, म० ८६१

भावार्थ :—(सोम) हे परमात्मन् ! आप (परिषिच्यमानः) सब ओर अमृत वर्षाते हुए (पूयमानः) पवित्र कीजिए [जिससे हमारा] (स्वस्ति एव) कल्याण ही [हो] (इन्द्रम्) हमारे आत्मा को (आविश) आप व्याप रहे हैं इसलिए (बृहता) महान् (मदेन) आनन्द से (वाचम्) अपनी स्तुति को (वर्धय) बढ़ाइए और (पुरन्धिम्) बहुत बुद्धियुक्त विज्ञान को (जनय) हमारे लिए उत्पन्न कीजिए ।

छात्र संघों के चुनावों में शानदार विजय

हाल ही में हरयाणा प्रान्त के सभी कालेजों में छात्र संघ के चुनाव सम्पन्न हुए हैं जिनमें आर्य युवक परिषद् के युवक कई जगह बड़ी शान के साथ विजयी हुए हैं । सबसे शानदार विजय कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय छात्र संघ के अध्यक्ष पद पर श्री जगदीशचन्द्र की हुई जो अपने निकटतम प्रत्याशी से लगभग 265 मतों से विजयी हुए । श्री जगदीशचन्द्र जी एक चरित्रवान् व लगनशील युवक हैं तथा उन्हें आर्य युवक परिषद् का समर्थन प्राप्त था । इस चुनाव में क्रान्तिकारी छात्र नेता रोशनलाल आर्य, जगवीरसिंह, नकुलसिंह, शीषपाल सागर, मुख्त्यारसिंह, रामफल नम्बरदार, चन्द्रमोहन, रामचन्द्र, जसवीर चौधरी, महेन्द्रसिंह तथा सैकड़ों युवकों ने रात-दिन कार्य किया । उप-प्रधान पद पर वीरसिंह, सचिव भीमसेन, एवं सह सचिव राजवीरसिंह चुने गये ।

जाट कालेज रोहतक :—

रोहतक के प्रसिद्ध जाट कालेज के छात्र संघ के प्रधान पद पर श्री राजपालसिंह चुने गए जो आर्य युवक परिषद् के सक्रिय सदस्य हैं । आप एक अच्छे पहलवान तथा कबड्डी के खिलाड़ी हैं तथा पढ़ाई में भी काफी होशियार हैं । उन्हें तथा उनके साथियों को हार्दिक बधाई ।

राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय नारनौल :—

इस कालेज के छात्र संघ के प्रधान पद के लिए पहलवान सत्यव्रत जी चुने गए हैं । आप एक चरित्रवान् एवं कर्मठ नौजवान हैं । कालेज के आप कुश्ती केसरी भी हैं । आर्य युवक परिषद् के प्रधान श्री बृजानन्द विद्यार्थी के संयोजन में श्री रामकुवार बी० ए० तृतीय वर्ष, सूरतसिंह, सुरेन्द्रसिंह भू० पू० अध्यक्ष, बलवन्तसिंह जी बी० एस० सी० अन्तिम वर्ष, ब्र० रामनिवास, ब्र० दयावीर, दयानन्द, ओम्प्रकाश, ब्र० सुभाषचन्द्र आर्यवीर ने श्री सत्यवीर की विजय के लिए भरसक कार्य किया, अध्यक्ष के अतिरिक्त सचिव श्री रघुराज यादव, सह सचिव महिपालसिंह यादव निर्वाचित हुए हैं ।

आर्य युवक परिषद् की यह सफलता हमारे कालेजों में कार्य करने वाले कर्मठ साथियों के सक्रिय योगदान से हुई है । आशा है अन्य स्थानों पर भी युवक इसी प्रकार तेजी से काम करेंगे । कुछ सूचनाए अभी प्राप्त नहीं हुई हैं । आने पर उन्हें भी प्रकाशित कर दिया जाएगा ।

महामन्त्री सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद्
पो० गु० सिंहपुरा, रोहतक ।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक
पुनर्जागरण का पाक्षिक शंखनाद

राजधर्म

वर्ष — ६ अंक — २
२७ अक्तूबर, १९७८

प्रधान सम्पादक :
स्वामी अग्निवेश
सम्पादक :
जगवीरसिंह

वार्षिक शुल्क १५ रुपये
एक प्रति ७० पैसे

कार्यालय
महर्षि दयानन्द साधु आश्रम
गुरुकुल सिंहपुरा (रोहतक)

सम्पादकीय—

आर्यसमाज का आगामी कार्यक्रम "आर्य ग्रामान्दोलन" हो !

अब तक आर्यसमाज गांवों तक उतना नहीं पहुँच पाया है। शहरी चकाचौंध से प्रभावित होकर अब तक आर्यसमाज ने गांवों की उपेक्षा सी की है। मैं समझता हूं कि अब इस परम्परा को तोड़ने का समय आ गया है। अब हमें अपने सारे कार्यक्रम का श्रीगणेश किसी गांव से करना चाहिए। कोई एक गांव लिया जाए और उसे 'आर्यग्राम' में परिणत किया जाए। वहां के सब लोगों को इकट्ठा कर उनके साथ विचार विनिमय हो। उनको विशुद्ध स्थानीय समस्याओं का वहीं रहकर कुछ दिनों तक अध्ययन किया जाये। दो तीन परिवार मान जायें तो दस बीस एकड़ पर सहकारी कृषि आरम्भ की जाए। फिर उसे बढ़ाया जाए। सहकारी श्रम से गांव पूरा जुट कर कुछ ऐसी व्यवस्था करले कि उस गांव के मकान और खेतों को बाढ़ से खतरा न रहे और वर्षा का ही पानी जमा करके सूखे से भी लड़ा जा सके। गोबर और मल का गैस और खाद में रूपान्तरण हो। कुछ कुटीर उद्योग लगें जहां बेकार हाथों को काम मिले। गाँव में शराब का निषेध हो। गांव का कपड़ा और जूता गाँव में ही बने। गांव के सब बच्चों की निःशुल्क पढ़ाई हो और उन्हें गांव में पैदा किया गया दूध-रोटी एक समान खाने को मिले।

गाँव के झगड़ा गांव के ही बड़े-बुजुर्गों की परम्परागत पंचायत में सुलझा लिया जाए। गांव की सड़कें साफ और सुन्दर हों। गांव में खेल के मैदान, उद्यान, साग सब्जी के बगीचे, सत्संग भवन, पुस्तकालय आदि की व्यवस्था हो। जातिवाद का, ऊंचनीच की भावना का समूलोच्छेद हो। देशी पद्धति पर चिकित्सा सर्वसुलभ हो। बूढ़ों का यथायोग्य सम्मान, युवकों को हौसला और बच्चों को आगे बढ़ने का समान अवसर मिले। उन्नत खेती, उन्नत पशु और स्वस्थ वायुमण्डल हो। कुरीति और अन्धविश्वास से मुक्त कर आध्यात्मिकता और सादे जीवन की ओर झुकाव पैदा हो। गांव के विद्यालय में हर बच्चे को काम सिखाया जाए—खेती का, बढ़ई, लोहार, जुलाहे का। घर घर चर्खा चले।

मेरा विचार है कि अब अगली शताब्दी के लिए आर्यसमाज का आन्दोलन 'आर्यग्रामान्दोलन' के रूप में बढ़े।

इस सारे आर्य ग्राम में किसी राजनैतिक दल, किसी नेता, किसी सरकार अथवा बड़े उद्योगपति का सहयोग-हस्तक्षेप न्यून से न्यून रखा जाए। गांव की जनता ही साक्षात् लक्ष्मी है—बल्कि साक्षात् विष्णु है। उसी की उपासना की जाए।

भारत के पांच लाख गांव में इस आर्य ग्रामान्दोलन को फैलाने का संकल्प लेकर ऋषि बलिदान दिवस के अवसर पर कार्तिक की अमावस्या मे एक आशा का प्रदीप प्रज्ज्वलित किया जाए। ईश्वर की कृपा से पांच साल में ऋषि बलिदान शताब्दी पर सारा भारत दीपमाला से जगमगा उठेगा।

• अग्निवेश

महान् क्रांतिदूत ऋषि दयानन्द की स्मृति में

कोटिशः प्रणाम उस महान् क्रान्तिकारी योद्धा को जिसने इस संसार से अज्ञान, अन्धकार अर्थात् अविद्या, अन्याय, अभाव को मिटाने के लिए सत्यज्ञान सूर्य के द्वारा सभी को मार्ग दर्शन दिया। दीपमाला के दिन प्रकाश के पुञ्ज दयानन्द का बलिदान हुआ था। वे सत्य का प्रसार करने मे अडिग रहे और मृत्यु से भी नहीं घबराए।

महर्षि ने इस नश्वर संसार से जाते हुये अपने अनुयायी आर्यों को वेद का प्रचार, प्रसार करने का आदेश दिया था। उस दिन आर्यों के सामने ऋषि दयानन्द का शव रखा हुआ था। ऋषि के इस अनोखे बलिदान को देख कर उस समय के आर्यों ने उनके आदेश को पूरा करने का दृढ़ संकल्प किया था और आगे चलकर उस संकल्प ने आर्यसमाज को उठाया, बुढ़ापा और नए युग का निर्माण किया।

महर्षि की क्रान्तिकारी विचारधारा और कार्य-प्रणाली ने मनुष्य समाज के बुद्धिजीवी वर्ग को वेद की तरफ मुड़ने के लिए बाध्य कर दिया। ऋषि दयानन्द ने वेद द्वारा संसार को जो सन्देश दिया। वह नवीन होने के साथ-साथ भारत की पुरानी परम्पराओं के भी अनुकूल था। आज हम सम्भवतः उनकी महत्ता की कल्पना न कर सके, किन्तु अंग्रेजी शासन के अत्याचारों से पीड़ित राष्ट्र को स्वराज का, मत-मतान्तरों में बटे हुये मानव समाज को मानवता का और बिखरे राष्ट्रों को एक विश्व साम्राज्य का मार्ग दिखाकर ऋषि दयानन्द ने महान् क्रान्ति की आधार शिला रखी थी।

महर्षि अपने शब्दों में वैदिक विचारधारा को इस प्रकार प्रकट करते हैं।

"जिसका विरोधी कोई न हो सके, जो तीनों कालों में सबको एकसा मानने योग्य हो, जो सत्य हो उसको मानना और मनवाना और जो असत्य है, उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। उन्होंने सारे विश्व को एक परिवार की तरह रहने का सन्देश दिया। वे चाहते थे संसार के सारे जाति, वर्ग, देश, भेद मिट जायें और मनुष्य केवल मनुष्य बनकर रहे। उन्होंने अपने विचारों को केवल कल्पना ही न रखकर मूर्त रूप देने में अपने जीवन का एक-एक क्षण लगा दिया।

उन्होंने अन्ध विश्वास, पाखण्ड, रूढ़िवाद को तोड़ने का पूर्ण प्रयत्न किया। अछूत समझे जाने वाले जनों का और नारी जाति की समानता का प्रचार किया, तथा ऊंच नीच के भेद को मिटाया। स्वराष्ट्र, स्वराज्य, स्वदेशी, स्वधर्म, का उपदेश देते हुए विदेशी शासन के विरुद्ध शंखनाद किया।

महर्षि ने उन सभी विरोधी तत्वों के साथ लड़ाई लड़ी जिनके द्वारा भारत राष्ट्र जर्जरित हो रहा था। दयानन्द की सर्वतोमुखी प्रतिभा और क्रान्तिकारी विचारों ने सबको झकझोर दिया। इसके पश्चात् भारत में जितने धार्मिक, सामाजिक तथा राजनैतिक नेता हुए उन्होंने महर्षि के चलाए हुए क्रांतिकारी कार्यक्रम को ही धार्मिक एकता, समाज सुधार और स्वतन्त्रता प्राप्ति का साधन मानना पड़ा! इसीलिए देश आजाद हुआ। किन्तु आज पुनः पाखंडवाद जाति-वाद, पुञ्जीवाद तथा घटिया राजनीति पनप रही है और महर्षि की विचारधारा का प्रसार करने वाला आर्यसमाज चादर तानकर सो रहा है।

आर्यसमाज के प्रवर्तक ने अपने अनुयायियों को यह सन्देश दिया था कि विश्व में वेद का प्रचार व प्रसार करते हुए चक्रवर्ती राज्य को स्थापना करो। किन्तु आज आर्यसमाज के कर्णधार ईर्ष्या द्वेष में फंस कर परस्पर युद्ध कर रहे हैं।

हर वर्ष दीपमाला आती है और हम सब आर्य समाजी महर्षि के जीवन पर प्रकाश डालकर श्रद्धांजलि की रसम पूरी करने में ही इतिश्री समझ लेते हैं।

आज पुनः आवश्यकता है ऐसे क्रांतिकारी युवकों की, वानप्रस्थियों तथा संन्यासियों की जो वैदिक क्रांति के लिए दृढ़ संकल्प करें और अपने जीवन का एक-एक क्षण वैदिक क्रांति यज्ञ में देकर आर्य नाम सार्थक करें। देखो, कितने योद्धा वैदिक क्रान्ति की मशाल लेकर दीपमाला के पावन पर्व के शुभ अवसर पर दृढ़ संकल्प के द्वारा कार्यक्षेत्र में उतरते हैं।

● पं० रामचन्द्र आर्य, भालोठ (रोहतक)

महर्षि दयानन्द के प्रति एक श्रद्धाञ्जलि

स्व० सी० एफ० एण्ड्रयूज

कुछ वास्तव में अत्यन्त-उच्च कोटि के प्रतिभाशाली मनुष्य हो चुके हैं परन्तु उनके अन्दर वह दैवी ज्वाला नहीं है जो दूसरों में अग्नि प्रवेश कर सकती है और ईश्वर प्रेरित शिष्य-परम्परा स्थापित कर सकती है। यह गुण दोषनिरूपण का एक सर्वोच्च परीक्षण है और इसमें कोई सन्देह नहीं कि स्वामी दयानन्द इस परीक्षा में सफल होते हैं। दूसरों में प्रकाश डालने के लिए यह महान् आत्मा विशेषता दिखाती है। मैंने स्वयं अपने नेत्रों से स्वा० दयानन्द की महत्ता की सीमा को देखा है। संसार के भिन्न-भिन्न भागों में यात्रा के पश्चात् वापस आने पर मैंने यह अक्सर कहा है कि किस प्रकार मैंने आर्यसमाज को एक जीवित धार्मिक शक्ति के रूप में आर्य-आचार-व्यवहार की रक्षा करते हुए देखा है जब कि हिन्दू धर्म की दूसरी शाखायें विजातीय शासन की विनाशकारी आचारभ्रष्टता के समक्ष न ठहर सकीं। किन्तु आर्यसमाज ने विदेशी मिट्टी में और विजातीय परिस्थिति में फूलना-फलना सीखा है। उदाहरण के लिए मैं चाहता हूं कि मैं अपने पाठकों को दक्षिणी अफ्रीका में ले चलूं और वहाँ आर्यसमाज का उन दूसरी संस्थाओं के मुकाबिले में जो भारत के सच्चे धार्मिक जीवन को स्थापित करने के लिए पूर्ण प्रकार से उद्योग करती रही है, अत्यन्त प्रबल जीवन दिखलाऊं। इन दूसरी संस्थाओं को भी अपना अपना काम करना था और जो कुछ कर सकती थीं किया। किन्तु आर्यसमाज न केवल जीवित ही है, वरन वह उन्नति कर रहा है। यह एक जीवनशील छोटे वृक्ष के समान है जो अपने जड़ के रेशों को प्रत्येक वर्ष पृथ्वीतल में भेजता रहता है और नए चमत्कार दिखलाता रहता है। इसका प्रभाव दक्षिणी अफ्रीका के भारतीयों पर अपूर्व है।

एक दूसरा परीक्षण, समीकरण अथवा अपनाने का (assimilation) है। उसका एक रूप मिलाना, अथवा हजम कर लेना है। मेरा तात्पर्य इससे नहीं। दक्षिणी अफ्रीका और दूसरे देशों में आर्यसमाज आचार-विचार में इतना परिवर्तित नहीं होता कि वह स्वयं हीं हजम हो जावे। बल्कि उसका अपना आचार-विचार वैसा ही है, किन्तु वह चारों ओर से सत्य के नवीन रूपों को धारण करता जाता है। आर्यसमाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द का भक्त रहते हुए भी आर्यसमाज उनकी आज्ञाओं को ठीक उस ही प्रकार मानता है जैसे वह स्वयं इच्छा करते अर्थात् उनके भाव को न कि शब्दों को ग्रहण करता है। नवीन उत्साह और आन्दोलन, नवीन विकास और उन्नति और नवीन आदर्श नित्यप्रति निकलते हैं। किन्तु आर्यसमाज का वास्तविक लक्षण और विशेषता वही रहती है।

मैं ऊपर आर्यसमाज के एक विशेष लक्षण का उल्लेख कर चुका हूँ जिस के कारण गत शताब्दी में हिन्दू धर्म में सुधार के लिए जितनी संस्थाएँ स्थापित हुई उन सब की अपेक्षा आर्यसमाज का सबसे अधिक महत्त्व है। यह लक्षण आर्यसमाज के विस्तरण और समीकरण की शक्ति का है। जो प्रोत्साहन देश को आर्यसमाज के नेता से मिला वह एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक क्रमशः बढ़ता जा रहा है। इस कार्य में ऋषि दयानन्द की महान् आत्मिक शक्ति से बहुत सहायता मिली और उसके प्रभाव का अभी तक अन्त नहीं।

एक और भी बात मेरे ध्यान में आई है, विशेषकर भाई परमानन्द के उन पत्रों को पढ़ कर जो उन्होंने अण्डमान कारावास से लिखे हैं और जिन्हें मैंने स्वय उन ही के हस्त लेख में पढ़ा है। इन पत्रों में उन्होंने दिखलाया है कि ऋषि दयानन्द की आत्मा के परदे में प्राचीन भारत के पुनरुत्थान आन्दोलन (Renaissance) के समय प्राचीन योरोप की आत्मा सजीव हो उठी थी। उस ही प्रकार भारतवर्ष में आर्यसामाजिक आन्दोलन का उद्देश्य प्राचीन भारत की आत्मा को सजीव बनाना था। ऋषि दयानन्द के आगमन से पहले यह आदर्श केवल पुस्तकों में पाया जाता था। उसका रूप अत्यन्त साहित्यिक हो गया था, और उसका प्रचार हमारे विद्यालयों तक ही परिमित था। जनसाधारण में व्यावहारिक रूप से इसका प्रचार नहीं हुआ था। परन्तु अब स्वयं एक ऋषि हमारी दृष्टि के सम्मुख आ गया जिसने उस प्राचीन आदर्श को ऐसा प्रत्यक्ष कर दिया कि समस्त संसार ने देख लिया। स्वामी दयानन्द के विषय में यह विचार वास्तव में सत्य है और मैं इस ही पर अधिक प्रकाश डालने का प्रयत्न करूंगा।

सम्भव है किसी जाति के अतीत में संग्रह किये हुए अध्यात्मिक विचार कुछ समय के लिए प्रत्यक्ष जीवन से

विलुप्त हो जावें परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि हम उन्हें सदा के लिए खो बैठें। वह केवल जातीय आत्मा की अगम्य गहराईयों में डूब जाते हैं और वही सैंकड़ों वर्ष तक सुस्त पड़े रहते हैं। जब जागृति का समय आता है तो इसके साथ-साथ एक अपूर्व उत्तेजना शक्ति का विकास भी होने लगता है जैसे किसी अप्रत्यक्ष शक्ति को जिसकी प्रगति कुछ समय के लिए रोक दी गई हो, अकस्मात् मुक्त कर दिया जावे।

आज हमें ज्ञात है कि भारत का वह प्राचीन समय जिस में संस्कृत साहित्य, दर्शन-शास्त्र और अन्य विद्याओं की उत्पत्ति हुई कम से कम योरोप के उस प्राचीन समय से कम महत्त्व का न था जिसमें यूनानी सभ्यता और विद्या का डंका बज रहा था, और जिसे योरोप कुछ समय के लिए बिल्कुल भूल गया था। विगत तीन शताब्दियों में इतिहास ने भली-भाँति प्रमाणित कर दिया है कि योरोप की प्राचीन आत्मा की जागृति का पाश्चात्य संसार पर क्या प्रभाव पड़ा। वास्तव में आज जिस वस्तु को हम उन्नति कहते हैं, उसका आरम्भ ही उस समय से हुआ है। भारतवर्ष का पुनरुत्थान मानवीय इतिहास में और भी महत्त्व की घटना समझी जावेगी और प्रत्यक्ष रूप से इसका अनुभव करने के लिए कम से कम तीन या चार शताब्दियों की आवश्यकता होगी। ऋषि दयानन्द ने अपनी दिव्य शक्ति के बल से प्राचीन भारत के अदृष्ट महत्त्व का स्वयं अपनी आत्मा के अन्दर अनुभव कर लिया। उन्होंने अपने समस्त जीवन-कार्य की नींव केवल इसी अनुभव पर रखी। उनकी संस्था का नाम आर्यसमाज रखा गया क्योंकि उनका उद्देश्य आर्य आदर्श को सजीव करना था। उनकी इच्छा थी कि आर्यसमाज का प्रत्येक सदस्य प्राचीन आर्य आदर्श का जीवित दृष्टान्त बन सके।

कभी-कभी यह भी सम्भव होता है कि अतीत को कृत्रिम साधनों से जीवित कर दिया जावे जैसे कि मृतक देह में बिजली के जोर से कुछ समय के लिए जीवन डाल दिया जाता है। परन्तु स्वा० दयानन्द का उद्देश्य यह नहीं था। उनके आत्मबल ने भारत के प्राचीन समय को केवल जागृत ही नहीं कर दिया बल्कि अर्वाचीन भारतीय जीवन की आवश्यतानुसार उसकी नई और सजीव रूप में रचना कर डाली। इसलिए यह न समझना चाहिए कि आर्यसमाज का उद्देश्य केवल पुरानी सभ्यता का अध्ययन करना है। आर्यसमाज ने वर्तमान भारत में विशेषकर पंजाब और संयुक्त प्रान्त में नवीन जीवन का संचार किया है और अपनी शक्ति से हिन्दू-धर्म में एक ऐसी शक्ति की रचना की है जो अपने व्यक्तित्व की भली-भाँति रक्षा कर सकेगी और जिसे आधुनिक जीवन को यद्यपि वह प्राचीन जीवन से विभिन्न है, अपनाने में अधिक कठिनता होगी।

अब मैं कुछ विशेष कारण दे चुका हूँ जो मुझे आर्य-समाज संस्था और ऋषि दयानन्द जैसी महानात्मा को अर्वाचीन समय के इतिहास में उच्च स्थान देने के लिए प्रेरित करते हैं। यह अच्छी प्रकार स्पष्ट है कि ऋषि की महानात्मा में वह आकर्षण शक्ति और दिव्य गुण थे जिन के कारण उनके अनुयायी उत्साह के ज्वलन्त उदाहरण हैं। मैं यह भी दिखला चुका हूं कि उन्होंने अपनी दिव्य प्रतिभा से प्राचीन समय के दिये हुए ज्ञान का द्वार खोल दिया है और भारत की संचित आत्मा को ज्ञान और अनुभव की बहुमूल्य पैतृक सम्पत्ति सहित जागृत करके जन-साधारण में नवीन जीवन का संचार कर दिया है।

परन्तु इस नवीन जीवन के फूलने-फलने के लिए एक और बात की अत्यन्त आवश्यकता थी। इस भय से कि कहीं अच्छे बीज की उपज न हो क्षेत्र में से हानि कर कण्टकों को साफ करना आवश्यक था। यदि हम योरोप का ध्यान करें तो हमें इस बात का महत्त्व एक अर्वाचीन उदाहरण से अच्छी प्रकार प्रकट हो जावेगा। योरोप में जागृति के समय अनेक स्थान कण्टकों से ऐसे भरे थे कि उनमें नये बीजों का उगना फूलना और फलना नितान्त असम्भव था। योरोप के उत्तरीय देशों में पुनरुत्थान आन्दोलन (Renaissance movement) को इसलिए विशेष सफलता हुई कि वहाँ रीतिरिवाज और जातिपाँति का अधिक बंधन न था।

इस ही कारण से आर्यसमाज को उत्तरीय भारत में विशेष सफलता प्राप्त हुई। यहाँ कण्टकों का निराकरण सुगमता से हो सका और नवीन बीज को उगाने का अच्छा अवसर मिल गया। यह विचारणीय है कि दक्षिण भारत में बाधाओं का निवारण करना अब तक सामर्थ्य से बाहर रहा है। किन्तु उत्तरीय प्रान्तों में आर्यसमाज के आन्दोलन की उन्नति और विकास बहुत आसान हो गया है।

आर्यसमाज और उसके प्रवर्त्तक के विषय में यही बात अत्यन्त महत्त्वपूर्ण और विचारणीय है। इसमें सन्देह नहीं कि आर्यसमाज का आदर्श प्राचीन आदर्श है। परन्तु इसकी दृष्टि सदैव धार्मिक और सामाजिक सुधार की ओर रही है। उस का विश्वास है कि मध्यवर्ती समय में अनेक कण्टकों ने उत्पन्न होकर अच्छे बीजों को उत्पन्न होने और बढ़ने से रोक दिया है। योरोपीय पुनरुत्थान के समय लूथर और एरमसने भी इस ही युक्ति के अवलम्बन से सफलता प्राप्त की थी। उन्होंने पुनरुत्थान के आन्दोलन को सुधार आन्दोलन के रूप में

परिणत कर दिया और ऋषि दयानन्द ने भी भारत में बिल्कुल यही किया है । उनका मूर्तिपूजन को वेदोक्त न मानना, असंख्य अछूतादि वर्णों में जाति को विछिन्न करने वाली जात-पांत का अस्वीकार करना । उनका पौराणिक साहित्य को ईश्वरीय और प्रमाण न मानना इन सब बातों ने आर्यसमाज आन्दोलन को वास्तविक सुधार आन्दोलन बना दिया । उन्होंने इसे स्वामी विवेकानन्द के नवीन वेदान्त के आन्दोलन से कई महत्त्वपूर्ण बातों में भिन्न कर दिया । यद्यपि नवीन वेदान्तिक आन्दोलन ने भी अपनी रीति से औदार्य और सुधार का काम किया है परन्तु यदि इन दोनों आन्दोलनों की तुलना की जावे तो यह कहना उचित होगा कि बंगाल आन्दोलन उदारता पर आश्रित है । और पश्चिमीय भारत का अर्वाचीन धार्मिक आन्दोलन के सुधार पर ठीक उसी प्रकार जैसे भारत के नेताओं में से रवीन्द्रनाथ टैगोर अधिक उदार हैं और महात्मा गांधी (जो उस ही प्रान्त में उत्पन्न हुए हैं जिसमें कि स्वामी दयानन्द) भाव और आदर्श में अधिक सुधारक है ।

अन्त में मेरी इच्छा और कामना है कि आर्यसमाज उन्नति के समय में कण्टकों का निराकरण अपनी सीमान्तर्गत भी करे और वीरता से इस बीसवीं शताब्दी में उस ही प्रकार से सत्य का अन्वेषण करे जैसे ऋषि दयानन्द ने गत शताब्दी में किया था ।

योगी का भेद नहीं पाया

स्वा० समर्पणानन्द सरस्वती

★

नादान लोगों ने उस,
योगी का भेद न पाया ॥
कोई कहे मत आ इस द्वारे
विषदाता कह पत्थर मारे ॥
क्या जाने किस्मत के मारे ।
सुधा कलश ले आया ॥ -१
गाली देते नहीं लजाये ।
विष का प्याला लेकर आये ॥
योगी मेरा प्रेम दिवाना ।
विष का घूंट उड़ाया ॥ -२
रोम-रोम बन फोड़ा बोला ।
मेरा सेवा के कारण था चोला ॥
खूब करी प्यारे नलोला ।
उसका उसे चढ़ाया ॥ -३
रोम-रोम का बना फव्वारा ।
फूठ पड़ी अमृत की धारा ।
एक बूंद ने नास्तिक मुनि का ।
सारा मोह बहाया ॥ -४
बार-बार नर जीवन पाऊं ।
बार-बार बलिदान चढ़ाऊं ॥
ऋण तो भी मुझसे ऋषि तेरा ।
जावे नहीं चुकाया ॥ -५

कृपया १५ रु० वार्षिक शुल्क भेजकर 'राजधर्म' पाक्षिक के ग्राहक बनें ।

— सम्पादक

ऋषि निर्वाण दिवस के अवसर पर—

आर्य युवकों का बुनियादी दायित्व

—कैलाश सत्यार्थी
विदिशा (म०प्र०)

एक घटना है—श्मशान घाट की। एक माँ अपने कलेजे के टुकड़े की लाश को सीने से चिपटाये फूट-फूट कर रो रही थी। लाश बिल्कुल नग्न थी और माँ ने एक फटी पुरानी 'साड़ी' भर अपनी लाज बचाने को शरीर पर ओढ़ रखी थी। कौन जान सकता है उस निर्धन बेसहारा माँ के दिल का दर्द, जिसे अपने बेटे की लाश पर ढंकने को कफन तक नसीब नहीं हो पाया हो। पर मां केवल माँ होती है। आखिर सारी लोक मर्यादा भूलकर उसने अपनी साड़ी का आधा हिस्सा फाड़ कर बेटे का कफन बनाया और बेटे को गंगा में बहाकर उसे अपना तन ढाँपने के लिए बचा लिया। इस करुणाजनक घटना को देखकर युवा संन्यासी दयानन्द का हृदय हाहाकार कर उठा। वे अपने आपको न रोक सके ...रो दिये।

कितना महत्त्वपूर्ण होगा वह क्षण जब युगद्रष्टा दयानन्द के आँसू गंगा की रेत पर टपके और कितने कीमती थे वे आँसू, जो समूची नंगी, भूखी निर्धन और बेसहारा इन्सानियत का दर्द अपने में समेटे हुए थे। वे आँसू सिर्फ आँसू नहीं थे, आगे आने वाली अनेक पीढ़ियों के लिए कुर्बानी की पुकार थी---जिससे दिलों में जोश है और रगों में गर्म खून। साथ ही एक बहुत बड़ी शाश्वत चुनौती थी —तथाकथित धर्म व समाज, अर्थ व राजनीति की ठेकेदारी करने वाले शोषकों के लिए।

देश की तत्कालीन जवानी ने क्रान्तिदूत की इस पुकार को सुना—और आंसुओं की कीमत खून से चुकाने का एक नया सिलसिला शुरू हो गया, भले ही परोक्ष में सही। श्रद्धानन्द ने गोली खा, लेखराम ने छुरे का वार सह, लाजपतराय ने लाठियों की चोटें खाकर तथा बिस्मिल और भगतसिंह ने फांसी के फंदों को चूमकर किसी न किसी रूप में यह कीमत चुकाने की कोशिश की। यह सब अज्ञान, अभाव व अन्याय के खिलाफ एक 'जिहाद' था। शोषण और अत्याचार के खिलाफ एक लड़ाई थी। ऐसी कोई भी लड़ाई भीड़ इकट्ठी कर जबान की कलाकारी नहीं, पूरा सिर चाहती है—कागज पर कलम और अंगुलियों का चमत्कार नहीं, हाथ मांगती है। आर्यसमाजियों ने बहुत बड़ी तादाद में यह सब देकर शहादत के इतिहास में नए पन्ने जोड़े हैं।

परिणामतः स्वराज्य मिला, किन्तु न तो 'अपघ्नन्तोऽराव्णः' की बात पूरी हो पाई और न 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' की। सन् १९४७ के आस-पास तक देश की राष्ट्रीय मानसिकता पर आर्यसमाज का जबरदस्त असर रहा। किन्तु पूरी तरह सत्ता और अर्थ के पीछे भागने वाली आजादी के बाद की राजनीति से आर्यसमाज भी जुड़ गया। कुछ लोग सत्ता में और कुछ प्रतिक्रियावादी और पूंजीवादी दलों में घुस गए। बच रहे समाज की सम्पत्ति और पदों के ठेकेदार बन बैठे।

पिछले २५-३० सालों का आर्यसमाज का इतिहास स्वार्थ और पद-लोलुप्ता का इतिहास है—मौत से पहले ही चिता की तैयारी करने का इतिहास है। कुछ वर्षों से तो कुछ लोगों ने जिस निर्लज्जता से हमारे शहीदों की कुर्बानियों को सरे बाजार नीलाम किया है—जिस चालाकी से आज भी उपदेशों, योजनाओं तथा नारों की दुकानें चलाई जा रही हैं —आर्यसमाज का इतिहास हमेशा दो दो आँसू रोयेगा। इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं कि तमाम नेता नामधारी लोग दयानन्द तथा अन्य शहीदों के खून की कीमत चुकाने की बजाय महज चाँदी के चन्द टुकड़ों के लिए उसे बेच-बेच कर ऐश कर रहे हैं। और यहां मैं साफ कहना चाहूंगा कि हमारे बुनियादी दायित्व से मेरा सीधा मतलब नव अंकुरित जवानी से है—जो अपने दिलो-दिमाग में सात्विक आवेश का एक भीषण ज्वालामुखी छिपाए है—समाज में व्यवस्था मूलक परिवर्तन के लिए।

अर्थ की मानसिकता में कैद समाज के बुर्जुवा नेतृत्व में परिवर्तन हमारा पहला काम है। नंगी आँखों से वर्तमान को देखकर चलने वालों के लिए यह जरा भी विवादास्पद नहीं अपितु इस पूरे वर्ग के मूलभूत दोष के कारण का विश्लेषण करना आवश्यक नहीं होगा, साथ ही इससे हमारी कार्यप्रणाली की संक्षिप्त सी झलक भी मिल जायेगी।

संसार के उपकार की, भाई चारे की, शांति-एकता-समता वगैरह की बातें सभी धर्मों और सम्प्रदायों के माध्यम

से कही जाती है—इस दृष्टि से आर्यसमाज भी पीछे नहीं। कोई दो राय नहीं—इनमें से बहुतों ने काफी कुछ किया है, कुछ कर भी रहे हैं—लेकिन इसे भी नहीं नकारा जा सकता कि इन तमाम कोशिशों के बावजूद जिस दर से दुनिया में आदमी की तादाद बढ़ी है—ठीक इससे विपरीत आदमीयत का प्रतिशत घटा है। ······स्पष्ट है समाज के नेतृत्व में कोई बुनियादी दोष है।

वक्त बड़ी तेजी से बदलता है और हर एक काल की सारी सामाजिक परिस्थितियाँ पहले से भिन्न हो जाती हैं, परिस्थितियाँ तो बदल जाती हैं किन्तु यह बदलाव एक 'सामाजिक मानसिकता' निर्मित कर देता है जो बड़ी कठिनाई से बदलती है। इस मानसिकता से आजाद हुए बगैर हम युग सत्य नहीं पा सकते और युग सत्य जाने बगैर युग परिवर्तन की बात—हथेली पर सरसों उगाने जैसी है। दुर्भाग्य से किताबों तथा भाषणों को युगसत्य का साधन मान लिया गया। इससे उपदेशों की दुकानदारी तो चली किन्तु ज्ञान के व्यामोह ने सारे समाज को इतनी सारी अनर्गल मान्यताओं से बाँध लिया है कि युगसत्य की सम्भावनायें ही नष्ट हो चली। कितने धोखे में हैं हम! एक कागज पर 'रोटी' लिख लेने भर से किसे रोटी मिलती है? पानी से प्यास बुझती है। रट लेने से भला किस की प्यास बुझती है? शब्दों में किसी को सत्य नहीं मिला—न ही मिलेगा। दया, मानव सेवा, प्रेम आदि के मन्त्रों की व्याख्या करने से किसी को भी इनके सत्य की अनुभूति नहीं हो सकती। तात्पर्य यह नहीं कि 'ज्ञान' बिल्कुल निरर्थक है, अपितु यह कि 'शब्दों और संज्ञाओं' का संकलित ज्ञान बेकार है। पर जब यही ज्ञान अनुभूति से निकलने वाला ज्ञान दूसरे शब्दों में भोगे हुए यथार्थ की अभिव्यक्ति हो जाये तो निहायत जरूरी और कामयाब ज्ञान होगा।

सत्य (या युगसत्य) की प्राप्ति का रास्ता यजुर्वेद में इस प्रकार बताया है—संसार में सत्य का मुँह सुनहले ढंकने से ढंका है आप उसे परे हटा दीजिए ताकि सत्य के दर्शन किये जा सकें।

यहाँ न तो सत्य ही कोई पदार्थ है और न सुनहला ढंकना ही। सोने का यहाँ मतलब धन, वैभव, सम्पन्नता अर्थ आदि से है। धन का मोह मस्तिष्क में अनेकों कुसंस्कारों की पर्तें वह सुनहला ढकना है जिसे हटा कर ही युगसत्य को पाया जा सकता है।

हमारी आज की समूची सामाजिक मानसिकता 'सोने की मानसिकता' है। हर चीज का पैमाना आज दौलत है। समाज में वही सुखी—प्रतिष्ठा और आदर का पात्र है जिसके पास दौलत है। अपने निर्धन भाई या बाप से लोग बात करने में अपनी बेइज्जती समझते हैं। बड़े-बड़े पद पदवियाँ ही नहीं—नारियों के जिस्म सरे बाजार—इस दौलत से खरीदे जा सकते हैं। विश्वास, ईमान-इन्सानियत सभी कुछ बेकार सा है दौलत के सामने। अर्थ या धन तब तक दोषी नहीं हो सकता जब तक कि सोने की मानसिकता पैदा न हो जाये। किन्तु आज सर्वत्र इसी मानसिकता का साम्राज्य है। धन के मोह ने ही पूरे मानव समाज को स्पष्टतः दो भागों में तोड़कर रख दिया है। एक वे हैं जिन्हें पेट भरने के लिए दो जून रोटी और लाज बचाने के लिए दो गज कपड़ा भी नसीब नहीं हो पाता दूसरे वे जिनकी आकांक्षायें आकाश और पाताल की सीमायें लाँघ रही हैं। कल्पना भी कितनी भयावह है। अमेरिका के एक नागरिक के पालतू कुत्ते का दैनिक खर्च—अफ्रीका, एशिया या लेटिन अमेरिका की कई गरीब जनजातियों के सामूहिक खर्चे से कहीं अधिक हो जाता है। आर्थिक असमानता की इस गहरी खाई को अनदेखा करके इधर-उधर की बात करना—अपने अल्प-ज्ञान या अमानवीय दुराग्रह का ही परिचय देता है:

हमारी कार्यप्रणाली का आधार ही इस अर्थ मानसिकता को नष्ट करना है। सच्चाई पर आधारित व्यवस्था भी तभी सम्भव है जब अर्थ का सामाजिक अवमूल्यन हो जाए।

दुर्भाग्य से आर्यसमाज का तथाकथित नेतावर्ग भी इस मानसिकता का पूरी तरह शिकार है। इस बात का इससे बड़ा प्रमाण क्या हो सकता है कि जब हम गरीबों का पक्ष लेते हैं, जब हम अत्याचार, शोषण केलिए उत्तरदायी मुनाफाखोर, पूंजीपतियों के खिलाफ कुछ भी बोलते या लिखते हैं—जब हम दुनिया की ढाई अरब—गरीब और बेजबान इन्सानियत की आवाज बनने की कोशिश करते हैं तो 'वसुधैव कुटुम्बकम्' के नाम की खाने वाले ये लोग अपना द्वेष 'कम्यूनिष्ट' या नास्तिक कह कर उगलते हैं भले ही इन्होंने कार्लमार्क्स की किसी एक किताब को छूआ तक न हो। इन नेताओं के चंगुल से आर्यसमाज को मुक्त कराना हमारा, नौजवान पीढ़ी का बुनियादी दायित्व है।

जरा व्यावहारिकता पर भी नजर डाली जाए। देश की बहुत सी शहरी आर्यसमाजों के प्रधान या मन्त्री अमीर लोग हैं जिनका पूरा जीवन बेईमानी और भ्रष्टाचरणों से भरा पड़ा है। साप्ताहिक या अन्य कार्यक्रमों में भले ही इनकी उपस्थिति चुनाव की जरूरी शर्त से भी कम हो, पदों व कुर्सियों पर चिपके रहना अपना जन्म सिद्ध अधिकार मानते हैं। अनेकों

आर्य भाइयों की खून और पसीने से बनाई गई समाज की सम्पत्ति को ये बेईमान लोग अपने घर की जागीर समझते हैं। दूसरी ओर समाज के अन्य सदस्य या अपनी गुलाम मानसिकता के कारण, स्वार्थों के कारण भी इन मठाधीशों की चाटुकारी करने में लगे रहते हैं। अथवा खून का घूंट पीकर चुपचाप सहते हैं। कालान्तर में फूट और विरोध का वातावरण बन जाता है। युवा सन्दर्भों में भी ६०-६० और ७०-७० साल के 'युवा' आर्यवीर ठेकेदारी कर रहे हैं।

इसका परिणाम साफ है। संसार के उपकार की दुहाई देने वालों का संसार मन्दिरों में ही कैद हो गया है और मठाधीश चांदनी चौक में या रामलीला मैदान में-- अथवा संसद सदस्यों की कालोनी में गुलछर्रे उड़ा रहे हैं। सभी ने अपनी-अपनी दुकानदारी जमा रखी है। अच्छा यह हुआ कि आज गुरुदेव दयानन्द नहीं हैं—अन्यथा उन्हीं के नाम की खाने वाले ये मठाधीश उनकी भी बोटी-बोटी बेच कर खा जाते। मैं आर्यसमाज के तमाम नेता नामधारियों से पूछना चाहूँगा—जवाब दो--मेरे लाखों आर्य भाइयों के सामने—क्या दिया है या दे रहे हो--तुम किसी गरीब मां के नग्न, सूखे स्तनों से चिपटे, दूध के अभाव में बिलख-बिलख कर जान देते मेरे देश के शैशव को? क्या दे रहे हो तुम—जूठे दानों पर बेतरह टूट पड़ने वाले, होटलों पर कप प्लेट धोते या ट्रेनों पर जेब काटते कैशोर्य को? क्या दे रहे हो--मुंह से सिगरेट का धुआं उड़ाकर काफी हाउसों में कहकहे लगाती—कालेजों में प्रेमिकायें खोजती—रोजगार दफ्तरों के इर्द-गिर्द घूमती जवानी को? वक्त से पहले ही बुढ़ापा ले आई जवानी को या चेहरे पर झुर्रियां, धंसी-धंसी आंखें--एक-एक पैसे के लिए गलियों से चौराहे तक कांपते हाथ फैलाते बुढ़ापे को? क्या कर रहे हो तुम गाँवों में बसे वास्तविक हिन्दुस्तान के लिए? थोड़ा भी आत्मबल हो तो जवाब दो --तुम खुद क्या कर रहे हो दयानन्द के सपने साकार करने के लिए? अन्यथा इन पद-पदवियों को छोड़कर नियमानुसार वानप्रस्थी या संन्यासी हो जाओ।

अब यहां मैं साफ-साफ कह देना चाहूँगा कि दयानन्द श्रद्धानन्द, लाजपतराय, लेखराम के जवान बेटे इतना जरूर समझने लगे हैं कि उन्हें किसी तरह भी गुमराह नहीं किया जा सकता। वे अपना बुनियादी दायित्व समझने लगे हैं और किसी भी कीमत पर इस ठेकेदारी को बर्दाश्त करने को तैयार नहीं हैं।

सत्य व्यवहार के बिना सुख नहीं

जो मनुष्य विद्या कम भी जानता हो पर दुष्ट व्यवहारों को छोड़कर धार्मिक होके खाने-पीने, बोलने-सुनने, उठने-बैठने, लेने-देने आदि व्यवहार सत्य से युक्त यथायोग्य करता है वह कहीं कभी दुःख को प्राप्त नहीं होता। और जो सम्पूर्ण विद्या को पढ़ के उत्तम व्यवहारों को छोड़ के दुष्ट कर्मों को करता है वह कहीं कभी सुख को प्राप्त नहीं हो सकता। इसलिए सब मनुष्यों को उचित है कि आप अपने लड़के-लड़की, इष्ट मित्र, अड़ौसी-पड़ौसी और स्वामी, भृत्य आदि को विद्या और सुशिक्षा से युक्त करके सर्वदा आनन्द करके रहें।

—महर्षि दयानन्द

जयप्रकाश नारायण के जीवन में

दीपावली की वह खौफनाक रात

—राधेश्याम शर्मा

जंगे आजादी के तेज तर्रार सिपाही श्री जयप्रकाश नारायण को देशभक्ति के जुर्म में १६४० में बिहार की सबसे अधिक भयानक हजारीबाग जेल में कैद कर दिया गया था। जेल के सींकचों में बन्द हुआ यह शेर बाहर निकलने के लिए छटपटा रहा था। छटपटाहट इसलिए नहीं थी कि वे जेल से दुखी थे बल्कि देश सेवा और जंगे आजादी में आगे बढ़कर जो रोल वे अदा कर रहे थे उससे उन्हें वंचित कर दिया गया था। उन्होंने यह तय कर लिया कि हजारी बाग की दीवारें कितनी भी मजबूत क्यों न हों इसे लांघना ही होगा। जेल के अन्दर जयप्रकाश जी को ऐसे समाचार मिल रहे थे कि अब देश के करोड़ों लोगों ने हर कीमत पर आजादी पाने का संकल्प ले लिया है। बस वे जेल से निकल भागने के लिए एकदम व्यग्र हो गए। उन्होंने जेल से निकल भागने का दिन दीपावली पर्व चुना।

दीपावली के दिन प्रातःकाल से ही विभिन्न वार्डों से जयप्रकाश जी के लिए निमन्त्रण आने लगे। कहीं से भोजन का तो कहीं से बैडमिन्टन खेलने का। दोपहर को जब एक साथी ने उनसे कहा कि आपका स्वास्थ्य खराब हो गया है आप बहुत कमजोर हैं भला ऐसी स्थिति में......तभी जयप्रकाश जी ने उन्हें शान्त किया और समझाया कि क्या तुम लोग हाथ-पैरों की ताकत से लड़ सकते हो? क्या आत्मिक शक्ति नाम की कोई चीज नहीं है? मैं भले ही शरीर से टूट गया हूं लेकिन दिल-दिमाग से एकदम नौजवान हूं। मेरे रास्ते में कोई रुकावट नहीं आयेगी यह मेरा विश्वास है।

दीपावली के दीपक शाम का अन्धेरा होते ही जगमगा उठे। इसके साथ ही जयप्रकाश जी व उनके साथी अपनी योजना के अनुसार अमावस्या के गहरे काले अन्धकार को चीरते हुए एक-एक करके ऊंची दीवार कूदकर भाग निकलने में सफल हो गये। सबसे पहले छलांग लगाने वालों में थे सूरजनारायण जी उनकी पहल का एकमात्र कारण यह था कि वह भागने में बड़े विकट थे। उन्हें दौड़ में पछाड़ने वाला व्यक्ति आस-पास नहीं मिल सकता था। उन्होंने सोचा कि यदि दीवार के उस पार खतरा भी हुआ तो मैं भाग निकलूंगा, यदि कुछ सामान्य जैसा रहा, तब आगे का क्रम ब-दस्तूर बना रहेगा।

हुआ भी ऐसा ही। बाहर उन्हें सब कुछ सामान्य नजर आया और उन्होंने संकेत देकर अन्य लोगों को आने का इशारा कर दिया। उसके बाद श्री शालिग-राम, जयप्रकाश जी, रामनन्दन, श्री योगेन्द्र शुक्ल तथा श्री गुलाली सब लोग सही सलामत नीचे उतर आये। वहां से धीरे-धीरे पेट के बल सरके और फिर स्थिति ठीक देखकर एक साथ वहां से दौड़ निकले।

सचमुच यह एक ऐतिहासिक घटना थी। ऐसी खूंखार जेल से बिना किसी बाहरी सहयोग के पूरे काफिले के साथ जयप्रकाश जी का भाग निकलना कोई आसान काम नहीं था। जयप्रकाश जी अपने साथियों के साथ कदम से कदम मिलाते हुए दौड़ में लगे हुए थे। थोड़ी दूर तक ही पहुंच पाये होंगे कि वे सभी पानी के एक गड्ढे में गिर पड़े। रहे सहे कपड़े भी भीग गये। जयप्रकाश जी तो पूरे कपड़े भी ढंग से नहीं पहने हुए थे। केवल ऊनी बंडी धारण किए हुए थे। उधर नवम्बर की सर्द, काली और सन्नाटों से भरी भयावह रात। वे सभी के सभी बिना किसी निश्चित दिशा के आगे चले जा रहे थे। उन्होंने सोचा कि पहले जेल की सीमा से काफी दूर निकल जायें, सही दिशा तो बाद में मिल जायेगी।

उन क्षणों की कल्पना करने से ही मन सिहर उठता है। कहां जयप्रकाश जी का दुर्बल शरीर और साइटिका से ग्रस्त पैर, और कहां इस यात्रा के पथरीले और कंटकाकीर्ण रास्ते। लगता था कि खुली हवा में आते ही उनके शरीर में अपार स्फूर्ति आगई थी।

कई घण्टों तक की निरन्तर दौड़ के बाद जेल की बुर्जियों से छनकर आने वाला प्रकाश लुप्त हो गया। जहां तहां पेड़ पगडण्डी दिखाई दे जाती थी। लेकिन प्रकाश के बाद सामने सिवाय घने जंगल के और कुछ भी नजर नहीं आया।

रह-रहकर कुछ क्षणों के लिए जयप्रकाश जी को

रुकना पड़ जाता था, फिर सभी साथी आकाश में टिमटिमाते सप्तर्षि-मण्डल से दिशा ज्ञान प्राप्त करने की कोशिश करते, अनुमान लगाकर वे एक दिशा ग्रहण कर लेते कि उन्हें उसी मार्ग से चलने पर अमुक रेलवे स्टेशन मिल सकेगा।

कुछ आगे चलकर जयप्रकाश जी ने सलाह दी कि इन वृक्षों की मोटी टहनियों को तोड़कर एक-एक डण्डा तैयार कर लें जिससे आगे बढ़ने में सहायता ली जा सके, ऐसा ही किया। ये लोग उस घने जंगल में थोड़ा ही आगे बढ़ पाये होंगे कि सन्नाटे में एक भयानक गर्जना सुनाई दी। समीप से ही किसी सिंह ने दहाड़ मारी थी। आसपास कुछ भगदड़ सी मच गई। छोटे-मोटे वन्य जीव घबराकर इधर-उधर भाग रहे थे। गनीमत हुई कि थोड़ी देर बाद यह गर्जना काफी दूर की ओर बढ़ती चली गई। ये लोग फिर आगे बढ़ गये।

इनमें से एक सज्जन के पास माचिस थी, इसलिए जंगल के सूखे पत्तों को समेट उसमें आग लगाकर कुछ गर्माहट पाने का प्रयास किया गया। यहीं कुछ देर इन लोगों ने विश्राम भी किया। लेकिन वे क्षण भी चिन्ता और आशंकाओं से बुरी तरह ग्रस्त थे। ऐसे में भला विश्राम कहां मिलता।

थोड़ा विश्राम करके ये लोग आगे की यात्रा पर चल पड़े। सुबह के प्रकाश में उन्हें एक दूसरे की शक्ल भी अजीब दिखाई देने लगीं। एक ओर शरीर बुरी तरह से थक चुके थे, दूसरी ओर पेट में चूहे से दौड़ रहे थे। सबने अपनी-अपनी जेबों की तलाशी ली। एक सज्जन के पास १०० रुपये का एक नोट था, लेकिन कौन भुनाता उसे? तभी शुक्ला जी को अपनी जेब में एक चवन्नी मिल गई, मगर उससे भी क्या होता? आसपास दुकान ही कहां थी।

कन्द-मूल-फल खाए

यद्यपि भूख के मारे इनकी जान पर बन आई थी, लेकिन फिर भी ये कदम से कदम मिलाकर आगे बढ़ते ही चले गये। तभी जयप्रकाश जी को ध्यान आया कि क्यों न गौर से वन वृक्षों को देखा जाए? हो सकता है कुछ कन्द-मूल ही खाने को उपलब्ध हो जाएं।

तत्काल १२ आंखें वृक्षों की टहनियों पर जा अटकीं, टकटकी लगाए एक-एक शाखा देखी गई। यकायक एक सज्जन को गूलर का पेड़ दिखाई दे गया। झटपट भागे उस ओर भागे। उस ओर जितने भी गूलर थे, सब तोड़ लिए गए। पूरे पेड़ पर से मुश्किल से १५-२० गूलर ही हाथ लग सके। इसके बाद जंगली करौंदे, झाड़ियों के बेर तथा कुछ आंवले मिले, जिन्हें खाकर थोड़ी बहुत भूख मिटाई गई।

कुछ देर रुककर ये लोग फिर आगे की मंजिल की ओर बढ़े। कई मील चलने के बाद इन्हें एक छोटी सी दुकान नजर आई। वहीं से चवन्नी का चूड़ा लाकर थोड़ा-थोड़ा बांट खाया। जयप्रकाश जी ने कहा सारा चूड़ा एक साथ न खाओ, न जाने अब आगे कहां तक चलना होगा। इसलिए शेष यात्रा के लिए आधा बचाकर रख लो।

यद्यपि उस मामूली मात्रा का भोग लगाने से पेट को कोई विशेष तसल्ली नहीं मिली थी, लेकिन किया भी क्या जाता। पेट तो कहता है कि जो कुछ बचा है उसे भी लाओ।

यात्रा के दौरान सभी के पैरों का बुरा हाल था। तलवे फटने लगे थे, जयप्रकाश जी के पैरों से खून बहने लगा था। साथियों ने अपने कपड़े फाड़कर उनके तलवों पर पट्टी बांध दी। आगे बढ़े तो वह कपड़ा भी लहूलुहान हो गया, फिर भी रुकने का नाम नहीं लिया गया। सब लोग बढ़ते ही चले गये।

कुछ देर बाद आकाश के मौन वातावरण को थर्राते हुए कुछ जहाज उड़ते दिखाई पड़े। इससे यह भी अनुमान लगा कि वे लोग रांची हवाई अड्डे के समीप पहुँच गये हैं। यह आशंका भी मन में ध्यान हो गई कि कहीं ये हवाई जहाज खोज खबर लेने के लिऐ तो उड़ानें नहीं भर रहे? कुछ भी हो सकता था। इसलिए जयप्रकाश जी ने सभी को परामर्श दिया कि सब एक साथ मिलकर न चलें, अलग-अलग होकर आगे बढ़ने की कोशिश करते रहें।

अलग-अलग होकर वे अभी कुछ कदम ही आगे बढ़े होंगे कि साइटिका का दर्द उनके पैरों में जोर से शुरु हो गया। ऐसी स्थिति में वे एक-दो कदम चलने की स्थिति में भी नहीं रहे। इसके बाद श्री योगेन्द्र शुक्ल तथा शालिगराम जी उन्हें उठाकर आगे बढ़ने लगे। वैसे ये दोनों व्यक्ति भी बुरी तरह से थके हुए थे, फिर पेट भी एकदम खाली था। इन सभी कठिनाइयों के रहते हुए भी वे अपने प्यारे साथी को सहारा देते

हुए आगे बढ़ते जा रहे थे।

अपने साथियों की बलिष्ठ भुजाओं पर झूलते हुए जयप्रकाश जी उस बीहड़ से दूर निकलते जा रहे थे, चलते-चलते फिर शाम का अंधेरा चारों ओर से घिर आया। कहते हैं जब आदमी पर बुरा वक्त आता है तब कहीं से मदद नहीं मिलती। ठीक यही बात यजप्रकाश जी के साथ भी उस यात्रा के दौरान गुजरी। अचानक उन्हें रास्ते में एक बैलगाड़ी दिखाई दी। उसके करीब पहुंचकर गाड़ीवान से अनुरोध किया गया कि वह उन सभी को अपनी गाड़ी में बिठा ले, लेकिन आश्चर्य की बात कि न मालूम गाड़ीवाले के दिमाग में कौनसी शंका जागी कि उसने साफ इन्कार कर दिया।

गाड़ीवान के इस रवैये से सबको बड़ा अफसोस हुआ। तभी एक साथी के मन में आया कि शायद गाड़ीवाला लालची न हो। इसी उद्देश्य से उसके सामने एक कलाई घड़ी पेश करते हुए एक साथी ने कहा, भैया, इसे अपने पास रख लो, लेकिन हमें थोड़ा सा सहारा जरूर दे दो। हमें जंगल में कुछ डाकुओं ने मिलकर लूट लिया है। हमारी रक्षा करो। लेकिन इन चतुर व्यक्तियों के किसी भी एक संवाद का उस गाड़ीवान पर लेशमात्र भी प्रभाव नहीं पड़ा। अन्त में सब लोग निराश हो अपने ही पैरों के भरोसे आगे बढ़ते चले गये।

आधी रात तक निरन्तर चलते रहे। जब इनके पैरों ने पूरी तरह जवाब दे दिया, तब एक स्थान पर चुपचाप बैठ गये। थोड़ी देर सांस लेने के बाद एक साथी ने पत्ते एकत्र करके आग जलाई और उससे अपने अपने शरीरों को थोड़ा गर्म किया। उसी स्थान पर सबने कुछ घण्टे हल्की सी नींद ली। इससे पूर्व कि सूर्य की किरणें चारों ओर के वातावरण को उजलाएं, वे उठकर आगे की यात्रा के लिये चल पड़े।

उस दिन दोपहर को इन्हें एक ऐसा स्थान सामने आया जिसे देखकर शालिगराम जी को अपने एक मित्र का अता पता दिखायी पड़ने लगा। शालिगराम जी अपने साथ दो साथियों को लेकर आगे बढ़ गये और जयप्रकाश जी तथा अन्य दो को वहीं जंगल में एक झाडी के निकट विश्राम करने को छोड़ गये। चूंकि शालिगराम जी का अक्सर वहां आना जाना रहता था। इसलिए उन्हें गाँव को ढूंढ निकालने में अधिक समय खर्च नहीं करना पड़ा।

इससे पूर्व कि शालिगराम जी अपने प्रिय मित्र दूबेजी के घर पहुँचने के लिए गांव में प्रवेश करें, उन्हें एक खलिहान से होकर गुजरना पड़ा। वहां काम कर रहे कृषक बन्धु को जब उन्होंने गौर से देखा तो वे उछल पड़े। वास्तव में वही उनके मित्र दूबेजी थे। दूबेजी ने सब को बड़े प्यार से गले लगाया और घर चलकर भोजन ग्रहण करने का अनुरोध किया। तत्काल उन्हें यह भी ख्याल हो उठा कि शालिगराम जी से सभी लोग परिचित हैं। इसलिए हो सकता है कोई व्यक्ति इस बात की सूचना पुलिस तक पहुँचा दे। इसलिए उन्होंने शालिगराम जी को तो वहीं खेत पर छोड़ा और शुक्ल जी व सूरजनारायण जी ने उनके घर पर जमकर भोजन किया।

शालिगराम जी ने वहीं १०० रुपये का नोट भी भुनवा लिया और सभी के लिए कुछ कपड़े खरीदे। कुछ ही देर बाद दूबेजी खेत पर दोनों मित्रों के साथ वापस आए। साथियों के लिए कुछ सामान भी ले आये। सब इकट्ठे होकर जंगल में पहुंचे जहां जय-प्रकाश जी अपने मित्रों के साथ बेरों की झाड़ियों से बेर चुन कर खा रहे थे और अपने खाली पेट को सांत्वना देने का असफल प्रयास कर रहे थे।

थोड़ी देर बाद सभी मित्र एक स्थान पर पहुंच कर मिल गए। शालिगराम जी से दूबेजी के सद्भाव की चर्चा सुनकर जयप्रकाश जी गद्गद् हो उठते थे। दूबे जी ने इन सभी को आगे पहुंचाने तक की भी व्यवस्था कर दी थी। उन्होंने इनके लिए एक छोटे आकार की बैलगाड़ी दे दी, जिसमें बैठ ये सभी वहां से आगे की यात्रा पर बढ़ गए।

इस यात्रा का दृश्य भी एकदम नाटक जैसा लगता है। उस गाड़ी में जयप्रकाश जी तथा अन्य घायल साथियों को बिठा दिया गया तथा दो अन्य साथी अपने कन्धे पर कुदालें लेकर गाड़ी के पीछे-पीछे चल पड़े।

भगवान ने इन सभी लोगों पर कृपा की। ये सभी सही सलामत गया जिले में प्रवेश किये बैलगाड़ी को वापस कर दिया गया और यहां आने पर एक सुरक्षित स्थान पर पहुँचकर सभी लोग कई दिनों की लम्बी और कष्टकर यात्रा की थकान उतारने लगे। सुबह प्रकाश फैलने पर इनकी नींद जब खुली तो इन्हें उस जमीन को देखकर विश्वास ही नहीं होता कि ये लोग इसी कंकरीली जमीन पर आराम की नींद सो गये थे। ●

समाजवाद की दुश्मन ! अंग्रेजी

● डा० वेदप्रताप वैदिक

अंग्रेजी ने हमारे देश में गैर-बराबरी को बढ़ाया है। मैं यह नहीं कहता कि हमारे देश में जो आर्थिक असमानता दिखाई पड़ती है उसका एकमात्र कारण अंग्रेजी है लेकिन यह एक निर्विवाद सत्य है कि गैर-बराबरी को कायम रखने और वढ़ाने में अंग्रेजी का पूरा-पूरा हाथ है।

अंग्रेजी तालीम के जरिये गैर-बराबरी का बीज बचपन में ही बो दिया जाता है। थोड़े-से बच्चे 'कॉन्वेन्ट' में पढ़ते हैं और बहुत-से बच्चे टाटपट्टी पाठशालाओं में। इसका कारण योग्यता नहीं है बल्कि बच्चे के माता पिता की खर्च की हैसियत है। यदि वे ज्यादा खर्च कर सकें, १०० या २०० रुपये महीना, तो उनके बच्चे 'उत्कृष्ट' स्कूलों में पढ़ेंगे, अन्यथा देश के शेष बच्चों के लिए 'निकृष्ट' स्कूलों की शिक्षा तो है ही। 'कॉन्वेन्ट' की क्या विशेषता है ? कौनसी 'उत्कृष्टता' या ऊँचापन है, इनमें ? 'कॉन्वेन्ट' में चमक-दमक वाली वेश-भूषा, आरामदेह मेज-कुर्सी, खेल और मनोरन्जन के प्रचुर साधन तथा घर से आने जाने के लिए वाहन की व्यवस्था तो होती ही है लेकिन उसकी आत्मा है—अंग्रेजी की पढ़ाई ! यह अंग्रेजी माध्यम की पढ़ाई बच्चे को बहुत अधिक प्रवीण बनाती हो, कुशाग्र-बुद्धि बनाती हो या उसकी समझ का विस्तार करती हो, ऐसी बात नहीं है। यह सर्वसम्मत तथ्य है कि विदेशी माध्यम की पढ़ाई बच्चे को रट-तोता, नकलची और आलसी बनाती है। फिर भी माता-पिता अपने बच्चों को अंग्रजी स्कूलों में भेजने के लिए क्यों लालायित रहते हैं।

सिर्फ इसलिए कि अंग्रेजी एक पुल है, जो शिक्षा को नौकरी से जोड़ता है। हर माता पिता चाहते हैं कि हमारा बच्चा इस पुल पर चढ़ जाए। भारत की हर बड़ी नौकरी के लिए, पद के लिए, लाभ के लिए एक सभ्य और सुसंस्कृत जीवन बिताने के लिए, अंग्रेजी को अनिवार्य बना दिया गया है। इस अनिवार्यता को सहने के लिए, इस मजबूरी से पार पाने के लिए माता-पिता बच्चों को 'कॉन्वेन्ट' में भेजते हैं। 'कॉन्वेन्ट' में अपने बच्चों को कौन भेज सकते है ? कितने लोग भेज सकते हैं ? सिर्फ मुट्ठीभर लोग ! यही छोटा सा वर्ग पहले से ही सुविधासम्पन्न होता है और इसी के उत्तराधिकारी नई सुविधाओं पर कब्जा कर लेते हैं। टाटपट्टी स्कूलों में पढ़े हुए करोड़ों बच्चों के लिए कोई उम्मीद नहीं है, उबरने का कोई भरोसा नहीं है, आशा की कोई किरण नही है। सुविधाओं पर, अवसरों पर कब्जा करने की धारावाहिकता पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलती रहती है। क्या यह समाजवाद का पूर्ण निषेध नहीं है ?

सुविधाओं और अवसरों की यह लूटपाट भी चलती रहे और जनता के सामने एक मासूम मुखड़ा भी बना रहे, इस चमत्कार को टिकाए रखने में अंग्रेजी स्कूल बड़ी मदद करते हैं। अंग्रेजी स्कूल में जाने वाले बच्चों की नसों में प्रारम्भ से ही गैर-बराबरी का जहर घोला जाता है। ये बच्चे अपने आपको कुंवर, राजकुंवर समझने लगते हैं और देश के अन्य करोड़ों बच्चों को हिकारत की नजर से देखते हैं। इसका कारण यह नहीं है कि वे अधिक बुद्धिमान हैं। जो रटता है, घोटा लगाता है, वह बुद्धिमान कैसे हो सकता है ? अंग्रेजी स्कूल के लड़के अपनी बुद्धि की इस कमी को पूरा करते हैं, खर्चीले ताम-झाम से जैसे कि बदसूरत औरते सुन्दर दिखने के लिए सोना लाद लेती हैं। और दुर्भाग्य यह है कि अपने समाजवाद में सोने की कीमत सुन्दरता से अधिक है। नौकरियों में, भविष्य के अवसरों में बुद्धि की परीक्षा नहीं होती, योग्यता की परीक्षा नहीं होती बल्कि अंग्रेजी ज्ञान की परीक्षा होती है।

हमारी फौज की परीक्षा में क्या होता है ? अंग्रेजी भाषा की अनिवार्य परीक्षा होती है और दूसरे विषयों की भी परीक्षा अंग्रेजी माध्यम से होती है। अंग्रेजी का फौज से क्या लेना देना ? दुनिया के बड़े-

बड़े फौजी जनरल अंग्रेजी नहीं जानते ! चंगेजखान, बाबर, नेपोलियन, शैबानी खान, रोमेल, मार्शल ग्रेचको और जनरल गियाप जैसे लोगों की फौजी शिक्षा क्या अंग्रेजी में हुई है ? फौज में तो बहादुरी की, नेतृत्व की, निशानेबाजी की, शारीरिक क्षमता की और दुश्मन के विरुद्ध उचित रणनीति बनाने की क्षमता की की परीक्षा होनी चाहिए। कोई जवान इन सब गुणों में निष्णात हो लेकिन यदि अंग्रेजी नहीं जाने तो फौज का अफसर नहीं बन सकता। वह एक साधारण जवान बनने के लिए अभिशप्त है। यह कहने की जरूरत नहीं है कि एक साधारण जवान और फौज के अफसरों के बीच असमानता की पाताल जितनी गहरी खाई होती है। यह असमानता उपरोक्त अन्याय को खाज में कोढ़ का काम करती है। क्योंकि अफसरों के पद,जिन पर जवानों की तुलना में १०० से लेकर १००० गुना तक ज्यादा खर्च किया जाता है, केवल उसी वर्ग के लिए आरक्षित हो जाते हैं, जो 'कॉन्वेन्ट' में पढ़ा हो, जो अंग्रेजी फर्राटे से बोलता हो या अपने पुराने पुराने मालिकों की हूबहू नकल करने में निष्णात हो। जो गरीबों के लड़के हैं, वे 'डिफेन्स एकेडेमी' का परीक्षा में बैठने का साहस भी नहीं कर सकते। योग्यता एक छोटे से वर्ग की बपौती बनकर रह जाती है। यही वर्ग है जो सारे देश पर छाया हुआ है। यह समाजवाद कैसे ला सकता है।

एक समतामूलक समाज के निर्माण करने वाले लोगों का जनता से कुछ तो सीधा रिश्ता होना चाहिए। लेकिन जो शासकगण हैं, शासकगण से मेरा मतलब उन सब लोगों से है, जो सम्पन्न हैं, उच्च वर्ण के हैं, शहरों में रहते हैं, वे जनता से बिल्कुल दूर जा पड़ते हैं। जब वे बच्चे होते हैं, तो अलग-थलग स्कूलों में पढ़ते हैं और जब उनके बच्चे हो जाते हैं तो वे भी इन्ही स्कूलों में पढ़ते हैं। इस वर्ग को क्या मालूम कि टाटपट्टी स्कूलों की टपकती छत के नीचे बैठने का मतलब क्या होता है ? ये क्या जाने कि पेशाब की बदबू और कक्षा की पढ़ाई में क्या रिश्ता है ? इस वर्ग का बच्चा घर आकर अपने पिताजी से यह शिकायत क्योंकर करेगा कि सौ रुपल्ली पानेवाला मास्टर अपनी झुंझलाहट हम पर निकालता है। हमारे देश के नीति-निर्माता वर्ग को इन सब परिस्थितियों को भोगना ही नहीं पड़ता, इसीलिए चुनिन्दा स्कूलों पर करोड़ों रुपये खर्च किये जाते हैं और करोड़ों बच्चे जिन पाठशालाओं में पढ़ते हैं, वे अनवरत उपेक्षा की शिकार बनी रहती हैं। जिस दिन देश में 'कॉन्वेन्ट' नहीं होगा और शासक वर्ग का बच्चा भी टाटपट्टी स्कूल में पढ़ेगा और घर आकर स्कूल की बदबू की, अंधेरे की, पिटाई की चर्चा करेगा, उसी दिन देश की शिक्षा का नक्शा बदल जाएगा। जिस दिन रेल की तृतीय श्रेणी में मन्त्री धक्के खाएगा, अफसर को पाखाने के पास रात काटनी पड़ेगी और नेता को दरवाजे से लटकते हुए सफर करना पड़ेगा, उस दिन हिन्दुस्तान की रेलों को सुधारने के लिए सही चिन्तन प्रारम्भ होगा। उसी दिन समाजवाद नारा नहीं रहकर, एक सच्चाई बन जाएगा।

लेकिन जब तक देश में अनिवार्य अंग्रेजी चलेगी—शिक्षा में, न्याय में, नौकरी में, चिकित्सा में, फौज में,—समाजवाद आ नहीं सकता। अंग्रेजी शिक्षा बचपन से ही बच्चों में गैर-बराबरी और पाखंड की भावना को जन्म देती है। आप उत्पादन और वितरण की प्रणाली में तब तक सुधार नहीं कर सकते, जब तक कि देश के बच्चों में बचपन से ही समतामूलक मनोभूमि तैयार नहीं हो। ये अंग्रेजी स्कूल समाजवाद की इस प्रथम आवश्यकता की जड़ों में निरन्तर मट्ठा डालने का प्रयत्न करते रहते हैं।

महाशय खेमसिंह की मण्डली द्वारा वेदप्रचार

श्री महाशय खेमसिंह आर्य की भजनमण्डली द्वारा महेन्द्रगढ़ एवं गुड़गावां ज़िलों की आर्यसमाजों में किए गये वेद प्रचार की सूची इस प्रकार है। उनकी मण्डली में पं० शिवचरण ढोलक वादक एवं ब्र० रघुनाथ सहायक के रूप में पूरे उत्साह के साथ काम कर रहे हैं। यह कार्यक्रम १६ सितम्बर से १३ अक्टूबर तक का है। इनमें क्रमशः कनीना, खामपुर, नारनौल, ममारिका, कादीपुरी, मढाना, चण्डालिया, ढाणी, आर्यसमाज खरकड़ी मोहल्ला नारनौल, अटेली, सिलारपुर तोतड़िया, मोकूता, शोभापुर, सेखा, मोहम्मदपुर, कविस्थल, बालघन, हसनपुर, होडल, हथीन आदि आर्यसमाजें शामिल हैं।

सूरज सी आस्था

डा० देवेन्द्र आर्य
एम० ए०, पी० एच० डी०

चारों ओर घटाटोप अंधकार
कुहरा और धुन्ध इतना
कि जैसे एक विराट महाशून्य
भीतर और बाहर एक खालीपन
और एक कुम्भकर्णी नींद।
लगता था कि जैसे किसी ने
प्रबुद्ध चेतना को अतल में डुबो दिया है
या सात तालों में कैद कर
आत्महत्या की स्थिति भोगने पर
मजबूर कर दिया है
या कि जैसे किसी ने एक अज्ञानावरण
सभी पर डाल दिया हो
और दीमकों का पूरा हुजूम
चूहों का काफिला
गिद्ध-चीलों का आवारा झुंड
अपने-अपने ढंग से नोंच-कुतर रहा हो
देश की सभ्यता और संस्कृति का नंगा शरी
या कि जैसे—एक समूची दिशा
कहीं बीहड़ में जाकर खो गई है
या फिर घूम फिर कर लौट आई है
उन स्थानों पर
जहां नशीली आंखों से टपकती है
मात्र वासना की जिस्मानी गंध
मतान्धता अहं का बदहवास पागलपन
और कुरीतियों के जंजाल का
दिमागी दिवालियापन।
लगता था कि जैसे समूचा देश
पंखहीन बेबस पक्षी सा
धीरे धीरे अजगरी-गर्त के मुहाने तक आ गया है
और पहरेदार कहीं गहरी तानकर सो गया है
निरपेक्ष और निर्द्वन्द्व सा...
लेकिन, मिट्टी की उर्जा
जिसने सदियों से
सूरज सी आस्था को संजोया है, पाला है
कहीं भीतर से कसमसा उठी
और ज्वालामुखियों के विध्वंसक कण
एक-एक कर सिमटने लगे
पल-पल होने लगा निर्मित
मजबूत फौलादि इरादों में बंधा जिस्म
रोशनी का पूरा सैलाब
ऋचाओं से पोषित आदि स्वर-ब्रह्म
और व्यापक ऊर्जस्वित बोध
जिसने एक दिन
'टंकारा' में
किरणों को मुट्ठी में बाँधे
धरती को पहली बार चूमा था
मुझे याद है—तब
घटाटोप अंधकार का वृत्र
पहली बार इतना अधिक त्रस्त हुआ था
शायद इसलिए कि—
एक नहीं
सदियों का दधीचि
पूरी पीढ़ी के साथ वज्र बनाने में जुटा था
और 'शंकर' का 'मूल' आनन्द
विषपायी कण्ठ लिए
त्रिशूल और त्रिनेत्र के साथ
धीरे-धीरे कहीं सुलग रहा था
शिवरात्रि का 'मूषक-

वह बिन्दु था
जहाँ से समस्त दिशाओं को
तेज भावनात्मक मोड़ लेना था
मैदानों से गिरि-कन्दराओं तक
जो एक दिन उसे
'प्रज्ञाचक्षु' के द्वार तक
मथुरा छोड़ आया था
वहां-कालिन्दी ने
एक-एक कर तमस् के सभी उपादानों को
लील लिया था
और हिरण्मय पात्र से निकाल कर
शाश्वत सत्य को दोनों हाथों से मुक्त बिखेर दिया था
वहाँ, जहां उसे शतधा होकर
भरी पूरी एक फसल तैयार करनी थी
और 'पाखंड खंडिनी पताका' बन कर
अज्ञान, तमिस्रा और मदांधता की छाती में
सहस्रों कीलें ठोंकनी थी।
मैंने कहा न !

सूरज सी आस्था लेकर जन्मा था वह
वैदिक सूर्य को
आस्थाओं की हवाओं में गुंजाता
अमरत्व की ऊंचाइयों तक उठकर ही
वह दयानन्द बना था।
और युगों तक परिवेश को
क्षितिज की अनन्त सीमाओं तक
देदीप्यमान करने के लिए
वह
तिल तिल कर गला था
पीढ़ियों के रक्ताणु
मुक्त वातायनों से गगन तक झांककर
संसद के गुम्बदों पर बैठ
खुले हाथों से
देश के झण्डे को उठा सकें
ऊँचा, बहुत ऊँचा…।
अनेक जन्मों के ऋण को

एक ही जन्म में चुकाने वाला वह
सही मायनों में था एक 'सत्यार्थ प्रकाश' ऐसा
जिसके ध्रुव अटल दो नक्षत्र
बहुत गहरे तक बींध गये थे
घने अन्धकार की पर्तों को
और जिसके मजबूत इरादे
न जाने कितनी बार
आग का दरिया लांघ कर
लौट आये थे हम सब के बीच
शायद यह बताने कि—

मरता वह नहीं—
जो मौत को सिरहाने बांधकर सोता है
वरन्—मरता है वह
जिसे जिन्दगी जीने का सलीका नहीं आता
वह—
मौत और जिन्दगी के दायरे से ऊपर उठा
एक नरपुंगव था
एक ज्योतित ब्रह्मलीन ब्रह्मतेज था
जो भूत, भविष्य और वर्तमान के
सभी आयामों को नाप कर
ऊँचे पर्वतों से पाखण्ड, विद्वेष और हठवादिता को
सम्पूर्ण ध्वस्त कर
आदि ज्ञान गंगा की शांत लहर को
धरती तक ले आया था।

यह—
सही मायनों में
सूरज सी आस्था लिए
इस मिट्टी की ऊर्जा था
ज्वालामुखी था
वह—
मूल शंकर था
दया+आनन्द=दयानन्द था
रोशनी का
कभी न थकने वाला सैलाब था…।

महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती : कृतित्व एवं व्यक्तित्व

• मञ्जु लता एम० ए०

हर वर्ष ज्योति-पर्व के साथ ही एक ज्योतिर्मय स्वरूप साकार हो उठता है जिसका आलोक इस धराधाम पर यत्र-तत्र दृष्टि गोचर हो रहा है। इस ज्योतिर्मय स्वरूप का वर्णन एवं व्याख्या किसी दायरे में सिमिट कर नहीं की जा सकती। क्योंकि जैसे ही उसका वर्णन करने के लिए लेखनी चलती है एक विराट् स्वरूप समक्ष दिखाई पड़ता है और उसके अनेकों रूप प्रतिक्षण चित्रपट के समान बदलते चले जाते हैं। अगाध गुणों का सागर, कर्मक्षेत्र की विशालता और विविधता, उत्कृष्ट कोटि की विद्वत्ता, परमयोगी, अथाह तर्क, प्रेम और उपकार का पुञ्ज, ओज, तेज, ऐसे ही अनेकों स्वरूप उभरते चले जाते हैं। यह अनुपम स्वरूप विश्व की आशाओं एवं आकांक्षाओं के एकमात्र केन्द्र बिन्दु महर्षि दयानन्द का ही है। जिनकी सर्वतोमुखी क्रान्तिकारिता को वाणी-लेखनी अपने में समेटने में असफल हो जाती है। बड़े-बड़े महामानव, मनीषी भी महर्षि के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के समक्ष पराभूत हो जाते हैं। उनके हृदय-दर्पण में पड़ने वाले महर्षि के प्रतिबिम्ब से यह स्पष्ट हो जाता है। कुछ चित्र देखिए—

योगी अरविन्द जब महर्षि को जीवन संग्राम के प्रत्येक क्षेत्र में विजयी वीर की गरिमा से युक्त देखते हैं तो अभिभूत हो कह उठते हैं—

"जब मैं परमात्मा के कारखाने के इस दुर्दम्य कारीगर की मूर्ति का ध्यान करता हूँ तो संघर्ष के, संग्राम के विजय के, विजयी परिश्रम के झुंड के झुंड चित्र मेरे सामने आने लगते हैं, तब मैं कह उठता हूँ यह है दिव्य प्रकाश का सिपाही, महाप्रभु के संसार का वीरयोद्धा, मानव व उनकी संस्थाओं का सृजनहार, शिल्पकार और प्रकृति द्वारा आत्मा के समक्ष प्रस्तुत समस्त कठिनाइयों का अदम्य व निर्भीक विजेता। इस सबकी जो जबर्दस्त छाप मुझ पर पड़ती है वह है—आध्यात्मिक व्यावहार्यता की। इन दो शब्दों को जोड़ कर कह देना ही दयानन्द की परिभाषा कर देना है।"

वेदश्रवा विद्यार्थी कहते हैं—

"एक पल में मैं उन्हें एक महान् तेजस्वी ब्रह्मचारी के रूप में देखता हूं तो अगले ही क्षण वे मुझे एक महान् वैज्ञानिक के रूप में दिखाई देते हैं जो केवल सत्य का ही पुजारी है और जो प्रकृति के बड़े से बड़े रहस्य को तीक्ष्ण दृष्टि से देखता है, विचारता है और बिना किसी पक्षपात या भय के उन्हें प्रकट कर देता हैं। कभी मैं उन्हें एक अद्वितीय विद्वान्, तपस्वी ऋषि के रूप में देखता हूँ तो अगले क्षण वे मुझे एक ऐसे समाज सुधारक, महान् राजनीतिज्ञ के रूप में दिखाई देते हैं जिनके राष्ट्र प्रेम और भक्ति का दूसरा उदाहरण मिलना कठिन प्रतीत होता है।"

और अनुपम मेधा-शक्ति के स्वामी गुरुदत्त विद्यार्थी कहते हैं कि, महर्षि को समझने के लिए मुझे कम से कम तीन जन्म या तीन सौ वर्ष की आयु चाहिए।

वर्तमान काल में अनेकों महान् आत्माओं ने जन्म लिया किन्तु भारत के पुनरुत्थान और विश्व-मानवता के कल्याण की सर्वाङ्गीण योजना प्रस्तुत करने वाले एक मात्र महर्षि दयानन्द ही थे। उनके प्रादुर्भाव के समय की परिस्थितियां बड़ी भयावह थीं। भारत गुलामी की बेड़ियों में जकड़ा हुआ अनेकों अत्याचारों का ग्रास बन रहा था। पुरातन गौरव, वैभव कालावरण में धूमिल हो चुका था। छुआछूत मानवता का उपहास कर रही थी। गोवंश का ह्रास, महिलाओं की दशा शोचनीय थी। वेदों का वास्तविक अभिप्राय भुला दिया गया था और उनके नाम पर शोषण, पाखण्ड, अन्याय, अन्धविश्वास दनदना रहे थे। वाममार्गी तथा तांत्रिक मतों का प्राबल्य था। चारों ओर अज्ञानता और अन्याय का शासन था। नव-शिक्षितों के मस्तिष्क में ईसाई पादरी एवं अंग्रेजी शिक्षा पद्धति विष घोल रही थी। भारत ही क्या विश्व भर में 'धर्म' नाम की वस्तु सत्य से दूर अन्याय, पाखण्ड, अन्ध-

विश्वासों की पोषक, विज्ञान एवं बुद्धि के विरुद्ध थी धर्म के नाम पर मानव-मानव के लहू का प्यासा बन चुका था। ईश्वर, धर्म सब ढोंग और सीधे सरल लोगों को बहकाने के साधन थे।

ऐसे में वेदरश्मियों और ब्रह्मचर्य तेज से आलोकित महर्षि स्वामी दयानन्द मैदान में उतरे। उन्होंने निर्भीक घोषणा की वेद समस्त सत्य विद्याओं की पुस्तक है और विश्व की समस्त समस्याओं का समाधान वेद मार्ग पर चलने में ही संभव है। भारत को अंग्रेजों से मुक्त कराने के लिए उन्होंने विशिष्ट ढंग से सक्रिय भाग लिया उनके द्वारा प्रशस्त पथ पर ही राष्ट्रीय क्रान्ति का रथ आगे बढ़ पाया। प्राचीन भारत की गौरव गरिमा, पूर्वज ऋषि महर्षि, चक्रवर्ती सम्राटों की झलक दिखा कर भारतीय सन्तति को, जो सिर नीचा करके जी रही थी, स्वाभिमान से खड़ा कर दिया। विधर्मियों को शास्त्रार्थों की चुनौती देकर उनके छक्के छुड़ाने के साथ आर्य धर्म की श्रेष्ठता का भी कायल बना दिया। स्त्री शिक्षा, शिक्षा की गुरुकुल प्रणाली और देश की एक राष्ट्रभाषा के रूप में देवनागरी में लिखित हिन्दी को प्रतिष्ठित करने का युग प्रवर्तक घोष किया। उन्होंने लाखों व्यक्तियों के विचारों में क्रान्तिकारी परिवर्तन कर धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रान्ति की और साथ ही सशस्त्र क्रान्ति का सूत्रपात भी, जो अब इतिहास सिद्ध कर रहा है। महर्षि ने स्वराज्य, साम्राज्य और अखण्ड सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य की चर्चा उस समय की, जब कि स्वराज्य का विचार भी किसी के दिमाग में पैदा न हुआ था। उनका विचार था कि विश्व में सत्य और न्याय की प्रवृत्ति तभी हो सकती है जबकि वेदानुयायी आर्यों के हाथों में सार्वभौम चक्रवर्ती राज्य की बागडोर हो।

महर्षि दयानन्द ने विश्व-कल्याण की योजना बनाई 'वेद' के आधार पर। किन्तु वेदों का उस समय प्रचलित स्वरूप या तो मात्र कर्मकाण्ड की पुस्तक के रूप में था या फिर पाश्चात्य विचारकों की दृष्टि में जंगली गड़रियों के गीतों के रूप में। वेद के आधार पर एक बृहत् संस्कार व सुधार की योजना को कार्यान्वित करने से पूर्व उसके वास्तविक स्वरूप व अर्थ को जन-मानस के समक्ष प्रस्तुत करना आवश्यक था। ऐसे में अज्ञान भरे भाष्यों से वेदों का पुनरुद्धार महान् बौद्धिक साहस का कार्य था जो महर्षि ने कर दिखाया। वेदभाष्य की रचना का उद्देश्य स्पष्ट करते हुए महर्षि लिखते हैं—'मनुष्यों के हित के लिए और सत्यार्थ प्रकाशन के लिए ईश्वर के अनुग्रह से मैं यह वेद भाष्य प्रारम्भ करता हूं।"

महर्षि दयानन्द ने बताया कि वेद समस्त आध्यात्मिक और भौतिक विद्याओं का मूल है। वेदों के ज्ञान का प्रकाश सृष्टि के प्रारम्भ में अग्नि, वायु, आदित्य और अंगिरा नामक चार ऋषियों के अन्तःकरणों में मानव मात्र के ज्ञान व कल्याण के लिए किया गया तथा सर्वज्ञ परमात्मा का ज्ञान होने से वेद स्वतः प्रमाण है। वेद में सारा ज्ञान-विज्ञान बीज रूप में विद्यमान है। वेद के वास्तविक अर्थ को जानने के लिए प्राचीन ऋषियों-मुनियों के मार्ग पर चलना चाहिए जिनके आधार पर प्राचीन ऋषियों ने सत्यों की खोजें की थी। वेद सार्वजनिक; सार्वभौमिक हैं उसमें किसी व्यक्ति, देश, जाति, काल का इतिहास नहीं है। इसमें मनुष्य के वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय व अन्तराष्ट्रीय सब प्रकार के कर्त्तव्यों का बड़ी उत्तमता से प्रतिपादन किया गया है। साथ ही शारीरिक, आत्मिक व सामाजिक शक्तियों के विकास पर समान रूप से बल देकर सार्वभौम उत्कर्ष का समन्वयात्मक निरूपण किया गया है।

महर्षि की एक नूतन परन्तु प्राचीन परम्परा समन्वित तथा पूर्ण वैज्ञानिक व्याख्या ने विश्व के मनीषियों, विचारकों, धर्माचार्यों एवं वैज्ञानिकों को विस्मित करके रख दिया और वे सचाई को जानने के लिए उत्सुक हुए। योगी अरविन्द तो यहां तक कह बैठे—

"मेरा दृढ़ विश्वास बन गया है कि वेदों की व्याख्या के विषय में दयानन्द सत्य सूत्रों के कारण प्रथम भाष्य कर्त्ता के रूप में आवृत होंगे। दयानन्द की दिव्य दृष्टि ने ही पुरातन अज्ञान और युगों से चली आ रही मूर्खता के अन्धकार से आवृत दिव्य वस्तु को देखा।"

विश्व में फैले मतों, मजहबों, पाखण्डों, अन्धविश्वासों को जिनका सत्य से कोई नाता नहीं है, धर्म समझने वाले और इसी कारण विज्ञान और धर्म को परस्पर विरोधी मानने वाले महर्षि द्वारा प्रदर्शित वेदार्थ का अवलोकन कर कुछ कह उठे—वैदिक धर्म पूर्णतः वैज्ञानिक धर्म है। देखिए **W. D. Brown** क्या कहते हैं—

"Vedic Religion is a thoroughly scientific religion where religion and science meet hand in hand."

अर्थात् वैदिक धर्म एक पूर्णतया वैज्ञानिक धर्म है। जहां धर्म और विज्ञान हाथ में हाथ मिलाकर चलते हैं।

एक अन्य अमरीकन विदुषी श्रीमती हीलर विलोक्स लिखती हैं—

"India is the land of the great Vedas. The most remarkable works containing not only religious ideas on a perfect life, but also facts which all the science has since proved true."

अर्थात् यह भारत उन महान् वेदों की भूमि है जिनके अन्दर न केवल पूर्ण आदर्शमय जीवन के लिये धार्मिक तत्त्वों का ही निरूपण है अपितु उन सचाइयों का भी निर्देश है जिनको विज्ञान ने सत्य प्रमाणित किया है।

सत्य सनातन वैदिक सिद्धान्तों की पुनः स्थापना के लिए महर्षि दयानन्द ने 'आर्य समाज' की स्थापना की। समस्त संसार का उपकार करना इस संस्था का उद्देश्य है। श्री रैमजे मैकडानल्ड ने भी कहा कि आर्यसमाज तो समस्त संसार को वेदानुयायी बनाने का स्वप्न देखता है। एण्डरो जैकसन डेविस वैदिक व्यवस्थाओं की पूर्णता से अभिभूत हो आर्यसमाज आन्दोलन को आशाभरी दृष्टि से देखते हैं। उनका कहना है कि आर्यसमाज रूपी भट्टी में महर्षि दयानन्द द्वारा प्रज्वलित अग्नि को वह परम मांगलिक मानता है। यह अग्नि ही समस्त विश्व की व्यवस्था और नीति के दोषों को भस्मीभूत कर इस भूतल पर सुन्दर जीवन का नवनिर्माण करेगी, तब सर्वत्र सुख-शान्ति छा जायेगा।

आज महर्षि के प्रारम्भ किए हुए इस महान् कार्य को पूर्ण करने का भार उनके उत्तराधिकारी आर्यसमाज के कन्धों पर है। वैदिक धर्म, वैदिक राज्य-व्यवस्था, वैदिक-शिक्षा नीति, अर्थनीति आदि वेद प्रतिपादित संपूर्ण जीवन के कार्यक्रम में विश्वास रखने वाले महर्षि के मानस-पुत्रों का कर्त्तव्य है कि वे महान् श्रद्धानन्द के शब्दों में सोचे—

"क्या तुमने ऋषि-ऋण से मुक्त होने का कुछ भी प्रयत्न किया है? दीपमालिका की रात्रि को प्रकाश में बदलने के लिए जिस कर्मवीर ने प्राण अर्पण किये, उसका मुक्त आत्मा तुम्हें तुम्हारा कर्त्तव्य समझा रहा है, क्या तुम्हारे कान हैं कि तुम सुनो?

"समय आ गया है कि भारत-प्रजा वेद-मार्ग पर चलने को तैयार हो जाय। तुम नेता, प्रतिभाशाली (Gienius) लीडर, आचार्य बनने के स्थान में क्रियात्मक रूप से वेद-धर्म के अनुयायी बनो फिर वैदिक सिद्धान्तों के विषय में कुछ संशय न रहेगा।" ★

(पृष्ठ २२ का शेष)

रात हो या दिन हर समय पंडाल खचा-खच भरा हुआ नजर आता था। सम्मेलन में पूज्य स्वामी भीष्म जी महाराज, स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, क्रान्तिकारी भजनोपदेशक स्वामी रुद्रवेश जी व श्री ब्र० खेमसिंह जी ने आई हुयी जनता को सम्बोधित किया। सम्मेलन का संयोजन पं० ताराचन्द जी ने और प्रबन्ध व्यवस्था मा० रामपत आर्य कनीना मण्डी श्री जगदीश आर्य सरपंच सैद अलीपुर, मा० तुलसीराम आर्य घनौन्दा आदि कार्यकर्त्ताओं ने सम्भाली।

ग्राम घत्तीर (पलवल) में वेद कथा :-

पलवल तहसील के प्रसिद्ध आर्य ग्राम घत्तीर में गतदिनों वेदाचार्य स्वामी चन्द्रवेश जी महाराज की प्रभावशाली वेदकथा हुयी जिसमें स्वामी जी ने सात दिन तक वेदों के ऊपर प्रकाश डालते हुये इन्हें वर्तमान के साथ समन्वित करने के ऊपर बल दिया। आपने बताया कि बिना वैदिक व्यवस्था देश से भ्रष्टाचार एवं अनाचार नहीं मिट सकता। अतः देश में वेद के अनुसार व्यवस्था लागू करनी चाहिए। प्रमुख रूप से श्री चरणसिंह जी, विजयपाल जी व राधेलाल जी ने इस कथा का प्रबन्ध किया।

भैंसवान (गोहाना) में यजुर्वेद पारायण यज्ञ व आर्यसम्मेलन :—

ग्राम भैंसवान त० गोहाना में २ अगस्त से ८ अगस्त तक स्वामी चन्द्रवेश जी के ब्रह्मत्व में यजुर्वेद पारायणयज्ञ बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। अन्तिम दिन आर्य सम्मेलन एवं व्यायाम प्रदर्शन भी किया गया। ब्र० सूर्यदेव ने सात दिन तक बच्चों को व्यायाम का प्रशिक्षण भी दिया सम्मेलन में स्वामी इन्द्रवेश जी स्वामी चन्द्रवेश जी, स्वामी परमानन्द जी, जगवीरसिंह एडवोकेट, वानप्रस्थ नत्थूराम जी व प्रसिद्ध भजनोपदेशक चन्द्रभान आर्य ने भाग लिया। गांव में इस यज्ञ व सम्मेलन का भारी प्रभाव पड़ा और कई युवकों ने यज्ञोपवीत लिए तथा शराब छोड़ने की प्रतिज्ञा की। श्री सुखदयाल आर्य गोहाना, नन्दलाल आर्य खेड़ी ने भी भजन गाए। इस सारे कार्यक्रम की व्यवस्था व संयोजन मा० गुलाबसिंह आर्य ने की जो बधाई के पात्र हैं।

पूर्णमासी १६ अक्टूबर की साधक मण्डल की बैठक सम्पन्न :—

महर्षि दयानन्द साधु आश्रम गुरुकुल सिंहपुरा में हर पूर्णमासी को नियमित साधक मण्डल की बैठक होती है। इस बार लगभग ३५ साधक महानुभाव पधारे। १५ अक्टूबर की सायं को सभी लोग आश्रम में पहुंच गए थे। प्रातः ठीक चार बजे जागरण और शौचादि से निवृत्त होने के पश्चात् ध्यान एवं योगाभ्यास किया गया। स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज ने एक घण्टे का प्रवचन दिया और आसन भी करवाए गए। फिर स्नानादि के बाद यज्ञ एवं भजन व व्याख्यान हुए, भोजन करने के बाद लगभग तीन घण्टे तक साधक मण्डल की बैठकचली और आर्यसमाज में साधना की ओर लोगों को प्रवृत्त करने की योजना बनाई गई। यह बैठक हर पूर्णमासी को नियमित होती रहेगी। डा० धर्मवीर ★

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन

३०-३१ दिसम्बर, ७८ को गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में आर्यसमाज शक्ति नगर में, सभा की ८ अक्तूबर की अन्तरंग में निर्णय।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जिसमें पंजाब, हरयाणा, दिल्ली और गुरुकुल कांगड़ी आदि प्रान्तों की आर्यसमाजें शामिल हैं तथा इनके प्रतिनिधि इसके अधिकारियों का चुनाव करते हैं। यह तो आपको ज्ञात ही है कि आपातकाल के दौरान जब तत्कालीन सभा प्रधान स्वामी इन्द्रवेश जी जेल में चले गये तो उनकी अनुपस्थिति का लाभ उठाकर रामगोपाल शालवाले एण्ड कम्पनी ने इस विशाल संगठन को छिन्न-भिन्न कर इसकी करोड़ों की सम्पत्ति को लूटने का जबरदस्त षड्यन्त्र रचा। और आर्य जनता की आँखों में धूल झोंकने के लिए झूठे बयान देकर यह सिद्ध करने की कोशिश की कि विभाजन को स्वीकृति सभा प्रधान स्वामी इन्द्रवेश की अध्यक्षता में पहले ही मिल चुकी थी। परन्तु आर्य जनता इन धूर्त लोगों के कुकृत्यों को पिछले १५ वर्ष से अच्छी तरह से जानती थी, जब ये सभा को मुकदमों के माध्यम से अदालतों में घसीटते थे। और लाखों रुपया पानी की तरह से बहाते थे। इसलिए इनका तथा कथित विभाजन का षड्यन्त्र टांय-टांय फिस हो गया। अतः आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब अभी ज्यों की त्यों पांच प्रान्तों में आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं का कार्य भार सम्भालती है। श्री वीरेन्द्र की पंजाब सभा के ऊपर अदालत का स्टेआर्डर अभी भी जारी है और उसे सभा के नाम से आर्य जनता को बहकाकर अपना व्यापार एवं अखबार चमकाने की कोई इजाजत नहीं है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जिसके वर्तमान प्रधान स्वामी अग्निवेश जी है का वार्षिक साधारण अधिवेशन ३०-३१ दिसम्बर, १९७८ शनिवार, रविवार को ऐतिहासिक गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ में होने जा रहा है। यह महत्त्वपूर्ण निर्णय ८ अक्तूबर को सभा की अन्तरंग में किया गया है। सभी आर्यसमाजें अपना गत वर्ष का वेद-प्रचार दशांश एवं अखबार का शुल्क शीघ्र कार्यालय में जमा करवा दें। जिस समाज का वेदप्रचार दशांश आदि जमा नहीं होगा उसके प्रतिनिधि चुनाव में भाग नहीं ले सकेंगे। जिन्होंने जमा करवा दिया होगा उन्हें अपनी रसीद दिखानी पड़ेगी। अतः संगठन एवं सभा को मजबूत बनाने के लिए सभी आर्य महानुभाव पूरा सहयोग करें और सभा के अधिवेशन में भाग लेने की अभी से तैयारी करें।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का भविष्य उज्ज्वल। प्रशासक श्री बलराम उपाध्याय को १४॥ लाख की ग्रान्ट मिली। आर्य जनता एवं गुरुकुल के कर्मचारियों में प्रसन्नता की लहर, पर रामगोपाल व वीरेन्द्र की जुंडली में निराशा व हाय तोबा मची।

फार्मेसी की सी०बी०आई० द्वारा जाँच प्रारम्भ

गत एक वर्ष से अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा संस्थापित एवं उनके खून से सिंचित विश्वविख्यात संस्था गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय का भविष्य कुछ अनिश्चय की स्थिति में था। हर आर्य एवं गुरुकुल से प्रेम करने वाले व्यक्ति को यह भारी कष्ट था कि चन्द वे व्यक्ति जो पिछले लम्बे समय से गुरुकुल एवं गुरुकुल फार्मेसी को लूट कर खा रहे हैं आज भी इसको ईंट से ईंट बजाकर बन्द करवाने पर तुले हुये हैं। ये वही व्यक्ति हैं जिन्होंने फार्मेसी में १३॥ लाख का गबन किया हुआ है। जब से गुरुकुल विश्वविद्यालय कांगड़ी में स्वामी इन्द्रवेश, स्वामी अग्निवेश व उनके साथियों ने पदार्पण किया और इसके कुलपति पद को श्री विजयपालसिंह वर्मा ने सम्भाला उसी समय से गुरुकुल की स्थिति सुधरने लगी थी। परन्तु इनके कार्य में बाधा डालने के लिए श्री रामगोपाल, वीरेन्द्र व हरिप्रकाश ने हरिद्वार के गुण्डों को फार्मेसी से हजारों रुपये देकर कई बार कुलपति श्री विजयपाल सिंह, रजिस्ट्रार श्री बलजीतसिंह आर्य एवं अन्य कर्मचारियों पर कातिलाना हमले करवाये, गुरुकुल में चोरी करवाई, महिलाओं को बहकाकर अधिकारियों के पास भेजा और झूठे आरोप लगवाने की कोशिश

की, दिल्ली में शिक्षा मन्त्री व यू० जी० सी० के अधिकारियों को धोखे में देकर विश्वविद्यालय की ग्रान्ट रुकवाने का षड्यन्त्र करते रहे, अखबारों में झूठे बयान देकर ग्राम जनता को भी बर्गलाते रहे। परन्तु बधाई है श्री विजयपालसिंह वर्मा व श्री बलजीतसिंह आर्य को जिन्होंने इन घाघ लोगों से निरन्तर संघर्ष करके इस महान् संस्था को बचाया। एक वर्ष से सभी कर्मचारी एवं अधिकारी बिना वेतन लिए कार्य करते रहे और संस्था को बन्द होने की नौबत से बचाया।

अब गुरुकुल विश्वविद्यालय पर इलाहाबाद हाई-कोर्ट के सेवा मुक्त माननीय न्यायाधीश श्री बलराम उपाध्याय प्रशासक नियुक्त हो चुके हैं। और उन्होंने विश्वविद्यालय एवं गुरुकुल का कार्यभार सम्भाल लिया है तथा शीघ्र ही फार्मेसी को भी वे अपने अधीन लेने वाले हैं। ८ अक्तूबर को दिल्ली में युनिवर्सिटी ग्रान्ट कमीशन ने पूरी स्थिति को देखकर श्री उपाध्याय जी को १४।। लाख रुपये की ग्रान्ट दे दी। इस उपलब्धि से गुरुकुल कांगड़ी का भविष्य उज्ज्वल हो गया है। आर्य जनता के लिए यह खुशी का विषय है कि जिस महाशय कृष्ण ने अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द को चरित्रहीनता एवं गबन का आरपो लगाकर गुरुकुल से धक्के देकर निकाला था उसी के सपूत वीरेन्द्र तथा उसके गुरु रामगोपाल जो आज इस संस्था को बरबाद करने पर तुले हुए हैं, उनसे अब यह संस्था बच गई है। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने यह निर्णय किया है कि गुरुकुल के प्रशासक श्री बलराम उपाध्याय जी का पूरा सहयोग किया जाएगा। श्री उपाध्याय जी द्वारा ग्रान्ट लेने से पहले इसे रुकवाने के लिए रामगोपाल एण्ड कम्पनी ने सैंकड़ों व्यक्ति शिक्षा-मन्त्रालय एवं यू० जी० सी० में भेजकर ग्रान्ट न देने के लिए कुप्रयास किए पर वे चारो खाने चित गये। अब इस संस्था का कार्य आगे बढ़े यही प्रभु से प्रार्थना है।

फार्मेसी पर सी० बी० आई० जांच शुरु :—

विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी में हुये गबन एवं लाखों के घपले की केन्द्रीय जांच ब्यूरो ने जांच प्रारम्भ कर दी है। और यह निश्चित है कि अब श्री हरिप्रकाश व उसके साझीदारों को जेल की हवा खानी पड़ेगी। यह भी सुनने में आया है कि अब इस ग्रुप में आपस में मतभेद भी होने लगा है और एक दूसरे पर दोषारोपण प्रारम्भ कर दिए हैं। क्योंकि अब इनके पाप का घड़ा भर चुका है और सच्चाई सामने आने वाली है।

आर्य सम्मेलनों की धूम

विभिन्न जिलों में आर्य सम्मेलनों के आयोजन प्रारम्भ हो गये हैं जिनमें हजारों लोगों को वैदिक सिद्धान्तों से लाभान्वित किया जाता है।

आर्यसमाज भिवानी का सम्मेलन सम्पन्न

गत २९-३० सितम्बर व १ अक्तूबर को आर्य-समाज नया बाजार भिवानी में विशाल आर्य सम्मेलन मनाया गया जिसमें स्वामी इन्द्रवेश जी, स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आदित्यवेश जी, डा० रामप्रकाश जी, वेदप्रकाश सुमन, वेदप्रचार अधिष्ठाता, प्रसिद्ध आर्य भजनोपदेशक श्री बेगराज जी, पं० प्रभुदयाल जी आदि आर्य संन्यासियों, विद्वानों व भजनोपदेशकों ने भाग लिया। स्वामी इन्द्रवेश जी ने तीनों दिन तक जनता को साधना एवं तपस्या का जीवन अपनाने की प्रेरणा दी तथा संगठन को गांव-गांव तक फैलाने के लिए आह्वान किया। स्वामी अग्निवेश जी ने वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था को तोड़ कर एक विशुद्ध वैदिक समाजवादी व्यवस्था लाने के लिए युवकों को संघर्ष करने की अपील की। इसी तरह से डा० रामप्रकाश जी ने वैदिक वर्ण-आश्रम व्यवस्था की वैज्ञानिक व्याख्या की। स्वामी आदित्यवेश ने शराब बन्दी पर बल दिया और श्री बेगराज जी ने भजनों के माध्यम से वैदिक सिद्धान्तों पर प्रकाश डाला। इस सम्मेलन की सफलता का श्रेय श्री देशबन्धु जी शास्त्री एवं उनके अन्य सहयोगी श्री जगदीश सर्राफ, माता सुशीला आर्या, नरेन्द्र प्रभाकर, मनोहरलाल आनन्द एवं आर्य बाल सेवा आश्रम के अधिष्ठाता पं० दीनदयाल जी को है। सम्मेलन का संयोजन देशबन्धु शास्त्री कर रहे थे।

कविस्थल (महेन्द्रगढ़) में आर्य सम्मेलन

आर्यसमाज के प्रसिद्ध भजनोपदेशक एवं शास्त्रार्थ महारथी पं० ताराचन्द "वैदिक तोप" के जन्म स्थान ग्राम कविस्थल में ७-८ अक्तूबर को विशाल आर्य सम्मेलन का आयोजन किया गया। महेन्द्रगढ़ जिले के हजारों कार्यकर्त्ता इस अवसर पर पधारे हुये थे।

शेष पृष्ठ २० पर

-: सामयिकी :-

एक प्रशंसनीय कार्यक्रम :—

१७ अक्टूबरको मैं डा० धर्मवीर जी, सत्यवीर-सिंह विद्यालंकार खेरसिंह, व वेदप्रकाश श्रद्धेय स्वामी इन्द्रवेश जी के साथ सम्पूर्ण क्रान्ति हेतु नागरिक रैली में भाग लेने दिल्ली गये थे। स्वामी अग्निवेश जी पहले से ही वहाँ मौजूद थे। जब यह रैली बोट क्लब के लम्बे-चौड़े मैदानों में पहुँची तो हमारी नजर एक कोने में पड़ी जहां पर ओ३म् के झण्डे लगाकर स्थान छोड़ रखा था और लाऊड स्पीकर आदि की भी व्यवस्था कर रखी थी। और हमारे दिल में उमंग आई और इच्छा हुयी कि यह कार्य-क्रम भी देखना चाहिए। क्योंकि मन में एक शंका थी कि ओ३म् के झण्डे लेकर बोट-क्लब पर कौन पहुँच गया, यहां तो आन्दोलन, धरने या सत्याग्रह करने वाले आया करते हैं। जब हम सभी वहां पहुंचे तो दूर से ही स्वामी द्वय को देखकर आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महा-मन्त्री और हमारे विशेष सहयोगी श्री रामनाथ जी सहगल दौड़कर आए और स्वामी जी को मंच पर ले गये। वहां पर लगभग दो हजार की हाजरी रही होगी। और डा० सूरजभान का व्याख्यान हो रहा था, उनके व्याख्यान के बाद लगभग दस मिनट के बाद स्वामी अग्निवेश जी का भी व्याख्यान हुआ और फिर शान्तिपाठ के बाद यह आयोजन समाप्त हुआ। यह है आर्यसमाज की वास्तविक सेवा। आर्यसमाज को मैदानों में, सड़कों पर, खेत और खलिहानों में जब तक हम नहीं ले जायेंगे तब तक दुनियां के मुकाबले में हम पिछड़ते जायेंगे। बोट क्लब पर यह कार्यक्रम श्री रामनाथ जी सहगल के पुरुषार्थ से दैनिक रूप से चलता है। एक भजनोपदेशक व एक वक्ता प्रतिदिन वहां पहुंचते हैं और दोपहर को एक घण्टे के लिए जब सभी दफ्तरों के कर्मचारी जलपान के लिए बाहर आते हैं तो उन्हें यह कार्यक्रम सुनाया जाता है। धीरे-धीरे यह कार्यक्रम काफी विशाल रूप ले जायेगा और आर्यसमाज की काफी शक्ति बढ़ेगी। इस सबके लिए सहगल जी व उनके अन्य सहयोगी विशेष बधाई के पात्र हैं। सभी को इनसे प्रेरणा लेनी चाहिए।

महर्षि दयानन्द साधु आश्रम

आर्यसमाज के संन्यासियों, उपदेशकों एवं सक्रिय कार्यकर्त्ताओं के मुख से एक शिकायत प्रायः सुनने को मिलती थी कि कोई ऐसा स्थान नहीं जहां पर साधु-संन्यासियों एवं कार्यकर्त्ताओं को प्रशिक्षण देकर उन्हें वैदिक धर्म का प्रचारक तैयार किया जा सके और उनको भोजन वस्त्र एवं औषधि की व्यवस्था हो सके। यह शिकायत वास्तव में सही भी थी। परन्तु स्वामी इन्द्रवेश जी ने इस कमी को पूरा करने के लिए और संन्यासियों एवं वानप्रस्थियों की एक सेना तैयार करने के लिए गत दिनों रोहतक जीन्द रोड पर २ किलो-मीटर की दूरी पर स्थित गुरुकुल सिंहपुरा में महर्षि दयानन्द साधु आश्रम की स्थापना की और एक ऐति-हासिक योजना का सूत्रपात किया। आश्रम का निर्माण प्रारम्भ होकर एक विशाल भवन 18′×144′ खड़ा हो गया जिसका कार्य अभी जारी है। निर्णय लिया गया कि हर छः महीने में 50 वानप्रस्थ या संन्यासी तैयार करके कार्यक्षेत्र में भेजे जायें। परिणामस्वरूप पहले बैच में लगभग 14 वानप्रस्थ एवं 5 संन्यासी भर्ती किए गए। श्रावणी के अवसर पर उन्हें दीक्षित करके तथा प्रमाण पत्र देकर देहाती आर्यसमाजों में भेजा गया। वे प्रचार कार्य में जुटे हुए हैं।

दूसरे बैच में इस समय दस वानप्रस्थ प्रशिक्षण ले रहे हैं। परन्तु यह स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। आव-श्यकता है ऐसे कर्मठ, लगनशील एवं त्यागी व्यक्तियों की जो अपने जीवन का वानप्रस्थ या संन्यास में दीक्षित करके समाज सेवा के कार्य में लगाना चाहते हों। महर्षि दयानन्द के अनुसार आश्रम व्यवस्था में प्रत्येक आर्य को ५० वर्ष की आयु के बाद घर छोड़ वानप्रस्थ की दीक्षा लेकर वन में या किसी आश्रम में चले जाना चाहिए। परन्तु इस नियम का पालन करने के लिए तैयार नहीं परन्तु हमें विश्वास है कि लोग अवश्य इस रास्ते पर चलने के लिए घरों से निकलेंगे। यहां साधु आश्रम में संस्कारों, यज्ञ-सन्ध्या एवं आयुर्वेदिक औषधियों का ज्ञान कराकर समाज में कार्य करने योग्य वानप्रस्थ या संन्यासी तैयार किए जाते हैं। अतः सर्वप्रथम आवश्यकता है ऐसे व्यक्तियों की जो दीक्षा लेवें। साथ आश्रम के दैनिक व्यय एवं भवन को पूरा करने के लिए आर्थिक सहयोग की आवश्यकता है। अब सर्दी में आश्रमवासियों के लिए बिस्तर, कम्बल एवं गर्म वस्त्र आप भेज सकते हैं। अन्न, दाल या खाने का सामान भेजकर आप आश्रम की सहायता कर सकते हैं और भवन के लिए सीमेन्ट की चिनाई, फर्श निर्माण, बरामदे का लेंटर, किवाड़ चढ़ाने आदि के लिए दिल खोलकर आप दान देवें तथा इस योजना को सफल करें। आर्यसमाज के क्षेत्र में यह एक रचना-त्मक कार्य का शुभारम्भ है। इससे भविष्य में आर्य वानप्रस्थ एवं संन्यासियों की एक फौज तैयार होगी जो आर्यसमाज को जन-जन तक पहुंचाने में सक्षम होगी। आप क्या सहयोग करना चाहते हैं शीघ्र पत्र द्वारा सूचित करें। आप स्वयं को अगर समाज के लिए समर्पित कर सकें तो आपका जीवन सफल है।

जगवीरसिंह

अमर शहीद राव तुलाराम नगर रिवाड़ी में

राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन

२४, २५, २६ नवम्बर को रिवाड़ी चलो

गत १५ अक्तूबर को वैदिक आश्रम रिवाड़ी में आर्यसमाज के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं की बैठक आर्य महासम्मेलन के सम्बन्ध में स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमें बहरोड़, नारनोल, महेन्द्रगढ़, झज्जर, सोहना, तिजारा, अलवर, रोहतक व दिल्ली के इन महानुभावों ने हिस्सा लिया—पं० ताराचन्द, लाला ईशरदास जी नारनौल, धर्मपाल सरपंच, मा० रामपत कनीना, हरनारायण सरपंच, बलबीर सरपंच, महाशय किशनलाल, श्री प्रभुदयाल, लाला रामेश्वरदयाल रिवाड़ी, महाशय नन्दलाल गुरुकुल दाधिया, श्री भवानीसिंह विधायक बहरोड़, मा० दिलीपसिंह प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान, स्वामी सन्तोषानन्द, स्वामी भजनानन्द, महाशय सीता राम, श्री लीलाधर आर्य गुरुकुल नीरपुर, राव हंसराम सोहना (गुड़गावाँ), श्री चन्द्रपाल, मा० इन्द्रजीत खेड़ी सुलतान झज्जर, लक्ष्मणसिंह, हनुमान, चिरंजीलाल, भावर महेन्द्र तिजारा, पुष्करलाल आर्य कलकत्ता आदि प्रमुख लोगों ने भाग लिया। इस सम्मेलन को १७, १८ और १९ नवम्बर को करने का प्रस्ताव स्वामी शक्तिवेश ने रखा। परन्तु विचार विमर्श के बाद लोगों ने इन तारीखों को नामंजूर कर दिया क्योंकि यह दिन बोवाई के होते हैं और सर्वसम्मति से २४, २५ और २६ नवम्बर को सम्मेलन करने का प्रस्ताव पास किया गया। सम्मेलन का कार्यभार एवं व्यवस्था सम्भालने के लिए सर्वसम्मति से निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये—

अध्यक्ष—स्वामी इन्द्रवेश संयोजक—स्वामी शक्तिवेश

कोषाध्यक्ष—लाला रामेश्वर दयाल आर्य कार्यलयाध्यक्ष—लोकसेवक खुसीराम

बैठक में उपस्थित सभी महानुभावों ने सम्मेलन की सफलता के लिए तन-मन-धन से जुटने की घोषणाएँ कीं। रिवाड़ी क्षेत्र के लोगों ने अपने क्षेत्र से सम्मेलन के लिए ५० हजार रुपये एकत्रित करने का संकल्प लिया व्यायामाचार्य श्री जयवीर ने, २१ शिक्षकों तथा ४० अन्य कार्यकर्त्ताओं ने सम्मेलन के लिए पूरा समय देने की घोषणा की। २४ नवम्बर को निकलने वाले विशाल जुलूस के लिए ५ हाथी, १०० ऊंट, ३१ घोड़े, ५१ मोटर साईकल व १०० ट्रैक्टरों का प्रबन्ध करने का निर्णय किया गया। इस सम्मेलन में सभी आर्यसमाजें, गुरुकुल आर्य वीरदल व आर्य युवक परिषद् के सैनिक, डी०ए०वी० संस्थाएँ, आर्य महाविद्यालय आदि भाग लेंगे।

सम्मेलन में प्रमुख रूप से स्वामी भीष्म जी, स्वामी अग्निवेश जी प्रधान आ० प्र० सभा पंजाब, स्वामी आदित्यवेश विधायक, स्वामी वेदानन्द रोण्ड, स्वामी रुद्रवेश, नारायण स्वामी, आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तर प्रदेश, श्री शोभाराम प्रेमी, श्री वेगराज जी; श्री खेमसिंह भजनोपदेशक, पं० वेदभूषण हैदराबाद, पं० प्रेमपाल शास्त्री दिल्ली के अतिरिक्त उपराष्ट्रपति बी० डी० जत्ती, प्रधानमन्त्री मोरारजी देसाई, गरीबों के रहनुमा चौ० चरणसिंह, रक्षामन्त्री श्री जगजीवनराम, जनता पार्टी अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर, चौ० देवीलाल मुख्यमन्त्री हरयाणा, भैरोंसिंह शेखावत मुख्यमन्त्री राजस्थान, श्री रामनरेश यादव मुख्यमन्त्री उत्तर प्रदेश, चौ० चांदराम जहाजरानी एवं परिवहन मन्त्री, मा० आदित्येन्द्र वित्त मन्त्री राजस्थान, वीरेन्द्रसिंह गृह मन्त्री हरयाणा; श्रीमती सुशीला नैय्यर एम०पी०, बहन कलावती आदि विद्वानों, संन्यासियों एवं नेताओं को सम्मेलन में भाग लेने के लिए निमन्त्रित किया है।

यह सम्मेलन आर्यसमाज को एक नई गति प्रदान करेगा और देश की वर्तमान व्यवस्था को बदलने के लिए जनता में एक नई चेतना का प्रसार करेगा। आप तुरन्त अपनी सूचना भेजें कि आप कितने व्यक्तियों सहित पहुँच रहे हैं। पत्रोत्तर निम्न पते पर देवें—राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन, वैदिक आश्रम रिवाड़ी जिला महेन्द्रगढ़।

—वेदप्रकाश विद्रोही

राजधर्म प्रकाशन के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, गोहाना रोड, रोहतक से स्वामी इन्द्रवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित।

पाक्षिक

राजधर्म

प्रधान सम्पादक
स्वामी अग्निवेश

सम्पादक
जगवीरसिंह

★

वर्ष १०—अंक १
वार्षिक शुल्क १५ रुपये
एक प्रति ७० पैसे

★

२७ नवम्बर, १९७८

★

कार्यालय
ऋषि दयानन्द साधु आश्रम
गुरुकुल सिंहपुरा
रोहतक

राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन रेवाड़ी (हरयाणा)

अमर शहीद राव तुलाराम नगर 24, 25, 26 नवम्बर 1977

(शुक्रवार, शनिवार, रविवार का)

कार्य-क्रम

24 नवम्बर शुक्रवार 1978

प्रातः 6 से 7 बजे तक अध्यात्म साधना—स्वामी इन्द्रवेश
,, 8 से ,, वैदिक महायज्ञ—ब्रह्मा-आचार्य सुदर्शनदेव
,, 8। से 9 ,, अग्न्याधान स्थापक—ला. रामेश्वरदयाल
,, 9 से 9। ,, भजन गायक— खेमसिंह रघुनाथ
,, 9। से 10 ,, प्रवचन— योगेन्द्र पुरुषार्थी
गु. कांगड़ी वि. वि.

संयोजक—रामचन्द्र आर्य नन्दलाल वानप्रस्थ

ध्वजा रोहण

10 से स्वामी भीष्मजी के कर कमलों द्वारा
ध्वजगान :— आर्य युवक परिषद् के युवकों द्वारा
संयोजक :— धर्मवीर आर्य

शोभायात्रा

11 से माडल टाउन (जवाहर नगर) के मैदान से प्रारम्भ होकर बस स्टैण्ड, नगर पालिका, भाड़ावास गेट, मोती चौक, मुख्य बाजार, काठ मण्डी, सरकुलर रोड, नाई वाली से राव तुलाराम नगर पण्डाल

संयोजक :—रामनाथ सहगल मन्त्री आर्य प्रादेशिक सभा, दिल्ली
भवानीसिंह विधायक बहरोड
ईश्वर दास आर्य नारनौल

क्रम :—

ओ३मुध्वज, हाथी, घोड़े, ऊंट, मोटर साईकिल, बैन्डबाजा, संन्यासी, महात्मा, गुरुकुलों के ब्रह्मचारी, आर्यवीरदल, महिला समाजें, आर्य युवक परिषद्, शिक्षण संस्थायें, आर्यसमाजें, बीच २ में भजन मण्डलियां।

उद्घाटन

2 से चौ॰ चरणसिंह (भू॰ पू॰ गृह मन्त्री) द्वारा
संयोजक :— स्वामी अग्निवेश
भजन :— श्री वेगराज आर्य
6 से भोजन ऋषि लंगर में

गौ रक्षा सम्मेलन

रात्री 8 बजे से

अध्यक्ष : शाहपुराधीश महाराज सुदर्शनदेव
संयोजक : जगवीर सम्पादक राजधर्म
उद्घाटन : स्वामी शक्तिवेश
मुख्य अतिथि : ला॰ जगतनारायण, मा॰ आदित्येन्द्र वित्तमन्त्री राज॰
वक्ता : पुष्करलाल आर्य, देशबन्धु शास्त्री, आचार्य यशपाल, मा॰ अयूबखां विधायक राज. पं॰ ताराचन्द वैदिकतोप, स्वामी रुद्रवेश, स्वामी सत्यानन्द

25 नवम्बर, शनिवार

प्रातः 6 से 7 अध्यात्म साधना प्रवक्ता स्वामी इन्द्रवेश
,, 8 से 9 वैदिक महायज्ञ ब्रह्मा आचार्य सुदर्शनदेव
,, 9 से 9॥ भजन शोभाराम प्रेमी, चन्द्रभान
,, 9॥ से 10॥ प्रवचन नारायण स्वामी क्रांतिकारी
10॥ से 12 भोजन ऋषि लंगर में

किसान मजदूर सम्मेलन

(मध्याह्न 12 से 4)

अध्यक्ष : मा. दिलीपसिंह अध्यक्ष आ. प्र. सभा राज.
संयोजक : स्वामी आदित्यवेश विधायक
उद्घाटन : स्वामी अग्निवेश
मुख्यअतिथि : श्री भैरोंसिंह शेखावत मुख्य मंत्री राज.
श्री मधुलिमये महा सचिव जनता पार्टी
श्री वीरेन्द्र गृह मन्त्री हरयाणा
वक्ता :— श्रीमती मृणाल गोरे, श्री शरद यादव
श्री अजीतसिंह एडवोकेट, श्री सदानन्द, श्री खेमसिंह, ब्र. दयावीर, बहन कलावती, श्री गंगाराम विधायक, श्री मित्रसैन आर्य, श्री भवानीसिंह विधायक राज.

आर्य सैनिक प्रदर्शन

(सायं 4 से 5)

आर्य वीरदल एवं आर्य युवक परिषद् के युवकों द्वारा

(शेष पृष्ठ २३ पर)

सम्पादकीय :—

जनता पार्टी की अग्नि परीक्षा

जनता पार्टी को सत्ता सम्भाले हुये लगभग पौने दो वर्ष बीत चुके हैं। और इस अर्से में इसकी सफलताएें व असफलताएें सामने आ चुकी हैं। अब देखना यह है कि भविष्य में जनता पार्टी कितनी और आगे बढ़ती है। यह बात तो निश्चित ही है कि जिन आकांक्षाओं को लेकर १९७७ के लोकसभा के आम चुनावों में देश की जनता ने जनता पार्टी के हाथों में शासन की बागडोर सौंपी थी वे सभी सपना मात्र बनकर रह गई। असल में जितनी बड़ी आशाएें जनता पार्टी के प्रति लगाई गई थी उन्हें वर्तमान पूंजीवादी ढांचे में पूरा करना था भी बेहद मुश्किल। परन्तु जनता पार्टी के नेता जनता के सामने अपनी स्थिति को साफ नहीं कर सके जिसका परिणाम यह निकला की शनैः शनै जनता के दिलों को जीत लेनी वाली जनता पार्टी बहुत ही अल्प समय में अपनी प्रतिष्ठा खो बैठी। आज अनायास ही बस में सफर करते समय या चाय की दुकान पर यह सुनने को मिल जाता है कि इनके बस का राज नहीं है, इन्दिरा ही फिर दोबारा आएगी और इस देश की जनता तथा विशेषकर जनता पार्टी के इन नेताओं को ठिकाने लगा देगी। इससे स्पष्ट मालूम होता है कि लोगों के दिलों में जनता पार्टी के प्रति अविश्वास एव सन्देह पैदा हो गया है तथा निराशा में लोग ऐसी बातें कहते हैं।

जनता पार्टी की सरकार की उपलब्धियां तो काफी है परन्तु संगठन के नाम पर दिवाला निकला हुआ है। और लोगों का ध्यान इनके आपसी संघर्ष की ओर बना रहता है। अन्दर खाने की आपसी खींचातानी कई बार इस स्तर तक बढ़ जाती है कि पार्टी के टूक-टूक होने की स्थिति बन जाती है। एक दूसरे को नीचा दिखाने तथा अपने-अपने घटक के लोगों को सरकार में आगे लाने की दुर्भावना ने जनता पार्टी की प्रतिष्ठा खाक में मिलादी है। जिन आरोपों के बल पर जनता पार्टी के नेता कभी विरोधी पक्ष की ओर से कांग्रेस व इन्दिरा गान्धी को नीचा दिखाने का प्रयास किया करते थे आज वे ही उनके ऊपर लग रहे हैं। और स्थिति यहां तक पहुंच गई है कि पहले आजमगढ़ (उ० प्र०) और अभी-अभी चिकमगलूर में जनता पार्टी को करारी हार का मुंह देखना पड़ा है। इतना होने पर भी अगर कोई इसकी परवाह न करे और ख्याली पुलाव पकाता रहे तो आंख मींच कर कूएें में छलांग लगाने वाली बात ही होगी। आश्चर्य की बात है कि इन्दिरा गान्धी के जुल्मों को लोग इतने जल्दी भूलते जा रहे हैं। इसमें भी जनता पार्टी के नेताओं की ही जिम्मेदारी प्रमुख है। क्योंकि आपसी युद्ध में उनका क्रान्तिकारी स्वरूप धूमिल होता गया है।

समस्तीपुर व फतेहपुर के उप चुनाव :—

वर्तमान समय जनता पार्टी की अग्नि परीक्षा का समय है। अगर समस्तीपुर व फतेहपुर के लोकसभा उप चुनावों में जनता पार्टी के नेता एक जूट हो कर जीत हाशिल कर लेते हैं तो निश्चित ही पार्टी को जनता का खोया हुआ विश्वास पुनः प्राप्त हो सकता है। और अगर आपसी संघर्ष व ईर्ष्या द्वेष के कारण इन चुनावों में जनता पार्टी हार जाती है तो फिर सत्ता में रहते हुये भी उसे विरोधियों की भारी चेतावनी का मुकाबला करना पड़ेगा। समस्तीपुर की सीट बिहार के मुख्य मन्त्री श्री कर्पूरी ठाकुर के इस्तिफे से रिक्त हुयी थी। श्री कर्पूरी ठाकुर एक लोकप्रिय एवं गरीबों के प्रतिष्ठित नेता हैं तथा उन्होंने १९७७ के लोकसभा के आम चुनाव में इसी सीट से कांग्रेसी उम्मीदवार को ३ लाख वोटों से हरा कर चारों खाने चित कर दिया था। इस क्षेत्र में जनता पार्टी के कई वरिष्ठ नेता चुनाव अभियान में जा रहे हैं पर एकाध ने यह शपथ ले ली है कि वे कभी उपचुनाव में जाते ही नहीं सिर्फ या तो ललित नारायण मिश्र या श्रीमती इन्दिरा गान्धी के उप-चुनाव में ही गये है। इससे अधिक विडम्बना और क्या होगी कि एक व्यक्ति पार्टी प्रतिष्ठा को दाव पर लगाकर स्वयं को झूठी प्रतिज्ञाओं में बांधकर लोगों की आंखों में धूल झोंके। इसके पीछे भी व्यक्तिगत वैमनस्य व द्वेष ही काम कर रहा है। फिर भी जनता पार्टी को इन दोनों

उप-चुनावों में सामूहिक शक्ति का प्रयोग करना चाहिए

आन्तरिक संघर्ष व घटकवाद :—

जनता पार्टी को जिस बात से सर्वाधिक नुकसान हुआ है वह इसके नेताओं को परस्पर खींचातानी और घटकवाद का बोल बाला है। पांच पार्टीयों से मिलकर बनो इस पार्टी में आज तक भी सभी निर्णय या बंट-वारे घटकों के बराबर हिस्से के आधार पर किए जा रहे हैं। चाहे किसी टिकट की लड़ाई हो या किसी राज्य या केन्द्रीय मन्त्रीमण्डल में मन्त्री लेने की बात हो हर मामले में घटकों को महत्त्व दिया जाता है। अलग-अलग घटकों की गुप्त बैठकें होती हैं। सदस्य भर्ती करने में भी पार्टी पर कब्जा करने की नियत से सभी घटकों ने अपने लोगों को अधिक से अधिक भर्ती करने की चेष्टाएं की। राज्यों की सरकार बनाने बिगाड़ने में भी वही पुराने भालौद-जनसंघ-कांग्रेस (ओ) व सोषलिस्ट अपनो अलग-अलग ताकत आज-माते हैं। और यह सब कुछ सार्वजनिक रूप से होता है। आपसी कलह को स्थिति यह है कि व्यक्तिगत द्वेष में कई वरिष्ठ नेताओं को सरकार तक से बाहर निकाल दिया जाता है और संसद में स्वयं जनता पार्टी के ही संसद-सदस्यों का एक दूसरे पर जूता बजता है। यह एक पार्टी है या चूँ-चूँ का मुरब्बा। ऐसी स्थिति में पार्टी के नेताओं को पुनः समर्पण एवं आत्मियता का वातावरण तैयार करके इस दुर्भाग्यपूर्ण अध्याय को तुरन्त बन्द कर देना चाहिए जिससे जनता पार्टी एक मजबूत दल बन सके। और इसकी छवि तेजस्वी बन सके।

इन्दिरा गान्धी क्या कहती है ? :—

अभी-अभी हाल में श्रीमती इन्दिरा गान्धी ने अपनी इंगलैंड यात्रा के दोरान लन्दन में एक पत्रकार सम्मेलन में कहा कि जनता पार्टी की सरकार एक वर्ष में टूट जाऐगी। इस चौंका देने वाली बात का क्या आशय है यह तो श्रीमती जी ही जाने पर इतना अव-श्य है कि उसके दिमाग में कोई न कोई शरारत जरुर है। इस बात को कोई भी मानने को तैयार नहीं कि संसद में स्पष्ट बहुमत वाली जनता पार्टी की सरकार एक साल में टूट जाऐगी। बल्कि उल्टा अगले आम चुनाव तक सरकार चलने की स्थिति में दिखाई देती है। इन्दिरा जी को जनता पार्टी के शासन ने जो छूट और राजनीति में पुनः प्रतिष्ठित होने का जो मौका दिया है यही एक ऐसी गलती है जिसे जनता पार्टी के नेताओं को अवश्य भुगतना पड़ेगा। प्रारम्भ में लोगों को विश्वास था कि इन्दिरा गांधी को उसके जुल्मों के लिए कठोर दण्ड दिया जाऐगा और वह दोबारा देश की राजनीति में दिखाई नहीं देगी। परन्तु जनता पार्टी के कई कायर नेताओं ने इन्दिरा को यह मौका देने में पूरी भूमिका निभाई जिसके परिणाम स्वरूप चिकमगलूर के माध्यम से वह पुनः संसद में आ गई और विदेश में जाकर यहाँ तक कहने का साहस किया कि एक वर्ष में सरकार टूट जाऐगी। जबकि ऐसे कोई लक्षण प्रकट नहीं हैं। अब देखते हैं इस घोषणा के बाद क्या रणजनीति वह सरकार गिराने के लिए बनाती है और जनता पार्टी अपनी सुरक्षा कैसे करती है।

उज्जैन शिविर के बाद :—

जनता पार्टी के कार्यकर्त्ताओं का राष्ट्रीयस्तर का शिविर एतिहासिक नगर उज्जैन में अभी निरन्तर चार दिन की ऊहापोह के बाद सम्पन्न हुआ है। शिविर का संचालन दल के अध्यक्ष श्री चन्द्रशेखर ने किया। समाचार-पत्रों की खबरों के आधार पर यह स्पष्ट सिद्ध होता है कि उज्जैन शिविर में जनता पार्टी के कई नेताओं ने केन्द्रीय व राज्य सरकारों की असफ-लता को लेकर उन्हें आलोचना का शिकार बनाया। और पार्टी के अध्यक्ष ने तो यहां तक कह दिया कि अगर पार्टी का आर्थिक प्रोग्राम लागू करने के लिए हमें केन्द्र व राज्यों में नेतृत्व परिवर्तन करना पड़े तो उसमें भी संकोच नहीं करना चाहिए। जिसका परिणाम यह हुआ कि उज्जैन शिविर का कोई ठोस लाभ पार्टी को न हो सका। वैसे भी शिविर में कई वरिष्ठ नेताओं के न जाने से इसके निर्णय प्रभावशाली नहीं बन सके। शिविर के बाद जनता पार्टी में ही पुनः ग्रुपबाजी शुरू हो चुकी है और अब प्रधान मन्त्री और पार्टी अध्यक्ष में अन्दर ही अन्दर ठन गई है। प्रधान मन्त्री ने चौ० चरणसिंह जी से पुनः हाथ मिलाने की कोशिशें प्रारम्भ कर दी हैं। वास्तविकता यह है कि जनता पार्टी एक ऐसे संक्रमण काल से गुजर रही है जिसमें से बच निकलने के लिए इसके नेताओं का सूझ-बूझ व आपसी प्रेम ही काम आ सकते हैं। अग्नि-परीक्षा की इस घड़ी में देखना यह है कि देश की जनता जनता पार्टी को पास करती है या फेल।

● जगवीरसिंह

माटी कहे कुम्हार से—

राजनीतिक गांजा उगाने के लिए संन्यास

हरिशंकर परसाई

इधर एक बनवारीलाल कई साल रहे। मैं उन्हें जानता था। एक दिन अचानक उन्होंने संन्यास ले लिया। गेरुए वस्त्र धारण किए और एक मन्दिर में डेरा डाल दिया। भजन, पूजन, आरती, राम धुन में बनवारी लीन हो गए। एक दिन सुना कि बनवारी गिरफ्तार हो गए। वे मन्दिर के अहाते में गांजे की खेती करने लगे थे। बनवारी जमानत पर छूटे तो मैंने कहा—बनवारी, यह क्या सुनते हैं? उसने कहा—आपने ठीक सुना है भैया।

मैंने पूछा—तो संन्यास लेने के बाद तुम्हें गांजा उगाने की प्रेरणा हुई। बनवारी ने जवाब दिया—भैया, सच बात यह है कि मैं गांजा उगाने के लिए ही संन्यासी हुआ था। पहले भी यह गांजा चरस का काम चोरी छिपे करता था। सोचा, संन्यासी बनने से यह काम और अच्छा होगा। पर भैया देखो, धर्म का तो इस देश में नाश हो गया। पुलिस संन्यासियों को पकड़ने लगी है।

बड़े-बड़े काम होते हैं संन्यास से

जब कोई राजनीतिक संन्यास लेने की घोषणा करता है, तब मुझे अपने इस बनवारी की याद आती है, सोचता हूं अब यह राजनीति का गांजा मन्दिर में बेखटके उगायेगा। राजनीति से संन्यास, उससे बड़ी राजनीति करने के लिए लिया जाता है।

दस गरीबों को दाना बांटा जाता है, हजारों गरीबों को लूटने के लिए, भभूत रमाकर नदी के किनारे बैठा साधु नहाती हुई स्त्रियों को देखता है, धूनी लगाये हुए महात्मा डाकुओं को पुलिस की हलचल की जानकारी देते हैं। बम भोले के नाद के साथ अग्नि तपते साधु की धूनी में चोरी का सोना गलाया जाता है। बड़े-बड़े काम होते हैं संन्यास से।

अभी राजनीति से संन्यास नानाजी देशमुख ने लिया है। वे पटना गये। ताम झाम, टीम टाम, प्रचार जयप्रकाश आशीष के साथ राजनीति से संन्यास लेने की घोषणा कर दी। साथ ही कह दिया खबरदार, मुझे मनाने की कोशिश मत करना, मैं अपना निर्णय बदलूंगा नहीं। राजनीति का पिंडदान गया में नहीं कदमकुआ पटना में होता है, जहां बार-बार राजनीति का पिण्डदान करके उसे फिर जीवित कर लेने वाले जयप्रकाश विराजते हैं।

राजनीति से संन्यास जयप्रकाश जी ने भी लिया था...!

नानाजी ने जयप्रकाश के आन्दोलन का भी बारीकी से अध्ययन किया है। उसकी विशेषताएं और कमजोरियां दोनों वे जानते हैं कि जयप्रकाश ने युवकों के उठाईगीरापन को क्रान्ति कैसे बनाया था। वे यह कमजोरी भी जानते हैं कि उठाईगीरापन का जयप्रकाश संगठित नहीं कर सके थे नानाजी कर सकते हैं।

नानाजी अभी तक तो वह हाथ दिखाते रहे हैं जो वे कहते हैं जयप्रकाश की पुलिस लाठी से रक्षा करते हुए उन्होंने तुड़वाया था। यों तो सी. आई. डी. का आदमी जयप्रकाश की रक्षा के लिए तैनात था, उसका कहना है कि उसने पुलिस वाले को पिस्तौल दिखाकर जयप्रकाश को बचाया था और नानाजी वहां थे ही नहीं। तो हाथ कैसे, कहां टूटा? लोगों के हाथ पांव, और कर्मों में भी टूटते हैं। पर नानाजी की बुजुर्गी देखते हुए ऐसी कोई कल्पना मुझ जैसा दुष्ट आदमी भी नहीं कर सकता।

राजनीति से संन्यास, निराशा में जयप्रकाश ने भी बहुत पहले ले लिया था, फिर भी वे लोहिया गुट को हटाने के लिए पार्टी के नागपुर अधिवेशन में चले गये थे। वे बार-बार राजनीति के बाहर-भीतर होते रहे हैं। राजनीति ने उन्हें नहीं छोड़ा।

संन्यास तो मोरारजी को भी जबरन दिलाया गया था?

रांड तो धर्म निभा ले, पर रंडुए निभाने दें तब तो। संन्यास मोरारजी भाई को भी जबरदस्ती दिलाया जा चुका है। वे 'कामराज योजना' के तहत मन्त्रि-मण्डल से निकले। मोरारजी 'कामराजित' हुए थे कोई 'कामपराजित' न समझ ले।

अटल बिहारी वाजपेयी ने भी साल भर पहले

मन्त्रिमण्डल से तीन महीने में निकलने की घोषणा की थी। लोगों के दिल बैठे जाते थे कि साजन ने अब 'जोग' लिया, अब लिया। हर तीन महीने बीतने पर हम कलेजे को पत्थर करने लगते थे। पर अटल बिहारी सोचते हैं कि मैं छोड़ तो दूं, पर उसके बाद जो तूफान उठेगा, उसे कौन सम्भालेगा।

लोग अटकल लगाते हैं कि नानाजी ने राजनीति से संन्यास क्यों लिया? क्या निराशा में। 'नारि मुई घर संपत नासी, मूड़ मुड़ाय भये सन्यासी' पर नानाजी की न नारी है न घर, संपत्ति, दीनदयाल शोध संस्थान है, जहां इस ज्ञान का शोध कराते हैं कि पूरी जाति को अज्ञानी कैसे रखा जा सकता है। विफलाशा में भी उन्होंने संन्यास नहीं लिया क्योंकि संघ के राजनतिक हौंसले बहुत बुलन्द हैं। तो क्या हृदय परिवर्तन हो गया? पर संघ के स्वयंसेवक का हृदय परिवर्तन नहीं होता। विचार परिवर्तन का सवाल नहीं उठता क्योंकि उसकी विचार करने की मशीन पहले ही निकालली जाती है, फिर क्या नानाजी का संघ के हाई-कमान में अवमूल्यन हो गया है? क्या उनका 'मधोकीकरण' कर दिया गया?

मुझे एक दूसरे संन्यासी का स्मरण होता है, जो भभूत में पर्गोलेक्स मिलाकर लोगों को बांटता था और उनके पेट साफ होने पर अपनी तपस्या के प्रताप के पैसे वसूलता था। मुझे उस संन्यासी की भी याद आती है, जो किसी घर में चिमटा गाड़कर उसे खाली कराकर दूसरे को कब्जा दिला देता है। एक संन्यासी अभी पकड़ा गया है, जो धर्मपुत्रियों को बकरी की तरह बेचता है।

राजनीति से संन्यास उससे बड़ी राजनीति करने के लिए ही तो लिया जाता है।

नानाजी कहते हैं कि वे अब समाज कल्याण करेंगे। राजनीति की जिसमें छूत न लगे ऐसा समाज कल्याण कौनसा होगा? क्या वे लोगों से समाधि लगवायेंगे? लोगों को अनहद नाद सुनवायेंगे? 'प्रभु मोरे अवगुन चित न धरो' गवायेंगे? 'मो सम कौन कुटिल खल कामी' गवायेंगे?

वे कहते हैं मैं सामाजिक आर्थिक परिवर्तन के लिए कार्य करूंगा। राजनीति से बिलकुल अछूता सामाजिक आर्थिक परिवर्तन कैसा होता है, मैं तो नहीं जानता। नानाजी जानते होंगे।

नानाजी जनता पार्टी वाले तो आपके संन्यास से बेवकूफ नहीं बनेंगे वे सब चाल जानते हैं। आपको कांग्रेसी भी जानते हैं रहे हम सामान्य जन। सामान्य जन तो बेवकूफ बनेगा, बनाइये!

बलराज मधोक जनसंघ के अध्यक्ष के रूप में भारतीयों का फिर से भारतीयकरण करने में लगे थे, याने दूध को पानी से धोकर शुद्ध कर रहे थे कि उन्हीं का 'मधोकीकरण' कर दिया गया। मधोक ने अलग लोकतान्त्रिक जनसंघ बनाया जिससे यह सिद्ध किया कि जिसके वे अध्यक्ष रहे, वह जनसंघ लोकतान्त्रिक नहीं है। नहीं, नानाजी 'मधोकीकरण' नहीं हुआ। फिर क्या हुआ?

संन्यास लेने वाला राजनीतिक उस साधु की तरह है जो सुबह से ईश्वर-चिन्तन के बहाने भोजन-चिन्तन करता है। दोपहर को माल खाकर शाम तक ईश्वर-चिन्तन के बहाने नारी चिन्तन करता है और अंधेरा होने पर किसी भक्तिन के घर में घुस जाता है।

मुझे फिर अपने उस बनवारी की याद आती है जिसने संन्यास लेकर गांजे की खेती शुरु कर दी थी।

अब क्रान्ति बची कहां

नानाजी कहते हैं—मैं युवकों को संगठित करके सामाजिक क्रान्ति करवाउंगा, पर युवकों से जयप्रकाश पहले ही सम्पूर्ण क्रान्ति करा चुके। अब क्रान्ति बची कहां जो आप करायेंगे। और नानाजी युवक नाम की कोई जाति होती है क्या? जैसे ब्राह्मण या चमार होते हैं। क्या पीढ़ी कोई राजनैतिक दल होती है?

अरे, एक ही पीढ़ी के तो डांगे और देवरस हैं। कौन से युवकों से नानाजी क्रान्ति करायेंगे? बहुत से युवक साम्यवादी हैं। क्या इन्हें नानाजी क्रान्तिवाहिनी में शामिल करेंगे? और समाजवादी युवकों को, वामपंथी विचार वाले युवकों को, प्रगतिशील युवकों को, यह अधर्म नानाजी नहीं करा सकते। ये सब चांडाल हैं। इनके स्पर्श से पवित्र क्रान्ति की ऊंची जाति चली जायेगी। (शेष पृष्ठ २२ पर)

महर्षि दयानन्द की अद्‌भुत देनः—

स्वदेशी आन्दोलन और स्वदेश भक्ति

बहुत सारे लोग समझते हैं कि १६०५ में लार्ड कर्जन ने जब बंगाल के दो टुकड़े किये तो उस समय बंगालियों ने इस विच्छेद के विरोध में, अनेक विरोधों के साथ-साथ स्वदेशी आन्दोलन को भी चलाया; परन्तु उनको यह पता नहीं कि, स्वामी दयानन्द जी महाराज ने अपने ग्रन्थों में और समय समय पर स्वदेशीय वस्तु प्रयोग, स्वदेश भक्ति और भारतीयता के प्रति आस्था का विचार दिया। स्वामी जी महाराज के प्रचार के अनन्तर आर्यसमाज के सदस्यों में १८७४ सन् से ही स्वदेशी कपड़े पहनने और स्वदेशी वेशभूषा में रहने का आन्दोलन चल पड़ा था। "अनरेस्ट इन इण्डिया" unrest in India नामक पुस्तक में आर्यसमाजी का चिह्न ही बतलाया है कि, जिसके स्वदेशी और मोटे वस्त्र हों, बन्द गले का कोट हो। इसी से अनुमान लगाया जा सकता है कि महर्षि दयानन्द ने बंग विच्छेद से ३० वर्ष पहले ही स्वदेशी का आन्दोलन बड़े वेग से चला रखा था। इसके लिए स्वामी जी महाराज के नीचे के उद्धरण ध्यान से पढ़ें।

क—परन्तु इन लोगों में स्वदेश भक्ति बहुत न्यून है। ईसाइयों के आचरण बहुत से लिये हैं। अपने देश की प्रशंसा व पूर्वजों की बड़ाई करनो तो दूर रही उनके बदले बहुत निन्दा करते हैं। व्याख्यानों में ईसाई आदि अंग्रेजों की प्रशंसा भर पेट करते हैं। ब्रह्मा आदि महर्षियों का नाम भी नहीं लेते। प्रत्युत ऐसा कहते हैं कि बिना अंग्रेजों के सृष्टि में आज पर्यन्त कोई भी विद्वान् नहीं हुआ। आर्यावर्ती लोग सदा से मूर्ख चले आये हैं। इनकी उन्नति कभी नहीं हुई।

(स. प्र. समु. ११ पृ० २४१)

भला जब आर्यावर्त्त में उत्पन्न हुए हैं और इसी देश का अन्न जल खाया पिया, अब भी खाते पीते हैं, अपने माता पितामह आदि के मार्ग को छोड़ दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना, ब्रह्म-समाजी और प्रार्थना समाजी एतद्देस्थ संस्कृत विद्या से रहित अपने को विद्वान् प्रकाशित करते हैं इंगलिश भाषा पढ़ कर पण्डिताभिमानी होकर झटिति एक मत चलाने में प्रवृत्त होना मनुष्यों का स्थिर और झटिति वृद्धिकारक काम क्यों कर हो सकता है?

(स. प्र. समु. ११ पृ० २४१)

ख—देखो अपने देश के बने हुए जूते को कार्यालय (आफिस) और कचहरी में जाने देते हैं इस देशी जूते को नहीं। उससे समझ लेओ कि अपने बने देश के जूतों का भी जितना मान प्रतिष्ठा करते हैं उतना अन्य देशस्थ मनुष्यों का भी नहीं करते। कुछ १०० वर्ष से ऊपर इस देश में आये यूरोपियनों को हुए, और आज तक ये लोग मोटे कपड़े आदि पहरते हैं जैसा कि स्वदेश में पहरते थे, परन्तु उन्होंने अपने देश का चाल चलन नहीं छोड़ा और तुम में से बहुत से लोगों ने उनकी नकल कर ली है। इसी से तुम निर्बुद्धि और वे बुद्धिमान् ठहरते हैं। अनुकरण करना किसी बुद्धिमान् का काम नहीं जो जिस काम पर रहता है उसको यथोचित करता है। आज्ञानुवर्ती बराबर रहते हैं। अपने देश वालों को व्यापार आदि में सहायता देते हैं इत्यादि गुणों और अच्छे अच्छे कामों से उनकी उन्नति है। मुण्डे जूते, कोट, पतलून, होटल में खाने पीने आदि साधारण और बुरे कामों से नहीं बढ़े हैं।

(स० प्र० समु० ११ पृ० २४२)

ग—उस समय देश में धन बहुत था और स्वदेश भक्ति भी थी।

(स. प्र. समु. ११ पृ० १८१)

घ—हम और आपको उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब मिलकर प्रीति से करें। इसलिए जैसा आर्यसमाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता।

(स. प्र. समु. ११ पृ० २४५)

ङ—देखो, बड़े शोक की बात है कि जयपुर में अनेक गिरजा घर बन गये और पादरी लोग राम, कृष्ण आदि भद्र पुरुषों की निरन्तर निन्दा करते हैं

और सैंकड़ों को बहका कर भ्रष्ट कर रहे हैं, उनको हटाने को पण्डित और राजा आदि राजपुरुषों ने कुछ भी प्रयत्न न किया। (पत्र और विज्ञापन पत्र संख्या ४१०)

च—क्या बिना देश देशान्तर और द्वीप द्वीपान्तर में राज्य व व्यापार किये, स्वदेश की उन्नति कभी हो सकती है? जब स्वदेश में ही स्वदेशी लोग व्यवहार करते और परदेशी स्वदेश में व्यवहार व राज्य करें तो बिना दारिद्रय और दुःख के कुछ भी नहीं हो सकता।

(स. प्र. समु. १० पृ० १६५)

छ—ऋषि महर्षियों के किये उपकारों को न मान कर, ईसा आदि के पीछे झुक पड़ना अच्छा नहीं। ब्रह्मा से लेकर पीछे आर्यावर्त्त में बहुत से विद्वान् हो गये हैं उनकी प्रशंसा न करके यूरोपियन की स्तुति में उतर पड़ना पक्षपात और कुशामद के बिना क्या कहा जाय?

(स० प्र० समु० ११ पृ० २४४)

ज—अत्यन्त आनन्द की बात है कि आप लोगों में स्वदेश हित की बात निश्चित हुई है; परन्तु स्वदेश आदि सब मनुष्यों का निर्विघ्न हित आर्यसमाज से यथार्थ होगा।

(पत्र तिथि सम्वत् १९३१ मिति चैत्र शुक्ल ६
जो उन्होंने बम्बई से श्रीयुत गोपाल राव हरिदेश मुख को लिखा।)

❀❀

कैसे ग्रन्थ पढ़ने चाहिएं

महर्षि लोगों का आशय, जहां तक हो सके वहाँ तक सुगम और जिसके ग्रहण में समय थोड़ा लगे, इस प्रकार का होता है और क्षुद्राशय लोगों की मनसा होती है कि जहां तक बने वहां तक कठिन रचना करनी, जिसको बड़े परिश्रम से पढ़ के अल्प लाभ उठा सकें। जैसे पहाड़ का खोदना और कौड़ी का लाभ होना और आर्ष ग्रन्थों का पढ़ना ऐसा है कि एक गोता लगाना बहुमूल्य मोतियों का पाना।

—सत्यार्थप्रकाश, समु० ३।

लेखकों से नम्र-निवेदन

राजधर्म पाक्षिक नियमित निकलना प्रारम्भ हो चुका है। इसका यह चौथा अङ्क है। राजधर्म के आदरणीय लेखकों से एवं आर्यसमाज के विद्वानों से मेरा नम्र निवेदन है कि वे अपना अमूल्य सहयोग हमें अवश्य प्रदान करें। १२ दिसम्बर को "शहीद रामप्रसाद बिस्मिल विशेषांक" तथा २७ दिसम्बर को "स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान विशेषांक" राजधर्म की ओर से प्रकाशित किए जा रहे हैं। लेखक महानुभाव अपने लेख, कविता या कहानी ३ दिसम्बर तक हमारे पास भेजकर कृतार्थ करें। राजधर्म किसानों, मजदूरों एवं शोषित कर्मचारी एवं विद्यार्थियों का क्रान्तिकारी शंखनाद है। इसमें आर्यसमाज की पृष्ठभूमि में आध्यात्मिक, आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक लेख आमन्त्रित हैं। आशा है अवश्य सहयोग मिलेगा।

—सम्पादक

भाषा समस्या :—

क्या अंग्रेजी के बिना विज्ञान की पढ़ाई नहीं होगी ?

डॉ० वेदप्रताप वैदिक

अंग्रेजी के कुछ अंधभक्त लोगों ने देश में यह विचार भी फैलाया कि अंग्रेजी के बिना विज्ञान की पढ़ाई नहीं हो सकती। विज्ञान की सब ऊँची पुस्तकें अंग्रेजी में हैं। अगर अंग्रेजी हट गई तो विज्ञान भी हट जाएगा।

सच पूछा जाए तो बात उल्टी है। अंग्रेजी शिक्षा और विज्ञान में तो छत्तीस (३६) का आंकड़ा रहा है। एक का मुँह इधर तो दूसरे का मुँह उधर! ऑक्सफोर्ड और केम्ब्रिज विश्वविद्यालय के पुराने बही-खाते निकालकर देखें तो मेरी बात समझ में आ जाएगी। अंग्रेजी शिक्षा के इन गढ़ों में विज्ञान और गणित की पढ़ाई की बड़ी उपेक्षा होती थी, क्योंकि विज्ञान तर्क करना सिखाता है और तर्क मजहब का दुश्मन है और मजहबी लोग ही इन शिक्षा-केन्द्रों को अपने अनुदान से जीवित रखते थे। ऐसी स्थिति में विज्ञान और गणित की पढ़ाई घरों में हो चलती थी। जॉन स्टुअर्ट मिल जैसे प्रसिद्ध दार्शनिक और गणितज्ञ ने विश्वविद्यालय जाने के बजाय घर में बैठकर पढ़ना-लिखना ज्यादा अच्छा समझा। आपने माइकेल फेराडे का नाम सुना होगा, जिसने बिजली का आविष्कार किया। इस आदमी ने कभी ऑक्सफोर्ड या केम्ब्रिज का मुँह तक नहीं देखा। ऑक्सफोर्ड और केम्ब्रिज का, यह विज्ञान की उपेक्षा वाला रूख भारत में भी आया, क्योंकि बम्बई, मद्रास और कलकत्ता में अंग्रेज ने जो विश्वविद्यालय कायम किए, वे उन्हीं की नकल पर थे। इन भारतीय शिक्षा-केन्द्रों में भी ज्यादा जोर "अंग्रेजी भाषा, साहित्य और धर्म-विद्या" को पढ़ाने पर था। यहाँ भी विज्ञान, गणित आदि विषयों की उपेक्षा की गई। इस विषय पर डॉ० बीना मजूमदार ने अच्छी खोज की है। अंग्रेज को इससे कोई मतलब नहीं था, खासकर हुकूमत करने वाले अंग्रेज को, कि भारतीय प्रतिभा का विकास हो। वह तो अंग्रेज भक्त नकलचियों की फौज खड़ी करना चाहता था। इसके बावजूद भी भारत में जैसे-तैसे विज्ञान की कुछ न कुछ प्रगति हुई ही। प्रयोग करते रहने की मनुष्य की अदम्य इच्छा को आखिर कहाँ तक दबाया जा सकता है?

अगर भारत की प्रयोगशीलता को दबाया नहीं गया होता, अंग्रेजों के द्वारा, मुगलों के द्वारा तथा अन्य आगन्तुकों के द्वारा, तो मेरा विश्वास है कि चाँद पर आदमी को भेजने का काम सबसे पहले भारत ही करता। भारत में तो आदि काल से इस बात का ज्ञान और यह मान्यता रही है कि इस पृथ्वी के अलावा अन्य ग्रहों में भी जीवन है। 'विमानशास्त्र' नामक प्राचीन ग्रन्थ को देखकर मैं दंग रह गया। उसमें ध्वनि की गति से उड़ने वाले विमानों का, उनकी बनावट का, उनके सिद्धान्तों का विशद् वर्णन किया गया है। मैं कहानी-किस्सों की बात नहीं कर रहा हूँ। पोंगा-पन्थ और गप्पों में मेरा जरा भी विश्वास नहीं है। मैं आपसे आर्यभट्ट के गुरुत्वाकर्षण सिद्धान्त और लीलावती के गणित की बात कर रहा हूँ, जिन्हें सारी दुनिया ने मान्यता दी है। चरक और सुश्रुत की बात कर रहा हूँ, बाणभट्ट की बात कर रहा हूँ। पिछले दिनों डॉ० रघुवीर के पुत्र डॉ० लोकेशचन्द्र ने जावा, बाली, सुमात्रा, साइबेरिया आदि स्थानों से लाए हुए अनेकों ग्रन्थ, चित्र और पदार्थ दिखाए। मैं यह देखकर चकित हो गया कि भारतीय शल्य-चिकित्सा का प्रचार इन सारे इलाकों में था। आज से कई हजार वर्ष पूर्व भारतीय शल्य-चिकित्सा काफी विकसित थी। इसी तरह से रसायन शास्त्र और भौतिक विद्या में भी भारतीयों ने उल्लेखनीय प्रगति की थी। इसे उल्लेखनीय इसलिए कहता हूँ कि उसी काल में अन्य देशों की तुलना में, खासकर ब्रिटेन की तुलना में भारत हजारों मील आगे था। लेकिन मुख्य प्रश्न यह है कि इस प्रगति को लकवा क्यों मार गया? यह प्रगति अपने तर्कसंगत मार्ग पर क्यों नहीं चल सकी?

इसके कई कारण हो सकते हैं, लेकिन एक प्रमुख कारण है—बाहरी शासकों द्वारा हमारे देश में चलने वाली शिक्षा और शोध की परम्परा को नष्ट-भ्रष्ट करना। दूसरे आततायियों की बात यहाँ छोड़ दें। अंग्रेजों के प्रयत्नों के बारे में मैं पहले ही कह चुका हूँ। अंग्रेजों ने अंग्रेजी को ज्यादा महत्त्व दिया और विज्ञान को कम। अगर अंग्रेजों के मन में अंग्रेजी के प्रति विशेष आग्रह नहीं होता तो विज्ञान की पढ़ाई और प्रयोगों पर अधिक जोर दिया जाता। अंग्रेजी के जरिये विज्ञान पढ़ाने के कारण बच्चों ने विज्ञान कम पढ़ा और अंग्रेजी ज्यादा।

जब एक विदेशी भाषा के जरिये बच्चों को विज्ञान पढ़ाया जाता है तो वह बोझिल, नीरस और अरुचिकर हो जाता है। विज्ञान क्या है? प्रयोग का दूसरा नाम ही विज्ञान है। जब बच्चा प्रयोग करता है तो उसके और उपकरणों के बीच भाषा की कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिए। भाषा को दासी की तरह सेवा करनी चाहिए। भाषा को साधने की जरूरत नहीं होनी चाहिए। लेकिन जब अंग्रेजी में विज्ञान पढ़ाया जाता है तो एक विद्यार्थी प्रयोग प्रारम्भ करे उसके पहले उसे अंग्रेजी से कुश्ती लड़नी पड़ती है। पहले भाषा समझे, फिर प्रयोग करे! एक आठवीं कक्षा के बच्चे को अगर अंग्रेजी में यह कहा जाए कि "होल्ड द टैस्ट-ट्यूब अपराइट" तो इस आदेश का पालन करने के पहले उसे समझना पड़ेगा कि 'होल्ड' का मतलब क्या है, 'टेस्ट-ट्यूब' का मतलब क्या है और 'अपराइट' का मतलब क्या है तथा इन सब शब्दों को एक साथ रखने पर क्या मतलब निकलता है? यह सब ठीक-ठीक समझे बिना वह प्रयोग नहीं कर सकता जबकि दूसरी कक्षा के एक बच्चे से आप हिन्दी में कहें कि 'परख-नली को सीधा पकड़ों' तो वह तत्काल, बिना किसी कठिनाई के, उस आदेश का पालन करेगा और प्रयोग कर लेगा। ऐसा क्यों होता है? ऐसा इसलिए होता है कि जब वह एक-डेढ साल का था, तभी से उसने अपनी माँ के मुख से इसी भाषा में इसी तरह के कई वाक्यों को सुना है और उसका पालन किया है। उसे भाषा को साधने की जरूरत नहीं है। वह तो उसे जन्म-घुट्टी में पिलाई गई है। अब आप ही बताइये, प्रयोग या शोध किस भाषा में आसानी से हो सकता है? मातृ-भाषा में या विदेशी भाषा में? विडम्बना यह है कि विज्ञान के बगीचे के मीठे फल तो प्रत्येक मनुष्य खाना चाहता है लेकिन भारत में उस बगीचे तक पहुँचने के लिए एक छात्र को अंग्रेजी का जलता हुआ मरुस्थल पार करना पड़ता है। कुछ सी० वी० रमन और कुछ हरगोविन्द खुराना और कुछ नार्लीकर जैसे अदम्य साहसी लोग तो उस मरुस्थल को भी हँसते-हँसते पार कर जाते हैं और अपना जौहर दुनिया को दिखा देते हैं लेकिन एक औसत विद्यार्थी या तो फल पाने की इच्छा ही नहीं करता है या रास्ते में ही दम तोड़ देता है या अपनी पूरी जिन्दगी मरुस्थल पार करने में ही लगा देता है। स्वयं रमन जैसे वैज्ञानिकों ने स्पष्ट शब्दों में कहा है कि यदि भारत में विज्ञान मातृ भाषा के जरिये पढ़ाया गया होता तो आज भारत दुनिया के अग्रगण्य देशों में होता।

जो दुनिया के देश आज विज्ञान में आगे बढ़े हुए हैं, क्या वहाँ विदेशी भाषाओं के जरिये विज्ञान की पढ़ाई होती है? कतई नहीं। इंगलैंड और अमेरिका में अंग्रेजी में, जर्मनी में जर्मन में, फ्रांस में फ्रांसीसी में, रूस में रूसी में और जापान में जापानी भाषा में विज्ञान पढ़ाया जाता है। रूस के बड़े-बड़े वैज्ञानिक अंग्रेजी का एक काला अक्षर भी नहीं जानते। फिर दूसरे देशों में होने वाली वैज्ञानिक प्रगति के बारे में उन्हें जानकारी कैसे मिलती होगी? उस जानकारी को प्राप्त करने के लिए ये वैज्ञानिक अंग्रेजी सीखने में अपना समय बर्बाद नहीं करते। हर देश में अनुवादकों का एक समूह होता है जो न केवल एक भाषा से बल्कि अनेकों भाषाओं से विज्ञान की सामग्री देशी भाषा में ले आता है। यदि वैज्ञानिक स्वयं विदेशी भाषाएं सीखना भी चाहें तो कितनी विदेशी भाषाएं सीख सकते हैं जबकि अनुवादक तो कई भाषाओं के हो सकते हैं। इसलिए यह तर्क तो बिलकुल थोथा है कि अंग्रेजी के बिना विज्ञान की पढ़ाई को धक्का लगेगा। बल्कि मैं तो उल्टी बात कहता हूँ। वह यह कि अंग्रेजी के कारण विज्ञान की पढ़ाई को धक्का लग रहा है।

'रोजी' की तलाश में भटकती युवा-पीढ़ी

•दयाकृष्ण जोशी

आज के प्रगतिशील समाज में हम देखते हैं कि नित्य कोई न कोई नया परिवर्तन हर रोज देखने में आता है। इस सारे परिवर्तन का श्रेय आधुनिक समाज में हमारे बदलते हुए मूल्यों को दिया जा सकता है। मूल्यों के बदलाव में हमारी शिक्षा व्यवस्था की भी अपनी एक निश्चित भूमिका है। हमारे अतीत ने यह सिद्ध कर दिया है कि किसी भी देश अथवा राष्ट्र की सामाजिक, आर्थिक उन्नति शिक्षा के बिना सम्भव नहीं है।

परन्तु इन मूल्यों की इतनी गहनता के बावजूद आज हमारे समाज का एक वर्ग अपने को बालू की दीवार के ऊपर खड़ा पा रहा है। उसका भविष्य शून्य के तारों को गिनने में व्यतीत हो रहा है। वह दिन भर इधर उधर भटकने के कारण अपनी सृजनात्मक शक्ति का ह्रास करता जा रहा है। इस बिखराव और भटकाव का दायित्व किसके ऊपर डाला जाए? कौन है इसका उत्तरदायी? आखिर कौनसी ऐसी मजबूरियां हैं जिनके रहते हमारी युवा-पीढ़ी को अपने ही दरवाजे पर भीख नहीं मिल रही है? आखिर इस बेखबर उत्तरदायित्व का दोष किसके सिर पर मढ़ा जाए। उस पीढ़ी के ऊपर जो डिग्रियों को लेकर मरामरी के इस महासमर में भी अपने कैरियर की तलाश में भटक रही है या उन माता-पिताओं पर जिन्होंने मई-जून की झुलसाने वाली धूप, सावन-भादों की न थमने वाली वर्षा और दिसम्बर-जनवरी की कड़कती सर्दी को हंसते-हंसते झेलकर अपने बच्चों को कैरियर की तलाश करने के लिए मजबूर किया या उस व्यवस्था पर इस दोष को मढ़ा जाए जिसने अपने स्वार्थों के वशीभूत होकर इस कोमल काया वाली युवा-पीढ़ी के लिए शिक्षा के उन पंगु क्षेत्रों का अनुसन्धान किया, जिन संस्थाओं से निकलकर युवा-पीढ़ी विवशताओं के घेरे में दिन पर दिन जकड़ती जा रही है।

आज विवशताओं का शिकंजा अपनी पकड़ को इतनी मजबूत कर चुका है कि शिक्षा-संस्थाओं में पढ़ने वाली युवा-पीढ़ी अपनी मान-मर्यादा को भूलकर उसी संक्षिप्त पर महत्त्व-पूर्ण समय में जीवन का पूरा आनन्द उठा लेना चाह रही है। इसी संक्षिप्त समय के अपरिपक्व आनन्द ने आज हमारी शिक्षा संस्थाओं में व्यवस्था का अभाव कर दिया है। व्यवस्था के अभाव के कारण ही आज हमें अपने चारों ओर अराजकता, अनुशासनहीनता, भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद के दर्शन हो रहे हैं। यदि हमारी व्यवस्था शुरू से ही समुचित ढंग से चालू रही होती तो आज युवा-पीढ़ी दिशाहीनता के दलदल से उब कर अकरणीय कार्यों के मोहजाल से बच सकती थी। परन्तु व्यवस्था का अभाव अभी भी दिन पर दिन बढ़ता जा रहा है। अव्यवस्था का यह दावानल आज हर मनुष्य को उसके कर्तव्य पथ से च्युत कर रहा है।

प्राचीनकाल में हमारे मनीषियों ने धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष को आधार बनाकर सामाजिक-व्यवस्था को सुव्यवस्थित करने का सुन्दर प्रयास किया था। जिसके परिणामस्वरूप उस युग के मानव का प्रथम ध्येय धर्म के द्वारा मोक्ष की प्राप्ति था। अर्थ और काम इन दोनों ध्रुवों को केवल जोड़ने वाली कड़ी थी। परन्तु आधुनिक समाज में धर्म और मोक्ष का लोप हो गया है। केवल अर्थ और काम शेष रह गए हैं। अर्थ और काम की महत्ता आधुनिक समाज में इतनी बढ़ चुकी है कि हमारी पुरानी पीढ़ी भी मनीषियों की मान्यताओं को ताक पर रखकर अर्थ और काम रूपी तुच्छ ऐषणाओं के पीछे भागती जा रही है। यह बालू में से तेल निकालने का प्रयास है। इसी प्रयास की ओर हमारी युवा-पीढ़ी का रुझान भी बढ़ता जा रहा है। जब तक इन सत्त्वहीन मान्यताओं का विखण्डन नहीं किया जाएगा तब तक हमारे देश

की न सामाजिक, आर्थिक उन्नति हो सकती है और न ही विवशता के बीच भटकती युवा-पीढ़ी अपने कैरियर की उचित तलाश में सफल हो सकती है।

व्यवस्था के अभाव में आज सबसे बुरी तरह फंसने वाली पीढ़ी ग्रामीण युवा-पीढ़ी है। इसकी विवशताएं शहरी युवा वर्ग की अपेक्षा कुछ जटिल तथा अपेक्षाकृत विस्तृत एवं भिन्न है। साधारणतया भारतीय ग्रामीण निम्न-मध्य वर्गीय श्रेणी के होते हैं। उनके पास भविष्य निधि के रूप में केवल उनकी भावी सन्तान होती है। उसी भावी पीढ़ी के पीछे उनकी तमाम इच्छाएं एवं आकांक्षाएं केन्द्रित रहती हैं। अपनी पढ़ाई की समाप्ति के पश्चात् इस पीढ़ी को रोजगार अवश्य करना पड़ता है क्योंकि निम्न मध्यवर्गीय कृषक समाज अथवा साधारण निम्न मध्यवर्गीय समाज में खेती का दायरा सीमित है। जहां खेतों या अन्य प्राकृतिक सम्पदाओं की अधिकता है भी तो, अभी हमारे गांव इतने विकसित नहीं हो पाए हैं कि वे इस नवयुवा वर्ग को अपने में ही आत्मसात करके उसकी योग्यता का लाभ उठा सकें। हमारे गांव का प्रत्येक परिवार यही आकांक्षा रखता है कि उसका बच्चा पढ़-लिखकर उसके परिवार वालों को सहारा दे।

यही नियत ग्रामीण युवा को भी रहती है कि वह अपने परिवार के सहारे के रूप में उभरे। उसकी यह इच्छा शक्ति उसे रोजगार की तलाश में शहरों के कोलाहल युक्त वातावरण के बीच ला खड़ा कर देती है। गांव से बाहर निकलकर जब वह अपने को शहर की चमक दमक के बीच पाता है तो उसकी विवशताएं उसे बौनेपन का एहसास कराने लगती है इस परिस्थिति में विवशताओं के अनुचित अम्बार उसके अपरिपक्व मष्तिष्क पर घाव कर देते हैं। जब ये घाव फैलने लगते हैं तो यह ग्रामीण युवा पीढ़ी विवशता की घातकता से बचने के लिए अपने कैरियर की तलाश में पूरे शहर को छान मारती है परन्तु शहरों में शुरु से ही जनसंख्या का दबाव बढ़ता आ रहा हैं। इस दबाव और असमंजस वातावरण के बीच में विवश शहरी पीढ़ी पहले से ही कैरियर की तलाश में भटकती रहती है। परिणाम यह होता है कि शहरी युवापीढ़ी जो शुरू से ही कैरियर की तलाश में भटकती रही थी इस भोली-भाली ग्रामीण युवा-पीढ़ी से आगे बाजी मार ले जाती है।

यहां पर मेरा आशय ग्रामीण युवा पीढ़ी को शहरी युवा-पीढ़ी के सामने निकम्मी, अयोग्य और गंवार के रूप में प्रदर्शित करना न होकर उनके परिवेशगत अन्तराल की खायी को पाटना मात्र है। वातावरण की न्यूनता के कारण ही हमारी ग्रामीण युवा-पीढ़ी अपने शहरी भाइयों की दौड़ का पीछा नहीं कर पाती है। इसके लिए ग्रामीण युवा-पीढ़ी की शिक्षा व्यवस्था उसकी योग्यता को न्यून ठहराना तर्क संगत नहीं लगता है। अपने परिवेशगत वातावरण के अनुसार यदि ग्रामीण युवा-पीढ़ी को कार्य करने का अवसर प्रदान किया जाए तो यह पीढ़ी राष्ट्र के नवनिर्माण में एक कर्मठ देशभक्त की तरह महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाने में सफल हो सकती है।

वर्तमान सरकार का ग्राम विकास की ओर ध्यान देने का प्रयास इस संदर्भ में एक अविस्मरणीय कदम कहलाएगा। यदि सरकार की इन नीतियों के कार्यान्वयन का समुचित प्रबन्ध किया गया तो वह दिन दूर नहीं होगा, जिस दिन हमारा युवा-वर्ग (चाहे वह शहरी जीवन यापन करने वाला हो या ग्रामीण जीवन की ईकाई हो) विवशताओं के घेरे से बाहर निकल कर राष्ट्र की उन्नति को अपना कर्तव्य समझने लगेगा। व्यवस्था के समुचित कार्यान्वयन के फलस्वरूप हमारी विवश युवा-पीढ़ी को कैरियर की तलाश में दिग्भ्रमित सा इधर-उधर नहीं भटकना पड़ेगा। इस भटकाव के कम हो जाने पर युवा-पीढ़ी की सृजनात्मक प्रवृत्ति अपने-आप निरन्तर आगे बढ़ने लगेगी। जिसके परिणामस्वरूप आधुनिक समाज में व्याप्त विसंगतियों का स्वयंमेव ह्रास होने लगेगा। विसंगतियों का ह्रास ही हमारी सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था को सुधारने में रामबाण की भूमिका का निर्वाह कर सकता है। यही भूमिका आज तक के सक्षम इतिहास की आधारशिला बनकर उभरी है।

(नवभारत से साभार)

■

अहंकार की राजनीति समाज घातक है।

डा. लक्ष्मीनारायण लाल

आज जो हम राज्य और राजनीति की ऊपरी सतह पर इतना उथल-पुथल, कलह, वैर, विरोध, साठगांठ, क्रिया प्रतिक्रियायें देख रहे हैं, यदि हम १९६९ से लेकर अब तक की क्रमशः सारी राजनीतिक घटनाओं के सहारे इसके भीतर उतरकर देखें तो एक बुनियादी सच्चाई पायेंगे वह सच्चाई यह कि यहां लोकतन्त्र एक ऊपरी बहाना है, इस बहाने से हर कोई राजा बनना चाहता है। हमारी पपस्पर की लड़ाई आपसी संघर्ष लोकतन्त्र की रक्षा और प्रतिष्ठा के लिए नहीं, बरन राजा बनने की सारी लड़ाई है। इन घटनाओं, लड़ाइयों के मर्म में जाकर हमें यह अनुभव हुआ कि पश्चिम की डिमोक्रेसी चूंकि उनके आधुनिक समाज की अपनी देन है, इसलिए उनकी राजनीति का चरित्र आधुनिक है। ठीक इसके विपरीत हमारा समाज चूंकि अब तक संस्कारतः सामंतीय है, इसलिए उस आधुनिक लोकतन्त्र की राजनीति का चरित्र स्वभावतः मध्ययुगीन है। राजमहल या जेल, दो ही जगह हैं जहां हमारे यहां का राजनेता निवास करता है, बल्कि जहां उसको निवास कराया जाता है। दोनों स्थानों पर सिपाही का पहरा रहता है, इसका चरित्रगत विशेषताओं में—आडम्बर दरबारी सभ्यता, झूठ और दम्भ उल्लेखनीय है। मध्य युग में कहीं एक तैमूर एक नादिरशाह एक बार लूट कर चला जाता था, अब असंख्य छोटे-छोटे तैमूर और नादिरशाह लगातार लूटते रहते हैं। इसने चाहे कोई सत्ता दल में हो या प्रतिपक्ष के किसी भी दल में, सब को अपनी जगह से उठाकर राजमहल की खिड़की के पास खड़ा कर दिया है, सब को पर घर्मी और लालची बना दिया है। यह मनुष्य को बहतर बनाने, गरीब की गरीबी मिटाने के नाम पर अपनी व्यवसाय करती है। इसे पता है, इसका अस्तित्व ही निर्भर है, मनुष्य के दारिद्रय, दुःख, विपत्ति, संकट, और उसके अज्ञान पर। यह मात्र बड़ी-बड़ी घोषणायें करती हैं—'गरीबी हटाओं'—'सम्पूर्ण क्रान्ति' पर वह मनुष्य कहां है जो यह कार्य करेगा ? यह मनुष्य बनने या होने ही न पाये यही तो इसकी राजनीति है, इसके अन्तर्गत उत्तम मनुष्य क्या, केवल मनुष्य बनने की प्रेरणा, अभिक्रम, उदाहरण और उत्साह कहां है ? यहाँ का राजनेता सब से अधिक भाषा का उपयोग करता है, वह तीन प्रकार की भाषा इस्तेमाल करता है—आध्यात्मिक भाषा, क्रान्तिकारी भाषा और बाजारू भाषा।

व्यवस्था शक्तिशाली

इसके इस चरित्र का फल यह हुआ है कि समाज के स्थान पर व्यवस्था शक्तिशाली हो गयी है, व्यक्ति की जगह परिवेश दुर्दम और अजेय हो गया है, इसका परिणाम यह हुआ है, कि लोग व्यवस्था से बिकने के लिए विवश हुए—'केरियरिस्ट'। इसलिए इस राजनीतिक परिवेश में हर कोई 'मेरी मांगे,' की लिस्ट लिए घूम रहा है। वही परिवेश उत्तरोत्तर और मांग और इच्छा, और भूख पैदा कर रहा है और वही अपने से संघर्ष का नाटक भी रचाता है। वही दाता है, वही डाकू है, वही नियन्ता है, एक हाथ से लेना दूसरे हाथ से देना, एक ओर मांग की स्थितियां पैदा करना दूसरी ओर दमन करना।

राजनीति माने शक्ति, पर वह शक्ति कैसी, किसकी, कहां से, और वह शक्तिधारी कौन ? बचपन में हम इतने निर्बल, शक्तिहीन, विवश और हमने पाया कि ठीक इस के विपरीत मेरे पिता, मेरे अध्यापक, गली कूचे के बड़े बदमाश लड़के, मेरे अलावा ये सब इतने शक्तिशाली, तो इनसे निपटने और मुंह तोड़ जावब देने के लिए हम बच्चे लोग भी क्यों न शक्तिशाली बने। बस, यहीं से तभी से सारे प्रयत्न शुरू हो गये बाहर से शक्ति बटोरने के। शक्ति तो बटोरते चले गये पर अपने भीतर की निर्बलता, अभाव तो कभी देखा नहीं। वह अभाव तो बाहर को इतनी शक्ति से कभी पूरा हुआ नहीं, बाहरी शक्ति से भीतर निर्बलता तो कभी कटी नहीं, शक्ति पाकर सेवा करूंगा, यह दूहरा धोखा, यह आत्म प्रबंचना, तो हम ऐसे लोग शक्ति पाकर केवल शक्ति का दुरुपयोग करेंगे— क्योंकि यही तो सीखा था हमने अपने बचपन में—अपने शक्तिशाली पिता से अर्थात् सत्ता से हमारी लड़ाई छिड़ी है, जंगजारी है, इस सच्चाई की सच्ची और पूरी अभिव्यक्ति आज हम अपने देश के राजनीतिक चरित्र में देख सकते हैं।

अक्सर यह राजनीति बच्चों के संसार से मेल खाने लगती है। वही रूठना, वही पुरानी बातें न भूल पाना, वही कुट्टी वही मिल्ली, वही रागद्वेष-मय व्यवहार, हरवक्त कुछ लेने के चक्कर में, कहीं कोई मुझ से मेरी चीज न छीन ले जाय, हर समय यही आशंका और इसी भय में रहना, तो अपनी चीजों और अधिकारों की रक्षा का केवल एक ही उपाय है। और और...और शक्तिशाली होते चलने की महत्वाकांक्षा, इसी प्रक्रिया में अन्ततः श्रीमती इन्दिरा गांधी की तरह 'डिक्टेटर' हो जाना, और आत्म प्रवंचना यह कि इसे जनता, देश और लोकतन्त्र की 'सेवा' और 'रक्षा' कहना।

बचपन से चला आता हुआ पिता और पुत्र का वही रागद्वेष-मय सम्बन्ध और उसका जीवनबोध, भारतीय राजनीति चरित्र का मूल लक्षण है। जैसे बच्चा पिता का सबसे बड़ा विरोधी है और समान रूप से पिता का सबसे बड़ा समर्थक, प्रशंसक इस रागद्वेष से बंधा बच्चा, उम्र से चाहे जितना वयस्क हो जाय, बड़ा बुजुर्ग बन जाय, वह अपने विरोधी, प्रतिपक्षी से कभी भी पूरी लड़ाई नहीं लड़ सकता। वह बार बार उसके विरुद्ध अपना संघर्ष अचानक बीच में ही रोक देने के लिए विवश हो जायगा, क्योंकि वह अपने अवचेतन में उस शक्तिशाली सत्ता के प्रति एक ही साथ प्रेम और विरोध दोनों कर रहा है। अंग्रेज सत्ता के खिलाफ गान्धी का संघर्ष, आन्दोलन और कुछ समयके बाद उसको रोक देना, उसी मनोविज्ञान का साक्ष्य हैं। गान्धी के बाद लोहिया और जयप्रकाश इन दोनों के जवाहरलाल नेहरू और कांग्रेस सत्ता के खिलाफ संघर्षों में वही 'एम्बीवेलेंस' रागद्वेष-मय अन्तर्विरोध है। एक ही साथ सत्ता के प्रति विरोध और सत्ता के प्रति आदर, यह हमारे राजनीतिक चरित्र की ही मुख्य विशेषता नहीं, वरन् यही हमारा व्यक्तिगत और सामाजिक चरित्र हो गया है।

दूसरा पक्ष

इसका दूसरा पक्ष यह भी है कि सत्ता का जो विरोधी है, वह विरोध की ही राजनीति में अपनी पूरी क्षमता और अपना पूर्ण व्यक्तित्व दिखाता है। पर अगर उसे सत्ता के पक्ष में सत्ता चलाने, राज चलाने की जिम्मेदारी मिल जाय तो वहां वह उदास हो जाता है। सत्ता के साथ देने में मानो उसकी सारी अस्मिता मुरझा जाती है। प्रतिपक्ष के प्रसिद्ध भारतीय नेता इसीलिए सत्ता में जाने से घबड़ाते हैं। और अगर सत्ता में चले भी गये तो सत्ता की कुर्सी पर शरमाते रहते हैं। जाने अनजाने हर वक्त उनका यही प्रयत्न रहता है कि वे सत्ता के विरोध में आचरण करें। दरअसल विरोध की राजनीति करने वाले और सत्ता चलाने वाली की मानसिकता में एक गुणात्मक अन्तर है। जो क्रान्ति करता है वह सत्ता पाकर देश की रचना नहीं कर सकता। यह राजनीति की सीमा ही नहीं, कटु विरोधाभास है।

शक्ति के प्रति उचित सामंजस्य और सम्बन्ध न रख पाने की असमर्थता से यह विकार या विरोधाभास पैदा होता है। प्रायः देखा यह जाता है कि जो जितना भी कमजोर है, वह उतनी ही शक्ति चाहता है। फल यह होता है कि उसके पास जितनी ही शक्ति इकट्ठी होती चली जाती है वह उतना ही अधिक कमजोर बल्कि भयभीत हो जाता है। क्योंकि सारी सच्चाई यह है कि सारी कमजोरी तो भीतर है, बचपन से ही वह अवचेतन जगत् में इकट्ठी होती गयी है। इसलिए बाहर की उसकी सारी शक्ति से उसका भीतर से कोई सम्बन्ध या तालमेल नहीं है। शक्ति का स्रोत वह खुद नहीं है। शक्ति तो उसके लिए केवल प्रतिक्रिया है जिसकी क्रिया उसके भीतर है, उसके अवचेतन में—आह ! मैं कितना निर्बल हूं। कितना अकेला हूं मैं। सारे लोग मेरे दुश्मन हैं। मुझे कोई नहीं समझता। मैं एक एक से बदला लूंगा—हर शक्तिशाली राजनेता का यही सनातन रुदन है।

शक्ति को कौन धारण करता है ? शक्ति का पति शिव है। शिव कौन है ? जो त्रिनेत्र है। एक आंख विनाश करने, ध्वंस करने वाली है और दो आंखों में अपार स्नेह, करुणा, श्रृंगार और उल्लास भरा है। एक आँख विनाश करती है, विरोध और विध्वंस करती है तो दो आंखें निर्माण और सृजन करती है विरोध और संकट में ही सृजन है। संकट को जब व्यक्ति अंगोछे की तरह कन्धे पर रख कर चल पड़ता है तब सृजन का शुभारम्भ हो जाता है। जो संकट को अपने ऊपर से फेंक कर, उससे भाग कर केवल उसके त्रास को दुख-दर्द को अपने कन्धे पर ढोता है लाश की तरह, तब वह निर्माण-सृजन कैसे कर सकेगा ?

शक्ति श्रेष्ठ तत्त्व है। इसे धारण करने वाली राजनीति को भी श्रेष्ठ होना पड़ेगा अन्यथा विनाश होगा। जो इसे धारण करने चलेगा उसका विनाश और उस देश, समाज का विनाश, जहां ऐसी राजनीति चलेगी। ऐसी राजनीति अर्थात् 'मैं' की राजनीति, स्वार्थ की भी नहीं, अहंकार की राजनीति।

ताकि वह कालरात्रि हमें फिर न देखनी पड़े

●धर्मवीर भारती

[उन्नीस महीने का आपातकाल सचमुच ही एक कालरात्रि बन गया था। प्रजातन्त्र की हत्या करके देश में तानाशाही थोंप दी गई थी और आपातकाल में जो अत्याचार व जुल्म निरीह जनता पर किये गये उनका उदाहरण इतिहास में नहीं मिलता। प्रस्तुत लेख हिन्दी जगत् के प्रख्यात साहित्यकार श्री धर्मवीर भारती ने लिखा। और अपने लेख के माध्यम से लेखक ने जहां पिछली कमियों व खामियों का विवरण किया है वहीं भावी समस्याओं के लिए सावधानियां भी वर्णन की हैं। लेख अत्यन्त ही प्रभावशाली है।]

—सम्पादक

विदेशी गुलामी से मुक्त होकर हम स्वदेशी गुलामी में जकड़ दिये जायेंगे, इसका स्वप्न में भी आभास न था। स्वदेशी गुलामी (उन्नीस महीने की उस कालरात्रि को यही नाम देना चाहिये) अप्रत्याशित रूप से आयी; पर अप्रत्याशित वह इसीलिए लगी कि हम अपने राजनैतिक और सामाजिक जीवन को जहरीली विसंगतियों को मुंह-दर-मुंह नहीं देख पाये, जबकि वास्तविकता यह थी कि इस स्वदेशी गुलामी के बीज हमारे राष्ट्रीय जीवन में विदेशी गुलामी से स्वतंत्रता पाते ही बो दिये गये थे।

तानाशाही के अर्थ हैं—किसी एक व्यक्ति और उसकी चंडाल-चौकड़ी में सारी सत्ता का केंद्रित हो जाना। वह पनपती है तब, जब सामान्य जनता में साहस, संकल्प और सक्रियता का अभाव होने लगे और उसके स्थान पर एक निष्क्रियता, उदासीनता या भय उपजने लगे। गांधी और सुभाष जैसे नेताओं ने अपने आन्दोलनों के उत्कर्ष-काल में यही खोया हुआ साहस और संकल्प साधारण जन में जगाकर विदेशी गुलामी को हटाने का उपक्रम किया था।

स्वस्थ समाज में प्रत्येक व्यक्ति—छोटे से छोटा और नगण्य व्यक्ति भी—एक जागृत इकाई होता है; स्वातंत्र्य, साहस और संकल्प से युक्त; हर दूसरे व्यक्ति से सामाजिक-दायित्व और संलग्नता के सूत्र से बंधा हुआ। जब यह सार्थक संलग्नता निरर्थकता में बदलने लगती है, तब वह एक दूसरे से सर्वथा विच्छिन्न हो जाता है। अक्षमता की निष्क्रियता तथा अकेला और निर्बल होने का भय उसमें व्यापने लगता है और तब कोई भी धूर्त, झूठा, अनैतिक लेकिन सशक्त मनोबल वाला, जिद्दी स्वभाव का क्रूर तानाशाह उसे भेड़ की तरह हांकने में समर्थ हो जाता है।

ताकि यह तानाशाही फिर कभी भी न पनपे, इसके लिए सबसे पहली आवश्यता यह है कि मानव-हित का मुखौटा लगाकर जो भी छद्म-सिद्धान्त मानव-व्यक्ति को दुर्बल, निरर्थक, स्वातंत्र्य-वंचित भेड़ बनाने की साजिश कर रहे हों; उनका निरंतर परदा-फाश किया जाये। प्रत्येक मनुष्य की अस्मिता पवित्र थाती है, और किसी भी एक मनुष्य, या वर्ग, या समूह या वर्ण, या जाति को यह अधिकार नहीं है कि वह दूसरे से वैचारिक स्वातंत्र्य छीने या उसकी मानवीय अस्मिता का अपहरण करे। हमारी राष्ट्रीय नियति किसी एक व्यक्ति, किसी एक परिवार, किसी एक पार्टी, किसी एक वर्ग की बपौती नहीं है, सभी उसके प्रति जवाबदेह हैं और सभी को उस सम्बंध में विचार करने का हक होना चाहिये।

तीस वर्षों में ट्रेजेडी यह हुई कि श्री जवाहरलाल नेहरू की अपनी उदार, मानव-प्रिय, संवेदनशील शख्सियत के बावजूद उनकी अंग्रेजी-परस्ती की वजह से एक छोटे-से अंग्रेजी-शिक्षित उच्च मध्यवर्ग के दायरे में हमारा सारा सांस्कृतिक जीवन सिमटता गया। वही ५ प्रतिशत, ऊपर से अपने को 'कास्मोपालिटन' कहने वाला मगर अन्दर से सारे देश से कटा हुआ, चिन्तन में निहायत दकियानूस, कुटिल और स्वार्थी वर्ग सारे देश की सहज मनीषा को राहु की तरह ग्रस बैठा। इसी के साथ भ्रष्ट नौकरशाही और नवधनाढ्य वर्ग ने हाथ मिलाया और ये ही लोग इन्दिराजी की तानाशाही का मूल स्तंभ बने। जब

यह भ्रष्टाचार और अत्याचार चरम सीमा तक पहुँचा, तब गांव-कस्बे की, गली-झोंपड़ी की आम जनता ने विद्रोह करके तानाशाही को अपदस्थ किया।

पर दुःख है कि जनता पार्टी की नयी सरकारें भी कहीं इसी ५ प्रतिशत अंग्रेजीपरस्त उच्च मध्यवर्ग, भ्रष्ट नौकरशाह और नवधनाढ्य वर्ग के मायावी जाल में न उलझ जायें, इसका खतरा पैदा होने लगा है। कुछ जनता-मन्त्रियों में जो संकल्पहीनता और निष्क्रियता प्रवेश करने लगी है, वह इसीलिए कि उनके क्रांतिकारी बहुजन-संपर्क मद्धिम पड़ने लगे हैं और नौकरशाही और नवधनाढ्य वर्ग उनमें से अनेक पर हावी होने लगे हैं। मन्त्रिमण्डल में जो सचमुच देशी मनीषी के जनहितसाधक खरे लोग हैं, उनके विरुद्ध इस ५ प्रतिशत ने हर प्रकार की कुटिल चाल खेलनी शुरू कर दी है। कोई अचरज नहीं कि सुविधा-जीवी उच्च मध्यवर्ग, भ्रष्ट नौकरशाही और नवधनाढ्य वर्ग, जिन्होंने मिलकर इन्दिरा-संजय-तानाशाही पनपायी थी, फिर कोई नयी साजिश रचने लगे हों। क्योंकि किसी भी व्यापक जन-जागरण के समक्ष ये अपने को असुरक्षित महसूस करने लगते हैं और उसकी सारी संभावनाओं को डसने के लिए तत्पर रहते हैं।

लेकिन इस ५ प्रतिशत के ये जहरीले दांत सिर्फ राजनैतिक आन्दोलनों से नहीं टूटेंगे। इसके लिए एक व्यापक सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक क्रांति आवश्यक है।

सामाजिक स्तर पर हर प्रकार का संप्रदाय-गत या जातिगत ऊंच-नीच का भेद मिटाया जाना नितांत आवश्यक है। कुछ संप्रदायों पर अकारण संदेह करना या कुछ जातियों को मनुष्यता के सहज अधिकारों से वंचित रखना जघन्य अपराध है। धूर्त तानाशाह हमेशा इसका फायदा उठाता है। इन्दिराजी की तानाशाही ने अल्पसंख्यकों में असुरक्षा की भावना पैदा करके मतदान में उनका समर्थन लिया और फिर उन्हीं पर बुलडोजर चलवाये; हरिजनों के प्रति घड़ियाली आंसू बहाकर अपने चारों ओर उच्च-वर्णीय किलेबन्दी की। जब तक समाज में हर व्यक्ति को—चाहे वह किसी क्षेत्र, किसी जाति, किसी संप्रदाय का हो—समान सुरक्षा और सम्मान नहीं मिलता, तब तक किसी न किसी रूप में तानाशाही के सिर उठाने की गुंजाइश बनी ही रहेगी।

और यह भी अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि यह काम अकेले सरकारी कानूनों से ही नहीं हो पायेगा और ठाकुर, ब्राह्मण, जाट, कायस्थ, भूमिहार की राजनीति चलाने वाले तथाकथित जननेताओं से तो नहीं ही हो पायेगा। इस देश का सामाजिक ढांचा किसी भी स्वनामधन्य शासक ने कभी बदला हो ऐसा याद नहीं आता। इसके ढांचे में क्रांतिकारी परिवर्तन लाये हैं शंकराचार्य, रामानुजाचार्य, वल्लभाचार्य, तिरुवळ्ळुवर, बसवेश्वर, चैतन्य, कबीर, तुलसी, विवेकानन्द और दयानन्द। आवश्यकता है कि सिंहासन को भी हिला सकने की क्षमता रखने वाले संत-स्वभाव विचारक और मनीषी जनता के बीच जायें और इस समाज को एक नया मोड़ दें।

आर्थिक स्तर पर भी यह अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि ट्रस्टीशिप वगैरह की आत्मछलना से काम नहीं चलने वाला है। इस देश के धनी वर्ग के जबड़ों में मानव-शोषण का रक्त लग चुका है और उन्हें अपने लाभ कमाने और तिजोरी भरने के अलावा देश के हित वगैरह की कोई चिन्ता नहीं है। वे तीस वर्ष से इस देश की राजसत्ता को गुपचुप सौदेबाजी से अंदर-अंदर खरीदकर अपने अनुकूल बनाने की साजिश करते हैं और उसके लिए इन्हें इन्दिरा-संजय-तर्ज की तानाशाही सबसे अनुकूल पड़ती है। वे किसी प्रकार भी सच्चे प्रजातन्त्र के हितैषी नहीं। इमर्जेन्सी में जितना खुश और संतुष्ट यह वर्ग था, उतना कभी भी नहीं रहा। परन्तु उत्पादन के साधनों पर किसी सरकार या नौकरशाही का एकाधिकार हो जाये, यह भी सच्चा समाजवाद नहीं; बल्कि वह दूसरे प्रकार की घिनौनी तानाशाही पनपाता है।

इसलिए इस विशाल देश में उद्योगों का अधिक से अधिक विकेंद्रीकरण हो, अधिक से अधिक लोगों को रोजगार मिले, आर्थिक धारा को नगरों के बजाय ग्रामों की ओर पलटा जाये और उत्पादन बढ़ाते हुए भी शोषण और मुनाफाखोरी पर कड़ा प्रतिबन्ध लगाया जाये—तभी तानाशाही की नींव उखड़ सकेगी।

सांस्कृतिक स्तर पर इस ५ प्रतिशत अंग्रेजी-परस्त वर्ग को परास्त करके देशी भाषाओं और सहज देशी मनीषी को स्वाभाविक रूप से पनपने और

(शेष पृष्ठ २२ पर)

राजस्थान प्रान्तीय आर्यवीर दल की ओर से—

जोधपुर का शिविर सम्पन्न

* रत्नसिंह आर्य

जिस स्थान पर अन्तिम बार मानवता के पुजारी महर्षि दयानन्द ने विषपान किया था। उसी स्थान पर तोस युवक श्रीमान् मदनसिंह जी व श्री गुलाबसिंह जी के सम्मुख आर्य वीर दल के प्रचार व प्रसार की योजना बना रहे थे। सर्वसम्मति से एक शिविर लगाने का विचार किया गया। तीन वर्ष में एक फसल देने वाले इस क्षेत्र में आर्थिक समस्या का विराट रूप दिखाई देना अनिवार्य था। ईश्वर के हाथ फल को छोड़कर सभी शिविर को सफल बनाने में अपने पूर्ण पुरुषार्थ से लग गये। सभी ने अपने अपने ऊपर यथा सामर्थ्य दायित्व लिया। प्रान्तीय स्तर पर इस शिविर की योजना रखी गई तथा पत्र व्यवहार का कार्य १ अक्टूबर को प्रारम्भ किया।

शिविर का स्थान महर्षि दयानन्द स्मृति भवन, रखा गया। जिन्होंने इस भवन को शिविर लगने से पहले देखा है उनका हृदय जोधपुर के लोगों के लिए घृणा से भर गया होगा। परन्तु निरन्तर आठ दिन तक पचास कर्मचारी तथा मोटर गाड़ियों का प्रयोग होने पर केवल द्वार की हो सफाई हो पायी। सफाई करते समय अनेकों सांप व बिच्छू पाए गए। मुख्य भवन का भी ताला लगा रहता है। आर्यसमाज के सांपों (यह भवन सार्वदेशिक सभा की सम्पत्ति है) ने कभी इसका ताला खोलकर सफाई करने की आवश्यकता तक नहीं समझी। १९७२ में इस भवन को मिलने के उपरान्त केवल तीन बार खोला गया है। प्रथम १९७४ में जब आर्य प्रतिनिधि सम्मेलन स्वामी अग्निवेश जी की अध्यक्षता में किया गया। दूसरी बार १९७६ में प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा, राजस्थान का वार्षिक साधारण अधिवेशन स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में हुआ और अब जब इस शिविर का कार्यक्रम रखा गया। निरन्तर एक सप्ताह तक पदाधिकारियों के चक्कर लगाने के बाद हमने इस भवन में उनकी दृष्टि में अनधिकार प्रवेश किया।

२० अक्टूबर को प्रातः ६ बजे आर्य वीर दल, राजस्थान के अधिष्ठाता श्री मदनसिंह जी ने रक्त वर्ण ओ३म् का ध्वज फहराया। उसके पश्चात् आर्य वीरों ने संध्या के मन्त्रों से आकाश को गुंजायमान करके प्राचीन ऋषियों के भारत को उजागर कर दिया। हल्के व्यायाम, आसन तथा प्राणायाम करने के पश्चात् प्रातःराश किया। उन क्षणों में चंबल के बीहड़ जंगलों में आदिवासियों के बीच महर्षि दयानन्द की पताका को लहराने वाले शरीर से दुर्बल तथा बुद्धि व विचार से बलवान् श्री वेदप्रिय जी शास्त्री का आकस्मिक आगमन हो गया। तीन पत्र व एक तार देने के बाद भी कोई उत्तर न पाने पर हम इनके आने की आशा खो बैठे थे। परन्तु इनके आगमन से सभी के हृदय में एक स्फूर्ति का संचार हो गया। इसके विपरीत स्वीकृति भेजकर भी स्वामी आदित्यवेश जी ने २० अक्टूबर को न आकर एक नैराश्यपूर्ण वातावरण कर दिया पर २१ अक्तूबर को स्वामी आदित्यवेश जी ने पधारकर पुनः वातावरण को आनन्द से आच्छादित कर दिया। भोजन के पश्चात् स्वामी आदित्यवेश जी का तीन घण्टे तक आर्यसमाज के मुख्य आधार स्तम्भों का जीवनचरित्र तथा समाज में व्याप्त पाखण्ड के निर्मूल हेतु आर्यसमाज की भूमिका विषय पर प्रवचन हुआ।

इस शिविर का मुख्य उद्देश्य युवा पीढ़ी को आर्यसमाज की ओर उन्मुख करना था। अतः २२ अक्तूबर रविवार को युवकों के केन्द्र आर्यसमाज, रातानाडा, जोधपुर के साप्ताहिक सत्संग में शिविरार्थियों को सत्संग पद्धति से परिचय कराने के लिए ले जाया गया। यज्ञ के पश्चात् वीरेन्द्र जी का आर्याभिविनय का पाठ, चैनसिंह जी का मधुर

भजन श्री वेदप्रिय जी शास्त्री का ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका का वेदोक्त धर्म विषय का पाठ होने के उपरान्त स्वामी आदित्यवेश जी का आर्यसमाज के सिद्धान्त तथा आर्यों का आचरण विषय पर प्रवचन हुआ। भ्रमण को निकले स्वामी कृष्णानन्द जी ने भी युवकों को त्यागमय जीवन अर्पित करने का आह्वान किया। २४ घण्टे के अन्तराल के बाद युवकों के प्रणेता स्वामी अग्निवेश जी का आगमन हुआ। २२ अक्टूबर को विलासिता के गढ़ पर प्रहार करने के समाचार को समाचारपत्रों में पढ़कर बनी धारणा को उन्होंने ध्वस्त कर दिया। भोजन के उपरान्त वैदिक समाजवाद पर स्वामी जी का प्रवचन तथा उसके बाद शिविरार्थियों के तीखे प्रश्न तथा स्वामी जी के संयत उत्तरों ने युवकों में एक आत्म स्वाभिमान उत्पन्न करके महर्षि स्वामी दयानन्द के दर्शन के व्यवहारिक पक्ष पर सोचने को प्रेरित किया। सायं ४ बजे वरिष्ठ कार्यकर्ताओं की अग्निवेश जी की अध्यक्षता में बैठक हुई। डेढ घण्टे तक विभिन्न कार्यकर्त्ताओं और स्वामी जी ने आर्यसमाज व उसके अन्य संगठनों का राष्ट्रीय नेतृत्व संभालने विषय पर विचार-विमर्श हुआ।

२६ अक्तूबर की प्रातः सभी शिविरार्थियों का यज्ञोपवीत संस्कार करने के पश्चात् उन्हें दीक्षित आर्यवीर की संज्ञा देकर तथाकथित जातिवाचक शब्दों को अपने नाम से हटाकर सभी ने आर्य शब्द को अन्त में लगाने का संकल्प लिया। सायं का वातावरण बड़ा ही उल्लासपूर्ण हो गया। शिविर के समापन समारोह के उत्सव का कार्यक्रम था। नगर के गणमान्य व आर्यसमाज के अधिकारियों तथा सदस्यों को निमन्त्रित किया गया। ५-३० बजे वेदप्रिय जी द्वारा राष्ट्र-प्रार्थना के पश्चात् शारीरिक व्यायाम प्रदर्शन का कार्यक्रम प्रारम्भ हुआ। सात दिन के शिविर में तैयार शिविरार्थियों के मार्च पास्ट को देख कर उपस्थित सैनिक अधिकारी भी इस बात पर आश्चर्य चकित थे। जिमनास्टिक के विभिन्न साधनों, घोड़ा, समानान्तर छड़े, क्षैतिज छड़ तथा भूमि व्यायाम को सभी ने सराहा। श्रीमान् मंगलसिंह जी पापा द्वारा शिक्षण की गई लाठी शिक्षा को भी शिविरार्थियों ने प्रस्तुत कर दर्शकों में एक आश्चर्य खड़ा कर दिया दूसरी तरफ श्री विष्णुदत्त जी द्वारा शिक्षित जुजुत्सु की कला कौशल का भी परिचय शिविरार्थियों ने दिया। स्मरण रहे नित्य एक घण्टा आत्मरक्षा के साधनों के अन्तर्गत शिविरार्थियों को श्रीमान् मंगलसिंह जी लाठी तथा श्री विष्णुदत्त जी जुजुत्सु तथा श्री शक्तिसिंह जी द्वारा बाक्सिग प्रशिक्षण दिया गया था। शिविर में श्री श्रवणसिंह के द्वारा बालकों के लिए सिखाये गये मनोरंजनपूर्ण खेल काफी रोचक रहे। श्री ओ३म्कारसिंह जी का 'आर्यों का चक्रवर्त्ती राज्य होना चाहिये' गाया जाने वाला गीत शिविर में गूँजता रहा।

शिविर की भोजन व्यवस्था के लिये श्री पाबुसिंह जी का सहयोग सराहनीय रहा। आपका जोधपुर के हलवाइयों में एक महत्वपूर्ण स्थान है। आप आर्यसमाज की भोजन व्यवस्था का उत्तरदायित्व निःशुल्क करते हैं। श्री आर्यवीर दयालसिंह जी का दान संग्रह, विद्युत् व्यवस्था, पानी व्यवस्था तथा शिविर व्यवस्था का उत्तरदायित्व संभालना बड़ा महत्वपूर्ण रहा जबकि लज्जाशंकर जी द्वारा प्रारम्भ किया गया सफाई अभियान इस शिविर की सबसे बड़ी उपलब्धि है। श्री मदनलाल जी द्वारा संचार व्यवस्था तथा सामग्री उपलब्ध कराने की दक्षता से शिविर निर्विघ्न चल सका। आर्यसमाज शातानाडा, सूर सागर तथा मंडोर का महत्वपूर्ण सहयोग शिविर के लिए अमृत तुल्य सिद्ध हुआ। सिंहावलोकन के लिए शिविर का समय राजस्थान के लिए उपयुक्त न था। मध्यमवर्ग के लोगों का आर्यसमाज में आने के कारण दीवाली की झाड़-पोंछ ने संख्या घटा दी। फिर यह शिविर बड़े जोश-खरोश के साथ सम्पन्न हुआ।

आर्य ग्राम पाबुपुरा

जोधपुर शहर से ४ मील दूर वायु सेना केन्द्र के समीप बसे इस ३०० परिवार वाले ग्राम में सभी दलितवर्ग के लोग रहते हैं। शहर में आते जाते नवयुवकों का आर्यवीर दल से सम्बन्ध होने पर उन्होंने अपने ग्राम में आर्य वीर दल का नींव रखी। १४, १५ व १६ जून १९७५ को ब्यावर में स्वामी इन्द्रवेश जी का परिचय प्राप्त कर उनसे प्रेरणा लेकर नवयुवकों ने आर्यसमाज की स्थापना अपने

(शेष पृष्ठ २२ पर)

एक दृष्टि में—

दयानन्द साधकमंडल की बैठक

❀डा० धर्मवीर

महर्षि दयानन्द साधक मण्डल की नियमित बैठक हर पूर्णमासी को महर्षि दयानन्द साधु आश्रम गुरुकुल सिंहपुरा में होती है। १४ नवम्बर को सम्पन्न हुई बैठक में विशेष आकर्षण बना रहा और अगली बैठक तक के लिए कुछ ठोस निर्णय लिए गये। १३ नवम्बर की सायं को ही अधिकतर साधक महानुभाव पहुँच गये थे। श्री स्वामी इन्द्रवेश जी महाराज भी रेवाड़ी से चलकर समय पर आश्रम में आ गये थे। रात्रि को भोजनोपरान्त पिछली बैठकों में तो महाशय खेमसिंह का प्रचार होता था पर इस बार वाद-विवाद का कार्यक्रम चलाया गया। आठ बजे से दस बजे तक यह प्रोग्राम चला। साधकों को दो टोलियों में बांट दिया गया। स्वामी इन्द्रवेश जी मध्यस्थ बने और फिर बारी-बारी तीन विषयों का जमकर मन्थन किया गया। सर्वप्रथम मूर्ति-पूजा खण्डन पर बहस चली और दोनों टोलियों ने इसके पक्ष-विपक्ष में तर्क देकर अपने बौद्धिक स्तर को खूब बढ़ाया। इसी तरह आयु निश्चित है या अनिश्चित आदि विषयों पर चर्चा चली। विशेष बात यह थी कि सीधे-सादे महाशय भी कई तर्क बड़े मार्के के देते जिनका उत्तर बनना मुश्किल हो जाता था। ठीक दस बजे शयन हो गया। प्रातः चार बजे उठकर सभी शौच आदि से निवृत्त होने के बाद ठीक साढ़े पांच बजे यज्ञशाला में पहुंच गये और वहां लगभग डेढ घण्टे तक श्री स्वामी इन्द्रवेश जी ने सभी को क्रियात्मक योगाभ्यास कराया और प्रवचन भी दिया। स्नानादि के बाद यज्ञ और फिर बैठक प्रारम्भ हो गई। सारा काम टीक समय पर हो रहा था मानो साधक लोग जैसे स्कूल में पढ़ने वाले विद्यार्थी हों। बैठक साधु आश्रम की छत पर सुहावनी धूप में हुई। और इस बैठक में शंका समाधान का कार्यक्रम था। एक पूर्णमासी से अगली पूर्णमासी तक एक महीने के समय में साधक लोग स्वाध्याय करके अपनी-अपनी शंकायें नोट करके लाते हैं। उनका समाधान बहुत ही विद्वत्ता एवं सूझबूझ के साथ स्वामी जी करते हैं। शंका समाधान में कई बार किसी बात पर गर्मा-गर्मी भी हो जाती थी। क्योंकि उधर तो धूप में खून की गति तेज हो जाती और दूसरी शंका करने वाला प्रतिष्ठा का प्रश्न बना बैठता।

इस बार मुख्य रूप से शंकासमाधान में 'वृक्षों में जीव है या नहीं' विषय पर श्री प्रधान दयानन्द आर्य टिटोली व पं० रामचन्द्र आर्य उपमन्त्री सभा ने जमकर मोर्चे लगाए। अन्त में निर्णय हुआ कि अगली पूर्णमासी को इस विषय पर पूरी तैयारी करके सभी आयेंगे और फिर निर्णय होगा। शंका समाधान गोष्ठी के तुरन्त बाद लगभग दस बजे भोजन की घण्टी लगी और सभी साधकों ने खीर का आनन्द लिया। साधकमण्डल ने यह निर्णय किया हुआ है कि हर पूर्णमासी को वे आश्रम में आते समय कुछ न कुछ खाद्य पदार्थ अवश्य अपने साथ लायेंगे। और उसी से हर बार खीर बनाई जाती है और सभी आनन्द से खाते हैं। भोजनोपरान्त फिर विचार गोष्ठी प्रारम्भ हुई और इसमें अगले एक मास का कार्य बांटा गया। निर्णय हुआ सत्यार्थ प्रकाश का तीसरा समुल्लास सभी पढ़कर आयेंगे और जिन्होंने दैनिक एवं साप्ताहिक यज्ञ की प्रतिज्ञा ले रखी है वे नियमित उसे जारी रखेंगे। साथ ही दिनचर्या खान-पान एवं साधना को नियमित रखेंगे। यह भी निश्चय हुआ कि प्रत्येक साधक अपने साथ एक-दो व्यक्ति को और अगली पूर्णमासी तक साधना हेतु तैयार करके लाएगा। इस बार उपस्थित साधकों में प्रमुख रूप से, पं० रामचन्द्र आर्य भालौट, प्रधान दयानन्द टिटोली, श्री रामकुमार टिटोली, राजदेव भगवतीपुर, रणवीरसिंह सरपंच सिंहपुरा, महाशय हद्वारीलाल, श्री पुष्करलाल आर्य, सूबेसिंह आर्य खरकड़ा, धर्मसिंह आर्य खरकड़ा, मा० दयानन्द खरकड़ा, महेन्द्रसिंह शास्त्री खरकड़ा, धूपसिंह आर्य मदीना, राजेन्द्रसिंह लाढौत, मा० दलीपसिंह आर्य सुदकान खुर्द जींद, सूबेदार रत्नसिंह करेला,

जुगलाल आर्य डूमरखा, धर्नसिंह वानप्रस्थ, स्वामी सत्यानन्द, स्वामी विचारानन्द दादुपुर करनाल, वानप्रस्थ चन्द्रदेव, वानप्रस्थ सज्जनदेव, वानप्रस्थ हजारीलाल, वानप्रस्थ गौरीशंकर, वानप्रस्थ चन्दगी राम, रणवीरसिंह करौंथा, रणवीरसिंह गांधी आश्रम रोहतक, भाबेराम आर्य मकड़ौली, टेकराम आर्य मकड़ौली, मांगेराम मकड़ौली, मा० बलीसिंह आर्य मकड़ौली, सुमेरसिंह मकड़ौली खुर्द, मांगेराम आर्य खरमान, महाशय चन्द्रपाल खेड़ी सुलतान, धर्मसिंह आर्य कोट, मा० प्रतापसिंह मुण्डलाना, जिलेसिंह आर्य चिड़ाना, मा० इन्द्रसिंह आर्य आहुलाना, प्रभुदयाल छिछड़ाना; डा० जगवीरसिंह बहुअकबरपुर, बलदेव आर्य बौन्द कलां, महावीर जी बौन्द, वानप्रस्थ नत्थू राम, हवासिंह आर्य मदनहेड़ी, सूरजप्रकाश गोहाना, बहन लक्ष्मीदेवी रोहतक, श्री नेकीराम, श्री राम प्रकाश, सरपंच बलराज निमाणा, महाशय चन्दूलाल आर्य बालन्द, श्री मामराज आर्य गौरीपुर, श्री राम पाल रोहतक।

इस प्रकार ऊपरलिखित महानुभावों के अतिरिक्त भी कई नाम जो भूल से रह गये हैं ने बैठक में भाग लिया। दिन के लगभग ३ बजे बैठक शान्तिपाठ के बाद समाप्त हुई। श्री पुष्करलाल जी आर्य ने विशेष बल देकर कहा कि अगली बैठक तक साधु आश्रम का परिचय एवं पूरा विवरण प्रकाशित किया जाए ताकि इसे हम जन-जन तक पहुँचा सकें। जिन महानुभावों ने दान दिया उनकी सूचि इस प्रकार से है।

१- स्वामी विचारानन्द जी	१२५/- व दो कि०घी
२- स्वामी रामानन्द जी	एक कि० घी०
३- महाशय हरद्वारीलाल	१०/-
४- श्री रामकुमार आर्य रिटोली	१०/-
५- मा० दलीपसिंह आर्य सुदकान खुर्द	१०/-
६- श्री जिलेसिंह आर्य चिड़ाना	१०/-
७- श्री कप्तान शेरसिंह सुन्डाना	१०/-
८- वानप्रस्थ नत्थूराम	१०/-
९- श्री लछमनसिंह	१५/-
१०- मा० प्रतापसिंह मुण्डलाना	५/-
११- श्री पूर्णसिंह जी	५/-
१२- श्री नेकीराम जी	५/-
१३- श्री दयानन्द टिटौली	५/-
१४- श्री होश्यारसिंह	५/-
१५- श्री इन्द्रसिंह आहुलाना	५/-
१६- श्री रामपाल रोहतक	५/-
१७- श्री रामप्रकाश रोहतक	५/-
१८- सूबेदार रत्नसिंह करेला	५/-
१९- डा० जगवीरसिंह बहु अकबरपुर	५/-
२०- श्री चन्द्रभान	२/-
२१- महाशय जुगलाल	१/-
२२- श्री पुष्करलाल आर्य	५/-

गोरखपुर (हिसार) में वेद प्रचार

१३, १४, १५ नवम्बर को ग्राम गोरखपुर जिला हिसार में बड़ी धूमधाम से वेदप्रचार हुआ इस सबका श्री रामसरूप जी आर्य को है। उनका सहयोग श्री चन्दूलाल आर्य आदि ने भी किया, कार्यक्रम अचानक ही तय हुआ और १२ नवम्बर की रात को ११॥ बजे फीएट कार लेकर जब साधु आश्रम में श्री प्रो० भागसिंह व श्री रामसरूप के बड़े भाई पधारे तो स्वामी चन्द्रवेश जी आचार्य गुरुकुल एवं स्वामी परमानन्द जी रात को ही उनके साथ गोरखपुर के लिए चल दिए। वे प्रातः पांच बजे गन्तव्य स्थान पर पहुंचे और प्रातः ही यज्ञादि के कार्य में व्यस्त हो गये। स्वामी चन्द्रवेश जी के तीनों दिन तक धुआंधार व्याख्यान व स्वामी परमानन्द के भजन होते रहे। प्रो० भागसिंह आर्य जनता कालेज कौल ने भी व्याख्यान दिए। कार्यक्रम अति प्रभावशाली रहा। इस अवसर पर श्री रामसरूप आर्य के सैंकड़ों रिश्तेदार भी पधारे हुए थे।

कृपया अपना शुल्क शीघ्र भेजें

राजधर्म के ग्राहकों की सेवा में प्रार्थना है कि अगर उनका शुल्क समाप्त हो गया है तो शीघ्राति-शीघ्र भेजकर राजधर्म को निरन्तर अपने नाम से मंगाते रहने की व्यवस्था कर लेवें। राजधर्म के माध्यम से संगठन की तमाम उपलब्धियाँ, गतिविधियां एवं सूचनायें आपको साल भर केवल १५ रुपये में आपके घर पर ही मिलती रहेंगी। आप भी अगर कहीं पर आर्यसमाज के काम में जुटे हुए हों तो एक कार्ड द्वारा हमें लिख भेजें। उसे राजधर्म में प्रकाशित किया जाएगा।

—व्यवस्थापक

हरयाणा किसान मजदूर सभा का पुनर्गठन

हरयाणा किसान मजदूर सभा जो पिछले पांच साल से हरयाणा में किसान-मजदूरों के लिए संघर्ष करती रही है और आपात्काल के दौरान कुछ शिथिलता आने से जिसका कार्य बन्द था, का पुनर्गठन १ नवम्बर हरयाणा दिवस के अवसर पर हो गया है। इसके लिए एक ११ सदस्यीय तदर्थ समिति का गठन किया है जो इस प्रकार है—

१- डा० धर्मवीरसिंह झज्जर
२- श्री आचार्य यशपाल खरखोदा
३- श्री वेदप्रकाश रेवाड़ी
४- श्री धर्मवीर आर्य कौथ (हिसार)
५- श्री स्वामी रुद्रवेश (कुरुक्षेत्र)
६- श्री राव हंसराम गुड़गांव)
७- श्री भजनलाल आर्य मोत्रोल (गुड़गांव)
८- श्री पं० रामचन्द्र भालौट (रोहतक)
९- श्री जगवीरसिंह एडवोकेट (रोहतक)
१०- श्री दलेलसिंह जुलाना (जीन्द)
११- श्री जुगलाल आर्य भिवानी

महर्षि दयानन्द मुक्ति दिवस सम्पन्न

गत वर्षों की भांति दीपावली के पावन अवसर पर योगधाम, आर्यनगर ज्वालापुर में महर्षि दयानन्द मुक्ति-दिवस सम्पन्न हुआ। ऋषिवर के जीवन की आकर्षण घटनायें प्रस्तुत की गई। महापुरुषों के दृष्टिकोण में उनके व्यक्तित्व एवं कर्तृत्व का मूल्यांकन किया गया। स्वामी नारायण मुनि जी ने साहित्यिक अलंकारों से युक्त वक्तव्य में महर्षि द्वारा चारों वेदों के प्रदत्त प्रदीप रूप प्रकाश को सुरक्षित रखना तथा क्रियान्वित करना प्रत्येक का कर्त्तव्य बताया। आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री प्रधान आर्य प्र० स० उत्तरप्रदेश ने आर्यों को प्रोत्साहित किया। भाषा, वेशभूषा, जातिपाँति, अनार्ष पाठविधि आदि के संकुचित क्षेत्र से निकलकर शुद्ध दयानन्दी बनने का आग्रह किया। यह विशेष चिन्तन-मनन तथा प्रतिज्ञा करने का दिन है। इस प्रकार श्रोताओं पर विशेष प्रभाव रहा।

संयोजक—
योगेन्द्र पुरुषार्थी

80 हजार का घोटाला

विश्वस्त सूत्रों से ज्ञात हुआ है कि स्वर्गीय स्वामी ब्रह्ममुनि परिव्राजक ने लाला रामगोपाल शालवाले को अपनी जीवन भर की कमाई हुई 80 हजार की जो विपुल राशि सार्वदेशिक सभा हेतु दी थी उसे सार्वदेशिक सभा के खाते में जमा नहीं करवाया गया है। एक वर्ष हो गया श्री स्वामी जी का स्वर्गवास हुए। अतः आर्य जनता के दिलों में एक बेचैनी है कि लाला रामगोपाल शाल वाले तुरन्त 80 हजार रुपये का हिसाब दें तथा बतायें कि वह रुपया कहां है। वरना आर्य जनता इस पाप को माफ नहीं करेगी। ध्यान रहे यह सूचना सर्वहितकारी के जुलाई मास के एक अंक में भी देवदत्त भारती के नाम से छपी है।

(पृष्ठ १६ का शेष)

विकास करने का अवसर मिले, ताकि मानसिक गुलामी खत्म हो। यह मानसिक गुलाम वर्ग कभी भी देश की मिट्टी में जड़ें फेंकने वाली, देश को प्यार करने वाली राष्ट्रीय अस्मिता को नहीं पनपने दे सकता। यही वर्ग एक गलत किस्म की व्यक्तिपूजा भी पनपाता है, जिसके कारण ये धारायें बनती हैं कि इस देश का अच्छा शासक वही हो सकता है, जो इस देश की भाषा में बोल ही न पाये, जो विदेशी रहन-सहन का आदी हो, जो पश्चिमी चिंतन-पद्धतियों की जूठन की गुलामी करता रहे, जो इस देश के चंद महानगरों को लन्दन, पेरिस और न्यूयार्क बनाने का ख्वाब देखे, चाहे सारे देहात और कस्बे नरक बनते चले जायें। फलतः देश की जनता गूंगी और लाचार बनती चली जाती है और किसी भी तानाशाह की महत्त्वकांक्षा उन्हें भेड़ की तरह हांकने की होने लगती है।

तानाशाही पनपाने वाले इन विकारों को जड़ से मिटाये बिना हम कभी निश्चित नहीं हो पायेंगे कि यह कालरात्रि अब कभी वापस नहीं आयेगी।

(पृष्ठ ६ का शेष)

तो फिर कौन युवक बचे ? वही 'नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमि वाले' यानी नानाजी संघ का संगठन और शक्ति बढ़ाने में लगेंगे। १९८२ में दिल्ली पर कब्जा करना है।

नानाजी : यह संन्यास है !

दूसरा काम सन्यासी को और करना है। ६ अरब रुपया प्रौढ़ शिक्षा में खर्च होगा। उत्तर भारत में जनसंघ की या तो सरकार है या वह सरकार में शामिल है। तो प्रौढ़-शिक्षा कार्यक्रम के पैसे से नानाजी संघ को फैलायेंगे। यह संन्यास है।

अब जनता पार्टी वाले तो संन्यासी से बेवकूफ नहीं बनेंगे। वे सब चाल जानते हैं। कांग्रेसी भी जानते हैं, कम्युनिष्ट भी जानते हैं। रहे हम सामान्य भारतीय जन। तो नानाजी, हम तो बेवकूफ बनने को तैयार हैं, बनाइये !

मायाविनो ! मायाविनो ! बनवारी तुम कहां हो भैया ? मन्दिर के बगीचे में गांजे के नये पौधे लग रहे हैं, मेरे भाई ! (ब्लिटज से साभार)

(पृष्ठ १८ का शेष)

ग्राम में करने का व्रत लिया। ७ दिसम्बर १९७५ को आर्यसमाज रातानाडा के वार्षिक उत्सव पर आये आर्यभिक्षु जी तथा श्री सत्यानन्द जी वेदवागीश ने इस ग्राम में आर्यसमाज की स्थापना की। आर्यसमाज के लिए पुरानी पाठशाला का भवन ग्राम पंचायत ने दिया। आर्यसमाज की स्थापना के साथ ही इस ग्राम में नशाबन्दी लागू कर दी गई तथा शराब पीकर इस ग्राम में आने वाले व्यक्ति पर १५१ रु० दण्ड रखा गया। दो तीन बार नियम उल्लंघित होने पर निडरता के साथ उनसे दण्ड वसूल करके ग्राम पंचायत कोष में जमा करवाया गया।

आर्यसमाज के सिद्धान्तों से नई पीढ़ी में आये परिवर्तन को देखकर वृद्ध लोगों ने अपना पूर्ण आशीर्वाद इन नवयुवकों पर रख दिया है। आर्यसमाज के प्रति इस ग्राम के लोगों में इतनी प्रगाढ़ आस्था हो गई है कि हर ग्रामवासी आर्यसमाज के विद्वान् व संन्यासी के लिए पलकें बिछा देता है। जब स्वामी अग्निवेश जी को भी उन लोगों ने आमन्त्रित किया तो स्वयं स्वामी जी कुछ अनमने ढंग से जाने को तैयार हुए। ग्रामवासियों के स्वागत ने स्वामी अग्निवेश जी के हृदय को जीत लिया तथा उनके द्वारा दी गई बाजरे की रोटी (सोगरा) तथा गवार की फली की सब्जी को जी भर कर खाया। गाँव के लोगों का निश्छल व्यवहार तथा आर्यसमाज के प्रति सम्मोह ने स्वामी जी के मस्तिष्क पर अमिट छाप छोड़ी। ग्राम में आर्यसमाज के कारण हुए परिवर्तन तथा सामाजिक सुधारों को देखकर स्वामी जी का पुनः शिविर में लौटने पर अनायास ही सबके सामने उनके मुख से निकल गया, "यह आर्यसमाज का काम हुआ। अगर इसी तरह आर्यसमाज ग्रामों की ओर प्रस्थान कर दें तो आर्यसमाज महलों से झोंपड़ी में स्वतः ही चला जायेगा।"

अध्यक्ष । मदनसिंह जी सेनापति जोधपुर
संयोजक : आचार्य दयानन्द, आचार्य जयवीर, श्री माणकचन्द जी मेडता सिटी
सायं 6 से 8 भोजन ऋषि लंगर में

पाखण्ड खण्डन सम्मेलन

अध्यक्ष : श्रीमती विद्यावती आर्या
संयोजक : श्री बिशनसिंह एडवोकेट (कैथल)
उद्घाटन : स्वामी नारायण (कुलपति गु. कु. एटा)
मुख्यअतिथि : श्री सूरजभान (प्रधान आर्य प्रादेशिक सभा)
वक्ता :—प्रो. रत्नसिंह, डा. वाचस्पति उपाध्याय वेदप्रिय शास्त्री, चन्द्रभान आर्य, हरीराम आर्य, बहन यशोदा आर्या, म. रामनारायण, म. धर्मवीर, जगतराम, स्वामी रुद्रवेश, बहन कलावती

26 नवम्बर, रविवार

प्रातः 6 से 7 अध्यात्मसाधना स्वामी इन्द्रवेश

दीक्षा सम्मेलन

अध्यक्ष : स्वामी चन्द्रवेश आचार्य गु. कु. सिंहपुरा
संयोजक : श्री प्रेमपाल शास्त्री (शक्तिनगर दिल्ली)
उद्बोधक : श्री बी. डी. जत्ती उपराष्ट्रपति आचार्य वेदभूषण हैदराबाद
मध्यान्ह 11 से 12 भोजन ऋषि लंगर में

समाज बदलो सम्मेलन

मध्यान्ह 12 से

अध्यक्ष : स्वामी इन्द्रवेश
संयोजक : श्री रामधारी शास्त्री
अभिनंदन : श्रद्धेय सर्व श्री स्वामी भजनानन्द स्वामी सन्तोषानन्द, स्वामी सर्वानन्द, स्वामी सोमानन्द, स्वामी भीष्म, महाशय हीरालाल, पं० सोहनलाल, मा० इन्द्रजीतसिंह, महाशय भजनलाल वानप्रस्थ सुखदेव, लक्ष्मी बहन
आर्यसमाज के वयोवृद्ध तपस्वी, समाज सेवियों का सार्वजनिक अभिनन्दन
उद्घाटन : डा. रामप्रकाश (रीडर पंजाब वि. वि.)
मुख्यअतिथि: बाबू जगजीवनराम (रक्षा मन्त्री) श्री सम्पतराम (गृह मन्त्री राज.)
वक्ता : श्री रोशनलाल आर्य, सुषमा स्वराज, डा. महावीर मीमांसक, हीरानन्द आर्य, विरजानन्द आर्य, राममेहर एडवोकेट, प्रो. ज्योताजसिंह, बी.एस. वर्मा गु.कु. कांगड़ी उदयसिंह विधायक, स्वामी अग्निवेश, श्रीमती शकुन्तला आर्या, डा. के.के. पसरीचा कर्नल रामसिंह स्पीकर, प्रो. मार्गसिंह, प्रो योगेन्द्र यादव
सायं 5 से 6 आर्य सैनिक प्रदर्शन
सायं 6 से 8 भोजन ऋषि लंगर में

आर्य भजनोपदेशक सम्मेलन

रात्रि 8 से

अध्यक्ष : स्वामी भीष्म
संयोजक : डा० महासिंह
उद्घाटन : पं० ताराचन्द वैदिकतोप
मुख्यअतिथि : श्री बशीर अहमद 'मयूख'
शोभाराम प्रेमी, स्वामी रुद्रवेश, खेमसिंह, चन्द्रभान आदि सभी इच्छुक मण्डलियां अपना नाम संयोजक को पहले देदें।

नोट :—समय और परिस्थितियों के अनुसार कार्यक्रम में परिवर्तन किया जा सकता है।

२—व्यवस्था के लिए निम्नलिखित सम्बन्धित प्रबन्धकों से सम्पर्क करें—

सर्वसामान्य भोजन :—
सर्व श्री अर्जुनदेव, ओंकार, फतेहचन्द ब्र० रामनिवास, धनसिंह, वैद्य श्रीचन्द विमल, सुखदेव, किशनलाल, राजेन्द्र

आवास :—
विशेष अतिथियों का भोजन आवास : ब्र० दयावीर

पण्डाल, बिजली, पानी, लाउडस्पीकर :—
प्रो. ज्योताजसिंह, लालसिंह, चिरंजीलाल

सूचनाएँ :—श्री धर्मवीर, रामनिवास, अभयदेव

धन संग्रह—ला. रामेश्वरदयाल आर्य, रामपत आर्य, समयसिंह, महाशय रामचन्द्र, ला. किशनलाल, ला. रामनाथ, हरीराम आर्य, सूबेदार फूलसिंह, कंवरसिंह आर्य बाबूलाल, अत्तरसिंह क्रांतिकारी

वाहन व्यवस्था :—श्री विरजानन्द

स्वयं सेवक व्यवस्था :—
ब्र० जयवीर, माणकचन्द आर्य, शक्तिसिंह

निवेदक :—

इन्द्रवेश	शान्तिस्वरूप डाटा	ताराचन्द वैदिकतोप
अध्यक्ष	स्वागताध्यक्ष	प्रचार मन्त्री

रामेश्वरदयाल आर्य	शक्तिवेश
कोषाध्यक्ष	संयोजक

राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन समिति, रेवाड़ी

रजिस्टर्ड नं०
P/RTK-६४

राजधर्म

२७ नवम्बर, १९७८

राजधर्म प्रकाशन के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, गोहाना रोड, रोहतक से स्वामी इन्द्रवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित।

राजधर्म

(पाक्षिक)

कार्यालय
महर्षि दयानन्द साधु आश्रम
गुरुकुल सिंहपुरा (रोहतक)

सम्पादकीय—

कल्याण मार्ग के पथिक

महर्षि दयानन्द सरस्वती के बाद जिन लोगों ने आर्यसमाज की गाड़ी को इन्जन बनकर आगे खींचा उनमें अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द का नाम पहले नम्बर पर आता था। अपने जीवन में क्रान्तिकारी परिवर्तन करके मुन्शीराम वकील से महात्मा मुन्शीराम और फिर स्वामी श्रद्धानन्द के रूप में आर्यसमाज का नेतृत्व सम्भाला। लाहौर की कोर्ट में एक सामान्य वकील की हैसियत रखने वाले मुन्शीराम के दिल और दिमाग को आन्दोलित किया महर्षि दयानन्द के व्याख्यानों ने। और जिन्दगी में एक नया मोड़ देकर शराबी-कबाबी, रिश्वत एवं भ्रष्टाचार के बल पर मौज लेने वाले मुन्शीराम, महात्मा मुन्शीराम हो गये। वकालत छोड़ दी, शराब-कबाब व रिश्वत को ठुकरा दिया तथा महर्षि के पक्के अनुयायी के रूप में सामाजिक कार्य करने में जुट गये। इतना पतित जीवन और उसमें इतना आश्चर्य चकित कर देने वाला परिवर्तन, केवलमात्र योगीवर महर्षि दयानन्द की जादू सी वाणी का ही प्रभाव था। अपने दिल में क्रान्ति की ज्वाला लेकर महात्मा मुन्शीराम जी ने समाज सेवा की एक विशद् योजना बनाई और सर्वप्रथम महर्षि द्वारा प्रतिपादित आर्ष पाठ विधि के आधार पर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को क्रियान्वित करने का बीड़ा उठाया। अपने आपको इस महान् मिशन के लिए समर्पित करके घर से निकले और गुरुकुल हेतु जो राशि निश्चित की थी जब तक वह पूरी न हो गई तब तक घर में न आये। धुन के धनी महात्मा मुन्शीराम ने अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिये अपना मकान बेचकर अपने दोनों लाडले पुत्रों हरीशचन्द्र व इन्द्र विद्या-वाचस्पति को लेकर हरिद्वार में गंगापार घनघोर जङ्गलों में गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की। गुरुकुल स्थापना के समय एक ही भावना थी कि—

आयेंगे खत अरब से, जिनमें लिखा यह होगा।
गुरुकुल का ब्रह्मचारी हलचल मचा रहा है॥

अपना सर्वस्व न्यौछावर करके गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का आपने हजारों साल बाद भारत की धरती पर बार पुनः सूत्रपात किया। शनैः शनैः गुरुकुल फलता-फूलता गया और महात्मा मुन्शीराम के कार्यक्षेत्र का दायरा भी विस्तृत होता गया। वह समय ऐसा था जब समस्त आर्यजगत् के आप शीर्षस्थ नेता थे और देश में चल रहे स्वतन्त्रता आन्दोलन से भी दिन-रात जुड़े रहते थे। अपने गुरुकुल में युवकों को क्रान्ति एवं देशभक्ति

प्रधान सम्पादक—स्वामी अग्निवेश वर्ष १० अंक ३ २७ दिसम्बर १९७८

सम्पादक—जगवीरसिंह वार्षिक शुल्क १५) एक प्रति ७० पैसे

की शिक्षा देकर अंग्रेज के विरुद्ध बगावत की भावना भरते थे। स्थिति यह थी कि आर्यसमाज की हर संस्था चाहे वह कालेज था या स्कूल या आर्यसमाज मन्दिर था सभी को बगावत का केन्द्र समझा जाता था और इसी बात को दृष्टिगत रखते हुए अंग्रेज अधिकारी हर समय इन संस्थाओं पर विशेष निगरानी रखते थे। गुरुकुल के कार्यभार को अपने अन्य उत्तराधिकारियों पर छोड़कर महात्मा मुन्शीराम से स्वामी श्रद्धानन्द संन्यासी राष्ट्रीय कांग्रेस के माध्यम से स्वतन्त्रता आन्दोलन में कूद पड़े। गांधी जी को महात्मा की उपाधि देकर सारे विश्व में कर्मचन्द गाँधी से महात्मा गांधी के रूप में प्रसिद्ध किया और स्वयं संन्यासी हो गये। स्वामी श्रद्धानन्द की कार्य-शैली एक-साथ कई मोर्चे लगाकर कार्य करने की थी। एक तरफ जहाँ आर्यसमाज के संगठन का कार्य था वहाँ शुद्धि आन्दोलन व स्वतन्त्रता आन्दोलन में आप बेहद सक्रिय थे।

सन् १९१९ में जिस समय अमृतसर में जलियाँ-वाला बाग का रोंगटे खड़े कर देने वाला कांड हुआ और अखिल भारतीय काँग्रेस कमेटी का राष्ट्रीय अधिवेशन अमृतसर में ही करने का फैसला किया गया तो उसकी व्यवस्था व प्रबन्ध की जिम्मेदारी लेने को कोई भी तैयार नहीं था। ऐसी विषम परिस्थिति में अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष के रूप में स्वामी श्रद्धानन्द जी ने हिम्मत के साथ कार्य सम्भाला और अंग्रेज के भयभीत करने वाले वातावरण में भी कार्य सम्पन्न किया। इसी प्रकार दिल्ली के चांदनी चौक में टाउन हाल के सामने विशाल जुलूस की अगवानी करते हुए अंग्रेज पुलिस की संगीनों के सामने छाती तानकर रास्ता छोड़ देने की सिंह गर्जना भी वीर संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द ने ही की थी।

एक तरफ शुद्धि आन्दोलन का डंका बजाया और दूसरी ओर निरन्तर १५ दिन तक दिल्ली की ऐतिहासिक जामा मस्जिद में वेदोपदेश द्वारा लोगों को कल्याण का रास्ता दिखाया।

प्रेय मार्ग से श्रेय मार्ग को अपना कर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने करोड़ों गुमराह लोगों के लिए मार्ग दर्शन का कार्य किया। आज आवश्यकता इस बात की है। कि बुद्धि जीवी लोग स्वामी श्रद्धानन्द जी के क्रान्तिकारी जीवन से प्रेरणा लेकर समाज सेवा के लिए घरों से निकलें जिनके घर का कार्यभार सम्भाल चुके और उनकी घर वालों को कोई जरूरत भी नहीं है वे लोग भी आखिर खाट पर मरने की क्यों सोचे बैठे हैं। पूरी उम्र बीत जाती है इस प्रकार के जीवन चरित्र पढ़ते हुए और अनेक उपदेश सुनते हुये परन्तु सब फिजूल है अगर व्यक्ति अपने जीवन में कोई चीज अमल में नहीं ला सकता तो हर वर्ष स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस क्यों धूम-धाम से मनाया जाता है। परन्तु क्या यह रस्म अदा करने की ही जिम्मेदारी है हमारी। क्यों मजाक करते हो उन शहीदों व महापुरुषों के साथ अगर असल रूप में उन्हें श्रद्धाँजलि देना चाहते हो तो उनके छोड़े हुए अधूरे कार्य को पूरा करने के लिए अपने जीवन की आहुति देश के करोड़ों किसान-मजदूर व शोषित जनता के लिये देकर राष्ट्र यज्ञ की अग्नि को प्रज्वलित करो। अज्ञान, अन्याय व अभाव को अगर समाप्त करना चाहते हो तो परिवर्तन के इस दौर में स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन से प्रेरणा लेकर देश में धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक क्रान्ति करने के लिये आगे आओ और अपना बाकी जीवन समाज सेवा में अर्पित करो और अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द की तरह कल्याण मार्ग के पथिक बनो। —जगवीरसिंह

मृतक भोज का आडम्बर व अनशन

गत दिनों ग्राम निहालोठ जि० झुन्झनू (राज०) में मृतक भोज का ढोंग रचकर २० हजार रु० का व्यय किया गया। पांच गांवों के हर घर में एक एक किलो लड्डू भेजे गए तथा हलवा माण्डा का भोजन भी करवाया गया। चार दिन तक यह मजमा चलता रहा। परन्तु नायब सूबेदार जगराम सिंह के साहस से उमरावसिंह एम. ए. और राजेराम आर्य बी. ए. तथा उनके दामाद श्री विश्वबन्धु आर्य पूरे तीन दिन तक इस ढोंग के विरोध में अनशन पर बैठे रहे। आने वाले लोग अनशनकारियों को गालियां निकालते थे। मारने पीटने की धमकियां देते थे। मृतक भोज करने वालों ने अपने दामाद विश्वबन्धु से रिश्ता तोड़ने की धमकी दी और जगराम जी को परिवार से अलग भी कर दिया। जगराम जी ने निम्न शब्द कहकर हमें भी आन्दोलित कर दिया जब देश की ७० प्रतिशत जनता गरीबी की रेखा के नीचे जीवन यापन कर रही हो तब बड़े-२ भोज करके अपना नाम कमाने की इच्छा रखने वाले पगड़ी बन्धाने वाले लोगों का क्यों न घेराव किया जाए। आओ हम ऋषि के अनुयायी ही इसके विरुद्ध भूख हड़ताल करें। समाज में इन कुरीतियों के विरुद्ध हर जगह ऐसे ही मोर्चे लगने चाहिएं।

—विश्वबन्धु आर्य ग्रा० भान्द (नारनौल)

सामयिकी

किसान रैली :

२३ दिसम्बर १९७८ को अखिल भारतीय किसान सम्मेलन के तत्वावधान में आयोजित अभूतपूर्व किसान रैली दुनिया के इतिहास में सबसे बड़ी रैली थी। दिल्ली के बोट क्लब के विशाल प्रांगण में राष्ट्रपति भवन से इण्डिया गेट तक राजपथ के दोनों ओर एक महासमुद्र की तरह ठाठें मारता हुआ जन समुह भरा हुआ था। आदमियों के सिर ही सिर दिखाई दे रहे थे और तिल धरने को भी जगह नहीं थी। एक बार जो जहां बैठ गया वह आखिर तक वहां से हिल न सका क्योंकि चारों ओर लगभग सभी प्रान्तों से किसान इस रैली में पधारे हुए थे। दुनिया के इतिहास में सबसे बड़ी रैली चीन में मार्शल माओत्से तुंग के नेतृत्व में हुई थी जिसमें २२ लाख लोग एकत्रित हुए थे। तथा दूसरे नम्बर पर भारत में सन् १९४८ में सरदार पटेल के नेतृत्व में रैली हुई थी जिसमें १८ लाख लोगों ने भाग लिया था। परन्तु २३ दिसम्बर को चौ० चरण सिंह के नेतृत्व में हुई इस किसान रैली ने दुनिया का रिकार्ड तोड़ कर सर्वोच्च स्थान प्राप्त किया है। इसमें लगभग ३५ लाख लोगों ने भाग लिया। इस रैली की विशेषता यह थी कि इसमें भाग लेने वाले लोग स्वेच्छा से एवं अपने साधनों के बल पर ही दिल्ली पहुँचे थे। देश भर से आये लाखों किसानों के दिल में जहां चौधरी चरण सिंह के प्रति असीम प्यार था वहीं किसान मजदूर एवं गांव के शोषण के विरुद्ध भयंकर आक्रोश भी। लोगों की भावनाओं के अनुरूप किसान सम्मेलन के आयोजकों ने एक महत्वपूर्ण मांगपत्र के माध्यम से देश की जनता के समक्ष इस सम्मेलन का उद्देश्य घोषित किया। सम्मेलन में पढ़े गये २० सूत्रीय मांगपत्र के अनुसार किसान को सस्ते बीज, खाद, औजार व खेती सम्बन्धी सामान प्रदान किया जाए। किसान की पैदावार को उचित एवं लाभकारी मूल्य मिले। केन्द्रीय कृषि मूल्य आयोग में किसानों के प्रतिनिधि रखे जायें। सरकारी नौकरियों में ८० प्रतिशत हिस्सा देहात में रहने वाले युवकों को और उनमें भी साधन-हीन लोगों को मिलना चाहिए। बड़े कारखानों पर रोक लगा कर लघु एवं कुटीर उद्योग को बढ़ावा दिया जाये। देश की ८० प्रतिशत जनता देहात एवं गांव में बसती है अतः सरकारी बजट का ८० प्रतिशत भाग गांव पर खर्च किया जाये। गांव की हो रही घोर उपेक्षा तुरन्त बन्द की जाये। गांव में पीने के पानी एवं शौचालयों की पूरी सुविधा दी जाये। जातिवाद के जहर को समाप्त किया जाए। और कुल मिलाकर यही मुद्दा था कि शहरों के मुकाबले गांवों की जो उपेक्षा की गई है उसे बन्द कर उन्नति के सभी साधन तेजी से जुटायें जायें और सही अर्थों में गान्धी का ग्राम स्वराज्य लाया जाये।

दिल्ली की इस ऐतिहासिक किसान रैली से देश भर के किसानों को अपनी शक्ति एवं संगठन का मार्ग दर्शन मिला है। हिन्दुस्तान के इतिहास में यह पहला मौका है जब काश्मीर से कन्या कुमारी और पंजाब से आसाम तक बसने वाले करोड़ों किसानों के दिल में शोषण एवं अन्याय के खिलाफ संघर्ष करने की भावना बनी है। अन्य वर्गों की भांति अब किसान का संगठन बन रहा है, यह अत्यन्त ही प्रशंसनीय प्रयास है। इस महान् कार्य के लिये किसान मजदूरों के रहनुमा चौ० चरणसिंह को ही सारा श्रेय जाता है। देहात के ८० प्रतिशत लोगों को समय की मांग के अनुसार चौ० चरण सिंह के नेतृत्व में संगठित होकर अपने अधिकारों की लड़ाई छेड़ देनी चाहिए तभी यह अभूतपूर्व रैली सार्थक हो सकेगी।

इन्दिरा गांधी की सजा :

भारत की संसदीय राजनीति के इतिहास में प्रथम बार एक भूतपूर्व प्रधानमन्त्री को संसद के मानहानि के आरोप में जितनी सख्त सजा दी गई है उसका और कोई उदाहरण नहीं मिलता। सन् १९५२ में श्री मुदगिल को एवं १९७६ में डा० सुब्रमन्यम स्वामी को संसद की मानहानि के आरोप में केवल सदस्यता से निष्कासित किया गया था। परन्तु श्रीमती गांधी को निष्कासन के अतिरिक्त लोकसभा के

सत्रावसान तक जेल भेज कर लोकसभा ने नई परम्परा कायम कर दी है। आज तक दुनिया के किसी भी भूतपूर्व प्रधानमन्त्री को इस प्रकार का दण्ड संसद के मानहानि के आरोप में नहीं मिला है। अब देखना यह है कि इन्दिरा गांधी को दी गई यह सजा उचित है या अनुचित। सत्यार्थ-प्रकाश के छठे समुल्लास में स्वामी दयानन्द जी ने राजधर्म की व्याख्या करते हुए लिखा है कि—जो जितना बड़ा व्यक्ति हो उसे सामाजिक अपराध करने पर उतनी ही ज्यादा सजा मिले। इस विचार के अनुसार यह सिद्ध हो जाता है कि श्रीमती गांधी को देश की प्रधानमन्त्री होते हुये अपने पुत्र का बचाव करने के लिये पद का जो दुरुपयोग किया वह एक अक्षमीय अपराध है और उसे यह दण्ड देना उचित ही कदम है ताकि इससे छोटे से छोटे पद पर कार्य करने वाला व्यक्ति भी सबक ले सके। वैसे लोकसभा ने श्रीमती गांधी को क्षमा याचना द्वारा अपनी गलतियों का प्रायश्चित करने का अवसर भी दिया परन्तु अपने स्त्री हठ के कारण श्रीमती गांधी ने क्षमा याचना तो दूर उल्टा अपने को निर्दोष एवं लोकसभा के निर्णय को पक्षपातपूर्ण सिद्ध करने का असफल प्रयास किया। राजनीतिक दृष्टि से श्रीमती गांधी को जेल भेजने एवं संसद की सदस्यता से निष्कासित करने के कैसे भी परिणाम निकलें परन्तु आने वाले शासकों एवं सभी लोगों के लिये यह कदम अच्छे सबक का काम करेगा।

वैसे तो देश की जनता श्रीमती गांधी को जेल के सींखचों के भीतर बहुत दिनों की देखने की उत्सुक थी। परन्तु जनता सरकार के शासकों ने यह कार्य ऐसे समय पर किया जब उनका आपस में घटकवाद के आधार पर मतभेद हो रहा है और जिसका परिणाम यह है कि जनता पार्टी की लड़ाई का फायदा उठाकर श्रीमती इन्दिरागांधी के समर्थकों ने देश भर में इस सजा के विरुद्ध व्यापक गिरफ्तारियां देने का प्रोग्राम चलाया और तोड़ फोड़ के द्वारा हिंसा पैदा करने की कोशिश की, अगर जनता सरकार एक वर्ष पूर्व यह कदम उठाती तो इन्दिरा समर्थकों में शक्ति प्रदर्शन का हौंसला ही नहीं बनता। परन्तु फिर भी इतना अवश्य है कि श्रीमती इन्दिरागांधी की चिकमंगलूर में जीत के कारण राष्ट्रीय राजनीति में जो स्थिति बनी थी वह सब की सब इस सजा के बाद धूमिल हो गई है।

—जगवीर सिंह

श्रद्धा के फूल

ले०—पं० श्याम सुन्दर स्नातक 'महोपदेशक'

श्रद्धा के सुमन चढ़ाने को श्रद्धा का गायन गाने को,
न जाने क्यों मन करता है।
पावन जीवन की कुछ सुगन्ध अनजाने में बिखराने को,
न जाने क्यों मन करता है।
मैं मानव हूँ मानवता का संसार जगाना है मुझको,
कुछ धर्म कर्म कुछ पुण्य कर्म का सार बहाना हैं मुझको।
बस इसी चिरन्तन चिन्तन में पुण्यों का यह घट भरने को,
न जाने क्यों मन करता है।
श्रद्धा के सुमन चढ़ाने को·········
मैं फूल हूं उस प्रिय बगिया का जिसका माली है वीतराग,
सो कुछ निज ऋण से चुका दिया देकर अपना सौरभ पराग।
इतने पर भी सन्तोष नहीं, निज जीवन पर कोई रोष नहीं,
न जाने क्यों मन डरता है।
श्रद्धा के सुमन चढ़ाने को श्रद्धा का गायन गाने को,
न जाने क्यों मन करता है।

लेखकों से निवेदन

राजधर्म पाक्षिक नियमित रूप से निकलना प्रारम्भ हो चुका है। ग्राहकों की संख्या बढ़ती जा रही है। परन्तु हमें अपने आदरणीय लेखकों व विद्वानों से जो अपेक्षा थी वह सहयोग नहीं मिल रहा। राजधर्म के पुराने लेखकों से नम्र निवेदन है कि अपने प्रभावशाली लेख व रचनाएं भेजकर कृतार्थ करें। राजधर्म समाज के किसान, मजदूर, कर्मचारी विद्यार्थी व हर शोषित वर्ग के हितों की लड़ाई के लिए एक शंखनाद है। इसमें, धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक व राजनैतिक लेखक सादर आमन्त्रित है।

—सम्पादक

राजधर्म के ग्राहकों से

राजधर्म पाक्षिक के ग्राहकों की सेवा में निवेदन है कि उनका वार्षिक शुल्क अगर समाप्त हो चुका है तो शीघ्र पुनः भेजकर राजधर्म को अपने नाम जारी रखें। राजधर्म में संगठन की सभी सूचनाएं व महत्वपूर्ण लेखादि प्रकाशित होकर आपको हर पन्द्रहवें दिन मिलते रहेंगे। कृपया अपने मित्रों को भी ग्राहक बनाने की प्रेरणा दें। १५) वार्षिक शुल्क शीघ्र भेजें।

—व्यवस्थापक

क्या १९७९ 'अभावग्रस्त' बच्चों तक पहुंचने का वर्ष होगा ?

विष्णु नागर

१९७९ अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष होगा। भारत में इस वर्ष के दौरान 'अभावग्रस्त बच्चे' तक पहुँचने का लक्ष्य रखा गया है। लेकिन स्वयं केन्द्रीय शिक्षामन्त्री डा० प्रतापचन्द्र चन्दर कह चुके हैं कि सरकारी एजेंसियों के माध्यम से हर बच्चे तक पहुंचना कठिन है और यह समझना भारी भूल होगी कि स्वयंसेवी एजेंसियाँ इतनी समर्थ है कि वे हर 'अभावग्रस्त' बच्चे तक पहुँच सकेंगी।

तो क्या होगा उन नौ करोड़ बच्चों का जो भयानक गरीबी के शिकार हैं ? क्या होगा उन आठ करोड़ स्कूली बच्चों का जिनमें से अधिकतर कुपोषण के कारण रोगों के बहुत जल्दी शिकार हो पाते हैं ? क्या होगा हर वर्ष अन्धे हो जाने वाले १२ हजार बच्चों का ? क्या होगा ? उन १८·७ प्रतिशत बच्चों का, जो स्कूल में भर्ती होने से पहले ही मौत के शिकार हो जाते हैं।

इन सारे प्रश्नों के कोई उत्तर सरकार के पास नहीं है। हां, उसने १४ वर्ष से कम उम्र के २२ करोड़ बच्चों के लिए २२ समन्वित बाल विकास केन्द्र जरूर खोले हैं और शायद यह वर्ष बीतते न बीतते देश के पांच हजार ब्लाकों में से सौ में ऐसे केन्द्र खुल जायेंगे। इन केन्द्रों में बच्चों व माताओं के स्वास्थ्य व शिक्षा का प्रबन्ध होगा। पता नहीं इस महत्वाकांक्षी योजना का कितना लाभ सौ ब्लाकों को मिलेगा। लेकिन मिल भी गया तो बाकी ४९०० ब्लाकों का क्या होगा ? वहाँ कब तक ये केन्द्र खुलेंगे ? शिक्षा मन्त्रालय के पास इसका कोई जवाब नहीं है, न ही सकता है, क्योंकि बच्चों का विकास सारे देश के लोगों के विकास से अलग कोई चीज नहीं है। लेकिन सरकार की सारी तैयारी यह है कि बच्चों के कुपोषण, अभाव, बीमारी, अशिक्षा के मसले को सारे देश के मसलों से अलग करके देखा जाए। तभी यह भ्रम फैलाया जा सकेगा कि सरकार बाल वर्ष में बच्चों के लिए बहुत कुछ कर देगी। यह सरकारों का चिर-परिचित पुराना खेल है।

सारी विकासशील दुनियाँ में करीब ५० करोड़ बच्चे बुनियादी सुविधाओं से वंचित हैं। इसका मतलब यह भी है कि करीब इतने ही और लोग वहाँ अभाव और शोषण की जिन्दगी जी रहे हैं, विकासशील देशों

बच्चे : कुछ तथ्य

१९७१ की जनगणना के अनुसार

१ हर वर्ष २ करोड़ २० लाख गच्चे पैदा होते हैं। इन में से ३० लाख बच्चे एक वर्ष के होते होते अस्वस्थ, नेत्र-हीन या बहरे होते हैं। वे अधिकतर मानसिक रूप से पोषण से मरते हैं।

२ १० से १५ प्रतिशत बच्चे मर जाते हैं, बाकी बचे बच्चों में १० से १५ प्रतिशत मां के कुपोषण के कारण समय से पहले जन्म लेते हैं।

३ गांवों में प्रति हजार पर १३१ तथा शहरों में प्रति हजार पर ८१ बच्चे मर जाते हैं।

४ मरने वाले बच्चों में ५० प्रतिशत गांव के वे बच्चे होते हैं जो महीने भर के भी नहीं हो पाते।

५ बालिकाएं मृत्यु का अधिक शिकार होती हैं।

६ मजदूरों की कुल संख्या में ६ प्रतिशत हिस्सा बच्चों का है।

में बच्चों की मृत्यु-दर विकसित देशों की तुलना में आठ गुनी है। पूरी आबादी में आधी से अधिक मौतें पांच वर्ष तक के बच्चों की होती है।

इसके विपरीत विकसित तथा एशिया-अफ्रीका के देशों में बच्चे जीवन की आवश्यकताओं की दृष्टि से सम्पन्न है। अगर इन देशों को सरकारों की बात माने तो वहां समस्या यह है कि बच्चों की सुविधाएं बढ़ाई कैसे जायं। वैसे सरकारेतर एजेंसियां भी यह स्वीकार करती हैं कि इन देशों में बच्चे विकास योजनाओं के केन्द्र में है। लेकिन किसी भी विकाशशील देश के बारे में यह बात नहीं कही जा सकती। इसके कारण भी हैं। जहां सरकारें अपने नागरिकों की बुनियादी भौतिक जरूरतें पूरी कर सकी है वहाँ सम्भव है कि वे बच्चों पर अधिक ध्यान दें, उन्हें औरों से ज्यादा सुविधाएँ हासिल करवायें। लेकिन विकासशील देशों में जहां घोर गरीबी का साम्राज्य है, यह सोचा भी नहीं जा सकता कि एक भूखे या अधपेट मजदूर किसान का लड़का शिक्षित, सुपोषित, स्वस्थ और अपनी तमाम रचनात्मक सम्भावनाओं के साथ जी सकता है। तीसरी दुनियां के देशों की सरकारें यही असम्भव स्वप्न दिखाने की कोशिश कर रही है।

स्वयं प्रधानमन्त्री श्री मोरारजी देसाई ने पुनर्गठित राष्ट्रीय बाल बोर्ड की पहली बैठक को सम्बोधित करते हुये कहा था कि बाल विकास कार्यक्रमों का क्षेत्र व्यापक बनाने की अपेक्षा सीमित रखा जाए, ताकि अधिक उपलब्धियां हो सकें। सम्भवतया इसी बात को ध्यान में रखकर इस वर्ष ८ करोड़ स्कूली बच्चों को विटामिन 'ए' की गोलियां वितरित करने की योजना बनाई गई है। लेकिन जिन बच्चों को समस्या भूख है, उन्हें विटामिन की गोलियां देकर क्या होगा? इस बारे में कांग्रेसी सरकार के जमाने में भी कई बार कहा जा चुका है लेकिन न तब इस बात का उत्तर दिया गया था, न अब दिया जा रहा है। उत्तर देने से सरकार की आवश्यकता का मुखौटा उतर जाने की आशंका है।

१९७४ में बच्चों पर राष्ट्रीय नीति प्रस्ताव पारित किया गया था। जिस में बच्चों को देश की अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सम्पत्ति स्वीकार किया गया था जाहिर है कि ऐसा नीति प्रस्ताव स्वीकार करने में कोई कठिनाई नहीं थी। कौन सिद्धान्त रूप में बच्चों को 'अत्यन्त महत्त्वपूर्ण सम्पत्ति' स्वीकार करने से इन्कार करेगा। नीति प्रस्ताव स्वीकार करने के साथ ही राष्ट्रीय बाल बोर्ड की स्थापना की गई थी जिसे पिछले अप्रैल में पुनर्गठित किया गया है। प्रधानमन्त्री इसके अध्यक्ष हैं, लेकिन यह जानना शेष है कि इस सबका नतीजा क्या हुआ है? विगत चार वर्षों में बच्चों की हालत बदलने के लिए बोर्ड ने क्या कदम सुझाये हैं। इतना जरूर है कि उस ने बाल वर्ष मनाने के लिए राष्ट्रीय योजना का प्रारूप तैयार किया है। १९७९ ही यह बतायेगा कि बाल वर्ष मनाने की यह योजना बच्चों को कितनी मददगार साबित होगी।

अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष सचिवालय के निर्देशक जान ग्रन ने कहा है कि अन्तर्राष्ट्रीय बाल दिवस पुरानी बातें दोहराने का वर्ष नहीं होगा, बल्कि कुछ करने का वर्ष होगा। यह महत्त्वपूर्ण है कि बाल वर्ष बच्चों के अधिकार के विश्व घोषणापत्र को २० वीं वर्षगांठ के अवसर पर मनाया जाएगा। यह वर्ष एक अवसर देगा कि पिछले दो दशकों में बच्चों के अधिकारों का और हनन हुआ है, इस पर समीक्षा को जा सके यह हनन न केवल तीसरी दुनियां में, बल्कि विकसित देशों में भी हुआ है। बच्चे अपने पालकों की क्रूरता के शिकार दोनों ही दुनियांओं में हो रहे हैं। सरकारें भी इस काम में पीछे नहीं रही है, हमारे देश में बाल कानून के अन्तर्गत की गई व्यवस्था को लागू न करने के परिणामस्वरूप करीब तीन हजार बच्चे अपराधियों के साथ जेलों में हैं। उनके लिए बाल सुधार गृहों की व्यवस्था नहीं है। जेलों के बाहर भी अधिसंख्य गरीब बच्चों का जीवन बदतर है।

संयुक्त राष्ट्रसंघ से सम्बन्ध यूनिसेफ बच्चों के लिए समर्पित संस्था है। उसने पिछले कुछ वर्षों में ऐसिया, अफ्रीका के वंचित बच्चों के बारे में सक्रिय भूमिका निभाई है। आगामी तीन वर्षों में वह भारत सरकार को बाल कल्याण कार्यक्रमों के लिए ४२ करोड़ रुपया दे रहा है जिसका उपयोग पौष्टिक आहार, स्वास्थ्य, पेयजल, ग्रामीण विकास आदि के लिए किया जाएगा, यह एक शुभ लक्षण है कि यूनिसेफ बाल-

विकास को एक स्वायत्त काम न मानकर, उसे ग्रामीण विकास का अन्त मानता है। लेकिन दुर्भाग्य से भारत में ऐसी कोई स्वयंसेवी एजेंसी नहीं है जिसके माध्यम से सरकारी लालफीताशाही के बिना विकास का काम हो सके। यूनिसेफ की मदद जो वैसे थी बड़ी नहीं है। सरकारी एजेन्सी के माध्यम से जरूरतमन्द लोगों तक ठीक से पहुँच पायेगी, इसमें हमेशा आशंका रहती है। लेकिन यह मदद सही दिशा में है।

फिलीपीन के राष्ट्रपति श्री फर्डिनांड मारकोस ने अपील की थी कि 'बाल वर्ष' मनाने की बजाए 'बाल दशक' मनाया जाए, क्योंकि विकासशील देशों में बच्चों की हालत सुधारने में एक वर्ष का समय किसी तरह उपादेय सिद्ध नहीं होगा। उन्होंने खासकर एशिया के बच्चों की दयनीय दशा पर ध्यान आकृष्ट किया था। ऐसा नहीं लगता कि मारकोस की बात पर ध्यान दिया गया है।

अन्तर्राष्ट्रीय बाल वर्ष में बहुत आशाएं करना तो ठीक न होगा। इसकी सार्थकता इसी में है कि वह दुनियां को एक बार फिर से यह बता दे कि एशिया और अफ्रीका के देशों को तेजी से शोषणमुक्त समाज की तरफ बढ़ना है। यह एक न्यूनतम आवश्यकता है बच्चों के विकास की दिशा में बढ़ने की। ❁

(पृष्ठ ६ का शेष)

समर्पण भावना के बिना संगठन के लिए तथा राष्ट्र के लिए घातक ही सिद्ध होता है।

तप-संयम की समानता :

साधक जिस प्रकार अपनी साधना में तीव्र संवेग लाने के लिए विविध प्रकार के तप-संयम-नियमों का कठोर पालन करता है। काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि आन्तरिक शत्रुओं से ऊपर उठकर उदार चेता, ब्रह्मचर्य, सन्तोष आदि श्रेष्ठ गुणों को धारण करता है। ठीक इसी प्रकार क्रान्तिकारी भी आन्तरिक शत्रुओं को जीतकर कर्त्तव्य भावना से मनुष्यपन का उद्देश्य पूर्ण करता है। देश रक्षकों की शुद्ध आन्तरिक निष्काम सर्वहितकारी भावना योगी से कम नहीं है।

क्रान्तिकारियों के तीन प्रकार :

सामान्य व्यक्तियों की अपेक्षा क्रान्तिकारियों में निरालापन होता है। ऐसे निराले तीन प्रकार के होते हैं। आचार्य अभयदेव लिखते हैं कि—"पहले दर्जे के निराले आदमी वे होते हैं जो अपनी अतुल मन:शक्ति से सूक्ष्म संसार में क्रान्ति पैदा कर देते हैं। दूसरे दर्जे के निराले आदमी इस क्रान्ति को पकड़ने वाले होते हैं और इसे चलाते हैं तथा तीसरे दर्जे के लोग इसमें नाना प्रकार से सहायता देते हैं।" निराले आदमी की पहचान क्रान्ति के आरम्भ में होती है। क्रान्ति जब हो चुकती है तब तो कुछ भी निरालापन नहीं रहता। नये प्रवाह में सभी बहने लगते हैं। वहीं धन्य पुरुष हैं जो क्रान्ति के प्रारम्भ में कठिन कार्य करते हैं।

सफल क्रान्ति :

क्रान्ति पूर्ण रूप से तभी सफल होती है जब क्रान्तिकारियों में विवेक शक्ति भी हो। समय पर शीघ्र ही ऊहापोह कर सके। समाज को सही रास्ते पर चला सके। विदेशियों से लड़ना, पाखण्ड-अन्धविश्वास अथवा कुरीतियों के प्रति संघर्ष करना एक पक्ष है परन्तु श्रेष्ठ आदर्शों पर समाज को स्वतः चलने के लिए तैयार करना कहीं अधिक कठिन है। इस उपक्रम को रामप्रसाद बिस्मिल ने अपनी जीवनी में अङ्कित किया है। निखिल चिन्तन मनन के लिये मानसिक एकाग्रता नितान्त आवश्यक है। योग साधना से ही विवेक तथा एकाग्रता सम्भव है। अतः सर्व विधिना क्रान्तिकारी समुदाय के लिये योगाभ्यास करने की नितांत आवश्यकता है। तभी आत्मबल की वृद्धि कर सफल क्रान्तिकारी बन सकते हैं। ❁

बेरोजगार अध्यापक संघ जि० महेन्द्रगढ़

अध्यक्ष—श्री जसवन्तसिंह एम.ए.,बी.एड. उपाध्यक्ष—श्री भगवानसिंह बी.ए.,बी.एड., महासचिव—श्री हनुमानसिंह बी.ए.,बी.एड., सचिव—श्री रोशन लाल एम.ए.,बी.एड., उपसचिव—श्री रविदत्त, बी.ए., बी.एड., कोषाध्यक्ष— श्री कंवरसिंह डी.पी.एड.।

योग और क्रान्तिकारी समाज

लेखक—योगेन्द्र पुरुषार्थी
योगानुसन्धाता योगधाम, ज्वालापुर

महर्षि पतञ्जलि ने योग की परिभाषा सुन्दर सारगर्भित शब्दों में की है—"योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः" योग १।२

चित्त की चंचल वृत्तियों को रोकना ही योग बताया है। गीता में निष्काम कर्म की प्रधानता का उद्घोष करते हुए योगेश्वर श्रीकृष्ण ने 'योगकर्मसु कौशलम्' अर्थात् कर्मों में कुशलता प्राप्त करना योग कहा है।

युञ्जते मन उत युञ्जते धियो विप्रा विप्रस्य बृहतो विपश्चितः। यजु० ५।१४।११।४।३७।२

धीरा युञ्जन्ति कवयो युगा वितन्वते पृथक्।
धीरा देवेषु सुम्नया ॥ ऋ० १०।१०१।४।

इन दोनों मन्त्रों के आधार पर योग का अर्थ युक्त करना अर्थात् संयुक्त करना या जोड़ना है।

"समत्वं योग उच्यते" समता के भाव को भी योग कहा है।

उक्त परिभाषाओं में प्राथमिक दोनों परिभाषायें क्रान्तिकारी समाज की विचारधारा से सामञ्जस्य रखती है अर्थात् इन दोनों परिभाषाओं पर पूर्णरूपेण आचरण करने वाला ही निर्भीक क्रान्तिकारी बन सकता है। जो नवयुवक चंचलता, चपलता, चीजों के चाखने, फैशन की चाकचक्य में तल्लीन होगा वह क्रान्तिकारी कैसे बन सकता है। पानी जैसी चंचलता किसी काम की नहीं। यह चंचलता न तो स्वयं मानव का ही निर्माण होने देती हैं, न गम्भीरता का पुट आने देती हैं। नहीं राष्ट्र के लिए हितकारी सिद्ध हो सकती हैं।

इसके विपरीत जो व्यक्ति अपनी चंचलवृत्तियों को एकाग्र कर आन्तरिक शक्तियों को जागृत करले, संकल्प शक्ति को प्रबल बनाले, जीवन का रहस्य जान ले और आत्मा सास्वत समझ ले, वही प्राणों को हथेली पर रखकर बड़े से बड़ा कार्य उठा सकता है प्रबल क्रान्तिकारी बन सकता है।

क्रान्तिकारी बनने वालों के लिए गीता का यह श्लोक आत्मा की सास्वतता का पाठ पढ़ाता हुआ, आत्मोत्सर्ग के लिए प्रेरित कर रहा है—

नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः॥

अर्जुन जब महाभारत युद्ध में अपने बन्धु-बान्धव सम्बन्धियों को मारने से पीछे हट जाता है तथा मारना पाप समझ लेता है, उसी अज्ञानता को नष्ट करने के लिए योगेश्वर श्रीकृष्ण तत्त्व समझाते है—अर्जुन! तू इनको मारना कहता है, आत्मा को तो शस्त्र काट नहीं सकते, अग्नि जला नहीं सकता, न जल गीला कर सकता है और न वायु सुखा सकता है।

'अजो नित्यों सास्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।'

यह आत्मा न जन्म लेता अर्थात् आत्मा उत्पन्न नहीं होता, यह नित्य है सदैव रहने वाला है सास्वत है पुरातन अनादि है। शरीर के नष्ट हो जाने पर आत्मा नष्ट नहीं होता।

योगेश्वर श्रीकृष्ण द्वारा दिया गया उपदेश योगसाधक के लिए एवं क्रान्तिकारी के लिए समान भाव से मार्गदर्शन करता है। जिस प्रकार एक योग-साधक के लिए एकाग्र चित्त होकर आत्मसाक्षात्कार तथा परमात्म साक्षात्कार को लक्ष्य बनाकर अग्रसर होना पड़ता है। तद्वत् क्रान्ति की ज्वाला को प्रज्वलित करने वाले को धर्म, अधर्म, सत्यासत्य को जानकर आत्मा की अमरता एवं शरीर की नश्वरता को एकाग्रचित्त हो समझना पड़ता है। यदि क्रान्ति का इच्छुक यह समझेगा कि—धर्म और राष्ट्र मेरे किस काम आयेगा, मैं तो बलिदान होकर संसार से चला ही जाऊंगा, मर जाऊंगा, मुझे तो कोई लाभ नहीं मिलेगा। भला वह क्रान्ति का ज्वाला में अपने आपको कैसे झोंक सकता है, न वह इतरजनों के अन्दर क्रान्ति की लहर उत्पन्न कर सकता है। इस न्यूनता

के कारण वह क्रान्तिकारी बनने के योग्य नहीं।

क्रान्ति की ज्वाला को जाज्वल्यमान करने का अभिलाषी पूर्व ही शक्ति का संचय करने के साथ, जगत् का स्वरूप समझे, आत्मा-परमात्मा की सत्ता की अनुभूति करे। इसके अतिरिक्त नित्य रहने वाले धर्म को धारण करे और नश्वर शरीर को जीणवस्त्रवत् परिवर्तन करने वाला समझे। उक्त स्वरूपों को प्रयोगात्मक अनुभूति के लिये क्रान्ति के इच्छुक को परमावश्कय है कि वह योगसाधना करे। इन्हीं अनुभूतियों की प्रत्यक्ष अनुभूति होना ही तो योग है, जो कि चित्तवृत्तियों के निरोध होने पर ही सम्भव है।

चित्त की स्थिरता जिस प्रकार परमात्म साधक के लिए साध्य कोटि पर पहुंचाने के लिए उपयोगी है। उसी प्रकार सांसारिक कार्यकलाप एवं पारस्परिक व्यवहार में कुशलता प्राप्त कराने में परम सहायक होती है। स्थिर चित्त वाला व्यक्ति ही कर्मों में कुशलता प्राप्त कर सकता है। योगविद्या की सर्वोपरि विशेषता इसी कारण सिद्ध है कि वृत्तिनिरोध हो जाने पर प्रयोक्ता शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक जिस पक्ष में मानसिक एकाग्रता को प्रयोग करता है तो उसे सफलता ही सफलता मिलती है। वह निज कार्यसम्पादन में तो सक्षम होता ही है वाणिमात्र से अन्यों के कार्य सिद्ध करने की क्षमता पैदा कर लेता है।

सत्य का परिपालन :

योगसाधना करने में निमग्न रहने से सत्य का परिपालन साधक के जीवन में ओतप्रोत हो जाता है। उसकी वाणि में अमोघ शक्ति उत्पन्न हो जाती है। इस कारण महर्षि पतञ्जलि ने कहा है—

सत्यप्रतिष्ठायां क्रियाफलाश्रयत्त्वम्।' योग० २।३६

अर्थात्—सत्य की दृढ़ स्थिति होने पर योगी की वाणीं द्वारा जो क्रिया होती है, उसमें फल का आश्रयत्व होता है अर्थात् उसकी वाणी अमोघ होती है। भाव इसका यही जानना चाहिये कि अनधिकारी को योगी आशीर्वाद नहीं देता। इसी संदर्भ में महर्षि व्यास ने कहा है की—यदि योगी आशीर्वाद देता है कि तू धार्मिक हो जा, तो योगी के इस वचन से धार्मिक हो जाता है। स्वर्ग को प्राप्त हो। इसके वचन से स्वर्ग को प्राप्त हो जाता है उसकी वाणी व्यर्थ नहीं जाती।

सत्य की सिद्धि करने का फल वर्णन करते हुये, भोज ने कहा है कि—यज्ञादि क्रिया की हुई स्वर्गादि फल देती हैं उस सत्य के अभ्यास करने वाले योगी का तो ऐसा सत्य बढ़ जाता है जैसे कोई यज्ञादि कर्म करके फल को प्राप्त हो जाता है। जैसे किसी को क्रिया करते हुए क्रिया का फल होता है, इस योगी के वचन से ही वह प्राप्त हो जाता है।

यम—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह जिस प्रकार योगी के प्रमुख आधार हैं। योगी इनके पालन को अहर्निश कृतसंकल्प रहता है उसी प्रकार क्रान्तिकारी भी वास्तविक सत्य-धर्म को जानकर सत्यादि की स्थापना के लिए तथा असत्य, अधर्म एवं राष्ट्र विनाशक मान्यताओं को समूल नष्ट करने के लिये यावज्जीवन संघर्ष करता है। इस संघर्ष में यदि प्राणोत्सर्ग की स्थिति उत्पन्न होती है तो वह सहर्ष प्राण विसर्जन करके सत्य-धर्म एवं राष्ट्र की रक्षा का पाठ सिखाकर भावी पीढ़ी को सचेत कर जाता है। प्रत्येक राष्ट्र का क्रान्तिकारी समुदाय अपने राष्ट्र, धर्म, सभ्यता-संस्कृति की रक्षा के लिये सर्वप्रथम अपने अन्तःकरण में क्रान्ति की ज्वाला प्रचण्ड कर लेता है तत्पश्चात् अन्यों को प्रेरित करता है।

प्रमुख क्रान्तिकारी पं० रामप्रसाद बिस्मिल इन विशेषताओं के ज्वलन्त उदाहरण थे। उनके दैनिक जीवन में योगाभ्यास-संध्या, हवन का प्रमुख स्थान था। सामान्यावस्था में धार्मिक कृत्य सभी नर-नारि कर लेते हैं परन्तु आपत्ति आने पर उसकी परीक्षा हो जाती है। फाँसी पर चढ़ने से पहले रामप्रसाद बिस्मल की अन्तिम इच्छा पूछी जाती है—तो संध्या, हवन, ईश्वर-प्रार्थना की इच्छा व्यक्त करना, आन्तरिक धार्मिक स्थिति तथा समर्पण की भावना का द्योतक है। मृत्यु से किंचिद् न डरना योग की सफलता है

समर्पण भावना :

'ईश्वर प्रणिधानाद्वा' योग०१ सूत्र के द्वारा स्पष्ट किया गया है कि सर्वात्मना ईश्वर समर्पण की भावना से साधक को शीघ्र ही समाधि की अवस्था आ जाती है। यह समर्पण की भावना जिस क्रान्तिकारी के जीवन में समा जाती है जो संगठन-उद्देश्य को लक्ष्य बनाकर राष्ट्र रक्षा में सर्वदा समर्पित हो जाता है वही वास्तविक रूपेण सफल हो जाता है।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

नशाबंदी : समस्या और समाधान

लेखक—कुमार साहू
सहायक सम्पादक, नवभारत, रायपुर

लत चाहे मादक पदार्थों की हो या अपराधों की, आदमी को आदमियत के दायरे से दूर कर देने के लिए काफी है। प्रसिद्ध विचारक आगस्टाइन ने कहा था "आदतों को अगर रोका न गया तो वे जल्दी ही लत बन जाती हैं।"

नशे की लत एक ऐसा दुर्गुण है, जो एक बार लग जाने पर मुश्किल से ही छूटता है। कोई कहता है कि हम गम गलत करने के लिए पीते हैं और कोई तो जीने की आरजू लेकर लत से जुड़ जाता है। शायराना अन्दाज में यह बात कुछ इस तरह कही गई है :-

पी लिया करते हैं जीने की तमन्ना में कभी,
डगमगाना भी जरूरी है संभलने के लिए।

लेकिन यह तो महज शायराना अन्दाज है। हकीकत तो यह है कि संभलने के लिए कोई नहीं डगमगाता और डगमगाने के बाद विरला ही संभलता है।

आमतौर पर नशे की हालत में इन्सान अपना विवेक ताक पर रख देता है, और कभी कभी शराब की बूंद के लिए तरसने वाले या नशे के दीवाने लोग अनैतिक कमाई के लिए अपनी पत्नी की अस्मत तक दाव पर लगा देने में नहीं चूकते। हमारे देश में एक तो गरीबी के कारण कुपोषण और ऊपर से मदिरापान की लत इन्सान की अकाल मौत के लिए काफी है। बच्चों पर भी इस लत का कुप्रभाव पड़ता है। वे भी इस गलत रास्ते पर चल पड़ते हैं।

इस तरह अधिकाधिक लोग इस लत से जुड़ते जाते हैं जिससे असामाजिक गतिविधियों के साथ साथ आपराधिक प्रवृत्ति भी बढ़ती जाती है। इस तरह यह लत जहां परिवार की तबाही का माध्यम बनती है, वहां कानून और व्यवस्था के लिए एक चुनौती के रूप में उभरती है, शराबी के रक्त में शराब का असर पाया जाता है, जिससे उसकी प्रतिभा का क्षय होता है और भले बुरे की पहचान का विवेक भी खोया जाता है।

हमारे देश में गरीबी के साथ साथ शराब तथा अन्य मादक पदार्थों की खपत का बढ़ना उन सभी लोगों के लिए खासकर देश की बागडोर संभालने वाले लोगों के लिए गम्भीर चिन्ता का विषय होना चाहिए। अफीम की बहुलता वाला देश चीन आज इतना शक्तिशाली इसलिए बन सका है कि उसने अफीम के उपयोग को काफी सीमित कर दिया है।

अभिजात्य वर्ग द्वारा विरोध क्यों ?

प्रधानमन्त्री द्वारा शराब के कुप्रभाव से देश को उबारने का प्रयास जहां प्रशंसनीय है, वहां दुर्भाग्यजनक बात यह है कि अभिजात्य वर्ग द्वारा शराबबन्दी की पेशकश का विरोध किया जा रहा है। शराब चाहे, देशी हो या विदेशी, गरीब-अमीर सबको पथभ्रष्ट कर रही है। आज क्लबों और छात्रावासों के लड़के लड़कियों में मानो शराब पीने की होड़ सी लगी है। शराब ही नहीं, नशे के लिए भांग, चरस, गांजा और यहां तक कि एल०एस०डी० जैसी घातक गोलियों का प्रचलन हमारे देश की नई पीढ़ी में तेजी से बढ़ रहा है। आधुनिकता के नाम पर अनेक शिक्षक भी अपने छात्रों के साथ शराब पीकर अपनी गरिमा का अवमूल्यन कर रहे हैं। कवियों और साहित्यकारों के विषय में तो एक आम बात यह है कि नशा किए बगैर वे किसी रचना का सृजन नहीं कर सकते।

वैज्ञानिक विश्लेषण से यह सिद्ध हो चुका है कि नशे की लत अनेक दुष्परिणामों, व्याधियों, दुर्घटनाओं तथा विषाद को जन्म देती हैं। लेकिन हैरानी की बात यह है कि नशाबन्दी के इस अभियान की अधिकांश समाचार पत्रों द्वारा प्रखर आलोचना की जा रही है। अभिजात्य वर्ग के लोग नशाखोरी के पक्ष में बड़ी बड़ी दलीलें दे रहे हैं। इसका एक कारण यह है कि शराब और दूसरे नशीले पदार्थों की बिक्री में बेतहाशा मुनाफा है। लेकिन मजदूर तथा मध्यम वर्ग में शराब की खपत से परिवार के आर्थिक ढांचे की चरमराहट लाजमी है।

सरकार के शराबबन्दी कार्यक्रम का विरोध करने वाले लोगों पर ध्यान देने से यह तथ्य उभरता है कि देश का अभिजात्य वर्ग शराबबन्दी के कानूनों को अपनी व्यक्तिगत स्वतन्त्रता पर आघात मानता है। जब तक इस वर्ग के लोगों

का आधिपत्य राजनीति, शासन, समाज सेवी संगठनों तथा समाचार पत्रों पर बना रहेगा, तब तक शराबबन्दी का कोई कानून कारगर नहीं हो सकेगा। इस सम्बन्ध में प्रधानमन्त्री की यह चेतावनी कि शराब पीने वाले मन्त्रियों, सांसदों तथा विधायकों के खिलाफ अनुशासन की कार्यवाही की जाएगी, स्वागत योग्य है, लेकिन इस केतावनी का कितना अनुकूल प्रभाव होगा, यह नहीं कहा जा सकता।

बाधायें—एक चुनौती

भारत जैसे देश में, जहां गरीबी और जहालत के शिकंजे में तीन चौथाई आबादी सिसक रही है और जहां शराब तथा अन्य मादक पदार्थों की बिक्री से सरकार को बहुत ज्यादा आमदनी होती है, वहां नशाबन्दी की समस्या आजादी के इक्कतीस वर्षों के बाद भी एक गम्भीर चुनौती की शक्ल में मौजूद है। शराब बन्दी का सवाल, कई राज्यों में प्रयोग के दौर से गुजरने के बाद भी विचार-मंथन और कागजी घुड़दौड़ तक ही सिमट कर रह गया है। सिद्धांत रूप में नशाबन्दी की आवश्यकता पर सभी सहमत प्रतीत होते हैं, लेकिन वास्तविकता यह है कि इस संकल्प को व्यावहारिक रूप देने के मार्ग में अनेक बाधायें विद्यमान हैं। उधर उत्तर प्रदेश में सरकार द्वारा जब महीने की पहली तारीख और मंगलवार की शराब की बिक्री पर पाबन्दी लगा दी गई, तब सुप्रीम कोर्ट ने अपने एक फैसले द्वारा राज्य सरकार के आदेश को "स्थगित" रखने का निर्देश दिया। इस प्रकार सरकार द्वारा शराबबन्दी की दिशा में क्रमिक उपाय किए जाने के बाद भी उस पर अमल करने के मार्ग में कानूनी कठिनाइयां पैदा हो रही हैं, जिन्हें दूर करने के उपाय किए जाने चाहियें।

महज कानून के माध्यम से किसी बुराई को खत्म नहीं किया जा सकता। गांधी जी ने शराबबन्दी अथवा अन्य सामाजिक सुधारों के लिए कानून की बजाय हृदय परिवर्तन को अधिक कारगर उपाय बताया था, लेकिन हृदय परिवर्तन से गांधी जी का आशय कदापि नहीं था कि इस समस्या को लोगों की इच्छा पर ही छोड़ दिया जाए। उनका कहना था कि स्वेच्छा पर छोड़ देने से मद्य निषेध सफल नहीं हो सकता।

नशाबन्दी के सवाल को देश के आर्थिक सामाजिक परिवेश में देखने की आवश्यकता है। गांधी जी ने इस नैतिक पहलू पर भी निहायत संजीदगी से विचार किया था। वे कहा करते थे कि "शराब की बिक्री से प्राप्त आय से हमारे बच्चों द्वारा शिक्षा ग्रहण करना लज्जाजनक बात है। अगर मुझे एक घण्टे के लिए भारत का तानाशाह बना दिया जाए तो मैं पहला काम यह करूंगा कि तमाम शराब घरों को मुआवजा दिए बगैर ही बन्द करा दूंगा।" सरकार की नशाबन्दी नीति औचित्यपूर्ण होते हुए भी उसके परिपालन में कानूनी तथा अन्य बाधायें आड़े आती रही हैं। प्रधानमन्त्री श्री देसाई की राय है कि गरीबी से जुड़ी हुई समस्याओं के समाधान का मार्ग प्रशस्त करने की दिशा में शराबबन्दी एक महत्वपूर्ण कदम है।

कुछ सुझाव

विख्यात गांधीवादी विचारक दादा धर्माधिकारी ने नशे की लत दूर करने के लिए चार सुझाव दिए हैं। उनमें से एक यह है कि शराबी नेता तथा कवियों को किसी समारोह में आमन्त्रित न किया जाए। दादा धर्माधिकारी ने कहा है कि "पाप-पुण्य और व्यसन का व्यापार नहीं होना चाहिए। जो सरकार शराब के ठेके नीलाम करती है, वह शराब की व्यापारी है। व्यसन से व्यापार करना एक प्रकार की वेश्यावृत्ति है। जब तक उसका व्यापार होता रहेगा, गांधी जी का शराबबन्दी और नशाबन्दी का संकल्प पूरा नहीं हो सकता।

दादा धर्माधिकारी का सुझाव यह भी है कि लड़कियों को शराब पीने वालों से शादी नहीं करनी चाहिए।

बच्चों को नशेबाजी के घातक परिणामों की जानकारी देना और उससे हमारी सामाजिक-आर्थिक अवस्था पर पड़ने वाले प्रभावों की शिक्षा देना लाभदायी हो सकता है।

माता-पिता और शिक्षक स्वयं भी संयमी बनें तथा व्यसनों से दूर रहें और बच्चों में नियम, संयम और नैतिकता के संस्कार अंकुरित करें तो भावी पीढ़ी को नशे की लत और उसके बुरे परिणामों से बचना सम्भव हो सकता है।

कुछ लोगों की यह धारणा कि पूर्ण नशाबन्दी से भ्रष्टाचार और अपराध बढ़ेंगे, बेबुनियाद और भ्रांतिपूर्ण है। यह धारणा अपने नैतिक दायित्व से पलायन का बोध कराने वाली है। पुलिस आयोग के अध्यक्ष श्री धर्मवीर ने पूर्ण नशाबन्दी को अव्यवहारिक तथा असंभव बताया है, लेकिन यह आशंका निर्मूल है। नशाबन्दी देश के सर्वांगीण विकास के लिए अत्यन्त आवश्यक है और आर्थिक दृष्टि से पिछड़े वर्गों के लिए नशाबन्दी वरदान है, क्योंकि इसके बिना उनके सामाजिक-आर्थिक तथा नैतिक विकास की कल्पना ही नहीं की जा सकती।

गतांक से आगे—

राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन रेवाड़ी एक दृष्टि में

आठ बजे के लगभग स्वामी चन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में दीक्षा सम्मेलन प्रारम्भ हुआ, जिसके संयोजक थे युवा साथी प्रेमपाल शास्त्री और उद्घाटनकर्ता थे आचार्य वेदभूषण हैदराबाद वाले। इस अवसर पर सात व्यक्तियों ने वानप्रस्थ की दीक्षा ली एवं २५ नौजवानों ने नैष्ठिक ब्रह्मचर्य की दीक्षा ली। इस एतिहासिक सम्मेलन में सबसे आकर्षक दृश्य था एक मुसलमान युवक श्री अंसारी व कुछ हरिजन व्यक्तियों द्वारा जनेऊ ग्रहण करना। इस बात से समाज में एक नई क्रान्ति का सूत्रपात हुआ कि जन्म से कोई न छोटा है न बड़ा, गुण कर्म व स्वभाव से मनुष्य छोटा बड़ा होता है। यह वर्गविहीन व जातिविहीन समाज का निर्माण करने की ओर एक क्रान्तिकारी प्रयास था। आर्यसमाज के मंच से एक मुसलमान को यज्ञोपवीत देकर रुढीवादी परम्पराओं पर एक जबरदस्त प्रहार किया गया। शान्ति पाठ के बाद ग्यारह बजे ऋषि लंगर में भोजन करने सब चले गये।

भोजन के बाद फिर से हम पण्डाल में जाकर जम गये और करने लगे प्रतिक्षा समाज बदलो सम्मेलन की। १२ बजे समाज बदलो सम्मेलन स्वामी इन्द्रवेश जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुआ, जिसके संयोजक थे आर्यसमाज के युवा क्रान्तकारी नेता श्री रामधारी शास्त्री। रामधारी शास्त्री जी ने समाज बदलो सम्मेलन का निम्न प्रस्ताव पेश किया।

जाति तोड़ो—समाज बदलो

जातिवाद हमारे समाज का सबसे बड़ा जहर है। जातिवाद का जनून सवार होने पर आदमी सारी नीति, धर्म और गुणों को भूल जाता है। तीस साल का प्रजातन्त्र का इतिहास हमें बताता है कि—जातिवाद ने हमारे चुनावों को विकृत कर दिया है, और प्रजातन्त्र को खोखला बना दिया है। सामाजिक ऊच-नीच की घृणित भावना को जन्म देने वाला यह जातिवाद ही है। हमारे समाज की आर्थिक सामाजिक पुनःसंरचना में यह जातिवाद ही सबसे बड़ी रुकावट है।

इस रुकावट को हटाकर हमें समतामूलक वैदिक समाज वादी समाज की स्थापना के लिए एक भीषण क्रान्ति का अभियान छेड़ना होगा और इस दशा में सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण योगदान अन्तजातीय एवं अन्तर्सम्प्रदायिक विवाह के द्वारा हो सकता है।

महर्षि दयानन्द ने गुण, कर्म, स्वभाव की समानता में मानव मात्र में रोटी बेटी का व्यवहार प्रतिपादित किया है परन्तु आर्यसमाज अपने सौ वर्षों की लम्बी अवधि में इसे एक जीवित आन्दोलन नहीं बना सका। यह आज की हमारी युवा पीढ़ी के लिए सबसे बड़ी चुनौति है। इस चुनौति को स्वीकार कर हम आज यह संकल्प लेते हैं कि :—

१—हम सामाजिक रूढ़ियों को तोड़कर और जातिवादी कुसंस्कारों को कुचल कर अपने जीवन में अन्तर्जातीय विवाह को प्रोत्साहन देंगे।

२—सरकार से हमारा अनुरोध है कि वह तमाम राजपत्रित अधिकारियों के चयन में अन्य शैक्षणिक योग्यताओं के साथ अन्तर्जातीय विवाह की अनिवार्य शर्त लगायें और अन्य सेवाओं में अथवा सुविधाओं में प्रार्थी को अन्तर्जातीय विवाह के आधार पर प्राथमिकता दें।

३—हर वर्ष आर्य महासम्मेलन में हम कम से कम ऐसे दस दम्पत्ति का सार्वजनिक अभिनन्दन करेंगे जिन्होंने जाति का बन्धन तोड़कर विवाह किया हो।

४—जातिवाद और छूआछूत का जहर समाप्त करने के उद्देश्य से हम हर बर्ष जाति तोड़ो सप्ताह मनायेंगे जिसमें तथाकथित उच्च वर्ग के लोग संन्यासी, उपदेशक तक नालियों और शौचालयों की सफाई करेंगे।

५—अपने नाम के साथ जाति सूचक चिन्ह हटाकर शिक्षण संस्थाओं के जातिवादी नाम बदल कर सेना में जाति वादी रेजीमेन्ट की प्रथा खत्म करवा कर हम भारत में एक जातिहीन समाज की स्थापना का संकल्प लेते हैं।

प्रस्ताव पेश करने के बाद आर्यसमाज के वयोवृद्ध तपस्वी समाज सेवियों का अभिनन्दन प्रारम्भ हुआ जिसमें प्रत्येक को एक अभिनन्दन पत्र, एक दोशाला व एक सौ एक रु० भेंट किये गये। सबसे पहले तालीयों की गड़गड़ाहट व वैदिकधर्म की जय के उद्घोष के बीच अभिनन्दन हुआ आर्यसमाज के वयोवृद्ध संन्यासी ११८ वर्षीय स्वामी भीष्म जी का फिर क्रमशः स्वामी संतोषानन्द, स्वामी सर्वानन्द, स्वामी सोमानन्द, महाशय हीरालाल, पं० सोहनलाल, मा० इन्द्रजीतसिंह, महाशय भजनलाल, वानप्रस्थ सुखदेव व आदरणीया बहन लक्ष्मी जी का अभिनन्दन हुआ। अभिनन्दन के बाद वक्ताओं ने समाज बदलो सम्मेलन के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए उस

पर अपने-अपने विचार प्रगट किये प्रमुख वक्ता थे—भाई जगबीरसिंह एडवोकेट, रोशनलाल आर्य एडवोकेट, प्रो० भागसिंह, प्रो० श्योताजसिंह, प्रो० योगेन्द्र यादव, स्वामी अग्निवेश, श्री राममेहर एडवोकेट रोहतक व श्री विजयपालसिंह उपकुलपति गुरुकुल कांगडी आदि। श्री राममेहर एडवोकेट ने सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास के अनुसार गुरुकुल प्रणाली स्थापित करके समाज बदलने की नींव रखने के लिए गुरुकुल प्रणाली पर जोर दिया। गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय के उपकुलपति श्री विजयपालसिंह वर्मा ने एक अनुकरणीय उदाहरण पेश किया उन्होंने घोषणा की कि वे अपने नाम के साथ लगे पाल, सिंह व वर्मा के फालतू शब्दों को हटाकर अपना नाम आज से आर्य विजयआनन्द रख रहे हैं। उनकी इस घोषणा पर पण्डाल वैदिकधर्म की जय के उद्घोष से गूंज उठा। अन्त में राष्ट्रीय आर्यमहासम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश जी ने समाज बदलो सम्मेलन के माध्यम से वर्तमान व्यवस्था पर प्रहार किया और आर्यसमाज की व्यवस्था बदलने के लिए संघर्ष का आह्वान किया।

ठीक पांच बजे एक बार फिर वही चिरपरिचित् बैंड बाजे की धुन कानों में पड़ी अब की बार में समझ गया कि आर्य वीरदल व युवक परिषद् के सैनिकों का व्यायाम प्रदर्शन प्रारम्भ हो गया है। उसका आनन्द लेकर बाहर घूमने के लिए हम चले गये। दिल में बार-बार हिलौर उठ रही थी कि समाज को बदलने के लिए अपने आपको इस संघर्ष में डालकर इस व्यवस्था के खिलाफ लड़ाई प्रारम्भ कर देनी चाहिए। एक बार फिर मन में दृढ़ प्रतिज्ञा व संकल्प लिया इस समाज को बदलने का। सांय को नगरपालिका के भोजनालय में रोटी पर सब्जी लेकर दिन भर की क्षुधा शान्त की। फिर पण्डाल में भजनोपदेशकों की प्रतियोग्यता देखने के लिए चल दिए। रास्ते में परिचित लोगों से नमस्ते का आदान-प्रदान करते हुए हम आठ बजे पण्डाल में पहुँच गये। वहां सम्मेलन के संयोजक श्री राजपाल एडवोकेट, सम्मेलन के अध्यक्ष स्वामी भीष्म जी की आज्ञा से प्रतियोग्यता में भाग लेने वाली टीमों के नाम की घोषणा कर रहे थे। निर्णायकों के नाम की घोषणा हुई श्री टीकासिंह पुलिस अधिक्षक महेन्द्रगढ़, श्री रामधारी शास्त्री महा मन्त्री जिला जनता पार्टी जीन्द व श्री शान्तिस्वरूप डाटा ने निर्णायकों की कुर्सी पर अपना आसन जमाया। प्रतियोगिता का शुभारम्भ हुआ पं० ताराचन्द वैदिक तोप के उद्घाटन भजन से। एक के बाद एक टीम आती गयी व श्रोता आत्मविभोर होते गये। श्री नरसिंह भापड़ौदा के चुटकलों ने तो हँसाकर श्रोताओं के पेट में बल डाल दिए। नौजवान गायक श्री विजयपाल के "हम भी सफा और तुम भी सफा" के गाने से तो मैं इतना आतंकित हुआ कि एक बार तो कुर्सी से जमीन पर गिरने से मुश्किल से बचा। सभी भजनीक गायन कला के अनुभवी थे। निर्णायकों ने श्री चन्द्रभान को प्रथम, श्री रामस्वरूप रोहतकी को द्वितीय व श्री खेमसिंह को तृतीय पुरस्कार क्रमश: १५० रु०, १२५ रु०, व ११० रु० देने की घोषणा की। पण्डाल में उपस्थित जनता इस कार्यक्रम से इतनी प्रसन्न हुई कि उन्हें पता ही न चला कि कब रात्रि का डेढ़ बज गया।

अन्त में स्वामी इन्द्रवेश जी ने सभी आर्य महानुभावों को इस सम्मेलन में पधारने के लिए हार्दिक धन्यवाद किया। उन्होंने इस सम्मेलन को सफल बनाने में विशेष रूप से स्वामी शक्तिवेश, श्री किशनलाल, रामेश्वरदयाल, ब्र० दयावीर, ब्र० धर्मवीर, ब्र० जयवीर, ब्र० रामनिवास, ब्र० विरजानन्द, ब्र० सत्यानन्द, मा० रामपत, श्योताज, रामनारायण, श्री ईसरदास नारनौल, बी०डी०ओ० रामचन्द्र, बलबीरसिंह मगौठी, पं० ताराचन्द व सरपंच श्री जगदीश सेद अलीपुर, श्री लालसिंह आदि का व सम्मेलन में पधारने वाले सभी विद्वानों, संन्यासियों व श्रोताओं का धन्यवाद किया और अन्त में वैदिक धर्म की जय के उद्घोषों के साथ शान्तिपाठ करते हुए इस त्रिदिवसीय सम्मेलन का समापन हुआ।

यह सम्मेलन अभूतपूर्व व विशेष उत्साहवर्धक रहा। इस सम्मेलन से जहां आर्यसमाज के कार्यकर्त्ताओं को विशेष दिशा व अपूर्व उत्साह मिला वहां गैर आर्य सामाजिक कार्यकर्त्ताओं को वर्तमान पूंजीवादी व्यवस्था को बदलने के कार्य को और तेज करने की प्रेरणा मिली।

इस सम्मेलन की विशेष बात यह थी कि प्रथम बार इतने बड़े सम्मेलन में यज्ञ का कार्य हरिजनों को सौंपा गया तथा समाज की हर जाति के व्यक्ति को जनेऊ पहनने के अधिकार को साक्षात् प्रयोगात्मक रूप दिया। दूसरी ओर जहां वर्तमान अवसरवादी राजनीतिज्ञों द्वारा अपने राजनीतिक व्यापार को चलाने के उद्देश्य से मजदूर (हरिजन) किसान को लड़ाने की साजिस की जारही है। उस षड्यन्त्र को किसान मजदूर सम्मेलन के द्वारा एक झटके में छिन्न-भिन्न करके किसान मजदूर एकता का सूत्रपात किया व समाज की सामाजिक व आर्थिक पुनर्संरचना में किसान मजदूर की निर्णायक भूमिका के लिए एक नया आधार फिर से तैयार किया।

समाज बदलो सम्मेलन के माध्यम से इस गले सड़े समाज को बदलने की प्रक्रिया में लगे कार्यकर्त्ताओं को इस राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन से जहां एक और बहुत बड़ा बल, उत्साह व नैतिक शक्ति मिली। यह सम्मेलन उन पूंजीवादी फासिस्ट ताकतों के लिए एक चेतावनी है जो अपने स्वार्थ के लिए किसान मजदूर को आज तक आपस में लड़ाकर लूटते रहे। अब समय आगया है कि किसान मजदूर अपने इन शोषकों के खिलाफ संघर्ष करके एक नये समाज की स्थापना के लिए अग्रसर होंगे।

—वेदप्रकाश विद्रोही

दहेज रूपी राक्षस को खत्म करो

शादी-विवाह में जो लेने-देने की कुप्रथा हमारे भ्रष्ट समाज के अन्दर प्रचलित है उसी का नाम दहेज है। पुराने समय में दहेज को कुप्रथा नहीं थी बल्कि लड़की के घर वाले अपनी इच्छा से लड़की को कुछ दे देते थे। धीरे-धीरे इसने प्रथा का रूप धारण कर लिया। अब इसका इतना भयंकर तथा घिनौना रूप है कि वर्णन नहीं किया जा सकता। इस कुप्रथा ने हमारे समाज की जड़े खोखली बना दी हैं। कुछ चन्द पूँजीपति तथा जमाखोर अपनी बड़ाई के लिए अपने काले कारनामों से कमायें काले धन में से कुछ पैसे व्यर्थ में व्यय कर देते हैं तथा सारे समाज को इस ज्वाला में जलने को छोड़ देते हैं। इस कुप्रथा ने समाज का न जाने कितना अनिष्ट कर डाला है तथा कितनी ही मासूम लड़कियाँ इसका शिकार हुई हैं कितनी जिन्दगी से हाथ धोने के लिए मजबूर हुई हैं, कितने अरमान कुचले गये हैं तथा कितनी ही आशाओं पर पानी फिरा है? यदि इस कुप्रथा का जल्दी से जल्दी अन्त नहीं किया गया तो इसका विष हमारे समाज का सत्यानाश कर डालेगा जो कि अब भी हो रहा है। कितनी ही सम्पत्ति व्यर्थ जाती है, इसका कुछ उपयोग भी नहीं हो पाता है।

प्रश्न: –शादी के समय एक नये सदस्य का परिवार में आगमन होता है, इसके खर्च वगैरा चलाने के लिए लड़की वाले कुछ दे देते हैं अच्छा ही है।

उत्तर: –जो लड़की आती है वह इस अवस्था में होती है कि अपने भरण-पोषण के लिए काम कर सके तथा जीवन को सुचारू रूप से चला सके। जब एक बच्चा जन्म लेता है तथा उसके जन्म पर खर्च भी काफी होता है इसके साथ उसका बहुत ध्यान भी रखना होता है क्योंकि उसमें किसी प्रकार का सामर्थ्य नहीं होता, उसका भी काम चलता है फिर दहेज का ढोंग क्यों?

प्रश्नः –जिस घर में दहेज आता है वह तो सम्पन्न हो जाता है।

उत्तर:—सम्पन्न कहां हो जाता है, उल्टी उस परिवार में बुराईयां घर करती हैं। मुफ्त का पैसा शराब, अफीम, जुआ तथा लड़ाई-झगड़े में बढ़ोतरी करता है। क्या इन सबको सम्पन्नता का नाम दिया जाता है? इसके साथ ही उस गरीब की हालत भी देखिए, जिसने दहेज देना है वह कहां से पैसा प्राप्त करेगा? कहीं साहूकार से कर्जा लेगा अपना मकान या झोंपडी को गिरवी रखकर। फिर वह महाचण्डाल अपने चगुंल से कभी नहीं निकलने देगा।

प्रश्नः—जब कन्या को दहेज दिया जाता है तो उसके माँ-बाप की भी बड़ाई है तथा सास सुसर की भी। क्योंकि वह दहेज की चीजें सब गांव वालों को दिखाई जाती हैं। सब कपड़े वगैरा भी दिखाए जाते हैं जिनको देहात की भाषा में 'तील' कहा जाता है तथा सारे गांव में जब कन्या सुसराल पहुंचती है तो वहां भी चर्चा होती है कि फलाने के घर इतनी 'तील' तथा सामान आया है।

उत्तर:—इस झूठी बड़ाई का क्या परिणाम होता है यह भी आपने सोचा है क्या? यहीं से तो इस कुप्रथा का विस्तार होता है। जब औरतें यह सामना देखती हैं तो कहती हैं कि यह सामान है वह सामान है तथा उनके मन में भी यही इच्छा होती है कि मेरे बेटे की बहू भी इतना सामान लाए तभी कुछ बात बन पाए। भाण्डों की तरह एक-दूसरी औरतों में यह चर्चा होती है तथा कुप्रथा का बिजोरोपण किया जाता है। इसके साथ ही ५०-५०, ६०-६० 'तील' दी जाती हैं जिनका कोई उपयोग नहीं होता। कहती हैं दो ननद की, दो सास की, दो पातज की, दो देवरानी की, दो जेठानी की, दो ब्राह्मणी की, खुद की तीस, तथा पन्द्रह अगलियों की, पता नहीं यह कौन होती हैं? तथा २०-३० तोले सोना, २-४ किलो चान्दी वगैरा को पहन-पहन कर घिसा दिया जाता है। क्या काम आया यह दिखावा-दिखावा ही रह गया।

प्रश्नः—गहने से औरत की सुन्दरता बढ़ती है। क्या यह भी सच नहीं है।

उत्तर:--यह सफेद झूठ है कि गहने से औरत की सुन्दरता बढ़ती है। गहना नहीं सुन्दरता चरित्र होता है। जिस औरत का चलन खराब है वह चाहे जितना सोना लाद ले कभी भी सुन्दर नहीं हो सकती है। इस के साथ ही चोर, डाकूओं का डर बना रहता है तथा कितनी ही हत्याएं हो जाती हैं।

प्रश्न:—लड़के की पढ़ाई वगैरा में जो खर्च लगता है उसका लेने का तो कोई डर नहीं है ?

उत्तर:—बच्चे को शिक्षा देना तो मां-बाप व प्रत्येक राष्ट्र का कर्त्तव्य है। इसमें किसी दूसरे पर खर्च डालना कहां की बहादुरता है। बेचने के लिए पशु पाले जाते हैं, न कि बच्चे-बच्ची। पशु को खिलाया-पिलाया जाता है तथा मोटा बनाया जाता है ताकि मेले पर ज्यादा पैसे मिल जाएं। बच्चे को पढ़ाकर उस के पैसे बांटना कहां की इन्सानियत है ? बच्चों को तुलना कम से कम पशुओं से तो न करो।

प्रश्न:—यदि लड़की वालों को सामर्थ्य हो तब वह अपनी इच्छा से दें तो फिर लेने का क्या हर्ज है ? तथा जिसका सामर्थ्य न हो तो न दे।

उत्तर:—किसी भी हालत में दहेज नहीं लेना चाहिए। यहां तो चन्द लोग होते हैं जो बाकि के समाज को भी भट्ठी में झोंक देते हैं तथा फिर जिसका सामर्थ्य न हो उनको भी मजबूर किया जाता है ताकि वह निधनता की बेड़ियों में जकड़ा जा सके। जो उस का अहित चाहते हैं वही उसके नजदीकी बनकर उसी से खर्च करवाते हैं तथा मन ही मन खुश होकर 'साला रगड़ा जायेगा तथा सौ जन्म भी न उभर पायेगा'।

प्रश्न:—सरकार प्रतिबन्ध क्यों नहीं लगाती है ?

उत्तर:—सरकार छोटे-मोटे कानून दहेज को रोकने के लिए बना पाई है पर ये कानून लागू नहीं हो रहे हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि जो कानून बनाने वाले हैं वह स्वयं आचरण नहीं करते हैं तथा अपने बच्चों की शादियों में लाखों करोड़ों खर्च करते हैं। कई बार गांव के लोग इकट्ठे होकर भी प्रतिबन्ध लाते हैं तथा स्वयं ही उनका उलघन भी करते हैं। अब हरेक युवक तथा युवति का यह पुन्य कर्त्तव्य है कि इस बुराई से लड़ने के लिए लंगर-लंगोट कस लें। इस बुराई के खिलाफ खूब प्रचार करें न दहेज लें तथा न दें। इस कुप्रथा के अनेक बिगड़े हुए रूप हैं, जैसे कोथली, गोले-कुजे भेजना, बार त्यौहार का बहाना इत्यादि। इसके साथ जेठी कोथली, लाड कोथली, ब्याह कोथली तथा भात भरना इत्यादि सब दहेज कुप्रथा के रूप हैं। इन शादी के अतिरिक्त छोटी कुप्रथाओं का १९७२-७३ का अकेले हरियाणा राज्य का खर्च १२ करोड़ रुपये के लगभग है। देखें कितने बहन-भाई इस कार्य के लिए आगे बढ़ते हैं। चाहे सूर्य पूर्व की बजाए पश्चिम से निकलना आरम्भ कर दे, पर न दहेज लेगें न देगें तथा प्राणापन से इस कुप्रथा को उखाड़ फेंकने के लिये जुटेंगे। जब इस प्रकार का दृढ़ संकल्प लेकर आगे बढ़ेगें तो इस कुप्रथा का नाम निशान भी न रह पायेगा, इसकी सब दीवारें चकना चूर हो जायेगी। इससे बचा हुआ पैसा उत्पादन तथा उपभोग पर व्यय होगा, गरीबी तथा भूखमरी को छुपने के लिये भी जगह न पायेगी, शिक्षा बढ़ेगी, राष्ट्र समृद्ध होगा, लोगों में प्रेम-भाव तथा सदाचार को बढ़ावा मिलेगा, कलुषित भावना खत्म होगी तब चारों तरफ शान्ति तथा सुख का साम्राज्य होगा।

अश्लील साहित्य व सिनेमा

स्वाध्याय सद्ग्रन्थों का होता है न कि अश्लील तथा भद्दी पुस्तकों का। आज स्वाध्याय के नाम पर गन्दी कहानियां, गन्दे उपन्यास तथा काम वासना को भड़काने वाले लेख पढ़े जाते हैं इसके साथ ही सिनेमा के नग्न तथा बेशर्मी भरे चित्र दिखाये जाते हैं। यदि फिल्मों का ठीक से प्रयोग किया जाए तो देश के नागरिकों का चरित्र ऊँचा किया जा सकता है, देश-भक्ति के विचार नागरिकों में पैदा किये जा सकते हैं, त्याग की भावना कूट-कूट कर भरी जा सकती है, स्वार्थ रहित निर्भय युवक घर-घर में पैदा हो सकते हैं। सिनेमा विज्ञापन का बहुत अच्छा साधन है, जब पर्दे पर प्रत्यक्ष दृश्य नजर आते हैं तो उन्हें बिना कठिनाई के ग्रहण किया जाता है। पर अब सद्गुणों की ओर ध्यान नहीं दिया जाता बल्कि ऐसे चित्र प्रदर्शित किये जाते हैं जो उत्तेजक तथा कामुक होते हैं तथा चरित्रहीनता व व्यभिचार को बढ़ावा देने वाले हैं। अखाड़े तथा व्यायाम शालायें खाली नजर आती हैं, सिनेमाघरों पर भीड़ लगी है, युवकों का यौवन तथा चरित्र धक-धक करके जलरहा है। देश के

मर्दानापन लुप्त हो रहा है तथा कायरों और नपुंसकों की सेनाएं दृष्टिगोचर हो रही हैं। देश कहां जाएगा, कहा नहीं जा सकता।

प्रश्नः—क्या उपन्यास तथा सिनेमा सम्बन्धी किताबें पढ़ने से मनोरंजन नहीं होता है ?

उत्तरः—मनोरंजन तो जरूर होता होगा पर दोषों के सामने यह तुच्छ है। जब एक बार इनको पढ़ने की आदत पड़ जाती है तो पढ़ाई तथा धार्मिक पुस्तकों के लिए कोई जगह नहीं रह जाती है। जरूरी कार्यों में कोई ध्यान नहीं जाता है। इन पुस्तकों में इतनी वासनामयी बातें होती हैं कि पढने वाला बच नहीं पाता है। हर समय लड़कियों के पीछे चक्कर काटना, उन्हीं के स्वपन लेना तथा बार-बार महानीच विचार करना, फिर वही किताब पढ़ना तथा फिर वहीं विचार। भूख गायब हो जाती है स्वप्न में भी लड़कियां दिखाई देने लगती हैं, स्वप्नदोष बार-बार होने लगता है, धात तथा प्रमेह की बिमारियां घर कर लेती हैं। कुछ भी अच्छा नहीं लगता है यह होता है मनोरंजन का परिणाम।

प्रश्नः—बहुत सी सिनेमा सम्बन्धी किताबें ऐसी होती हैं जिनमें ज्ञान की बात होती हैं। उनको पढ़ने में क्या हर्ज है।

उत्तरः– आजकल ऐसी कोई पत्रिका तथा पुस्तक नहीं है जिसमें देश सुधार, चरित्र सुधार तथा नैतिक शिक्षा हो तथा वह फिल्मों से सम्बन्धित हो। हां एक आध कोई हो तो उस पर कोई आचरण नहीं करता है तथा वह प्रभावहीन होता है।

प्रश्नः—फिल्म देखने से कई चीजें आदमी सीख जाता है जैसे रहने सहने का ढंग, बोल-चाल इत्यादि।

उत्तरः—हां वह उसी तरह से बातें जरूर करता है जिस तरह फिल्मी सितारे करते हैं। न बहन की शर्म न माँ-बाप का इज्जत। सारे परिवार के बीच मस्ती से गाता है। 'सिर फुटे या माथा यारो मैंने तो हां करली'। इससे फुहड़पन और क्या हो सकता है ? छोटे-छोटे बच्चे-बच्चियां हीरो तथा हीरोईन की तरह बातें करते हैं। मां-बाप हँसी में टाल देते हैं जिसका परिणाम आगे चल कर भोले-भाले भुगतते हैं। इसके साथ आप रहने के ढंग की बात कर रहे है सब फैशन की आन्धी में बहे जा रहे हैं। लड़के लड़कियों की तरह लम्बे बाल रखते हैं, हिजड़ों की तरह मटक-मटक कर चलते हैं, पाऊडर वगैरा का प्रयोग करते हैं, कामनी आयल बालों में लगाते हैं, सिगरेट, बीड़ी तथा शराब का पीना भी फैशन में शामिल है। उधर लड़कियां कौनसी कम हैं ? सांयकाल बाजार में हवाखोरी को निकलती हैं, लड़कों की तरफ इशारे करना, दाँत निकालना' हर समय मुँह में पान तथा शृगांर साधन में लगा रहना और लड़कों से मजाक करना उनकी दिनचर्या में शामिल है। जो लड़की इस तरह रहती है उनको छोकरे मार्डन, फ्रैंक तथा अडवांस की उपाधि से विभूषित करते हैं। जो लड़के तथा लड़कियां सादे रहते हैं उन्हें बेवकूफ तथा भौंदू कहा जाता है, जबकि भौंदू तथा बेवकूफ वह स्वयं है।

प्रश्नः—इन किताबों तथा सिनेमा इत्यादि से सरकार को आमदनी तो होती है जिससे काफी कार्य किये जाते हैं।

उत्तरः—सरकार को इनसे थोड़ी बहुत आमदनी जरूर होती है पर आमदनी होती है धन्ना सेठों को जो फिलम तैयार करवाते हैं या फिर कलाकारों को जो बुरे काम करके भी जनता के हीरो बने हुए हैं। इन सबके सामने जो समाज का पतन होना है वह बहुत अधिक होता है।

प्रश्नः—क्या सरकार इस बारे में कुछ नहीं कर रही है ?

उत्तरः—सरकार इस बारे में बहुत कुछ कर रही है। चरित्रहीनता फैलाने वाली फिल्मों को बढ़ावा दे रहा है तथा जो फिल्में सुधारवादी होती हैं उन पर सेंसर बैठा देती है। इन सबका सुबह से सांय तक विज्ञापन जारी रहता है। भूखे लोगों को शृंगार तथा फिल्मों का विज्ञापन सुना-सुना कर उनकी मजबूरी पर भीषण अट्टहास उड़ाया जाता है। आप ही बताइये हिजड़ों की तरह मटक-मटक कर चलना जरूरी है या भूखे व बिलबिलाते बच्चों के लिए रोटी जरूरी है ? इसके साथ ही आप हर बस स्टंड, बुकसेलर, रेलवे स्टेशन तथा गली कुचों में फिल्मी तितलियां पढ़ने को प्राप्त कर सकते हैं पर धार्मिक व जागृति उत्पन्न करने वाली किताबें टक्कर खाने पर भी नहीं मिलती हैं।

प्रश्नः—सरकार अश्लील पुस्तकों तथा गन्दी फिल्मों पर प्रतिबन्ध क्यों नहीं लगाती ?

उत्तरः—यदि आपके कहे अनुसार बन्धन लगा

दिया जाए नक्शा ही बदल जाए । घर-घर में वीर सैनिक निकलें जो बल के भण्डार तथा ज्ञान से ओत-प्रोत हों । कामुकता तथा कायरता उनके पास न फटकें, दुश्मन जिनकी गर्जना से कांपे, जिनकी हुँकार से पृथ्वी हिले, चारों दिशाये अभिनन्दन के लिए उत्सुक हों, ऐसे हों फिर वीर पैदा !

पर यह सब सरकार नहीं कर सकती है । हमारी सरकार नाममात्र की प्रजातन्त्र है पर वास्तव में इसमें पूँजीपतियों का बोल बाला है । फिल्में तथा अश्लील पुस्तकें पूँजीवादी षड्यन्त्र है । यह आदमी को गुमराह तथा भ्रष्ट करने में सबसे बड़ा भाग अदा करती हैं तथा पूँजीवादी यही चाहते हैं कि आम जनता गुमराह होती रहे तथा पूँजीपति मौज से उसे लुटते रहे । जिसका दिमाग भ्रष्ट है, जो वासना के कीड़े बने हुए हैं जो अज्ञान में दबे हुए हैं वह कैसे इस चाल को समझ सकते हैं । "मुल्ला की दौड़ मसजिद तक वाली बात है । कामी की दौड़ वासना तक ही हो सकती है" जिस दिन लोग इस चक्कर को समझ जायेंगे उसी दिन व्यवस्था में परिवर्तन हो जायेगा ।

युवकों ! राष्ट्र उत्थान का भार तुम्हारे कन्धों पर है सचेत होकर आगे बढ़ जाओ । शेर की तरह दहाड़ते हुए तथा बाधाओं के सिर पर पांव रखते हुए व अडोल धैर्य रखते हुए आगे ही आगे बढ़ते जाओ । देव दयानन्द का त्याग, विवेकानन्द की हुँकार, श्रद्धानन्द तथा लेखराम का बलिदान, लाजपतराय, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, सुभाष व आजाद की कुर्बानी तुम्हें रह-रह कर पुकार रही है । क्या तुम सोते रहोगे ? क्या तुम शहीदों की हुँकार भूल गये हो ?

शहीदों के खून का असर देख लेना,
जला देगें जालिम का घर देख लेना ।

तुम भी जला डालो शोषकों तथा लुटेरों के घर । मैं तब समझूगा कि आप शहीदों के खून की कदर समझते हैं अन्यथा तो तुम्हारा खून-खून नहीं पानी हो गया है । इतिहास इस तरह के कायरों को कभी माफ नहीं करेगा । किसी कवि ने कहा है:—

गर माली ही तबाह करे बुलबुल बाग दास्ताने को ।
चमन क्या आग लगायेगा ऐसे बागवानो को ॥
जिनकी मां के बदन पर हो गैरों का हाथ ।
इतिहास कभी ना बख्शे ऐसे नौजवानों को ॥

जवानों आगे बढ़कर अपने राष्ट्र के उत्थान में आहुति डाल दो—अब समय आ गया है ज्यादा देर मत करो—कुछ करके दिखा दो—इस तरह जीने से तो मरना लाख दर्जे अच्छा है । कवि ने कहा:—

हंस के मरा दुनियां में कोई रो के मरा ।
मौत बस उसकी अच्छी है जो कुछ हो के मरा ॥

तो कर दो कुछ ।

चुनाव समाचार

दिनांक २८-१०-७८ को दोपहर १ बजे आर्य हायर सैकेन्डरी स्कूल व आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल सिरसा की कमेटी का गठन करने के लिए एक मीटिंग सम्पन्न हुई जिसकी प्रधानता श्री अमरसिंह बेनीवाल एडवोकेट ने की । क्रमशः दोनों संस्थाओं के लिए निम्नलिखि महानुभावों को कमेटी के अधिकारी के रूप में चुना गया ।

आर्य हायर सैकेण्डरी स्कूल :

प्रधान—श्री उदाराम एडवोकेट सिरसा ।

मैनेजर—श्री जगदीश चन्द्र नाहरा ।

सदस्यगण—श्री प्रतापसिंह चूरनिया, श्री मनफूलसिंह एडवोकेट सिरसा, श्री रामकृष्ण एडवोकेट सिरसा, श्री अमरसिंह बेनीवाल एडवोकेट सिरसा, श्री मुन्शीराम सरपंच जमाल, श्री जगदीशचन्द्र एम० एल० दड़बा कलां, भागीराम एम०एल० मिठी सुरेरा, पिरथीसिंह विश्नोई, रूपाणा, श्योनारायण एडवाकेट सिरसा ।

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल :

प्रधान—श्री अमरसिंह एडवोकेट ।

मन्त्री—श्री भागमल जी सूबेदार ।

सदस्यगण—श्री मनीराम जी आर्य, श्री उदा राम जी एडवोकेट, श्री जगदीश चन्द्र नाहरा, श्री लाधूराम ग्राम लुदेसर डिप्टी डायरेक्टर, श्री बहादर सिंह केरांवाली ।

सम्पादक के नाम पत्र—

आदरणीय भाई जगबीरसिंह जी,

सादर नमस्ते !

आशा है आप स्वस्थ होंगे। निवेदन है कि राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन रिवाड़ी के उत्सव में चाहता हुआ भी मैं सम्मिलित नहीं हो सका। कई उलझनों और कालिज छात्र संघ की गतिविधियों में व्यस्त रहने के कारण देश के इस महान् प्रगतिशील सम्मेलन में भाग लेकर जिन्दगी के अनुभवों को सीखने का मौका मिलता उससे मुझे वंचित रहना पड़ा। इस राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलन में हमारे जिले से जो लोग गये थे उनसे वहां की जानकारी प्राप्त की। वास्तव में यह सम्मेलन "देश की मौजूदा पूंजीवादी सामन्ती अर्थ व्यवस्था के खिलाफ एक जन-क्रान्ति का आह्वान है। जहां देश के दो प्रतिशत बड़े लोग बेइन्तहा खुशहाल जिन्दगी बसर करते हैं। उनके पास अनेक कोठियां बंगले हैं, नवीनतम माडल की सैकड़ों कारें हैं, अशोका और ताजमहल होटलों की रातें हैं। पेरिस और बर्लिन की तफरीह है और खाने-पीने सोने के लिए बेतहाशा दौलत के जखीरे हैं। मेहनतकश वर्ग जहां पेट में घुटने गाड़कर भूखा पड़ा रहता है। और दवा के बगैर अपने बच्चों को तड़प तड़पकर मरते हुए देखता रहता है, वहां ये लोग शराब में नहाते हैं और सुन्दरियों में तैरते हैं। जो दूध, बिस्कुट, इन्जेक्शन, रेशमी रजाई इनके कुत्ते भोगते हैं वहां देश की ९० प्रतिशत जनता स्वप्न में भी उनकी कल्पना नहीं कर सकती।

एक ओर दौलत के अम्बार और दूसरी ओर दम तोड़ती जिन्दगी—इसके बहुत खतरनाक नतीजे गरीबी, भुखमरी, वेश्यावृति, भ्रष्टाचार, हत्या, बलात्कार और उत्पीडन तथा दमन के रूप में हमारे सामने हैं। देश के हजारों लोग भीख मांगकर गुजारा करते हैं। हाथ पसारे उदास आंखों से निहारता हुआ रिरियाता बुढ़ापा, वासना के अंगारों का अपने सुकुमार शरीर पर हमला बर्दाश्त करती हुई जवानी, भोजन करते हुए लोगों को भूखी आंखों से देखते हुए और चन्द जूठे टुकड़ों के लिए हाथ पसार कर पीछा करते हुए मासूम बच्चे हमारे सामने देश की बिगड़ती हुई तस्वीर पेश करते हैं।"

इसलिए मौजूदा पूंजीवादी लुटेरी अर्थ व्यवस्था को उखाड़ फेंककर 'वैदिक समाजवाद' के जनान्दोलन को आगे बढ़ाने और मेहनतकश जनता के हितों की हिफाजत करने का जो रास्ता स्वामी इन्द्रवेश जी के नेतृत्व में इस सम्मेलन द्वारा प्रस्ताव पारित कर अपनाया गया है वही देश की समस्याओं के समाधान का रास्ता हो सकता है और इस पर चलकर ही गरीबी, बेरोजगारी, भुखमरी पैदा करने वाली शोषण उत्पीडन की अन्धेरी शक्तियों से लड़कर उन्हें पराजित किया जा सकता है।

—योगेन्द्रकुमार

महर्षि दयानन्द के चरणों में सादर समर्पण

ऋषिवर ! तुम्हें भौतिक शरीर त्यागे ४२ वर्ष हो चुके, परन्तु तुम्हारी दिव्य मूर्ति मेरे हृदय पर अब तक ज्यों की त्यों अंकित है। मेरे निर्बल हृदय के अतिरिक्त कौन मरणधर्मा मनुष्य जान सकता है कि कितनी बार गिरते-गिरते तुम्हारे स्मरण मात्र ने मेरी आत्मिक रक्षा की है। तुमने कितनी गिरी हुई आत्माओं की काया पलट दी, इसकी गणना कौन मनुष्य कर सकता है, परमात्मा के बिना जिनकी पवित्र गोद में तुम इस समय विचर रहे हो, कौन कह सकता है कि तुम्हारे उपदेशों से निकली हुई अग्नि ने संसार में प्रचलित कितने पापों को दग्ध कर दिया है। परन्तु अपने विषय में मैं कह सकता हूं कि तुम्हारे सहवास ने मुझे कैसी गिरी हुई अवस्था से उठाकर सच्चा जीवन लाभ करने के योग्य बनाया।

मैं क्या था इसे मैंने छिपाया नहीं। मैं क्या बन गया और अब क्या हूं। वह सब तुम्हारी कृपा का ही परिणाम हैं। इसलिए इससे बढ़कर मेरे पास तुम्हारी जन्म शताब्दी पर और कोई भेंट नहीं हो सकती कि तुम्हारा दिया आत्मिक जीवन तुम्हें ही अर्पण करूं। तुम वाणी द्वारा प्रचार करने वाले केवल तथ्यवेता ही न थे परन्तु जिन सच्चाइयों का तुम संसार में प्रचार करना चाहते थे उनको क्रिया में लाकर सिद्ध कर देना भी तुम्हारा ही काम था। भगवान् कृष्ण की तरह तुम्हारे लिए भी तीनों लोकों में कोई कर्त्तव्य शेष नहीं रह गया था, परन्तु तुमने मानव संसार को सीधा मार्ग दिखलाने के लिए कर्म की उपेक्षा नहीं की।

भगवान् ! मैं तुम्हारा ऋणी हूँ, उस ऋण से मुक्त होना चाहता हूं। इसलिए जिस परमपिता की असीम गोद में तुम परमानन्द का अनुभव कर रहे हो, उसी से प्रार्थना करता हूं कि मुझे तुम्हारा सच्चा शिष्य बनने की शक्ति प्रदान करें।

—श्रद्धानन्द

२३ दिसम्बर को हुई ऐतिहासिक किसान रैली के लिए

हरियाणा भर में आर्य नेताओं के प्रचार अभियान का विवरण

२३ दिसम्बर की ऐतिहासिक किसान रैली की व्यापक रूप से तैयारियां करने के लिए आर्यसमाज के उत्साही कार्यकर्ताओं एवं नेताओं ने रात दिन एक करके कार्य किया। महर्षि दयानन्द के मन्तव्यानुसार राजाओं के राजा किसान आदि परिश्रम करने वाले होते हैं। परन्तु आज स्थिति यह है कि जिस वर्ग को महर्षि राजाओं का भी राजा मानते हैं उसका बुरी तरह से शोषण हो रहा है। किसान को सरे-आम लूटा जा रहा है, मजदूर पिस रहा है और पून्जीवाद का बोलबाला है। आर्यसमाज को अपनी ऐतिहासिक परम्परा के अनुसार ऐसे अन्याय के विरुद्ध संघर्ष छड़ना चाहिए और परिश्रम करने वाले वर्गों के हितों की रक्षा करनी चाहिए। इसी भावना को सामने रखकर यह निर्णय हुआ कि आर्य समाज के प्रत्येक कार्यकर्त्ता को चौ० चरणसिंह के नेतृत्व में आयोजित रली के लिए जुट कर कार्य करना चाहिए। वैसे भी चौ० चरणसिंह स्वयं आर्यसमाज एवं महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त एवं अनुयायी हैं।

स्वामी इन्द्रवेश का तूफानी दौरा—

आर्य जगत् के प्रसिद्ध युवा संन्यासी व हरयाणा किसान सम्मेलन के उपाध्यक्ष स्वामी इन्द्रवेश जी ने पूरे हरयाणा के लगभग १५० गांवों का तूफानी दौरा किया और लोगों को दिल्ली जाने की प्रेरणा दी। स्वामी जी ने लोगों में फैली अफवाहों व भ्रांतियों का भी निवारण किया जिस से लोग और अधिक उत्साह से दिल्ली पहुंचने की तैयारी करने लगे। स्वामी जी के साथ राजधर्म के सम्पादक जगवीरसिंह एडवोकेट व महाशय खेमसिंह की भजन मण्डली भी थी। प्रमुख रूप से आपने रोहतक जिले के भगवतीपुर, घड़ावठी, लाखनमाजरा, खरक जाटान, निन्दाना, खेड़ी (महम); भैंणी सुरजन, फरमाणा, भैंणी भैंरों, सीसर, बहलवा, भरायण, अजायब, खरकड़ा, मदीना, गरावड़, मोखरा, करौंथा, डीघल, बेरी, दूबलधन, बराहणा, कुल्ताना, भापड़ोदा, जहांगीरपुर, बादली, माजरी, टिटौली, सांघी, लाढौत, किलोई, खेड़ीसाध, आसोधा, दिशावर खेड़ी, सोहटी व सोनीपत जिले के सिसाना, फरमाणा, बिधलान, भटगांव, बय्यापुर, रोहट, नाहरी, सेवड़ा, कुराड़, जुआं, भैंसवाल, खानपुर, मुडलाना, महमूदपुर, बुटाना, बरोदा व जिला हिसार के मिरजपुर, कौथ, कापड़ो, राखी गढ़ी, नारनौन्द, खाण्डा, खेड़ी, बास, मुण्डाल, धनाना व जिला जीन्द के लगभग ३५ गांवों में जलसे किए। इसी प्रकार नारनौल महेन्द्रगढ़ व रिवाड़ी क्षेत्र के पचासों गांव में भी स्वामी जी ने रेवाड़ी महासम्मेलन के माध्यम से काफी जन जागृति की।

कुरुक्षेत्र जिले में स्वामी अग्निवेश के नेतृत्व में श्री बिशनसिंह एडवोकेट व स्वामी रुद्रवेश की भजन मण्डली ने धुआंधार अभियान चलाकर गांव के किसान मजदूर को जागृत किया तथा उनकी प्रेरणा से हजारों लोग दिल्ली गए।

जीन्द जिले में श्री रामधारी शास्त्री जो जिला किसान सम्मेलन के भी प्रधान हैं ने लाखों रुपया धनसंग्रह किया व रैली की जोरदार तैयारी की। इसी तरह से सोनीपत जिला किसान सम्मेलन के प्रधान डा० महासिंह ने भी आर्यसमाज की पूरी टीम को जुटाकर धन-जन को जुटाने में पूरी शक्ति लगाई। उनके साथ श्री धर्मपाल आर्य, श्री रामसिंह आर्य व गंगाराम एडवोकेट ने भी पूरा कार्य किया। इसी तरह गुड़गांवा जिले में स्वामी आदित्यवेश ने अपने काफिले को लेकर रैली के लिए रात दिन एक करके कार्य किया। राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन रेवाड़ी के लिए गए निर्णयों को क्रियात्मक रूप देने की दिश में यह अभियान बहुत ही महत्त्वपूर्ण रहा।

आर्यसमाज गांव की ओर—

आर्यसमाज को गांव के शोषित पीड़ित एवं दलित व्यक्ति तक पहुंचाना एक महान् कार्य है। क्योंकि आर्यसमाज का उद्देश्य ही अन्याय, अज्ञान व अभाव समाप्त कर एक वैदिक समाजवादी व्यवस्था की स्थापना करना है। अतः गांव के मेहनतकश आदमी को आर्यसमाज से जोड़ने का एकममात्र उपाय है उसकी समस्याओं को सुलझाने के लिए बढ़-चढ़ कर कार्य करना जिनमें किसान रैली की सफलता भी विशेष महत्त्व रखती है। क्योंकि किसान का संगठन होगा तो उसके अधिकारों की सुरक्षा होगी।

रजिस्टर्ड नं०
P/RTK-६५

राजधर्म
२७ दिसम्बर, १९७८

साधक मण्डल की मासिक बैठक

महर्षि दयानन्द साधक मण्डल की मासिक बैठक हर पूर्णमासी को साधु आश्रम में बड़े उत्साह के वातावरण में होती है। १५ दिसम्बर को सम्पन्न हुयी बैठक में और बैठकों की अपेक्षा साधुओं की संख्या अधिक थी। १३ ता० की रात को ही अधिकतर लोग आश्रम में पहुँच गए थे। रात १० बजे तक स्वयं साधकों ने ही अपना कार्यक्रम चलाया और सैद्धांतिक चर्चा की। स्वामी इन्द्रवेश जी बाहर जलसों में गये हुये थे अतः वे रात्रि के समय शामिल नहीं हो सके। कुछ लोग निराश भी हो गये परन्तु १५ दिसम्बर को प्रातः ५ बजे ही योगभ्यास के समय स्वामी इन्द्रवेश जी; स्वामी अग्निवेश जी व खेमसिंह जी आश्रम में पहुँच गये तथा सुबह का कार्यक्रम नियमित चला। फिर यज्ञ के बाद स्वामी चन्द्रवेश का प्रवचन हुआ और खेमसिंह के भजन। यज्ञ के पश्चात् साधकों की गोष्ठी प्रारम्भ हुई। सर्वप्रथम सभी ने अपनी अपनी प्रगति का वर्णन किया। तथा सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास का अध्ययन जो करके आए थे, उन्होंने शंका समाधान किए। फिर योग-साधना शिविर व आश्रम के वार्षिकोत्सव की तिथि निश्चित करने के लिये विचार विमर्श किया गया और निर्णय हुआ कि शिवरात्रि से अगले दिन २६ फरवरी से ही शिविर प्रारम्भ हो और ३-४ मार्च, १९७९ को आश्रम के वार्षिकोत्सव के रूप में इसका समापन किया जाए। इसका सभी ने स्वागत किया और शिविर में और साधकों को लाने का भी आश्वासन दिया। लगभग १२ बजे तक विचार विमर्श व शंका समाधान करने के बाद गोष्ठी समाप्त हुई और दानादि करने के बाद भोजन हुआ। खीर से तृप्त होकर सभी अपने घरों को लौटने लगे।

इस बैठक में मुख्य रूप से महाशय हरद्वारी लाल, पं० रामचन्द्र भालौट, रामकुमार टिटौली, लक्ष्मी बहिन जी, स्वामी सोमानन्द रोहतक, स्वामी प्रेमानन्द सांघी, टेकराम आर्य मकड़ौली, मांगेराम मकड़ौली, सुमेर सिंह मकड़ौली खुर्द, भूपसिंह आर्य मदीना दांगी, मा० फतेहसिंह बरोदा, मा० इन्द्रसिंह आर्य व चौ० सहदेव सिंह आहूलाना, मा० प्रताप सिंह, हवासिंह, रत्न सिंह आदि मुडलाना, जिले सिंह बिडाना, महाशय धर्मसिंह कोट, मा० इन्द्रजीत व चद्रपाल खेड़ी सुलतान, महाशय धर्मसिंह निमाणा, बलदेव जी नीमड़ी, महाशय चन्दूलाल व मुन्शीराम आर्य बालन्द, डा० जुगलाल आर्य बारवाणवास, डा० मनीराम व सूबेदार रत्नसिंह करेला, लीला सिंह कैथल, हीरासिंह आर्य रसीना, वानप्रस्थ आर्य मस्ताना, वानप्रस्थ कर्मदेव, सज्जन देव, नरदेव, गौरी शंकर, हजारी प्रसाद, चन्द्र देव, स्वामी परमानन्द आदि महानुभावों ने भाग लिया। कुछ नाम गलती से छूट गये। इस प्रकार यह साधक मण्डल की बैठक नियमित चल रही है।

—डा० धर्मवीर

स्वतन्त्रता दिवस "विशेषांक"

२६ जनवरी १९७९ के स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष में राजधर्म का एक विशेषांक निकल रहा है। लेखक महानुभावों से निवेदन है कि ये समय पर अपने लेखादि भेजकर कृतार्थ करें। ३२ साल की आजादी का वास्तविक चित्रण करने वाले लेखों को प्राथमिकता दी जायेगी। क्या वास्तव में देश आजाद हुआ है? और अगर यह बात सच है तो आखिर वह आजादी कहां चली गई? आदि ज्वलन्त प्रश्नों का उत्तर ढूंढने का हमें प्रयास करना चाहिए।

—सम्पादक

राजधर्म प्रकाशन के लिए आचार्य प्रिंटिंग प्रेस, गोहाना रोड, रोहतक से
स्वामी इन्द्रवेश द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित।